नई किताब

हज़रत मुहम्मद और इस्लाम

लेखक—सुन्दरलाल

इस किताब का पहला एडीशन 1941 में निकला था देश ने उसका स्वागत किया और जल्दी वह ख़त्म हो गया. दूसरे एडीशन की मांग अर्से से हो रही थी. पर वह अब ही मुमकिन हो सका है.

इस एडीशन को पंडित सुन्दरलाल जी एहतियात के साथ देख गये हैं बहुत बुज़ुर्गों और साथियों की क़ीमती राय और सुझावों से इस में फ़ायदा उठाया गया है. नये एडीशन की ख़ास बात यह है कि इस किताब के शुरू में पंडित बिशम्बरनाथ ने दस सफ़े का एक गम्भीर और वज़नदार नोट यानी आमुख लिखा है.

इस किताब से इस्लाम की असली तालीम और उसके बुनियादी उसूलों की जानकारी हासिल होने के साथ साथ हज़रत मुहम्मद की सीधी सच्ची और बेमिसाल ज़िन्दगी—एक ऐसी ज़िन्दगी जिसने सदियों से लाखों करोड़ों के जीवन को रौशन किया है की झलक मिलती है इससे पता चलेगा कि किस तरह हज़रत मुहम्मद ने न सिर्फ़ अरब जैसे दक़यानूसी और फ़िरक़ा परस्त देश की काया पलट दी बल्कि एक नये धर्म, एक नये राज और एक नई तहज़ीब को जन्म दिया

हमें यक़ीन है कि पहले एडीशन की तरह इसकी भी काफ़ी मांग होगी और पढ़ने वाले इससे फ़ायदा उठायेंगे.

सुन्दर जिल्द, बढ़िया डबल डिमाई काग़ज़ पर छपी 160 सफ़े, कई तसवीरों और नक़्शों के साथ किताब का दाम सिर्फ़ तीन रुपया.

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

نئی کتاب

حضرت محمد اور اسلام

لیکھک—سندر لال

اس کتاب کا پہلا ایڈیشن سن 1941 میں نکلا تھا . دیش نے اس کا سواگت کیا اور جلدی وہ ختم ہوگیا . دوسرے ایڈیشن کی مانگ عرصے سے ہو رہی تھی . پر وہ اب ہی ممکن ہوسکا ہے .

اس ایڈیشن کو پنڈت سندر لال جی احتیاط کے ساتھ دیکھ گئے ہیں . بہت سے بزرگوں اور ساتھیوں کی قیمتی رائے اور سجھاوؤں سے اس میں فائدہ اٹھایا گیا ہے . نئے ایڈیشن کی خاص بات یہ ہے کہ اس کتاب کے شروع میں پنڈت بشمبھر ناتھ نے دس صفحے کا ایک گمبھیر اور وزندار نوٹ یعنی آمکھ لکھا ہے .

اس کتاب سے اسلام کی اصلی تعلیم اور اس کے بنیادی اصولوں کی جانکاری ہونے کے ساتھ ساتھ حضرت محمد کی سیدھی سچی اور بےمثال زندگی—ایک ایسی زندگی جس نے صدیوں سے لاکھوں کروڑوں کے جیون کو روشن کیا ہے—کی جھلک ملتی ہے . اس سے پتہ چلےگا کہ کس طرح حضرت محمد نے نہ صرف عرب جیسے دقیانوسی اور فرقہ پرست دیش کی کایا پلٹ دی بلکہ ایک نئے دھرم، ایک نئے راج اور ایک نئی تہذیب کو جنم دیا .

ہمیں یقین ہے کہ پہلے ایڈیشن کی طرح اس کی بھی کافی مانگ ہوگی اور پڑھنے والے اس سے فائدہ اٹھائیںگے .

سندر جلد، بڑھیا ڈبل ڈمائی کاغذ پر چھپی 160 صفحے، کئی تصویروں اور نقشوں کے ساتھ کتاب کا دام صرف تین روپیہ .

ملنے کا پتہ—
مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج الہ آباد .

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

[illegible]

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार रना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये कताबों, अख़बारों, रिसालों वगैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़. गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले, सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں .

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا .

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لیکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا .

—:٥:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ، وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق . گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال .

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی. جی. کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے ـ

سندرلال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،
145 مٹھی گنج، الہ آباد .

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے

हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें — ہمارے یہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں

नोटः—यह किताबें सिर्फ हिन्दी में हैं — نوٹ :—یہ کتابیں صرف ھندی میں ھیں ۔

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1. शेर ओ शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئیلی	1. شعر و شاعری
2. शेर ओ सुखन	,,	8	0	0	,,	2. شعر و سخن
3. गहरे पानी पैठ	,,	2	8	0	,,	3. گہرے پانی پیٹھ
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. ھمارے آرادھیہ
5. संस्मरण	,,	3	0	0	,,	5. سنس مرن
6. दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8. पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پتھ چنھ
9. पंच प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم . اے	9. پنچ پردیپ
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنھیالال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.	5	0	0	شری ویریندر کمار جین ایم . اے	11. مکتی دوت
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14. मेरे बापू	श्री तन्मय बुखारिया	2	8	0	شری تنمے بخاریا	14. میرے باپو
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال' بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला	5	0	0	شری بھگوان داس کیلا'	16. بھارتیہ ارتھ شاستر
17. भारतीय शासन	,,	3	0	0	,,	17. بھارتیہ شاسن
18. नागरिक शास्त्र	,,	2	4	0	,,	18. ناگرک شاستر
19. साम्राज्य और उनका पतन	,,	2	8	0	,,	19. سامراج اور اُن کا پتن
20. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन	,,	1	4	0	,,	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	,,	1	8	0	,,	21. سرودے ارتھ ویوستھا
22. हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	22. ھماری آدم جاتیاں
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم . اے. ایل ایل . بی . گجادھر پرساد' امبشٹ' بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. راشٹر منڈل شاسن
26. जवानो	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانو
27. मारने की हिम्मत !	,,	1	0	0	,,	27. مارنے کی ھمت
28. सलोना सच	,,	0	8	0	,,	28. سلونا سچ
29. मेरे साथी	,,	1	0	0	,,	29. میرے ساتھی

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' — مینیجر 'نیا ھند'

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3. — 145' مٹھی گنج' الہ آباد-3

झंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

पिछले पन्द्रह बरस से आज तक की उरदू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़कर आप को मालूम होगा कि उरदू कविता ने किस तरह ख़याली दुनिया को छोड़ कर ज़िन्दगी की सच्चाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज की उरदू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ तक ही सीमित नहीं है. अब आप को उरदू कविता में किसानों और मज़दूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. ग़ुलामी, अन्याय और लूट खसोट के ख़िलाफ़ आप एक ऐसी आवाज़ सुनेंगे जो आपके दिल की गहराइयों को छुएगी.

"इन कविताओं में अन्तर्राष्ट्री तथा राष्ट्री दोनों झलकें मिलती हैं......सजीव तथा साकार हैं......वास्तव में हिन्दी संसार में यह प्रयास अनोखा है और उरदू साहित्य के आधुनिक दौर में अद्वितय है..."

23-2-'52 —रोज़ाना 'लोकवाणी' जयपुर

"जहां तक भाव का सम्बन्ध है कविताएं उच्चस्तर की हैं."

6. 3. '52 —'विशाल भारत' कलकत्ता

"झंकार में प्रकाशित 72 उरदू की कविताएं आज ही के युग की समस्याओं से ओत प्रोत हैं."

17. 2. '52 —'नव भारत टाइम्स' दिल्ली

"हिन्दी के पाठक स्नेह और चाव से इस संग्रह का आनन्द लेंगे और उनसे प्रेरना ग्रहन करेंगे, यह निश्चित है."

13. 1. '52 —'अमृत पत्रिका' इलाहाबाद

"हम उन की (कविताओं की) शक्ति, ताज़गी और सूत्र के क़ायल हैं. वह एक नए युग का सन्देश देती हैं...भाषा अधिकतर सरल और बामहावरा है. कहीं कहीं तो ठेठ हिन्दी है."

8. 5. '52 —'जीवन साहित्य' दिल्ली

'झंकार' की रचनाओं में युग की पुकार है और भाषा बिलकुल बोल चाल के निकट है"—'नया समाज' कलकत्ता

नागरी लिखावट में ऐसा भरपूर उरदू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़. उम्दा छपाई. दाम सिर्फ़ तीन रुपया. दस किताबों की एक साथ ख़रीदारी पर पचास फ़ीसदी कमीशन.

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज. इलाहाबाद.

جھنکار

سمپادک—شری رگھوپتی سہائے ' فراق '

پچھلے پندرہ برس سے آج تک کی اُردو کی چنی ہوئی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اُردو کویتا نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے . آج کی اُردو شاعری گل و بلبل اور وصل و فراق تک ہی سیمت نہیں ہے . اب آپ کو اُردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی . غلامی' انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف آپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل کی گہرائیوں کو چھوئیگی .

" اِن کویتاؤں میں انتر راشٹری تتھا راشٹری دونوں جھلکیں ملتی ہیں...سجیو تتھا ساکار ہیں... واستو میں ہندی سنسار میں یہ پریاس انوکھا ہے اور اُردو ساہتیہ کے آدھنک دور میں ادوتیہ ہے..."

23-2-'52 —روزانہ 'لوک وانی' جے پور

" جہاں تک بھاؤ کا سمبندھ ہے کویتائیں اُچ استر کی ہیں ."

6-3-'52 —'وشال بھارت' کلکتہ

" جھنکار میں پرکاشت 72 اُردو کی کویتائیں آج ہی کے یگ کی سمسیاؤں سے اوت پروت ہیں ."

17-2-'52 —'نو بھارت ٹائمس' دلی

" ہندی کے پاٹھک اِسنیہ اور چاؤ سے اِس سنگرہ کا آنند لینگے اور اُن سے پریرنا گرہن کرینگے' یہ نشچت ہے."

13-1-'52 —'امرت پتریکا' الہ آباد

" ہم اُن کی (کویتاؤں کی) شکتی' تازگی اور سوتر کے قائل ہیں . وہ ایک نئے یگ کا سندیش دیتی ہیں... بھاشا ادھک تر سرل اور بامحاورہ ہے . کہیں کہیں تو ٹھیٹھ ہندی ہے ."

8-5-'52 —'جیون ساہتیہ' دلی

" جھنکار' کی رچناؤں میں یگ کی پکار ہے اور بھاشا بالکل بول چال کے نکٹ ہے ."—' نیا سماج ' کلکتہ

ناگری لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اُردو کویتا سنگرہ آج تک نہیں نکلا . سندر جلد' بڑھیا کاغذ . عمدہ چھپائی . دام صرف تین روپئے . دس کتابوں کی ایک ساتھ خریداری پر پچاس فیصدی کمیشن .

ملنے کا پتہ—

منیجر ' نیا ہند ' 145' مٹھی گنج الہ آباد .

गांधी बाबा

लेखक—क़ुदसिया ज़ैदी

दो शब्द—जवाहरलाल नेहरू

यह अनमोल किताब जन्म से बलिदान तक की गांधी जी की पूरी और सच्ची जीवनी भी है और कहानी भी. हमारे देश में यह पुराना रिवाज रहा है कि माएं अपने बच्चों को महापुरुषों के जीवन चरित कहानी के रूप में सुनाती हैं. इस तरह की कहानियां आम तौर पर वीर राजाओं और उनके युद्धों की कहानियां होती हैं. बेगम क़ुदसिया ज़ैदी ने, जो महात्मा गांधी की परम भक्त हैं, अपनी इस किताब में गांधीजी की जीवनी और उनका सत्य, अहिंसा, प्रेम और त्याग का उपदेश बच्चों को ऐसी प्यारी, सीधी सादी बोली में और ऐसे ढंग से सुनाया है कि बच्चों के दिल में उतरता चला जाता है. हिन्दी में गांधीजी के ऊपर बच्चों के लिये इससे बढ़कर किताब नहीं है. इसमें कहानी का रस भी है और बच्चों को ऊंचा उठाने वाले उपदेश भी.

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने 'दो शब्द' में लिखा है—

> "उन्होंने (क़ुदसिया ज़ैदी ने) यह छोटी सी किताब सच्चे दिल से लिखी है. वह इसे सिर्फ़ एक किताब नहीं समझतीं. उनके लिये गांधीजी की कहानी एक बहुत ही महत्त्व की और प्यारी चीज़ है...मुझे ख़ुशी है कि यह किताब लिखी गई है."

मोटे काग़ज़ पर, मोटे टाइप में, बहुत सी रंगीन तसवीरें, आर्ट पेपर पर सुन्दर रंगीन कवर और दफ़्ती की मज़बूत जिल्द—दाम केवल दो रुपए.

گاندھی بابا

لیکھک—قدسیہ زیدی

دو شبد—جواہر لال نہرو

یہ انمول کتاب جنم سے بلیدان تک کی گاندھی جی کی پوری اور سچی جیونی بھی ہے اور کہانی بھی. ہمارے دیش میں یہ پرانا رواج رہا ہے کہ مائیں اپنے بچوں کو مہاپرشوں کے جیون چرت کہانی کے روپ میں سناتی ہیں. اِس طرح کی کہانیاں عام طور پر ویر راجاؤں اور اُن کے یدھوں کی کہانیاں ہوتی ہیں. بیگم قدسیہ زیدی نے' جو مہاتما گاندھی کی پرم بھکت ہیں' اپنی اِس کتاب میں گاندھی جی کی جیونی اور اُن کا ستیہ' اہنسا' پریم اور تیاگ کا اُپدیش بچوں کو ایسی پیاری' سیدھی سادی بولی میں اور ایسے ڈھنگ سے سنایا ہے کہ بچوں کے دل میں اُترتا چلا جاتا ہے. ہندی میں گاندھی جی کے اوپر بچوں کے لئے اس سے بڑھ کر کتاب نہیں ہے. اس میں کہانی کا رس بھی ہے اور بچوں کو اونچا اُٹھانے والے اُپدیش بھی.

پنڈت جواہر لال نہرو نے اپنے 'دو شبد' میں لکھا ہے—

> "اُنہوں نے (قدسیہ زیدی نے) یہ چھوٹی سی کتاب سچے دل سے لکھی ہے. وہ اِسے صرف ایک کتاب نہیں سمجھتیں. اُن کے لئے گاندھی جی کی کہانی ایک بہت ہی مہتّو کی اور پیاری چیز ہے.....مجھے خوشی ہے کہ یہ کتاب لکھی گئی ہے."

موٹے کاغذ پر' موٹے ٹائپ میں' بہت سی رنگین تصویریں' آرٹ پیپر پر سندر رنگین کور اور دفتی کی مضبوط جلد—دام کیول دو روپئے.

भाषा

लेखक—लाला मदन गोपाल

हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी की तकरार पर एक वे लाग राय इस किताब में आपको मिलेगी. राष्ट्र भाषा के सवाल में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई-बहन को इस किताब के पढ़ने से फ़ायदा होगा—सोचने की राहें सूझेंगी, जानकारी बढ़ेगी और तरह तरह की तंग नज़रियां मिटेंगी.

क़रीब सवा सौ सफ़े की सुन्दर किताब, दाम डेढ़ रुपया

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द'

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

بھاشا

لیکھک—لالہ مدن گوپال

ہندی اُردو اور ہندستانی کی تکرار پر ایک بے لاگ رائے اِس کتاب میں آپ کو ملے گی. راشٹر بھاشا کے سوال میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کو اِس کتاب کے پڑھنے سے فائدہ ہوگا—سوچنے کی راہیں سوجھیں گی' جانکاری بڑھے گی اور طرح طرح کی تنگ نظریاں مٹیں گی.

قریب سوا سو صفحے کی سندر کتاب' دام ڈیڑھ روپیہ.

ملنے کا پتہ—

مینیجر' 'نیا ہند'

154 مٹھی گنج' الہ آباد.

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख़्ता

अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने कांगरेस को लोक सेवा संघ में बदल देने के लिए अपनी तजवीज़ लिखी थी. यह देश के नाम उनकी आख़िरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख़्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिए इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. 225 सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपए.

अहिंसात्मक इन्क़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंज़र अली सोख़्ता

इस छोटी सी किताब को पढ़ कर आपको पता चलेगा कि महात्मा गांधी क्या चाहते थे और किस तरह उनके रास्ते पर चल कर अहिंसात्मक ढंग से देश में इन्क़लाब लाया जा सकता है.

पैंतीस पन्ने की किताब, दाम सिर्फ़ चार आने.

आज के शहीद

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल

उन बहादुरों की कहानियां जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इनसानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में अपनी जान क़ुरबान कर दी. दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

मुस्लिम देश भक्त

लेखक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामी की जंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 45, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے کانگریس کو لوک سیوا سنگھ میں بدل دینے کے لئے اپنی تجویز لکھی تھی. یہ دیش کے نام انکی آخری وصیت ہے اور اسکی ویکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں۔

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اسکا پڑھنا بہت ضروری ہے. 225 صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے۔

اہنساتمک انقلاب کا راستہ

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اِس چھوٹی سی کتاب کو پڑھکر آپ کو پتہ چلے گا کہ مہاتما گاندھی کیا چاہتے تھے اور کسطرح اُن کے راستے پر چل کر اہنساتمک ڈھنگ سے دیش میں انقلاب لایا جا سکتا ہے۔

پینتیس پنے کی کتاب، دام صرف چار آنے۔

آج کے شہید

سمپادک—شری رتن لال بنسل

اِن بہادروں کی کہانیاں جنہوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کی کوشش میں اپنی جان قربان کر دی. دام صرف ڈھائی روپیہ

مسلم دیش بھکت

لیکھک—شری رتن لال بنسل

اِن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنہوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی. کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے۔

قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج' الہ آباد۔

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

गीता और क़ुरान

इस किताब में हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों के मेल की बातें है. गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज. इसी ने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के बटवारे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आइं उन का दर्दनाक आंखों देखा वर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिए ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

لیکھک—پنڈت سندر لال

گیتا اور قرآن

اِس کتاب میں ہندو دھرم اور اِسلام دونوں کے میل کی باتیں ھیں. گیتا کا بڑپن، گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ، قرآن کا بڑپن، لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آیتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ھے .

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاھیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ھے .

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ، ڈاک خرچ الگ .

ھندو مسلم ایکتا

اِس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ھیں جو پنڈت جی نے کنسیلیئٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے .

سو صفحے کی کتاب . قیمت صرف بارہ آنے .

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذھبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج. اسی نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ھمارے بیچ میں نہ رھنے دیا .

قیمت بارہ آنے .

پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے

اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے بٹوارے کے بعد وھاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک آنکھوں دیکھا ورنن . اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ھیں . قیمت چار آنے .

بنگال اور اُس سے سبق

اِس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ھے اور ایسے جھگڑوں کو ھمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ھے . قیمت صرف دو آنے .

ملنے کا پتہ—

مینیجر نیا ھند' 145، مٹھی گنج' الہ باد .

तरह काम के बना दिये जायं तो कोई वजह नहीं कि वह चौहों का स्थान न पा सकें. हर शहर हर क़सबे में दरमियानी दर्जे के आदमी गाय पालने की बड़ी ख़्वाहिश रखते हैं पर न उनके पास रखने को जगह है, न चराने के लिये चरागाह. अगर कोई किसी शहर में यह ठेका ले ले कि वह गायों के लिये चरागाहों का इंतज़ाम कर लेगा और ग्वालों की ऐसी जमात तैयार कर देगा जो पहले की तरह घर घर से गाय ले जाया करेंगे और शाम को वापिस छोड़ जाया करेंगे तो गोरक्षा का सवाल बड़ी आसानी से हल हो जायगा गाय से हर हिन्दुस्तानी को मोहब्बत हो जायगी और फिर शायद इस बात की ज़रूरत ही न रह जायगी कि लोग गोवध बंदी क़ानून के लिये सरकार के पास दौड़े दौड़े जायं.

किसी राजकाजी फ़ायदे को निगाह में रख कर गोवध बंद करने की आवाज़ हरगिज़ नहीं उठानी चाहिये. पर होता हमेशा यही रहा है. सबसे पहले यह आवाज़ बादशाह बाबर ने उठाई. गोवध रोकने की सलाह उसने अपने बेटे हुमायूं को दी. इस सलाह में गोरक्षा का इतना ख़याल न था जितना हुमायूं के राज के जमने का और उन मुसलमानों के ख़िलाफ़ नफ़रत पैदा करने का जो हिन्दुस्तान में पहले से मौजूद थे और जिनके हाथ में हिन्दुस्तानी हकूमत की बागडोर थी. अंगरेज़ों के ख़िलाफ़ इस हथियार से काम लिया गया. गांधी जी को छोड़ कर बहुत से लोगों ने मिल का कपड़ा छुड़ाने के लिये यह दलील दी कि इसमें गाय और सूअर की चरबी लगती है. आज भी गोवध बंदी का सवाल राजकाजी हथियार बना हुआ है, सच्चे मानों में गोरक्षा का हथियार नहीं है.

9. 6. '53 —भगवानदीन

طرح کام کے بنا دیئے جائیں تو کوئی وجہ نہیں کہ وہ گھوڑوں کا استھان نہ پا سکیں. ہر شہر ہر قصبے میں درمیانی درجے کے آدمی گائے پالنے کی بڑی خواہش رکھتے ہیں پر نہ اُن کے پاس رکھنے کو جگہ ہے' نہ چرانے کے لئے چراگاہ. اگر کوئی کسی شہر میں یہ ٹھیکہ لے لے کہ وہ گایوں کے لئے چراگاہوں کا انتظام کر لے گا اور گوالوں کی ایسی جماعت تیار کر دے گا جو پہلے کی طرح گھر گھر سے گائے لے جایا کریںگے اور شام کو واپس چھوڑ جایا کریںگے تو گورکشا کا سوال بڑی آسانی سے حل ہو جائیگا. گائے سے ہر ہندستانی کو محبت ہو جائیگی اور پھر شائد اس بات کی ضرورت ہی نہ رہ جائیگی کہ لوگ گوبدھ بندی قانون کے لئے سرکار کے پاس دوڑے دوڑے جائیں.

کسی راجکاجی فائدے کو نگاہ میں رکھکر گوبدھ بند کرنے کی آواز ہرگز نہیں اُٹھانی چاہئے. پر ہوتا ہمیشہ یہی رہا ہے. سب سے پہلے یہ آواز بادشاہ بابر نے اُٹھائی. گوبدھ روکنے کی صلاح اُس نے اپنے بیٹے ہمایوں کو دی. اِس صلاح میں گورکھشا کا اتنا خیال نہ تھا جتنا ہمایوں کے راج کے جمنے کا اور اُن مسلمانوں کے خلاف نفرت پیدا کرنے کا جو ہندستان میں پہلے سے موجود تھے اور جن کے ہاتھ میں ہندستانی حکومت کی باگ ڈور تھی. انگریزوں کے خلاف اِس ہتھیار سے کام لیا گیا. گاندھی جی کو چھوڑ کر بہت سے لوگوں نے مل کا کپڑا چھڑانے کے لئے یہ دلیل دی کہ اس میں گائے اور سور کی چربی لگتی ہے. آج بھی گوبدھ بندی کا سوال راجکاجی ہتھیار بنا ہوا ہے' سچے معنوں میں گورکھشا کا ہتھیار نہیں ہے.

9-6-'53 —بھگوان دین

यहां की म्यूनिसिपल्टी बध करने के लिये पास नहीं करती वह लोगों के हाथ पड़ जाती हैं और उनका बध चोरी चोरी होता है." हमने कहा, "वह रोका क्यों नहीं जाता ?" वह बोले, "रोके कौन ? जो रोकने वाले हैं वही तो बध कराते हैं." हम कुछ न समझ पाये, उन्होंने हमें यों समझाना शुरू किया :

दार्जिलिंग में यह लोग हैं जो गाय से क्या किसी भी जानवर से कुछ परहेज़ नहीं रखते. पहले नंबर पर हैं अंगरेज़, जो चाय बाग़ में रहते हैं, जिनकी तादाद एक हज़ारके लगभग है. दूसरे नंबर पर हैं नैपाली, जो दो हज़ार से कुछ ज़ियादा ही हैं. तीसरे नंबर पर हैं तिब्बती, जिनकी संख्या है तो कम पर फिर भी काफ़ी है. हम पूछ बैठे, "क्या नैपाली भी गाय से परहेज़ नहीं करते ?" वह बोले, "नैपाली ब्राह्मन क्षत्रिय वैश्य तो गाय से परहेज़ करते हैं पर शूद्र कहलाने वाली जातियां किसी तरह का भी परहेज़ नहीं रखतीं. और इन ही जातियों में से बहुत से लोग पुलिस में हैं. और एक तो ऐसी जगह पर है जहां उनके होने से गोबध में बड़ी मदद मिलती है. अब चोरी चोरी गोबध न हो तो क्या हो ? उन्होंने यह भी कहा कि जब से बंगाल में गोबध का क़ानून बना है तब से गोबध रुकना तो एक तरफ़, ऐसी गायें भी मरने लगी हैं जो पहले नहीं मारी जाती थीं.

यह सब ऐसी बातें हैं जिन पर ठंडे दिल से विचार करने की ज़रूरत है. भावुकता में डूब कर जो काम किये जाते हैं उनका नतीजा शुरू में भले ही कुछ भला मालूम हो अंत में बुरा ही रहता है.

कब से, क्यों, किसलिये हिन्दुस्तानी सरकार बड़ा मांस भेजने के लिये मजबूर है, पता नहीं ? वह एक तो कोरिया जाता है और दूसरे लिसबन जो योरप के राज स्पेन की राजधानी है. यह ब्योपार भी गोबध का ज़बरदस्त कारन है. पर हम इस तरफ़ भी निगाह क्यों डालें ? हमें तो सोचना यह है कि हम गोबध क्यों रोकना चाहते हैं ? सिर्फ़ इसीलिये कि हमें काफ़ी दूध नहीं मिलता और हमारी खेती बारी के लिये हमें काफ़ी मज़बूत बैल नहीं मिलते. अगर यह दो चीज़ हमें मिलने लगें तब हमारी निगाह गोबध की तरफ़ जाना बंद हो जायगी जिस तरह वेद काल में नहीं जाती थी. और यह दोनों काम गोरक्षा से हो सकते हैं, गोबध बंदी के क़ानून से नहीं.

घोड़े का बध नहीं होता. इतना ही नहीं, अब तो जंगली घोड़े मिलते ही नहीं. घोड़ा आदमी के लिये इतने काम का जानवर हो गया है कि आदमी उसके बध की बात सोच ही नहीं सकता. अगर सांड और बछड़े भी इसी

یہاں کی میونسپلٹی بدھ کرنے کے لئے پاس نہیں کرتی وہ لوگوں کے ہاتھ پڑ جاتی ہیں اور اُن کا بدھ چوری چوری ہوتا ہے ." ہم نے کہا' "وہ روکا کیوں نہیں جاتا ؟" وہ بولے' "رو کے کون ؟ جو روکنے والے ہیں وہی تو بدھ کراتے ہیں ." ہم کچھ نہ سمجھ پائے' انہوں نے ہمیں یوں سمجھانا شروع کیا :

دارجلنگ میں یہ لوگ ہیں جو گائے سے کیا کسی بھی جنور سے کچھ پرہیز نہیں رکھتے . پہلے نمبر پر ہیں انگریز' جو چائے باغ میں رہتے ہیں' جن کی تعداد ایک ہزار کے لگ بھگ ہے . دوسرے نمبر پر ہے نیپالی' جو دو ہزار سے کچھ زیادہ ہی ہیں. تیسرے نمبر پر ہیں تبتی' جن کی سنکھیا ہے تو کم پر پھر بھی کافی ہے . ہم پوچھ بیٹھے' '' کیا نیپالی بھی گائے سے پرہیز نہیں کرتے ؟" وہ بولے' " نیپالی براہمن چھتری ویش سے تو گائے پرہیز کرتے ہیں پر شودر کہلانے والی جاتیاں کسی طرح کا بھی پرہیز نہیں رکھتیں . اور اِنہیں جاتیوں میں سے بہت سے لوگ پولیس میں ہیں . اور ایک تو ایسی جگہ پر ہے جہاں اُن کے ہونے سے گوبدھ میں بڑی مدد ملتی ہے . اب چوری چوری گوبدھ نہ ہو تو کیا ہو ؟ اُنہوں نے یہ بھی کہا کہ جب سے بنگال میں گوبدھ کا قانون بنا ہے تب سے گوبدھ رکنا تو ایک طرف' ایسی گائیں بھی مرنے لگی ہیں جو پہلے نہیں ماری جاتی تھیں .

یہ سب ایسی باتیں ہیں جن پر ٹھنڈے دل سے وچار کرنے کی ضرورت ہے . بھاوکتا میں ڈوب کر جو کام کئے جاتے ہیں اُن کا نتیجہ شروع میں بھلے ہی کچھ بھلا معلوم ہو انت میں برا ہی رہتا ہے .

کب سے' کیوں' کس لئے ہندستانی سرکار بڑا مانس بھیجنے کےلئے مجبورہے' پتہ نہیں ؟ وہ ایک تو کوریا جاتا ہے اور دوسرے لسبن جو یورپ کےراج اسپین کی‌راجدھانی ہے . یہ بیوپار بھی گوبدھ کا زبردست کارن ہے . پر ہم اِس طرف بھی نگاہ کیوں ڈالیں ؟ ہمیں تو سوچنا یہ ہے کہ ہم گوبدھ کیوں روکنا چاہتے ہیں ؟ صرف اِسی لئے کہ ہمیں کافی دودھ نہیں ملتا اور ہماری کھیتی باڑی کے لئے ہمیں کافی مضبوط بیل نہیں ملتے . اگر یہ دو چیز ہمیں ملنے لگے تب ہماری نگاہ گوبدھ کی طرف جانا بند ہو جائے گی' جس طرح وید کال میں نہیں جاتی تھی . اور یہ دونوں کام گورکشا سے ہو سکتے ہیں . گوبدھ بندی قانون سے نہیں .

گھوڑے کا بدھ نہیں ہوتا. اِتنا ہی‌نہیں' اب تو جنگلی گھوڑے ملتے ہی نہیں . گھوڑا آدمی کے لئے اِتنے کام کا جانور ہوگیا ہے کہ آدمی اُس کے بدھ کی بات سوچ ہی نہیں سکتا . اگر سانڈ اور بچھڑے بھی اِسی

को जैसे बने अपने ऊपर से उठाकर फेंक दे. सेर भर रसगुल्ले पेट में पड़े भारी नहीं मालूम होते पर वही रसगुल्ले हाथ में रखे आदमी को थका देते हैं. और उनको फेंकने के लिये जल्दी ही जी मचलने लगता है. यही हाल सरकारी क़ानूनों का होता है. सरकारी क़ानून धर्म नियमों की तरह कभी भी आदमी के जीवन का अंग नहीं बन पाते.

आज जो लोग गोबध बंद करना चाहते हैं वह गोबध बंदी क़ानून तो बनवा सकते हैं पर गोबध रोक नहीं सकते. चोरी छिपे गोबध होता ही रहेगा. गोबध बंद कराने के काम में जो लोग सच्चे जी से लगे हुए हैं उनसे हम मिले हैं. उनका कहना है, बंगाल ने गोबध बंदी क़ानून पास किया, उसको चौदह म्युनिस्पिलटियों में लागू किया. नतीजा यह हुआ कि जहां वह लागू नहीं हुआ था वहां गोबध शुरू हो गया और गायों के मरने की तादाद उतनी ही बनी रही जितनी पहले थी. उनका यह भी कहना था कि जब तक सारे बंगाल में वह क़ानून लागू न किया जाय तब तक बंगाल में गोबध बंद नहीं हो सकता. हम पूछ बैठे, तब पड़ोसी रियासतों में होगा. वह बोले, "हां यह तो होगा ही." यह भी बोले, हिन्दुस्तान भर में ही लागू होने पर गोबध बंद हो सकता है. हमने कहा—"तब गोया, पांडेचेरी, कारीकाल, माही खुले रहेंगे क्योंकि यह हिन्दुस्तान में होते हुए भी विदेशी राज के कारन हिन्दुस्तान में नहीं माने जाते." वह बोले हां यह तो होगा ही. हमने कहा, "इतना ही क्यों, बंदरों की तरह फिर गायें भी बध होने के लिये विदेश लदने लगेंगी. वह बोले, "उसे रोकने के लिये एक क़ानून और बनाना पड़ेगा." मतलब यह कि क़ानून पर क़ानून बनाते जाइये और नतीजा कुछ नहीं.

आजकल गायें ज़ियादातर इस गरज़ से नहीं मारी जातीं जिस ग़रज़ से बकरे मारे जाते हैं. यह तो ब्योपार की ग़रज़ से मारी जाती हैं. हज़ारों लाखों मन बड़ा मांस कोरिया लद कर जाता है. या लिसबन की मंडी को चला जाता है जो योरप के एक देश की राजधानी है.

गाय को बध होने से बचाने के लिये यह बिलकुल ज़रूरी है कि एक ऐसी जमात तैयार की जाय जो हर तरह के मांस से परहेज़ करती हो. जैसा महावीर और बुद्ध के समय में हुआ. तब और तब ही यह संभव है कि गाय के लिये वही क़द्र फिर पैदा हो जाय जो कभी उस वक़्त पैदा हुई थी जब गाय से किसी को परहेज़ न था.

इसी महीने में हम दार्जिलिंग थे. वहां गोबध रोकने के प्रचारक से हमारी भेंट हुई. उन्होंने हमें बताया कि दार्जिलिंग के क़साई घर में 22 गायों का रोज़ बध होता है और इससे कई. गुना और गायें चोरी चोरी बध की जाती हैं. हमने पूछा यह चोरी से बध क्यों? वह बोले, "जो गायें

کو جیسے بنے اپنے اوپر سے اُٹھا کر پھینک دے۔ سیر بھر رس گلے پیٹ میں پڑے بھاری نہیں معلوم ہوتے پر وہی رس گلے ہاتھ میں رکھے آدمی کو تھکا دیتے ہیں۔ اور اُن کو پھینکنے کے لئے جلدی ہی جی مچلنے لگتا ہے۔ یہی حال سرکاری قانونوں کا ہوتا ہے۔ سرکاری قانون دھرم نیموں کی طرح کبھی بھی آدمی کے جیون کا انگ نہیں بن پاتے۔

آج جو لوگ گوبدھ بند کرنا چاہتے ہیں وہ گوبدھ بندی قانون تو بنوا سکتے ہیں پر گوبدھ روک نہیں سکتے۔ چوری چھپے گوبدھ ہوتا ہی رہے گا۔ گوبدھ بند کرانے کے کام میں جو لوگ سچے جی سے لگے ہوئے ہیں اُن سے ہم ملے ہیں۔ اُن کا کہنا ہے، بنگال نے گوبدھ بندی قانون پاس کیا، اسکو چودہ میونسپلٹیوں میں لاگو کیا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ جہاں وہ لاگو نہیں ہوا تھا وہاں گوبدھ شروع ہو گیا اور گایوں کے مرنے کی تعداد اُتنی ہی بنی رہی جتنی پہلے تھی۔ اُن کا یہ بھی کہنا تھا کہ جب تک سارے بنگال میں وہ قانون لاگو نہ کیا جائے تب تک بنگال میں گوبدھ بند نہیں ہو سکتا۔ ہم پوچھ بیٹھے، تب پڑوسی ریاستوں میں ہوگا۔ وہ بولے، "ہاں یہ تو ہوگا ہی۔" یہ بھی بولے، ہندستان بھر میں ہی لاگو ہونے پر گوبدھ بند ہو سکتا ہے۔ ہم نے کہا— "تب گویا، پانڈیچیری، کاری کال، ماہی کھلے رہیں گے کیونکہ یہ ہندستان میں ہوتے ہوئے بھی ودیشی راج کے کارن ہندستان میں نہیں مانے جاتے۔" وہ بولے ہاں یہ تو ہوگا ہی۔ ہم نے کہا، "اتنا ہی کیوں، بندروں کی طرح پھر گائیں بھی بدھ ہونے کے لئے ودیش لدنے لگینگی۔" وہ بولے، "اسے روکنے کے لئے قانون اور بنانا پڑے گا۔" مطلب یہ کہ قانون پر قانون بناتے جایئے اور نتیجہ کچھ نہیں۔

آج کل گائیں زیادہ تر اس غرض سے نہیں ماری جاتیں جس غرض سے بکرے مارے جاتے ہیں۔ یہ تو بیوپار کی غرض سے ماری جاتی ہیں۔ ہزاروں لاکھوں من بڑا ماس کوریا لد کر جاتا ہے یا لسبن کی منڈی کو چلا جاتا ہے جو یورپ کے ایک دیش کی راجدھانی ہے۔

گائے کو بدھ ہونے سے بچانے کے لئے یہ بالکل ضروری ہے کہ ایک ایسی جماعت تیار کی جائے جو ہر طرح کے ماس سے پرہیز کرتی ہو۔ جیسا مہاویر اور بدھ کے سمے میں ہوا۔ تب اور تب ہی یہ سمبھو ہے کہ گائے کے لئے وہی قدر پھر پیدا ہو جائے جو کبھی اُس وقت پیدا ہوئی تھی جب گائے سے کسی کو پرہیز نہ تھا۔

اِس مہینے میں ہم دارجلنگ تھے۔ وہاں گوبدھ روکنے کے پرچارک سے ہماری بھینٹ ہوئی۔ اُنہوں نے ہمیں بتایا کہ دارجلنگ کے قصائی گھر میں بائیس گایوں کا روز بدھ ہوتا ہے اور اِس سے کئی گنا اور گائیں چوری چوری بدھ کی جاتی ہیں۔ ہم نے پوچھا یہ چوری سے بدھ کیوں؟ تو وہ بولے، "جو گائیں

गोरक्षा बनाम गोवध बंदी

गोरक्षा से हमारा मतलब है गाय के लिये अच्छी चरागाहों का प्रबंध करना, गाय की नसल बढ़ाना, ऐसी दुधारी गाय तैयार करना जो एक वक़्त में दस पंद्रह सेर दूध दे सके. गाय के सुख के लिये सब तरह के साधन जुटाना. लोगों के लिये ऐसे सुभीते कर देना कि वह आसानी से गाय पाल सकें. बीमारी से बचने के लिये उचित साहित्य जुटाना और इलाज के लिये काफ़ी अस्पताल खोलना.

गोवध बंदी में यह सब बातें शामिल नहीं हैं. उसमें तो सिर्फ़ इस बात का शोर मचाया जाता है कि गायों का किसी तरह भी बध न होने पाए.

वेद काल में आर्य लोग गाय पालने के बड़े शौक़ीन थे. उस समय का साहित्य गाय की बढ़वारी का हाल इतना अच्छा बताता है कि उसको सुन सुनकर मुंह में पानी भर आता है. दूध की नदी बहने की बात सचमुच अगर कभी सही रही होगी तो वेद काल में ही सही रही होगी. पर उन दिनों गोवध बंद नहीं था.

उसके बाद के काल में भी गोवध बंद करने की बात कभी नहीं उठी. पर गोरक्षा ज़रूर होती रही. गोवध बंद करने की बात सिर्फ़ उस वक़्त उठी जब बुद्ध भगवान और महावीर स्वामी जैसों ने मांस खाने के खिलाफ़ आवाज़ उठाई. और सैकड़ों हज़ारों नहीं लाखों ने उनकी बात सुनी, मानी और उस पर अमल किया. करोड़ों के गले उतर गई. और वह चाहे मांस छोड़ न सकें हों तब भी निरामिश भोजियों से हर तरह की सहानुभूति रखते थे, उनकी इज़्ज़त करते थे. जब मांस न खाने वालों की तादाद काफ़ी हो गई तब एक आवाज़ यह भी उठी कि भाई अगर तुम और मांस नहीं छोड़ सकते तो कम से कम ऐसे पशु का मांस तो छोड़ो जो खेती में तुम्हारी बड़ी मदद करता है. मां के मर जाने पर आदमी के बच्चे का पालन करता है. और बेहद भोलाभाला है. इस आवाज़ ने जब बड़ा रूप लिया तब नतीजा यह हुआ कि लोग जिस गाय को बहुत पहले से मां समझते आ रहे थे सच्चे मानों में मां मानने लगे और उसके बछड़ों को अपना भाई समझने लगे. फ़िर जल्दी ही वह दिन आ गया कि गाय का बध करना, अपने आप अधर्म बन बैठा. गोवध बंद करने का अगर कहीं क़ानून बना होता तो गाय को यह बड़ी जगह कभी न मिली होती जो आज मिली हुई है. धर्म विधान और राज विधान में यही तो अंतर है. धर्म विधान आदमी के मन मस्तक में ही नहीं सारी आत्मा में रम जाता है. और राज विधान ऊपर ऊपर रहता है जिसे आदमी हमेशा बोझ समझता रहता है. अंदर से यह चाहता रहता है कि वह उस बोझे

گورکشا بنام گوبدھ بندی

گورکشا سے ہمارا مطلب ہے گائے کے لئے اچھی چراگاہوں کا پربندھ کرنا' گائے کی نسل بڑھانا' ایسی دودھاری گائے تیار کرنا جو ایک وقت میں دس پندرہ سیر دودھ دے سکے . گائے کے سکھ کے لئے سب طرح کے سادھن جٹانا . لوگوں کے لئے ایسے سبھیتے کر دینا کہ وہ آسانی سے گائے پال سکیں . بیماری سے بچنے کے لئے اُچت ساہتیہ جٹانا اور علاج کے لئے کافی اسپتال کھولنا .

گوبدھ بندی میں یہ سب باتیں شامل نہیں ہیں . اُس میں تو صرف اِس بات کا شور مچایا جاتا ہے کہ گایوں کا کسی طرح بھی بدھ نہ ہونے پائے .

وید کال میں آریہ لوگ گائے پالنے کے بڑے شوقین تھے. اُس سمے کا ساہتیہ گائے کی بڑھواری کا حال اِتنا اچھا بتاتا ہے کہ اُسکو سن سن کر منہ میں پانی بھر آتا ہے . دودھ کی ندی بہنے کی بات سچ مچ اگر کبھی صحیح رہی ہوگی' تو وید کال ہی میں صحیح رہی ہوگی . پر اُن دنوں گوبدھ بند نہیں تھا .

اُس کے بعد کے کال میں بھی گو بدھ بند کرنے کی بات کبھی نہیں اُٹھی . پر گورکشا ضرور ہوتی رہی . گوبدھ بند کرنے کی بات صرف اُس وقت اُٹھی جب بدھ بھگوان اور مہاویر سوامی جیسوں نے مانس کھانے کے خلاف آواز اُٹھائی اور سیکڑوں ہزاروں نہیں لاکھوں نے اُن کی بات سنی' مانی اور اُس پر عمل کیا . کروڑوں کے گلے اُتر گئی . اور وہ چاہے مانس نہ چھوڑ سکے ہوں تب بھی نرامش بھوجیوں سے ہر طرح کی سہانوبھوتی رکھتے تھے' اُن کی عزت کرتے تھے . جب مانس نہ کھانے والوں کی تعداد کافی ہوگئی تب ایک آواز یہ بھی اُٹھی کہ بھائی' اگر تم اور مانس نہیں چھوڑ سکتے تو کم سے کم ایسے پشو کا مانس تو چھوڑو جو کھیتی میں تمہاری بڑی مدد کرتا ہے . ماں کے مر جانے پر آدمی کے بچے کا پالن کرتا ہے . اور بے حد بھولا بھالا ہے . اِس آواز نے جب بڑا روپ لیا تب نتیجہ ہوا کہ لوگ جس گائے کو بہت پہلے سے ماں سمجھتے آ رہے تھے سچے معنوں میں ماں ماننے لگے اور اُس کے بچھڑوں کو اپنا بھائی سمجھنے لگے . پھر جلدی ہی وہ دن آ گیا کہ گائے کا بدھ کرنا' اپنے آپ ادھرم بن بیٹھا . گوبدھ بند کرنے کا اگر کہیں قانون بنا ہوتا تو گائے کو یہ بڑی جگہ کبھی نہ ملی ہوتی جو آج ملی ہوئی ہے . دھرم ودھان اور راج ودھان میں یہی تو انتر ہے . دھرم ودھان آدمی کے من مستک میں ہی نہیں ساری آتما میں رم جاتا ہے . اور راج ودھان اوپر اوپر رہتا ہے جسے آدمی ہمیشہ بوجھ سمجھتا رہتا ہے . اندر سے یہ چاہتا رہتا ہے کہ وہ اُس بوجھ

हमारी राय

डाक्टर लोहिया ने वह दोनों खत आचार्य कृपलानी के अखबार "विजिल" में छपवा दिये. लेकिन मिस स्किनर का नाम जाहिर नहीं किया गया. पर न जाने कैसे दिल्ली के अमरीकी दूतावास ने लेखक का ठीक पता लगा लिया. यह बात हमारे लिये शर्म की है. इसका मतलब यह है कि हम एक मामूली सा राज़ भी छिपा कर नहीं रख सकते और इसका मतलब यह भी है कि अमरीकी खुफ़िया जाल बहुत दूर तक फैले हुए हैं. नतीजा यह हुआ कि मिस स्किनर को नौकरी से हटा दिया गया और हुकुम दिया गया कि वह फ़ौरन अमरीका के लिये रवाना हो जायं. वहां मैकारथी की रस्सी स्किनर की गरदन के इन्तज़ार में है.

सच को इस तरह दबाना, सच्चों को इस तरह से खतम करना अगर आज़ादी है तो अमरीका में यह आज़ादी काफ़ी मात्रा में पाई जाती है !

एक दो फुटकर घटनायें यह नहीं हैं बल्कि यह वह घटनायें हैं जो किसी तरह जाहिर हो गई हैं. 25 मई को स्टेनली बुर्च ने लन्दन से निकलने वाले अखबार 'न्यूज़ क्रानिकल' में लिखा है कि 12000 विदेशी अमरीका से निकाले जा रहे हैं और दस हज़ार ऐसे व्यक्तियों के बारे में सोचा जा रहा है कि उन्हें अमरीका का नागरिक रहने दिया जाय या नहीं जो कि बाहर से आ कर अमरीका के नागरिक बन गए थे सवाल उठता है आखिर इन लोगों की क्या खता है जिसकी वजह से उन्हें देश निकाला मिल रहा है. अमरीकी स्टेट डिपार्टमेन्ट के सूचना विभाग के सेक्रेटरी डाक्टर राबर्ट जानसन ने इस बात का ठीक जवाब दिया है—"जो आदमी सरकार के मनसूबों से पूरी हमदरदी नहीं रखता उसे खतम कर दिया जायगा." ध्यान रहे कि यह शब्द उस देश के जिम्मेदार शासक के हैं जो लोकशाही के नाम पर खूनखराबा करता फिरता है और दिमाग़ी आज़ादी को बहुत अहम समझता है और ऐसी आज़ादी प्राप्त करने के लिये वह करोड़ों जानें मार सकता है, यहां तक कि ऐटम बम का उपयोग कर सकता है.

इन घटनाओं को पढ़कर रोएं खड़े हो जाना स्वाभाविक है. पर अब अमल का वक़्त है. हमें चाहिये कि अमरीका के विद्वानों, समाजी काम करने वालों और हर तरह के लोगों की जान बचाने की हम कोशिश करें. इसके लिये ज़रूरी है कि एक संगठन खड़ा किया जाय जो इस तरह के सवालों को लेकर यहां के अमरीकी दूतावास पर असर डाले और मज़लूमों के साथ हमदरदी दिखा कर अमरीकी जनता को नैतिक बल दे जिससे कि वह इस बरबरता के खिलाफ़ आवाज़ उठा सके और जुल्म का खतमा कर सके.

15. 6. '53 —मुजीब रिज़वी

ہماری رائے

ڈاکٹر لوہیا نے وہ دونوں خط آچاریہ کرپلانی کے اخبار "وجل" میں چھپوا دیئے. لیکن مس اسکنر کا نام ظاہر نہیں کیا. پر نہ جانے کیسے دلی کے امریکی دوتاواس نے لیکھک کا ٹھیک پتہ لگا لیا. یہ بات ہمارے لئے شرم کی ہے. اسکا مطلب یہ ہے کہ ہم ایک معمولی سا راز بھی چھپا کر نہیں رکھ سکتے اور اسکا مطلب یہ بھی ہے کہ امریکی خفیہ جال بہت دور تک پھیلے ہوئے ہیں. نتیجہ یہ ہوا کہ مس اسکنر کو نوکری سے ہٹا دیا گیا اور حکم دیا گیا کہ وہ فوراً امریکہ کے لئے روانہ ہو جائیں. وہاں میکارتھی کی رسی اسکنر کی گردن کے انتظار میں ہے.

سچ کو اس طرح دبانا' سچوں کو اس طرح سے ختم کرنا اگر آزادی ہے تو امریکہ میں یہ آزادی کافی ماترا میں پائی جاتی ہے!

ایک دو پھٹکر گھٹنائیں یہ نہیں ہیں بلکہ یہ وہ گھٹنائیں ہیں جو کسی طرح ظاہر ہو گئی ہیں. 25 مئی کو اسٹینلی برچ نے لندن سے نکلنے والے اخبار 'نیوز کرانیکل' میں لکھا ہے کہ 12000 ودیشی امریکہ سے نکالے جا رہے ہیں اور دس ہزار ایسے ویکتیوں کے بارے میں سوچا جا رہا ہے کہ انہیں امریکہ کا ناگرک رہنے دیا جائے یا نہیں جو کہ باہر سے آ کر امریکہ کے ناگرک بن گئے تھے. سوال اٹھتا ہے' آخر ان لوگوں کی کیا خطا ہے جس کی وجہ سے انہیں دیش نکالا مل رہا ہے. امریکی اسٹیٹ ڈپارٹمنٹ کے سوچنا وبھاگ کے سکریٹری ڈاکٹر رابرٹ جانسن نے اس بات کا ٹھیک جواب دیا ہے—"جو آدمی سرکار کے منصوبوں سے پوری ہمدردی نہیں رکھتا اسے ختم کر دیا جائے گا." دھیان رہے کہ یہ شبد اس دیش کے ذمہ دار شاسک کے ہیں جو لوک شاہی کے نام پر خون خرابہ کرتا پھرتا ہے اور دماغی آزادی کو بہت اہم سمجھتا ہے اور ایسی آزادی پراپت کرنے کے لئے وہ کروڑوں جانیں مار سکتا ہے' یہاں تک کہ ایٹم بم کا اپیوگ کر سکتا ہے.

ان گھٹناؤں کو پڑھکر رونگٹے کھڑے ہو جانا سوابھاوک ہے. پر اب عمل کا وقت ہے. ہمیں چاہئے کہ امریکہ کے ودوانوں' سماجی کام کرنے والوں اور ہر طرح کے لوگوں کی جان بچانے کی ہم کوشش کریں. اس کے لئے ضروری ہے کہ ایک سنگٹھن کھڑا کیا جائے جو اسطرح کے سوالوں کو لے کر یہاں کے امریکی دوتاواس پر اثر ڈالے اور مظلوموں کے ساتھ ہمدردی دکھا کر امریکی جنتا کو نیتک بل دے جس سے کہ وہ اس بربرتا کے خلاف آواز اٹھا سکے اور ظلم کا خاتمہ کر سکے.

—مجیب رضوی 15-6-53

मान ली जाय तो सवाल उठता है कि प्रोफ़ेसर लेटिमूर, बुनचे और दूसरे जाने पहचाने नेता भी क्या राज को उलटने की धुन में हैं. दुनिया इन्हें कमयुनिस्ट विरोधी तो कह सकती है पर इन पर कमयुनिस्ट होने का शक नहीं कर सकती. हम उन सब को छोड़ देते हैं जो ख़ुदकुशी करके "लोकशाही" की वेदी पर बली चढ़ गए. यहां हम उन वाक़ेआत पर रोशनी डालना चाहते हैं जो हाल के हैं.

प्रोफ़ेसर लैटिमूर जैसे विद्वान पर हर आदमी फ़ख़्र करेगा. पर इन तक को नहीं छोड़ा गया. तरह तरह से परेशान करके यह साबित करने की कोशिश की गई कि यह कमयुनिस्ट हैं और इसलिये इन पर विश्वासघात का इलज़ाम लगा कर ख़तम कर दिया जाय. लैटिमूर पर अब भी मुक़दमा चल रहा है और जो इलज़ाम इन पर है वह ख़ुद अमरीकी लोकशाही की क़लई खोल कर रख देता है : दूसरी लड़ाई के ज़माने में प्रोफ़ेसर लैटिमूर ने किसी दिन रूसी राजदूत के साथ खाना खाया था. सरकारी पक्ष का कहना है कि चूंकि रूसी राजदूत से इनका रोटी का सम्बन्ध था इसलिये यह ज़रूर रूसी एजेन्ट होंगे. लैटिमूर ने सफ़ाई दी है कि उन्होंने रूसी राजदूत के साथ उस समय खाना खाया है जब रूस और अमरीका एक साथ हो गए थे. पर सरकार का कहना है कि उन्होंने खाना रूस और अमरीका के ऐके से पहले खाया है. सुपरीम कोर्ट को पहले इस बात का फ़ैसला करना है कि उन्होंने खाना पहले खाया था या पीछे !

भारत की सोशलिस्ट पारटी और उसके नेता डाक्टर राममनोहर लोहिया पर कोई कमयुनिस्ट होने का इलज़ाम नहीं लगा सकता बल्कि लोग अमरीका के साथी होने का इन पर शक करते हैं. कलकत्ते में बोलते हुए डाक्टर साहब को भी दर्द भरे शब्दों में अमरीका से अपील करनी पड़ी कि वह सच बोलने पर मिस मारग्रेट स्किनर को सज़ा न दे. घटना यूं है : फ़िलीपाइन पर अमरीका क़ब्ज़ा जमाए हुए है. वहां की जनता बेहद ग़रीब है और उनकी ग़रीबी पर अमरीकी दौलत के महल खड़े कर रहे हैं. मिस स्किनर को अमरीका से स्कालरशिप देकर फ़िलीपाइन की राजधानी मनीला भेजा गया था. वह मनीला के एक स्कूल में पढ़ाती थीं. मनीला में रहकर उन्होंने उस देश की दुर्दशा को अच्छी तरह देखा और देसी लोगों के साथ अमरीकी जो व्योहार करते थे उससे उनको बहुत धक्का लगा. डाक्टर लोहिया मनीला गए थे। और मिस स्किनर ने उन से वहां मुलाक़ात की थी. डाक्टर साहब के हिन्दुस्तान लौटने पर मिस स्किनर ने दो ख़त डाक्टर लोहिया को लिखे थे जिस में वहां के हालात पर रोशनी डाली थी.

مان لی جائے تو سوال اُٹھتا ہے کہ پروفیسر لیٹیمور، بنچے اور دوسرے جانے پہچانے نیتا بھی کیا راج کو اُلٹنے کے دھن میں ہیں. دنیا اُنہیں کمیونسٹ ورودھی تو کہ سکتی ہے پر اِن پر کمیونسٹ ہونے کا شک نہیں کرسکتی. ہم اُن سب کو چھوڑ دیتے ہیں جو خودکشی کرکے "لوک شاہی" کی ویدی پر بلی چڑھ گئے. یہاں ہم اِن واقعات پر روشنی ڈالنا چاہتے ہیں جو حال کے ہیں.

پروفیسر لیٹیمور جیسے ودوان پر ہر آدمی فخر کرے گا. پر اِن تک کو نہیں چھوڑا گیا. طرح طرح سے پریشان کر کے یہ ثابت کرنے کی کوشش کی گئی کہ یہ کمیونسٹ ہیں اور اس لئے اِن پر وشواس گھات کا الزام لگا کر ختم کر دیا جائے. لیٹیمور پر اب بھی مقدمہ چل رہا ہے اور جو الزام اِن پر ہے وہ خود امریکی لوک شاہی کی قلعی کھول کر رکھ دیتا ہے : دوسری لڑائی کے زمانے میں پروفیسر لیٹیمور نے کسی دن روسی راجدوت کے ساتھ کھانا کھایا تھا. سرکاری پکش کا کہنا ہے کہ چونکہ روسی راجدوت سے اِن کا روٹی کا سمبندھ تھا اِسلئے یہ ضرور روسی ایجنٹ ہونگے. لیٹیمور نے صفائی دی ہے کہ انہوں نے روسی راجدوت کے ساتھ اُس سمے کھانا کھایا ہے جب روس اور امریکہ ایک ساتھ ہوگئے تھے. پر سرکار کا کہنا ہے کہ انہوں نے کھانا روس اور امریکہ کے ایکے سے پہلے کھایا ہے. سوپریم کورٹ کو پہلے اس بات کا فیصلہ کرنا ہے کہ اُنہوں نے کھانا پہلے کھایا تھا یا پیچھے !

بھارت کی سوشلسٹ پارٹی اور اسکے نیتا ڈاکٹر رام منوہر لوہیا پر کوئی کمیونسٹ ہونے کا الزام نہیں لگا سکتا بلکہ لوگ امریکہ کے ساتھی ہونے کا اِن پر شک کرتے ہیں. کلکتہ میں بولتے ہوئے ڈاکٹر صاحب کو بھی درد بھرے شبدوں میں امریکہ سے اپیل کرنی پڑی کہ وہ سچ بولنے پر مس مارگریٹ اسکنر کو سزا نہ دے. گھٹنا یوں ہے : فلپائن پر امریکہ قبضہ جمائے ہوئے ہے. وہاں کی جنتا بے حد غریب ہے اور اُن کی غریبی پر امریکی دولت کے محل کھڑے کر رہے ہیں. مس اسکنر کو امریکہ سے اسکالرشپ دے کر فلپائن کی راجدھانی منیلا بھیجا گیا تھا. وہ منیلا کے ایک اسکول میں پڑھاتی تھیں. منیلا میں رہ کر اُنہوں نے اُس دیش کی دردشا کو اچھی طرح دیکھا اور دیسی لوگوں کے ساتھ امریکی جو بیوہار کرتے تھے اس سے اُن کو بہت دھکا لگا. ڈاکٹر لوہیا منیلا گئے تھے اور مس اسکنر نے اُن سے وہاں ملاقات کی تھی. ڈاکٹر صاحب کے ہندستان لوٹنے پر مس اسکنر نے دو خط ڈاکٹر لوہیا کو لکھے تھے جس میں وہاں کے حالات پر روشنی ڈالی تھی.

में पूंजीवाद की रक्षा का नाम न लेकर लोकशाही की रक्षा का नाम क्यों लेते हैं ? इस सवाल पर सोचने पर पता चलता है कि पूंजीवाद का ढांचा इतना सड़ा है और उसकी नैतिकता इतनी गिरी है कि आम जनता की अदालत के सामने उसके पक्ष में कुछ नहीं कहा जा सकता. सब जानते हैं कि अमरीका पूंजीवाद का अलमबरदार है और उसी व्यवस्था से वह चिपका रहना चाहता है. पर उसमें इतना साहस बाक़ी नहीं रह गया है कि वह इस बात को साफ़ साफ़ कह सके. कमयुनिज़्म की यह ज़बरदस्त नैतिक जीत है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता.

कुछ लोग हमारी बात को नहीं मानेंगे और कहेंगे कि अमरीका लोकशाही का नाम इसलिये लेता है क्योंकि रूस में तानाशाही है. विरोध असल में कमयुनिज़्म का नहीं है बल्कि तानाशाही ढंग के राज का है. हम इस बात को नहीं मानते. फिर भी इस बात पर विचार करना ग़लत न होगा.

बात समझने के लिये हम अमरीका की उस नीति को लें जो "लोकशाही" की रक्षा के लिये बनाई गई है. डलेस साहब ने शान्ति के पांच खम्बे बनाए हैं. पांचवां खम्बा यह है—"धार्मिक और दिमाग़ी आज़ादी." यह बात बहुत ही अच्छी है और दिल पर असर करती है. पर अमरीकी लोकशाही में इस पर अमल किस तरह किया जाता है, यह बात सोचने की है. ख़ुद अमल करके जो उपदेश दूसरों को दिया जाता है वह ज़ियादा असरदार होता है. हमें दुख है कि अमरीका वालों के शब्दों और कामों में ज़मीन आसमान की दूरी है.

आज यह बात छिपी नहीं है कि सैकड़ों ने अमरीका में ख़ुदकुशी कर ली है और हज़ारों जेलों में बन्द हैं. मैकारथी का नाम सुन कर तो हम लोगों के बदन में भी झुरझुरी पैदा हो जाती है. अगर दिमाग़ी आज़ादी से मतलब किसी ख़ास तरह की आज़ादी से है तो हमें कुछ नहीं कहना पर अगर दिमाग़ी आज़ादी का मतलब है माली, समाजी, नैतिक, धार्मिक विचार रखना और आज़ादी से उनको ज़ाहिर करना तो हमें यह बात घटनाओं के आधार पर मानना पड़ती है कि अमरीका में यह आज़ादी आज बिलकुल नहीं है. कमयुनिज़्म एक विचार है और उस विचार के मानने वालों को आज़ादी मिलना चाहिये. शायद आदर्श के रूप में अमरीकी शासक इस बात को मानते हों पर अमल में मामला बिलकुल उलटा है.

कमयुनिस्ट पारटी के मेम्बरों को जेलों में रखा जाता है, उन्हें तरह तरह से ज़लील किया जाता है. इसका जवाब यह हो सकता है कि यह लोग ताक़त से राज उलटना चाहते हैं, इस कारन से इनको सज़ाएं दी जाती हैं, नहीं तो कमयुनिज़्म को मानना जुर्म नहीं है. अगर यह बात

میں پونجی‌واد کی رکشا کا نام نہ لیکر لوک شاہی کی رکشا کا نام کیوں لیتے ہیں ؟ اس سوال پر سوچنے پر پتہ چلتا ہے کہ پونجی‌واد کا ڈھانچہ اتنا سڑا ہے اور اسکی نیتکتا اتنی گری ہے کہ عام جنتا کی عدالت کے سامنے اس کے پکش میں کچھ نہیں کہا جاسکتا . سب جانتے ہیں کہ امریکہ پونجی‌واد کا علمبردار ہے اور اسی ویوستھا سے وہ چپکا رہنا چاہتا ہے. پر اس میں اتنا ساہس باقی نہیں رہ گیا ہے کہ وہ اس بات کو صاف صاف کہہ سکے . کمیونزم کی یہ زبردست نیتک جیت ہے' اس سے انکار نہیں کیا جاسکتا .

کچھ لوگ ہماری بات کو نہیں مانیں‌گے اور کہیں گے کہ امریکہ لوک شاہی کا نام اس لئے لیتا ہے کیونکہ روس تانا شاہی ہے . وِرودھ اصل میں کمیونزم کا نہیں ہے بلکہ تانا شاہی ڈھنگ کے راج کا ہے . ہم اس بات کو نہیں مانتے . پھر بھی اس بات پر وچار کرنا غلط نہ ہوگا .

بات سمجھنے کے لئے ہم امریکہ کی اس نیتی کو لیں جو "لوک شاہی" کی رکشا کے لئے بنائی گئی ہے. ڈلس صاحب نے "شانتی کے پانچ کھمبے بنائے ہیں . پانچواں کھمبا یہ ہے—"دھارمک اور دماغی آزادی." یہ بات بہت ہی اچھی ہے اور دل پر اثر کرتی ہے. پر امریکی لوک شاہی میں اس پر عمل کس طرح کیا جاتا ہے' یہ بات سوچنے کی ہے. خود عمل کرکے جو اپدیش دوسروں کو دیا جاتا ہے وہ زیادہ اثردار ہوتا ہے . ہمیں دکھ ہے کہ امریکہ والوں کے شبدوں اور کاموں میں زمین آسمان کی دوری ہے .

آج یہ بات چھپی نہیں ہے کہ سیکڑوں نے امریکہ میں خودکشی کرلی ہے اور ہزاروں جیلوں میں بند ہیں. میک‌آرتھی کا نام سنکر تو ہم لوگوں کے بدن میں بھی جھرجھری پیدا ہو جاتی ہے . اگر دماغی آزادی سے مطلب کسی خاص طرح کی آزادی سے ہے تو ہمیں کچھ نہیں کہنا. پر اگر دماغی آزادی کا مطلب ہے مالی' سماجی' نیتک' دھارمک وچار رکھنا اور آزادی سے ان کو ظاہر کرنا تو ہمیں یہ بات گھٹناؤں کے آدھار پر ماننا پڑتی ہے کہ امریکہ میں یہ آزادی آج بالکل نہیں ہے . کمیونزم ایک وچار ہے اور اس وچار کے ماننے والوں کو آزادی ملنا چاہئے . شاید آدرش کے روپ میں امریکی شاسک اس بات کو مانتے ہوں پر عمل میں معاملہ بالکل الٹا ہے .

کمیونسٹ پارٹی کے ممبروں کو جیلوں میں رکھا جاتا ہے' انہیں طرح طرح سے ذلیل کیا جاتا ہے . اس کا جواب یہ ہوسکتا ہے کہ یہ لوگ طاقت سے راج الٹنا چاہتے ہیں' اس کارن سے ان کو سزائیں دی جاتی ہیں' نہیں تو کمیونزم کو ماننا جرم نہیں ہے . اگر یہ بات

मानता है और जमींदारों से उनकी ज़मीन का छठा हिस्सा कर के रूप में किसानों को दिलाता है, उसके दान और यज्ञ शब्दों का क्या अर्थ होगा इसे भी समझदार न समझे ऐसा कैसे हो सकता है? लोगों ने यह अर्थ भी कैसे निकाल लिया कि ज़मींदार अपनी ज़मीन का छटा भाग देकर हमेशा के लिये छूट जायंगे. क्या कर एक ही बार उगाया जाता है. कर तरह तरह के होते हैं. कुछ साल में दो बार वसूल किये जाते हैं, कुछ एक बार, और कुछ कई साल के बाद. यह छटे भाग वाला भूमि कर किस तरह का है यह अभी तय ही कहां किया गया. यह तो राजा ही तय करेगा. और विनोबा की राजा है जनता.

जब विनोबा जी भूमि दान के लिये निकले थे तब 'नया हिन्द' में हमने एक नोट लिखा था. उस वक़्त हमने यह कहा था कि हमारी निगाह इस तरफ़ नहीं रहेगी कि विनोबा जी को कब कहां कितनी ज़मीन मिली है. हमारी निगाह तो इस तरफ़ रहेगी कि उन्हें इस बात में कहां तक सफलता हुई कि हिंसा से नहीं अहिंसा से भी यह काम हो सकता है. और आज हम यह नोट इस बात को लेकर लिख रहे हैं कि हमें यह चिंता नहीं कि कब सब ज़मीन किसानों के हाथ में आती है, हमें तो यह चिन्ता है कि कब हिन्दुस्तान की सारी जनता यह समझने लगती है कि हिन्दुस्तान की वह मालिक है न कि वह सरकार जिसको उसने खड़ा किया है. और यह ऐसा काम है जिस पर हर एक को खुश होना चाहिये.

10-6-'53 —भगवानदीन

लोकशाही और अमरीका

जिन शब्दों का सब से ज़ियादा दुरुपयोग हुआ है उनमें से "लोकशाही" एक है. तरह तरह के मानी इस शब्द को पहनाए जाने लगे हैं. अमरीका वाले तो इस हद तक गए हैं कि उनकी हर नीति "लोकशाही" कही जाने लगी है. आम ख़याल यह है कि लोकशाही और कमयुनिज़्म दो गिरोह हैं. कमयुनिज़्म का सरदार रूस है और लोकशाही का अलमबरदार अमरीका है. पर समझने की बात यह है कि लोकशाही के मुक़ाबले में तानाशाही, बादशाही वग़ैरा को तो खड़ा किया जा सकता है पर कमयुनिज़्म से उसकी कोई होड़ नहीं हो सकती. कमयुनिज़्म एक तरह की माली व्यवस्था और उस माली व्यवस्था के आधार पर बनने वाली नई दुनिया का नाम है. लोकशाही सिर्फ़ उस मशीन का नाम है जिसने राजा से राज सत्ता अपने हाथों में ले ली है.

कमयुनिज़्म एक मनज़िल है और लोशाही सिर्फ़ एक रास्ता. मनज़िल और रास्ते में टक्कर नामुमकिन है. लेकिन सवाल उठता है कि अमरीका वाले कमयुनिज़्म के मुक़ाबले

مانتا ہے اور زمینداروں سے اُنکی زمین کا چھٹا حصہ کر کے روپ میں کسانوں کو دلاتا ہے' اُس کے دان اور یگیہ شبدوں کا کیا ارتھ ہوگا اِسے بھی سمجھدار نہ سمجھے ایسا کیسے ہوسکتا ہے؟ لوگوں نے یہ ارتھ بھی کیسے نکال لیا کہ زمیندار اپنی زمین کا چھٹا بھاگ دیکر ہمیشہ کے لئے چھوٹ جائینگے. کیا کر ایک ہی بار اُٹھایا جاتا ہے. کر طرح طرح کے ہوتے ہیں. کچھ سال میں دوبارہ وصول کئے جاتے ہیں' کچھ ایک بار اور کچھ کئی سال کے بعد. یہ چھٹے بھاگ والا بھومی کر کس طرح کا ہے یہ ابھی طے ہی کہاں کیا گیا. یہ تو راجہ ہی طے کریگا. اور ونوبا کی راجہ ہے جنتا.

جب ونوبا جی بھومی دان کے لئے نکلے تھے تب 'نیا ہند' میں ہم نے ایک نوٹ لکھا تھا. اُس وقت ہم نے یہ کہا تھا کہ ہماری نگاہ اِس طرف نہیں رہیگی کہ ونوبا جی کو کب کہاں کتنی زمین ملی ہے. ہماری نگاہ تو اِس طرف رہیگی کہ اُنہیں اِس بات میں کہاں تک سپھلتا ہوئی کہ ہنسا سے نہیں اہنسا سے بھی یہ کام ہوسکتا ہے. اور آج ہم یہ نوٹ اِس بات کو لیکر لکھ رہے ہیں کہ ہمیں یہ چنتا نہیں کہ کب سب زمین کسانوں کے ہاتھ میں آتی ہے' ہمیں تو یہ چنتا ہے کہ کب ہندستان کی ساری جنتا یہ سمجھنے لگتی ہے کہ ہندستان کی وہ مالک ہے نہ کہ وہ سرکار جسکو اُس نے کھڑا کیا ہے. اور یہ ایسا کام ہے جس پر ہر ایک کو خوش ہونا چاہئے.

10 . 6 . '53 —بھگوان دین

لوک شاہی اور امریکہ

جن شبدوں کا سب سے زیادہ دراُپیوگ ہوا ہے اُن میں سے "لوک شاہی" ایک ہے. طرح طرح کے معنی اِس شبد کو پہنائے جانے لگے ہیں. امریکہ والے تو اِس حد تک گئے ہیں کہ اُنکی ہر نیتی "لوک شاہی" کہی جانے لگی ہے. عام خیال یہ ہے کہ لوک شاہی اور کمیونزم دو گروہ ہیں. کمیونزم کا سردار روس ہے اور لوک شاہی کا علمبردار امریکہ ہے. پر سمجھنے کی بات یہ ہے کہ لوک شاہی کے مقابلے میں تانا شاہی' بادشاہی وغیرہ کو تو کھڑا کیا جاسکتا ہے پر کمیونزم سے اُسکی کوئی ہوڑ نہیں ہوسکتی. کمیونزم ایک طرح کی مالی ویوستھا اور اُس مالی ویوستھا کے آدھار پر بننے والی نئی دنیا کا نام ہے. لوک شاہی صرف اُس مشین کا نام ہے جس نے راجا سے راج ستا اپنے ہاتھوں میں لے لی ہے.

کمیونزم ایک منزل ہے اور لوک شاہی صرف ایک راستہ. منزل اورا راستہ میں ٹکر ناممکن ہے. لیکن سوال اُٹھتا ہے کہ امریکہ والے کمیونزم کے مقابلے

सुनकर ऐसे ही इतनी जल्दी मर जाता था जैसे आजकल कोई पुटाशियम साइनाइट चाट कर मर सकता है. प्रेम में मारने की जितनी ज़ियादा ताक़त होती है उतनी क्रोध में नहीं पर, क्रोध जितनी आसानी से सिद्ध होता है उतनी आसानी से प्रेम सिद्ध नहीं होता. ऐसी बात किसने नहीं सुनी कि अमुक पत्नी अपने पति के मरने की ख़बर सुनकर एकदम दम तोड़ बैठी या अमुक मां अपने बच्चे की मौत पर अपनी जान से हाथ धो बैठी. चितौड़ के अग्नि कुंड में अगर दस नारियां ढकेली गईं थीं तो सैकड़ों ने उसी कुंड में ख़ुश ख़ुश छलांग भी मारी थी. पुरानी बातें छोड़िये. लाखों रुपयों का माल दुकानदारों ने ख़ुशी ख़ुशी सन 1921 में ऐसे ही जला दिया था जैसे बुद्ध भगवान ने अपना राज छोड़ दिया था. फिर विनोबा को यह सोचने का क्यों हक़ नहीं कि अगर कांगरेस और दूसरी संस्थायें उसके साथ उसके आंदोलन में जुट जायं तो ज़मीन का सवाल एक दिन में हल हो सकता है.

जिसे देखो वह विनोबा को डिगाने की फ़िकर में लगा हुआ है. हम इसे बुरा नहीं समझते. इसके बग़ैर कोई इस बात का यक़ीन भी कैसे करेगा कि जो काम विनोबा ने उठाया है वह हो सकता है. सोने ने, कब कहां, आग में तपे बिना किसी को यक़ीन दिलाया है कि उसकी चमक सदा रहने वाली है?

हम यह मानने के लिये तैयार नहीं कि विनोबा जी यह नहीं जानते कि जिस तरह वह अपने तरीक़े के पूरे विश्वासी हैं वैसे ही कुछ लोग इस बात के विश्वासी हैं कि यह काम सरकार की मार्फ़त क़लम के एक इशारे से हो सकता है, या डंडे के बल पर कुछ दिनों में हो सकता है. पर वह तो आंखों से देख रहे हैं कि दूसरी तरह के विश्वासी कहीं हैं ही नहीं, फिर क्या वह चुप होकर बैठ जायं. वह मैदान में कूदे हुए हैं, उन्हें हक़ हासिल है कि वह दूसरों को अपने साथ आने के लिये ललकारें. दूसरे जब मैदान में ही नहीं हैं तो वह उन्हें कैसे अपने पास आने के लिये कह सकते हैं. बम फेंकने वालों ने गांधी जी का साथ उस वक़्त तक नहीं दिया था जब वह चंपारन में सत्याग्रह की सोच रहे थे, उस वक़्त दिया था जब सन 1921 में उन्होंने हिन्दुस्तान में उथल पुथल मचा दी थी.

कुछ लोगों को दान और यज्ञ शब्दों से चिढ़ है. विनोबा जी ही कब इन शब्दों से चिपटने वाले हैं. जो यह कह रहा है कि सब ज़मीन का मालिक ईश्वर या फिर वह जो उसकी छाती फोड़कर उसमें आदमी के काम की चीज़ें पैदा करे या निकाले, वह दान और यज्ञ शब्दों से चिपका भी कैसे रह सकता है? शब्दों का अर्थ बदलता रहा है, बदलता है, बदलता रहेगा. जो विनोबा जनता को राजा

سنکر ایسے ہی اِتنی جلدی مر جاتا تھا جیسے آجکل کوئی پوٹاشیم سائی نائٹ چاٹکر مر سکتا ہے ۔ پریم میں مارنے کی جتنی زیادہ طاقت ہوتی ہے اُتنی کرودھ میں نہیں، پر کرودھ جتنی آسانی سے سدھ ہوتا ہے اُتنی آسانی سے پریم سدھ نہیں ہوتا ۔ ایسی بات کس نے نہیں سُنی کہ امک پتنی اپنے پتی کے مرنے کی خبر سنکر ایک دم دم توڑ بیٹھی یا امک ماں اپنے بچے کی موت پر اپنی جان سے ہاتھ دھو بیٹھی ۔ چتوڑ کے اگنی کنڈ میں اگر دس ناریاں ڈھکیلی گئی تھیں تو سیکڑوں نے اسی کنڈ میں خوش خوش چھلانگ بھی ماری تھی ۔ پرانی باتیں چھوڑئیے۔ لاکھوں روپئے کا مال دوکان داروں نے خوشی خوشی سن 1921 میں ایسے ہی جلا دیا تھا جیسے بدھ بھگوان نے اپنا راج چھوڑ دیا تھا ۔ پھر ونوبا کو یہ سوچنے کا کیوں حق نہیں کہ اگر کانگریس اور دوسری سنستھائیں اُس کے ساتھ اُس کے آندولن میں جٹ جائیں تو زمین کا سوال ایک دن میں حل ہوسکتا ہے ۔

جسے دیکھو وہ ونوبا کو ڈگانے کی فکر میں لگا ہوا ہے ۔ ہم اِسے برا نہیں سمجھتے۔ اِس کے بغیر کوئی اِس بات کا یقین بھی کیسے کریگا کہ جو کام ونوبا نے اُٹھایا ہے وہ ہو سکتا ہے ۔ سونے نے، کب کہاں، آگ میں تپے بنا کسی کو یقین دلایا ہے کہ اُسکی چمک سدا رہنے والی ہے ؟

ہم یہ ماننے کے لئے تیار نہیں کہ ونوبا جی یہ نہیں جانتے کہ جس طرح وہ اپنے طریقے کے پورے وشواسی ہیں ویسے ہی کچھ لوگ اِس بات کے وشواسی ہیں کہ یہ کام سرکار کی معرفت قلم کے ایک اِشارے سے ہوسکتا ہے یا ڈنڈے کے بل پر کچھ دنوں میں ہوسکتا ہے۔ پر وہ تو آنکھوں سے دیکھ رہے ہیں کہ دوسری طرح کے وشواسی کہیں ہیں ہی نہیں، پھر کیا وہ چپ ہوکر بیٹھ جائیں۔ وہ میدان میں کودے ہوئے ہیں ۔ اُنہیں حق حاصل ہے کہ وہ دوسروں کو اپنے ساتھ آنے کے لئے للکاریں۔ دوسرے جب میدان میں ہی نہیں ہیں تو وہ اُنہیں کیسے اپنے پاس آنے کے لئے کہہ سکتے ہیں۔ بم پھینکنے والوں نے گاندھی جی کا ساتھ اُس وقت تک نہیں دیا تھا جب وہ چمپارن میں ستیاگرہ کی سوچ رہے تھے، اُس وقت دیا تھا جب سن 1921 میں اُنہوں نے ہندستان میں اُتھل پتھل مچادی تھی ۔

کچھ لوگوں کو دان اور یگیہ شبدوں سے چڑھ ہے ۔ ونوبا جی ہی کب اِن شبدوں سے چپٹنے والے ہیں ۔ جو یہ کہہ رہا ہے کہ سب زمین کا مالک ایشور یا پھر وہ جو اُسکی چھاتی پھوڑ کر اُس میں آدمی کے کام کی چیزیں پیدا کرے یا نکالے، وہ دان اور یگیہ شبدوں سے چپکا بھی کیسے رہ سکتا ہے؟ شبدوں کا ارتھ بدلتا رہا ہے، بدلتا ہے، بدلتا رہیگا ۔ جو ونوبا جنتا کو راجہ

ऊपर के ऐतराज़ ऐसे हैं जिनका कुछ जवाब नहीं बन सकता, क्योंकि इस काम की वह ऐसी बुराइयां हैं जो उससे दूर नहीं की जा सकतीं. जिन्हें दूर करने पर वह भलाई ही नहीं रह सकती जिसके लिये यह आन्दोलन उठाया गया है.

हां कुछ ऐसे ऐतराज़ हैं जिनमें आसानी से सुधार किया जा सकता है, जैसे दान में मिली ज़मीनों का पूरा पूरा हिसाब न छपना, या ऐसी ज़मीनों को भी दान में ले लेना जो झगड़े की जड़ हैं.

श्रद्धा ऐसी चीज़ है जो कभी नापी नहीं जा सकती, गणित के क़ायदों पर नहीं चढ़ती. किसी तरह के विज्ञान की पकड़ में नहीं आती. वह तो उसी की पकड़ में आती है जो उसे लेकर चलता है. तलवार के बिना अंगरेज़ों से हिन्दुस्तान छीना जा सकता है यह राजनीति के पंडित की समझ से परे की चीज़ है. पर ऐसा काम हो गया, यानी हिन्दुस्तान आज़ाद हो गया. बिना ख़ून बहाए कम्यूनिज़्म फैल सकता है, यानी ज़मीनों का जनता में ठीक ठीक बटवारा हो सकता है यह कोई मार्क्सवादी नहीं सोच सकता. कोई ऐसा आदमी भी नहीं सोच सकता जो सच्चे जी से इस भूदान के काम में नहीं लगा हुआ, पर अगर हमारा अनुमान ग़लत नहीं है तो विनोबा को ऐसा लगना चाहिये कि जल्दी ही सब ज़मींदार ख़ुशी से अपनी ज़मीन उन किसानों को दे डालेंगे जिनकी मेहनत से वह हरी भरी होती रही है, होती है और होती रहेगी. अगर सारे ज़मींदार अपनी ज़मींदारी जापान के राजा के चरनों में अर्पन कर सकते हैं तो विनोबा को यह समझने का हक़ है कि एक न एक दिन सब ज़मींदार ज़रूर अपनी ज़मीन ख़ुशी ख़ुशी किसानों को दे डालेंगे. अगर लड़ाई जीतने के बाद ख़ून ख़राबे के बिना चर्चिल साहब की जगह एटली ले सकते हैं तो क्या यह मुमकिन नहीं था कि ज़ार के घराने का सर्वनाश किये बिना लेनिन रूस में इस तरह की हकूमत क़ायम कर सकते जैसी आज क़ायम है. फ़र्क़ इतना ही है कि जो जिस तरह का विश्वास लेकर अपना काम करने निकलता है वह उसी ढंग से सफल हो सकता है. होता है. इसी का नाम स्व धर्म है.

दुनिया का कोई काम ऐसा नहीं जो हिंसा से ही हो सके और अहिंसा से न हो सके. दूसरे की जान लेने तक का काम अहिंसा से होते हुए पुरानों में हमने पढ़ा है, और दूसरों से अपने कानों सुना है, और अपनी आंखों देखा भी है. पुरानों का कहना है कि एक समय था जब आदमी इतना भला था कि अगर भूल से या प्रमाद से वह किसी की जान ले लेता तो वह समाज के किसी बड़े बूढ़े के मुंह से सिर्फ़ 'हां' शब्द

اوپر کے اعتراض ایسے هیں جن کا کچھ جواب نہیں بن سکتا . کیونکہ اِس کام کی وہ ایسی برائیاں هیں جو اُس سے دور نہیں کی جاسکتیں . جنہیں دور کرنے پر وہ بھلائی نہیں رہ سکتی جسکے لئے یہ آندولن اُٹھایا گیا ہے.

هاں کچھ ایسے اعتراض هیں جن میں آسانی سے سدھار کیا جاسکتا ہے' جیسے دان میں ملی زمینوں کا پورا پورا حساب نہ چھپنا' یا ایسی زمینوں کو بھی دان میں لے لینا جو جھگڑے کی جڑ هیں .

شردھا ایسی چیز ہے جو کبھی ناپی نہیں جاسکتی' گنت کے قاعدوں پر نہیں چڑھتی . کسی طرح کے وگیان کی پکڑ میں نہیں آتی . وہ تو اُسی کی پکڑ میں آتی ہے جو اُسے لیکر چلتا ہے تلوار کے بنا انگریزوں سے هندستان چھینا جاسکتا ہے یہ راج نیتی کے پنڈت کی سمجھ سے پرے کی چیز ہے . پر ایسا کام هوگیا' یعنی هندستان آزاد هوگیا. بنا خون بہائے کمیونزم پھیل سکتا ہے' یعنی زمینوں کا جنتا میں ٹھیک ٹھیک بٹوارہ هوسکتا ہے' یہ کوئی مارکس وادی نہیں سوچ سکتا . کوئی ایسا آدمی بھی نہیں سوچ سکتا جو سچے جی سے اِس بھودان کے کام میں نہیں لگا هوا . پر اگر همارا انومان غلط نہیں ہے تو ونوبا کو ایسا لگنا چاهئے کہ جلدهی سب زمیندار خوشی سے اپنی زمین اُن کسانوں کو دے ڈالینگے جنکی محنت سے وہ هری بھری هوتی رهی ہے' هوتی ہے اور هوتی رهیگی. اگر سارے زمیندار اپنی زمینداری جاپان کے راجہ کے چرنوں میں ارپن کرسکتے هیں تو ونوبا کو یہ سمجھنے کا حق ہے کہ ایک نہ ایک دن سب زمیندار ضرور اپنی زمین خوشی خوشی کسانوں کو دے ڈالینگے . اگر لڑائی جیتنے کے بعد خون خرابے کے بنا چرچل صاحب کی جگہ اِٹلی لے سکتے هیں تو کیا یہ ممکن نہیں تھا کہ زار کے گھرانے کا سروناش کئے بنا لینن روس میں اِس طرح کی حکومت قائم کرسکتے جیسی آج قائم ہے . فرق اِتنا هی ہے کہ جو جس طرح کا وشواس لیکر اپنا کام کرنے نکلتا ہے وہ اُسی ڈھنگ سے سپھل هوسکتا ہے' هوتا ہے . اِسی کا نام' سودھرم ہے .

دنیا کا کوئی کام ایسا نہیں جو هنسا سے هی هوسکے اور اهنسا سے نہ هوسکے . دوسرے کی جان لینے تک کا کام اهنسا سے هوتے هوئے پرانوں میں هم نے پڑھا ہے' اور دوسروں سے اپنے کانوں سنا ہے اور اپنی آنکھوں دیکھا بھی ہے . پرانوں کا کہنا ہے کہ ایک سمے تھا جب آدمی اِتنا بھلا تھا کہ اگر بھول سے یا پرماد سے وہ کسی کی جان لے لیتا تو وہ سماج کے کسی بڑے بوڑھے کے منھ سے صرف 'هاں' شبد

विनोबा जी ने यह चुनौती चुपचाप सुन ली. कुछ दिनों वर्धा बैठ कर उस चुनौती के बोझ से हलके हुए और फिर झट भूदान यज्ञ के लिये वर्धा से निकल पड़े. चुनौती के जवाब में नहीं, अन्दर की प्रेरना पर निकले. जैसे जैसे सफलता मिलती गई प्रेरना बढ़ती गई, बलवती होती गई. मध्य प्रांत लांघते, भोपाल होते हुए, उत्तर प्रदेश के कुछ ज़िलों को पार करते, दिल्ली के रास्ते प्रयाग पहुंचे. वहां से बिहार चल दिये, आज भी वहीं हैं. अब तक लाखों एकड़ ज़मीन उन्हें दान में मिल चुकी. भूमि दान आन्दोलन दिन दिन ज़ोर पकड़ता जा रहा है. बहुतों की निगाह उस तरफ़ जाने लगी है. उसके अन्दर जो बुराइयां हैं वह दिखलाई देने लगी हैं. बुराइयां देख भी वही सकता है जो उस काम में लगा हुआ न हो. जो जिस काम में जुटा रहता है उसके सामने भलाई ही भलाई रहती है, नहीं तो वह उसमें लगे ही क्यों. हां, जो आदमी किसी काम में नेकनियती से दूसरों की भलाई के लिये लगा होता है वह उस काम की बुराइयों को सुन कर बिगड़ता तो है ही नहीं, घबराता भी नहीं है. सबके ऐतराज़ों को बड़े ध्यान से सुनता है, उन पर विचार करता है. ठीक होते हैं तो उन्हें अपनाता है, ना ठीक होते हैं तो उन पर ध्यान नहीं देता. और अगर ऐसे होते हैं कि उन पर बहुत ज़ियादा ध्यान रखने से वह भलाई हो ही न सकेगी तो वह उन बुराइयों को चिपका रहता है और अपने काम में लगा रहता है.

विनोबा का भूदान यज्ञ आज इस हालत को पहुंच गया है कि क्या सरकार, क्या कम्यूनिस्ट, क्या वह लोग जो अपने आपको मामूल से ज़ियादा समझदार समझते हैं, क्या वह लोग जिन्हें गांधी वाद से चिढ़ सी हो गई है, क्या वह जो एक तरह से, अपने आपको विनोबा का साथी समझते हैं, सब ही इस दान को शंका की नज़र से देखने लगे हैं.

जिनका शुरू में यह कहना था कि विनोबा ने हमारे बोए हुए को काटा है वह अब यह कहते हैं कि सीधे ना सीधे ज़मींदारों से ज़मीन डरा धमका कर ली जा रही है या ऐसे लोगों की मदद से ली जा रही है जो डराने धमकाने में माहिर हैं. दूसरों का यह कहना है कि जो ज़मीनें दान में हासिल हो रही हैं उनमें से अस्सी या नव्वे फ़ी सदी निकम्मी हैं. जिसके हाथ वह पड़ेंगी वह सिर पीट कर रह जायगा, कभी न उभर सकेगा. कुछ का कहना है कि इस तरह ज़मीनों के टुकड़े टुकड़े हो जायंगे और जिस बात का हिन्दुस्तान में पहले ही से रोना था वह रोना और बढ़ जायगा. कुछ यह ऐतराज़ करते हैं कि इस आन्दोलन से वह बात तो होनी नहीं, जो दूसरे देश कर चुके हैं या जिसकी इस वक़्त हिन्दुस्तान में सख़्त ज़रूरत है, फिर इस पर क्यों वक़्त ख़राब किया जाय ?

ونوبا جی نے یہ چنوتی چپ چاپ سن لی ۔ کچھ دنوں وردھا بیٹھکر اُس چنوتی کے بوجھ سے ھلکے ھوئے اور پھر جھٹ بھودان یگیہ کے لئے وردھا سے نکل پڑے۔ چنوتی کے جواب میں نہیں، اندر کی پریرنا پر نکلے۔ جیسے جیسے سپھلتا ملتی گئی پریرنا بڑھتی گئی، بلوتی ھوتی گئی ۔ مدھیہ پرانت لانگھتے، بھوپال ھوتے ھوئے، اُتر پردیش کے کچھ ضلعوں کو پار کرتے، دلی کے راستے پریاگ پہونچے ۔ وھاں سے بہار چل دئے، آج بھی وھیں ھیں ۔ اب تک لاکھوں ایکڑ زمین انہیں دان میں مل چکی۔ بھومی دان آندولن دن دن زور پکڑتا جا رہا ھے۔ بہتوں کی نگاہ اُس طرف جانے لگی ھے ۔ اُس کے اندر جو برائیاں ھیں وہ دکھلائی دینے لگی ھیں ۔ برائیاں دیکھ بھی وھی سکتا ھے جو اُس کام میں لگا ھوا نہ ھو ۔ جو جس کام میں جٹا رھتا ھے اُس کے سامنے بھلائی ھی بھلائی رھتی ھے، نہیں تو وہ اُس میں لگے ھی کیوں ۔ ھاں، جو آدمی کسی کام میں نیک نیتی سے دوسروں کی بھلائی کے لئے لگا ھوتا ھے وہ اُس کام کی برائیوں کو سنکر بگڑتا تو ھے ھی نہیں، گھبراتا بھی نہیں ھے۔ سب کے اعتراضوں کو بڑے دھیان سے سنتا ھے، اُن پر وچار کرتا ھے ۔ ٹھیک ھوتے ھیں تو انہیں اپناتا ھے، ناٹھیک ھوتے ھیں تو اُن پر دھیان نہیں دیتا ۔ اور اگر ایسے ھوتے ھیں کہ اُن پر بہت زیادہ دھیان رکھنے سے وہ بھلائی ھو ھی نہیں سکیگی تو وہ اُن برائیوں کو چپکا رھتا ھے اور اپنے کام میں لگا رھتا ھے ۔

ونوبا جی کا بھودان یگیہ آج اس حالت کو پہونچ گیا ھے کہ کیا سرکار، کیا کمیونسٹ، کیا وہ لوگ جو اپنے آپکو معمول سے زیادہ سمجھدار سمجھتے ھیں، کیا وہ لوگ جنہیں گاندھی واد سے چڑھ سی ھوگئی ھے، کیا وہ جو ایک طرح سے اپنے آپکو ونوبا کا ساتھی سمجھتے ھیں، سب ھی اِس دان کو شنکا کی نظر سے دیکھنے لگے ھیں۔

جن کا شروع میں یہ کہنا تھا کہ ونوبا نے ھمارے بوئے ھوئے کو کاٹا ھے وہ اب یہ کہتے ھیں کہ سیدھے ناسیدھے زمینداروں سے زمین ڈرا دھمکا کر لی جا رھی ھے ۔ یا ایسے لوگوں کی مدد سے لی جا رھی ھے جو ڈرانے دھمکانے کے ماھر ھیں۔ دوسروں کا یہ کہنا کہ جو زمینیں دان میں حاصل ھو رھی ھیں اُن میں سے اسی یا نوے فیصدی نکمی ھیں، جس کے ھاتھ وہ پڑینگی وہ سر پیٹ کر رہ جائیگا، کبھی نہ اُبھر سکیگا۔ کچھ کا کہنا ھے کہ اِس طرح زمینوں کو ٹکڑے ٹکڑے ھو جائینگے اور جس بات کا ھندستان میں پہلے ھی سے رونا تھا وہ رونا اور بڑھ جائیگا ۔ کچھ اعتراض کرتے ھیں کہ اِس آندولن سے وہ بات تو ھونی نہیں، جو دوسرے دیش کرچکے ھیں یا جسکی اِس وقت ھندستان میں سخت ضرورت ھے، پھر اس پر کیوں وقت خراب کیا جائے؟

कर दो तो धर्म तुम्हें खतम कर देगा, धर्म की रक्षा करो तो धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा." एक दूसरी कहावत है—"जहां धर्म है वहां जीत लाजमी है." हमें इस पक्के विश्वास के साथ इस युग धर्म को अपनाना होगा.

—सुन्दरलाल

भूदान और विनोबा

सन 57 के बाद से हिन्दुस्तानी जनता कुछ ऐसी दबी कि आजादी की बात मुंह पर लाना डर की बात बन गया. दादा भाई नौरोजी ने जब पहले पहल स्वराज की बात कही तो कितनी ही आंखें फटी की फटी रह गईं और कितने ही मुंह खुले के खुले रह गए. उसके बाद लोकमान्य तिलक ने जब यह बात कही कि 'स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है' तब भी लोग अचरज में पड़े. और जब महात्मा गांधी ने यह कहा कि स्वराज हासिल करना धर्म है तब समझदार लोग अचकचाए पर जनता एकदम उछल पड़ी और मैदान में आ गई. कुछ ही दिनों में स्वराज ले भी लिया.

हैदराबाद रियासत में कहीं सर्वोदय मेला था. उसके लिये विनोबा जी वर्धा से पैदल चल पड़े. उस वक़्त उन्होंने यह शायद सोचा भी न था कि मुझे तेलंगाना जाना पड़ेगा. मेला खतम होने के बाद इन्हें कुछ ऐसा मालूम हुआ कि उन्हें तेलंगाना जा कर वहां की हालत देखनी ही चाहिये. वह वहां गए. वहां के जमींदारों से मिल कर उन्हें ऐसा पता लगा कि वह इतने बुरे तो नहीं हैं जितने कुछ लोगों ने उन्हें समझ रखा है. जल्दी ही उन्होंने बहुत से जमींदारों को इस बात पर राजी कर लिया कि वह उन किसानों को जमीन दे डालें जिनके क़बज़े में वह किसी भी तरह पहुंच गई है इसी सिलसिले में वह किसानों से मिले. किसान इस बात पर राजी हो गए कि वह उस जमीन को जमींदारों को लौटा देंगे जिस पर उन्होंने क़बज़ा कर लिया है और जो उनकी ज़रूरत से ज़ियादा है. इन दोनों बातों ने किसान और जमींदार में मेल करा दिया और भूदान का सिलसिला चल पड़ा. उस पर कम्यूनिस्ट लोगों ने यह बात उठाई कि इसमें विनोबा जी की क्या सफलता है यह तो सब इस वजह से हुआ कि हम वहां मेहनत कर चुके थे और किसानों को जमीन दिला चुके थे. जमींदारों ने यह समझ कर किसानों के पास जमीन छोड़ दी कि 'जाता धन देखिये तो आधा लीजिये बांट'. हां, अगर विनोबा जी हैदराबाद छोड़ कर किसी दूसरी जगह किसानों को जमीन दिलवाएं तब बेशक यह कहा जा सकता है कि विनोबा जी सचमुच लोगों का दिल बदल सकते हैं.

کرو تو دھرم، تمہیں ختم کردے گا" دھرم کی رکشا کرو تو دھرم تمہاری رکشا کرے گا." ایک دوسری کہاوت ہے. "جہاں دھرم ہے وہاں جیت لازمی ہے." ہمیں اس پکے وشواس کے ساتھ اِس یگ دھرم کو اپنانا ہوگا.

—سندرلال

بھودان اور ونوبا

سن 57ء کے بعد سے ہندستانی جنتا کچھ ایسی دبی کہ آزادی کی بات منہ پر لانا ڈر کی بات بن گیا. دادا بھائی نوروجی نے جب پہلے پہل سوراج کی بات کہی تو کتنی ہی آنکھیں پھٹی کی پھٹی رہ گئیں اور کتنے ہی منہ کھلے کے کھلے رہ گئے. اُس کے بعد لوک مانیہ تلک نے جب یہ بات کہی کہ "سوراج میرا جنم‌سدھ ادھیکار ہے" تب بھی لوگ اچرج میں پڑے. اور جب مہاتما گاندھی نے یہ کہا کہ سوراج حاصل کرنا دھرم ہے تب سمجھدار لوگ اچکچائے پر جنتا ایک دم اُچھل پڑی اور میدان میں آ گئی. کچھ ہی دنوں میں سوراج لے بھی لیا.

حیدرآباد ریاست میں کہیں سروودے میلا تھا. اُس کے لئے ونوبا جی وردھا سے پیدل چل پڑے. اُس وقت اُنہوں نے یہ شاید سوچا بھی نہ تھا کہ مجھے تلنگانہ جانا پڑیگا. میلا ختم ہونے کے بعد اِنہیں کچھ ایسا معلوم ہوا کہ اُنہیں تلنگانہ جاکر وہاں کی حالت دیکھنی ہی چاہئے. وہ وہاں گئے. وہاں کے زمینداروں سے ملکر اُنہیں ایسا پتہ لگا کہ وہ اِتنے برے تو نہیں ہیں جتنے کچھ لوگوں نے اُنہیں سمجھ رکھا ہے. جلدی ہی اُنہوں نے بہت سے زمینداروں کو اِس بات پر راضی کر لیا کہ وہ اُن کسانوں کو زمین دے ڈالیں جن کے قبضے میں وہ کسی بھی طرح پہونچ گئی ہے. اِسی سلسلے میں وہ کسانوں سے ملے. کسان اِس بات پر راضی ہوگئے کہ وہ اُس زمین کو زمینداروں کو لوٹا دینگے جس پر اُنہوں نے قبضہ کر لیا ہے اور جو اُن کی ضرورت سے زیادہ ہے. اِن دونوں باتوں نے کسان اور زمیندار میں میل کرا دیا' اور بھودان کا سلسلہ چل پڑا. اُس پر کمیونسٹ لوگوں نے یہ بات اُٹھائی کہ اِس میں ونوباجی کی کیا سپھلتا ہے یہ تو سب اِس وجہ سے ہوا کہ ہم وہاں محنت کر چکے تھے اور کسانوں کو زمین دلا چکے تھے. زمینداروں نے یہ سمجھکر کسانوں کے پاس زمین چھوڑ دی کہ جاتا دھن دیکھئے تو آدھا لیجئے بانٹ'. ہاں' ونوبا جی اگر حیدرآباد چھوڑ کر کسی دوسری جگہ کسانوں کو زمین دلوائیں تب بیشک یہ کہا جاسکتا ہے کہ ونوبا جی سچ مچ لوگوں کا دل بدل سکتے ہیں.

खबरें उड़ाई गईं और दुनिया भर में फैलाई गईं. अफ़सोस केवल इतना है कि आज की अन्तरराष्ट्री राजनीति उस समय की अन्तरराष्ट्री नीति से अधिक पवित्र नहीं है.

ज़ाहिर है आजकल की दुनिया में नीचे से ऊपर तक नेकी और भलमनसी में अविश्वास पूरे ज़ोरों पर है. यूं तो दुनिया का इस तरफ़ झुकाव आजकल की मशीनी पच्छिमी सभ्यता के शुरू होने के साथ साथ दिखाई देने लगता है लेकिन ख़ास कर पहले महायुद्ध के बाद से दुनिया की ताक़तवर क़ौमों की धन और राज पाट की चाट ने दुनिया की इस नैतिक गिरावट को एक ख़ौफ़नाक दरजे तक पहुंचा दिया है. हमारा मुल्क भी जाने अनजाने आज इसी भंवर में फंसा हुआ है. यही आजकल की दुनिया के और हमारे सारे दुखों और मुसीबतों की जड़ है.

भलमनसी के अन्दर इस अविश्वास ने ही दुनिया की बड़ी बड़ी सलतनतों को मिटा दिया. इसी ने भारत में अंगरेज़ी राज का ख़ातमा किया, रूस में इसी ने ज़ार के तख़्त को उलटा. इसी ने हिटलर और मुसोलिनी जैसों को नीचा दिखाया. लेकिन अपने धन और हथियारों के घमंड में अन्धी शक्तियां इतिहास से सबक़ लेने के अयोग्य साबित होती रही हैं.

हमें अगर ख़ुद अपने को बचाना है और दुनिया को बचाने में अपनी शक्ति भर मदद देना है तो हमें पहले अपने अन्दर भलमनसी और सदाचार के उस कठिन पाठ को फिर से ताज़ा करना होगा जिसे हमने हाल में इतना अधिक भुला दिया है. हमें दुनिया की उन दूसरी शक्तियों को समझना और एक दूसरे के पास लाना होगा जो इनसानी क़ौम की उस सोई हुई भलमनसी को फिर से जगाने की कोशिश कर रही हैं. अपने देश के अन्दर हमें महात्मा गांधी के उपदेशों को नये सिरे से समझना और ईमानदारी के साथ अमल में लाना होगा. आज भी नये चीन जैसे देश में अकसर रेलवे बुकस्टालों के ऊपर कोई रखवाली करने वाला नहीं रहता. ख़रीदार किताबें उठाते हैं और पास की गुल्लक में क़ीमत डाल कर चल देते हैं. शाम को जब बुक स्टाल का मालिक पैसे गिनता है तो कभी कमी नहीं पड़ती. नेकी की सोई हुई शक्ति धीरे धीरे जाग रही है. यही भावी दुनिया के लिये आशा की किरन है. ऐसे देशों के साथ हमें मेल बढ़ाना होगा. हमें उन सब छोटे बड़े देशों के साथ भी मिल कर खड़ा होना होगा जो अपनी आज़ादी के लिये कोशिश कर रहे हैं या जो दुनिया से बेइनसाफ़ी, ग़ुलामी और काले गोरे और पीले के भेद को मिटाना चाहते हैं. यही इस समय हमारा सब से बड़ा धर्म है. यही दीन है. यही दुनिया के सारे रोग का इलाज है. संस्कृत की एक मशहूर कहावत है—"धर्म को ख़तम

خبریں اڑائی گئیں اور دنیا بھر میں پھیلائی گئیں۔ افسوس کیول اتنا ہے کہ آج کی انتر راشٹری راج نیتی اس سمے کی انتر راشٹری راج نیتی سے ادھک پوتر نہیں ہے۔

ظاہر ہے آجکل کی دنیا میں نیچے سے اوپر تک نیکی اور بھلمنسی میں اوشواس پورے زوروں پر ہے۔ یوں تو دنیا کا اس طرف جھکاؤ آجکل کی مشینی پچھمی سبھیتا کے شروع ہونے کے ساتھ ساتھ دکھائی دینے لگتا ہے لیکن خاصکر پہلے مہایدھ کے بعد سے دنیا کی طاقتور قوموں کی دھن اور راج پاٹ کی چاٹ نے دنیا کی اس نیتک گراوٹ کو ایک خوفناک درجے تک پہنچا دیا ہے۔ ہمارا ملک بھی جانے انجانے آج اسی بھنور میں پھنسا ہوا ہے۔ یہی آجکل کی دنیا کے اور ہمارے سارے دکھوں اور مصیبتوں کی جڑ ہے۔

بھلمنسی کے اندر اس اوشواس نے ہی دنیا کی بڑی بڑی سلطنتوں کو مٹا دیا۔ اسی نے بھارت میں انگریزی راج کا خاتمہ کیا، روس میں اسی نے زار کے تخت کو الٹا۔ اسی نے ہٹلر اور مسولینی جیسوں کو نیچا دکھایا۔ لیکن اپنے دھن اور ہتھیاروں کے گھمنڈ میں اندھی شکتیاں اتہاس سے سبق لینے کے ایوگ ثابت ہوتی رہی ہیں۔

ہمیں اگر خود اپنے کو بچانا ہے اور دنیا کو بچانے میں اپنی شکتی بھر مدد دینا ہے تو ہمیں پہلے اپنے اندر بھلمنسی اور سداچار کے اس کٹھن پاٹھ کو پھر سے تازہ کرنا ہوگا جسے ہم نے حال میں اتنا ادھک بھلا دیا ہے۔ ہمیں دنیا کی ان دوسری شکتیوں کو سمجھنا اور ایک دوسرے کے پاس لانا ہوگا جو انسانی قوم کی اس سوئی ہوئی بھلمنسی کو پھر سے جگانے کی کوشش کر رہی ہیں۔ اپنے دیش کے اندر ہمیں مہاتما گاندھی کے اپدیشوں کو نئے سرے سے سمجھنا اور ایمانداری کے ساتھ عمل میں لانا ہوگا۔ آج بھی نئے چین جیسے دیش میں اکثر ریلوے بک اسٹالوں کے اوپر کوئی رکھوالی کرنے والا نہیں رہتا۔ خریدار کتابیں اٹھاتے ہیں اور پاس کی گلک میں قیمت ڈال کر چل دیتے ہیں۔ شام کو جب بک اسٹال کا مالک پیسے گنتا ہے تو کبھی کمی نہیں پڑتی۔ نیکی کی سوئی ہوئی شکتی دھیرے دھیرے جاگ رہی ہے۔ یہی بھاوی دنیا کے لئے آشا کی کرن ہے۔ ایسے دیشوں کے ساتھ ہمیں میل بڑھانا ہوگا۔ ہمیں ان سب چھوٹے بڑے دیشوں کے ساتھ بھی ملکر کھڑا ہونا ہوگا جو اپنی آزادی کے لئے کوشش کر رہے ہیں یا جو دنیا سے بےانصافی، غلامی اور کالے گورے اور پیلے کے بھید کو مٹانا چاہتے ہیں۔ یہی اس سمے ہمارا سب سے بڑا دھرم ہے، یہی دین ہے، یہی دنیا کے سارے روگ کا علاج ہے۔ سنسکرت کی ایک مشہور کہاوت ہے، "دھرم کو ختم

कर्मचारियों की चालों और उनके बढ़े हुए भ्रष्टाचार ने ऐसे लोगों के लिये ईमानदारी निबाह सकना जगह जगह ना मुमकिन कर दिया है.

हमें दुख और लज्जा के साथ यह मानना पड़ता है कि हमारी शिक्षा संस्थाओं और यूनीवरसिटियों तक में विद्यार्थियों का पास फेल या डिवीज़न केवल योगता पर निर्भर नहीं है. कभी कभी तो नतीजे का योगता से कोई सम्बन्ध ही नहीं दिखाई देता.

अब अगर अपने इस छोटे से देश से हटकर हम दुनिया की तरफ़ निगाह डालते हैं तो हालत और भी भयंकर दिखाई देती है. दुनिया के बड़े से बड़े राजनीतिज्ञ और ऊंची से ऊंची तालीम पाए हुए लोग आज करोड़ों इनसान के बच्चों को केवल उनके रंग के कारन खुद उनकी जन्मभूमि के अन्दर उन मानवी अधिकारों का हक़दार नहीं समझते जो उनके मुल्क में हज़ारों मील दूर से आ कर बसे हुए दूसरे रंग के लोगों को हासिल हैं. और अगर उस देश के लोग अपने देश के अन्दर उन अधिकारों के लिये कोशिश करते हैं तो उनकी इस कोशिश को कुचलने के लिये हर उपाय और हर हथियार जायज़ समझा जाता है. अपने को संस्कृति और सभ्यता का ठेकेदार समझने वाली दुनिया की कुछ बड़ी बड़ी क़ौमों की आवाज़ अगर उठती है तो मज़लूमों की हिमायत में नहीं बल्कि ज़ालिम की मदद में. छोटे और कमज़ोर मुलकों को माली राजकाजी या फ़ौजी निगाह से अपने नीचे दबा कर रखना, उनकी आज़ादी की कोशिशों को कुचलना और कुचलने वालों को मदद देना, इन मुलकों के हिस्सों पर ज़बरदस्ती क़बज़ा बनाए रखना, उनके घरेलू झगड़ों में ज़बरदस्ती दख़ल देना—यह सब आज की अन्तरराष्ट्री राजनीति में तारीफ़ के काम समझे जाते हैं. और अगर किसी देश की जनता इस तरह के अन्याय का मुक़ाबला करना चाहती है तो वहां की निहत्थी ग़रीब जनता पर एटम बम या इसी तरह का कोई और पिशाची अस्त्र फेंक कर लाखों निरदोश मर्द औरत और बच्चों को भून देना या ज़िन्दा जला देना ताक़तवर क़ौम का जायज़ अधिकार समझा जाता है. इसकी खुले आम धमकियां दी जाती हैं और खुले तैयारियां की जाती हैं.

पहले महा युद्ध के दिनों में दुनिया के तीन बड़े बड़े राष्ट्रों की तरफ़ से खुले तौर पर तीन अलग अलग महकमे खोले गए थे जिनका काम यह था कि वह दुशमन के बारे में झूटी और डरावनी ख़बरें गढ़ कर दुनिया भर में फैलावें. यहां इन महकमों के कारनामों को बयान करने की ज़रूरत नहीं है. दुनिया भर को मालूम हो चुका है कि उन दिनों एक दूसरे के ख़िलाफ़ कितनी बेसिर पैर की और भयंकर

کرمچاریوں کی چالوں اور اُن کے بڑھے ہوئے بھرشٹاچار نے ایسے لوگوں کے لئے ایمانداری نباہ سکنا جگہ جگہ ناممکن کر دیا ہے ۔

ہمیں دکھ اور لجا کے ساتھ یہ ماننا پڑتا ہے کہ ہماری شکشا سنستھاؤں اور یونیورسٹیوں تک میں ودیارتھیوں کا پاس فیل یا ڈیویژن کیول یوگتا پر نربھر نہیں ہے ۔ کبھی کبھی تو نتیجے کا یوگتا سے کوئی سمبندھ ہی نہیں دکھائی دیتا ۔

اب اگر اپنے اِس چھوٹے سے دیش سے ہٹ کر ہم دنیا کی طرف نگاہ ڈالتے ہیں تو حالت اور بھی بھینکر دکھائی دیتی ہے ۔ دنیا کے بڑے سے بڑے راج نیتگیہ اور اُونچی سے اُونچی تعلیم پائے ہوئے لوگ آج کروڑوں انسان کے بچوں کو کیول ان کے رنگ کے کارن خود اُن کی جنم بھومی کے اندر اُن مانوی ادھیکاروں کا حقدار نہیں سمجھتے جو ان کے ملک میں ہزاروں میل دور سے آکر بسے ہوئے دوسرے رنگ کے لوگوں کو حاصل ہیں. اور اگر اس دیش کے لوگ اپنے دیش کے اندر اُن ادھیکاروں کے لئے کوشش کرتے ہیں تو اُن کی اس کوشش کو کچلنے کے لئے ہر اُپائے اور ہر ہتھیار جائز سمجھا جاتا ہے ۔ اپنے کو سنسکرتی اور سبھیتا کا ٹھیکیدار سمجھنے والی دنیا کی کچھ بڑی بڑی قوموں کی آواز اگر اُٹھتی ہے تو مظلوموں کی حمایت میں نہیں بلکہ ظالم کی مدد میں. چھوٹے اور کمزور ملکوں کو مالی راجکاجی یا فوجی نگاہ سے اپنے نیچے دباکر رکھنا، اُن کی آزادی کی کوششوں کو کچلنا اور کچلنے والوں کو مدد دینا، اُن ملکوں کے حصوں پر زبردستی قبضہ بنائے رکھنا، اُن کے گھریلو جھگڑوں میں زبردستی دخل دینا یہ سب آج کی انتر راشٹری راجنیتی میں تعریف کے کام سمجھے جاتے ہیں ۔ اور اگر کسی دیش کی جنتا اس طرح کے انیائے کا مقابلہ کرنا چاہتی ہے تو وہاں کی نہتی غریب جنتا پر ایٹم بم یا اسی طرح کا کوئی اور پشاچی استر پھینک کر لاکھوں نردوش مرد عورت اور بچوں کو بھون دینا یا زندہ جلا دینا طاقتور قوم کا جائز ادھیکار سمجھا جاتا ہے ۔ اِس کی کھلے عام دھمکیاں دی جاتی ہیں اور کھلے تیاریاں کی جاتی ہیں ۔

پہلے مہایدھ کے دنوں میں دنیا کے تین بڑے بڑے راشٹروں کی طرف سے کھلے طور پر تین الگ الگ محکمے کھولے گئے تھے جن کا کام یہ تھا کہ وہ دشمن کے بارے میں جھوٹی اور ڈراونی خبریں گڑھ کر دنیا بھر میں پھیلاویں. یہاں اُن محکموں کے کارناموں کو بیان کرنے کی ضرورت نہیں ہے ۔ دنیا بھر کو معلوم ہوچکا ہے کہ اُن دنوں ایک دوسرے کے خلاف کتنی بے سر پیر کی اور بھینکر

था. ख़ास कर पहाड़ी इलाक़ों में आप नक़द रुपया मेज़ पर या खुली अलमारी में छोड़ कर चले जाइये कोई पहाड़ी नौकर कभी हाथ न लगाता. उन इलाक़ों में वह चीज़ अब एक पुरानी कहानी रह गई है.

आज एक आम विश्वास है कि व्योपार और ईमानदारी दोनों साथ साथ नहीं चल सकते. अभी हाल में कानपुर के एक बहुत बड़े मिल मालिक ने अपने एक छब्बीस बरस के पुराने विश्वस्त और ईमानदार पढ़े लिखे मुलाज़िम को केवल इसलिये और यह कह कर नौकरी से अलग कर दिया कि वह मुलाज़िम मिल के रजिस्ट्रों में झूटी ख़ानापुरी करने के लिये तैयार न था और मिल मालिक को अब ऐसे आदमी की ज़रूरत है जो यह सब कर सके.

मामूली खाने पीने की चीज़ों का तो कहना ही क्या. हमारी गिरावट इस बारे में इस हद को पहुंच गई है कि दवाओं और इनजकशन के अन्दर भी यह विश्वास होना कठिन हो गया है कि शीशी या नली के अन्दर असल दवा है या कोई और ससती और ज़हरीली चीज़ है. इस तरह के काफ़ी मामले पकड़े जा चुके हैं.

व्योपार से हट कर अगर हम राजकाज की तरफ़ आवें तो हालत और भी भयंकर दिखाई देती है. चुनाव और ईमानदारी दोनों परस्पर विरोधी शब्द हो गए हैं. हाल के एक चुनाव की बाबत तहक़ीक़ात करने वाले सज्जन ने अपनी रिपोर्ट में लिखा था कि इस चुनाव की दो पारटियों में से हर एक ने दूसरी पारटी के उम्मीदवार को गिराने या हराने के लिये कोई नीच से नीच उपाय उठा नहीं रखा यह हालत लगभग एक आम हालत है. मिसालें देने की ज़रूरत नहीं. देश के बड़े बड़े ज़िम्मेदार नेता खुले शब्दों में यह कहते हैं कि :—
"Politics has nothing to do with morals"
यानी राजनीति का नेकी बदी से कोई सम्बन्ध नहीं. इसी का नतीजा है कि दफ़तरों, कचहरियों और राजकाज के बहुत से महकमों में भृष्टाचार तेज़ी के साथ बढ़ता चला जा रहा है.

तब सवाल होता है कि अगर भलमनसी या सदाचार के लिये जगह न व्योपार में है और न राजकाज में तो भलमनसी बेचारी कहां जा कर रहे.

राजकाज आज मानव जीवन के सब पहलुओं पर हावी है और "यथा राजा तथा प्रजा" के सिद्धान्त के अनुसार राजकाज में भृष्टाचार ही जनता के चरित्र की गिरावट का सब से बड़ा और मूल कारन है. रात दिन हमें सैंकड़ों मिसालें इस तरह की मिलती हैं कि जनता के जो साधारन आदमी या व्योपारी सचमुच सचाई और ईमानदारी के साथ अपना काम चलाना चाहते हैं सरकारी

تھا ۔ خاصکر پہاڑی علاقوں میں آپ نقد روپیہ میز پر یا کھلی الماری میں چھوڑ کر چلے جایئے کوئی پہاڑی نوکر کبھی ہاتھ نہ لگاتا ۔ اُن علاقوں میں وہ چیز اب ایک پرانی کہانی رہ گئی ہے ۔

آج ایک عام وشواس ہے کہ بیوپار اور ایمان‌داری دونوں ساتھ ساتھ نہیں چل سکتے ۔ ابھی حال میں کان پور کے ایک بہت بڑے مل مالک نے اپنے ایک چھبیس برس کے پرانے وشوست اور ایمان‌دار پڑھے لکھے ملازم کو کیول اس لئے اور یہ کہکر نوکری سے الگ کر دیا کہ وہ ملازم مل کے رجسٹروں میں جھوٹی خانہ‌پوری کرنے کے لئے تیار نہ تھا اور مل مالک کو اب ایسے آدمی کی ضرورت ہے جو یہ سب کر سکے ۔

معمولی کھانے پینے کی چیزوں کا تو کہنا ہی کیا ۔ ہماری گراوٹ اِس بارے میں اِس حد کو پہنچ گئی ہے کہ دواؤں اور انجکشن کے اندر بھی یہ وشواس ہونا کٹھن ہو گیا ہے کہ شیشی یا نلی کے اندر اصل دوا ہے یا کوئی اور سستی اور زہریلی چیز ہے ۔ اِسطرح کے کافی معاملے پکڑے جا چکے ہیں ۔

بیوپار سے ہٹ کر اگر ہم راجکاج کی طرف آویں تو حالت اور بھی بھینکر دکھائی دیتی ہے ۔ چناؤ اور ایمان داری دونوں پرسپر وِرودھی شبد ہو گئے ہیں ۔ حال کے ایک چناؤ کی بابت تحقیقات کرنے والے سجن نے اپنی رپورٹ میں لکھا تھا کہ اس چناؤ کی دو پارٹیوں میں سے ہر ایک نے دوسری پارٹی کے اُمیدوار کو گرانے یا ہرانے کے لئے کوئی نیچ سے نیچ اُپائے اٹھا نہیں رکھا۔ یہ حالت لگ‌بھگ ایک عام حالت ہے ۔ مثالیں دینے کی ضرورت نہیں ۔ دیش کے بڑے بڑے ذمہ‌دار نیتا کھلے شبدوں میں یہ کہتے ہیں کہ :— "Politics has nothing to do with morals." یعنی راج نیتی کا نیکی بدی سے کوئی سمبندھ نہیں ۔ اِسی کا نتیجہ ہے کہ دفتروں' کچہریوں اور راجکاج کے بہت سے محکموں میں بھرشٹاچار تیزی کے ساتھ بڑھتا چلا جا رہا ہے ۔

تب سوال ہوتا ہے کہ اگر بھلمنسی یا سداچار کے لئے جگہ نہ بیوپار میں ہے اور نہ راجکاج میں تو بھلمنسی بےچاری کہاں جا کر رہے ۔

راجکاج آج مانو جیون کے سب پہلوؤں پر حاوی ہے اور " یتھا راجا تتھا پرجا " کے سدّھانت کے انوسار راج کاج میں بھرشٹاچار ہی جنتا کے چرتر کی گراوٹ کا سب سے بڑا اور مول کارن ہے ۔ رات دن ہمیں سیکڑوں مثالیں اِس طرح کی ملتی ہیں کہ جنتا کے جو سادھارن آدمی یا بیوپاری سچ مچ سچائی اور ایمانداری کے ساتھ اپنا کام چلانا چاہتے ہیں سرکاری

बड़ी विशेषता साइन्स की तरक़्क़ी है लेकिन साइन्स की नई तरक़्क़ियों ने जहां एक तरफ़ हमारी जानकारी को बढ़ाया है वहां दूसरी तरफ़ हमारी जरूरतों और छोटी छोटी खुदगरज़ियों को बढ़ा कर हमारे दिलों को सुखा दिया है इस युग में हमारी उन्नति बड़े दरजे तक एक अंगी रही है. यानी हमारी भलमनसी या नैतिक उन्नति हमारी दिमाग़ी तरक़्क़ी के साथ साथ न चल सकी.

नेकी, इनसानियत या भलमनसी में वह श्रद्धा जो लोगों को आज से कुछ पीढ़ी पहले थी तेज़ी से मिटती गई. नेकी और ईमानदारी के वह सीधे सादे उसूल जो आदमी ने लाखों बरस के तजुरबे से मालूम किये थे और जिन्हें उसने अपनी सुख समृद्धि के लिये जरूरी पाया था आज हमें ग़ैर जरूरी और अपनी तरक़्क़ी में रुकावट मालूम होने लगे हैं.

भलाई और बुराई, ईमानदारी और बेईमानी हर ज़माने में रही हैं और जब तक आदमी आदमी है कम या ज़ियादा हमेशा रहेंगी. फिर भी इस बारे में युग युग में फ़रक़ होता है आज से पचास साल पहले के लाहौर की एक घटना हमें याद है. एक जूता बेचने वाला दोपहर को घर गया. दुकान पर अपने भतीजे को छोड़ गया और कह गया कि हर जोड़ी पर उसकी क़ीमत लिखी हुई है. कोई गाहक आवे तो बेच देना. भतीजे ने चचा की ग़ैर हाज़री में एक जोड़ी बेची. दुकानदार वापस आया तो लड़के ने डेढ़ रुपया क़ीमत का उसके हवाले किया. दुकानदार ने देखा तो बिके हुए जूते की असली क़ीमत सवा रुपया थी. वह भतीजे पर नाराज़ हुआ कि उसने चार आने अधिक क्यों लिये. दुकानदार ने वह चार आने अलग उठा कर रख दिये. भतीजे से ख़रीदार का हुलिया पूछा. कई दिन तक उसकी खोज में रहा. आख़िर एक दिन जब वह ख़रीदार वही जूता पहने दुकान के सामने से निकला तो दुकानदार ने उसे बुला कर चवन्नी वापस की और तसल्ली की सांस ली.

मुमकिन है इस तरह का कोई आदमी आज भी कहीं मिल जाय. लेकिन पचास साल पहले इस तरह के आदमी बहुत थे. आज नहीं के बराबर हैं.

आज से तीस चालीस बरस पहले इलाहाबाद के किसी बाज़ार में अगर कोई आदमी किसी दुकान पर अपनी छतरी भूल जाता तो दस दुकानदारों में से कम से कम आठ ऐसे निकलते जो तलाश करके भी छतरी छतरी वाले को लौटा देते. आज उसी बाज़ार में दस में से दो दुकानदार आपको मुश्किल से इस तरह के मिलेंगे.

इस तरह की मिसालें बहुत सी और लगभग हर पेशे और हर धन्दे के लोगों में से दी जा सकती हैं.

हमारे इस देश में बीस तीस साल पहले तक इलाक़े के इलाक़े ऐसे थे जिन में कोई आदमी चोरी नहीं करता

بڑی وشیشتا سائنس کی ترقی ہے. لیکن سائنس کی نئی ترقیوں نے جہاں ایک طرف ہماری جانکاری کو بڑھایا ہے وہاں دوسری طرف ہماری ضرورتوں اور چھوٹی چھوٹی خود غرضیوں کو بڑھا کر ہمارے دلوں کو سکھا دیا ہے . اس یگ میں ہماری انتی بڑے درجے تک ایک انگی رہی ہے . یعنی ہماری بھلمنسی یا نیتک انتی ہماری دماغی ترقی کے ساتھ ساتھ نہ چل سکی .

نیکی' انسانیت یا بھلمنسی میں وہ شردھا جو لوگوں کو آج سے کچھ پیڑھی پہلے تھی تیزی سے مٹتی گئی، نیکی اور ایمانداری کے وہ سیدھے سادے اصول جو آدمی نے لاکھوں برس کے تجربے سے معلوم کئے تھے اور جنہیں اس نے اپنی سکھ سمردھی کے لئے ضروری پایا تھا آج ہمیں غیر ضروری اور اپنی ترقی میں رکاوٹ معلوم ہونے لگے ہیں .

بھلائی اور برائی' ایمانداری اور بے ایمانی ہر زمانے میں رہی ہیں اور جب تک آدمی آدمی ہے کم یا زیادہ ہمیشہ رہیں گی . پھر بھی اس بارے میں یگ یگ میں فرق ہوتا ہے . آج سے پچاس سال پہلے کے لاہور کی ایک گھٹنا ہمیں یاد ہے . ایک جوتا بیچنے والا دوپہر کو گھر گیا . دکان پر اپنے بھتیجے کو چھوڑ گیا اور کہہ گیا کہ ہر جوڑی پر اسکی قیمت لکھی ہوئی ہے . کوئی گاہک آوے تو بیچ دینا . بھتیجے نے چچا کی غیرحاضری میں ایک جوڑی بیچی . دکان دار واپس آیا تو لڑکے نے ڈیڑھ روپیہ قیمت کا اس کے حوالے کیا. دکان‌دار نے دیکھا تو بکے ہوئے جوتے کی اصلی قیمت سوا روپیہ تھی . وہ بھتیجے پر ناراض ہوا کہ اس نے چار آنے ادھک کیوں لئے . دکان دار نے وہ چار آنے الگ اٹھا کر رکھ دیئے . بھتیجے سے خریدار کا حلیہ پوچھا . کئی دن تک اسکی کھوج میں رہا . آخر ایک دن جب وہ خریدار وہی جوتا پہنے دکان کے سامنے سے نکلا تو دکان دار نے اسے بلاکر چونی واپس کی اور تسلی کی سانس لی .

ممکن ہے اسطرح کا کوئی آدمی آج بھی کہیں مل جائے . لیکن پچاس سال پہلے اسطرح کے آدمی بہت تھے. آج نہیں کے برابر ہیں .

آج سے تیس چالیس برس پہلے الہ‌آباد کے کسی بازار میں اگر کوئی آدمی کسی دکان پر اپنی چھتری بھول جاتا تو دس دکان داروں میں سے کم سے کم آٹھ ایسے نکلتے جو تلاش کر کے بھی چھتری چھتری والے کو لوٹا دیتے . آج اسی بازار میں دس میں سے دو دکان دار آپ کو مشکل سے اسطرح کے ملیں گے .

اسطرح کی مثالیں بہت سی اور لگ بھگ ہر پیشے اور ہر دھندے کے لوگوں میں سے دی جا سکتی ہیں .

ہمارے اس دیش میں بیس تیس سال پہلے تک علاقے کے علاقے ایسے تھے جن میں کوئی آدمی چوری نہیں کرتا

भलमनसी में अविश्वास

[यह मज़मून "नैतिकता में अनास्था" शीर्षक से आल इंडिया रेडियो इलाहाबाद लखनऊ से ब्राडकास्ट किया गया था. आल इंडिया रेडियो की रज़ामनदी से हम इसे 'नया हिन्द' में दे रहे हैं. हमने इसे दोहराया और कहीं कहीं थोड़ा सा बदला और बढ़ाया भी है— सुन्दरलाल]

मानव समाज के पिछले कई हज़ार बरस के इतिहास को ध्यान से पढ़ने पर यह आम असर दिल पर रह जाता है कि धीरे धीरे कभी सीधे और कभी ज़रा चक्कर से हम बराबर आगे को बढ़ रहे हैं. कई बार ऐसा भी लगता है कि हम पीछे को हट रहे हैं या नीचे को गिर रहे हैं. पर अधिक ध्यान से देखने पर पता चलता है कि यह ऐसा ही है जैसा एक छोटा सा कीड़ा जो अकसर दीवारों पर चढ़ता हुआ देखा जाता है हर इंच ऊपर चढ़ने के बाद सहारा लेने के लिये अपने शरीर के अगले आधे हिस्से को फिर आध इंच पीछे ले आता है, लेकिन फिर बढ़ता है और इस तरह धीरे धीरे आगे को बढ़ते हुए दीवार के ऊपर तक पहुंच जाता है. कोई उपमा या मिसाल हर अंग में नहीं मिला करती.पर इतिहास में इनसानी क़ौम के विकास की लगभग यही गति है.

पूरब के देशों के लिये वर्तमान युग उस समय से शुरू होता है जब पूरब के बीच के ज़माने की सभ्यताओं और आजकल की पच्छिमी सभ्यता में टक्कर शुरू हुई. आज कल की पच्छिमी सभ्यता अट्ठारवीं सदी ईसवी से यानी भाप की ताक़त के पता लगने से शुरू होती है. इस सभ्यता की उमर अभी दो सौ बरस से कम है. यही ज़माना एशिया और योरप के वर्तमान संघर्ष का ज़माना है. इस ज़माने में पूरब और पच्छिम का फ़ासला भी धीरे धीरे कम होता जा रहा है और दुनिया एक होती जा रही है. यह लच्छन अच्छे लच्छन हैं और हमें साफ़ मानव उन्नति की एक बहुत बड़ी आगे की मंज़िल की तरफ़ ले जा रहे हैं.

हर युग की अपनी अच्छाइयां और अपनी बुराइयां होती हैं. इस युग की एक बहुत बड़ी अच्छाई और सब से

بھلمنسی میں اوشواس

[یہ مضمون "نیتکتا میں اناستھا" شیرشک سے آل انڈیا ریڈیو الہ آباد لکھنؤ سے براڈکاسٹ کیا گیا تھا . آل انڈیا ریڈیو کی رضامندی سے ہم اسے 'نیا ہند' میں دے رہے ہیں . ہم نے اسے دہرایا اور کہیں کہیں تھوڑا سا بدلا اور بڑھایا بھی ہے—سندر لال]

مانو سماج کے پچھلے کئی ہزار برس کے اتہاس کو دھیان سے پڑھنے پر یہ عام اثر دل پر رہ جاتا ہے کہ دھیرے دھیرے کبھی سیدھے اور کبھی ذرا چکر سے ہم برابر آگے کو بڑھ رہے ہیں . کئی بار ایسا بھی لگتا ہے کہ ہم پیچھے کو ہٹ رہے ہیں یا نیچے کو گر رہے ہیں . پر ادھک دھیان سے دیکھنے پر پتہ چلتا ہے کہ یہ ایسا ہی ہے جیسا ایک چھوٹا سا کیڑا جو اکثر دیواروں پر چڑھتا ہوا دیکھا جاتا ہے ہر انچ اوپر چڑھنے کے بعد سہارا لینے کے لئے اپنے شریر کے اگلے آدھے حصے کو پھر آدھ انچ پیچھے لے آتا ہے، لیکن پھر بڑھتا ہے اور اس طرح دھیرے دھیرے آگے کو بڑھتے ہوئے دیوار کے اوپر تک پہنچ جاتا ہے . کوئی اپما یا مثال ہر انگ میں نہیں ملا کرتی . پر اتہاس میں انسانی قوم کے وکاس کی لگ بھگ یہی گتی ہے .

پورب کے دیشوں کے لئے ورتمان یگ اس سمے سے شروع ہوتا ہے جب پورب کی بیچ کے زمانے کی سبھیتاؤں اور آج کل کی پچھمی سبھیتا میں ٹکر شروع ہوئی . آج کل کی پچھمی سبھیتا اٹھارویں صدی عیسوی سے یعنی بھاپ کی طاقت کے پتہ لگنے سے شروع ہوتی ہے . اس سبھیتا کی عمر ابھی دو سو برس سے کم ہے . یہی زمانہ ایشیا اور یورپ کے ورتمان سنگھرش کا زمانہ ہے . اس زمانے میں پورب اور پچھم کا فاصلہ بھی دھیرے دھیرے کم ہوتا جا رہا ہے اور دنیا ایک ہوتی جا رہی ہے . یہ لچھن اچھے لچھن ہیں اور ہمیں صاف مانو انتی کی ایک بہت بڑی آگے کی منزل کی طرف لے جا رہے ہیں .

ہر یگ کی اپنی اچھائیاں اور اپنی برائیاں ہوتی ہیں . اس یگ کی ایک بہت بڑی اچھائی اور سب سے

गांधी जी पर बहुत सी किताबें निकल चुकी हैं. कुछ में उनके जीवन के एक पहलू पर रोशनी डाली गई है और कुछ में पूरे जीवन का बनन किया गया है. "शान्ति दूत अमर बापू" में गांधी जी के जीवन के लगभग हर पहलू का वर्नन किया गया है पर किसी पहलू पर भी लेखक ने रोशनी नहीं डाली. इस तरह इस किताब की अहमियत नहीं के बराबर रह जाती है.

किताब की छपाई सुन्दर है, कवर भी मन को मोह लेता है, जगह जगह उचित चित्र दिये हैं. जो लोग गांधी जी की एक मामूली जानकारी हासिल करना चाहें उनके लिये कम दाम में यह किताब अच्छी है.

—मुजीब रिज़वी

संत विनोबा और भूदान यज्ञ

प्रकाशक—सर्वोदय साहित्य संघ, काशी; सफ़े 88; दाम 5 आने; पहली बार नवम्बर 1952.

गांधी स्मारक निधी (बिहार शाखा) के प्रतिनिधि सर्वोदय साहित्य संघ, काशी जैसी जिम्मेदार संस्था की तरफ से यह छोटा सा प्रकाशन देख कर हमें जहां खुशी होती है वहां यह रंज भी होता है कि ग़ैर ज़िम्मेदारी के साथ यह प्रकाशन किया गया है. किताब में सूची नहीं है, इनवर्टेड कामा का इस्तेमाल कहीं है, कहीं नहीं है.

इस किताब के चार हिस्से हैं—जीवन चरित्र, भूदान-यज्ञ, संत बाणी और गीत एवं कवितायें. पहले हिस्से में जीवन झांकी के नाम पर विनोबा जी के जीवन की कुछ तारीखों और कुछ दूसरी घटनाओं की तारीखें दे दी गई हैं. फिर विनोबा जी के ऊपर महात्मा गांधी, महादेव देसाई काका कालेलकर और एक पत्रकार के लेखों के बाद जीवन प्रसंग के नाम से विनोबाजी के जीवन से छै घटनाओं के चुटकुले दिये गये हैं.

भूदान यज्ञ वाले हिस्से में कहीं भूदानयज्ञ का इतिहास है, विनोबा जी की स्पीचें हैं और कहीं कुछ संकलन संत बानी में विनोबा जी के 36 छोटे बड़े प्रवचन जमा कर दिये गये हैं. आख़ीर में विनोबा जी और भूदान यज्ञ पर आठ गीत हैं.

किताब में सम्पादक या उस में सामग्री जमा करने वाले का नाम कहीं नहीं दिया गया. पुस्तक के शुरू में ही प्रकाशक की तरफ से जो जरूरी निवेदन है वह प्रचार मात्र लगता है.

हम उम्मीद करते हैं कि दूसरे संस्करन में प्रकाशक हमारे ऊपर के शब्दों पर नम्रता से विचार कर किताब को उपयोगी और आकर्षक बनाने की कोशिश करेंगे.

—सुरेश रामभाई

گاندھی جی، پر بہت سی کتابیں نکل چکی ہیں ۔ کچھ میں اُن کے جیون کے ایک پہلو پر روشنی ڈالی گئی ہے اور کچھ میں پورے جیون کا ورنن کیا گیا ہے ۔ "شانتی دوت امر باپو" میں گاندھی جی کے جیون کے لگ بھگ ہر پہلو کا ورنن کیا گیا ہے پر کسی پہلو پر بھی لیکھک نے روشنی نہیں ڈالی۔ اِس طرح اِس کتاب کی اہمیت نہیں کے برابر رہ جاتی ہے ۔

کتاب کی چھپائی سندر ہے' کور بھی من کو موہ لیتا ہے' جگہ جگہ اُچت چتر دئے ہیں۔ جو لوگ گاندھی جی کی ایک معمولی جانکاری حاصل کرنا چاہیں اُن کے لئے کم دام میں یہ کتاب اچھی ہے ۔

—مجیب رضوی

سنت ونوبا اور بھودان یگیہ

پرکاشک—سروودے ساہتیہ سنگھ' کاشی؛ صفحہ 88؛ دام پانچ آنے؛ پہلی بار نومبر 1952 ۔

گاندھی اسمارک ندھی بہار (شاکھا) کے پرتی‌ندھی سرووُدئے ساہتیہ سنگھ' کاشی جیسی ذمہ‌وار سنستھا کی طرف سے یہ چھوٹا سا پرکاشن دیکھکر ہمیں جہاں خوشی ہوتی ہے وہاں یہ رنج بھی ہوتا ہے کہ غیر ذمہ‌واری کے ساتھ یہ پرکاشن کیا گیا ہے ۔ کتاب میں سوچی نہیں ہے' انورٹیڈ کاما کا استعمال کہیں ہے' کہیں نہیں ہے ۔

اِس کتاب کے چار حصے ہیں—جیون چرتر' بھودان یگیہ' سنت بانی اور گیت ایوم کویتائیں ۔ پہلے حصے میں جیون جھانکی کے نام پر ونوبا جی کے جیون کی کچھ تاریخیں اور کچھ دوسری گھٹناؤں کی تاریخیں دے دی گئی ہیں۔ پھر ونوبا جی کے اُوپر مہاتما گاندھی' مہادیو دیسائی' کاکا کالیلکر اور ایک پترکار کے لیکھوں کے بعد جیون پرسنگ کے نام سے ونوبا جی سے جیون سے چھ گھٹناؤں کے چٹکلے دئے گئے ہیں ۔

بھودان یگیہ والے حصے میں کہیں بھودان یگیہ کا اتہاس ہے' ونوبا جی کی اسپیچیں ہیں اور کہیں کچھ سنکلن۔ سنت بانی میں ونوباجی کے 36 چھوٹے بڑے پروچن جمع کر دئے گئے ہیں ۔ آخیر میں ونوباجی اور بھودان یگیہ پر آٹھ گیت ہیں ۔

کتاب میں سمپادک یا اُس میں سامگری جمع کرنے والے کا نام کہیں نہیں دیا گیا، پستک کے شروع میں ہی پرکاشک کی طرف سے جو ضروری نویدن ہے وہ پرچار ماتر لگتا ہے ۔

ہم اُمید کرتے ہیں کہ دوسرے سنسکرن میں پرکاشک ہمارے اُوپر کے شبدوں پر نمرتا سے وچار کر کتاب کو اُپیوگی اور آکرشک بنانے کی کوشش کریں گے ۔

—سریش رام‌بھائی

क़ौल व फ़ैसल

लिखने वाले--मौलाना अबुलकलाम आज़ाद; अनुवादक—सैयद क़ासिम अली साहित्यलंकार; निकालने वाले—हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, ज्ञानवापी, बनारस सिटी; लिखावट—हिन्दी; सफ़ा 104; दाम—एक रुपया आठ आना.

"क़ौल व फ़ैसल" उस ज़माने की याद दिलाती है जब अंगरेज़ यहां राज करते थे और देश भक्त जेलों की कोठरियां आबाद करते थे, गोलियां खाते थे. अंगरेज़ों की अदालत थी, उनका क़ानून था, उनका फ़ैसला था. देश भक्त होना जुर्म था पर देश भक्ति जुरमों की लिस्ट में नहीं थी. इस कारन से सज़ा दूसरे क़ानूनों के अन्तरगत दी जाती थी. मौलाना आज़ाद पर बहुत से मुक़दमे चले हैं, उन्हीं में से एक मुक़दमे का पूरा वरनन इस किताब में दिया गया है.

मौलाना की क़लम का लोहा अदब की दुनिया जानती है. उनकी लेखनी कभी हिन्दुस्तानियों का दिल हिला चुकी है. पर वह सब उरदू लिखावट में है. लोगों को खोज है कि वह मौलाना की किताबें पढ़ें पर लिखावट एक मुशकिल खड़ी कर देती है. सैयद क़ासिम अली ने "क़ौल व फ़ैसल" का हिन्दी में अनुवाद कर के हिन्दी की ज़बरदस्त सेवा की है और बहुत लोगों की प्यास बुझाने का इन्तज़ाम किया है. पर अनुवाद के बजाय यह किताब अगर ज्ूं कि त्ं हिन्दी लिखावट में छपती और मुशकिल शब्दों के अथ लिख दिये जाते तो अच्छा होता. इस तरह मौलाना आज़ाद की शैली अपने असली रूप में जनता तक पहुंच सकती.

—मुजीब रिज़वी

قول و فیصل

لکھنے والے—مولانا ابوالکلام آزاد؛ انوادک—سید قاسم علی ساہتیہ النکار؛ نکالنے والے—ہندی پرچارک پستکالیہ، گیان واپی، بنارس سٹی؛ لکھاوٹ—ہندی؛ صفحہ 104؛ دام—ایک روپیہ آٹھ آنا .

"قول و فیصل" اُس زمانے کو یاد دلاتی ہے جب انگریز یہاں راج کرتے تھے اور دیش بھگت جیلوں کی کوٹھریاں آباد کرتے تھے، گولیاں کھاتے تھے. انگریزوں کی عدالت تھی، اُن کا قانون تھا، اُن کا فیصلہ تھا. دیش بھگت ہونا جرم تھا پر دیش بھگتی جرموں کی لسٹ میں نہیں تھی . اس کارن سے سزا دوسرے قانونوں کے انترگت دی جاتی تھی . مولانا آزاد پر بہت سے مقدمے چلے ہیں، انہیں میں سے ایک مقدمے کا پورا ورنن اِس کتاب میں دیا گیا ہے .

مولانا کی قلم کا لوہا ادب کی دنیا مانتی ہے. اُن کی لیکھنی کبھی ہندستانیوں کا دل ہلا چکی ہے پر وہ سب اُردو لکھاوٹ میں ہے. لوگوں کو کھوج ہے کہ وہ مولانا کی کتابیں پڑھیں پر لکھاوٹ ایک مشکل کھڑی کر دیتی ہے. سید قاسم علی نے "قول و فیصل" کا ہندی میں انوواد کرکے ہندی کی زبردست سیوا کی ہے اور بہت لوگوں کی پیاس بجھانے کا انتظام کیا ہے پر انوواد کے بجائے یہ کتاب اگر جوں کی توں ہندی لکھاوٹ میں چھپتی اور مشکل شبدوں کے ارتھ لکھ دئے جاتے تو اچھا ہوتا اِس طرح مولانا آزاد کی شیلی اپنے اصلی روپ میں جنتا تک پہونچ سکتی .

—مجیب رضوی

शान्ति दूत अमर बापू

लिखने वाले—सैयद क़ासिम अली साहित्यलंकार, निकालने वाले—हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, ज्ञान वापी, बनारस सिटी; लिखावट हिन्दी; सफ़ा 175; दाम दो रुपया.

شانتی دوت امر باپو

لکھنے والے— سید قاسم علی ساہتیہ النکار؛ نکالنے والے— ہندی پرچارک پستکالیہ، گیان واپی، بنارس سٹی؛ لکھاوٹ ہندی صفحہ 175؛ دام دو روپیہ.

में दिलचस्पी है.कोई नहीं चाहताकि उसका घर बरबाद हो, उसके बाल बच्चे खतम हों, उसका कलचर खतम हो.

सुलतानपुर

शान्ति कानफ़रेन्स के लिये सभी उमंड आए थे. हर विचार के लोग आए थे...पर ऐसा लगता था कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ वाले शान्ति आन्दोलन के बारे में बहुत से भ्रम रखते थे...बहुत से सवाल वह पूछना चाहते थे. एक सज्जन ने पंडित सुन्दरलाल से पूछा—"चीन कमयूनिस्ट राज है और कमयुनिस्ट ईश्वर को नहीं मानते और भारत ईश्वर वादी देश है. इस तरह चीन और हिन्दुस्तान की दोस्ती कैसे हो सकती है ?"—पंडित जी ने मनु भगवान के धर्म के दस नाम उन्हें गिनाए. उसमें ईश्वर का नाम नहीं था. पंडित जी ने हर धर्म की किताब से धर्म की परिभाषा सुनाई, पर किसी में ईश्वर का नाम नहीं था. सब में एक बात थी—सादगी, ईमानदारी, जनता की सेवा—"अगर धर्म इसका नाम है, अगर मज़हब इसी को कहते हैं तो चीन से ज़ियादा यह धर्म कहीं नहीं माना जाता ...आप लोग धर्म की लाश से चिपटे हुए हैं और चीनी धर्म की आत्मा को अपना रहे हैं !"—पंडित जी ने कहा.

इसी तरह के और बहुत से सवाल लोग पूछते रहे और पंडित जी उनकी तसल्ली करने को कोशिश करते रहे.

सीतापुर

शान्ति कमेटी ने पंडित सुन्दरलाल को बुलाया था. पंडित जी के भाशन ने लोगों को झिंझोड़ दिया और उनकी समझ में शान्ति आन्दोलन की असलियत आ गई.

जलपाईगुरी

इलाहाबाद और जलपाईगुरी बहुत दूर हैं...फिर भी लख के एके ने उन्हें एक कर दिया ... रात और दिन सफ़र कर के एक बूढ़ा इनसान जलपाईगुरी पहुंच ही गया...वही जाना पहचाना चेहरा...वही आवाज़... इस कंठ से हमेशा शान्ति की आवाज़ निकलती है, यह लड़ाई का माना हुआ विरोधी है. बंगाली जनता से हिन्दुस्तानी में बात करना बहुत उचित नहीं था...पर क्या किया जाय. पंडित जी घंटों बोलते रहे और सारी बात जनता के दिलों में उतरती चली गई. भाषा भिन्न थी पर आशा एक थी, विश्वास एक था, निश्चय एक था—जंग नहीं होने पाएगी, एशिया वाले एशिया वालों से नहीं लड़ेंगे, उनका खून नहीं बहेगा—हिन्दुस्तान का एक दाना, हिन्दुस्तान का एक क़तरा खून, हिन्दुस्तान की एक फूटी कौड़ी भी सामराज को मज़बूत करने में खर्च नहीं होगी... हिन्दुस्तान इसको सहन नहीं करेगा ! हिन्दुस्तान की जनता इसकी इजाज़त नहीं दे सकती !!

—प्रवासी

میں دلچسپی هے . کوئی نہیں چاهتا که اُس کا گھر برباد هو، اُس کے بال بچے ختم هوں، اُس کا کلچر ختم هو.

سلطان پور

شانتی کانفرنس کے لئے سبھی اُمنڈ آئے تھے . هر وچار کے لوگ آئے تھے...پر ایسا لگتا تھا که راشٹری سویم سیوک سنگھ والے شانتی آندولن کے بارے میں بہت سے بھرم رکھتے تھے...بہت سے سوال پوچھنا چاهتے تھے . ایک سجن نے پنڈت سندر لال سے پوچھا—"چین کمیونسٹ راج هے اور کمیونسٹ ایشور کو نہیں مانتے اور بھارت ایشور وادی دیش هے. اس طرح چین اور هندستان کی دوستی کیسے هو سکتی هے ؟" پنڈت جی نے منو بھگوان کے دھرم کے دس لکشن اُنہیں گنائے . اُس میں ایشور کا نام نہیں تھا . پنڈت جی نے هر دھرم کی کتاب سے دھرم کی پری بھاشا سنائی، پر کسی میں ایشور کا نام نہیں تھا . سب میں ایک بات تھی— سادگی، ایمانداری، جنتا کی سیوا—"اگر دھرم اِس کا نام هے، اگر مذهب اسی کو کہتے هیں تو چین سے زیادہ یه دھرم کہیں نہیں مانا جاتا هے...آپ لوگ دھرم کی لاش سے چپٹے هوئے هیں اور چینی دھرم کی آتما کو اپنا رهے هیں !" پنڈت جی نے کہا .

اِسی طرح کے اور بہت سے سوال لوگ پوچھتے رهے اور پنڈت جی اُن کی تسلی کرنے کی کوشش کرتے رهے .

سیتا پور

شانتی کمیٹی نے پنڈت سندر لال کو بلایا تھا . پنڈت جی کے بھاشن نے لوگوں کو جھنجھوڑ دیا اور اُن کی سمجھ میں شانتی آندولن کی اصلیت آ گئی .

جل پائی گوری

اِله آباد اور جل پائی گوری بہت دور هیں...پھر بھی لکھ کے ایکے نے اُنہیں ایک کر دیا...رات اور دن سفر کر کے ایک بوڑھا اِنسان جل پائی گوری پہونچ هی گیا...وهی جانا پہچانا چہرہ...وهی آواز...اس کنٹھ سے همیشه شانتی کی آواز نکلتی هے، یه لڑائی کا مانا هوا ورودھی هے . بنگالی جنتا سے هندستانی میں بات کرنا بہت اُچت نہیں تھا...پر کیا کیا جائے . پنڈت جی گھنٹوں بولتے رهے اور ساری بات جنتا کے دلوں میں اُترتی چلی گئی . بھاشا بھن تھی پر آشا ایک تھی، وشواس ایک تھا، نشچے ایک تھا—جنگ نہیں هونے پائے گی، ایشیا والے ایشیا والوں سے نہیں لڑیں گے، اُن کا خون نہیں بہے گا—هندستان کا ایک دانه، هندستان کا ایک قطرہ خون، هندستان کی ایک پھوٹی کوڑی بھی سامراج کو مضبوط کرنے میں خرچ نہیں هوگی...هندستان اِس کو سہن نہیں کرے گا ! هندستان کی جنتا اِس کی اجازت نہیں دے سکتی !!

—پرواسی

एक चीज़ देखने की दावत दे सकती हूं. बहुत ही अच्छे दृश्य हैं. ज़रा आंख बन्द कीजिये और थोड़ी देर के लिये यह सोचिये कि आप मेरे देश में हैं...रात भर बम बरसे हैं, रात भर जहाज़ों ने नीले आसमान के नीचे क़लाबाज़ियां खेली हैं...और इस समय, सुबह के वक़्त धुआं आंखों में भरा है...सूरज किधर से निकल रहा है इसका पता लगाना आसान नहीं. बहुत से प्यार जल गए हैं, बहुत से रिश्ते भुन चुके हैं...उन सब का धुआं उठ रहा है ! बरबादी के इसी ढेर में कोई अपना बेटा ढूंढ रहा है, किसी को अपने पति की खोज है, किसी का सहारा चला गया है, किसी का प्यार लुट गया है...एक तरफ़ लाशों के अंबार लगे हैं...पर लोग इनमें से किस किस को रोएं. यह भी तो पता नहीं कि कौन मर गया है और कौन ज़िन्दा है. ज़िन्दों की हालत पर रोया जाय या मुरदों की लाशों पर आंसू बहाए जायं...फ़ैसला मुशकिल है...समस्या कठिन है.

हर शहर, हर गांव का यही दृश्य है. रोज़ 700 से ले कर 1000 तक हवाई जहाज़ बाज़ की तरह हमारे देश पर मंडराते रहते हैं...दो साल में...सिर्फ़ दो साल में हमारी राजधानी पर पन्द्रह लाख बम गिराए जा चुके हैं—एक आदमी पर चार बम ! ज़रा सोचिये, ज़रा ध्यान दीजिये. एक करोड़ 50 लाख नपाम बम कोरिया की ज़मीन पर इसी अरसे में बरस चुके हैं...ज़रा सोचिये एक रात में—11 जुलाई 1952 को—पियांग यांग पर 6000 बम गिराए गए. 1000 घर बरबाद हो गए, 6000 इनसान मर गए...मैं कुछ नहीं कहती...बस इतना चाहती हूं कि आप अपने अपने देशों की कल्पना कीजिये. पियांग यांग के बजाय अपने शहरों की कल्पना कीजिये...आप सोचिये कि यह सब आपके देश में हो रहा है, यह सब आपके शहरों में हो रहा है...

हान सीरया कहती गई, जग यह दास्तान सुनता रहा...एक तरफ़ से अमरीकी प्रतिनिधि मंडल उठा—बूढ़े, जवान, मर्द, औरत—और उन्होंने सीरया को गले लगा लिया...उनकी आंखों में आंसू थे...और सीरया की आंखों में उनकी हमदर्दी ने आंसू पैदा कर दिये थे...दिल से जो बात निकलती है असर रखती है...आज उसका असर हो रहा है...सीरया ने वियाना में कहा था—इनसानियत को तीन बातों की ज़रूरत है—एक इस बात की उम्मीद कि शान्ति मुमकिन है, दूसरी इस बात का विश्वास है कि शान्ति होगी और तीसरी इस बात का निश्चय कि शान्ति क़ायम की जाय. आज इनसान को शान्ति की आशा है, आज शान्ति पर उसे भरोसा है, आज वह पूरा निश्चय कर चुका है !

शान्ति का सन्देश

कौन है जिसे शान्ति नहीं चाहिये...कौन है जिसे जंग

ایک چیز دیکھنے کی دعوت دے سکتی ہوں. بہت ہی اچھے درشیہ ہیں . ذرا آنکھ بند کیجئے اور تھوڑی دیر کے لئے یہ سوچئے کہ آپ میرے دیش میں ہیں...رات بھر بم برسے ہیں' رات بھر جہازوں نے نیلے آسمان کے نیچے قلابازیاں کھیلی ہیں...اور اِس سمے' صبح کے وقت دھواں آنکھوں میں بھرا ہے...سورج کدھر سے نکل رہا ہے اِس کا پتہ لگانا آسان نہیں . بہت سے پیار جل گئے ہیں' بہت سے رشتے بھن چکے ہیں...اُن سب کا دھواں اٹھ رہا ہے ! بربادی کے اسی ڈھیر میں کوئی اپنا بیٹا ڈھونڈ رہا ہے' کسی کو اپنے پتی کی کھوج ہے' کسی کا سہارا چلا گیا ہے' کسی کا پیار لٹ گیا ہے. ایک طرف لاشوں کے انبار لگے ہیں ...پر لوگ اِن میں سے کس کس کو روئیں. یہ بھی تو پتہ نہیں کہ کون مر گیا ہے اور کون زندہ ہے . زندوں کی حالت پر رویا جائے یا مردوں کی لاشوں پر آنسو بہائے جائیں... فیصلہ مشکل ہے' سمسیا کٹھن ہے .

ہر شہر' ہر گاؤں کا یہی درشیہ ہے . روز 700 سے لے کر 1000 تک ہوائی جہاز باز کی طرح ہمارے دیش پر منڈراتے رہتے ہیں...دو سال میں...صرف دو سال میں ہماری راجدھانی پر پندرہ لاکھ بم گرائے جا چکے ہیں—ایک آدمی پر چار بم ! ذرا سوچئے' ذرا دھیان دیجئے . ایک کروڑ 50 لاکھ نپام بم کوریا کی زمین پر اِسی عرصے میں برس چکے ہیں...ذرا سوچئے . ایک رات میں—11 جولائی 1952 کو—پیانگ یانگ پر 6000 بم گرائے گئے . 1000 گھر برباد ہوگئے' 6000 انسان مر گئے...میں کچھ نہیں کہتی...بس اتنا چاہتی ہوں کہ آپ اپنے اپنے دیشوں کی کلپنا کیجئے . پیانگ یانگ کے بجائے اپنے شہروں کی کلپنا کیجئے...آپ سوچئے کہ یہ سب آپ کے دیش میں ہو رہا ہے' یہ سب آپ کے شہروں میں ہو رہا ہے...

ہان سیریا کہتی گئی' جگ یہ داستان سنتا رہا... ایک طرف سے امریکی پرتی ندھی منڈل اٹھا—بوڑھے' جوان' مرد' عورت—اور انہوں نے سیریا کو گلے لگا لیا... ان کی آنکھوں میں آنسو تھے...اور سیریا کی آنکھوں میں ان کی ہمدردی نے آنسو پیدا کر دیئے تھے...دل سے جو بات نکلتی ہے اثر رکھتی ہے...آج اس کا اثر ہو رہا ہے... سیریا نے ویانا میں کہا تھا—انسانیت کو تین باتوں کی ضرورت ہے . ایک اس بات کی امید کہ شانتی ممکن ہے . دوسری اس بات کا وشواس کہ شانتی ہوگی اور تیسری اس بات کا نشچے کہ شانتی قائم کی جائے . آج اِنسان کو شانتی کی آشا ہے' آج شانتی پر اسے بھروسہ ہے' آج وہ پورا نشچے کر چکا ہے !

شانتی کا سندیش

کون ہے جسے شانتی نہیں چاہئے...کون ہے جسے جنگ

पर कोई रज़ामन्द नहीं, फिर भी वह मुजरिम है, फिर भी वह दोषी है—कोरिया के हर हर कन ने कहा हर हर बच्चे ने यूनो से फ़रयाद की—हमारी क़िसमत का फ़ैसला करने वालो हमारी बात भी सुन लो, हम को मुजरिम ठहराने वालो हमारी फ़रयाद भी सुन लो. पर यूनो ने कान में तेल डाल लिया, उसके सारे चार्टर ख़ामोश रहे, उसकी सारी ताक़त, सारे अधिकार अमरीका की उंगलियों पर नाचते रहे....

और आज कोरिया की कहानी सुनने के लिये हर हर देश के प्रतिनिधि इकट्ठा थे. यह लेक सकसेस नहीं वियाना है. यहां कोरिया को अपनी बात सुनाने के लिये मांग नहीं करनी पड़ती बल्कि लोग इच्छुक हैं कि वह दुख की दास्तान सुन सकें, और उसे सुन कर कोई इलाज निकाल सकें—हमदर्दी ने जज़बात उभार दिये, दबी हुई आग फिर जल उठी, हान सीरया के ख़ून में जोश भर गया. वह नहीं बोल रही थी बल्कि उसका दिल बोल रहा था. वह नहीं कह रही थी बल्कि कोरिया उसके सामने खड़ी हो कर उस से कहलवा रही थी. कोरिया की इस बेटी ने कहा था—"मुझे शान्त होना चाहिये, मैं जानती हूँ...पर मैं शान्त कैसे रहूं, मैं अपने भावों को कैसे दबाऊं...अभी लड़ाई हो रही है, अभी गोले चल रहे हैं...अभी मुझे शान्ति कहां...अभी मैं शान्त कैसे रहूं."

दुनिया के बड़े बड़े विद्वान भाशन दे चुके थे, बड़ी बड़ी बातें हो चुकी थीं...पर वह सब दिमाग़ की बातें थीं, सोच विचार की बातें थीं...यहां सिर्फ़ दिल बोल रहा था...एक औरत का दिल अपनी फ़रयाद सुना रहा था—"हम कोरिया से वियाना आए हैं. बहुत से देशों को हमने देखा है, संस्कृति और कला के बहुत से नमूने हमने देखे हैं...मेरे साथियो, शान्ति के प्रेमियो ! मैं सच कहती हूँ, मेरा विश्वास करो...मुझे इन नमूनों को देख देख कर ख़ुशी होती थी, शायद होंट मुसकराते भी थे...पर मैं रो रही थी, मेरा दिल ख़ून हुआ जा रहा था—मेरा देश पुराना है, हमारी सभ्यता पुरानी है, हमारे पास पांच हज़ार बरस पुरानी संस्कृति के ख़ज़ाने थे...पर अब वह कहां ! राख का एक ढेर, बरबादी का एक खलियान, और कुछ नहीं, बिलकुल कुछ नहीं. मैं आप से कहना चाहती हूं कि आप मेरे देश चलिये, हमारी संस्कृति देखिये... हम आपकी मेहमानदारी का सौभाग्य प्राप्त करना चाहते हैं...पर मैं यह कैसे कहूँ...मैं आपको किस चीज़ को देखने की दावत दूं !..."

हाल में सन्नाटा था, किसी के मुंह पर हंसी नहीं थी...एक लड़की की आवाज़ ने सबकी आत्मा को झिंझोड़ कर रख दिया था. हान सीरया कह रही थी—"मैं आपको

پر کوئی رضامند نہیں' پھر بھی وہ مجرم ہے' پھر بھی وہ دوشی ہے—کوریا کے ہر ہر کن نے کہا ہر ہر بچے نے یونو سے فریاد کی—ہماری قسمت کا فیصلہ کرنے والو ہماری بات بھی سن لو' ہمکو مجرم ٹھہرانے والو ہماری فریاد بھی سن لو . پر یونو نے کان میں تیل ڈال لیا' اُس کے سارے چارٹر خاموش رہے' اُس کی ساری طاقت' سارے ادھیکار امریکہ کی اُنگلیوں پر ناچتے رہے...

اور آج کوریا کی کہانی سننے کے لئے ہر ہر دیش کے پرتیندھی اکٹھا تھے. یہ لیک سکسیس نہیں بلکہ ویانا ہے. یہاں کوریا کو اپنی بات سنانے کے لئے مانگ نہیں کرنی پڑتی بلکہ لوگ اچھک ہیں کہ وہ دکھ کی داستان سن سکیں' اور اُسے سن کر کوئی علاج نکال سکیں—ہمدردی نے جذبات اُبھار دیئے' دبی ہوئی آگ پھر جل اُٹھی' ہان سیریا کے خون میں جوش بھر گیا . وہ نہیں بول رہی تھی بلکہ اُس کا دل بول رہا تھا . وہ نہیں کہہ رہی تھی بلکہ کوریا اس کے سامنے کھڑی ہو کر اس سے کہلوا رہی تھی . کوریا کی اِس بیٹی نے کہا تھا—" مجھے شانت ہونا چاہئے' میں جانتی ہوں...پر میں شانت کیسے رہوں' میں اپنے بھاؤں کو کیسے دباؤں...ابھی لڑائی ہو رہی ہے' ابھی گولے چل رہے ہیں...ابھی مجھے شانتی کہاں...ابھی میں شانت کیسے رہوں ."

دنیا کے بڑے بڑے ودوان بھاشن دے چکے تھے' بڑی بڑی باتیں ہو چکی تھیں...پر وہ سب دماغ کی باتیں تھیں' سوچ وچار کی باتیں تھیں...یہاں صرف دل بول رہا تھا...ایک عورت کا دل اپنی فریاد سنا رہا تھا—"ہم کوریا سے ویانا آئے ہیں . بہت سے دیشوں کو ہم نے دیکھا ہے' سنسکرتی اور کلا کے بہت سے نمونے ہم نے دیکھے ہیں ...میرے ساتھیو' شانتی کے پریمیوں ! میں سچ کہتی ہوں' میرا وشواس کرو...مجھے اِن نمونوں کو دیکھ دیکھکر خوشی ہوتی تھی' شاید ہونٹ مسکراتے بھی تھے...پر میں رو رہی تھی' میرا دل خون ہوا جا رہا تھا—میرا دیش پرانا ہے' ہماری سبھیتا پرانی ہے' ہمارے پاس پانچ ہزار برس پرانی سنسکرتی کے خزانے تھے...پر اب وہ کہاں... ! راکھ کا ایک ڈھیر' بربادی کا ایک کھلیان اور کچھ نہیں' بالکل کچھ نہیں . میں آپ سے کہنا چاہتی ہوں کہ آپ میرے دیش چلئے' ہماری سنسکرتی دیکھئے...ہم آپکی مہمانداری کا سوبھاگ پراپت کرنا چاہتے ہیں...پر میں یہ کیسے کہوں...میں آپ کو کس چیز کو دیکھنے کی دعوت دوں !..."

ہال میں سناٹا تھا' کسی کے منہ پر ہنسی نہیں تھی...ایک لڑکی کی آواز نے سب کی آتما کو جھنجھوڑ کر رکھ دیا تھا . ہان سیریا کہہ رہی تھی—" میں آپ کو

मैं उस रात नहीं सो पाया...एक सवाल मेरे दिमाग़ में गूंजता रहा—मेरे मां बाप कहते हैं कि वह निर्दोश हैं... आपकी सरकार कहती है कि वह जासूस हैं ..मैं फ़ैसला कैसे कर सकता हूं...मान लिया वह जासूस हैं...पर ओटिस भी तो जासूस थे...अगर ओटिस को अत्याचारी, निर्दई कमयुनिस्ट इसी जुर्म में छोड़ सकते हैं...तो आप... तो कमयुनिस्ट नहीं हैं, आप तो क्रिसचियन हैं...फिर आप ज़रूर हमारे मां बाप को रिहा कर सकते हैं...मैं सोचता रहा...आप से न जाने कितनी अपीलें मैंने कीं... काश आप मेरे सामने होते. काश आप मेरी हालत देख सकते !...मेरे प्रेसीडेन्ट ! मैंने जानना चाहा कि ओटिस कैसे छूट गए...कौन सी तरकीब थी जिसने कमयुनिस्टों का दिल पिघला दिया...और मुझे यह जानकर ताज्जुब हुआ...कमयुनिस्ट भी अपील सुनते हैं... उनके भी दिल होता है, वह भी रहम करना जानते हैं...ओटिस की बीवी ने अपील की और ओटिस छूट गए...ओटिस की बीवी ने रहम मांगा और कमयुनिस्टों ने उन्हें रहम दे दिया... मैंने सुना है मेरे बुज़ुर्ग कि बच्चों की प्रार्थना में बहुत असर होता है, बच्चों पर सब को ही रहम आ जाता है.. मैं इसी उम्मीद पर आपको लिख रहा हूं...मैं इसीलिये आप से फ़रयाद कर रहा हूं. मेरे मां बाप को छोड़ दीजिये, मुझे यतीम न कीजिये मेरे प्रेसीडेन्ट ! पर आप ख़ामोश हैं, आप जवाब भी नहीं देते...क्या मैं यह समझ लूं कि रहम, ईसाइयत, इनसाफ़, आज़ादी...सब ड्रामा है ! सब दिखावा है, कोरा प्रचार है !!

कोरिया की बेटी

हमदर्द मुश्किल से मिलते हैं...शायद क़िस्मत से मिलते हैं पर हमदर्दी मरहम का काम करती है या ज़ख़्मों को हरा कर देती है, इसका साफ़ फ़ैसला नहीं किया जा सकता. दुख की मनज़िलों में एक स्थान वह भी है जहां दुख की पहचान बाक़ी नहीं रह जाती. पीड़ित यह नहीं जानता कि पीड़ा क्या है ? उस समय अगर कोई तसल्ली की बातें करने लगे, उस वक़्त अगर कोई अपना दुख सिर्फ़ सुनने को तैयार हो जाय ! आदमी रो पड़ता है. दुख की पहचान हो जाती है, कसक तेज़ हो जाती है, लाख रोकने पर भी तबियत नहीं मानती. वियाना कोरिया के प्रतिनिधियों को वह वातावरन दे रहा था जिसकी उन्हें इच्छा थी और जिससे यूनो ने उन्हें महरूम कर दिया था, जो उनका अधिकार था. पर जिस से "इनसाफ़ और आज़ादी के संतरियों" ने कोरिया को वंचित कर दिया था. उत्तर कोरिया ने हर बार प्रार्थना की और हर बार उसकी मांग को ठुकरा दिया गया. यूनो भी क्या अदालत है ! मुलज़िम का चेहरा भी देखने को कोई तैयार नहीं, उसकी बात सुनने

میں اُس رات نہیں سو پایا. ایک سوال میرے دماغ میں گونجتا رہا—میرے ماں باپ کہتے ہیں کہ وہ نردوش ہیں...آپ کی سرکار کہتی ہے کہ وہ جاسوس ہیں...میں فیصلہ کیسے کرسکتا ہوں...مان لیا وہ جاسوس ہیں... پر اوٹس بھی تو جاسوس تھے...اگر اوٹس کو اتیاچاری، نردئی کمیونسٹ اسی جرم میں چھوڑ سکتے ہیں...تو آپ...آپ تو کمیونسٹ نہیں ہیں، آپ تو کرسچین ہیں ...پھر آپ ضرور ہمارے ماں باپ کو رہا کرسکتے ہیں... میں سوچتا رہا...آپ سے نہ جانے کتنی اپیلیں میں نے کیں...کاش آپ میرے سامنے ہوتے، کاش آپ میری حالت دیکھ سکتے !...میرے پریسیڈنٹ ! میں نے جاننا چاہا کہ اوٹس کیسے چھوٹ گئے...کونسی ترکیب تھی جس نے کمیونسٹوں کا دل پگھلا دیا...اور مجھے یہ جان کر تعجب ہوا...کمیونسٹ بھی اپیل سنتے ہیں...اُن کے بھی دل ہوتا ہے، وہ بھی رحم کرنا جانتے ہیں...اوٹس کی بیوی نے اپیل کی اور اوٹس چھوٹ گئے...اوٹس کی بیوی نے رحم مانگا اور کمیونسٹوں نے اُنھیں رحم دے دیا...میں نے سنا ہے میرے بزرگ کہ بچوں کی پرارتھنا میں بہت اثر ہوتا ہے، بچوں پر سب کو ہی رحم آ جاتا ہے...میں اِسی اُمید پر آپ کو لکھ رہا ہوں...میں اِسی لئے آپ سے فریاد کر رہا ہوں. میرے ماں باپ کو چھوڑ دیجئے، مجھے یتیم نہ کیجئے...میرے پریسیڈنٹ !...پر آپ خاموش ہیں، آپ جواب بھی نہیں دیتے...کیا میں یہ سمجھ لوں کہ— رحم، عیسائیت، انصاف، آزادی...سب ڈرامہ ہے ! سب دکھاوا ہے، کورا پرچار ہے !!

کوریا کی بیٹی

ہمدرد مشکل سے ملتے ہیں...شاید قسمت سے ملتے ہیں. پر ہمدردی مرہم کا کام کرتی ہے یا زخموں کو ہرا کر دیتی ہے، اِس کا صاف فیصلہ نہیں کیا جاسکتا. دکھ کی منزلوں میں ایک اِستھان وہ بھی ہے جہاں دکھ کی پہچان باقی نہیں رہ جاتی. پیڑت یہ نہیں جانتا کہ پیڑا کیا ہے ؟ اُس سمے اگر کوئی تسلی کی باتیں کرنے لگے، اُس وقت اگر کوئی اپنا دکھ صرف سننے کو تیار ہو جائے ! آدمی رو پڑتا ہے. دکھ کی پہچان ہو جاتی ہے، کسک تیز ہو جاتی ہے، لاکھ روکنے پر بھی طبیعت نہیں مانتی. ویانا کوریا کے پرتیندھیوں کو وہ واتاورن دے رہا تھا جس کی اُنھیں اِچھا تھی اور جس سے یونو نے اُنھیں محروم کردیا تھا، جو اُن کا ادھیکار تھا پر جس سے "انصاف اور آزادی کے سنتریوں" نے کوریا کو ونچت کردیا تھا. اُتر کوریا نے ہر بار پرارتھنا کی اور ہر بار اُس کی مانگ کو ٹھکرا دیا گیا. یونو بھی کیا عدالت ہے ! ملزم کا چہرہ بھی دیکھنے کو کوئی تیار نہیں، اُس کی بات سننے

सचाई क्या थी, भला मैं क्या समझ सकता हूं...मैं इतना समझ सकता हूं कि ओटिस ने वही जुर्म किया था जिसका इलज़ाम मेरे मां बाप की गरदन पर है...फ़रक़ है तो बस इतना कि मेरे मां बाप ने सदा अपने को निर्दोश कहा है, अपने को देश भक्त कहा है और ओटिस ने जुर्म को माना है...लेकिन हमें बताया गया है कि ओटिस ने अत्याचार से मजबूर हो कर जुर्म माना है... नहीं तो इलज़ाम ग़लत है, ओटिस बे क़सूर हैं...यह भी बताया गया था कि कमयुनिस्ट इसी तरह लोगों को फांसी दिया करते हैं...पर मुझे ताज्जुब हुआ कि "ज़ालिम कमयुनिस्टों" ने ओटिस को छोड़ दिया...ओटिस अमरीका आए...हमारे देश के बड़े नेता डलेस ने उन्हें बधाई दी. ओटिस साहब इतने अहम थे कि दूर पूरब और एशिया की उलझी हुई समस्याओं के बीच भी डलेस साहब को उनका ख़याल रहा ! ओटिस का जलूस निकल रहा था... लोग खड़े तमाशा देख रहे थे...मेरे प्रेसीडेन्ट, हम भी गए थे यह देखने कि ओटिस की शकल कमयुनिस्टों ने कैसी बना दी है...उनको कैसी कैसी तकलीफ़ें पहुंचाई हैं... पर वह ख़ुश थे, वह तन्दुरुस्त थे, वह मोटे ताज़े थे...फिर मेरे दिमाग़ में एक ख़याल उठा . क्या कमयुनिस्ट ज़ुल्म करके लोगों को ऐसा ही बना देते हैं...शक पैदा हो गया था पर मुझे इतमिनान चाहिये था...मैं उनकी प्रेस कानफ़रेन्स में गया......लोग उनसे सवाल कर रहे थे. दो सौ मुंह हर तरफ़ से शब्दों के तीर बरसा रहे थे . ओटिस ने हंस कर जवाब दिया...आपने सुना तो होगा ही...जितनी तकलीफ़ आप लोग मुझे इस समय दे रहे हैं इतनी चेकोस्लोवेकिया की पुलिस ने मुझे कभी भी नहीं दी...मेरी आंख खुली की खुली रह गई...मैं अपनी जगह से उठ कर उनके और क़रीब चला गया....फिर एक पत्रकार ने उनसे पूछा —क्या यह सच है कि आपको स्टेट डिपार्टमेन्ट से तनख़ा मिलती है, क्या यह सच है कि आपने जासूसी का इलज़ाम स्वीकार कर लिया है...ओटिस चुप रहे, उन्होंने इसका जवाब नहीं दिया. उन्होंने यह भी कहा कि जेल में उनके साथ बहुत अच्छा सलूक किया गया था, वह बहुत अच्छी तरह रखे गए थे...उन्होंने यह भी बताया कि जिस तरह पत्रकार अमरीका में ख़बर की खोज करते हैं उन तरीक़ों से चेकोस्लोवेकिया में जेल की हवा ज़रूर खानी पड़ेगी...उन्होंने जासूस न होने की सफ़ाई नहीं दी...पर यह ज़रूर कहा—अगर आप लोग अमरीका में भी यह पता लगाने जाइये कि यूरेनियम किन किन रास्तों से और किन किन देशों से यहां आता है तो आप ज़रूर गिरफ़्तार कर लिये जायेंगे...कानफ़रेन्स ख़तम हो गई . मैंने लोगों को कहते सुना—"उन्होंने जासूसी ज़रूर की थी...इलज़ाम को स्वीकार ठीक ही किया था.."

سچائی کیا تھی' بھلا میں کیا سمجھ سکتا ہوں ...میں اتنا سمجھ سکتا ہوں کہ اوٹس نے وھی جرم کیا تھا جس کا الزام میرے ماں باپ کی گردن پر ہے...فرق ہے تو بس اتنا کہ میرے ماں باپ نے سدا اپنے کو نردوش کہا ہے' اپنے کو دیش بھگت کہا ہے اور اوٹس نے جرم کو مانا ہے...لیکن ہمیں بتایا گیا ہے کہ اوٹس نے اتیاچار سے مجبور ہوکر جرم مانا ہے...نہیں تو الزام غلط ہے' اوٹس بےقصور ہیں...یہ بھی بتایا گیا تھا کہ کمیونسٹ اسی طرح لوگوں کو پھانسی دیا کرتے ہیں...پر مجھے تعجب ہوا کہ "ظالم کمیونسٹوں" نے اوٹس کو چھوڑ دیا...اوٹس امریکہ آئے...ہمارے دیش کے بڑے نیتا ڈلس نے اُنہیں بدھائی دی. اوٹس صاحب اِتنے اہم تھے کہ دور پورب اور ایشیا کی اُلجھی ہوئی سمسیاؤں کے بیچ بھی ڈلس صاحب کو اُن کا خیال رہا !...اوٹس کا جلوس نکل رہا تھا ...لوگ کھڑے تماشہ دیکھ رہے تھے...میرے پریسیڈنٹ' ہم بھی گئے تھے...یہ دیکھنے کہ اوٹس کی شکل کمیونسٹوں نے کیسی بنا دی ہے...اُن کو کیسی کیسی تکلیفیں پہنچائی ہیں...پر وہ خوش تھے' وہ تندرست تھے' وہ موٹے تازے تھے...پھر میرے دماغ میں ایک خیال اٹھا... کیا کمیونسٹ ظلم کرکے لوگوں کو ایسا ھی بنا دیتے ہیں ...شک پیدا ہوگیا تھا پر مجھے اِطمینان چاہئے تھا... میں اُن کی پریس کانفرنس میں گیا...لوگ ان سے سوال کر رہے تھے. دو سو منہ ہر طرف سے شبدوں کے تیر برسا رہے تھے. اوٹس نے ہنس کر جواب دیا...آپ نے سنا تو ہوگا ہی...جتنی تکلیف آپ لوگ مجھے اِس سمے دے رہے ہیں' اتنی چیکوسلویکیا کی پولیس نے مجھے کبھی بھی نہیں دی...میری آنکھ کھلی کی کھلی رہ گئی ...میں اپنی جگہ سے اٹھ کر ان کے اور قریب چلا گیا... پھر ایک پترکار نے اُن سے پوچھا—کیا یہ سچ ہے کہ آپکو اسٹیٹ ڈپارٹمنٹ سے تنخواہ ملتی ہے' کیا یہ سچ ہے کہ آپ نے جاسوسی کا الزام سویکار کر لیا ہے...اوٹس چپ رہے' اُنہوں نے اِس کا جواب نہیں دیا. اُنہوں نے یہ بھی کہا کہ جیل میں ان کے ساتھ بہت اچھا سلوک کیا گیا تھا' وہ بہت اچھی طرح رکھے گئے تھے...اُنہوں نے یہ بھی بتایا کہ جس طرح پترکار امریکہ میں خبر کی کھوج کرتے ہیں اُن طریقوں سے چیکوسلویکیا میں جیل کی ہوا ضرور کھانی پڑے گی...اُنہوں نے جاسوس نہ ہونے کی صفائی نہیں دی ...پر یہ ضرور کہا—اگر آپ لوگ امریکہ میں بھی یہ پتہ لگانے جائیے کہ یورنیم کن کن راستوں سے اور کن کن دیشوں سے یہاں آتا ہے تو آپ ضرور گرفتار کرلئے جائیں گے...کانفرنس ختم ہوگئی...میں نے لوگوں کو کہتے سنا—"اُنہوں نے جاسوسی ضرور کی تھی ... الزام کو سویکار ٹھیک ھی کیا تھا."

प्रवासी की डायरी

मैकाइल ने लिखा है : मेरी मां को छोड़ दो, मेरे बाप को बचा लो. मेरे देश के प्रेसीडेन्ट ! मुझे यतीम होने से तुम ही बचा सकते हो, तुम्हीं मुझे मां का प्यार दिला सकते हो. हम भाई बहन मां की गोद के लिये बरसों से तरस रहे हैं. हमें मां की गोद वापस कर दो. अभी तो मां के मधुर गीत पूरे नहीं हुए, अभी तो उसने जी भर हमें प्यार नहीं किया, अभी तो उसकी लोरियां बाक़ी हैं, अभी तो उसके उपदेश बाक़ी हैं...मेरे प्रेसीडेन्ट ! तुम मुझे यह सब दे सकते हो. मैकाइल को ईथिल दे सकते हो, जूलियस से मैकाइल को मिला सकते हो...प्रेसीडेन्ट ! ख़ामोशी...कोई जवाब नहीं...कोई तसल्ली नहीं...कोई दिलासा नहीं...हमें निराश मत करो...अब भी चुप हो...मेरी उमर दस बरस की है...मैं बच्चा हूं...बिलकुल वैसा ही बच्चा जैसा तुम्हारा कोई बच्चा होगा...तुम्हारे बेटे का बचा होगा...तुम्हारी बेटी का बचा होगा...प्रेसीडेन्ट ! मैंने ऐसा साहस क्यों किया, आपको लिखने की हिम्मत क्यों की ?....आप ज़रूर पूछेंगे...आप यह भी सोचेंगे...मुझे किसी ने सिखा दिया है...मैंने आपको नहीं लिखा बल्कि मुझ से यह सब लिखाया गया है...यह ठीक नहीं है...यह सच नहीं है. यह शब्द मेरे हैं, यह भाव मेरे हैं, यह पुकार मेरी है... अगर इस में असर नहीं है, अगर यह आवाज़ आप के दिल को नहीं हिला सकती, तो यह मेरी कमी है...मैंने क्यों लिखा है, इसका भी कारन सुन लीजिये...रेडियो पर, स्कूल में, सनीमे में, हर जगह मुझे एक बात सुनने को मिलती है...कमयुनिस्ट ज़ालिम होते हैं...कमयुनिस्ट बे रहम होते हैं...अत्याचारी होते हैं...ख़ून बहाना उनका पेशा है...मासूमों को फांसी देने में उन्हें आनन्द आता है...मैं भी यही समझता था...भला आप झूट कैसे बोल सकते हैं...अपने बच्चों को आप भ्रम में कैसे रख सकते हैं ! पर एक दिन, एक सुबह...मैंने सुना कि मिस्टर ओटिस को चेकोस्लोवेकिया के कमयुनिस्टों ने छोड़ दिया है...मुझे अचंभा हुआ...विश्वास कीजिये मुझे यक़ीन नहीं पड़ा. मैंने सब से पूछा, सब से सवाल किया...पर किसी ने ठीक जवाब नहीं दिया....ओटिस को चेकोस्लोवेकिया में पकड़ लिया गया था...उन पर इलज़ाम था कि वह जासूस हैं...वह चेकोस्लोवेकिया में हमारे देश की तरफ़ से मुख़बिरी करते हैं.. मुझे यह भी मालूम हुआ कि उन्होंने अपना जुर्म मान लिया है. क्यों मान लिया था,

پرواسی کی ڈائری

میکائل نے لکھا ہے : میری ماں کو چھوڑ دو، میرے باپ کو بچا لو . میرے دیش کے پریسیڈنٹ ! مجھے یتیم ہونے سے تم ہی بچا سکتے ہو، تم ہی مجھے ماں کا پیار واپس دلا سکتے ہو . ہم بھائی بہن ماں کی گود کے لئے برسوں سے ترس رہے ہیں. ہمیں ماں کی گود واپس کردو. ابھی تو ماں کے مدھر گیت پورے نہیں ہوئے، ابھی تو اس نے جی بھر کر ہمیں پیار نہیں کیا، ابھی تو اس کی لوریاں باقی ہیں، ابھی تو اس کے اپدیش باقی ہیں... میرے پریسیڈنٹ ! تم مجھے یہ سب دے سکتے ہو . میکائل کو ایتھل دے سکتے ہو، جولیس سے میکائل کو ملا سکتے ہو...پریسیڈنٹ !...خاموشی...کوئی جواب نہیں ...کوئی تسلی نہیں...کوئی دلاسا نہیں...ہمیں نراش مت کرو...اب بھی چپ ہو...میری عمر دس برس کی ہے ...میں بچہ ہوں...بالکل ویسا ہی بچہ...جیسا تمہارا کوئی بچہ ہوگا...تمہارے بیٹے کا بچہ ہوگا...تمہاری بیٹی کا بچہ ہوگا...پریسیڈنٹ ! میں نے ایسا ساہس کیوں کیا، آپ کو لکھنے کی ہمت کیوں کی ؟...آپ ضرور پوچھیں گے...آپ یہ بھی سوچیں گے...مجھے کسی نے سکھا دیا ہے ...میں نے آپ کو نہیں لکھا بلکہ مجھ سے یہ سب لکھایا گیا ہے...یہ ٹھیک نہیں ہے...یہ سچ نہیں ہے . یہ شبد میرے ہیں، یہ بھاؤ میرے ہیں، یہ پکار میری ہے...اگر اس میں اثر نہیں ہے، اگر یہ آواز آپ کے دل کو نہیں ہلا سکتی، تو یہ میری کمی ہے...میں نے کیوں لکھا ہے، اس کا بھی کارن سن لیجئے...ریڈیو پر، اسکول میں، سنیمے میں، ہر جگہ مجھے ایک بات سننے کو ملتی ہے... کمیونسٹ ظالم ہوتے ہیں...کمیونسٹ بےرحم ہوتے ہیں... اتیاچاری ہوتے ہیں...خون بہانا اُن کا پیشہ ہے...معصوموں کو پھانسی دینے میں انہیں آنند آتا ہے...میں بھی یہی سمجھتا تھا...بھلا آپ جھوٹ کیسے بول سکتے ہیں...اپنے بچوں کو آپ بھرم میں کیسے رکھ سکتے ہیں ! پر ایک دن، ایک صبح...میں نے سنا کہ مسٹر اوٹس کو چیکوسلوکیا کے کمیونسٹوں نے چھوڑ دیا ہے...مجھے اچنبھا ہوا... وشواس کیجئے مجھے یقین نہیں پڑا . میں نے سب سے پوچھا، سب سے سوال کیا...پر کسی نے ٹھیک جواب نہیں دیا...اوٹس کو چیکوسلوکیا میں پکڑ لیا گیا تھا...اُن پر الزام تھا کہ وہ جاسوس ہیں...وہ چیکوسلوکیا میں ہمارے دیش کی طرف سے مخبری کرتے ہیں...مجھے یہ بھی معلوم ہوا کہ اُنہوں نے اپنا جرم مان لیا ہے . کیوں مان لیا تھا،

पर दूसरे क्षन ही वह चेत गई कि वह कुंवारी है. लज्जा ने उसके शरीर में कम्पन पैदा कर दिया. वह चाहती थी कि बच्चे को छोड़ कर सब की नज़र से बच कर वह बदन चुराती वहां से भाग जाय. पर बच्चे को बिना चुप कराए वह नीचे भी नहीं उतार सकती थी.

सुधा चुप चाप आंसू बहा रही थी...उसका पति नज़रें नीची किये चिन्ता में डूबा खड़ा था.

दो मिनट के बाद शकीला आगे बढ़ी. अपने आंचल से मुंह पोंछते हुए सुधा को उसने गले से लगा लिया.

"मुझे माफ़ कर दो, बहन. मेरी बेरुखी इसी कारन से थी, मैं नहीं चाहती थी कि तुम हमारी हालत जानो." सुधा ने कहा.

शकीला ने उसे भींच लिया और कहा—

"हम तुम दोनों एक ही नाव के सवार हैं बहन. मैं तुम से तुम्हारे घर का झूठन मांगने आई थी...तुम्हारा रख देख कर मैंने तुम्हारे बारे में न जाने कैसे बुरे बुरे ख़याल बना लिये थे...मैंने सोचा था कि हिन्दू मुसलमान से नफ़रत करते हैं इसलिये मुसलमानों को नौकरी नहीं मिलती, मेरे भय्या को नौकरी नहीं मिलती...पर मुझे पता नहीं था कि हिन्दू भी बेकार रहते हैं. भूके रहते हैं. बहन मुझे माफ़ कर दो...मुझे माफ़ कर दोगी न बहन..."

दोनों ने एक दूसरे को ज़ोरों से भींच लिया, दोनों की आंखों से आंसू बरसते रहे.

—मुजीब रिज़वी

پر دوسرے چھن ہی وہ چیت گئی کہ وہ کنواری ہے ۔ لجانے اسکے شریر میں کمپن پیدا کر دیا ۔ وہ چاہتی تھی کہ بچے کو چھوڑ کر سب کی نظر سے بچ کر وہ بدن چراتی وہاں سے بھاگ جائے۔ پر بچے کو بنا چپ کرائے وہ نیچے بھی نہیں اتار سکتی تھی ۔

سدھا چپ‌چاپ آنسو بہا رہی تھی...اس کا پتی نظریں نیچی کئے چنتا میں ڈوبا کھڑا تھا ۔

دو منٹ کے بعد شکیلہ آگے بڑھی ۔ اپنے آنچل سے منہ پونچھتے ہوئے سدھا کو اس نے گلے سے لگا لیا ۔

" مجھے معاف کر دو' بہن۔ میری بے رخی اسی کارن سے تھی' میں نہیں چاہتی تھی کہ تم ہماری حالت جانو" سدھا نے کہا ۔

شکیلہ نے اسے بھینچ لیا اور کہا—

"ہم تم دونوں ایک ہی ناؤ کے سوار ہیں بہن میں تم سے تمہارے گھر کا جھوٹن مانگنے آئی تھی...تمہارا رخ دیکھکر میں نے تمہارے بارے میں نہ جانے کیسے برے برے خیال بنا لئے تھے...میں نے سوچا تھا کہ ہندو مسلمانوں سے نفرت کرتے ہیں اس لئے مسلمانوں کو نوکری نہیں ملتی' میرے بھیا کو نوکری نہیں ملتی...پر مجھے پتہ نہیں تھا کہ ہندو بھی بیکار رہتے ہیں ۔ بھوکے رہتے ہیں ۔ بہن مجھے معاف کر دو...مجھے معاف کر دو گی نہ بہن..."

دونوں نے ایک دوسرے کو زوروں سے بھینچ لیا' دونوں کی آنکھوں سے آنسو برستے رہے ۔

—مجیب رضوی

"मुझ से मत पूछो कि मैं क्या चाहती हूं, अपने लाडले से पूछो कि वह क्या चाहता है..."

"उसे समझा सकती थीं तुम...फुसला सकती थीं तुम...मार से ही क्या काम चल सकता है....और कोई तरीक़ा नहीं है..."

"तरीक़ा है तो...पर मैं उसे दूध कहां से दूं...न तुम कमा कर रख गए हो और न मैं कहीं से कमा कर ला सकती हूं..."

"सुधा, तुम्हारे ताने बहुत हो चुके...अब मेरा कलेजा छलनी मत करो...आख़िर मैं क्या करूं...तुम्हीं बताओ... एक रास्ता बाक़ी है...मैं फ़ांसी लगा लूं..मर जाऊं...

शकीला यह बातचीत सुन कर इन दोनों के पास आ गई. बच्चा रोता रहा. मर्द खड़ा सोचता रहा.

स्त्री अपने भाव दबाने की कोशिश करती रही. मर्द ने शकीला को सम्बोधित करके कहा—

"बहन तुम ही समझाओ. तुम ही इनसाफ़ कर दो ! इस में मेरी क्या ख़ता है...मेरी नौकरी छूट गई थी.. भूकों मरने की नौबत आ गई...मरता क्या न करता इन्हें मैके भिजवा दिया...यक़ीन मानो मुझे कोई ख़ुशी नहीं हुई...पर मजबूरी को क्या करूं...मैं एक मिनट भी निश्चिन्त नहीं बैठा. दरवाज़े दरवाज़े चक्कर काटे . कहीं नौकरी नहीं मिली.. किसी को मेरी ज़रूरत नहीं थी.... आख़िर एक लकड़ी की टाल पर पचास रुपए माहवार पर नौकरी कर ली...पचास रुपए में क्या हो सकता था. इन लोगों का किराया कहां से लाता. तीन महीने तक तन पेट काट कर रुपए जुटाता रहा...न जाने क्या सूझी थी मुझे कि अपने पास रुपया रखने के बजाय मैंने सेठ के पास पूरी रक़म जमा कर दी...पिछली बेकारी में बरतन वग़ैरा भी बिक गए थे. सोचा था कि इस रक़म से ग्रहस्थी फिर से जुटा लूंगा...पर क्या करूं. इनके भाई कल यहां छोड़ गए... भलामानुस रुका भी नहीं...मैं दौड़ा दौड़ा सेठ के पास गया...अपना रुपया मांगा—बहन, उसने साफ़ इनकार कर दिया...मुझे झूटा और बेईमान बताने लगा...सारा रुपया मेरा हज़म कर गया...नौकरी से उलटा अलग कर दिया... अब मैं क्या करूं...तुम ही बताओ बहन मैं क्या करूं... किस से फ़रयाद करूं...तुम ही सुधा को समझा दो... ग़ुस्सा न करे...बच्चे को न मारे...उस मासूम की क्या ख़ता है...वह हमारी मुशकिलों को तो नहीं समझ सकता... फिर उस पर नाराज़ होने से क्या लाभ..."

शकीला ने बच्चे को गोद में उठा लिया. आंचल से उसका मुंह पोंछा और एक बार उसके दिमाग़ में यह ख़्याल गूंजा कि वह अपना दूध बच्चे को क्यों न पिला दे.

" مجھ سے مت پوچھو کہ میں کیا چاہتی ہوں' اپنے لاڈلے سے پوچھو کہ وہ کیا چاہتا ہے..."

" اُسے سمجھا سکتی تھیں تم...پھسلا سکتی تھیں تم ...مار سے ہی کیا کام چل سکتا ہے...اور کوئی طریقہ نہیں ہے..."

" طریقہ ہے تو...پر میں اُسے دودھ کہاں سے دوں... نہ تم کما کر رکھ گئے ہو اور نہ میں کہیں سے کما کر لا سکتی ہوں..."

" سدھا' تمہارے طعنے بہت ہو چکے...اب میرا کلیجہ چھلنی مت کرو . آخر میں کیا کروں...تمہیں بتاؤ...ایک راستہ باقی ہے...میں پھانسی لگا لوں...مر جاؤں..."

شکیلہ یہ بات چیت سن کر اِن دونوں کے پاس آ گئی . بچہ روتا رہا . مرد کھڑا سوچتا رہا .

اِستری اپنے بھاؤ دبانے کی کوشش کرتی رہی . مرد نے شکیلہ کو سمبودھت کرکے کہا—

" بہن تم ہی سمجھاؤ . تم ہی انصاف کر دو ! اِس میں میری کیا خطا ہے...میری نوکری چھوٹ گئی تھی... بھوکوں مرنے کی نوبت آ گئی...مرتا کیا نہ کرتا اِنہیں میکے بھجوا دیا...یقین مانو مجھے کوئی خوشی نہیں ہوئی...پر مجبوری کو کیا کروں...میں ایک منٹ بھی نشچنت نہیں بیٹھا . دروازے دروازے چکر کاٹے....کہیں نوکری نہیں ملی..کسی کو میری ضرورت نہیں تھی....آخر ایک لکڑی کی ٹال پر پچاس روپئے ماہوار پر نوکری کر لی ...پچاس روپئے میں کیا ہو سکتا تھا . اِن لوگوں کا کرایہ کہاں سے لاتا . تین مہینے تک تن پیٹ کاٹ کر روپئے جٹاتا رہا ....نہ جانے کیا سوجھی تھی مجھے کہ اپنے پاس روپیہ رکھنے کے بجائے میں نے سیٹھ کے پاس پوری رقم جمع کر دی.... پچھلی بیکاری میں برتن وغیرہ بھی بک گئے تھے . سوچا تھا کہ اِس رقم سے گرہستی پھر سے جٹا لوں گا...پر کیا کروں . اِن کے بھائی کل یہاں چھوڑ گئے....بھلا مانس رکا بھی نہیں...میں دوڑا دوڑا سیٹھ کے پاس گیا...اپنا روپیہ مانگا—بہن' اُس نے صاف انکار کر دیا...مجھے جھوٹا اور بے ایمان بتانے لگا...سارا روپیہ میرا ہضم کر گیا...اب نوکری سے میں کیا کروں....تم ہی بتاؤ بہن میں کیا کروں... تم ہی بتاؤ بہن میں کیا کروں....کس سے فریاد کروں...تم ہی سدھا کو سمجھا دو...غصہ نہ کرے...بچے کو نہ مارے ...اُس معصوم کی کیا خطا ہے...وہ ہماری مشکلوں کو تو نہیں سمجھ سکتا...پھر اس پر ناراض ہونے سے کیا لابھ..."

شکیلہ نے بچے کو گود میں اٹھا لیا . آنچل سے اس کا منہ پونچھا اور ایک بار اس کے دماغ میں یہ خیال گونجا کہ وہ اپنا دودھ بچے کو کیوں نہ پلا دے .

थी. वह ग़ैर मानुषिक वातावरन में एक क्षन भी नहीं ठहरना चाहती थी, वह इस औरत की शकल देखना नहीं चाहती थी ...पर वह जा भी नहीं सकती थी...एक ही दरवाज़ा था जिस पर कामयाबी की कुछ उम्मीद थी और वह पूरी कोशिश किये बिना वहां से टलना नहीं चाहती थी. मन को शान्ति कर के उसने इधर उधर की बात करनी आरम्भ कर दी.

"आप घर का जूठन मेहतरानिन को दे देती होंगी" उसने सवाल किया.

"दे दिया करते थे..."

शकीला निराश हो गई, इस औरत से बिलकुल ना-उम्मीद हो गई. जो ठीक से बात न करे उसके सामने मुंह खोलने से क्या फ़ायदा...शकीला उठ कर चलने लगी. उस औरत ने कुछ नहीं कहा. शकीला भी कुछ नहीं बोली.

शकीला के पैर सौ सौ मन के हो गए थे. वह चल नहीं सकती थी पर चलने पर मजबूर थी. क़दम नहीं उठ रहे थे पर उन्हें उठना पड़ता था. हर पग पर शकीला सोच रही थी—"मां ठीक कहती है...हिन्दू लोग मुसलमानों से हमदर्दी नहीं रखते...जो ठीक से बात करना गवारा नहीं करते वह नौकरी क्या देंगे...भय्या को अब यहां नौकरी नहीं मिल सकती..." उसका मन चाहा कि वहीं बैठ कर फूट फूट कर रोने लगे. पर वह रुकी नहीं. उसने आंसू भी नहीं बहाए. वह सोचती रही—"मैंने इसका खाना तो मांगा नहीं था. मैं तो जूठन के बारे में पूछ रही थी...ऐसा जवाब दे रही थी जैसे मैं इससे भीक मांग रही थी...किसी मुसलमान के घर जाती तो चाहे वह खाना न देता पर ऐसे रूखेपन से ब्योहार तो न करता...हिन्दू बहुत बुरे होते हैं...मुसलमानों से वह नफ़रत करते हैं.. मैं भी हिन्दुओं से नफ़रत करूंगी...उनसे पूरी नफ़रत करूंगी...."

शकीला के विचारों का तार टूट गया. बच्चे की चीख़ ने उसे चौंका दिया. आगे बढ़ने के बजाय उसने मुड़ कर देखा—

एक दो साल का बच्चा कटोरा हाथ में लिये अपनी मां से कुछ मांग रहा है. मां ने उसे एक चपत मार दिया. बच्चा चीख़ कर रो पड़ा मां ने कोई ध्यान उसकी तरफ़ नहीं दिया और बड़बड़ाने लगी—'दूध ! दूध !! दूध !!! कहां से लाऊं दूध ! कौन तेरा बाप दूध कमा कर रख गया है..."

बच्चे ने फिर एक चीख़ मारी और मां ने फिर ताबड़ तोड़ तमाचे जमाए. बच्चा ज़मीन पर लोट गया. कटोरा उसके हाथ से छूट कर दूर गिर पड़ा...

'बच्चे को मार डालोगी क्या...आख़िर तुम चाहती क्या हो..." एक मर्द ने सामने से आते हुए कहा.

تھی . وہ غیرمانوشک واتاورن میں ایک چھن بھی نہیں ٹھہرنا چاہتی تھی' وہ اِس عورت کی شکل دیکھنا نہیں چاہتی تھی...پر وہ جا بھی نہیں سکتی تھی...ایک ہی دروازہ تھا جس پر کامیابی کی کچھ اُمید تھی اور وہ پوری کوشش کئے بنا وہاں سے ٹلنا نہیں چاہتی تھی . من کو شانت کر کے اُس نے اِدھر ادھر کی بات کرنی آرمبھ کر دی .

" آپ گھر کا جوٹھن مہترانن کو دے دیتی ہونگی ." اُس نے سوال کیا .

" دے دیا کرتے تھے..."

شکیلہ نراش ہوگئی' اِس عورت سے بالکل نااُمید ہو گئی . جو ٹھیک سے بات نہ کرے اُس کے سامنے منہ کھولنے سے کیا فائدہ...شکیلہ اُٹھکر چلنے لگی. اُس عورت نے کچھ نہیں کہا . شکیلہ بھی نہیں بولی .

شکیلہ کے پیر سو سو من کے ہو گئے تھے. وہ چل نہیں سکتی تھی پر چلنے پر مجبور تھی . قدم نہیں اُٹھ رہے تھے پر اُنہیں اُٹھنا پڑتا تھا . ہر پگ پر شکیلہ سوچ رہی تھی—" ماں ٹھیک کہتی ہے...ہندو لوگ مسلمانوں سے ہمدردی نہیں رکھتے...جو ٹھیک سے بات کرنا گوارا نہیں کرتے وہ نوکری کیا دیں گے...بھیا کو اب یہاں نوکری نہیں مل سکتی...اُس کا من چاہا کہ وہیں بیٹھکر پھوٹ پھوٹ کر رونے لگے . پر وہ رکی نہیں . اُس نے آنسو بھی نہیں بہائے . وہ سوچتی رہی—" میں نے اِس کا کھانا تو مانگا نہیں تھا' میں تو جوٹھن کے بارے میں پوچھ رہی تھی...ایسا جواب دے رہی تھی جیسے میں اُس سے بھیک مانگ رہی تھی...کسی مسلمان کے گھر جاتی تو چاہے وہ کھانا نہ دیتا پر ایسے روکھے پن سے بیوہار تو نہ کرتا...ہندو بہت برے ہوتے ہیں... مسلمانوں سے وہ نفرت کرتے ہیں...میں بھی ہندوؤں سے نفرت کرونگی...اُن سے پوری نفرت کرونگی..."

شکیلہ کے وچاروں کا تار ٹوٹ گیا . بچے کی چیخ نے اُسے چونکا دیا . آگے بڑھنے کے بجائے اُس نے مڑ کر دیکھا—

ایک دو سال کا بچہ کٹورا ہاتھ میں لئے اپنی ماں سے کچھ مانگ رہا ہے . ماں نے اُسے ایک چپت مار دیا . بچہ چیخ کر رو پڑا . ماں نے کوئی دھیان اُسکی طرف نہیں دیا اور بڑبڑانے لگی—"دودھ ! دودھ !! دودھ !!! کہاں سے لاؤں دودھ ! کون تیرا باپ دودھ کما کر رکھ گیا ہے..."

بچے نے پھر ایک چیخ ماری' اور ماں نے پھر تابڑ توڑ طمانچے جمائے . بچہ زمین پر لوٹ گیا . کٹورا اُس کے ہاتھ سے چھوٹ کر دور گرا پڑا...

" بچے کو مار ڈالوگی کیا...آخر تم چاہتی کیا ہو..." ایک مرد نے سامنے سے آتے ہوئے کہا.

पैर किसी ने फिर बांधने शुरू कर दिये. उसने इस असमंजस से छुटकारा पाने के लिये दांत पीसे और मुट्ठी भींच ली और आगे बढ़ गई. आखिर वह एक घर के दरवाज़े पर आ कर रुक गई.

महीनों से यह घर बन्द था आज ही खुला था. शकीला इस घर में आ चुकी थी. वह घर वालों को जानती थी... पर वह खाना मांगने का साहस कर सकेगी इसका यक़ीन उसे नहीं था.

दिल ने कहा—लौट आओ.

दिमाग़ ने कहा—कर गुज़र. जो कल करना है उसे आज ही कर गुज़र.

शकीला दरवाज़े तक पहुंच गई. उसने कुनडी खट-खटाई. पर उसके हाथ कांपने लगे, पैर में कपकपाहट पैदा होने लगी. होंटों पर खुशकी छाने लगी...उसे ऐसा लगा कि वह घंटों से प्यासी है.

जल्दी ही दरवाज़ा खुल गया और एक स्त्री सामने से आ कर खड़ी हो गई उनके मुंह पर हंसी नहीं थी. उनके मुंह से ऐसा लग रहा था कि शकीला का आना उन्हें अच्छा न लगा हो.

शकीला को बहुत बुरा लगा. उसका मन चाहने लगा कि वह कह दे—'मैं तुम्हारे खाने की भूकी नहीं हूं, मैं भीक मांगने नहीं आई हूं...फिर क्यों तुम इस तरह का चेहरा बना रही हो..." पर उसने यह सब नहीं कहा. दो एक सिकन्ड दोनों तरफ़ से ख़ामोशी रही और फिर शकीला ने पूछा—

"बहन आप बहुत दिनों के बाद दिखाई पड़ी हैं."

"हां, मैके गई थी, चार महीने के बाद कल आई हूं." दूसरी स्त्री ने रुखे-पन से उत्तर दिया.

शकीला चुप रही, उसने चाहा कि वह भाग जाय पर वह न जाने क्यों वहीं खड़ी रही.

"आओ अन्दर आओ" दूसरी स्त्री ने शकीला को बुलाया.

दोनों अन्दर चली गईं.

इधर उधर की गपशप होती रही. कपड़ों की सिलाई पर बातचीत चल पड़ी...मंहगाई की बात चल पड़ी, घंटों बातें होती रहीं. और बात ही बात में शकीला ने पूछा— "बहन आप के यहां जूठा तो बचता होगा."

"बचा करता था" दूसरी ने इस तरह जवाब दिया जैसे वह सवाल उसे पसन्द न हो. शकीला को ज़बरदस्त धक्का लगा. गुस्से का तीर दिमाग़ को बींधता हुआ तलुवे से निकल गया. वह उसी समय वहां से भाग जाना चाहती

پھر کسی نے پیر باندھنے شروع کر دیئے. اُس نے اِس اسمنجس سے چھٹکارا پانے کے لئے دانت پیسے اور مٹھی بھینچ لی اور آگے بڑھ گئی ۔ آخر وہ ایک گھر کے دروازے پر آ کر رک گئی ۔

مہینوں سے یہ گھر بند تھا ۔ آج ہی کھلا تھا ۔ شکیلہ اِس گھر میں آ چکی تھی...وہ گھر والوں کو جانتی تھی... پر وہ کھانا مانگنے کا ساہس کر سکے گی اِس کا یقین اسے نہیں تھا ۔

دل نے کہا—لوٹ جاؤ ۔

دماغ نے کہا—کر گزر ۔ جو کل کرنا ہے اُسے آج ہی کر گزر ۔

شکیلہ دروازے تک پہونچ گئی ۔ اُس نے کنڈی کھٹ کھٹائی ۔ پر اُس کے ہاتھ کانپنے لگے' پیر میں کپکپاہٹ پیدا ہونے لگی' ہونٹوں پر خشکی چھانے لگی...اسے ایسا لگا کہ وہ گھنٹوں سے پیاسی ہے ۔

جلد ہی دروازہ کھل گیا اور ایک اِستری سامنے سے آ کر کھڑی ہو گئی ۔ اُن کے منہ پر ہنسی نہیں تھی ۔ اُن کے منہ سے ایسا لگ رہا تھا کہ شکیلہ کا آنا انہیں اچھا نہ لگا ہو ۔

شکیلہ کو بہت برا لگا ۔ اُس کا من چاہنے لگا کہ وہ کہ دے—"میں تمہارے کھانے کی بھوکی نہیں ہوں' میں بھیک مانگنے نہیں آئی ہوں...پھر کیوں تم اِس طرح کا چہرہ بنا رہی ہو..."

پر اُس نے یہ سب نہیں کہا ۔ دو ایک سکنڈ دونوں طرف سے خاموشی رہی اور پھر شکیلہ نے پوچھا—

"بہن آپ بہت دنوں کے بعد دکھائی پڑی ہیں ۔"

"ہاں' میکے گئی تھی' چار مہینے کے بعد کل آئی ہوں" دوسری اِستری نے روکھے پن سے اتر دیا ۔

شکیلہ چپ رہی ۔ اُس نے چاہا کہ وہ بھاگ جائے پر وہ نہ جانے کیوں وہیں کھڑی رہی ۔

"آؤ اندر آؤ" دوسری اِستری نے شکیلہ کو بلایا ۔

دونوں اندر چلی گئیں ۔

اِدھر اُدھر کی گپ شپ ہوتی رہی ۔ کپڑوں کی سلائی پر بات چیت چل پڑی...مہنگائی کی بات چل پڑی' گھنٹوں باتیں ہوتی رہیں ۔ اور بات ہی بات میں شکیلہ نے پوچھا' —"بہن آپ کے یہاں جوٹھا تو بچتا ہوگا ۔"

"بچا کرتا تھا" دوسری نے اس طرح جواب دیا جیسے یہ سوال اسے پسند نہ ہو ۔ شکیلہ کو زبردست دھکا لگا ۔ غصے کا تیر دماغ کو بیندھتا ہوا تلوے سے نکل گیا ۔ وہ اسی سمے وہاں سے بھاگ جانا چاہتی

भय्या...किताबों में लिखा है यह दुआ कभी खाली नहीं जाती...ज़रूर असर लाती है..."

"नहीं शकीला, नहीं.. नौकरी नहीं मिली ..दुआओं में नौकरी दिलाने की ताक़त नहीं है, शकीला, दुआएं बे असर हैं . नौकरी समाज के ठेकेदारों के हाथ में है और दिन रात वह दुआएं करते हैं कि उनका क़बज़ा जमा रहे.... तुम ख़ाली दुआएं करती हो...ख़ुदा को कुछ नज़र नहीं करती हो...वह मंदिर बनवाते हैं, मसजिद खड़ी कराते हैं, दान करते हैं, हज करते हैं, यात्रा करते हैं ..वह खूब देते हैं...तुम सिर्फ़ लेना चाहती हो....तुम्हारी दुआ क़बूल हो या उनकी दुआ क़बूल हो...तुम ही सोचो बहन .."

"भय्या !"

"ठीक कहता हूँ बहन" सलीम की नज़रें झुक गईं, दो आंसू शकीला के क़दमों पर टपक पड़े.

मोती के इन प्यालों में शकीला ने सब कुछ देख लिया. सलीम के मन की वेदना, उसकी भूक, उसकी कमज़ोरी, उसके दुखी भाव...उसने न जाने क्यों और किस इरादे से कहा—

"भय्या, तुम भूके होगे, मैं अभी रोटी लाई...मुंह हाथ धो डालो...मैं अभी रोटी लाई..."

"रोटी कहां से आएगी शकीला..." सलीम ने ने कहा.

"नहीं, तुम मुँह धो डालो...मैं रोटी ला रही हूँ..." कहती हुई वह जोश से भाग कर रसोई घर की तरफ़ चल दी. ज़ोर के झटके से दरवाज़ा खोला और अन्दर घुस गई. कहीं रोटी नहीं थी...चूरा भी नहीं था...वह हर बरतन की तलाशी लेती रही, पर सब कोशिश विफल रही. वह जानती थी कि घर में रोटी नहीं है...फिर उसके दिमाग़ में यह नाटक कैसे आ गया...यह नाटक नहीं था शायद उसकी निष्ठा थी...पर रोटी को नहीं मिलना था और वह नहीं मिली. शकीला निराश हो गई. वह आगे बढ़ी और फिर ठिठक गई. भाई से उसे शर्म आ रही थी, रोटी वह मुहैया नहीं कर सकती थी...!

दिन में उसने कई बार कोशिश की थी. वह बार बार दरवाज़े तक जाती थी और लौट आती थी. घर से तय कर के जाती थी कि भूकों मरने से अच्छा है कि मोहल्ले वालों से मांग लिया जाय पर बाहर मर्यादा पैर पकड़ लेती थी. वह घर के बाहर क़दम उठाती थी पर फिर उसे वापस लौट आना पड़ता था. पर इस बार वह घर से बाहर निकल गई. उसने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई और खड़ी हो कर यह तय करने लगी कि किस घर में जाय खड़े होते ही जैसे उसके मज़बूत इरादे में कमज़ोरी आने लगी, जैसे उसके

بھیا...کتابوں میں لکھا ہے یہ دعا کبھی خالی نہیں جاتی ...ضرور اثر لاتی ہے..."

"نہیں شکیلہ' نہیں...نوکری نہیں ملی...دعاؤں میں نوکری دلانے کی طاقت نہیں ہے' شکیلہ' دعائیں بے اثر ہیں...نوکری سماج کے ٹھیکیداروں کے ہاتھ میں ہے اور دن رات وہ دعائیں کرتے ہیں کہ اُن کا قبضہ جما رہے ...تم خالی دعائیں کرتی ہو...خدا کو کچھ نذر نہیں کرتی ہو...وہ مندر بنواتے ہیں' مسجد کھڑی کراتے ہیں' دان کرتے' ہیں حج کرتے ہیں' یاترا کرتے ہیں...وہ خوب دیتے ہیں...تم صرف لینا چاہتی ہو...تمہاری دعا قبول ہو یا اُن کی دعا قبول ہو...تم ہی سوچو بہن..."

"بھیا!"

"ٹھیک کہتا ہوں بہن" سلیم کی نظریں جھک گئیں' دو آنسو شکیلہ کے قدموں پر ٹپک پڑے .

موتی کے اِن پیالوں میں شکیلہ نے سب کچھ دیکھ لیا . سلیم کے من کی ویدنا' اُس کی بھوک' اُس کی کمزوری' اُس کے دُکھی بھاؤ...اُس نے نہ جانے کیوں' اور کس اِرادے سے کہا—

"بھیا' تم بھوکے ہوگے' میں ابھی روٹی لائی...منہ ہاتھ دھو ڈالو...میں ابھی روٹی لائی..."

"روٹی کہاں سے آئے گی شکیلہ..." سلیم نے کہا .

"نہیں' تم منہ دھو ڈالو...میں روٹی لا رہی ہوں..." کہتی ہوئی وہ جوش سے بھاگ کر رسوئی گھر کی طرف چل دی. زور کے جھٹکے سے دروازہ کھولا اور اندر گھس گئی . کہیں روٹی نہیں تھی...چورا بھی نہیں تھا...وہ ہر برتن کی تلاشی لیتی رہی' پر سب کوشش وپھل رہی. وہ جانتی تھی کہ گھر میں روٹی نہیں ہے...پھر اُس کے دماغ میں یہ ناٹک کیسے آ گیا...یہ ناٹک نہیں تھا شاید اُس کی نشٹھا تھی...پر روٹی کو نہیں ملنا تھا اور وہ نہیں ملی. شکیلہ نراش ہوگئی . وہ آگے بڑھی اور پھر ٹھٹھک گئی . بھائی سے اُسے شرم آ رہی تھی' روٹی وہ مہیا نہیں کر سکتی تھی..."

دن میں اُس نے کئی بار کوشش کی تھی . وہ بار بار دروازے تک جاتی تھی اور لوٹ آتی تھی . گھر سے طے کر کے جاتی تھی کہ بھوکوں مرنے سے اچھا ہے کہ محلے والوں سے مانگ لیا جائے پر باہر مریادا پیر پکڑ لیتی تھی . وہ گھر کے باہر قدم اُٹھاتی تھی پر پھر اُسے واپس لوٹ آنا پڑتا تھا . پر اِس بار وہ گھر سے باہر نکل گئی . اُس نے چاروں طرف نظر دوڑائی اور کھڑی ہو کر یہ طے کرنے لگی کہ کس گھر میں جائے . کھڑے ہوتے ہی جیسے اُس کے مضبوط اِرادے میں کمزوری آنے لگی' جیسے اُس کے

बढ़ा क़दम वापस हो गया, वह लौट पड़ी...न जाने, क्यों, कैसे, किस तरह फिर उसका क़दम बाहर निकल गया.

फिर वह लौट पड़ी.

इस बार उसने मन ही मन एक फ़ैसला कर लिया था और मुख के भाव से ऐसा लगता था कि वह बाहर निकल जायगी, अपनी मंज़िल तक पहुँच कर रहेगी...पर उसे फिर रुक जाना पड़ा, ठिठक जाना पड़ा...वह कभी लाल हो जाती थी, कभी पीली...कभी दुख उसके चेहरे पर दिखाई पड़ता था और कभी गुस्सा—कुछ देर वह वैसे ही वहीं खड़ी रही...एक चौखट का सहारा छोड़ कर दूसरी चौखट का उसने सहारा लिया.

"आगे मान मर्यादा की लाश है...पीछे भूक की भुतनी नोचने को खड़ी है...किधर जाऊं...क्या करूं...मान मर्यादा...भूक और मान मर्यादा !"

शकीला फिर लौट पड़ी.

कमरे में जाकर उसने जाए नमाज़ बिछा दी, क़ुरान निकाला. पढ़ने लगी. उसने सुना था कि क़ुरान में हर मुशकिल का हल है, उसको बताया गया था क़ुरान पढ़ने से शान्ति मिलती है..., वह क़ुरान पढ़ती गई....वह सब कुछ भूल कर क़ुरान पढ़ने की कोशिश करती रही...आंखें क़ुरान पढ़ती रही..दिमाग़ कोई दूसरा चित्र खींचता रहा...ग़रीबी, बेकारी...मां...मां के कपड़े, उसका बुढ़ापा...भाई...जवान शकल पर मुरदानी की छाया...हंसी की जगह आंसू ..चंचलता की जगह पैरों में कमज़ोरी की लड़खड़ाहट ..बेकारी...घर में कुछ नहीं...खाने को कुछ नहीं ..दो रोज़ का फ़ाक़ा...भूक...मान...भाई...और वह...

वह चीख़ उठी, क़ुरान को ज़ोरों से बन्द कर दिया, उठ खड़ी हुई, बाहर निकल गई.

किसी ने कहा—"दुआ करो...शायद भाई को नौकरी मिल जाय . दिल से जो आह निकलती है, असर रखती है. तुम्हारी दुआ शायद क़बूल हो जाय..."

आंचल के नीचे उसके हाथ उठ गए, वह दुआ करती रही, करती चली गई, न जाने कब तक करती चली जाती. एक आवाज़ ने उसे चौंका दिया. आंख खोली तो देखा सलीम सामने खड़ा है. उसे किसी बात की याद नहीं रह गई थी, जैसे वह सपना सा देख रही थी और अब भी उसका असर बाक़ी था. उसने सलीम के बाज़ू पकड़ लिये और उतावले पन से कहने लगी—"भय्या आज तो तुम्हें नौकरी मिल गई होगी, मेरा दिल कहता है कि तुम्हें नौकरी मिल गई होगी...मैंने 'दुआए नूर' पढ़ कर दुआ मांगी थी

بڑھا قدم واپس ہوگیا' وہ لوٹ پڑی...نہ جانے کیوں' کیسے' کس طرح پھر اُس کا قدم باہر نکل گیا.

پھر وہ لوٹ پڑی .

اِس بار اُس نے من ہی من ایک فیصلہ کر لیا تھا اور مکھ کے بھاؤ سے ایسا لگتا تھا کہ وہ باہر نکل جائےگی' اپنی منزل تک پہونچ کر رہے گی...پر اُسے پھر رک جانا پڑا' ٹھٹھک جانا پڑا...وہ کبھی لال ہو جاتی تھی' کبھی پیلی...کبھی دکھ اُس کے چہرے پر دکھائی پڑتا تھا اور کبھی غصہ—کچھ دیر وہ ویسے ہی وہیں کھڑی رہی...ایک چوکھٹ کا سہارا چھوڑ کر دوسری چوکھٹ کا اُس نے سہارا لیا .

"آگے مان مریادا کی لاش ہے...پیچھے بھوک کی بھتنی نوچنے کو کھڑی ہے...کدھر جاؤں...کیا کروں...مان مریادا ...بھوک اور مان مریادا !"

شکیلہ پھر لوٹ پڑی .

کمرے میں جاکر اُس نے جائےنماز بچھا دی' قرآن نکالا پڑھنے لگی. اُس نے سنا تھا کہ قرآن میں ہر مشکل کا حل ہے' اُس کو بتایا گیا تھا قرآن پڑھنے سے شانتی ملتی ہے...وہ قرآن پڑھتی گئی..وہ سب کچھ بھول کر قرآن پڑھنے کی کوشش کرتی رہی...آنکھیں قرآن پڑھتی رہیں...دماغ کوئی دوسرا چتر کھینچتا رہا...غریبی' بیکاری...ماں...ماں کے کپڑے' اُس کا بڑھاپا...بھائی... جوان شکل پر مردنی کی چھایا...ہنسی کی جگہ آنسو ...چلبلاہٹ کی جگہ پیروں میں کمزوری کی لڑکھڑاہٹ... بیکاری...گھر...گھر میں کچھ نہیں...کھانے کو کچھ نہیں ...دو روز کا فاقہ...بھوک...ماں...بھائی...اور وہ...

وہ چیخ اٹھی' قرآن کو زوروں سے بند کر دیا' اٹھ کھڑی ہوئی' باہر نکل گئی .

کسی نے کہا—"دعا کرو...شاید بھائی کو نوکری مل جائے...دل سے جو آہ نکلتی ہے' اثر رکھتی ہے. تمہاری دعا شاید قبول ہو جائے..."

آنچل کے نیچے اس کے ہاتھ اٹھ گئے' وہ دعا کرتی رہی' کرتی چلی گئی' نہ جانے کب تک کرتی چلی جاتی . ایک آواز نے اُسے چونکا دیا . آنکھ کھولی تو دیکھا سلیم سامنے کھڑا ہے . اُسے کسی بات کی یاد نہیں رہ گئی تھی' جیسے وہ سپنا سا دیکھ رہی تھی اور اب بھی اُس کا اثر باقی تھا. اُس نے سلیم کے بازو پکڑ لئے اور اتاولے پن سے کہنے لگی—"بھیا آج تو تمہیں نوکری مل گئی ہوگی' میرا دل کہتا ہے کہ تمہیں نوکری مل گئی ہوگی...میں نے 'دعائے نور' پڑھ کر دعا مانگی تھی .

"नहीं बेटी, कोई बात नहीं...साबुन भी आएगा.. तमबाकू भी आएगी...हमारे भी दिन पलटेंगे...फिर तेरा ब्याह रचाएंगे"—मां ने शकीला के बालों को उलझाते हुए कहा और बिना रुके कहती गई—"सलीम को नौकरी ज़रूर मिल जायगी....बस वह नौकर हुआ नहीं, सब ठीक हो जायगा..."

"नौकरी ...और वह...उन्हें नौकरी मिल हीनहीं सकती."

"भाई के बारे में ऐसे शक नहीं रखते बेटी."

"ठीक कहती हूं मां. नौकरी उन्हें मिलती है जो कोशिश करते हैं..."

"क्या ख़ामख़ा ग़ुस्सा करती है तू, अपना दिल भी जलाती है. सलीम का दिल भी जलाएगी...बेचारा दिन भर तो खपता रहता है. हर हर दफ़्तर की तो ख़ाक छानता है...पर क़िस्मत को क्या करे..."

"क़िसमत ! क़िसमत !! क़िसमत !!! नाच न जाने आंगन टेढ़ा" शकीला ने झुंझला कर जवाब दिया.

'क़िसमत नहीं तो और क्या....मेरा बच्चा बी. ए. पास है, क़ाबिल है...फिर भी नौकरी नहीं मिलती....क़िसमत ही का तो सब खेल है..तू क्या जाने ज़माने का रंग ढंग.... कभी बाहर तो निकलती नहीं है...मुसलमानों को आजकल नौकरी नहीं मिलती...सलीम का ही क्या, सभी मुसलमानों का यह हाल है..."

"मां, मैंने कितनी बार तुम से कहा कि हिन्दू मुसलमान की बात मत किया करो...तुम्हारे लाडले को क्या आता है जो नौकरी मिल जाय ..नौकरी के लिये क़ाबलियत की ज़रूरत है. ख़ाली बी. ए. पास कर लेने से काम नहीं चलता....बेटे को आए न जाए और मां चली है क़िसमत को कोसने, हिन्दुओं की ज़ियादती बताने..इस तरह से अपने निकम्मे पन को नहीं छिपाया जा सकता...." शकीला ने तंग आकर कहा और मां की गोद से उठ कर चल दी.

मां ने एक ठहाका लगाया और बोली—"पागल कहीं की."

शकीला एक खम्बा पकड़ कर खड़ी हो गई, अपनी लटों को उंगलियों से उलझाती रही, धीरे धीरे खम्बे से अपने सिर को टकराती रही. फिर न जाने उसे क्या सूझा और वह दरवाज़े की तरफ़ चल दी.

क़दम आगे बढ़े पर जगह जगह की रुक गए.

एक क़दम दरवाज़े के बाहर था और दूसरा दरवाज़े के अन्दर, न बाहर वाला अन्दर आ रहा था और न अन्दर वाला बाहर जा रहा था.

वह खड़ी रही और सोचती रही.

"نہیں بیٹی' کوئی بات نہیں...صابن بھی آئے گا... تماکو بھی آئے گی...ہمارے بھی دن پلٹیں گے...پھر تیرا بیاہ رچائیں گے"—ماں نے شکیلہ کے بالوں کو اُلجھاتے ہوئے کہا اور بنا رکے کہتی گئی—"سلیم کو نوکری ضرور مل جائے گی...بس وہ نوکر ہوا نہیں' سب ٹھیک ہو جائے گا..."

"نوکری...اور وہ...اُنہیں نوکری مل ہی نہیں سکتی."

"بھائی کے بارے میں ایسے شک نہیں رکھتے بیٹی."

"ٹھیک کہتی ہوں ماں. نوکری اُنہیں ملتی ہے جو کوشش کرتے ہیں..."

"کیا خواہ مخواہ غصہ کرتی ہے تو' اپنا دل بھی جلاتی ہے' سلیم کا دل بھی جلائے گی...بیچارہ دن بھر تو کھپتا رہتا ہے. ہر ہر دفتر کی تو خاک چھانتا ہے...پر قسمت کو کیا کرے..."

"قسمت ! قسمت !! قسمت !!! ناچ نہ جانے آنگن ٹیڑھا" شکیلہ نے جھنجھلا کر جواب دیا .

"قسمت نہیں تو اور کیا...میرا بچہ بی. اے. پاس ہے' قابل ہے...پھر بھی نوکری نہیں ملتی...قسمت ہی کا تو سب کھیل ہے...تو کیا جانے زمانے کا رنگ ڈھنگ... کبھی باہر تو نکلتی نہیں ہے...مسلمانوں کو آجکل نوکری نہیں ملتی...سلیم کا ہی کیا' سبھی مسلمانوں کا یہ حال ہے..."

"ماں' میں نے کتنی بار تم سے کہا کہ ہندو مسلمان کی بات مت کیا کرو...تمہارے لاڈلے کو کیا آتا ہے جو نوکری مل جائے...نوکری کے لئے قابلیت کی ضرورت ہے . خالی بی. اے. پاس کرلینے سے کام نہیں چلتا...بیٹے کو نہ آئے نہ جائے اور ماں چلی ہے قسمت کو کوسنے' ہندوؤں کی زیادتی بتانے...اس طرح سے اپنے نکمے پن کو نہیں چھپایا جاسکتا..." شکیلہ نے تنگ آکر کہا اور ماں کی گود سے اُٹھ کر چل دی .

ماں نے ایک ٹھہاکا لگایا اور بولی—"پاگل کہیں کی."

شکیلہ ایک کھمبا پکڑ کر کھڑی ہوگئی' اپنی لٹوں کو انگلیوں سے اُلجھاتی رہی' دھیرے دھیرے کھمبے سے اپنے سر کو ٹکراتی رہی . پھر نہ جانے اُسے کیا سوجھا اور وہ دروازے کی طرف چل دی .

قدم آگے بڑھے پر جگہ کی جگہ رک گئے .

ایک قدم دروازے کے باہر تھا اور دوسرا دروازے کے اندر' نہ باہر والا اندر آ رہا تھا اور نہ اندر والا باہر جا رہا تھا .

وہ کھڑی رہی اور سوچتی رہی .

बार सुना, दो बार सुना...झुंझला उठी, चारपाई से उछल पड़ी, पूरी ताक़त से चिल्ला कर उसने कहा—

"क्या है ! कहो न, क्या है."

दूसरी तरफ़ से कोई जवाब नहीं आया.

"शकीला" फिर किसी ने आवाज़ दी.

झुंझलाहट से शकीला ज़मीन पर कूद पड़ी. पैर पटके और ग़ुस्से से भरी उस तरफ़ चल दी जिधर से आवाज़ आ रही थी. उसकी चाल में वेग था, तेज़ी थी, ख़ून का उबाल था, सारे शरीर में ग़ुस्सा था. जाते जाते उसने फिर सुना—

"शकीला !"

शकीला ने कोई जवाब नहीं दिया, तेज़ी से बरामदे में आ गई और खटोले पर बैठी बुढ़िया से बोली – "कहो न, क्या बात है." पर यह वाक्य कहते समय उसमें ग़ुस्सा नहीं रह गया था, उसमें तनाव नहीं बाक़ी था. वह बुढ़िया के चेहरे को देख रही थी, उसके कपड़े पर नज़र जमाए थी.

"मां, तुम दुपट्टा बांध लो और अन्दर कमरे में जाकर बैठ जाओ. मैं तुम्हारे कपड़े धो दूं. बहुत गन्दे हो गए हैं. एक तो ऐसे ही बहुत साफ़ रहती हो. दूसरे भरते से और गंदगी फैलाती रहती हो...छी...छी...कुरते पर क्या बेल बूटे बनाए हैं..." शकीला ने बुढ़िया के हाथ सहलाते हुए कहा.

"बेटी कई दिन से तमबाकू नहीं मिली, मन व्याकुल है."

"तमबाकू !" शकीला ने ठंडी सांस भरते हुए कहा.

मां की आंखों में आंसू भर आए. उसने बेटी के सर को अपनी गोद में रख लिया. शकीला ने बुढ़िया के इरादों का विरोध नहीं किया. उसने उसे अपनी जांगों पर लेटा लिया और थपथपाने लगी.

"पगली, अफ़सोस करती है...इसमें दुखी होने की क्या बात है. यह तो क़िस्मत का खेल है...कभी घी घना .. कभी मुट्ठी भर चना." मां धीरे धीरे कहती रही.

शकीला चुप रही, शान्त रही.

मां ने फिर कहा—"तू भी क्या ख़ूब है. मां को तमबाकू तो खिला नहीं सकती...पर सफ़ाई की फ़िकर है. कुरता धुलवा तो लूं...मुझे भी बुरा लगता है, बहुत गन्दा हो गया है...पर साबुन कहां है...बिना साबुन के कैसे धोवेगी..."

"साबुन !" शकीला ने फिर ऐसी सांस ली जैसे उसके दिल को ज़बरदस्त धक्का लगा हो.

بار سنا' دوبار سنا...جھنجھلا اُٹھی' چارپائی سے اُچھل پڑی' پوری طاقت سے چلا کر اُس نے کہا—

"کیا ہے ! کہو نہ' کیا ہے."

دوسری طرف سے کوئی جواب نہیں آیا .

"شکیلہ" پھر کسی نے آواز دی.

جھنجھلاہٹ سے شکیلہ زمین پر کود پڑی . پیر پٹکے اور غصے سے بھری اُس طرف چل دی جدھر سے آواز آ رہی تھی . اُس کی چال میں ویگ تھا' تیزی تھی' خون کا اُبال تھا' سارے شریر میں غصہ تھا . جاتے جاتے اُس نے پھر سنا—

"شکیلہ !"

شکیلہ نے کوئی جواب نہیں دیا' تیزی سے برآمدے میں آگئی اور کھٹولے پر بیٹھی بڑھیا سے بولی—"کہو نہ' کیا بات ہے." پر یہ واکیہ کہتے سمے اُس میں غصہ نہیں رہ گیا تھا' اُس میں تناؤ نہیں باقی تھا. وہ بوڑھیا کے چہرے کو دیکھ رہی تھی' اس کے کپڑے پر نظر جمائے تھی .

"ماں' تم دوپٹہ باندھ لو اور اندر کمرے میں جا کر بیٹھ جاؤ . میں تمہارے کپڑے دھو دوں . بہت گندے ہوگئے ہیں. ایک تو ایسے ہی بہت صاف رہتی ہو. دوسرے بھرتے سے اور گندگی پھیلاتی رہتی ہو...چھی چھی...کرتے پر کیا بیل بوٹے بنائے ہیں..." شکیلہ نے بوڑھیا کے ہاتھ سہلاتے ہوئے کہا .

"بیٹی کئی دن سے تمباکو نہیں ملی' من بیاکل ہے."

"تمباکو !" شکیلہ نے ٹھنڈی سانس بھرتے ہوئے کہا .

ماں کی آنکھوں میں آنسو بھر آئے . اُس نے بیٹی کے سر کو اپنی گود میں رکھ لیا . شکیلہ نے بوڑھیا کے ارادوں کا ورودھ نہیں کیا . اُس نے اُسے اپنی جانگوں پر لیٹا لیا اور تھپتھپانے لگی.

"پگلی' افسوس کرتی ہے...اِس میں دکھی ہونے کی کیا بات ہے . یہ تو قسمت کا کھیل ہے...کبھی گھی گھنا ...کبھی مٹھی بھر چنا." ماں دھیرے دھیرے کہتی رہی.

شکیلہ چپ رہی' شانت رہی .

ماں نے پھر کہا—"تو بھی کیا خوب ہے. ماں کو تمباکو تو کھلا نہیں سکتی...پر صفائی کی بڑی فکر ہے. کرتا دھلوا تو لوں...مجھے بھی برا لگتا ہے' بہت گندا ہوگیا ہے... پر صابن کہاں ہے...بنا صابن کے کیسے دھوئے گی..."

"صابن !" شکیلہ نے پھر ایسی سانس لی جیسے اُس کے دل کو زبردست دھکا لگا ہو .

दो भूके !

शकीला के बढ़े हुए क़दम रुक गए.

उसने सोचा कि वह अन्दर लौट जाय...पर वह खड़ी रही. उसने सोचा कि आगे बढ़ जाय...पर वह रुकी रही.

न वह पीछे आ सकी न आगे जा सकी.

एक जगह, एक पोज़ से, एक मुद्रा में डूबी वह खड़ी रही, सोचती रही, अपने से लड़ती रही.

वह खोई खोई सी थी, फिर भी उसमें जागरन था. विचारों का समन्दर ठाठें मार रहा था और वह उसमें डूबती जा रही थी. फिर भी उसमें कुछ चेतना बाक़ी थी. दिमाग़ और दिल के हर सवाल का वह जवाब देने की कोशिश करती थी, हर तरह से समाधान करने का प्रयत्न कर रही थी.

सेकन्डों की जगह मिनटों बीत गए पर कोई फ़ैसला न हो सका. वह सोचती गई और समस्या जटिल से जटिल तर होती गई—फिर न जाने क्या बात उसके दिमाग़ में गूंज गई, न जाने किसने उसको आदेश दिया—वह लौट पड़ी, अन्दर आने लगी—रंग बदला हुआ था. आंखों में लाली, गालों पर सुरख़ी, ललाट की नसें कसी हुई, पूरे बदन में एक सख़्ती, कोमलता की जगह एक तनाव—वह घर के अन्दर घुस रही थी, उंगलियों से हवा में कुछ शकलें बनाती गई, होंट हिलाती गई, कुछ कहती गई.

तेज़ी से शकीला एक कमरे में घुसी और धड़ाम से बिस्तर पर गिर गई. उसने तकिये में मुंह गड़ा दिया और मुंह से ज़ोर ज़ोर से सांस लेने लगी. कभी कभी सिसकी भरने की भी कोशिश की, पर विफल रही. आंसू भी उससे छिन गए थे, कैसे रोया जाता है इसकी एक धुंदली सी याद उसके दिमाग़ में बाक़ी थी...पर वह रो नहीं सकती थी. कुछ देर बाद उसने करवट बदली और चित लेट गई... पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ...वही विचार, वही चिन्ता... सब कुछ वही. उसने छत पर आंखें गड़ा दीं—सोचती रही, मुंह से सांस लेती रही, हाथों से मुंह पर मालिश करती रही.

"शकीला" एक मद्धम सी आवाज़ उसके कान में गई, पर उसने उस पर ध्यान नहीं दिया.

"शकीला" फिर वही आवाज़ आई.

खखार, खांसी, गले की घरघराहट और लम्बी बेसुरी सांसों के बीच शकीला, शकीला की रट. शकीला ने एक

دو بھوکے!

شکیلہ کے بڑھے ہوئے قدم رک گئے .

اُس نے سوچا کہ وہ اندر لوٹ جائے...پر وہ کھڑی رہی. اُس نے سوچا کہ آگے بڑھ جائے...پر وہ رکی رہی .

نہ وہ پیچھے آ سکی نہ آگے جاسکی .

ایک جگہ' ایک پوز سے' ایک مدرا میں ڈوبی وہ کھڑی رہی' سوچتی رہی' اپنے سے لڑتی رہی .

وہ کھوئی کھوئی سی تھی' پھر بھی اُس میں جاگرن تھا. وچاروں کا سمندر ٹھاٹھیں مار رہا تھا اور وہ اُس میں ڈوبتی جا رہی تھی. پھر بھی اُس میں کچھ چیتنا باقی تھی . دماغ اور دل کے ہر سوال کا وہ جواب دینے کی کوشش کرتی تھی' ہر طرح سے سمادھان کرنے کا پریتن کر رہی تھی.

سکنڈوں کی جگہ منٹوں بیت گئے پر کوئی فیصلہ نہ ہوسکا. وہ سوچتی گئی اور سمسیا جٹل سے جٹل تر ہوتی گئی—پھر نہ جانے کیا بات اُس کے دماغ میں گونج گئی' نہ جانے کس نے اُس کو آدیش دیا—وہ لوٹ پڑی' اندر جانے لگی—رنگ بدلا ہوا تھا. آنکھوں میں لالی' گالوں پر سرخی' للاٹ کی نسیں کسی ہوئی' پورے بدن میں ایک سختی' کوملتا کی جگہ ایک تناؤ—وہ گھر کے اندر گھس رہی تھی' انگلیوں سے ہوا میں کچھ شکلیں بناتی گئی' ہونٹ ہلاتی گئی' کچھ کہتی گئی .

تیزی سے شکیلہ ایک کمرے میں گھسی اور دھڑام سے بستر پر گر گئی. اُس نے تکیے میں منہ گڑا دیا اور منہ سے زور زور سے سانس لینے لگی. کبھی کبھی سسکی بھرنے کی بھی کوشش کی' پر وپھل رہی. آنسو بھی اُس سے چھن گئے تھے' کیسے رویا جاتا ہے اِس کی ایک دھندھلی سی یاد اُس کے دماغ میں باقی تھی...پر وہ رو نہیں سکتی تھی . کچھ دیر بعد اُس نے کروٹ بدلی اور چت لیٹ گئی... پر کوئی فائدہ نہیں ہوا...وہی وچار' وہی چنتا...سب کچھ وہی . اُس نے چھت پر آنکھیں گڑا دیں—سوچتی رہی' منہ سے سانس لیتی رہی' ہاتھوں سے منہ پر مالش کرتی رہی .

"شکیلہ" ایک مدھم سی آواز اُس کے کان میں گئی پر اُس نے اُس پر دھیان نہیں دیا.

"شکیلہ" پھر وہی آواز آئی .

کھکھار' کھانسی' گلے کی گھر گھراہٹ اور لمبی بےسری سانسوں کے بیچ شکیلہ' شکیلہ کی رٹ . شکیلہ نے ایک

गुरुओं, शिक्षकों और मनोवैज्ञानिकों के पास दौड़े दौड़े फिरते हैं.

हम अपना दिल और मस्तक क्यों नहीं टटोलते, हम यह क्यों नहीं सोचते कि यह 'नकार धर्म' जो इस बालक में जगह पा गया है, यह सब का सब हमारी देन है. मार-ग्रेट-मीड नामी एक मानव शरीर रचना शास्त्री ने एक बार न्यूगिनी में रहने वाले एक क़बीले के बारे में लिखा था कि वह अपने बच्चे को कोई काम करने से नहीं रोकते, जब तक कि वह सात बरस का न हो जाय और फिर उसी का यह कहना है कि ऐसे बालक सबके सब दंगाई और अनाज्ञाकारी तो होते ही नहीं उलटे घर के बड़े प्यारे मेम्बर बन जाते हैं, खूब ज़िम्मेदारी समझते हैं और मां बाप का कहना तो मानते ही हैं. उसका यह भी कहना है कि कोई यह न समझे कि मैं यह कह रहा हूं कि सब लोग अपने बच्चों को जंगली जानवरों की तरह छोड़ दें मैं तो सिर्फ़ यही कहता हूँ कि लोग बच्चों की क़द्र करना सीखें क्योंकि हर बच्चा यह जानता है, कि उसकी भलाई के लिये, क्या क्या काम ज़रूरी हैं और इतनी ही अच्छी तरह जानता है जितनी अच्छी तरह हम.

जब बच्चा भूक से रोता है तो वह सच्चे जी से रोता है, बिल्कुल सच्चे जी से, उसमें ज़रा भी बहाने बाज़ी नहीं होती. आम तौर से बच्चों का पेट दो घंटे में खाली हो जाता है, उनका पेट सुकड़ने लगता है, और ऐंठने लगता है. एक दिन के बच्चे के पेट का भी यही. हाल होता है. बच्चे खूब समझते हैं कि उनकी भलाई किस में है. जान होपकिन्स हस्पताल में डाक्टर क्लेरा डैविस ने एक परीक्षन करके देखा. छोटे छोटे बच्चों के के पास तरह तरह की चीज़ों का रस लगाकर कुछ चपटे रख दिए गए और उनको चाटने के लिये बच्चों को आज़ाद छोड़ दिया गया, वह चाहे जिस को चाटें और चाहे जितना चाटें. एक ने काड-लिवर आइल चाटा, मीठे को छुआ तक नहीं, एक ने नमक ही नमक चाटा, वह मुंह भी बनाता रहा और नमक चाटता भी रहा, असल में उसके बदन को नमक की ज़रूरत थी.

बस अगर आप अपने बच्चे को प्यार करते हैं तो आप इस तरह से दो उलट बासियों से एक काम लीजिये, आप अपने बच्चे का आदर कीजिये और उसे समझिये कि वह भी एक व्यक्ति है, उसकी अपनी ज़रूरतें हैं, उसके अपने अधिकार हैं. हो सकता है, इस पर अमल करने से नगरों और शहरों में साफ़ कमरे देखने को न मिलें पर आपको अव्वल दर्जे के बच्चे ज़रूर देखने को मिलेंगे और अन्त में अच्छे नागरिक.

—भगवानदीन

گروؤں، شکشکوں اور منوویگیانکوں کے پاس دوڑے دوڑے پھرتے ہیں ۔

ہم اپنا دل اور مستک کیوں نہیں ٹٹولتے، ہم یہ کیوں نہیں سوچتے کہ یہ نکار دھرم، جو اِس بالک میں جگہ پا گیا ہے، یہ سب کا سب ہماری دین ہے ۔ مار گریٹ میڈ نامی ایک مانو شریر رچنا شاستری نے ایک بار نیوگنی میں رہنے والے ایک قبیلے کے بارے میں لکھا تھا کہ وہ اپنے بچے کو کوئی کام کرنے سے نہیں روکتے، جب تک کہ وہ سات برس کا نہ ہو جائے، اور پھر اُسی کا یہ کہنا ہے کہ ایسے بالک سب کے سب دنگئی اور اناگیاکاری تو ہوتے ہی نہیں، اُلٹے گھر کے بڑے پیارے ممبر بن جاتے ہیں، خوب ذمہ داری سمجھتے ہیں اور ماں باپ کا کہنا تو مانتے ہی ہیں. اُس کا یہ بھی کہنا ہے کہ کوئی یہ نہ سمجھے کہ میں یہ کہہ رہا ہوں کہ سب لوگ اپنے بچوں کو جنگلی جانوروں کی طرح چھوڑ دیں، میں تو صرف یہی کہتا ہوں کہ لوگ بچوں کی قدر کرنا سیکھیں کیونکہ ہر بچہ یہ جانتا ہے، کہ اُسکی بھلائی کے لئے کیا کیا کام ضروری ہیں اور اِتنی ہی اچھی طرح جانتا ہے جتنی اچھی طرح ہم ۔

جب بچہ بھوک سے روتا ہے تو وہ سچے جی سے روتا ہے، بالکل سچے جی سے، اُس میں ذرا بھی بہانے بازی نہیں ہوتی ۔ عام طور سے بچوں کا پیٹ دو گھنٹے میں خالی ہو جاتا ہے، اُن کا پیٹ سکڑنے لگتا ہے، اور اینٹھنے لگتا ہے. ایک دن کے بچے کے پیٹ کا بھی یہی حال ہوتا ہے. بچے خوب سمجھتے ہیں کہ اُن کی بھلائی کس میں ہے ۔ جون ہوپکنس ہسپتال میں ڈاکٹر کلیرا ڈیوس نے ایک پریکشن کرکے دیکھا. چھوٹے چھوٹے بچوں کے پاس طرح طرح کی چیزوں کا رس لگا کر کچھ چپٹے رکھ دیئے گئے اور اُن کو چاٹنے کے لئے بچوں کو آزاد چھوڑ دیا گیا، وہ چاہے جس کو چاٹیں اور چاہے جتنا چاٹیں ۔ ایک نے کاڈ لور آئل چاٹا، میٹھے کو چھوا تک نہیں، ایک نے نمک ہی نمک چاٹا، وہ منہ بھی بناتا رہا اور نمک چاٹتا بھی رہا، اصل میں اُس کے بدن کو نمک کی ضرورت تھی ۔

بس اگر آپ اپنے بچے کو پیار کرتے ہیں تو آپ اِس طرح ایک دو اُلٹ باسیوں سے کام لیجئے، آپ اپنے بچے کا آدر کیجئے اور اُسے سمجھئے کہ وہ بھی ایک ویکتی ہے، اُسکی اپنی ضرورتیں ہیں، اُس کے اپنے ادھیکار ہیں ۔ ہوسکتا ہے، اِس پر عمل کرنے سے نگروں اور شہروں میں صاف کمرے دیکھنے کو نہ ملیں پر آپ کو اول درجے کے بچے ضرور دیکھنے کو ملینگے اور انت میں اچھے ناگرک ۔

— بھگوان دین

राय नहीं, इसाबेल पैटर्सन की है जिसको उन्होंने न्यूयार्क के अखबार 'हैरल्ड ट्रिब्यून' में छापा था.

येल के डाक्टर आरनोल्ड जोसेल ने हमें यह बताया है कि मानव प्राणी को काम करने के लिये प्रकृतिने एक पट्टी तैयार कर के दे दी है बस मानव प्राणी की उन्नति ठीक उसी के मुताबिक़ होती है. जब दांत निकलने लगते हैं, तो ठोडी आगे होने लगती है, जबड़े मज़बूत होने लगते हैं, पाचन शक्ति बढ़ जाती है. और बच्चा अब सख्त चीज़ खाने को तैयार हो जाता है. पुट्ठों के लिहाज़ से नये बच्चे के पुट्ठे चलने के लिये काफ़ी मज़बूत होते हैं, आप सहारा दीजिये, वह पांव आगे पीछे करेगा ! हमारी बात को अपने बच्चे पर आज़मा कर देख लीजिये, बच्चा अपने आप तो यों नहीं चल पाता कि उसको सन्तुलन नहीं आता. आप में बाईसिकल चलाने की ताक़त है, कोई पकड़ ले तो चला भी लेंगे, पर सन्तुलन न जानने से आप एक क़दम चल कर ही साइकिल से गिर पड़ते हैं. सन्तुलन सीखने पर बच्चा चलने लगता है. उसके तन और मस्तक की दूसरी क्रियाओं का भी यही हाल है. उन सब का वक़्त नियत है. जब वह वक़्त आता है, बच्चे को वह सब आ जाती है.

हम चाहते तो यह थे कि हम यहीं क़लम रोक दें पर नतीजा निकाले बिना ऐसा कैसे करें. यों समझ लीजिये ऊपर की बातों से हमें यह नसीहत मिलती है:

हमारा बच्चा हमें अचरज में डालने वाला होता है, और एक ऐसा प्राणी होता है जो बहादुर होता है, सख्त होता है, और हमारी सहकारी होता है. वह तैयार होकर आता है और हमारे साथ मिल कर काम करने के लिये उत्सुक होता है. इस में शक नहीं हम उसका ख़ुशी से स्वागत करते हैं, उसे प्यार करते हैं, पर न जाने क्यों हम अपने प्यार के साथ पुरानी कहावत जोड़े हुए हैं "बच्चों को पालने में ही पकड़ना चाहिये और उनके साथ सख्ती से बर्ताव करना चाहिए."

बच्चों के साथ हमारा बर्ताव, बहुत हद तक, नकारात्मक होता है. हम अपने सुभीते के लिये आज की इस हिदायत को एक दम भुला बैठते हैं जो यह कहती है, "बच्चों को अपनी मरज़ी पर ही छोड़ा जाय" बच्चा भूका है तो हम कहेंगे, 'नहीं', बच्चा प्यासा है, हम कहेंगे, 'नहीं', बच्चा प्यासा है, हम कहेंगे, 'नहीं'. बच्चा कहता है, 'नहीं', तो हम कहते हैं, 'हां'. वह खाना नहीं चाहता, हम खिलाते हैं, हम वह खिलाना चाहते हैं जो वह नहीं खाना चाहता. बच्चा नहाने के लिए तैयार नहीं, हम उसे नहलाते हैं. हम बच्चे से बड़े हैं, मज़बूत हैं, हमारी चलती है, उसकी नहीं. और और जब वह बड़ा होकर उस काम के करने से इन्कार करने लगता है जिसे हम उसे करने को कहते हैं, तब हम

رائے نہیں' عیسبیل پیٹرسن کی ہے جسکو اُنہوں نے نیویارک کے اخبار 'ھیرلڈ ٹربیون' میں چھاپا تھا ۔

یل کے ڈاکٹر آرنولڈ جوسیل نے ہمیں یہ بتایا ہے کہ مانو پرانی کو کام کرنے کے لئے پرکرتی نے ایک پٹی تیار کرکے دے دی ہے بس مانو پرانی کی اُنتی ٹھیک اُسی کے مطابق ہوتی ہے. جب دانت نکلنے لگتے ہیں' تو ٹھوڑی آگے ہونے لگتی ہے' جبڑے مضبوط ہونے لگتے ہیں' پاچن شکتی بڑھ جاتی ہے' اور بچہ اب سخت چیز کھانے کو تیار ہو جاتا ہے ۔ پٹھوں کے لحاظ سے نئے بچے کے پٹھے چلنے کے لئے کافی مضبوط ہوتے ہیں' آپ سہارا دیجئے' وہ پاؤں آگے پیچھے کریگا ! ہماری بات کو اپنے بچے پر آزما کر دیکھ لیجئے' بچہ اپنے آپ تو یوں نہیں چل پاتا کہ اُس کو سنتولن نہیں آتا ۔ آپ میں بائسکل چلانے کی طاقت ہے' کوئی پکڑ لے تو چلا بھی لینگے' پر سنتولن نہ جاننے سے آپ ایک قدم چل کر ہی سائیکل سے گر پڑتے ہیں. سنتولن سیکھنے پر بچہ چلنے لگتا ہے. اُس کے تن اور مستک کی دوسری کریاؤں کا بھی یہی حال ہے ۔ اُن سب کا وقت نیت ہے ۔ جب وہ وقت آتا ہے' بچے کو وہ سب آ جاتی ہے ۔

ہم چاہتے تو یہ تھے کہ ہم یہیں قلم روک دیں پر نتیجہ نکالے بنا ایسا کیسے کریں ۔ یوں سمجھ لیجئے اوپر کی باتوں سے ہمیں یہ نصیحت ملتی ہے :

ہمارا بچہ ہمیں اچرج میں ڈالنے والا ہوتا ہے' اور' ایک، ایسا پرانی ہوتا ہے جو بہادر ہوتا ہے' سخت ہوتا ہے' اور ہمارا سہکاری ہوتا ہے. وہ تیار ہوکر آتا ہے اور ہمارے ساتھ مل کر کام کرنے کے لئے اُتسک ہوتا ہے. اِس میں شک نہیں' ہم اُس کا خوشی سے سواگت کرتے ہیں' اُسے پیار کرتے ہیں' پر نہ جانے کیوں ہم اپنے پیار کے ساتھ پرانی کہاوت جوڑے ہوئے ہیں "بچوں کو پالنے میں ہی پکڑنا چاہئے اور اُن کے ساتھ سختی سے برتاؤ کرنا چاہئے."

بچوں کے ساتھ ہمارا برتاؤ' بہت حد تک' نکاراتمک ہوتا ہے ۔ ہم اپنے سبھیتے کے لئے آج کی اِس ہدایت کو ایک دم بھلا بیٹھتے ہیں جو یہ کہتی ہے' "بچوں کو اپنی مرضی پر ہی چھوڑا جائے." بچہ بھوکا ہے' تو ہم کہینگے' 'نہیں' بچہ متاسا ہے' ہم کہینگے' 'نہیں' بچہ پیاسا ہے' ہم کہینگے' 'نہیں'. بچہ کہتا ہے' 'نہیں' تو ہم کہتے ہیں' 'ہاں.' وہ کھانا نہیں چاہتا' ہم کھلاتے ہیں' ہم وہ کھلانا چاہتے ہیں جو وہ نہیں کھانا چاہتا ۔ بچہ نہانے کے لئے تیار نہیں' ہم اُسے نہلاتے ہیں ۔ ہم بچے سے بڑے ہیں' مضبوط ہیں' ہماری چلتی ہے' اُسکی نہیں ۔ اور جب وہ بڑا ہوکر اُس کام کے کرنے سے اِنکار کرنے لگتا ہے جسے ہم اُسے کرنے کو کہتے ہیں' تب ہم

डाक्टर लिब्बोना नाम गार्टर जो न्यूयार्क में बाल विज्ञान का शास्त्री है उसका कहना है कि बालक का जीता रहना एक बड़ा भारी चमत्कार है.

बच्चा देह का सख्त होता है, इतना ही नहीं, वह फुर्तीला और तेज़ होता है, और बहुत होशियार होता है. उसे क्या चाहिये, यह वह खब समझता है, और जो चाहिये वह कैसे मिलेगा, वह भी खूब जानता है. दुनिया के लोगों से व्योहार करने के लिये उसके पास दो ज़बर्दस्त औजार हैं—एक का नाम है, मुस्कान, दूसरे का नाम है, सुबकना. मुस्कान के वक़्त वह अपने चहरे के पुट्ठों से काम लेता है. बालक दूसरों के चेहरे की मुस्कान पढ़ लेना बहुत जल्दी सीख जाता है. 'मुस्कान' नामी समाजी सिक्के की क़दर उसको सबसे पहले और बहुत जल्दी आ जाती है. इस सिक्के में लेन देन करना वह इतनी जल्दी सीख जाता है जिसे देखकर दांतों तले उंगली दबानी पड़ती है. ज़रा उसको मोज़ा पहनाइये और जूता पहना कर जैसे ही आप तस्मे कस कर फ़ारिग़ होंगे वह झट आपकी मेहनत के दाम चुका देगा, यानी मुस्करा देगा. उधार रखना वह जानता ही नहीं. वह कब ठाली बैठता है. ईश्वर की तरह हर वक़्त रचना के काम में लगा रहता है. अभी बलबला रहा है, अभी दहाड़ने लगेगा! वह बेमतलब कभी नहीं रोता, उसका रोना उसके दफ़्तर की घंटी है. इसका मतलब है, अम्मा या बाबा में से कोई या दोनों जल्दी दौड़ कर आओ, और, खाली हाथ नहीं, साथ में खाना लाओ, सूखे कपड़े लाओ, और यह इशारा तो है ही कि हमेशा उनकी आवाज़ पर चुस्त चालाक रहो.

बच्चा किस तेज़ी से मुस्कान और सुबकने की ताक़तों का पता लगा लेता है, यही इस बात का सबूत है कि वह सीखने की कितनी योग्यता लेकर पैदा हुआ है. साल भर में एक मामूली बच्चा कम से कम एक दर्जन नई नई कलाएं इतनी तेज़ी से सीख लेता है जितनी तेज़ी किसी आदमी को नसीब नहीं! घुटनों चलना सीख जाता है, खड़ा होना सीख लेता है, बैठना आ जाता है और दो चार क़दम चलना भी आ जाता है. दो बरस का होते होते बोलना सीख लेता है. बाप को पहचान जाता है, मां को पहचान जाता है, भाई बहिन, अड़ोसी पड़ोसी और दसियों रिश्तों से जान पहचान कर लेता है. इसके बाद तो जो कुछ वह सीखता है वह उसी सीख की मंजाई होती है जो उसने दो बरस में सीखी होती है. बुनियादी ज्ञान पहले ही से उसमें मौजूद रहता है.

एक बच्चा साल भर में जितना सीख लेता है उतना अगर कोई बड़ा सीख सकता होता तो वह दुनिया में सबसे बड़े बुद्धिमान के नाम से मशहूर हो गया होता. यह हमारी

ڈاکٹر لی اونا نام گارٹر جو نیویارک میں بال وگیان کا شاستری ہے اُس کا کہنا ہے کہ بالک کا جیتا رہنا ایک بڑا بھاری چمتکار ہے۔

بچہ دیہہ کا سخت ہوتا ہے، اتنا ہی نہیں، وہ پھرتیلا اور تیز ہوتا ہے، اور بہت ہوشیار ہوتا ہے۔ اُسے کیا چاہئے، یہ وہ خوب سمجھتا ہے، اور جو چاہئے وہ کیسے ملیگا، یہ بھی خوب جانتا ہے۔ دنیا کے لوگوں سے بیوہار کرنے کے لئے اُس کے پاس دو زبردست اوزار ہیں—ایک کا نام ہے، مسکان، دوسرے کا نام ہے، سبکنا۔ مسکان کے وقت وہ اپنے چہرے کے پٹھوں سے کام لیتا ہے۔ بالک دوسروں کے چہرے کی مسکان پڑھ لینا بہت جلدی سیکھ جاتا ہے۔ 'مسکان' نامی سماجی سکے کی قدر اُس کو سب سے پہلے اور بہت جلدی آ جاتی ہے۔ اس سکے میں لین دین کرنا وہ اتنی جلدی سیکھ جاتا ہے، جسے دیکھ کر دانتوں تلے انگلی دبانی پڑتی ہے۔ ذرا اُسکو موزہ پہنائیے اور جوتا پہناکر جیسے ہی آپ تسمے کس کر فارغ ہونگے وہ جھٹ آپ کی محنت کے دام چکا دیگا، یعنی مسکرا دیگا۔ اُدھار رکھنا وہ جانتا ہی نہیں۔ وہ کب ٹھالی بیٹھتا ہے، ایشور کی طرح ہر وقت رچنا کے کام میں لگا رہتا ہے۔ ابھی بلبلا رہا ہے، ابھی دہاڑنے لگیگا! وہ بے مطلب کبھی نہیں روتا، اُس کا رونا اُس کے دفتر کی گھنٹی ہے۔ اس کا مطلب ہے، اماں یا بابا میں سے کوئی یا دونوں جلدی دوڑ کر آؤ، اور، خالی ہاتھ نہیں، ساتھ میں کھانا لاؤ، سوکھے کپڑے لاؤ، اور یہ اشارہ تو ہے ہی کہ ہمیشہ اُن کی آواز پر چست چالاک رہو۔

بچہ کس تیزی سے مسکان اور سبکنے کی طاقتوں کا پتہ لگا لیتا ہے، یہی اس بات کا ثبوت ہے کہ وہ سیکھنے کی کتنی یوگیتا لے کر پیدا ہوا ہے۔ سال بھر میں ایک معمولی بچہ کم سے کم ایک درجن نئی نئی کلائیں اتنی تیزی سے سیکھ لیتا ہے جتنی تیزی کسی آدمی کو نصیب نہیں! گھٹنوں چلنا سیکھ جاتا ہے، کھڑا ہونا سیکھ لیتا ہے، بیٹھنا آ جاتا ہے اور دو چار قدم چلنا بھی آ جاتا ہے۔ دو برس کا ہوتے ہوتے بولنا سیکھ لیتا ہے۔ باپ کو پہچان جاتا ہے، ماں کو پہچان جاتا ہے، بھائی بہن، اڑوسی پڑوسی اور دسیوں رشتوں سے جان پہچان کر لیتا ہے۔ اس کے بعد تو جو کچھ وہ سیکھتا ہے وہ اُسی سیکھ کی منجائی ہوتی ہے جو اُس نے دو برس میں سیکھی ہوتی ہے۔ بنیادی گیان پہلے ہی سے اُس میں موجود رہتا ہے۔

ایک بچہ سال بھر میں جتنا سیکھ لیتا ہے اُتنا اگر کوئی بڑا سیکھ سکتا ہوتا تو وہ دنیا میں سب سے بڑے بدھیمان کے نام سے مشہور ہو گیا ہوتا۔ یہ ہماری

को कभी जुकाम नहीं हो सकता क्योंकि वह काफ़ी मज़बूत होता है. इसके बाद भी वह इससे बचा रह सकता है. और बचा रहता पाया गया है. घर भर खांस रहा है, छींक रहा है, बच्चा मस्त है अगर कुछ हो ही गया तो बड़ों से बहुत कम.

ज़हरमोरे अच्छे भी होते हैं और बुरे भी होते हैं. अच्छे ज़हरमोरे बाहरी असर से आदमी को बचाए रखते हैं, बुरे ज़हरमोरे सुस्ती पैदा करते हैं. हमारा अचरजों से भरा बच्चा सिर्फ़ अच्छे ज़हरमोरे ले कर ही पैदा होता है. एक डाक्टर जो हारवर्ड युनिवर्सिटी में बाल विज्ञान के शास्त्री माने जाते हैं, वह तो यह बात देख कर एक दम उछल पड़े थे, पर बोले यही कि यह कोई ठीक ठीक नहीं बता सकता कि प्रकृति ने इस मामले में बच्चे को ही इतना खुश क़िस्मत क्यों बनाया है.

बच्चे की सब से बड़ी योग्यता यह है कि गर्भाशय के छोड़ने के दूसरे छन ही वह अपने आपको उन हालतों के माफ़िक़ बना लेता है, जिनमें वह इनसे पहले कभी नहीं रहा था. गर्भाशय में तो वह महीनों ऐसी चीज़ों में लिपटा रहता है जिनकी मदद से उसे किसी तरह का धक्का नहीं लग सकता. वहां दुनिया का शोर सुनाई नहीं देता, न सर्दी गर्मी पहुंच पाती है. वह तरल यानी रस, जिसमें वह डूबा रहता है, और मां के पेट की दीवार, जिससे वह घिरा रहता है, वहां बाहरी दुनिया की हवा तक नहीं पहुंच पाती. मां के पेट में बच्चा जिस जगह रहता है वह इतनी गुदगुदी और लचकदार होती है कि मां अगर गिर पड़े तो बच्चे को धक्का नहीं लगता. यहां तक देखा गया है कि मां के पेट में किसी ने लात मार दी है, पर बच्चे को कुछ तकलीफ़ नहीं हुई.

और, फिर वे वक़्त—बच्चे साहब हैं कि पैदा हो बैठे! किस सर्दी गर्मी से महफ़ूज़ कोठरी में आप बैठे थे, और अब अंधेरी उजाली, ठंडी गर्म दुनिया में आ कूदे! कहीं हवा के झोंके हैं कहीं शोर शराबा है और कहीं कुछ! कितनी मज़ेदार थी मां के पेट की कोठरी जहां बे मांगे खाना मिलता था. यह कैसी दुनिया, जहां खाने की खोज अपने आप करनी पड़े! कितनी अच्छी थी मां के पेट की कोठरी, जहां बच्चा पानी में उतारता पड़ा रहता था! कितनी ख़राब है यह बाहर की दुनिया जहां बिस्तर पर लेटना पड़ता! बिस्तर वह कितना ही मुलायम क्यों न हो मां के पेट के तरल से तो सख़्त ही है. मां के पेट की कोठरी में बाहरी जर्म्स नाम को न थे, अब तो ढेर के ढेर उन पर हमला बोल देते हैं. मां के पेट में तो उसे हवा की ज़रूरत ही न थी, अब तो उसे जैसे फेफड़ों को हवा की ख़ातिर गेंद की तरह फुलाना पड़ता है.

کو کبھی زکام نہیں ہو سکتا کیونکہ وہ کافی مضبوط ہوتا ہے ۔ اِس کے بعد بھی وہ اِس سے بچا رہ سکتا ہے ۔ اور بچا رہتا پایا گیا ہے ۔ گھر بھر کھانس رہا ہے، چھینک رہا ہے، بچہ مست ہے اگر کچھ ہو ہی گیا تو بڑوں سے بہت کم ۔

زہر مورے اچھے بھی ہوتے ہیں اور بُرے بھی ہوتے ہیں. اچھے زہر مورے باہری اثر سے آدمی کو بچائے رکھتے ہیں، بُرے زہر مورے سستی پیدا کرتے ہیں ۔ ہمارا اچرجوں سے بھرا بچہ صرف اچھے زہر مورے لے کر ہی پیدا ہوتا ہے ۔ ایک ڈاکٹر جو ہارورڈ یونیورسٹی میں بال وگیان کے شاستری مانے جاتے ہیں، وہ تو یہ بات دیکھکر ایک دم اُچھل پڑے تھے، پر بولے یہی کہ یہ کوئی ٹھیک ٹھیک نہیں بتا سکتا کہ پرکرتی نے اِس معاملے میں بچے کو ہی اِتنا خوش قسمت کیوں بنایا ہے ۔

بچہ کی سب سے بڑی یوگتا یہ ہے کہ گربھاشے کے چھوڑنے کے دوسرے چھن ہی وہ اپنے آپ کو اُن حالتوں کے موافق بنا لیتا ہے، جن میں وہ اِن سے پہلے کبھی نہیں رہا تھا. گربھاشے میں تو وہ مہینوں ایسی چیزوں میں لپٹا رہتا ہے جن کی مدد سے اُسے کسی طرح کا دھکا نہیں لگ سکتا ۔ وہاں دنیا کا شور سنائی نہیں دیتا، نہ سردی گرمی پہونچ پاتی ہے ۔ وہ ترل یعنی رس، جس میں وہ ڈوبا رہتا ہے، اور ماں کے پیٹ کی دیوار، جس سے وہ گھرا رہتا ہے، وہاں باہری دنیا کی ہوا تک نہیں پہونچ پاتی ۔ ماں کے پیٹ میں بچہ جس جگہ رہتا ہے وہ اِتنی گدگدی اور لچکدار ہوتی ہے کہ ماں اگر گر پڑے تو بچہ کو دھکا نہیں لگتا ۔ یہاں تک دیکھا گیا ہے کہ ماں کے پیٹ میں کسی نے لات مار دی ہے، پر بچہ کو کچھ تکلیف نہیں ہوئی ۔

اور، پھر بے وقت—بچے صاحب ہیں کہ پیدا ہو بیٹھے! کس سردی گرمی سے محفوظ کوٹھری میں آپ بیٹھے تھے، اور جب اندھیری اُجالی، ٹھنڈی گرم دنیا میں آ کودے! کہیں ہوا کے جھونکے ہیں کہیں شور شرابا ہے اور کہیں کچھ! کتنی مزےدار تھی ماں کے پیٹ کی کوٹھری جہاں بے مانگے کھانا ملتا تھا ۔ یہ کیسی دنیا، جہاں کھانے کی کھوج اپنے آپ کرنی پڑے! کتنی اچھی تھی ماں کے پیٹ کی کوٹھری، جہاں بچہ پانی میں اُتراتا پڑا رہتا تھا! کتنی خراب ہے یہ باہر کی دنیا جہاں بستر پر لیٹنا پڑتا ہے! بستر وہ کتنا ہی ملائم کیوں نہ ہو ماں کے پیٹ کے ترل سے تو سخت ہی ہے ۔ ماں کے پیٹ کی کوٹھری میں باہری جرمس نام کو نہ تھے، اب تو ڈھیر کے ڈھیر اُس پر حملہ بول دیتے ہیں. ماں کے پیٹ میں تو اُسے ہوا کی ضرورت ہی نہ تھی، اب تو اُسے جیسے پھیپھڑوں کو ہوا کی خاطر گیند کی طرح پھلانا پڑتا ہے ۔

हो. बारह महीने का बच्चा पानी से नहीं डरता. वह, स्वभाव से जो तैरना आता है, उसको भी नहीं भूला होता.

बालक बहुत सख्त जान होता है, तुम उसकी एक टांग या एक हाथ पकड़ कर उसको आसानी से उठा सकते हो, ऐसा करने से उसको कोई चोट नहीं आएगी. उसे अपना बोझ संभालने में ज़रा दिक़्क़त नहीं होती. वह एक हाथ से डंडे को पकड़ कर लटक सकता है. योरप की लड़ाई के बाद के बच्चे जिन्हें पेट भर खाने को नहीं मिलता था, वह भी इतने ही सख्त जान थे. बच्चे में ही यह ताक़त है कि वह बग़ैर खाए बहुत दिनों जी सकता है, हां, उसे पानी मिलता रहना चाहिये.

पैदा होते वक़्त बच्चा जो सबसे बड़ी ताक़त साथ लाता है, वह है, चूसने की ताक़त. चूसने का काम वह पेट में भी जानता था. चूसने के लिये उसके मुंह की बनावट देखने की चीज़ है. पहले उसकी ठोड़ी को लीजिये, वह कुछ इस ढंग की बनी हुई होती है कि उसकी मदद से उसको मां की चूची तक पहुंचने में बड़ी आसानी होती है. उसकी ठोड़ी बड़ी मुलायम होती है, और ज़रा से इशारे पर पीछे मुड़ जाती है.

अब लीजिये उसके गाल, दोनों गालों में अन्दर की तरफ़ दो बटन से लगे रहते हैं, जिनकी शक्ल बादाम जैसी होती है, यह बड़े चरबीले होते हैं, इन से चूसने में बड़ी मदद मिलती है. बच्चे के होटों में क़ुदरती खिंचाव भी होता है. बच्चे के ऊपरी होंट को ज़रा छू दीजिये, वह झट आगे को बढ़ आएगा और चूसने की शक्ल अख्तियार कर लेगा.

यह सब हुई बच्चे की बाहरी बनावट और सजावट, उसके अन्दर भी खून, दिल, हारमोन्स और धातुएं काफ़ी तादाद में रहती हैं. इन सब में मां के दिये हुए अनगिनत ज़हरमोरे और जोड़ लीजिये और बच्चे की ताक़त का ख़याल कीजिये. ज़हरमोरे से हमारा मतलब उन जर्म्स से है जो बच्चा मां से हासिल करता है. जर्म्स की यह फ़ौज उसके बड़े काम आती है. इसका सेनापति बन कर बच्चा बाहरी जर्म्स का मुक़ाबला करता है. इसी फ़ौज के बल पर वह चाहे जिस चीज़ को मुंह में डाल लेता है और बीमारी से बचा रहता है. बच्चे के शुरू शुरू के जीवन में इन ज़हरमोरों से इतना ही फ़ायदा होता है कि बाहर के जर्म्स बच्चे पर असर नहीं कर पाते. वह इसकी मदद से जर्म्स का नाश नहीं कर सकता, बाहर से आए हुए जर्म्स उसमें जमा होते रहते हैं, बच्चे के बड़े हो जाने पर बाहरी टीकों और दवाओं की वजह से जब उसकी फ़ौज कमज़ोर हो जाती है तो वह विदेशी फ़ौज जो उसके मुल्क में डेरा डाले पड़ी थी, मौक़ा पा कर धावा बोल देती है. पर अब वह बालक कहां रहा होता है. दो हफ़्ते या इस से भी कम के बच्चे

ہو . بارہ مہینے کا بچہ پانی سے نہیں ڈرتا . وہ' سوبھاؤ سے جو تیرنا آتا ہے' اس کو بھی نہیں بھولا ہوتا .

بالک بہت سخت جان ہوتا ہے' تم اس کی ایک ٹانگ یا ایک ہاتھ پکڑ کر اس کو آسانی سے اٹھا سکتے ہو' ایسا کرنے سے اس کو کوئی چوٹ نہیں آئے گی . اسے اپنا بوجھ سنبھالنے میں ذرا دقت نہیں ہوتی . وہ ایک ہاتھ سے ڈنڈے کو پکڑ کر لٹک سکتا ہے . یورپ کی لڑائی کے بعد کے بچے جنہیں پیٹ بھر کھانے کو نہیں ملتا تھا' وہ بھی اتنے ہی سخت جان تھے . بچے میں ہی یہ طاقت ہے کہ وہ بغیر کھائے بہت دنوں جی سکتا ہے' ہاں' اسے پانی ملتا رہنا چاہئے .

پیدا ہوتے وقت بچہ جو سب سے بڑی طاقت ساتھ لاتا ہے' وہ ہے' چوسنے کی طاقت. چوسنے کا کام وہ پیٹ میں بھی جانتا تھا. چوسنے کے لئے اس کے منہ کی بناوٹ دیکھنے کی چیز ہے. پہلے اس کی ٹھوڑی کو لیجئے' وہ کچھ اس ڈھنگ کی بنی ہوئی ہوتی ہے کہ اسکی مدد سے اس کو ماں کی چوچی تک پہونچنے میں بڑی آسانی ہوتی ہے. اسکی ٹھوڑی بڑی ملائم ہوتی ہے' اور ذرا سے اشارے پر پیچھے مڑ جاتی ہے.

اب لیجئے اس کے گال' دونوں گالوں میں اندر کی طرف دو بٹن سے لگے رہتے ہیں' جن کی شکل بادام جیسی ہوتی ہے' یہ بڑے چربیلے ہوتے ہیں' ان سے چوسنے میں بڑی مدد ملتی ہے . بچے کے ہونٹوں میں قدرتی کھنچاؤ بھی ہوتا ہے . بچے کے اوپری ہونٹ کو ذرا چھو دیجئے' وہ جھٹ آگے کو بڑھ جائے گا اور چوسنے کی شکل اختیار کر لے گا .

یہ سب ہوئی بچے کی باہری بناوٹ اور سجاوٹ' اس کے اندر بھی خون' دل' ہارمونس اور دھاتوئیں کافی تعداد میں رہتی ہیں . ان سب میں ماں کے دیئے ہوئے انگنت زہر مورے اور جوڑ لیجئے اور بچے کی طاقت کا خیال کیجئے . زہر مورے سے ہمارا مطلب ان جرمس سے ہے جو بچہ ماں سے حاصل کرتا ہے . جرمس کی یہ فوج اس کے بڑے کام آتی ہے . اس کا سیناپتی بن کر بچہ باہری جرمس کا مقابلہ کرتا ہے . اسی فوج کے بل پر وہ چاہے جس چیز کو منہ میں ڈال لیتا ہے اور بیماری سے بچا رہتا ہے . بچے کے شروع شروع کے جیون میں ان زہر موروں سے اتنا ہی فائدہ ہوتا ہے کہ باہر کے جرمس بچے پر اثر نہیں کر پاتے . وہ اس کی مدد سے جرمس کا ناش نہیں کر سکتا' باہر سے آئے ہوئے جرمس اس میں جمع ہوتے رہتے ہیں' بچے کے بڑے ہو جانے پر باہری ٹیکوں اور دواؤں کی وجہ سے جب اسکی فوج کمزور ہو جاتی ہے تو یہ ودیشی فوج جو اس کے ملک میں ڈیرہ ڈالے پڑی تھی' موقعہ پا کر دھاوا بول دیتی ہے . پر اب وہ بالک کہاں رہا ہوتا ہے . دو ہفتے یا اس سے بھی کم کے بچے

मिल कर काम करता है और मां की बड़ी मदद करता है. अगर मां को चूने की ज़रूरत हो तो वह मां की ख़ुराक में से चूना तैयार करने लगता है. प्रकृति ने ऐसा इन्तज़ाम कर रखा है कि पेट में हर चीज़ पहले बच्चे को मिलती है, भले ही मां को उस चीज़ की कमी पड़ जाय. जहां यह है वहां यह बात भी है कि जब मां की ख़ास ख़ास ग्रन्थियों में किसी ख़ास चीज़ की कमी होती है तो पेट का बच्चा उस ख़ास चीज़ को अपनी मां को दे देता है. मान लीजिए गर्भवती होने से पहले एक मां की गले की ग्रन्थि में ग्रन्थि के मसाले की कमी है, और या किसी ख़ास ग्रन्थि में किसी चीज़ की कमी है तो गर्भवती होने के बाद उसके पेट का बच्चा उन कमियों को पूरा कर देगा. कुछ दिनों में मां का रंग निखर जायगा, मां तन्दुरुस्त हो जायगी. पेट के बच्चे में यह ख़ासियत होती है कि वह दो दो के लिये ग्रन्थियों का मसाला तैयार कर सकता है. गर्भावस्था में मां और बच्चा दोनों मिल कर ज़ोर लगाते हैं.

पैदा होने पर बच्चे नाम का यह अनोखा प्रानी पूरे आदमी से कहीं अच्छा काम करने वाला दिल ले कर जन्म लेता है. तुम्हारा ख़ून दस बीस लाख नम्बर का होता है, बच्चे का ख़ून साठ लाख नम्बर का होता है. सूत या और चीज़ों की तरह ख़ून के भी नम्बर होते हैं. ख़ून के नम्बर उन लाल टिकलियों से लिये जाते हैं जो ख़ून में पाई जाती हैं. नया पैदा हुआ बच्चा बड़े आदमी से जल्दी जल्दी सांस लेता है, उसके ख़ून की गर्दिश तुम सबसे कहीं अच्छी होती है. बस यह समझिये बच्चा एक धुक धुक करने वाली, छन छन बढ़ने वाली, लाल गरम ताक़त पैदा करने वाली एक मशीन होता है. उसमें हमसे ज़ियादा लोहा मिलेगा, हम से ज़ियादा चूना, हमसे ज़ियादा फ़ासफ़ोरस, हमसे ज़ियादा विटामिन मिलेंगे. और उसकी भूक तो इतनी ज़ोर की होती है कि उसे देख कर चीते और भेड़िये की भूक पानी भरने लगेगी, उसको हम से तिगुनी प्रोटीन चाहिये. एक बरस में वह वज़न में तिगना हो जाता है.

नए पैदा हुए बच्चे को आप पानी में डाल दीजिये, वह गिराड़ की तरह तैर कर आगे बढ़ने लगेगा यानी वह अपना सिर पानी के अन्दर डुबो देगा. अपनी कमर ऊंची कर लेगा, पांव पानी में ही रहेंगे, यानी पेट के बल कमान बन जायगा. बुरी बात यही है कि वह मछली की तरह पानी के नीचे तैरता है. तुम उसका मुंह और उसकी नाक पानी के तल से ऊपर रख कर ही उसका तैरना देख सकते हो. डाक्टर-मिस्ट्रील मेकग्रा जिसे बच्चों को तैराकर देखने का बहुत शौक़ था और जो बच्चों पर तरह तरह के परीक्षन किया करता था उसका कहना है कि बच्चों को तैरना सिखाने के दिन वही होते हैं जब बच्चा बारह महीने का

مل کر کام کرتا ہے اور ماں کی بڑی مدد کرتا ہے. اگر ماں کو چونے کی ضرورت ہو تو وہ ماں کی خوراک میں سے چونا تیار کرنے لگتا ہے . پرکرتی نے ایسا اِنتظام کر رکھا ہے کہ پیٹ میں ہر چیز پہلے بچے کو ملتی ہے' پہلے ہی ماں کو اُس چیز کی کمی پڑ جائے. جہاں یہ ہے وہاں یہ بات بھی ہے کہ جب ماں کی خاص خاص گرنتھیوں میں کسی خاص چیز کی کمی ہوتی ہے تو پیٹ کا بچہ اُس خاص چیز کو اپنی ماں کو دے دیتا ہے . مان لیجئے گربھ وتی ہونے سے پہلے ایک ماں کی گلے کی گرنتھی میں گرنتھی کے مسالے کی کمی ہے' اور یا کسی خاص گرنتھی میں کسی چیز کی کمی ہے تو گربھ وتی ہونے کے بعد اُس کے پیٹ کا بچہ اُن کمیوں کو پورا کر دے گا . کچھ دنوں میں ماں کا رنگ نکھر جائے گا' ماں تندرست ہو جائے گی . پیٹ کے بچے میں یہ خاصیت ہوتی ہے کہ وہ دو دو کے لئے گرنتھیوں کا مسالہ تیار کر سکتا ہے . گربھ اوستھا میں ماں اور بچہ دونوں مل کر زور لگاتے ہیں .

پیدا ہونے پر بچے نام کا یہ انوکھا پرانی پورے آدمی سے کہیں اچھا کام کرنے والا دل لے کر جنم لیتا ہے . تمہارا خون دس بیس لاکھ نمبر کا ہوتا ہے' بچے کا خون ساٹھ لاکھ نمبر کا ہوتا ہے . سوت یا اور چیزوں کی طرح خون کے بھی نمبر ہوتے ہیں . خون کے نمبر اُن لال ٹکلیوں سے لئے جاتے ہیں جو خون میں پائی جاتی ہیں . نیا پیدا ہوا بچہ بڑے آدمی سے جلدی جلدی سانس لیتا ہے' اُس کے خون کی گردش تم سب سے کہیں اچھی ہوتی ہے. بس یہ سمجھئے بچہ ایک دھک دھک کرنے والی' چھن چھن بڑھنے والی' لال گرم طاقت پیدا کرنے والی ایک مشین ہوتا ہے . اُس میں ہم سے زیادہ لوہا ملیگا' ہم سے زیادہ چونا' ہم سے زیادہ فاسفورس' ہم سے زیادہ وٹامن ملینگے . اور اس کی بھوک تو اتنی زور کی ہوتی ہے کہ اُسے دیکھکر چیتے اور بھیڑیئے کی بھوک پانی بھرنے لگے گی' اس کو ہم سے تگنی پروٹین چاہئے . ایک برس میں وہ وزن میں تگنا ہو جاتا ہے .

نئے پیدا ہوئے بچے کو آپ پانی میں ڈال دیجئے' وہ گراڑ کی طرح تیر کر آگے بڑھنے لگے گا یعنی وہ اپنا سر پانی کے اندر ڈبو دے گا. اپنی کمر اونچی کر لے گا' پاؤں پانی میں ہی رہیں گے' یعنی پیٹ کے بل کمان بن جائے گا . بری بات یہی ہے کہ وہ مچھلی کی طرح پانی کے نیچے تیرتا ہے . تم اس کا منہ اور اُس کی ناک پانی کے تل سے اوپر رکھکر ہی اُس کا تیرنا دیکھ سکتے ہو. ڈاکٹر مسٹریل میکگرا جسے بچوں کو تیرا کر دیکھنے کا بہت شوق تھا اور جو بچوں پر قسم قسم کے پریکشن کیا کرتا تھا اُس کا کہنا ہے کہ بچوں کو تیرنا سکھانے کے دن وہی ہوتے ہیں جب بچہ بارہ مہینے کا

एक अंगरेज़ी लेख के आधार पर

बालक एक चमत्कारी प्रानी

परी की तरह एक दोस्त, एक दिन मेरे घर आ टपके, बोले, "मैं खाट पर नहीं बैठूंगा, फ़र्श पर लेट कर अपने छै महीने के बच्चे की नक़ल करूंगा. बच्चा पास ही लेटा था, जैसे ही बच्चे ने अपना बदन तोड़ना मोड़ना शुरू किया वैसे ही उन्होंने उसकी नक़ल करना शुरू कर दी, लगे अपना बदन तोड़ने मोड़ने, जब बच्चे ने हवा में हाथ मारने शुरू किये तो उन्होंने भी हाथ हिलाने शुरू कर दिये, उसने टाँगें फेंकनी शुरू की, इन्होंने भी शुरू की. उसने अपनी कमर की कमान बनाई, इन्होंने भी, वह सिर एड़ी के बल खड़ा हो गया यह भी खड़े हो गए, वह उठा यह उठे, वह गिरा यह गिरे. तीस मिनट में मेरे यह हट्टे कट्टे दोस्त थक कर चारों खाने चित्त गिर पड़े. और बालक था, कि खुश खुश अपने खेल दिखाए जा रहा था! वह मिनट के बाद मिनट पर ताज़ा से ताज़ा तर दिखाई देता था, थकान खड़ी खड़ी उसका तमाशा देख रही थी, ताज़गी उससे लिपटी हुई थी, और छन छन में उसके अन्दर दाखिल हो कर उससे एकमेक होने की कोशिश में थी.

जिस मार्के की बात को हम बिल्कुल भूले हुए हैं, ऊपर की पंक्तियां उसकी भूमिका हैं. तन, मन, मस्तक तीनों के लिहाज़ से बालक तुम सबसे कहीं ऊंचे दर्जे का आदमी है, सबूत लीजिए.

पैदा होने से पहले, मां के पेट में ही, वह ग़ज़ब का प्रानी है. जिन डाक्टरों ने बारीक औज़ारों की मदद से पेट में रहने वाले बच्चे की जांच की है, उनका कहना है, "मां के पेट के अन्दर बच्चा खांसता है, छींकता है, अंगड़ाई लेता है, आहें भरता है, कराहता है, अंगूठा चूसता है, और, अगर मां को गुदगुदाया जाय, तो बच्चा उस गुदगुदी को महसूस करता है और पेट में हिलता डुलता है." डाक्टरों का यह भी कहना है, "कभी कभी पेट के अन्दर से बच्चे के रोने की आवाज़ भी सुनी गई है." एक गर्भवती ने तो यहां तक बताया कि थियेटर में ताली पीटते समय उसके बच्चे ने पेट में ताली बजाई. एक मां ने यह शिकायत की कि वह कपड़ा धोने की मशीन को न अपने घर में रख सकती है, न कपड़ा धो सकती है, क्योंकि उसका पेट का बच्चा उसकी 'घर्र घर्र' की आवाज़ से बुरी तरह बिगड़ता है, और पेट में खुदर खुदर करने लगता है.

इससे बढ़ कर बात यह है, जिसको बड़े बड़े हकीमों ने माना है, कि अनजाने ही पेट का बच्चा मां के साथ

ایک انگریزی لیکھ کے آدھار پر

بالک ایک چمتکاری پرانی

پری کی طرح ایک دوست، ایک دن میرے گھر آ ٹپکے، بولے، "میں کھاٹ پر نہیں بیٹھونگا، فرش پر لیٹ کر اپنے چھ مہینے کے بچے کی نقل کرونگا. بچہ پاس ہی لیٹا تھا، جیسے ہی بچے نے اپنا بدن توڑنا موڑنا شروع کیا ویسے ہی اُنھوں نے اس کی نقل کرنا شروع کر دی، لگے اپنا بدن توڑنے موڑنے، جب بچے نے ہوا میں ہاتھ مارنے شروع کئے تو اُنھوں نے بھی ہاتھ ہلانے شروع کر دیئے، اُس نے ٹانگیں پھینکنی شروع کیں، اِنھوں نے بھی شروع کیں. اُس نے اپنی کمر کی کمان بنائی، اِنھوں نے بھی، وہ سر ایڑی کے بل کھڑا ہو گیا یہ بھی کھڑے ہوگئے، وہ اُٹھا یہ اُٹھے، وہ گرا یہ گرے. تیس منٹ میں میرے یہ ہٹے کٹے دوست تھک کر چاروں خانے چت گر پڑے. اور بالک تھا، کہ خوش خوش اپنے کھیل دکھائے جا رہا تھا! وہ منٹ کے بعد منٹ پر تازہ سے تازہ تر دکھائی دیتا تھا، تھکان کھڑی کھڑی اُس کا تماشہ دیکھ رہی تھی، تازگی اس سے لپٹی ہوئی تھی، اور چھن چھن میں اُس کے اندر داخل ہو کر اُس سے ایک میک ہونے کی کوشش میں تھی.

جس مارکے کی بات کو ہم بالکل بھولے ہوئے ہیں، اوپر کی پنکتیاں اس کی بھومکا ہیں. تن، من، مستک تینوں کے لحاظ سے بالک تم سب سے کہیں اونچے درجہ کا آدمی ہے، ثبوت لیجئے.

پیدا ہونے سے پہلے، ماں کے پیٹ میں ہی، وہ غضب کا پرانی ہے. جن ڈاکٹروں نے باریک اوزاروں کی مدد سے پیٹ میں رہنے والے بچے کی جانچ کی ہے، اُن کا کہنا ہے، "ماں کے پیٹ کے اندر بچہ کھانستا ہے، چھینکتا ہے، انگڑائی لیتا ہے، آہیں بھرتا ہے، کراہتا ہے، انگوٹھا چوستا ہے، اور، اگر ماں کو گدگدایا جائے، تو بچہ اُسی گدگدی کو محسوس کرتا ہے اور پیٹ میں ہلتا ڈلتا ہے." ڈاکٹروں کا یہ بھی کہنا ہے، "کبھی کبھی پیٹ کے اندر سے بچے کے رونے کی آواز بھی سنی گئی ہے." ایک گربھ وتی نے تو یہاں تک بتایا کہ تھیٹر میں تالی پیٹتے سمے اُس کے بچے نے پیٹ میں تالی بجائی. ایک ماں نے یہ شکایت کی کہ وہ کپڑا دھونے کی مشین کو نہ اپنے گھر میں رکھ سکتی ہے، نہ کپڑا دھو سکتی ہے، کیونکہ اس کا پیٹ کا بچہ اُسکی 'گھر گھر' کی آواز سے بری طرح بگڑتا ہے، اور پیٹ میں کھدر کھدر کرنے لگتا ہے.

اِس سے بڑھکر بات یہ ہے، جسکو بڑے بڑے حکیموں نے مانا ہے، کہ انجانے ہی پیٹ کا بچہ ماں کے ساتھ

से—कि हम अपनी सरकारों को अमन बरक़रार रखने और लड़ाई न करने को मजबूर कर देंगे.

पकिस्तान डेलीगेशन के बारे में एक लफ़्ज़. मनकी शरीफ़ के पीर उसके नेता हैं, डेलीगेशन में हर विचार और पेशे के लोग आए हुए हैं. मर्द और औरत दोनों, जिनकी राजनीति अलग अलग है, ख़याल दीगर हैं. हां, औरतें दो हैं. एक तो कभी के पंजाब सरकार के वज़ीर आज़म सर सिकन्दर हयात ख़ां की बेटी और 'पाकिस्तान टाइम्स' के नायब सम्पादक मज़हर अली ख़ां की बेगम, ऊंची और सुन्दर ताहिरा; दूसरी सर सिकन्दर के भाग्यवान पुत्र, कभी के शिक्षा मंत्री शौकत हयात ख़ां की बेगम, कानफ़्रेन्स की महिलाओं में सबसे सुन्दर, इसमें शक नहीं बहुत ही सुन्दर. मियां इफ़्तख़ारुद्दीन भी आए हुए हैं. नाटे, हलके, मुख़्तसर से. मियां, मसख़रे ऐसे कि सेलोलायड की गेंद की तरह एक मज़ाक़ से दूसरे मज़ाक़ पर उछलते रहने वाले. ऐसे, जो पहाड़ को हिला दें. अभी हाल में इंगलैंड में थे, पर उनकी सरकार ने अमन के लड़ाकों को पासपोर्ट देने से इनकार कर दिया तो घर भागे, वहां आन्दोलन किया, उन्हें पासपोर्ट दिला कर रहे. वह अब यहां हैं.

अब देखो बेटी, खाना क़ायदे से खाना. ना नू न करना जिससे तन्दुरुस्त रह सको. मैं बिल्कुल तन्दुरुस्त हूं, ख़ुश. शाम नम रही है, सुस्त. आसमान काले बादलों से घिरा है. हवा सन सन कर रही है. अजब नहीं जो रात में मेंह बरसे. अगले दिनों का अन्देशा है, कहीं दुर्दिन न हो जाय. विदा. प्यार और आशीर्वाद.

तुम्हारा
पापा

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जायगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इनसान-इनसान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा गांधी ने इस किताब के बारे में कहा है कि—

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े... "

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताब का दाम सिर्फ़ एक रुपया.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द', 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

یہ—کہ ہم اپنی سرکاروں کو امن برقرار رکھنے اور لڑائی نہ کرنے کو مجبور کر دینگے۔

پاکستان ڈیلی گیشن کے بارے میں ایک لفظ. منکی شریف کے پیر اُس کے نیتا ہیں، ڈیلی گیشن میں ہر وچار اور پیشے کے لوگ آئے ہوئے ہیں. مرد اور عورت دونوں، جنکی راج نیتی الگ الگ ہے، خیال دیگر ہیں. ہاں، عورتیں دو ہیں ایک تو کبھی کے پنجاب سرکار کے وزیراعظم سر سکندر حیات خاں کی بیٹی اور 'پاکستان ٹائمس' کے نائب سمپادک مظہر علی خاں کی بیگم، اونچی اور سندر طاہرہ؛ دوسری سر سکندر کے بھاگیہ وان پتر، کبھی کے شکشا منتری شوکت حیات خاں کی بیگم، کانفرنس کی مہلاؤں میں سب سے سندر، اس میں شک نہیں بہت ہی سندر. میاں اِفتخار الدین بھی آئے ہوئے ہیں. ناٹے، ہلکے، مختصر سے. میاں، مسخرے ایسے کہ سیلولائیڈ کی گیند کی طرح ایک مذاق سے دوسرے مذاق پر اُچھلتے رہنے والے. ایسے، جو پہاڑ کو ہلا دیں. ابھی حال میں انگلینڈ میں تھے، پر جب اُن کی سرکار نے امن کے لڑاکوں کو پاسپورٹ دینے سے اِنکار کردیا تو گھر بھاگے، وہاں آندولن کیا، اُنہیں پاسپورٹ دلا کر رہے، وہ اب یہاں ہیں.

اب دیکھو بیٹی، کھانا قاعدے سے کھانا. نا نو نہ کرنا جس سے تندرست رہ سکو. میں بالکل تندرست ہوں، خوش. شام نم رہی ہے، سست. آسمان کالے بادلوں سے گھرا ہے. ہوا سن سن کر رہی ہے. عجب نہیں جو رات میں مینھ برسے. اگلے دنوں کا اندیشہ ہے، کہیں دردن نہ ہو جائے. وداع. پیار اور آشیرواد.

تمہارا
پاپا

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے. سی. کمارپپا.

انوادک—سریش رام بھائی.

اِس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ہے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ہے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابری، بھائی چارے، پریم اور اہنسا پر کتنا زور دیا ہے.

مہاتما گاندھی نے اس کتاب کے بارے میں کہا ہے کہ—

"ہر آستک سے، چاہے وہ عیسائی ہو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ہو، میری سفارش ہے کہ اِسے پڑھے..."

سندر جلد، بڑھیا کاغذ، قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ.

ملنے کا پتہ—

مینیجر، 'نیا ہند'، 145 مٹھی گنج، الہ آباد.

"औरल वारिस" को अपनी राह से हटा दिया था, उधर वह जादू की लकड़ी है जिसने, मरे को जिला दिया था, इधर यह रकाबी है जो जहर डालते ही रंग बदल देती है—यह सारे जादू अब बे असर हो गए हैं. इनमें से कोई आज उतना पुरअसर न रहा जितना नये चीन के निर्मान का जादू जो आज नामुमकिन को भी मुमकिन कर रहा है.

चीज़ें सस्ती हैं. बांस की बुनावट से सजा थरमस तीन रुपए का है, फ़ाउन्टेनपेन छै का, सुन्दर घड़ियां 60 की, चावल पांच आने सेर! और अब चीज़ की बारीकी और क्वालिटी का ख़याल जियादा है. सुन्दर और टिकाऊ चीज़ों की क़ीमत लोग जियादा देने को तैयार हैं. ख़रीदने की ताक़त बढ़ गई है, ख़रीदारों की तादाद बराबर बढ़ती जा रही है. फुटकर बेचने वाले एक दुकानदार से पूछा कि इस साल का रोज़गार पिछले साल के मुक़ाबले कैसा है? जवाब मिला, रोज़ 500 रुपए की बढ़ती, आज की 26 तारीख़ को.

फुटकर रोज़गार में बाढ़ सी आ गई है. औद्योगिक पैदावार की बढ़ती ने मज़दूरों की मज़दूरी बढ़ा दी है, इस्तेमाली चीज़ों की क़ीमत घटा दी है. क़ीमतें बदस्तूर क़ायम रखने के लिये चीज़ों को भट्टियों की आग में डालने की ज़रूरत नहीं पड़ती. गांव की फ़सल ने किसानों की आमदनी बढ़ा दी है, और साथ ही गाहकों के लिये मोल घटा दिया है. सानफ़ान और वू फ़ान (भ्रष्टाचार, बर्बादी और दफ़तरी सुस्ती के खिलाफ़ आन्दोलन) क़ीमतों के अध्ययन के अनुकूल, संगठित पैदावार, और सरकारी कारख़ानों के बेहतर तरीक़ों ने क़ीमतें और कम कर दी हैं. सौदागर निजी व्योपार की आमदनी से भरपूर लाभ उठाता है. सरकारी रोज़गार निजी रोज़गारों को राह दिखाते हैं और घरेलू उद्योग धन्दों को आर्डर और ठेकों द्वारा मदद करते हैं, साथ ही सौदागरों को थोड़े सूद पर क़र्ज़ देते हैं जिससे कि वह माल थोक में नक़द दाम पर सीधे कारख़ानों से ख़रीद सकें. माल की तेज़ी से तक़सीम से और ख़रीदार के ऊपर क़ीमत का हल्का भार उसी का नतीजा है.

चित्रा, लगता है धुन मुझ पर सवार हो गई क्योंकि मैं अर्थशास्त्र की ख़ासी चर्चा करने लगा हूं. अब मैं लिखना बन्द करूंगा जिससे तुम्हें क़ीमतों की यह नीरस तालिका पढ़ने से राहत मिले और साथ ही मुझे भी वक़्त की कुछ बचत हो. इसी वक़्त हमारे डेलीगेशन की बैठक है. महत्व की बैठक, कश्मीर की समस्या पर विचार करने के लिये. पाकिस्तान का प्रतिनिधि मंडल आ पहुँचा है. हम चाहते हैं कि दोनों की तरफ़ से एक मिला जुला एलान करें जो शान्ति सम्मेलन स्वीकार कर ले. हमने प्रन कर लिया है—उन्होंने पाकिस्तान की तरफ़ से, हमने हिन्दुस्तान की तरफ़

بوآورس وارس" کو اپنی راہ سے ہٹا دیا تھا، ادھر وہ جادو کی لکڑی ہے جس نے، مرے کو جلا دیا تھا، ادھر یہ رکابی ہے جو زہر ڈالتے ہی رنگ بدل دیتی ہے—یہ سارے جادو اب بے اثر ہوگئے ہیں. ان میں سے کوئی آج اتنا پر اثر نہ رہا جتنا نئے چین کے نرمان کا جادو جو آج ناممکن کو بھی ممکن کر رہا ہے.

چیزیں سستی ہیں. بانس کی بناوٹ سے سجا تھرمس تین روپئے کا ہے، فاؤنٹینپین چھ کا، سندر گھڑیاں 60 کی، چاول پانچ آنے سیر! اور اب چیز کی باریکی اور کوالٹی کا خیال زیادہ ہے. سندر اور ٹکاؤ چیزوں کی قیمت لوگ زیادہ دینے کو تیار ہیں. خریدنے کی طاقت بڑھ گئی ہے، خریداروں کی تعداد برابر بڑھتی جا رہی ہے. پھٹکر بیچنے والے ایک دوکاندار سے پوچھا کہ اس سال کا روزگار پچھلے سال کے مقابلے کیسا ہے؟ جواب ملا، روز 500 روپئے کی بڑھتی، آج کی 26 تاریخ کو.

پھٹکر روزگار میں باڑھ سی آگئی ہے. اودیوگک پیداوار کی بڑھتی نے مزدوروں کی مزدوری بڑھا دی ہے، استعمالی چیزوں کی قیمت گھٹا دی ہے. قیمتیں بدستور قائم رکھنے کے لئے چیزوں کو بھٹیوں کی آگ میں ڈالنے کی ضرورت نہیں پڑتی. گاؤں کی فصل نے کسانوں کی آمدنی بڑھا دی ہے، اور ساتھ ہی گاہکوں کے لئے مول گھٹا دیا ہے. سان‌فان اور وو‌فان (بھرشٹاچار، بربادی اور دفتری سستی کے خلاف آندولن) قیمتوں کے ادھیین کے انوکول، سنگٹھت پیداوار، اور سرکاری کارخانوں کے بہتر طریقوں نے قیمتیں اور کم کر دی ہیں. سوداگر نجی بیوپار کی آمدنی سے بھرپور لابھ اٹھاتا ہے. سرکاری روزگار نجی روزگاروں کو راہ دکھاتے ہیں اور گھریلو ادیوگ دھندوں کو آرڈر اور ٹھیکوں دوارا مدد کرتے ہیں، ساتھ ہی سوداگروں کو تھوڑے سود پر قرض دیتے ہیں جس سے کہ وہ مال تھوک میں نقد دام پر سیدھے کارخانوں سے خرید سکیں. مال کی تیزی سے تقسیم اور خریدار کے اوپر قیمت کا ہلکا بھار اسی کا نتیجہ ہے.

چترا، لگتا ہے دھن مجھ پر سوار ہوگئی کیونکہ میں ارتھ شاستر کی خاصی چرچہ کرنے لگا ہوں. اب میں لکھنا بند کرونگا جس سے تمہیں قیمتوں کی یہ نیرس تالیکا پڑھنے سے راحت ملے اور ساتھ ہی مجھے بھی وقت کی کچھ بچت ہو. اسی وقت ہمارے ڈیلی گیشن کی بیٹھک ہے. مہتو کی بیٹھک، کشمیر کی سمسیا پر وچار کرنے کے لئے. پاکستان کا پرتی ندھی منڈل آ پہونچا ہے. ہم چاہتے ہیں کہ دونوں کی طرف سے ایک ملا جلا اعلان کریں جو شانتی سمیلن سویکار کرلے. ہم نے پرن کر لیا ہے— انہوں نے پاکستان کی طرف سے، ہم نے ہندستان کی طرف

को भीड़ और ज़ियादा हो जाती है. हफ़्ते के और दिन गाहकों की गिनती क़रीब 22,000 होती है, इतवार के दिन 44,000 से भी ऊपर. हफ़्ते में 1,75,000 से ऊपर गाहक. अकेली दुकान के लिये गाहकों की यह तादाद कुछ कम नहीं. फिर दुकानों की वहां कमी नहीं और न उनमें सजे बिकने वाले माल की. मैंने भीड़ को बग़ैर किसी ग़ुस्से या परेशानी से आपस में टकराते, धक्के देते और धक्के खाते दुकान की सीढ़ियां चढ़ते देखा. जो आगे चीज़ें ख़रीद रहे थे वे पीछे वालों की तरफ़ देखकर मुस्करा रहे थे, जैसे कह रहे हों, हम अभी जगह कर देंगे, एक मिन्ट और बस हमारी ख़रीदारी ख़तम. लोगों में गहरा भाईचारा है अगरचे वह शायद ही कभी मिले हों. ऐसे ही मौक़ों पर शायद एक दूसरे को देखा हो पर बात तो कभी नहीं की. एक जवान लड़की, जो शायद विद्यार्थिनी थी, शायद मज़दूर थी, एक आदमी और औरत के बीच दबी खड़ी थी. आदमी उससे हटे रहने की कोशिश कर रहा था पर मारे भीड़ के अपने को संभाल न पाकर अपने दबाव से उसको बचाने की बराबर कोशिश कर रहा था. छन भर के लिये उस लड़की की आंखें मुझ पर पड़ीं. मैं जो विदेशी उसका संघर्ष देख रहा हूं. वह मुस्करा पड़ती है जैसे आंखों आंखों से ही कहती है—कोई बात नहीं, कोई परेशानी नहीं, कोई कष्ट नहीं हो रहा है. बात दस्तूर है. फिर भी उसकी लाचारी से कुछ दुखी हो जाता हूं, उसकी तरफ़ मुस्कराने की कोशिश करता हूं. मेरा मुस्कराना वह पूरा देख नहीं पाती क्योंकि भीड़ का दबाव ढीला पड़ गया है और वह झट दुकान के भीतर चली गई है. मैं उसे और नहीं देख पाता. पर जितना ही मुझे उसकी तेज़ी पर अचरज होता है उतना ही उससे सन्तोश भी. वह तुम लोगों सी नहीं जो छिपकली देख कर कांप जाय, झींगुर की आवाज़ सुन सहम जाय, कोई छुई मुई नहीं जो ज़रा छूने से मुरझा जाय. चीनी नारी वह है जो तूफ़ान पर हकूमत करती है. बेमक़सद मैं इस दुकान से उस दुकान में जा रहा हूं, तेज़ी से घुस जाता हूं, तेज़ी से ही बाहर निकल जाता हूं, कुछ लेना नहीं, पर भीड़ का दृश्य देख अधिक जोश में आता जा रहा हूं. चीनी बर्तन तरह तरह से चित्रित, रंग बिरंगी सुन्दर छोटी लकड़ी की कंघियां, कई कई डिज़ाइनों के महिलाओं के पंखे, आकर्षक छतरियां, ग़ैर मामूली बांस के गिलास, किमख़ाब जो मलकाओं को ललचा दे. सिल्क और साटन, तैयार बने कोट, पाजामे और चोग़े, तांबे, शीशे और धातु की बनी चीज़ें —मंहगी और सस्ती, मंहगी से ज़ियादा सस्ती. अनगिनत अनोखी चीज़ें. यहां यह छोटा बर्तन रखा है जिसमें, प्रेम में असफल हो जाने के कारन, छोटी रानी ने ज़हर पिया था, वहां वह तेज़ ख़ंजर है जिसके ज़रिये अनधिकारी विजेता ने

کو بھیڑ اور زیادہ ہو جاتی ہے . ہفتے کے اور دن گاہکوں کی گنتی قریب 22,000 ہوتی ہے' اتوار کے دن 44,000 سے بھی اوپر. ہفتے میں 1,75,000 سے اوپر گاہک اکیلی دوکان کے لئے گاہکوں کی یہ تعداد کچھ کم نہیں. پھر دوکانوں کی وہاں کمی نہیں اور نہ اُن میں سجے بکنے والے مال کی. میں نے بھیڑ کو بغیر کسی غصے یا پریشانی سے آپس میں ٹکراتے' دھکے دیتے اور دھکے کھاتے دوکان کی سیڑھیاں چڑھتے دیکھا . جو آگے چیزیں خرید رہے تھے وہ پیچھے والوں کی طرف دیکھ کر مسکرا رہے تھے' جیسے کہہ رہے ہوں' ہم ابھی جگہ کر دینگے' ایک منٹ اور بس ہماری خریداری ختم . لوگوں میں گہرا بھائی چارہ ہے اگرچہ وہ شائد ہی کبھی ملے ہوں . ایسے ہی موقعوں پر شائد ایک دوسرے کو دیکھا ہو پر بات تو کبھی نہیں کی. ایک جوان لڑکی' جو شائد ودیارتھنی تھی' شائد مزدور تھی' ایک آدمی اور عورت کے بیچ دبی کھڑی تھی. آدمی اُس سے ہٹے رہنے کی کوشش کر رہا تھا پر مارے بھیڑ کے اپنے کو سنبھال نہ پاکر اپنے دباؤ سے اُس کو بچانے کی برابر کوشش کر رہا تھا. چھن بھر کے لئے اُس لڑکی کی آنکھیں مجھ پر پڑیں . میں جو ودیشی اُس کا سنگھرش دیکھ رہا ہوں. وہ مسکرا پڑتی ہے جیسے آنکھوں آنکھوں سے ہی کہتی ہے—کوئی بات نہیں' کوئی پریشانی نہیں' کوئی کشٹ نہیں ہو رہا ہے . بات بدستور ہے. پھر بھی اُس کی لاچاری سے کچھ دکھی ہو جاتا ہوں' اُس کی طرف مسکرانے کی کوشش کرتا ہوں . میرا مسکرانا وہ پورا دیکھ نہیں پاتی کیونکہ بھیڑ کا دباؤ ڈھیلا پڑ گیا ہے اور وہ جھٹ دوکان کے بھیتر چلی گئی ہے . میں اُسے اور نہیں دیکھ پاتا . پر جتنا ہی مجھے اُس کی تیزی پر اچرج ہوتا ہے اُتنا ہی اُس سے سنتوش بھی. وہ تم لوگوں سی نہیں جو چھپکلی دیکھ کر کانپ جائے' جھینگر کی آواز سن کر سہم جائے' کوئی چھوئی موئی نہیں جو ذرا چھونے سے مرجھا جائے. چینی ناری وہ ہے جو طوفان پر حکومت کرتی ہے. بے مقصد میں اِس دوکان سے اُس دوکان میں جا رہا ہوں' تیزی سے گھس جاتا ہوں' تیزی سے ہی باہر نکل جاتا ہوں' کچھ لینا نہیں' پر بھیڑ کا درشیہ دیکھ ادھک جوش میں آتا جا رہا ہوں. چینی برتن طرح طرح سے چترت' رنگ برنگی سندر چھوٹی لکڑی کی کنگھیاں' کئی کئی ڈزائنوں کے مہلاؤں کے پنکھے' آکرشک چھتریاں' غیر معمولی بانس کے گلاس' کمخواب جو ملکاؤں کو للچا دے' سلک اور ساٹن' تیار بنے کوٹ' پاجامے اور چوغے' تانبے' شیشے اور دھات کی بنی چیزیں—مہنگی اور سستی' مہنگی سے زیادہ سستی . اَن گنت انوکھی چیزیں . یہاں یہ چھوٹا برتن رکھا ہے جس میں' پریم میں اسپھل ہو جانے کے کارن' چھوٹی رانی نے زہر پیا تھا' وہاں وہ تیز خنجر ہے جس کے ذریعہ انادھیکاری وجیتا نے

असाधारन मात्रा में उसमें परिवर्तन हुआ है. वैसे तो वह नगर हमेशा से सुन्दर रहा पर इधर सदियों की ज़मीन सी ठोस जमी ग़लीज़ ने उसे भद्दा और नापाक बना रखा था. मज़दूरों ने ही इस नगर को सदियों पहले दूसरों के लिये बनाया था, आज वही उसे फिर से अपने लिये बना रहे हैं. वह ही जो मेहनत को इनाम समझते हैं, सुस्ती से घृना करते हैं. उन्होंने सैकड़ों मील लम्बी नालियां बनाई हैं, पानी के लाखों नल लगाए हैं, हज़ारों घरों में बिजली ले जा कर उन्हें चमका दिया है.

पीकिंग की शकल आज बदल गईहै. उसके फैले महल जो कभी सिर्फ़ साम्राटों के आनन्द लेने की जगह थीं आज आम जनता के लिये खोल दिये गए हैं. उसके पार्कों में जीवन इठला रहा है, छोटे बड़े बच्चे दौड़ते, खेलते और नाचते रहते हैं. देखने वालों की आंखें निहाल हो जाती हैं. पार्क आम तौर से हर माह बनते जा रहे हैं. झीलें भी हर साल. और इन्हें बना कौन रहा है? मज़दूरों के अलावा लाल फ़ौज जिस फ़ौज ने चीन को बाहरी दुश्मनों और उनके एजेन्टों से आज़ाद किया है वही उसके नगरों और देहातों को भी आज ग़लीज़ और गर्द से मुक्त कर रही है. पिछले दो बरसों से वह सदियों की गन्दगी से फावड़ा लेकर लड़ती रही है, वैसे ही जैसे कुम्हार चाक पर अभिराम कल से बनाता रहा है, जैसे राज करनी से भव्य भवन खड़े करता रहा है. फ़ौज ने बेकार बैठे रहने या मार काट के इन्तज़ार के लिये राष्ट्र से तनखा लेना नामंज़ूर कर दिया है. उसके बदले वह नगरों में जोश ख़रोश से निर्मान करती है, गांवों में फ़स्ल बोती और काटती है.

ख़त बन्द करने के पहले तुम से बाज़ार का कुछ हाल कहूंगा. ख़रीदारी के बारे में तुम्हारी उदासीनता मैं जानता हूं अगरचे वह लड़कियों की ख़ास कमज़ोरी है. तुम में नहीं है. इससे गो तुम्हें दुकानों की बाबत जानकारी में कुछ ख़ास दिलचस्पी न होगी, फिर भी पीकिंग के बाज़ार का कुछ हाल सुनो.

वांगफ़ू चिंग पीकिंग के बाज़ार की ख़ास सड़क है. मैंने कान्तोन का बाज़ार देखा है पर पीकिंग कान्तोन से हर बात में बढ़ा है. सड़क पर ख़ासी भीड़ थी, दुकानें भी लोगों से भरी थीं. सरकारी दुकान में ज़ोर की बिक्री हो रही थी. उनके भीतर और दरवाज़े में मर्द औरत पिले हुए थे. गर्मी काफ़ी थी. सूरज तप रहा था. लोग भीतर घुसने के इन्तज़ार में बाहर क़तार में खड़े थे. पास के गांव के किसान, रात में काम करने वाले मज़दूर, सैनिक, घर की औरतें. सरकारी दुकानें दस घन्टे खुलती हैं, ग्यारह बजे दिन से नौ बजे रात तक. इतवार को भी. असल में इतवार

اساداران ماترا میں اسمیں بڑی ورتن ہوا ہے۔ ویسے تو وہ نگر ہمیشہ سے سندر رہا پر ادھر صدیوں کی زمین سی ٹھوس جمی غلیظ نے اسے بھدا اور ناپاک بنا رکھا تھا۔ مزدوروں نے ہی اس نگر کو صدیوں پہلے دوسروں کے لئے بنایا تھا، آج وہی اسے پھر سے اپنے لئے بنا رہے ہیں۔ وہ ہی جو محنت کو انعام سمجھتے ہیں، سستی سے گھرنا کرتے ہیں۔ انہوں نے سیکڑوں میل لمبی نالیاں بنائی ہیں، پانی کے لاکھوں نل لگائے ہیں، ہزاروں گھروں میں بجلی لے جاکر انہیں چمکا دیا ہے۔

پیکنگ کی شکل آج بدل گئی ہے۔ اس کے پھیلے محل جو کبھی صرف سمراٹوں کے آنند لینے کی جگہیں تھیں آج عام جنتا کے لئے کھول دیئے گئے ہیں۔ اس کے پارکوں میں جیون اٹھلا رہا ہے، چھوٹے بڑے بچے دوڑتے، کھیلتے اور ناچتے رہتے ہیں۔ دیکھنے والوں کی آنکھیں نہال ہو جاتی ہیں، پارک عام طور سے ہر ماہ بنتے جا رہے ہیں، جھیلیں بھی ہر سال۔ اور انہیں بنا کون رہا ہے؟ مزدوروں کے علاوہ لال فوج۔ جس فوج نے چین کو باہری دشمنوں اور ان کے ایجنٹوں سے آزاد کیا ہے۔ وہی اس کے نگروں اور دیہاتوں کو بھی آج غلیظ اور گرد سے مکت کر رہی ہے۔ پچھلے دو برسوں سے وہ صدیوں کی گندگی سے پھاوڑا لے کر لڑتی رہی ہے، ویسے ہی جیسے کمہار چاک پر ابھی رام کلسے بناتا رہا ہے، جیسے راج کرنی سے بھویہ بھون کھڑے کرتا رہا ہے۔ فوج نے بیکار بیٹھے رہنے یا مار کاٹ کے انتظار کے لئے راشٹر سے تنخواہ لینا نامنظور کر دیا ہے۔ اس کے بدلے وہ نگروں میں جوش خروش سے نرمان کرتی ہے، اور گاؤں میں فصل بوتی اور کاٹتی ہے۔

خط بند کرنے کے پہلے تم سے بازار کا کچھ حال کہونگا۔ خریداری کے بارے میں تمہاری اداسینتا میں جانتا ہوں۔ اگرچہ وہ لڑکیوں کی خاص کمزوری ہے، تم میں نہیں ہے۔ اس سے گو تمہیں دکانوں کی بابت جانکاری میں کچھ خاص دلچسپی نہ ہوگی، پھر بھی پیکنگ کے بازار کا کچھ حال سنو۔

وانگ فوچنگ پیکنگ کے بازار کی خاص سڑک ہے۔ میں نے کانٹون کا بازار دیکھا ہے پر پیکنگ کانٹون سے ہر بات میں بڑا ہے۔ سڑک پر خاصی بھیڑ تھی، دکانیں بھی لوگوں سے بھری تھیں۔ سرکاری دکانوں میں زور کی بکری ہو رہی تھی۔ ان کے بھیتر اور دروازے میں مرد عورت پلے ہوئے تھے۔ گرمی کافی تھی۔ سورج تپ رہا تھا۔ لوگ بھیتر گھسنے کے انتظار میں باہر قطار میں کھڑے تھے۔ پاس کے گاؤں کے کسان، رات میں کام کرنے والے مزدور، سینک، گھر کی عورتیں۔ سرکاری دکانیں دس گھنٹے کھلتی ہیں، گیارہ بجے دن سے نو بجے رات تک۔ اتوار کو بھی۔ اصل میں اتوار

को वह अपना जोड़ी नहीं मानता. इस में शक नहीं पीकिंग आज संसार का सब से साफ़ नगर है. कहीं काग़ज़ का एक टुकड़ा नहीं, कूड़े का एक तिनका नहीं, न सड़कों पर, न गलियों में, न फुटपाथों पर. निश्चय यह मानी हुई बात है. मैंने न्यूयार्क, लन्दन और पेरिस देखा है, मैं उन के बीच का फ़र्क़ जानता हूँ. न्यूयार्क की सड़कों पर बेइन्तहा कूड़ा पड़ा रहता है, उसके फुटपाथ लापरवाही से फेंके गये अख़बारों के पत्तों, टुकड़ों और बंडलों से ढके रहते हैं, उनके डस्ट बेन में टाईप राईटर से ले कर सड़े केले तक जैसी चीज़ें पड़ी सड़ती गंधाती रहती हैं. पीकिंग की सफ़ाई इतनी असाधारन है कि वहां जाने वालों पर उस का असर हुए बिना नहीं रहता चाहे जाने वाला कितना भी लापरवाह क्यों न हो. सुनो एक मज़ेदार क़िस्सा राजधानी पहुँचने के दूसरे दिन हम बस में कहीं जा रहे थे. जा रहे थे. हममें बहुत सारे सिगरेट पी रहे थे पर बस के भीतर उन्हें ऐशट्रे नहीं मिली. शीशे की तरह जैसी साफ़ सड़कों पर उन्हें सिगरेटों के टुकड़े फेंकने की हिम्मत न पड़ी. तब मैंने अपनी जेब से एक ख़ाली लिफ़ाफ़ा निकाला और उसमें सिगरेटों के टुकड़े भर लिये. मुझे याद है कि थूकदान में डालने के पहले मुझे उस पैकेट को क़रीब डेढ़ घंटा अपनी जेब में लिये रहना पड़ा.

यह सफ़ाई चीन की क़ौमी योजना का अंग बन गई है. इस तरह की सफ़ाई चीन के सभी नगरों में की गई है, पीकिंग में, मुकदन में, तिएन्सिन में, नानकिंग में, शंघाई और कानतोन में. गांव तक में इसी तरह की सफ़ाई की कोशिश जारी है. मनचूरिया के शहरों में मक्खी, मच्छड़ वग़ैरा नष्ट कर देने का आरोग्य योजना के अलावा भी एक मक़सद है. कीटाणु युद्ध को बेकार कर देने के लिये चीनियों ने उन जानवरों के ख़िलाफ़ ही रन ठान दिया है जो बीमारियां फैलाते हैं. इसी ख़याल से उन्होंने मक्खियां, मच्छड़, मकड़ियां, छिपकलियां, चूहे और रोगों के उन सभी कीटाणुओं को मार डाला है जो परिवार का सुख तबाह कर देते हैं. मासूम बच्चों, जवानों और बूढ़ों को ख़तरे में डाल देते हैं यह तो ख़ैर दुशमन के जानलेवा हथियारों के जवाब में अस्थाई प्रबन्ध है, पर जो बात चीनी जनता का स्वभाव बन कर उनके जीवन में बस जायगी [illegible] स्थाई सफ़ाई घरों, सड़कों, गलियों, बाज़ार, मछली [illegible] तक सफ़ाई की योजना का अंग बन गई हैं. [illegible] ख़ास कर नागरिकाओं की मदद से सफ़ाई की [illegible]याब हो रही है. यह सफ़ाई वहां की जनता [illegible] बन जाने से रोगों और मौत के नखर[illegible] का सफल मुक़ाबला करेगी.

[illegible] साल के अरसे में बहुत कुछ देखा है.

کو وہ اپنا جوڑی نہیں مانتا. اِس میں شک نہیں پیکنگ آج سنسار کا سب سے صاف نگر ہے. کہیں کاغذ کا ایک ٹکڑا نہیں، کوڑے کا ایک تنکا نہیں، نہ سڑکوں پر، نہ گلیوں میں، نہ فٹ پاتھوں پر. نشچے یہ مانی ہوئی بات ہے. میں نے نیویارک، لندن اور پیرس دیکھا ہے، میں اُن کے بیچ کا فرق جانتا ہوں. نیویارک کی سڑکوں پر بے اِنتہا کوڑا پڑا رہتا ہے، اُس کے فٹ پاتھ لاپرواہی سے پھینکے گئے اخباروں کے پتّوں، ٹکڑوں اور بنڈلوں سے ڈھکے رہتے ہیں، اُن کے ڈسٹ بن میں ٹائپ رائٹر سے لے کر سڑے کیلے تک جیسی چیزیں پڑی سڑتی گندھاتی رہتی ہیں. پیکنگ کی صفائی اِتنی اسادھارن ہے کہ وہاں جانے والوں پر اُس کا اثر ہوئے بنا نہیں رہتا چاہے جانے والا کتنا بھی لاپرواہ کیوں نہ ہو. سنو ایک مزے دار قصہ. راجدھانی پہونچنے کے دوسرے دن ہم بس میں کہیں جا رہے تھے. ہم میں بہت سارے سگریٹ پی رہے تھے پر بس کے بھیتر اُنہیں ایش ٹرے نہیں ملی. شیشے کی طرح جیسی صاف سڑکوں پر انہیں سگرٹوں کے ٹکڑے پھینکنے کی ہمت نہ پڑی. تب میں نے اپنی جیب سے ایک خالی لفافہ نکالا اور اُس میں سگرٹوں کے ٹکڑے بھر لئے. مجھے یاد ہے کہ تھوک دان میں ڈالنے کے پہلے مجھے اُس پیکٹ کو قریب ڈیڑھ گھنٹہ اپنی جیب میں لئے رہنا پڑا.

یہ صفائی چین کی قومی یوجنا کا انگ بن گئی ہے. اِس طرح کی صفائی چین کے سبھی نگروں میں کی گئی ہے، پیکنگ میں، مکدن میں، تینتسن میں، نانکنگ میں، شنگھائی اور کانتون میں. گاؤں تک میں اِسی طرح کی صفائی کی کوشش جاری ہے. منچوریا کے شہروں میں مکھی، مچھر وغیرہ نشٹ کر دینے کا آروگیہ یوجنا کے علاوہ بھی ایک مقصد ہے. کیٹانو یدھ کو بیکار کر دینے کے لئے چینیوں نے اُن جانوروں کے خلاف ہی رن ٹھان دیا ہے جو بیماریاں پھیلاتے ہیں. اِسی خیال سے اُنہوں نے مکھیاں، مچھر، مکڑیاں، چھپکلیاں، چوہے اور روگوں کے اُن سبھی کیٹانوؤں کو مار ڈالا ہے جو پریوار کا سکھ تباہ کر دیتے ہیں. معصوم بچوں، جوانوں اور بوڑھوں کو خطرے میں ڈال دیتے ہیں. یہ تو خیر دشمن کے جان لیوا ہتھیاروں کے جواب میں استھائی پربندھ ہے، پر جو بات چینی جنتا کا سوبھاؤ بن کر اُن کے جیون میں بس جائیگی وہ ہے استھائی صفائی. گھروں، سڑکوں، گلیوں، بازار، مچھلی کی دکانوں تک صفائی کی یوجنا کا انگ بن گئی ہیں. ناگرک اور خاص کر ناگرکاؤں کی مدد سے صفائی کی یہ یوجنا کامیاب ہو رہی ہے. یہ صفائی وہاں کی جنتا کے آچرن کا انگ بن جانے سے روگوں اور موت کے نظر نہ آنے والے سادھنوں کا سپھل مقابلہ کرے گی.

پیکنگ نے تین سال کے عرصے میں بہت کچھ دیکھا ہے.

क्योंकि उसे यह मंज़ूर न था कि हम बग़ैर अपने सवाल का जवाब पाए चले जाएं. वह हमें इशारों सकेतों से रोक कर तेज़ी से अन्दर गया और झट एक आदमी के साथ लौटा. यह तीसरा भी हमारी बात न समझ सका पर वह भी हमें जाने न देगा जब तक हमारे सवाल का जवाब न मिल जाय. वह भी अन्दर चला गया और एक आदमी को लिये लौटा. समस्या हल हो गई. यह टूटी फूटी अंगरेज़ी बोल लेता था. उन्होंने हमें रोक रखने के लिये बार बार माफ़ी मांगी और अंगरेज़ी जानने वाले ने ठीक ठीक 'शान्ति होटल' की राह बता दी. वह ख़ुद हमारे साथ चला और हमारे बहुत इसरार करने पर लौटा. ग़ज़ब का इख़लाक़ है इन चीनियों का !

शान्ति होटल घनी आबादी के बीच ऊंचे मकानों के पीछे खड़ा है. अचरज की इमारत है. ग़ज़ब की ख़ूबसूरत, हलकी फुलकी, ईंट, कंकरीट और धातु की बनी बिलकुल 'माडर्न,' पुख़्ता और ठोस. आठ मंज़िल ऊंची, बीस बराबर बराबर चौड़ी खिड़कियां, आज की ज़रूरतों से लैस. नीचे की मंज़िल की बैठक तबियत के मुताबिक़ जहां से दिल को हरने वाले मनज़र सामने दिखाई पड़ते. उसके पर्दे, उसका रंग और शकल, बड़ी बड़ी मौलिक तसवीरें सभी उसकी ख़ूबसूरती के सबूत हैं.

हमने कनाडा के प्रतिनिधि मिस्टर और मिसेज़ गार्डनर से मिलना चाहा. उनसे चीनी दीवार के ऊपर पहले हम मिल चुके थे. उनको ख़बर कर हम ऊपर गए. पति पत्नी दोनों तपाक से मिले. कमरा बड़ा सुन्दर था, उसका फ़रनीचर आकर्षक. दीवार पर तान हुआंग के भित्ति चित्र की एक नक़ल टंग रही थी, सरस्वती का मूल चित्र अजन्ता की नक़ल था. गार्डन परिवार ने हमें बताया कि उनका कमरा ठीक और कमरों का तरह है. फिर वह हमें होटल घुमाने ले चले. ऊपर और नीचे के भोजन करने वाले कमरे, कारीडर और बरामदे, छत और दफ़्तर सभी ख़ास ढंग से बने थे. शीशे, धातु और चीनी मिट्टी की बनी सभी चीज़ों पर अमन की फ़ाख़ता बनी थी चमचम, कांटे, छुरी, सुराही, प्लेट, सब पर, नेकपन, चादर, तौलिया तक. और यह समूची इमारत महज़ 75 रोज़ में खड़ी हो गई थी. पीकिंग के मज़दूरों ने उसे चीन के आज के मेहमानों, शान्ति सम्मेलन के प्रतिनिधियों के लिये तैयार कर शान्ति सम्मेलन को भेंट कर दिया था.

कुछ साल पहले जो कुछ हमने पीकिंग के सम्बन्ध में पढ़ा था उससे आज का पीकिंग बिल्कुल दूसरा है. उस का नया जनम हुआ है, उसने जनम की वेदना सही है और आज संसार के सब से साफ़ नगर तक

کیونکہ اُسے یہ منظور نہ تھا کہ ہم بغیر اپنے سوال کا جواب پائے چلے جائیں. وہ ہمیں اِشاروں سنکیتوں سے روک کر تیزی سے اندر گیا اور جھٹ ایک آدمی کے ساتھ لوٹا . یہ تیسرا بھی ہماری بات نہ سمجھ سکا پر وہ بھی ہمیں جانے نہ دے گا جب تک ہمارے سوال کا جواب نہ مل جائے . وہ بھی اندر چلا گیا اور ایک آدمی کو لئے لوٹا . سمسیا حل ہو گئی . یہ ٹوٹی پھوٹی انگریزی بول لیتا تھا . انہوں نے ہمیں روک رکھنے کے لئے بار بار معافی مانگی اور انگریزی جاننے والے نے ٹھیک ٹھیک ' شانتی ہوٹل ' کی راہ بتا دی . وہ خود ہمارے ساتھ چلا اور ہمارے بہت اصرار کرنے پر لوٹا . غضب کا اِخلاق ہے اِن چینیوں کا !

شانتی ہوٹل گھنی آبادی کے بیچ اونچے مکانوں کے پیچھے کھڑا ہے . اچرج کی عمارت ہے . غضب کی خوبصورت ہلکی پھلکی، اینٹ، کنکریٹ اور دھاتو کی بنی بالکل ' ماڈرن ' پختہ اور ٹھوس . آٹھ منزل اونچی، بیس برابر برابر چوڑی کھڑکیاں، آج کی ضرورتوں سے لیس . نیچے کی منزل کی بیٹھک طبیعت کے مطابق جہاں سے دل کو ہرنے والے منظر سامنے دکھائی پڑتے . اس کے پردے، اس کا رنگ اور شکل، بڑی بڑی مولک تصویریں سبھی اس کی خوبصورتی کے ثبوت ہیں .

ہم نے کناڈا کے پرتی ندھی مسٹر اور مسز گارڈنر سے ملنا چاہا . اُن سے چینی دیوار کے اوپر پہلے ہم مل چکے تھے . اُن کو خبر کر ہم اوپر گئے . پتی پتنی دونوں تپاک سے ملے. کمرہ بڑا سندر تھا، اس کا فرنیچر آکرشک . دیوار پر تان ہوانگ کے بھتی چتر کی ایک نقل ٹنگ رہی تھی، سرسوتی مول کا چتر اجنتا کی نقل تھا . گارڈنر پریوار نے ہمیں بتایا کہ اُن کا کمرہ ٹھیک اور کمروں کی طرح ہے . پھر وہ ہمیں ہوٹل گھمانے لے چلے . اوپر اور نیچے کے بھوجن کرنے والے کمرے، کاریڈر اور برآمدے، چھت اور دفتر سبھی خاص ڈھنگ سے بنے تھے . شیشے، دھات اور چینی مٹی کی بنی سبھی چیزوں پر امن کی فاختہ بنی تھی چمچے، کانٹے، چھری، صراحی، پلیٹ، سب پر، نیپکن، چادر، تولیہ تک . اور یہ سموچی عمارت محض 75 روز میں کھڑی ہو گئی تھی . پیکنگ کے مزدوروں نے اسے چین کے آج کے مہمانوں، شانتی سمیلن کے پرتی ندھیوں کے لئے تیار کر شانتی سمیلن کو بھینٹ کر دیا تھا .

کچھ سال پہلے جو کچھ ہم نے پیکنگ کے سمبندھ میں پڑھا تھا اس سے آج کا پیکنگ بالکل دوسرا ہے . اس کا نیا جنم ہوا ہے، اس نے جنم کی ویدنا سہی ہے اور آج سنسار کے سب سے صاف نگر تک

एक शब्द, 'होपिंग' के समझ न सका. होपिंग का अर्थ 'शान्ति' मैं जानता था और मुझे लगा, वह पूछ रही है कि क्या मैं शान्ति सम्मेलन में आया हूँ. मेरे 'हां' कहने पर वह और पास आ गई. कुछ लोग तब तक मुझे घेर कर खड़े हो गए थे. सभी मुसकरा रहे थे, कुछ उत्सुक थे. मेरा हाथ पकड़ कर उसने कुछ कहा जिसमें 'होपिंग' लफ़्ज़ बार बार आया. उसका उच्चारन करते समय उसने वहां खड़े नर-नारियों में से हर एक की तरफ़ इशारा किया जिससे मैंने जाना कि वह कहना चाहती है कि वह और सभी शान्ति के प्रेमी हैं. मैं जानता हूँ वह सभी शान्ति के प्रेमी हैं.

धीरे से किसी ने कहा, 'होपिंग वांगसे !' 'शान्ति चिरन्जीवी हो !' जो पास से गुज़र रहे थे उन्होंने भी नारा लगाया. मैंने भी उन गंभीर शब्दों को दोहराया. फिर उस महिला से छुट्टी ली, उसके बच्चों से हाथ मिलाया और पास के लोगों से बिदा ले कर नये चीन से प्रभावित लौट पड़ा.

और 'वह' कहते हैं कि चीन शान्ति नहीं चाहता, कि चीन की शान्ति की चर्चा लोगों को बेवक़ूफ़ बना कर वक़्त हासिल करने के लिये है, कि चीन की कानफ़रेन्सें कमयुनिस्टों फ़रेब हैं, कि चीन की जनता द्वारा संगठित शान्ति के मोर्चे केवल सरकारी ज़बर्दस्ती हैं. कितना सफ़ेद झूट है यह ! जो ऐसी बेतुकी बातें कहते हैं उनको समझ लेना चाहिये कि इतना आडम्बर, सरकारी ज़बर्दस्ती का इतना संगठित दिखावा अगर सचमुच दिखावा ही है तब भी वह स्वाभाविक ही रहेगा. पुलिस या सरकार दिलों में जोश नहीं भर सकती. कम से कम चीनी जनता के शान्ति पसन्द होने में मुझे कोई शक नहीं. मैं यह बात बग़ैर कोई रंग चढ़ाये तुम्हें बताता हूं—कोई पिता अपनी बेटी की बातें रंग कर नहीं बताता. चीनी सचमुच शान्ति चाहते हैं, कि उनके भीतर उसकी आवाज़ बाहर की गरजती तोपों से कहीं ऊंची है, कि वह आवाज़ तोपों की गरज को चुप कर देगी.

एक सांझ डाक्टर अलीम, अमृत और मैं घूमने निकले. वैसे ही, बग़ैर किसी मक़सद के. सड़क चमक रही थी. उसका आकर्षन हमें खींच ले चला. मशहूर 'शान्ति होटल' की सुधि आई तो हम उधर ही को चल पड़े. राह मालूम न थी और न आशा थी कि किसी से पूछते. पर हम चलते गए और मोड़ पर बायें घूम पड़े. एक ऊंची इमारत के सामने दो आदमी बात कर रहे थे. हमने उनसे 'शान्ति होटल' की राह अंगरेज़ी में पूछी. वह कुछ समझ न सके पर उनमें से एक ने हमको भीतर चलने को कहा. हम उसे धन्यवाद दे कर आगे बढ़े. पर उसने राह रोक ली

ایک شبد 'ہوپنگ' کے سمجھ نہ سکا ۔ ہوپنگ کا ارتھ 'شانتی' میں جانتا تھا اور مجھے لگا' وہ پوچھ رہی ہے کہ کیا میں شانتی سمیلن میں آیا ہوں ۔ میرے 'ہاں' کہنے پر وہ اور پاس آ گئی ۔ کچھ لوگ تب تک مجھے گھیر کر کھڑے ہوگئے تھے ۔ سبھی مسکرا رہے تھے' کچھ اُتسک تھے ۔ میرا ہاتھ پکڑ کر اُس نے کچھ کہا جس میں 'ہوپنگ' لفظ بار بار آیا ۔ اُس کا اُچارن کرتے سمے اُس نے وہاں کھڑے نرناریوں میں سے ہر ایک کی طرف اِشارہ کیا جس سے میں نے جانا کہ وہ کہنا چاہتی ہے کہ وہ اور سبھی شانتی کے پریمی ہیں ۔ میں جانتا ہوں وہ سبھی شانتی کے پریمی ہیں ۔

دھیرے سے کسی نے کہا' 'ہوپنگ وانگسے !' 'شانتی چرنجیوی ہو !' جو پاس سے گذر رہے تھے اُنہوں نے بھی نعرہ لگایا ۔ میں نے بھی اُن گمبھیر شبدوں کو دوہرایا ۔ پھر اُس مہیلا سے چھٹی لی' اُس کے بچوں سے ہاتھ ملایا اور پاس کے لوگوں سے بدا لے کر نئے چین سے پربھاوت لوٹ پڑا ۔

اور وہ کہتے ہیں کہ چین شانتی نہیں چاہتا' کہ چین کی شانتی کی چرچا لوگوں کو بیوقوف بنا کر وقت حاصل کرنے کے لئے ہے' کہ چین کی کانفرنسیں کمیونسٹی فریب ہیں' کہ چین کی جنتا دوارا سنگٹھت شانتی کے مورچے کیول سرکاری زبردستی ہیں ۔ کتنا سفید جھوٹ ہے یہ ! جو ایسی بے تکی باتیں کہتے ہیں اُن کو سمجھ لینا چاہئے کہ اِتنا آڈمبر' سرکاری زبردستی کا اِتنا سنگٹھت دکھاوا اگر سچ مچ دکھاوا ہی ہے تب بھی وہ سوابھاوک ہی رہے گا ۔ پولیس یا سرکار دلوں میں جوش نہیں بھر سکتیں ۔ کم سے کم چینی جنتا کے شانتی پسند ہونے میں مجھے کوئی شک نہیں ۔ میں یہ بات بغیر کوئی رنگ چڑھائے تمہیں بتاتا ہوں—کوئی پتا اپنی بیٹی کی باتیں رنگ کر نہیں بتاتا ۔ چینی سچ مچ شانتی چاہتے ہیں' کہ اُن کے بھیتر اُسکی آواز باہر کی گرجتی توپوں سے کہیں اونچی ہے' کہ وہ آواز توپوں کی گرج کو چپ کر دے گی ۔

ایک سانجھ ڈاکٹر علیم' امرت اور میں گھومنے نکلے ۔ ویسے ہی' بغیر کسی مقصد کے ۔ سڑک چمک رہی تھی ۔ اُس کا آکرشن ہمیں کھینچ لے چلا ۔ مشہور شانتی ہوٹل کی سدھ آئی تو ہم اُدھر ہی کو چل پڑے ۔ راہ معلوم نہ تھی اور نہ آشا تھی کہ کسی سے پوچھتے ۔ پر ہم چلتے گئے اور موڑ پر بائیں گھوم پڑے ۔ ایک اونچی عمارت کے سامنے دو آدمی بات کر رہے تھے ۔ ہم نے اُن سے 'شانتی ہوٹل' کی راہ انگریزی میں پوچھی ۔ کچھ سمجھ نہ سکے پر اُن میں سے ایک نے ہم کو بھیتر چلنے کو کہا ۔ ہم اُسے دھنیہواد دے کر آگے بڑھے ۔ پر اُس نے راہ روک لی

पाक है. मिनट भर को रिम झिम हुई थी, सूरज डूब रहा था. मैं उधर निकल गया था. पार्क लोगों से भरा था. लोग घास पर बैठे जहां तहां बात कर रहे थे. औरतें सुखी बच्चों को दुलार रही थीं. तन्दुरुस्त ताजे बच्चे चिड़ियों की तरह चहक रहे थे. मैं भी वहीं सांझ की नमी और ओस में खड़ा आसमान को देख रहा था। आसमान, रूई के फैले पोले पर पोले फाड़ता चला जा रहा था.

रात हलके हलके आसमान पर छा चली थी. भीड़ छोटे छोटे दलों में आती और चली जाती. एकाध आदमी पास आते, मुझे चुपचाप देखते, हलके से मुस्करा देते, चले जाते. चुपचाप मैं वह दृश्य देख रहा था और रात तारा तारा गहरी होती जाती थी. चांद, जो केवल आधा खिला था, रूई के बिखरे खेतों पर सरकता जा रहा था. किसी ने मुझे छू लिया. मैं ज़मीन को लौटा.

स्पर्श भौतिक न था. सिर्फ कुछ बच्चे पास खड़े हो मुझे देखने लगे थे. बढ़ते हुए सन्नाटे में किसी के करीब आ जाने से वातावरन जैसे ज़रा बोझिल हो जाता है वैसे ही बोझिल वातावरन की चेतना ने मुझे सचेत कर दिया. सन्नाटा नहीं था. क्योंकि इधर उधर भीड़ अभी खासी थी. बच्चे तीन थे, कोई चार और छै साल के बीच के. उनकी मां भी पास ही खड़ी चुपचाप देख रही थी. मैंने झट परिस्थिति के मुताबिक़ आचरन किया. मुंह से हल्की सीटी बजाई और दो के हाथ थाम लिये. तीसरा लजा कर परे हट गया. यह दोनों भी शरमीले ही थे. पर वह अपनी जगह खड़े रहे. वैसे ही उनकी मां भी पहले की सी ही खड़ी रही. मेरे पास कुछ चाकलेट और टाफ़ी थीं जिन्हें मैंने उन्हें देना चाहा. पर वह लेने को राज़ी न हुए और न उन्होंने लिया. बड़े ने पहले तो अपने फ़्राक की जेब में बार बार हाथ मारा फिर वह मां के पास दौड़ गया, उसका बटुआ खोला और उसे मेरी तरफ़ खींचने लगा. मां मुस्कराती हुई और पास सरक आई. बच्चे ने बटुए की डोरी खींच ली थी. उसका मुँह खोल कर कर मुझे दिखलाने लगा—उसमें टाफ़ी और मिठाइयां थीं जाना, उन्हें इन चीजों की कमी नहीं एक जो भाग गई थी वह भी पास आ गई और अपनी झुकी मां की छाती में सिर घुसाने लगी.

वह भी बटुए की डोरी खींचने लगी. मां ने उसे टाफ़ी दे कर शान्त किया. मां सुघड़ थी, कोमल, खुश. कुछ टाफ़ी उसने मेरी तरफ़ बढ़ाईं. मैंने उसकी बात रखने के लिये एक ले ली. वह खुशी से लाल हो गई. उसका चेहरा खिल उठा. उसने पूछा—'इन्दुआ ?' 'हां, इंडियन,' और तब यह सोच कर कि शायद इन्दुआ का मतलब हिन्दू से है, मैंने कहा, 'हिन्दू'. फिर उसने कुछ कहा जो मैं सिवाय

پارک ہے. منٹ بھر کو رم جھم ہوئی تھی' سورج ڈوب رہا تھا. میں اُدھر نکل گیا تھا. پارک لوگوں سے بھرا تھا. لوگ گھاس پر بیٹھے جہاں تہاں بات کر رہے تھے. عورتیں سکھی بچوں کو دلار رہی تھیں. تندرست تازہ بچے چڑیوں کی طرح چہک رہے تھے. میں بھی وہیں سانجھ کی نمی اور اوس میں کھڑا آسمان کو دیکھ رہا تھا. آسمان روئی کے پھیلے پولے پر پولے پھاڑتا چلا جا رہا تھا.

رات ہلکے ہلکے آسمان پر چھا چلی تھی. بھیڑ چھوٹے چھوٹے دلوں میں آتی اور چلی جاتی. ایک آدھ آدمی پاس آتے' مجھے چپ چاپ دیکھتے' ہلکے سے مسکرا دیتے' چلے جاتے. چپ چاپ میں وہ درشیہ دیکھ رہا تھا اور رات تارا تارا گہری ہوتی جاتی تھی. چاند' جو کیول آدھا کھلا تھا' روئی کے بکھرتے کھیتوں پر سرکتا جا رہا تھا. کسی نے مجھے چھو لیا. میں زمین کو لوٹا.

اسپرش بھوتک نہ تھا. صرف کچھ بچے پاس کھڑے ہو مجھے دیکھنے لگے تھے. بڑھتے ہوئے سناٹے میں کسی کے قریب آ جانے سے واتاورن جیسے ذرا بوجھل ہو جاتا ہے ویسے ہی بوجھل واتاورن کی چیتنا نے مجھے سچیت کر دیا. سناٹا نہیں تھا. کیونکہ اِدھر اُدھر بھیڑ ابھی خاصی تھی. بچے تین تھے' کوئی چار اور چھ سال کے بیچ کے. اُن کی ماں بھی پاس ہی کھڑی چپ چاپ دیکھ رہی تھی. میں نے جھٹ پرستھتی کے مطابق آچرن کیا. منہ سے ہلکی سیٹی بجائی اور دو کے ہاتھ تھام لئے. تیسرا لجا کر پرے ہٹ گیا. یہ دونوں بھی شرمیلے ہی تھے پر وہ اپنی جگہ کھڑے رہے. ویسے ہی اُن کی ماں بھی پہلے کی سی ہی کھڑی رہی. میرے پاس کچھ چاکلیٹ اور ٹافی تھیں جنہیں میں نے انہیں دینا چاہا. پر وے لینے کو راضی نہ ہوئے اور نہ انہوں نے لیا. بڑے نے پہلے تو اپنے فراک کی جیب میں بار بار ہاتھ مارا پھر وہ ماں کے پاس دوڑ گیا' اُس کا بٹوا کھولا اور میری طرف کھینچنے لگا. ماں مسکراتی ہوئی اور پاس سرک آئی. بچے نے بٹوے کی ڈوری کھینچ لی تھی. اُس کا منہ کھول کر مجھے دکھانے لگا. اُس میں ٹافی اور مٹھائیاں تھیں. جانا انہیں اِن چیزوں کی کمی نہیں. ایک جو بھاگ گئی تھی وہ بھی پاس آ گئی اور اپنی جھکی ماں کی چھاتی میں سر گھسانے لگی.

وہ بھی بٹوے کی ڈوری کھینچنے لگی. ماں نے اسے ٹافی دے کر شانت کیا. ماں سگھڑ تھی' کومل' خوش. کچھ ٹافی اُس نے میری طرف بڑھائیں. میں نے اُسکی بات رکھنے کے لئے ایک لے لی. وہ خوشی سے لال ہو گئی. اُس کا چہرہ کھل اُٹھا. اُس نے پوچھا—' اندوآ ؟ ' 'ہاں' انڈین' اور تب یہ سوچ کر کہ شاید اِندوآ کا مطلب ہندو ہے' میں نے کہا' 'ہندو' پھر اُس نے کچھ کہا جو میں سوائے

पीकिंग से......

[डाक्टर भगवत शरन उपाध्याय एशियाई शान्ति सम्मेलन में भाग लेने के लिये अकतूबर 1952 में चीन गए थे. वहां जा कर उन्होंने जो कुछ देखा उसकी जानकारी खतों के ज़रिये बराबर अपने साथियों को देते रहे. उन्हीं में से एक खत हम नीचे दे रहे हैं. आशा है पाठकों को नये चीन के बारे में इससे काफ़ी जानकारी मिलेगी—एडीटर]

प्रिया,

बहुत नाराज़ होगी. तुम्हें लिखा नहीं, अगरचे लिखता रहा हूं. और वह भी छोटी नहीं, खासी लम्बी चिट्ठियां. नये चीन की बाबत इतना लिखना जो है. उस चीन की बाबत जिसने अपनी बेड़ियां तोड़ दी हैं. यहां सचमुच एक नया संसार खड़ा हो गया है. नये जीवन की हिलोरें चारों तरफ़ दिखाई देती हैं. जीवन जो गतिमान है, कर्मठ है, मशक्क़त करता है, हंसता है.

चीन के बारे में कुछ विचार तो रखती ही होगी. हम सबके कुछ न कुछ हैं. कुछ पहले खुद मेरे ही उस दिशा में अपने विचार थे. निहायत सुस्ती के, गतिहीन, सपनों से भरे जीवन के. ऐसे जीवन के जो युद्ध पतियों और गांव के ज़ालिम ज़मींदारों के लाभ के लिये श्रम कर कर के पसीने से तरबतर था. जीवन जो अधिक कंगाल था, बिलकुल शोषित था. मादक अफ़ीम से झुका हुआ, अकड़ा सिर, खुले होंट और इसमें शक नहीं हमारे यह विचार पीठ पर गट्ठर रखे पसीने में डूबे हिन्दुस्तान में घर घर फिरने वाले चीनी सौदागर से बने थे.

पर ऐसे विचार निहायत ग़लत होंगे. चीन अब वह चीन नहीं, बिलकुल दूसरा चीन है. एक नया आलम उठ खड़ा हुआ है, नई मानवता जाग गई है. चीन की ज़मीन वही है, वही उसका आसमान है पर दोनों के बीच की ज़िन्दगी बिलकुल बदल गई है. पहले से बिलकुल भिन्न है। पहले की ही तरह मौसम के बाद मौसम बदलते हैं, पहले की ही तरह हलवाहा हल चलाता है, किसान पके खेत काटता है पर फ़सल का अनाज अब गिरता उसकी बखार में है, मालिक की बखार में नहीं. सब बातें बदल गई हैं.

पीकिंग भी बदल गया है. महान नगर की मंज़िलें वही हैं, पुरानी शालीनां दीवारें, लुभावनी झीलें, पार्क, महल, गढ़, बुर्जियां भी पहले की तरह ही जादू जगा रही हैं. खास सड़कों के पीछे गलियों में शान्ति विराज रही है, चिड़ियों के कलरव वही हैं, वैसे ही पेड़ों की सनसनाहट है, वैसी ही बच्चों की आवाज़ें, पर पीकिंग फिर भी वह नहीं है. पहले से बिलकुल मुख़तलिफ़ है.

अभी टहल कर लौटा हूं. मामूली बेमक़सद चक्कर भी इस महान परिवर्तन को अनुभव करता है. पीकिंग होटल के पास ही उधर, बाएं, सड़क के पार एक खुला

پیکنگ سے......

[ڈاکٹر بھگوت شرن اُپادھیائے ایشیائی سمیلن میں بھاگ لینے کے لئے اکتوبر 1952 میں چین گئے تھے۔ وہاں جا کر اُنہوں نے جو کچھ دیکھا اُسکی جانکاری خطوں کے ذریعے برابر اپنے ساتھیوں کو دیتے رہے۔ اُنہیں میں سے ایک خط ہم نیچے دے رہے ہیں ۔ آشا ہے پاٹھکوں کو نئے چین کے بارے اِس سے کافی جانکاری ملیگی—ایڈیٹر]

پریا'

بہت ناراض ہوگی ۔ تمہیں لکھا نہیں' اگرچہ لکھتا رہا ہوں ۔ اور وہ بھی چھوٹی نہیں' خاصی لمبی چٹھیاں۔ نئے چین کی بابت اِتنا لکھنا جو ہے۔ اُس چین کی بابت جس نے اپنی بیڑیاں توڑ دی ہیں ۔ یہاں سچ مچ ایک نیا سنسار کھڑا ہو گیا ہے ۔ نئے جیون کی ہلوریں چاروں طرف دکھائی دیتی ہیں ۔ جیون جو گتی مان ہے' کرمٹھ ہے' مشقت کرتا ہے' ہنستا ہے ۔

چین کے بارے میں کچھ وچار تو رکھتی ہی ہوگی ۔ ہم سب کے کچھ نہ کچھ ہیں ۔ کچھ پہلے خود میرے ہی اُس دشا میں اپنے وچار تھے ۔ نہایت سستی کے ۔ گتی ہین' سپنوں سے بھرے جیون کے ۔ ایسے جیون کے جو یدھ پتیوں اور گاؤں کے ظالم زمینداروں کے لابھ کے لئے شرم کر کر کے پسینے سے تر بتر تھا ۔ جیون جو ادھک کنگال تھا' بالکل شوشت تھا ۔ مادک افیم سے جھکا ہوا' اکڑا سر' کھلے ہونٹ ۔ اور اس میں شک نہیں ہمارے یہ وچار پیٹھ پر گٹھر رکھے پسینے میں ڈوبے ہندستان میں گھر گھر پھرنے والے چینی سوداگر سے بنے تھے ۔

پر ایسے وچار نہایت غلط ہونگے ۔ چین اب وہ چین نہیں' بالکل دوسرا چین ہے ۔ ایک نیا عالم اُٹھ کھڑا ہوا ہے' نئی مانوتا جاگ گئی ہے ۔ چین کی زمین وہی ہے' وہی اُس کا آسمان ہے پر دونوں کے بیچ کی زندگی بالکل بدل گئی ہے' پہلے سے بالکل بھن ہے ۔ پہلے کی ہی طرح موسم کے بعد موسم بدلتے ہیں' پہلے کی ہی طرح ہلواہا ہل چلاتا ہے' کسان پکے کھیت کاٹتا ہے ۔ پر فصل کا اناج اب گرتا اُس کی بکھار میں ہے' مالک کی بکھار میں نہیں ۔ سب باتیں بدل گئی ہیں ۔

پیکنگ بھی بدل گیا ہے ۔ مہان نگر کی منزلیں وہی ہیں' پرانی شالین دیواریں' لبھاونی جھیلیں' پارک' محل' گڑھ' برجیاں بھی پہلے کی طرح ہی جادو جگا رہی ہیں۔ خاص سڑکوں کے پیچھے گلیوں میں شانتی براج رہی ہے' چڑیوں کے کلرو وہی ہیں' ویسے ہی پیڑوں کی سنسناہٹ ہے' ویسی ہی بچوں کی آوازیں' پر پیکنگ پھر بھی وہ نہیں ہے ۔ پہلے سے بالکل مختلف ہے ۔

ابھی ٹہل کر لوٹا ہوں ۔ معمولی بے مقصد چکر بھی اِس مہان پریورتن کو انوبھو کرتا ہے ۔ پیکنگ ہوٹل کے پاس ہی اُدھر' بائیں' سڑک کے پار ایک کھلا

हंगरी का भूमि सुधार

कोआपरेटिव का सारा काम किसानों को खुद करना जरूरी है. कोआपरेटिव खोलने से पहले कुछ शरतों की पूर्ति करनी पड़ती है. इन शरतों में सब से जरूरी शर्त यह है कि हर किसान अपनी मरजी के माफ़िक़ कोआपरेटिव में शामिल हो और किसी दबाव या डर के कारन सहयोग न दे इस बात को बहुत अहमियत दी जाती है और कोआपरेटिव का लाइसन्स देने से पहले अधिकारी इस बात की काफ़ी जांच परताल करते हैं. कोआपरेटिव में शामिल होने वाले हर किसान को अधिकार है कि अगर वह चाहे तो तीन साल के बाद अपनी ज़मीन अलग कर ले और जिस तरह से चाहे उसका इस्तेमाल करे.

खेती बारी के काम आने वाले जानवरों की तादाद हंगरी में बहुत कम हो गई थी बहुत से जानवर तो विदेशी फ़ौजें मार कर खा गई थीं और जब वह हंगरी से भाग रही थीं तो अपने साथ बड़ी तादाद हंका कर भी लेती गईं इस कारन से किसानों को बड़ी दिक़्क़त हो गई थी लेकिन उन्होंने ज़मीन पा लेने के बाद पशु पालन पर ध्यान दिया और थोड़े अरसे में पशुओं की तादाद बढ़ाली. नीचे के टेबिल से उनकी तरक़्क़ी का पता चलता है.

क़िस्म	1945 में तादाद	1949 में तादाद
गाय बैल	1,069,000	2,306,457
घोड़े	329,026	750,000
सूअर	1,113,517	3,382,000
भेड़	328,467	760,800

1942 में जितने जानवर हंगरी में थे उन से 1949 में तादाद कम है लेकिन अगर रफ़तार यही रही तो 1954 तक जानवरों की तादाद में भारी बढ़ौती हो जायगी.

सदियों के बाद हंगरी के किसान का सपना सच हुआ है. वह पैदावार बढ़ाने की धुन में लगा हुआ है. कल तक जो देश ग़रीब था आज वहां ख़ुशहाली है. हंगरी और ऐसे ही देशों की और मिसालें यह सिद्ध कर देती हैं कि ग़रीबी तक़दीर के कारन नहीं हैं बल्कि माली व्यवस्था की ख़राबी के कारन ही कोई ग़रीब है और कोई अमीर !

ہنگری کا بھومی سدھار

کوآپریٹیو کا سارا کام کسانوں کو خود کرنا ضروری ہے ۔ کوآپریٹیو کھولنے سے پہلے کچھ شرطوں کی پورتی کرنی پڑتی ہے ۔ ان شرطوں میں سب سے ضروری شرط یہ ہے کہ ہر کسان اپنی مرضی کے موافق کوآپریٹیو میں شامل ہو اور کسی دباؤ یا ڈر کے کارن سہیوگ نہ دے ۔ اس بات کو بہت اہمیت دی جاتی ہے اور کوآپریٹیو کا لائسنس دینے سے پہلے ادھیکاری اس بات کی کافی جانچ پرتال کرتے ہیں ۔ کوآپریٹیو میں شامل ہونے والے ہر کسان کو ادھیکار ہے کہ اگر وہ چاہے تو تین سال کے بعد اپنی زمین الگ کر لے اور جس طرح سے چاہے اس کا استعمال کرے ۔

کھیتی باڑی کے کام آنے والے جانوروں کی تعداد ہنگری میں بہت کم ہو گئی تھی ۔ بہت سے جانور تو ودیشی فوجیں مار کر کھا گئیں تھیں اور جب وہ ہنگری سے بھاگ رہی تھیں تو اپنے ساتھ بڑی تعداد ہنکا کر بھی لیتی گئیں ۔ اس کارن سے کسانوں کو بڑی دقت ہو گئی تھی لیکن انہوں نے زمین پا لینے کے بعد پشوپالن پر دھیان دیا اور تھوڑے عرصے میں پشوؤں کی تعداد بڑھا لی ۔ نیچے کے ٹیبل سے ان کی ترقی کا پتہ چلتا ہے :

قسم	1945 میں تعداد	1949 میں تعداد
گائے بیل	1,069,000	2,306,457
گھوڑے	329,026	750,000
سؤر	1,113,517	3,382,000
بھیڑ	328,467	760,800

1942 میں جتنے جانور ہنگری میں تھے ان سے 1949 میں تعداد کم ہے لیکن اگر رفتار یہی رہی تو 1954 تک جانوروں کی تعداد میں بھاری بڑھوتی ہو جائے گی ۔

صدیوں کے بعد ہنگری کے کسان کا سپنا سچ ہوا ہے ۔ وہ پیداوار بڑھانے کی دھن میں لگا ہوا ہے ۔ کل تک جو دیش غریب تھا آج وہاں خوشحالی ہے ۔ ہنگری اور ایسے ہی دیشوں کی اور مثالیں یہ سدھ کر دیتی ہیں کہ غریبی تقدیر کے کارن نہیں ہے بلکہ مالی ویوستھا کی خرابی کے کارن ہی کوئی غریب ہے اور کوئی امیر !

छोटे छोटे ताल्लुकेदारों की पूरी ज़मीन ज़ब्त नहीं की गई. जिनके पास 1400 एकड़ ज़मीन थी उन्हें 140 एकड़ ज़मीन पर क़ब्ज़ा रखने की इजाज़त दी गई. गिरजों के पास भी ज़मीन छोड़ दी गई. कुछ गिरजों के क़ब्ज़े में 300 एकड़ ज़मीन रह गई और कुछ के पास 15 एकड़.

इस बंटवारे से यह बात साफ़ हो जाती है कि सब लोगों की ज़रूरतों का ध्यान रखा गया है और किसी के साथ ज़ियादती नहीं की गई.

कोआपरेटिव

हंगरी में तीन प्रथा की खेती हो रही है: (1) किसान और उसका परिवार अपनी ज़मीन पर खेती करता है और किसी दूसरे किसान या परिवार को अपने साथ नहीं मिलाता. (2) बहुत से किसान और उनके परिवार मिल कर खेती करते हैं. यह प्रथा कोआपरेटिव प्रथा कहलाती है. (3) राज की तरफ़ से ऊंचे पैमाने पर खेती की जाती है. राज के पास हंगरी की ज़मीन का कुल 4·1 फ़ी सदी हिस्सा है.

कोआरेटिव प्रथा का चलन यहां अब बढ़ रहा है लेकिन अभी तक हंगरी की ज़मीन के कुल 3·2 फ़ी सदी हिस्से पर ही इस तरह की खेती होती है. इस समय यहां लगभग 510 कोआपरेटिव फ़ार्म खुल चुके हैं. तीन ढंग से किसान कोआरेटिव फ़ारम बनाते हैं: (1) कोआपरेटिव की एक यह प्रथा होती है कि दो या कई किसान अपने अपने जुताई के साधन एक साथ कर लेते हैं. यह लोग मिल कर हर किसान के खेत की जुताई करते हैं. हमारे यहां की यह पुरानी प्रथा है. इसे हम 'हूंडा'' की प्रथा कहते हैं. जुताई और बुआई के अलावा एक दूसरे की खेती से किसी दूसरे का कोई लगाव नहीं रहता. (2) दूसरे क़िस्म की कोआपरेटिव में सिर्फ़ बुआई जुताई तक ही सम्बन्ध नहीं रहता बल्कि किसान मिल कर मड़ाई भी करते हैं और जिसके खेत में जो जिन्स भी और जितनी भी पैदा होती है वह उसका मालिक होता है. दूसरे लोग कोई हिस्सा नहीं बटाते. (3) तीसरे क़िस्म की कोआपरेटिव वह है जिसमें खेत, बीज, जुताई के साधन और मेहनत सब खेती के ज़रूरी अंगों को एक साथ मिला लिया जाता है. सारे किसान मिल कर काम करते हैं. कोआपरेटिव को दे देने के बाद खेत व्यक्ति का नहीं रह जाता बल्कि सब साझेदारों का हो जाता है. फ़सल का बंटवारा दो आधार पर होता है : (1) जिस किसान ने कोआपरेटिव में जितने एकड़ ज़मीन दी है उस आधार पर उसका हिस्सा तय होता है. (2) हर व्यक्ति फ़ारम पर जितना काम करता है उस आधार पर भी उसको हिस्सा मिलता है.

چھوٹے چھوٹے تعلقہ‌داروں کی پوری زمین ضبط نہیں کی گئی. جن کے پاس 1400 ایکڑ زمین تھی انہیں 140 ایکڑ زمین پر قبضہ رکھنے کی اجازت دی گئی. گرجوں کے پاس بھی زمین چھوڑ دی گئی. کچھ گرجوں کے قبضے میں 300 ایکڑ زمین رہ گئی اور کچھ کے پاس 15 ایکڑ.

اس بٹوارے سے یہ بات صاف ہو جاتی ہے کہ سب لوگوں کی ضرورتوں کا دھیان رکھا گیا ہے اور کسی کے ساتھ زیادتی نہیں کی گئی.

کوآپریٹیو

ہنگری میں تین پرتھا کی کھیتی ہو رہی ہے: (1) کسان اور اس کا پریوار اپنی زمین پر کھیتی کرتا ہے اور کسی دوسرے کسان یا پریوار کو اپنے ساتھ نہیں ملاتا. (2) بہت سے کسان اور ان کے پریوار مل کر کھیتی کرتے ہیں. یہ پرتھا کوآپریٹیو پرتھا کہلاتی ہے. (3) راج کی طرف سے اونچے پیمانے پر کھیتی کی جاتی ہے. راج کے پاس ہنگری کی زمین کا کل 4·1 فی صدی حصہ ہے.

کوآپریٹیو پرتھا کا چلن یہاں اب بڑھ رہا ہے لیکن ابھی تک ہنگری کی زمین کے کل 3·2 فی صدی حصے پر ہی اس طرح کی کھیتی ہوتی ہے. اس سمے یہاں لگ بھگ 510 کوآپریٹیو فارم کھل چکے ہیں. تین ڈھنگ سے کسان کوآپریٹیو فارم بناتے ہیں: (1) کوآپریٹیو کی ایک یہ پرتھا ہوتی ہے کہ دو یا کئی کسان اپنے اپنے جوتائی کے سادھن ایک ساتھ کر لیتے ہیں. یہ لوگ مل کر ہر کسان کے کھیت کی جوتائی کرتے ہیں. ہمارے یہاں کی یہ پرانی پرتھا ہے. اسے ہم "ہونڈا" کی پرتھا کہتے ہیں. جوتائی اور بوائی کے علاوہ ایک دوسرے کی کھیتی سے کسی دوسرے کا کوئی لگاؤ نہیں رہتا. (2) دوسری قسم کی کوآپریٹیو میں صرف بوائی جوتائی تک ہی سمبندھ نہیں رہتا بلکہ کسان مل کر مڑائی بھی کرتے ہیں اور جس کے کھیت میں جو جنس بھی اور جتنی بھی پیدا ہوتی ہے وہ اس کا مالک ہوتا ہے. دوسرے لوگ کوئی حصہ نہیں بٹاتے. (3) تیسرے قسم کی کوآپریٹیو وہ ہے جس میں کھیت، بیج، جوتائی کے سادھن اور محنت سب کھیتی کے ضروری انگوں کو ایک ساتھ ملا لیا جاتا ہے. سارے کسان مل کر کام کرتے ہیں. کوآپریٹیو کو دے دینے کے بعد کھیت ویکتی کا نہیں رہ جاتا بلکہ سب ساجھے‌داروں کا ہو جاتا ہے. فصل کا بٹوارہ دو آدھار پر ہوتا ہے : (1) جس کسان نے کوآپریٹیو میں جتنے ایکڑ زمین دی ہے اس آدھار پر اس کا حصہ طے ہوتا ہے. (2) ہر ویکتی فارم پر جتنا کام کرتا ہے اس آدھار پر بھی اس کو حصہ ملتا ہے.

डिगरी पास करके इस कमेटी को हिदायत दी गई थी कि पूरी ज़मीन छोटे छोटे टुकड़ों में बांट दी जाय ज़मीन पर पहला हक़ उनका माना गया था जो लोग बड़े बड़े ताल्लुकों में नौकर के रूप में खेती करते थे. फिर उनका नम्बर था जिन के पास कोई खेत नहीं था. उसके बाद उन किसानों का हक़ था जिन के पास थोड़ी बहुत ज़मीन थी. उसके बाद उन खानदानों को ज़मीन दी गई थी जिनके पास खेत ज़रूर थे लेकिन खानदान बहुत बड़ा था. हर ऐसे खानदान में सब से बड़े लड़के को ज़मीन दी गई. शर्त यह थी कि उस लड़के का हिस्सा अपनी बपौती ज़मीन मिला कर 5 होल्ड से ज़ियादा न हो.

ज़मीन व्यक्ति के आधार पर भी बांटी गई है और परिवार के आधार पर भी. जो लोग किसी इलाक़े में ऐसे बच रहे जिन्हें ज़मीन नहीं मिल सकी उन्हें दूसरे इलाक़ों में ज़मीन दी गई और कोशिश की गई कि इन सब को एक साथ ज़मीन मिल जाय लेकिन हर एक प्लाट का अलग रखा गया.

नीचे के टेबिल से बंटवारे के हर पहलू की जानकारी मिलती है :

तादाद	नाम	ज़मीन की तादाद
109,875	फ़ारमों पर नौकरी करने वाले	1,300,000 एकड़
261,088	खेतिहर मज़दूर	1,820,000 एकड़
213,930	जिनके पास प्लाट थे	1,170,000 एकड़
32865	जिन किसानों के पास खेत थे	200,000 एकड़
22164	मज़दूर और व्योपारी	70,000 एकड़
2420	खेत पर काम करने वाले और जंगल के मज़दूर	30,000 एकड़
642,342	परिवारों ने	4,600,000 एकड़
—	चर्च	25,000 एकड़
—	चरागाहें	600,000 एकड़
—	स्टेट फ़ार्म	70,000 एकड़
—	जंगल जिन पर जनता का क़बज़ा है	2,060,000 एकड़
—	जनता के इस्तेमाल के लिये दूसरे प्लाट	550,000 एकड़

78 लाख 95 हज़ार एकड़ ज़मीन का बंटवारा किया गया जिसमें से आबादी और जंगलों को छोड़ कर खेती वाली ज़मीन 39 लाख 70 हज़ार एकड़ थी. ऊपर के टेबिल से पता चलता है कि खेती वाली ज़मीन का एक तिहाई हिस्सा उन 6 लाख 42 हज़ार तीन सौ बयालीस किसान परिवारों में बांटा गया जिन के पास खेत बिल्कुल नहीं थे और अगर किसी किसी के पास थे भी तो केवल नाम मात्र को. इस तरह हर खानदान को लगभग साढ़े सात एकड़ ज़मीन मिली.

ڈگری پاس کرکے اِس کمیٹی کو ہدایت دی گئی تھی کہ پوری زمین چھوٹے چھوٹے ٹکڑوں میں بانٹ دی جائے. زمین پر پہلا حق اُن کا مانا گیا تھا جو لوگ بڑے بڑے تعلقوں میں نوکر کے روپ میں کھیتی کرتے تھے. پھر اُن کا نمبر تھا جن کے پاس کوئی کھیت نہیں تھا. اُس کے بعد اُن کسانوں کا حق تھا جن کے پاس تھوڑی بہت زمین تھی. اُس کے بعد اُن خاندانوں کو زمین دی گئی تھی جن کے پاس کھیت ضرور تھے لیکن خاندان بہت بڑا تھا. ہر ایسے خاندان میں سب سے بڑے لڑکے کو زمین دی گئی. شرط یہ تھی کہ اُس لڑکے کا حصہ اپنی بپوتی زمین ملاکر 5 ہولڈ سے زیادہ نہ ہو.

زمین ویکتی کے آدھار پر بھی بانٹی گئی ہے اور پریوار کے آدھار پر بھی. جو لوگ کسی علاقے میں ایسے بچ رہے جنھیں زمین نہیں مل سکی اُنھیں دوسرے علاقوں میں زمین دی گئی اور کوشش کی گئی کہ ان سب کو ایک ساتھ زمین مل جائے لیکن ہر ایک کا پلاٹ الگ رکھا گیا.

نیچے کے ٹیبل سے بٹوارے کے ہر پہلو کی جانکاری ملتی ہے:

تعداد	نام	زمین کی تعداد
109,875	فارموں پر نوکری کرنے والے	1,300,000 ایکڑ
261,088	کھیتہر مزدور	1,820,000 ایکڑ
213,930	جن کے پاس پلاٹ تھے	1,170,000 ایکڑ
32865	جن کسانوں کے پاس کھیت تھے	200,000 ایکڑ
22164	مزدور اور بیوپاری	70,000 ایکڑ
2420	کھیت پر کام کرنے والے اور جنگل کے مزدور	30,000 ایکڑ
642,342	پریواروں نے	4,600,000 ایکڑ
—	چرچ	25000 ایکڑ
—	چراگاہیں	600,000 ایکڑ
—	اسٹیٹ فارم	70,000 ایکڑ
—	جنگل جن پر جنتا کا قبضہ ہے	2,060,000 ایکڑ
—	جنتا کے استعمال کے لئے دوسرے پلاٹ	550,000 ایکڑ

78 لاکھ 95 ہزار ایکڑ زمین کا بٹوارا کیا گیا جس میں سے آبادی اور جنگلوں کو چھوڑ کر کھیتی والی زمین 39 لاکھ 70 ہزار ایکڑ تھی. اوپر کے ٹیبل سے پتہ چلتا ہے کہ کھیتی والی زمین کا ایک تہائی حصہ اُن 6 لاکھ 42 ہزار تین سو بیالیس کسان پریواروں میں بانٹا گیا جن کے پاس کھیت بالکل نہیں تھے اور اگر کسی کسی کے پاس تھے بھی تو کیول نام ماتر کو. اِس طرح ہر خاندان کو لگ بھگ ساڑھے سات ایکڑ زمین ملی.

चार की फ़ौजें आ गई और आन्दोलन को फ़ौजी ताक़त से दबा दिया गया. कुछ किसानों को देश निकाला मिला और कुछ को क़बर में ज़मीन मिलने की आशा के साथ सुला दिया गया.

लेकिन अब किसान जाग गया था और ज़मीन हासिल करने की उसकी प्यास बढ़ गई थी. इसी कारन हंगरी की हर राजकाजी पारटी ने इस मांग को अपने प्रोग्राम में शामिल कर लिया था कि जोतने बोने वालों को ज़मीन मिले. बहुत से उथल पुथल हुए लेकिन किसानों का यह सपना सच न हो सका.

मार्च 1919 में कमयुनिस्ट पार्टी ने हंगरी में सोवियत रिपबलिक बनाई लेकिन साढ़े चार महीने के बाद विदेशी फ़ौजों ने आ कर इसका ख़ातमा कर दिया. इस समय बड़ी बड़ी रियासतों से ज़मीन छीनी ज़रूर गई लेकिन किसानों तक वह न पहुँच सकी. ज़मीन छीन कर उनमें पंचायती खेती करने की कोशिश की गई. इसका नतीजा यह हुआ कि किसान निराश हो गया और उसका साहस क़ायम न रहा. इस सोवियत रिपबलिक के ख़ातमे में यह भी एक बड़ा कारन था. बाद को हंगरी के इनक़िलाबी नेताओं ने इसे माना और दोबारा ताक़त हाथ में आने पर उन्होंने यह ग़लती फिर नहीं होने दी.

उम्मीद की पूर्ति

दूसरी लड़ाई में रूस ने हिटलर की फ़ौजों का अपने देश के बाहर भी पीछा किया. 1944–45 में रूसी फ़ौज ने हंगरी से हिटलर की फ़ौजों और उसके सहयोगियों को ख़तम कर दिया और हंगरी वहां की जनता के सुपुर्द कर दिया. हंगरी में जो सरकार बनी वह सब पारटियों की सरकार थी और कमयुनिस्ट पारटी उनमें से एक थी. इस सरकार ने 15 मार्च सन 1945 को एक डिगरी पास की जिसके अनुसार बड़ी बड़ी रियासतें तोड़ दी गईं और ज़मीन किसानों में बांट दी गई.

ज़मीन सुधार कैसे ?

बड़ी बड़ी रियासतों से ज़मीन छीन लेने के बाद यह सवाल खड़ा हुआ कि ज़मीन का बंटवारा कौन करे. इसका हल यह निकाला गया कि हर इन्तज़ामी इलाक़े की एक कमेटी बनाई गई और उसके सुपुर्द यह काम कर दिया गया. इस कमेटी के मेम्बर सरकार ने मुक़र्रर नहीं किये. उन सब की गिनती की गई जो उस इलाक़े में ज़मीन पाने के हक़दार थे. इन सबको हक़ था कि ज़मीन का बटवारा करने के लिये चुनाव कर के यह एक कमेटी बना लें. हर बीस वोट पर एक आदमी कमेटी में चुना जाता था. इस तरह से ख़ुद किसानों ने ही ज़मीन का बटवारा किया है.

زار کی فوجیں آگئیں اور آندولن کو فوجی طاقت سے دبا دیا گیا ۔ کچھ کسانوں کو دیش نکالا ملا اور کچھ کو قبر میں زمین ملنے کی آشا کے ساتھ سلا دیا گیا ۔

لیکن اب کسان جاگ گیا تھا اور زمین حاصل کرنے کی اس کی پیاس بڑھ گئی تھی ۔ اسی کارن ہنگری کی ہر راج کاجی پارٹی نے اس مانگ کو اپنے پروگرام میں شامل کر لیا تھا کہ جوتنے بونے والوں کو زمین ملے۔ بہت سے اتھل پتھل ہوئے لیکن کسانوں کا یہ سپنا سچ نہ ہوسکا۔

مارچ 1919 میں کمیونسٹ پارٹی نے ہنگری میں سوویت ریپبلک بنائی لیکن ساڑھے چار مہینے کے بعد ودیشی فوجوں نے آ کر اس کا خاتمہ کر دیا ۔ اس سمے بڑی بڑی ریاستوں سے زمین چھینی ضرور گئی لیکن کسانوں تک وہ نہ پہونچ سکی ۔ زمین چھین کر ان میں پنچایتی کھیتی کرنے کی کوشش کی گئی ۔ اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ کسان نراش ہوگیا اور اس کا ساہس قائم نہ رہا ۔ اس سوویت ریپبلک کے خاتمے میں یہ بھی ایک بڑا کارن تھا ۔ بعد کو ہنگری کے انقلابی نیتاؤں نے اسے مانا اور دوبارہ طاقت ہاتھ میں آنے پر انہوں نے یہ غلطی پھر نہیں ہونے دی ۔

امید کی پورتی

دوسری لڑائی میں روس نے ہٹلر کی فوجوں کا اپنے دیش کے باہر بھی پیچھا کیا ۔ 1944–45 میں روسی فوج نے ہنگری سے ہٹلر کی فوجوں اور اس کے سہیوگیوں کو ختم کر دیا اور ہنگری وہاں کی جنتا کے سپرد کر دیا۔ ہنگری میں جو سرکار بنی وہ سب پارٹیوں کی سرکار تھی اور کمیونسٹ پارٹی ان میں سے ایک تھی ۔ اس سرکار نے 15 مارچ سن 1945 کو ایک ڈگری پاس کی جس کے انوسار بڑی بڑی ریاستیں توڑ دی گئیں اور زمین کسانوں میں بانٹ دی گئی ۔

زمین سدھار کیسے ؟

بڑی بڑی ریاستوں سے زمین چھین لینے کے بعد یہ سوال کھڑا ہوا کہ زمین کا بٹوارہ کون کرے ۔ اس کا حل یہ نکالا گیا کہ ہر انتظامی علاقے کی ایک کمیٹی بنائی گئی اور اس کے سپرد یہ کام کر دیا گیا ۔ اس کمیٹی کے ممبر سرکار نے مقرر نہیں کئے ۔ ان سب کی گنتی کی گئی جو اس علاقے میں زمین پانے کے حق دار تھے۔ ان سب کو حق تھا کہ زمین کا بٹوارا کرنے کے لئے چناؤ کر کے یہ ایک کمیٹی بنا لیں ۔ ہر بیس ووٹ پر ایک آدمی کمیٹی میں چنا جاتا تھا ۔ اس طرح سے خود کسانوں نے ہی زمین کا بٹوارا کیا ہے ۔

का क्या सहारा हो सकता था जिनके पास अपना कुछ भी न था. हंगरी में कारखाने नहीं थे जिनमें नौकरी लग सकती, सरकार और ताल्लुक़ेदारों को इनकी मुसीबत से कोई वास्ता न था. बड़े बड़े ज़मींदार विदेशों को सस्ता ग़ल्ला बेचते थे और ग़रीब किसानों की जान तोड़ मेहनत के बलबूते पर मौज करते थे. बे खेत वाले किसान बड़े बड़े ताल्लुक़ों पर जा कर काम करते थे. अच्छी से अच्छी ज़िन्दगी इन किसानों के लिये जो थी वह यह थी कि सस्ती मज़दूरी पर काम करते रहें और बुरी से बुरी ज़िन्दगी जो इनके लिये थी वह यह कि इनको बिलकुल ही काम न मिले और यह भूकों मरें. यह ताल्लुक़े इनको बराबर काम मुहैया नहीं कर सकते थे. इसी वजह से हंगरी के किसान रोज़गार की तलाश में इधर उधर भटकते फिरते थे. 1899 से ले कर 1913 तक 14 साल में बारह लाख किसान अपना वतन छोड़ कर पेट भरने की खोज में विदेशों को चले गए. ऐसी हालत में उनके कलचरी स्तर का बयान ही बेकार है. झोंपड़ों में यह लोग रहते थे. इन झोंपड़ों में न खिड़की होती थी और न फ़र्श ही होता था इन्ही घरौंदों में बच्चे, बूढ़े, मर्द, औरत सब गुज़ारा करने मजबूर थे. ज़ाहिर बात है जिस देश की यह हालत हो वहां भिकमंगों की गिनती करना नामुमकिन है.

शासक वर्ग के लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिये किसानों को भ्रम में डाले रखते थे. अपना मतलब साधने के लिये उन्होंने हर तरह की नफ़रत फैलाने का साधन अपनाया था. अंधी वतन परस्ती जनता की घुट्टी में माँ के दूध की तरह उतार दी गई थी. इन्हें बताया गया था कि हंगरी वाले सब से ऊंची जात के हैं और हंगरी के पड़ोसी रोमानिया और सलोवाकिया की जनता से उनको नफ़रत करना चाहिये. अपने देश के उन लोगों से भी नफ़रत करने का पाठ आम जनता को पढ़ाया गया था जिनकी हंगरी में कम तादाद थी. हंगरी में यहूदियों के ख़िलाफ़ ज़बरदस्त घृना फैली हुई थी. ग़रज़ हर तरह से यह कोशिश की गई थी कि जनता ख़ामख़ा के झगड़ों में फंसी रहे और अपने हित को न देख पाए!

किसान की मांग

तमाम कोशिशों के बाद भी कभी कभी जनता अपने हित को पहचानती थी और वह अपना हक़ लेने के लिये कोशिश करती थी. सोलहवीं सदी में किसानों ने हंगरी में बग़ावत की थी. शासक वर्ग से इनकी मांग था कि ज़मीन किसानों को मिले. लेकिन वह इनक़िलाब कामयाब न हो सका पर किसानों को रास्ता ज़रूर मालूम हो गया. 1848 में भी हंगरी के किसानों ने इनक़िलाब का झन्डा बुलन्द किया. वह कामयाब भी हो गए लेकिन रूस से

کا کیا سہارا ہو سکتا تھا جن کے پاس اپنا کچھ بھی نہ تھا. ہنگری میں کارخانے نہیں تھے جن میں نوکری لگ سکتی' سرکار اور تعلقہ داروں کو اِن کی مصیبت سے کوئی واسطہ نہ تھا. بڑے بڑے زمیندار ودیشوں کو سستا غلہ بیچتے تھے اور غریب کسانوں کی جان توڑ محنت کے بل بوتے پر موج کرتے تھے. بے کھیت والے کسان بڑے بڑے تعلقوں پر جا کر کام کرتے تھے. اچھی سے اچھی زندگی اِن کسانوں کے لئے جو تھی وہ یہ تھی کہ سستی مزدوری پر کام کرتے رہیں اور بری سے بری زندگی جو اِن کے لئے تھی وہ یہ تھی کہ اِن کو بالکل ہی کام نہ ملے اور یہ بھوکوں مریں. یہ تعلقے اِن کو برابر کام مہیا نہیں کر سکتے تھے. اسی وجہ سے ہنگری کے کسان روزگار کی تلاش میں ادھر اُدھر بھٹکتے پھرتے تھے. 1899 سے لے کر 1913 تک 14 سال میں بارہ لاکھ کسان اپنا وطن چھوڑ کر پیٹ بھرنے کی کھوج میں ودیشوں کو چلے گئے. ایسی حالت میں اُن کے کلچری استر کا ورنن ہی بیکار ہے. جھونپڑوں میں یہ لوگ رہتے تھے. اِن جھونپڑوں میں نہ کھڑکی ہوتی تھی اور نہ فرش ہی ہوتا تھا. انہیں گھروندوں میں بچے بوڑھے' مرد' عورت سب گذارا کرنے پر مجبور تھے. ظاہر بات ہے جس دیش کی یہ حالت ہو وہاں بھکمنگوں کی گنتی کرنا ناممکن ہے!

شاسک ورگ کے لوگ اپنا اُلو سیدھا کرنے کے لئے کسانوں کو بھرم میں ڈالے رکھتے تھے. اپنا مطلب سادھنے کے لئے اُنہوں نے ہر طرح کی نفرت پھیلانے کا سادھن اپنایا تھا. اندھی وطن پرستی جنتا کی گھٹی میں ماں کے دودھ کی طرح اُتار دی گئی تھی. انہیں بتایا گیا تھا کہ ہنگری والے سب سے اونچی جات کے ہیں اور ہنگری کے پڑوسی رومانیہ اور سلوانیا کی جنتا سے اُن کو نفرت کرنا چاہئے. اپنے دیش کے اُن لوگوں سے بھی نفرت کرنے کا پاٹھ عام جنتا کو پڑھایا گیا تھا جن کی ہنگری میں کم تعداد تھی. ہنگری میں یہودیوں کے خلاف زبردست گھرنا پھیلی ہوئی تھی. غرض ہر طرح سے یہ کوشش کی گئی تھی کہ جنتا خواہمخواہ کے جھگڑوں میں پھنسی رہے اور اپنے ہت کو نہ دیکھ پائے!

کسان کی مانگ

تمام کوششوں کے بعد بھی کبھی کبھی جنتا اپنے ہت کو پہچانتی تھی اور وہ اپنا حق لینے کے لئے کوشش کرتی تھی. سولھویں صدی میں کسانوں نے ہنگری میں بغاوت کی تھی. شاسک ورگ سے اِن کی مانگ تھی کہ زمین کسانوں کو ملے. لیکن وہ انقلاب کامیاب نہ ہو سکا پر کسانوں کو راستہ ضرور معلوم ہو گیا. 1848 میں بھی ہنگری کے کسانوں نے انقلاب کا جھنڈا بلند کیا. وہ کامیاب بھی ہو گئے لیکن روس سے

हंगरी का भूमि सुधार

(गंगा शरन)

हंगरी पूरबी योरप के उन देशों में से एक है जिन्होंने हमारा ध्यान अपनी तरफ़ खींचा है. इस देश का कुल रक़बा 36 हज़ार मुरब्बा मील है और 92 लाख आबादी में से 45 लाख आदमी खेती बारी पर निर्भर करते हैं. योरप का यह देश पिछड़ा हुआ और ग़रीब माना जाता था. कच्चे माल और ग़ल्ले के लिये उद्योग वाले देश हमेशा इस पर दांत चढ़ाए रहते थे. इस पर कभी तुरकों ने राज किया और कभी जरमनों ने, कभी यह आस्ट्रिया के अधीन रहा और कभी किसी और शक्ति शाली राष्ट्र के सामने सर झुकाता रहा. इसके इतिहास में बहुत उथल पुथल हुए हैं पर कुछ चीज़ें ऐसी रही हैं जिनमें किसी समय भी, किसी के राज में भी कोई तबदीली नहीं आई— ग़रीबी, बेकारी और ग़ुलामी. दबा हुआ, ग़ुलाम, ग़रीबी की लानत में डूबा हुआ यह देश कैसे सर उठा सका, कैसे इसमें नई लहर दौड़ सकी, कैसे इसका नया जन्म हो सका, यह हमारे लिये जानना ज़रूरी है. नये हंगरी को जन्म देने में यहां के भूमि सुधार का ज़बरदस्त हाथ है. इस सुधार की तफ़सील समझने से पहले ज़रूरी है कि हम उन समस्याओं को समझ लें जिनका हल ज़मीन सुधार ने किया है

ज़मीन का ना बराबर बटवारा

कुल किसान आबादी में से सिर्फ़ 16 लाख किसान ऐसे थे जिनके पास खेत के छोटे छोटे टुकड़े थे. बहुत से टुकड़े तो आधे एकड़ से भी कम थे. हंगरी की खेती वाली ज़मीन के 48 फ़ी सदी हिस्से पर 12000 ताल्लुक़ेदार क़ब्ज़ा जमाए थे. इस ज़मीन का भी बहुत बड़ा हिस्सा 304 रियासतों के पास था. तीस लाख किसानों के पास एक इंच भी ज़मीन नहीं थी. यह लोग "30 लाख भिकमंगे" के नाम से याद किये जाते थे. हंगरी गिरजों की ज़ियादती के लिये मशहूर है. इन गिरजों के पास भी ज़मीन का बहुत बड़ा हिस्सा था.

किसान की हालत

जब इतना ना बराबर बटवारा होता यह बात ज़ाहिर है कि एक बड़े हिस्से को बेरोज़गार रहना पड़ेगा, भूकों मरना पड़ेगा और दरबदर की ठोकर खाना पड़ेगी वह किसान भी अपना पेट नहीं भर सकते थे जिनके पास एकाध एकड़ ज़मीन थी. फिर उन किसानों की भूक मिटाने

ھنگری کا بھومی سدھار

(گنگا شرن)

ھنگری پوربی یورپ کے اُن دیشوں میں سے ایک ھے جنھوں نے ھمارا دھیان اپنی طرف کھینچا ھے. اِس دیش کا کل رقبہ 36 ھزار مربع میل ھے اور 92 لاکھ آبادی میں سے 45 لاکھ آدمی کھیتی باری پر نربھر کرتے ھیں . یورپ کا یہ دیش پچھڑا ھوا اور غریب مانا جاتا تھا . کچے مال اور غلے کے لئے اُدیوگ والے دیش ھمیشہ اِس پر دانت چڑھائے رھتے تھے . اِس پر کبھی ترکوں نے راج کیا اور کبھی جرمنوں نے، کبھی یہ آسٹریا کے ادھین رھا اور کبھی کسی اور شکتی شالی راشٹر کے سامنے سر جھکاتا رھا . اِس کے اِتہاس میں بہت اُتھل پتھل ھوئے ھیں پر کچھ چیزیں ایسی رھی ھیں جن میں کسی سمے بھی، کسی کے راج میں بھی کوئی تبدیلی نہیں آئی— غریبی، بیکاری اور غلامی . دبا ھوا، غلام، غریبی کی لعنت میں ڈوبا ھوا یہ دیش کیسے سر اُٹھا سکا، کیسے اِس میں نئی لہر دوڑ سکی، کیسے اِس کا نیا جنم ھو سکا، یہ ھمارے لئے جاننا ضروری ھے . نئے ھنگری کو جنم دینے میں یہاں کے بھومی سدھار کا زبردست ھاتھ ھے. اِس سدھار کی تفصیل سمجھنے سے پہلے ضروری ھے کہ ھم اُن سمسیاؤں کو سمجھ لیں جن کا حل زمین سدھار نے کیا ھے :

زمین کا نابرابر بٹوارہ

کل کسان آبادی میں سے صرف 16 لاکھ کسان ایسے تھے جن کے پاس کھیت کے چھوٹے چھوٹے ٹکڑے تھے . بہت سے ٹکڑے تو آدھے ایکڑ سے بھی کم تھے . ھنگری کی کھیتی والی زمین کے 48 فیصدی حصے پر 12000 تعلقےدار قبضہ جمائے تھے. اِس زمین کا بھی بہت بڑا حصہ 304 ریاستوں کے پاس تھا . تیس لاکھ کسانوں کے پاس ایک انچ بھی زمین نہیں تھی . یہ لوگ " 30 لاکھ بھک منگے" کے نام سے یاد کئے جاتے تھے . ھنگری گرجوں کی زیادتی کے لئے مشہور ھے . اِن گرجوں کے پاس بھی زمین کا بہت بڑا حصہ تھا .

کسان کی حالت

جب اتنا نابرابر بٹوارہ ھو تو یہ بات ظاھر ھے کہ ایک بڑے حصے کو بے روزگار رھنا پڑے گا، بھوکوں مرنا پڑے گا اور در بدر کی ٹھوکر کھانی پڑے گی . وہ کسان بھی اپنا پیٹ نہیں بھر سکتے تھے جن کے پاس ایک آدھ ایکڑ زمین تھی . پھر اُن کسانوں کی بھوک مٹانے

हिन्दुस्तानी शब्दयात का सातवां असूल: हिन्दुस्तानी में बाहरी लफ़ज़ों की निसबत बन्दी

(डाक्टर ज़ाफ़र हसन)

हिन्दुस्तानी को सब की बोली बनाने और भारत की सब से ज़ियादा आम और चालू भाशा बनाने के लिये हिन्दुस्तानी में अरबी, फ़ारसी, संस्कृत, हिन्दी, अंगरेज़ी और देसी भाशाओं के लफ़्ज़ों का ऐसा तनासुब (Proportion) होना चाहिये कि हिन्दुस्तानी का झुकाव देसीयत की तरफ़ हो. वह हिन्दी नुमा उरदू या उरदू का मज़ा रखने वाली हिन्दी हो जिस में योरपी भाशाओं से विद्याई शब्द और देसी भाशाओं से अच्छे अच्छे लफ़्ज़ बिला झिझक लिये जायं.

उरदू ने पिछली दहाइयों में यह भारी ग़लती की कि नये लफ़ज़ों को सिर्फ़ अरबी और फ़ारसी से लिया, और संस्कृत या हिन्दी की तरफ़ ध्यान नहीं दिया. इस वजह से हिन्दी लफ़ज़ों की गिनती उरदू में बराबर कम होती गई और अरबी फ़ारसी का पल्ला भारी होते होते उरदू मुशकिल, अजनबियाना और डरावनी हो गई. उरदू ने अपने और सर चशमों को छोड़ कर सिर्फ़ एक चशमे से सेराब होना चाहा इसलिये वह बेगाना हो गई क्योंकि बढ़ती हुई गहराई से उरदू में फ़ारसी पन और अरबी पन का रंग पैदा होता गया. फिर क्या ताज्जुब है कि आम तौर पर उरदू को मुसलमानों की ज़बान ख़याल किया जाने लगा.

अगर हिन्दी प्रेमी और हिन्दुस्तानी के पक्ष पाती उरदू की ग़लती से फ़ायदा उठाना चाहते हैं तो उनके लिये ख़ास कर हिन्दुस्तानी वालों के लिये यह ज़रूरी है कि वह हिन्दुस्तानी के तीनों सर चशमों से सेराब होते रहें और वह भी इस तरह कि हिन्दुस्तानी की आम फ़हमी क़ायम रहे और वह विद्याई, दफ़तरी, सरकारी, समाजी, ब्योपारी ग़रज़ सब प्रकार की ज़रूरतों को पूरा कर सके जिसके लिये फिर वही असूल इख़तियार करना पड़ता है कि हिन्दुस्तानी में सब क़िसम के लफ़्ज़ हों और वह भी इस ख़ास निसबत से कि उसकी सही हालत और कैफ़ियत पर असर न पड़े.

हिन्दुस्तानी मिलवां भाशा है. बहुत ज़ियादा तादाद में इसके लफ़्ज़ हिन्दी और संस्कृत से आए हैं. पच्छिमी एशिया की भाशाओं के लफ़्ज़ भी काफ़ी तादाद में हैं. योरपी भाशाओं के सैकड़ों लफ़्ज़ हिन्दुस्तानी में आ चुके हैं. देसी भाशाओं से हिन्दुस्तानी बहुत से लफ़्ज़ ले चुकी और ले सकती है. अगर हम आइन्दा यही कोशिश करें कि नये नये शब्द ज़ियादा तर हिन्दी और संस्कृत से लें. इसके बाद देसी भाशाओं, योरपी भाशाओं और पच्छिमी एशियाई भाशाओं से तो हिन्दुस्तानी का मिलवां पन बाक़ी रहेगा.

हिन्दुस्तानी की सब से बड़ी विशेशता में उसका हर दिल प्रेम और आम समझ पन हैं. इनको क़ायम रखने के लिये यह ज़रूरी है कि तमाम सर चशमों के लफ़्ज़ ख़ास निसबत से लिये जायं ताकि हिन्दी या उरदू के बरख़िलाफ़ हिन्दुस्तानी बोझल, बिहंगम और भयानक न हो जाय.

ھندستانی شبدیات کا ساتواں اسول: ھندستانی میں باھری لفزوں کی نسبت بندی

(ڈاکٹر جافر ھسن)

ھندستانی کو سب کی بولی بنانے اور بھارت کی سب سے زیادہ آم اور چالو بھاشا بنانے کے لئے ھندستانی میں اربی، فارسی، سنسکرت، ھندی، انگریزی اور دیسی بھاشاؤں کے لفزوں کا ایسا تناسب (Proportion) ھونا چاھئے کہ ھندستانی کا جھکاؤ دیسیت کی طرف ھو ۔ وہ ھندی نما اردو یا اردو کا مزا رکھنے والی ھندی ھو جس میں یورپی بھاشاؤں سے ودیائی شبد اور دیسی بھاشاؤں سے اچھے اچھے لفز بلا جھجھک لئے جائیں ۔

اردو نے پچھلی دیہائیوں میں یہ بھاری غلتی کی کہ نئے لفزوں کو صرف اربی اور فارسی سے لیا اور سنسکرت یا ھندی کی طرف دھیان نہیں دیا. اس وجہ سے ھندی لفزوں کی گنتی اردو میں برابر کم ھوتی گئی اور اربی فارسی کا پلہ بھاری ھوتے ھوتے اردو مشکل، اجنبیانہ اور ڈراونی ھوگئی ۔ اردو نے اپنے اور سرچشموں کو چھوڑ کر صرف ایک چشمے سے سیراب ھونا چاھا اس لئے وہ بیگانہ ھوگئی کیوں کہ بڑھتی ھوئی گہرائی سے اردو میں فارسی پن اور اربی پن کا رنگ پیدا ھوگیا. پھر کیا تعجب ہے کہ آم طور پر اردو کو مسلمانوں کی زبان خیال کیا جانے لگا ۔

اگر ھندی پریمی اور ھندستانی کے پکش پاتی اردو کی غلطی سے فائدہ اٹھانا چاھتے ھیں تو ان کے لئے خاص کر ھندستانی والوں کے لئے یہ ضروری ھے کہ ھندستانی والوں سے تینوں سر چشموں سیراب ھوتے رھیں اور وہ بھی اس طرح کہ ھندستانی کی آم فہمی قایم رہے اور وہ ودیائی، دفتری، سرکاری، سماجی، بیوپاری غرز سب پرکار کی ضرورتوں کو پورا کر سکے جس کے لئے پھر وھی اسول اختیار کرنا پڑتا ہے کہ ھندستانی میں سب قسم کے لفز ھوں اور وہ بھی اس خاص نسبت سے کہ اس کی صحی حالت اور کیفیت پر اثر نہ پڑے ۔

ھندستانی ملواں بھاشا ہے ۔ بہت زیادہ تعداد میں اس کے لفز ھندی اور سنسکرت سے آئے ھیں ۔ پچھمی ایشیا کی بھاشاؤں کے لفز بھی کافی تعداد میں ھیں ۔ یورپی بھاشاؤں کے سیکڑوں لفز ھندستانی میں آ چکے ھیں ۔ دیسی بھاشاؤں سے ھندستانی بہت سے لفز لے چکی اور لے سکتی ھے ۔ اگر ھم آئندہ یہی کوشش کریں کہ نئے نئے شبد زیادا تر ھندی اور سنسکرت سے لیں، اس کے بعد دیسی بھاشاؤں، یورپی بھاشاؤں اور پچھمی ایشیائی بھاشاؤں سے تو ھندستانی کا ملواں پن باقی رہے گا ۔

ھندستانی کی سب سے بڑی وشیشتا میں اس کا ھر دل پریم اور آم سمجھ پن ھیں ۔ ان کو قایم رکھنے کے لئے یہ ضروری ھے کہ تمام سر چشموں کے لفز خاص نسبت سے لئے جائیں تاکہ ھندی یا اردو کے بر خلاف ھندستانی بوجھل، بہنگم اور بھیانک نہ ھوجائے ۔

जिसे आप गाय समझते थे टुकड़े तक करवा दिये. आप को इस सारी भक्ति को ले कर हमारे फ़िलासफ़र, उपसभापति राधा कृष्णनन जी 16 अप्रैल को अपने महल से कई मील चल कर नई दिल्ली के स्टेशन आए और सिर्फ़ इसलिये कि उनको नई दिल्ली से रेल में बैठ कर रेल की नुमाइश देखने जाना था. यह नुमाइश नई दिल्ली से लाखों ही इंच तो दूर है. सरकार को चाहिये तो यह था कि वह उन्हें पालम के हवाई अड्डे ले जा कर हवाई जहाज़ से नुमाइश भेजे पर शायद इसलिये उन्हें रेल की तकलीफ़ बरदाश्त करने के लिये मजबूर किया गया कि नुमाइश रेल की थी. लोग अगर फ़िलासफ़र साहब पर उंगलियां उठावें तो यह उनकी ऐसी ही बेवक़ूफ़ी होगी जैसे कोई उस दूल्हे पर उंगली उठाए जो जनवासे से ससुराल तक घोड़ी पर चढ़ कर जाय. इसमें उसका क्या क़सूर ! समाज जाने, उसका बाप जाने ! ठीक इसी तरह इसमें फ़िलासफ़र साहब का क्या क़सूर, वह तो हिन्दुस्तानी जमहूरियत के यानी भारत प्रजा सत्ता राज के दूल्हे न सही शहबाला तो हैं ही. दूल्हे की तबियत ख़राब होने पर, कहीं कहीं रिवाज है, दूल्हे के भाई से काम ले लिया जाता है.

बापू, अभी आप इस पर टीका न कीजिये यह तो हमने प्रजा सत्ता राज नामी नदी का एक किनारा दिखाया. इसी से मिलता जुलता दूसरा किनारा है संत विनोबा, जो हज़ारों मील दूर जायं तो पैदल ही जायं. आपने डांडी मार्च पैदल किया था तो राउंड टेबिल में शामिल होने के लिये शिमला से आप के लिये स्पेशल छूटी थी और बम्बई में जहाज़ रुका रहा था !

हम और हमारी सरकार आपके किसी भी रूप को कभी नहीं भुलाते, अपने ढंग से सब रूप उसे याद हैं. किस पाठ का कहां उपयोग करना चाहिये यह तो वह अपनी समझ से ही उपयोग करेगी, क्योंकि आप तक न तार का सिलसिला है, न टेलीफ़ोन का, न वायरलैस का, रेडियो तक आप तक पहुँचने में हार मान बैठा है. पर बापू हमारी सब बात आप सुन लेते हैं और अभी आप मुसकरा रहे हैं.

—भगवानदीन

جسے آپ گئے سمجھتے تھے ٹکڑے تک کروا دیئے. آپ کی اِس ساری بھکتی کو لے کر ھمارے فلاسفر' آپ سبھا پتی رادھا کرشنن جی 16 اپریل کو اپنے محل سے کئی میل چلکر نئی دلی کے اِسٹیشن آئے اور صرف اِس لئے کہ اُن کو نئی دلی سے ریل میں بیٹھکر ریل کی نمائش دیکھنے جانا تھا . یہ نمائش نئی دلی سے لاکھوں ہی اِنچ دور ھے . سرکار کو چاھئے تو یہ تھا کہ وہ اُنھیں پالم کے ھوائی اڈے لے جا کر ھوائی جہاز سے نمائش بھیجتے پر شائد اِس لئے اُنھیں ریل کی تکلیف برداشت کرنے کے لئے مجبور کیا گیا کہ نمائش ریل کی تھی . لوگ اگر فلاسفر صاحب پر اُنگلیاں اُٹھائیں تو یہ اُن کی ایسی ھی بیوقوفی ھوگی جیسے کوئی اُس دولھے پر اُنگلی اُٹھائے جو جنواسے سے سسرال تک گھوڑی پر چڑھکر جائے . اِس میں اُس کا کیا قصور ! سماج جانے' اُس کا باپ جانے ! ٹھیک اِسی طرح اِس میں فلاسفر صاحب کا کیا قصور' وہ تو ھندستانی جمہوریت کے یعنی بھارت پرجا ستا راج کے دولھا نہ سہی شہ‌والا تو ھیں ھی . دولھے کی طبیعت خراب ھونے پر' کہیں کہیں رواج ھے' دولھے کے بھائی سے کام لے لیا جاتا ھے .

باپو' ابھی آپ اِس پر ٹیکا نہ کیجئے. یہ تو ھم نے پرجا ستا راج نامی ندی کا ایک کنارا دکھایا . اِسی سے ملتا جلتا دوسرا کنارا ھے سنت ونوبا' جو ھزاروں میل دور جائیں تو پیدل ھی جائیں . آپنے ڈانڈی مارچ پیدل کیا تھا تو راونڈ‌ٹیبل میں شامل ھونے کے لئے شملہ سے آپ کے لئے اِسپیشل چھوٹی تھی اور بمبئی میں جہاز رکا رھا تھا .

ھم اور ھماری سرکار آپ کے کسی بھی روپ کو کبھی نہیں بھلاتے' اپنے ڈھنگ سے سب روپ اُسے یاد ھیں . کس پاٹھ کا کہاں اُپیوگ کرنا چاھئے یہ تو وہ اپنی سمجھ سے ھی اُپیوگ کرے گی' کیونکہ آپ تک نہ تار کا سلسلہ ھے' نہ ٹیلیفون کا' نہ وائرلیس کا' ریڈیو تک آپ تک پہونچنے میں ھار مان بیٹھا ھے . پر باپو ھماری سب بات آپ سن لیتے ھیں اور ابھی آپ مسکرا رھے ھیں .

—بھگوان‌دین

इन्तज़ाम भी कर रखा था जिससे लोगों के पांव पड़ कर वह जल अपवित्र न होने पाय. पर वह दो तीन गज़ चौड़ा पुल लाखों आदमियों को कैसे गुज़ारता इसलिये जगह जगह से लोग उसे पैरों पैरों पार कर रहे थे, हम यह देखकर मन मसोस कर रह जाते थे. हमारे साथियों ने कई बार ऐसे अभक्तों पर फ़िक़रे भी कसे, कि देखो, यह जमना माई के पवित्र जल को अपने पैरों से गंदा कर रहे हैं.

धक्के मुक्के खा कर भीड़ को पार करते हुए हम रेत के मैदान में आए. जमना माई की बहती हुई धार यहां से करलांग भर दूर थी. वहां भी अनगिनत लोग धार के किनारे किनारे दूर तक खड़े दिखाई दिये. हम भी भक्ति से वहां पहुंचे, हमारे साथी बहती हुई धार को देख कर झिझके और वह इसलिये कि जमना जल ने, जल न रह कर, अब औटे दूध की तरह गाढ़ा रूप ले लिया था हो सकता है यह जमना माई के अपने भक्तों के लिये उमड़े हुए हेज़ यानी मोहब्बत की वजह से हो. हम तो यही समझे. और बापू, हम बिना सोचे समझे भक्ति में डूबकर जमना माई के जल में चल ही पड़े. थोड़ी दूर चलकर जब जल घुटनो से ऊपर आया और कुदसिया घाट जैसी गंध भी नथनों में पहुंची तो फिर हिम्मत न हुई कि ऐसे निर्मल जल को नापाक करें. बस हम लौट आए और हमारे सब साथियों ने, मुंह से एक शब्द निकाले बिना, हमारा साथ दिया.

बापू, यह सब तो हुआ, पर स्वराज का इससे भी बढ़ कर तमाशा देखने को मिला. छोटे बड़े, मर्द औरत, समझदार नासमझ, सबके सब आज़ाद पाए, जहां तहां पेशाब कर के, चाहे जहां टट्टी कर के सब के सब पूरी तरह आज़ादी का आनन्द ले रहे थे. सबसे बढ़ कर बात जो कुछ समझदारों से सुनने को मिली, बापू, वह यह है, वह कह रहे थे, "यह सब कम्यूनिज़्म के लिये फ़िनायल है और दिल्ली की सरकार ने इसको छिड़कने के लिये खास तौर से इन्तज़ाम किया है."

बस बापू, आपकी आंतों वाली फ़िनायल की बात को दिल्ली सरकार ने खूब अच्छी तरह समझ लिया है, और यह सुनकर आप को कितनी खुशी हुई होगी कि वह उस जानकारी का कितना अच्छा उपयोग कर रही है...... बापू, दिल्ली सरकार कभी भी ऐसे मौक़ों पर आपको नहीं भूलती !

और सुनिये, आप कांगरेस के प्रेसीडेन्ट रहे तो, बड़े बड़े आन्दोलनों के डिक्टेटर रहे तो, हमेशा अपने साथियों की बात ध्यान से सुनते रहे, और वही करते रहे जो आपके साथियों ने चाहा. साथियों की खातिर आप नें भारत के

اِنتظام بھی کر رکھا تھا. جس سے لوگوں کے پاؤں پڑ کر وہ جل اپوتر نہ ہونے پائے. پر وہ دو تین گز چوڑا پل لاکھوں آدمیوں کو کیسے گذارتا . اِس لئے جگہ جگہ سے لوگ اُسے پیروں پیروں پار کر رہے تھے' ہم یہ دیکھ کر من مسوس کر رہ جاتے تھے. ہمارے ساتھیوں نے کئی بار ایسے ابھکتوں پر فقرے بھی کسے' کہ دیکھو' یہ جمنا مائی کے پوتر جل کو اپنے پیروں سے گندا کر رہے ہیں .

دھکے مکے کھا کر بھیڑ کو پار کرتے ہوئے ہم ریت کے میدان میں آئے . جمنا مائی کی بہتی ہوئی دھار یہاں سے فرلانگ بھر دور تھی . وہاں بھی انگنت لوگ دھار کے کنارے کنارے دور تک کھڑے دکھائی دئے. ہم بھی بھکتی سے وہاں پہونچے' ہمارے ساتھی بہتی ہوئی دھار کو دیکھ کر جھجھکے اور وہ اِس لئے کہ جمنا جل نے' جل نہ رہ کر' ادھ اوٹے دودھ کی طرح گاڑھا روپ لے لیا تھا. ہوسکتا ہے یہ جمنا مائی کے اپنے بھکتوں کے لئے اُمڑے ہوئے ہیج یعنی محبت کی وجہ سے ہو . ہم تو یہی سمجھے . اور باپو' ہم بنا سوچے سمجھے بھکتی میں ڈوب کر جمنا مائی کے جل میں چل ہی پڑے. تھوڑی دور چل کر جب جل گھٹنوں سے اوپر آیا اور قدسیہ گھاٹ جیسی گندھ بھی نتھنوں میں پہونچی تو پھر ہمت نہ ہوئی کہ ہم ایسے نرمل جل کو ناپاک کریں. بس ہم لوٹ آئے اور ہمارے سب ساتھیوں نے' منھ سے ایک شبد نکالے بنا' ہمارا ساتھ دیا.

باپو' یہ سب تو ہوا' پر سوراج کا اِس سے بھی بڑھکر تماشہ دیکھنے کو ملا . چھوٹے بڑے' مرد عورت' سمجھدار ناسمجھ سب کے سب آزاد پائے' جہاں تہاں پیشاب کر کے' چاہے جہاں ٹٹی کر کے سب کے سب پوری طرح آزادی کا آنند لے رہے تھے . سب سے بڑھکر بات جو کچھ سمجھداروں سے سننے کو ملی' باپو' وہ یہ ہے' " یہ سب کمیونزم کے لئے فنائل ہے اور دلی کی سرکار نے اس کو چھڑکنے کے لئے خاص طور سے اِنتظام کیا ہے ."

بس باپو' آپ کی آنتوں والی فنائل کی بات کو دلی سرکار نے خوب اچھی طرح سمجھ لیا ہے' اور یہ سن کر آپ کو کتنی خوشی ہوئی ہوگی کہ وہ اُس جانکاری کا کتنا اچھا اپیوگ کر رہی ہے ...... باپو' دلی سرکار کبھی بھی ایسے موقعوں پر آپ کو نہیں بھولتی !

اور سنئے' آپ کانگریس کے پریسیڈنٹ رہے تو' بڑے بڑے آندولنوں کے ڈکٹیٹر رہے تو' ہمیشہ اپنے ساتھیوں کی بات دھیان سے سنتے رہے' اور وہی کرتے رہے جو آپ کے ساتھیوں نے چاہا . ساتھیوں کی خاطر آپ نے بھارت کے

बापू से

अगर हम भूलते नहीं हैं तो बापू, आप लहसन प्याज के बहुत शौकीन थे लहसन तो आप कच्ची बेनमक पिसवाकर खाया करते थे और इतना खाते थे कि आप के पसीने से लहसन की बू आने लगी थी. जो बहनें आपकी सेवा में रहती थीं वह उस गंध से घबरा उठीं थीं जो आपने तन से निकलती थी. पर, वह सब थीं भक्त, उस गंध को सहन करती थीं, और इस ख्याल से कि कहीं उनकी भक्ती को बट्टा न लग जाय वह अपनी नाक तक बंद न करती थीं. यह तो पता नहीं कि आपने उन भक्तों का ख्याल कर के लहसन छोड़ा या नहीं, पर यह जरूर याद है कि एक बार लहसन की तारीफ़ में आपने यह कहा था कि यह आंतों की फिनाइल है, फिनाइल ! इस से सैकड़ों बीमारी के जर्म्स दूर भागते हैं. बापू. ठीक इसी तरह का एक तमाशा हमें बैशाखी के दिन दिल्ली में जमना के किनारे देखने को मिला. हम बाल बच्चों समेत चार बजे उठकर, जमना स्नान की भक्ति में डूबे हुए जमना की ओर चल दिये. उस भक्ति में हमें उस तकलीफ़ का कोई ध्यान ही न हो पाया जो हमें भीड़ में चलने से हुई. सिक्ख जवान लड़कों की उन समाज सेवाओं की तरफ़ जरा भी ध्यान न गया जो वह अपने साथियों को धक्का दे कर सामने से आती जवान लड़कियों पर गिरा कर कर रहे थे. हम इन सब अड़चनों को पार करते हुए ज्यों त्यों कर कुदसिया घाट पहुँचे. वहां पहुँचते ही बदबू का एक झोंका आया, हमारे साथियों ने नाकें बंद करना शुरू कीं, हमारा हाथ नाक तक पहुँचे पहुँचे कि हम जमना माई की सामने की सीढ़ियों पर जा पहुँचे. पता लगा यह बदबू जमना माई की है और दुर्गंध नाम से नहीं पुकारी जा सकती क्यों कि वह तो जमना माई के जल से आ रही थी जो रुक गया था और जो शायद टख़नों टख़नों भी न था. जब फिनाइल की बू को बदबू नहीं कहा जाता और जब आप लहसन की बू को बदबू नहीं कहते थे, तब हम उसको कैसे दुर्गंध कहते. जमना माई के जल को बदबूदार कहना अपने को अभक्त साबित करना था. बस बापू हमने हिम्मत करके नाक नहीं बंद की, नहीं बंद की ! अपने साथियों को नाक बंद करने के लिये फटकारा कुछ पर असर हुआ कुछ पर नहीं. जमना जी के जैसे पवित्र जल का अपमान करके गंदे जल में तबदील करने की बात भी हम न सोच सके. फिर उसमें पांव डाल उसे अपवित्र करने का पाप तो हम कर ही कैसे सकते थे. दिल्ली सरकार या दिल्ली सरकार की मातहत दिल्ली म्युनिस्पिलिटी ने बहुत सोच समझ कर बालिश्त डेढ़ बालिश्त ऊंचे एक पुल का

باپو سے

اگر ہم بھولتے نہیں ہیں تو' باپو' آپ لہسن پیاز کے بہت شوقین تھے. لہسن تو آپ کچی بےنمک پسوا کر کھایا کرتے تھے اور اِتنا کھاتے تھے کہ آپ کے پسینے سے لہسن کی بو آنے لگی تھی. جو بہنیں آپ کی سیوا میں رہتی تھیں وہ اُس گندھ سے گھبرا اُٹھی تھیں جو آپ کے تن سے نکلتی تھی . پر' وہ سب تھیں بھکت' اُس گندھ کو سہن کرتی تھیں' اور اِس خیال سے کہ کہیں اُن کی بھکتی کو بٹا نہ لگ جائے وہ اپنی ناک تک بند نہ کرتی تھیں. یہ تو پتہ نہیں کہ آپ نے اُن بھکتوں کا خیال کرکے لہسن چھوڑا یا نہیں' پر یہ ضرور یاد ہے کہ ایک بار لہسن کی تعریف میں آپ نے یہ کہا تھا کہ یہ آنتوں کا فنائل ہے فنائل ! اِس سے سیکڑوں بیماری کے جرمس دور بھاگتے ہیں . باپو' ٹھیک اِسی طرح کا ایک تماشہ ہمیں بیساکھی کے دن دلی میں جمنا کے کنارے دیکھنے کو ملا. ہم بال بچوں سمیت چار بجے اُٹھ کر' جمنا اِسنان کی بھکتی میں ڈوبے ہوئے جمنا کی اور چل دئے. اُس بھکتی میں ہمیں اُس تکلیف کا کوئی دھیان ہی نہ ہو پایا جو ہمیں بھیڑ میں چلنے سے ہوئی. سکھ جوان لڑکوں کی اُن سماج سیواؤں کی طرف ذرا بھی دھیان نہ گیا جو وہ اپنے ساتھیوں کو دھکا دے کر سامنے سے آتی جوان لڑکیوں پر گرا کر رہے تھے. ہم اِن سب اڑچنوں کو پار کرتے ہوئے جیوں تیوں کر قدسیہ گھاٹ پہونچے . وہاں پہونچتے ہی بدبو کا ایک جھونکا آیا' ہمارے ساتھیوں نے ناکیں بند کرنا شروع کیں' ہمارا ہاتھ ناک تک پہونچے پہونچے کہ ہم جمنا مائی کی سامنے کی سیڑھیوں پر جا پہونچے . پتہ لگا یہ بدبو جمنا مائی کی ہے اور درگندھ نام سے نہیں پکاری جاسکتی کیونکہ وہ تو جمنا مائی کے جل سے آ رہی تھی جو رک گیا تھا اور جو شائد ٹخنوں ٹخنوں بھی نہ تھا . جب فنائل کی بو کو بدبو نہیں کہا جاتا اور جب آپ لہسن کی بو کو بدبو نہیں کہتے تھے' تب ہم اُس کو کیسے درگندھ کہتے . جمنا مائی کے جل کو بدبودار کہنا اپنے کو ابھکت ثابت کرنا تھا . بس باپو ہم نے ہمت کرکے ناک نہیں بند کی' نہیں بند کی ! اپنے ساتھیوں کو ناک بند کرنے کے لئے پھٹکارا . کچھ پر اثر ہوا کچھ پر نہیں . جمنا جی کے جیسے پوتر جل کا اپمان کرکے گندے جل میں تبدیل کرنے کی بات بھی ہم نہ سوچ سکے . پھر اُس میں پاؤں ڈال اُسے اپوتر کرنے کا پاپ تو ہم کر ہی کیسے سکتے تھے . دلی سرکار یا دلی سرکار کی ماتحت دلی میونسپلٹی نے بہت سوچ سمجھ کر بالشت ڈیڑھ بالشت اُونچے ایک پل کا

को अलौकिक शक्तियों के फेर में नहीं पड़ना चाहिये, ये शक्तियां आदमी को रास्ते से भटका देती हैं. उसे चाहिये कि सब प्राणियों के अन्दर उसी एक ईश्वर को देखने की कोशिश में लगा रहे, यह सब अलौकिक शक्तियां नए नए ढंग का अहंकार पैदा करके आदमी को फंसाए रखती हैं, इसलिये चाहिये कि वह सब के अन्दर के भगवान को देखने की कोशिश में लगा रहे, यही अमर जीवन हासिल करने का रास्ता है.

बिना इस परोपकार भाव और इस त्याग भाव के भी आदमी बड़ी बड़ी शक्तियां हासिल कर सकता है और बाहर की प्रकृति पर क़ाबू पा सकता है. पच्छिम के साइन्स वालों ने ऐसा किया भी है. लेकिन इससे आत्मा की शांति नहीं मिलती. अपने अपने दिलों के खोज करने पर सब को अपने अन्दर अशांति और असतोश ही दिखाई देता है. इस असतोश में भी एक तरह का सुख है, नशा है, तेज़ी है, टीप टाप है, तड़क भड़क है, गैस बिजली और महल हैं, युद्ध के मैदान और लाखों और करोड़ों की तड़प तड़प कर मौत है. जिन लोगों की आत्माएं अभी इसी दरजे तक पहुंची है. और जो इस बुखार में मुबतला हैं उन पर इन उपदेशों' का कोई असर नहीं हो सकता. उन्हें उस समय तक उन्हीं के रास्ते पर चलने देना चाहिये जब तक कि उनके अन्दर से आवाज़ न आवे, और कड़वे तजरबे के बाद वह इस अधोमार्ग यानी क़ौसे नज़ूल से मुड़ कर ऊर्ध्व मार्ग यानी क़ौसे उरूज पर न चलने लगे ऊर्ध्व मार्ग यानी ऊपर की चढ़ाई में भी बड़े बड़े तजरबे होते हैं, बड़ी बड़ी शक्तियां खुलती हैं. बाहर की प्रकृति यानी क़ुदरत के ऊपर भी और अपनी आत्मा के ऊपर भी वो वो शक्तियां खुलती हैं जो उतार के रास्ते की शक्तियों से कहीं बढ़ कर होती हैं. फ़रक केवल यह होता है कि साइन्स फिर आत्मा की दासी बन कर काम करती है, मनुश्य उन शक्तियों का उपयोग दूसरों के यानी सब के भले के लिये करता है और पग पग पर यह देखता परखता रहता है कि कहीं अपने झूटे स्वार्थ या ख़ुदी के असर में आकर वह उन शक्तियों का ग़लत इस्तेमाल तो नहीं कर रहा है. इस मार्ग पर हर आदमी अपने तन मन धन और अपनी सारी शक्तियों को सब की अमानत समझता है. यही इन्सानी तरक़्क़ी यानी मानव उन्नति की असली राह है. यह इस लोक और परलोक दोनों की भलाई, ख़ुशहाली और बढ़ोती की राह है.

کو الوکک شکتیوں کے پھیر میں نہیں پڑنا چاہئے' یہ شکتیاں آدمی کو راستے سے بھٹکا دیتی ہیں. اسے چاہئے کہ سب پرانیوں کے اندر اسی ایک ایشور کو دیکھنے کی کوشش میں لگا رہے' یہ سب الوکک شکتیاں نئے نئے ڈھنگ کا اہنکار پیدا کرکے آدمی کو پھنسائے رکھتی ہیں' اس لئے چاہئے کہ وہ سب کے اندر کے بھگوان کو دیکھنے کی کوشش میں لگا رہے' یہی امر جیون حاصل کرنے کا راستہ ہے

بنا اس پروپکار بھاؤ اور اس تیاگ بھاؤ کے بھی آدمی بڑی بڑی شکتیاں حاصل کرسکتا ہے اور باہر کی پرکرتی پر قابو پاسکتا ہے. پچھم کے سائنس والوں نے ایسا کیا بھی ہے . لیکن اس سے آتما کی شانتی نہیں ملتی . اپنے اپنے دلوں کی کھوج کرنے پر سب کو اپنے اندر اشانتی اور استوش ہی دکھائی دیتا ہے . اس استوش میں بھی ایک طرح کا سکھ ہے' نشہ ہے' تیزی ہے' ٹیپ ٹاپ ہے' تڑک بھڑک ہے' گیس بجلی اور محل ہیں' یدھ کے میدان اور لاکھوں اور کروڑوں کی تڑپ تڑپ کر موت ہے. جن لوگوں کی آتمائیں ابھی اسی درجے تک پہونچی ہیں اور جو اس بخار میں مبتلا ہیں ان پر ان 'اپدیشوں' کا کوئی اثر نہیں ہو سکتا . انہیں اس سمے تک انہیں کے راستے پر چلنے دینا چاہئے جب تک کہ ان کے اندر سے آواز نہ آوے' اور کڑوے تجربے کے بعد وہ اس ادھومارگ یعنی قوس نزول سے مڑ کر اوردھومارگ یعنی قوس عروج پر نہ چلنے لگیں . اوردھومارگ یعنی اوپر کی چڑھائی میں بھی بڑے بڑے تجربے ہوتے ہیں' بڑی بڑی شکتیاں کھلتی ہیں' باہر کی پرکرتی یعنی قدرت کے اوپر بھی اور اپنی آتما کے اوپر بھی وہ وہ شکتیاں کھلتی ہیں جو اتار کے راستے کی شکتیوں سے کہیں بڑھ کر ہوتی ہیں . فرق کیول یہ ہوتا ہے کہ سائنس پھر آتما کی داسی بن کر کام کرتی ہے' منشیہ ان شکتیوں کا اپیوگ دوسروں کے یعنی سب کے بھلے کے لئے کرتا ہے اور پگ پگ پر یہ دیکھتا پرکھتا رہتا ہے کہ کہیں اپنے جھوٹے سوارتھ یا خودی کے اثر میں آکر وہ ان شکتیوں کا غلط استعمال تو نہیں کر رہا ہے . اس مارگ پر ہر آدمی اپنے تن من دھن اور اپنی ساری شکتیوں کو سب کی امانت سمجھتا ہے . یہی انسانی ترقی یعنی مانو انتی کی اصلی راہ ہے . یہ اس لوک اور پرلوک دونوں کی بھلائی' خوشحالی اور بڑھوتی کی راہ ہے .

(रिजिस्ट नाट ईविल), और मन, बचन, और कर्म तीनों को पाक रखो. ईसा ने कहा है कि अमर जीवन हासिल करने के लिए यानी कामिल बनने के लिए सब पुराने राह दिखाने वाले यही उपदेश देते रहे हैं.

मोहम्मद साहब ने भी इस तरह के खजियों के लिये 'फ़ुक़्र' और 'सुक्र' यानी अपरिग्रह और संतोश का उपदेश दिया है. एक मशहूर हदीस है :—

अल फ़ुक़्रो फ़ख़री.

यानी मुझे अपनी फ़क़ीरी का अभिमान है.

वैदिक धर्म में सन्यासियों के लिए हुकुम है कि वह रुपये पैसे या धन को हाथ न लगावें.

हज़रत ईसा ने अपने चेलों को हुक्म दिया था कि वे "अपने थैलों में सोना, चांदी, या पीतल न रखें." लिखा है कि 'ईसा के पास कोई चीज़ या कोई जगह ऐसी नहीं थी जहां सिर धर कर लेट सके "

सेंट पीटर को जब किसी ने ईसाई धर्म के प्रचार के लिए धन देना चाहा तो उन्होंने यह कह कर लेने से इनकार कर दिया—"तेरा धन तेरे साथ ही नष्ट हो, क्योंकि तू समझता है कि ईश्वर का वरदान धन से खरीदा जा सकता है." (बाइबल).

यह सब रास्ता अपनी ख़ुदी को मिटाने और सबके अन्दर रमे हुए ख़ुदा को पहचानने का रास्ता है.

इस रास्ते में एक बड़ा डर यह है कि बीच में आदमी को अनोखी ताक़तें, करामात और ऋद्धि सिद्धि लुभाने जाती हैं और बहुत से लोग उन्हीं में फंस कर रह जाते हैं. इसके लिये एक सूफ़ी ने लिखा है :—

दरां मंज़िल बुअद कश्फ़ो करामात,
वले बायद गुज़श्तन ज़ां मुक़ामात
अगर दुनिया व उक़बा पेश आयद,
नज़र करदन दरां हरगिज़ न शायद
अगर गरदी तू दरे तौहीद फ़ानी
ब हक़ याबी बक़ाये ज़िन्दगानी

इस रास्ते में कश्फ़ और करामात यानी ऋद्धि सिद्धि मिलती हैं, लेकिन आदमी को चाहिये कि उनका छोड़ कर आगे बढ़ जाय. अगर लोक और परलोक दोनों उसके सामने आ जावें तब भी उसे चाहिये कि उनकी तरफ़ आंख उठा कर भी न देखे. अगर तू तौहीद यानी एक ईश्वर के अन्दर अपने को मिटा दे तो हक़ (अल्लाह) के अन्दर हमेशा के लिये अमर हो जाय.

योगसूत्र में, शंकराचार्य के शारीरिक भाश्य में, और भागवत तीनों में जगह जगह साफ़ साफ़ लिखा है कि योगी

(رزسٹ ناٹ ایول)' اور من' بچن' اور کرم تینوں کو پاک رکھو . عیسیٰ نے کہا ہے کہ امر جیون حاصل کرنے کے لئے یعنی کامل بننے کے لئے سب پرانے راہ دکھانے والے یہی اپدیش دیتے رہے ہیں .

محمد صاحب نے بھی اِس طرح کے کھوجیوں کے لئے 'فقر' اور 'سکت' یعنی اپری گرہ اور سنتوش کا اپدیش دیا ہے. ایک مشہور حدیث ہے :—

ال فقرو فخری

یعنی مجھے اپنی فقیری کا ابھیمان ہے .

ویدک دھرم میں سنیاسیوں کے لئے حکم ہے کہ وہ روپئے پیسے یا دھن کو ہاتھ نہ لگاویں .

حضرت عیسیٰ نے اپنی چیلوں کو حکم دیا تھا کہ وہ "اپنی تھیلوں میں سونا' چاندی' یا پیتل نہ رکھیں." لکھا ہے کہ "عیسیٰ کے پاس کوئی چیز یا کوئی جگہ ایسی نہیں تھی جہاں سر دھر کر لیٹ سکیں ."

سینٹ پیٹر کو جب کسی نے عیسائی دھرم کے پرچار کے لئے دھن دینا چاہا تو اُنہوں نے یہ کہہ کر لینے سے اِنکار کر دیا—"تیرا دھن تیرے ساتھ ہی نشٹ ہو' کیونکہ تو سمجھتا ہے کہ ایشور کا وردان دھن سے خریدا جا سکتا ہے ." (بائبل)

یہ سب راستہ اپنی خودی کو مٹانے اور سب کے اندر رمے ہوئے خدا کو پہچاننے کا راستہ ہے .

اِس راستے میں بڑا ڈر یہ ہے کہ بیچ میں آدمی کو انوکھی طاقتیں' کرامات اور ردھی سدھی لبھانے جاتی ہیں اور بہت سے لوگ اُنہیں میں پھنس کر رہ جاتے ہیں . اِس کے لئے ایک صوفی نے لکھا ہے :—

دراں منزل بود کشف و کرامات'
ولے باید گذشتن زاں مقامات
اگر دنیا و عقبیٰ پیش آید
نظر کردن دراں ہرگز نہ شاید
اگر گردی تو در توحید فانی
بہ حق یابی بقائے زندگانی

اِس راستے میں کشف اور کرامات یعنی ردھی سدھی ملتی ہیں' لیکن آدمی کو چاہئے کہ اُن کو چھوڑ کر آگے بڑھ جائے . اگر لوک اور پرلوک دونوں اُس کے سامنے آ جاویں تب بھی اُسے چاہئے کہ اُن کی طرف آنکھ اُٹھا کر بھی نہ دیکھے. اگر تو توحید یعنی ایک ایشور کے اندر اپنے کو مٹا دے تو حق (اللہ) کے اندر ہمیشہ کے لئے امر ہو جائے .

یوگ سوتر میں' شنکراچاریہ کے شاررک بھاشیہ میں' اور بھاگوت تینوں میں جگہ جگہ صاف صاف لکھا ہے کہ یوگی

दे दिये जायं. शील यानी नेकी ऐसी हो कि बड़ी बड़ी पीड़ा दी जाने पर भी आदमी नेकी से न हटे. इच्छा या कामना किसी छोटी से छोटी चीज़ की भी न रह गई हो, बुद्धि इतनी साफ़ हो कि सबके अन्दर की हक़ीक़त (यानी एक ही आत्मा) दिखाई देती हो, सबके भले के लिए सदा तन मन लगा रहे, मौत के सामने भी सचाई पर डटा रहे, बड़ी से बड़ी तकलीफ़ों में भी शान्ति बनी रहे, धीरज कभी भी हाथ से न जाय, सब पर दया और प्रेम रहे और निश्चल मन से दुनिया के चलते हुए चक्र को देखे.

इस तरह के नियमों की ग़रज़ यह होती है कि आदमी बाहर से हट कर अपने अंदर की तरफ़ मुड़े. इससे धीरे धीरे अदर की सोई हुई ताक़तें जागती हैं. दुनिया का सफ़र औरयहां से कूच का रास्ता आसान हो जाता है, अहंकार यानी ख़ुदी मिटती है, और आदमी धीरे धीरे अपने असली रूप को पहचान कर उसी म जा मिलता है. हर मज़हब की किताबों में इस तरह की ऊंची आत्माओं और इस तरह के कामिल लोगों के बयान मिलते हैं जिन्होंने धीरे धीरे इस रास्ते को तय किया है.

पातंजलि ने अपने योग सूत्रों में ऐसे खोजियों के लिये पांच यम और पांच नियम गिनाएं हैं. लिखा है कि :—

अहिंसा ! सत्य स्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहाः यमः
शौच संतोश तपः स्वाध्याय ईश्वरप्रणि धानानि नियमाः

अहिंसा यानी किसी जानदार को ईज़ा न पहुँचाना, सचाई, चोरी न करना यानी किसी तरह भी दूसरे का हक़ न लेना, ब्रह्मचर्य यानी नेक चलनी, अपरिग्रह यानी अपनी ज़रूरत से अधिक माल न जमा करना. ये पांच नियम हैं. और शौच यानी पानी, संतोश यानी क़नाअत, तप यानी अपने ऊपर क़ाबू, स्वाध्याय यानी अच्छी चीज़ें पढ़ना और ईश्वर प्रणिधान यानी अपने आपका पूरी तरह अल्लाह की मरज़ी पर छोड़ देना, ये पांच नियम हैं.

ईश्वर प्रणिधान का ही ठीक ठीक अनुवाद 'इसलाम' शब्द है. 'मुसलिम" के लफ़्ज़ी मानी हैं वह आदमी जिसने अपने आपको पूरी तरह ईश्वर की मरज़ी पर छोड़ दिया हो.

ईसा से जब किसी ने पूछा कि "अमर जीवन हासिल करने के लिए मैं और क्या करूं" तो उन्होंने जवाब दिया—"अगर तू कामिल होना चाहता है तो जो कुछ तेरे पास है सब ग़रीबों को दे डाल और फिर मेरे पीछे चल" (बाइबल) ठीक यही अपरिग्रह का मतलब है.

हिन्दू धर्म में इस रास्ते को योग, इसलाम में सलूक, और ईसाई धर्म में कम्युनियन विद् गौड कहा गया है.

ऐसे लोगों को हुकुम है कि सब प्राणियों को अभयदान दें. ईसा ने कहा है "बुराई का मुक़ाबला मत करो,"

دے دیئے جائیں. شیل یعنی نیکی ایسی ہو کہ بڑی بڑی پیڑا دی جانے پر بھی آدمی نیکی سے نہ ہٹے. اچھا یا کامنا کسی چھوٹی سے چھوٹی چیز کی بھی نہ رہ گئی ہو. بدھی اتنی صاف ہو کہ سب کے اندر کی حقیقت (یعنی ایک ہی آتما) دکھائی دیتی ہو، سب کے بھلے کے لئے سدا تن من لگا رہے، موت کے سامنے بھی سچائی پر ڈٹا رہے، بڑی سے بڑی تکلیفوں میں بھی شانتی بنی رہے، دھیرج کبھی ہاتھ سے نہ جائے، سب پر دیا اور پریم رہے اور نشچل من سے دنیا کے چلتے ہوئے چکر کو دیکھے.

اس طرح کے نیموں کی غرض یہ ہوتی ہے کہ آدمی باہر سے ہٹ کر اپنے اندر کی طرف مڑے. اس سے دھیرے دھیرے اندر کی سوئی ہوئی طاقتیں جاگتی ہیں. دنیا کا سفر اور یہاں سے کوچ کا راستہ آسان ہو جاتا ہے. اہنکار یعنی خودی مٹتی ہے، اور آدمی دھیرے دھیرے اپنے اصلی روپ کو پہچان کر اسی میں جا ملتا ہے. ہر مذہب کی کتابوں میں اس طرح کی اونچی آتماؤں اور اس طرح کے کامل لوگوں کے بیان ملتے ہیں جنہوں نے دھیرے دھیرے اس راستے کو طے کیا ہے.

پاتنجلی نے اپنے یوگ سوتروں میں ایسے کھوجیوں کے لئے پانچ یم اور پانچ نیم گنائے ہیں. لکھا ہے کہ :—

اہنسا ستیہ استیہ برہمچریاپری گراہاہ یماہ
شوچ سنتوش تپاہ سوادھیائے ایشور پرنی دھانانی نیماہ

اہنسا یعنی کسی جاندار کو ایذا نہ پہنچانا، سچائی، چوری نہ کرنا یعنی کسی طرح بھی دوسرے کا حق نہ لینا، برہمچریہ یعنی نیک چلنی، اپری گرہ یعنی اپنی ضرورت سے ادھک مال نہ جمع کرنا، یہ پانچ یم ہیں. اور شوچ یعنی پانی، سنتوش یعنی قناعت، تپ یعنی اپنے اوپر قابو، سوادھیائے یعنی اچھی چیزیں پڑھنا، اور ایشور پرنی دھان یعنی اپنے آپ کو پوری طرح اللہ کی مرضی پر چھوڑ دینا، یہ پانچ نیم ہیں.

ایشور پرنی دھان کا ہی ٹھیک ٹھیک انوواد 'اسلام' شبد ہے. 'مسلم' کے لفظی معنی ہیں وہ آدمی جس نے اپنے آپ کو پوری طرح ایشور کی مرضی پر چھوڑ دیا ہو.

عیسیٰ سے جب کسی نے پوچھا کہ "امر جیون حاصل کرنے کے لئے میں اور کیا کروں" تو انہوں نے جواب دیا— "اگر تو کامل ہونا چاہتا ہے تو جو کچھ تیرے پاس ہے سب غریبوں کو دے ڈال اور پھر میرے پیچھے چل." (بائبل) ٹھیک یہی اپری گرہ کا مطلب ہے.

ہندو دھرم میں اس راستے کو یوگ، اسلام میں سلوک، اور عیسائی دھرم میں کمیونین ود گاڈ کہا گیا ہے.

ایسے لوگوں کو حکم ہے کہ سب پرانیوں کو ابھے دان دیں. عیسیٰ نے کہا ہے "برائی کا مقابلہ مت کرو"

हज़रत मूसा की दस आज्ञाओं में से पांच यह हैं :—

किसी की जान मत लो, झूटी गवाही मत दो, चोरी मत करो, बदचलनी मत करो, अपने पड़ोसी के माल का लोभ मत करो.

हज़रत ईसा ने भी इन्हीं आज्ञाओं को दोहराया और बढ़ाया है.

इंजील में लिखा है :—लानत है उन पर जो सुबह उठते हैं और दिन में शराब पीते हैं (बाइबल, इसाया).

एक दूसरी जगह इंजील में लिखा है :—

मुसीबत किन पर आती है ? रंज किन्हें होता है ? झगड़े किन्हें करने पड़ते हैं ? बड़बड़ाना किन्हें पड़ता है ? बेकार घाव किन्हें लगते हैं ? आखें लाल किनकी होती हैं ? यह वह लोग हैं जो बैठ कर शराबें पीते हैं. इसलिये तुम शराब की लाली पर मत जाओ और शराब के प्याले से दिल न लगाओ. आख़िर में शराब सांप की तरह आदमी को डस लेती है. उसे अपने ज़हर से मार डालती है. (Bible Proverbs, 23-29-32).

क़ुरान में लिखा है :—

अल्लाह के बन्दों में से किसी को क़त्ल न करो, अल्लाह ने इसे मना किया है. सिवाय इन्साफ़ के लिये, झूट मत बोलो, जो आदमी या औरत चोरी करे उसके हाथ काट लेने चाहियें, शराब और नशे की चीज़ें शैतान की चालों में से हैं, जो लोग अपनी इंद्रियों पर क़ाबू रखते हैं और बदचलनी नहीं करते वही जीवन में सफल होते हैं.

यह पांच असूल जिन्हें मनु. बुद्ध, मूसा, ईसा, और मोहम्मद सबने ज़रूरी ठहराया है, मामूली गृहस्थों के लिये हैं. सन्यासियों, भिक्षुओं, योगियों, सालिकों, और फ़क़ीरों के लिये जो ऊंची रूहानी ज़िन्दगी बसर करना चाहते हैं, इससे और कड़े यम और नियम हैं ताकि वह लोगों की और अच्छी तरह सेवा कर सकें. इन्हें हिन्दू धर्म में यम, नियम, और इसलाम में ज़ोहद और रियाज़त कहा गया है और हर धर्मों में इनके दूसरे नाम हैं. असल में यह ऊपर के पांच नियमों के ही बढ़े हुए रूप हैं.

बौद्ध भिक्षुओं या श्रमनों के लिये यह पांच बातें भी ज़रूरी हैं :—

(1) सिवाय नियत समय के और कभी खाना नहीं खाना, (2) नाच, गाना, बजाना, और नाटक नहीं देखना, (3) फूल माला, इत्र फुलेल, और सजावट की चीज़ों से बचना, (4) ऊंचे आसन और गद्देदार जगहों पर नहीं बैठना, और (5) सोना, चांदी नहीं बरतना. यह पांच मिला कर दस शील हो जाते हैं. आगे चल कर इनमें और भी अधिक कड़ाई होती जाती है. बौद्ध ग्रन्थों में लिखा है :—

दान ऐसा दो कि यदि कोई प्रान भी मांगे तो उसे

حضرت موسیٰ کی دس آگیاؤں میں سے پانچ یہ ہیں:–

کسی کی جان مت لو، جھوٹی گواہی مت دو، چوری مت کرو، بدچلنی مت کرو، اپنے پڑوسی کے مال کا لوبھ مت کرو۔

حضرت عیسیٰ نے بھی انہیں آگیاؤں کو دوہرایا اور بڑھایا ہے۔

انجیل میں لکھا ہے :—

لعنت ہے ان پر جو صبح اٹھتے ہیں اور دن میں شراب پیتے ہیں (بائبل، اسایا)۔

ایک دوسری جگہ انجیل میں لکھا ہے :—

مصیبت کن پر آتی ہے؟ رنج کنھیں ہوتا ہے؟ جھگڑے کنھیں کرنے پڑتے ہیں؟ بڑبڑانا کنھیں پڑتا ہے؟ بیکار گھاؤ کنھیں لگتے ہیں؟ آنکھیں لال کن کی ہوتی ہیں؟ یہ وہ لوگ ہیں جو بیٹھکر شرابیں پیتے ہیں۔ اس لئے تم شراب کی لالی پر مت جاؤ اور شراب کے پیالے سے دل نہ لگاؤ۔ آخر میں شراب سانپ کی طرح آدمی کو ڈس لیتی ہے۔ اسے اپنے زہر سے مار ڈالتی ہے۔ (Bible Proverbs 23-29-32)

قرآن میں لکھا ہے :—

اللہ کے بندوں میں سے کسی کو قتل نہ کرو۔ اللہ نے اسے منع کیا ہے۔ سوائے انصاف کے لئے، جھوٹ مت بولو، جو آدمی یا عورت چوری کرے اس کے ہاتھ کاٹ لینے چاہئیں، شراب اور نشے کی چیزیں شیطان کی چالوں میں سے ہیں، جو لوگ اپنی اندریوں پر قابو رکھتے ہیں اور بد چلنی نہیں کرتے وہی جیون میں سپھل ہوتے ہیں۔

یہ پانچ اصول جنھیں منو، بدھ، موسیٰ عیسیٰ، اور محمد سب نے ضروری ٹھہرایا ہے، معمولی گرہستھوں کے لئے ہیں۔ سنیاسیوں، بھکشوؤں، یوگیوں، سالکوں اور فقیروں کے لئے جو اونچی روحانی زندگی بسر کرنا چاہتے ہیں، اس سے اور کڑے یم اور نیم ہیں تاکہ وہ لوگوں کی اور اچھی طرح سیوا کر سکیں۔ انھیں ہندو دھرم میں یم، نیم اور اسلام میں زہد اور ریاضت کہا ہے۔ اور ہر دھرموں میں ان کے دوسرے نام ہیں۔ اصل میں یہ اوپر کے پانچ نیموں کے ہی بڑھے ہوئے روپ ہیں۔

بودھ بھکشوؤں یا شرمنوں کے لئے یہ پانچ باتیں بھی ضروری ہیں :—

(1) سوائے نیت سمے کے اور کبھی کھانا نہیں کھانا، (2) ناچ، گانا بجانا اور ناٹک نہیں دیکھنا، (3) پھول مالا، عطر پھلیل، اور سجاوٹ کی چیزوں سے بچنا، (4) اونچے آسن اور گدے دار جگہوں پر نہیں بیٹھنا، اور (5) سونا، چاندی نہیں برتنا۔ یہ پانچ ملا کر دس شیل ہوجاتے ہیں۔ آگے چل کر ان میں اور بھی ادھک کڑائی ہوتی جاتی ہے۔ بودھ گرنتھوں میں لکھا ہے :—

دان ایسا دو کہ یدی کوئی پران بھی مانگے تو اسے

हिन्दू धर्म में मनु को सब से पहला राह दिखाने वाला माना जाता है. मनु ने जिसे आदमी का सामासिक धर्म बताया है वह वही है जिसे योगशास्त्र में पांच यम कह कर बयान किया गया है. उसी को बुद्ध ने पंच शील कहा है. यही पांच असूल मूसा की दस आज्ञाओं में हैं इन्हीं को हज़रत ईसा ने दोहराया. यही हमें क़ुरान में मिलते हैं. मनु-स्मृति में लिखा है :—

अहिंसा सत्यमस्तेयं
शौचं इन्द्रिय निग्रह
एतम् सामासिकम् धर्मम्,
चातुर्वर्ण्यें ब्रवीन्मनुः

यानी, अहिंसा (किसी को ईज़ा न पहुँचाना), सचाई, चोरी न करना, सफ़ाई और अपनी इन्द्रियां यानी नफ़्स को क़ाबू में रखना. यही थोड़े से शब्दों में मनु के अनुसार मनुष्य मात्र का धर्म है, चाहे वह किसी भी पेशे के हों.

बुद्ध ने हर आदमी के लिये धर्म के पांच असूल गिनाए हैं जिन्हें सर एडविन आरनाल्ड ने अपनी मशहूर, सुन्दर और अमर किताब "दी लाइट आफ एशिया" में इस तरह अनुवाद कर के बताया है :—

(1) किसी की जान मत लो ताकि ऐसा न हो किसी छोटी से छोटी चीज़ की उन्नति में भी तुम से रुकावट पड़ जावे, (2) झूटी गवाही मत दो. झूट मत बोलो, सचाई ही अन्दर की पवित्रता को ज़ाहिर करती है, किसी की निन्दा न करो, (3) लोगों से लेन देन करो पर लोभ, ज़बरदस्ती, या छल से किसी की चीज़ मत लो, (4) शराब और नशे की चीज़ों से बचो. इन से अक़ल ख़राब होती है, जिन लोगों के मन और तन साफ़ हैं उन्हें सोमरस की कोई ज़रूरत नहीं, (5) किसी स्त्री की तरफ़ बुरी निगाह से न देखो. आत्मा को ऊंचा रखने के यह ही पांच उपाय हैं.

जैन शास्त्रों में लिखा है :—

आदमी के लिए पांच व्रत यह हैं :—किसी की जान न लेना, झूट न बोलना, ज़बरदस्ती किसी की चीज़ न लेना, व्यभिचार यानी बदचलनी न करना, और अपनी असली आवश्यकता से अधिक माल अपने पास न रखना.

जैन ग्रन्थों में कहीं कहीं इनके साथ शराब, मांस और मधु का त्याग भी बताया गया है.

ज्ञानार्णव में लिखा है :—

किसी को मारना झूट बोलना, चोरी करना, बदचलनी और लोभ, इन पांचों को छोड़ देना और सबका भला चाहना, यही धर्म का सार है.

ہندو دھرم میں منو کو سب سے پہلا راہ دکھانے والا مانا جاتا ہے . منو نے جسے آدمی کا سامسک دھرم بتایا ہے وہ وہی ہے جسے یوگ شاستر میں پانچ یم کہکر بیان کیا گیا ہے . اسی کو بدھ نے پنچ شیل کہا ہے . یہی پانچ اصول موسیٰ کی دس آگیاؤں میں ہیں . انہیں کو حضرت عیسیٰ نے دوہرایا . یہی ہمیں قرآن میں ملتے ہیں . منو اسمرتی میں لکھا ہے :—

اہنسا ستیہ مستیم
شوچم اندریہ نگرہ
ایتم سامسکم دھرمم
چاترورنیے بروین منو

یعنی، اہنسا (کسی کو ایذا نہ پہونچانا)، سچائی، چوری نہ کرنا، صفائی اور اندریوں یعنی نفس کو قابو میں رکھنا، یہی تھوڑے سے شبدوں میں منو کے انوسار منوشیہ ماتر کا دھرم ہے، چاہے وہ کسی بھی پیشے کے ہوں .

بدھ نے ہر آدمی کے لئے دھرم کے پانچ اصول گنائے ہیں جنہیں سر ایڈون آرنالڈ نے اپنی مشہور، سندر اور امر کتاب " دی لائٹ آف ایشیا " میں اس طرح انوواد کر کے بتایا ہے :—

(1) کسی کی جان مت لو تاکہ ایسا نہ ہو کسی چھوٹی سے چھوٹی چیز کی اُنتی میں بھی تم سے رکاوٹ پڑ جاوے، (2) جھوٹی گواہی مت دو، جھوٹ مت بولو، سچائی ہی اندر کی پوترتا کو ظاہر کرتی ہے، کسی کی نندا نہ کرو، (3) لوگوں سے لین دین کرو پر لوبھ، زبردستی یا چھل سے کسی کی چیز مت لو، (4) شراب اور نشے کی چیزوں سے بچو . ان سے عقل خراب ہوتی ہے، جن لوگوں کے من اور تن صاف ہیں انہیں سوم رس کی کوئی ضرورت نہیں، (5) کسی استری کی طرف بری نگاہ سے نہ دیکھو . آتما کو اونچا رکھنے کے یہ ہی پانچ اپائے ہیں .

جین شاستروں میں لکھا ہے :—

آدمی کے لئے پانچ برت یہ ہیں :— کسی کی جان نہ لینا، جھوٹ نہ بولنا، زبردستی کسی کی چیز نہ لینا، ویبھچار یعنی بدچلنی نہ کرنا، اور اپنی اصلی آوشیکتا سے ادھک مال اپنے پاس نہ رکھنا .

جین گرنتھوں میں کہیں کہیں ان کے ساتھ شراب مانس اور مدھو کا تیاگ بھی بتایا گیا ہے .

گیانارنو میں لکھا ہے :—

کسی کو مارنا، جھوٹ بولنا، چوری کرنا، بدچلنی اور لوبھ، ان پانچوں کو چھوڑ دینا اور سب کا بھلا چاہنا، یہی دھرم کا سار ہے .

भक्ति यानी इश्क़ का रास्ता

(डाक्टर भगवानदास)

भक्ति मार्ग यानी इश्क़ की राह कोई अलग राह नहीं है. आदमी की ज़िन्दगी में ज्ञान यानी "मारफ़त" इच्छा यानी ख़्वाहिश, और काम यानी अमल, तीनों साथ साथ चलते हैं. उन्हें एक दूसरे से बिलकुल अलग नहीं किया जा सकता. केवल समझने की आसानी के लिए हम इन्हें अलग अलग बयान करते हैं. भक्ति का सम्बन्ध आदमी की इच्छा, उसके दिल के भावों और जज़बों से है भक्ति, प्रेम, यानी इश्क़ एक तरफ़ आत्मा को ऊंचा उठाता है और दूसरी तरफ़ दिल की गहराइयों को साफ़ कर के उनमें उजाला पैदा करता है. इसी से आदमी का सदाचार मंझता और उभरता है.

ज्ञान को अगर हम आदमी का सिर कहें तो प्रेम आदमी का दिल है, और अमल आदमी के हाथ पैर हैं. इन तीनों को मिला कर ही पूरा आदमी बनता है साधारन मानव प्रेम, जिसे इश्क़ मजाज़ी कहते हैं, जीवन में आनन्द पैदा करता है. यह मानव प्रेम भगवद् भक्ति का जिसे ब्रह्मानंद या इश्क़े हक़ीक़ी कहा जाता है केवल एक अक्स है. इसलिए भगवद् भक्ति या इश्क़े इलाही ही सुख का असली स्रोत है.

दुनिया भर की साइन्स और इल्म, अगर उसके साथ दिल की ऊंचाई और गहराई न हो तो ऐसा ही है जैसा बे पानी का रेगिस्तान या वह रूखे नगे पहाड़ जिन पर कोई हरियाली न हो. साइन्स बिना प्रेम के केवल एक मुरदा लाश है, एक सुन्दर शरीर जिसमें रूह या जान नदारद. ज्ञान की जब प्रेम के साथ शादी रची जाती है तभी वह दोनों मिल कर एक शरीर बनते हैं. तभी उनसे अच्छे अच्छे कामों के बच्चे पैदा होते हैं. इन दोनों में से हर एक दूसरे के बिना अधूरा है. साइन्स के साथ जब तक प्रेम और परोपकार का मेल न हो तब तक सच्ची बुद्धि पैदा नहीं हो सकती. इनका मेल होने पर ही आदमी में अक़्ल सलीम जागती है. इस मेल से ही असली मानव धर्म, यानी मज़हबे इनसानियत जनम लेता है. इस धर्म को हम अपने अन्दर जगा लें तो दुनिया भर की नेमतें अपने आप हमारे पैरों पर आ गिरें. इसके बिना ज़िन्दगी बेकार और बांझ है.

सब धर्म मज़हबों में आदमी के लिए इख़लाक़ या सदाचार के जो नियम बताए गए हैं वह सब इसीलिये एक से हैं क्योंकि वह ज्ञान और प्रेम के इसी मेल से निकले हैं और इसी पर क़ायम हैं.

بھکتی یعنی عشق کا راستہ

(ڈاکٹر بھگوان داس)

بھکتی مارگ یعنی عشق کی راہ کوئی الگ راہ نہیں ہے ۔ آدمی کی زندگی میں گیان یعنی " معرفت " اِچھا یعنی خواہش، اور کام یعنی عمل، تینوں ساتھ ساتھ چلتے ہیں ۔ انہیں ایک دوسرے سے بالکل الگ نہیں کیا جا سکتا ۔ کیول سمجھنے کی آسانی کے لئے ہم اِنہیں الگ الگ بیان کرتے ہیں ۔ بھکتی کا سمبندھ آدمی کی اِچھا اُس کے دل کے بھاوؤں اور جذبوں سے ہے ۔ بھکتی، پریم، یعنی عشق ایک طرف آتما کو اونچا اُٹھاتا ہے اور دوسری طرف دل کی گہرائیوں کو صاف کر کے اُن میں اُجالا پیدا کرتا ہے ۔ اِسی سے آدمی کا سداچار منجھتا اور اُبھرتا ہے ۔

گیان کو اگر ہم آدمی کا سر کہیں تو پریم آدمی کا دل ہے، اور عمل آدمی کے ہاتھ پیر ہیں ۔ اِن تینوں کو ملا کر ہی پورا آدمی بنتا ہے ۔ سادھارن مانو پریم، جسے عشق مجازی کہتے ہیں، جیون میں آنند پیدا کرتا ہے ۔ یہ مانو پریم بھگود بھکتی کا جسے برہمانند یا عشق حقیقی کہا جاتا ہے کیول ایک عکس ہے ۔ اِس لئے بھگود بھکتی یا عشق اِلٰہی ہی سکھ کا اصلی سوت ہے ۔

دنیا بھر کی سائنس اور علم، اگر اُس کے ساتھ دل کی اُونچائی اور گہرائی نہ ہو تو ایسا ہی ہے جیسا بے پانی کا ریگستان یا وہ روکھے ننگے پہاڑ جن پر کوئی ہریالی نہ ہو ۔ سائنس بنا پریم کے کیول ایک مردہ لاش ہے، ایک سندر شریر جس میں روح یا جان ندارد ۔ گیان کی جب پریم کے ساتھ شادی رچی جاتی ہے تبھی وہ دونوں مل کر ایک شریر بنتے ہیں ۔ تبھی اُن سے اچھے اچھے کاموں کے بچے پیدا ہوتے ہیں ۔ اِن دونوں میں سے ہر ایک دوسرے کے بنا ادھورا ہے ۔ سائنس کے ساتھ جب تک پریم اور پروپکار کا میل نہ ہو تب تک سچی بدھی پیدا نہیں ہو سکتی ۔ اِن کا میل ہونے پر ہی آدمی میں عقل سلیم جاگتی ہے ۔ اِس میل سے ہی اصلی مانو دھرم، یعنی مذہب انسانیت جنم لیتا ہے ۔ اِس دھرم کو ہم اپنے اندر جگا لیں تو دنیا بھر کی نعمتیں اپنے آپ ہمارے پیروں پر آ گریں ۔ اِس کے بنا زندگی بیکار اور بانجھ ہے ۔

سب دھرم مذہبوں میں آدمی کے لئے اخلاق یا سداچار کے جو نیم بتائے گئے ہیں وہ سب اس لئے ایک سے ہیں کیونکہ وہ گیان اور پریم کے اِسی میل سے نکلے ہیں اور اِسی پر قائم ہیں ۔

जिल्द 14 जून, सन '53 नम्बर 6

جلد 14 جون، سن '53 نمبر 6

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

कैसा ?

जब दो नहीं हैं तुम हम तो विसाले यार कैसा ?
हूँ तुझ में मैं समाया तब इन्तज़ार कैसा ?

जब रू बरू हैं दोनों, जब दू बदू हैं दोनों
वादा क़रार कैसा ? और एतबार कैसा ?

दिल में चुभन भी फिर क्यों तीरे नज़र नहीं जब
जब है नहीं जिगर ही, तो जिगर पे वार कैसा ?

अब किस लिये नसीहत और क्या रही फ़ज़ीहत
अब राज़दार कैसा ? और ग़मगुसार कैसा ?

मरना तो ज़िन्दगी है मरना मेरी तरक़्क़ी
सौ बार क्यों न हो वह, अब एक बार कैसा ?

ज़िन्दा था मैं तो मुरदा, थी आपकी मुहब्बत
अब यह समाधि कैसी ? और यह मज़ार कैसा ?

—भगवानदीन

کیسا ؟

جب دو نہیں ہیں تم ہم تو وصال یار کیسا ؟
ہوں تجھ میں میں سمایا تب اِنتظار کیسا ؟

جب روبرو ہیں دونوں، جب دوبدو ہیں دونوں
وعدہ قرار کیسا ؟ اور اعتبار کیسا ؟

دل میں چبھن بھی پھر کیوں تیر نظر نہیں جب
جب ہے نہیں جگر ہی، تو جگر پہ وار کیسا ؟

اب کس لئے نصیحت اور کیا رہی فضیحت
اب راز دار کیسا ؟ اور غم‌گسار کیسا ؟

مرنا تو زندگی ہے مرنا مری ترقی
سو بار کیوں نہ ہو وہ، اب ایک بار کیسا ؟

زندہ تھا میں تو مردہ، تھی آپ کی محبت
اب یہ سمادھی کیسی ؟ اور یہ مزار کیسا ؟

—بھگوان‌دین

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچہ

जून 1953 جون

क्या किससे — सफ़ा

کس سے — صفحہ

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने .

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, [illegible]

قیمت ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے ۔

مینیجر
'نیا ہند'
[illegible]

एडीटर — ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ्फ़र हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

ایڈیٹر — تاراچند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندرلال

नायब एडीटर — सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب ایڈیٹر — سریش رام بھائی، مجیب رضوی

* * * * *

हमारी राय

ہماری رائے

जून 1953 جون

नई किताब

हज़रत मुहम्मद और इस्लाम

लेखक—सुन्दरलाल

इस किताब का पहला एडीशन 1941 में निकला था. देश ने उसका स्वागत किया और जल्दी वह ख़त्म हो गया. दूसरे एडीशन की मांग अर्से से हो रही थी. पर वह अब ही मुमकिन हो सका है.

इस एडीशन को पंडित सुन्दरलाल जी एहतियात के साथ देख गये हैं बहुत बुज़ुर्गों और साथियों की क़ीमती राय और सुझावों से इस में फ़ायदा उठाया गया है. नये एडीशन की ख़ास बात यह है कि इस किताब के शुरू में पंडित बिशम्भरनाथ ने दस सफ़े का एक गम्भीर और वज़नदार नोट यानी आमुख लिखा है

इस किताब से इस्लाम की असली तालीम और उसके बुनियादी उसूलों की जानकारी हासिल होने के साथ साथ हज़रत मुहम्मद की सीधी सच्ची और बेमिसाल ज़िन्दगी—एक ऐसी ज़िन्दगी जिसने सदियों से लाखों करोड़ों के जीवन को रौशन किया है—की झलक मिलती है इससे पता चलेगा कि किस तरह हज़रत मुहम्मद ने न सिर्फ़ अरब जैसे दक़यानूसी और फ़िरका परस्त देश की काया पलट दी बल्कि एक नये धर्म, एक नये राज और एक नई तहज़ीब को जन्म दिया

हमें यक़ीन है कि पहले एडीशन की तरह इसकी भी काफ़ी मांग होगी और पढ़ने वाले इससे फ़ायदा उठायेंगे.

सुन्दर जिल्द, बढ़िया डबल डिमाई काग़ज़ पर छपे, 160 सफ़े, कई तसवीरों और नक्शों के साथ किताब का दाम सिर्फ़ तीन रुपया.

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

نئی کتاب

حضرت محمد اور اسلام

لیکھک—سندر لال

اس کتاب کا پہلا ایڈیشن سن 1941 میں نکلا تھا. دیش نے اس کا سواگت کیا اور جلدی وہ ختم ہوگیا. دوسرے ایڈیشن کی مانگ عرصے سے ہو رہی تھی. پر وہ اب ہی ممکن ہو سکا ہے.

اس ایڈیشن کو پنڈت سندر لال جی احتیاط کے ساتھ دیکھ گئے ہیں. بہت سے بزرگوں اور ساتھیوں کی قیمتی رائے اور سجھاؤوں سے اس میں فائدہ اٹھایا گیا ہے. نئے ایڈیشن کی خاص بات یہ ہے کہ اس کتاب کے شروع میں پنڈت بشمبھر ناتھ نے دس صفحے کا ایک گمبھیر اور وزندار نوٹ یعنی آمکھ لکھا ہے.

اس کتاب سے اسلام کی اصلی تعلیم اور اس کے بنیادی اصولوں کی جانکاری ہونے کے ساتھ ساتھ حضرت محمد کی سیدھی سچی اور بے مثال زندگی—ایک ایسی زندگی جس نے صدیوں سے لاکھوں کروڑوں کے جیون کو روشن کیا ہے—کی جھلک ملتی ہے. اس سے پتہ چلےگا کہ کس طرح حضرت محمد نے نہ صرف عرب جیسے دقیانوسی اور فرقہ پرست دیش کی کایا پلٹ دی بلکہ ایک نئے دھرم، ایک نئے راج اور ایک نئی تہذیب کو جنم دیا.

ہمیں یقین ہے کہ پہلے ایڈیشن کی طرح اس کی بھی کافی مانگ ہوگی اور پڑھنے والے اس سے فائدہ اٹھائیں گے.

سندر جلد، بڑھیا ڈبل ڈیمائی کاغذ پر چھپے 160 صفحے، کئی تصویروں اور نقشوں کے ساتھ کتاب کا دام صرف تین روپیہ.

ملنے کا پتہ—
مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج الہ آباد.

Printed and Published ...

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

1. मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये कितावों, अखबारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख्वाजा, वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़ गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास, सेक्रेटरी - पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मज़हर अली सोख्ता, श्री बी० जी० खेर, प० विशम्भर नाथ महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के कायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताब लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں.

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا.

—:٠:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ، وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق. گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس: سکریٹری—پنڈت سندرلال.

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر مظہر علی سوختہ، شری بی جی کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے—

سندرلال

سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی،

145 مٹھی گنج، الہ آباد.

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا. الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے

हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें / ہمارے یہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں

नोट:—यह किताबें सिर्फ हिन्दी में हैं / نوٹ :— یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں۔

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1. शेर ओ शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئلیی	1. شعر و شاعری
2. शेर ओ सुखन	„	8	0	0	„	2. شعر و سخن
3. गहरे पानी पैठ	„	2	8	0	„	3. گہرے پانی پیٹھ
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. ہمارے آرادھیہ
5. संस्मरण	„	3	0	0	„	5. سنس مرن
6. दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8. पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پتھ چنہ
9. पंथ प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم . اے	9 پنتھ پردیپ
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنہیالال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.	5	0	0	شری ویریندر کمار جین ایم . اے	11. مکتی دوت
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14. मेरे बापू	श्री तन्मय बुखारिया	2	8	0	شری تنمے بخاریا	14. میرے باپو
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال، بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला	5	0	0	شری بھگوان داس کیلا	16. بھارتیہ ارتھ شاستر
17. भारतीय शासन	„	3	0	0	„	17. بھارتیہ شاسن
18. नागरिक शास्त्र	„	2	4	0	„	18. ناگرک شاستر
19. साम्राज्य और उनका पतन	„	2	8	0	„	19. سامراج اور ان کا پتن
20. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन	„	1	4	0	„	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	„	1	8	0	„	21. سرودے ارتھ ووستھا
22. हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	22. ہماری آدم جاتیاں
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم . اے. ایل ایل . بی . گجادھر پرساد، امبشٹ، بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. راشٹر منڈل شاسن
26. जवानी	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانی
27. मारने की हिम्मत !	„	1	0	0	„	27. مارنے کی ہمت
28. सलोना सच	„	0	8	0	„	28. سلونا سچ
29. मेरे साथी	„	1	0	0	„	29. میرے ساتھی

मिलने का पता— / ملنے کا پتہ—

फ़िरक़ाबन्दी पर बापू

सम्पादक—श्री श्रीकृष्ण दास

इस पुस्तक में 1921 से सन 1948 तक गांधी जी ने साम्प्रदायिता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब आपको एक जगह मिलेगा.

भारत के आज़ाद होने पर यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हर भारतवासी साम्प्रदायिकता के नुक़सानों को समझे और इस ज़हर को अपने अन्दर से साफ़ करे.

सुन्दर जिल्द. अच्छा काग़ज़. दो सौ सफ़े. क़ीमत दो रुपया.

فرقہ بندی پر باپو

سمپادک—شری شریکرشن داس

اس پستک میں سن 1921 سے سن 1948 تک گاندھی جی نے سامپردایکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا لکھا وہ سب آپکو ایک جگہ ملیگا۔

بھارت کے آزاد ہونے پر یہ اور بھی ضروری ہو گیا ہے کہ ہر بھارت واسی سامپردایکتا کے نقصان کو سمجھے اور اس زہر کو اپنے اندر سے صاف کرے۔

سندر جلد۔ اچھا کاغذ۔ دو سو صفحے۔ قیمت دو روپیہ۔

भाषा

लेखक—लाला मदन गोपाल

हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी की तकरार पर एक बे लाग राय इस किताब में आपको मिलेगी. राष्ट्र भाषा के सवाल में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई-बहन को इस किताब के पढ़ने से फ़ायदा होगा—सोचने की राहें सूझेंगी, जानकारी बढ़ेगी और तरह तरह की तंग नज़रियां मिटेंगी.

क़रीब सवा सौ सफ़े की सुन्दर किताब, दाम डेढ़ रुपया

بھاشا

لیکھک—لالہ مدن گوپال

ہندی اردو اور ہندستانی کی تکرار پر ایک بے لاگ رائے اس کتاب میں آپ کو ملے گی۔ راشٹر بھاشا کے سوال میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کو اس کتاب کے پڑھنے سے فائدہ ہوگا—سوچنے کی راہیں سوجھیں گی، جانکاری بڑھے گی اور طرح طرح کی تنگ نظریاں مٹیں گی۔

قریب سوا سو صفحے کی سندر کتاب، دام ڈیڑھ روپیہ۔

700 PAGES,
32 ILLUSTRATION
2 COLOURED MAPS

"CHINA TODAY"

BY PANDIT SUNDARLAL

PRICE
Rs. 7 8 0

A vivid narration of the glorious and wonderful achievements of New China...A picture of China which is both convincing and authentic...the best book that has come out so far on New China in the English language ...the most objective in approach and comprehensive in treatment. —**National Herald, Lucknow.**

Highly infomative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserves to be widely known. —**Leader, Allahabad.**

Encyclopaedic...characterized by acute observation of detail as well as by...instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China. —**Blitz, Bombay.**

A mine of information which gives a picture of China as nothing else dose...the best guide to New China...Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it. —**Bharat Jyoti, Bombay**

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs. —**Indian Express, Madras**

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men and matter... brings to light the mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations for a tomorrow which is theirs. —**Vigil, Delhi.**

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

गीता और क़ुरान

इस किताब में हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों के मेल की बातें, गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दौरे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक वर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिए ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

لیکھک—پنڈت سندر لال

گیتا اور قرآن

اِس کتاب میں هندو دھرم اور اِسلام دونوں کے میل کی باتیں، گیتا کا بڑپن، گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ، قرآن کا بڑپن، لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آئتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے ۔

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ہے ۔

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ، ڈاک خرچ الگ ۔

هندو مسلم ایکتا

اِس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ھیں جو پنڈت جی نے کنسیلیئٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے ۔

سو صفحے کی کتاب ۔ قیمت صرف بارہ آنے ۔

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذھبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج، جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ھمارے بیچ میں نہ رھنے دیا ۔

قیمت بارہ آنے ۔

پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے

مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے دورے کے بعد وھاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک ورنن، اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ھیں ۔ قیمت چار آنے

بنگال اور اُس سے سبق

اِس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ھے اور ایسے جھگڑوں کو ھمیشہ کےلئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ھے ۔ قیمت صرف دو آنے ۔

ملنے کا پتہ—

منیجر 'نیا ھند' 145 مٹھی گنج' الہ باد ۔

हैं. आइज़नहावर के भाषण का संबन्ध बैंकिंग कमेटी की इसी सिफ़ारिश से है. इस तरह बात साफ़ हो जाती है कि इस सुझाव के पीछे भी अमरीका का स्वार्थ काम कर रहा है. चाहे सुलह हो या न हो दुनिया की "रचना और विकास" के नाम पर एक फ़न्ड ज़रूर खोला जायगा और एक बैंक भी चालू होगा. इसका हम सब को यक़ीन होना चाहिये. इस फ़न्ड का प्रचार बेहद किया जायगा और यह साबित करने की और भ्रम पैदा करने की कोशिश की जायगी कि रूस दुनिया की "रचना और विकास" नहीं चाहता.

अब शान्ति का नाटक खेलने से काम नहीं चलेगा. हथियार की दौड़ बहुत हो चुकी! लगातार भय और चिन्ता की ज़िन्दगी बहुत हो चुकी! आदमियों का ख़ून बहुत हो चुका! अब समय आ गया है कि अमरीका, रूस, चीन, बरतानिया और फ़्रान्स मिल कर एक सुलहनामा करें, अपनी अपनी फ़ौजें घटायें, ऐटम बम पर पाबन्दी लगायें. जनरल आइज़नहावर रूस से शान्ति की क़ीमत मांगने के बजाय अगर इस बात का ऐलान करें कि वह शान्ति की क्या क़ीमत देना चाहते हैं तो दुनिया का भला हो सकता है, असलियत को सामने रख कर क़दम उठाने की ज़रूरत है आज दुनिया की सारी जनता यह महसूस करती है कि चीन को यूनो की मेम्बरी मिलने पर दूर पूरब के काफ़ी झगड़े ख़तम हो सकते हैं. क्या अमरीका इस बात के लिये तैयार है, क्या वह चीन को मानता देगा, क्या वह दुनिया की जनता की आशाओं को पूरा करेगा. चीन को मानता देना अमरीका के नेक इरादों का सबूत होगा, अमरीका का सम्मान बढ़ाएगा. हमारी अमरीकी जनता से अपील है कि वह अपने शासकों को सच्ची शान्ति की तरफ़ क़दम उठाने पर मजबूर करे और उनके धोके में न आए!

15. 5. '53 —मुजीब रिज़वी

ھیں . آئزن ھاور کے بھاشن کا سمبندھ بینکنگ کمیٹی کی اِسی سفارش سے ھے . اِس طرح بات صاف ھو جاتی ھے کہ اِس سجھاو کے پیچھے بھی امریکہ کا سوارتھ کام کر رھا ھے . چاھے صلح ھو یا نہ ھو دنیا کی "رچنا اور وکاس" کے نام پر ایک فنڈ ضرور کھولا جائے گا اور ایک بینک بھی چالو ھوگا . اِس کا ھم سب کو یقین ھونا چاھئے . اِس فنڈ کا پرچار بے حد کیا جائے گا اور یہ ثابت کرنے کی اور بھرم پیدا کرنے کی کوشش کی جائے گی کہ روس دنیا کی "رچنا اور وکاس" نہیں چاھتا .

اب شانتی کا ناٹک کھیلنے سے کام نہیں چلے گا . ھتھیار کی دوڑ بہت ھو چکی ! لگاتار بھے اور چنتا کی زندگی بہت ھو چکی ! آدمیوں کا خون بہت ھو چکا ! اب سمے آگیا ھے کہ امریکہ، روس، چین، برطانیہ اور فرانس مل کر ایک صلحنامہ کریں، اپنی اپنی فوجیں گھٹائیں ایٹم بم پر پابندی لگائیں . جنرل آئزن ھاور روس سے شانتی کی قیمت مانگنے کے بجائے اگر اِس بات کا اعلان کریں کہ وہ شانتی کی کیا قیمت دینا چاھتے ھیں تو دنیا کا بھلا ھو سکتا ھے . اصلیت کو سامنے رکھکر قدم اٹھانے کی ضرورت ھے . آج دنیا کی ساری جنتا یہ محسوس کرتی ھے کہ چین کو یونو کی ممبری ملنے پر دور پورب کے کافی جھگڑے ختم ھو سکتے ھیں . کیا امریکہ اِس بات کے لئے تیار ھے، کیا وہ چین کو مانتا دے گا، کیا وہ دنیا کی جنتا کی آشاؤں کو پورا کرے گا . چین کو مانتا دینا امریکہ کے نیک ارادوں کا ثبوت ھوگا، امریکہ کا سمان بڑھائے گا . ھماری امریکی جنتا سے اپیل ھے کہ وہ اپنے شاسکوں کو سچی شانتی کی طرف قدم اٹھانے پر مجبور کرے اور اُن کے دھوکے میں نہ آئے !

15 . 5 . '53 — مجیب رضوی

हथियार बनेंगे और ज़ियादा सपलाई होगी. ट्रूमैन ने सुरक्षा के लिये 76 सौ मिलयन डालर रखा था और आइज़नहावर ने उसे घटा कर 58 सौ मिलयन डालर कर दिया है. इस बात को मिस्टर टेबर ने साफ़ कर दिया है कि पिछली रक़म बेहद बाक़ी है और बिना फ़ौजी कामों में कोई कमी करे फ़ौज का बजट 58 सौ मिलयन डालर से आसानी से 40 सौ मिलयन डालर किया जा सकता है. इससे साफ़ मालूम हो जाता है कि नई रक़म लेने के बजाय आइज़नहावर ने पुरानी रक़म का इस्तेमाल किया है और इस कटौती से उन्होंने शान्ति की तरफ़ कोई क़दम नहीं उठाया.

दूसरे देशों को जो सहायता अमरीका देता है उसका अमरीका के लिये बहुत महत्व है. इसके बिना अमरीका के साथी उसे छोड़ देंगे. दूसरी बात यह भी है कि अमरीका ने अपने साथियों को ऐसा बना दिया है कि वह बिना उस की सहायता के ज़िन्दा भी नहीं रह सकते. इस तरह यह सवाल उठता है कि अमरीका ने सहायता कोश में कमी क्यों की ? हम पहले बता चुके हैं कि वायदा पूर्ति के लिये ऐसा किया गया है और अमरीकी शासक परिस्थिति को पूरी तरह जानते हैं. अमरीकी सेनेट की बैंकिंग कमेटी ने इस समस्या का एक हल सुझाया है—"दूसरे राष्ट्रों को जो सहायता हम देते रहे हैं उसके बजाय अब हमें चाहिये कि हम विदेशों में रचनात्मक कामों के लिये अपना धन लगाएं. लेकिन हमारे धन को सुविधाएं मिलनी चाहिये." इसी बात को सामने रख कर माली सहायता बन्द करने की चेतावनी योरप के देशों को दी गई है. लेकिन अमरीका वाले जानते हैं कि यह राष्ट्र बिना मदद के नहीं चल सकते. इस कारन से यह देश मजबूर हो कर अमरीकी धन को अपने देश में आने देंगे और उन्हें शर्मनाक से शर्मनाक शरतें मनज़ूर करनी पड़ेंगी.

इसी कमेटी ने कहा है कि नौ महीने में पांच लाख पचास हज़ार डालर का अन्तर राष्ट्री व्योपार होना ज़रूरी है......नहीं तो माली व्यवस्था ख़राब हो जायगी और कमयुनिज़्म को बढ़ने का मौक़ा मिलेगा. इस कमेटी ने सिफ़ारिश की है कि अमरीका का अन्तर राष्ट्री व्योपार बढ़ाने के लिये इम्पोर्ट और एक्सपोर्ट बैंक खोले जायं और ऐसे ढंग निकाले जायं जिससे अमरीका ज़ियादा से ज़ियादा धन विदेशों में लग सके.

अमरीकी सीनेट की बैंकिंग कमेटी ने ज़ोर दिया है कि परिस्थिती सुधारने के लिये यह ज़रूरी है कि "रचना और विकास" के लिये अन्तरराष्ट्री बैंक खोला जाय. हमने ऊपर लिखी बातें पूरी बात साफ़ करने के लिये कही

ھتھیار بنیں گے اور زیادہ سپلائی ھوگی . ٹرومین نے سرکھا کے لئے 76 سو ملین ڈالر رکھا تھا اور آئزن ھاور نے اسے گھٹا کر 58 سو ملین ڈالر کر دیا ھے . اِس بات کو مسٹر ٹیبر نے صاف کر دیا ھے کہ پچھلی رقم بے حد باقی ھے اور بنا فوجی کاموں میں کوئی کمی کرے فوج کا بجٹ 58 سو ملین ڈالر سے آسانی سے 40 سو ملین ڈالر کیا جا سکتا ھے . اِس سے صاف معلوم ھو جاتا ھے کہ نئی رقم لینے کے بجائے آئزن ھاور نے پرانی رقم کا استعمال کیا ھے اور اِس کٹوتی سے اُنھوں نے شانتی کی طرف کوئی قدم نہیں اٹھایا .

دوسرے دیشوں کو جو سہائتا امریکہ دیتا ھے اُس کا امریکہ کے لئے بہت مہتو ھے . اِس کے بنا امریکہ کے ساتھی اُسے چھوڑ دیں گے . دوسری بات یہ بھی ھے کہ امریکہ نے اپنے ساتھیوں کو ایسا بنا دیا ھے کہ وہ بنا اُس کی سہائتا کے زندہ بھی نہیں رہ سکتے . اِسطرح یہ سوال اٹھتا ھے کہ امریکہ نے سہائتا نِدھی میں کمی کیوں کی ؟ ھم پہلے کہہ چکے ھیں کہ وعدہ پورتی کے لئے ایسا کیا گیا ھے اور امریکی شاسک پرستھتی کو پوری طرح جانتے ھیں . امریکی سینیٹ کی بینکنگ کمیٹی نے اِس سمسیا کا ایک حل سجھایا ھے —" دوسرے راشٹروں کو جو سہائتا ھم دیتے رھے ھیں اُس کے بجائے اب ھمیں چاھئے کہ ھم ودیشوں میں رچناتمک کاموں کے لئے اپنا دھن لگائیں . لیکن ھمارے دھن کو سودھائیں ملنی چاھئیں ." اِسی بات کو سامنے رکھکر مالی سہائتا بند کرنے کی چیتاونی یورپ کے دیشوں کو دی گئی ھے . لیکن امریکہ والے جانتے ھیں کہ یہ راشٹر بنا مدد کے نہیں چل سکتے . اِس کارن سے یہ دیش مجبور ھو کر امریکی دھن کو اپنے دیش میں آنے دیں گے اور اُنھیں شرمناک سے شرمناک شرطیں منظور کرنی پڑیں گی .

اِسی کمیٹی نے کہا ھے کہ نو مہینے میں پانچ لاکھ پچاس ھزار ڈالر کا انتر راشٹری بیوپار ھونا ضروری ھے...... نہیں تو مالی ویوستھا خراب ھو جائے گی اور کمیونزم کو بڑھنے کا موقع ملے گا . اِس کمیٹی نے سفارش کی ھے کہ امریکہ کا انتر راشٹری بیوپار بڑھانے کے لئے امپورٹ اور اکسپورٹ بینک کھولے جائیں اور ایسے ڈھنگ نکالے جائیں جس سے امریکہ کا زیادہ سے سے زیادہ دھن ودیشوں میں لگ سکے .

امریکی سینیٹ کی بینکنگ کمیٹی نے زور دیا ھے کہ پرستھتی سدھارنے کے لئے یہ ضروری ھے کہ " رچنا اور وکاس" کے لئے انتر راشٹری بینک کھولا جائے . ھم نے اوپر لکھی باتیں پوری بات صاف کرنے کے لئے کہی

शान्ति का हल निकालें. इसमें दो राय नहीं हो सकतीं कि मिल कर बैठने और नेकनियती से बातचीत करने से कुछ न कुछ हल निकल ही आता है. लेकिन न जाने क्यों अमरीका इस बातचीत से दूर भागता है और जो कोई भी उसे यह नेक सलाह देता है उसको बुरी नजर से देखता है. मिस्टर चर्चिल ने यह सुझाव रखा है कि पांच बड़ी शक्तियों के दरमियान बातचात शुरू की जाय. इस सुझाव को ले कर चर्चिल साहब की अमरीका में ले दे मची हुई है. अमरीका में काफ़ी इस बात पर गुस्सा जाहिर किया गया है. अमरीका का कहना है कि जब यूनो का चारटर मौजूद है तब पांच बड़ों की बैठक की क्या ज़रूरत है. यूनो के चारटर की मौजूदगी ठीक है लेकिन यह भी दुनिया जानती है कि इस चारटर की मौजूदगी में ही दुनिया आज इस हालत को पहुँच गई है. इस वजह से ज़रूरी है कि पांच बड़ों की बात चीत शुरू की जाय और अमरीका रूस और चीन के साथ अछूतों का सा बरताव करना छोड़ दे.

तीसरा भाग

आइज़नहावर की तक़रीर का तीसरा हिस्सा वह है जिसमें उन्होंने सुझाव रखा है कि दुनिया की ग़रीबी के खिलाफ़ लड़ाई छेड़ी जाय. इसके लिये उनका सुझाव है कि एक फ़ंड खोला जाय जिस में इस नेक काम के लिये दुनिया की सारी सरकारें रक़म जमा करें. इरादा बहुत नेक है. लेकिन यह सुझाव नया नहीं है. दो साल पहले हिन्दुस्तान ने ऐसा सुझाव रखा था और उस समय अमरीका ने उसे ठुकरा दिया था. सवाल उठता है कि क्या आज अमरीका की नियत बदल गई है ? तह में जाने पर बात साफ़ हो जाती है. आइज़नहावर ने चुनाव के समय अमरीकी जनता से बहुत से वायदे किये थे उन वायदों में से एक वायदा यह भी था कि अमरीका में वह इनकम टैक्स कम करायंगे, क़ीमतें घटायंगे और शासन का खर्च कम करेंगे.

आइज़नहावर ने इनकम टैक्स में कमी के सवाल को यह कह कर टाल दिया है कि जून 1954 तक ऐसा मुमकिन नहीं है. लेकिन इस साल के बजट में उन्होंने 85 सौ मिलयन डालर की कटौती की है यह कटौती ज़ियादातर सुरक्षा पर खरच होने वाली रक़म में से और विदेशों को मिलने वाली सहायता कोश में से की गई है. इसका कारन यह है कि रिपबलिकन पारटी वाले डेमाक्रेटों को इन्हीं मदों को ले कर फ़जूल खर्च और निकम्मा बताते आए थे. लेकिन सवाल उठता है कि इस कटौती से हथियार बन्दी पर कोई असर पड़ेगा या नहीं ? हथियार बन्दी में कमी होने के बजाय स्कीम यह कि 53-54 में ज़ियादा

شانتی کا حل نکالیں. اس میں دو رائیں نہیں ہوسکتیں کہ مل کر بیٹھنے اور نیک نیتی سے بات چیت کرنے سے کچھ نہ کچھ حل نکل ہی آتا ہے . لیکن نہ جانے کیوں امریکہ اس بات چیت سے دور بھاگتا ہے اور جو کوئی بھی اسے یہ نیک صلاح دیتا ہے اسکو بری نظر سے دیکھتا . ہے مسٹر چرچل نے یہ سجھاؤ رکھا ہے کہ پانچ بڑی شکتیوں کے درمیان بات چیت شروع کی جائے . اس سجھاؤ کو لے کر چرچل صاحب کی امریکہ میں لے دے مچی ہوئی ہے . امریکہ میں کافی اس بات پر غصہ ظاہر کیا گیا ہے . امریکہ کا کہنا ہے کہ جب یونو کا چارٹر موجود ہے تب پانچ بڑوں کی بیٹھک کی کیا ضرورت ہے . یونو کے چارٹر کی موجودگی ٹھیک ہے لیکن یہ بھی دنیا جانتی ہے کہ اس چارٹر کی موجودگی میں ہی دنیا آج اس حالت کو پہونچ گئی ہے . اس وجہ سے ضروری ہے کہ پانچ بڑوں کی بات چیت شروع کی جائے اور امریکہ روس اور چین کے ساتھ اچھوتوں کا سا برتاؤ کرنا چھوڑ دے .

تیسرا بھاگ

آئزن ھاور کی تقریر کا تیسرا حصہ وہ ہے جس میں انہوں نے سجھاؤ رکھا ہے کہ دنیا کی غریبی کے خلاف لڑائی چھیڑی جائے . اس کے لئے اُن کا سجھاؤ ہے کہ ایک فنڈ کھولا جائے جس میں اس نیک کام کے لئے دنیا کی ساری سرکاریں رقم جمع کریں . ارادہ نیک ہے . لیکن یہ سجھاؤ نیا نہیں ہے . دو سال پہلے ھندستان نے ایسا سجھاؤ رکھا تھا اور اُس سمے امریکہ نے اُسے ٹھکرا دیا تھا . سوال اُٹھتا ہے کہ کیا آج امریکہ کی نیت بدل گئی ہے ؟ تہہ میں جانے پر بات صاف ہو جاتی ہے . آئزن ھاور نے چناؤ کے سمے امریکی جنتا سے بہت سے وعدے کئے تھے . اُن وعدوں میں سے ایک وعدہ یہ بھی تھا کہ وہ امریکہ میں انکم ٹیکس کم کرائیں گے، قیمتیں گھٹائیں گے اور شاسن کا خرچ کم کریں گے . آئزن ھاور نے انکم ٹیکس میں کمی کے سوال کو یہ کہکر ٹال دیا ہے کہ جون 1954 تک ایسا ممکن نہیں ہے . لیکن اس سال کے بجٹ میں انہوں نے 85 سو ملین ڈالر کی کٹوتی کی ہے . یہ کٹوتی زیادہ تر سرکشا پر خرچ ہونے والی رقم میں سے اور ودیشوں کو ملنے والی سہائتا کوش میں سے کی گئی ہے . اسکا کارن یہ ہے کہ ریپبلکن پارٹی والے ڈیماکریٹوں کو انہیں مدوں کو لے کر فضول خرچ اور نکما بتاتے آئے تھے. سوال اُٹھتا کہ اس کٹوتی سے ہتھیار بندی پر کوئی اثر پڑے گا یا نہیں؟ ہتھیار بندی میں کمی ہونے کے بجائے اسکیم یہ ہے کہ 53-54 میں زیادہ

ने साफ़ कहा है कि पच्छिम वाले लड़ाई में ऐटम बम भी इस्तेमाल करेंगे और उन्होंने ऐटमी हथियारों के इस्तेमाल के लिये फ़ौजों की ट्रेनिंग पर जोर दिया है पच्छिम वालों ने रूस के खिलाफ़ जो फ़ौजी गुट खड़ा किया है उसका नाम नेटो रखा है. नेटो में इस समय चौदह राष्ट्र हैं और इसका नेता अमरीका है जो वक़्त पड़ने पर इन राष्ट्रों की मरज़ी के खिलाफ़ भी नेटो की फ़ौजों को लड़ाई में भेज सकता है. नेटो की फ़ौज 37 लाख से बढ़ कर अब 70 लाख हो गई है. नये नये हथियारों से यह फ़ौज लैस है. इसके पास बेहद हवाई अड्डे हैं. यह भी बात नोट करने के क़ाबिल है कि एक तरफ़ अमरीका सुलह की बात कर रहा है और दूसरी तरफ़ नेटो का सत्तर हज़ार मिलयन डालर का बजट पास किया गया है जो पिछले सालों के मुक़ाबले में बहुत ज़ियादा है. नेटो वालों का कहना है कि वह लम्बे प्रोग्राम को सामने रख कर इतनी रक़म ख़रच कर रहे हैं. ज़ाहिर बात है कि अमरीका वालों का ख़ाली यह कहना कि यह फ़ौजें रूस पर हमला करने के लिये नहीं हैं रूसियों को तसल्ली नहीं दे सकता !

अमरीका वाले यह भी मांग करते हैं कि रूस मलाया और हिन्द चीन में चलने वाले आज़ादी के आन्दोलनों को रुकवा दे. ज़ाहिर बात है कि रूस की शक्ति से यह बात बाहर है. न उसमें शक्ति ही है और न उसे अधिकार ही है. यहां की लड़ाइयां तभी रुक सकती हैं कि जब सामराजी ताक़तें इन देशों को छोड़ दें.

डलेस साहब कहते हैं कि जब तक कमयुनिस्ट इन देशों से ख़तम नहीं होंगे तब तक शान्ति नहीं हो सकती. सवाल उठता है कि यह कमयुनिस्ट कौन हैं ? क्या रूसी लोग इन देशों में लड़ाई चला रहे हैं और अमरीका की बात मान कर वह यहां से चले जायं. बरतानिया के ज़िम्मेदार आदमी इस बात से साफ़ इनकार करते हैं. उनका कहना है कि कोई भी रूसी इन देशों में नहीं है. फिर क्या चीन वाले वहां लड़ाई चला रहे हैं ? इस बात का भी कोई सबूत नहीं है. ख़ुद अमरीका का कहना है कि चीनी सिपाही इन देशों में नहीं हैं. फिर आख़िर यह कमयुनिस्ट कौन हैं जिनसे डलेस साहब मलाया और हिन्द चीन को ख़ाली कराना चाहते हैं. अगर यह कमयुनिस्ट इन्हीं देशों की सन्तान हैं तो उन्हें हक़ है कि वह अपने देश में रहें और जैसी चाहें सरकार बनाएं. अमरीका या किसी विदेशी राष्ट्र को दख़ल देने का कोई हक़ नहीं है. लेकिन अमरीका इस अधिकार को एशिया के देशों के लिये नहीं मानता !

आइज़नहावर के बयान में कहीं भी इस बात का ज़िकर नहीं आया कि दोनों पक्षों के नेता मिल बैठ कर के

نے صاف کہا ہے کہ پچھم والے لڑائی میں ایٹم بم بھی استعمال کریں گے اور انہوں نے ایٹمی ہتھیاروں کے استعمال کے لئے فوجوں کی ٹریننگ پر زور دیا ہے ۔ پچھم والوں نے روس کے خلاف جو فوجی گٹ کھڑا کیا ہے اس کا نام نیٹو رکھا ہے ۔ نیٹو میں اس سمے چودہ راشٹر ہیں اور اس کا نیتا امریکہ ہے جو وقت پڑنے پر ان راشٹروں کی مرضی کے خلاف بھی نیٹو کی فوجوں کو لڑائی میں بھیج سکتا ہے ۔ نیٹو کی فوج 37 لاکھ سے بڑھکر اب 70 لاکھ ہوگئی ہے ۔ نئے نئے ہتھیاروں سے یہ فوج لیس ہے ۔ اس کے پاس بے حد ہوائی اڈے ہیں ۔ یہ بھی بات نوٹ کرنے کے قابل ہے کہ ایک طرف امریکہ صلح کی بات کر رہا ہے اور دوسری طرف نیٹو کا 70 ہزار ملین ڈالر کا بجٹ پاس کیا گیا ہے جو پچھلے سالوں کے مقابلے میں بہت زیادہ ہے ۔ نیٹو والوں کا کہنا ہے کہ وہ لمبے پروگرام کو سامنے رکھ کر اتنی رقم خرچ کر رہے ہیں ۔ ظاہر بات ہے کہ امریکہ والوں کا خالی یہ کہنا کہ یہ فوجیں روس پر حملہ کرنے کے لئے نہیں ہیں روسیوں کو تسلی نہیں دے سکتا !

امریکہ والے یہ بھی مانگ کرتے ہیں کہ روس ملایا اور ہند چین میں چلنے والے آزادی کے آندولنوں کو رکوا دے ۔ ظاہر بات ہے کہ روس کی شکتی سے یہ بات باہر ہے ۔ نہ اس میں شکتی ہی ہے اور نہ اسے ادھیکار ہی ہے ۔ یہاں کی لڑائیاں تبھی رک سکتی ہیں کہ جب سامراجی طاقتیں ان دیشوں کو چھوڑ دیں ۔

ڈلس صاحب کہتے ہیں کہ جب تک کمیونسٹ ان دیشوں سے ختم نہیں ہونگے تب تک شانتی نہیں ہو سکتی ۔ سوال اٹھتا ہے کہ یہ کمیونسٹ کون ہیں ؟ کیا روسی لوگ ان دیشوں میں لڑائی چلا رہے ہیں اور امریکہ کی بات مان کر وہ یہاں سے چلے جائیں ۔ برطانیہ کے ذمےدار آدمی اس بات سے صاف انکار کرتے ہیں ۔ ان کا کہنا ہے کہ کوئی بھی روسی ان دیشوں میں نہیں ہے ۔ پھر کیا چین والے وہاں لڑائی چلا رہے ہیں ؟ اس بات کا بھی کوئی ثبوت نہیں ہے ۔ خود امریکہ کا کہنا ہے کہ چینی سپاہی ان دیشوں میں نہیں ہیں ۔ پھر آخر یہ کمیونسٹ کون ہیں جن سے ڈلس صاحب ملایا اور ہند چین کو خالی کرانا چاہتے ہیں ۔ اگر یہ کمیونسٹ انہیں دیشوں کی سنتان ہیں تو انہیں حق ہے کہ وہ اپنے دیش میں رہیں اور جیسی چاہیں سرکار بنائیں ۔ امریکہ یا کسی ودیشی راشٹر کو دخل دینے کا کوئی حق نہیں ہے ۔ لیکن امریکہ اس ادھیکار کو ایشیا کے دیشوں کے لئے نہیں مانتا !

آئزن ہاور کے بیان میں کہیں بھی اس بات کا ذکر نہیں آیا کہ دونوں پکشوں کے نیتا مل بیٹھکر کے

स्टाफ़ का चीफ़ मुक़र्रर किया गया है. रेडफ़ोर्ड जनरल मैकआर्थर के विचारों के आदमी हैं. इनका निश्चय है कि जापान और फ़ारमोसा की फ़ौजों का इस्तेमाल लड़ाई में किया जाय, चीन पर पूरी तरह चढ़ाई की जाय और उसे फिर से ग़ुलाम बनाया जाय. एक तरफ़ सुलह की बात भी हो और दूसरी तरफ़ लड़ाई की तैयारी भी हो यह बात समझ में नहीं आती.

दुनिया जानती है कि पूरबी योरप के देशों में कमयुनिस्ट राज क़ायम है और इन देशों की जनता माली और समाजी हैसियत से काफ़ी तरक़्क़ी कर रही है. लेकिन अमरीका वाले कहते हैं कि यह राष्ट्र ग़ुलाम हैं. सोचने की बात है कि इन राष्ट्रों में रूस की कोई फ़ौज नहीं है, रूस इन देशों में अपना गवरनर जनरल मुक़र्रर नहीं करता, यह राष्ट्र रूस के विधान और उसके प्रधान को नहीं मानते. लेकिन फिर भी अमरीका की नज़र में यह राष्ट्र रूस के ग़ुलाम हैं. लेकिन अजीब मज़ाक़ है कि अमरीका को मलाया, हिन्द चीन, जापान, थाई लैंड, अरब देश केनिया, टियूनेशिया, मराको सभी राष्ट्र आज़ाद दिखाई पड़ते हैं ! अमरीका ने शर्त रखी है कि सुलह तभी हो सकती है जब रूस पूरबी योरप को आज़ाद करे. यानी रूस पहले यह माने कि यह देश उसके ग़ुलाम हैं न रूस यह बात स्वीकार कर सकता है और न यह राष्ट्र इस अपमान को बरदाश्त कर सकते हैं. दूसरी तरफ़ डलेस साहब का कहना है कि ''पूरबी योरप की उस जनता को हम साफ़ बता देना चाहते हैं जो ग़ुलाम बना ली गई है कि हम उसकी ग़ुलामी को तारीख़ का स्थाई फ़ैसला नहीं मानते.'' लेकिन दुख है कि मलाया, हिन्द चीन, अफ़रीक़ा के करोड़ों इनसानों की ग़ुलामी को डलेस साहब तारीख़ का स्थाई फ़ैसला मानते हैं और कभी भूल कर भी इन देशों की जनता की आज़ादी का ज़िकर वह नहीं करते. रूस का एतराज़ यही रहा है कि अमरीका वाले उसे और उसकी विचार धारा के लोगों को चैन से नहीं बैठने देते. यह लोग उन मुल्कों में बग़ावत फैलाते हैं और एक भय का वातावरन तैयार करते रहते हैं. डलेस साहब के बयान से इन एतराज़ों की असलियत का सबूत मिलता है.

मिस्टर चर्चिल ने ठीक कहा है कि पच्छिम वाले इस बात को ज़ोरों से कहते हैं कि रूस उन पर हमला कर देगा और इसी भय के कारन वह फ़ौजें बढ़ाते जाते हैं लेकिन कभी यह नहीं सोचते कि रूस को भी उन से डर है. आइज़नहावर ने इस डर को मिटाने की कोई बात अपने भाषन में नहीं कही. डर ख़तम करने के बजाय रूस को और डराने की बात की गई है. हाल में जनरल रिजवे

اسٹاف کا چیف مقرر کیا گیا ہے ۔ ریڈفورڈ جنرل میک آرتھر کے وچاروں کے آدمی ہیں ۔ ان کا نشچے ہے کہ جاپان اور فارموسا کی فوجوں کا استعمال لڑائی میں کیا جائے، چین پر پوری طرح چڑھائی کی جائے اور اسے پھر سے غلام بنایا جائے ۔ ایک طرف صلح کی بات بھی ہو اور دوسری طرف لڑائی کی تیاری بھی ہو یہ بات سمجھ میں نہیں آتی ۔

دنیا جانتی ہے کہ پوربی یورپ کے دیشوں میں کمیونسٹ راج قائم ہے اور ان دیشوں کی جنتا مالی اور سماجی حیثیت سے کافی ترقی کر رہی ہے ۔ لیکن امریکہ والے کہتے ہیں کہ یہ راشٹر غلام ہیں ۔ سوچنے کی بات ہے کہ ان راشٹروں میں روس کی کوئی فوج نہیں ہے، روس ان دیشوں میں اپنا گورنر جنرل مقرر نہیں کرتا، یہ راشٹر روس کے ودھان اور اس کے پردھان کو نہیں مانتے ۔ لیکن پھر بھی امریکہ کی نظر میں یہ راشٹر روس کے غلام ہیں ۔ لیکن عجیب مذاق ہے کہ امریکہ کو ملایا، ہند چین، جاپان، تھائی لینڈ، عرب دیش کینیا، ٹیونیشیا، مراکو سبھی راشٹر آزاد دکھائی پڑتے ہیں! امریکہ نے شرط رکھی ہے کہ صلح تبھی ہو سکتی ہے جب روس پوربی یورپ کو آزاد کرے ۔ یعنی روس پہلے یہ مانے کہ یہ دیش اس کے غلام ہیں ۔ نہ روس یہ بات سویکار کر سکتا ہے اور نہ یہ راشٹر اس اپمان کو برداشت کر سکتے ہیں ۔ دوسری طرف ڈلس صاحب کا کہنا ہے کہ " پوربی یورپ کی اس جنتا کو ہم صاف بتا دینا چاہتے ہیں جو غلام بنا لی گئی ہے کہ ہم اس کی غلامی کو تاریخ کا استھائی فیصلہ نہیں مانتے ۔" لیکن دکھ ہے کہ ملایا، ہند چین، افریقہ کے کروڑوں انسانوں کی غلامی کو ڈلس صاحب تاریخ کا استھائی فیصلہ مانتے ہیں اور کبھی بھول کر بھی ان دیشوں کی جنتا کی آزادی کا ذکر وہ نہیں کرتے ۔ روس کا اعتراض یہی رہا ہے کہ امریکہ والے اسے اور اس کی وچار دھارا کے لوگوں کو چین سے نہیں بیٹھنے دیتے ۔ یہ لوگ ان ملکوں میں بغاوت پھیلاتے ہیں اور ایک بھے کا واتاورن تیار کرتے رہتے ہیں ۔ ڈلس صاحب کے بیان سے ان اعتراضوں کی اصلیت کا ثبوت ملتا ہے ۔

مسٹر چرچل نے ٹھیک کہا ہے کہ پچھم والے اس بات کو زوروں سے کہتے ہیں کہ روس ان پر حملہ کر دے گا اور اسی بھے کے کارن وہ فوجیں بڑھاتے جاتے ہیں لیکن کبھی یہ نہیں سوچتے کہ روس کو بھی ان سے ڈر ہے ۔ آئزن ہاور نے اس ڈر کو مٹانے کی کوئی بات اپنے بھاشن میں نہیں کہی ۔ ڈر ختم کرنے کے بجائے روس کو اور ڈرانے کی بات کی گئی ہے ۔ حال میں جنرل رجوے

के कम्युनिस्टों की रक्षा न करेगा......हमने बरतानिया, फ़्रान्स और दूसरी सरकारों से बात की है कि कम्युनिस्ट चीन के खिलाफ़ व्योपारी नाकाबन्दी को सख़्ती से अमल में लाया जाय. यह सरकारें अपने उन जहाज़ों को रोकने के लिये जो ज़रूरी सामान और ईंधन चीन ले जाते हैं अमली क़दम उठा रही हैं. दूसरे देशों के जहाज़ों को भी रोका जा रहा है कि वह चीनी जहाज़ों के लिये ईंधन और दूसरे ज़रूरी सामान न ढोयें......" चीन संबन्धी अमरीका के इस रुख़ में कोई फ़रक नहीं आया बल्कि अमल में तेज़ी आ गई है. 13 मई को फ़िनलैंड का एक जहाज़ दस हज़ार टन जहाज़ में इस्तेमाल होने वाला ईंधन लेकर चीन जा रहा था. अमरीका ने रास्ते में उसे भारी रक़म दे कर ख़रीद लिया है और अपने फ़ौजी अड्डों को भेज दिया है.

यह बात आज साफ़ है कि बिना चीन के पूरबी एशिया में सुलह नहीं हो सकती. लेकिन फिर भी अमरीका चीन से सुलह करना नहीं चाहता. इस से साफ़ नतीजा यह निकलता है कि वह सुलह का नाटक खेलना चाहता है लेकिन सुलह करना नहीं चाहता वह इस बात का दावा ज़रूर करता है कि हर राष्ट्र को अधिकार है कि वह जिस तरह की भी सरकार चाहे अपने देश में क़ायम करे लेकिन वह इस दावे को अमल में नहीं मानता.

आइज़नहावर को शुरू से यह पालिसी रही है कि योरप में लड़ाई न छेड़ कर एशिया में ख़ून ख़राबा किया जाय और एशिया वालों को आपस में लड़ाया जाय. इस पालिसी को कामयाब बनाने की तरफ़ जो क़दम अमरीका ने उठाया है उसका ज़िकर करते हुए मिस्टर डलेस ने कहा है—"दूर पूरब की समस्याओं को दूसरे सवालों पर तरजीह दी गई है. यह बात साफ़ कर दी गई है कि अमरीका इस भयानक परिस्थिती को समझता है जिसका सामना पूरब के हमारे मित्रों जापान, कोरिया और फ़ारमोसा से लेकर हिन्द चीन और मलाया तक सभी को करना पड़ रहा है. यह बात भी साफ़ कर दी गई है कि इस मुसीबत का मुक़ाबला एक लगन, एक विचार और बढ़ते हुए सहयोग से ही किया जा सकता है......" अमल से भी यह बात साबित है कि अमरीका इस तरफ़ फ़ौज की एक दीवार खड़ी कर रहा है और इन सब देशों में चलने वाले आज़ादी के आन्दोलनों को कुचलने की लिये हथियार भेज रहा है. यही नहीं, उसने एशिया में लड़ाई चलाने के लिये अपने ज्वाइन्ट चीफ़ आफ़ आफ़ स्टाफ़ भी बदल दिया है. पहले इस स्टाफ़ में उन जनरैलों का बहुमत था जो योरपी रन-नीति से पूरी जानकारी रखते थे लेकिन नये स्टाफ़ में उन लोगों का बहुमत रखा गया है जो एशियाई रन-नीति के माहर हैं. जनरल उमर ब्रैडले की जगह रेडफ़ोर्ड को जनरल

کے کمیونسٹوں کی رکھشا نہ کرےگا......ہم نے برطانیہ' فرانس اور دوسری سرکارں سے بات کی ہے کہ کمیونسٹ چین کے خلاف بیوپاری ناکہ بندی کو سختی سے عمل میں لیا جائے. یہ سرکاریں اپنے اُن جہازوں کو روکنے کے لئے جو ضروری سامان اور ایندھن چین لے جاتے ہیں عملی قدم اُٹھا رہی ہیں . دوسرے دیشوں کے جہازوں کو بھی روکا جا رہا ہے کہ وہ چینی جہازوں کےلئے ایندھن اور دوسرے ضروری سامان نہ ڈھوئیں...." چین سمبندھی امریکہ کے اِس رخ میں کوئی فرق نہیں آیا بلکہ عمل میں تیزی آ گئی ہے. 13 مئی کو فن‌لینڈ کا ایک جہاز دس ہزار ٹن جہاز میں استعمال ہونے والا ایندھن لے کر چین جا رہا تھا. امریکہ نے راستے میں اُسے بھاری رقم دے کر خرید لیا اور اپنے فوجی اڈوں کو بھیج دیا ہے .

یہ بات آج صاف ہے کہ بنا چین کے پوربی ایشیا میں صلح نہیں ہوسکتی لیکن پھر بھی امریکہ چین سے صلح نہیں کرنا چاہتا. اِس سے صاف نتیجہ یہ نکلتا ہے کہ وہ صلح کا ناٹک کھیلنا چاہتا ہےلیکن صلح کرنا نہیں چاہتا. وہ اِس بات کا دعویٰ ضرور کرتا ہے کہ ہر راشٹر کو ادھیکار ہے کہ وہ جس طرح کی بھی سرکار چاہے اپنے دیش میں قائم کرے لیکن وہ اِس دعوے کو عمل میں نہیں مانتا .

آئزن‌ھاور کی شروع سے یہ پالیسی رہی ہے کہ یورپ میں لڑائی نہ چھیڑ کر ایشیا میں خون خرابہ کیا جائے اور ایشیا والوں کو آپس میں لڑایا جائے . اِس پالیسی کو کامیاب بنانے کی طرف جو قدم امریکہ نے اُٹھایا ہے اُس کا ذکر کرتے ہوئے مسٹر ڈلس نے کہا ہے—"دور پورب کی سمسیاؤں کو دوسرے سوالوں پر ترجیح دی گئی ہے. یہ بات صاف کر دی گئی ہے کہ امریکہ اس بھیانک پرستھتی کو سمجھتا ہے جس کا سامنا پورب کے ہمارے متروں جاپان' کوریا اور فارموسا سے لے کر ہند چین اور ملایا تک سبھی کو کرنا پڑ رہا ہے . یہ بات بھی صاف کر دی گئی ہے کہ اِس مصیبت کا مقابلہ ایک لگن' ایک وچار اور بڑھتے ہوئے سہیوگ سے ہی کیا جاسکتا ہے......" عمل سے بھی یہ بات ثابت ہے کہ امریکہ اِس طرف فوج کی ایک دیوار کھڑی کر رہا ہے اور اِن سب دیشوں میں چلنے والے آزادی کے آندولنوں کو کچلنے کے لئے ہتھیار بھیج رہا ہے . یہی نہیں' اُس نے ایشیا میں لڑائی چلانے کے لئے اپنا جوائنٹ چیف آف اسٹاف بھی بدل دیا ہے . پہلے اِس اسٹاف میں اُن جنرلوں کا بہومت تھا جو یورپی رن‌نیتی سے پوری جانکاری رکھتے تھے لیکن نئے اسٹاف میں اُن لوگوں کا بہومت رکھا گیا ہے جو ایشیائی رن نیتی کے ماہر ہیں. جنرل عمر بریڈلے کی جگہ ریڈفورڈ کو جنرل

प्रेसीडेन्ट आइज़न हावर दुनिया के दिल पर अपनी नेक नियती का सिक्का जमा लेते और दुनिया में फ़ौरन शान्ति क़ायम हो सकती अगर वह असलियत को सामने रखकर नीचे लिखी बातें कहते.

(1) कोरिया में फ़ौरन जंग बन्द की जाय और सब विदेशी फ़ौजें देश से बाहर चली जायं. शान्ति का वातावरन क़ायम करके दक्खिन और उत्तर कोरिया में सुलह कराने की कोशिश की जाय और रूस, चीन, अमरीका और इंगलैंड मिल कर एक साथ, एक लगन से इस नेक काम का भार उठायें.

(2) यूनो में नई चीनी सरकार को उचित स्थान मिले और चांग काई शेक को नये चीन के खिलाफ़ मदद देना अमरीका और यूनो बन्द कर दें.

(3) मलाया को पूरी आज़ादी दी जाय और अंगरेज़ मलाया को छोड़ दें.

(4) हिन्द चीन और टियूनेसिया से फ़्रानसीसी अपना क़ब्ज़ा हटा लें.

(5) जापान से अमरीका अपनी फ़ौजें हटा ले और वहां 604 फ़ौजी अड्डे ख़तम कर दिये जायं.

(6) हथियार बन्दी की दौड़ ख़तम कर दी जाय और नेटो (N.A.T.O.) के नाम से जो फ़ौजें योरप में बढ़ाई जा रही हैं उन्हें कम किया जाय. अमरीका ने जो फ़ौजी अड्डे रूस के चारों तरफ़ बनाए हैं उन्हें ख़तम कर दिया जाय.

(7) ईरान और मिस्र के जायज़ अधिकार को माना जाय और स्वेज़ नहर से अंगरेज़ी फ़ौजें हट जायं.

(8) अफ़रीक़ा में नसली भेद भाव का ख़ातमा किया जाय.

यही नहीं कि इन बातों का ज़िकर नहीं किया गया बल्कि इन बातों पर बाद में वह राय ज़ाहिर की गई है जिसके आधार पर सुलह की बात कहते कहते और भी कड़वाहट पैदा होने और शक शुबह बढ़ने की संभावना है. अमरीकी एडीटरों की उसी सभा में 18 अप्रैल को बोलते हुए मिस्टर डलेस ने कहा है—"चीन की नेशनलिस्ट सरकार से हमारे संबन्ध बहुत बेहतर हो गए हैं. फ़ारमोसा में हमारा एक राजदूत है. फ़ारमोसा सरकार को जो फ़ौजी सहायता मिलनी चाहिये थी वह हमारे ज़िम्मे बाक़ी थी. अब हम वह सहायता तेज़ी के साथ फ़ारमोसा को दे रहे हैं सातवें जंगी बेड़े को जो आदेश दिये गये थे उन्हें प्रेसीडेन्ट आइज़नहावर ने बदल दिया है. अब यह बेड़ा फ़ारमोसा की हिफ़ाज़त तो करेगा लेकिन चीन

پریسیڈنٹ آئزن‌ہاور دنیا کے دل پر اپنی نیک نیتی کا سکہ جما لیتے اور دنیا میں فوراً شانتی قائم ہوسکتی اگر وہ اصلیت کو سامنے رکھ کر نیچے لکھی باتیں کہتے :

(1) کوریا میں فوراً جنگ بند کی جائے اور سب ودیشی فوجیں دیش سے باہر چلی جائیں . شانتی کا واتاورن قائم کرکے دکھن اور اُتر کوریا میں صلح کرانے کی کوشش کی جائے اور روس، چین، امریکہ اور انگلینڈ مل کر ایک ساتھ، ایک لگن سے اس نیک کام کا بھار اُٹھائیں .

(2) یونو میں نئی چینی سرکار کو اُچت استھان ملے اور چانگ کائی شیک کو نئے چین کے خلاف مدد دینا امریکہ اور یونو بند کردیں .

(3) ملایا کو پوری آزادی دی جائے اور انگریز ملایا کو چھوڑ دیں .

(4) ہند چین اور ٹیونیشیا سے فرانسیسی اپنا قبضہ ہٹالیں .

(5) جاپان سے امریکہ اپنی فوجیں ہٹا لے اور وہاں 604 فوجی اڈے ختم کردئے جائیں .

(6) ہتھیار بندی کی دوڑ ختم کر دی جائے اور نیٹو (N. A. T. O.) کے نام سے جو فوجیں یورپ میں بڑھائی جا رہی ہیں انہیں کم کیا جائے. امریکہ نے جو فوجی اڈے روس کے چاروں طرف بنائیں ہیں انہیں ختم کر دیا جائے .

(7) ایران اور مصر کے جائز ادھیکار کو مانا جائے اور سوئز نہر سے انگریزی فوجیں ہٹ جائیں .

(8) افریقہ میں نسلی بھید بھاؤ کا خاتمہ کیا جائے.

یہی نہیں کہ ان باتوں کا ذکر نہیں کیا گیا بلکہ ان باتوں پر بعد میں وہ رائے ظاہر کی گئی ہے جس کے آدھار پر صلح کی بات کہتے کہتے اور بھی کڑواہٹ پیدا ہونے اور شک شبہ بڑھنے کی سمبھاونا ہے . امریکی ایڈیٹروں کی اسی سبھا میں 18 اپریل کو بولتے ہوئے مسٹر ڈلس نے کہا ہے—" چین کی نیشنلسٹ سرکار سے ہمارے سمبندھ بہت بہتر ہوگئے ہیں . فارموسا میں ہمارا ایک راجدوت ہے. فارموسا سرکار کو جو فوجی سہائتا ملنی چاہئے تھی وہ ہمارے ذمے باقی تھی. اب ہم وہ سہائتا تیزی کے ساتھ فارموسا کو دے رہے ہیں . ساتویں جنگی بیڑے کو جو آدیش دئے گئے تھے انہیں پریسیڈنٹ آئزن‌ہاور نے بدل دیا ہے . اب یہ جنگی بیڑا فارموسا کی حفاظت تو کرے گا لیکن چین

होता है. शायद अमरीका ने रूस को इस सुलह के सुझाव के रूप में चेलेंज ही दिया है. अमरीकी अखबारों ने भी इसे "अपील" का नाम न देकर "चेलेंज" का नाम ही दिया है. दिल्ली से निकलने वाले अमरीकी दूतावास के अखबार 'अमरीकन रिपोर्टर' ने भी इस "चेलेंज" कहा है. मिस्टर डलेस 18 अप्रैल को उसी सभा में बोले हैं जिस में आइजनहावर ने यह बयान दिया है उन्होंने भी इस बयान को "चेलेंज" कहा है

अमरीकी अखबारों की टिप्पनी और मिस्टर डलेस के बयानों को ध्यान से पढ़ने पर यह बात साफ़ हो जाती है कि रूस वालों ने जंग की संभावना को कम करने के लिये जो अमली क़दम उठाए थे उनका जवाब इस भाशन के रूप में दिया गया है. यह ईमानदारी नहीं प्रोपेगेन्डा है अपील नहीं चेलेंज है !

दूसरा भाग

आइजन हावर के भाशन के दूसरे भाग में शान्ति के लिये शरतों की एक लम्बी लिस्ट गिनाई गई है. यह शरतें यह हैं : (1) आसट्रिया के संबन्ध में रूस एक नये समझौते पर दसखत करे. (2) दूसरी लड़ाई के जो क़ैदी कहा जाता है अभी तक रूस में हैं उनको छोड़ दिया जाय. (3) कोरिया म लड़ाई बन्द करने के लिये सुलह की जाय. लड़ाई खतम करके कोरिया के राजकाज के संबंध में बात चीत हो और ऐसा चुनाव किया जाय जिसके आधार पर कोरिया के दोनों भाग एक हो सकें. (4) हिन्द चीन और मलाया पर रूस किसी तरह का हमला न होने देने की ज़िम्मेदारी ले. (5) पूरबी योरप के देशों को पूरी आज़ादी दी जाय ताकि योरप का जो ग़ैर क़ुदरती बंटवारा हुआ है वह खतम हो जाय. (6) जरमनी को आज़ाद किया जाय और चुनाव करके जरमनी के दोनों भागों की एक सरकार बनाई जाय (7) हथियारों और फ़ौजों की एक तादाद मुक़र्रर की जाय और यूनो की देख रेख में सब मुल्कों की फ़ौजों और हथियारों पर कंट्रोल रखा जाय.

साफ़ है कि इन शरतों में अमरीका सब कुछ ले लेना चाहता है लेकिन देना कुछ नहीं चाहता. यह शरतें एकतरफ़ा हैं सुलह सफ़ाई दोनों तरफ़ से होती है इनमें रूस क्या करे सब बताय गया है लेकिन यह कहीं नहीं कहा गया कि अमरीका को क्या करना चाहिये. लेकिन अमरीका ने इन एक तरफ़ा शरतों के ऊपर भी एक शर्त लगा दी है कि रूस जब तक ऊपर की शरतों को पूरा न कर दे तब तक आगे बातचीत ही नहीं चलाई जा सकती. ज़ाहिर बात है कि यह शरतें पूरी करना रूस चाहे भी तो उसकी शक्ति के बाहर है. इसका ज़िकर हम बाद में करेंगे.

لیتا ھے ۔ شاید امریکہ نے روس کو اِس صلح کے سجھاؤ کے روپ میں چیلنج ھی دیا ھے ۔ امریکی اخباروں نے بھی اسے "اپیل" کا نام نہ دے کر "چیلنج" کا نام ھی دیا ھے. دلی سے نکلنےوالے امریکی دوتاواس کے اخبار "امریکن رپورٹر" نے بھی اسے "چیلنج" کہا ھے ۔ مسٹر ڈلس 18 اپریل کو اسی سبھا میں بولے ھیں جس میں آئزن‌ھاور نے یہ بیان دیا ھے ۔ انہوں نے بھی اِس بیان کو "چیلنج" کہا ھے ۔

امریکی اخباروں کی ٹپنی اور مسٹر ڈلس کے بیانوں کو دھیان سے پڑھنے پر یہ بات صاف ھو جاتی ھے کہ روس والوں نے جنگ کی سمبھاونا کو کم کرنے کے لئے جو عملی قدم اُٹھائے تھے اُن کا جواب اِس بھاشن کے روپ میں دیا گیا ھے ۔ یہ ایمانداری نہیں پروپیگنڈہ ھے' اپیل نہیں' چیلنج ھے !

دوسرا بھاگ

آئزن‌ھاور کے بھاشن کے دوسرے بھاگ میں شانتی کے لئے شرطوں کی ایک لمبی لسٹ گنائی گئی ھے ۔ یہ شرطیں یہ ھیں: (1) آسٹریا کے سمبندھ میں روس ایک نئے سمجھوتے پر دستخط کرے (2) دوسری لڑائی کے جو قیدی کہا جاتا ھے ابھی تک روس میں ھیں اُن کو چھوڑ دیا جائے (3) کوریا میں لڑائی بند کرنے کے لئے صلح کی جائے. لڑائی ختم کرکے کوریا کے راج کاج کے سمبندھ میں بات چیت ھو اور ایسا چناؤ کیا جائے جس کے آدھار پر کوریا کے دونوں بھاگ ایک ھوسکیں ۔ (4) ھند چین اور ملایا پر روس کسی طرح کا حملہ نہ ھونے دینے کی ذمےداری لے (5) پوربی یورپ کے دیشوں کو پوری آزادی دی جائے تاکہ یورپ کا جو غیر قدرتی بٹوارہ ھوا ھے وہ ختم ھو جائے. (6) جرمنی کو آزاد کیا جائے اور چناؤ کرکے جرمنی کے دونوں بھاگوں کی ایک سرکار بنائی جائے (7) ھتھیاروں اور فوجوں کی ایک تعداد مقرر کی جائے اور یونو کی دیکھ ریکھ میں سب ملکوں کی فوجوں اور ھتھیاروں پر کنٹرول رکھا جائے ۔

صاف ھے کہ اِن شرطوں میں امریکہ سب‌کچھ لے لینا چاھتا ھے لیکن دینا کچھ نہیں چاھتا. یہ شرطیں یکطرفہ ھیں. صلح صفائی دونوں طرف سے ھوتی ھے ۔ اِن میں روس کیا کیا کرے سب بتایا گیا ھے لیکن یہ کہیں نہیں کہا گیا کہ امریکہ کو کیا کرنا چاھئے ۔ لیکن امریکہ نے اِن یکطرفہ شرطوں کے اوپر بھی ایک شرط لگادی ھے کہ روس جب تک اوپر کی شرطوں کو پورا نہ کر دے تب تک آگے بات چیت بھی نہیں چلائی جاسکتی ۔ ظاھر بات ھے کہ یہ شرطیں پوری کرنا روس چاھے بھی تو اسکی شکتی کے باھر ھے. اِس کا ذکر ھم بعد میں کریں گے ۔

करने, हर बम बरसाने का मतलब आख़ीर में यही होता है—उनके हिस्से की चोरी जो भूके हैं और जिन्हें खाना नहीं मिलता, जो सरदी में ठिठुर रहे हैं और जिन्हें कपड़ा नहीं नसीब होता.

"यह दुनिया हथियारों पर दौलत ही नहीं ज़ाया कर रही है.

यह दुनिया अपने मज़दूरों की मेहनत, अपने विज्ञानिकों की प्रतिभा और अपने बच्चों की आशायें भी लड़ाई पर ख़र्च कर रही है.

"आजकल एक बम फेंकने वाले हवाई जहाज़ की लागत उतनी है जितनी रक़म से 30 से ज़ियादा शहरों में पक्के उमदा स्कूल बनाए जा सकते हैं और उन्हें चलाया जा सकता है.

"इस रक़म से बिजली के दो ऐसे कारख़ाने चलाए जा सकते हैं जिनमें से हर एक 60 हज़ार आबादी वाले एक शहर को पूरी बिजली मुहैया कर सकेगा.

"इस रक़म से दो बड़े और हर सामान से लैस अस्पताल खुल सकते हैं.

"इस रक़म से 50 मील लम्बी उमदा सड़क बन सकती है.

"जितनी रक़म एक जंगी जहाज़ में ख़र्च होती है उतनी रक़म में 5 लाख बुशल गेहूँ हासिल किया जा सकता है.

"जितने दाम में एक डेस्ट्रायर जहाज़ बनता है उस दाम में इतने मकान बन सकते हैं कि उनमें आठ हज़ार से ज़ियादा आदमी रह सकें."

जंग का यह भयानक नक़्शा पेश करने के बाद प्रेसीडेन्ट आइज़नहावर ने दुनिया से अपील की है: "मैं दोबारा कहता हूँ क्या यही ज़िंदगी का सब से अच्छा रास्ता है जिस पर अब तक यह दुनिया चलती आई है? ज़िन्दगी का यह कोई रास्ता नहीं है क्या कोई दूसरा रास्ता नहीं है...... जिस पर दुनिया चल सके?......यह अवसर दुनिया की सरकारों से मांग करता है कि वह अपने इरादे साफ़ साफ़ और ईमानदारी से बता दें.''

लेकिन अफ़सोस यह है कि ख़ुद प्रेसीडेन्ट आइज़नहावर ने अपने इरादे साफ़ साफ़ नहीं बताए. वह यहां ही रुक जाते तो बहुत अच्छा होता. पर उन्होंने अपील के बजाय रूस और रूस के नेता स्टालिन की निन्दा शुरू कर दी. "सोवियत सामराज अपनी दृढ़ता और अचम्भे में डालने वाली हिम्मत से दूसरी लड़ाई में बच गया वह ज़िन्दा रह गया है ताकि तीसरी जंग का ख़तरा पैदा करे." भाषण का अच्छा ख़ासा हिस्सा इसी तरह की भड़काने वाली बातों से भरा है और पूरे भाषण पर कालिख पोत देता है, अपील की जगह चैलेंज की शकल ले

کرنے' ہر بم برسانے کا مطلب آخیر میں یہی ہوتا ہے—اُن کے حصے کی چوری جو بھوکے ہیں اور جنہیں کھانا نہیں ملتا' جو سردی میں ٹھٹھر رہے ہیں اور جنہیں کپڑا نہیں نصیب ہوتا۔

"یہ دنیا ہتھیاروں پر دولت ہی نہیں ضائع کر رہی ہے۔

یہ دنیا اپنے مزدوروں کی محنت' اپنے وگیانکوں کی پرتبھا اور اپنے بچوں کی آشائیں بھی لڑائی پر خرچ کرتی ہے۔

"آجکل کے ایک بم پھینکنے والے ہوائی جہاز کی لاگت اتنی ہے جتنی رقم سے 30 سے زیادہ شہروں میں پکے عمدہ اسکول بنائے جاسکتے ہیں اور انہیں چلایا جاسکتا ہے۔

"اس رقم سے بجلی کے دو ایسے کارخانے چلائے جاسکتے ہیں جن میں سے ہر ایک 60 ہزار آبادی والے شہر کو پوری بجلی مہیا کرسکے گا۔

"اس رقم سے دو بڑے اور ہر سامان سے لیس اسپتال کھل سکتے ہیں۔

"اس رقم سے 50 میل لمبی عمدہ سڑک بن سکتی ہے۔

"جتنی رقم ایک جنگی جہاز میں خرچ ہوتی ہے اتنی رقم میں 5 لاکھ بشل گیہوں حاصل کیا جاسکتا ہے۔

جتنے دام میں ایک ڈسٹرائر جہاز بنتا ہے اُس دام میں اتنے مکان بن سکتے ہیں کہ اُن میں 8 ہزار سے زیادہ آدمی رہ سکیں۔"

جنگ کا یہ بھیانک نقشہ پیش کرنے کے بعد پریسیڈنٹ آئزن ہاور نے دنیا سے اپیل کی ہے: "میں دوبارہ کہتا ہوں کیا یہی زندگی کا سب سے اچھا راستہ ہے جس پر اب تک یہ دنیا چلتی آئی ہے؟ زندگی کا یہ کوئی راستہ نہیں ہے.....کیا کوئی دوسرا راستہ نہیں ہے جس پر دنیا چل سکے؟......یہ اوسر دنیا کی سرکاروں سے مانگ کرتا ہے کہ وہ اپنے ارادے صاف صاف اور ایمانداری سے بتادیں۔"

لیکن افسوس یہ ہے کہ خود پریسیڈنٹ آئزن ہاور نے اپنے ارادے صاف صاف نہیں بتائے۔ وہ یہاں ہی رک جاتے تو بہت اچھا ہوتا۔ پر انہوں نے اپیل کے بجائے روس اور روس کے نیتا اسٹالن کی نندا شروع کردی: "سوویت سامراج اپنی دڑھتا اور اچنبھے میں ڈالنے والی ہمت سے دوسری لڑائی میں بچ گیا۔ وہ زندہ رہ گیا ہے تاکہ تیسری جنگ کا خطرہ پیدا کرے۔" بھاشن کا اچھا خاصا حصہ اسی طرح کی بھڑکانے والی باتوں سے بھرا ہے اور پورے بھاشن پر کالکھ پوت دیتا ہے' اپیل کی جگہ چیلنج کی شکل لے

आइज़नहावर का शान्ति सुझाव

17 अप्रैल 1953 को अमरीका के प्रेसीडेन्ट आइज़नहावर ने अमरीकी एडीटरों के सामने एक भाशन दिया था. इस भाशन की सारी दुनिया में चरचा हुई है और इसे अमरीका की आगे की पालिसी का आधार माना गया है. इससे पहले कि हम इस भाशन पर रोशनी डालें यह ज़रूरी है कि भाशन की आत्मा को पूरी तरह समझ लें. इस भाशन के तीन हिस्से हैं : पहला हिस्सा भावुकता से भरा है, दुनिया की आज की हालत पर चिन्ता प्रकट की गई है यह हिस्सा दिल पर असर करता है और ऐसा लगता है कि प्रेसीडेन्ट आइज़नहावर और "सिपाही" आइज़न हावर में लगातार लड़ाई होती रही है और कहीं कहीं सिपाही ने प्रेसीडेन्ट को पछाड़ दिया है. सिपाही जानता है कि लड़ाई क्या बला होती है, उसके नतीजे किसे भोगने होते हैं. सिपाही को किस तरह जानवर बनना पड़ता है. कुछ लोग सोचेंगे कि एक आदमी के दो रूप कैसे हो सकते हैं. पर इस बयान को ध्यान से पढ़ने पर यह बात साफ़ हो जाती है. सिपाही आइज़नहावर आज की हालत पर अफ़सोस ज़ाहिर करता है, लड़ाई की बरबादी का नक़्शा पेश करता है लेकिन जल्द ही उसे याद पड़ जाता है कि वह अमरीका का प्रेसीडेन्ट भी है और वह इन सब बातों की ज़िम्मेदारी झट से रूस के सर थोप देता है और अपने देश को, ख़ुद को और अमरीका के पुराने शासकों को सब को देवता साबित करने की कोशिश में लग जाता है. बरतानिया के लेबर नेता मिस्टर बेवन ने इस बयान पर बोलते हुए कहा है कि "इस भाशन का रूप ठीक नहीं है. और जहां जहां यह ठीक रूप में है भी उन हिस्सों के असर को ख़ब्त कर दिया गया है." आइज़न हावर ने लड़ाई का जो भयानक दृश्य अपने भाशन में खींचा है उसे हम नीचे दे रहे हैं :

"जंग से जिस ख़राब से ख़राब नतीजे का डर है और जिस अच्छी से अच्छी बात की उम्मीद की जा सकती है वह संक्षेप में यह है :

सबसे बुरा नतीजा ऐटमी लड़ाई हो सकती है. अच्छी से अच्छी बात यह हो सकती है कि ऐसे वातावरन में ज़िन्दगी बीते जिसमें लगातार डर छाया रहे और हर तरफ़ सनसनी फैली हो, दुनिया के देशों की दौलत और मेहनत का दुरुपयोग और जिस शक्ति की मदद से रूसी ढंग, अमरीकी ढंग या और कोई ढंग भी इस दुनिया की ख़ुशहाली बढ़ा सकता है वह सारी शक्ति इस नेक काम में रुकावट डालने के लिये इस्तेमाल की जाय.

"हर बन्दूक़ के बनाने, हर लड़ाई के जहाज़ को तैयार

آئزن‌هاور کا شانتی سجھاؤ

17 اپریل 1953 کو امریکہ کے پریسیڈنٹ آئزن‌هاور نے امریکی ایڈیٹروں کے سامنے ایک بھاشن دیا تھا. اِس بھاشن کی ساری دنیا میں چرچا ہوئی ہے اور اِسے امریکہ کی آگے کی پالیسی کا آدھار مانا گیا ہے. اِس سے پہلے کہ ہم اِس بھاشن پر روشنی ڈالیں یہ ضروری ہے کہ بھاشن کی آتما کو پوری طرح سمجھ لیں. اِس بھاشن کے تین حصے ہیں: پہلا حصہ بھاونتا سے بھرا ہے، دنیا کی آج کی حالت پر چنتا پرکٹ کی گئی ہے. یہ حصہ دل پر اثر کرتا ہے اور ایسا لگتا ہے کہ پریسیڈنٹ آئزن‌هاور اور "سپاہی" آئزن‌هاور میں لگاتار لڑائی ہوتی رہی ہے اور کہیں‌کہیں سپاہی نے پریسیڈنٹ کو پچھاڑ دیا ہے. سپاہی جانتا ہے کہ لڑائی کیا بلا ہوتی ہے، اُس کے نتیجے کسے بھوگنے ہوتے ہیں، سپاہی کو کس طرح جانور بننا پڑتا ہے. کچھ لوگ سوچیں گے کہ ایک آدمی کے دو روپ کیسے ہوسکتے ہیں. پر اِس بیان کو دھیان سے پڑھنے پر یہ بات صاف ہو جاتی ہے. سپاہی آئزن‌هاور آج کی حالت پر افسوس ظاہر کرتا ہے، لڑائی کی بربادی کا نقشہ پیش کرتا ہے لیکن جلد ہی اُسے یاد پڑ جاتا ہے کہ وہ امریکہ کا پریسیڈنٹ بھی ہے اور وہ اِن سب باتوں کی ذمےداری جھٹ سے روس کے سر تھوپ دیتا ہے اور اپنے دیش کو، خود کو اور امریکہ کے پرانے شاسکوں کو سب کو دیوتا ثابت کرنے کی کوشش میں لگ جاتا ہے. برطانیہ کے لیبر نیتا مسٹر بیون نے اِس بیان پر بولتے ہوئے کہا ہے کہ "اِس بھاشن کا روپ ٹھیک نہیں ہے اور جہاں جہاں یہ ٹھیک روپ میں ہے بھی اُن حصوں کے اثر کو خبط کردیا گیا ہے." آئزن‌هاور نے لڑائی کا جو بھیانک درشیہ اپنے بھاشن میں کھینچا ہے اُسے ہم نیچے دے رہے ہیں :

"جنگ سے جس خراب سے خراب نتیجے کا ڈر ہے اور جس اچھی سے اچھی بات کی اُمید کی جاسکتی ہے وہ سنکشیپ میں یہ ہے .

سب سے برا نتیجہ ایٹمی لڑائی ہوسکتی ہے .

اچھی سے اچھی بات یہ ہوسکتی ہے کہ ایسے واتاورن میں زندگی بیتے جس‌میں لگاتار ڈر چھایا رہے اور ہر طرف سنسنی پھیلی ہو، دنیا کے دیشوں کی دولت اور محنت کا دُراپیوگ ہو اور جس شکتی کی مدد سے روسی ڈھنگ، امریکی ڈھنگ یا اور کوئی ڈھنگ بھی اِس دنیا کی خوشحالی بڑھا سکتا ہے وہ ساری شکتی اِس نیک کام میں رُکاوٹ ڈالنے کے لئے اِستعمال کی جاے .

"ہر بندوق کے بنانے، ہر لڑائی کے جہاز کو تیار

कहां श्री एपिलबाई का वह सार्टीफ़िकेट और कहां श्री गोरवाला का यह सर्टीफ़िकेट ! जिस तरह अंगरेज़ी राज में हर अंगरेज़ हिन्दुस्तान का हुक्काम बन सकता है इस तरह आजकल हर अमरीकन हिन्दुस्तान का विशेषज्ञ सलाहकार बन सकता है चाहे उसकी जानकारी कितनी ही कम हो. फिर, चाहे वह किसी भी विशय का जानकार क्यों न हो वह हिन्दुस्तान आकर हर विशय का एकसपर्ट माना जायेगा. इसके अलावा बात यह भी है कि श्री एपिलबाई अमरीकी होने के नाते रूस चीन वग़ैरा को तो किसी गिनती में ही नहीं रखते होंगे. फिर, ख़ुद अमरीका का इन्तज़ाम कौन ग़नीमत या अच्छा है ? ट्रूमन के शासन के ख़िलाफ़ जनता को कितनी शिकायत थी इसका अन्दाज़ इस बात से लगता है कि अमरीका के नये राष्ट्रपति के चुने जाने पर किसी ने उन्हें "झाड़ू" भेंट में भेजी ताकि व्हाइट हाउस में से गन्दगी साफ़ कर दें ! अगर अमरीका का शासन इतना पतित हो और उसके मुक़ाबले हिन्दुस्तान बारहवें दर्जे में आये यह तो वैसा ही है कि किसी इम्तिहान में साठ में से चालीस लड़के ही शरीक हों और उन चालीस में दस पास हो जिनमें पहली डिवीज़न में कोई पास न हो, दूसरी में चार हों और तीसरी में छै और ग्यारहवां कहे कि मैं फ़ेल भले होऊँ पर नम्बरों के लिहाज़ से ग्यारहवें पर हूँ !

लेकिन सौ बातों की एक बात यह है कि श्री एपिलबाई की राय कितनी सच्ची क्यों न हो उसके मुक़ाबले श्री गोरवाला की राय कहीं ज़ियादा क़ीमती और खरी समझी जायेगी. इस वजह से नहीं कि श्री गोरवाला की क़ाबलियत श्री एपिलबाई से ज़ियादा है, इस वजह से नहीं कि श्री गोरवाला को सरकारी तन्त्र का तजुर्बा श्री एपिलबाई से ज़ियादा है, इस वजह से नहीं कि श्री गोरवाला हिन्दुस्तानी हैं और श्री एपिलबाई अमरीकन, बल्कि इस वजह से कि श्री गोरवाला भारत सरकार के ही तैनात किये हुए आदमी हैं और अगर सरकार को उनकी राय का एतबार नहीं है तब फिर उसे अपनी किसी कमेटी या कमीशन की राय पर भरोसा नहीं रखना चाहिये. यही नहीं, वह अपने पर ही भरोसा नहीं कर सकती. और जब श्री गोरवाला कहें कि सरकार सच्चा-साफ़ इन्तज़ाम नहीं चाहती तो पंडित जवाहरलाल नेहरू को सोचना पड़ेगा कि दो सर्टीफ़िकेटों में कौन ज़ियादा सच्चा है और उनका या उनकी सरकार का क्या फ़र्ज़ है.

हम इतना कह कर ख़त्म करेंगे कि अगर पंडित जवाहरलाल श्री गोरवाला के कहे को क़बूल नहीं करते हैं और उसकी रोशनी में हकूमत को ढंग पर लाने की कोशिश नहीं करते तो इतिहास उन्हें इसके लिये माफ़ नहीं करेगा.

23. 4. '53 —सुरेश रामभाई

کہاں شری ایپل بائی کا وہ سرٹیفکیٹ اور کہاں شری گوروالا کا یہ سرٹیفکیٹ ! جس طرح انگریزی راج میں ہر انگریز ہندستان کا حکام بن سکتا ہے اسی طرح آج کل ہر امریکن ہندستان کا وشیشگ صلاح‌کار بن سکتا ہے چاہے اسکی جان‌کاری کتنی ہی کم ہو. پھر چاہے وہ کسی بھی وشے کا جان‌کار کیوں نہ ہو وہ ہندستان آکر ہر وشے کا ایکسپرٹ مانا جائیگا . اس کے علاوہ بات یہ بھی ہے کہ شری ایپل بائی امریکی ہونے کے ناتے روس چین وغیرہ کو تو کسی گنتی میں ہی نہیں رکھتے ہونگے پھر' خود امریکہ کا انتظام کون غنیمت یا اچھا ہے؟ ٹرومن کے شاسن کے خلاف جنتا کو کتنی شکایت تھی اس کا انداز اس بات سے لگتا ہے کہ امریکہ کے نئے راشٹرپتی کے چنے جانے پر کسی نے انہیں "جھاڑو" بھینٹ میں بھیجی تاکہ وہائٹ ہاؤس میں سے گندگی صاف کردیں ! اگر امریکہ کا شاسن اتنا پتت ہو اور اس کے مقابلے ہندستان بارھویں درجے میں آئے یہ تو ویسا ہی ہے کہ کسی امتحان میں ساٹھ میں سے چالیس لڑکے ہی شریک ہوں اور ان چالیس میں دس پاس ہوں جن میں پہلی ڈویژن میں کوئی پاس نہ ہو' دوسری میں چار ہوں اور تیسری میں چھ . اور گیارھواں کہے کہ میں فیل بھلے ہوؤں پر نمبروں کے لحاظ سے گیارھویں پر ہوں !

لیکن سو باتوں کی ایک بات یہ ہے کہ شری ایپل بائی کی رائے کتنی ہی سچی کیوں نہ ہو اس کے مقابلے شری گوروالا کی رائے کہیں زیادہ قیمتی اور کھری سمجھی جائیگی . اس وجہ سے نہیں کہ شری گوروالا کی قابلیت شری ایپل بائی سے زیادہ ہے' اس وجہ سے نہیں کہ شری گوروالا کو سرکاری تنتر کا تجربہ شری ایپل بائی سے زیادہ ہے' اس وجہ سے نہیں کہ شری گوروالا ہندستانی ہیں اور شری ایپل بائی امریکن' بلکہ اس وجہ سے کہ شری گوروالا بھارت سرکار کے ہی تعینات کئے ہوئے آدمی ہیں اور اگر سرکار کو ان کی رائے کا اعتبار نہیں ہے تب پھر اسے اپنی کسی کمیٹی یا کمیشن کی رائے پر بھروسہ نہیں رکھنا چاہئے. یہی نہیں' وہ اپنے پر ہی بھروسہ نہیں کرسکتی . اور جب شری گوروالا کہیں کہ سرکار سچا صاف انتظام نہیں چاہتی تو پنڈت جواہر لال نہرو کو سوچنا پڑیگا کہ دو سرٹیفکیٹوں میں کون زیادہ سچا ہے اور ان کا یا ان کی سرکار کا کیا فرض ہے .

ہم اتنا کہہ کر ختم کرینگے کہ اگر پنڈت جواہر لال شری گوروالا کے کہے کو قبول نہیں کرتے ہیں اور اسکی روشنی میں حکومت کو ڈھنگ پر لانے کی کوشش نہیں کرتے تو اتہاس انہیں اسکے لئے معاف نہیں کریگا .

23 . 4 . '53 ——سریش رام بھائی

अपनी रिपोर्ट में श्री गोरवाला ने कई सुझाव रखे थे. उनमें से एक यह है :

"अगर सरकार यह चाहती है कि ऊंचे ओहदे पर काम करने वालों की नैतिक कसौटी में जनता का विश्वास बना रहे तो इस बात का इन्तज़ाम होना चाहिये कि कोई आदमी चाहे कितना ही ऊंचा क्यों न हो, पर अगर उसके खिलाफ़ ज़िम्मेदार फ़रीक़ों की तरफ़ से एतराज़ उठते हैं और उनसे केस या मामला चलाया जा सकता है तो वह जांच ज़रूर कराई जाये. इसके लिये एक मशीनरी होनी चाहिये जो सरकारी निज़ाम का हिस्सा हो न कि जैसा मिनिस्टरों के मामले में, किसी राजकाजी पार्टी का. किन्हीं भी राजकाजी या निजी कारनों से इस चीज़ में टालना नहीं होना चाहिये और न टलना नज़र ही आना चाहिये."

इसलिये श्री गोरवाला की कमेटी ने सुझाव रखा था कि राष्ट्रपति या बड़ी अदालत को सचाई जानने के लिये इख़्तियार सौंपे जायें पर ऐसा नहीं किया गया. श्री गोरवाला ने अपने लेख में कहा है कि इसमें कोई शक नहीं कि मिनिस्ट्रों के खिलाफ़ ज़िम्मेदार लोगों की तरफ़ से होने वाली शिकायतों की जांच अगर सरकार करना चाहती तो उस सम्बन्धी क़ानून बनाने बनवाने में उसे चंद महीनों से ज़ियादा नहीं लगते. कहीं 1952 में ऐसा हो गया होता तो अबतक सारे देश के अन्दर शासन की हालत बदल गई होती.

इसी तरह से, श्री गोरवाला ने लिखा है, सवाल है मिनिस्ट्रों का रईसों के यहां जा कर ठहरना व दावतें उड़ाना. प्रधान मंत्री ने एक मौक़े पर भी इस तरह की मेहमानदारी के खिलाफ़ आवाज़ नहीं उठाई. पर अगर चाह रही होती तो इस सिलसिले में अहकाम बखूबी जारी किये जा सकते थे जो नहीं किये गये. श्री गोरवाला की राय है और सही राय है कि "अगर किसी मिनिस्टर से पूछा जाये कि उसके अपने पास या उसके आश्रितों के पास थोड़े ही अरसे में ज़ियादा धन-दौलत कहां से जमा हो गये तो यह पूछना बेजा नहीं था. अगर उन पर मुक़द्दमा चलाया जाता है तो यह देख कर ही चलाया जाता है कि गुंजाइश है. पर यह तक न हुआ ज़रूर चाह की ही कमी है."

आख़िर में श्री गोरवाला दर्द के साथ कहते है :

"ज़ियादा मग़ज़-पच्ची करने की ज़रूरत नहीं है. इन थोड़ी सी मिसालों से साफ़ पता चलता है कि इस सवाल पर सरकार का रुख़ क्या है. कुल मिलाकर यह समझना ग़लत न होगा कि सच्चे साफ़ या इन्साफ़ पसंद इन्तज़ाम की ज़रूरत सरकार समझती ही नहीं. क्या इस देश की सरकार दर असल बेईमानी निकालने पर उतारू है ? ज़ाहिर जवाब है कि नहीं."

اپنی رپورٹ میں شری گوروالا نے کئی سجھاؤ رکھے تھے. اُن میں سے ایک یہ ہے :

"اگر سرکار یہ چاہتی ہے کہ اونچے عہدے پر کام کرنے والوں کی نیتک کسوٹی میں جنتا کا وشواس بنا رہے تو اِس بات کا اِنتظام ہونا چاہئے کہ کوئی آدمی چاہے کتنا ہی اُونچا کیوں نہ ہو، پر اگر اُس کے خلاف ذمے دار فریقوں کی طرف سے اعتراض اُٹھتے ہیں اور اُن سے کیس یا معاملہ چلایا جاسکتا ہے تو وہ جانچ ضرور کرائی جائے. اِس کے لئے ایک مشینری ہونی چاہئے جو سرکاری نظام کا حصہ ہو نہ کہ جیسا منسٹروں کے معاملے میں، کسی راج کاجی پارٹی کا . کنہیں بھی راج کاجی یا نجی کارنوں سے اِس چیز میں ٹالنا نہیں ہونا چاہئے اور نہ ٹلنا نظر ہی آنا چاہئے ."

اِس لئے شری گوروالا کی کمیٹی نے سجھاؤ رکھا تھا کہ راشٹرپتی یا بڑی عدالت کو سچائی جاننے کے لئے اختیار سونپے جائیں پر ایسا نہیں کیا گیا. شری گوروالا نے اپنے لیکھ میں کہا ہے کہ اِس میں کوئی شک نہیں کہ منسٹروں کے خلاف ذمےدار لوگوں کی طرف سے ہونے والی شکایتوں کی جانچ اگر سرکار کرنا چاہتی تو اُس سمبندھی قانون بنانے بنوانے میں اُسے چند مہینوں سے زیادہ نہیں لگتے. کہیں 1952 میں ایسا ہوگیا ہوتا تو اب تک سارے دیش کے اندر شاسن کی حالت بدل گئی ہوتی .

اِسی طرح سے، شری گوروالا نے لکھا ہے، سوال ہے منسٹروں کا رئیسوں کے یہاں جاکر ٹھہرنا و دعوتیں اُڑانا . پردھان منتری نے ایک موقعے پر بھی اِس طرح کی مہمانداری کے خلاف آواز نہیں اُٹھائی . پر اگر چاہ رہی ہوتی تو اِس سلسلے میں احکام بخوبی جاری کئے جاسکتے تھے جو نہیں کئے گئے . شری گوروالا کی رائے ہے اور صحیح رائے ہے کہ "اگر کسی منسٹر سے پوچھا جائے کہ اُس کے اپنے پاس یا اُس کے آشرتوں کے پاس تھوڑے ہی عرصے میں زیادہ دھن دولت کہاں سے جمع ہوگئے تو یہ پوچھنا بیجا نہیں تھا. اگر اُن پر مقدمہ چلایا جاتا ہے تو یہ دیکھکر ہی چلایا جاتا ہے کہ گنجائش ہے. پر یہ تک نہ ہوا. ضرور چاہ کی ہی کمی ہے."

آخر میں شری گوروالا درد کے ساتھ کہتے ہیں :

"زیادہ مغز پچی کرنے کی ضرورت نہیں ہے. اِن تھوڑی سی مثالوں سے صاف پتہ چلتا ہے کہ اِس سوال پر سرکار کا رخ کیا ہے . کل ملا کر یہ سمجھنا غلط نہ ہوگا کہ سچے صاف یا اِنصاف پسند اِنتظام کی ضرورت سرکار سمجھتی ہی نہیں. کیا اِس دیش کی سرکار دراصل بےایمانی نکالنے پر اُتارو ہے؟ ظاہر جواب ہے کہ نہیں."

मुलाज़िमों की तादाद के बारे में श्री ऐपिलबाई कहते हैं. कि "चपरासी या नीचे दर्जे और कम तनखा वाले आदमी" भले ज़ियादा हों लेकिन ऊंचे और ज़ियादा ज़िम्मेदार सब जगहों पर काम करने वाले मुलाज़िमों की तादाद ज़रूरत से ज़ियादा कम है.

मुलाज़िमों के ईमान के बारे में श्री ऐपिलबाई कहते हैं कि सरकारी शासन में फ़ी इंच ईमानदार और निस्वार्थ लोगों की तादाद किसी भी बड़े निजी कारोबार के मुक़ाबले कहीं ज़ियादा है.

उसी तरह से उनका कहना है कि मुलाज़िमों की होशियारी के ख़िलाफ़ वाली शिकायत भी ग़लत है.

"लाल फ़ीते" के बारे में श्री ऐपिलबाई कहते हैं कि एक हद तक तो यह ज़रूरी चीज़ है और इसके बिना काम नहीं चल सकता.

साथ ही साथ उनका कहना है कि रुपए पैसे के मामले में यहां बहुत "कंजूसी" बरती जाती है और झूठी बचत पर ध्यान दिया जाता है. उन्होंने यह भी कहा कि सेक्रेटेरियेट के तरीक़े वग़ैरा भी बड़े बाल की खाल निकालने वाले और विचार हीन हैं उनका एक सुझाव यह भी है कि प्रदेशों को "आज़ादी" देने से देश की एकता को ख़तरा है और उनकी जांच का निचोड़ यह है, जैसा हमने ऊपर कहा है, भारत का सरकारी शासन दुनिया के बारह या आस पास देशों में है. कोई ताज्जुब नहीं अगर प्रधान मंत्री ने ख़ुशी और शान के साथ कांगरेसी भाईओं को यह बिना मांगे सर्टीफ़िकेट की तफ़सील सुनाई जिस से क्या उन्हें क्या उनके सुनने वालों को बड़ा सन्तोश हुआ होगा !

इसके मुक़ाबले हमारी निगाह से 15 अप्रैल के "स्टेट्स मैन" अख़बार में छपा श्री ए. डी. गोर वाला का एक लेख गुज़रा जिसका नाम है "एक ज़ियादा सच्चा साफ़ इन्तज़ाम" श्री ए. डी गोर वाला पेन्शन याफ़ता आई. सी. एस. हैं जिनकी भारत सरकार में बड़ी इज़्ज़त है. जो बीसियों सरकारी कमेटियों और कमीशनों के मेम्बर या सदर रह चुके हैं. वह सोलह आने सरकार भक्त, मिल पुजारी और फ़ौज प्रेमी जीव हैं जिन्हें क्या विकेन्द्रीकरन, क्या ग्रामोद्योग, क्या अहिंसा किसी में भी—हमारे फ़ाइनेन्स मिनिस्टर श्री देशमुख या इन्डस्ट्री मिनिस्टर श्री कृष्णमाचारी की तरह रत्ती भर विश्वास नहीं है.

अपने इस लेख में श्री गोरवाला का कहना है कि तीन साल हुए शासन सुधार के लिये सरकार ने उनकी सदारत में एक कमेटी बनाई थी. उस कमेटी ने अपनी रिपोर्ट दो बरस पहले पेश कर दी थी. मगर 1951 क्या 1952 पूरा निकल गया, 1953 के तीन चार माह चले गए पर सरकार ने उसके मुताबिक़ एक क़दम भी नहीं उठाया !

ملازموں کی تعداد کے بارے میں شری ایپل بائی کہتے ہیں کہ "چپراسی یا نیچے درجے اور کم تنخواہ والے آدمی" بھلے زیادہ ہوں لیکن اونچے اور زیادہ ذمے دار سب جگہوں پر کام کرنے والے ملازموں کی تعداد ضرورت سے زیادہ کم ہے۔

ملازموں کے ایمان کے بارے میں شری ایپل بائی کہتے ہیں کہ سرکاری شاسن میں فی انچ ایماندار اور سوارتھ لوگوں کی تعداد کسی بھی بڑے نجی کاروبار کے مقابلے کہیں زیادہ ہے۔

اسی طرح سے اُن کا کہنا ہے کہ ملازموں کی ہوشیاری کے خلاف والی شکایت بھی غلط ہے۔ "لال فیتے" کے بارے میں شری ایپل بائی کہتے ہیں کہ ایک حد تک تو یہ ضروری چیز ہے اور اس کے بنا کام نہیں چل سکتا۔

ساتھ ہی ساتھ اُن کا کہنا ہے کہ روپئے پیسے کے معاملے میں یہاں بہت "کنجوسی" برتی جاتی ہے اور جھوٹی بچت پر دھیان دیا جاتا ہے۔ اُنھوں نے یہ بھی کہا کہ سکریٹریٹ کے طریقے وغیرہ بھی بڑے بال کی کھال نکالنے والے اور وچار ہین ہیں اُن کا ایک سجھاؤ یہ بھی ہے کہ پردیشوں کو "آزادی" دینے سے دیش کی ایکتا کو خطرہ ہے۔ اور اُن کی جانچ کا نچوڑ یہ ہے، جیسا ہم نے اوپر کہا ہے، بھارت کا سرکاری شاسن دنیا کے بارہ یا آس پاس دیشوں میں ہے۔ کوئی تعجب نہیں اگر پردھان منتری نے خوشی اور شان کے ساتھ کانگریسی بھائیوں کو یہ بنا مانگے سرٹیفکٹ کی تفصیل سنائی جس سے کیا اُنھیں کیا اُن کے سننے والوں کو بڑا سنتوش ہوا ہوگا!

اِس کے مقابلے ہماری نگاہ سے 15 اپریل کے "اِسٹیٹس مین" اخبار میں چھپا شری اے۔ ڈی۔ گوروالا کا ایک لیکھ گذرا جس کا نام ہے "ایک زیادہ سچا صاف اِنتظام" شری اے ڈی۔ گوروالا پنشن یافتہ آئی۔ سی۔ ایس ہیں جن کی بھارت سرکار میں بڑی عزت ہے، جو بیسیوں سرکاری کمیٹیوں اور کمیشنوں کے ممبر یا صدر رہ چکے ہیں۔ وہ سولہ آنے سرکار بھکت، مل پجاری اور فوج پریمی جیو ہیں جنہیں کیا وکیندری کرن کیا گرام اُدیوگ، کیا اہنسا کسی میں بھی—ہمارے فائینینس منسٹر شری دیش مکھ یا انڈسٹری منسٹر شری کرشنماچاری کی طرح رتی بھر وشواس نہیں ہے۔

اپنے اِس لیکھ میں شری گوروالا کا کہنا ہے کہ تین سال ہوئے شاسن سدھار کے لئے سرکار نے اُن کی صدارت میں ایک کمیٹی بنائی تھی۔ اُس کمیٹی نے اپنی رپورٹ دو برس پہلے پیش کر دی تھی۔ مگر 1951 کیا 1952 پورا نکل گیا، 1953 کے تین چار ماہ چلے گئے پر سرکار نے اُس کے مطابق ایک قدم بھی نہیں اُٹھایا!

कौन माँ होगी जो अपने बेटे का यह आदर देख कर खुशी की लहर में न डूब जायगी और कौन हिन्दुस्तानी होगा जो यह न चाहेगा कि हिन्दुस्तान इसी तरह एक कौम यानी एक राष्ट्रीयता की लहर में हरदम डूबा रहे और दिन दूना रात चौगुना आगे बढ़ता रहे.

—भगवानदीन

दो सर्टिफ़िकेट

हमारे प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू को अपने देश वालों से एक खास शिकायत यह है कि जो कोई भी अच्छा या बड़ा काम सरकार करती है, उसकी वह टीका-टिप्पनी करने लगते हैं, लेकिन इसके खिलाफ़ विदेशी लोग जो यहां आते हैं वह उस काम को देख कर उसकी क़द्र करते और तारीफ़ करते हैं. और क्योंकि पंडित जवाहर लाल की दलील है, बाहर वाले अपने फ़न में माहर और पहुँचे हुए हैं इसलिये उनकी बात को ज़ियादा सही मानना पड़ेगा. हमारे प्रधान मंत्री शायद यह भूल जाते हैं कि उनकी सरकार को जनता से दूर रहने के कारन चश्मा लगा कर चीज़ें देखना पड़ती हैं और बाहर वाले जो आते हैं वह भी हमसे और कहीं ज़ियादा दूर रहने के कारन, वैसा ही या ज़ियादा पावर का चश्मा लगा कर देखते हैं. यही वजह है कि जैसा सरकार को दीखता है वैसा ही इन विदेशी माहरों को और दोनों की पटरी बन जाती है. और दोनों ही असलियत से अछूते रहते हैं.

हमें यह कहने की ज़रूरत इस वजह से पड़ी कि पिछली 11 अप्रैल को पार्लियामेन्ट की कांगरेस पार्टी की एक निजी बैठक में प्रधान मंत्री ने बताया कि एक "प्रसिद्ध अधिकारी हस्ती" ने हिन्दुस्तान के शासन की तारीफ़ करते हुए उसे दुनिया की "बारह बेहतरीन शासन वाले देशों में" गिना है. हमें मालूम हुआ कि यह हस्ती थी श्रीपाल ऐच. ऐपिलबाई जो अमरीका में जन-शासन के एक विशेषज्ञ कहे जाते हैं. पिछले साल अमरीका की तरफ़ से भारत में चलने वाली फ़ोर्ड इमदाद ने इन ऐपिलबाई साहब की सेवाएं हमारी सरकार को दी थीं. इन्होंने चार महीने की छान बीन के बाद इस साल फ़रवरी में अपनी रिपोर्ट पेश की है.

इन अमरीकी एक्सपर्ट की राय है कि "धीरे धीरे मैं इस फ़ैसले पर पहुंचा हूं कि भारत सरकार की दुनिया की बहुत तरक़्क़ी याफ़्ता बारह या उसके लगभग सरकारों में जगह है." श्री ऐपिलबाई का कहना है कि शासन के खिलाफ़ आज जो चार तरह के इलज़ाम लगाए जाते हैं—इसमें ज़रूरत से ज़ियादा आदमी काम कर रहे हैं, यह बेईमान है, यह होशियार नहीं है और "लाल फ़ीते" का बहुत ज़ियादा ज़ुल्म है—वह उनमें से कोई भी सही नहीं है !

کون ماں ہوگی جو اپنے بیٹے کا یہ آدر دیکھ کر سکھ کی لہر میں نہ ڈوب جائے گی اور کون ہندستانی ہوگا جو یہ نہ چاہے گا کہ ہندستان اسی طرح ایک قوم یعنی ایک راشٹریتا کی لہر میں ہر دم ڈوبا رہے اور دن دونا رات چوگنا آگے بڑھتا رہے۔

—بھگوان دین

دو سرٹیفکیٹ

ہمارے پردھان منتری پنڈت جواہر لال نہرو کو اپنے دیش والوں سے ایک خاص شکایت یہ ہے کہ جو کوئی بھی اچھا یا بڑا کام سرکار کرتی ہے، اس کی وہ ٹیکا ٹپنی کرنے لگتے ہیں، لیکن اس کے خلاف ودیشی لوگ جو یہاں آتے ہیں وہ اس کام کو دیکھ کر اس کی قدر کرتے اور تعریف کرتے ہیں۔ اور کیونکہ پنڈت جواہر لال کی دلیل ہے، باہر والے اپنے فن میں ماہر اور پہنچے ہوئے ہیں اس لئے ان کی بات کو زیادہ صحیح ماننا پڑے گا۔ ہمارے پردھان منتری شاید یہ بھول جاتے ہیں کہ ان کی سرکار کو جنتا سے دور رہنے کے کارن چشمہ لگا کر چیزیں دیکھنا پڑتی ہیں اور باہر والے جو آتے ہیں وہ بھی ہم سے اور کہیں زیادہ دور رہنے کے کارن، ویسا ہی یا زیادہ پاور کا چشمہ لگا کر دیکھتے ہیں۔ یہی وجہ ہے کہ جیسا سرکار کو دیکھتا ہے ویسا ہی ان ودیشی ماہروں کو اور دونوں کی پٹری بن جاتی ہے اور دونوں ہی اصلیت سے اچھوتے رہتے ہیں۔

ہمیں یہ کہنے کی ضرورت اس وجہ سے پڑی کہ پچھلی 11 اپریل کو پارلیامنٹ کی کانگریس پارٹی کی ایک نجی بیٹھک میں پردھان منتری نے بتلایا کہ ایک "پرسدھ ادھیکاری ہستی" نے ہندستان کے شاسن کی تعریف کرتے ہوئے اسے دنیا کی "بارہ بہترین شاسن والے دیشوں میں" گنا ہے۔ ہمیں معلوم ہوا کہ یہ ہستی تھی شری پال۔ ایچ۔ ایپل بائی جو امریکہ میں جن شاسن کے ایک وشیشگ کہے جاتے ہیں۔ پچھلے سال امریکہ کی طرف سے بھارت میں چلنے والی فورڈ امداد نے ان ایپل بائی صاحب کی سیوائیں ہماری سرکار کو دی تھیں۔ انہوں نے چار مہینے کی چھان بین کے بعد اس سال فروری میں اپنی رپورٹ پیش کی ہے۔

ان امریکی ایکسپرٹ کی رائے ہے کہ "دھیرے دھیرے میں اس فیصلے پر پہنچا ہوں کہ بھارت سرکار کی دنیا کی بہت ترقی یافتہ بارہ یا اس کے لگ بھگ سرکاروں میں جگہ ہے۔" شری ایپل بائی کا کہنا ہے کہ شاسن کے خلاف آج جو چار طرح کے الزام لگائے جاتے ہیں—اس میں ضرورت سے زیادہ آدمی کام کر رہے ہیں، یہ بے ایمان ہے، یہ ہوشیار نہیں ہے اور "لال فیتے" کا بہت زیادہ ظلم ہے۔ وہ ان میں سے کوئی بھی صحیح نہیں ہے۔

निज़ामुद्दीन दिल्ली से सात आठ मील दूर एक छोटी सी आबादी है. यहां पर एक वली का मक़बरा है और उन्हीं के नाम से इस आबादी का नाम पड़ गया है. एक तरह से यह आबादी नाम के लिये आबादी है. यहां आबादी से ज़ियादा मक़बरे हैं और क़ब्रें हैं. यह सब हर उम्र के हैं. कुछ सैकड़ों बरस पुराने हैं, कुछ बरसों ही पुराने हैं. रथी के साथ आई हुई भीड़ इन्हीं क़ब्रों में हो कर उस जगह पहुँचना चाहती थी जहां आसिफ़ अली साहब दफ़नाये जाने को थे. हमने देखा कि भीड़ के हिन्दू लोग एक दूसरे से आगे बढ़ते हुए क़ब्रों का ख़याल रखते थे और उनसे बच कर निकलते थे. पर मुसलमान वैसा नहीं कर रहे थे वह जूतों समेत क़ब्रों पर पांव रखते हुए उसके जनाज़े को अपनी आंखों दफ़न होता हुआ देखना चाहते थे जो हिन्दुस्तान के लिये जीया और उसी के लिये मरा. हमने अपनी आंखों कई मुसलमानों को देखा कि वह अपने हिन्दू साथियों का हाथ पकड़ कर उसी तरह क़ब्रों को कुचलते हुये ले जा रहे थे जिस तरह वह ख़ुद कर रहे थे. अब हिन्दू भीड़ भी उस तरफ़ से बेफ़िक्र हो गई थी और यह ख़याल ही भूल गई कि वह रास्ते रास्ते जा रही है या क़ब्रों पर होती हुई जा रही है. जिसको जहां जगह मिली वहीं खड़े होकर उसने रथी के दर्शन किये और जनाज़े को क़ब्र में उतरते देखा.

एक दो के मुंह से हमने यह बात भी सुनी, इतनी बड़ी इज़्ज़त यों ही नहीं मिलती. वह जब ही मिलती है जब इससे बड़ी इज़्ज़त किसी ने छोड़ी हो. इसी बात को उन्हीं एक दो ने फिर इस तरह समझाया कि अगर आसिफ़ अली साहब ने ग़ुलामी के नाम पर अंगरेज़ों से दी जाने वाली इज़्ज़त को लात से न ठुकराया होता तो क्या आज यह इज़्ज़त उन्हें नसीब होती और फिर इसी सिलसिले में एक के मुंह से यह बात भी सुनी कि जो आज इस इज़्ज़त से दूर रह कर देश के दुखों को दूर करने में अपनी जान लड़ायेगा तो क्या वह इससे भी बढ़कर सम्मान नहीं पायेगा ?

आसिफ़ अली साहब अपनी मां की बग़ल में दफ़ना दिये गये. उनकी मां की क़ब्र फूलों से लद लद कर फूलों का ढेर बन गई थी. पुलिस का इन्तज़ाम ढीला होते ही क़ब्र में मिट्टी देने की प्यासी भीड़ जो आसिफ़ अली साहब की क़ब्र की तरफ़ लपकी तो वह भीड़ उनकी मां की क़ब्र पर चढ़ गई और मिट्टी डालने की प्यास बुझाने लगी. हमारा ख़याल है कि उस वक़्त आसफ़ अली साहब की वालिदह यानी माता जी की वह क़ब्र में ऐसे ही आनन्द ले रही होंगी मानो यह सब उसी के बच्चे हैं जो उसकी छाती पर खेल रहे हैं.

نظام الدین دلی سے سات آٹھ میل دور ایک چھوٹی سی آبادی ہے . یہاں پر ایک ولی کا مقبرہ ہے اور انہیں کے نام سے اِس آبادی کا نام پڑ گیا ہے . ایک طرح سے یہ آبادی نام کے لئے آبادی ہے . یہاں آبادی سے زیادہ مقبرے ہیں اور قبریں ہیں . یہ سب ہر عمر کے ہیں . کچھ سیکڑوں برس پرانے ہیں' کچھ برسوں ہی پرانے ہیں . رتھی کے ساتھ آئی ہوئی بھیڑ اِنہیں قبروں میں ہو کر اُس جگہ پہونچنا چاہتی تھی جہاں آصف علی صاحب دفنائے جانے کو تھے . ہم نے دیکھا کہ بھیڑ کے ہندو لوگ ایک دوسرے سے آگے بڑھتے ہوئے قبروں کو خیال رکھتے تھے اور اُن سے بچ کر نکلتے تھے . پر مسلمان ویسا نہیں کر رہے تھے . وہ جوتوں سمیت قبروں پر پاؤں رکھتے ہوئے اُس کے جنازے کو اپنی آنکھوں دفن ہوتا ہوا دیکھنا چاہتے تھے جو ہندستان کے لئے جیا اور اُسی کے لئے مرا . ہم نے اپنی آنکھوں کئی مسلمانوں کو دیکھا کہ وہ اپنے ہندو ساتھیوں کا ہاتھ پکڑ کر اُسی طرح قبروں کو کچلتے ہوئے لے جا رہے تھے جس طرح سے وہ خود کر رہے تھے . اب ہندو بھیڑ بھی اُس طرف سے بے فکر ہو گئی تھی اور یہ خیال ہی بھول گئی کہ وہ راستے راستے جا رہی ہے یا قبروں پر ہوتی ہوئی جا رہی ہے . جس کو جہاں جگہ ملی وہیں کھڑے ہو کر اُس نے رتھی کے درشن کئے اور جنازہ کو قبر میں اُترتے دیکھا .

ایک دو کے منہ سے ہم نے یہ بات بھی سنی' اِتنی بڑی عزت یوں ہی نہیں ملی . یہ جب ہی ملتی ہے جب اِس سے بڑی عزت کسی نے چھوڑی ہو . اسی بات کو انہیں ایک دو نے پھر اس طرح سمجھایا کہ اگر آصف علی صاحب نے ایک غلامی کے نام پر انگریزوں سے دی جانے والی عزت کو لات سے نہ ٹھکرایا ہوتا تو کیا آج یہ عزت نصیب ہوتی . اور پھر اسی سلسلے میں ایک منہ سے یہ بات بھی سنی کہ جو آج اِس عزت سے دور رہ کر دیش کے دکھوں کو دور کرنے میں اپنی جان لڑائے گا تو کیا وہ اِس سے بھی بڑھکر سمان نہیں پائے گا .

آصف علی صاحب اپنی ماں کی بغل میں دفنا دیئے گئے . اُن کی ماں کی قبر پھولوں سے لد لد کر پھولوں کا ڈھیر بن گئی تھی . پولیس کا اِنتظام ڈھیلا ہوتے ہی قبر میں مٹی دینے کی پیاسی بھیڑ جو آصف علی صاحب کی قبر کی طرف لپکی تو وہ بھیڑ اُن کی ماں کی قبر پر چڑھ گئی اور مٹی ڈالنے کی پیاس بجھانے لگی . ہمارا خیال ہے کہ اُس وقت آصف علی صاحب کی والدہ یعنی ماتا جی کی روح قبر میں ایسے ہی آنند لے رہی ہوگی مانو یہ سب اُسی کے بچے ہیں جو اُس کی چھاتی پر کھیل رہے ہیں .

हुए थे. उनके सिरों पर थाली फेंकी जा सकती थी. तिल रखने की जगह न थी. हम तो उस भीड़ में मिल कर देखने की हिम्मत ही न कर सके. दो बच्चों को साथ ले कर उन चौदह बसों में से एक में जा बैठे जो रथी के साथ साथ जाने के लिये तैनात की गईं थीं.

बस में बैठे बैठे लोगों की ज़बानी हम आसिफ़ अली साहब की जीवनी सुन गये और इस सवाल का जवाब भी लोगों से पा गये कि एक राजदूत का सरकार इतना बड़ा सम्मान क्यों कर रही है? बस में से ही किसी एक ने जवाब दिया कि न यह राजदूत आसिफ़ अली का सम्मान है, न यह गवर्नर आसफ़ अली का सम्मान है, न यह कांगरेसी आसफ़ अली का सम्मान है, यह तो उस आशिक़ परवाने का सम्मान है जो आज़ादी की शमा पर हर दम जलने को तैयार रहता था.

जो भीड़ रथी के दर्शनों के लिये उमड़ पड़ी थी उसमें हिन्दू, मुसलमानों से ज़ियादा और मुसलमान हिन्दुओं से ज़ियादा थे. यानी हिन्दू मुसलमान की कोई तमीज़ ही नहीं रह गई थी. दिल्ली में क़रीब क़रीब सब प्रांत के लोग रहते हैं, पर इस मौक़े पर सब अपनी प्रांतियता भूल बैठे थे. जो सरकार की हर वक़्त टीका करते रहते थे आज वह भी सरकार की टीका भूल कर रथी के साथ मौजूद थे. धर्म भेद, जाति भेद, सभी भेद न जाने आज कहां चले गये थे सब मुसलमान आम तौर से और ग़रीब मुसलमान ख़ास तौर से कुछ ऐसा महसूस करते मालूम हो रहे थे मानों यह उन्हीं का सम्मान हो रहा हो. जब कोई हिन्दू रथी देखने के लिये आगे बढ़ना चाहता था और वहां कोई मुसलमान होता था तो वह बड़े अदब से उसे जगह दे देता था. मुसलमान का यह काम यह बताता मालूम होता था कि यह रथी उसके ही किसी क़रीबी रिश्तेदार की है. कई मुसलमान जवान लड़कों को तो हमने छोटे छोटे हिन्दू बच्चों को कंधों पर बिठा कर रथी दिखाते हुए देखा. हिन्दू औरतों में से बहुतों की यह ख़्वाहिश जी की जी में रह गई कि उनके बच्चे ऐसे देश भक्त की न रथी को छू पाए और न कफ़न का एक टुकड़ा गले में लटकाने को पा सके.

भीड़ में सब उम्र की बहिनें, माताएं और बेटियां थीं. सब ही उनका पूरा पूरा ख़्याल रख रहे थे कई बहनें तो अपने बच्चों को गोदी में लिये हुए थीं. फिर भी आस पास के लोग उन्हें कोई दिक़्क़त नहीं होने दे रहे थे.

जब रथी निज़ामुद्दीन पहुँची तो बसें ख़ाली हो गईं और बसों में बैठे लोग उस तरफ़ दौड़े जहां जहां आसिफ़ अली साहब हमेशा के आराम के लिये लिटाये जाने वाले थे.

ہوئے تھے۔ ان کے سروں پر تھالی پھینکی جا سکتی تھی۔ تل رکھنے کی جگہ نہ تھی۔ ہم تو اس بھیڑ میں مل کر دیکھنے کی ہمت ہی نہ کر سکے۔ دو بچوں کے ساتھ لے کر ان چودہ بسوں میں سے ایک میں جا بیٹھے جو رتھی کے ساتھ ساتھ جانے کے لئے تعینات کی گئی تھیں۔

بس میں بیٹھے بیٹھے لوگوں کی زبانی ہم آصف علی صاحب کی جیونی سن گئے اور اس سوال کا جواب بھی لوگوں سے پا گئے کہ ایک راج دوت کا سرکار اتنا بڑا سمان کیوں کر رہی ہے؟ بس میں سے ہی کسی ایک نے جواب دیا کہ نہ یہ راج دوت آصف علی کا سمان ہے، نہ یہ گورنر آصف علی کا سمان ہے، نہ یہ کانگریسی آصف علی کا سمان ہے، یہ تو اس عاشق پروانے کا سمان ہے جو آزادی کی شمع پر ہر دم جلنے کو تیار رہتا تھا۔

جو بھیڑ رتھی کے درشنوں کے لئے امڈ پڑی تھی اس میں ہندو مسلمانوں سے زیادہ اور مسلمان ہندوؤں سے زیادہ تھے۔ یعنی ہندو مسلمان کی کوئی تمیز ہی نہیں رہ گئی تھی۔ دلی میں قریب قریب سب پرانت کے لوگ رہتے ہیں، پر اس موقعے پر سب اپنی پرانتیتا بھول بیٹھے تھے۔ جو سرکار کی ہر وقت ٹیکا کرتے رہتے تھے آج وہ بھی سرکار کی ٹیکا بھول کر رتھی کے ساتھ موجود تھے۔ دھرم بھید، جاتی بھید، سبھی بھید نہ جانے آج کہاں چلے گئے تھے۔ سب مسلمان عام طور سے اور غریب مسلمان خاص طور سے کچھ ایسا محسوس کرتے معلوم ہو رہے تھے مانو یہ انہیں کا سمان ہو رہا ہو۔ جب کوئی ہندو رتھی دیکھنے کے لئے آگے بڑھنا چاہتا تھا اور وہاں کوئی مسلمان ہوتا تھا تو وہ بڑے ادب سے اسے جگہ دے دیتا تھا۔ مسلمان کا یہ کام یہ بتاتا معلوم ہوتا تھا کہ یہ رتھی اس کے ہی کسی قریبی رشتہ دار کی ہے۔ کئی مسلمان جوان لڑکوں کو تو ہم نے چھوٹے چھوٹے ہندو بچوں کو کندھوں پر بٹھا کر رتھی دکھاتے ہوئے دیکھا۔ ہندو عورتوں میں سے بہتوں کی یہ خواہش جی کی جی میں رہ گئی کہ ان کے بچے ایسے دیش بھکت کی نہ رتھی کو چھو پائے اور نہ کفن کا ایک ٹکڑا گلے میں لٹکانے کو پا سکے۔

بھیڑ میں سب عمر کی بہنیں، ماتائیں اور بیٹیاں تھیں۔ سب ہی ان کا پورا پورا خیال رکھ رہے تھے۔ کئی بہنیں تو اپنے بچوں کو گودی میں لئے ہوئے تھیں۔ پھر بھی آس پاس کے لوگ انہیں کوئی دقت نہیں ہونے دے رہے تھے۔

جب رتھی نظام الدین پہنچی تو بسیں خالی ہو گئیں اور بسوں میں بیٹھے لوگ اس طرف دوڑے جہاں آصف علی صاحب ہمیشہ کے آرام کے لئے لٹائے جانے والے تھے۔

प्रेम रस में डूब कर, और अंलीस के बदले नीचे से नीचे काम करने में शर्म तो लगती ही नहीं, दूना उत्साह बढ़ता है, आनन्द आता है.

यह जानकर हमारे पढ़ने वालों को कितनी खुशी होगी कि जूता गांठते गांठते इन बहिनों के विचार कितने ऊंचे जाते हैं. न इन्हें यह ख्याल होता है कि चप्पल बनाकर हमें कितनी बचत होगी, न यह कि इसके कितने दाम उठेंगे. यह तो यह सोचती रहती हैं 'कि किस तरह इनका देश अपने पैरों पर आप खड़ा होगा और न सिर्फ अपनी जरूरतों के लिये दूसरे मुल्कों का ओर ताकना छोड़ देगा बल्कि जरूरत पड़ने पर दूसरों का दुख दूर करने के काबिल बन सकेगा.

यह चप्पल क्लास हमें कोरी चप्पल क्लास न मिली. यह तो अच्छी खासी कला क्लास थी. कलापूर्न चप्पल का जोड़ियाँ तो थी हीं, पर सारे कमरे में चित्रकारी के कलापूर्न नमूने भी टगें हुए थे. एक चित्र में गांधी जी की दो टांगें दिखाई गई थीं उनके पांव में चप्पल थे, उनकी चप्पलों के नीचे रूढ़ि रिवाज, छुआछूत, दासता के कांटों की नोकें टूटती हुई दिखाई गई थीं. इसी का नाम है 'सादगी से रहना और ऊंची उड़ान लेना.'

पढ़ने वालों को याद रहे कि जो कुछ हमने देखा वह कलाकार हुसैनी साहब की डेढ़ महीने की मेहनत का नतीजा था. इन डेढ़ महीनों में चप्पलें कितनी बनीं, कितनों ने कितना सीखा और कैसा काम सीखा, इस नाप तोल से हमें क्या लेना. हमें तो काम है उन विचारों की कायापलट से जो कालिज की महिला प्रोफेसरों और पढ़ने वाली बहनों बेटियों में हुई.

—भगवानदीन

राजदूत आसिफ़ अली की रथी

राजदूत आसिफ अली साहब की रथी पहुँचने की खबर दिल्ली वालों को रेडियो से जैसे ही मिली वैसे ही दिल्ली शहर के हर मर्द औरत, छोटे बड़े, गरीब अमीर, सबके दिल में एक हलचल मच गई. हम जिस घर में ठहरे हुए थे उस घर के और पड़ोस के बच्चों की तो यह भी इच्छा हुई कि वह पालम हवाई अड्डे पर पहुंच कर उनकी रथी को सम्मान दें और टाउन हाल भी पहुँचें जहां कि रथी जनता के दर्शनों के लिये रखी जाने वाली थी. पर उन बच्चों की यह इच्छा पूरी न हो सकी. दूसरे दिन सवेरे तो वह बच्चे किसी तरह रोके न रुके और रथी के दर्शनों के लिये चल ही पड़े. हम भी उनके साथ हो लिये. जामा मस्जिद से अजमेरीगेट तक लोगों के ठठ के ठठ लगे

پریم رس میں ڈوب کر اور اسمیس کے بدلے نیچے سے نیچے کام کرنے میں شرم تو لگتی ہی نہیں' دونا اتساہ بڑھتا ہے' آنند آتا ہے۔

یہ جانکر ہمارے پڑھنے والوں کو کتنی خوشی ہوگی کہ جوتا گانٹھتے گانٹھتے اِن بہنوں کے وچار کتنے اُونچے جاتے ہیں۔ نہ انہیں یہ خیال ہوتا ہے کہ چپل بناکر ہمیں کتنی بچت ہوگی' نہ یہ کہ اِس کے کتنے دام اُٹھینگے۔ یہ تو یہ سوچتی رہتی ہیں کہ کس طرح اِن کا دیش اپنے پیروں پر آپ کھڑا ہوگا اور نہ صرف اپنی ضرورتوں کے لئے دوسرے ملکوں کی اور تاکنا چھوڑ دیگا بلکہ ضرورت پڑنے پر دوسروں کا دکھ دور کرنے کے قابل بن سکیگا۔

یہ چپل کلاس ہمیں کوری چپل کلاس نہ ملی۔ یہ تو اچھی خاصی کلا کلاس تھی۔ کلا پورن چپل کی جوڑیاں تو تھی ہیں۔ پر سارے کمرے میں چترکاری کے کلا پورن نمونے بھی لٹکے ہوئے تھے۔ ایک چتر میں گاندھی جی کی دو ٹانگیں دکھائی گئی تھیں' اُن کے پاؤں میں چپل تھے' اُن کے چپلوں کے نیچے رُوڑھی رواج' چھوا چھوت' داستا کے کانٹوں کی نوکیں ٹوٹتی ہوئی دکھائی گئی تھیں۔ اسی کا نام ہے 'سادگی سے رہنا اور اونچی اڑان لینا'۔

پڑھنے والوں کو یاد رہے کہ جو کچھ ہم نے دیکھا وہ کلاکار حسینی صاحب کی ڈیڑھ مہینے کی محنت کا نتیجہ تھا۔ اِن ڈیڑھ مہینوں میں چپلیں کتنی بنیں' کتنوں نے کتنا سیکھا اور کیسا کام سیکھا اس ناپ تول سے ہمیں کیا لینا۔ ہمیں تو کام ہے اُن وچاروں کی کایا پلٹ سے جو کالج کی مہلا پروفیسروں اور پڑھنے والی بہنوں اور بیٹیوں میں ہوئی۔

—بھگوان دین

راج دوت آصف علی صاحب کی رتھی

راج دوت آصف علی صاحب کی رتھی پہونچنے کی خبر دلی والوں کو ریڈیو سے جیسے ہی ملی ویسے ہی دلی شہر کے ہر مرد عورت چھوٹے بڑے' غریب امیر' سب کے دل میں ایک ہل چل مچ گئی۔ ہم جس گھر میں ٹھہرے ہوئے تھے اس گھر کے اور پڑوس کے بچوں کی تو یہ بھی اچھا ہوئی کہ وہ پالم ہوائی اڈے پر پہونچ کر اُن کی رتھی کو سمان دیں اور ٹاؤن ہال بھی پہونچیں جہاں کی رتھی جنتا کے درشنوں کے لئے رکھی جانے والی تھی۔ پر اُن بچوں کی یہ اچھا پوری نہ ہو سکی۔ دوسرے دن سویرے تو وہ بچے کسی طرح روکے نہ رکے اور رتھی کے درشنوں کے لئے چل ہی پڑے۔ ہم بھی اُن کے ساتھ ہو لئے۔ جامع مسجد سے اجمیری گیٹ تک لوگوں کے ٹھٹھ کے ٹھٹھ لگے

औजार और भी थे. इनमें सिर्फ एक ऐसा औजार था जो अभी हिन्दुस्तान में नहीं बनता, विलायत से बना बनाया आता है. है वह भी गैरजरूरी। हर चप्पल में उसकी जरूरत नहीं. वह सिर्फ सुराख करने के काम आता है. इन पंद्रह औजारों के दाम कमसे कम पंद्रह रूपये और ज्यादा से ज्यादा बीस रुपये. एक विलायती औजार को छोड़कर बाकी सब औजारों की मरम्मत विद्यार्थी खुद कर सकता है या किसी लुहार से करवा सकता है. दो जरूरी औजारों को छोड़कर बाकी तेरह या तो क्लास के लिये जरूरी हैं या दुकान के लिये, घरेलू काम के लिये नहीं.

दो बहिनों ने हमें यह भी बताया कि जो चप्पलें वह पहने हुए हैं उनकी अपने हाथ की बनी हैं. हम इसी सिलसिले में यह कह बैठे कि चप्पल साजी घरेलू काम तब ही बन सकेगा जब कुछ बहनें यह प्रतिज्ञा करलें कि वह अपने हाथ की बनी हुई ही चप्पलें पहनेंगी हमने इसी सिलसिले में यह भी कह दिया कि हम अभी हिन्दुस्तान के पूर्वी कोने पर बसी हुई मनीपुर रियासत से आये हैं. वहां की हर बहन कपड़ा बुनना जानती है. वहां पूजा के काम में घर के कपड़े के सिवाय दूसरा कपड़ा काम में नहीं लाया जाता. यह सुनकर एक बहन फ़ौरन प्रतिज्ञा कर बैठी कि वह आगे से अपने हाथ की बनी चप्पलें ही पहना करेगी.

बातों बातों में हम एक बहिन के बारे में पूछ बैठे कि वह किस ईयर में पढ़ती है. इसके जवाब में हमें सुनने को मिला :

आज कल हमारे कालेज के इम्तहान हो रहे हैं. यहां इस वक्त विद्यार्थी कोई नहीं है. यहां तो सब कालेज की प्रोफ़ेसर हैं. इनमें जो एक सफ़ेद बाल वाली बहन थीं वह थी कालेज होस्टल की मैट्रन जिनका नाम था शुभकरी बहन. फिर तो पता चला एक थीं अंग्रेजी लेक्चरर श्रीमती भागीरथी पिल्ले, कुमारी सारम्भा टोमस, हिन्दी लेक्चरर कुमारी शीला अग्रवाल और श्रीमती स्नेहलता श्रीवास्तव, इतिहास लेक्चरर कुमारी इन्द्रानायर, संस्कृत लेक्चरर कुमारी सीता लक्षमी भट्ट, इक्नामिक्स लेक्चरर कुमारी सम्मिलता-कौर...उन्हीं में दो और थीं विमलाभट्ट और विजय भाटिया.

इन बहनों को मोची का काम करते देख कर किसी विदेशी के दिल में यह शक कैसे रह सकता है कि हिन्दुस्तान में छूतछात की बीमारी भी है. यह देखकर हम यह पूछने की हिम्मत ही न कर सके कि किस किस वर्ण के विद्यार्थियों ने इस काम को सीखना शुरू किया है.

हमारा विचार अंदर अंदर चल रहा था कि एक बहन उठ खड़ी हुई और बोली—"हम टूटे फूटे जूते भी गांठ लेती हैं, क्लास में ही नहीं घर पर भी. पड़ोसियों के जूते गाँठने में भी हमें कोई शर्म नहीं मालूम होती." हमने कह दिया,

زار اور بھی تھے' اِن میں صرف ایک ایسا اوزار تھا جو
ہی ھندستان میں نہیں بنتا' ولائت سے بنا بنایا آتا
. ہے وہ بھی غیر ضروری . ہر چپل میں اسکی ضرورت
ہیں۔ وہ صرف سوراخ کرنے کے کام آتا ہے . اِن پندرہ اوزاروں
دام کم سے کم پندرہ روپئے اور زیادہ سے زیادہ بیس روپئے۔
یک ولائتی اوزار کو چھوڑ کر باقی سب اوزاروں کی مرمت
یارتھی خود کرسکتا ہے یا کسی لوہار سے کروا سکتا ہے .
و ضروری اوزاروں کو چھوڑ کر باقی تیرہ یا تو کلاس کے
لئے ضروری ہیں یا دکان کے لئے' گھریلو کام کے لئے نہیں .

دو بہنوں نے ہمیں یہ بھی بتایا کہ جو چپلیں وہ
پہنے ہوئے ہیں اُن کی اپنے ہاتھ کی بنی ہیں . ہم اِسی
سلسلے میں یہ کہہ بیٹھے کہ چپل سازی گھریلو کام تبھی
ن سکیگا جب کچھ بہنیں یہ پرتگیا کرلیں کہ وہ اپنے ہاتھ
ی بنی ہوئی ہی چپلیں پہنینگی . ہم نے اِسی سلسلے
میں یہ بھی کہہ دیا کہ ہم ابھی ھندستان کے پوربی کونے
ر بسی ہوئی منی پور ریاست سے آئے ہیں۔ وہاں کی ہر
ہن کپڑا بننا جانتی ہے . وہاں پوجا کے کام میں گھر کے
پڑے کے سوائے دوسرا کپڑا کام میں نہیں لایا جاتا. یہ سن
ر ایک بہن فوراً پرتگیا کر بیٹھی کہ وہ آگے سے اپنے ہاتھ
ی بنی چپلیں ہی پہنا کریگی .

باتوں باتوں میں ہم ایک بہن کے بارے میں یہ پوچھ
بیٹھے کہ وہ کس ایئر میں پڑھتی ہے . اِس کے جواب میں
ہمیں سننے کو ملا :

آج کل ہمارے کالج کے اِمتحان ہو رہے ہیں۔ یہاں اِس
قت ودیارتھی کوئی نہیں ہے . یہاں تو سب کالج کی
روفیسر ہیں۔ اُن میں جو ایک سفید بال والی بہن تھیں
ہ تھیں کالج ہوسٹل کی میٹرن جن کا نام تھا شبھکری
ہن۔ پھر تو پتہ چلا ایک تھیں انگریزی لیکچرر' شریمتی
بھاگیرتھی پلے' کماری سارمبھا ٹامس' ہندی لیکچرر کماری
شیلا اگروال اور شریمتی سنیہ لتا شریواستو' اِتہاس لیکچرر
کماری اِندرا نائر' سنسکرت لیکچرر کماری سیتا لکشمی
بھٹ' اِکنامکس لیکچرر کماری سملتا کور......اُنہیں
میں دو اور تھیں ومل بھٹ اور وجے بھاٹیا .

اِن بہنوں کو موچی کا کام کرتے دیکھ کر کسی ودیشی
کے دل میں یہ شک کیسے رہ سکتا ہے کہ ھندستان میں
چھوت چھات کی بیماری بھی ہے۔ یہ دیکھکر ہم یہ پوچھنے
کی ہمت ھی نہ کرسکے کہ کس کس ورن کے ودیارتھیوں
نے اِس کام کو سیکھنا شروع کیا ہے . ہمارا وچار اندر اندر
چل رہا تھا کہ ایک بہن اُٹھ کھڑی ہوئی اور بولی—"ہم
ٹوٹے پھوٹے جوتے بھی گانٹھ لیتی ہیں . کلاس میں ہی
نہیں گھر پر بھی۔ پڑوسیوں کے جوتے گانٹھنے میں بھی
ہمیں کوئی شرم نہیں معلوم ہوتی." ہم نے کہہ دیا"

मालूम होने लगा कि हम अपने घर में हैं, और हमारी बहन बेटियां हमें अपना काम काम दिखा रही हैं

चप्पलों की कई जोड़ियां अलग अलग तख्तों पर जड़ी हुई खड़े खड़े, क़रीने से रखा हुई थीं. उनमें से दो एक तो कला का नमूना थीं आर्टिस्ट साहब ने उनको भी बारी बारी से दिखाया.

पास ही कार्ड बोर्ड पर लगे हुए तिकोने, चौकोने, पचकोने, कुछ चमड़े के टुकड़े देखने को मिले. इन सब पर थोड़ी थोड़ी सिलाई की हुई थी. इस नुमायश को हम बिल्कुल न समझ पाये. कलाकार से पूछना पड़ा, यह क्या और किसलिये ?

हुसेनी साहब बोले. यह हैं चप्पल की कतरनें. आप जानते ही हैं, आजकल, चमड़ा कितना गिरां है हम चमड़े का एक टुकड़ा खराब नहीं जाने देते. यह जो इन टुकड़ों पर सिलाई की हुई है यह हमारे सीखने वालों के पहले दिन का काम है. हम पहले पहल इनको सिलाई ही सिखाते हैं. इन कतरनों को हम चप्पलों की एड़ी में बिठा देते हैं. इन कतरनों को कार्ड बोर्ड पर इसलिये लगा रखा है कि विद्यार्थी को यह ध्यान रहे और उसकी नजर के सामने रहे कि उसने पहले दिन कैसी सिलाई की थी, और आज वह कैसी करता है.

बातों बातों में यह भी मालूम हुआ कि एक जोड़ी चप्पल. कटाई से लेकर सिलाई होकर, हर तरह तैयार होने में, कम से कम, ढाई घंटा और ज्यादा से ज्यादा तीन घंटा लेती हैं, हां उसपर कुछ कला का काम किया जाय तो ज्यादा वक़्त भी लग सकता है. एक चप्पल में तीन से पांच रुपये तक की लागत लगती है. और बाजार में उसके दाम छै से आठ तक आसानी से मिल सकते हैं. ऊंची दुकान में दस तक भी बिक सकती है.

हमें 'ढाई घंटे' वाली बात पर कुछ शक हो रहा था. हम सवाल करने को ही थे कि एक बहन ने उठ कर कहा "एक दिन एक सज्जन कालेज में लेक्चर देने आये, उनकी चप्पल का उसी समय नाप लिया गया. उनका लेक्चर खत्म होने के बाद कालेज में तैयार की हुई उनकी चप्पल उनके पांव में पहना दी गई. उनके कालेज पहुंचने, लेक्चर खत्म करने में पूरे तीन घंटे का समय लगा.

बातों बातों में औजारों की बात चल पड़ी. मालूम हुआ, चप्पल साजी के औजार तो दो ही हैं. एक रांपी, एक सुतारी. रांपी काटती है, सुतारी सीती है. दोनों के दाम आठ आने या एक रुपया. यह दोनों आसानी से कोई भी लुहार बना सकता है. इसकी टूट-फूट चप्पल बनाने वाला खुद कर लेता है टूट फूट ठीक करने वाले औजार भी कीमती नहीं, उनके दाम भी रुपये आठ आने. ये औजार भी मामूली लुहार बना सकता है. इसमें शक नहीं कि चप्पल क्लास में तेरह

معلوم ہونے لگا کہ ہم اپنے گھر میں ہیں، اور ہماری بہن بیٹیاں ہمیں اپنا کام دکھا رہی ہیں ۔

چپلوں کی کئی جوڑیاں الگ الگ تختوں پر جڑی ہوئی، کھڑے کھڑے، قرینے سے رکھی ہوئی تھیں ۔ ان میں سے دو ایک تو کلا کا نمونہ تھیں ۔ آرٹسٹ صاحب نے ان کو بھی باری باری سے دکھایا ۔

پاس ہی کارڈ بورڈ پر لگے ہوئے تکونے، چوکونے، پچکونے، کچھ چمڑے کے ٹکڑے دیکھنے کو ملے ۔ ان سب پر تھوڑی تھوڑی سلائی کی ہوئی تھی ۔ اس نمائش کو ہم بالکل نہ سمجھ پائے ۔ کلاکار سے پوچھنا پڑا، یہ کیا اور کس لئے ؟

حسینی صاحب بولے، یہ ہیں چپل کی کترنیں، آپ جانتے ہی ہیں، آج کل، چمڑا کتنا گراں ہے، ہم چمڑے کا ایک ٹکڑا خراب نہیں جانے دیتے ۔ یہ جو ان ٹکڑوں پر سلائی کی ہوئی ہے یہ ہمارے سیکھنے والوں کے پہلے دن کا کام ہے ہم پہلے پہل ان کو سلائی ہی سکھاتے ہیں ۔ ان کترنوں کو ہم چپلوں کی ایڑی میں بٹھا دیتے ہیں ۔ ان کترنوں کو کارڈ بورڈ پر اس لئے لگا رکھا ہے کہ ودیارتھی کو یہ دھیان رہے اور اسکی نظر کے سامنے رہے کہ اس نے پہلے دن کیسی سلائی کی تھی، اور آج وہ کیسی کرتا ہے ۔

باتوں باتوں میں یہ بھی معلوم ہوا کہ ایک جوڑی چپل، کٹائی سے لیکر سلائی ہوکر ہر طرح تیار ہونے میں، کم سے کم، ڈھائی گھنٹے اور زیادہ سے زیادہ تین گھنٹے لیتی ہے، ہاں اس پر کچھ کلا کا کام کیا جائے تو زیادہ وقت بھی لگ سکتا ہے ۔ ایک چپل میں تین سے پانچ روپے تک کی لاگت لگتی ہے ۔ اور بازار میں اس کے دام چھ سے آٹھ تک آسانی سے مل سکتے ہیں ۔ اونچی دکان میں دس تک بھی بک سکتی ہے ۔

ہمیں 'ڈھائی گھنٹے' والی بات پر کچھ شک ہو رہا تھا ۔ ہم سوال کرنے کو ہی تھے کہ ایک بہن نے اٹھ کر کہا "ایک دن ایک سجن کالج میں لیکچر دینے آئے، ان کی چپل کا اسی سمے ناپ لیا گیا ۔ ان کا لیکچر ختم ہونے کے بعد کالج میں تیار کی ہوئی ان کی چپل ان کے پاؤں میں پہنا دی گئی ۔ ان کے کالج پہونچنے، لیکچر ختم کرنے میں پورے تین گھنٹے کا سمے لگا ۔

باتوں باتوں میں اوزاروں کی بات چل پڑی ۔ معلوم ہوا چپل سازی کے اوزار تو دو ہی ہیں ۔ ایک رانپی، ایک ستاری ۔ رانپی کاٹتی ہے، ستاری سیتی ہے ۔ دونوں کے دام آٹھ آنے یا ایک روپیہ ۔ یہ دونوں آسانی سے کوئی بھی لوہار بنا سکتا ہے ۔ اسکی ٹوٹ پھوٹ چپل بنانے والا خود کر لیتا ہے ۔ ٹوٹ پھوٹ ٹھیک کرنے والے اوزار بھی قیمتی نہیں، ان کے دام بھی روپیہ آٹھ آنے ۔ یہ اوزار بھی معمولی لوہار بنا سکتا ہے اس میں شک نہیں کہ چپل کلاس میں تیرہ

सहयोग मिल सकना ना मुमकिन है. जनता सरकार के साथ सहयोग करने के लिये बेचैन है. पर यह सहयोग जनता उन्हीं योजनाओं में कर सकती है जो जनता के दिल लगती हों आजकल की योजनायें न जनता के दिल लगती हैं और न हो सकती हैं.

हजारों नौ जवान हैं जो देश को आगे बढ़ाने के लिये काम करना चाहते हैं. इन नौ जवानों की छिपी हुई शक्ति किसी देश के नौ जवानों की शक्ति से कम नहीं. पर आजकल जो लोग हैं उनका रहन सहन, उनका रुख और उनके विचार इन नौ जवानों को अपनी तरफ़ खींचे या उन में उमंग पैदा करने की जगह उन्हें और दूर हटाते हैं.

महात्मा गांधी भारत और भारतवासियों को अच्छी तरह समझते थे. उन्होंने हमारे लिये कामयाबी की एक साफ़ और सीधी सड़क तैयार कर दी है. पड़ोसी देशों की जीती जागती मिसालें भी हम में साहस और विश्वास पैदा करने के लिये काफ़ी होनी चाहियें. अच्छा हो कि अब भी हम में इतनी समझ और इतना बल आ सके कि हम सीधे रास्ते पर चल सकें. हमारे लिये दूसरा कोई रास्ता नहीं.

—सुन्दरलाल

इन्द्रप्रस्थ कालिज और चप्पल साज़ी

कलाकार हुसेनी साहब ने जब चप्पल क्लास दिखाने की दावत पं० सुन्दर लालजी के साथ साथ मुझे भी दी तो मैं कुछ न समझ पाया.

हुसेनी साहब इन्द्रप्रस्थ कालेज में प्रोफेसर हैं. महीना डेढ़ महीना हुआ आप हैदराबाद से इन्द्रप्रस्थ कालेज की लड़कियों को चप्पल बनाने का काम सिखाने आये हुए हैं. मुझे हैरत हुई, इन्द्रप्रस्थ कालेज, चप्पल साजी, और कलाकार!

दूसरे दिन मैं पंडित जी के साथ साथ कालेज पहुँच ही तो गया. क्या देखता हूं, आर्टिस्ट साहब धूप में नंगे सिर हमारी तरफ़ लपके चले आरहे हैं! हमें किसी वजह से पांच सात मिनट की देरी होगई थी. आर्टिस्ट साहब ने हमें माफ़ी मांगने तक का मौक़ा न दिया, तुरत हम दोनों को अपना चप्पल-क्लास में ले गये. चप्पल क्लास क्या थी एक दुकान थी जिसमें कुछ लड़कियाँ एक अधेड़ उम्र की महिला की मातहती में जूते गांठने का काम कर रहीं थीं.

थोड़ी देर में हम उनके बीच में थे और आर्टिस्ट साहब हमें उनके हाथों से चप्पलें लेकर दिखा रहे थे. मिनट डेढ़ मिनट के बाद ही उन बहनों में से कोई कोई अपनी चप्पल सिलाई का काम दिखलाने लगीं. अब हमारे सिर से यह बात निकल गई कि हम किसी क्लास में खड़े हैं. ऐसा

سہیوگ مل سکنا ناممکن ہے۔ جنتا سرکار کے ساتھ سہیوگ کرنے کیلئے بے چین ہے۔ پر یہ سہیوگ جنتا اُنہیں یوجناؤں میں کرسکتی ہے جو جنتا کے دل لگتی ہوں۔ آجکل کی یوجنائیں نہ جنتا کے دل لگتی ہیں اور نہ ہوسکتی ہیں۔

ہزاروں نوجوان ہیں جو دیش کو آگے بڑھانے کیلئے کام کرنا چاہتے ہیں۔ ان نوجوانوں کی چھپی ہوئی شکتی کسی دیش کے نوجوانوں کی شکتی سے کم نہیں۔ پر آجکل جو لوگ ہیں اُن کا رہن سہن، ان کا رخ اور ان کے وچار ان نوجوانوں کو اپنی طرف کھینچے یا ان میں اُمنگ پیدا کرنے کی جگہ اُنہیں اور دور ہٹاتے ہیں۔

مہاتما گاندھی بھارت اور بھارت واسیوں کو اچھی طرح سمجھتے تھے۔ اُنہوں نے ہمارے لئے کامیابی کی ایک صاف اور سیدھی سڑک تیار کر دی ہے۔ پڑوسی دیشوں کی جیتی جاگتی مثالیں بھی ہم میں ساہس اور وشواس پیدا کرنے کیلئے کافی ہونی چاہئیں۔ اچھا ہو کہ اب بھی ہم میں اتنی سمجھ اور اتنا بل آسکے کہ ہم سیدھے راستے پر چل سکیں۔ ہمارے لئے دوسرا کوئی راستہ نہیں۔

-- سندرلال

اِندر پرستھ کالج اور چپل سازی

کلاکار حسینی صاحب نے جب چپل کلاس دکھانے کی دعوت پنڈت سندر لال جی کے ساتھ ساتھ مجھے بھی دی تو میں کچھ نہ سمجھ پایا۔

حسینی صاحب اِندر پرستھ کالج میں پروفیسر ہیں۔ مہینہ ڈیڑھ مہینہ ہوا آپ حیدرآباد سے اِندر پرستھ کالج کی لڑکیوں کو چپل بنانے کا کام سکھانے آئے ہوئے ہیں۔ مجھے حیرت ہوئی، اِندر پرستھ کالج، چپل سازی، اور کلاکار!

دوسرے دن میں پنڈت جی کے ساتھ ساتھ کالج پہونچ ہی تو گیا۔ کیا دیکھتا ہوں، آرٹسٹ صاحب دھوپ میں ننگے سر ہماری طرف لپکے چلے آرہے ہیں! ہمیں کسی وجہ سے پانچ سات منٹ کی دیری ہوگئی تھی۔ آرٹسٹ صاحب نے ہمیں معافی مانگنے تک کا موقع نہ دیا، ترت ہم دونوں کو اپنی چپل کلاس میں لے گئے۔ چپل کلاس کیا تھی ایک دکان تھی جس میں کچھ لڑکیاں ایک ادھیڑ عمر کی مہیلا کی ماتحتی میں جوتے گانٹھنے کا کام کر رہی تھیں۔

تھوڑی دیر میں ہم اُن کے بیچ میں تھے اور آرٹسٹ صاحب ہمیں اُن کے ہاتھوں سے چپلیں لے کر دکھا رہے تھے۔ منٹ ڈیڑھ منٹ کے بعد ہی اُن بہنوں میں سے کوئی کوئی اپنی چپل سلائی کا کام دکھلانے لگیں۔ اب ہمارے سر سے یہ بات نکل گئی کہ ہم کسی کلاس میں کھڑے ہیں۔ ایسا

की सेवा, शिक्षा और संगठन में अपना सारा समय लगाना चाहिये. गांधी जी की सलाह पर अगर उस समय अमल किया जाता तो हमारे देश के शासकों और जनता के बीच जो खाई बढ़ती जा रही है वह पैदा ही न होती और देश में एक सच्ची जनता की सरकार क़ायम हो सकती.

इस तरह हमारे अन्दर जो कमी है वह यही है कि हमारे अपने सामने कोई ठीक ठीक आदर्श नहीं हैं और गांधी जी के आदर्शों और उनकी सलाह में हमें विश्वास नहीं इसीलिये हमने उन्हें नहीं माना.

हमारे अधिकतर सरकारी महकमों में ग़रीब जनता का रुपया जिस तरह पानी की तरह बहाया जा रहा है उसकी तफ़सील में जाने की यहाँ ज़रूरत नहीं है. पीढ़ियों तक हम यह शिकायत करते रहे कि अंगरेज़ी हुकूमत इस देश के लिये बहुत मंहगी है और रुपया फेंकती है, आज हमारी हुकूमत अंगरेज़ी हुकूमत से कहीं ज़ियादा मंहगी है और उसका ख़र्च बढ़ता चला जा रहा है. अकेले बिहार के अन्दर हमें बताया गया है कि केवल पुलिस का ख़र्च जो अंगरेज़ी राज के ज़माने में लगभग 75 लाख रुपया सालाना था, और जिसकी हमें बड़ी शिकायत रहती थी अब लगभग तीन करोड़ अस्सी लाख है. होना यह चाहिये था कि आज़ाद भारत में पुलिस और कम होती. दूसरे महकमों में भी इसी तरह की फ़िज़ूल ख़रची और देश की असली हालत पर निगाह न देने का नतीजा यह है कि हम बाहर के मुल्कों के साथ बिलकुल ग़ैर ज़रूरी और ख़तरनाक माली देनदारियों और राजकाजी उलझनों में फंसते चले जा रहे हैं.

जनता के लिये अब दो ही रास्ते हैं. पहला रास्ता यह है कि आजकल के शासकों पर इस बात के लिये काफ़ी दबाव डाला जाय कि वे अपनी तनख़ाहों और ख़रचों को कम करें, मामूली शहरियों की तरह मामूली घरों में रहें, अपने रहन सहन को जहां तक हो सके जनता के रहन सहन के नज़दीक लावें और इस तरह उन लोगों के लिये एक मिसाल क़ायम करें जो इस समय ऊपर से नीचे तक राज चला रहे हैं. जनता सरकार को मजबूर करे कि वह शासन के ख़र्च को कम करे और घूस ख़ोरी, भ्रष्टाचार और बेकारी को ख़तम करने का वचन दे.

अगर यह न हो सके तो दूसरा रास्ता जनता के लिये यह है कि आजकल के शासकों की जगह इस तरह के आदमियों को चुने और बैठावे जो चाहे किसी भी पारटी के हों या न हों, इन सब बातों के करने की प्रतीज्ञा करें.

सरकार के साथ सहयोग करने के लिये जनता में जोश पैदा करने का यही एक मात्र तरीक़ा है. आज के हालात में जनता में जोश पैदा हो सकना और सरकार को

کی سیوا، شکشا اور سنگھٹن میں اپنا سارا سمے لگانا چاہئے. گاندھی جی کی صلاح پر اگر اس سمے عمل کیا جاتا تو ہمارے دیش کے شاسکوں اور جنتا کے بیچ جو کھائی بڑھتی جا رہی ہے وہ پیدا ہی نہ ہوتی اور دیش میں ایک سچی جنتا کی سرکار قائم ہوسکتی۔

اس طرح ہمارے اندر جو کمی ہے وہ یہی ہے کہ ہمارے اپنے سامنے کوئی ٹھیک ٹھیک آدرش نہیں ہیں اور گاندھی جی کے آدرشوں اور انکی صلاح میں ہمیں وشواس نہیں اسی لئے ہم نے انہیں نہیں مانا۔

ہمارے ادھکتر سرکاری محکموں میں غریب جنتا کا روپیہ جس طرح پانی کی طرح بہایا جا رہا ہے اسکی تفصیل میں جانے کی یہاں ضرورت نہیں ہے۔ پیڑھیوں تک ہم یہ شکایت کرتے رہے کہ انگریزی حکومت اس دیش کے لئے بہت مہنگی ہے اور روپیہ پھینکتی ہے۔ آج ہماری حکومت انگریزی حکومت سے کہیں زیادہ مہنگی ہے اور اس کا خرچ بڑھتا چلا جا رہا ہے۔ اکیلے بہار کے اندر ہمیں بتایا گیا ہے کہ کیول پولیس کا خرچ جو انگریزی راج کے زمانے میں لگ بھگ 75 لاکھ روپیہ سالانہ تھا، اور جسکی ہمیں بڑی شکایت رہتی تھی اب لگ بھگ تین کروڑ اسی لاکھ ہے. ہونا یہ چاہئے تھا کہ آزاد بھارت میں پولیس اور کم ہوتی۔ دوسرے محکموں میں بھی اسی طرح کی فضول خرچی اور دیش کی اصلی حالت پر نگاہ نہ دینے کا نتیجہ یہ ہے کہ ہم باہر کے ملکوں کے ساتھ بالکل غیر ضروری اور خطرناک مالی دینداریوں اور راجکاجی الجھنوں میں پھنستے چلے جا رہے ہیں۔

جنتا کیلئے اب دو ہی راستے ہیں. پہلا راستہ یہ ہے کہ آجکل کے شاسکوں پر اس بات کیلئے کافی دباؤ ڈالا جائے کہ وہ اپنی تنخواہوں اور خرچوں کو کم کریں، معمولی شہریوں کی طرح معمولی گھروں میں رہیں، اپنے رہن سہن کو جہاں تک ہوسکے جنتا کے رہن سہن کے نزدیک لاویں اور اس طرح ان لوگوں کیلئے ایک مثال قائم کریں جو اس سمے اوپر سے نیچے تک راج چلا رہے ہیں۔ جنتا سرکار کو مجبور کرے کہ وہ شاسن کے خرچ کو کم کرے اور گھوس خوری، بھرشٹاچار اور بیکاری کو ختم کرنے کا بچن دے۔

اگر یہ نہ ہوسکے تو دوسرا راستہ جنتا کیلئے یہ ہے کہ آجکل کے شاسکوں کی جگہ اس طرح کے آدمیوں کو چنے اور بیٹھاوے جو چاہے کسی بھی پارٹی کے ہوں یا نہ ہوں، ان سب باتوں کے کرنے کی پرتگیا کریں۔

سرکار کے ساتھ سہیوگ کرنے کیلئے جنتا میں جوش پیدا کرنے کا یہی ایک ماتر طریقہ ہے۔ آج کے حالات میں جنتا میں جوش پیدا ہوسکنا اور سرکار کو

बसर करते हैं जिस तरह महात्मा गांधी कहते थे तो मुमकिन है हम यह समझते कि गांधी जी की सलाह अमल करने की चीज़ नहीं थी.

गांधी जी ने यह भी सलाह दी थी कि पारलियामेन्ट भवन जैसी सब शानदार इमारतें जो अंगरेज़ नई दिल्ली में छोड़ गए हैं या तो स्कूलों, कालेजों और विश्व विद्यालयों को दे दी जायं और या उनमें ग़रीबों के लिये अस्पताल खोल दिये जायं, और स्वराज सरकार को अपना सारा कारोबार इस तरह के सीधे सादे मकानों में करना चाहिये जो भारत जैसे निर्धन देश के जीवन से खपते हुए हों. हमें याद रखना चाहिये कि नये चीन में सब पुराने महल और बड़ी बड़ी इमारतें ग़रीबों और मज़दूरों को दे दी गई हैं जिनमें वह लोग अपने मेले ठेले तमाशे और आमोद प्रमोद करते हैं, और जिन्हें अब वह "वरकर्स कलचरल पैलेसेस" कहते हैं. चोटी के लोगों के सादा और किफ़ायत शारी की ज़िन्दगी बसर करने से ही नीचे के सरकारी अफ़सरों और नौकरों में वह उमंग पैदा हो सकती है जो घूस खोरी और भ्रष्टाचार को रोक सके.

देश के आज़ाद हो जाने से बाद गांधी जी ने जब देखा कि झूटी शान के ख़याल में पड़ कर कांगरेस नेता उनकी सलाह नहीं मान रहे हैं तो उन्होंने साहस के साथ और साफ़ शब्दों में सब कांगरेस वालों से कहा कि वे दिल्ली सरकार और प्रान्ती सरकारों के सब ओहदों से स्तीफ़े दे दें. सब धारा सभाओं में से बाहर निकल आवें, कांगरेस संगठन को तोड़ दें और गांव गांव में जा कर जनता को समझा कर इस तरह संगठित कर दें कि शासन चाहे किसी के भी हाथ में रहे लोगों में इतना बल आजावे कि जहां कहीं और जब कभी शासक अपनी शक्ति का दुरुपयोग करें लोग उनका हाथ रोक सकें, जिससे कोई सरकार जनता की इच्छा के विरुद्ध चलने की हिम्मत न कर सके.

महात्मा गांधी ने यह पेशीन गोई कर दी थी कि अगर कांगरेस वालों ने उनकी सलाह पर अमल न किया तो हुकूमत हाथ में आते ही कांगरेस वालों का चलन बिगड़ जायगा और वह लोगों की नज़रों में गिर जावेंगे जिससे जनता और अधिक मुसीबत में फंसेगी जिसकी सारी ज़िम्मेदारी कांगरेस वालों पर होगी. कांगरेसी नेताओं ने उस समय गांधी जी की बात न सुनी. नतीजा यह हुआ कि गांधी जी की पेशीन गोई सच्ची निकली.

श्री घनश्याम सिंह गुप्त ने, जो बिहार की तहक़ीक़ात के लिये भेजे गए थे अपनी रिपोर्ट में यह भी सलाह दी है कि कम से कम बिहार में सब कांगरेस वालों को सरकारी ओहदों से स्तीफ़े दे देना चाहिये, धारा सभाओं से निकल आना चाहिये और जनता में जाकर तीन साल तक जनता

بسر کرتے ھیں جس طرح مہاتما گاندھی کہتے تھے تو ممکن ھے ہم یہ سمجھتے کہ گاندھی جی کی صلاح عمل کرنے کی چیز نہیں تھی .

گاندھی جی نے یہ بھی صلاح دی تھی کہ پارلیامنٹ بھون جیسی سب شاندار عمارتیں جو انگریز نئی دلی میں چھوڑ گئے ھیں یا تو اسکولوں' کالجوں اور وشو ودیالیوں کو دے دی جاویں اور یا اُن میں غریبوں کے لئے اسپتال کھول دیئے جائیں' اور سوراج سرکار کو اپنا سارا کاروبار اس طرح کے سیدھے سادے مکانوں میں کرنا چاھئے جو بھارت جیسے نردھن دیش کے جیون سے کھپتے ہوئے ھوں . ھمیں یاد رکھنا چاھئے کہ نئے چین میں سب پرانے محل اور بڑی بڑی عمارتیں غریبوں اور مزدوروں کو دے دی گئی ھیں جن میں وہ لوگ اپنے میلے ٹھیلے تماشے اور آمود پرمود کرتے ھیں' اور جنھیں اب وہ ورکرس کلچرل پیلسس کہتے ھیں. چوٹی کے لوگوں کے سادہ اور کفایت شعاری کی زندگی بسر کرنے سے ھی نیچے کے سرکاری افسروں اور نوکروں میں وہ اُمنگ پیدا ہو سکتی ھے جو گھوس خوری اور بھرشٹاچار کو روک سکے .

دیش کے آزاد ھو جانے کے بعد گاندھی جی نے جب دیکھا کہ جھوٹی شان کے خیال میں پڑ کر کانگریس نیتا اُن کی صلاح نہیں مان رہے ھیں تو اُنہوں نے ساھس کے ساتھ اور صاف شبدوں میں سب کانگریس والوں سے کہا کہ وے دلی سرکار اور پرانتی سرکاروں کے سب عہدوں سے استعفے دے دیں . سب دھارا سبھاؤں میں سے باھر نکل آویں کانگریس سنگھٹن کو توڑ دیں اور گاؤں گاؤں میں جاکر جنتا کو سمجھاکر اس طرح سنگھٹت کر دیں کہ شاسن چاہے کسی کے بھی ھاتھ میں رہے لوگوں میں اتنا بل آ جاوے کہ جہاں کہیں اور جب کبھی شاسک اپنی شکتی کا دراپیوگ کریں لوگ اُن کا ھاتھ روک سکیں' جس سے کوئی سرکار جنتا کی اِچھا کے وِردھ چلنے کی ھمت نہ کرسکے .

مہاتما گاندھی نے یہ پیشین گوئی کر دی تھی کہ اگر کانگریس والوں نے انکی صلاح پر عمل نہ کیا تو حکومت ھاتھ میں آتے ھی کانگریس والوں کا چلن بگڑ جائے گا اور وہ لوگوں کی نظروں میں گر جاویں گے جس سے جنتا اور ادھک مصیبت میں پھنسے گی جس کی ساری ذمہ داری کانگریس والوں پر ھوگی . کانگریسی نیتاؤں نے اُس سمے گاندھی جی کی بات نہ سنی. نتیجہ یہ ھوا کہ گاندھی جی کی پیشین گوئی سچی نکلی .

شری گھنشیام سنگھ گپت نے' جو بہار کی تحقیقات کیلئے بھیجے گئے تھے اپنی رپورٹ میں یہ بھی صلاح دی ھے کہ کم سے کم بہار میں سب کانگریس والوں کو سرکاری عہدوں سے استعفے دے دینا چاھئے' دھارا سبھاؤں سے نکل آنا چاھئے اور جنتا میں جاکر تین سال تک جنتا

ईमानदारी पर सबको विश्वास था इसलिये आत्म हत्या कर ली क्योंकि उस पर यह बेजा दबाव डाला गया कि वह किसी दूसरे उम्मीदवार के लिये जो ऊपर के कांग्रेस अधिकारियों का अधिक प्रेम पात्र था अपना नाम वापस ले ले. उसे डराया गया. दुख में भर कर उसने एक खत पंडित जवाहर लाल के नाम लिख कर जिस में उसने दिखाया है कि हमारा राजकाजी जीवन कितना गिर गया है आत्म हत्या कर ली. यह भी कहा जाता है कि इससे मिलती जुलती और भी घटनायें हुईं.

हमारी आज कल की मुसीबतों के कारन का इससे भी कुछ पता चलता है. वह हजारों आदमी जो अभी हाल तक आजादी के सिपाही थे और जो जाहिर है अब अपनी उन सेवाओं के लिये इनाम चाहते हैं या पागलों की तरह सत्ता हासिल करने या अपने हाथ में सत्ता बनाये रखने की जी तोड़ कोशिशों में लगे हुए हैं. इस पागलपन के कारन हमारा चरित्र बेहद गिर गया है. अब हमारे लिये मक़सद अगर ठीक है तो उस तक पहुँचने के लिये साधन चाहे कितने भी खराब क्यों न हों कोई हरज नहीं. सच्चाई और ईमानदारी हमारी निगाह में फ़जूल के ढकोसले है जो राजकाजी नेताओं को शोभा नहीं देते

हमारे राष्ट्रीय जीवन का यह पतन ऐसा नहीं है जिसका पहले से किसी को अनुमान न हुआ हो. महात्मा गांधी शुरू से ही इसे साफ़ साफ़ देख रहे थे. उससे बचने के लिये ही वह हमारे चोटी के लोगों पर बार बार इस बात के लिये जोर दे रहे थे कि स्वराज मिल जाने के बाद भी उन्हें अपने जीवन की सादगी और तपस्या उसी तरह बनाए रखनी चाहिये. एक बार श्री राजगोपालाचारी ने राय जाहिर की कि गांधी जी ने हर बड़े से बड़े हिन्दुस्तानी सरकारी पदाधिकारी के लिये जो अधिक से अधिक पांच सौ रुपए महावार की तनखा बांध दी थी वह मुमकिन है उस ओहदे की शान को बनाए रखने के लिये काफ़ी न हो. इस पर गांधी जी ने जवाब दिया था कि पांच सौ रुपए की हद पंडित जवाहर लाल जैसों के लिये है जिन्हें बचपन से खास तरह से रहने की आदत है लेकिन राजा जी को मिनिस्टर या गवरनर होने की सूरत में 75 रुपए महीने से ज़ियादा हरगिज नहीं लेना चाहिये. राजा जी उन दिनों 75 रुपए माहवार में ही रह रहे थे.

गांधी जी इस बात पर जोर देते थे कि आजादी के बाद हमारे मिनिस्टरों और गवरनरों को जहां तक हो सके देश की आम जनता की तरह रहना और ज़िन्दगी बसर करना चाहिये. इस मामले में अगर हमें यह मालूम न होता कि कुछ दूसरे देशों के शासक जो हमारे देश से बड़े देश हैं ठीक उसी तरह की सादगी और तपस्या की ज़िन्दगी

ایمانداری پر سب کو وشواس تھا اِس لئے آتم ھتیا کر لی کیونکہ اُس پر یہ بیجا دباؤ ڈالا گیا کہ وہ کسی دوسرے اُمیدوار کے لئے جو اوپر کے کانگریس ادھیکاریوں کا ادھک پریم پاتر تھا اپنا نام واپس لے لے . اُسے ڈرایا گیا . دکھ میں بھر کر اُس نے ایک خط پنڈت جواھر لال کے نام لکھ کر جس میں اُس نے دکھایا ھے کہ ھمارا راجکاجی جیون کتنا گر گیا ھے آتم ھتیا کر لی . یہ بھی کہا جاتا ھے کہ اِس سے ملتی جلتی اور بھی گھٹنائیں ھوئیں .

ھماری آجکل کی مصیبتوں کے کارن کا اِس سے بھی کچھ پتہ چلتا ھے . وہ ھزاروں آدمی جو ابھی حال تک آزادی کے سپاھی تھے اور جو ظاھر ھے اب اپنی اُن سیواؤں کے لئے انعام چاھتے ھیں یا پاگلوں کی طرح ستا حاصل کرنے یا اپنے ھاتھ میں ستا بنائے رکھنے کی جی توڑ کوششوں میں لگے ھوئے ھیں . اِس پاگل پن کے کارن ھمارا چرتر بےحد گر گیا ھے . اب ھمارے لئے مقصد اگر ٹھیک ھے تو اُس تک پہنچنے کے لئے سادھن چاھے کتنے بھی خراب کیوں نہ ھوں کوئی ھرج نہیں . سچائی اور ایمانداری ھماری نگاہ میں فضول کے ڈھکوسلے ھیں جو راجکاجی نیتاؤں کو شوبھا نہیں دیتے .

ھمارے راشٹری جیون کا یہ پتن ایسا نہیں ھے جس کا پہلے سے کسی کو انومان نہ ھوا ھو . مہاتما گاندھی شروع سے ھی اِسے صاف صاف دیکھ رھے تھے . اُس سے بچنے کے لئے ھی وہ ھمارے چوٹی کے لوگوں پر بار بار اِس بات کے لئے زور دے رھے تھے کہ سوراج مل جانے کے بعد بھی اُنھیں اپنے جیون کی سادگی اور تپسیا اُسی طرح بنائے رکھنی چاھئے . ایک بار شری راجگوپالاچاری نے رائے ظاھر کی کہ گاندھی جی نے ھر بڑے سے بڑے ھندستانی سرکاری پد ادھکاری کے لئے جو ادھک سے ادھک پانچ سو روپے ماھوار کی تنخواہ باندھ دی تھی وہ ممکن ھے اُس عہدے کی شان کو بنائے رکھنے کے لئے کافی نہ ھو . اُس پر گاندھی جی نے جواب دیا تھا کہ پانچ سو روپیہ کی حد پنڈت جواھر لال جیسوں کے لئے ھے جنھیں بچپن سے خاص طرح سے رھنے کی عادت ھے لیکن راجا جی کو منسٹر یا گورنر ھونے کی صورت میں 75 روپئے مہینے سے زیادہ ھرگز نہیں لینا چاھئے . راجا جی اُن دنوں 75 روپئے ماھوار میں ھی رہ رھے تھے .

گاندھی جی اِس بات پر زور دیتے تھے کہ آزادی کے بعد ھمارے منسٹروں اور گورنروں کو جہاں تک ھوسکے دیش کی عام جنتا کی طرح رھنا اور زندگی بسر کرنا چاھئے . اِس معاملے میں اگر ھمیں یہ معلوم نہ ھوتا کہ کچھ دوسرے دیشوں کے شاسک جو ھمارے دیش سے بڑے دیش ھیں ٹھیک اُسی طرح کی سادگی اور تپسیا کی زندگی

सवाल होता है कि यह सब हालत क्यों है. हमारे आज के शासक जिस दरजे तक वह इस हालत को मानते हैं उसका कारन एक तो यह बताते हैं कि स्वराज सरकार को काम करते अभी बहुत थोड़े दिन हुए हैं और दूसरा यह बताते हैं कि सरकार के सामने बड़ी बड़ी कठिनाइयां रही हैं जैसे मुल्का का बंटवारा, देसी रियासतों के मिटने, काश्मीर और हैदराबाद के मसले, पाकिस्तान से आने वाले सत्तर लाख शरनार्थियों का फिर बसाओ वग़ैरा वग़ैरा—उन्हें यह भी शिकायत है कि उन्हें जनता से जो सहयोग मिलना चाहिये था वह नहीं मिला.

हम मानते हैं कि हमारे शासकों की इस बात में कुछ सच्चाई भी है. लेकिन दूसरी तरफ़ हम यह भी जानते हैं कि राष्ट्रीय जीवन के इन्हीं सब पहलुओं में हमारे कुछ पड़ोसी देश इससे बहुत कम समय के अन्दर ग़ज़ब की तरक़्क़ी कर चुके हैं.

यह भी ज़ाहिर है कि उनके रास्ते में जो कठिनाइयां थीं वह हमारी कठिनाइयों से कुछ अधिक ही थीं कम नहीं थीं.

अपने राष्ट्रीय जीवन के एक और पहलू की तरफ़ हम ध्यान देना चाहते हैं. उससे हमें अपनी आजकल की मुसीबतों का कारन समझने में भी कुछ मदद मिलेगी. हाल की हैदराबाद कांगरेस के लिये जब डेलीगेट चुने गए तो जैसा अकसर होता है बहुत से प्रान्तों से चुनाव में नाजायज़ हरकतों की शिकायतें आई हैं. इस तरह की एक शिकायत बिहार से थी. बिहार में दो कांगरेस पारटियां एक दूसरे के ख़िलाफ़ हैं. हर पारटी ने ज़ियादा से ज़ियादा कांगरेस मेम्बर बनाने की कोशिश की कुल मिला कर बीस लाख से ऊपर मेम्बर बने. जब बिहार के चुनाव की शिकायत वरकिंग कमेटी तक पहुंची तो वरकिंग कमेटी ने एक पुराने, नेक और ईमानदार कांगरेसी नेता को तहक़ीक़ात के लिये भेजा. उन्होंने लगभग एक महीना बिहार में रह कर पूरी पूरी खोज की वह इस नतीजे पर पहुंचे कि कुल जितने कांगरेस मेम्बर बिहार में बनाए गए हैं उनमें से कम से कम 75 फ़ी सदी जाली हैं. उन्होंने अपनी रिपोर्ट में कुछ तफ़सील से बयान किया है कि यह जाली मेम्बर किस किस तरह से बनाए गए पढ़ कर बड़ा दुख होता है. रिपोर्ट में यह भी लिखा है कि हर पारटी ने दूसरी पारटी के उम्मीदवार को बदनाम करने या हराने के लिये कोई नीच से नीच उपाय उठा नहीं रखा. उन्होंने यह भी लिखा है कि उन्हें विश्वास है कि इस बारे में दूसरे प्रान्तों की हालत बिहार से कुछ बहुत अच्छी नहीं है.

इसमें उन्होंने एक दूसरे प्रान्त की मिसाल दी जिसमें कांगरेस के एक सच्चे काम करने वाले ने जिसकी

سوال ہوتا ہے کہ یہ سب حالت کیوں ہے ۔ ہمارے آج کے شاسک جس درجے تک وہ اس حالت کو مانتے ہیں اُس کا کارن ایک تو یہ بتاتے ہیں کہ سوراج سرکار کو کام کرتے ابھی بہت تھوڑے دن ہوئے ہیں اور دوسرا یہ بتاتے ہیں کہ سرکار کے سامنے بڑی بڑی کٹھنائیاں رہی ہیں جیسے ملک کا بٹوارہ' دیسی ریاستوں کے مٹنے' کشمیر اور حیدرآباد کے مسئلے' پاکستان سے آنے والے ستر لاکھ شرنارتھیوں کا پھر بساؤ وغیرہ وغیرہ—انہیں یہ بھی شکایت ہے کہ انہیں جنتا سے جو سہیوگ ملنا چاہئے تھا وہ نہیں ملا ۔

ہم مانتے ہیں کہ ہمارے شاسکوں کی اس بات میں کچھ سچائی بھی ہے ۔ لیکن دوسری طرف ہم یہ بھی جانتے ہیں کہ راشٹریہ جیون کے ان ہی سب پہلوؤں میں ہمارے کچھ پڑوسی دیش اس سے بہت کم سمے کے اندر غضب کی ترقی کر چکے ہیں ۔ یہ بھی ظاہر ہے کہ ان کے راستے میں جو کٹھنائیاں تھیں وہ ہماری کٹھنائیوں سے کچھ ادھک ہی تھیں کم نہیں تھیں ۔

اپنے راشٹریہ جیون کے ایک اور پہلو کی طرف ہم دھیان دینا چاہتے ہیں ۔ اس سے ہمیں اپنی آج کل کی مصیبتوں کا کارن سمجھنے میں بھی کچھ مدد ملے گی ۔ حال کی حیدرآباد کانگریس کے لئے جب ڈیلیگیٹ چنے گئے تو جیسا اکثر ہوتا ہے بہت سے پرانتوں سے چناؤ میں ناجائز حرکتوں کی شکایتیں آئیں ۔ اس طرح کی ایک شکایت بہار سے تھی ۔ بہار میں دو کانگریس پارٹیاں ایک دوسرے کے خلاف ہیں ۔ ہر پارٹی نے زیادہ سے زیادہ کانگریس ممبر بنانے کی کوشش کی ۔ کل ملا کر بیس لاکھ سے اوپر ممبر بنے ۔ جب بہار کے چناؤ کی شکایت ورکنگ کمیٹی تک پہنچی تو ورکنگ کمیٹی نے ایک پرانے' نیک اور ایماندار کانگریسی نیتا کو تحقیقات کے لئے بھیجا ۔ انہوں نے لگ بھگ ایک مہینہ بہار میں رہ کر پوری پوری کھوج کی ۔ وہ اس نتیجے پر پہنچے کہ کل جتنے کانگریس ممبر بہار میں بنائے گئے ہیں اُن میں سے کم سے کم 75 فیصدی جعلی ہیں ۔ انہوں نے اپنی رپورٹ میں کچھ تفصیل سے بیان کیا ہے کہ یہ جعلی ممبر کس کس طرح سے بنائے گئے۔ پڑھکر بڑا دکھ ہوتا ہے۔ رپورٹ میں یہ بھی لکھا ہے کہ ہر پارٹی نے دوسری پارٹی کے اُمیدوار کو بدنام کرنے یا ہرانے کے لئے کوئی نیچ سے نیچ اپائے اُٹھا نہیں رکھا ۔ انہوں نے یہ بھی لکھا ہے کہ انہیں وشواس ہے کہ اس بارے میں دوسرے پرانتوں کی حالت بہار سے کچھ بہت اچھی نہیں ہے ۔

ہمیں انہوں نے ایک دوسرے پرانت کی مثال دی جسمیں کانگریس کے ایک سچے کام کرنے والے نے جس کی

फलती फूलती रहीं अब मिटती जा रही हैं. लगभग हर सूबे के अन्दर हमारा हज़ारों बरस पुराना हाथ के करघों का वह काम जो डेढ़ सौ बरस की अंगरेज़ी पालिसी के हमलों से भी बचा रहा अब आख़री सांस लेता हुआ मालूम होता है. 1947 तक बनारसी रेशम के काम में लगभग पांच हज़ार करघे चलते थे. दिसम्बर 1952 में इन पांच हज़ार में से चार हज़ार बन्द हो चुके थे और हज़ारों होशियार कारीगर और उनके बाल बच्चे जो इस दस्तकारी से पलते थे कई कई दिन के फ़ाक़े करके दिन काट रहे थे

काफ़ी बरबादी के बाद आधे दिल से सरकार ने हाल में खादी और करघे के धन्दे को मदद देने के लिये जो क़दम उठाए हैं वह किसी आर्थिक योजना का हिस्सा नहीं है बल्कि केवल लोगों के असन्तोश को कम करने का एक तरीक़ा है. आजकल की हमारी व्यवस्था में उनसे कोई ख़ास लाभ नहीं हो सकता. किसानों की कोआपरेटिव सोसाइटियों कई सूबों में अफ़सरों के भ्रष्टाचार और सब अधिकार अपने हाथों में रखने की लालसा की वजह से किसानों के लिये बरकत की जगह लानत साबित हो चुकी हैं हमें डर है कि बुनकरों की कोआपरेटिव सोसाइटियों का भी यही नतीजा होगा.

देश की करोड़ों जनता के जीवन से सम्बन्ध रखने वाले और बहुत से धन्दों की भी यही हालत है. ग़रीबी और बेकारी बढ़ रही है. हर साल देश के किसी न किसी हिस्से से गिरानी और अकाल की ख़बरें आती रहती हैं. घूसख़ोरी और भ्रष्टाचार नीचे से ऊपर तक इतना अधिक और इतनी शकलों में दिखाई देने लगा है जितना शायद पहले कभी नहीं था. लोगों के हर तरह के कारोबार पर सरकार का कन्ट्रोल दिन दिन इतना बढ़ता जा रहा है कि जनता परेशान और बरबाद हो रही है

तालीम दिन दिन अधिक मंहगी होती चली जा रही है. अधिकतर किताबें जो हमारे स्कूल और कालेजों में पढ़ाई जाती हैं, इतनी निकम्मी, ग़लत, साम्प्रदायक ज़हर से भरी हुई और राष्ट्रीयता के सिद्धान्त के ख़िलाफ़ हैं जितनी पांच साल पहले नहीं थीं. यह बात बड़े दुख की पर सच है कि हमारे देश वासियों में से बहुत से अब यह सोचने और कहने लगे हैं कि इस देशी राज से उन के लिये अंगरेज़ी ज़ियादा अच्छा था. देश के चन्द हिस्सों में अभी हाल तक निरंकुश राजे महाराजे राज करते थे. वहां अब लोग यह अनुभव करने लगे हैं कि इस समय की हुकूमत से उनके राजा की हुकूमत ज़ियादा अच्छी थी उन छोटे छोटे इलाक़ों में भी जो अभी तक विदेशी ताक़तों के अधीन हैं स्वतंत्र भारत में मिलने के लिये जो उत्साह और उमंग कुछ साल पहले लोगों में थी वह अब साफ़ घटती हुई दिखाई दे रही है.

پھلتی پھولتی رہیں اب مٹتی جا رہی ہیں. لگ بھگ ہر صوبے کے اندر ہمارا ہزاروں برس پرانا ہاتھ کے کرگھوں کا وہ کام جو ڈیڑھ سو برس کی انگریزی پالیسی کے حملوں سے بھی بچا رہا اب آخری سانس لیتا ہوا معلوم ہوتا ہے . سن 1947 تک بنارسی ریشم کے کام میں لگ بھگ پانچ ہزار کرگھے چلتے تھے . دسمبر 1952 میں اِن پانچ ہزار میں سے چار ہزار بند ہو چکے تھے اور ہزاروں ہوشیار کاریگر اور اُن کے بال بچے جو اِس دستکاری سے پلتے تھے کئی کئی دن کے فاقے کر کے دن کاٹ رہے تھے .

کافی بربادی کے بعد آدھے دل سے سرکار نے حال میں کھادی اور کرگھے کے دھندے کو مدد دینے کے لئے جو قدم اٹھائے ہیں وہ کسی آرتھک یوجنا کا حصہ نہیں ہے بلکہ کیول لوگوں کے اسنتوش کو کم کرنے کا ایک طریقہ ہے . آج کل کی ہماری ویوستھا میں اُن سے کوئی خاص لابھ نہیں ہو سکتا . کسانوں کی کوآپریٹیو سوسائٹیاں کئی صوبوں میں افسروں کے بھرشٹاچار اور سب ادھیکار اپنے ہاتھوں میں رکھنے کی لالسا کی وجہ سے کسانوں کے لئے برکت کی جگہ لعنت ثابت ہو چکی ہیں . ہمیں ڈر ہے کہ بنکروں کی کوآپریٹیو سوسائٹیوں کا بھی یہی نتیجہ ہوگا

دیش کی کروڑوں جنتا کے جیون سے سمبندھ رکھنے والے اور بہت سے دھندوں کی بھی یہی حالت ہے . غریبی اور بیکاری بڑھ رہی ہے . ہر سال دیش کے کسی نہ کسی حصے سے گرانی اور اکال کی خبریں آتی رہتی ہیں . گھوس خوری اور بھرشٹاچار نیچے سے اوپر تک اتنا ادھک اور اتنی شکلوں میں دکھائی دینے لگا ہے جتنا شاید پہلے کبھی نہیں تھا . لوگوں کے ہر طرح کے کاروبار پر سرکار کا کنٹرول دن دن اِتنا بڑھتا جا رہا ہے کہ جنتا پریشان اور برباد ہو رہی ہے .

تعلیم دن دن ادھک مہنگی ہوتی چلی جا رہی ہے . ادھک تر کتابیں جو ہمارے اسکول اور کالجوں میں پڑھائی جاتی ہیں اِتنی نکمی' غلط' سامپردائک زہر سے بھری ہوئی اور راشٹریتا کے سدھانت کے خلاف ہیں جتنی پانچ سال پہلے نہیں تھیں . یہ بات بڑے دکھ کی پر سچ ہے کہ ہمارے دیش واسیوں میں سے بہت سے اب یہ سوچنے اور کہنے لگے ہیں کہ اس دیشی راج سے اُن کے لئے انگریزی راج زیادہ اچھا تھا . دیش کے چند حصوں میں ابھی حال تک نرنکش راجے مہاراجے راج کرتے تھے . وہاں اب یہ لوگ انوبھو کرنے لگے ہیں کہ اس سمے کی حکومت سے اُن کے راجہ کی حکومت زیادہ اچھی تھی . اُن چھوٹے چھوٹے علاقوں میں بھی جو ابھی تک ودیشی طاقتوں کے ادھین ہیں سوتنتر بھارت میں ملنے کے لئے جو اُتساہ اور اُمنگ کچھ سال پہلے لوگوں میں تھی وہ اب صاف گھٹتی ہوئی دکھائی دے رہی ہے .

सकता कि आज़ादी से जो समाजी, माली या दूसरे लाभ किसी देश को होते हैं उनको अलग रखकर भी आज़ादी ख़ुद एक बड़ी क़ीमती चीज़ है और लोगों के दिलों पर उसका एक ख़ास असर होता है. साथ ही पिछले पचास बरस के अन्दर जब कभी हमने इस देश की जनता में आज़ादी का प्रेम और उसके लिये क़ुरबानी की भावना पैदा करने की कोशिश की तो हमने हमेशा उन्हें यह कह कर जोश दिलाया कि आज़ादी से उन्हें यह समाजी और माली फ़ायदे होंगे.

हमने लोगों को बताया कि अट्ठारहवीं सदी के आरम्भ तक हिन्दुस्तान दुनिया के अधिक से अधिक ख़ुशहाल देशों में से था और अंगरेज़ी राज के दो सौ बरस में धीरे धीरे वह दुनिया का सब से ग़रीब और सब से नादार देश बन गया. हमने बताया कि किन किन तरीक़ों से अंगरेज़ों ने हमारे पुराने उद्योग धन्दों और हमारी तिजारत को एक एक कर ख़तम कर दिया; हमारे लाखों गांवों को बरबाद कर दिया और हमारे पुराने तालीम के सिलसिले को जिस में हर गांव के अन्दर एक स्कूल होता था जान बूझ कर मिटा डाला. हमने लोगों को यह भी सुझाया कि जो कुछ थोड़ी बहुत तालीम हमें अंगरेज़ी राज में दी जाती थी वह विदेशी हकूमत के लिये कल पुरज़े और ऐजन्ट तैयार करने के लिये दी जाती थी, ख़ुद्दार शहरी पैदा करने के लिये नहीं.

हमने लोगों को यह सब चीज़ें बताई और उन्हें उम्मीद दिलाई कि देश के आज़ाद होने पर यह सब हालत बदल जायगी, हमारा चलन ऊंचा हो जायगा, हमारे उद्योग धन्दे फिर से फलने फूलने लगेंगे, और देश के बच्चों की तालीम पहले से कहीं अच्छी और सब के लिये आम सस्ती होगी. कांगरेस के काम करने वालों ने गांव गांव जाकर किसानों से कहा कि स्वराज मिलने पर खेती की सारी ज़मीन के मालिक किसान होंगे, जो जोतेगा वही ज़मीन का मालिक होगा.

क़ुदरती तौर पर 15 अगस्त 1947 को जब मुल्क को स्वराज मिला तो लोगों को बड़ी बड़ी आशायें थी. उनका ख़याल था कि उनसे जो बड़ी बड़ी बातें कही गई हैं वह अब पूरी होंगी और देश साफ़, सुख, शान्ति, ख़ुशहाली और तरक़्क़ी की तरफ़ बढ़ता हुआ दिखा देगा.

लेकिन हमारी पांच बरस की आज़ादी का नतीजा क्या है? उस देश में जो अधिकतर खेती पेशा देश है जिसने हमेशा अपनी ज़रूरत से ज़ियादा अनाज पैदा किया है और जो सदियों बाहर की दुनिया के ख़ासे हिस्से को खाने के लिये नाज देता रहा है आज हर साल लाखों मन नाज बाहर के देशों से मंगाना हमारी आर्थिक व्यवस्था का आवश्यक अंग बन गया है. हमारे वह उद्योग धन्दे और हमारी वह दस्तकारियां जो अंगरेज़ी राज तक में

سکتا کہ آزادی سے جو سماجی، مالی یا دوسرے لابھ کسی دیش کو ہوتے ہیں اُن کو الگ رکھ کر بھی آزادی خود ایک بڑی قیمتی چیز ہے اور لوگوں کے دلوں پر اُس کا ایک خاص اثر ہوتا ہے. ساتھ ہی پچھلے پچاس برس کے اندر جب کبھی ہم نے اِس دیش کی جنتا میں آزادی کا پریم اور اُسکے لئے قربانی کی بھاؤنا پیدا کرنے کی کوشش کی تو ہم نے ہمیشہ اُنہیں یہ کہ کر جوش دلایا کہ آزادی سے اُنہیں یہ سماجی اور مالی فائدے ہونگے۔

ہم نے لوگوں کو بتایا کہ اٹھارویں صدی کے آرمبھ تک ہندستان دنیا کے ادھک سے ادھک خوشحال دیشوں میں سے تھا اور انگریزی راج کے دو سو برس میں دھیرے دھیرے وہ دنیا کا سب سے غریب اور سب سے نادار دیش بن گیا. ہم نے بتایا کہ کن کن طریقوں سے انگریزوں نے ہمارے پرانے اُدیوگ دھندوں اور ہماری تجارت کو ایک ایک کر ختم کردیا؛ ہمارے لاکھوں گاؤں کو برباد کردیا اور ہمارے پرانے تعلیم کے سلسلے کو جس میں ہر گاؤں کے اندر ایک اسکول ہوتا تھا جان بوجھ کر مٹا ڈالا۔ ہم نے لوگوں کو یہ بھی سمجھایا کہ جو کچھ تھوڑی بہت تعلیم ہمیں انگریزی راج میں دی جاتی تھی وہ بدیشی حکومت کیلئے کل پرزے اور ایجنٹ تیار کرنے کیلئے دی جاتی تھی، خوددار شہری پیدا کرنے کیلئے نہیں۔

ہم نے لوگوں کو یہ سب چیزیں بتائیں اور اُنہیں اُمید دلائی کہ دیش کے آزاد ہونے پر یہ سب حالت بدل جائیگی، ہمارا چلن اُونچا ہو جائیگا، ہمارے اُدیوگ دھندے پھر سے پھلنے پھولنے لگیں گے، اور دیش کے بچوں کی تعلیم پہلے سے کہیں اچھی اور سب کے لئے عام اور سستی ہوگی. کانگریس کے کام کرنے والوں نے گاؤں گاؤں جاکر کسانوں سے کہا کہ سوراج ملنے پر کھیتی کی ساری زمین کے مالک کسان ہونگے، جو جوتے گا وہی زمین کا مالک ہوگا۔

قدرتی طور پر 15 اگست سن 1947 کو جب ملک کو سوراج ملا تو لوگوں کو بڑی بڑی آشائیں تھیں۔ اُن کا خیال تھا کہ اُن سے جو بڑی بڑی باتیں کہی گئی ہیں وہ اب پوری ہونگی اور دیش صاف، سکھ، شانتی، خوشحالی اور ترقی کی طرف بڑھتا ہوا دکھائی دے گا۔

لیکن ہماری پانچ برس کی آزادی کا نتیجہ کیا ہے ؟ اُس دیش میں جو ادھک تر کھیتی پیشہ دیش ہے جس نے ہمیشہ اپنی ضرورت سے زیادہ اناج پیدا کیا ہے اور جو صدیوں باہر کی دنیا کے خاصے حصے کو کھانے کے لئے ناج دیتا رہا ہے آج ہر سال لاکھوں من ناج باہر کے دیشوں سے منگانا ہماری آرتھک ویوستھا کا ایک آوشیک انگ بن گیا ہے۔ ہمارے وہ اُدیوگ دھندے اور ہماری وہ دستکاریاں جو انگریزی راج تک میں

हम में क्या कमी है ?

बीसवी सदी के आरम्भ में शायद ही कोई भारतवासी यह सोच सकता हो कि यह देश एक खास समय के अन्दर अंगरेज़ों के नीचे से आज़ाद हो सकता है.

बंगाल के बंटवारे और उसके बाद जो घटनायें हुई उनसे बहुत से हिन्दुस्तानियों का ध्यान विदेशी हकूमत की बुराइयों की तरफ़ ज़ोरों से गया. एक छोटा सा गिरोह देश भक्तों का पैदा हो गया जो विदेशी हकूमत से अपने मुल्क को आज़ाद करने के लिये अपनी जानों की बाज़ी लगाने को तैयार हो गया. कांगरेस के बड़े बड़े नेता उन दिनों नर्म विचारों के थे और लिबरल या माडरेट कहलाते थे. वह समझते थे कि भारत के लिये पूरी आज़ादी हासिल कर सकना ना मुमकिन है और केवल अंगरेज़ी राज की छत्र छाया में रह कर ही यह देश थोड़ी बहुत समाजी, तालीमी या माली तरक़्क़ी कर सकता है. पहली बड़ी जंग से देश के अन्दर आज़ादी की प्यास और भड़की. अंगरेज़ों ने जनता की उभरती हुई स्प्रिट को कुचलने के लिये रोलट एक्ट जैसे क़ानून गढ़े.

ठीक उस समय गांधी जी मैदान में आए. लोगों में आज़ादी की लगन और क़ुरबानी की भावना तेज़ी के साथ बढ़ी. इस बार उसे कुचलने के लिये अंगरेज़ हाकिमों ने पंजाब में जलयान वाला बाग़ का हत्या कांड कर डाला और सरहद पर चार सौ निहत्थे, पुर अमन और अहिंसात्मक पठानों को गोली से उड़ा दिया. फिर भी महात्मा गांधी की लगातार रहनुमाई में एक सत्याग्रह के बाद दूसरा सत्याग्रह इस तरह भारत की आज़ादी का वह संग्राम बराबर आगे बढ़ता चला गया. यहां तक कि 15 अगस्त सन 1947 को इस देश से अंगरेज़ी राज का ख़ातमा हो गया.

अंगरेज़ी में एक कहावत है कि दूसरे की हकूमत चाहे कैसी भी क्यों न हो अपनी हकूमत से अच्छी नहीं हो सकती. हम इस कहावत को हर हाल में और हर सूरत में ठीक नहीं समझते. लेकिन इससे कोई इनकार नहीं कर

ہم میں کیا کمی ہے ؟

بیسویں صدی کے آرمبھ میں شاید ہی کوئی بھارت واسی یہ سوچ سکتا ہو کہ یہ دیش ایک خاص سمے کے اندر انگریزوں کے نیچے سے آزاد ہوسکتا ہے ۔

بنگال کے بٹوارے اور اُس کے بعد جو گھٹنائیں ہوئیں اُن سے بہت سے ہندستانیوں کا دھیان بدیشی حکومت کی برائیوں کی طرف زوروں سے گیا ۔ ایک چھوٹا سا گروہ دیش بھکتوں کا پیدا ہوگیا جو بدیشی حکومت سے اپنے ملک کو آزاد کرنے کے لئے اپنی جانوں کی بازی لگانے کو تیار ہوگیا ۔ کانگریس کے بڑے بڑے نیتا اُن دنوں نرم وچاروں کے تھے اور لبرل یا ماڈریٹ کہلاتے تھے وے سمجھتے تھے کہ بھارت کیلئے پوری آزادی حاصل کرسکنا ناممکن ہے اور کیول انگریزی راج کی چھتر چھایا میں رہ کر ہی یہ دیش تھوڑی بہت سماجی، تعلیمی یا مالی ترقی کرسکتا ہے ۔ پہلی بڑی جنگ سے دیش کے اندر آزادی کی پیاس اور بھڑکی ۔ انگریزوں نے جنتا کی اُبھرتی ہوئی اسپرٹ کو کچلنے کیلئے رولٹ ایکٹ جیسے قانون گڑھے ۔

ٹھیک اُس سمے گاندھی جی میدان میں آئے ۔ لوگوں میں آزادی کی لگن اور قربانی کی بھاونا تیزی کے ساتھ بڑھی ۔ اس بار اسے کچلنے کیلئے انگریز حاکموں نے پنجاب میں جلیان والا باغ کا ہتیاکانڈ کر ڈالا اور سرحد پر چار سو نہتّھے، پر امن اور اہنساتمک پٹھانوں کو گولی سے اڑا دیا ۔ پھر بھی مہاتما گاندھی کی لگاتار رہنمائی میں ایک ستیاگرہ کے بعد دوسرا ستیاگرہ اِس طرح بھارت کی آزادی کا وہ سنگرام برابر آگے بڑھتا چلا گیا۔ یہاں تک کہ 15 اگست سن 1947 کو اس دیش سے انگریزی راج کا خاتمہ ہوگیا ۔

انگریزی میں ایک کہاوت ہے کہ دوسرے کی حکومت چاہے کیسی بھی کیوں نہ ہو اپنی حکومت سے اچھی نہیں ہوسکتی۔ ہم اِس کہاوت کو ہر حال میں اور ہر صورت میں ٹھیک نہیں سمجھتے۔ لیکن اس سے کوئی اِنکار نہیں کر

भारतीय शासन

लेखक—भगवानदास केला; निकालने वाले—भारतीय ग्रंथमाला, दारागंज, प्रयाग; सफ़े 516; दाम तीन रुपए बारहवीं बार 1952.

यह वह किताब है जो पहली बार 1915 में छपी थी जब हिन्दी में इस चीज़ पर किताबें लिखने का सपने में भी किसी को ख़याल नहीं हो सकता था. लेकिन धुन के पक्के और लगन के सच्चे केला जी ने अपना लेखक जीवन इस किताब से शुरू किया.

देश की बदलती हुई हालत के साथ केला जी के विचार भी बदलते गए और इस किताब में जगह पाते गए. देश के आज़ाद हो जाने के बाद उन्होंने गहराई से महसूस किया कि अगर भारतीय शासन अब भी वही रहता है जो पहले था तो उससे देश को असली स्वराज नहीं मिल सकता. इसलिये हमारे नये इन्तज़ामकारों का फ़र्ज़ है कि पुराने ढांचे को बदल कर इसे वह शकल दें जो महात्मा गांधी ने बतलाई थी, यानी सर्वोदय राज क़ायम करने में जुट जायं.

यों तो यह किताब 343 सफ़े पर ख़तम हो जाती है लेकिन बाद में 68 सफ़े की एक और किताब जुड़ी हुई है—'सर्वोदय राज क्यों और कैसे ?' इस पर हम अपनी राय पहले ज़ाहिर कर चुके हैं. कुल मिला कर यह किताब एक बहुत अच्छी और ठोस चीज़ बन गई है. छपाई, काग़ज़ वग़ैरा सब चीज़ सुन्दर होने के अलावा किताब का दाम सिर्फ़ तीन रुपया है. हमें उम्मीद है कि राजनीति, इतिहास और अर्थशास्त्र के विद्यार्थी, शिक्षक और समाज सेवक सभी इससे पूरा फ़ायदा उठाएंगे —सुरेश रामभाई

सर्वोदय संस्थान

लेखक—महात्मा गांधी और संत विनोबा; प्रकाशक—सर्वोदय संस्थान; पन्ने 56; दाम सात आने; पहली बार अगस्त 1952.

यह किताब सर्वोदय साहित्य संघ की देन है. सूची का कहीं पता नहीं. शुरू के चौदह पन्नों में सर्वोदय या सर्वोदय समाज के सम्बन्ध में महात्मा गांधी और विनोबा जी के कुछ लेख और स्पीचें जमा कर दी गई हैं. इसके बाद 'सर्वोदय की समीक्षा' नाम से छब्बीस पन्नों का एक लेख है जिसके लेखक का नाम नहीं दिया गया. बाद के दस पन्नों में सर्वोदय समाज की और सर्वोदय के लिये काम करने वाली कुछ प्रमुख संस्थाओं की जानकारी दी गई है और आख़ीर में किताबों की सूची है.

इस 54 पन्नों की बल्कि कहना चाहिये 14 पन्नों की किताब का दाम सात आने है जो ज़रूरत से ज़ियादा है.

इस प्रकाशन संस्था को कामयाब होना है तो इसकी नीति और इन्तज़ाम में बहुत सुधार की ज़रूरत है.—सुरेश रामभाई

بھارتیہ شاسن

لیکھک—بھگوان‌داس کیلا؛ نکالنے والے—بھارتیہ گرنتھ مالا' داراگنج' پریاگ؛ صفحے 516؛ دام تین روپئے؛ بارھویں بار 1952.

یہ وہ کتاب ہے جو پہلی بار 1915 میں چھپی تھی جب ہندی میں اس چیز پر کتابیں لکھنے کا سپنے میں بھی کسی کو خیال نہیں ہو سکتا تھا. لیکن دھن کے پکے اور لگن کے سچے کیلا جی نے اپنا لیکھک جیون اس کتاب سے شروع کیا.

دیش کی بدلتی ہوئی حالت کے ساتھ کیلا جی کے وچار بھی بدلتے گئے اور اس کتاب میں جگہ پاتے گئے. دیش کے آزاد ہو جانے کے بعد انہوں نے گہرائی سے محسوس کیا کہ اگر بھارتیہ شاسن اب بھی وہی رہتا ہے جو پہلے تھا تو اس سے دیش کو اصلی سوراج نہیں مل سکتا. اس لئے ہمارے نئے انتظام کاروں کا فرض ہے کہ پرانے ڈھانچے کو بدل کر اسے وہ شکل دیں جو مہاتما گاندھی نے بتلائی تھی' یعنی سرودے راج قائم کرنے میں جٹ جائیں.

یوں تو یہ کتاب 343 صفحے پر ختم ہو جاتی ہے لیکن بعد میں 68 صفحے کی ایک اور کتاب جڑی ہوئی ہے—' سرودے راج کیوں اور کیسے ؟' اس پر ہم اپنی رائے پہلے ظاہر کر چکے ہیں. کل ملا کر یہ کتاب ایک بہت اچھی اور ٹھوس چیز بن گئی ہے. چھپائی' کاغذ وغیرہ سب چیز سندر ہونے کے علاوہ اس کتاب کا دام صرف تین روپیہ ہے. ہمیں امید ہے کہ راج نیتی' اتہاس اور ارتھ شاستر کے ودیارتھی' شکشک اور سماج سیوک سبھی اس سے پورا فائدہ اٹھائیں گے. —سریش رام بھائی

سرودے سنستھان

لیکھک—مہاتما گاندھی اور سنت ونوبا؛ پرکاشک سرودے سنستھان؛ پنے 56؛ دام سات آنے؛ پہلی بار اگست 1952 .

یہ کتاب بھی سرودے ساہتیہ سنگھ کی دین ہے. سوچی کا کہیں پتہ نہیں. شروع کے چودہ پنوں میں سرودے یا سرودے سماج کے سمبندھ میں مہاتما گاندھی اور ونوبا جی کے کچھ لیکھ اور اسپیچیں جمع کر دی گئی ہیں. اس کے بعد سرودے کی سمیکشا نام سے چھبیس پنوں کا ایک لیکھ ہے جس کے لیکھک کا نام نہیں دیا گیا. بعد کے دس پنوں میں سرودے سماج کی اور سرودے کے لئے کام کرنے والی کچھ پرمکھ سنستھاؤں کی جانکاری دی گئی ہے اور آخیر میں کتابوں کی سوچی ہے.

اس 54 پنوں کی بلکہ کہنا چاہئے 14 پنوں کی کتاب کا دام سات آنے ہے جو ضرورت سے زیادہ ہے.

اس پرکاشن سنستھا کو کامیاب ہونا ہے تو اس کی نیتی اور انتظام میں بہت سدھار کی ضرورت ہے. —سریش رام بھائی

निसर्गोपचार आश्रम की ओर से

प्रकाशक—बालकोबा भावे, उरूली कांचन, पूना; सफ़े 122; दाम बारह आने; पहली बार 1952.

पूना ज़िले के उरूली कांचन गांव में महात्मा गांधी ने जो प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र 1944 में खोला था वह अपने ढंग की अनोखी संस्था थी. लेकिन पूरबी बंगाल और उत्तर भारत के दूसरे हिस्सों में रहने की वजह से—जिस दौरान में उनका बलिदान भी हो गया—वह इसे कोई ठोस शकल नहीं दे सके थे. गांधी जी के बाद से विनोबा जी के छोटे भाई बालकोबा इसे मेहनत और लगन से चला रहे हैं. यह किताब इस केन्द्र की तरफ़ से एक प्रकाशन है जिसमें केन्द्र के बारे में जानकारी अच्छी तरह से मिल जाती है. साथ में सेवाग्राम आश्रम के पिछले मंत्री भाई कृष्णचन्द्र के निजी अनुभव के बल पर लिखे गए भोजन संबन्धी तीन क़ीमती लेख हैं.

तरह तरह के खानों, नहानों और उपवास के बारे में भी अच्छी तरह बतलाया गया है. आख़िर का अध्याय गाय पालने के बारे में है. किताब के शुरू में ही बम्बई के मुख्य मंत्री श्री मोरार जी देसाई की भूमिका है.

उरूली कांचन का केन्द्र प्राकृतिक चिकित्सा का एक सच्चा और जन हितकारी केन्द्र है. हर मुमकिन तरीक़े से इसकी मदद करना हमारे देश वासियों का फ़र्ज़ है.

—सुरेश रामभाई

एक गांव में

लिखने वाले—शिह युन; अनुवादक—आसिफ़ मिरज़ा; निकालने वाले—अवामी किताब घर, बशीर मंज़िल, ग़ाज़ीपुर; लिखावट उरदू; सफ़े 77; दाम एक रुपया.

"एक गांव में" एक चीनी नाविल्ट का उरदू अनुवाद है. इस नाविल्ट का ज़माना वह है जब चीन की अवामी फ़ौजें चांग काई शेक से चीन को आज़ाद कराने की कोशिश कर रही थीं. इस किताब को पढ़ कर जनता के जोश, फ़ौज के अनुशासन और फ़ौजियों के जन प्रेम का पता चलता है. कहानी सीधी सादी है, फिर भी असरदार है. दिल पर भी असर डालती है और दिमाग़ पर भी. उरदू जानने वाली जनता की अवामी किताब घर ने यह ज़बरदस्त ख़िदमत की है, इसलिये हम उसे मुबारक बाद देते हैं.

—मुजीब रिज़वी

نسرگو اُپچار آشرم کی اور سے

پرکاشک—بالکوبا بھاوے؛ اُرولی کانچن، پونا؛ صفحے 122؛ دام بارہ آنے؛ پہلی بار 1952.

پونا ضلع کے اُرولی کانچن گاؤں میں مہاتما گاندھی نے جو پراکرتک چکتسا کیندر 1944 میں کھولا تھا وہ اپنے ڈھنگ کی انوکھی سنستھا تھی. لیکن پوربی بنگال اور اُتر بھارت کے دوسرے حصوں میں رہنے کی وجہ سے—جس دوران میں اُن کا بلیدان بھی ہوگیا—وہ اِسے کوئی ٹھوس شکل نہیں دے سکے تھے. گاندھی جی کے بعد سے ونوبا جی کے چھوٹے بھائی بالکوبا اِسے محنت اور لگن سے چلا رہے ہیں. یہ کتاب اِس کیندر کی طرف سے ایک پرکاشن ہے جس میں کیندر کے بارے میں جانکاری اچھی طرح سے مل جاتی ہے. ساتھ میں سیواگرام آشرم کے پچھلے منتری بھائی کرشن چندر کے نجی انوبھو کے بل پر لکھے گئے بھوجن سمبندھی تین قیمتی لیکھ ہیں.

طرح طرح کے کھانوں، نہانوں اور اُپواس کے بارے میں بھی اچھی طرح بتلایا گیا ہے. آخر کا ادھیائے گائے پالنے کے بارے میں ہے. کتاب کے شروع میں ہی بمبئی کے مکھیہ منتری شری مرار جی دیسائی کی بھومیکا ہے.

اُرولی کانچن کا کیندر پراکرتک چکتسا کا ایک سچا اور جن ہتکاری کیندر ہے. ہر ممکن طریقے سے اِس کی مدد کرنا ہمارے دیش واسیوں کا فرض ہے.

—سریش رام بھائی

ایک گاؤں میں

لکھنے والے—شِہ یُن؛ انوادک—آصف مرزا؛ نکالنے والے—عوامی کتاب گھر، بشیر منزل، غازیپور؛ لکھاوٹ اُردو؛ صفحے 77؛ دام ایک روپیہ.

"ایک گاؤں میں" ایک چینی ناولٹ کا اُردو انوواد ہے. اِس ناولٹ کا زمانہ وہ ہے جب چین کی عوامی فوجیں چیانگ کائی شیک سے چین کو آزاد کرانے کی کوشش کر رہی تھیں. اِس کتاب کو پڑھ کر جنتا کے جوش، فوج کے انوشاسن اور فوجیوں کے جن پریم کا پتہ چلتا ہے. کہانی سیدھی سادی ہے، پھر بھی اثردار ہے. دل پر بھی اثر ڈالتی ہے اور دماغ پر بھی. اُردو جاننے والی جنتا کی عوامی کتاب گھر نے یہ زبردست خدمت کی ہے، اِس کے لئے ہم اسے مبارکباد دیتے ہیں.

—مجیب رضوی

"आजादी" का पैग़ाम दे रहे थे और उसी सड़क पर सामने अख़बार बेचने वाले चिल्ला रहे थे—पढ़िये—अमरीका में कम गिन्ती लोगों पर अत्याचार बढ़ गया. अमरीकन यहूदी कांगरेस की रिपोर्ट पढ़िये—नीगरों को पेड़ से टांग कर मारने के बजाय बम से मारने की घटनायें बढ़ गई हैं, पढ़िये उनके साथ बहुत ज़ुल्म हो रहा है—डलेस साहब पोलिश जनता से कह रहे थे—तुम्हारे झण्डे पर लिखा है—हमारी आज़ादी के लिये और तुम्हारी आज़ादी के लिये ! नीगरों की आवाज़ शायद इन तक नहीं पहुँचती—उनकी आज़ादी के लिये भी, उनके विकास के लिये भी ... डलेस साहब काश पोलों को आज़ाद कराने के बजाय आज़ादी का प्रसाद घर से बांटना शुरू करें—नीगरों को आज़ाद कर दें ... उनको वह अधिकार दे दें जो सफ़ेद चमड़ी वालों को मिले हैं ... उन्हें ज़िन्दा जलाने से बचा लें उन्हें बमों का शिकार होने से बचा लें ... उनको तिरस्कार से बचा लें ... उन्हें ग़ुलामी से निजात दिला दें ... काश डलेस साहब ऐसा कर सकें !! काश उनमें इतनी सदभावना पैदा हो सके !!

—प्रवासी

"آزادی" کا پیغام دے رہے تھے اور اسی سڑک پر سامنے اخبار بیچنے والے چلا رہے تھے—پڑھئے—امریکہ میں کم گنتی لوگوں پر اتیاچار بڑھ گیا. امریکن یہودی کانگریس کی رپورٹ پڑھئے—نیگروں کو پیڑ سے ٹانگ کر مارنے کے بجائے بم سے مارنے کی گھٹنائیں بڑھ گئی ہیں' پڑھئے اُن کے ساتھ بہت ظلم ہو رہا ہے—ڈلس صاحب پولش جنتا سے کہہ رہے تھے—تمہارے جھنڈے پر لکھا ہے—ہماری آزادی کے لئے اور تمہاری آزادی کے لئے ! نیگروں کی آواز شاید اُن تک نہیں پہونچتی—اُن کی آزادی کے لئے بھی' اُن کے وکاس کے لئے بھی.....ڈلس صاحب کاش پولوں کو آزاد کرانے کے بجائے آزادی کا پرساد گھر سے بانٹنا شروع کریں—نیگروں کو آزاد کر دیں.....اُن کو وہ ادھیکار دے دیں جو سفید چمڑی والوں کو ملے ہیں.....اُنہیں زندہ جلانے سے بچا لیں' اُنہیں بموں کا شکار ہونے سے بچا لیں.....اُن کو ترسکار سے بچا لیں.....اُنہیں غلامی سے نجات دلا دیں.....کاش ڈلس صاحب ایسا کر سکیں! کاش اُن میں اتنی سدبھاونا پیدا ہو سکے !!

—پرواسی

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जायगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इनसान-इनसान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा गांधी ने इस किताब के बारे में कहा है कि—

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े... "

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताब का दाम सिर्फ़ एक रुपया.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द', 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے . سی . کمارپپا.

انوادک—سریش رام بھائی.

اِس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ہے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ہے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابری' بھائی چارے' پریم اور اہنسا پر کتنا زور دیا ہے .

مہاتما گاندھی نے اِس کتاب کے بارے میں کہا ہے کہ—

"ہر آستک سے' چاہے وہ عیسائی ہو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ہو' میری سفارش ہے کہ اِسے پڑھے..."

سندر جلد' بڑھیا کاغذ' قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ .

ملنے کا پتہ—

مینیجر' 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج' الہ آباد .

भाग जाते......पर क्या करते, मौत और ज़िन्दगी और ज़िन्दगी और मौत ! चन्द सांसों का फ़ासला है......फिर भी बहुत बड़ा फ़ासला है, आदमी कब से इस दूरी को ख़तम करने की कोशिश करता आया है......अभी तक वह नाकामयाब रहा......अभी तक वह मौत पर फ़तह नहीं हासिल कर पाया है......पर—

है मौत का वार सख़्त लेकिन हयात का सर न झुक सकेगा
किसी तरह से भी ज़िन्दगी का अज़ीम धारा न रुक सकेगा

× × ×

बहुत से शब्द हैं जिनका दुनिया दुर उपयोग करती है. "आज़ादी" उनमें से एक है. अमरीका के लिये वह सब आज़ाद हैं जो उसके पनजे के नीचे हैं मलाया आज़ाद है, फ़ारमोसा आज़ाद है, फ़िलीपाइन आज़ाद है, वीतनाम आज़ाद है, थाईलैंड आज़ाद है......सब वह देश आज़ाद हैं जो अमरीका की हां में हां मिलते हैं, उसके इशारे पर चलते हैं......ग़ुलाम......अमरीका में कोई ग़ुलाम नहीं है......जो लोग कहते हैं कि नीगरों के साथ दुर व्योहार किया जाता है......वह झूट कहते हैं......वह रूस के एजेन्ट हैं......वह अमरीका के विरोधी हैं......मिसेज़ रूज़वेल्ट भी अमरीका की विरोधी हैं......कमयुनिस्टों की एजेन्ट हैं—नीगरों समस्या का हाल दुनिया को सुनाती हैं......इन आज़ाद बन्दों को ग़ुलाम बनाता हैं......नीगरों ग़ुलाम नहीं है ... सामराज लोगों को ग़ुलाम नहीं बनाता... वह आज़ादी देता है ... दुनिया को आज़ाद देखना चाहता है ... वह चाहता है कि सारे देशों में व्योपार बढ़े, उसकी मंडी बढ़े, उसका क़बज़ा बढ़े ... यही आज़ादी है ! लिंकन की आज़ादी कोई और रही होग ... वाशिंगटन ने कोई और सपना देखा होगा ... वह और कोई मनज़िल होगी शायद यह सब कमयुनिस्ट थे ... रोज़न बर्ग के गुरू थे. लेटमूर के उसताद थे ... हज़ारों अमरीकी शान्ति प्रेमियों को यह सीख दे गए थे ! डलेस साहब इस आज़ादी को नहीं मानते ... वह उन सब को ग़ुलाम मानते हैं जो उनके गुट में नहीं हैं, उनके विचार धारा के नहीं हैं—रूसी ग़ुलाम हैं, चीनी ग़ुलाम हैं, पोलैंड वाले ग़ुलाम हैं...... अमरीका ग़ुलामी नहीं बरदाश्त कर सकता, "आज़ादी" उसे प्यारी है,......"आज़ादी" का वह अलम बरदार है...... डलेस साहब वाशिंगटन में फ़रमा रहे थे—अमरीका पोलैंड के लोगों के आज़ादी के जज़्बे की क़दर करता है ... उसे आशा है कि पोलैंड के लोगों की तमन्ना जलद पूरी होगी ... उस राष्ट्र की आज़ादी को जो आज़ाद रहना चाहता है ज़ुल्म से क़ाबू में नहीं रखा जा सकता ... व्यक्ति और राष्ट्र दोनों की "आज़ादी" अमरीका की पालिसी का आधार है—एक हाल में डलेस साहब पोलैंड वालों को

بھاگ جاتے......پر کیا کرتے، موت اور زندگی اور زندگی اور موت ! چند سانسوں کا فاصلہ ہے...پھر بھی بہت بڑا فاصلہ ہے، آدمی کب سے اس دوری کو ختم کرنے کی کوشش کرتا آیا ہے... .. ابھی تک وہ ناکامیاب رہا......ابھی تک وہ موت پر فتح نہیں حاصل کر پایا ہے......پر—

ہے موت کا وار سخت لیکن حیات کا سر نہ جھک سکے گا
کسی طرح سے بھی زندگی کا عظیم دھارا نہ رک سکے گا

× × × ×

بہت سے شبد ہیں جن کا دنیا دراُپیوگ کرتی ہے . " آزادی " ان میں سے ایک ہے . امریکہ کے لئے وہ سب آزاد ہیں جو اس کے پنجے کے نیچے ہیں . ملایا آزاد ہے، فارموسا آزاد ہے، فلپائن آزاد ہے، ویتنام آزاد ہے، تھائی لینڈ آزاد ہے..... سب وہ دیش آزاد ہیں جو امریکہ کی ہاں میں ہاں ملاتے ہیں، اس کے اشارے پر چلتے ہیں ......غلام......امریکہ میں کوئی غلام نہیں ہے......جو لوگ کہتے ہیں کہ نیگروں کے ساتھ دربیوہار کیا جاتا ہے ......وہ جھوٹ کہتے ہیں......وہ روس کے ایجنٹ ہیں ... وہ امریکہ کے ورودھی ہیں......مسز روزولٹ بھی امریکہ کی ورودھی ہیں......کمیونسٹوں کی ایجنٹ ہیں ......نیگرو سمسیا کا حال دنیا کو سناتی ہیں......ان آزاد بندوں کو غلام بناتی ہیں......نیگرو غلام نہیں ہیں ......سامراج لوگوں کو غلام نہیں بناتا......وہ آزادی دیتا ہے......دنیا کو آزاد دیکھنا چاہتا ہے......وہ چاہتا ہے کہ سارے دیشوں میں بیوپار بڑھے، اس کی منڈی بڑھے، اس کا قبضہ بڑھے......یہی آزادی ہے ! لنکن کی آزادی کوئی اور رہی ہوگی......واشنگٹن نے کوئی اور سپنا دیکھا ہوگا ......وہ اور کوئی منزل ہوگی !......شاید یہ سب کمیونسٹ تھے......روزن برگ کے گرو تھے، لیٹمور کے استاد تھے...... ہزاروں امریکی شانتی پریمیوں کو یہ سیکھ دے گئے تھے! ڈلس صاحب اس آزادی کو نہیں مانتے......وہ ان سب کو غلام مانتے ہیں جو ان کے گٹ میں نہیں ہیں، ان کی وچار دھارا کے نہیں ہیں—روسی غلام ہیں، چینی غلام ہیں، پولینڈ والے غلام ہیں......امریکہ غلامی نہیں برداشت کر سکتا، " آزادی " اسے پیاری ہے......"آزادی" کا وہ علمبردار ہے......ڈلس صاحب واشنگٹن میں فرما رہے تھے—امریکہ پولینڈ کے لوگوں کے آزادی کے جذبے کی قدر کرتا ہے......اسے آشا ہے کہ پولینڈ کے لوگوں کی تمنا جلد پوری ہوگی......اس راشٹر کی آزادی کو جو آزاد رہنا چاہتا ہے، ظلم سے قابو میں نہیں رکھا جا سکتا......ویکتی اور راشٹر دونوں کی "آزادی" امریکہ کی پالیسی کا آدھار ہے—ایک حال میں ڈلس صاحب پولینڈ والوں کو

सुना था कि चीन में जमींदारी खतम हो गई है ... किसान खुद अपनी जमीन का मालिक बन गया है ... वह यह जानना चाहते थे कि उनकी हालत क्यों नहीं सुधरती, उनकी जमींदारी उन्मूलन और चीनी जमींदारी उन्मूलन में क्या अन्तर है ... पंडित सुन्दरलाल से वह इन सब सवालों का जवाब सुनने इकट्ठा हुए थे. पंडित जी ने कहा—"आज की सरकार जनता की सरकार नहीं है, वही मशीनरी, वही कल पुरजा जो अंगरेजों के जमाने थे वही आज भी मौजूद हैं...किसानों, जब तुम तय कर लोगे कि जवाहरलाल के बदले, राजेन्द्र बाबू के बदले दिल्ली की गद्दी पर 45 बरस का किसान या मजदूर बैठे तभी तुम्हारा असली राज होगा. राज चलाने के लिये अंगरेजी पढ़े लिखे बड़े बाबुओं की जरूरत नहीं." किसानों में एक लहर सी दौड़ गई, एक खुशी उनके चेहरों पर खिल उठी ... पर निराशा सी छाने लगी. उनके मन ने कहा—यह सब सपना है, यह सब भ्रम है ... किसान मजदूर राज कैसे कर सकते हैं—पर वह पंडित सुन्दरलाल की बातें सुनते रहे, चीन की हालत, वहां के किसानों की हालत वह सुनते रहे, समझते रहे ... उनकी आशा बंधती रही निराशा खतम होती रही है, पंडित जी ने कहा—"हमारी क़िस्मत चीन की क़िस्मत, रूसकी क़िस्मत, बरमा की क़िस्मत, वीतनाम की क़िस्मत से बंधी है ... किसानों! तुम्हें इन मंत्रियों के बदले, जिन्होंने अमरीका के हाथ हिन्दुस्तान को बेच दिया है, किसानों और मजदूरों को उठाना है. जिन्हें चीन से प्रेम है, रूस से प्रेम है, दुनिया की जनता से प्रेम है ... " किसानों ने तालियां पीटीं......स्त्रियां चिल्लाईं......सारा मजमा चिल्लाया—चीन और भारत की दोस्ती जिन्दा बाद! चीन और भारत की की दोस्ती जिन्दा बाद !!

× × ×

फ़ारजे इस दुनिया से चले गए. दुनिया ने उनकी आवाज वियना कांगरेस में सुनी थी. उन्होंने कहा था—मुझे दूसरों की आजादी प्यारी है क्योंकि मुझे अपनी आजादी प्यारी है! आज का यह प्रेमी आजादी नहीं रहा...फ्रांस की एक सन्तान से फ्रांस की गोद खाली हो गई है ... नहीं जिन्दगी से एक होनहार हसती को मौत ने छीन लिया है! मौत जिन्दगी पर ऐसे वार करती रहती है ... पर जिन्दगी अमर है और जिन्दगी की सारी कोशिशें अमर हैं. फ़ारजे के लगन, फ़ारजे की सूझ बूझ, फ़ारजे का मानव प्रेम नहीं मरा, वह नहीं मर सकता ... इनसानों के दिल में फ़ारजे ने जगह बनाई ... फ़ारजे शान्ति के मैदान के योद्धा थे और शान्ति के मैदान में लड़ाई के मैदान से जियादा तकलीफें होती हैं ... फ़ारजे कायर नहीं थे जो इमतहान से डर कर

سنا تھا کہ چین میں زمینداری ختم ہوگئی ہے...کسان خود اپنی زمین کا مالک بن گیا ہے... وہ یہ جاننا چاہتے تھے کہ اُن کی حالت کیوں نہیں سدھرتی' اُن کی زمینداری اُنمولن اور چینی زمینداری اُنمولن میں کیا انتر ہے... پنڈت سندرلال سے وہ اِن سب سوالوں کا جواب سننے اکٹھا ہوئے تھے. پنڈت جی نے کہا—"آج کی سرکار جنتا کی سرکار نہیں ہے' وہی مشینری' وہی کل پرزہ جو انگریزوں کے زمانے میں تھے وہی آج بھی موجود ہیں......کسانوں' جب تم یہ طے کرلو گے کہ جواہر لال کے بدلے' راجیندر بابو کے بدلے دلی کی گدی پر 45 برس کا کسان یا مزدور بیٹھے تبھی تمہارا اصلی راج ہوگا. راج چلانے کے لئے انگریزی پڑھے لکھے بڑے بابوؤں کی ضرورت نہیں." کسانوں میں ایک لہر سی دوڑ گئی' ایک خوشی اُن کے چہروں پر کھل اُٹھی ......پر پھر نراشا سی چھانے لگی. اُن کے من نے کہا—یہ سب سپنا ہے' یہ سب بھرم ہے......کسان مزدور راج کیسے کرسکتے ہیں—پر وہ پنڈت سندر لال کی باتیں سنتے رہے' چین کی حالت' وہاں کے کسانوں کی حالت وہ سنتے رہے' سمجھتے رہے...... اُن کی آشا بندھتی رہی ..نراشا ختم ہوتی رہی ہے. پنڈت جی نے کہا—"ہماری قسمت چین کی قسمت' روس کی قسمت' برما کی قسمت' ویتنام کی قسمت سے بندھی ہے......کسانوں! تمہیں اِن منتریوں کے بدلے' جنہوں نے امریکہ کے ہاتھ ہندستان کو بیچ دیا ہے' کسانوں اور مزدوروں کو اُٹھانا ہے. جنہیں چین سے پریم ہے' روس سے پریم ہے' دنیا کی جنتا سے پریم ہے......" کسانوں نے تالیاں پیٹیں......استریاں چلائیں......سارا مجمع چلایا ——چین اور بھارت کی دوستی زندہ باد! چین اور بھارت کی دوستی زندہ باد !!

× × ×

فارجے اس دنیا سے چلے گئے. دنیا نے اُن کی آواز ویانا کانگریس میں سنی تھی. انہوں نے کہا تھا—مجھے دوسروں کی آزادی پیاری ہے کیونکہ مجھے اپنی آزادی پیاری ہے! آزادی کا یہ پریمی آج نہیں رہا......فرانس کی ایک سنتان سے فرانس کی گود خالی ہوگئی ہے......نہیں زندگی سے ایک ہونہار ہستی کو موت نے چھین لیا ہے! موت زندگی پر ایسے وار کرتی رہتی ہے......پر زندگی امر ہے اور زندگی کی ساری کوششیں امر ہیں. فارجے کی لگن' فارجے کی سوجھ بوجھ' فارجے کا مانو پریم نہیں مرا' وہ نہیں مر سکتا......انسانوں کے دل میں فارجے نے جگہ بنائی ہے ......فارجے شانتی کے میدان کے یودھا تھے اور شانتی کے میدان میں لڑائی کے میدان سے زیادہ تکلیفیں ہوتی ہیں......فارجے کائر نہیں تھے جو امتحان سے ڈر کر

अमरीकी व्योहार की कथा सुनाने आ रहे थे......पीले थे दुबले थे......बीमार थे......उन्होंने सत्याग्रह कर दिया था ... अमरीकी गारड़ों के दुर व्योहार से परेशान हो कर आगे बढ़ने से इनकार कर दिया था......उन्होंने जुल्म का मुक़ाबला किया था ... किसी का पैर कटा था, किसी का हाथ ग़ायब था, किसी की छाती पर गोली के निशान थे, कोई ज़ख़म से कराह रहा था ... शायद अमरीकी तर्ज़ ज़िन्दगी सिखाने के लिये इनके साथ यह व्योहार किया जा रहा था ! ... मैंने एक कोरियाई क़ैदी से आगे बढ़ कर पूछा—तुम्हारी क्या कहानी है, तुम्हें कोजे के दीप की भी कुछ खबर है ? मेरी क्या पूछते हो. ज़बान से कहने की ज़रूरत नहीं है. मुझे प्रचार करने की आवश्यकता नहीं है. हमारी शकलें सब कुछ बता रही हैं, हमारी हालतें खुद गवाही दे रही हैं... कोजे !......मेरे हमदर्द कोजे का तुम मतलब नहीं जानते होंगे ... कोजे का मतलब है स्वर्ग ! हमने इस सुन्दर दीप का नाम अपनी भाशा में स्वर्ग रखा था......यहां के सीन सीनरी, यहां की जलवायु, यहां के पूरे वातावरन में स्वर्ग का रूप झलकता था......पर स्वर्ग और नरक का फ़रक़ हम भूल गए हैं......हम सोचते हैं यदि स्वर्ग में ऐसा आनन्द आता है तो नरक कितनी भली जगह होगी, कितनी अच्छी तरह वहां हम जाकर रह सकेंगे.......तुम यह पूछना चाहते होगे वहां दिन में कितनी बार गोलियां चलती हैं . . वहां कितनी बार टैंकों से हमें कुचला जाता है......बड़ी लम्बी कहानी है, हम सुनाएं तो क्या सुनाएं......तुम किसी भले अमरीकी से पूछ लेना ... किसी इनसान से पूछ लेना ... और अगर कोई न बताए तो कोजे दीप की फ़िज़ाओं से पूछ लेना, वहां की धरती से पूछ लेना.......पर जुल्म ज़ियादा दिनों नहीं फलता, जुल्म की गाड़ी बहुत दिनों नहीं चलती... ..

मैं उसकी शकल देखता रहा ... वह कहता रहा ... रोता रहा ... मैं चीन और कोरिया से आए अमरीकी क़ैदियों को देखता रहा ... मैं अमरीका के भेजे चीनी और कोरियाई क़ैदियों को देखता रहा ... मैं दुर व्योहार देखता रहा और सद व्योहार को अत्याचार बताने वाले मिस्टर क्लार्क की शकल घूरता रहा ... मैं सब कुछ देखता रहा ... दुनिया सब कुछ देखती रही ... इनसान सब कुछ समझता रहा ... मैं सपना देख रहा था ... पर यह सब हक़ीक़त थी, असलियत थी यथार्थ था !

किसान जागते हैं !

हज़ार दो हज़ार नहीं, चालीस हज़ार किसान दूर दूर से इकट्ठा हुए थे. कोई बूढ़ा था, कोई जवान था कोई अधेड़ सबका आंखों में एक चमक थी, सबके माथों पर एक उपदेश लिखा था...सबका एक तरफ़ ध्यान था उन्होंने चीन के किसान की खुशहाली के बारे में सुना था......उन्होंने

امریکی بیوہار کی کتھا سنانے آ رہے تھے......پیلے تھے' دبلے تھے......بیمار تھے..اُنھوں نے ستیاگرہ کر دیا تھا......امریکی گارڈوں کے دُر بیوہار سے پریشان ہو کر آگے بڑھنے سے انکار کر دیا تھا......اُنھوں نے ظلم کا مقابلہ کیا تھا......کسی کا پیر کٹا تھا' کسی کا ہاتھ غائب تھا' کسی کی چھاتی پر گولی کے نشان تھے' کوئی زخم سے کراہ رہا تھا......شاید امریکی طرز زندگی سکھانے کے لئے اِن کے ساتھ یہ بیوہار کیا جا رہا تھا ! ......میں نے ایک کوریائی قیدی سے آگے بڑھکر پوچھا—تمہاری کیا کہانی ہے' تمہیں کوجے کے دیپ کی بھی کچھ خبر ہے؟ میری کیا پوچھتے ہو. زبان سے کہنے کی ضرورت نہیں ہے' مجھے پرچار کرنے کی آشیکتا نہیں ہے . ہماری شکلیں سب کچھ بتا رہی ہیں' ہماری حالتیں خود گواہی دے رہی ہیں......کوجے !......میرے ہمدرد ! کوجے کا تم مطلب نہیں جانتے ہوگے......کوجے کا مطلب ہے سورگ! ہم نے اس سندر دیپ کا نام اپنی بھاشا میں سورگ رکھا تھا ......یہاں کے سین سینری' یہاں کی جل وایو یہاں کے پورے واتاورن میں سورگ کا روپ جھلکتا تھا......پر سورگ اور نرک کا فرق ہم بھول گئے ہیں......ہم سوچتے ہیں یدی سورگ میں ایسا آنند آتا ہے تو نرک کتنی بھلی جگہ ہوگی' کتنی اچھی طرح وہاں ہم جاکر رہ سکیں گے......تم یہ پوچھنا چاہتے ہوگے وہاں دن میں کتنی بار گولیاں چلتی ہیں . .. وہاں کتنی بار ٹینکوں سے ہمیں کچلا جاتا ہے......بڑی لمبی کہانی ہے' ہم سنائیں تو کیا سنائیں......تم کسی بھلے امریکی سے پوچھ لینا... کسی اِنسان سے پوچھ لینا......اور اگر کوئی نہ بتائے تو کوجے دیپ کی فضاؤں سے پوچھ لینا' وہاں کی دھرتی سے پوچھ لینا ... پر ظلم زیادہ دنوں نہیں پھلتا' ظلم کی گاڑی بہت دنوں نہیں چلتی......

میں اُس کی شکل دیکھتا رہا ... وہ کہتا رہا...... روتا رہا ... میں چین اور کوریا سے آئے امریکی قیدیوں کو دیکھتا رہا ... میں امریکہ کے بھیجے چینی اور کوریائی قیدیوں کو دیکھتا رہا ... میں دُر بیوہار دیکھتا رہا اور سد بیوہار کو اتیاچار بتانے والے مسٹر کلارک کی شکل گھورتا رہا ... میں سب کچھ دیکھتا رہا ... دنیا سب کچھ دیکھتی رہی......انسان سب کچھ سمجھتا رہا ... میں سپنا دیکھ رہا تھا ... پر یہ سب حقیقت تھی' اصلیت تھی' یتھارتھ تھا !

کسان جاگتے ہیں !

ہزار دو ہزار نہیں' چالیس ہزار کسان دور دور سے اکٹھا ہوئے تھے کوئی بوڑھا تھا' کوئی جوان تھا' کوئی ادھیڑ تھا...سب کی آنکھوں میں ایک چمک تھی سب کے ماتھوں پر ایک اُپدیش لکھا تھا...سب کا ایک طرف دھیان تھا...اُنھوں نے چین کے کسان کی خوشحالی کے بارے میں سنا تھا......اُنھوں نے

आ कर रुक गईं. इन पर चीनी रेड क्रास सोसाइटी का झंडा लहलहा रहा था......यह मनचूरिया से चली थीं...... ज़खमी सिपाहियों को ले कर सुलह का पैग़ाम सुनाने, शान्ति की आस बंधाने. एक तरफ़ से चीनी और कोरियाई अफ़सर आए, दूसरी तरफ़ से अमरीकी अफ़सर...... लिखा पढ़ी हुई ... सब कुछ तय हो गया. क़ैदी लारियों से उतरने लगे. एक जरनलिस्ट ने बढ़ कर पूछा—तुम लोग भूकों मर गए होंगे ... उसने हंस कर जवाब दिया—हम खूब खाते थे, हमें बहुत अच्छा खाना मिलता था—यह वाक्य सब ने एक मदहोशी की हालत में नोट कर लिए ... उनके भाव बता रहे थे कि जैसे उनके विचार ग़लत निकले हों......जैसे उनका भ्रम टूटा हो......सारे क़ैदी जोश में थे, खुश थे ... पीले होने के बजाय लाल थे, दुबले होने की बजाय तन्दुरुस्त थे......एक ने कहा हर तरह का आराम था ... दूसरे ने कहा हमें प्रार्थना की इजाज़त थी, हमें बाइबिलें पढ़ने को मिलती थीं ... एक जरनलिस्ट से नहीं रहा गया ... उसने पूछ ही लिया—बाइबिलें कहां की छपी थीं ... यह सवाल क्यों था, उसके दिमाग़ में यह प्रश्न क्यों उठा ? पर यह प्रश्न था और इसका जवाब मिला—रूस ! जरनलिस्टों ने इस बात को भी तेज़ी से नोट कर ली ... जैसे बाइबिल कोई नया हथियार हो, जैसे यह कोई भयानक बम हो जिसको रूसियों ने ईजाद किया हो ... शायद वास्तव में यह जबरदस्त हथियार था ... इस हथियार से लड़ाइयां नहीं जीती जातीं, आदमी जीते जाते हैं, उन का मन जीता जाता है, उनकी आत्मा जीती जाती है, उनकी सद्‌भावना जीती जाती है ! मैंने देखा कुछ जरनलिस्टों के मुखड़ों पर शक की रेखाएं खिंच गई ... कुछ आपस में काना फूसी करने लगे ... उन्हीं में से एक ने दूसरे क़ैदी से पूछा—तुम लोगों को कम्युनिस्ट बनाने की कोशिश की जाती थी या नहीं ? "बिलकुल नहीं." जवाब मिला—शायद अब भी उन्हें यक़ीन नहीं आया ... उन्होंने हर एक से यह सवाल किया ... हर एक को शब्दों के बवन्डर में फांस कर कुछ अपने मतलब की बातें उगलवाने की कोशिश उन लोगों ने की ... पर निराशा के सिवा कुछ भी हाथ नहीं लगा—और इसी समय एक जीप पर मार्क क्लार्क की सवारी सामने आ गई. अफ़सरों ने आगे बढ़ कर सलूट दिया—जरनलिस्टों ने उनके फ़ोटो लिये ... उन से सवाल पूछने शुरू कर दिये ... क्लार्क साहब ने हंस कर कहा—हमारे काफ़ी सिपाही कम्युनिस्ट हो गए हैं, हमें होशियार रहना है ... कमयुनिस्टों ने अच्छे व्योहार इसलिये इन लोगों के साथ किये हैं ताकि इनको ग़द्दार बना सकें, ताकि इनमें बग़ावत फैला सकें ! फिर वही लारियां रुकीं ......फिर वही लिखा पढ़ी हुई......यह कोरियाई और चीनी क़ैदी थे......

آکر رک گئیں. ان پر چینی ریڈ کراس سوسائٹی کا جھنڈا لہرا رہا تھا...یہ منچوریا سے چلی تھیں...زخمی سپاہیوں کو لے کر صلح کا پیغام سنانے' شانتی کی آس بندھانے. ایک طرف سے چینی اور کوریائی افسر آئے' دوسری طرف سے امریکی افسر......لکھا پڑھی ہوئی......سب کچھ طے ہوگیا. قیدی لاریوں سے اترنے لگے. ایک جرنلسٹ نے بڑھ کر پوچھا—تم لوگ بھوکوں مر گئے ہوگے.....اس نے ہنس کر جواب دیا—ہم خوب کھاتے تھے' ہمیں بہت اچھا کھانا ملتا تھا—یہ واکیہ سب نے ایک مدھوشی کی حالت میں نوٹ کر لئے......ان کے بھاؤ بتا رہے تھے کہ جیسے ان کے وچار غلط نکلے ہوں......جیسے ان کا بھرم ٹوٹا ہو...... سارے قیدی جوش میں تھے' خوش تھے......پیلے ہونے کے بجائے لال تھے' دبلے ہونے کے بجائے تندرست تھے...... ایک نے کہا ہمیں ہر طرح کا آرام تھا......دوسرے نے کہا ہمیں پرارتھنا کی اجازت تھی' ہمیں بائبلیں پڑھنے کو ملتی تھیں.....ایک جرنلسٹ سے نہیں رہا گیا...... اس نے پوچھ ہی لیا—بائبلیں کہاں کی چھپی تھیں...... یہ سوال کیوں تھا' اس کے دماغ میں یہ پرشن کیوں اٹھا؟ پر یہ پرشن تھا اور اس کا جواب ملا—روس ! جرنلسٹوں نے اس بات کو بھی تیزی سے نوٹ کر لی......جیسے بائبل کوئی نیا ہتھیار ہو' جیسے یہ کوئی بھیانک بم ہو جس کو روسیوں نے ایجاد کیا ہو......شاید واستو میں یہ زبردست ہتھیار تھا......اس ہتھیار سے لڑائیاں نہیں جیتی جاتیں' آدمی جیتے جاتے ہیں' ان کا من جیتا جاتا ہے' ان کی آتما جیتی جاتی ہے' ان کی سدبھاونا جیتی جاتی ہے ! میں نے دیکھا کچھ جرنلسٹوں کے مکھڑوں پر شک کی ریکھائیں کھنچ گئیں......کچھ آپس میں کانا پھوسی کرنے لگے......انہیں میں سے ایک نے دوسرے قیدی سے پوچھا—تم لوگوں کو کمیونسٹ بنانے کی کوشش کی جاتی تھی یا نہیں؟ " بالکل نہیں. " جواب ملا—شاید اب بھی انہیں یقین نہیں آیا......انہوں نے ہر ایک سے یہ سوال کیا......ہر ایک کو شبدوں کے بونڈر میں پھانس کر کچھ اپنے مطلب کی باتیں اگلوانے کی کوشش ان لوگوں نے کی......پر نراشا کے سوا کچھ بھی ہاتھ نہیں لگا—اور اسی سمے ایک جیپ پر مارک کلارک کی سواری سامنے آ گئی. افسروں نے آگے بڑھکر سلوٹ دیا—جرنلسٹوں نے ان کے فوٹو لئے......ان سے سوال پوچھنے شروع کر دیئے......کلارک صاحب نے ہنسکر کہا—ہمارے کافی سپاہی کمیونسٹ ہوگئے ہیں' ہمیں ہوشیار رہنا ہے.....کمیونسٹوں نے اچھے بیوہار اس لئے ان لوگوں کے ساتھ کئے ہیں تاکہ ان کو غدار بنا سکیں' تاکہ ان میں بغاوت پھیلا سکیں !......پھر وہی لاریاں رکیں......پھر وہی لکھا پڑھی ہوئی......پھر یہ کوریائی اور چینی قیدی تھے......

ठीक से उच्चारण भी नहीं कर सकता...अर्थ भी नहीं समझ सकता ... यह भी नहीं जानता कि यह गांव है या केवल एक पहाड़ी टीला यह कोई आबादी है या फ़ौजियों का कोई कैम्प ... पोन मोन जोन उस स्थान के रूप में मेरे सामने आता है जहां लड़ाई के भूत नहीं आ सकते, यह वह कुण्डल है जिसके चारों तरफ़ जंग की बद रूहें चीखती हैं, शोर मचाती हैं, डराती हैं ... पर जिसके अन्दर शान्ति की साधना हो रही है, शान्ति की देवी प्रकट हो इसके लिये कोशिशें की जा रही हैं.

मैं पोन मोन जोन जाना चाहता था ... पर यह मुमकिन न था ..., मैंने एक करवट बदली, दो करवट बदली ... न जाने कब तक करवटें बदलता रहा, कब तक कोरिया की लड़ाई, जंगी क़ैदियों के तबादले, कीटानु बम के सम्बन्ध में सोचता रहा सोचना एक बीमारी है और शायद दुनिया में कहीं भी इस बीमारी का इलाज नहीं ! जितना मैं सोने की कोशिश करता रहा उतनी ही बेचैनी बढ़ती रही ... और न जाने कब मैं कोरिया पहुँच गया ... कहते हैं सपने कभी सच नहीं होते ... सपने सच हों या न हों पर सपनों में सच्ची बातें अवश्य दिखाई पड़ जाती हैं. मैं कोरिया में था ... उस गांव में मैं पहुँच गया जिस का नाम आज़ाद गांव है ... चारों तरफ़ लोग आखें फाड़ फाड़ कर देख रहे थे ... कोई केमरा लिये था, कोई काग़ज़ पेंसिल दबाए था, कोई दूरबीन लगाए कुछ देख रहा था ... यह कौन थे ... फ़ौजी नहीं थे, इनके पास कोई वरदी नहीं थी ... यह अमरीकी भी थे, चीनी भी थे, कोरियाई भी थे, अंगरेज़ भी थे, फ़्रांसीसी भी सभी रंग के लोग थे, सभी देशों से यह लोग आए थे. इन सब का नाम एक था—संवाददाता, ख़बर देने वाले ... जरनलिस्ट ... इन सबका एक ही काम था—सच का पता लगाना, दुनिया की जनता को सच की ख़बर पहुँचाना, झूट और सच को अलग करना इनका फ़र्ज़ था, दुनिया को अन्धेरे से निकाल कर रोशनी के पथ पर चलाना इनका पेशा था...पेशा ! कितना कुरूप शब्द है...कितना भयानक लगता है ... पेशा और जरनलिस्ट ! जरनलिज़्म एक फ़र्ज़, एक ज़िम्मेदारी है, इनसानी समाज के सेवा का एक साधन है पर पेशा ! ... जरनलिस्ट भी पेशा करता है...सच को झूट बनाने का पेशा, अन्धेरे को उजाला साबित करने का पेशा, हक़ीक़त को भ्रम में तबदील करने का पेशा ! इस गिरोह में कितने जरनलिस्ट थे और कितने जरनलिज़्म का का पेशा करते थे यह कहना मुश्किल है !—मैं इसी गिरोह में जा कर मिल गया मैं भी देखता रहा ... दूर से लारियों की गुर्राहट सुनाई पड़ रही थी......ऐसा लग रहा था जैसे चींटियों की एक क़तार खाने की तलाश में चल पड़ी हो. हम देखते रहे और देखते देखते वह लारियां हमारे सामने

ٹھیک سے اُچارن بھی نہیں کرسکتا......ارتھ بھی نہیں سمجھ سکتا......یہ بھی نہیں جانتا کہ یہ گاؤں ہے یا کیول ایک پہاڑی ٹیلہ' یہ کوئی آبادی ہے یا فوجیوں کا کوئی کیمپ......پون مون جون اُس استھان کے روپ میں میرے سامنے آتا ہے جہاں لڑائی کے بھوت نہیں آسکتے' یہ وہ کنڈل ہے جس کے چاروں طرف جنگ کی بدروحیں چیختی ہیں' شور مچاتی ہیں' ڈراتی ہیں......پر جس کے اندر شانتی کی سادھنا ہو رہی ہے' شانتی کی دیوی پرکٹ ہو اس کے لئے کوششیں کی جا رہی ہیں .

میں پون مون جون جانا چاہتا تھا...پر یہ ممکن نہ تھا...میں نے ایک کروٹ بدلی' دو کروٹ بدلی...نہ جانے کب تک کروٹیں بدلتا رہا' کب تک کوریا کی لڑائی' جنگی قیدیوں کے تبادلے' کیٹانو بم کے سمبندھ میں سوچتا رہا. سوچنا ایک بیماری ہے اور شاید دنیا میں کہیں بھی اس بیماری کا علاج نہیں ! جتنا میں سونے کی کوشش کرتا رہا اتنی ہی بےچینی بڑھتی رہی......اور نہ جانے کب میں کوریا پہونچ گیا......کہتے ہیں سپنے کبھی سچ نہیں ہوتے ... سپنے سچ ہوں یا نہ ہوں پر سپنوں میں سچی باتیں اوشیہ دکھائی پڑ جاتی ہیں . میں کوریا میں تھا...اُس گاؤں میں میں پہونچ گیا جس کا نام آزاد گاؤں ہے...چاروں طرف لوگ آنکھیں پھاڑ پھاڑ کر دیکھ رہے تھے...کوئی کیمرہ لئے تھا' کوئی کاغذ پنسل دبائے تھا' کوئی دوربین لگائے کچھ دیکھ رہا تھا...یہ کون تھے...فوجی نہیں تھے' اِن کے پاس کوئی وردی نہیں تھی...یہ امریکن بھی تھے' چینی بھی تھے' کوریائی بھی تھے' انگریز بھی تھے' فرانسیسی بھی سبھی رنگ کے لوگ تھے' سبھی دیشوں سے یہ لوگ آئے تھے. اِن سب کا نام ایک تھا—سمواددان' خبر دینے والے ... جرنلسٹ ... اِن سب کا ایک ہی کام تھا—سچ کا پتہ لگانا دنیا کی جنتا کو سچ کی خبر پہونچانا' جھوٹ اور سچ کو الگ کرنا اِن کا فرض تھا' دنیا کو اندھیرے سے نکال کر روشنی کے پتھ پر چلانا اِن کا پیشہ تھا.. ...پیشہ ! کتنا کروپ شبد ہے......کتنا بھیانک لگتا ہے...... پیشہ اور جرنلسٹ ! جرنلزم ایک فرض ہے' ایک ذمہ داری ہے' انسانی سماج کی سیوا کا ایک سادھن ہے......پر پیشہ !...... جرنلسٹ بھی پیشہ کرتا ہے......سچ کو جھوٹ بنانے کا پیشہ' اندھیرے کو اُجالا ثابت کرنے کا پیشہ' حقیقت کو بھرم میں تبدیل کرنے کا پیشہ ! اِس گروہ میں کتنے جرنلسٹ تھے اور کتنے جرنلزم کا پیشہ کرتے تھے یہ کہنا مشکل ہے !—میں اسی گروہ میں جاکر مل گیا' میں بھی دیکھتا رہا......دور سے لاریوں کی غراہٹ سنائی پڑ رہی تھی...ایسا لگ رہا تھا جیسے چیونٹیوں کی ایک قطار کھانے کی تلاش میں چل پڑی ہو. ہم دیکھتے رہے اور دیکھتے دیکھتے وہ لاریاں ہمارے سامنے

प्रवासी की डायरी

इच्छा जितनी दबाई जाती है उतनी ही प्रबल होती जाती है. जितनी वह प्रबल होती जाती है उतनी ही बेचैनी बढ़ती जाती है, मन व्याकुल होने लगता है, दिमाग़ डांवा डोल होने लगता है, हर चीज़ एक नुक़्ते पर आ कर केन्द्रित हो जाती है. छोटी मोटी इच्छा हो तो आदमी पूरी भी कर ले......पर उस इच्छा का क्या किया जाय जिसकी पूर्ति मुश्किल ही नहीं नामुमकिन भी हो...इच्छाओं पर जीत हासिल करने के लिये आदमी अथक कोशिश करता रहा है, तप करता रहा है, घरबार छोड़ता रहा है......पर कितने ऐसे आदमी हैं जो इस लड़ाई को जीत सके हैं, कितनी ऐसी इच्छाएं हैं जिन्हें वह मार सके हैं ! शायद इच्छाएं कभी मरती नहीं हैं, केवल रूप बदलती हैं, पूर्ति का ढंग बदल देती हैं, अपना स्तर बदल देती हैं ! . . ...मेरी इच्छा तो और भी अनोखी थी... . मुझे जन्नत नहीं चाहिये थी ....मुझे कोई महल नहीं चाहिये था........ मुझे अलाउद्दीन के चिराग़ की इच्छा नहीं थी. न कुछ पाने की इच्छा थी और न कुछ हासिल करने की...... मेरी इच्छा सरल थी बहुत ही मामूली थी.....शायद इसी कारन बहुत ही मुश्किल भी थी . ...कहां मैं और कहां कोरिया......एक दो झगड़े नहीं......पास पोर्ट......विसा धन......नाम......काम......एक लम्बी लिस्ट है. इन्हें पार करना आसान नहीं ! पर न जाने क्यों यह इच्छा पैदा हो गई, न जाने क्यों मैं कोरिया जाने के लिये बेचैन हो उठा ... दिल की इच्छा थी या दिमाग़ की तय करना मुश्किल है, शायद दोनों की, शायद पूरी आत्मा की... मैं कोरिया जाना चाहता था ... वहां नहीं जहां गोले बरसते हैं, वहां नहीं टैंक ज़मीन की छातियां रौंदते हैं, वहां नहीं जहां गोलियां हर आने वाले का स्वागत करती हैं, वहां नहीं जहां जहाज़ कीटानु बम उगलते हैं, वहां नहीं जहां मानव नंगा नाच नाचता है ... मैं वहां जाना चाहता था जहां गोलों की धमक तो सुनाई पड़ती है पर जहां गोले नहीं गिरते ... जहां आदमी हथियारों से फ़ैसला नहीं करते ... जहां आपस में बात चीत कर के झगड़ों को ख़तम करने की कोशिश होती है ... जहां इनसान शैतान का लबादा छोड़ कर अपनी शकल में ज़ाहिर होने की कोशिश करता है ... मैं वहां जाना चाहता था जहां आज़ादी न होते भी आज़ादी की बातें सुनाई पड़ती हैं ... पोन मोन जोन ! ... मैंने कभी नाम नहीं सुना था ...

پرواسی کی ڈائری

اچھا جتنی دبائی جاتی ہے اُتنی ہی پربل ہوتی جاتی ہے. جتنی وہ پربل ہوتی جاتی ہے اُتنی ہی بےچینی بڑھتی جاتی ہے، من بیاکل ہونے لگتا ہے، دماغ ڈانواڈول ہونے لگتا ہے، ہر چیز ایک نقطے پر آکر کیندرت ہو جاتی ہے. چھوٹی موٹی اچھا ہو تو آدمی پوری بھی کرلے...... پر اُس اچھا کا کیا کیا جائے جس کی پورتی مشکل ہی نہیں ناممکن بھی ہو..... اچھاؤں پر جیت حاصل کرنے کے لئے آدمی انتھک کوشش کرتا رہا ہے، تپ کرتا رہا ہے، گھربار چھوڑتا رہا ہے...... پر کتنے ایسے آدمی ہیں جو اِس لڑائی کو جیت سکے ہیں، کتنی ایسی اچھائیں ہیں جنہیں وہ مار سکے ہیں ! شاید اچھائیں کبھی مرتی نہیں ہیں، کیول روپ بدلتی ہیں، پورتی کا ڈھنگ بدل دیتی ہیں، اپنا استر بدل دیتی ہیں !...... میری اچھا تو اور بھی انوکھی تھی..... مجھے جنت نہیں چاہئے تھی.. ...مجھے کوئی محل نہیں چاہئے تھا... مجھے علاؤ الدین کے چراغ کی اچھا نہیں تھی، نہ کچھ پانے کی اچھا تھی اور نہ کچھ حاصل کرنے کی...... میری اچھا سرل تھی، بہت ہی معمولی تھی...... شاید اسی کارن بہت ہی مشکل بھی تھی...... کہاں میں اور کہاں کوریا...... ایک دو جھگڑے نہیں.. پاسپورٹ... ویسا... دھن... نام... کام... ایک لمبی لسٹ ہے. انہیں پار کرنا آسان نہیں ! پر نہ جانے کیوں یہ اچھا پیدا ہوگئی، نہ جانے کیوں میں کوریا جانے کے لئے بےچین ہو اٹھا...... دل کی اچھا تھی یا دماغ کی طے کرنا مشکل ہے، شاید دونوں کی، شاید پوری آتما کی...... میں کوریا جانا چاہتا تھا.. وہاں نہیں جہاں گولے برستے ہیں، وہاں نہیں جہاں ٹینک زمین کی چھاتیاں روندتے ہیں، وہاں نہیں جہاں گولیاں ہر آنے والے کا سواگت کرتی ہیں، وہاں نہیں جہاں جہاز کیٹانو بم اُگلتے ہیں، وہاں نہیں جہاں مانو ننگا ناچ ناچتا ہے... ...میں وہاں جانا چاہتا تھا جہاں گولوں کی دھمک تو سنائی پڑتی ہے پر جہاں گولے نہیں گرتے...... جہاں آدمی ہتھیاروں سے فیصلہ نہیں کرتے...... جہاں آپس میں بات چیت کرکے جھگڑوں کو ختم کرنے کی کوشش ہوتی ہے... جہاں انسان شیطان کا لبادہ چھوڑ کر اپنی شکل میں ظاہر ہونے کی کوشش کرتا ہے...... میں وہاں جانا چاہتا تھا جہاں آزادی نہ ہوتے بھی آزادی کی باتیں سنائی پڑتی ہیں... پون مون جون !...... میں نے کبھی نام نہیں سنا تھا...

इस बात की कोशिश करना चाहिये कि हम अपने पदार्थों का इस्तेमाल करें और घरेलू धन्दों को प्रोत्साहन दे कर इनसे वह सामान बनायें जिनकी हमें ज़रूरत है. हमें अपनी ज़रूरतों को इन्हीं सामानों से पूरी करना चाहिये जिससे कि हमारे सामानों के लिये बाज़ार पैदा हो सके. इस सम्बन्ध में शायद हमें बाहरी सामानों पर रोक लगानी पड़े और अपनी ज़रूरतों को भी कम करना पड़े राष्ट्रों को स्वावलम्बी बनाने का काम मानवता की तरक़्क़ी के नेक काम का एक अंग समझ कर करना चाहिये. इसलिये दुनिया का भविश्य और जनता का शान्तिमय जीवन उस तेज़ी पर निर्भर है जिस तेज़ी से जनता अहिन्सा और सच्चाई के रास्ते पर अमल करती है. शान्ति आन्दोलन भी ऐसी ही कोशिश का एक हिस्सा है. वह एक ऐसी सोसाइटी क़ायम करना चाहता है जिसमें एक आदमी दूसरे आदमी का गला नहीं काटेगा बल्कि जिसमें सब लोग मिल जुल कर हंसी, ख़ुशी और शान्ति से रहेंगे और ख़ुशहाली का वातावरन पैदा करेंगे.

اس بات کی کوشش کرنا چاہئے کہ ہم اپنے پدارتھوں کا استعمال کریں اور گھریلو دھندوں کو پروتساہن دے کر ان سے وہ سامان بنائیں جن کی ہمیں ضرورت ہے ۔ ہمیں اپنی ضرورتوں کو انہیں سامانوں سے پوری کرنا چاہئے جس سے کہ ہمارے سامانوں کے لئے بازار پیدا ہو سکے ۔ اس سمبندھ میں شاید ہمیں باہری سامانوں پر روک لگانی پڑے اور اپنی ضرورتوں کو بھی کم کرنا پڑے ۔ راشٹروں کو سواولمبی بنانے کا کام مانوتا کی ترقی کے نیک کام کا ایک انگ سمجھ کر کرنا چاہئے۔ اس لئے دنیا کا بھوشیہ اور جنتا کا شانتی سے جیون اس تیزی پر نربھر ہے جس تیزی سے جنتا اہنسا اور سچائی کے راستے پر عمل کرتی ہے۔ شانتی آندولن بھی ایسی ہی کوشش کا ایک حصہ ہے ۔ وہ ایک ایسی سوسائٹی قائم کرنا چاہتا ہے جس میں ایک آدمی دوسرے آدمی کا گلا نہیں کاٹیگا بلکہ جس میں سب لوگ مل جل کر ہنسی، خوشی اور شانتی سے رہینگے اور خوشحالی کا واتاورن پیدا کرینگے ۔

जंग न होने पाए

डूब न जायं दुख सागर में बच्चों की आशाएं
टूट न जायं बजते चूड़े मांगें उजड़ न जाएं
रोएं न अपने भागों को ममता की मारी माएं

गली गली में दया धरम की लाज न फिर लुट जाए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

हम क्यों मानवता से साथी ख़ून की होली खेलें
धनवानों के लाभ की ख़ातिर हम क्यों बिपता झेलें
मौत के कांटों से क्यों उलझें हम जीवन की बेलें

दे कर अपनी जान ख़रीदें हम क्यों रोग पराए
जंग न होने पाए साथी, जंग न होने पाए !

—नरेश कुमार 'शाद'

جنگ نہ ہونے پائے

ڈوب نہ جائیں دکھ ساگر میں بچوں کی آشائیں
ٹوٹ نہ جائیں بجتے چوڑے مانگیں اجڑ نہ جائیں
روئیں نہ اپنے بھاگوں کو ممتا کی ماری مائیں

گلی گلی میں دیا دھرم کی لاج نہ پھر لٹ جائے
جنگ نہ ہونے پائے ساتھی، جنگ نہ ہونے پائے !

ہم کیوں مانوتا سے ساتھی خون کی ہولی کھیلیں
دھنوانوں کے لابھ کی خاطر ہم کیوں بپتا جھیلیں
موت کے کانٹوں سے کیوں الجھیں ہم جیون کی بیلیں

دے کر اپنی جان خریدیں ہم کیوں روگ پرائے
جنگ نہ ہونے پائے ساتھی، جنگ نہ ہونے پائے !

—نریش کمار 'شاد'

तरह बरबादी के हथियारों का संबंध न केवल उन सिपाहियों से होता है जो लड़ाई के मोरचे पर लड़ते हैं बल्कि इन सबका ताल्लुक़ अपने अपने घरों में बैठे लोगों से भी होता है. एटम बम, नपाम बम, कीड़ों और बीमारियों के बम से हर हर घर में मौतें हुई हैं, हर घर बरबाद हुआ है. यह इस कारन से होता है कि लड़ाई में जनता एक तीसरे गिरोह के रूप में शामिल कर ली जाती है. इन लड़ाइयों का सब से भयानक पहलू यह है कि राष्ट्रों के बीच नफ़रत की भावना ज़ोरों से फैलाई जाती है. अगर इस भावना को हमें रोकना है तो शान्ति के ज़माने में भी हमें जनता को यह समझाना होगा कि लड़ाई ज़िन्दगी का अंग नहीं है बल्कि इनसानियत के रिश्ते का भयानक कुरूप है.

शान्ति आन्दोलन की सीमा यह नहीं होनी चाहिये कि सिर्फ़ मौजूदा लड़ाइयों की आग को शान्त कर दिया जाय बल्कि इस आन्दोलन को इस बात की कोशिश में अपने को लगाना चाहिये कि समाज की रचना ऐसी हो जिसमें हम शान्ति से ज़िन्दा रह सकें. नफ़रत इनसानी समाज के लिये अच्छी चीज़ नहीं है. अगर मानव को तरक़्क़ी करना है तो यह ज़रूरी है कि सदभावना और समझदारी का जज़बा पैदा हो.

हम जिन बातों का ऊपर ज़िकर कर चुके हैं उनसे ज़ाहिर है कि शान्ति की भावना पैदा करने के लिये एक आन्दोलन की ज़रूरत है जो राष्ट्रों की समस्याओं और झगड़ों को समझने और उनका शान्ति से हल ढूंढने की कोशिश करे. जो लोग शान्ति आन्दोलन में आने के इच्छुक हैं उनके सामने बड़ी ज़िम्मेदारियां हैं. उनको लड़ाई की जड़ को खतम करना है हम पहले बता चुके हैं कि मुख्य मुख्य पदार्थों और बड़े पैमाने पर बने माल की तिजारत लड़ाई पैदा करती है. इससे यह नतीजा निकलता है कि जहां तक मुमकिन हो इस तरह के व्यापार में कमी की जाय और हर राष्ट्र अपने रोज़ की ज़रूरतों के सम्बन्ध में अपने पैरों पर खड़ा हो जाय. गांधी जी ने हमें सिखाया था कि सत्य और अहिंसा का वातावरन पैदा हो और इन सिद्धान्तों के आधार पर एक समाज बनाने का प्रयत्न किया जाय. अगर शान्ति के लिये ऐसा आन्दोलन न खड़ा हुआ तो यह सीख बेकार चली जायगी.

इसका यह भी मतलब है कि शान्ति आन्दोलन मशीन वाले उद्योगों के मुक़ाबले में जनता के उद्योगों का प्रचार करे क्योंकि मशीनी उद्योग इस बात की ज़रूरत पैदा करते हैं कि लाखों आदमियों की ज़िन्दगी को कन्ट्रोल किया जाय. शान्ति आन्दोलन में आने वालों को चाहिये कि वह विदेशी व्योपार में हर तरह से कमी करें. हमको

طرح بربادی کے ہتھیاروں کا سمبندھ نہ کیول اُن سپاہیوں سے ہوتا ہے جو لڑائی کے مورچے پر لڑتے ہیں بلکہ اِن سب کا تعلق اپنے اپنے گھروں میں بیٹھے لوگوں سے بھی ہوتا ہے۔ ایٹم بم، نپام بم، کیڑوں اور بیماریوں کے بم سے ہر ہر گھر میں موتیں ہوئی ہیں، ہر گھر برباد ہوا ہے۔ یہ اِس کارن سے ہوتا ہے کہ لڑائی میں جنتا ایک تیسرے گروہ کے روپ میں شامل کر لی جاتی ہے۔ اِن لڑائیوں کا سب سے بھیانک پہلو یہ ہے کہ راشٹروں کے بیچ نفرت کی بھاونا زوروں سے پھیلائی جاتی ہے۔ اگر اِس بھاونا کو ہمیں روکنا ہے تو شانتی کے زمانے میں بھی ہمیں جنتا کو یہ سمجھانا ہوگا کہ لڑائی زندگی کا انگ نہیں ہے بلکہ انسانیت کے رشتے کا بھیانک کروپ ہے۔

شانتی آندولن کی سیما یہ نہیں ہونی چاہئے کہ صرف موجودہ لڑائیوں کی آگ کو شانت کر دیا جائے بلکہ اِس آندولن کو اِس بات کی کوشش میں اپنے کو لگانا چاہئے کہ سماج کی رچنا ایسی ہو جس میں ہم شانتی سے زندہ رہ سکیں۔ نفرت انسانی سماج کے لئے اچھی چیز نہیں ہے۔ اگر مانو کو ترقی کرنا ہے تو یہ ضروری ہے کہ سدبھاونا اور سمجھداری کا جذبہ پیدا ہو۔

ہم جن باتوں کا اوپر ذکر کر چکے ہیں اُن سے ظاہر ہے کہ شانتی کی بھاونا پیدا کرنے کے لئے ایک آندولن کی ضرورت ہے جو راشٹروں کی سمسیاؤں اور جھگڑوں کو سمجھے اور اُن کا شانتی سے حل ڈھونڈھنے کی کوشش کرے۔ جو لوگ شانتی آندولن میں آنے کے اچھک ہیں اُن کے سامنے بڑی ذمہ داریاں ہیں۔ اُن کو لڑائی کی جڑ کو ختم کرنا ہے۔ ہم پہلے بتا چکے ہیں کہ مکھیہ مکھیہ پدارتھوں اور بڑے پیمانے پر بنے مال کی تجارت لڑائی پیدا کرتی ہے۔ اِس سے یہ نتیجہ نکلتا ہے کہ جہاں تک ممکن ہو اِس طرح کے بیوپار میں کمی کی جائے اور ہر راشٹر اپنے روز کی ضرورتوں کے سمبندھ میں اپنے پیروں پر کھڑا ہو جائے۔ گاندھی جی نے ہمیں سکھایا تھا کہ ستیہ اور اہنسا کا واتاورن پیدا ہو اور اِن سدھانتوں کے آدھار پر ایک سماج بنانے کا پریتن کیا جائے۔ اگر شانتی کے لئے ایسا آندولن نہ کھڑا ہوا تو یہ سیکھ بیکار چلی جائے گی۔

اِس کا یہ بھی مطلب ہے کہ شانتی آندولن مشین والے اُدیوگوں کے مقابلے میں جنتا کے اُدیوگوں کا پرچار کرے کیونکہ مشینی اُدیوگ اِس بات کی ضرورت پیدا کرتے ہیں کہ لاکھوں آدمیوں کی زندگی کو کنٹرول کیا جائے۔ شانتی آندولن میں آنے والوں کو چاہئے کہ وہ ودیشی بیوپار میں ہر طرح سے کمی کریں۔ ہم کو

इन कारनों से यह जरूरी हो जाता है कि उन बातों की काट की जाय जिनका प्रचार करके आम जनता में नफ़रत के भाव पैदा किये जाते हैं और जनता को उसके हित की बातें साफ़ साफ़ बताई जायं. मिसाल के लिये अगर लन्दन के बाजार में जो तमबाकू खरच होती है उसकी पैदावार हिन्दुस्तान में होने वाली है तो यह पैदावार सिर्फ उन खेतों पर क़बज़ा करने के बाद ही बढ़ाई जा सकती है जिन में आम जनता के इस्तेमाल के लिये ग़ल्ला पैदा होता है क्योंकि पहले से ही जरूरत से ज्यादा खेत तम्बाकू पैदा करने के काम में फंसे हुए हैं. जो लोग लन्दन में तमबाकू का व्योपार करते हैं उनको तमबाकू पैदा करने वाले इलाक़ों की जनता की जरूरतों और हितों से कोई दिलचस्पी नहीं है. नतीजा यह होता है कि ऐसे इलाक़ों की जनता के लिये खाने की कमी होती है और लोग भुखमरी से मरते हैं लेकिन लन्दन के आम लोग जो इसी तमबाकू का इस्तेमाल करते हैं मुशकिल से इस बात को महसूस करते हैं कि इस भुकमरी में उनकी भी कुछ नैतिक जिम्मेदारी है. इस तरह के कच्चे माल पर क़बज़ा रखने के लिये यह भी जरूरी हो सकता है कि दूसरे देश पर राजकाजी कन्ट्रोल रखा जाय. इस लिये ही आजकल जो शान्ति आन्दोलन चल रहा है उसकी सख़्त जरूरत है. यह आन्दोलन आम जनता के बीच शान्ति क़ायम रखना चाहता है. इस आन्दोलन को उस प्रचार के खिलाफ़ आन्दोलन चलाना है जिसके जरिये पूंजीवादी और सामराजी जनता के बीच नफ़रत फैलाते हैं. इसलिये उन लोगों के लिये जो विश्व में शान्ति क़ायम करना चाहते हैं यह जरूरी है कि वह आज के अन्तर राष्ट्री झगड़ों के पीछे जो माली तिकड़में हैं उन्हें अच्छी तरह से समझें और उनके बारे में ठीक ठीक जानकारी हासिल करें.

इसके अलावा यह भी जरूरी है कि उन झगड़ों को भी दूर किया जाय जो आम जनता के बीच में मन मुटाव पैदा करते हैं. किरायदार और मालिक मकान के बीच जमींदार और बे खेत वाले किसानों के बीच जो झगड़े हैं उनका निपटारा होना जरूरी है. समाज में ऐसे अन्तर बढ़ने नहीं देने चाहिये जो ऐसी हालत पैदा कर दें जिसमें नफ़रत जड़ पकड़ने लगे और यह नफ़रत बरबादी की तरफ़ ले जाय.

यही वह कारन हैं जो अन्त में विश्व व्यापी लड़ाई की तरफ़ ले जाते हैं. इस लिये जरूरी है कि इन को सर उठाने से पहले ही कुचल दिया जाय.

हम पहले कह चुके हैं कि पिछली लड़ाइयां लड़ने वाले गिरोहों तक ही सीमित रहती थीं लेकिन अब जनता एक तीसरे गिरोह के रूप में खड़ी हो गई है और इस

اِن کارنوں سے یہ ضروری ہو جاتا ہے کہ اُن باتوں کی کاٹ کی جائے جن کا پرچار کرکے عام جنتا میں نفرت کے بھاؤ پیدا کئے جاتے ہیں اور جنتا کو اس کے ہت کی باتیں صاف صاف بتائی جائیں. مثال کے لئے اگر لندن کے بازار میں جو تمباکو خرچ ہوتی ہے اُس کی پیداوار ہندستان میں ہونے والی ہے تو یہ پیداوار صرف اُن کھیتوں پر قبضہ کرنے کے بعد ہی بڑھائی جاسکتی ہے جن میں عام جنتا کے استعمال کے لئے غلہ پیدا ہوتا ہے کیونکہ پہلے سے ہی ضرورت سے زیادہ کھیت تمباکو پیدا کرنے کے کام میں پھنسے ہوئے ہیں. جو لوگ لندن میں تمباکو کا بیوپار کرتے ہیں اُن کو تمباکو پیدا کرنے والے علاقوں کی جنتا کی ضرورتوں اور ہتوں سے کوئی دلچسپی نہیں ہے. نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ ایسے علاقوں کی جنتا کے لئے کھانے کی کمی ہوتی ہے اور لوگ بھکمری سے مرتے ہیں لیکن لندن کے عام لوگ جو اِسی تمباکو کا اِستعمال کرتے ہیں مشکل سے اس بات کو محسوس کرتے ہیں کہ اِس بھکمری میں اُن کی بھی کچھ نیتک ذمےداری ہے. اس طرح کے کچے مال پر قبضہ رکھنے کے لئے یہ بھی ضروری ہو سکتا ہے کہ دوسرے دیش پر راجکاجی کنٹرول رکھا جائے. اِس لئے ہی آج کل جو شانتی آندولن چل رہا ہے اُس کی سخت ضرورت ہے. یہ آندولن عام جنتا کے بیچ شانتی قائم رکھنا چاہتا ہے. اِس آندولن کو اُس پرچار کے خلاف آندولن چلانا ہے جس کے ذریعہ پونجی وادی اور سامراجی جنتا کے بیچ نفرت پھیلاتے ہیں. اس لئے اُن لوگوں کے لئے جو وشو میں شانتی قائم کرنا چاہتے ہیں یہ ضروری ہے کہ وہ آج کے انتر راشٹری جھگڑوں کے پیچھے جو مالی تکڑمیں ہیں اُنہیں اچھی طرح سے سمجھیں اور اُن کے بارے میں ٹھیک ٹھیک جانکاری حاصل کریں.

اِس کے علاوہ یہ بھی ضروری ہے کہ اُن جھگڑوں کو بھی دور کیا جائے جو عام جنتا کے بیچ من مٹاؤ پیدا کرتے ہیں. کرائے دار اور مالک مکان کے بیچ زمیندار اور بے کھیت والے کسانوں کے بیچ جو جھگڑے ہیں اُن کا نپٹارا ہونا ضروری ہے. سماج میں ایسے انتر بڑھنے نہیں دینے چاہئیں جو ایسی حالت پیدا کر دیں جس میں نفرت جڑ پکڑنے لگے اور یہ نفرت بربادی کی طرف لے جائے.

یہی وہ کارن ہیں جو انت میں وشو ویاپی لڑائی کی طرف لے جاتے ہیں. اس لئے ضروری ہے کہ اِن کو سر اٹھانے سے پہلے ہی کچل دیا جائے.

ہم پہلے کہہ چکے ہیں کہ پچھلی لڑائیاں لڑنے والے گروہوں تک ہی سیمت رہتی تھیں لیکن اب جنتا ایک تیسرے گروہ کے روپ میں کھڑی ہو گئی ہے اور اِس

थे और एक दूसरे के आदमियों को मारते थे और जायदादें बरबाद करते थे लेकिन चूंकि अब इन लड़ाइयों में पूरी जनता शामिल होने लगी है इस लिये यह जरूरत पैदा हो गई है कि दोनों फ़रीक़ जो लड़ाई छेड़ें उसमें जनता की दिलचस्पी को बढ़ाया जाय. इस उद्देश्य को हासिल करने के लिये इतना काफ़ी नहीं था कि लड़ाई के कारन एक दो करके गिना दिये जायं क्यों कि यह सारे कारन ऐसे होते हैं जिनमें आम जनता को कोई दिलचस्पी नहीं हो सकती अगर बरतानिया हिन्दुस्तान को मंडी के रूप में चाहता है और जरमन सौदागरों की भी इसी मंडी पर नज़र है तो बरतानिया और जरमनी की मंडी संबंधी लड़ाईमें बरतानिया और जरमनी की जनता अपना खून नहीं बहाएगी. इसलिये जरमनी और बरतानिया के आम लोगों में एक दूसरे से नफ़रत और शक के भाव उभारे जाएंगे और देश प्रेम के यह नारे दिये जायंगे कि "राजा और देश" के लिये जनता को क़ुर्बानी करना चाहिये लेकिन असलियत में राजा और देश के लिये यह भाव नहीं होते बल्कि कच्चे माल और व्यापार की रक्षा के लिये यह नारे दिये जाते हैं इसी तरहसे जहां जहां मुमकिन होता है अलग अलग नसल के गिरोहों में घृना और सन्देह के भाव उभारे जाते हैं. आज की लड़ाइयों को उस जनता के बीच मन मुटाव पैदा करके जिन्दा रखा जाता है जिसकी इन झगड़ों से कोई दिल चस्पी नहीं होती.

बड़े बड़े व्यापारों का चाहे जो हशर हो लेकिन जनता आम तरीक़े से चालीस एक साल की अपनी छोटी सी उम्र शान्ति और आराम से बसर करना चाहती है. इस कारन से अगर लड़ाई को असरदार बनाना है तो जरूरी है कि उन तत्वों को हवा दी जाय जो जनता में लड़ाई की भावना पैदा करते हैं और इसी वजह से प्रचार के हथियार को उतनी ही अहमियत दी जाती है जितनी लड़ने वाली फ़ौजों को. यह प्रचार आन्दोलन समाज के हित को नुक़सान पहुंचाने वाला आन्दोलन है. ऐसे आन्दोलन के विचार में हिंसा है, इसको अमली जामा पहनाने में हिंसा है और इस से जो नतीजे निकलते हैं. उनमें हिंसा है. बहुत भोले भाले ढंग से जरमनों को यह सिखाया जाता है कि वह नफ़रत का गीत गा गा कर प्रेम की इस अवस्था में पहुँच जायं जहां हर अंगरेज को मार कर वह यह समझें कि वह पुन्य कमा रहे हैं. नफ़रत भड़काने वाला यह प्रचार आन्दोलन लोगों को बहका कर फ़ौज में भरती कराता है, लड़ते समय हिम्मत और साहस प्रदान करता है और मारकाट को एक पाक मक़सद को हासिल करने का साधन के रूप में खड़ा कर देता है. अगर कोई रोक थाम न हो तो पूंजीवादी हित और सामराज की जरूरतें मिल कर आख़िर में आम जनता के बीच नफ़रत की वह परिस्थिति पैदा कर देते हैं जिसमें लड़ाई छेड़ी जा सके.

تھے اور ایک دوسرے کے آدمیوں کو مارتے تھے اور جائدادیں برباد کرتے تھے لیکن چونکہ اب اِن لڑائیوں میں پوری جنتا شامل ہونے لگی ہے اِس لئے یہ ضرورت پیدا ہو گئی ہے کہ دونوں فریق جو لڑائی چھیڑیں اُس میں جنتا کی دلچسپی کو بڑھایا جائے. اِس اُدیش کو حاصل کرنے کے لئے اِتنا کافی نہیں تھا کہ لڑائی کے کارن ایک دو کرکے گنا دئے جائیں کیونکہ یہ سارے کارن ایسے ہوتے ہیں جن میں عام جنتا کو کوئی دلچسپی نہیں ہوسکتی. اگر برطانیہ ہندستان کو منڈی کے روپ میں چاہتا ہے اور جرمن سوداگروں کی بھی اِسی منڈی پر نظر ہے تو برطانیہ اور جرمنی کی منڈی سمبندھی لڑائی میں برطانیہ اور جرمنی کی جنتا اپنا خون نہیں بہائے گی. اِس لئے جرمنی اور برطانیہ کے عام لوگوں میں ایک دوسرے سے نفرت اور شک کے بھاؤ اُبھارے جائیں گے اور دیش پریم کے یہ نعرے دئے جائیں گے کہ "راجا اور دیش" کے لئے جنتا کو قربانی کرنا چاہئے. لیکن اصلیت میں راجا اور دیش کے لئے یہ بھاؤ نہیں ہوتے بلکہ کچے مال اور بیوپار کی رکشا کے لئے یہ نعرے دئے جاتے ہیں. اِسی طرح سے جہاں جہاں ممکن ہوتا ہے الگ الگ نسل کے گروہوں میں گھرنا اور سندیہہ کے بھاؤ اُبھارے جاتے ہیں آج کی لڑائیوں کو اُس جنتا کے بیچ من مٹاؤ پیدا کرکے زندہ رکھا جاتا ہے جس کی اِن جھگڑوں سے کوئی دلچسپی نہیں ہوتی.

بڑے بڑے بیوپاروں کا چاہے جو حشر ہو لیکن جنتا عام طریقے سے چالیس ایک سال کی اپنی چھوٹی سی عمر شانتی اور آرام سے بسر کرنا چاہتی ہے. اِس کارن سے اگر لڑائی کو اثردار بنانا ہے تو ضروری ہے کہ اُن تتوں کو ہوا دی جائے جو جنتا میں لڑائی کی بھاونا پیدا کرتے ہیں اور اسی وجہ سے پرچار کے ہتھیار کو اُتنی ہی اہمیت دی جاتی ہے جتنی کہ لڑنے والی فوجوں کو. یہ پرچار آندولن سماج کے ہت کو نقصان پہونچانے والا آندولن ہے. ایسے آندولن کے وچار میں ہنسا ہے، اس کو عملی جامہ پہنانے میں ہنسا ہے اور اس سے جو نتیجے نکلتے ہیں اُن میں ہنسا ہے. بہت بھولے بھالے ڈھنگ سے جرمنوں کو یہ سکھایا جاتا ہے کہ وہ نفرت کے گیت گا گا کر پریم کی اس اوستھا میں پہونچ جائیں جہاں ہر انگریز کو مار کر وہ یہ سمجھیں کہ وہ پنیہ کما رہے ہیں. نفرت بھڑکانے والا یہ پرچار آندولن لوگوں کو بہکا کر فوج میں بھرتی کراتا ہے، لڑتے سمے ہمت اور ساہس پردان کرتا ہے اور مارکاٹ کو ایک پاک مقصد کو حاصل کرنے کا سادھن کے روپ میں کھڑا کر دیتا ہے. اگر کوئی روک تھام نہ ہو تو پونجی وادی ہت اور سامراج کی ضرورتیں مل کر آخیر میں عام جنتا کے بیچ نفرت کی وہ پرستھتی پیدا کر دیتے ہیں جس میں لڑائی چھیڑی جا سکے.

शान्ति आन्दोलन

(डाक्टर जे सी. कुमारप्पा)

मेरे पास बहुत से खत आते रहते हैं जिनमें पूछा जाता है कि शान्ति आन्दोलन का उद्देश्य क्या है और इस आन्दोलन को जनता में फैलाने की इस समय क्या आवश्यकता है जब कि हिन्दुस्तान में लड़ाई नहीं हो रही है सरसरी नज़र से देखने पर यह आन्दोलन पागल की बड़ के समान मालूम पड़ता है. इस आन्दोलन की आवश्यकता को समझने के लिये ज़रूरी है कि दुनिया के माली ढांचे की बुनियाद को हम समझलें क्योंकि दुनिया की माली व्यवस्था इस बात की ज़बर्दस्त ज़रूरत पैदा करती है कि शान्ति आन्दोलन की स्थापना की जाय.

गुज़रे ज़मानों में बादशाहों और दूसरे नेताओं के हितों के टकराव के कारन लड़ाइयां होती थीं और यह लोग अपनी ज़र ख़रीद फ़ौज की सहायता से एक दूसरे से लड़ाई करते थे. अपनी ताक़त को बढ़ाना, इलाकों पर क़ब्ज़ा करना, लूटमार और बदला ही ज़ियादातर इन लड़ाइयों के कारन होते थे. यह लड़ाइयां लड़ने वालों और उनके साथियों तक सीमित रहती थीं. इसबात की आवश्यकता नहीं होती थी कि दोनों तरफ़ की जनता को जोश देकर एक दूसरे के ख़िलाफ़ उभारा जाय.

केन्द्रित उद्योगों के फैलाव के कारन हिंसा की मात्रा बढ़ गई हैं क्योंकि पूंजी वादियों का हित कच्चे माल पर कन्ट्रोल रखने, सस्ते मज़दूर हासिल करने और अपने माल के लिये बाज़ार पैदा करने में है और इस हित का सुरक्षा बिना हिंसा के नहीं हो सकती. इस मक़सद को पूरा करने के लिये लाखों आदमियों को राज काजी गुलामी या माली गुलामी के फन्दे में जकड़ कर रखना पड़ता है.

पहली बड़ी लड़ाई के शुरू होने का बहुत बड़ा कारन दुनिया के बाज़ार का बंटवारा ही था. बरतानिया, जरमनी और जापान के हित आपस में टकरा रहे थे. दूसरी लड़ाई के आरम्भ का मुख्य कारन यह था कि दुनिया के पेट्रोल के कुओं पर कौन शक्ति अपना क़ब्ज़ा रखे कोरिया में चलने वाली आजकल की लड़ाई का कारन यह है कि उत्तरी कोरिया की टंगस्टीन खान को देखकर मेगनाज़ इस्पात के कारखानेदारों के मुंह में पानी भर आया है.

ऐसी सूरत में लड़ाई दोनों फ़रीक़ों तक ही सीमित नहीं रह सकती. लड़ाई में हिस्सा लेने वालों के अलावा अब इन लड़ाइयों के कारन आम जनता भी मुसीबत में फंसती है. अभी तक यह होता रहा है कि दो फ़रीक़ आपस में लड़ते

شانتی آندولن

(ڈاکٹر جے . سی . کمارپپا)

میرے پاس بہت سے خط آتے رہتے ہیں جن میں پوچھا جاتا ہے کہ شانتی آندولن کا اُدیش کیا ہے اور اِس آندولن کو جنتا میں پھیلانے کی اِس سمے کیا آوشیکتا ہے جبکہ ہندستان میں لڑائی نہیں ہو رہی ہے. سرسری نظر سے دیکھنے پر یہ آندولن پاگل کی بڑ کے سمان معلوم ہوتا ہے . اِس آندولن کی آوشیکتا کو سمجھنے کے لئے ضروری ہے کہ دنیا کے مالی ڈھانچے کی بنیاد کو ہم سمجھ لیں کیونکہ دنیا کی مالی ویوستھا اِس بات کی زبردست ضرورت پیدا کرتی ہے کہ شانتی آندولن کی استھاپنا کی جائے .

گزرے زمانوں میں بادشاہوں اور دوسرے نیتاؤں کے ہتوں کے ٹکراؤ کے کارن لڑائیاں ہوتی تھیں اور یہ لوگ اپنی زر خرید فوج کی سہائتا سے ایک دوسرے سے لڑائی کرتے تھے . اپنی طاقت کو بڑھانا، علاقوں پر قبضہ کرنا، لوٹ مار اور بدلا ہی زیادہ تر اِن لڑائیوں کے کارن ہوتے تھے. یہ لڑائیاں لڑنے والوں اور اُن کے ساتھیوں تک سیمت رہتی تھیں . اِس بات کی آوشیکتا نہیں ہوتی تھی کہ دونوں طرف کی جنتا کو جوش دے کر ایک دوسرے کے خلاف اُبھارا جائے .

کیندرت اُدیوگوں کے پھیلاؤ کے کارن ہنسا کی ماترا بڑھ گئی ہے کیونکہ پونجی وادیوں کا ہت کچے مال پر کنٹرول رکھنے، سستے مزدور حاصل کرنے اور اپنے مال کے لئے بازار پیدا کرنے میں ہے اور اِس ہت کی سرکشا بنا ہنسا کے نہیں ہوسکتی . اِس مقصد کو پورا کرنے کے لئے لاکھوں آدمیوں کو راج کاجی غلامی یا مالی غلامی کے پھندے میں جکڑ کر رکھنا پڑتا ہے .

پہلی بڑی لڑائی کے شروع ہونے کا بہت بڑا کارن دنیا کے بازار کا بٹوارہ ہی تھا . برطانیہ، جرمنی اور جاپان کے ہت آپس میں ٹکرا رہے تھے . دوسری لڑائی کے آرمبھ کا مکھ کارن یہ تھا کہ دنیا کے پیٹرول کے کنوؤں پر کون شکتی اپنا قبضہ رکھے . کوریا میں چلنے والی آجکل کی لڑائی کا کارن یہ ہے کہ اتری کوریا کی ٹنگسٹن کھان کو دیکھ کر میگناز اسپات کے کارخانے داروں کے منہ میں پانی بھر آیا ہے .

ایسی صورت میں لڑائی دونوں فریقوں تک ہی سیمت نہیں رہ سکتی . لڑائی میں حصہ لینے والوں کے علاوہ اب اِن لڑائیوں کے کارن عام جنتا بھی مصیبت میں پھنستی ہے . ابھی تک یہ ہوتا رہا ہے کہ دو فریق آپس میں لڑتے

में सफलता न मिले, वह वहीं रहें और अफ़रीक़ा न लौटें. इस तरह वह 19 साल इंगलैंड में रहे.

सन 1945 में केन्या अफ़रीक़न यूनियन की स्थापना हुई. सन 1946 में जेम्यो केनेटा वापस आए और इस संघ के सद्र चुने गए. इस संघ के ख़ास मक़सद चार थे :

(1) जितनी ज़मीन अंगरेज़ों ने दबा ली है, वह वापस अफ़रीक़ियों को मिल जाय.

(2) जितनी ज़मीन ख़ाली पड़ी है, उसका विकास करने के लिये अफ़रीक़ियों को मौक़ा दिया जाय.

(3) वहां के शासन में अफ़रीक़ियों का भी हाथ रहे.

(4) जात पात के फ़रक़ की भावना को मिटाना.

यह संघ कुछ चालू हुआ ही था कि अंगरेज़ों को इसके बारे में चिन्ता हो गई. सन 1951 में नेरोबी में इस संघ की मातहती में एक सभा हुई थी, जिस में 70 या 80 हज़ार अफ़रीक़ी इकट्ठे हुए थे इस एक ही सभा में लगभग 60 हज़ार पौंड की राशि जमा हुई थी.

अंगरेज़ अफ़रीक़ियों के इस संगठन से बहुत घबराए. उन्होंने चोर डाकुओं को पकड़ पकड़ कर उन्हें एक नया नाम दिया—'माऊ माऊ''. जो भी अफ़रीक़न लोगों में काम करता हुआ दिखे, या किसी से किसी तरह की दुशमनी निकालनी हो, उसे पकड़ कर क़ैद करते, अनेक तरह के अन्याय करते और कहते कि माऊ माऊ के कारकर्ता को हमने पकड़ा है. इस तरह अत्याचार कर के अंगरेज़ अफ़रीक़ियों के संगठन को दबा देना चाहते हैं.

हमारी मांग का एक गहरा असर यह हुआ कि ब्रिटिश सरकार ने एक कमीशन बनाना तय किया है, जो अफ़रीक़ियों की ज़मीन की मांग के बारे में जांच पड़ताल कर के अपना फ़ैसला देगा. लेकिन वहां के अंगरेज़ निवासी इसका बहुत विरोध कर रहे हैं. चर्चिल की सरकार के आने पर अफ़रीक़ियों पर अत्याचार बढ़ गए हैं, और उन पर हिंसक क्रांतिकारी होने का आरोप लगा कर निर्दोषों को भी कुचला जा रहा है.

मेरा भारत आने का मक़सद

लगभग तीन चार साल पहले पूरबी अफ़रीक़ा के भारती राजदूत श्री आप्पा साहब पंत से मेरी भेंट हुई थी. उन्होंने मुझे सलाह दी थी कि हिन्दुस्तान के बारे में जानने के लिये आपको हिन्दुस्तान ख़ुद जाना चाहिये. मैं ख़ास कर इस मक़सद को ले कर आया था कि किस तरह महात्मा गांधी ने अहिंसा से स्वराज लिया और उनकी शिक्षा प्रनाली क्या थी.

میں سپھلتا نہ ملے، وہ وہیں رہیں اور افریقہ نہ لوٹیں۔ اس طرح وہ 19 سال انگلینڈ میں رہے۔

سن 1945 میں کینیا افریقن یونین کی استھاپنا ہوئی۔ سن 1946 میں جیمو کینٹا واپس آئے اور اس سنگھ کے صدر چنے گئے۔ اس سنگھ کے خاص مقصد چار تھے:

(1) جتنی زمین انگریزوں نے دبا لی ہے، وہ واپس افریقیوں کو مل جائے۔

(2) جتنی زمین خالی پڑی ہے، اس کا وکاس کرنے کے لئے افریقیوں کو موقع دیا جائے۔

(3) وہاں کے شاسن میں افریقیوں کا بھی ہاتھ رہے۔

(4) جات پات کے فرق کی بھاونا کو مٹانا۔

یہ سنگھ کچھ چالو ہوا ہی تھا کہ انگریزوں کو اس کے بارے میں چنتا ہوگئی۔ سن 1951 میں نیروبی میں اس سنگھ کی ماتحتی میں ایک سبھا ہوئی تھی، جس میں 70 یا 80 ہزار افریقی اکٹھے ہوئے تھے۔ اس ایک ہی سبھا میں لگ بھگ 60 ہزار پونڈ کی راشی جمع ہوئی تھی۔

انگریز افریقیوں کے اس سنگٹھن سے بہت گھبرائے۔ انہوں نے چور ڈاکوؤں کو پکڑ پکڑ کر انہیں ایک نیا نام دیا— "ماؤ ماؤ۔" جو بھی افریقن لوگوں میں کام کرتا ہوا دکھے، یا کسی طرح کی دشمنی نکالنی ہو، اسے پکڑ کر قید کرتے، انیک طرح کے انیائے کرتے اور کہتے کہ ماؤ ماؤ کے کارکرتا کو ہم نے پکڑا ہے۔ اس طرح اتیاچار کر کے انگریز افریقیوں کے سنگٹھن کو دبا دینا چاہتے ہیں۔

ہماری مانگ کا ایک گہرا اثر یہ ہوا کہ برٹش سرکار نے ایک کمیشن بنانا طے کیا ہے، جو افریقیوں کی زمین کی مانگ کے بارے میں جانچ پڑتال کر کے اپنا فیصلہ دے گا۔ لیکن وہاں کے انگریز نواسی اس کا بہت ورودھ کر رہے ہیں۔ چرچل کی سرکار کے آنے پر افریقیوں پر اتیاچار بڑھ گئے ہیں، اور ان پر ہنسک کرانتی کاری ہونے کا آروپ لگا کر نردوشوں کو بھی کچلا جا رہا ہے۔

میرا بھارت آنے کا مقصد

لگ بھگ تین چار سال پہلے پوربی افریقہ کے بھارتی راج دوت شری آپا صاحب پنت سے میری بھینٹ ہوئی تھی۔ انہوں نے مجھے صلاح دی تھی کہ ہندستان کے بارے میں جاننے کے لئے آپ کو ہندستان خود جانا چاہئے۔ میں خاص کر اس مقصد کو لے کر آیا تھا کہ کس طرح مہاتما گاندھی نے اہنسا سے سوراج لیا اور ان کی شکشا پرنالی کیا تھی۔

एक तरह का (राजगिरा के समान) अनाज का पतला पेय (आम्बील के समान) बना कर पिया जाता है.

खेती के काम में मदद करने के लिये कई बार दूसरे लोग बिना बुलाए भी आ जाते हैं.

भाषा

अफ़रीक़ा में सैकड़ों जातियां हैं. उनकी हर एक की भाषा अलग अलग है. वहां लगभग 130 भाषायें हैं. ज़ियादातर लोग 'स्वाहिली' भाषा बोलते हैं—ख़ास तौर से पढ़े लिखे या एक जगह से दूसरी जगह जाने वाले लोग प्राथमिक शालाओं में 'स्वाहिली' भाषा ही पढ़ते हैं. ऊपर के दरजों में अंगरेज़ी भाषा पढ़ाई जाय इस पर अंगरेज़ लोग काफ़ी ज़ोर देते हैं. लेकिन अफ़रीक़ा के लोग इसका विरोध करते हैं. स्वाहिली भाषा अरबी और अफ़रीक़ी भाषा से मिल कर बनी है यह रोमन लिपि में लिखी जाती है

राजकाजी समस्यायें

अफ़रीक़ा सैकड़ों सालों से अंगरेज़ों का एक उपनिवेश (नौ आबादी) रहा है. वहां पहले सब ज़मीन वहां के लोगों की ही थी. लेकिन अंगरेज़ों ने वहां आ कर सब ज़मीन पर क़बज़ा कर लिया और अफ़रीक़ियों को बुरी तरह से वहां से भगा दिया. ठंडे स्थानों पर अंगरेज़ों ने पहले क़बज़ा जमाया.

हिन्दुस्तान की ही तरह पहले पहल वहां एक ब्योपारी कम्पनी आई जिसका नाम "ईस्ट अफ़रीक़ा इमपीरियल कम्पनी" था. उस कम्पनी का प्रमुख वही आदमी था, जो ईस्ट इंडिया कम्पनी का था, उसी ने हिन्दुस्तानियों को कुलीगीरी करने करने के लिये वहां बुलवाया था. बाद में इन हिन्दुस्तानियों ने अपनी उन्नति कर ली और कुछ ब्योपार करने लगे, कुछ सरकारी नौकरी. जब ब्रिटिश पारलियामेन्ट ने देखा कि यह कम्पनी पूरी तरह से राज को संभालने में असमर्थ है, तो उसने अफ़रीक़ा को अपना उपनिवेश ऐलान कर दिया और सारे राज के काम अपने हाथ में ले लिये. उसने जितनी ज़मीन वहां के अंगरेज़ों ने ले ली थी, सब को 999 सालों के लिये उन्हीं के क़बज़े में कर दिया.

जैसे जैसे वहां के अफ़रीक़ियों पर अत्याचार बढ़ने लगे, और वह जागृत होने लगे, उन्होंने सरकार के पास इस बात की शिकायत करनी शुरू की. किकियू लोगों ने अपने नेता जेम्यो केनेटा को इंगलैंड भेजा कि वह वहां जा कर ब्रिटिश सरकार और जनता से अपील करें कि अंगरेज़ों ने अफ़रीक़ियों की जो ज़मीन दबा ली है, वह उन्हें वापस मिले. इस अपील का भी कोई नतीजा नहीं निकला तब जेम्यो केनेटा से कहा गया कि जब तक उसे अपने मक़सद

ایک طرح کا (راج گرا کے سمان) اناج کا پتلا پے (آمبیل کے سمان) بناکر پیا جاتا ہے .

کھیتی کے کام میں مدد کرنے کے لئے کئی بار دوسرے لوگ بنا بلائے بھی آ جاتے ہیں.

بھاشا

افریقہ میں سیکڑوں جاتیاں ہیں . اُن کی ہر ایک کی بھاشا الگ الگ ہے وہاں لگ بھگ 130 بھاشائیں ہیں . زیادہ تر لوگ 'سواہلی' بھاشا بولتے ہیں—خاص طور سے پڑھے لکھے یا ایک جگہ سے دوسری جگہ جانے والے لوگ پراتھمک شالاؤں میں ' سواہلی ' بھاشا ہی پڑھتے ہیں . اوپر کے درجوں میں انگریزی بھاشا پڑھائی جائے اِس پر انگریز لوگ کافی زور دیتے ہیں . لیکن افریقہ کے لوگ اِس کا وِرودھ کرتے ہیں . سواہلی بھاشا عربی اور افریقی بھاشا سے مل کر بنی ہے . یہ رومن لپی میں لکھی جاتی ہے .

راج کاجی سمسیائیں

افریقہ سیکڑوں سالوں سے انگریزوں کا ایک اپنویش (نوآبادی) رہا ہے . وہاں پہلے سب زمین وہاں کے لوگوں کی ہی تھی . لیکن انگریزوں نے وہاں جا کر سب زمین پر قبضہ کر لیا اور افریقیوں کو بری طرح وہاں سے بھگا دیا . ٹھنڈے استھانوں پر انگریزوں نے پہلے قبضہ جمایا .

ہندستان کی ہی طرح پہلے پہل وہاں ایک بیوپاری کمپنی آئی جس کا نام ''ایسٹ افریقہ امپیریل کمپنی'' تھا . اُس کمپنی کا پرمکھ وہی آدمی تھا' جو ایسٹ انڈیا کمپنی کا تھا . اُسی نے ہندستانیوں کو کلی گیری کرنے کے لئے وہاں بلوایا تھا . بعد میں اِن ہندستانیوں نے اپنی اُنّتی کر لی اور کچھ بیوپار کرنے لگے' کچھ سرکاری نوکری . جب برٹش پارلیامنٹ نے دیکھا کہ یہ کمپنی پوری طرح راج کو سنبھالنے میں اسمرتھ ہے' تو اُس نے افریقہ کو اپنا اُپنویش اعلان کر دیا اور سارے راج کے کام اپنے ہاتھ میں لے لئے . اس نے جتنی زمین وہاں کے انگریزوں نے لے لی تھی' سب کو 999 سالوں کے لئے انہیں کے قبضے میں کر دیا .

جیسے جیسے وہاں کے افریقیوں پر اتیاچار بڑھنے لگے' اور وہ جاگرت ہونے لگے' اُنہوں نے سرکار کے پاس اس بات کی شکایت کرنی شروع کی . ککیو لوگوں نے اپنے نیتا جیمیو کینیٹا کو انگلینڈ بھیجا کہ وہ وہاں جاکر برٹش سرکار اور جنتا سے اپیل کریں کہ انگریزوں نے افریقیوں کی جو زمین دبا لی ہے' وہ اُنہیں واپس ملے . اس اپیل کا بھی کوئی نتیجہ نہیں نکلا . تب جیمیو کینیٹا سے کہا گیا کہ جب تک اپنے مقصد

सब ज़मीन ईश्वर की है

गांव की सब ज़मीन पहले एक क़बीले की होती थी. फिर वह एक बड़े परिवार की हुई, और अब अलग अलग परिवारों की है. वहां यह नियम है कि जो ज़मीन खाली हो, या अगर खेती का मालिक उस पर खेती न करता हो, तो कोई भी आदमी जो खेती करना चाहे. उससे जाकर मांग सकता है, कि यह ज़मीन मुझे खेती करने के लिये चाहिये. और वह ज़मीन उसे देनी पड़ती है. वहां लोग इस बात में यक़ीन रखते हैं. कि सब ज़मीन ईश्वर की है. उसके लिये उन्हें कोई लगान नहीं देना पड़ता.

वहां ऐसा कोई आदमी नहीं है जिसके पास ज़मीन न हो. और यही कारन है कि वहां खेतिहर मज़दूर नहीं होते. हां, अभी कुछ सालों से भूमि की समस्या कहीं कहीं देखी जाती है, क्योंकि अंगरेज़ों ने क़रीब क़रीब सारी ज़मीन पर अपना क़ब्ज़ा कर लिया है.

पत्नी का स्थान

अफ़रीक़ा में एक से ज़ियादा पत्नी रखने की प्रथा चालू है. किसान की जितनी पत्नियां होती हैं, उसी हिसाब से वह अपनी ज़मीन बांट देता है. पहली पत्नी घर की संचालिका समझी जाती है. सभी पत्नियां अलग अलग मकानों में रहती हैं और खाना भी अलग अलग खाती हैं. सभी पत्नियां अपने पकाए हुए खाने में से थोड़ा थोड़ा अपने पति और बच्चों के लिये एक केन्द्री स्थान (आम तौर से पति के घर) में ले आती हैं. सब लड़के एक साथ और सब लड़कियां भी एक साथ पहली और दूसरी पत्नियों के घरों के पास रहते हैं. मर्द को किसी चीज़ की ज़रूरत होती है तो वह अपनी बड़ी (पहली) पत्नी से ही मांगता है.

काम का बंटवारा

जंगल साफ़ करना पुरुष का काम है. उसके बाद खोदने का काम, निराई, फ़सल काटना वग़ैरा काम पुरुष और स्त्री दोनों करते हैं. अनाज के ढोले बनाना ख़ास तौर से पुरुष का काम है, उसमें अनाज भी वही भरते हैं. लेकिन अनाज भरने के बाद उसकी मालिक स्त्री बन जाती है. इस तरह हर एक पत्नी के अपने अनाज के ढोले होते हैं. कुछ खेती पुरुष की भी होती है. और उसमें से निकला हुआ अनाज वह अलग रखता है. यह अलग रखा हुआ अनाज ख़ास ख़ास मौक़ों पर काम में आता है.

रोज़ाना का काम

वहां मुख्य भोजन शाम का भोजन समझा जाता है. शाम को खेत से आकर स्त्रियां भोजन बनाती हैं. सुबह खेत में जाते समय शाम के भोजन में से बचा हुआ हिस्सा ही खाते हैं. इसी तरह दोपहर को भी. शाम को क़रीब 4 बजे

سب زمین ایشور کی ہے

گاؤں کی سب زمین پہلے ایک قبیلے کی ہوتی تھی۔ پھر وہ ایک بڑے پریوار کی ہوئی، اور اب الگ الگ پریواروں کی ہے۔ وہاں یہ نیم ہے کہ جو زمین خالی ہو، یا اگر کھیتی کا مالک اس پر کھیتی نہ کرتا ہو، تو کوئی بھی آدمی جو کھیتی کرنا چاہے، اس سے جاکر مانگ سکتا ہے، کہ یہ زمین مجھے کھیتی کرنے کے لئے چاہئے۔ اور وہ زمین اسے دینی پڑتی ہے۔ وہاں لوگ اس بات میں یقین رکھتے ہیں کہ سب زمین ایشور کی ہے۔ اس کے لئے انہیں کوئی لگان نہیں دینا پڑتا۔

وہاں ایسا کوئی آدمی نہیں ہے جس کے پاس زمین نہ ہو۔ اور یہی کارن ہے کہ وہاں کھیتی ہر مزدور نہیں ہوتے۔ ہاں، ابھی کچھ سالوں سے بھومی کی سمسیا کہیں کہیں دیکھی جاتی ہے، کیونکہ انگریزوں نے قریب قریب ساری زمین پر قبضہ کر لیا ہے۔

پتنی کا استھان

افریقہ میں ایک سے زیادہ پتنی رکھنے کی پرتھا چالو ہے۔ کسان کی جتنی پتنیاں ہوتی ہیں، اسی حساب سے وہ اپنی زمین بانٹ دیتا ہے۔ پہلی پتنی گھر کی سنچالکا سمجھی جاتی ہے۔ سبھی پتنیاں الگ الگ مکانوں میں رہتی ہیں اور کھانا بھی الگ الگ کھاتی ہیں۔ سبھی پتنیاں اپنے پکائے ہوئے کھانے میں سے تھوڑا تھوڑا اپنے پتی اور بچوں کے لئے ایک کیندری استھان (عام طور سے پتی کے گھر) میں لے آتی ہیں۔ سب لڑکے ایک ساتھ اور سب لڑکیاں بھی ایک ساتھ پہلی اور دوسری پتنیوں کے گھروں کے پاس رہتے ہیں۔ مرد کو کسی چیز کی ضرورت ہوتی ہے تو وہ اپنی بڑی (پہلی) پتنی سے ہی مانگتا ہے۔

کام کا بٹوارہ

جنگل صاف کرنا پرش کا کام ہے۔ اس کے بعد کھودنے کا کام، نرائی، فصل کاٹنا وغیرہ کام پرش اور استری دونوں کرتے ہیں۔ اناج کے ڈھولے بنانا خاص طور سے پرش کا کام ہے، اس میں اناج بھی وہی بھرتے ہیں۔ لیکن اناج بھرنے کے بعد اس کی مالک استری بن جاتی ہے۔ اس طرح ایک پتنی کے اپنے اناج کے ڈھولے ہوتے ہیں۔ کچھ کھیتی پرش کی بھی ہوتی ہے اور اس میں سے نکلا ہوا اناج وہ الگ رکھتا ہے۔ یہ الگ رکھا ہوا اناج خاص خاص موقعوں پر کام میں آتا ہے۔

روزانہ کا کام

وہاں مکھیہ بھوجن شام کا بھوجن سمجھا جاتا ہے۔ شام کو کھیت سے آکر استریاں بھوجن بناتی ہیں۔ صبح کھیت میں جاتے سمے شام کے بھوجن میں سے بچا ہوا حصہ ہی کھاتے ہیں۔ اسی طرح دوپہر کو بھی۔ شام کو قریب چار بجے

"तो फिर बच्चे कम पैदा करो."

एक गांव वाले ने बहुत नम्रता से प्रार्थना की—'हमारे 10 और 12 साल के लड़कों को भी काम करने की इजाज़त दी जाय."

"नहीं, सरकार चाहती है कि बच्चे ताक़तवर और तगड़े बनें, तुम लोग उन्हें इतनी जल्दी काम पर लगा कर उनके बढ़ने को रोक दोगे."

"लेकिन हम और हमारे बच्चे भूकों मर रहे हैं, सरकार."

"उन्हें पढ़ाओ लिखाओ."

इस पर गांव वाला क्या कहना चाहता था या कह रहा था वह बात शोरग़ुल में सुनाई नहीं पड़ी.

(एनकस)

" تو پھر بچے کم پیدا کرو ."

ایک گاؤں والے نے بہت نمرتا سے پرارتھنا کی—"ہمارے 10 اور 12 سال کے لڑکوں کو بھی کام کرنے کی اجازت دی جائے ."

" نہیں، سرکار چاہتی ہے کہ بچے طاقتور اور تگڑے بنیں، تم لوگ انہیں اتنی جلدی کام پر لگا کر اُن کے بڑھنے کو روک دوگے ."

" لیکن ہم اور ہمارے بچے بھوکوں مر رہے ہیں، سرکار ."

" انہیں پڑھاؤ لکھاؤ ."

اِس پر گاؤں والا کیا کہنا چاہتا تھا یا کیا کہہ رہا تھا وہ بات شور غل میں سنائی نہیں پڑی .

(اینکس)

पूरबी अफ़रीक़ा का समाज

(राम किशोर, सेवाग्राम, वरधा)

[पूरबी अफ़रीक़ा के केनिया प्रदेश के नेता श्री ओगिंगा ओडिंगा के साथ हिन्दुस्तानी तालीमी संघ के कार कर्ताओं की चर्चा का निचोड़]

ख़ास धंदा

पूरबी अफ़रीक़ा के रहने वालों का ख़ास धंदा खेती बारी है. कुछ लोग जानवर (गाय, भेड़ वग़ैरा) भी पालते हैं. वहां के हिन्दुस्तानी ख़ास तौर से रोज़गार या सरकारी दफ़्तरों में काम करते हैं. अफ़रीक़ियों में एक बात ख़ास यह है कि खेती बारी के ज़ियादातर काम वह सब मिल जुल कर करते हैं जिस किसान को खेती काटनी हो, (या मकान बनाना हो) वह घर घर जा कर निमंत्रन देता है कि आज उसके यहां फ़लां काम करना है. सब गांव वाले उसके काम में सहयोग देते हैं और उसी के यहां भोजन भी करते हैं.

लेकिन अब कुछ दिनों से अंगरेज़ी असर के कारन लोगों में स्वार्थ की मात्रा ज़ियादा बढ़ती जा रही है जो लोग शहरों में रहते हैं और खेती करने के लिये देहातों में जाते हैं, उन्हें देहाती लोग अच्छी नज़र से नहीं देखते. वह सोचते हैं कि यह महाशय थोड़े दिनों के लिये अपने स्वार्थ के लिये यहां आए हैं. इस तरह ऐसे शहरियों को पूरी तरह दूसरे लोगों की सहायता नहीं मिल पाती है.

پوربی افریقہ کا سماج

(رام کشور، سیواگرام، وردھا)

[پوربی افریقہ کے کینیا پردیش کے نیتا شری اوگنگا اوڈنگا کے ساتھ ہندستانی تعلیمی سنگھ کے کارکرتاؤں کی چرچا کا نچوڑ]

خاص دھندا

پوربی افریقہ کے رہنے والوں کا خاص دھندا کھیتی باری ہے. کچھ لوگ جانور (گائے بھیڑ وغیرہ) بھی پالتے ہیں . وہاں کے ہندستانی خاص طور سے روزگار یا سرکاری دفتروں میں کام کرتے ہیں. افریقیوں میں ایک بات خاص یہ ہے کہ کھیتی باری کے زیادہ تر کام وہ سب مل جل کر کرتے ہیں . جس کسان کو کھیتی کاٹنی ہو (یا مکان بنانا ہو) وہ گھر گھر جاکر نمنترن دیتا ہے کہ آج اسکے یہاں فلاں کام کرنا ہے . سب گاؤں والے اُس کے کام میں سہیوگ دیتے ہیں اور اُسی کے یہاں بھوجن بھی کرتے ہیں .

لیکن اب کچھ دنوں سے انگریزی اثر کے کارن لوگوں میں سوارتھ کی ماترا زیادہ بڑھتی جا رہی ہے . جو لوگ شہروں میں رہتے ہیں اور کھیتی کرنے کے لئے دیہاتوں میں جاتے ہیں، اُنہیں دیہاتی لوگ اچھی نظر سے نہیں دیکھتے. وہ سوچتے ہیں کہ یہ مہاشے تھوڑے دنوں کے لئے اپنے سوارتھ کے لئے یہاں آئے ہیں . اِس طرح ایسے شہریوں کو پوری طرح دوسرے لوگوں کی سہائتا نہیں مل پاتی ہے .

यह कहावत मशहूर है कि राजस्थान का रहने वाला जीवन में तीन बार स्नान करता है—जन्म, शादी और मौत. कुएं चार चार सौ फ़ीट नीचे होते हैं और फिर भी यह कोई गारन्टी नहीं कि पानी मीठा ही निकलेगा. एक कुएं के बनने में बीस हज़ार रुपया ख़रच होता है जिसमें से एक तिहाई रुपया तो यह जानने पर ही ख़रच हो जाता है कि पानी मीठा निकलेगा या नहीं.

बारिश का पानी

कच्चे तालाबों में बारिश का पानी जमा कर लिया जाता है जिसे आदमी और जानवर सभी इस्तेमाल करते हैं. हमने एक गांव का तालाब देखा तो उसमें मुश्किल से 10 दिन के ख़रच के लायक़ पानी जमा था. पानी बहुत ही गन्दा था. इसका रंग हलकी चाय या काफ़ी के रंगीन पानी के समान था.

"तुम लोग पानी दूसरे गांवों से क्यों नहीं लाते ?"

"हमारे पास ऊंटों को खिलाने के लिये चारा नहीं है"

कुछ गांवों में एक एक रुपये में गायें बेच दी गई हैं. वह एक रुपया लेना ही पड़ता है क्योंकि ब्राह्मन लोग गाय को मुफ़्त में दान के रूप में नहीं लेते. बहुत से मवेशी मर चुके हैं और बाक़ी मौत के मुंह में हैं. असल में पशु रक्षा समिति के सामने बड़ा भारी काम है.

छोटे छोटे कर्ज़ों के लिये लोगों को धन वालों के पास अपने बच्चे तक गिरवी रखने पड़े हैं. वह बच्चे उन लोगों के पास उनकी माली हालत सुधरने तक ग़ुलाम रहेंगे.

बीकानेर में अकाल कोई नई बात नहीं है दस साल में लगभग 7 फ़सलें ख़राब हो जाती हैं लेकिन वहां के रहने वालों की मुसीबतों के अन्त के लिये सरकार जो काम कर रही है वह इतने सुस्त हैं कि उससे दम घुटता है. हरी का पाटन नहर जब चालू हो जायगी तो बीकानेर प्रान्त का बहुत सा हिस्सा खेती के क़ाबिल बन जायगा पर कोई यह नहीं जानता कि वह कब तैयार होगी.

जब हम लोग तारी गांव गये तब मेखरा के तहसीलदार हमारे साथ थे. वहां के लोग अपनी कठिनाइयों की दास्तान सुनाने के लिये हमारे पास जमा हो गये. एक ने कहा—"मदद के तौर पर काम के बदले में हमें जो पैसा मिलता है वह हमारे और हमारे बच्चों के लिये पूरा नहीं होता." इसी पर उनकी और तहसीलदार साहब की बहस शुरू हो गई.

तहसीलदार ने कहा—"तुम लोग अधिक क्यों नहीं कमाते ?"

उन्होंने जवाब दिया—"इससे ज़ियादा हमें मिल ही नहीं सकता क्योंकि सरकार ने दिन भर की मज़दूरी की ज़ियादा से ज़ियादा मज़दूरी बारह आना रोज़ तय की है.

یہ کہاوت مشہور ہے کہ راجستھان کا رہنے والا جیون میں تین بار اسنان کرتا ہے—جنم، شادی اور موت. کوئیں چار چار سو فٹ نیچے ہوتے ہیں اور پھر بھی یہ کوئی گارنٹی نہیں کہ پانی میٹھا ہی نکلیگا . ایک کوئیں کے بننے میں بیس ہزار روپیہ خرچ ہوتا ہے جس میں سے ایک تہائی روپیہ تو یہ جاننے پر ہی خرچ ہو جاتا ہے کہ پانی میٹھا نکلیگا یا نہیں .

بارش کا پانی

کچے تالابوں میں بارش کا پانی جمع کر لیا جاتا ہے جسے آدمی اور جانور سبھی استعمال کرتے ہیں . ہم نے ایک گاؤں کا تالاب دیکھا تو کہ اس میں مشکل سے دس دن کے خرچ کے لائق پانی جما تھا . پانی بہت ہی گندا تھا . اس کا رنگ ہلکی چائے یا کافی کے رنگین پانی کے سمان تھا .

"تم لوگ پانی دوسرے گاؤں سے کیوں نہیں لاتے؟"

"ہمارے پاس اونٹوں کو کھلانے کے لئے چارہ نہیں ہے."

کچھ گاؤں میں ایک ایک روپے میں گائیں بیچ دی گئی ہیں . یہ ایک روپیہ لینا ہی پڑتا ہے کیوں نہ براہمن لوگ گائے کو مفت میں دان کے روپ میں نہیں لیتے . بہت سے مویشی مر چکے ہیں اور باقی موت کے منہ میں ہیں . اصل میں پشو رکھشا سمیتی کے سامنے بڑا بھاری کام ہے .

چھوٹے چھوٹے قرضوں کے لئے لوگوں کو دھن والوں کے پاس اپنے بچے تک گروی رکھنے پڑے ہیں . وہ بچے اُن لوگوں کے پاس ان کی مالی حالت سدھرنے تک غلام رہینگے .

بیکانیر میں اکال کوئی نئی بات ہے . دس سال میں لگ بھگ سات فصلیں خراب ہو جاتی ہیں لیکن وہاں کے رہنے والوں کی مصیبتوں کے انت کے لئے سرکار جو کام کر رہی ہے وہ اتنے سست ہیں کہ اس سے دم گھٹتا ہے . ہری کا پاٹن نہر جب چالو ہو جائے گی تو بیکانیر پرانت کا بہت سا حصہ کھیتی کے قابل بن جائے گا پر کوئی یہ نہیں جانتا کہ وہ کب تیار ہوگی .

جب ہم لوگ تاری گاؤں گئے تب میکھرا کے تحصیلدار ہمارے ساتھ تھے. وہاں کے لوگ اپنی کٹھنائیوں کی داستان سنانے کے لئے ہمارے پاس جمع ہوگئے . ایک نے کہا—" مدد کے طور پر کام کے بدلے میں ہمیں جو پیسہ ملتا ہے وہ ہمارے اور ہمارے بچوں کے لئے پورا نہیں ہوتا." اسی پر اُن کی اور تحصیلدار صاحب کی بحث شروع ہو گئی .

تحصیلدار نے کہا—" تم لوگ زیادہ کیوں نہیں کماتے ؟"

اُنہوں نے جواب دیا—" اس سے زیادہ ہمیں مل ہی نہیں سکتا . کیوں کہ سرکار نے دن بھر کی مزدوری کی زیادہ سے زیادہ بارہ آنہ روز طے کی ہے ."

जवाब मिला—"वह भूक से नहीं बल्कि ज़ियादा खाने से मरी थी." आपकी राय में भूक से होने वाली मौत कैसी होती है? 'जवाब मिला—"जब कि आदमी को 15 दिन तक बिल्कुल खाना न मिले और वह मर जाय"

"क्या गांव वाले पेड़ों की छाल, घास और बीज नहीं खा रहे हैं?"

"नहीं, वह लोग अपने घरों में उन चीज़ों की बनी काली रोटी सिर्फ़ पत्रकारों और बाहरी आदमियों को दिखाने के लिये रखते हैं."

"पर ऐसा वह क्यों करते हैं?"

"वह ऐसा इसलिये करते हैं कि सरकार पर दबाव पड़े और वह मामसर बीकानेर सड़क का निर्मान शुरू कर दे और उन्हें काम मिल जाय."

मदद देने के लिये जो काम शुरू किये गए हैं उनकी हालत बहुत बुरी है. मर्द, औरतें और बच्चे पूरे आठ घंटे खुली धूप और जलती रेत पर नंगे पैर काम करते हैं और अपना काम ख़तम कर के वह मीलों दूर अपने खाने के लिये अनाज ख़रीदते हैं. वह कोलपात में जागीरतलाब नाम की दुकान से जो कि वहां से छै मील है अनाज लेते हैं. सरकार ने उनके काम करने की जगह के आस पास अनाज मिलने की कोई व्यवस्था नहीं की. उन्होंने हम से यह भी शिकायत की कि दुकानदार अनाज में मिट्टी मिलाते हैं और कम तोलते हैं.

बच्चे धूप में झुलस जाते हैं

सरकार ने काम करने वालों के सोने के लिये कोई इन्तज़ाम नहीं किया है. जहां वह काम करते हैं वहां छाया का भी कोई इनतज़ाम नहीं है जब कि मां बाप काम करते हैं तो उनके दो दो तीन तीन साल के छोटे छोटे बच्चे धूप में उनके चारों तरफ़ आस पास गरम रेत में बैठे रहते हैं. डाक्टरी मदद तो वहां है ही नहीं. हाकिमों ने मुझे बताया कि अकाल क़ानून के मुताबिक यह आसानियां वहां दी जाती हैं जहां कम से कम 300 आदमी एक जगह काम करते हों.

किसी भी मदद वाले केन्द्र में कम से कम 13 साल का लड़का काम पर लिया जा सकता है. इस क़ानून से ग़रीबों को और भी मुश्किल होती है क्योंकि उनकी कमाई से सारे परिवार का पेट नहीं भरता.

आदमी बिना खाए तो रह सकता है पर बिना पानी नहीं. बीकानेर ही क्या सारे राजस्थान में मीठा पानी अनाज से भी ज़ियादा दिक़्क़त से मिलता है. पीने का मीठा पानी वहां पतीलों में जिन में 60 गैलन पानी आता है बड़ी दूर से ऊंटों की पीठ पर लाया जाता है और छै आने से एक रुपया पतीले तक बिकता है.

جواب ملا—"وہ بھوک سے نہیں بلکہ زیادہ کھانے سے مری تھی." آپ کی رائے میں بھوک سے ہونے والی موت کیسی ہوتی ہے؟ جواب ملا—"جبکہ آدمی کو 15 دن تک بالکل کھانا نہ ملے اور وہ مر جائے."

"کیا گاؤں والے پیڑوں کی چھال، گھاس اور بیج نہیں کھا رہے ہیں؟"

"نہیں. وہ لوگ اپنے گھروں میں اُن چیزوں کی بنی کالی روٹی صرف پترکاروں اور باہری آدمیوں کو دکھانے کے لئے رکھتے ہیں."

"پر ایسا وہ کیوں کرتے ہیں؟"

"وہ ایسا اِس لئے کرتے ہیں کہ سرکار پر دباؤ پڑے اور وہ مامسر بیکانیر سڑک کا نرمان شروع کر دے اور اُنہیں کام مل جائے."

مدد دینے کے لئے جو کام شروع کئے گئے ہیں اُن کی حالت بہت بری ہے. مرد عورتیں اور بچے پورے آٹھ گھنٹے کھلی دھوپ اور جلتی ریت پر ننگے پیر کام کرتے ہیں اور اپنا کام ختم کرکے وہ میلوں دور اپنے کھانے کے لئے اناج خریدتے ہیں. وہ کول پات میں جاگیر تلاب نام کی دکان سے جو وہاں سے چھ میل ہے اناج لیتے ہیں. سرکار نے اُن کے کام کرنے کی جگہ کے آس پاس اناج ملنے کی کوئی ویوستھا نہیں کی. انہوں نے ہم سے یہ بھی شکایت کی کہ دوکاندار اناج میں مٹی ملاتے ہیں اور کم تولتے ہیں.

بچے دھوپ میں جھلس جاتے ہیں

سرکار نے کام کرنے والوں کے سونے کے لئے کوئی انتظام نہیں کیا ہے جہاں وہ کام کرتے ہیں وہاں چھایا کا بھی کوئی انتظام نہیں ہے. جبکہ ماں باپ کام کرتے ہیں تو اُن کے دو دو تین تین سال کے چھوٹے چھوٹے بچے دھوپ میں اُن کے چاروں طرف آس پاس گرم ریت میں بیٹھے رہتے ہیں. ڈاکٹری مدد تو وہاں ہے ہی نہیں. حاکموں نے مجھے بتایا کہ اکال قانون کے مطابق یہ آسانیاں وہاں دی جاتی ہیں جہاں کم سے کم تین سو آدمی ایک جگہ کام کرتے ہوں.

کسی بھی مدد والے کیندر میں کم سے کم 13 سال کا لڑکا کام پر لیا جا سکتا ہے. اِس قانون سے غریبوں کو اور بھی مشکل ہوتی ہے کیونکہ اُن کی کمائی سے سارے پریوار کا پیٹ نہیں بھرتا.

آدمی بنا کھائے تو رہ سکتا ہے پر بنا پانی نہیں. بیکانیر ہی کیا سارے راجستھان میں میٹھا پانی اناج سے بھی زیادہ دقت سے ملتا ہے. پینے کا میٹھا پانی وہاں پتیلوں میں جن میں 60 گیلن پانی آتا ہے بڑی دور سے اونٹوں کی پیٹھ پر لایا جاتا ہے اور چھ آنے سے ایک روپیہ پتیلے تک بکتا ہے.

सहायता के तौर पर नाकाफ़ी मज़दूरी

इस परिवार के पांच आदमी जिनमें एक 13 साल का बालक भी है एक सरकारी बांध पर काम करते हैं. वहां हर आदमी को 60 घनवर्ग फुट ज़मीन खोदने पर रोज़ाना बारह आना मिलते हैं, औरत को पचास घनवर्ग फुट ज़मीन खोदने के दस आने और बालक को चालीस घनवर्ग ज़मीन के आठ आने. वह सुबह सात बजे अपने घर से काम पर जाते हैं और साढ़े आठ बजे शाम तक काम करते हैं जहां काम करते हैं वह जगह उनके घर से दो मील दूर है.

बूढ़े पेरूमल से ज़मीन नहीं खोदी जाती इसलिये वह काम पर नहीं जाता. वह शाल बनाना जानता है उसे अगर कोई 500 रुपए उधार दे दे तो वह 300 रुपया कमा सकता है पर सवाल यह है कि उसे 500 रुपए उधार कौन दे ?

छोटे बड़े सब पिसी लाल मिर्च के साथ बाजरे की रोटी खाते हैं. वहां न तो कोई साग भाजी होती है और न घी या दूध. जब इस सरकारी बांध का काम बन्द हो जायगा. (क्योंकि उसके लिये सिर्फ़ दो हज़ार रुपए की मंज़ूरी हुई है) तो उनको यह रोटी भी मिलना मुशकिल हो जायगी.

यह पूछने पर कि "जब यह काम बन्द हो जायगा तब तुम क्या करोगे ?"

उन्होंने कहा—"हम भगवान से प्रार्थना कर रहे हैं कि आस पास कोई दूसरा काम शुरू हो जाय."

गांव में उसी दिन शाम को एक मंदिर में प्रार्थना की गई. वह प्रार्थना इसलिये थी जिससे कि भगवान प्रसन्न हो कर अधिक काम चालू करा दें और पानी बरसाएं. यह भी प्रार्थना थी कि भूके मरते मानव को भगवान दूसरे जन्म में सुखी बनावें. पुजारी ने मुझे रसगुल्ले का प्रसाद दिया और कहा कि मेरा भाग्य उनके संग रसगुल्ला खाने का है मैंने उनसे पूछा कि आपने अपने गांव के उन ग़रीब भूके हरिजनों की मदद के वास्ते क्या किया है ? पुजारी का जवाब था—"वह लोग हैं ही बड़े बदक़िसमत.''

बीकानेर का अकाल पैसे का अकाल है क्योंकि अगर आपके पास पैसा हो तो आप मंडी से जितना चाहें अनाज ख़रीद सकते हैं. यहां के अफ़सरों को अब भी यह स्वीकार नहीं है कि बीकानेर में अकाल है. वहां के कलक्टर का मत है कि अकाल पड़ने के तमाम समाचार झूट हैं और मुख़ालिफ़ राजकाजी पार्टियों का प्रोपेगेंडा है.

"लोनकारसर में जो एक स्त्री भूक से मर गई उसके बारे में आप का क्या मत है ?"

سہائتا کے طور پر ناکافی مزدوری

اِس پریوار کے پانچ آدمی جن میں ایک 13 سال کا بالک بھی ہے ایک سرکاری باندھ پر کام کرتے ہیں . وہاں ہر آدمی کو 60 گھن ورگ فٹ زمین کھودنے پر روزانہ بارہ آنہ ملتے ہیں، عورت کو پچاس گھن ورگ فٹ زمین کھودنے کے دس آنے اور بالک کو چالیس گھن ورگ فٹ زمین کے آٹھ آنے . وہ صبح سات بجے اپنے گھر سے کام پر جاتے ہیں اور ساڑھے آٹھ بجے شام تک کام کرتے ہیں . جہاں کام کرتے ہیں وہ جگہ اُن کے گھر سے دو میل دور ہے .

بوڑھے پیرومل سے زمین نہیں کھودی جاتی اِس لئے وہ کام پر نہیں جاتا. وہ شال بنانا جانتا ہے. اُسے اگر کوئی 500 روپیہ ادھار دے دے تو وہ 300 روپیہ کما سکتا ہے . پر سوال یہ ہے کہ اسے 500 روپیہ ادھار کون دے ؟

چھوٹے بڑے سب پسی لال مرچ کے ساتھ باجرے کی روٹی کھاتے ہیں . وہاں نہ تو کوئی ساگ بھاجی ہوتی ہے اور نہ گھی یا دودھ. جب اِس سرکاری باندھ کا کام بند ہو جائیگا (کیونکہ اس کے لئے صرف دو ہزار روپے کی منظوری ہوئی ہے) تو ان کو یہ روٹی بھی ملنا مشکل ہو جائیگی .

یہ پوچھنے پر کہ "جب یہ کام بند ہو جائیگا تب تم کیا کروگے ؟"

اُنہوں نے کہا—"ہم بھگوان سے پرارتھنا کر رہے ہیں کہ آس پاس کوئی دوسرا کام شروع ہو جائے ."

گاؤں میں اسی دن شام کو ایک مندر میں پرارتھنا کی گئی . وہ پرارتھنا اِس لئے تھی جس سے کہ بھگوان پرسن ہوکر ادھک کام چالو کرا دیں اور پانی برسائیں . یہ بھی پرارتھنا تھی کہ بھوکے مرتے مانو کو بھگوان دوسرے جنم میں سکھی بناویں . پجاری نے مجھے رس گلے کا پرساد دیا اور کہا کہ میرا بھاگیہ اُن کے سنگ رس گلا کھانے کا ہے . میں نے اُن سے پوچھا کہ آپ نے اپنے گاؤں کے غریب بھوکے ہریجنوں کی مدد کے واسطے کیا کیا ہے ؟ پجاری کا جواب تھا—"یہ لوگ ہیں ہی بڑے بدقسمت ."

بیکانیر کا اکال پیسے کا اکال ہے کیونکہ اگر آپ کے پاس پیسہ ہو تو آپ منڈی سے جتنا چاہیں اناج خرید سکتے ہیں. یہاں کے افسروں کو اب بھی یہ سویکار نہیں ہے کہ بیکانیر میں اکال ہے . وہاں کے کلکٹر کا مت ہے کہ اکال پڑنے کے تمام سماچار جھوٹ ہیں اور مخالف راج کاجی پارٹیوں کا پروپیگنڈا ہے .

"لونکرسر میں جو ایک استری بھوک سے مر گئی اس کے بارے میں آپ کا کیا مت ہے؟"

गांव के गांव ख़ाली

जिन लोगों के अनाज का स्टाक ख़तम हो गया है वह ज़ियादातर अपने घरों से भाग रहे हैं. नौरंगदेसर नाम के के गांव में जहां 30 नाइक (हरिजन) जात के परिवार रहते हैं उनमें से 27 परिवार अनाज और काम की तलाश में गांव छोड़ कर जा चुके हैं अपने घूमने के दौरान में हमने तमाम गांवों के घरों को देखा. इनमें एक तरफ़ से ताले लगे थे. यह अपनी मूक कहानी ख़ुद सुना रहे थे, कभी इन गांवों में भी इनसान और इनसान का प्रेम निवास करता था.

50 साला लछमन अपनी स्त्री और चार भूके बच्चों को लेकर 22 मील पैदल चल कर बीकानेर पहुँचा. रास्ते में वह सब भीक मांगते खाते गए और अन्त में एक सेठ की धर्मशाला के बाहर उन्होंने शरन ली. इस धर्मशाला में हर आदमी को एक पाव बाजरा दान की शक्ल में रोज़ाना मिलता है.

58 साला चन्नो भी (अपने सबसे छोटे तीन बरस के लड़के के साथ) अपने तीन लड़कों को लेकर घर से निकल पड़ा है और यह लोग अब भीक के सहारे जीते हैं और रेत के बिछौने पर खुले में रहते हैं. इस जगह दिन की गरमी और रात की ठंड से बचाव का कोई साधन नहीं है.

बीकानेर से मामसर गांव रेल से एक घंटे में आदमी पहुंच जाता है. वहां बिजली भी है और पक्के घर भी हैं, वहां म्युनिसिपल बोर्ड भी है, गांव और रेल के स्टेशन के बीच एक मील का रेगिस्तान है. ऊंट गाड़ियों में उस गांव के रईस लोग स्टेशन आते जाते हैं. मंदिरों के पुजारी महंत लोग वहां खूब ठाट बाट से रहते हैं.

इस गांव के रईस लोगों को अकाल का कोई ज्ञान तक नहीं है, लेकिन अगर आप हरिजन बस्तियों में जायं तो उनके घरों का अंधेरा और उनके पीठ में धंसे पेट ख़ुद ही अपनी कहानी आपको सुना देंगे आप को पता लगेगा कि इनसान इनसान में कितना फ़रक़ है.

पेरूमल के परिवार में वह ख़ुद, उसकी स्त्री, उसके दो बड़े लड़के, उन दोनों की बहूएं और पेरूमल का एक छोटा लड़का और लड़की हैं. उनके पास 100 एकड़ ज़मीन है जिसमें दो 2 साल से कोई फ़सल नहीं हुई है. उसके पास एक ऊंट गाड़ी भी थी जो उसने बेच दी है. स्त्रियों के पास कोई गहने अब नहीं. पेरूमल ने कहा कि "अगर हम को तन ढकने को कपड़ा और दो जून भोजन भी मिल जाय तो बस हम बादशाह हैं."

گاؤں کے گاؤں خالی

جن لوگوں کے اناج کا اسٹاک ختم ہو گیا ہے وہ زیادہ تر اپنے گھروں سے بھاگ رہے ہیں۔ نورنگ دیسر نام کے گاؤں میں جہاں 30 نائک (ہریجن) جات کے پریوار رہتے ہیں اُن میں سے 27 پریوار اناج اور کام کی تلاش میں گاؤں چھوڑ کر جا چکے ہیں۔ اپنے گھومنے کے دوران میں ہم نے تمام گاؤں کے گھروں کو دیکھا۔ ان میں ایک طرف سے تالے لگے تھے۔ یہ اپنی موک کہانی خود سنا رہے تھے، کبھی ان گاؤں میں بھی انسان اور انسان کا پریم نواس کرتا تھا۔

50 سالہ لچھمن اپنی استری اور چار بھوکے بچوں کو لے کر 22 میل پیدل چل کر بیکانیر پہونچا۔ راستے میں وہ سب بھیک مانگتے کھاتے گئے اور انت میں ایک سیٹھ کی دھرم شالا کے باہر اُنہوں نے شرن لی۔ اس دھرم شالہ میں ہر آدمی کو ایک پاؤ باجرا دان کی شکل میں روزانہ ملتا ہے۔

58 سالہ چنو بھی (اپنے سب سے چھوٹے تین برس کے لڑکے کے ساتھ) اپنے تین لڑکوں کو لے کر گھر سے نکل پڑا ہے اور یہ لوگ اب بھیک کے سہارے جیتے ہیں اور ریت کے بچھونے پر کھلے میں رہتے ہیں۔ اس جگہ دن کی گرمی اور رات کی ٹھنڈ سے بچاؤ کا کوئی سادھن نہیں ہے۔

بیکانیر سے مامسر گاؤں ریل سے ایک گھنٹے میں آدمی پہونچ جاتا ہے۔ وہاں بجلی بھی ہے اور پکے گھر بھی ہیں، وہاں میونسپل بورڈ بھی ہے۔ گاؤں اور ریل کے اسٹیشن کے بیچ ایک میل کا ریگستان ہے۔ اونٹ گاڑیوں میں اس گاؤں کے رئیس لوگ اسٹیشن آتے جاتے ہیں۔ مندروں کے پجاری مہنت لوگ وہاں خوب ٹھاٹ باٹ سے رہتے ہیں۔

اس گاؤں کے رئیس لوگوں کو اکال کا کوئی گیان نہیں ہے، لیکن اگر آپ ہریجن بستیوں میں جائیں تو اُن کے گھروں کا اندھیرا اور ان کے پیٹھ میں دھنسے پیٹ خود ہی اپنی کہانی آپ کو سنا دیں گے۔ آپ کو پتہ لگے گا کہ انسان انسان میں کتنا فرق ہے۔

پیرومل کے پریوار میں وہ خود، اس کی استری، اس کے دو بڑے لڑکے، اُن دونوں کی بہوئیں اور پیرومل کا ایک چھوٹا لڑکا اور لڑکی ہیں۔ ان کے پاس 100 ایکڑ زمین ہے جس میں دو سال سے کوئی فصل نہیں ہوئی ہے۔ اس کے پاس ایک اونٹ گاڑی بھی تھی جو اس نے بیچ دی ہے۔ استریوں کے پاس کوئی گہنے اب نہیں۔ پیرومل نے کہا کہ "اگر ہم کو تن ڈھکنے کو کپڑا اور دو جون بھوجن بھی مل جائے تو بس ہم بادشاہ ہیں۔"

बीकानेर में भयानक अकाल

(ज्ञानेन्द्र प्रसाद जैन)

"इस तरह कब तक दिन काटोगे ?" मैंने चन्नो से पूछा जो कि बीकानेर में भीक मांग कर दिन काट रहा है.

सवाल को सुनकर सुनहरे भविष्य की कल्पना की झलक उसके चेहरे पर खेल गई. "मैं अपने घर वापिस तब ही जाऊंगा जब वर्षा हो जायगी और "मुरुत" घास फिर से उग आएगी."

बीकानेर की ग़रीबी और अकाल का चित्र दिल में उथल पुथल पैदा करता है. 14 लाख की आबादी के इस प्रदेश में दो लाख गांव वाले खतरनाक अकाल के मुख में फंसे हैं.

इन ग़रीबों की आंखों में आप दुख की फ़िकरों की वह तस्वीर देखेंगे जो जीवन भर आपके दिमाग़ पर छाई रहेगी पर उनके चेहरों को देखकर आपको पता लगेगा कि हिम्मत किसे कहते हैं ! वह हिम्मत जिसके सामने सारे दुख तुच्छ मालूम होते हैं.

रेगिस्तान के उस लम्बे चौड़े फैले क्षेत्र में आप मीलों तक जीप मोटर में बैठे चले जायं तो भी उस रेत का अंत नहीं जीप मोटर ही इस रेगिस्तानी प्रदेश में यातायान का एक ही साधन है. मीलों पार हो जाते हैं, पर इनसान तो क्या किसी पशु पक्षी के भी दर्शन नहीं होते और न कहीं छाया में बैठने को पेड़ या पीने को पानी ही दिखाई पड़ता है. इसलिये आप यह बिना सोचे नहीं रह सकते कि आखिर फिर किस खिंचाव से इनसान इस हिस्से में आकर बसा था.

बीकानेर में साल में कुल एक फ़सल होती है और वह भी बारिश के सहारे. सिंचाई से होने वाली खेती का कहीं नाम निशान नहीं है. अगर बारिश नहीं होती तो इस प्रदेश में अकाल पड़ जाता है. अगर कहीं दो फसलें अच्छी हो गईं तो एक खराब फ़सल झेल ली जाती है पर जब लगातार दो फ़सलें बिगड़ जाती हैं तभी वहां मुसीबत के पहाड़ टूट पड़ते हैं.

1951 में फ़सल खराब हो गई थी, 1952 में जो थोड़ी बहुत हुई उसे टिड्डियां साफ़ कर गई. सन 50 की फ़सल का जो बचा हुआ स्टाक था वह अब क़रीब क़रीब खतम हो चुका है. 2 माह से वहां के निवासी "तूम्बा" नाम का ज़हरीला दाना, खेजरी की छाल, मुरुत की घास ज्वार या बाजरे के आटे में मिला कर खा रहे हैं जिससे कि यह बचा हुआ अनाज कुछ ज़ियादा दिन तक चल सके.

بیکانیر میں بھیانک اکال

(گیانیندر پرساد جین)

"اس طرح کب تک دن کاٹو گے؟" میں نے چنّو سے پوچھا جو کہ بیکانیر میں بھیک مانگ کر اپنے دن کاٹ رہا ہے۔

سوال کو سن کر سنہرے بھوشیہ کی کلپنا کی جھلک اس کے چہرے پر کھیل گئی۔ "میں اپنے گھر واپس تب ہی جاؤنگا جب برشا ہو جائیگی اور "مروت" گھاس پھر سے اگ آئیگی۔"

بیکانیر کی غریبی اور اکال کا چتر دل میں اتھل پتھل پیدا کرتا ہے۔ 14 لاکھ کی آبادی کے اس پردیش میں دو لاکھ گاؤں والے خطرناک اکال کے مکھ میں پھنسے ہیں۔

ان غریبوں کی آنکھوں میں آپ دکھ کی فکروں کی وہ تصویر دیکھیں گے جو جیون بھر آپ کے دماغ پر چھائی رہے گی۔ پر ان کے چہروں کو دیکھ کر آپ کو پتہ لگیگا کہ ہمت کسے کہتے ہیں! وہ ہمت جس کے سامنے سارے دکھ تچھ معلوم ہوتے ہیں۔

ریگستان کے اس لمبے چوڑے پھیلے چھیتر میں آپ میلوں تک جیپ موٹر میں بیٹھے چلے جائیں تو بھی اس ریت کا انت نہیں۔ جیپ موٹر ہی اس ریگستانی پردیش میں یاتایات کا ایک ہی سادھن ہے۔ میلوں پار ہو جاتے ہیں، پر انسان تو کیا کسی پشو پکشی کے بھی درشن نہیں ہوتے اور نہ کہیں چھایا میں بیٹھنے کو پیڑ یا پانی ہی دکھائی پڑتا ہے۔ اس لئے آپ یہ بنا سوچے نہیں رہ سکتے کہ آخر پھر کس کھنچاؤ سے انسان اس حصے میں آکر بسا تھا۔

بیکانیر میں سال بھر میں کل ایک فصل ہوتی ہے اور وہ بھی بارش کے سہارے۔ سینچائی سے ہونے والی کھیتی کا کہیں نام نشان نہیں ہے۔ اگر بارش نہیں ہوتی تو اس پردیش میں اکال پڑ جاتا ہے۔ اگر کہیں دو فصلیں اچھی ہوگئیں تو ایک خراب فصل جھیل لی جاتی ہے۔ پر جب لگاتار دو فصلیں بگڑ جاتی ہیں تبھی وہاں مصیبت کے پہاڑ ٹوٹ پڑتے ہیں۔

1951 میں فصل خراب ہوگئی تھی، 1952 میں جو تھوڑی بہت ہوئی اسے ٹڈیاں صاف کر گئیں۔ سن 50 کی فصل کا جو بچا ہوا اسٹاک تھا وہ اب قریب قریب ختم ہوچکا ہے۔ دو ماہ سے وہاں کے نواسی "تومبا" نام کا زہریلا دانہ، کھیجری کی چھال، مروت کی گھاس جوار یا باجرے کے آٹے میں ملا کر کھا رہے ہیں جس سے کہ یہ بچا ہوا اناج کچھ زیادہ دن تک چل سکے۔

रहती हैं. वह यहां के भोले भाले किसानों पर बड़े बड़े ट्रैक्टर वगैरा ऐसे औज़ार लादना चाहते हैं, जो मनुश्य और जानवर दोनों को बेकार करने वाले हैं. उनका यहां की परिस्थितियों से कोई मेल नहीं खाता. जिनको न वह चला सकता है, न बना सकता है और न बिगड़ने पर सुधार ही सकता है. इसके अलावा आर्थिक नज़र से भी किसान की पहुंच से बाहर है.

ऐसे औज़ार अगर हम भारती किसान के जीवन में पहुँचाते हैं या पहुँचने देते हैं तो उस पर आर्थिक बोझा तो लादते ही हैं और बहुत हद तक उसे दूसरों पर निर्भर बना कर उसकी आज़ादी का अपहरन भी करते हैं.

इस मुसीबत से किसानों को बचाने की जवाबदारी रचनात्मक कारकर्ताओं पर है. कई लोग हमारे विचारों को न समझ कर हम पर इलज़ाम भी लगाते हैं उन सब दोस्तों को जो भारती किसान को लाखों करोड़ों (मनुश्य और जानवर जैसी) जीती जागती मशीनों को छोड़ यंत्रों की भयानक दाढ़ों में फंसा कर चौपट करना चाहते हैं उन्हें सोचना चाहिये कि हमारी खेती आज छोटे छोटे सैकड़ों हज़ारों टुकड़ों में बटी हुई है जब तक उनका सामुहीकरन नहीं होता तब तक खेती में मशीनों का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता इसलिये ऐसे लोगों से हमारी अर्ज़ है कि फ़िलहाल किसान को कल कांटों की बाहरी ग़ुलामी से बचा कर उसके गांवों की जानी पहचानी कारीगरी के ज़रिये पुराने औज़ारों को ही ज़ियादा कारगर बनाने में हमारा हाथ बटाना चाहिये चूं कि मौजूदा हालत में भारती खेती का पुराना तरीक़ा ही हमारे सर्वथा माफ़िक़ है उसमें खेती के काम के साथ साथ दूसरी तरह के ऐसे धन्दे भी किसान के हाथ में रहते हैं जो खाली समय में उसे बेकारी से बचाते हैं.

भारती खेती के पुराने औज़ारों में ही कुछ हेर फेर कर के उन्हें ज़ियादा काम में लाने और ख़ुद बनाने की तरफ़ हमारी सारी कोशिश होनी चाहिये.

याद रहे कि इसी क़िस्म की एक कोशिश अखिल भारत सर्व सेवा संघ के कृशि गो सेवा विभाग की तरफ़ से की जा रही है जो कारकर्ताओं की जानकारी के लिये पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जा चुका है. साथ ही उन सब भाइयों से जो इस दिशा में कोशिश कर रहे हैं, अपील है कि हमारे इस काम में हाथ बटावें.

हमें उम्मीद है कि हर रचनात्मक कारकर्ता इस काम में ज़ियादा से ज़ियादा सहयोग दे कर अपनी ज़िम्मेदारी को निभाने की कोशिश करेगा.

رہتی ہیں . وہ یہاں کے بھولے بھالے کسانوں پر بڑے بڑے ٹریکٹر وغیرہ ایسے اوزار لادنا چاہتے ہیں جو منشیہ اور جانور دونوں کو بیکار کرنے والے ہیں . ان کا یہاں کی پرستھتیوں سے کوئی میل نہیں کھاتا . جن کو نہ وہ چلا سکتا ہے نہ بنا سکتا ہے اور نہ بگڑنے پر سدھار ہی سکتا ہے . اس کے علاوہ آرتھک نظر سے بھی کسان کی پہونچ سے باہر ہے .

ایسے اوزار اگر ہم بھارتی کسان کے جیون میں پہونچاتے ہیں یا پہونچنے دیتے ہیں تو اس پر آرتھک بوجھا تو لادتے ہی ہیں اور بہت حد تک اسے دوسروں پر نربھر بنا کر اسکی آزادی کا اپہرن بھی کرتے ہیں .

اس مصیبت سے کسانوں کو بچانے کی جواب داری رچناتمک کارکرتاؤں پر ہے . کئی لوگ ہمارے وچاروں کو نہ سمجھکر ہم پر الزام بھی لگاتے ہیں. ان سب دوستوں کو جو بھارتی کسان کو لاکھوں کروڑوں (منشیہ اور جانور جیسی) جیتی جاگتی مشینوں کو چھوڑ ینتروں کی بھیانک داڑھوں میں پھنسا کر چوپٹ کرنا چاہتے ہیں . انہیں سوچنا چاہئے کہ ہماری کھیتی آج چھوٹے چھوٹے سیکڑوں ہزاروں ٹکڑوں میں بٹی ہوئی ہے . جب تک اس کا ساموہی کرن نہیں ہوتا تب تک کھیتی میں مشینوں کا استعمال نہیں کیا جا سکتا . اس لئے ایسے لوگوں سے ہماری عرض ہے کہ فی الحال کسان کو کل کانٹوں کی باہری غلامی سے بچا کر اس کے گاؤں کی جانی پہچانی کاریگری کے ذریعے پرانے اوزاروں کو ہی زیادہ کارگر بنانے میں ہمارا ہاتھ بٹانا چاہئے . چونکہ موجودہ حالت میں بھارتی کھیتی کا پرانا طریقہ ہی ہمارے سروتھا موافق ہے . اس میں کھیتی کے کام کے ساتھ ساتھ دوسری طرح کے ایسے دھندے بھی کسان کے ہاتھ میں رہتے ہیں جو خالی سمے میں اسے بیکاری سے بچاتے ہیں .

بھارتی کھیتی کے پرانے اوزاروں میں ہی کچھ ہیر پھیر کر کے انہیں زیادہ کام میں لانے اور خود بنانے کی طرف ہماری ساری کوشش ہونی چاہئے .

یاد رہے کہ اسی قسم کی ایک کوشش اکھل بھارت سرو سیوا سنگھ کے کرشی گو سیوا وبھاگ کی طرف سے کی جا رہی ہے جو کارکرتاؤں کی جانکاری کے لئے پتر پتریکاؤں میں پرکاشت کیا جا چکا ہے . ساتھ ہی ان سب بھائیوں سے جو اس دشا میں کوشش رہے ہیں' اپیل ہے کہ ہمارے اس کام میں ہاتھ بٹاویں .

ہمیں امید ہے کہ ہر رچناتمک کارکرتا اس کام میں زیادہ سے زیادہ سہیوگ دے کر اپنی ذمہ داری کو نبھانے کی کوشش کریگا .

खेतीबारी के औज़ार—एक समस्या

(चन्द्रमा सिंह वर्मा)

आज ज़ियादा अनाज पैदा करो का ज़माना है. यही एक बात सब की ज़बान पर है. सभी कहते हैं कि अनाज की समस्या सुलझे बग़ैर देश आगे नहीं बढ़ेगा, लेकिन ज़ियादा अनाज पैदा करने के साधन धरती और किसान दोनों ही जर जर हो गये हैं उनकी हालत शोचनीय है. जिस तरह धरती कुछ मुट्ठी भर लोगों के हाथ में चली गई है, उसी तरह किसान भी दूसरों का मुहताज हो गया है. वह भूका नंगा रह कर भी अपनी आए दिन की गाढ़ी कमाई दूसरों को सौंप देता है या उससे छीन ली जाती है. वह साधन हीन हो गया है. अगर यही हालत रही तो ज़ियादा अनाज पैदा करो की बात तो अलग रही, उल्टे देश तबाह हो जायगा.

इसलिये रचनात्मक संस्थाओं का ध्यान भूमि समस्या के साथ साथ किसान की दूसरी उलझनों को सुलझाने की तरफ़ भी जाना चाहिये आज किसान के अधूरे जीवन को सम्पूर्न बनाने में ही भारत का सर्वोदय है, ऐसा मान कर चलना चाहिये.

आज भारत की खेती में जहां अच्छे बीज, खाद, सिंचाई वग़ैरा की ज़रूरत है वहां अच्छे औज़ारों की भी सख़्त ज़रूरत है. जिस तरह हमने चरखा वग़ैरा ग्रामोद्योगों के दूसरे पहलुओं को सोच समझ कर नई नई तबदीलियां कर के उन्हें ज़ियादा अच्छा बना कर जनता की सेवा की है, उसी तरह खेती बारी के औज़ारों में भी कुछ सुधार होना लाज़मी है.

पुराने ज़माने से चलते आए औज़ारों पर आधार रख कर चलने से आज की समस्या हल नहीं हो सकती उनमें कुछ ऐसे बुनियादी सुधारों की ज़रूरत है जो ज़ियादा से ज़ियादा काम दे सकें. लेकिन ऐसे औज़ार किसान के बूते से बाहर के न हों जिन्हें वह गांव के बढ़ई लुहार की मदद से अपने आस पास की साधन सामग्री लेकर गांव में ही बना या सुधार सके. ऐसा करने में एक बड़ा फ़ायदा यह है कि उसे शहर या किसी बाहरी मेकेनिक का मुंह नहीं ताकना पड़ेगा. वह अपने क्षेत्र में ही स्वावलंबी बना रहेगा.

ध्यान रहे कि इस दिशा में सरकार की तरफ़ से कुछ ऐसे लोग भी लगे हैं जिनके दिमाग़, भेस, भूशा भाषा और रहन-सहन का ढंग यहां का नहीं है जो यहां के किसान की हैसियत से नहीं सोचते. जिनके विचारों में रूस व अमरीका की बड़ी बड़ी स्कीमें चक्कर काटती

کھیتی باری کے اوزار—ایک سمسیا

(چندرما سنگھ ورما)

آج زیادہ اناج پیدا کرو کا زمانہ ہے . یہی ایک بات سب کی زبان پر ہے . سبھی کہتے ہیں کہ اناج کی سمسیا سلجھے بغیر دیش آگے نہیں بڑھیگا' لیکن زیادہ اناج پیدا کرنے کے سادھن دھرتی اور کسان دونوں ہی جر جر ہوگئے ہیں . اُن کی حالت شوچنیہ ہے . جس طرح دھرتی کچھ مٹھی بھر لوگوں کے ہاتھ میں چلی گئی ہے' اسیطرح کسان بھی دوسروں کا محتاج ہو گیا ہے . وہ بھوکا ننگا رہ کر بھی اپنی آئے دن کی گاڑھی کمائی دوسروں کو سونپ دیتا ہے یا اُس سے چھین لی جاتی ہے . وہ سادھن ہین ہوگیا ہے . اگر یہی حالت رہی تو زیادہ اناج پیدا کرو کی بات تو الگ رہی' اُلٹے دیش تباہ ہو جائیگا .

اِس لئے رچناتمک سنستھاؤں کا دھیان بھومی سمسیا کے ساتھ ساتھ کسان کی دوسری اُلجھنوں کو سلجھانے کی طرف بھی جانا چاہئے . آج کسان کے ادھورے جیون کو سمپورن بنانے میں ہی بھارت کا سرودے ہے' ایسا مان کر چلنا چاہئے .

آج بھارت کی کھیتی میں جہاں اچھے بیج' کھاد' سینچائی وغیرہ کی ضرورت ہے وہاں اچھے اوزاروں کی بھی سخت ضرورت ہے . جس طرح ہم نے چرخہ وغیرہ گرام اُدیوگوں کے دوسرے پہلوؤں کو سوچ سمجھ کر نئی نئی تبدیلیاں کرکے اُنہیں زیادہ اچھا بنا کر جنتا کی سیوا کی ہے اُسی طرح کھیتی باری کے اوزاروں میں بھی کچھ سدھار ہونا لازمی ہے . پرانے زمانے سے چلتے آئے اوزاروں پر آدھار رکھ کر چلنے سے آج کی سمسیا حل نہیں ہوسکتی . اُن میں کچھ ایسے بنیادی سدھاروں کی ضرورت ہے جو زیادہ سے زیادہ کام دے سکیں . لیکن ایسے اوزار کسان کے بوتے سے باہر کے نہ ہوں جنہیں وہ گاؤں کے بڑھئی لوہار کی مدد سے اپنے آس پاس کی سادھن سامگری لے کر گاؤں میں ہی بنا یا سدھار سکے . ایسا کرنے میں ایک بڑا فائدہ یہ ہے کہ اُسے شہر یا کسی باہری میکینک کا منہ نہیں تاکنا پڑیگا . وہ اپنے چھیتر میں ہی سواولمبی بنا رہیگا .

دھیان رہے کہ اِس دشا میں سرکار کی طرف سے کچھ ایسے لوگ بھی لگے ہیں جن کے دماغ' بھیس' بھوشا' بھاشا اور رہن سہن کا ڈھنگ یہاں کا نہیں ہے جو یہاں کے کسان کی حیثیت سے نہیں سوچتے . جن کے وچاروں میں روس و امریکہ کی بڑی بڑی اِسکیمیں چکر کاٹتی

मुक़ाबला करेंगे तो अहिंसा से यानी सत्याग्रह और असहयोग से. सत्याग्रही सिपाही के लिये खादी ही एक बाना है.

हमारे प्रधान मंत्री की बहुत बड़ी कोशिश है कि अमरीका और रूस से अलग दुनिया के अन्दर एक 'तीसरा इलाक़ा'' बन जाय लेकिन अगर इलाक़े में कोई ताक़त न होगी तो उसकी कौन परवाह करेगा. बिना ताक़त का इलाक़ा वैसा ही है जैसे बिना सियाही के क़लमदान. सवाल यह है कि इस इलाक़े में कौन सी ताक़त जमा की जा सकती है, यह इलाक़ा क्या ज़ोर दुनिया को दिखा सकता है ? अगर वह ताक़त या ज़ोर हिंसा के ज़रिये हुआ तो लाज़मी तौर पर ज़ियादा बड़ी हिंसा वाली ताक़तों के आगे उसे माथा टेक देना पड़ेगा और वह कहीं का न रहेगा. इस इलाक़े में बस एक ही ज़ोर कारगर हो सकता है—अहिंसा का, सत्याग्रह का यानी तरक़्क़ी पसन्द अहिंसात्मक असहयोग का. पंडित नेहरू से हमारी प्रार्थना है कि अगर वह अपने "इलाक़े" को मज़बूत बनाना चाहते हैं तो सत्याग्रही बल से उसे लैस करें.

इस तरह हम देखते हैं कि खादी के बारे में प्रधान मंत्री ने जो चार बातें कहीं वह सब की सब खादी के खिलाफ़ और मिल या बड़े कारोबार के माफ़िक़ रहीं. इससे हर कोई इस नतीजे पर पहुंचे बिना नहीं रह सकता कि सरकार खादी के साथ खिलवाड़ कर रही है और जो कुछ कर रही है वह खादी के जन्म दाता को नाम के वास्ते चढ़ावा देने या दिखावे के लिये. लेकिन इस तरह वह कब तक जनता की आंखों में धूल झोंकती रहेगी ?

खादी बोर्ड वालों से

आखिर में हमारा सरकारी खादी बोर्ड के बुज़ुरगों से भी एक निवेदन है हम जानते हैं कि ऊपर जो कुछ हमने कहा है उससे वह सहमत होंगे और खादी की गहराई को वह हम से कहीं ज़ियादा समझते हैं. हमें यक़ीन है कि वह अपने बोर्ड की आगे की नीति सरकार के सामने बिल्कुल साफ़ कर लेंगे और खादी का जो असली मक़सद है उसके पूरा करने में एक क़दम भी पीछे नहीं हटेंगे. साथ ही साथ हमें यह भी कहना है कि बोर्ड की पहली बैठक में इसके प्रधान ने जो स्पीच दी जिसमें—जैसा कि 21 फ़रवरी के 'हरिजन' परचों में छपी है—उन्होंने कहा कि यह बोर्ड सलाह और खोज या रिसर्च का काम करेगा, उस तरीक़े से यह बोर्ड हुकूमत की नीति में ज़रा भी बुनियादी तबदीली नहीं करा पायगा और हमें डर है कि खादी के कारज को फ़ायदे के बजाए नुक़सान पहुँचाएगा. इसलिये बोर्ड को बहुत एहतियात और दूरन्देशी से चलना पड़ेगा. हम उसके कारनामों को बड़े चाव व ध्यान के साथ देखा समझा करेंगे.

—सुरेश रामभाई

مقابلہ کریں گے تو اہنسا سے یعنی ستیاگرہ اور اسہیوگ سے . ستیاگرہی سپاہی کے لئے کھادی ہی ایک بانا ہے .

ہمارے پردھان منتری کی بہت بڑی کوشش ہے کہ امریکہ اور روس سے الگ دنیا کے اندر ایک "تیسرا علاقہ" بن جائے. لیکن اگر علاقے میں کوئی طاقت نہ ہوگی تو اسکی کون پرواہ کرے گا . بنا طاقت کا علاقہ ویسا ہی ہے جیسے بنا سیاہی کے قلمدان . سوال یہ ہے کہ اس علاقے میں کون سی طاقت جمع کی جا سکتی ہے' یہ علاقہ کیا زور دنیا کو دکھا سکتا ہے ؟ اگر وہ طاقت یا زور ہنسا کے ذریعہ ہوا تو لازمی طور پر زیادہ بڑی ہنسا والی طاقتوں کے آگے اسے ماتھا ٹیک دینا پڑے گا اور وہ کہیں کا نہ رہے گا . اس علاقے میں بس ایک ہی زور کارگر ہو سکتا ہے—اہنسا کا' ستیاگرہ کا یعنی ترقی پسند اہنساتمک اسہیوگ کا . پنڈت نہرو سے ہماری پرارتھنا ہے کہ اگر وہ اپنے " علاقے " کو مضبوط بنانا چاہتے ہیں تو ستیاگرہی بل سے اسے لیس کریں .

اس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ کھادی کے بارے میں پردھان منتری نے جو چار باتیں کہیں وہ سب کی سب کھادی کے خلاف اور مل یا بڑے کاروبار کے موافق رہیں. اس سے ہر کوئی اس نتیجے پر پہونچے بنا نہیں رہ سکتا کہ سرکار کھادی کے ساتھ کھلواڑ کر رہی ہے اور جو کچھ کر رہی ہے وہ کھادی کے جنم داتا کو نام کے واسطے چڑھاوا دینے یا دکھاوے کے لئے. لیکن اس طرح وہ کب تک جنتا کی آنکھوں میں دھول جھونکتی رہے گی .

کھادی بورڈ والوں سے

آخر میں ہمارا سرکاری کھادی بورڈ کے بزرگوں سے بھی ایک نویدن ہے . ہم جانتے ہیں کہ اوپر جو کچھ ہم نے کہا ہے اس سے وہ سہمت ہونگے اور کھادی کی گہرائی کو وہ ہم سے کہیں زیادہ سمجھتے ہیں . ہمیں یقین ہے کہ وہ اپنے بورڈ کی آگے کی نیتی سرکار کے سامنے بالکل صاف کر لیں گے اور کھادی کا جو اصلی مقصد ہے اس کے پورا کرنے میں ایک قدم بھی پیچھے نہیں ہٹیں گے. ساتھ ہی ساتھ ہمیں یہ بھی کہنا ہے کہ بورڈ کی پہلی بیٹھک میں اس کے پردھان نے جو اسپیچ دی جس میں—جیسا کہ 21 فروری کے ' ہریجن ' پرچوں میں چھپی ہے—انہوں نے کہا کہ یہ بورڈ صلاح اور کھوج یا ریسرچ کا کام کرے گا' اس طریقے سے یہ بورڈ حکومت کی نیتی میں ذرا بھی بنیادی تبدیلی نہیں کرا پائے گا اور ہمیں ڈر ہے کہ کھادی کے کارج کو فائدے کے بجائے نقصان پہونچائے گا . اس لئے بورڈ کو بہت احتیاط اور دوراندیشی سے چلنا پڑے گا ہم اس کے کارناموں کو بڑے چاؤ و دھیان کے ساتھ دیکھا سمجھا کریں گے .

—سریش رام بھائی

सरकारी सहारा

प्रधान मंत्री का यह कहना कि अगर खादी सरकारी मदद का सहारा लेगी तो वह अपने पैरों पर खड़ी नहीं हो सकती, सोलह आने सही बात है. लेकिन क्या हम पूछ सकते हैं कि कौन ऐसा कारोबार है जो आज अपने पैरों पर खड़ा हो? अगर सरकार उन्हें मदद दे सकती है तो और सीधे ना सीधे हाथ बटा सकती है तो खादी को क्यों नहीं! लेकिन खादी का हर प्रेमी क़बूल करेगा कि सरकारी मदद से खादी को सच्ची मदद नहीं पहुँच सकती. हाल ही में एक सरकारी मदद के ज़रिये खादी का दाम रुपये पीछे तीन आने कम हो गया है. हमारा ख़्याल है कि आज जो देशी विदेशी ताक़तें या हकूमतें हिन्दुस्तान की मदद को तैयार हैं उनके बल पर खादी का दाम आधा या चौथाई भी किया जा सकता है, लेकिन उससे खादी जीने वाली नहीं है.

खादी अपने पैरों पर तभी खड़ी हो सकती है जब हकूमत अपने पैरों पर खड़ी हो अगर हकूमत खुद बड़े कारोबार और मिलों का सहारा लेगी तो खादी के खिलाफ़ हवा आप से आप बढ़ेगी और फैलेगी. और हकूमत अपने पैरों पर तभी खड़ी हो सकती है जब वह मरकज़ी ढंग के इन्तज़ाम और बड़ी बड़ी मिलों, कारखानों और जंगी हथियारों पर फ़ौजों वग़ैरा का इस्तेमाल छोड़ दे, हमेशा के लिये तर्क कर दे, और सेवा बल या प्रेम बल को धन बल या पशु बल से ऊंची जगह दे और क़बूल करे. हकूमत अपने पैरों पर खड़ी हो खादी भी फ़ौरन खड़ी हो जायगी.

खादी और फ़ौज

अपनी प्यारी और अनोखी भाषा में हमारे प्रधान मंत्री खादी को आज़ादी का बाना कहा करते थे. पर आज वह खुद उसे फ़ौज के लिये नामुनासिब बताते हैं उन्होंने यह भी कहा है कि आज़ादी के बाद खादी का सियासी पहलू ख़तम हो गया. जो फ़ौज अहिंसा के रास्ते से चल कर अपनी मंज़िल को पहुँची उसके सिपहसालार के ऐसे वचन सुन कर कौन दंग नहीं रह जायगा. अगर 14 अगस्त 1947 तक खादी आज़ादी का बाना था तो आज वह उससे बढ़ कर बाना है और दिन दिन उसकी अहमियत बढ़ेगी. क्योंकि मिल का कपड़ा पहने और विलायतों में बने हथियार थामे हमारा सिपाही अमरीका, ब्रिटेन या रूस के बम के लिये चारे के सिवाय कुछ नहीं. हम कितनी ही फ़ौजें क्यों न खड़ी कर लें हम हिंसा से कभी भी मुक़ाबला नहीं कर सकेंगे वि.शी ताक़तों का. यह हमारा सारा फ़ौजी आडम्बर दिखावे का रहा है जिससे बाहर की कोई ताक़त डरती है न घबराती है.

हमने आज़ादी अहिंसा के रास्ते पर चल कर ली हम आज़ादी अहिंसा के रास्ते पर ही क़ायम रख सकेंगे दुश्मन का

سرکاری سہارا

پردھان منتری کا یہ کہنا کہ اگر کھادی سرکاری مدد کا سہارا لیگی تو وہ اپنے پیروں پر کھڑی نہیں ہو سکتی' سولہ آنے صحیح بات ہے. لیکن کیا ہم پوچھ سکتے ہیں کہ کون ایسا کاروبار ہے جو آج اپنے پیروں پر کھڑا ہو؟ اگر سرکار انہیں مدد دے سکتی ہے تو اور سیدھے نا سیدھے ہاتھ بٹا سکتی ہے تو کھادی کو کیوں نہیں! لیکن کھادی کا ہر پریمی قبول کرے گا کہ سرکاری مدد سے کھادی کو سچی مدد نہیں پہونچ سکتی. حال ہی میں ایک سرکاری مدد کے ذریعے کھادی کا دام روپئے پیچھے تین آنے کم ہو گیا ہے. ہمارا خیال ہے کہ آج جو دیشی ودیشی طاقتیں یا حکومتیں ہندستان کی مدد کو تیار ہیں ان کے بل پر کھادی کا دام آدھا یا چوتھائی بھی کیا جا سکتا ہے' لیکن اس سے کھادی جینے والی نہیں ہے.

کھادی اپنے پیروں پر تبھی کھڑی ہو سکتی ہے جب حکومت اپنے پیروں پر کھڑی ہو. اگر حکومت خود بڑے کاروبار اور ملوں کا سہارا لیگی تو کھادی کے خلاف ہوا آپ سے آپ بڑھے گی اور پھیلے گی. اور حکومت اپنے پیروں پر تبھی کھڑی ہو سکتی ہے جب وہ مرکزی ڈھنگ کے انتظام اور بڑی بڑی ملوں' کارخانوں اور جنگی ہتھیاروں پر فوجوں وغیرہ کا استعمال چھوڑ دے' ہمیشہ کے لئے ترک کر دے' اور سیوا بل یا پریم بل کو دھن بل یا پشو بل سے اونچی جگہ دے اور قبول کرے. حکومت اپنے پیروں پر کھڑی ہو کھادی بھی فوراً کھڑی ہو جائے گی.

کھادی اور فوج

اپنی پیاری اور انوکھی بھاشا میں ہمارے پردھان منتری کھادی کو آزادی کا بانا کہا کرتے تھے. پر آج وہ خود اسے فوج کے لئے نامناسب بتاتے ہیں. انہوں نے یہ بھی کہا ہے کہ آزادی کے بعد کھادی کا سیاسی پہلو ختم ہو گیا. جو فوج اہنسا کے راستے سے چل کر اپنی منزل کو پہونچی اس کے سپہ سالار کے ایسے وچن سن کر کون دنگ نہیں رہ جائے گا. اگر 14 اگست 1947 تک کھادی آزادی کا بانا تھا تو آج وہ اس سے بڑھکر بانا ہے اور دن دن اسکی اہمیت بڑھے گی. کیونکہ مل کا کپڑا پہنے اور ولائتوں میں بنے ہتھیار تھامے ہمارے سپاہی امریکہ' برٹین یا روس کے بم کے لئے چارے کے سوائے کچھ نہیں. ہم کتنی ہی فوجیں کیوں نہ کھڑی کر لیں ہم ہنسا سے کبھی بھی مقابلہ نہیں کر سکیں گے ودیشی طاقتوں کا. یہ ہمارا سارا فوجی آڈمبر دکھاوے کا رہا ہے جس سے باہر کی کوئی طاقت ڈرتی ہے نہ گھبراتی ہے.

ہم نے آزادی اہنسا کے راستے پر چل کر لی. ہم آزادی اہنسا کے راستے پر ہی قائم رکھ سکیں گے. دشمن کا

खादी की अन्दरूनी ताक़त

प्रधान मंत्री की बातों से ऐसा लगता है कि मानो बड़े कारोबार में निजी अन्दरूनी ताक़त हो और वह बिना सरकारी मदद के ही सहारे ज़िन्दा हैं. पंडित जवाहरलाल जैसे क़ाबिल इतिहास कार और राज नेता के मुंह से ऐसे शब्द सुन कर बड़ा ताज्जुब और दुख होता है. कौन नहीं जानता कि बड़े कारोबार को सरकारी सहारे की जितनी ज़रूरत रहती है उतनी किसी दूसरे चीज़ को नहीं. पिछले इतिहास को जाने दीजिये. आज क्या शक्ल है. क्या सरकार देश के लोहे, कोयले, पटसन, चाय, कपड़े, चीनी, वनस्पती वग़ैरा के कारख़ानों को शुरू से आख़ीर तक, यानी कच्चे माल से लेकर पक्के माल की बिक्री तक मदद नहीं दे रही है. पंडित नेहरू अगर यह बातें नहीं जानते तो फिर दूसरा कौन जान सकता है? और न पंडित जी को यह बतलाने की ज़रूरत है कि अगर उनकी सरकार आज भी बड़े कारोबार और छोटे धन्दे, दोनों को मैदान में खुला छोड़ कर बेलाग शकल इख़्तियार करे, तो बड़े कारख़ाने सहज ही में चारों ख़ाने चित्त गिरेंगे और न पंडित जी को यह बतलाने की ज़रूरत है कि अमरीका, इंगलैन्ड, और रूस की तरह आज कल हकूमत या सरकार बड़े कारोबार के हाथ की कठपुतली होती है न कि एक ख़ुद मुख़्तार, आज़ाद और समदर्शी. हकूमत, बड़े कारोबार और सरकार में जहां देखिये दांत कांटे की रोटी है, दोनों का चोली दामन का साथ है. सच पूछिये तो आज इन्तज़ाम हकूमत के माने हैं—बड़े कारोबार को चलाने वाला एक क़ानूनी इन्तज़ाम. यही नहीं, हकूमत ख़ुद एक बड़ा कारोबार बन बैठी है जो दूसरे बड़े कारबार के ऊपर मुनहसर है.

जब हकूमत और व्योपार में इस तरह का गठबन्धन हो तो कहां जगह है खादी की? ऐसा सूरत में खादी के पनपने की उम्मीद करना वैसा ही बेकार है जैसे झरिया और रानीगंज की खानों में गुलाब के फूल की उम्मीद करना.

वह ज़माने लद गए जब कोई धन्धा अपनी अन्दरूनी ताक़त से अपने आप फल फूल सकता था. वह ज़माने लद गये जब राजकाज और अर्थनीति अलग अलग की जा सकती थी. आज राजनीति और अर्थनीति में भेद ही नहीं रह गया है. इसलिये अन्दरूनी ताक़त का सवाल उठाना दूसरों की आंखों में धूल झोंकना है. फिर भी खादी में अपनी ख़ासियत ज़रूर है जो इतने विरोधी वातावरन होने पर भी ज़िन्दा है. वरना वह कब की ख़तम हो गई होती. विदेशी अंगरेज़ी सरकार और स्वदेशी पूंजी पतिया कांग्रेस सरकार ने उसे मिटाने में कोई क़दम उठा नहीं रक्खा—लेकिन वह मरी नहीं, यह बरकत किस की है?

کھادی کی اندرونی طاقت

پردھان منتری کی باتوں سے ایسا لگتا ہے کہ مانو بڑے کاروبار میں نجی اندرونی طاقت ہو اور وہ بنا سرکاری مدد کے ہی سہارے زندہ ہیں. پنڈت جواہر لال جیسے قابل اتہاس کار اور راج نیتا کے منہ سے ایسے شبد سن کر بڑا تعجب اور دکھ ہوتا ہے. کون نہیں جانتا کہ بڑے کاروبار کو سرکاری سہارے کی جتنی ضرورت رہتی ہے اتنی کسی دوسرے چیز کو نہیں. پچھلے اتہاس کو جانے دیجئے. آج کیا شکل ہے. کیا سرکار دیش کے لوہے، کوئلے، پٹسن، چائے، کپڑے، چینی، بناسپتی وغیرہ کے کارخانوں کو شروع سے آخیر تک، یعنی کچے مال سے لے کر پکے مال کی بکری تک، مدد نہیں دے رہی ہے. پنڈت نہرو اگر یہ باتیں نہیں جانتے تو پھر دوسرا کون جان سکتا ہے؟ اور نہ پنڈت جی کو یہ بتلانے کی ضرورت ہے کہ اگر اُن کی سرکار آج بھی بڑے کاروبار اور چھوٹے دھندے، دونوں کو میدان میں کھلا چھوڑ کر بےلاگ شکل اختیار کرے، تو بڑے کارخانے سہج ہی میں چاروں خانے چت گرینگے اور نہ پنڈت جی کو یہ بتلانے کی ضرورت ہے کہ امریکہ، انگلینڈ اور روس کی طرح آج کل حکومت یا سرکار بڑے کاروبار کے ہاتھ کی کٹھپتلی ہوتی ہے، نہ کہ ایک خود مختار، آزاد اور سمدرشی. حکومت، بڑے کاروبار اور سرکار میں جہاں دیکھئے دانت کانٹے کی روٹی ہے، دونوں کا چولی دامن کا ساتھ ہے. سچ پوچھئے تو آج انتظام حکومت کے معنی ہیں—بڑے کاروبار کو چلانے والا ایک قانونی انتظام. یہی نہیں، حکومت خود ایک بڑا کاروبار بن بیٹھی ہے جو دوسرے بڑے کاروبار کے اوپر منحصر ہے.

جب حکومت اور بیوپار میں اِس طرح کا گٹھ بندھن ہو تو کہاں جگہ ہے کھادی کی؟ ایسی صورت میں کھادی کے پنپنے کی امید ویسا ہی بیکار ہے جیسے جھریا رانی گنج کی کھانوں میں گلاب کے پھول کی امید کرنا.

وہ زمانے لد گئے جب کوئی دھندا اپنی اندرونی طاقت سے آپ پھل پھول سکتا تھا. وہ زمانے لد گئے جب راج کاج اور ارتھ نیتی الگ الگ کی جا سکتی تھی. آج راج نیتی اور ارتھ نیتی میں بھید ہی نہیں رہ گیا ہے. اس لئے اندرونی طاقت کا سوال اٹھانا دوسروں کی آنکھوں میں دھول جھونکنا ہے. پھر بھی کھادی میں اپنی خاصیت ضرور ہے جو اتنے ورودھی واتاورن ہونے پر بھی زندہ ہے. ورنہ وہ کب کی ختم ہو گئی ہوتی. ودیشی انگریزی سرکار اور سودیشی پونجی پتیا کانگریس سرکار نے اسے مٹانے میں کوئی قدم اٹھا نہیں رکھا—لیکن وہ مری نہیں، یہ برکت کس کی ہے؟

केवल ग्रीषन के रास्ते पर चल कर जी सकते हैं. इसके खिलाफ़ छोटे धन्दों के लिये विकेन्द्री करन यानी ग़ैर मरकज़ियत और ग़ैर फ़ौजियाना की ज़रूरत है. बहुत थोड़ी सी पूंजी से ही वह शुरू किये जा सकते हैं और मुक़ामी औज़ारों या सामान की मदद से चलाए जा सकते हैं. उनकी एक अपनी क़ुदरती शान और जगह होती है फिर, एटम बम बड़े कारोबार को नेस्तनाबूद कर सकता है लेकिन देहाती धन्दे को नहीं. इस तरह दोनों में ज़मीन आसमान का फ़र्क़ है.

अब सवाल है इन दोनों के मिलान का समझ में तो यही बात आती है कि जब इन दोनों में इतना ज़ियादा फ़रक़ है तो मिलान की गुंजाइश बहुत थोड़ी है या है ही नहीं, पर हमें न बड़े कारोबार का मोह है और न छोटे धन्दे का. हमारे सामने तो बस एक ही चीज़ है इनसान और उसकी बेहतरी. इसलिये जो मशीन इनसान की रोज़ी छीन कर उसे बेरोज़गार बनाए और भूका रक्खे वह निकम्मी, जो उसे रोज़ी से लगाये और उसके कुनबे को पाले वह भली. इसलिये हिन्दुस्तान में उन्हीं बड़े बड़े कारबारों के लिये जगह मिल सकती है जो हमारे लाखों करोड़ों को अपाहिज नहीं बना देते. यहां हमें राष्ट्र-पिता के वह अमर शब्द याद आ रहे हैं जो उन्होंने कवि सम्राट रवीन्द्र नाथ ठाकुर के एक सावधानी भरे लेख के जवाब में कहे थे :—

"मैंने देखा है कि दुखी मरीज़ों को कबीर के भजन से आराम नहीं पहुँचाया जा सकता. हमारे में भूकी जनता को बस एक मौत चाहिये—जानदार ख़ुराक और यह ख़ुराक उन्हें नहीं दी जा सकती, उन्हें ख़ुद कमानी होगी और कमाने के लिये उन्हें अपना ख़ून पसीना चोटी से एड़ी तक बहाना होगा."

पसीना बहाने के लिये काम मिलना चाहिये. पर हमारे देश में बड़ी मशीनें इस काम को ही छीने ले रही हैं और इसलिये तबाही बढ़ा रही हैं इससे साफ़ है कि जब तक देश में बे रोज़गारी और ग़रीबी की आज जैसी हालत है तब तक खाने, कपड़े और मकान से नाता रखने वाले सब काम ग्राम उद्योगों के ज़रिये चलाये जायें. और इनसे सम्बन्ध रखने वाली कोई चीज़ न मशीन पर बने और न बाहर से लाई जाय. सरकार चाहे तो रेलें रक्खे टेली-फ़ोन या हवाई जहाज़, दूरबीन के कारख़ाने रक्खे लेकिन कपड़े बनास्पती, तेल, चीनी, वग़ैरा के कारख़ानों, अनाज पीसने, धान कूटने वग़ैरा की बिजली से चलने वाली चक्कियों के लिये इस वक़्त हमारे यहां कोई जगह नहीं होनी चाहिये. इसलिये हमारा मानना है कि आज की हमारी हालत में बड़े उद्योगों और छोटे धन्दे का मिलान तभी हो सकता है जब उनके दायरे अलग अलग बांध दिये जायं.

کیول شوشن کے راستے پر چل کر جی سکتے ہیں. اس کے خلاف چھوٹے دھندوں کے لئے ونیندری کرن یعنی غیر مرکزیت اور غیر فوجیانہ کی ضرورت ہے. بہت تھوڑی سی پونجی سے ہی وہ شروع کئے جاسکتے ہیں اور مقامی اوزاروں یا سامان کی مدد سے چلائے جاسکتے ہیں. اُن کی ایک اپنی قدرتی شان اور جگہ ہوتی ہے. پھر، ایٹم بم بڑے کاروبار کو نیست نابود کر سکتا ہے لیکن دیہاتی دھندے کو نہیں. اس طرح دونوں میں زمین آسمان کا فرق ہے.

اب سوال ہے اِن دونوں کے ملان کا سمجھ میں تو یہی بات آتی ہے کہ جب اِن دونوں میں اتنا زیادہ فرق ہے تو ملان کی گنجائش بہت تھوڑی ہے یا ہے ہی نہیں، پر ہمیں نہ بڑے کاروبار کا موہ ہے اور نہ چھوٹے دھندے کا. ہمارے سامنے تو بس ایک ہی چیز ہے—انسان اور اس کی بہتری. اِس لئے جو مشین انسان کی روزی چھین کر اُسے بیروزگار بنائے اور بھوکا رکھے وہ نکمی، جو اُسے روزی سے لگائے اور اس کے کنبے کو پالے وہ بھلی. اس لئے ہندستان میں اُنہیں بڑے بڑے کاروباروں کے لئے جگہ مل سکتی ہے جو ہمارے لاکھوں کروڑوں کو اپاہج نہیں بنا دیتے. یہاں ہمیں راشٹر پتا کے وہ امر شبد یاد آ رہے ہیں جو انہوں نے کوی سمراٹ رویندرناتھ ٹھاکر کے ایک ساودھانی بھرے لیکھ کے جواب میں کہے تھے :—

"میں نے دیکھا ہے کہ دکھی مریضوں کو کبیر کے بھجن سے آرام نہیں پہونچایا جاسکتا. ہمارے میں بھوکی جنتا کو بس ایک موت چاہئے. جاندار خوراک اور یہ خوراک اُنہیں نہیں دی جاسکتی، اُنہیں خود کمانی ہوگی اور کمانے کے لئے اُنہیں اپنا خون پسینا چوٹی سے ایڑی تک بہانا ہوگا."

پسینہ بہانے کے لئے کام ملنا چاہئے. پر ہمارے دیش میں بڑی مشینیں اس کام کو ہی چھینے لے رہی ہیں اور اس لئے تباہی بڑھا رہی ہیں. اس سے صاف ہے کہ جب تک دیش میں بیروزگاری اور غریبی کی آج جیسی حالت ہے تب تک کھانے، کپڑے اور مکان سے ناتا رکھنے والے سب کام گرام ادیوگوں کے ذریعے چلائے جائیں. اور اس سے سمبندھ رکھنے والی کوئی چیز نہ مشین پر بنے اور نہ باہر سے لائی جائے. سرکار چاہے تو ریلیں رکھے، ٹیلی فون یا ہوائی جہاز، دوربین کے کارخانے رکھے لیکن کپڑے، بناسپتی، تیل، چینی وغیرہ کے کارخانوں، اناج پیسنے، دھان کوٹنے وغیرہ کی بجلی سے چلنے والی چکیوں کے لئے اِس وقت ہمارے یہاں کوئی جگہ نہیں ہونی چاہئے. اِس لئے ہمارا ماننا ہے کہ آج کی ہماری حالت میں بڑے ادیوگوں اور چھوٹے دھندے کا ملان تبھی ہوسکتا ہے جب اُن کے دائرے الگ الگ باندھ دئے جائیں.

खादी बोर्ड, सरकार और खादी

आज हमारे देश में ग्राम उद्योगों की और खास कर खादी और करघा उद्योग की जो दुर्दशा है उसे देख कर और भारत सरकार की माली और उद्योग नीति और दृष्टि को समझ कर हमारे ऊपर यह असर तेजी से पड़ रहा है कि अपने इस अभागे देश में किसी चीज के लिये जगह हो या न हो मगर ग्राम उद्योगों और खास कर खादी के लिये तो कम से कम कोई जगह नहीं है इस सम्बन्ध में जो कुछ शक थे वह उस स्पीच को पढ़ कर और भी दूर हो गए जो हमारे प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने पिछली 2 फ़रवरी को अखिल भारत खादी और ग्राम उद्योग बोर्ड का उद्घाटन करते वक़्त दी. यह बोर्ड अभी हाल ही में बना है, जिस में श्री सतीशचन्द्र दास गुप्ता (सोदपुर), श्री लक्ष्मी बाबू (मुज़फ़्फ़रपुर), विचित्र भाई (यू. पी.), जाजू जी (वर्धा) और जेराजानी जी (बम्बई) जैसे पुराने मंजे हुए और चोटी के रचनात्मक कारकर्त्ता शामिल हैं. हां, नामी गांधी वादी अर्थ शास्त्री डाक्टर जे सी. कुमारप्पा का उसमें न होना जरूर खटकता है

प्रधान मंत्री ने अपनी स्पीच में जो कुछ कहा उसका निचोड़ यह है:—

(1) बड़े मशीनदार उद्योगों और ग्राम उद्योगों में कोई बुनियादी झगड़ा नहीं है और आज देश में दोनों के मिलान की बड़ी ज़रूरत है.

(2) खादी के अन्दर "अन्दरूनी ताक़त" होनी चाहिये क्योंकि वह सरकारी मदद के सहारे ज़िन्दा नहीं रह सकती.

(3) अगर खादी के लिये इमदाद ली गई तो वह अपने पैरों पर खड़ी नहीं हो सकती.

(4) खादी फ़ौज के लायक़ नहीं है

हम यहां इन चारों बातों पर ज़रा तफ़सील के साथ चर्चा करना चाहते हैं.

मशीनदार उद्योगों और ग्राम उद्योगों में बुनयादी झगड़ा

बड़ी नम्रता पर गम्भीरता के साथ हमारा निवेदन है कि मशीनदार उद्योगों या बड़े कारोबार और ग्राम उद्योगों या छोटे धन्धों में बुनियादी झगड़ा भले हो न हो पर बुनियादी भेद ज़रूर है. और वह यह कि बड़े कारोबार के लिये बड़े बड़े मरकज़ी या केन्द्रीय इन्तज़ाम, बड़ी बड़ी पूंजी या पूंजिखाना की ज़रूरत होती है दूसरे लफ़्ज़ों में बड़े कारोबार का सहारा नौकर शाही, ताना शाही (निजी या सरकारी) और फ़ौजी शाही होती है और यह

کھادی بورڈ، سرکار اور کھادی

آج ہمارے دیش میں گرام ادیوگوں کی اور خاص کر کھادی اور کرگھا ادیوگ کی جو دردشا ہے اسے دیکھ کر اور بھارت سرکار کی مالی اور ادیوگ نیتی اور درشٹی کو سمجھ کر ہمارے اوپر یہ اثر تیزی سے پڑ رہا ہے کہ اپنے اس ابھاگے دیش میں کسی چیز کے لئے جگہ ہو یا نہ ہو مگر گرام ادیوگوں اور خاص کر کھادی کے لئے تو کم سے کم کوئی جگہ نہیں ہے۔ اس سمبندھ میں جو کچھ شک تھے وہ اس اسپیچ کو پڑھ کر اور بھی دور ہوگئے جو ہمارے پردھان منتری پنڈت جواہر لال نہرو نے پچھلی 2 فروری کو اکھل بھارت کھادی اور گرام ادیوگ بورڈ کا ادگھاٹن کرتے وقت دی یہ بورڈ ابھی حال ہی میں بنا ہے، جس میں شری ستیش چندر داس گپتا (سودپور)، شری لکشمی بابو (مظفر پور)، وچتر بھائی (یو۔ پی۔)، جاجو جی (وردھا) اور جیراجانی جی (بمبئی) جیسے پرانے منجھے ہوئے اور چوٹی کے رچناتمک کارکرتا شامل ہیں۔ ہاں، نامی گاندھی وادی ارتھ شاستری ڈاکٹر جے۔ سی۔ کمارپا کا اس میں نہ ہونا ضرور کھٹکتا ہے۔

پردھان منتری نے اپنی اسپیچ میں جو کچھ کہا اس کا نچوڑ یہ ہے:—

(1) بڑے مشین دار ادیوگوں اور گرام ادیوگوں میں کوئی بنیادی جھگڑا نہیں ہے اور آج دیش میں دونوں کے ملان کی بڑی ضرورت ہے۔

(2) کھادی کے اندر "اندرونی طاقت" ہونی چاہئے کیونکہ وہ سرکاری مدد کے سہارے زندہ نہیں رہ سکتی۔

(3) اگر کھادی کے لئے امداد لی گئی تو وہ اپنے پیروں پر کھڑی نہیں ہوسکتی۔

(4) کھادی فوج کے لائق نہیں ہے۔

ہم یہاں ان چاروں باتوں پر ذرا تفصیل کے ساتھ چرچہ کرنا چاہتے ہیں۔

مشین دار ادیوگوں اور گرام ادیوگوں میں بنیادی جھگڑا

بڑی نمرتا اور گمبھیرتا کے ساتھ ہمارا نویدن ہے کہ مشین دار ادیوگوں یا بڑے کاروبار اور گرام ادیوگوں یا چھوٹے دھندوں میں بنیادی جھگڑا بھلے ہی نہ ہو پر بنیادی بھید ضرور ہے۔ اور وہ یہ کہ بڑے کاروبار کے لئے بڑے بڑے مرکزی یا کیندری انتظام، بڑی بڑی پونجی یا پونجی خانہ کی ضرورت ہوتی ہے دوسرے لفظوں میں بڑے کاروبار کا سہارا نوکر شاہی، تاناشاہی (نجی یا سرکاری) اور فوجی شاہی ہوتی ہے اور یہ

है, लम्बी निद्रा की तरफ़ धीरे-धीरे बढ़ रही है. उसने साफ़ बताया था कि उसकी दवा काफ़ी नहीं है. वही दवा 'दवा' है, जिसे वह पहले से मांगती आई है—पिताजी के दर्शन.

वह कहा करते थे कि गरीबी के कारन माताएं प्रसव वेदना के साथ साथ अपने बच्चों को मार डालती हैं; पालतू जानवरों की तरह बेच डालती हैं; बच्चे ओढ़ने के कपड़े न रहने के कारन ठंड में पड़े रो-रोकर सिकुड़-सिकुड़कर मर जाते हैं वगैरा वग़ैरा. अगर ऐसा हो, तो अपना ये दुख इतना बड़ा नहीं है रुकमनी ने सोचा. यह बच्ची भी त्याग और दुख सहती है और अपना फ़र्ज़ अदा करती है. शायद वह सोचती होगी कि अगर उसका बोझ दूर हो जाय तो उसकी मां भी इस दम घुटनेवाली चहार-दीवारी से छुटकारा पा, पिता के काम में मदद देगी और अपना धर्म पूरा करेगी।

वहीं बैठे, आगे बढ़ रुकमनी ने बच्ची का गाल चूम लिया बच्ची ने धीरे धीरे अपनी नन्ही अलसाई आंखें खोलीं। रुकमनी को लगा कि उसकी नज़र फ़ोटो पर टिकी हुई है. मगर ऐसा कोई भाव आंखों से साफ़ नहीं था. उसके दोनों हाथ मां से जैसे चिपट जाने के लिये ज़रा उठे पर कमज़ोर होकर बिछौने पर ही ढले पड़े रहे और वही पुराना सवाल—"बाबू जी कहां हैं?" आख़िरी दम के साथ उसके पीले से होठों से आवाज़ आई, इतनी धीमी आवाज़ कि सिर्फ़ मां ही जान पाई.

—'दक्खिन भारत' से

ہے' لمبی ندرا کی طرف دھیرے دھیرے بڑھ رہی ہے. اُس نے صاف بتایا تھا کہ اُسکی دوا کافی نہیں ہے' وہی دوا 'دوا' ہے' جسے وہ پہلے سے مانگتی آئی ہے—پتا جی کے درشن.

وہ کہا کرتے تھے کہ غریبی کے کارن ماتائیں پرسو ویدنا کے ساتھ ساتھ اپنے بچوں کو مار ڈالتی ہیں؛ پالتو جانوروں کی طرح بیچ ڈالتی ہیں؛ بچے اوڑھنے کے کپڑے نہ رہنے کے کارن ٹھنڈ میں پڑے رو رو کر سکڑ سکڑ کر مر جاتے ہیں' وغیرہ وغیرہ. اگر ایسا ہو' تو اپنا یہ دکھ اِتنا بڑا نہیں ہے' رکمنی نے سوچا. یہ بچی بھی تیاگ اور دکھ سہتی ہے اور اپنا فرض ادا کرتی ہے. شاید وہ سوچتی ہوگی کہ اگر اس کا بوجھ دور ہو جائے تو اسکی ماں بھی اِس دم گھٹنے والی چہار دیواری سے چھٹکارا پا' پتا کے کام میں مدد دیگی اور اپنا دھرم پورا کریگی.

وہیں بیٹھے' آگے بڑھ رکمنی نے بچی کا گال چوم لیا. بچی نے دھیرے دھیرے اپنی ننھی السائی آنکھیں کھولیں. رکمنی کو لگا کہ اُسکی نظر فوٹو پر ٹکی ہوئی ہے' مگر ایسا کوئی بھاؤ آنکھوں سے صاف نہیں تھا. اُسکے دونوں ہاتھ ماں سے جیسے چپٹ جانے کے لئے ذرا اٹھے پر کمزور ہوکر بچھونے پر ہی ٹھلکے پڑے رہے اور وہی پرانا سوال—"بابو جی کہاں ہیں؟" آخری دم کے ساتھ اُس کے پیلے سے ہونٹوں سے آواز آئی' اِتنی دھیمی آواز کہ صرف ماں ہی جان پائی.

—'دکھن بھارت' سے

हमने समझ रखा है कि साहित्य की रचना के लिये कल्पना की सूझ बूझ और तेज़ क़लम काफ़ी है; पर यही विचार हमारी अदबी गिरावट का कारन है .....आदर्श का फैलाव बड़ा होने से भाषा अपने आप सरल हो जाती है......जो साहित्यकार अमीरों का मुंह जोहने वाला है वह रईसी रचना शैली अपनाता है, जो जन साधारन का है वह जन साधारन की भाषा में लिखता है... प्रोपेगेंडा बदनाम शब्द है, लेकिन आज का विचार पैदा करने वाला, ताक़त देने वाला और स्वस्थ साहित्य प्रोपेगेंडा के सिवा न कुछ है, न हो सकता है, न होना चाहिये और इस तरह के प्रोपेगेंडा के लिये साहित्य से असरदार कोई साधन ब्रह्मा ने नहीं रचा.

—प्रेमचन्द

ہم نے سمجھ رکھا ہے کہ ساہتیہ کی رچنا کے لئے کلپنا کی سوجھ بوجھ اور تیز قلم کافی ہے' پر یہی وچار ہماری ادبی گراوٹ کا کارن ہے......آدرش کا پھیلاؤ بڑا ہونے سے بھاشا اپنے آپ سرل ہو جاتی ہے......جو ساہتیہ کار امیروں کا منہ جوہنے والا ہے وہ رئیسی رچنا شیلی اپناتا ہے' جو جن سادھارن کا ہے وہ جن سادھارن کی بھاشا میں لکھتا ہے......پروپیگنڈا بدنام شبد ہے' لیکن آج کا وچار پیدا کرنے والا طاقت دینے والا اور سوستھ ساہتیہ پروپیگنڈا کے سوا نہ کچھ ہے' نہ ہوسکتا ہے' نہ ہونا چاہئے اور اِس طرح کے پروپیگنڈا کے ساہتیہ سے اثردار کوئی سادھن برہما نے نہیں رچا.

—پریم چند

जवाब दिया, तसल्ली ज़ाहिर की. इसके अलावा वह करते ही क्या ? उनको भी मालूम नहीं था, वह कहां हैं. जो उनसे मिले थे वह भी ठीक ठीक जवाब नहीं दे पाए आख़िर किसी ने लिखा कि सुरक्षित रूप से सफ़र करने की तैयारी हो जाने पर वह बच्ची के पास आ जाएंगे यह जवाब मिलते ही, रुकमनी को ज़रा तसल्ली हुई

बाबूजी से मिले बिना ही, बच्ची की तबीयत बिगड़े कितने ही दिन गुज़र गये. उसका शरीर बरामदे के फ़र्श से कमरे के अंदर बीमारी वाली खाट में लाया गया. वह बिलकुल बोल न पाती, आंखें मुश्किल से खोलती. जब कभी कोई बच्चा उसके पास दौड़ आता और बुलाता तो भी वह फ़ौरन आंखें न खोलती; आंखें खुलने पर भी होंट न हिलते. वह बड़ी देर तक आंखें मूंदे पड़ी रहती. रुकमनी चौंक सी जाती, जब वह अपनी बच्ची की तरफ़ बग़ैर पलक मारे देखती. बच्ची की आंखें जब खुल जातीं और होंट हिलने लगते तो वह और भी चौंक जाती. क्योंकि उसे मालूम था कि वह क्या पूछेगी—वही पुराना सवाल, "बाबूजी नहीं आये ?"

बच्ची की इस बुरी हालत पर उस घर में और किसीको न उतनी चिन्ता है, न दुख. इसमें अचरज ही क्या है ? बड़े परिवार में दो प्रानियों की गिनती ही क्या ? तिसपर उनसे सभी नाख़ुश हैं. रुकमनी के दिन जहां रोते-रोते रेंगते से हैं, वहां दूसरों के दिन मुलाक़ातों और डिनर पारटियों से हलके ही उड़ते जाते हैं ? उन लोगों की ज़िम्मेदारी तभी पूरी हो गयी, जब डाक्टर और दवा का इन्तज़ाम कर दिया गया ?

बेटी को ज़रा बुख़ार सा आया कि नहीं, बाबू जी का मन घबराने लगता और नींद उचट जाती ? मगर आज वह कहां हैं ? उनकी बेटी का शरीर श्मशान की तरफ़ बढ़ रहा है. वह कहीं गंदे मैले फ़र्श पर सोते होंगे क्या ? बेटी को एकाध बार देखने की उन्होंने कितनी कोशिश की होगी ? मगर फिर भी यह अच्छा ही हुआ कि वह इन दुश्मनों के बीच में नहीं आये. इसी घर के लोग ही शायद उनको पकड़वा देते. इस बच्ची की नन्हीं जान अगर बुझ गई तो उससे सिर्फ़ दो प्रानी ही दुखी होंगे और उस दुख का घाव जीवन भर न भरेगा. फिर भी रुकमनी ने प्रार्थना की कि उनको नुक़सान न हो, क्योंकि उनकी जान हज़ारों की भलाई के लिये बहुत ज़रूरी है.

पति की फ़िकर से अपने मन को अलग कर, रुकमनी ने अपनी बच्ची की तरफ़ देखा. कितनी देर से वह उसी तरह आंखें मूंदे पड़ी हुई है शायद वह सोती होगी. नहीं तो... ..

हां, वह भी हो सकता है. डाक्टर के हाव भाव से साफ़ मालूम हो रहा था कि वह चेतना जो अभी बुझने वाली

جواب دیا، تسلی ظاہر کی ۔ اِس کے علاوہ وہ کرتے ہی کیا ؟ اُن کو بھی معلوم نہیں تھا، وہ کہاں ہیں ۔ جو اُن سے ملے تھے وہ بھی ٹھیک ٹھیک جواب نہیں دے پائے ۔ آخر کسی نے لکھا کہ سرکشت روپ سے سفر کرنے کی تیاری ہو جانے پر وہ بچی کے پاس آ جائیں گے ۔ یہ جواب ملتے ہی رکمنی کو ذرا تسلی ہوئی ۔

بابو جی سے ملے بنا ہی، بچی کی طبیعت بگڑے کتنے ہی دن گذر گئے ۔ اُس کا شریر برآمدے کے فرش سے کمرے کے اندر بیماری والی کھاٹ میں لایا گیا ۔ وہ بالکل بول نہ پاتی، آنکھیں مشکل سے کھولتی ۔ جب کبھی کوئی بچہ اُس کے پاس دوڑ آتا اور بلاتا تو بھی وہ فوراً آنکھیں نہ کھولتی؛ آنکھیں کھلنے پر بھی ہونٹ نہ ہلتے ۔ وہ بڑی دیر تک آنکھیں موندے پڑی رہتی ۔ رکمنی چونک سی جاتی، جب وہ اپنی بچی کی طرف بغیر پلک مارے دیکھتی ۔ بچی کی آنکھیں جب کھل جاتیں اور ہونٹ ہلنے لگتے تو وہ اور بھی چونک جاتی ۔ کیونکہ اُسے معلوم تھا کہ وہ کیا پوچھے گی — وہی پرانا سوال، "بابو جی نہیں آئے ؟"

بچی کی اِس بری حالت پر اُس گھر میں اور کسی کو نہ اُتنی چنتا ہے، نہ دکھ ۔ اس میں اچرج ہی کیا ہے ؟ بڑے پریوار میں دو پرانیوں کی گنتی ہی کیا ؟ تس پر اُن سے سبھی ناخوش ہیں ۔ رکمنی کے دن جہاں روتے روتے رینگتے سے ہیں، وہاں دوسروں کے دن ملاقاتوں اور ڈنر پارٹیوں سے ہلکے ہو اُڑتے جاتے ہیں ۔ ان لوگوں کی ذمہ داری تبھی پوری ہوگئی جب ڈاکٹر اور دوا کا انتظام کر دیا گیا ۔

بیٹی کو ذرا بخار سا آیا کہ نہیں، بابو جی کا من گھبرانے لگتا اور نیند اُچٹ جاتی ۔ مگر آج وہ کہاں ہیں ؟ اُن کی بیٹی کا شریر شمشان کی طرف بڑھ رہا ہے ۔ وہ کہیں گندے میلے فرش پر سوتے ہونگے کیا ؟ بیٹی کو ایک آدھ بار دیکھنے کی اُنہوں نے کتنی کوشش کی ہوگی ؟ مگر پھر بھی یہ اچھا ہی ہوا کہ وہ اُن دشمنوں کے بیچ میں نہیں آئے ۔ اِسی گھر کے لوگ ہی شاید ان کو پکڑوا دیتے ۔ اِس بچی کی ننھی جان اگر بجھ گئی تو اُس سے صرف دو پرانی ہی دکھی ہونگے ۔ اور اُس دکھ کا گھاؤ جیون بھر نہ بھریگا ۔ پھر بھی رکمنی نے پرارتھنا کی کہ ان کو نقصان نہ ہو، کیونکہ اُن کی جان ہزاروں کی بھلائی کے لئے بہت ضروری ہے ۔

پتی کی فکر سے اپنے من کو الگ کر، رکمنی نے اپنی بچی کی طرف دیکھا ۔ کتنی دیر سے وہ اُسی طرح آنکھیں موندے پڑی ہوئی ہے ۔ شاید وہ سوتی ہوگی ۔ نہیں تو......

ہاں، وہ بھی ہو سکتا ہے ۔ ڈاکٹر کے ہاؤ بھاؤ سے صاف معلوم ہو رہا تھا کہ وہ چیتنا جو ابھی بجھنے والی

धीरे धीरे बच्ची भी बहुत कम सवाल करती, शायद यह समझ कर कि उसकी मां ठीक ठीक जवाब नहीं दे पाती. हां, दूसरे कारन भी थे जब वह पूछती कि बाबू जी मिट्टी के अन्दर हैं यह उनको बड़ों ने ही सिखाया था. यह सुन कर, रुकमनी ने एक दिन बच्चों को फटकारा. तब उसके बड़े भाई ने पैरवी की कि बच्चे सही कहते हैं, क्योंकि वह अंडरग्राउन्ड का तरजुमा कर तो करते हैं. रुकमनी की मां सवाल सुनते ही गालियां बरसा देती, "बाबू जी, बाबू जी, हमेशा वही बाबू जी ! हम सब क्या आदमी नहीं, जानवर हैं ? दुनिया को सुधारने का दम भरे फिरता है ! उसके लिये अपनी बच्ची को मार डालना है क्या उस पाजी को !" ऐसा शुरू कर के गालियों की कड़ियां मीलों लम्बी हो जातीं उन सबकी राय थी कि रुकमनी उस शैतान से नाता ही तोड़ दे तभी उसकी भलाई होगी. उनकी नज़र में उसके पति डाकू और क़साई से भी गए गुज़रे हैं. उसने अपनी स्त्री और बच्ची को निजी स्वार्थ के लिये छोड़ा था क्या ? आराम और आमोद में वह पले थे. उन्होंने अपनी स्त्री को और बच्ची को प्राणों से बढ़ कर प्यार किया था. उन दोनों से दूर, पुलीस की नज़र से बचकर, भूखे रह, वह जीते हैं तो उनका रास्ता कितना ऊंचा है और उनका मक़सद कितना महान है ? सोचते सोचते रुकमनी का प्रेम और प्यार धीरे धीरे उनकी आराधना में बदल गया.

आप दिन बच्ची की खेल हंसी बिलकुल बन्द सी हो गई. वह पुराना सावाल भी बहुत कम करती आंगन में उछलते कूदते दूसरे बच्चों से दूर, बरामदे के किसी खंबे से पीठ लगाए, नन्हे नन्हे पैर फैलाए. अपने बाबू जी की राह देखती रहती. यह देख, रुकमनी का दिल फट सा जाता. अगर बैठी बैठी थक जाती तो वहीं लेट जाती, थकान से आंखें आप मुंद जातीं. किसी की आहट सुनी कि नहीं वह फ़ौरन उठ बैठती जब मालूम हो जाता कि बाबू जी नहीं हैं, दुबले पतले नन्हे हाथों से अपनी आंखें मलती और वहीं वैसे ही लेट जाती. यह देखते देखते रुकमनी को लगा कि वह पागल सी हो जायगी. मां बाप और पड़ोसियों ने जिस बच्ची को बिना फ़र्श पर बिठाए, पाला पोसा था, आज वह अपने पिता जी से अलग हो गई तो मां के घर वाले उसे पोटली की तरह ठोकरें मारते हैं. अगर पिता बेटी को देखते...! उनके साथियों में कोई देख लेता...

रुकमनी ने उन सब को ख़त लिखा, जिनका पता उसे मालूम था; "उनको एक बार, सिर्फ़ एक बार, किसी तरह पहुंचा दीजिए. अपने बाबू जी को एक बार देख, बच्ची चंगी हो जायगी." सभी ख़तों में वही प्रार्थना थी. सब ने

دھیرے دھیرے بچی بھی بہت کم سوال کرتی، شاید یہ سمجھ کر کہ اسکی ماں ٹھیک ٹھیک جواب نہیں دے پاتی۔ ہاں، دوسرے کارن بھی تھے۔ جب وہ پوچھتی کہ بابو جی مٹی کے اندر ہیں یہ اُن کو بڑوں نے ہی سکھایا تھا۔ یہ سن کر، رکمنی نے ایک دن بچوں کو پھٹکارا۔ تب اُس کے بڑے بھائی نے پیروی کی کہ بچے سہی کہتے ہیں، کیونکہ وہ انڈر گراونڈ کا ترجمہ بھر تو کرتے ہیں۔ رکمنی کی ماں سوال سنتے ہی گالیاں برسا دیتی، "بابو جی، بابو جی، ہمیشہ یہی بابو جی! ہم سب کیا آدمی نہیں، جانور ہیں؟ دنیا کو سدھارنے کا دم بھرے پھرتا ہے! اُس کے لئے اپنی بچی کو مار ڈالنا ہے کیا اُس پاجی کو!" ایسا شروع کر کے گالیوں کی کڑیاں میلوں لمبی ہو جاتیں۔ اُن سب کی رائے تھی کہ رکمنی اس شیطان سے ناتا ہی توڑ دے تبھی اسکی بھلائی ہوگی۔ اُن کی نظر میں اُس کے پتی ڈاکو اور قصائی سے بھی گئے گذرے ہیں۔ اُس نے اپنی استری اور بچی کو نجی سوارتھ کے لئے چھوڑا تھا کیا؟ آرام اور آمود میں وہ پلے تھے۔ انہوں نے اپنی استری کو اور بچی کو پرانوں سے بڑھ کر پیار کیا تھا۔ اُن دونوں سے دور، پولیس کی نظر سے بچ کر، بھوکے رہ، وہ جیتے ہیں تو اُن کا راستہ کتنا اونچا ہے اور اُن کا مقصد کتنا مہان ہے؟ سوچتے سوچتے رکمنی کا پریم اور پیار دھیرے دھیرے اُن کی آرادھنا میں بدل گیا۔

آج دن بچی کی کھیل ہنسی بالکل بند سی ہو گئی۔ وہ پرانا سوال بھی بہت کم کرتی۔ آنگن میں اچھلتے کودتے دوسرے بچوں سے دور، برامدے کے کسی کھمبے سے پیٹھ لگائے، ننھے ننھے پیر پھیلائے، اپنے بابو جی کی راہ دیکھتی رہتی۔ یہ دیکھ، رکمنی کا دل پھٹ سا جاتا۔ اگر بیٹھی بیٹھی تھک جاتی تو وہیں لیٹ جاتی، تھکان سے آنکھیں آپ مند جاتیں۔ کسی کی آہٹ سنی کہ نہیں وہ فوراً اُٹھ بیٹھتی۔ جب معلوم ہو جاتا کہ بابو جی نہیں ہیں، دبلے پتلے ننھے ہاتھوں سے اپنی آنکھیں ملتی اور وہیں ویسے ہی لیٹ جاتی۔ یہ دیکھتے دیکھتے رکمنی کو لگا کہ وہ پاگل سی ہو جائے گی۔ ماں باپ اور پڑوسیوں نے جس بچی کو بنا فرش پر بٹھائے، پالا پوسا تھا، آج وہ اپنے پتا جی سے الگ ہو گئی تو ماں کے گھر والے اُسے پوٹلی کی طرح ٹھوکریں مارتے ہیں۔ اگر پتا بیٹی کو دیکھتے.........! اُن کے ساتھیوں میں کوئی دیکھ لیتا.........

رکمنی نے اُن سب کو خط لکھا، جن کا پتہ اُسے معلوم تھا: "اُن کو ایک بار، صرف ایک بار، کسی طرح پہونچا دیجئے۔ اپنے بابو جی کو ایک بار دیکھ، بچی چنگی ہو جائے گی۔" سبھی خطوں میں وہی پرارتھنا تھی۔ سب نے

दूसरे दिन पुलीस ने घर की तलाशी ली. रुकमनी को पति से खबर मिली कि वह अपनी मां के घर चली जाय. उसने चिट्ठी लिख कर, मां के घर से किसी को बुलाया नहीं. वह अकेली अपनी बेटी को ले, मां के घर चल दी. बिना इत्तिला के, जब अपनी बेटी और नातिन आ गईं, तो मां को रंज हुआ या खुशी यह रुकमनी समझ नहीं पाई. माता की आंखें, लड़की का गला, कलाई और कान नंगा पा, गुस्से से जल गईं. उस परिवार में ऐसा अब तक कोई न था जिसके शरीर पर सोना तिनका बराबर भी न हो. उस आदमी ने अपनी ज़िन्दगी बर्बाद तो की ही अपनी स्त्री को भी न छोड़ा, जो उसकी स्त्री के पद के लिये खुद तैयार हो गई थी. उसकी ताली (मंगल-सूत्र) तक उड़ा ली गई. उस नन्ही बच्ची को भी अपाहिज जैसी क्यों छोड़ गया.

दूसरों की अवहेलना भरी नज़र या तीखा तिरछा व्यंग रुकमनी सह लेती; उसका दर्द उसे महसूस नहीं होता. मगर उसके दिल को यह सवाल ज़रूर चोट करता कि 'अम्मा, बाबू जी कहां हैं ?' उसे पता नहीं, बेटी यह सवाल कब पूछ बैठती. दूसरे बच्चों से मिल, जब वह खेलती, उछलती, कूदती तो रुकमनी का मन शान्त हो जाता. मगर सन्तोश की सांस उसके दिल से निकल, हवा में लीन हुई कि नहीं, बच्ची दौड़ी दौड़ी आती, उसके घुटनों से चिपट जाती और वही सवाल पूछ बैठती—'अम्मा, बाबू जी कहां ?" आधी रात को वह सपने में अपने बाबू जी के वात्सल्य का अनुभव करती. कभी वह मुस्कराती, कभी उसके गालों पर लाली फैल जाती. यह देख, रुकमनी के मन में तसल्ली हो जाती और उसकी आंखें धीरे धीरे मुंद जातीं. तभी बेटी झट उठ बैठती, आंखें मलती, वही सवाल करती—"अम्मा, बाबू जी अभी नहीं आए ?" यह सवाल उसके दिल को दहला देता और बुझते दुख को उबाल गरम आंसुओं में बहा देता. शुरू शुरू में उसे उनका पत्र मिलता. उसके बल पर वह कह सकती कि बिटिया "बाबू जी अभी आएंगे." मगर आए दिन खत भी ठीक ठीक न मिलता. बेटी भी इस सवाल से उसको ज़ियादा तंग भी न करती. मगर इससे ज़ियादा रुकमनी को और किसी चीज़ ने दुख दिया. बच्ची का उत्साह और जोश इधर कम होने लगा. रुकमनी को खूब मालूम था कि वह कितनी मुश्किल से एक खत उसके पास पहुंचाते. मगर उस नन्ही बच्ची को वह क्या कहे ? उसके बाबू जी पर किसी की कड़ी निगाह है, इसलिये नहीं आ पाते और खत नहीं लिख पाते और लुक छिप चलते हैं—यह सब बता कर उस नन्हे दिल को डराना उसने ठीक नहीं समझा. वह क्या जाने कि वह कब आएंगे ? वह किसी समय आ सकते हैं और कभी नहीं भी आ सकते हैं.

دوسرے دن پولیس نے گھر کی تلاشی لی ۔ رکمنی کو پتی سے خبر ملی کہ وہ اپنی ماں کے گھر چلی جائے۔ اس نے چٹھی لکھ کر، ماں کے گھر سے کسی کو بلایا نہیں ۔ وہ اکیلی اپنی بیٹی کو لے، ماں کے گھر چل دی۔ بنا اطلاع کے، جب اپنی بیٹی اور ناتن آ گئیں، تو ماں کو رنج ہوا یا خوشی یہ رکمنی سمجھ نہیں پائی ۔ ماتا کی آنکھیں، لڑکی کا گلا، کلائی اور کان ننگا پا، غصہ سے جل گئیں ۔ اس پریوار میں ایسا اب تک کوئی نہ تھا جس کے شریر پر سونا تنکا برابر بھی نہ ہو ۔ اس آدمی نے اپنی زندگی برباد تو کی ہی اپنی استری کو بھی نہ چھوڑا، جو اس کی استری کے پد کے لئے خود تیار ہو گئی تھی۔ اس کی تالی (منگل سوتر) تک اڑا لی گئی ۔ اس ننھی بچی کو بھی اپاہج جیسی کیوں چھوڑ گیا ۔

دوسروں کی اوہیلنا بھری نظر یا تیکھا ترچھا وینگ رکمنی سہ لیتی؛ اس کا درد اسے محسوس نہیں ہوتا ۔ مگر اس کے دل کو یہ سوال ضرور چوٹ کرتا کہ "اماں، بابو جی کہاں ہیں؟" اسے پتہ نہیں، بیٹی یہ سوال کب پوچھ بیٹھتی۔ دوسرے بچوں سے مل، جب وہ کھیلتی، اچھلتی، کودتی تو رکمنی کا من شانت ہو جاتا ۔ مگر سنتوش کی سانس اس کے دل سے نکل، ہوا میں لین ہوئی کہ نہیں، بچی دوڑی دوڑی آتی، اس کے گھٹنوں سے چپٹ جاتی اور وہی سوال پوچھ بیٹھتی—"اماں، بابو جی کہاں؟" آدھی رات کو وہ سپنے میں اپنے بابو جی کے واتسلیہ کا انوبھو کرتی۔ کبھی وہ مسکراتی، کبھی اس کے گالوں پر لالی پھیل جاتی ۔ یہ دیکھ، رکمنی کے من میں تسلی ہو جاتی اور اسکی آنکھیں دھیرے دھیرے مند جاتیں۔ تبھی بیٹی جھٹ اٹھ بیٹھتی، آنکھیں ملتی، وہی سوال کرتی—"اماں، بابو جی ابھی نہیں آئے؟" یہ سوال اس کے دل کو دہلا دیتا اور بجھتے دکھ کو ابال گرم آنسوؤں میں بہا دیتا ۔ شروع شروع میں اسے ان کا پتر ملتا ۔ اس کے بل پر وہ کہہ سکتی کہ بٹیا "بابو جی ابھی آئینگے۔" مگر آئے دن خط بھی ٹھیک ٹھیک نہ ملتا ۔ بیٹی بھی اس سوال سے اسکو زیادہ تنگ بھی نہ کرتی۔ مگر اس سے زیادہ رکمنی کو اور کسی چیز نے دکھ دیا۔ بچی کا اتساہ اور جوش ادھر کم ہونے لگا ۔ رکمنی کو خوب معلوم تھا کہ وہ کتنی مشکل سے ایک خط اس کے پاس پہنچاتے۔ مگر اس ننھی بچی کو وہ کیا کہے ؟ اس کے بابو جی پر کسی کی کڑی نگاہ ہے، اس لئے نہیں آ پاتے اور خط نہیں لکھ پاتے اور لک چھپ چلتے ہیں—یہ سب بتا کر اس ننھے دل کو ڈرانا اس نے ٹھیک نہیں سمجھا۔ وہ کیا جانے کہ وہ کب آئینگے؟ وہ کسی سمے آسکتے ہیں اور کبھی نہیں بھی آسکتے ہیں۔

में आनन्द के आंसू टपकते थे, आज उसी को देख-देख, रोते रोते आंसू भी सूख गए हैं.

सपने जब सच निकले और जीवन नैय्या आनन्द के समन्दर में चलने लगी......एक दिन, यह मतलब नहीं कि अचानक एक दिन, वह एकदम बदल गए रुकमनी ने पति को दोशी न ठहराया. भले ही दूसरों की नजर में वह बेवकूफ या मूर्ख ही क्यों न हों. उसने उसके बारे में कोई सवाल तक उनसे न पूछा, न उनको उससे हटाने की कोशिश भी की. उसे लगा, उसके विचार और दृश्टिकोन धीरे धीरे उनके अनुकूल हो रहे हैं जिसका वह शक करती थी. वही हुआ. उन्होंने अपनी नौकरी से इस्तीफ़ा दे दिया. अच्छी ख़ासी तनख़ा से हाथ धो बैठे. उसे तसल्ली हुई कि उसके पति ने अपनी तरक़्क़ी के लिये न हाकिमों की ख़ुशामद की, न उन्हें रिश्वत ही दी. उन्होंने यह भी कहा कि इस बात में उसे उनको बधाई ही देनी चाहिये. अपनी ज़िद और आदर्श के मुताबिक़ छोटे मोटे काम कर, जो कुछ वह कमाते, वह दे देते. इसलिये यह शिकायत भी न रही कि आख़िर सब कुछ बरबाद करके माता पिता की शरन में दोनों आ गए. दोनों के घर से जो ख़त आते थे, उनमें व्यंग और धमकियां भरी रहती थीं. मगर फिर भी रुकमनी दुखी नहीं हुई. वह जीवन के प्याले को कभी ख़ाली न होने देती थी. उसे तसल्ली और प्रेम की बूंदों से वह भर देती थी. लेकिन उसका मन, उस समय सूना सा हो गया था जब कि वह घटना घटी. रुकमनी को मालूम था कि पति पर सरकार की कड़ी निगाह लगी थी. फिर भी जब उसकी लोहे की मुट्ठी सामने दिखाई पड़ी, वह सन्न सी रह गई, बाहर से अपने को शांत दिखाने की कोशिश की, मगर बेकार !

ओफ़ ! उस रात की घटना कितनी डरावनी और दर्दनाक थी. सांझ हुई और सांझ रात हुई, तो रुकमनी को लगा कि उसके दिमाग़ और ज़िन्दगी में भी अंधेरा छा रहा हो. बाबू जी की इन्तज़ारी में बेटी की नन्ही नन्ही आंखें मुंद गईं, रुकमनी ने उसे अपनी गोद में बिठा लिया और बोली—"तुम क्यों इस तरह ऊंघती हो. बाबूजी जब आते हैं, तुमको जगाया करती हूं न ? सो बिटिया, मेरी गोद में सो जाओ." और फिर ?

रुकमनी को याद नहीं कि कितनी देर वहीं दीवार से पीठ लगाए, वह बैठी रही. बाबूजी की आहट सुनने की बेटी इन्तज़ारी कर रही थी. उसने मां से पूछा—"क्यों अम्मा, बाबू जी नहीं आए ?" वह सवाल मानो आंसुओं से गीला था. कैसे उस सवाल का जवाब दे ? उसने बच्ची को अपनी छाती से लगा लिया. वह चीख़ सी उठी. उसके सामने से डरावने नज़्ज़ारों का लम्बा बड़ा जलूस जैसे निकल रहा हो.

میں آنند کے آنسو ٹپکتے تھے، آج اسی کو دیکھ دیکھ، روتے روتے آنسو بھی سوکھ گئے ہیں۔

سپنے جب سچ نکلے اور جیون نیا آنند کے سمندر میں چلنے لگی۔ ایک دن، یہ مطلب نہیں کہ اچانک ایک دن، وہ ایک دم بدل گئے۔ رکمنی نے پتی کو دوشی نہ ٹھہرایا، بھلے ہی دوسروں کی نظر میں وہ بیوقوف یا مورکھ ہی کیوں نہ ہوں۔ اس نے اس کے بارے میں کوئی سوال تک ان سے نہ پوچھا، نہ ان کو اس سے ہٹانے کی کوشش بھی کی۔ اسے لگا، اس کے وچار اور درشٹی کون دھیرے دھیرے ان کے انوکول ہو رہے ہیں جس کا وہ شک کرتی تھی۔ وہی ہوا۔ انہوں نے اپنی نوکری سے استعفیٰ دے دیا۔ اچھی خاصی تنخواہ سے ہاتھ دھو بیٹھے۔ اسے تسلی ہوئی کہ اس کے پتی نے اپنی ترقی کے لئے نہ حاکموں کی خوشامد کی، نہ انہیں رشوت ہی دی۔ انہوں نے یہ بھی کہا کہ اس بات میں اسے ان کو بدھائی ہی دینی چاہئے۔ اپنی ضد اور آدرش کے مطابق چھوٹے موٹے کام کر، جو کچھ وہ کماتے، وہ دے دیتے۔ اس لئے یہ شکایت بھی نہ رہی کہ آخر سب کچھ برباد کرکے ماتا پتا کی شرن میں دونوں آگئے۔ دونوں کے گھر سے جو خط آتے تھے، ان میں ویَنگ اور دھمکیاں بھری رہتی تھیں۔ مگر پھر بھی رکمنی دکھی نہیں ہوئی۔ وہ جیون کے پیالے کو کبھی خالی نہ ہونے دیتی تھی۔ اسے تسلی اور پریم کی بوندوں سے وہ بھر دیتی تھی۔ لیکن اس کا من، اس سمے سونا سا ہوگیا تھا جب کہ وہ گھٹنا گھٹی۔ رکمنی کو معلوم تھا کہ پتی پر سرکار کی کڑی نگاہ لگی تھی۔ پھر بھی جب اس کی لوہے کی مٹھی سامنے دکھائی پڑی، وہ سن سی رہ گئی، باہر سے اپنے کو شانت دکھانے کی کوشش کی، مگر بیکار !

اوف ! اس رات کی گھٹنا کتنی ڈراونی اور دردناک تھی۔ سانجھ ہوئی اور سانجھ رات ہوئی، تو رکمنی کو لگا کہ اس کے دماغ اور زندگی میں بھی اندھیرا چھا رہا ہو۔ بابو جی کی انتظاری میں بیٹی کی ننھی ننھی آنکھیں مند گئیں۔ رکمنی نے اسے اپنی گود میں بٹھا لیا اور بولی— "تم کیوں اس طرح اونگھتی ہو۔ بابو جی جب آتے ہیں، تمکو جگایا کرتی ہوں نہ ؟ سو بٹیا، میری گود میں سو جاؤ۔" اور پھر ؟

رکمنی کو یاد نہیں کہ کتنی دیر وہیں دیوار سے پیٹھ لگائے، وہ بیٹھی رہی۔ بابو جی کی آہٹ سننے کی بیٹی انتظاری کر رہی تھی۔ اس نے ماں سے پوچھا— "کیوں اماں، بابو جی نہیں آئے؟" وہ سوال مانو آنسوؤں سے گیلا تھا۔ کیسے اس سوال کا جواب دے؟ اس نے بچی کو اپنی چھاتی سے لگا لیا۔ وہ چیخ سی اٹھی۔ اس کے سامنے سے ڈراونے نظاروں کا لمبا بڑا جلوس جیسے نکل رہا ہو۔

मां बाप थोड़ी देर बच्चे की तरफ़ देखते रहे. फिर पिता पालने को पकड़ लेता है और मां बच्चे को झुककर उठा, अपनी गोद में ले लेती है अब बच्चे का रोना बंद हो गया. बस, इतना ही. और क्या हुआ रुकमनी समझ नहीं पाई. दीवार पर जो तीन परछाइयां दिखाई पड़ीं, मिल जुल, धुंधली हो, एक बड़ी परछाई में बदल गई, जिसकी कोई साफ़ शक्ल सूरत नहीं थी.

रुकमनी की अलसाई आंखें फिर बच्ची पर आ लगीं. उसने भी, उसी तरह, शायद उससे बढ़कर, तीन आत्माएं एक हो, जीवन की मिठास, मीठे शरबत की तरह, कभी चख लिया था. उसकी ख़ुशी देख, कितने ही दम्पति जलते भुनते थे. रुकमनी ने अपने जीवन संगी को बुद्धिमानी के के साथ चुना था—कितने ही लोगों ने बधाइयां दी थीं ? मगर आज ईर्षा की जगह अवहेलना है, बधाई की जगह हमदर्दी है !

रुकमनी ने ज़रा सिर उठाया. उसकी नज़र ऊपर टंगी फ़ोटो पर टिक गई. उस फ़ोटो के लिए एक बार किसी नुमायश में इनाम मिला था. फ़ोटो में बचपन की मासूमियत और सरलता ज़ाहिर हो रही थी. रिश्तेदारों की और जान-पहचान के लोगों से उस फ़ोटो की अच्छी मांग थी और उसकी बहुत सी प्रतियां मंगवाई थीं ?

काश ! उनमें से कोई आज इस बच्ची को देख लेता ! कौन यक़ीन करेगा कि वह यही बच्ची है ? उस समय उसे अपनी अपनी गोद में लेने के लिये लोग ज़िद करते थे और आज ? आज छूने तक के लिये लोग नफ़रत करेंगे. उस बेजान फ़ोटो में आत्मचैतन्य का धुंधलापन ज़ाहिर होता है और इस जानदार बच्ची में मौत की 'ठंड' है जो रेंगती नज़दीक आ रही है.

रुकमनी की निगाह धीरे धीरे बच्ची के चेहरे से हट, दूसरे फ़ोटो की तरफ़ गई वह वहां इसलिए टंगी थी कि बच्ची आंख खुलते ही उसे देख ले. उसमें एक तन्दुरुस्त और हंसमुख जवान है और उसके गले से चिपटी एक बच्ची भी, जो कमरे की तरफ़ देख, हंसती है, मोटी ताजी और चंचल—पिता और पुत्री. ऐसा लगता था कि दोनों आपसी रिश्ते पर फ़ख़्र करते हों. बच्ची की आंखें मानो कह रही हों कि कितने अच्छे बाबू जी हैं और पिता का चेहरा कह रहा हो कि ऐसी बच्ची को कौन मिलना नहीं चाहेगा.

रुकमनी उस फ़ोटो को बे पलक मारे देखती रही. उस ओजभरे जवान से ऐसी लाड़ दुलारी बच्ची का मां जैसा प्यार पाने के लिए वह अपने मां बाप से लड़ी-झगड़ी थी. उन लोगों की नज़र में योग्य दामाद बनने के लिये उन्होंने कितनी मेहनत की और नौकरी भी हासिल की ! फिर ?......उन दिनों जिस फ़ोटो को देख, उसकी आंखों

ماں باپ تھوڑی دیر بچے کی طرف دیکھتے رہے ۔ پھر پتا پالنے کو پکڑ لیتا ہے اور ماں بچے کو جھک کر اٹھا' اپنی گود میں لے لیتی ہے ۔ اب بچے کا رونا بند ہوگیا ۔ بس' اتنا ہی ۔ اور کیا ہوا رکمنی سمجھ نہیں پائی ۔ دیوار پر جو تین پرچھائیاں دکھائی پڑیں' مل جل' دھندلی ہو' ایک بڑی پرچھائی میں بدل گئی' جسکی کوئی صاف شکل صورت نہیں تھی ۔

رکمنی کی السائی آنکھیں پھر بچی پر آ لگیں ۔ اس نے بھی' اسی طرح' شاید اس سے بڑھکر' تین آتمائیں ایک ہو' جیون کی مٹھاس میٹھے شربت کی طرح' کبھی چکھ لیا تھا ۔ اسکی خوشی دیکھ' کتنے ہی دمپتی جلتے بھنتے تھے ۔ رکمنی نے اپنے جیون سنگی کو بدھیمانی کے ساتھ چنا تھا—کتنے ہی لوگوں نے بدھائیاں دی تھیں ؟ مگر آج ایرشا کی جگہ اوہیلنا ہے' بدھائی کی جگہ ہمدردی ہے !

رکمنی نے ذرا سر اٹھایا اس کی نظر اوپر ٹنگی فوٹو پر ٹک گئی ۔ اس فوٹو کے لئے ایک بار کسی نمائش میں انعام ملا تھا ۔ فوٹو میں بچپن کی معصومیت اور سرلتا ظاہر ہو رہی تھی ۔ رشتہ داروں کی اور جان پہچان کے لوگوں سے اس فوٹو کی اچھی مانگ تھی اور اس کی بہت سی پرتیاں منگوائی تھیں ؟

کاش ! ان میں سے کوئی آج اس بچی کو دیکھ لیتا ! کون یقین کریگا کہ یہ وہی بچی ہے ؟ اس سمے اپنی اپنی گود میں لینے کے لئے لوگ ضد کرتے تھے اور آج ؟ آج چھونے تک کے لئے لوگ نفرت کرینگے ۔ اس بے جان فوٹو میں آتما چیتنیہ کا دھندلاپن ظاہر ہوتا ہے اور اس جاندار بچی میں موت کی 'ٹھنڈ' ہے جو رینگتی نزدیک آ رہی ہے

رکمنی کی نگاہ دھیرے دھیرے بچی کے چہرے سے ہٹ' دوسرے فوٹو کی طرف گئی ۔ وہ وہاں اس لئے ٹنگی تھی کہ بچی آنکھ کھلتے ہی اسے دیکھ لے اس میں ایک تندرست اور ہنس مکھ جوان ہے اور اس کے گلے سے چپٹی ایک بچی بھی' جو کمرے کی طرف دیکھ' ہنستی ہے' موٹی تازی اور چنچل—پتا اور پتری ۔ ایسا لگتا تھا کہ دونوں آپسی رشتے پر فخر کرتے ہوں بچی کی آنکھیں مانو کہہ رہی ہوں کہ کتنے اچھے بابو جی ہیں اور پتا کا چہرا کہہ رہا ہو کہ ایسی بچی کو کون ملنا نہیں چاہیگا ۔

رکمنی اس فوٹو کو بے پلک مارے دیکھتی رہی ۔ اس اوج بھرے جوان سے ایسی لاڈ دلاری بچی کا ماں جیسا پیار پانے کے لئے وہ اپنے ماں باپ سے لڑی جھگڑی تھی ۔ ان لوگوں کی نظر میں یوگ داماد بننے کے لئے انہوں نے کتنی محنت کی اور نوکری بھی حاصل کی ! پھر ؟ ... ان دنوں جس فوٹو کو دیکھ' اس کی آنکھوں

बढ़ रही है, तो लड़कियों को पढ़ाये बिना काम कैसे चल सकता है ?

सावित्री की आवाज़ जब कभी ऊंची हो जाती तो रुकमनी का ध्यान उस तरफ़ जाता. बिना खाये, पिये और सोये उसने भी इसी तरह पढ़ा था. जीवन के वह दिन कितने सुनहरे थे ! दिल में सुन्दर सपने थे, आंखों में ख़ुशी. कोई मीठी कल्पना शायद सावित्री को बीच बीच में रोक लेती होगी. नोट बुक के टेस्ट टियूब और बनसन बर्नर के डायग्राम के बीच से किसी नौजवान की पतली मूंछ और चमकीली आंखें उसके दिल में दिखाई पड़ती होंगी. कौन जाने ? शायद इसीलिये पढ़ने की आवाज़ कभी कभी धीमी हो जाती है. दूसरी लड़कियों की तरह रुकमनी के जीवन में भी ऐसी कई बातें घटी थीं, मगर सावित्री उतनी होशियार नहीं कि वह ऐसे किसी साहसी जवान को अपनी तरफ़ खींच सके जो अपनी प्रेमिका के लिए महामेरू की ऊंची चोटियों पर भी चढ़ने का संकोच न करे. इसमें भी ज़रा शक है कि अगर सावित्री एक प्रेमी को चुन ले, तो उससे शादी करने के लिए घरवालों को मना सकेगी या नहीं. यह सब रुकमनी ख़ूब जानती है.

रुकमनी का ध्यान अचानक उसकी दूसरी बहन की तरफ़ गया. दो चार दिनों में उसकी शादी होनेवाली है. शादी की तैयारियां हो रही हैं. यही उस घर के शोर शराबे का और इधर उधर चीज़ें बिखरी रहने का कारन है. लेकिन दुलहन का उत्साह मानो दिनों दिन कम होता जा रहा है. वह बाहर ज़ियादा दिखाई भी नहीं पड़ती. यह बात नहीं कि वह दूल्हे को नहीं चाहती थी या ग्रहस्थ जीवन से उसे नफ़रत थी. अनुभवी रुकमनी जानती है कि बहन इसके अलावा इस समय कुछ कर भी नहीं सकता, शादी के पहले दिल में जो आशंका, बेसब्री, इन्तज़ारी, रंज और ख़ुशी होती है, उनको वह दूर नहीं कर पाती. वह एकान्त चाहती है. नया स्वामी, नया घर, नये मां बाप—वैसे तो सब तरह से नई ज़िन्दगी की डेहरी पर खड़ी है. कल्पना के द्वार से जब वह झांकती है .....

रुकमनी का ध्यान बच्चे के रोने से खिंच गया. उसने उसी मुद्रा में बैठे बैठे बिना हिले डुले अपनी बेटी के चेहरे से नज़र हटा, उस कमरे की तरफ़ देखा, जहां से बच्चे की आवाज़ आई थी. वहां से, उस कमरे का कुछ दिखाई पड़ता. मगर दीवार की परछाईं से वह समझ गई कि बच्चा पालने में पड़ा छटपटा रहा है. बच्चा उसके बड़े भाई का है. उनकी शादी पार साल हुई थी. बच्चा सोया हुआ ही सही, मगर फिर भी उसे वैसे ही छोड़ वह दोनों कहां चले गये ! हां, पालने की झूलती परछाईं के पास और दो परछाइयां दीख पड़ीं—एक पुरुष की और एक स्त्री की.

بڑھ رہی ہے، تو لڑکیوں کو پڑھائے بنا کام کیسے چل سکتا ہے ؟

ساوتری کی آواز جب کبھی اونچی ہو جاتی تو رکمنی کا دھیان اُس طرف جاتا. بنا کھائے، پئے اور سوئے اس نے بھی اِسی طرح پڑھا تھا. جیون کے وہ دن کتنے سنہرے تھے! دل میں سندر سپنے تھے، آنکھوں میں خوشی. کوئی میٹھی کلپنا شاید ساوتری کو بیچ بیچ میں روک لیتی ہوگی. نوٹ بک کے ٹیسٹ ٹیوب اور بن‌سن برنر کے ڈائے گرام کے بیچ سے کسی نوجوان کی پتلی مونچھ اور چمکیلی آنکھیں اُس کے دل میں دکھائی پڑتی ہونگی. کون جانے؟ شاید اِس لئے پڑھنے کی آواز کبھی کبھی دھیمی ہو جاتی ہے. دوسری لڑکیوں کی طرح رکمنی کے جیون میں بھی ایسی کئی باتیں گھٹی تھیں، مگر ساوتری اُتنی ہوشیار نہیں کہ وہ ایسے کسی ساہسی جوان کو اپنی طرف کھینچ سکے جو اپنی پریمکا کے لئے مہا میرو کی اونچی اونچی چوٹیوں پر بھی چڑھنے کا سنکوچ نہ کرے. اسمیں بھی ذرا شک ہے کہ اگر ساوتری ایک پریمی کو چن لے، تو اُس سے شادی کرنے کے لئے گھر والوں کو منا سکیگی یا نہیں. یہ سب رکمنی خوب جانتی ہے.

رکمنی کا دھیان اچانک اُسکی دوسری بہن کی طرف گیا. دو چار دنوں میں اُسکی شادی ہونے والی ہے. شادی کی تیاریاں ہو رہی ہیں. یہی اُس گھر کے شور شرابے کا اور ادھر اُدھر چیزیں بکھری رہنے کا کارن ہے. لیکن دلہن کا اُتساہ مانو دنوں دن کم ہوتا جا رہا ہے. وہ باہر زیادہ دکھائی بھی نہیں پڑتی. یہ بات نہیں کہ وہ دولہے کو نہیں چاہتی تھی یا گرہست جیون سے اسے نفرت تھی. انوبھوی رکمنی جانتی ہے کہ بہن اس کے علاوہ اِس سمے کچھ کر بھی نہیں سکتی، شادی کے پہلے دل میں جو آشنکا، بے صبری، انتظاری، رنج اور خوشی ہوتی ہے، اُن کو وہ دور نہیں کر پاتی. وہ ایکانت چاہتی ہے. نیا سوامی، نیا گھر، نئے ماں باپ—ویسے تو سب طرح سے نئی زندگی کی ڈیہری پر کھڑی ہے. کلپنا کے دوار سے جب وہ جھانکتی ہے ....

رکمنی کا دھیان بچے کے رونے سے کھنچ گیا. اس نے اُسی مدرا میں بیٹھے بیٹھے بنا ہلے ڈلے اپنی بیٹی کے چہرے سے نظر ہٹا، اس کمرے کی طرف دیکھا، جہاں سے بچے کی آواز آئی تھی. وہاں سے، اس کمرے کا کچھ نہیں دکھائی پڑتا. مگر دیوار کی پرچھائیوں سے وہ سمجھ گئی کہ بچہ پالنے میں پڑا چھٹپٹا رہا ہے. بچہ اس کے بڑے بھائی کا ہے. اُن کی شادی پارسال ہوئی تھی. بچہ سویا ہوا ہی سہی، مگر پھر بھی اسے ویسے ہی چھوڑ وہ دونوں کہاں چلے گئے! ہاں، پالنے کی جھولتی پرچھائیوں کے پاس اور دو پرچھائیاں دیکھ پڑیں—ایک پرش کی اور ایک اِستری کی.

मलयालम कहानी

अम्मा! बाबूजी कहां हैं?

(के० सरस्वती अम्मा)

कई घंटे गुज़र गए, रुकमनी ठंडे फ़र्श पर बैठी है— दोनों पैर सोफा के नीचे पसारे, सिर हथेली पर रखे. वह अपनी दुलारी मुन्नी के चेहरे से अपनी आंखें हटा नहीं पा रही! बच्ची पीठ के बल लेटी हुई है. बगल के कमरे से घड़ी के बारह बजने की आवाज़ सुनाई पड़ी. पर वह वैसे ही बैठी रही. उसे नींद नहीं आ रही है. कैसे आये? ऐसा लगता था, उस बच्ची के पीले चमड़े के नीचे जो दिल है, उसकी धड़कन जैसे कमज़ोर होती जा रही हो.

उस बड़े परिवार के दूसरे लोग कभी कभी उस कमरे में आया जाया करते थे. मगर किसी ने रुकमनी से नहीं कहा कि वह ठंडे फ़र्श पर न बैठे. सच्ची बात तो यह है कि किसी को उसकी तरफ़ ध्यान देने का अवकाश ही नहीं था. वह अपने अपने कामों में मशग़ूल थे.

रुकमनी भी अपनी हालत समझती हो, ऐसी बात भी नहीं. उसका मन बच्ची के निश्चल से शरीर के चारों ओर मंडरा रहा है. दूसरों का काम में मशग़ूल होना और अपनी पुरानी यादगारें दोनों उसके मन को मचला रही हैं. दूसरों में वह अपनी ज़िन्दगी की ही झलक देख रही थी.

उसकी चौथी बहन सावित्री पास के कमरे में बैठी पढ़ रही है. उसकी परीक्षा बहुत नज़दीक है. इन्टरमिडियेट परीक्षा कोई मामूली चीज़ नहीं, यह रुकमनी भी जानती है. उसे मालूम है कि कितनी ही बातें मुंह ज़बानी याद करनी पड़ती हैं और कितनी ही बातें प्रैक्टिकल में करके दिखानी होती हैं ये सभी थ्योरी और प्रैक्टिकल में करके दिखानी होती हैं. ये सभी थ्योरी और प्रैक्टिकल कालिज की परीक्षाओं के लिए बस काफ़ी है मगर जीवन की परीक्षाओं के लिए कोई ख़ास फ़ायदा नहीं रोज़ी कमाने के लिए बहुत कुछ दूसरी बातें सीखनी पड़ती हैं और धीरे धीरे रटी बातें भूल भी जाती हैं. इस बड़े घराने की लड़कियों को पढ़ाई का प्रमान पत्र दिखा, नौकरी के लिए दर दर मारे मारे फिरने के लिए छोड़ा भी नहीं गया है. फिर क्यों ऐसी पढ़ाई और उसके लिए इतनी मेहनत? लड़कियों के लिए चाहिए, अपनी सहेलियों की ईर्ष्या और अध्यापिकाओं का वात्सल्य! इज़्ज़त का मापदंड जैसे जैसे बदलता है, वैसे वैसे मां बाप को अपने दांव पेंच भी बदलने पड़ते हैं. अपनी स्त्री की परीक्षा योग्यता से पति की समाज में इज़्ज़त बढ़ती है, ऐसे समझने वाले जवानों की संख्या अब

ملیالم کہانی

اماں! بابوجی کہاں ہیں؟

(کے. سرسوتی اماں)

کئی گھنٹے گذر گئے، رکمنی ٹھنڈے فرش پر بیٹھی ہے — دونوں پیر صوفے کے نیچے پسارے، سر ہتھیلی پر رکھے. وہ اپنی دلاری منی کے چہرے سے اپنی آنکھیں ہٹا نہیں پا رہی! بچی پیٹھ کے بل لیٹی ہوئی ہے. بغل کے کمرے سے گھڑی کے بارہ بجنے کی آواز سنائی پڑی. پر وہ ویسے ہی بیٹھی رہی. اسے نیند نہیں آ رہی ہے. کیسے آئے؟ ایسا لگتا تھا، اس بچے کے پیلے چمڑے کے نیچے جو دل ہے، اسکی دھڑکن جیسے کمزور ہوتی جا رہی ہو.

اس بڑے پریوار کے دوسرے لوگ کبھی کبھی اس کمرے میں آیا جایا کرتے تھے. مگر کسی نے رکمنی سے نہیں کہا کہ وہ ٹھنڈے فرش پر نہ بیٹھے. سچی بات تو یہ ہے کہ کسی کو اسکی طرف دھیان دینے کا اوکاش ہی نہیں تھا. وہ اپنے اپنے کاموں میں مشغول تھے.

رکمنی بھی اپنی حالت سمجھتی ہو، ایسی بات بھی نہیں. اس کا من بچی کے نشچل سے شریر کے چاروں طرف منڈرا رہا ہے. دوسروں کا کام میں مشغول ہونا اور اپنی پرانی یادگاریں دونوں اس کے من کو مچلا رہی ہیں. دوسروں میں وہ اپنی زندگی کی ہی جھلک دیکھ رہی تھی.

اسکی چوتھی بہن ساوتری پاس کے کمرے میں بیٹھی پڑھ رہی ہے. اسکی پریکشا بہت نزدیک ہے. انٹرمیڈیئیٹ پریکشا کوئی معمولی چیز نہیں، یہ رکمنی بھی جانتی ہے. اسے معلوم ہے کہ کتنی ہی باتیں منھ زبانی یاد کرنی پڑتی ہیں اور کتنی ہی باتیں پریکٹیکل میں کر کے دکھانی ہوتی ہیں. یہ سبھی تھیوری اور پریکٹیکل کالج کی پریکشاؤں کے لئے بس کافی ہے. مگر جیون کی پریکشاؤں کے لئے کوئی خاص فائدہ نہیں. روزی کمانے کے لئے بہت کچھ دوسری باتیں سیکھنی پڑتی ہیں اور دھیرے دھیرے رٹی باتیں بھول بھی جاتی ہیں. اس بڑے گھرانے کی لڑکیوں کو پڑھائی کا پرمان پتر دکھا، نوکری کے لئے در در مارے مارے پھرنے کے لئے چھوڑا بھی نہیں گیا ہے. پھر کیوں ایسی پڑھائی اور اس کے لئے اتنی محنت؟ لڑکیوں کے لئے چاہئے، اپنی سہیلیوں کی ایرشا اور ادھیاپکاؤں کا واتسلیہ! عزت کا ماپ دنڈ جیسے جیسے بدلتا ہے، ویسے ویسے ماں باپ کو اپنے داؤ پیچ بھی بدلنے پڑتے ہیں. اپنی استری کی پریکشا یوگتا سے پتی کی سماج میں عزت بڑھتی ہے، ایسے سمجھنے والے جوانوں کی سنکھیا جب

बस्तियों, तसवीरों और पुस्तकों का है. लाखों चित्रकारों ने अनगिनत तसवीरें बना डाली. इन में कितनी सुन्दर हैं ? कितनी हैं जो शहकार समझी जा सकती हैं ? और इनमें भी कितनी हैं जिनका नाम रहती दुनिया तक क़ायम रहेगा ? बक़ाये नाम की आरज़ू करोड़ों इनसानों को हज़ारों बरस से बेचैन कर रही है. इसी माया की ख़ातिर मरने वालों की यादगारें बनाई जाती हैं और यादगार के तौर पर ही क़बरें बनीं, मूरतियां बनीं, मक़बरे बने. इनमें कितने ताज महल निकले ? हज़ार दो हज़ार न सही दस बीस ही के नाम गिना दीजिये.

दूसरे बड़े शहरों की तरह हमारे शहर में भी पिछले पचीस तीस बरस में लाख सवा लाख मकान बने होंगे. इन में हज़ारों मकान नई डिज़ाइन के बने हैं जिनके मालिक अपने मकान को बहुत ख़ूबसूरत समझते हैं. वरना सचमुच चन्द ही मकान हैं जिन में थोड़ा बहुत सुन्दरपन है. वरना बक़िया सब मामूली बल्कि बेढब हैं.

लफ़्ज़ों की सुन्दरता के बारे में यह भी सोचना चाहिये कि जब हमें हज़ारों नये लफ़्ज़ बनाने हों और लफ़्ज़ों के बनाते वक़्त सब से ज़ियादा ज़िदाई सहीपन का लिहाज़ रखना हो तो यह मुमकिन ही नहीं कि हर लफ़्ज़ कोहेनूर या ताज महल या अजनता निकले ! जब पुलिस और फ़ौज के लिये बैरक बनाए जाते हैं या मज़दूरों और कारीगरों के लिये हज़ारों मकान बनाने होते हैं तो सब से ज़ियादा ज़रूरत और काम काजपन का ख़याल किया जाता है. इनकी सुन्दरता को कोई नहीं देखता. हज़ारों में ख़ूबसूरती पैदा करना न फ़ितरत से मुमकिन हुआ न किसी इनसान से. चाहो न चाहो सपाटपन ज़ाहिर होगा. हर मकान में रंगा रंगी नहीं पैदा हो सकेगी.

यही हाल लफ़्ज़ों का है. चन्द अच्छे सुन्दर लफ़्ज़ बन जायं वह और बात है मगर हज़ारों अच्छे अच्छे लफ़्ज़ बनाना जो भाशाई ऐतबार से सुन्दर भी हों किसी भी ज़बान में मुमकिन न हुआ. लिहाज़ा हिन्दुस्तानी के नये लफ़्ज़ों में ख़ूबी और ख़ूबसूरती की उम्मीद करना, उम्मीद करने वालों की भूल है. हमें सिर्फ़ यह देखना चाहिये कि वह भाशाइयात और विद्या की ज़रूरत को पूरा कर सकते हैं या नहीं, अगर नये लफ़्ज़ मुफ़ीद हों और विद्याई नक़्शे से सही हों तो काफ़ी है.

بستیوں' تسویروں اور پستکوں کا ھے. لاکھوں چترکاروں نے ان گنت تسویریں بنا ڈالیں . ان میں کتنی سندر ھیں ؟ کتنی ھیں جو شہکار سمجھی جا سکتی ھیں؟ اور ان میں بھی کتنی ھیں جن کا نام رھتی دنیا تک قائم رھیگا؟ بقاۓ نام کی آرزو کروڑوں انسانوں کو ھزاروں برس سے بیچین کر رھی ھے. اسی مایا کی خاطر مرنے والوں کی یادگاریں بنائی جاتی ھیں اور یادگار کے طور پر ھی قبریں بنیں' مورتیاں بنیں' مقبرے بنے . ان میں کتنے تاج محل نکلے ؟ ھزار دو ھزار نہ سہی دس بیس ھی کے نام گنا دیجئے .

دوسرے بڑے شہروں کی طرح ھمارے شہر میں بھی پچھلے پچیس تیس برس میں لاکھ سوا لاکھ مکان بنے ھونگے. ان میں ھزاروں مکان نئی ڈزائین کے بنے ھیں جن کے مالک اپنے مکان کو بہت خوبصورت سمجھتے ھیں. ورنہ سچ مچ چند ھی مکان ھیں جن میں تھوڑا بہت سندر پن ھے. ورنہ بقیہ سب معمولی بلکہ بےڈھب ھیں .

لفظوں کی سندرتا کے بارے میں یہ بھی سوچنا چاھئے کہ جب ھمیں ھزاروں نئے لفظ بنانے ھوں اور لفظوں کے بناتے وقت سب سے زیادہ ودیائی صحیح پن کا لحاظ رکھنا ھو تو یہ ممکن ھی نہیں کہ ھر لفظ کوہ نور یا تاج محل یا اجنتا نکلے ! جب پولیس اور فوج کے لئے بیرک بنائے جاتے ھیں یا مزدوروں اور کاریگروں کے لئے ھزاروں مکان بنانے ھوتے ھیں تو سب سے زیادہ ضرورت اور کام کاج پن کا خیال کیا جاتا ھے. ان کی سندرتا کو کوئی نہیں دیکھتا . ھزاروں میں خوبصورتی پیدا کرنا نہ فطرت سے ممکن ھوا نہ کسی انسان سے. چاھو نہ چاھو سپاٹ پن ظاھر ھوگا. ھر مکان میں رنگا رنگی نہیں پیدا ھوسکیگی .

یہی حال لفظوں کا ھے. چند اچھے سندر لفظ بن جائیں وہ اور بات ھے مگر ھزاروں اچھے اچھے لفظ بنانا جو بھاشائی اعتبار سے سندر بھی ھوں کسی زبان میں ممکن نہ ھوا . لہذا ھندستانی کے نئے لفظوں میں خوبی اور خوبصورتی کی امید کرنا' امید کرنے والوں کی بھول ھے. ھمیں صرف یہ دیکھنا چاھئے کہ وہ بھاشائیات اور ودیا کی ضرورت کو پورا کرسکتے ھیں یا نہیں . اگر نئے لفظ مفید ھوں اور ودیائی نقطے سے صحیح ھوں تو کافی ھے .

मेरी भाशाई शब्दावली बनाने में इस तरह काम हरगिज़ नहीं चल सकता. अगर हम हिन्दी या उरदू को विशाई भाशा बनाना चाहते हैं तो हमें बेबस हो कर नया रास्ता इख़तियार करना पड़ेगा. शायद आपको वही रास्ता चलना पड़े जो मैंने तलाश किया है. यानी इस्म या फ़ेल से कैफ़यती इस्म बनाओ, वह भी इस तरह से कि बनाने और समझने में आसानी हो इसीलिये मुझे यक़ीन है कि फ़िकरा असूल के मुताबिक़ नये नये शब्द बनाए जायं तो चन्द दिनों में हम इस तरीक़े से इतने वाक़िफ़ और मानूस हो जायंगे कि ख़ुद बीसयों नये नये लफ़्ज़ बना सकेंगे जैसे :

बिजली से बिजलियाना	याने	Electrify
बिजलियावा	"	Electrification
कोड से कोडयाना	"	Codify
कोडयावा	"	Codification
कोडयाया	"	Codified
ईसाई से ईसाइयाना	'	Christianize
ईयाइयावा	"	Chrittianization
आसानी से आसानियाना	"	Simplify
आसानियावा	"	Simplification

मेरे बाज़ मित्रों का यह एतराज़ है कि यह लफ़्ज़ ख़ूबसूरत नहीं हैं. यह एतराज़ ठीक है. फिर भी मैं अपने भाशाई असूल को ठीक समझता हूं और इतराज़ करने वाले मित्रों से दो बातें कहता हूँ एक तो यह कि न सिर्फ़ लफ़्ज़ बल्कि भाशा का सुन्दरपन बड़ी हद तक मानूस होने पर है. बहुत से नये शब्द जो आज हमें भले नहीं लगते अगर चल पड़ें तो अच्छे मालूम होने लगेंगे क्योंकि इन शब्दों को सुनते सुनते हम इनको ख़ुद बख़ुद पसन्द करने लगेंगे. दूसरी बात यह कहनी है कि असली संसार में सुन्दर चीज़ें कितनी कम हैं. जब परमात्मा और क़ुदरत ने बहुत सी सुन्दर चीज़ें पैदा नहीं की तो मुझ जैसा मामूली इनसान सुन्दर सुन्दर शब्द ज़ियादा तादाद में कहां से ला सकता है ? हमारी भाशा के कितने शब्द सचमुच सुन्दर हैं ? जब करोड़ों इनसानों ने सैकड़ों बरस में गिनती के चन्द ख़ूबसूरत लफ़्ज़ बनाए हैं तो चन्द आदमी एक दो दहाइयों में हज़ारों सुन्दर लफ़्ज़ क्यों कर बना सकेंगे ? हमारे मुल्क और यहां की कलचर ज़बान को जाने दीजिये दुनिया में और भी तो क़ौमें हैं जो भांत भांत की ज़बानें बोलती हैं. इन सब की तादाद सैकड़ों बल्कि हज़ारों की है. सारे संसार में कितनी भाशाएं सुन्दर हैं ? लाखों इनसानों में दो तीन की सूरतें अच्छी होती हैं. करोड़ों इनसान हैं जिनकी सूरतें बिलकुल मामूली हैं. इनमें कोई सुन्दरता नहीं है. इनके नाक नक़्शे, रंग रूप में कोई कशिश नहीं. ख़ूबसूरती तो जाने दीजिये बहुतेरे इनसानों की सूरतें ख़राब हैं. यही हाल शहरों,

میری بھاشائی شبداولی بنانے میں اس طرح کام ہرگز نہیں چل سکتا . اگر ہم ہندی یا اردو کو ودیای بھاشا بنانا چاہتے ہیں تو ہمیں بےبس ہوکر نیا راستا اختیار کرنا پڑیگا. شاید آپ کو وہی راستا چلنا پڑے جو میں نے تلاش کیا ہے. یانے اسم یا فعل سے کیفیتی اسم بناؤ' وہ بھی اس طرح سے کہ بنانے اور سمجھنے میں آسانی ہو. اسی لئے مجھے یقین ہے کہ فقرا اصول کے مطابق نئے نئے شبد بنائے جائیں تو چند دنوں میں ہم اس طریقے سے اتنے واقف اور مانوس ہو جاینگے کہ خد بیسیوں نئے نئے لفظ بنا سکینگے جیسے :

Electrify	یانے	بجلی سے بجلیانا
Electrification	"	بجلیاوا
Codify	"	کوڈ سے کوڈیانا
Codification	"	کوڈیاوا
Codified	"	کوڈیایا
Christianize	"	عیسائی سے عیسائیانا
Christianization	"	عیسائیاوا
Simplify	"	آسانی سے آسانیانا
Simplification	"	آسانیاوا

میرے بعض مترون کا یہ اعتراض ہے کہ یہ لفظ خوب صورت نہیں ہیں. یہ اعتراض ٹھیک ہے . پھر بھی میں اپنے بھاشائی اصول کو ٹھیک سمجھتا ہوں اور اعتراض کرنے والے متروں سے دو باتیں کہتا ہوں . ایک تو یہ کہ نہ صرف لفظ بلکہ بھاشا کا سندرپن بڑی حد تک مانوس ہونے پر ہے . بہت سے نئے شبد جو آج ہمیں بھلے نہیں لگتے اگر چل پڑیں تو اچھے معلوم ہونے لگینگے کیوں کہ ان شبدوں کو سنتے سنتے ہم ان کو خد بخد پسند کرنے لگینگے. دوسری بات یہ کہنی ہے کہ اصلی سنسار میں سندر چیزیں کتنی کم ہیں. جب پرماتما اور قدرت نے بہت سی سندر چیزیں پیدا نہیں کی تو مجھ جیسا معمولی انسان سندر سندر شبد زیادا تعداد میں کہاں سے لا سکتا ہے ؟ ہماری بھاشا کے کتنے شبد سچ مچ سندر ہیں ؟ جب کروڑوں انسانوں نے سیکڑوں برس میں گنتی کے چند خوب صورت لفظ بنائے ہیں تو چند آدمی ایک دو دہائیوں میں ہزاروں سندر لفظ کیوں کر بنا سکینگے ؟ ہمارے ملک اور یہاں کی کلچر اور زبان کو جانے دیجئے . دنیا میں اور بھی تو قومیں ہیں جو بھانت بھانت کی زبانیں بولتی ہیں. ان سب کی تعداد سیکڑوں بلکہ ہزاروں کی ہے . سارے سنسار میں کتنی بھاشائیں سندر ہیں ؟ لاکھوں انسانوں میں دو تین کی صورتیں اچھی ہوتی ہیں. کروڑوں انسان ہیں جن کی صورتیں بالکل معمولی ہیں. ان میں کوئی سندرتا نہیں ہے ان کے ناک نقشے' رنگ روپ میں کوئی کشش نہیں . خوبصورتی تو جانے دیجئے بہتیرے انسانوں کی صورتیں خراب ہیں . یہی حال شہروں'

तो बड़ी कठिनाई होगी. Acidify के लिये खट्टा और तुर्श दोनों इस्तेमान किये गए थे तो Acidification और Acidify के लिये हिन्दी उरदू का आम लफ़्ज़ 'खट्टा' क्यों छोड़ दिया गया ? क्या अनजुमन तरक़्क़ी उरदू वालों को खट्टे से इतनी नफ़रत है कि अपने दस्तर ख़ान पर जगह देना तो बड़ी बात है उसे अपनी बेजान किताबों में भी देखना पसन्द नहीं करते ? उरदू का यही झुकाव हम हिन्दुस्तानी प्रेमियों को बहुत खलता है इसीलिये हिन्दी की तरह उरदू से भी निरास हो कर हम कोशिश कर रहे हैं कि चालू लफ़्ज़ों और चालू जोड़ों से नये नये लफ़्ज़ बनाए जायं जो विद्याई एतबार से भी ठीक हों. इसीलिये हिन्दुस्तानी में:—

Acidify	के लिये	खट्टाना या खटाईयाना
Acidity	" "	खट्टाव या खट्टापन
Acidification	" "	खट्टाइयावा के बराबरिये समझा सकते हैं.

इसी ढंग पर

Sulphurate	के लिये	गधकाना
Sulphuration	" "	गधकाव

बन सकते हैं Sulphuration का तरजुमा अनजुमन की लुग़त में 'गधक से साफ़ करना' किया गया है. यह तरजुमा नहीं है, समझावा है ! एक एक लफ़्ज़ की बजाय चार चार लफ़्ज़ इस्तेमाल करना हो तो हम पान सौ लफ़्ज़ों से पांच लाख लफ़्ज़ों का तरजुमा कर सकते हैं. चुनांचे सचमुच इलाहाबाद के एक मशहूर प्रकाशक ने अपनी हिन्दी डिक्शनरी में Giraffe का तरजुमा चार लफ़्ज़ों में यह किया है: "एक प्रकार का ऊंट !" अगर हम उरदू और हिन्दी के इन विद्वानों की पैरवी करना चाहें तो फिर खटा खट सैकड़ों इस्तलाहों का तरजुमा कर सकते हैं और Kangaroo को "एक प्रकार का बन्दर" Socialism को "एक प्रकार का भाईचारा" कह सकते हैं और अगर चार चार लफ़्ज़ों में भी तरजुमा न बन पड़े तो बाबा से उरदू की पैरवी में Fraternize का तरजुमा "भाई चारा पैदा करना" करें और इसके बाद.

Fraternization का तरजुमा इस्म मफ़हूम वाला में लिख दें, क्योंकि सचमुच अनजुमन तरक़्क़ी उरदू की डिक्शनरी में.

Economise का तरजुमा किफ़ायत शआरी करना, मियानारवी इख़्तियार करना किया गया है और उसके बाद ही.

Economization का तरजुमा इस्म, मज़कूरा बाला मानों में किया गया है.

تو بڑی کٹھنائی ھوگی . Acidify کے لئے کھٹا اور ترش دونوں استعمال کئے گئے تھے تو Acidification اور Acidity کے لئے ھندی اردو کا آم لفظ 'کھٹا' کیوں چھوڑ دیا گیا ؟ کیا انجمن ترقی اردو والوں کو کھٹے سے اتنی نفرت ھے کہ اپنے دسترخان پر جگہ دینا تو بڑی بات ھے، اسے اپنی بیجان کتابوں میں بھی دیکھنا پسند نہیں کرتے ؟ اردو کا یہی جھکاؤ ھم ھندستانی پریمیوں کو بہت کھلتا ھے . اسی لئے ھندی کی طرح اردو سے بھی نراس ھو کر ھم کوشش کر رھے ھیں کہ چالو لفظوں اور چالو جوڑوں سے نئے نئے لفظ بنائے جائیں جو ودیای اعتبار سے بھی ٹھیک ھوں . اسی لئے ھندستانی میں :

Acidify	کے لئے	کھٹانا یا کھٹا ئیانا
Acidity	" "	کھٹاؤ یا کھٹاپن
Acidification	" "	کھٹائیاوا

کے برابرئے سمجھا سکتے ھیں .

اسی ڈھنگ پر

Sulphurate	کے لئے	گندھکانا
Sulphuration	" "	گندھکاؤنا

بن سکتے ھیں. Sulphuration کا ترجمہ انجمن کی لغت میں ''گندھک سے صاف کرنا'' کیا گیا ھے . یہ ترجمہ نہیں ھے، سمجھاوا ھے ! ایک ایک لفظ کی بجائے چار چار لفظ استعمال کرنا ھو تو ھم پانسو لفظوں سے پانچ لاکھ لفظوں کا ترجمہ کرسکتے ھیں . چنانچے سچ مچ الہ آباد کے ایک مشہور پرکاشک نے اپنی ھندی ڈکشنری میں Giraffe کا ترجمہ چار لفظوں میں یہ کیا ھے : ''ایک پرکار کا اونٹ!'' اگر ھم اردو اور ھندی کے اِن ودوانوں کی پیروی کرنا چاھیں تو پھر کھٹا کھٹ سیکڑوں اصطلاحوں کا ترجمہ کرسکتے ھیں اور Kangaroo کو ''ایک پرکار کا بندر' اور Socialism کو ''ایک پرکار کا بھائی چارہ'' کہہ سکتے ھیں اور اگر چار لفظوں میں بھی ترجمہ نہ بن پڑے تو بابا سے اردو کی پیروی میں Fraternize کا ترجمہ '' بھائی چارہ پیدا کرنا'' کریں اور اس کے بعد

Fraternization کا ترجمہ اسم مفہوم بالا میں لکھ دیں؛ کیوں کہ سچ مچ انجمن ترقی اردو کی ڈکشنری میں

Economise کا ترجمہ کفایت شعاری کرنا' میانہ روی اختیار کرنا کیا گیا ھے اور اس کے بعد ھی

Economization کا ترجمہ اسم' مذکورۂ بالا معنوں میں کیا گیا ھے .

isation	के लिये	आवा
inter	,,	अन्तर
counter	,,	तोड़

मुक़र्रर किये जायं ताकि हर लफ़्ज़ का अलहदा तरजुमा करने की ज़रूरत न रहे और चन्द दिनों के इस्तेमाल और चन्द इस्तलाहों की वाक़फ़ियत से इसी नमूने के और भी लफ़्ज़ बनाए जा सकें और सुर या उनके माने समझ में आ सकें.

Indianize	हिंदयाना
Indianization	हिंदयावा
Indianism	हिंदयत
Gandhize	गांधियाना
Gandhization	गांधियावा
Gandhism	गांधियत
Nationalize	क़ौमयाना
Nationalization	क़ौमयावा
Nationalism	क़ौमयत
Mechanize	मेकानियाना
Mechanization	मेकानियावा
Mechanism	मेकानियत

इन इस्तलाहों की तरह सैंकड़ों बल्कि हज़ारों लफ़्ज़ हैं जिन की ज़रूरत भांत भांत के इल्मों में होती है. अगर मेरे सुझाए हुए असूल को मान लिया जाय तो आप चाहे जिस लफ़्ज़ का तरजुमा किसी दिक़्क़त के बग़ैर कर सकेंगे.

अनजुमन तरक़्क़ी उरदू की "फ़र हंग इस्तलाहात इल्मिया" और 'इंगलिश उरदू डिकशनरी" में बाज़ लफ़्ज़ों के यह मुराद ने दिये गए हैं:—

Acidify खट्टा करना, खट्टा होना, तुर्श करना, तुर्श होना.

Acidity	तुरशियत
Acidification	तुरशाइयत
Commercialization	तिजारती बनाना
Indianization	हिंदयाना
Economization	इस्म मफ़हूम वाला में

विद्याई भाषा में तिजारती बनाना Commercialize का तरजुमा हो सकता है. Commercialization के लिये ऐसा लफ़्ज़ बनाना चाहिये जो उसकी असलियत को ज़ाहिर करे. इसी तरह Indianize का तरजुमा हिंदयाना हो सकता है मगर अनजुमन की डिकशनरी में Indianization का तरजुमा हिंदयाना कहा गया है. इस बुराई को अनजुमन तरक़्क़ी उरदू वाले महसूस न कर सके कि फ़ेल (क्रिया) का तरजुमा इस्म (संज्ञा) से करना विद्याई नुक़्ते से ग़लत है. यह ठीक है कि हमारी भाषा में चन्द लफ़्ज़ फ़ेल होते हुए इस्म के तौर पर चालू हैं जैसे खाना, मगर हर फ़ेल को इस्म के तौर पर इस्तेमाल किया जायगा

isation	کے لئے	آوا
inter	,,	انتر
Counter	,,	توڑ

مقرر کئے جایں تاکہ ہر لفظ کا الگ ترجما کرنے کی ضرورت نہ رہے اور چند دنوں کے استعمال اور چند اصطلاحوں کی واقفیت سے اسی نمونے کے اور بھی لفظ بنائے جا سکیں اور سر یا ان کے مانے سمجھ میں آ سکیں .

Indianize	ہندیانا
Indianization	ہندیاوا
Indianism	ہندیت
Gandhize	گاندھیانا
Gandhization	گاندھیاوا
Gandhism	گاندھیت
Nationalize	قومیانا
Nationalization	قومیاوا
Nationalism	قومیت
Mechanize	میکانیانا
Mechanization	میکانیاوا
Mechanism	میکانیت

ان اصطلاحوں کی طرح سینکڑوں بلکہ ہزاروں لفظ ہیں جن کی ضرورت بھانت بھانت کے علموں میں ہوتی ہے. اگر میرے سجھائے ہوئے اصول کو مان لیا جائے تو آپ چاہے جس لفظ کا ترجما کسی دقت کے بغیر کر سکینگے .

انجمن ترقی اردو کی " فرہنگ اصطلاحات علمیہ " اور انگلش اردو ڈکشنری " میں باز لفظوں کے یہ مرادف دئے گئے ہیں :—

Acidify کھٹا کرنا، کھٹا ہونا، ترش کرنا، ترش ہونا.

Acidity	ترشیت
Acidification	ترشائیت
Commercialization	تجارتی بنانا
Indianization	ہندیانا
Economization	اسم مفہوم والا میں

ودیائی بھاشا میں تجارتی بنانا Commercialize کا ترجما ہو سکتا ہے . Commercialization کے لئے ایسا لفظ بنانا چاہئے جو اس کی اصلیت کو ظاہر کرے . اسی طرح Indianize کا ترجما ہندیانا ہو سکتا ہے مگر انجمن کی ڈکشنری میں Indianization کا ترجما ہندیانا کہا گیا ہے . اس برائی کو انجمن ترقی اردو والے محسوس نہ کر سکے کہ فعل (کریا) کا ترجما اسم (سنگیا) سے کرنا ودیائی نکتے سے غلط ہے . یہ ٹھیک ہے کہ ہماری بھاشا میں چند لفظ فعل ہوتے ہوئے اسم کے طور پر چالو ہیں جیسے کھانا، مگر ہر فعل کو اسم کے طور پر استعمال کیا جائیگا

अनमोल, 'अन' बयानी में अन पहल जोड़ है और गांव से गंवार, लोहे से लुहार, सोने से सुनार में 'अर' और ससुराल, ननिहाल, ददियाल में 'आल' या बनावट, लगावट, फैलावट, रुकावट, सजावट, घुलावट में 'अवट' आखिरिये हैं.

हिन्दुस्तानी से हमदरदी रखने वालों को उरदू से एक अहम शिकायत यह भी है कि उरदू में इस्तेमाल होने वाले हिन्दी पहल जोड़ों और आखरियों से पूरा फ़ायदा नहीं उठाया जाता और जब से उरदू में मुशकिल पसन्दी और अरबियाना और फ़ारसी पसन्दगी का झुकाव पैदा हुआ है, ऐसे लफ़्ज़ों का रिवाज कम हो रहा है जिनमें हिन्दी-पन है यानी जो ठेठ हिन्दी हैं या हिन्दी जोड़ों की मदद से बने हैं. एक एक कर के उरदू से वह प्यारे प्यारे लफ़्ज़ तर्क कर दिये गए जिन्हें उरदू के शायरों ने भी इस्तेमाल किया था..हिन्दी तशबीहें जाती रहीं, हिन्दुस्तानी ख़यालात कम होते गए, फ़ारसी पन और अरबी पन का पल्ला आहिस्ता आहिस्ता बढ़ता गया. उरदू में हिन्दी क़ायदों का अमल दख़ल कम और फ़ारसी अरबी का ज़ियादा होने लगा. हिन्दुस्तानी प्रेमियों की अब यह कोशिश है और होनी चाहिये कि इस खोए हुए लफ़्ज़ी सरमाए को दोबारा हासिल करें और हिन्दुस्तानी के ख़ज़ाने में हज़ारों नये नये सिक्के ढालें जो जाने पहचाने सांचों से निकलने के कारन आप अपने खरे पन का सबूत हों.

उरदू में हिन्दुस्तानी जुज़ और हिस्से को बढ़ा कर ही हम ऐसी ज़बान क़ायम रख सकते है जो सारी क़ौम की ज़बान हो या जो भारत के अकसर हिस्सों में बोली और समझी जा सके. इसी ज़बान को तरक़्क़ी देने का एक तरीक़ा यह है कि ऐसे नये नये लफ़्ज़ बनाए जायं जो हिन्दी में भी चल सकें और उरदू में भी.

नये ज़माने के नये ख़यालों, नई ज़रूरतों और नई चीज़ों को ज़ाहिर करने के लिये हमें हज़ारों नये नये लफ़्ज़ दरकार हैं. अब बड़ा अच्छा मौक़ा है कि हम ऐसे लफ़्ज़ बनाएं जो हिन्दी और उरदू दोनों में चल सकें. इसका एक तरीक़ा यह है कि हिन्दी और उरदू में रिवाज पाए हुए पहल जोड़ों और आख़रियों से नये लफ़्ज़ बनाए जायं जिसकी एक तरकीब यह है कि अंगरेज़ी और हिन्दुस्तानी पहल जोड़ों और आख़रियों के बराबरिये (Equivalents) मुक़र्रर कर लिए जायं और ऐसे सांचे तैयार किये जायं, जिनमें ख़ाहिश के मुताबिक़ और भी नये नये लफ़्ज़ बनाए जा सकें.

इसी असूल के मुताबिक़ मैं यह सुझाव पेश करता हूं कि :

ism	के लिये	यत
ise	„	ना

انمول' 'ان' بیانی میں ان پہل جوڑ ہے اور گانو سے گنوار' لوہے سے لہار' سونے سے سنار میں ' ار ' اور سسرال' ننھیال' ددھیال میں ' آل ' یا بناوٹ' لگاوٹ' پھیلاوٹ' رکاوٹ' سجاوٹ' گھلاوٹ میں 'اوٹ' آخریے ہیں ۔

ہندستانی سے ہمدردی رکھنے والوں کو اردو سے ایک اہم شکایت یہ بھی ہے کہ اردو میں استعمال ہونے والے ہندی پہل جوڑوں اور آخریوں سے پورا فایدا نہیں اٹھایا جاتا اور جب سے اردو میں مشکل پسندی اور اربیانہ اور فارسی زندگی کا جھکاؤ پیدا ہوا ہے' ایسے لفظوں کا رواج کم ہو رہا ہے جن میں ہندی پن ہے یانے جو ٹھیٹھ ہندی ہیں یا ہندی جوڑوں کی مدد سے بنے ہیں ۔ ایک ایک کر کے اُردو سے وہ پیارے پیارے لفظ ترک کر دیئے گئے جنھیں اردو کے شاعروں نے بھی استعمال کیا تھا ۔ ہندی تشبیہیں جاتی رہیں' ہندستانی خیالات کم ہوتے گئے' فارسی پن اور اربی پن کا پلا آہستا آہستا بڑھتا گیا ۔ اُردو میں ہندی قایدوں کا امل دخل کم اور فارسی اربی کا زیادا ہونے لگا ۔ ہندستانی پریمیوں کی اب یہ کوشش ہے اور ہونی چاہئیے کہ اس کھوئے ہوئے لفظی سرمائے کو دوبارا حاصل کریں اور ہندستانی کے خزانے میں ہزاروں نئے نئے سکے ڈھالیں جو جانے پہچانے سانچوں سے نکلنے کے کارن آپ اپنے کھرے پن کا ثبوت ہوں ۔

اُردو میں ہندستانی جز اور حصے کو بڑھا کر ہي ہم ایسی زبان قایم رکھ سکتے ہیں جو ساري قوم کي زبان ہو یا جو بھارت کے اکسر حصوں میں بولی اور سمجھی جا سکے ۔ اسی زبان کو ترقی دینے کا ایک تریقا یہ ہے کہ ایسے نئے نئے لفظ بنائے جایں جو ہندی میں بھی چل سکیں اور اُردو میں بھی ۔

نئے زمانے کے نئے خیالوں' نئی ضرورتوں اور نئی چیزوں کو ظاہر کرنے کے لئے ہمیں ہزاروں نئے نئے لفظ درکار ہیں ۔ اب بڑا اچھا موقا ہے کہ ہم ایسے لفظ بنایں جو ہندی اور اُردو دونو میں چل سکیں ۔ اس کا ایک طریقا یہ ہے کہ ہندی اور اُردو میں رواج پائے ہوئے پہل جوڑوں اور آخریوں سے نئے لفظ بنائے جایں جسکی ایک ترکیب یہ ہے کہ انگریزی اور ہندستانی پہل جوڑوں اور آخریوں کے برابریے (Equivalents) مقرر کر لئے جایں اور ایسے سانچے تیار کئے جایں' جن میں خاہش کے متابق اور بھی نئے نئے لفظ بنائے جا سکیں ۔

اسی اسول کے متابق میں یہ سجھاؤ پیش کرتا ہوں کہ :

یت	کے لئے	ism
نا	„	ise

देश से बेहद प्रेम है. इस नाते उन्हें यह पसंद नहीं कि उनका सूबा चीफ़ कमिश्नर सूबा हो. मनीपुरी अगर आसाम से मिल जाय तो आसानी से गवर्नर सूबे वाले बन सकते हैं पर वह यह भी समझते हैं कि आसाम के साथ मिलने से उनका वह हाल हो जायगा जो नमक का आटे में होता है क्योंकि वह कुल तादाद में छै लाख से ज़यादा नहीं. हिन्दुस्तान जैसी बड़ी सरकार छै लाख आदमियों के लिये एक अलग सूबा कैसे बना सकती है? और वह छै लाख का सूबा अपने आप को कैसे संभाल सकता है? और वह भी उस वक़्त जब वह दूसरे मुल्क की सरहद से लगा हो.

आख़िर में हम यह कह कर अपनी बात ख़तम करते हैं कि पच्छिम में अगर काश्मीर को क़ुदरत ने स्वर्ग बना रखा है, तो पूरब में आदमी ने कला की उन्नति कर मनीपुर को स्वर्ग में बदल दिया है.

—भगवानदीन

دیش سے بےحد پریم ہے. اِس ناتے اُنہیں یہ پسند نہیں کہ ان کا صوبہ چیف کمشنر صوبہ ہو . منی پوری اگر آسام سے مل جائے تو آسانی سے گورنر صوبے والے بن سکتے ہیں . پر وہ یہ بھی سمجھتے ہیں کہ آسام کے ساتھ ملنے سے اُن کا وہ حال ہو جائیگا جو نمک کا آٹے میں ہوتا ہے . کیونکہ وہ کل تعداد میں چھ لاکھ سے زیادہ نہیں . ہندستان جیسی بڑی سرکار چھ لاکھ آدمیوں کے لئے ایک الگ صوبہ کیسے بنا سکتی ہے ؟ اور وہ چھ لاکھ کا صوبہ اپنے آپ کو کیسے سنبھال سکتا ہے ؟ اور وہ بھی اُس وقت جب وہ دوسرے ملک کی سرحد سے لگا ہو .

آخر میں ہم یہ کہکر اپنی بات ختم کرتے ہیں کہ پچھم میں اگر کاشمیر کو قدرت نے سورگ بنا رکھا ہے' تو پورب میں آدمی نے کلا کی اُنتی کر منی پور کو سورگ میں بدل دیا ہے .

—بھگوان دین

हिन्दुस्तानी शब्दयात का छटा असूल : शब्द जोड़ों के तरजुमे

(डाक्टर जाफ़र हसन)

हिन्दुस्तानी के लिये नई नई इस्तलाहें बनाने का एक असूल हमने यह बयान किया है कि आसान और आम समझ लफ़्ज़ों के संजोग से नये नये लफ़्ज़ बनाए जायं. इसी असूल के आधार पर मैंने Prefix का तरजुमा पहल जोड़ और Suffix का आख़िरया किया. 'पहल जोड़' का लफ़्ज़ सुनने से ही पता चलता है कि यह लफ़्ज़ से पहले आने वाला है इसी तरह आख़रिया बहुत ज़ियादा आसानी से Suffix के माने ज़ाहिर करता है.

हिन्दुस्तानी के लिये नये नये लफ़्ज़ बनाने का छटा शब्दयाती असूल यह होना चाहिये कि हर लफ़्ज़ का अलहदा अलहदा तरजुमा करने के अलावा जहां तक बन पड़े पहल जोड़ों (Prefixes) और आख़रियों (Suffixes) के बराबर से मुक़र्रर कर लिये जायं ताकि नये नये लफ़्ज़ों के बनाने में सहूलत हो.

हर ज़बान में लफ़्ज़ी टुकड़े होते हैं जो कभी असल लफ़्ज़ के शुरू में, कभी आख़िर में लगाए जाते हैं. शुरू में आने वाले लफ़्ज़ी टुकड़े को पहल जोड़ और आख़िर में आने वाले को आख़रिया कहते हैं: जैसे अनजान, अनमिल,

ہندستانی شبدیات کا چھٹا اسول : شبد جوڑوں کے ترجمے

(ڈاکٹر جافر حسن)

ہندستانی کے لئے نئی نئی اسطلاحیں بنانے کا ایک اسول ہم نے یہ بیان کیا ہے کہ آسان اور آم سمجھ لفظوں کے سنجوگ سے نئے نئے لفظ بنائے جایں اسی اسول کے آدھار پر میں نے Prefix کا ترجمہ پہل جوڑ اور Suffix کا آخریہ کیا . 'پہل جوڑ' کا لفظ سننے سے ہی پتہ چلتا ہے کہ یہ لفظ سے پہلے آنے والا ہے . اسی طرح آخریہ بہت زیادہ آسانی سے Suffix کے مانے ظاہر کرتا ہے .

ہندستانی کے لئے نئے نئے لفظ بنانے کا چھٹا شبدیاتی اسول یہ ہونا چاہئے کہ ہر لفظ کا الگ الگ ترجمہ کرنے کے علاوہ جہاں تک بن پڑے پہل جوڑوں (Prefixes) اور آخریوں (Suffixes) کے برابر سے مقرر کر لئے جایں تاکہ نئے نئے لفظوں کے بنانے میں سہولت ہو .

ہر زبان میں لفظی ٹکڑے ہوتے ہیں جو کبھی اصل لفظ کے شروع میں' کبھی آخر میں لگائے جاتے ہیں . شروع میں آنے والے لفظی ٹکڑے کو پہل جوڑ اور آخر میں آنے والے کو آخریہ کہتے ہیں : جیسے انجان' انمل'

करकट देखने को भी नहीं मिलेगा. सड़कें भी बहुत साफ़ रहती हैं. उनका घर बहुत व्यवस्थित मिलेगा. साफ़ तो मिलेगा ही.

आसाम भर में कर्घे का बहुत रिवाज है. हर घर में आप को करघा देखने को मिलगा. आसाम की करीब करीब हर औरत बुनना जानती है. फिर चाहे वह अमीर घराने की हो या चाहे गरीब घराने की. ब्राहमन नारी तो शायद ही कोई मिले जो बुनना न जानती हो. हाथ के बुने कपड़ों का रिवाज बहुत पुराना है पूजा में तो मिल के कपड़े काम में ही नहीं आते. हाथ कते सूत का रिवाज कम होगया है. उसकी वजह यहां के लोग यह बताते हैं कि मिल क सूत सस्ते होने की वजह से लोगों ने हाथ का कता सूत काम में लाना कम कर दिया है. फिर भी यहां के लोग हाथ कते सूत का कपड़ा बुनना जानते हैं और बुन सकते हैं. मनीपुरी तो हरेक अपने घर में करघा लगाये हुये है और मनीपुरी हरेक नारी बुनना जानती ही नहीं रोज कपड़ा बुनती है. सैकड़ों घराने ऐसे हैं जिनका कपड़ा बुनना रोज का काम है और उसी से पैसा कमाते हैं. मनीपुरी यानी इम्फाल का बाज़ार जब हम देखने गये तो वहां हमको कपड़े की एक भी दुकान ऐसी नहीं मिली जिसका दुकानदार मर्द हो. मालूम हुआ मनीपुरी औरतें बड़ी मजबूत होती हैं और वह खुद दुकान चलाती हैं. कपड़ा बुनकर और दुकान चलाकर भी वह बहुत सा वक्त घरके काम काज के लिये निकाल लेती हैं. मनीपुरकी नारियां हिन्दुस्तान की और नारियों से बहुत ज़ियादा आज़ाद हैं और औरों से कहीं ज़ियादा शीलवती भी हैं. यह सुनकर तो पढ़ने वालों को अचरज ही होगा कि मनीपुरी नारी इसको अपनी शान के खिलाफ़ समझती है कि उसका मर्द बाज़ार में सौदा खरीदने जाय. सुनते हैं कि जिस तरह कहीं औरतों का बाजारमें घूमना या सौदा करना शान के खिलाफ़ समझा जाता है वैसे ही मनीपुर में मर्दों का सौदा खरीदना शान के खिलाफ़ समझा जाता है और सचमुच हमें कम से कम कपड़े के बाज़ार में जतने आदमी सौदा करते मिले वह सब ग़ैर मनीपुरी ही थे और जितनी नारियां सौदा करती मिलीं वह सब मनीपुरी थीं.

मनीपुर के मर्द या तो नौकरियां करते हैं या फ़ौजी काम करते हैं. जिन्होंने अंगरेज़ी तालीम पा ली है वह बाज़ार में सौदा करने से भी नहीं चूकते. पूछा तो नहीं, पर हो सकता है कि उनके घर की नारियों ने बुनने का काम अगर छोड़ा न होगा तो कम ज़रूर कर दिया होगा. छोड़ वह यों नहीं सकती कि पूजा के काम के लिये हाथ का बुना कपड़ा और वह भी घरकी किसी नारी का बुना कपड़ा बेहद ज़रूरी है.

यह हम पहले लिख चुके हैं कि मनीपुरियों को अपने

کرکٹ دیکھنے کو بھی نہیں ملے گا. سڑکیں بھی بہت صاف رہتی ہیں . ان کا گھر بہت ویوستھت ملے گا . صاف تو ملے گا ہی.

آسام بھر میں کرگھے کا بہت رواج ہے . ہر گھر میں آپ کو کرگھا دیکھنے کو ملے گا . آسام کی قریب قریب ہر عورت بننا جانتی ہے . پھر چاہے وہ امیر گھرانے کی ہو یا چاہے غریب گھرانے کی . براہمن ناری تو شائد ہی کوئی ملے جو بننا نہ جانتی ہو . ہاتھ کے بنے کپڑوں کا رواج بہت پرانا ہے . پوجا میں تو مل کے کپڑے کام میں ہی نہیں آتے. ہاتھ کتے سوت کا رواج کم ہو گیا ہے . اُسکی وجہ یہاں کے لوگ یہ بتاتے ہیں کہ مل کا سوت سستا ہونے کی وجہ سے لوگوں نے ہاتھ کا کتا سوت کام میں لانا کم کر دیا ہے . پھر بھی یہاں کے لوگ ہاتھ کتے سوت کا کپڑا بننا جانتے ہیں اور بن سکتے ہیں . منی پوری تو ہر ایک اپنے گھر میں کرگھا لگائے ہوئے ہے اور منی پوری ہر ایک ناری بننا جانتی ہی نہیں روز کپڑا بنتی ہے . سیکڑوں گھرانے ایسے ہیں جن کا کپڑا بننا روز کا کام ہے اور اُسی سے پیسہ کماتے ہیں . منی پوری یعنی اِمپھال کا بازار جب ہم دیکھنے گئے تو وہاں ہمکو کپڑے کی ایک بھی دوکان ایسی نہیں ملی جس کا دوکندار مرد ہو . معلوم ہوا منی پوری عورتیں بڑی مضبوط ہوتی ہیں اور وہ خود دوکان چلاتی ہیں . کپڑا بن کر اور دوکان چلا کر بھی وہ بہت سا وقت گھر کے کام کاج کے لئے نکال لیتی ہیں . منی پور کی ناریاں ہندستان کی اور ناریوں سے بہت زیادہ آزاد ہیں اور اوروں سے کہیں زیادہ شیل وتی بھی ہیں . یہ سن کر تو پڑھنے والوں کو اچرج ہی ہوگا کہ منی پوری ناری اِسکو اپنی شان کے خلاف سمجھتی ہے کہ اُس کا مرد بازار میں سودا خریدنے جائے. سنتے ہیں کہ جس طرح کہیں عورتوں کا بازار میں گھومنا یا سودا کرنا شان کے خلاف سمجھا جاتا ہے ویسے ہی منی پور میں مردوں کا سودا خریدنا شان کے خلاف سمجھا جاتا ہے . اور سچ مچ ہمیں کم سے کم کپڑے کے بازار میں جتنے آدمی سودا کرتے ملے وہ سب غیر منی پوری ہی تھے اور جتنی ناریاں سودا کرتی ملیں وہ سب منی پوری تھیں .

منی پور کے مرد یا تو نوکریاں کرتے ہیں یا فوجی کام کرتے ہیں . جنہوں نے انگریزی تعلیم پا لی ہے وہ بازار میں سودا کرنے سے بھی نہیں چوکتے پوچھا تو نہیں' پر ہو سکتا ہے کہ اُن کے گھر کی ناریوں نے بننے کا کام اگر چھوڑا نہ ہوگا تو کم ضرور کر دیا ہوگا . چھوڑ وہ یوں نہیں سکتی کہ پوجا کے کام کے لئے ہاتھ کا بنا کپڑا اور وہ بھی گھر کی کسی ناری کا بنا کپڑا بے حد ضروری ہے .

یہ ہم پہلے لکھ چکے ہیں کہ منی پوریوں کو اپنے

यह भी मालूम हुआ कि यह मंडप की होली तीन चार रोज़ तक इसी तरह चलती रहती है. यह है भी ठीक. आख़िर इतने आदमी इस तरह मंडलियों में फाग खेलेंगे तो चार दिन ज़ियादा नहीं हैं. यहां यह ध्यान रहे कि मनीपुरी लोग आपस में रंग नहीं फेंकते उनका फाग जो कुछ होता है वह इसी मंडप के नीचे. हां, इम्फाल में जो ग़ैर मनीपुरी लोग हैं जैसे मारवाड़ी वग़ैरा वह अपने ढंग से होली खेलते हैं. पढ़ने वाले इतना और जान लें कि इस मंडप में उनको तरह तरह के रंग के कपड़े पहने हुए भी लोग मिलेंगे और एक एक रंग के लोग अलग अलग मंडलियों में बैठे मिलेंगे. यानी कुछ एकदम पीले कपड़ों में, कुछ एकदम लाल में, कुछ एकदम हरे रंग में. हरे और लाल रंग वालों की बात हम पूछने से रह गए. हां पीले रंग वालों की बात हमने ज़रूर जान ली थी. उसकी वजह यह थी कि जब हम मंडप में पहुँचे थे तब पीले रंग वाले वहां मौजूद थे, लाल हरे रंग वाले मौजूद न थे. पीले रंग के लोग सरदार लोग होते हैं. हमें बताया गया कि यह राजा के ख़ानदान से हैं. इनका पहनावा अपने ढंग का अलग था. इनकी धोती टख़नों तक नीची थी जबकि सफ़ेद मनीपुरियों की धोती घुटनों से कुछ ही नीचे तक थी. पीले मनीपुरियों के अंगरखे घुटनों से भी काफ़ी नीचे थे, टख़नों तक कहा जाय तो हरज नहीं, जबकि सफ़ेद मनीपुरियों की मिरज़ई आधी जांघ से भी ऊपर थी. पीले मनीपुरी सिक्खों की तरह बड़े साफ़े बांधे हुए थे. जबकि सफ़ेद मनीपुरी मारवाड़ियों जैसी पगड़ी बांधे हुए थे. लाल और हरे मनीपुरियों की पोशाक थी तो एक सी पर पीले और सफ़ेदों से नहीं मिलती थी.

मनीपुरी इतने साफ़ रहते हैं कि यह कहा जा सकता है कि हिन्दुस्तान में तो क्या दुनिया भर में कोई ऐसा देश नहीं है जो समाजी रूप से इतना साफ़ रहता हो. मनीपुरी ग़रीब हो या अमीर—ब्राह्मन, क्षात्रिय, वेश्य, शूद्र, कोई भी हो, साफ़ कपड़े पहने मिलेगा. अगर कोई गंदे कपड़े पहने हुए मिल जाय तो आप बेखटके कह सकते हैं कि वह मनीपुरी नहीं है. एक बार हमने एक मनीपुरी सज्जन से पूछा—"क्या आप रोज़ कपड़े धोते हैं?" आख़िर इतने साफ़ आप रहते किस तरह हैं?. वह बोले—"रोज़ तो नहीं दूसरे तीसरे ज़रूर कपड़े धोए जाते हैं इतने साफ़ दिखाई देने की एक वजह यह भी है कि हमारे बाहर निकलने के कपड़े अलग होते हैं और घर में पहनने के अलग. घर वाले कपड़े धोए तो रोज़ जाते हैं पर वह इतने सफ़ेद और चमकदार नहीं होते जितने बाहर वाले कपड़े."

मनीपुरी कपड़े साफ़ पहनते हैं, यही बात नहीं वह हर तरह सफ़ाई पसन्द हैं. मनीपुरियों के मोहल्लों में कूड़ा

یہ بھی معلوم ہوا کہ یہ منڈپ کی ہولی تین چار روز تک اسی طرح چلتی رہتی ہے. یہ ہے بھی ٹھیک. آخر اتنے آدمی اس طرح منڈلیوں میں پھاگ کھیلینگے تو چار دن زیادہ نہیں ہیں. یہاں یہ دھیان رہے کہ منی پوری لوگ آپس میں رنگ نہیں پھینکتے. ان کا پھاگ جو کچھ ہوتا ہے وہ اسی منڈپ کے نیچے. ہاں، امپھال میں جو غیر منی پوری لوگ ہیں جیسے مارواڑی وغیرہ وہ اپنے ڈھنگ سے ہولی کھیلتے ہیں. پڑھنے والے اتنا اور جان لیں کہ اس منڈپ میں ان کو طرح طرح کے رنگ کے کپڑے پہنے ہوئے بھی لوگ ملینگے اور ایک ایک رنگ کے لوگ الگ الگ منڈلیوں میں بیٹھے ملینگے. یعنی کچھ ایک دم پیلے کپڑوں میں، کچھ ایک دم لال میں، کچھ ایک دم ہرے رنگ میں. ہرے اور لال رنگ والوں کی بات ہم پوچھنے سے رہ گئے. ہاں پیلے رنگ والوں کی بات ہم نے ضرور جان لی تھی. اس کی وجہ یہ تھی کہ جب ہم منڈپ میں پہونچے تھے تب پیلے رنگ والے وہاں موجود تھے، لال ہرے رنگ والے وہاں موجود نہ تھے. پیلے رنگ کے لوگ سردار لوگ ہوتے ہیں. ہمیں یہ بتایا گیا کہ یہ راجہ کے خاندان سے ہیں. ان کا پہناوا اپنے ڈھنگ کا الگ تھا. ان کی دھوتی ٹخنوں تک نیچی تھی جب کہ سفید منی پوریوں کی دھوتی گھٹنوں سے کچھ ہی نیچے تک تھی. پیلے منی پوریوں کے انگرکھے گھٹنوں سے بھی نیچے تھے، ٹخنوں تک کہا جائے تو حرج نہیں، جب کہ سفید منی پوریوں کی مرزئی آدھی جانگھ سے بھی اوپر تھی. پیلے منی پوری سکھوں کی طرح بڑے بڑے صافے باندھے ہوئے تھے. جب کہ سفید منی پوری مارواڑیوں جیسی پگڑی باندھے ہوئے تھے. لال اور ہرے منی پوریوں کی پوشاک تھی تو ایک سی پر پیلے اور سفیدوں سے نہیں ملتی تھی.

منی پوری اتنے صاف رہتے ہیں کہ یہ کہا جا سکتا ہے کہ ہندستان میں تو کیا دنیا بھر میں کوئی ایسا دیش نہیں ہے جو سماجی روپ سے اتنا صاف رہتا ہو. منی پوری غریب ہو یا امیر. براہمن، چھتری، ویش، شودر، کوئی بھی ہو، صاف کپڑے پہنے ملیگا. اگر کوئی گندے کپڑے پہنے ہوئے مل جائے تو آپ بے کھٹکے کہہ سکتے ہیں کہ وہ منی پوری نہیں ہے. ایک بار ہم نے ایک منی پوری سجن سے پوچھا—"کیا آپ روز کپڑے دھوتے ہیں؟" آخر اتنے صاف آپ رہتے کس طرح ہیں؟ وہ بولے—"روز تو نہیں دوسرے تیسرے ضرور کپڑے دھوئے جاتے ہیں. اتنے صاف دکھائی دینے کی ایک وجہ یہ بھی ہے کہ ہمارے باہر نکلنے کے کپڑے الگ ہوتے ہیں اور گھر میں پہننے کے الگ. گھر والے کپڑے دھوئے تو روز جاتے ہیں پر وہ اتنے سفید اور چمکدار نہیں ہوتے جتنے باہر والے کپڑے."

منی پوری کپڑے صاف پہنتے ہیں، یہی بات نہیں. وہ ہر طرح صفائی پسند ہیں. منی پوریوں کے محلوں میں کوڑا

कुर्ता. एक मिरज़ई पहने हुए था और पगड़ी बांधे हुए था. हर एक के हाथ में एक रूमाल था. वह सब के सब इस तरह से आये, ऐसे बैठे और इस तरह से नाचे मानो वह फ़ौज के सिपाही हों. नाच के वक़्त उनके पांव ऐसे ही चलते थे जैसे उन लड़कियों के जिनका ज़िक्र पहले किया जा चुका है. कुछ के हाथ में मांझ थीं, दो एक के गले में मृदंग थे. एकाध के हाथ में खंजरी थी. वह कभी बैठ कर गाते थे और कभी खड़े हो कर. फाग का दिन था. उत्तर प्रदेश वाले तो यही सोच रहे होंगे कि किन्हीं गंदे गीतों का सिलसिला चल रहा होगा. पर नहीं वहां गंदे गीत नाम को भी नहीं थे उसे फाग का गाना बजाना ही नहीं कहना चाहिये वह तो भक्ती से भरा कीर्तन था. उसमें या तो राधा कृश्न के गीत थे या गौरीशंकर के गीत थे या गौरांग प्रभु के गीत थे. कुछ मनीपुरी बोली में थे, कुछ हिन्दी में थे, कुछ बिहारी में थे. बिहारी में विद्यापति के गीत थे, हिन्दी में सूर के और बंगला में गौरांग प्रभु के. यह मंडली जब थोड़ी देर कीर्तन कर चुकी तो मंदिर के दो आदमियों ने इनके ऊपर लाल रंग पिचकारी से छिड़क दिया. यह रंग बाल्टियों में भरा हुआ था. दोनों के पास बड़ी पिचकारियां थीं रंग छिड़कने के बाद मंडली जोश में आ गई और कीर्तन में पूरा रंग आ गया. इस मंडली ने आधे घंटे या इससे कम कीर्तन किया होगा. उसके बाद वह चली गई और दूसरी मंडली आ गई. हम ग्यारह बजे से चार बजे तक बैठे. आधा आधा घंटे के बाद बराबर मंडलियां आती रहीं. आख़िर हम ऊब गये. इतनी देर भी हम इसलिये बैठे कि हमको यह मालूम था कि थोड़ी देर में मनीपुर के राजा आयंगे और वह गोपियों के साथ नाचेंगे. गोपियां उन पर रंग छिड़केंगी और वह शायद गोपियों पर रंग छिड़केंगे. पर वह चार बजे तक नहीं आए थे. पता लगा कि वह शहर से बाहर थे. इसमें शक नहीं कि सैकड़ों ही मनीपुर की नारियां गोपियों के नाम से मंडप में मौजूद थीं. सब के कपड़े ऐसे ही सफ़ेद थे जैसे मर्दों के. हां उनका पहनावा दूसरे ढंग का था. गोपियों में हर उमर की नारियां थीं. बहुत छोटी लड़कियां नहीं थीं. हां ग्यारह बारह बरस की भी थीं, पर बहुत कम. गोपियों का फाग हम नहीं देख पाए. पर जिन लोगों ने वह फाग देखा था उनके मुंह से उसका हाल जान लिया. मनीपुर की नारियां पर्दा नहीं करतीं. पर जो गोपी बनकर फाग खेलने आई थीं, वह सब की सब घूंघट निकाले थीं. उनका जूड़ा कुछ इस तरह, बंधा हुआ था कि उनका सिर दुपट्टे के साथ ऐसे ही उठा हुआ दिखाई देता था जिस तरह हरयाने की जाटनियों का. फाग की गोपियों के सिवा और किसी मनीपुरी नारी का जूड़ा इस तरह बंधा हुआ नहीं देखा गया.

کرتہ' ایک مرزئی پہنے ہوئے تھا اور پگڑی باندھے ہوئے تھا. ہر ایک کے ہاتھ میں ایک رومال تھا. وہ سب کے سب اِس طرح سے آئے' ایسے بیٹھے اور اِس طرح سے ناچے مانو وہ فوج کے سپاہی ہوں. ناچ کے وقت اُن کے پاؤں ایسے ہی چلتے تھے جیسے اُن لڑکیوں کے جنکا ذکر پہلے کیا جا چکا ہے. کچھ کے ہاتھ میں جھانجھ تھیں' دو ایک کے گلے میں مردنگ تھے. ایک آدھ کے ہاتھ میں جھنجھری تھی. یہ کبھی بیٹھ کر گاتے تھے اور کبھی کھڑے ہوکر. پھاگ کا دن تھا. اُتر پردیش والے تو یہی سوچ رہے ہونگے کہ کنہیں گندے گیتوں کا سلسلہ چل رہا ہوگا. پر نہیں وہاں گندے گیت نام کو بھی نہیں تھے. اُسے پھاگ کا گانا بجانا ہی نہیں کہنا چاہئے. وہ تو بھکتی سے بھرا کیرتن تھا. اُس میں یا تو رادھا کرشن کے گیت تھے یا گوری شنکر کے گیت تھے یا گورانگ پربھو کے گیت تھے. کچھ منی پوری بولی میں تھے' کچھ ہندی میں تھے' کچھ بہاری میں تھے. بہاری میں ودیاپتی کے گیت تھے' ہندی میں سور کے اور بنگلا میں گورانگ پربھو کے. یہ منڈلی جب تھوڑی دیر کیرتن کر چکی تو مندر کے دو آدمیوں نے اِن کے اُوپر لال رنگ پچکاری سے چھڑک دیا. یہ رنگ بالٹیوں میں بھرا ہوا تھا. دونوں کے پاس بڑی پچکاریاں تھیں. رنگ چھڑکنے کے بعد منڈلی جوش میں آ گئی اور کیرتن میں پورا رنگ آ گیا. اِس منڈلی نے آدھے گھنٹے یا اِس سے کم کیرتن کیا ہوگا. اُس کے بعد یہ چلی گئی اور دوسری منڈلی آ گئی. ہم گیارہ بجے سے چار بجے تک بیٹھے. آدھا آدھا گھنٹے کے بعد برابر منڈلیاں آتی رہیں. آخر ہم اوب گئے. اِتنی دیر بھی ہم اس لئے بیٹھے کہ ہمکو یہ معلوم تھا کہ تھوڑی دیر میں منی پور کے راجہ آئینگے اور وہ گوپیوں کے ساتھ ناچینگے. گوپیاں اُن پر رنگ چھڑکینگی اور وہ شائد گوپیوں پر رنگ چھڑکینگے. پر وہ چار بجے تک نہیں آئے تھے. پتہ لگا کہ وہ شہر سے باہر تھے. اِس میں شک نہیں کہ سیکڑوں ہی منی پور کی ناریاں گوپیوں کے نام سے منڈپ میں موجود تھیں. سب کے کپڑے ایسے ہی سفید تھے جیسے مردوں کے. ہاں اُن کا پہناوا دوسرے ڈھنگ کا تھا. گوپیوں میں ہر عمر کی ناریاں تھیں. بہت چھوٹی لڑکیاں نہیں تھیں. ہاں گیارہ بارہ برس کی بھی تھیں' پر بہت کم. گوپیوں کا پھاگ ہم نہیں دیکھ پائے. پر جن لوگوں نے وہ پھاگ دیکھا تھا اُن کے منھ سے اُن کا حال جان لیا. منی پور کی ناریاں پردہ نہیں کرتیں. پر جو گوپی بن کر پھاگ کھیلنے آئی تھیں' وہ سب کی سب گھونگھٹ نکالے تھیں. اُن کا جوڑا کچھ اِس طرح بندھا ہوا تھا کہ اُن کا سر دوپٹے کے ساتھ ایسے ہی اُٹھا ہوا دکھائی دیتا تھا جس طرح ہریانے کی جاٹنیوں کا. پھاگ کی گوپیوں کے سوا اور کسی منی پوری ناری کا جوڑا اِس طرح بندھا ہوا نہیں دیکھا گیا.

साथ की सहेलियां उन्हें उनकी मदद करती है. कृश्न को इस नज़र से देखती हैं मानो यह कर रही हों कि यह तुमने क्या कर दिया. और फिर थोड़ी देर में राधा का बदला ले लेने के लिये वह अपने हाथ का गुलाल जब कृश्न की आंखों में फेंकती हैं तब राधा जी को यह अच्छा नहीं लगता और वह अपनी सहेलियों को इस तरह रोकती हैं मानो वह यह कह रही हों कि यह तुम क्या करती हो ? यह सब इस तरह का नृत्य होता है कि देखने वाले अपने आपको भूल जाते हैं. छोटे छोटे बच्चे तक रोना भूल जाते हैं. यहां यह भी ध्यान रहे कि यह सब काम नाच के साथ होता है ताल स्वर के अंदर होता है. एक सैकेंड के लिये भी नाचने वालियों का पांव नहीं टिकता. ठीक इसी तरह से जिन ऐसे नाचों ऊपर ज़िक्र आया है जैसे कृश्नार्जुन और लव कुश की अस्त्र शिक्षा, यह सब काम भी नाच के ज़रिये ही होते हैं. अस्त्र शिक्शा में भी न हाथ में कमान होती है न तीर. सब कुछ भावों के ज़रिये ही दिखाया जाता है.

मनीपुर की हर एक मंडली अपना आरकेस्ट्रा रखती है. जहां हमने यह नाच देखे थे उनका भी सबसे पहला प्रोग्राम आरकेस्ट्रा का था. एक बार बीच में भी बाजा बजा कर दिखाया था. नाच की तरह ही बाजे की कला में भी मनीपुरी बहुत तरक़्क़ी कर गए हैं. ज़रा से इम्फ़ाल शहर में कितनी ही नाटक मंडलियां हैं और यह सब टिकट लगा कर काम करती हैं. इसी से आप अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि मनीपुरी कला के कितने भक्त हैं.

आइये, अब आप को फाग खिलाने ले चलें. मनीपुरी लोग हर जगह फाग नहीं खेलते. उनके फाग खेलने की एक जगह है. वह इम्फ़ाल से बाहर एक मंदिर के पास है, उनका फाग मंडप इतना बड़ा होता है जिस में सोलह-बीस हज़ार आदमी बैठ सकते हैं. बीच में इतनी जगह छुटी रहती है जिस में पांच सौ आदमी समा सकें. मनीपुरी शिस्त के बड़े पक्के होते हैं. वह कभी इस तरह नहीं बैठेंगे कि बीच में निकलने के लिये जगह न रहे. हज़ारों की भीड़ में से भी अगर कोई निकलना चाहे या अन्दर आना चाहे तो आसानी से आ जा सकता है.

हम इस मंडप में ग्यारह बजे पहुँच गए थे. बारह बजे तक मंडप खचाखच भर गया था. जब हम पहुँचे तब एक मंडली उस बड़ी जगह में जो बीच में छुटी रहती है और जिस में पांच सौ आदमियों के लिये जगह होती है, अपना कीर्तन कर रही थी. इस मंडली की जन संख्या पच्चीस तीस के भीतर रही होगी. इसमें हर उमर के आदमी थे दो बारह बरस के बच्चे भी थे. सबके सब सफ़ेद कपड़े पहने हुए थे. और ऐसा मालूम होता था कि वह आज ही धुल कर आए हैं. मंडली का हर एक आदमी धोती

ساتھ کی سہیلیاں اُنھیں اُن کی مدد کرتی ھیں۔ کرشن کو اِس نظر سے دیکھتی ھیں مانو یہ کہہ رھی ھوں کہ یہ تم نے کیا کر دیا ۔ اور پھر تھوڑی دیر میں رادھا کا بدلہ لے لینے کے لئے وہ اپنے ھاتھ کا گلال جب کرشن کی آنکھوں میں پھینکتی ھیں تب رادھا جی کو یہ اچھا نہیں لگتا اور وہ اپنی سہیلیوں کو اِس طرح روکتی ھیں مانو وہ یہ کہہ رھی ھوں کہ یہ تم کیا کرتی ھو ؟ یہ سب اِس طرح کا نرتیہ ھوتا ھے کہ دیکھنے والے اپنے آپ کو بھول جاتے ھیں۔ چھوٹے چھوٹے بچے تک رونا بھول جاتے ھیں ۔ یہاں یہ بھی دھیان رھے کہ یہ سب کام ناچ کے ساتھ ھوتا ھے۔ تال سور کے اندر ھوتا ھے۔ ایک سیکنڈ کے لئے بھی ناچنے والیوں کا پاؤں نہیں ٹکتا. ٹھیک اِسی طرح سے جن ایسے ناچوں کا اُوپر ذکر آیا ھے جیسے کرشن ارجن اور لو کش کی استر شکشا، یہ سب کام بھی ناچ کے ذریعہ ھی ھوتے ھیں۔ استر شکشا میں بھی نہ ھاتھ میں کمان ھوتی ھے نہ تیر. سب کچھ بھاؤں کے ذریعہ ھی دکھایا جاتا ھے ۔

منی پور کی ھر ایک منڈلی اپنا آرکیسٹرا رکھتی ھے، جہاں ھم نے یہ ناچ دیکھے تھے ان کا بھی سب سے پہلا پروگرام آرکیسٹرا کا تھا ۔ ایک بار بیچ میں بھی باجا بجا کر دکھایا تھا ۔ ناچ کی طرح ھی باجے کی کلا میں بھی منی پوری بہت ترقی کر گئے ھیں ۔ ذرا سے اِمپھال شہر میں کتنی ھی ناٹک منڈلیاں ھیں اور یہ سب ٹکٹ لگا کر کام کرتی ھیں۔ اِسی سے آپ اندازہ لگا سکتے ھیں کہ منی پوری کلا کے کتنے بھکت ھیں ۔

آئیے، اب آپ کو پھاگ کھلانے لے چلیں۔ منی پوری لوگ ھر جگہ پھاگ نہیں کھیلتے ۔ اُن کے پھاگ کھیلنے کی ایک جگہ ھے ۔ وہ اِمپھال سے باھر ایک مندر کے پاس ھے، اُن کا پھاگ منڈپ اِتنا بڑا ھوتا ھے جس میں سولہ بیس ھزار آدمی بیٹھ سکتے ھیں ۔ بیچ میں اتنی جگہ چھٹی رھتی ھے جس میں پانچ سو آدمی سما سکیں۔ منی پوری نشست کے بڑے پکے ھوتے ھیں ۔ وہ کبھی اِس طرح نہیں بیٹھیں گے کہ بیچ میں نکلنے کے لئے جگہ نہ رھے ۔ ھزاروں کی بھیڑ میں سے بھی اگر کوئی نکلنا چاھے یا اندر آنا چاھے تو آسانی سے آ جا سکتا ھے ۔

ھم اِس منڈپ میں گیارہ بجے پہونچ گئے تھے ۔ بارہ بجے تک منڈپ کھچا کھچ بھر گیا تھا ۔ جب ھم پہونچے تب ایک منڈلی اُس بڑی جگہ میں جو بیچ میں چھٹی رھتی ھے اور جس میں پانچ سو آدمیوں کے لئے جگہ ھوتی ھے، اپنا کیرتن کر رھی تھی۔ اِس منڈلی کی جن سنکھیا پچیس تیس کے بھیتر رھی ھوگی ۔ اِس میں ھر عمر کے آدمی تھے۔ دو بارہ برس کے بچے بھی تھے۔ سب کے سب سفید کپڑے پہنے ھوئے تھے اور ایسا معلوم ھوتا تھا کہ وہ آج ھی دھل کر آئے ھیں۔ منڈلی کا ھر ایک آدمی دھوتی

लीजिये उनके बंसत रास का हाल सुनिये. उससे भी पहले एक बात और सुन लीजिये. बंसत रास में लड़कियां ही हिस्सा लेती हैं. कृश्न भी लड़की ही बनती है. कृश्न बनने के लिये एक शर्त जरूरी है, लड़की की उमर ग्यारह बरस से ज़ियादा नहीं होनी चाहिये. कोई लड़की राधा बनकर नहीं नाच सकती जब तक कि वह एक बार कृश्न न बन चुकी हो. इसलिये हर घराना इस फ़िकर में रहता है कि उनकी लड़कियों को ग्यारह बरस से पहले पहले कृश्न बनकर नृत्य करने का मौक़ा मिल जाय. वही घराना अपने आपको बहुत भाग्यशाली मानता है जिस घराने की कोई लड़की राधा बनकर नाचने का मौक़ा पा जाय. इन बातों से आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि नृत्य वहां कोरी कला नहीं धर्म का अंग भी है. हमारे पढ़ने वाले यह भी ख़याल रखें कि मनीपुरियों का नाच देखकर उनके मन में वासना नहीं, जाग सकती, उल्टा वैराग जागेगा. विकारी मन पवित्र होने लगेगा.

अब नाच देखिये. देखिये घंटी बजी, पर्दा उठा. वह देखिये दस ग्यारह बरस के कृश्न नाचते हुए चले आ रहे हैं. हाथ में बंसी नहीं है. पर दोनों हाथ इसी तरह उठे हैं मानो बंसी है. और वह उनके होटों को छू रही है. नाचते नाचते कुछ मिनट भी नहीं बीतते कि कृश्न जी चल देते हैं. अब देखिये राधा जी अपनी दो सहेलियों के साथ नाचने आ रही हैं. तीनों की तीनों एक रंग की हैं. तीनों के कपड़े बहुत तड़कीले-भड़कीले हैं. बिजली की रोशनी में चमाचम चमकते हैं. बीच में राधा हैं इधर उधर उनकी दो सहेलियां हैं. तीनों ऐसे नाचती हैं मानो काठ की पुतलियां हों और किसी ऐसी चौकी पर जड़ी हुई जिसके नीचे स्प्रींग लगी हो. अगर हाथ उठेंगे तो एक साथ, गर्दन हिलेंगी तो एक साथ. यहां तक कि आंखों के इशारे भी एक साथ होंगे और एक ही तरह के होंगे. उनके नाचने में इतनी सुबकी यानी हलकापन देखा गया कि अगर वह सचमुच बताशों पर नाचतीं तो बताशे न फूटते. यह नाच चल ही रहा था कि कृश्न जी फिर आधमकते हैं और अब पिचकारी से रंग फेंकने और गुलाल फेंकने का काम शुरू हो जाता है. पाठकों को ध्यान रहे न वहां किसी के हाथ में पिचकारी होती है और न गुलाल. बस हाथ के इशारे ही यह बताते हैं कि पिचकारियां चल रही हैं और गुलाल फेंका जा रहा है. कभी राधा और सखी सहेलियां मिलकर कृश्न को बीच में घेर लेती हैं और कभी अलग हो जाती हैं. जब कृश्न जी दायें हाथ से बांये हाथ में से गुलाल लेकर राधा और उनकी सखियों के मुंह पर फेंकते हैं तो कुछ गुलाल राधा की आंखों में जा पड़ता है और वह अपनी आंखें अपने हाथों से ढंकने लगती हैं और आंसू गिराने लगती हैं.

لیجئے اُن کے بسنت راس کا حال سنئے. اُس سے بھی پہلے ایک بات اور سن لیجئے. بسنت راس میں لڑکیاں ہی حصہ لیتی ہیں . کرشن بھی لڑکی ہی بنتی ہے . کرشن بننے کے لئے ایک شرط ضروری ہے، لڑکی کی عمر گیارہ برس سے زیادہ نہیں ہونی چاہئے . کوئی لڑکی رادھا بن کر نہیں ناچ سکتی جب تک کہ وہ ایک بار کرشن نہ بن چکی ہو . اِس لئے ہر گھرانا اِس فکر میں رہتا ہے کہ اُن کی لڑکیوں کو گیارہ برس سے پہلے پہلے کرشن بن کر نرتیہ کرنے کا موقعہ مل جائے وہی گھرانہ اپنے آپ کو بہت بھاگیہ شالی مانتا ہے جس گھرانے کی کوئی لڑکی رادھا بن کر ناچنے کا موقعہ پا جائے . اِن باتوں سے آپ اندازہ لگا سکتے ہیں کہ نرتیہ وہاں کوری کلا نہیں، دھرم کا انگ بھی ہے. ہمارے پڑھنے والے یہ بھی خیال رکھیں کہ منی پوریوں کا ناچ دیکھ کر اُن کے من میں واسنا نہیں جاگ سکتی، اُلٹا ویراگ جاگیگا. وکاری من پوتر ہونے لگیگا .

اب ناچ دیکھئے. دیکھئے گھنٹی بجی، پردہ اُٹھا . وہ دیکھئے دس گیارہ برس کے کرشن ناچتے ہوئے چلے آ رہے ہیں. ہاتھ میں بنسی نہیں ہے. پر دونوں ہاتھ اسی طرح اُٹھے ہیں مانو بنسی ہے. اور وہ اُن کے ہونٹوں کو چھو رہی ہے . ناچتے ناچتے کچھ منٹ بھی نہیں بیتتی کہ کرشن جی چل دیتے ہیں. اب دیکھئے رادھا جی اپنی دو سہیلیوں کے ساتھ ناچنے آ رہی ہیں. تینوں کی تینوں ایک رنگ کی ہیں. تینوں کے کپڑے بہت تڑکیلے بھڑکیلے ہیں . بجلی کی روشنی میں چما چم چمکتے ہیں . بیچ میں رادھا ہیں. اِدھر اُدھر اُن کی دو سہیلیاں ہیں. تینوں ایسے ناچتی ہیں مانو کاٹھ کی پتلیاں ہوں اور کسی ایسی چوکی پر جڑی ہوئی جس کے نیچے اِسپرنگ لگی ہو . اگر ہاتھ اُٹھینگے تو ایک ساتھ' گردن ہلینگی تو ایک ساتھ. یہاں تک کہ آنکھوں کے اِشارے بھی ایک ساتھ ہونگے اور ایک ہی طرح کے ہونگے . اُن کے ناچنے میں اتنی سبکی یعنی ہلکاپن دیکھا گیا کہ اگر وہ سچ مچ بتاشوں پر ناچتیں تو بتاشے نہ پھوٹتے . یہ ناچ چل ہی رہا تھا کہ کرشن جی پھر آدھمکتے ہیں اور اب پچکاری سے رنگ پھینکنے اور گلال پھینکنے کا کام شروع ہو جاتاہے. پاٹھکوں کو دھیان رہے نہ وہاں کسی کے ہاتھ میں پچکاری ہوتی ہے اور نہ گلال. بس ہاتھ کے اِشارے ہی یہ بتاتے ہیں کہ پچکاریاں چل رہی ہیں اور گلال پھینکا جا رہا ہے . کبھی رادھا اور سکھی سہیلیاں مل کر کرشن کو بیچ میں گھیر لیتی ہیں اور کبھی الگ ہو جاتی ہیں. جب کرشن جی دائیں ہاتھ سے بائیں ہاتھ میں سے گلال لیکر رادھا اور اُن کی سکھیوں کے منہ پر پھینکتے ہیں تو کچھ گلال رادھا کی آنکھوں میں جاپڑتا ہے اور وہ اپنی آنکھیں اپنے ہاتھوں سے ڈھکنے لگتی ہیں اور آنسو گرانے لگتی ہیں.

पूजा करने के बाद उस कुटी की परिक्रमा करते हैं यानी उसके चारों तरफ़ घूमते हैं. फिर गौरांग प्रभु की मूरती बाहर निकाल कर कुटी में आग लगा देते हैं. उत्तर प्रदेश की तरह जौ या गेहूँ की बालें भूनने का रिवाज मनीपुरियों में नहीं है. यह कुटी सारा मोहल्ला मिलकर बनाता है. बांस हरे होते हैं, वह फूस के जलते जलते जल नहीं सकते. उन बचे बांसों को वह आदमी अपने घर ले जाता है जो उसमें आग लगाता है. इस तरह की होली से मनीपुरी यह बताना चाहते हैं कि किस तरह गोरांग महाप्रभु ने अपना घर छोड़कर उसे हमेशा के लिये जला दिया.

मनीपुरियों में हिन्दुओं की तरह चारों वर्न मिलते हैं. वह अपने आप को अर्जुन के बेटे बभ्रूवाहन की औलाद मानते हैं. बभ्रूवाहन चित्रांगदा से पैदा था. चित्रांगदा मनीपुर की थी. मनीपुरियों में मनीपुर का प्रेम इतना ज़ियादा बढ़ गया है कि उसे कम करने की ज़रूरत है. वह दुनिया की कोई बात मनीपुर के बग़ैर सोच ही नहीं सकते. मनीपुरी पैदायशी कलाकर होते हैं. इस बात का पूरा वर्नन हम आगे करेंगे जब हम उनके रंग खेलने का ज़िक्र करेंगे. इस वक़्त तो हम यह दिखायेंगे कि वह कितना अच्छा गाना और बजाना जानते हैं और कितना अच्छा नाचकर दिखाते हैं. इमफ़ाल में "कला-भवन" नाम की एक संस्था है. होली के दिन उनके यहां गाने बजाने का प्रोग्राम था. उसे देखने के लिये हमें बुलावा मिल गया था हम सब उसे देखने पहुंचे. वहां हमको 9 तरह के नृत्य दिखाये गये. उनके नाम यह हैं :

1. बसन्त रास. 2. खूबक चौलम. यानी ताली नृत्य. 3. खंजरी नृत्य. 4. चित्रांगदार्जुन. 5. लिस्वां नृत्य यानी सृष्टि नृत्य. 6. पुंगचोलंब. 7. कृश्नार्जुन. 8. नागाओं का आदम जीवन. 9. लव-कुश अस्त्र शिक्षा.

इन नृत्यों के नाम सुनकर हमारे पढ़ने वाले ज़रूर अचरज में पड़ जायेंगे. चित्रांगदार्जुन, कृश्नार्जुन, अस्त्र शिक्षा. यह सब नाच कैसे ? सचमुच यह नाच नहीं हो सकते. हम अपने पाठकों को समझाने की कोशिश ज़रूर करेंगे, पर उन्हें ठीक ठीक आनंद तो उसी वक़्त आ सकता है जब वह उन नाचों को ख़ुद मनीपुर जा कर देखें.

गाने-बजाने और नृत्य की कला मनीपुरियों में इतनी तरक़्क़ी कर गई कि वह हर काम नाच गाकर करते हैं. इस नाच गाने के सहारे उनमें शिस्त इतनी बढ़ गई है कि उनका हर काम ऐसा मालूम होता है मानो कोई मशीन कर रही हो. मनीपुरी हर काम ख़ूबी के साथ करते हैं, उसको कला का रूप दे देते हैं. हमने उनकी होली देखी. उनका फाग नाम के लिये फाग है. ज़ियादातर तो वह कला का ही फाग है, उसका वर्नन हम अलग से ही करेंगे.

پوجا کرنے کے بعد اُس کٹی کی پری کرما کرتے ہیں یعنی اُس کے چاروں طرف گھومتے ہیں . پھر گورانگ پربھو کی مورتی باہر نکالکر کٹی میں آگ لگا دیتے ہیں. اتر پردیش کی طرح جو یا گیہوں کی بالیں بھوننے کا رواج منی پوریوں میں نہیں ہے . یہ کٹی سارا محلہ مل کر بناتا ہے . بانس ہرے ہوتے ہیں. وہ پھوس کے جلتے جلتے جل نہیں سکتے . اُن بچے بانسوں کو وہ آدمی اپنے گھر لے جاتا ہے جو اُس میں آگ لگاتا ہے . اس طرح کی ہولی سے منی پوری یہ بتانا چاہتے ہیں کہ کس طرح گورانگ مہا پربھو نے اپنا گھر چھوڑ کر اُسے ہمیشہ کے لئے جلا دیا .

منی پوریوں میں ہندوؤں کی طرح چاروں ورن ملتے ہیں . یہ اپنے آپ کو ارجن کے بیٹے ببرو باہن کی اولاد مانتے ہیں . ببرو باہن چترانگدا سے پیدا تھا . چترانگدا منی پور کی تھی . منی پوریوں میں منی پور کا پریم اتنا زیادہ بڑھ گیا ہے کہ اُسے کم کرنے کی ضرورت ہے . وہ دنیا کی کوئی بات منی پور کے بغیر سوچ ہی نہیں سکتے. منی پوری پیدائشی کلا کار ہوتے ہیں . اس بات کا پورا ورنن ہم آگے کریں گے جب ہم اُن کے رنگ کھیلنے کا ذکر کرینگے . اس وقت تو ہم یہ دکھائیں گے کہ وہ کتنا اچھا گانا اور بجانا جانتے ہیں اور کتنا اچھا ناچ کر دکھاتے ہیں . امپھال میں " کلا بھون " نام کی ایک سنستھا ہے . ہولی کے دن اُن کے یہاں گانے بجانے کا پروگرام تھا . اُسے دیکھنے کے لئے ہمیں بلاوا مل گیا تھا . ہم سب اُسے دیکھنے پہونچے . وہاں ہم کو 9 طرح کے نرتیہ دکھائے گئے . اُن کے نام یہ ہیں :

1. بسنت راس . 2. کھوبک چولم یعنی تالی نرتیہ. 3. کھنجری نرتیہ . 4. چترانگدارجن . 5 لسماں نرتیہ یعنی سرشٹی نرتیہ . 6. پنگ چولمب . 7. کرشن ارجن. 8. ناگاؤں کا آدم جیون. 9. لو کش استر شکشا .

ان نرتیوں کے نام سن کر ہمارے پڑھنے والے ضرور اچرج میں پڑ جائیں گے. چترانگدارجن، کرشن ارجن، استر شکشا یہ سب ناچ کیسے ؟ سچ مچ یہ ناچ نہیں ہو سکتے . ہم اپنے پاٹھکوں کو سمجھانے کی کوشش ضرور کریں گے . پر انہیں ٹھیک ٹھیک آنند تو اسی وقت آ سکتا ہے جب وہ ان ناچوں کو خود منی پور جا کر دیکھیں .

گانے بجانے اور نرتیہ کی کلا منی پوریوں میں اتنی ترقی کر گئی ہے کہ وہ ہر کام ناچ گا کر کرتے ہیں . اس ناچ گانے کے سہارے اُن میں ہمت اتنی بڑھ گئی ہے کہ اُن کا ہر کام ایسا معلوم ہوتا ہے مانو کوئی مشین کر رہی ہو . منی پوری ہر کام خوبی کے ساتھ کرتے ہیں، اُس کو کلا کا روپ دے دیتے ہیں. ہم نے ان کی ہولی دیکھی . اُن کا پھاگ نام کے لئے پھاگ ہے. زیادہ تر تو وہ کلا کا ہی پھاگ ہے. اس کا ورنن ہم الگ سے ہی کرینگے .

बीच का. बड़ी से बड़ी लड़की और छोटे से छोटा लड़का, सबके सब, घरेलू कामों में इतना होशियार हैं और इतनी फुर्ती से काम करते हैं जितना एक ऐसा बच्चा, जिसने किसी मजदूर के यहां जन्म लिया हो. यह सब मिल कर क्या हमको कुछ भी काम करने देते थे ? दस बरस की लड़की जब हमारे लिये दूध लाती थी और उसमें शक्कर मिलाती थी तब देखते ही बनता था. उसके हाथ इस सफ़ाई और ढंग से चलते थे कि यह नहीं कहा जा सकता था कि यह कि यह दस बरस की लड़की के हाथ हैं. किसी बच्चे के हाथ से कभी कोई चीज़ गिरते नहीं देखी. बिस्तर बिछाना, हाथ धुलाना, वक़्त पर साबुन लाकर रख देना, साबुन लाकर रख देना, कोई काम ऐसा न था जिसे घर के सब बच्चे ख़ुशी के साथ न कर सकते हों. बच्चों के मां बाप को बहुत कम हुक्म देने की ज़रूरत पड़ती थी. हमारा ख़याल है मां की ग़ैरहाज़िरी में भी हमें कोई दिक़्क़त न होती. यह दूसरी बात है कि चार दिन में हमको कभी ऐसा मौक़ा न मिला—कि घर की मालकिन ग़ैरहाज़िर हों.

नृत्य कला के लिये मनीपुर को मशहूर सुना था, देखा न था. यह कला दिखाने के लिये ही श्री कामाख्याराम जी हमें मनीपुर ले गये थे. होली का मौक़ा भी अच्छा ढूंढा गया था. हम 27 की शाम को मनीपुर पहुंच गये. 28 शाम को होली जलने वाली थी. इच्छा हुई, होली जलने का तमाशा देखा जाय. आसाम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के संचालक, श्री रजनीकांत चक्रवर्ती को साथ लेकर पंडित जी और हम होली देखने निकल पड़े. कुछ दूर चलने पर देखने को मिली, एक नई छाई हुई झोंपड़ी. पूछने पर मालूम हुआ, होली के लिये यह झोंपड़ी बनाई गई है. इसी में आग लगाई जायगी. यह सुनकर हमारा अचरज जाग गया. हम पूछ बैठे, "यह कैसी होली ?" पता चला:

मनीपुर है तो नागाओं का देश और वहां के रहने वाले नागा ही थे, पर अब वहां उतने नागा नहीं रह गये. मनीपुरी सब वैष्णव हैं. कब से वैष्णव हैं, पता नहीं. राधा-कृष्ण के भक्त हैं, और इसी सिलसिले में श्री गौरांगप्रभु के भक्त हैं. उन्हीं गौरांग प्रभु का जन्म दिन वह होली के रूप से मनाते हैं.

मनीपुरियों की होली उसी वक़्त जलती है जिस वक़्त और लोगों की. यह पहले कहा जा चुका है कि लकड़ियों का ढेर लगाने की जगह मनीपुरी बांसों की एक चौकोर कुटी तैयार करते हैं जिस पर फूस का छप्पर पड़ा होता है. कुटी की दिवारों पर भी फूस लगा रहता है. होली जलने से पहले उस मोहल्ले के लोग सफ़ेद कपड़े पहने हुए [illegible] इकट्ठे होकर उस कुटी के पास आते हैं. उस कुटी में गौरांग प्रभु की मूरत होती है. उसकी वह पूजा करते हैं.

بیچ کا . بڑی لڑکی اور چھوٹے سے چھوٹا لڑکا سب کے سب گھریلو کاموں میں اتنے ہوشیار ہیں اور اتنی پھرتی سے کام کرتے ہیں جتنا ایک ایسا بچہ، جس نے کسی مزدور کے یہاں جنم لیا ہو . یہ سب مل کر کیا ہمکو کچھ بھی کام کرنے دیتے تھے ؟ دس برس کی لڑکی جب ہمارے لئے دودھ لاتی تھی اور اس میں شکر ملاتی تھی تب دیکھتے ہی بنتا تھا . اس کے ہاتھ اس صفائی اور ڈھنگ سے چلتے تھے کہ یہ نہیں کہا جا سکتا تھا کہ یہ دس برس کی لڑکی کے ہاتھ ہیں . کسی بچے کے ہاتھ سے کبھی کوئی چیز گرتے نہیں دیکھی . بستر بچھانا، ہاتھ دھلانا، وقت پر صابن لا کر رکھدینا، صابن لا کر رکھدینا، کوئی کام ایسا نہ تھا جسے گھر کے سب بچے خوشی کے ساتھ نہ کر سکتے ہوں . بچوں کے ماں باپ کو بہت کم حکم دینے کی ضرورت پڑتی تھی . ہمارا خیال ہے ماں کی غیر حاضری میں بھی ہمیں کوئی دقت نہ ہوتی . یہ دوسری بات ہے کہ چار دن میں ہمکو کبھی ایسا موقع نہ ملا کہ گھر کی مالکن غیر حاضر ہوں .

نرتیہ کلا کے لئے منی پور کو مشہور سنا تھا، دیکھا نہ تھا . یہ کلا دکھانے کے لئے ہی شری کاماکھیا رام جی ہمیں منی پور لے گئے تھے . ہولی کا موقعہ بھی اچھا ڈھونڈھا گیا تھا . ہم 27 کی شام کو منی پور پہونچ گئے تھے . 28 کی شام کو ہولی جلنے والی تھی . اچھا ہوئی ہولی جلنے کا تماشہ دیکھا جائے . آسام راشٹر بھاشا پرچار سمیتی کے سنچالک، شری رجنی کانت چکرورتی کو ساتھ لے کر پنڈت جی اور ہم ہولی دیکھنے نکل پڑے . کچھ دور چلنے پر دیکھنے کو ملی، ایک نئی چھائی ہوئی جھونپڑی . پوچھنے پر معلوم ہوا، ہولی کے لئے یہ جھونپڑی بنائی گئی ہے . اسی میں آگ لگائی جائے گی . یہ سن کر ہمارا اچرج جاگ گیا . ہم پوچھ بیٹھے، "یہ کیسی ہولی؟" پتہ چلا !

منی پور ہے تو ناگاؤں کا دیش اور یہاں کے رہنے والے ناگا ہی تھے، پر اب یہاں اتنے ناگا نہیں رہ گئے . منی پوری سب ویشنو ہیں . کب سے ویشنو ہیں، پتہ نہیں . رادھا کرشن کے بھگت ہیں، اور اسی سلسلے میں شری گورانگ پربھو کے بھگت ہیں . انہیں گورانگ پربھو کا جنم دن یہ ہولی کے نام سے مناتے ہیں .

منی پوریوں کی ہولی اسی وقت جلتی ہے جس وقت اور لوگوں کی . یہ پہلے کہا جا چکا ہے کہ لکڑیوں کا ڈھیر لگانے کی جگہ منی پوری بانسوں کی ایک چوکور کٹی تیار کرتے ہیں جس پر پھوس کا چھپر پڑا ہوتا ہے . کٹی کی دیواروں پر بھی پھوس لگا رہتا ہے . ہولی جلنے سے پہلے اس محلے کے لوگ سفید کپڑے پہنے ہوئے [illegible] اکٹھے ہو کر اس کٹی کے پاس آتے ہیں . اس کٹی میں گورانگ پربھو کی مورت ہوتی ہے . اسکی وہ پوجا کرتے ہیں .

संभाले थे. देखने में मामूली थे उन्होंने एक एक केला हमें पेश किया. हमने मेहमान का धर्म निबाहने के लिये लिया, पर जब उसे खाया तब हम मेहमान का धर्म भूल गये. दूसरा केला मांग बैठे. इसी से पाठक अंदाज़ा लगा सकते हैं कि यह केले खाने में कितने अच्छे होते हैं.

हम आसाम के शिक्षा मंत्री से बातें कर ही रहे थे कि पंडित सुन्दरलाल जी को आसाम के गवर्नर श्री जयराम दास दौलत राम का बुलावा मिल गया. पंडित जी जब गवर्नर साहब और चीफ मिनिस्टर से मिल कर लौटे तब पता चला कि नागा पहाड़ियों में कोहीमा जाने के लिये परमिट की ज़रूरत पड़ती है. वैसा परमिट भी वह चीफ मिनिस्टर से लेते आये थे. कोहिमा मनीपुर और आसाम प्रान्त के बीच की एक पहाड़ी है. 4,900 फ़ीट ऊंची है. उसी से लगी एक दस हज़ार फ़ीट ऊंची पहाड़ी है जिस पर चढ़ कर जापानियों ने अंगरेज़ी फ़ौजों पर हमला किया था. इसी कोहीमा से 86 मील दूर मनीपुर की राजधानी, इम्फाल है. मनीपुर रियासत में दाखिल होने के लिये या इम्फाल जाने के लिये किसी परमिट की ज़रूरत नहीं होती. इम्फाल और कलकत्ते के बीच हवाई जहाज़ का रास्ता भी है. कलकत्ते से इम्फाल तक का हवाई जहाज़ का किराया 95 रुपए है.

मनीपुर चीफ कमिश्नर प्रान्त है. इसकी हद बरमा से मिली हुई है. आसाम का तो यह हाल है कि उसकी हद बरमा, चीन, नेपाल, भूटान, और पाकिस्तान पांचों से मिली हुई है. मनीपुर कश्मीर की तरह मैदान में बसा है. इम्फाल नाम की एक नदी भी है जो मनीपुर प्रान्त के बीच में हो कर बहती है. 30-34 मील चलकर यह नदी पहाड़ को काट कर बरमा में जा दाखिल होती है.

मनीपुर के दौरे में श्री कमाख्याराम जी हमारे साथ थे इम्फाल में उन्होंने हमको अपनी बेटी का मेहमान बनाया. जैसे ही हमने उनकी बेटी के मकान में क़दम रखा वैसे ही श्री कामाख्याराम जी ने सबसे पहली बात जो हमें बताई वह यह थी, देखिये, इस घर में कोई नौकर नहीं है. यों तो हमें नौकरों से काम लेने की आदत नहीं. पर यह सुनकर हमने और भी हर काम के लिये अपने मन को तैयार कर लिया. पर दूसरे मिनट से ही हमें यह महसूस होने लगा कि हम एक ऐसे घर में हैं जहां एक नहीं, आठ नौकर हमारी सेवा को तैयार हैं. श्री कामाख्याराम जी के दामाद इन्जीनियर हैं. हज़ार रुपये तनख़्वाह पाते हैं, पर उनकी धर्मपत्नी, यानी श्री कामाख्या रामजी, चीफ जज की लड़की, सारे घर का काम इतनी अच्छी तरह संभाले हुए थी जितनी अच्छी तरह एक महाराजिन और दो कहारन भी नहीं संभाल सकतीं. इनके चार लड़कियां और दो लड़के हैं. सबसे बड़ी लड़की पंद्रह बरस की है, सबसे छोटी नौ बरस की. सबसे बड़ा लड़का आठ का और सबसे छोटा

سنبھالے تھے. دیکھنے میں معمولی تھے. انہوں نے ایک ایک کیلا ہمیں پیش کیا. ہم نے مہمان کا دھرم نباہنے کے لئے لے لیا پر جب اسے کھایا تب ہم مہمان کا دھرم بھول گئے. دوسرا کیلا مانگ بیٹھے. اسی سے پاٹھک اندازہ لگا سکتے ہیں کہ یہ کیلے کھانے میں کتنے اچھے ہوتے ہیں.

ہم آسام کے شکشا منتری سے باتیں کر ہی رہے تھے کہ پنڈت سندر لال جی کو آسام کے گورنر شری جے رام داس دولت رام کا بلاوا مل گیا. پنڈت جی جب گورنر صاحب اور چیف منسٹر سے مل کر لوٹے تب پتہ چلا کہ ناگا پہاڑیوں میں کوہیما جانے کے لئے پرمٹ کی ضرورت پڑتی ہے. ویسا پرمٹ بھی وہ چیف منسٹر سے لیتے آئے تھے. کوہیما منی پور پرانت اور آسام پرانت کے بیچ کی ایک پہاڑی ہے. 4,900 فٹ اونچی ہے. اسی سے لگی ایک دس ہزار فٹ اونچی پہاڑی جو جس پر چڑھ کر جاپانیوں نے انگریزی فوج پر حملہ کیا تھا. اسی کوہیما سے 86 میل دور منی پور کی راجدھانی، امپھال ہے. منی پور ریاست میں داخل ہونے کے لئے یا امپھال جانے کے لئے کسی پرمٹ کی ضرورت نہیں ہوتی. امپھال اور کلکتے کے بیچ ہوائی جہاز کا راستہ بھی ہے. کلکتے سے امپھال تک کا ہوائی جہاز کا کرایہ 95 روپے ہے.

منی پور چیف کمشنر پرانت ہے. اسکی حد برما سے ملی ہوئی ہے. آسام کا تو یہ حال ہے کہ اسکی حد برما، چین، نیپال، بھوٹان اور پاکستان پانچوں سے ملی ہوئی ہے. منی پور کاشمیر کی طرح میدان میں بسا ہے. امپھال نام کی ایک ندی بھی ہے جو منی پور پرانت کے بیچ میں ہو کر بہتی ہے. 30-31 میل چل کر یہ ندی پہاڑ کو کاٹ کر برما میں جا داخل ہوتی ہے.

منی پور کے دورے میں شری کاماکھیا رام جی ہمارے ساتھ تھے. امپھال میں انہوں نے ہمکو اپنی بیٹی کا مہمان بنایا. جیسے ہی ہم نے ان کی بیٹی کے مکان میں قدم رکھا ویسے ہی شری کاماکھیا رام جی نے سب سے پہلی بات جو ہمیں بتائی وہ یہ تھی، دیکھئے اس گھر میں کوئی نوکر نہیں ہے. یوں تو ہمیں نوکروں سے کام لینے کی عادت نہیں، پر یہ سن کر ہم نے اور بھی ہر کام کے لئے اپنے من کو تیار کر لیا. پر دوسرے منٹ سے ہی ہمیں یہ محسوس ہونے لگا کہ ہم ایک ایسے گھر میں ہیں جہاں ایک نہیں، آٹھ نوکر ہماری سیوا کو تیار ہیں. شری کاماکھیا رام جی کے داماد انجینئر ہیں. ہزار روپے تنخواہ پاتے ہیں، پر ان کی دھرم پتنی، یعنی شری کاماکھیا رام جی، چیف جج کی لڑکی، سارے گھر کا کام اتنی اچھی طرح سنبھالے ہوئے تھی جتنی اچھی طرح ایک مہاراجن اور دو کہارن بھی نہیں سنبھال سکتیں. ان کے چار لڑکیاں اور دو لڑکے ہیں. سب سے بڑی لڑکی پندرہ برس کی ہے، سب سے چھوٹی نو برس کی. سب سے بڑا لڑکا آٹھ کا اور سب سے چھوٹا

दूसरे दिन हम लोग बशिश्ठ आश्रम देखने गये. यह आश्रम गोहाटी से कुछ मील दूर है. क़ुदरती नज़ारे यहां एक से ज़ियादा मौजूद हैं. जी चाहता है इन्हें घंटों, हफ़्तों, महीनों देखा जाय पर पता लगा, तंदुरुस्ती के लिहाज़ से यह जगह इतना ख़राब है कि यहां तीन दिन रह कर भी शायद ही कोई बुख़ार से बच सके.

बशिश्ठ आश्रम बशिश्ट जी की एक पुरानी यादगार है बशिश्ट जी के नाम से एक मंदिर बना हुआ है उस मंदिर में बशिश्ट जी की एक मूरत है जिसके दर्शन दिन में भी बग़ैर दीपक नहीं हो सकते मंदिर के सामने का दालान भूकंप में टूट गया था उस पर टीन डाल कर मरम्मत कर दी गई है उसके नीचे कुछ और मूर्तियां भी बिराजमान कर दी गई हैं. वहां एक पुजारी रहता है जो उस मंदिर की देख रेख करता है और पूजा भी करता है. इस मंदिर या आश्रम से लगी तीन धाराएं बहती हैं. हर एक धारा फ़ुट डेढ़ फ़ुट से ज़ियादा चौड़ी नहीं. यों समझिये कि प्रकृति ने ने पत्थर काट कर तीन नाली निकाल दी हैं जो आगे जा कर एक कुंड में मिलती हैं. और नदी का रूप ले लेती हैं.

आसाम वासियों ने प्रकृति से भक्ति दिखा कर उन धाराओं और कुंड के नाम रख दिये हैं. संध्या, ललिता, कांता और कुंड को अमृत कुंड कह कर बोलते हैं. कुंड और धाराएं तीन तरफ़ ऊंची पहाड़ी से घिरी हैं. एक तरफ़ कुछ कम ऊंची पहाड़ी है. उधर से आने जाने का रास्ता है. इस कुंड पर साल में एक से ज़ियादा बार मेले लगते हैं.

24 फ़रवरी को हम लोग शिलांग पहुंच गये, रास्ते में हमको एक मदरासी सज्जन मिल गये. मालूम हुआ, यह बरसों से आसाम प्रान्त में काम कर रहे हैं, आसामी बोली ऐसे ही बोल लेते हैं जैसे मानो इनकी अपनी बोली हो. आसाम के शिक्षा मंत्री के बंगले के पास इनका बंगला था. इन्हीं के यहां हम लोगों ने खाना खाया. इनके बाल बच्चों से हम इतने हिल मिल गये कि हमको यह मालूम होने लगा कि हम अपने घर में बैठे हैं. इनके बच्चे कुछ कुछ हिन्दी बोल लेते हैं. बच्चों की मां ख़ूब हिन्दी समझती हैं और बोलती हैं. मदरासी सज्जन अपनी बोली तो जानते ही हैं, अंगरेज़ी के पंडित हैं ही. पर हिन्दी और आसामी भी इतनी अच्छी जानते हैं कि अचानक कोई आसामी या उत्तर प्रदेश का रहने वाला इन्हें मदरासी नहीं कह सकता.

शिलांग से तीस मील दूर हमारे देश का चिरापुंजी नामी वह क़स्बा है जो अपनी बरखा के लिये दुनिया में मशहूर है. यहां साल भर मे दो सौ अस्सी इंच तक बरखा हो जाती है. यहां के नौ दस इंच लंबे केले खाने में बहुत अच्छे मालूम होते हैं. शिक्षा विभाग के डिप्टी डायरेक्टर [illegible] कुमारदत्त ने हमारे लिये यह केले ख़ास तौर से

دوسرے دن ہم لوگ وشسٹھ آشرم دیکھنے گئے . یہ آشرم گوہاٹی سے کچھ میل دور ہے . قدرتی نظارے یہاں ایک سے زیادہ موجود ہیں . جی چاہتا ہے انہیں گھنٹوں ہفتوں' مہینوں دیکھا جائے' پر پتہ لگا' تندرستی کے لحاظ سے وہ جگہ اتنی خراب ہے کہ وہاں تین دن رہ کر بھی شائد ہی کوئی بخار سے بچ سکے .

وشسٹھ آشرم وشسٹھ جی کی ایک پرانی یادگار ہے . وشسٹھ جی کے نام سے ایک مندر بنا ہوا ہے اس مندر میں وشسٹھ جی کی ایک مورت ہے جس کے درشن دن میں بھی بغیر دیپک نہیں ہو سکتے . مندر کے سامنے کا دالان بھونچال میں ٹوٹ گیا تھا اس پر ٹین ڈال کر مرمت کر لی گئی ہے . اس کے نیچے کچھ اور مورتیاں بھی براجمان کر دی گئی ہیں . وہاں ایک پجاری رہتا ہے جو اس مندر کی دیکھ ریکھ کرتا ہے . اس مندر یا آشرم سے لگی تین دھارائیں بہتی ہیں . ہر ایک دھارا فٹ ڈیڑھ فٹ سے زیادہ چوڑی نہیں . یوں سمجھئے کہ پرکرتی نے پتھر کاٹ کر تین نالی نکال دی ہیں جو آگے جا کر ایک کنڈ میں ملتی ہیں اور ندی کا روپ لے لیتی ہیں .

آسام واسیوں نے پرکرتی سے بھکتی دکھا کر ان دھاراؤں اور کنڈ کے نام رکھ دیئے ہیں . سندھیا' للتا' کانتا اور کنڈ کو امرت کنڈ کہکر بولتے ہیں . کنڈ اور دھارائیں تین طرف اونچی پہاڑی سے گھری ہیں . ایک طرف کچھ کم اونچی پہاڑی ہے . ادھر سے آنے جانے کا راستہ ہے . اس کنڈ پر سال میں ایک سے زیادہ بار میلے لگتے ہیں .

24 فروری کو ہم لوگ شلانگ پہونچ گئے . راستے میں ہم کو ایک مدراسی سجن مل گئے . معلوم ہوا' یہ برسوں سے آسام پرانت میں کام کر رہے ہیں' آسامی بولی ایسے ہی بول لیتے ہیں مانو ان کی اپنی بولی ہو . آسام کے شکشا منتری کے بنگلے کے پاس ان کا بنگلا تھا . انہیں کے یہاں ہم لوگوں نے کھانا کھایا . ان کے بال بچوں سے ہم اتنے ہل مل گئے کہ ہمکو یہ معلوم ہونے لگا کہ ہم اپنے گھر میں بیٹھے ہیں . ان کے بچے کچھ کچھ ہندی بول لیتے ہیں . بچوں کی ماں خوب ہندی سمجھتی ہیں اور بولتی ہیں . مدراسی سجن اپنی بولی تو جانتے ہی ہیں' انگریزی کے پنڈت ہیں ہی' پر ہندی اور آسامی بھی اتنی اچھی جانتے ہیں کہ اچانک کوئی آسامی یا اتر پردیش کا رہنے والا انہیں مدراسی نہیں کہ سکتا .

شلانگ سے تیس میل دور ہمارے دیش کا چراپونجی نامی وہ قصبہ ہے جو اپنی برشا کے لئے دنیا میں مشہور ہے . یہاں سال بھر میں دو سو اسی انچ تک برشا ہو جاتی ہے . یہاں کے نو دس انچ لمبے کیلے کھانے میں بہت اچھے معلوم ہوتے ہیں . شکشا وبھاگ کے ڈپٹی ڈائرکٹر [illegible] نے ہمارے لئے یہ کیلے خاص طور سے

नारी की पत्थर में खुदी एक मूरत मिली. वह नारी इस तरह बैठी हुई थी मानो जान बूझ कर अपना गुप्त अंग दिखा रही हो. इसे देखते ही हमारा मन सिर कटे बकरे की बात भूल कर इस नंगी सूरत की तरफ चल पड़ा. बहुत सोचने पर भी हम यह न समझ पाये, कि आखिर इस तरह की कला से कलाकार क्या पाठ देना चाहता है? हो सकता है, किसी जगह, किसी समय इस तरह की कला की जरूरत रही हो, पर क्या आज भी इस बात की जरूरत है कि इस कला का दिखावा ऐसी जगह किया जाय जहां हर तरह के और हर उमर के आदमी हर दम आते जाते हैं?

देवी के मंदिर के दरवाजे पर जब हम पहुँचे तब श्री कामाख्याराम जी हमारे साथ थे. उन्होंने बड़ी भक्ती और श्रद्धा से अपना माथा द्वार की देहरी पर टेका, और, पंडित जी और मुझे अन्दर चलने के लिये कहा. शुरु में पंडित सुन्दरलाल जी कुछ ठिठके, अन्दर न चलने के कुछ कारन बताए, पर जल्दी राजी हो गए. हम तीनों मंदिर में दाखिल हुए. हमारे दाईं तरफ के चबूतरे पर बकरों के तीन सिर कटे पड़े थे. फिर हमारा मन सोचने लगा और किसी तरह न मान पाया कि वह एक देवी के मंदिर में हैं. पंडित सुन्दरलाल जी पैदाइशी निरामिश भोजी नहीं, सन 1921 से निरामिश भोजी हैं. हम पैदाइशी निरामिश भोजी हैं, पर हम देखते थे कि पंडित जी के दिल पर इन कटे सिरों के दिखावे का हमसे जियादा असर था. उनका चेहरा उस असर को साफ़ बताता मालूम होता था.

मंदिर में कुछ ही आगे बढ़ने पर दिन में रात हो गई. मुझे कम दिखाई देता है, मेरे लिये चलना मुश्किल हो गया. आगे थे कामाख्याराम जी, उनके पीछे थे पंडित सुन्दरलाल जी और पंडित जी पकड़े हुए थे मेरा हाथ, और मैं था सब से पीछे. मंदिर में अंधेरे के साथ साथ भीड़ भी काफी थी. ज्यों त्यों कर हम उस जगह पहुँचे जिसे मंदिर की वेदी कहा जा सकता है. वहां दीपक जल रहा था, पर हम कुछ न देख पाए. पंडित जी के मुंह से यह पता चला कि वहां उसी तरह लिंग की स्थापना थी जिस तरह शिवजी के हर मंदिर में पाई जाती है. वहां कामाख्या देवी की कोई मूरत थी या नहीं इसका पता न लग पाया. हमने किसी से पूछा भी नहीं. वहां से मन भारी लिये हम लौट आए. बहुत कुछ सोचने पर भी यह तय न कर पाए कि बीसवीं सदी में इस तरह के मंदिर और इस तरह की पूजा कहां तक जरूरी है?

मंदिर से बाहर आने पर पास ही कुछ कबूतर दाना चुगते मिले. उनके बारे में पूछने पर यह पता चला कि देवी पर कबूतरों की भी बलि दी जाती है. यह भी मालूम हुआ कि कामाख्या देवी पर कछुवे भी बलि किये जाते हैं.

[illegible] کی پتھر میں کھدی ایک صورت ملی . وہ ناری اس طرح بیٹھی ہوئی تھی مانو جان بوجھ کر اپنا گپت انگ دکھا رہی ہو. اسے دیکھتے ہی ہمارا من سر کٹے بکرے کی بات بھول کر اس ننگی صورت کی طرف چل پڑا. بہت سوچنے پر بھی ہم یہ نہ سمجھ پائے کہ آخر اس طرح کی کلا سے کلاکار کیا پاٹھ دینا چاہتا ہے؟ ہوسکتا ہے، کسی جگہ، کسی سمے اس طرح کی کلا کی ضرورت رہی ہو، پر کیا آج بھی اس بات کی ضرورت ہے کہ اس کلا کا دکھاوا ایسی جگہ کیا جائے جہاں ہر طرح کے اور ہر عمر کے آدمی ہردم آتے جاتے ہیں ؟

دیوی کے مندر کے دروازے پر جب ہم پہونچے تب شری کاماکھیارام جی ہمارے ساتھ تھے. انہوں نے بڑی بھکتی اور شردھا سے اپنا ماتھا دوار کی دیہری پر ٹیکا، اور، پنڈت جی اور مجھے اندر چلنے کے لئے کہا . شروع میں پنڈت سندر لال جی کچھ ٹھٹھکے، اندر نہ چلنے کے کچھ کارن بتائے، پر جلدی راضی ہوگئے. ہم تینوں مندر میں داخل ہوئے . ہمارے دائیں طرف کے چبوترے پر بکروں کے تین سر کٹے پڑے تھے . پھر ہمارا من سوچنے لگا اور کسی طرح نہ مان پایا کہ وہ ایک دیوی کے مندر میں ہیں . پنڈت سندر لال جی پیدائشی نرامش بھوجی نہیں، سن 1921 سے نرامش بھوجی ہیں . ہم پیدائشی نرامش بھوجی ہیں، پر ہم دیکھتے تھے کہ پنڈت جی کے دل پر ان کٹے سروں کے دکھاوے کا ہم سے زیادہ اثر تھا. اُن کا چہرہ اُس اثر کو صاف بتاتا معلوم ہوتا تھا .

مندر میں کچھ ہی آگے بڑھنے پر دن میں رات ہوگئی. مجھے کم دکھائی دیتا ہے، میرے لئے چلنا مشکل ہوگیا. آگے تھے کاماکھیارام جی، اُن کے پیچھے تھے پنڈت سندر لال جی اور پنڈت جی پکڑے ہوئے تھے میرا ہاتھ اور میں تھا سب کے پیچھے . مندر میں اندھیرے کے ساتھ ساتھ بھیڑ بھی کافی تھی. جیوں تیوں کر ہم اُس جگہ پہونچے جسے مندر کی ویدی کہا جاسکتا ہے وہاں دیپک جل رہا تھا، پر ہم کچھ نہ دیکھ پائے. پنڈت جی کے منھ سے یہ پتہ چلا کہ وہاں اسی طرح لنگ کی استھاپنا تھی جس طرح شیوجی کے ہر مندر میں پائی جاتی ہے . وہاں کاماکھیا دیوی کی کوئی مورت تھی یا نہیں اِس کا پتہ نہ لگ پایا. ہم نے کسی سے پوچھا بھی نہیں . وہاں سے من بھاری لئے ہم لوٹ آئے . بہت کچھ سوچنے پر بھی یہ طے نہ کر پائے کہ بیسویں صدی میں اس طرح کے مندر اور اس طرح کی پوجا کہاں تک ضروری ہے ؟

مندر سے باہر آنے پر پاس ہی کچھ کبوتر دانہ چگتے ملے. اُن کے بارے میں پوچھنے پر یہ پتہ چلا کہ دیوی پر کبوتروں کی بھی بلی دی جاتی ہے. یہ بھی معلوم ہوا کہ کاماکھیا دیوی پر کچھوے بھی بلی کئے جاتے ہیں .

मनीपुर और कला

27 बरस की उमर से मैं घूमता ही रहा हूं. हिन्दुस्तान के तीन कोने नहीं, सात कोने घूम चुका हूं. पूरब का आठवां कोना बचा हुआ था उसके देखने की इच्छा थी. पंडित सुन्दरलाल जी को असम राष्ट्र भाशा प्रचार समिति का बुलावा मिला. साथ साथ मेरे लिये भी बुलावा आ पहुंचा. हम दोनों चल दिये, और श्री कामाख्याराम जी के, गोहाटी में, मेहमान हुए. कामाख्याराम जी मनीपुर स्टेट में चीफ़ जज रह चुके थे. 22 फ़रवरी को कामाख्याराम जी हमको कामाख्या देवी का मंदिर दिखाने ले गये.

कामाख्या देवी का मंदिर ब्रह्मपुत्र के किनारे एक छोटी पहाड़ी पर है. उस पहाड़ी की एक चोटी से ब्रह्मपुत्र का दृश्य देखते ही बनता है. ब्रह्मपुत्र की लहरों में तीन टापू इतने सुहाने दिखाई देते हैं कि जी चाहता है कि उन्हीं में से किसी एक में कुटी बना कर रहा जाय. दूसरी चोटी पर देवी का मंदिर है. हम जैसे ही देवी के मंदिर के बाहरी द्वार पर पहुंचे वैसे ही देखते क्या हैं, दो जवान लड़के एक बकरे की टांगें पकड़े चले आ रहे हैं. जब वह बिल्कुल पास आये तब पता लगा कि वह बकरा बेसिर का था, उसका सिर देवी की भेंट हो चुका था. यह दृश्य देख कर हमारे मन में जो विचार दौड़ गए उन्हें नीचे लिख देने में हम कुछ हरज नहीं समझते.

दुनियां के, क़रीब क़रीब, सब महापुरुषों की जीवनी हमने ग़ौर से पढ़ी है. किसी जीवनी से हम इस नतीजे पर नहीं पहुंचते कि सिर कटे बकरे का जो दृश्य हमने देखा वह किसी की जीवनी से मेल खाता हो. फिर वह जीवनी चाहे महावीर स्वामी की हो, बुद्ध भगवान की हो, हजरत ईसा की हो, या हजरत मोहम्मद की. सब महापुरुषों ने अहिंसा का उपदेश दिया. जहां तक बन सका हिंसा को रोका. अपने देश और समय के अनुसार हर महापुरुष ने हिंसा के कम करने और उसकी क्रूरता को घटाने में कोई बात न उठा रखी. महावीर के अनुयायी धर्म को ले कर सिर फुड़वल कर लेते हैं. यही हाल बुद्ध के भक्तों का है. ईसा के अनुयायी धर्म को ले कर कितने ज़ुल्म ढा चुके हैं, उसका ठिकाना नहीं. मोहम्मद के अनुयायी आपस में जिस तरह लड़ते रहे हैं वह किसी से छिपा नहीं. आज भी पाकिस्तान में क़ादियानियों के साथ जो बरताव हो रहा है वह ऐसा नहीं जो हजरत मोहम्मद के जीते जी किसी तरह ठीक समझा जाता.

इन विचारों में डूब कर हम अपने कांपते पांव से आगे बढ़े. देवी के मंदिर के फाटक पर पहुँचने से पहले हमें एक

منی پور اور کلا

27 برس کی عمر سے میں گھومتا ہی رہا ہوں. ہندستان کے تین کونے نہیں، سات کونے گھوم چکا ہوں. پورب کا آٹھواں کونا بچا ہوا تھا اُس کے دیکھنے کی اِچھا تھی. پنڈت سندر لال جی کو اسم راشٹر بھاشا پرچار سمیتی کا بلاوا ملا. ساتھ ساتھ میرے لئے بھی بلاوا آ پہونچا. ہم دونوں چل دئیے، اور شری کاماکھیارام جی کے، گوہاٹی میں، مہمان ہوئے. کاماکھیارام جی منی پور اسٹیٹ میں چیف جج رہ چکے تھے. 22 فروری کو کاماکھیارام جی ہمکو کاماکھیا دیوی کا مندر دکھانے لے گئے.

کاماکھیا دیوی کا مندر برہم پتر کے کنارے ایک چھوٹی پہاڑی پر ہے. اُس پہاڑی کی ایک چوٹی سے برہم پتر کا درشیہ دیکھتے ہی بنتا ہے. برہم پتر کی لہروں میں تین ٹاپو اتنے سہانے دکھائی دیتے ہیں کہ جی چاہتا ہے کہ انہیں میں سے کسی ایک میں کٹی بنا کر رہا جائے. دوسری چوٹی پر دیوی کا مندر ہے. ہم جیسے ہی دیوی کے مندر کے باہری دوار پر پہونچے ویسے ہی دیکھتے کیا ہیں، دو جوان لڑکے ایک بکرے کی ٹانگیں پکڑے چلے آ رہے ہیں. جب وہ بالکل پاس آئے تب پتہ لگا کہ وہ بکرا بے سر کا تھا، اُس کا سر دیوی کی بھینٹ ہو چکا تھا. یہ درشیہ دیکھ کر ہمارے من میں جو وچار دوڑ گئے انہیں نیچے لکھ دینے میں ہم کچھ حرج نہیں سمجھتے:

دنیا کے، قریب قریب، سب مہاپرشوں کی جیونی ہم نے غور سے پڑھی ہے. کسی جیونی سے ہم اِس نتیجے پر نہیں پہونچتے کہ سر کٹے بکرے کا جو درشیہ ہم نے دیکھا وہ کسی کی جیونی سے میل کھاتا ہو. پھر وہ جیونی چاہے مہاویر سوامی کی ہو، بدھ بھگوان ہو، حضرت عیسیٰ کی ہو یا حضرت محمد کی. سب مہاپرشوں نے اہنسا کا اُپدیش دیا. جہاں تک بن سکا ہنسا کو روکا. اپنے دیش اور سمے کے انوسار ہر مہاپرش نے ہنسا کے کم کرنے اور اُس کی کرورتا کو گھٹانے میں کوئی بات نہ اُٹھا رکھی. مہاویر کے انویائی دھرم کو لے کر سر پھٹول کر لیتے ہیں. یہی حال بدھ کے بھگتوں کا ہے. عیسیٰ کے انویائی دھرم کو لے کر کتنے ظلم ڈھا چکے ہیں، اُس کا ٹھکانہ نہیں. محمد کے انویائی آپس میں جس طرح لڑتے رہے ہیں وہ کسی سے چھپا نہیں. آج بھی پاکستان میں قادیانیوں کے ساتھ جو برتاؤ ہو رہا ہے وہ ایسا نہیں جو حضرت محمد کے جیتے جی کسی طرح ٹھیک سمجھا جاتا.

اِن وچاروں میں ڈوب کر ہم اپنے کانپتے پاؤں سے آگے بڑھے. دیوی کے مندر کے پھاٹک پر پہونچنے سے پہلے ہمیں ایک

जो हाथ बढ़े यावर है यहां
जो आंख उठे वह बख़्तावर
यां धन दौलत का अन्त नहीं
हों घात में डाकू लाख मगर

कब लूट झपट से हस्ती की
दूकानें ख़ाली होती हैं
यां पर्बत पर्बत हीरे हैं
यां सागर सागर मोती हैं

कुछ लोग हैं जो इस दौलत पर
पर्दे लटकाते फिरते हैं
हर पर्बत को, हर सागर को
नीलाम चढ़ाते फिरते हैं

कुछ वह भी हैं जो लड़ भिड़ कर
यह परदे नोच गिराते हैं
हस्ती के उठाईगीरों की
हर चाल उलझाए जाते हैं

इन दोनों में रन पड़ता है
नित बस्ती बस्ती, नगर नगर
हर बसते घर के सीने में
हर चलती राह के माथे पर

यह कालिक भरते फिरते हैं
वह जोत जगाते रहते हैं
यह आग लगाते फिरते हैं
वह आग बुझाते रहते हैं

सब सागर शीशे, लाल गोहर
इसी बाज़ी में बद जाते हैं
उठो सब ख़ाली हाथों को
इस रन से बुलावे आते हैं.

—'दस्ते-सबा' से

جو ہاتھ بڑھے یاور ہے یہاں
جو آنکھ اٹھے وہ بختاور
یاں دھن دولت کا انت نہیں
ہوں گھات میں ڈاکو لاکھ مگر

کب لوٹ جھپٹ سے ہستی کی
دوکانیں خالی ہوتی ہیں
یاں پربت پربت ہیرے ہیں
یاں ساگر ساگر موتی ہیں

کچھ لوگ ہیں جو اس دولت پر
پردے لٹکاتے پھرتے ہیں
ہر پربت کو، ہر ساگر کو
نیلام چڑھاتے پھرتے ہیں

کچھ وہ بھی ہیں جو لڑ بھڑ کر
یہ پردے نوچ گراتے ہیں
ہستی کے اٹھائی گیروں کی
ہر چال الجھائے جاتے ہیں

ان دونوں میں رن پڑتا ہے
نت بستی بستی، نگر نگر
ہر بستے گھر کے سینے میں
ہر چلتی راہ کے ماتھے پر

یہ کالک بھرتے پھرتے ہیں
وہ جوت جگاتے رہتے ہیں
یہ آگ لگاتے پھرتے ہیں
وہ آگ بجھاتے رہتے ہیں

سب ساگر شیشے لعل گہر
اسی بازی میں بد جاتے ہیں
اٹھو سب خالی ہاتھوں کو
اس رن سے بلاوے آتے ہیں۔

—'دست صبا' سے

यावर = मददगार ; बख़्तावर = भाग्यवान ; रन पड़ता है = संघर्ष होता है.

یاور = مددگار ؛ بختاور = بھاگوان ؛ رن پڑنا = سنگھرش ہوتا ہے۔

तुम मस्त जवानी में जिनसे
ख़िलवत को सजाया करते थे

नादारी, दफ़्तर, भूक और ग़म
इन सपनों से टकराते रहे
बे रहम था चौ मुख पथराव
यह कांच के ढांचे क्या करते

या शायद इन ज़र्रों में कहीं
मोती है तुम्हारी इज़्ज़त का
वह जिससे तुम्हारे इज्ज़ पे भी
शमशाद क़दों ने रश्क किया

इस माल की धुन में फिरते थे
ताजिर भी बहुत, रहज़न भी कई
है चोर नगर, यां मुफ़लिस की
गर जान बची तो आन गई

यह सागर शीशे, लाल-ओ-गौहर
सालिम हों तो क़ीमत पाते हैं
यूं टुकड़े टुकड़े हों तो फ़क़त
चुभते हैं, लहू रुलवाते हैं

तुम नाहक़ शीशे चुन चुन कर
दामन में छिपाए बैठे हो
शीशों का मसीहा कोई नहीं
क्या आस लगाए बैठे हो.

यादों के गरीबानों के रफ़ू
पर दिल की गुज़र कब होती है
एक बख़िया उधेड़ा, एक सिया
यूं उम्र बसर कब होती है

इस कार गहे हस्ती में जहां
यह सागर, शीशे ढलते हैं
हर शै का बदल मिल सकता है
सब दामन पुर हो सकते हैं

ख़िलवत — एकान्त; नादारी — ग़रीबी; इज्ज़ — लाचारी; रहज़न — डाकू; गौहर — मोती; गरीबान — कुर्ता, कारगहे हस्ती — दुनिया; शय — चीज़; बदल — बदला; पुर — भरे ;

تم مست جوانی میں جن سے
خلوت کو سجایا کرتے تھے

ناداری، دفتر، بھوک اور غم
ان سپنوں سے ٹکراتے رہے
بے رحم تھا چومکھ پتھراؤ
یہ کانچ کے ڈھانچے کیا کرتے

یا شاید ان ذروں میں کہیں
موتی ہے تمہاری عزت کا
وہ جس سے تمہارے عجز پہ بھی
شمشاد قدوں نے رشک کیا

اس مال کی دھن میں پھرتے تھے
تاجر بھی بہت، رہزن بھی کئی
ہے چور نگر، یاں مفلس کی
گر جان بچی تو آن گئی

یہ ساغر شیشے، لال و گہر
سالم ہوں تو قیمت پاتے ہیں
یوں ٹکڑے ٹکڑے ہوں تو فقط
چبھتے ہیں، لہو رلواتے ہیں

تم ناحق شیشے چن چن کر
دامن میں چھپائے بیٹھے ہو
شیشوں کا مسیحا کوئی نہیں
کیا آس لگائے بیٹھے ہو

یادوں کے گریبانوں کے رفو
پر دل کی گزر کب ہوتی ہے
اک بخیہ ادھیڑا، ایک سیا
یوں عمر بسر کب ہوتی ہے

اس کارگہ ہستی میں جہاں
یہ ساغر، شیشے ڈھلتے ہیں
ہر شے کا بدل مل سکتا ہے
سب دامن پر ہو سکتے ہیں

خلوت = ایکانت؛ ناداری = غریبی؛ عجز = لاچاری؛ رہزن = ڈاکو؛ گہر = موتی؛ گریبان = کرتا؛ کارگہ ہستی = دنیا؛ شے = چیز؛ بدل = بدلہ؛ پر = بھرے؛

जिल्द 14 मई, सन '53 नम्बर 5

جلد 14 مئی، سن '53 نمبر 5

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

शीशों का मसीहा कोई नहीं

(फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़')

मोती हो कि शीशा, जाम कि दुर
जो टूट गया, सो टूट गया
कब अश्कों से जुड़ सकता है
जो टूट गया, सो छूट गया

तुम नाहक़ टुकड़े चुन चुन कर
दामन में छुपाए बैठे हो
शीशों का मसीहा कोई नहीं
क्या आस लगाए बैठे हो

शायद कि इन्हीं टुकड़ों में कहीं
वह साग़रे दिल है जिसमें कभी
सद नाज़ से उतरा करती थी
सहबाए ग़मे जानां की परी

फिर दुनिया वालों ने तुम से
यह साग़र ले कर फोड़ दिया
जो मै थी बहा दी मिट्टी में
मेहमान का शहपर तोड़ दिया

यह रंगीन रेज़े हैं शायद
उन शोख़ बिल्लोरी सपनों के

दुर = मोती; सद = सैकड़ों, सहबा = शराब; ग़मेजाना = [illegible]; रेज़े = कण, शोख़ बिल्लोरी सपने = सुन्दर [illegible]

شیشوں کا مسیحا کوئی نہیں

(فیض احمد 'فیض')

موتی ہو کہ شیشہ، جام کہ در
جو ٹوٹ گیا، سو ٹوٹ گیا
کب اشکوں سے جڑ سکتا ہے
جو ٹوٹ گیا، سو چھوٹ گیا

تم ناحق ٹکڑے چن چن کر
دامن میں چھپائے بیٹھے ہو
شیشوں کا مسیحا کوئی نہیں
کیا آس لگائے بیٹھے ہو

شاید کہ انہیں ٹکڑوں میں کہیں
وہ ساغر دل ہے جس میں کبھی
صد ناز سے اترا کرتی تھی
صہبائے غم جاناں کی پری

پھر دنیا والوں نے تم سے
یہ ساغر لے کر پھوڑ دیا
جو مے تھی بہا دی مٹی میں
مہماں کا شہپر توڑ دیا

یہ رنگیں ریزے ہیں شاید
ان شوخ بلوریں سپنوں کے

در = موتی؛ صد = سیکڑوں؛ صہبا = شراب؛ غم جاناں = پریمی کی چنتا؛ ریزے = کن؛ شوخ بلوریں سپنے = سندر سپنے۔

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

मई 1953

क्या किससे — सफ़ा

" نیا ہند "

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

مئی

کیا کس سے

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने.

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے .

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ्फ़र हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

ایڈیٹر — تاراچند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب ایڈیٹر — سریش رام بھائی، مجیب رضوی

* * * * *

हमारी राय

ہماری رائے

मई 1953 مئی

Registered No. A—210

झंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

पिछले पन्द्रह बरस से आज तक की उरदू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़कर आप को मालूम होगा कि उरदू कविता ने किस तरह ख़याली दुनिया को छोड़ कर ज़िन्दगी की सच्चाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज की उरदू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ तक ही सीमित नहीं है. अब आप को उरदू कविता में किसानों और मज़दूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. ग़ुलामी, अन्याय और लूट खसोट के ख़िलाफ़ आप एक ऐसी आवाज़ सुनेंगे जो आपके दिल की गहराइयों को छूएगी.

"इन कविताओं में अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय दोनों झलकें मिलती हैं......सजीव तथा साकार हैं... ..वास्तव में हिन्दी संसार में यह प्रयास अनोखा है और उरदू साहित्य के आधुनिक दौर में अद्वितीय है..."

23-2-'52 —रोज़ाना 'लोकवाणी' जयपुर

"जहां तक भाव का सम्बन्ध है कविताएं उच्चस्तर की हैं."

6 3.'52 —'विशाल भारत' कलकत्ता

"झंकार में प्रकाशित 72 उरदू की कविताएं आज ही के युग की समस्याओं से ओत प्रोत हैं."

17-2-'52 —'नव भारत टाइम्स' दिल्ली.

"हिन्दी के पाठक स्नेह और चाव से इस संग्रह का आनन्द लेंगे और उनसे प्रेरणा ग्रहण करेंगे, यह निश्चित है"

13-1-'52 —'अमृत पत्रिका' इलाहाबाद

"हम उन की (कविताओं की) शक्ति, ताज़गी और सूझ के क़ायल हैं वह एक नए युग का सन्देश देती हैं...भाषा अधिकतर सरल और बामुहावरा है. कहीं कहीं तो ठेठ हिन्दी है."

8-5-'52 —'जीवन साहित्य' दिल्ली

"झंकार की रचनाओं में युग की पुकार है और भाषा बिलकुल बोल चाल के निकट है"—'नया समाज' कलकत्ता

नागरी लिखावट में ऐसा भरपूर उरदू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़. उम्दा छपाई दाम सिर्फ़ तीन रुपया. दस किताबों की एक साथ ख़रीदारी पर पचास फ़ीसदी कमीशन.

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

جھنکار

سمپادک—شری رگھوپتی سہائے 'فراق'

پچھلے پندرہ برس سے آج تک کی اُردو کی چنی ہوئی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اُردو کویتا نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے۔ آج کی اُردو شاعری گل و بلبل اور وصل و فراق تک ہی سیمت نہیں ہے۔ اب آپ کو اُردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی۔ غلامی، انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف آپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل کی گہرائیوں کو چھوئیگی۔

" اِن کویتاؤں میں انترراشٹری تتھا راشٹری دونوں جھلکیں ملتی ہیں...سجیو تتھا ساکار ہیں... واستو میں ہندی سنسار میں یہ پریاس انوکھا ہے اور اُردو ساہتیہ کے آدھنک دور میں ادتیہ ہے..."

23-2-'52 —روزانہ 'لوک وانی' جے پور

" جہاں تک بھاؤ کا سمبندھ ہے کویتائیں اُچ استر کی ہیں۔"

6-3-52 —'وشال بھارت' کلکتہ

" جھنکار میں پرکاشت 72 اُردو کی کویتائیں آج ہی کے یگ کی سمسیاؤں سے اوت پروت ہیں۔"

17-2-'52 —' نو بھارت ٹائمس' دلی

" ہندی کے پاٹھک اسنیہ اور چاؤ سے اِس سنگرہ کا آنند لینگے اور اُن سے پریرنا گرہن کرینگے' یہ نشچت ہے۔"

13-1-'52 —' امرت پتریکا' الہ آباد

" ہم اُن کی (کویتاؤں کی) شکتی' تازگی اور سوجھ کے قائل ہیں۔ وہ ایک نئے یگ کا سندیش دیتی ہیں... بھاشا ادھکتر سرل اور بامحاورہ ہے۔ کہیں کہیں تو ٹھیٹھ ہندی ہے۔"

8-5-'52 —جیون ساہتیہ' دلی

" (جھنکار کی) رچناؤں میں یگ کی پکار ہے اور بھاشا بالکل بول چال کے نکٹ ہے۔"— نیا سماج' کلکتہ

ناگری لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اُردو کویتا کا سنگرہ آج تک نہیں نکلا۔ سندر جلد۔ بڑھیا کاغذ۔ عمدہ چھپائی دام صرف تین روپیہ۔ دس کتابوں کی ایک ساتھ خریداری پر پچاس فیصدی کمیشن۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر ' نیا ہند ' 145' مٹھی گنج الہ آباد۔

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफरेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़ गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट डा० भगवानदास; सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये —

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट- सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ھندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ھندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ھندستانی شامل ھوں۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لیکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—:٠:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ، وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی جی کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندرلال

سکریٹری ھندستانی کلچر سوسائٹی،
145 مٹھی گنج، الہ آباد

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کر دی گئی ھے "نیا ھند" کے جو گاھک ممبر بننا چاھیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ھی ممبر بنا لیا جائیگا الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ھوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ھوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے

हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें — ہمارے یہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں

नोटः—यह किताबें सिर्फ़ हिन्दी में हैं — نوٹ:—یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں ۔

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1. शेर ओ शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئلیی	1. شعر و شاعری
2. शेर ओ सुखन	,,	8	0	0	,,	2. شعر و سخن
3. गहरे पानी पैठ	,,	2	8	0	,,	3. گہرے پانی پیٹھ
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. ہمارے آرادھیہ
5. संस्मरण	,,	3	0	0	,,	5. سنسمرن
6. दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8. पद चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پد چنہ
9. पंच प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم . اے	9 پنچ پردیپ
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنہیالال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.	5	0	0	شری ویریندر کمار جین ایم . اے	11. مکتی دوت
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14. मेरे बापू	श्री तन्मय बुखारिया	2	8	0	شری تنمے بکھاریا	14. میرے باپو
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال' بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला	5	0	0	شری بھگوان داس کیلا'	16. بھارتیہ ارتھ شاستر
17. भारतीय शासन	,,	3	0	0	,,	17. بھارتیہ شاسن
18. नागरिक शास्त्र	,,	2	4	0	,,	18. ناگرک شاستر
19. साम्राज्य और उनका पतन	,,	2	8	0	,,	19. سامراج اور ان کا پتن
20. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन	,,	1	4	0	,,	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	,,	1	8	0	,,	21. سروودے ارتھ ووستھا
22. हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	22. ہماری آدم جاتیاں
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिकाद, भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم . اے، ایل ایل ۰ بی ۰ گجادھر پرساد' امبکا' بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. راشٹر منڈل شاسن
26. जवानी	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانی
27. मारने की हिम्मत !	,,	1	0	0	,,	27. مارنے کی ہمت
28. [illegible]	,,	0	8	0	,,	28. سلونا سچ
29. [illegible]	,,	1	0	0	,,	29. میرے ساتھی

मिलने का पता— मैनेजर 'नया हिन्द' 145, [illegible]-3

ملنے کا پتہ— مینیجر 'نیا ہند' [illegible] 145

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों को और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायेगी. पूरी जानकारी के लिए लिखिये.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन 1950 से सारे भारत में लागू हुआ.

'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पंडित सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाषा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जायेगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इन्सान-इन्सान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा गांधी ने इस किताब के बारे में कहा है कि—

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े..."

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताब का दाम सिर्फ़ एक रुपया.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द', 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

هندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں کو اور بکسیلروں کو خاص رعائت دی جائیگی. پوری جانکاری کے لئے لکھئے.

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا.

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا.

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندرلال دوارا مول انگریزی سے انووادت.

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اِس سمے چل رہا ہے اُسے اچھی طرح سمجھے. بھارت کے ہر گھر میں اُس پستک کا رہنا ضروری ہے.

آسان بامحاورہ بھاشا. رایل اٹھ پیجی بڑا سائز. لگ بھگ چار سو پنّے. کپڑے کی سندر جلد. قیمت کیول ساڑھے سات روپئے.

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے. سی. کمارپپا.

انووادک—سریش رام بھائی.

اِس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے دی گئی ہے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ہے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابری' بھائی چارے' پریم اَور اہنسا پر کتنا زور دیا ہے.

مہاتما گاندھی نے اِس کتاب کے بارے میں کہا ہے کہ—

"ہر آستک سے' چاہے وہ عیسائی ہو یا کسی اَور دھرم کا ماننے والا ہو' میری سفارش ہے کہ اِسے پڑھے..."

سندر جلد' بڑھیا کاغذ' قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپئے.

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج' الٰہ آباد.

अमरीका की सरहद से चीन पर हमला करेंगे तो शान्ति कैसे क़ायम रह सकेगी.

मलाया, वीतनाम, बरमा, हिन्द चीन के संबन्ध में क्या तय किया जायगा. क्या कोरिया की लड़ाई बन्द करके अमरीका सारा जंगी सामान मलाया, हिन्द चीन और वितनाम में लाकर लड़ाई जारी रखेगा? इमपीरियलिज़म के खिलाफ़ इन देशों की जनता उठ खड़ी हुई है और उसे अंगरेज़ों और फ्रान्सीसियों को बाहर निकाले बिना चैन नहीं है. उनकी लड़ाई जारी रहेगी, किसी क़ीमत भी वह सुलह नहीं कर सकते. ऐसी सूरत में क्या अमरीका अपने दोस्तों का साथ छोड़ देगा? यह कभी नहीं हो सकता क्योंकि अमरीका वाले बार बार कह चुके हैं कि रूस की इस उदार नीति से उनके गुट में फूट पड़ने का डर है और उन्होंने इस निश्चय का एलान किया है कि वह ऐसा हरगिज़ न होने देंगे क्योंकि यह बात ज़बरदस्त ख़तरा पैदा कर देगी. कोरिया में चीन को इसलिये जाना पड़ा कि अमरीकी फ़ौजें उसकी सरहद तक पहुंच गई थीं. इन देशों की भी सीमाएं चीन से मिलती हैं. क्या चीन अपनी सीमाओं की रक्षा नहीं करेगा? ज़ाहिर बात है अमरीका पर ऐतबार करके उसे वह अपने सर तक नहीं पहुंचने दे सकता

चू एन लाई ने कहा है कि बीमार और ज़ख़्मी सिपाहियों को अपने अपने गिरोह में भेज देने के बाद जो क़ैदी बच रहें उन्हें एक तटस्थ राष्ट्र के सुपुर्द कर दिया जाय और फिर उनकी मरज़ी मालूम करके तबादला कर लिया जाय. सवाल यह है कि कौन सा तटस्थ राष्ट्र है जिसके सुपुर्द यह नेक काम किया जाय. यूनो लड़ाई में खुद एक फ़रीक़ है. उसे तटस्थ माना नहीं जा सकता. ऐसे भी यह काम उसके सुपुर्द करने का मतलब है कि अमरीका को जज मुक़र्रर कर दिया जाय चीन वाले भारत के सुपुर्द यह काम करने को तैयार हो जायंगे लेकिन क्या अमरीका के गुट के देश इस बात को स्वीकार करेंगे

सारी बातों को साफ़ साफ़ समझ लेने के बाद हम इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि कोरिया की लड़ाई में कमी भले आ जाय, शायद लड़ाई बन्द भी हो जाय लेकिन दूर पूरब में शान्ति क़ायम होना उस समय तक असम्भव है जब तक या तो अमरीकी गुट वाले अपनी पूरी नीति न बदलें और हर देश को स्वराज देने के सिद्धान्त को अमल में न मानें और या रूस का शान्ति चक्र इतना बलवान हो जाय कि वह लड़ाई के देवता को जड़ से ही ख़तम कर दे. फिर भी शान्ति की बातों से ही ढारस बंधती है और जनता में विश्वास बढ़ता है कि मेल जोल से आपस में बातचीत करके बड़े बड़े मसले हल हो सकते हैं. भविष्य के लिये यह एक महान शकुन है!

7. 4. 53 —मुजीब रिज़वी

امریکہ کی سرحد سے چین پر حملہ کریں گے تو شانتی کیسے قائم رہ سکے گی۔

ملایا، ویت نام، برما، ہند چین کے سمبندھ میں کیا طے کیا جائے گا۔ کیا کوریا کی لڑائی بند کر کے امریکہ سارا جنگی سامان ملایا، ہند چین اور ویت نام میں لا کر لڑائی جاری رکھے گا؟ امپیریلزم کے خلاف ان دیشوں کی جنتا اٹھ کھڑی ہوئی ہے اور اسے انگریزوں اور فرانسیسیوں کو باہر نکالے بنا چین نہیں ہے۔ ان کی لڑائی جاری رہے گی، کسی قیمت بھی وہ صلح نہیں کر سکتے۔ ایسی صورت میں کیا امریکہ اپنے دوستوں کا ساتھ چھوڑ دے گا۔ یہ کبھی نہیں ہو سکتا کیونکہ امریکہ والے بار بار کہہ چکے ہیں کہ روس کی اس ادار نیتی سے ان کے گٹ میں پھوٹ پڑنے کا ڈر ہے اور انہوں نے اس نشچے کا اعلان کیا ہے کہ وہ ایسا ہرگز نہ ہونے دیں گے کیونکہ یہ بات زبردست خطرہ پیدا کر دے گی۔ کوریا میں چین کو اس لئے جانا پڑا کہ امریکی فوجیں اسکی سرحد تک پہونچ گئی تھیں۔ ان دیشوں کی بھی سیمائیں چین سے ملتی ہیں۔ کیا چین اپنی سیماؤں کی رکشا نہیں کرے گا؟ ظاہر بات ہے امریکہ پر اعتبار کر کے اسے وہ اپنے سر تک نہیں پہونچنے دے سکتا۔

چو این لائی نے کہا ہے کہ بیمار اور زخمی سپاہیوں کو اپنے اپنے گروہ میں بھیج دینے کے بعد جو قیدی بچ رہیں انہیں ایک تٹستھ راشٹر کے سپرد کر دیا جائے اور پھر ان کی مرضی معلوم کر کے تبادلہ کر لیا جائے۔ سوال یہ ہے کہ کونسا تٹستھ راشٹر ہے جس کے سپرد یہ نیک کام کیا جائے۔ یونو لڑائی میں خود ایک فریق ہے۔ اسے تٹستھ مانا نہیں جا سکتا۔ ایسے بھی یہ کام اس کے سپرد کرنے کا مطلب ہے کہ امریکہ کو جج مقرر کر دیا جائے۔ چین والے بھارت کے سپرد یہ کام کرنے کو تیار ہو جائیں گے۔ لیکن کیا امریکہ کے گٹ کے دیش اس بات کو سویکار کریں گے؟

ساری باتوں کو صاف صاف سمجھ لینے کے بعد ہم اس نتیجے پر پہونچتے ہیں کہ کوریا کی لڑائی میں کمی بھلے آ جائے، شاید یہ لڑائی بند بھی ہو جائے لیکن دور پورب میں شانتی قائم ہونا اس سمے تک اسمبھو ہے جب تک یا تو امریکی گٹ والے اپنی پوری نیتی نہ بدلیں اور ہر دیش کو سوراج دینے کے سدھانت کو عمل میں نہ مانیں اور یا روس کا شانتی چکر اتنا بلوان ہو جائے کہ وہ لڑائی کے دیوتا کو جڑ سے ہی ختم کر دے۔ پھر بھی شانتی کی باتوں سے ہی ڈھارس بندھتی ہے اور جنتا میں وشواس بڑھتا ہے کہ میل جول سے آپس میں بات چیت کر کے بڑے بڑے مسئلے حل ہو سکتے ہیں۔ بھوشیہ کے لئے یہ ایک مہان شگن ہے!

—مجیب رضوی 7-4-'53

की बात ही नहीं सोच सकते. यह थोथी बातें नहीं हैं बल्कि वह खुद इन होश उड़ा देने वाले कारनामों को देख चुके हैं. उनको पूरा विश्वास है कि रूस हर तरह से शान्ति चाहता है. यही बात रूस के नेताओं के बयान से भी ज़ाहिर होती है. फिर यह सोचना कि मालनकोफ़ ने अपनी कमज़ोरी ढकने के लिये यह क़दम उठाया है बिलकुल ग़लत है. लेकिन इस तरह सोचने वाले सवाल पूछते हैं कि यह क़दम स्तालिन के मरने के बाद ही क्यों उठाए गए? जिन लोगों ने स्तालिन के लेख और बयान पढ़े हैं उन्हें मालूम है कि मालनकोफ़ ने इस सम्बन्ध में कोई नई नीति नहीं अपनाई. सिर्फ़ स्तालिन की नीति को अमली जामा पहना दिया है. इस सम्बन्ध में हमें कुछ बातों की ख़बरें भी अधूरी मिली हैं: स्तालिन की ज़िन्दगी में ही चरचिल ने मालोटोफ़ को लिखा था कि वह अपना असर डाल कर बरतानिया के सिवीलियन क़ैदियों को कोरिया में रिहाई दिलवा दें.

मालोटोफ़ ने हामी भर ली थी और कोशिश शुरू कर दी थी. संजोग है कि उस कोशिश का नतीजा स्तालिन के मौत के बाद निकल सका. यह ख़बर 'न्यूयार्क टाइम्स ने दी है. स्तालिन का बार बार दुहराया मक़ूला सब को याद है -- दोनों माली व्यवस्थाएं एक साथ रह सकती हैं. इस तरह साफ़ पता चलता है कि रूस की नीति में कोई फ़र्क़ नहीं आया बल्कि सिर्फ़ अमल में तेज़ी आ गई है और इसका स्तालिन की मौत से कोई सम्बन्ध नहीं है. यह सोचना कि रूस कमज़ोर है यह भी ग़लत है. जितना रूसियों को अपने ऊपर विश्वास है उतना अमरीकियों को होता तो वह डर की बातें न करते. लेबर पार्टी के नेता मिस्टर बेवन ने ठीक कहा है कि रूस के यह उदार भाव कमज़ोरी के प्रतीक नहीं हैं बल्कि उसकी ताक़त का पता देते हैं.

क्या शान्ति क़ायम होगी?

इस बात पर सोचते समय हमें इन बातों का ध्यान रखना चाहिये: (1) कोरिया की लड़ाई से अमरीका की कम्पनियों को बेहद मुनाफ़ा हो रहा है (2) लड़ाई बन्द होते ही व्योपार में मन्दी आना ज़रूरी है और इस बात को महसूस करके अमरीका वाले कांप उठते हैं. (3) सरकार ने नोट छाप छाप कर बाज़ार भर दिया है. इसलिये क़ीमतें आसमान पर चढ़ गई हैं, इस हालत का मुक़ाबला करना आसान नहीं है. (4) अमरीका में बेरोज़गारों की तादाद रोज़ बढ़ रही है ज़ियादा दिनों लोग भूके नहीं रखे जा सकते. अमरीकी अख़बारों से यह भी पता चलता है कि उनके लिये लड़ाई से ज़ियादा ख़तरनाक हथियार शान्ति है. ऐसी सूरत में शान्ति क़ायम होने की सम्भावना नहीं है. लेकिन रूसी दल का कहना है कि हम इतने मज़बूत हैं और हमने दुनिया की जनता में लड़ाई के ख़िलाफ़ इतना

کی بات ہی نہیں سوچ سکتے ۔ یہ تھوتھی باتیں نہیں ہیں بلکہ وہ خود اِن ہوش اُڑا دینے والے کارناموں کو دیکھ چکے ہیں ۔ اُن کو پورا وشواس ہے کہ روس ہر طرح سے شانتی چاہتا ہے ۔ یہی بات روس کے نیتاؤں کے بیان سے بھی ظاہر ہوتی ہے ۔ پھر یہ سوچنا کہ مالنکوف نے اپنی کمزوری ڈھکنے کے لئے یہ قدم اُٹھایا ہے بالکل غلط ہے ۔ لیکن اس طرح سوچنے والے سوال پوچھتے ہیں کہ یہ قدم استالن کے مرنے کے بعد ہی کیوں اُٹھائے گئے ؟ جن لوگوں نے استالن کے لیکھ اور بیان پڑھے ہیں اُنہیں معلوم ہے کہ مالنکوف نے اِس سمبندھ میں کوئی نئی نیتی نہیں اپنائی ۔ صرف استالن کی نیتی کو عملی جامہ پہنا دیا ہے ۔ اِس سمبندھ میں ہمیں کچھ باتوں کی خبریں بھی ادھوری ملی ہیں : استالن کی زندگی میں ہی چرچل نے مالوتوف کو لکھا تھا کہ وہ اپنا اثر ڈال کر برطانیہ کے سویلین قیدیوں کو کوریا میں رہائی دلوا دیں ۔

مالوتوف نے حامی بھری لی تھی اور کوشش شروع کر دی تھی ۔ سنجوگ ہے کہ اِس کوشش کا نتیجہ استالن کے موت کے بعد نکل سکا ۔ یہ خبر نیویارک ٹائمس نے دی ہے ۔ استالن کا بار بار دہرایا مقولہ سب کو یاد ہے —— دونوں مالی ویوستھائیں ایک ساتھ رہ سکتی ہیں ۔ اِس طرح صاف پتہ چلتا ہے کہ روس کی نیتی میں کوئی فرق نہیں آیا بلکہ صرف عمل میں تیزی آ گئی ہے اور اِس کا استالن کی موت سے کوئی سمبندھ نہیں ہے ۔ یہ سوچنا کہ روس کمزور ہے یہ بھی غلط ہے ۔ جتنا روسیوں کو اپنے اوپر وشواس ہے اتنا امریکیوں کو ہوتا تو وہ ڈر کی باتیں نہ کرتے ۔ لیبر پارٹی کے نیتا مسٹر بیون نے ٹھیک کہا ہے کہ روس کے یہ اُدار بھاؤ کمزوری کے پرتیک نہیں ہیں بلکہ اس کی طاقت کا پتہ دیتے ہیں ۔

کیا شانتی قائم ہوگی ؟

اِس بات پر سوچتے سمے ہمیں اِن باتوں کا دھیان رکھنا چاہئے : (1) کوریا کی لڑائی سے امریکہ کی کمپنیوں کو بیحد منافع ہو رہا ہے (2) لڑائی بند ہوتے ہی بیوپار میں مندی آنا ضروری ہے اور اِس بات کو محسوس کر کے امریکہ والے کانپ اُٹھتے ہیں ۔ (3) سرکار نے نوٹ چھاپ چھاپ کر بازار بھر دیا ہے ۔ اس لئے قیمتیں آسمان پر چڑھ گئی ہیں ، اس حالت کا مقابلہ کرنا آسان نہیں ہے ۔ (4) امریکہ میں بے روزگاروں کی تعداد روز بڑھ رہی ہے ۔ زیادہ دنوں لوگ بھوکے نہیں رکھے جا سکتے ۔ امریکی اخباروں سے یہ بھی پتہ چلتا ہے کہ اُن کے لئے لڑائی سے زیادہ خطرناک ہتھیار شانتی ہے ۔ ایسی صورت میں شانتی قائم ہونے کی سمبھاونا نہیں ہے ۔ لیکن روسی دل کا کہنا ہے کہ ہم اتنے مضبوط ہیں اور ہم نے دنیا کی جنتا میں لڑائی کے خلاف اتنا

कि सन '52 का इस का कुल असली मुनाफ़ा 15 करोड़ 17 लाख डालर है. सन '51 में यह मुनाफ़ा 13 करोड़ 81 लाख डालर था.

डियु पान्ट वानिमोरस नामी कम्पनी को "मौत का सौदागर" कहा जाता है. यह हर साल अपना मुनाफ़ा बढ़ा रही है. इस कम्पनी ने सन '52 में 23 करोड़ 41 लाख डालर मुनाफ़ा कमाया. यह मुनाफ़ा सन '51 से 34 लाख डालर ज़ियादा है.

मोटर और हवाई जहाज़ बनाने वाली कम्पनियों को भी काफ़ी नफ़ा हो रहा है. क्रेसलर आटोमोबायल कार्पोरेशन ने सन '52 में 7 करोड़ 86 लाख डालर मुनाफ़े का एलान किया है, सन '51 में इस कम्पनी का मुनाफ़ा 7 करोड़ 19 लाख डालर था.

वेल्स आफ़ विलु लैन्ड आटोमोबायल कम्पनी का मुनाफ़ा सन '51 के मुक़ाबले सन '52 में 50 फ़ी सदी बढ़ गया. यह कम्पनी फ़ौजी लारि[illegible] तैयार करती है.

डोगलस एयर क्राफ़्ट कारपोरेशन ने सन '51 में 1 करोड़ 8 लाख डालर मुनाफ़ा कमाया. सन '50 में इस कम्पनी ने कुल 69 लाख डालर मुनाफ़े का एलान किया था. सन '52 में इस कम्पनी ने 87 फ़ी सदी जंगी सामान तैयार किया है.

अमरीकन टेलीफ़ोन और टेलीग्राफ़ कम्पनी में मोर्गगान और राक फ़ीलर दोनों की पूंजी लगी है. सन '52 में इस कम्पनी ने 35 करोड़ 85 लाख डालर मुनाफ़ा का एलान किया जबकि सन 1951 में इसका मुनाफ़ा 32 करोड़ डालर था और सन 50 में 28 करोड़ 66 लाख डालर का नफ़ा हुआ था.

रूस की उदार नीति क्यों ?

रूस इस तेज़ी से सुलह के लिये आगे बढ़ा है कि सबके मुंह पर यह सवाल चढ़ गया है—आख़िर यह क्यों ? कुछ राजकाजियों का कहना है कि रूस ने अपनी नीति बदली नहीं है बल्कि थोड़े अरसे के लिये रास्ता बदल दिया है. इन लोगों का कहना है कि मालनकोफ़ की सरकार अपनी जड़ें मज़बूत करने की फ़िकर में है इसलिये राष्ट्री और अंतर राष्ट्री मामलों में उदारता दिखा रही है. दूसरी बात वह यह भी कहते हैं कि अमरीकी सुरक्षा व्यवस्था से रूसी सहम गए हैं और वह किसी तरह उसे ढीला करना चाहते हैं. अमरीका वालों का कहना यह है कि हमारी मज़बूती ने रूस को मजबूर कर दिया है कि वह ऐसी नीति अपनाए. अमरीकी अफ़सरों को यह भी महसूस हो रहा है कि कोरिया और चीन वालों के हार के ख़तरे को टलाने के लिये रूस ने यह सब किया है. इस तरह कमयुनिस्ट फ़ौजें अपनी ताक़त फिर समेट सकेंगी और अच्छी तरह लड़ सकेंगी.

जो भारती रूस गए हैं उन्होंने साफ़ साफ़ कहा है कि रूस वाले रचनात्मक कामों में इतने मगन हैं कि वह लड़ाई

که سن '52 کا اس کا کل اسلی منافع 15 کروڑ 17 لاکھ ڈالر ہے . سن '51 میں یہ منافع 13 کروڑ 81 لاکھ ڈالر تھا .

ڈیو پانٹ وانیموریس نامی کمپنی کو "موت کا سوداگر" کہا جاتا ہے . یہ ہر سال اپنا منافع بڑھا رہی ہے . اس کمپنی نے سن '52 میں 23 کروڑ 41 لاکھ ڈالر منافع کمایا. یہ منافع سن '51 سے 34 لاکھ ڈالر زیادہ ہے .

موٹر اور ہوائی جہاز بنانے والی کمپنیوں کو بھی کافی نفع ہو رہا ہے . کرسلر آٹو موبائل کارپوریشن نے سن '52 میں 7 کروڑ 86 لاکھ ڈالر منافع کا اعلان کیا ہے . سن '51 میں اس کمپنی کا منافع 7 کروڑ 19 لاکھ ڈالر تھا .

ویلس آف ولینڈ آٹو موبائل کمپنی کا منافع سن '51 کے مقابلے سن '52 میں 50 فی صدی بڑھ گیا. یہ کمپنی فوجی لاریاں تیار کرتی ہے .

ڈوگلس ایرکرافٹ کارپوریشن نے سن '51 میں 1 کروڑ 8 لاکھ ڈالر منافع کمایا . سن 50 میں اس کمپنی نے کل 69 لاکھ ڈالر منافع کا اعلان کیا تھا . سن '52 میں اس کمپنی نے 87 فی صدی جنگی سامان تیار کیا ہے .

امریکن ٹیلی فون اور ٹیلی گراف کمپنی میں مورگان اور راک فیلر دونوں کی پونجی لگی ہے . سن '52 میں اس کمپنی نے 35 کروڑ 85 لاکھ ڈالر منافع کا اعلان کیا ہے . جب کہ سن 1951 میں اس کا منافع 32 کروڑ ڈالر تھا اور سن '50 میں 28 کروڑ 66 لاکھ ڈالر کا نفع ہوا تھا .

روس کی اُدار نیتی کیوں ؟

روس اس تیزی سے صلح کے لئے آگے بڑھا ہے کہ سب کے منہ پر یہ سوال چڑھ گیا ہے—آخر یہ کیوں؟ کچھ راج کاجیوں کا کہنا ہے کہ روس نے اپنی نیتی بدلی نہیں ہے بلکہ تھوڑے عرصے کے لئے راستہ بدل دیا ہے. ان لوگوں کا کہنا ہے کہ مالنکوف کی سرکار اپنی جڑیں مضبوط کرنے کی فکر میں ہے اس لئے راشٹری اور انتر راشٹری معاملوں میں اُدارتا دکھا رہی ہے . دوسری بات وہ یہ بھی کہتے ہیں کہ امریکی سرکشا ویوستھا سے روسی سہم گئے ہیں اور وہ کسی طرح اسے ڈھیلا کرنا چاہتے ہیں . امریکہ والوں کا کہنا یہ ہے کہ ہماری مضبوطی نے روس کو مجبور کردیا ہے کہ وہ ایسی نیتی اپنائے . امریکی افسروں کو یہ بھی محسوس ہو رہا ہے کہ کوریا اور چین والوں کے ہار کے خطرے کو ٹالنے کے لئے روس نے یہ سب کیا ہے . اس طرح کمیونسٹ فوجیں اپنی طاقت پھر سمیٹ سکیں گی اور اچھی طرح لڑ سکیں گی .

جو بھارتی روس گئے ہیں انہوں نے صاف صاف کہا ہے کہ روس والے رچناتمک کاموں میں اتنے مگن ہیں کہ وہ لڑائی

ख़त्म हो जायें. इससे हमने अब तक जो हासिल किया है वह सब छिन जायगा. हमें 'नेटो' का काम हर मैदान में जारी रखना चाहिये. इसी पर हमारी सुरक्षा और दुनिया की शान्ति निर्भर है." इस तरह साफ़ दिखाई पड़ जाता है कि रूस के उदार भावों के जवाब में अमरीका वालों की तरफ़ से कोई अश्वासन नहीं दिया गया.

रूस की यह बात कि अमरीका लड़ाई इसलिये छेड़ना चाहता है क्योंकि इसी तरीक़े से वह अपने माली व्यवस्था की गिरती दीवार को थाम सकता है आज बहुत साफ़ दुनिया के सामने चमकने लगी है. अमरीका में सुलह की बात चीत चलते ही हलचल मच गई है. बरतानिया के एक जरनलिस्ट ने लिखा है कि अमरीका के अख़बारों में शान्ति के सम्बन्ध में जो टिप्पनियां हुई हैं उनसे साफ़ पता चलता है कि अमरीका के कुछ बड़े बड़े पूंजीपति कोरिया की लड़ाई का स्वागत करते हैं क्योंकि इस लड़ाई ने मंदी के भूत से छुटकारा दिलाया है और व्योपार को ऊंचा उठाए रखा है. जुलाई सन '49 में 'यू एस न्यूज़ एन्ड वर्ल्ड रिपोर्ट' (यह अख़बार अमरीका के शासकों से काफ़ी नज़दीक है) ने लिखा था कि—"कितनी भयानक और बरबाद कर देने वाली चोट होगी अगर क्रेमलन एक बारगी ठंडी लड़ाई बन्द कर दे. कांगरेस को इस बात पर राज़ी करने में काफ़ी दिक़्क़त होगी कि वह लगातार पंद्रह हज़ार मिलियन डालर हथियार बंदी पर ख़र्च करने की इजाज़त दे दे." इससे साफ़ पता चलता है कि अमरीका को इस बात से काफ़ी डर है कि कहीं रूस एकबारगी शान्ति की तरफ़ न झुक जाय. एक साल पहले अर्थशास्त्र संबन्धी अमरीकी सदर की कौंसिल के चेयरमैन ने कहा था—"कमयुनिज़्म के पैरोकारों ने अगर हमें लड़ाई के ख़तरे में न झोंक दिया होता तो हमें जल्द ही शान्ति से पैदा होने वाली मुश्किलात का सामना करना पड़ता." कोरिया की लड़ाई में अमरीका की कई कम्पनियों ने ज़बरदस्त फ़ायदा उठाया है. इसका सबूत उनके सालाना हिसाब से मिलता है. इन सब कम्पनियों को जंगी सामान बनाने का सरकारी ठीका मिला था:

जनरल मोटर्स कम्पनी ने एलान किया है कि तमाम टैक्सों की अदायगी के बाद सन '52 में उसे असली मुनाफ़ा 55 करोड़ 87 लाख डालर हुआ है. सन '51 में इस कम्पनी ने 50 करोड़ 62 लाख डालर मुनाफ़ा कमाया था. यहां 'बिज़नेस वीक' नामी अमरीकी अख़बार के अन्दाज़े को भी हमें ध्यान में रख लेना चाहिये. उसका कहना है कि कोरिया की लड़ाई के आरम्भ से और अब तक जनरल मोटर्स को 5 अरब 49 करोड़ डालर के जंगी सामान बनाने के ठीके मिले हैं.

मोरगन जनरल इलेक्ट्रिक कम्पनी का एटमी हथियारों के बनाने में ज़बरदस्त हाथ है. इस कम्पनी ने बताया है

ختم ہو جائیں . اس سے ہم نے اب تک جو حاصل کیا ہے وہ سب چھن جائے گا . ہمیں 'نیٹو' کا کام ہر میدان میں جاری رکھنا چاہئے . اسی پر ہماری سرکشا اور دنیا کی شانتی نربھر ہے ." اسطرح صاف دکھائی پڑ جاتا ہے کہ روس کے اُدار بھاؤں کے جواب میں امریکہ والوں کی طرف سے کوئی اشواسن نہیں دیا گیا .

روس کی یہ بات کہ امریکہ لڑائی اس لئے چھیڑنا چاہتا ہے کیونکہ اسی طریقے سے وہ اپنی مالی ویوستھا کی گرتی دیوار کو تھام سکتا ہے . آج بہت صاف دنیا کے سامنے چمکنے لگی ہے . امریکہ میں صلح کی بات چیت چلتے ہی ہل چل مچ گئی ہے . برطانیہ کے ایک جرنلسٹ نے لکھا ہے کہ امریکہ کے اخباروں میں شانتی کے سمبندھ میں جو ٹپنیاں ہوئی ہیں اُن سے صاف پتہ چلتا ہے کہ امریکہ کے کچھ بڑے بڑے پونجی پتی کوریا کی لڑائی کا سواگت کرتے ہیں کیونکہ اِس لڑائی نے مندی کے بھوت سے چھٹکارا دلایا ہے اور بیوپار کو اونچا اُٹھائے رکھا ہے . جولائی 49' میں 'یو ایس نیوز اینڈ ورلڈ رپورٹ' (یہ اخبار امریکہ کے شاسکوں سے کافی نزدیک ہے) نے لکھا کہ—" کتنی بھیانک اور برباد کر دینے والی چوٹ ہوگی اگر کریملن یکبارگی ٹھنڈی لڑائی بند کر دے . کانگریس کو اس بات پر راضی کرنے میں کافی دقت ہوگی کہ وہ لگاتار پندرہ ہزار ملین ڈالر ہتھیار بندی پر خرچ کرنے کی اجازت دے دے ." اس سے صاف پتہ چلتا ہے کہ امریکہ کو اِس بات سے کافی ڈر ہے کہ کہیں روس یکبارگی شانتی کی طرف نہ جھک جائے . ایک سال پہلے ارتھ شاستر سمبندھی امریکی صدر کی کونسل کے چیرمین نے کہا تھا —" کمیونزم کے پیروکاروں نے اگر ہمیں لڑائی کے خطرے میں نہ جھونک دیا ہوتا تو ہمیں جلد ہی شانتی سے پیدا ہونے والی مشکلات کا سامنا کرنا پڑتا ." کوریا کی لڑائی میں امریکہ کی کئی کمپنیوں نے زبردست فائدہ اُٹھایا ہے اِس کا ثبوت اُن کے سالانہ حساب سے ملتا ہے . اِن سب کمپنیوں کو جنگی سامان بنانے کا سرکاری ٹھیکہ ملا تھا :

جنرل موٹرس کمپنی نے اعلان کیا ہے کہ تمام ٹیکسوں کی ادائگی کے بعد سن 52' میں اُسے اصلی منافع 55 کروڑ 87 لاکھ ڈالر ہوا ہے . سن 51' میں اس کمپنی نے 50 کروڑ 62 لاکھ ڈالر منافع کمایا تھا . یہاں 'بزنس ویک' نامی امریکی اخبار کے اندازے کو بھی ہمیں دھیان میں رکھ لینا چاہئے . اُس کا کہنا ہے کہ کوریا کی لڑائی کے آرمبھ سے اور اب تک جنرل موٹرس کو 5 ارب 49 کروڑ ڈالر کے جنگی سامان بنانے کے ٹھیکے ملے ہیں .

مورگن جنرل الیکٹرک کمپنی کا ایٹمی ہتھیاروں کے بنانے میں زبردست ہاتھ ہے . اِس کمپنی نے بتایا ہے

है. कम्युनिज़्म एक ताक़त है. वही उस ताक़त को अमरीका और दूसरे आज़ाद देशों के सर भी मंढना चाहते हैं. इस कारन रूस को रोकना हमारा फ़र्ज़ है और उसके लिये ज़रूरी है कि आज़ाद मुल्क एक साथ हो जायं. हथियार बढ़ाए जायं फ़ौजें बढ़ाई जायं और रूस की ऐसी जंगी नाकाबन्दी की जाय कि वह पर पुरज़े न निकाल सके—इसी आधार पर अमरीका के गुट के देशों में हथियार बढ़ाने की दौड़ हो रही है. जगह जगह हवाई अड्डे बनाए जा रहे हैं. रूस को चारों तरफ़ से घेरने के लिये फ़ौजी मुआहदनामे हो रहे हैं.

रूस का पक्ष है कि—अमरीका और उसके गुट वाले देश हमें चैन से बैठने नहीं देते. चूंकि हम उनके सामराजी मनसूबों के रास्ते में रोड़ा के रूप में हैं इसलिये वह हमें मिटा देना चाहते हैं. इसके लिये वह हमारे चारों तरफ़ फ़ौजों का जाल बिछा रहे हैं. कम्युनिस्ट देशों में विद्रोह फैलाते हैं और जासूसों का जाल बिछाते हैं. अमरीका का माली ढांचा इतना फुसफुसा हो गया है कि उसको क़ायम रखने के लिये लड़ाई का वातावरन होना ज़रूरी है. इसी कारन वह लोग जगह जगह लड़ाई की तैयारियां करवा रहे हैं और अपने सामान की खपत सहायता के नाम पर करते हैं.

जहां तक अमरीका को यह शक है कि रूस वाले अमरीकी तहज़ीब और उसकी माली व्यवस्था को मिटा कर अपनी तरह की सरकार अमरीकी जनता पर लादना चाहते हैं उसकी सफ़ाई एक बार नहीं हज़ारों बार रूस ने की है. बार बार रूस की तरफ़ से कहा गया है कि अमरीका और रूस दोनों के लिये इस दुनिया में काफ़ी जगह है. माली व्यवस्था के दोनों ढंग बिना एक दूसरे से टक्कर लिये अपने अपने इलाक़ों में फूल फल सकते हैं. मालनकोफ़ ने भी इस बात की सफ़ाई देने में कोई कसर बाक़ी नहीं रखी लेकिन अमरीका वालों की तरफ़ से यह बात नहीं कही गई कि वह रूस को मिटाना नहीं चाहते. दबी ज़बान से वह यह ज़रूर कहते हैं कि हम जो फ़ौजी दीवारें खड़ी कर रहे हैं उससे रूस को कोई ख़तरा नहीं है. आज जब रूस शान्ति के लिये बेहद आगे बढ़ रहा है तब भी अमरीका वाले यह आश्वासन नहीं दिलाते कि रूस के चारों तरफ़ जो फ़ौजी जाल कसा गया है वह ख़तम कर दिया जायगा. इसके ख़िलाफ़ डलेस साहब का कहना है कि इस जाल को और मज़बूत किया जायगा. आइज़न हावर का कहना है कि 'नेटो' शान्ति का हथियार है. पच्छिम को शान्ति क़ायम रखने के लिये अपना एका और बढ़ाना चाहिये क्योंकि कमज़ोर राज शान्ति की रक्षा नहीं कर सकते. मिस्टर ईडन ने भी अपने बयान में कहा है—"हमें ऐसा मौक़ा न आने देना चाहिये जिससे हम अपने साथियों से

ہیں۔ کمیونزم ایک طاقت ہے۔ وہی اس طاقت کو امریکہ اور دوسرے آزاد دیشوں کے سر بھی منڈھنا چاہتے ہیں۔ اس کارن روس کو روکنا ہمارا فرض ہے اور اس کے لئے ضروری ہے کہ آزاد ملک ایک ساتھ ہو جائیں۔ ہتھیار بڑھائے جائیں، فوجیں بڑھائی جائیں اور روس کی ایسی جنگی ناکہ بندی کی جائے کہ وہ پر پرزے نہ نکال سکے—اسی آدھار پر امریکہ کے گٹ کے دیشوں میں ہتھیار بڑھانے کی دوڑ ہو رہی ہے۔ جگہ جگہ ہوائی اڈے بنائے جا رہے ہیں۔ روس کو چاروں طرف سے گھیرنے کے لئے فوجی معاہدنامے ہو رہے ہیں۔ روس کا پکش ہے کہ—امریکہ اور اس کے گٹ والے دیش ہمیں چین سے بیٹھنے نہیں دیتے۔ چونکہ ہم اُن کے سامراجی منصوبوں کے راستے میں روڑا کے روپ میں ہیں اس لئے وہ ہمیں مٹا دینا چاہتے ہیں۔ اس کے لئے وہ ہمارے چاروں طرف فوجوں کا جال بچھا رہے ہیں۔ کمیونسٹ دیشوں میں ودروہ پھیلاتے ہیں اور جاسوسوں کا جال بچھاتے ہیں۔ امریکہ کا مالی ڈھانچہ اتنا پھسپھسا ہو گیا ہے کہ اسکو قائم رکھنے کے لئے لڑائی کا واتاورن ہونا ضروری ہے۔ اسی کارن یہ لوگ جگہ جگہ لڑائی کی تیاریاں کروا رہے ہیں اور اپنے سامان کی کھپت سہائتا کے نام پر کرتے ہیں۔

جہاں تک امریکہ کو یہ شک ہے کہ روس والے امریکی تہذیب اور اسکی مالی ویوستھا کو مٹا کر اپنی طرح کی سرکار امریکی جنتا پر لادنا چاہتے ہیں اسکی صفائی ایک بار نہیں ہزاروں بار روس نے کی ہے۔ بار بار روس کی طرف سے کہا گیا ہے کہ امریکہ اور روس دونوں کے لئے اس دنیا میں کافی جگہ ہے۔ مالی ویوستھا کے دونوں ڈھنگ بنا ایک دوسرے سے ٹکر لئے اپنے اپنے علاقوں میں پھول پھل سکتے ہیں۔ مالنکوف نے بھی اس بات کی صفائی دینے میں کوئی کسر باقی نہیں رکھی۔ لیکن امریکہ والوں کی طرف سے یہ بات نہیں کہی گئی کہ وہ روس کو مٹانا نہیں چاہتے۔ دبی زبان سے وہ یہ ضرور کہتے ہیں کہ ہم جو فوجی دیواریں کھڑی کر رہے ہیں اس سے روس کو کوئی خطرہ نہیں ہے۔ آج جب روس شانتی کے لئے بے حد آگے بڑھ رہا ہے تب بھی امریکہ والے یہ اشواسن نہیں دلاتے کہ روس کے چاروں طرف جو فوجی جال کسا گیا ہے وہ ختم کر دیا جائے گا۔ اس کے خلاف ڈلس صاحب کا کہنا ہے کہ اس جال کو اور مضبوط کیا جائے گا۔ آئزن ہاور کا کہنا ہے کہ 'نیٹو' شانتی کا ہتھیار ہے۔ پچھم کو شانتی قائم رکھنے کے لئے اپنا ایکا اور بڑھانا چاہئے کیونکہ کمزور راج شانتی کی رکشا نہیں کر سکتے۔ مسٹر ایڈن نے بھی اپنے بیان میں کہا ہے—"ہمیں ایسا موقع نہ آنے دینا چاہئے جس سے ہم اپنے ساتھیوں سے

इरादों के बदले अमरीका से यह उम्मीद करते थे कि वह भी कोई न कोई क़दम उठाएगा और चीन और कोरिया को यूनो में आने की दावत देगा. मालोतोफ़ ने इस बात को शर्त के रूप में पेश नहीं किया लेकिन दबी ज़बान इशारा ज़रूर किया है. पर हमें दुख है कि अमरीका और उसके गुट वालों की तरफ़ से अभी तक कोई ऐसी उदारता नहीं दिखाई गई जिससे पता चल सके कि उनकी नियत भी सुलह करने की और शान्ति को स्थाई बनाने की है.

रूस के इस रुख़ के संबंध में अमरीका के सरकारी हलक़ों का कहना है कि उन्हें इस बात से ताज्जुब नहीं है कि रूस उदारता दिखा रहा है बल्कि अचम्भा इस बात का है कि इस मैदान में वह इतना आगे बढ़ गया है. अमरीका के राष्ट्रपति आइज़नहावर ने एक प्रेस कानफ़रेन्स में कहा—"कमयुनिस्ट दुनिया की तरफ़ से शान्ति के लिये जो सुझाव आए हैं उन्हें हम सचा मान कर चलेंगे और उस समय तक सचा मानेंगे जब तक कोई कड़वा तजरबा न हो" लेकिन अमरीका के स्टेट डिपारटमेन्ट के सिक्रेटरी मिस्टर डलेस ने 4 अप्रैल को वाशिंगटन में कहा है कि—"कम्यु-निस्टों की तरफ़ से जो यह सद्भावना दिखाई जा रही है इससे कोई बुनियादी फ़रक़ पैदा नहीं होता क्योंकि पच्छिमी देशों को रूस की तरफ़ से जो ख़तरा है वह बना रहेगा. फिर भी झगड़ा ख़तम करने के लिये कम्युनिस्टों से मेल की कुछ गुनजायश पैदा की जा सकती है." उन्होंने यह भी कहा कि—"हमें चाहिये कि हम अपने प्रोग्राम को जारी रखें और योरप में 'नेटो" को मज़बूत बनाएं." आइज़न हावर और डलेस के बयानों में ज़मीन आसमान का फ़रक़ है लेकिन न जाने क्यों मिस्टर डलेस का कहना है कि उनका बयान आइज़नहावर के बयान से अलग नहीं है. हो सकता है कि नीयत दोनों की एक हो लेकिन आइज़नहावर ने ज़ियादा अक़लमन्दी की हो और यह रुख़ लिया हो और मिस्टर डलेस ने ताक़त के नशे में दिल की बात उगल दी हो. लन्दन में मिस्टर इडेन ने कहा है कि—"बरतानिया आधे रास्ते चलकर शान्ति के हर रुख़ का स्वागत करेगा. आज हम शान्ति क़ायम होने की निशानियां देख रहे हैं. लेकिन साथ ही साथ हमें अपनी कोशिशों में ढील न डालनी चाहिये और अपनी सुरक्षा के लिये मज़बूत होना चाहिये." फ़्रांस की तरफ़ से अभी कुछ नहीं कहा गया.

दुनिया ने रूस और अमरीका के रुख़ में जो फ़रक़ है उसे ज़रूर देख लिया होगा. इस बात पर रोशनी डालने से पहले हम रूस और अमरीका के झगड़े को समझ लें: अमरीका का पक्ष यह है कि रूसी सामराजी हैं और यह दुनिया को ग़ुलाम बनाने के लिये क़सम खाए बैठे हैं. धीरे धीरे वह दुनिया के एक तिहाई हिस्से को खा कर चुके

قدموں کے بدلے امریکہ سے یہ امید کرتے تھے کہ وہ بھی کوئی نہ کوئی قدم اٹھائے گا اور چین اور کوریا کو یونو میں آنے کی دعوت دے گا. مالوتوف نے اِس بات کو شرط کے روپ میں پیش نہیں کیا لیکن دبی زبان اشارہ ضرور کیا ہے. پر ہمیں دکھ ہے کہ امریکہ اور اُس کے گٹ والوں کی طرف سے ابھی تک کوئی ایسی اُدارتا نہیں دکھائی گئی جس سے پتہ چل سکے کہ اُن کی نیت بھی صلح کرنے کی اور شانتی کو استھائی بنانے کی ہے.

روس کے اِس رخ کے سمبندھ میں امریکہ کے سرکاری حلقوں کا کہنا ہے کہ اُنہیں اِس بات سے اَچنبھا نہیں ہے کہ روس اُدارتا دکھا رہا ہے بلکہ اچنبھا اِس بات کا ہے کہ اِس میدان میں وہ اتنا آگے بڑھ گیا ہے. امریکہ کے راشٹرپتی آئزن ہاور نے ایک پریس کانفرنس میں کہا—"کمیونسٹ دنیا کی طرف سے شانتی کے لئے جو سجھاؤ آئے ہیں اُنہیں ہم سچا مان کر چلیں گے اور اُس سمے تک سچا مانیں گے جب تک کوئی کڑوا تجربہ نہ ہو." لیکن امریکہ کے اسٹیٹ ڈپارٹمنٹ کے سیکریٹری مسٹر ڈلس نے 4 اپریل کو واشنگٹن میں کہا ہے کہ—"کمیونسٹوں کی طرف سے جو یہ سدبھاونا دکھائی جا رہی ہے اِس سے کوئی بنیادی فرق پیدا نہیں ہوتا کیونکہ پچھمی دیشوں کو روس کی طرف سے جو خطرہ ہے وہ بنا رہے گا. پھر بھی جھگڑا ختم کرنے کے لئے کمیونسٹوں سے میل کی کچھ گنجائش پیدا کی جاسکتی ہے." اُنہوں نے یہ بھی کہا کہ—"ہمیں چاہئے کہ ہم اپنے پروگرام کو جاری رکھیں اور یورپ میں 'نیٹو' کو مضبوط بنائیں." آئزن ہاور اور ڈلس کے بیانوں میں زمین آسمان کا فرق ہے لیکن نہ جانے کیوں مسٹر ڈلس کا کہنا ہے کہ اُن کا بیان آئزن ہاور کے بیان سے الگ نہیں ہے. ہوسکتا ہے کہ نیت دونوں کی ایک ہو لیکن آئزن ہاور نے زیادہ عقلمندی کی ہو اور یہ رخ لیا ہو اور مسٹر ڈلس نے طاقت کے نشے میں دل کی بات اُگل دی ہو. لندن میں مسٹر ایڈن نے کہا ہے کہ—"برطانیہ آدھے راستے چل کر شانتی کے ہر رخ کا سواگت کرے گا. آج ہم شانتی قائم ہونے کی نشانیاں دیکھ رہے ہیں. لیکن ساتھ ہی ساتھ ہمیں اپنی کوششوں میں ڈھیل نہ ڈالنی چاہئے اور اپنی سرکشا کے لئے مضبوط ہونا چاہئے." فرانس کی طرف سے ابھی کچھ نہیں کہا گیا.

دنیا نے روس اور امریکہ کے رخ میں جو فرق ہے اُسے ضرور دیکھ لیا ہوگا. اِس بات پر روشنی ڈالنے سے پہلے ہم روس اور امریکہ کے جھگڑے کو سمجھ لیں: امریکہ کا پکش یہ ہے کہ روسی سامراجی ہیں اور یہ دنیا کو غلام بنانے کے لئے قسم کھائے بیٹھے ہیں. دھیرے دھیرے یہ دنیا کے ایک تہائی حصے کو کھا کر چکے

होने की सम्भावना फिर पैदा हो गई. उन्होंने कहा है कि जो क़ैदी अपनी मरज़ी से अपने अपने वतन जाना चाहते हों उन्हें फ़ौरन रिहा कर दिया जाय. इसी आधार पर बीमार और ज़ख़्मी सिपाहियों के तबादले की तैयारियां हो रही हैं. बाक़ी क़ैदियों के बारे में चू एन लाई ने कहा है कि वह एक तटस्थ देश के सुपुर्द कर दिये जायं ताकि उनकी मरज़ी मालूम करके उन्हें उनके देश भेज दिया जाय. इस सुझाव की दोस्त दुश्मन सब ने सराहना की है. कमयुनिस्ट दुनिया ने यह सुझाव रख कर जो उदारता दिखाई है इसका दुनिया की जनता पर बहुत ही अच्छा असर पड़ा है.

(2) बरलिन में ट्रैफ़िक को लेकर झगड़े खड़े रहा करते थे. रूस ने ट्रैफ़िक के संबंध में पच्छिम बरलिन वालों को काफ़ी सुविधाएं दे दी हैं.

(3) रूस ने उत्तर कोरिया वालों से सिफ़ारिश की कि वह अमरीका, बरतानिया और फ़्रांस के सिवीलियन क़ैदियों को छोड़ दे. ऐसे क़ैदी छूट भी गए हैं.

(4) रूसी कमाण्ड ने बरतानिया के एक जहाज़ को जरमनी में गिरा दिया था क्योंकि वह रूसी हलक़े में चला आया था. रूस ने इस दुर्घटना पर दुख प्रकट किया और बरतानिया को लिखा कि फ़्रांस, बरतानिया, अमरीका और रूस बातचीत करके जहाज़ों की उड़ान के संबन्ध में कुछ उदार नियम बना लें. बरतानिया ने यह सुझाव मान लिया है.

(5) रूस ने अमरीका के दस जरनलिस्टों को विसा दिया ताकि वह रूस घूम सकें और चीज़ें ख़ुद अपनी आंखों से देख सकें.

(6) स्वीडन के मंत्री को रूस ने यूनो के जनरल सेक्रेटरी के रूप में स्वीकार कर लिया.

दुनिया की जनता और ख़ास कर भारत की जनता ने ग़ौर से इस बात को नोट किया है कि रूस और रूसी गुट के दूसरे देश तो कोरिया की लड़ाई बन्द करने और ठन्डी लड़ाई को ख़तम करने के लिये एक के बाद दूसरा क़दम उठाते जाते हैं लेकिन अमरीका और उसके गुट के देश ख़ामोश हैं, संकोच करते हैं. रूस ने सद्भावना दिखाने के लिये कोई शर्त नहीं रखी. इस बीच उसने यह भी नहीं कहा कि अमरीका वाले फ़लां बात मान लें तो सुलह हो सकती है. उनकी नीति यह नहीं है कि वह सुझाव रखें और उन सुझावों को दूसरे मानें बल्कि वह एक रास्ता निकाल लेते हैं और उस पर चल पड़ते हैं. रास्ता इतना सीधा और जायज़ होता है कि दूसरों को मजबूर हो कर उस तरफ़ क़दम उठाने पड़ते हैं. शान्ति पसन्द लोग रूस के इन उदार

ہونے کی سمبھاؤنا پھر پیدا ہوگئی . اُنہوں نے کہا ہے کہ جو قیدی اپنی مرضی سے اپنے اپنے وطن جانا چاہتے ہوں اُنہیں فوراً رہا کر دیا جائے. اسی آدھار پر بیمار اور زخمی سپاہیوں کے تبادلے کی تیاریاں ہو رہی ہیں. باقی قیدیوں کے بارے میں چو این لائی نے کہا ہے کہ وہ ایک تٹستھ دیش کے سپرد کر دئے جائیں تاکہ اُن کی مرضی معلوم کرکے اُنہیں اُن کے دیش بھیج دیا جائے. اِس سجھاؤ کی دوست دشمن سب نے سراہنا کی ہے . کمیونسٹ دنیا نے یہ سجھاؤ رکھ کر جو اُدارتا دکھائی ہے اِس کا دنیا کی جنتا پر بہت ہی اچھا اثر پڑا ہے .

(2) برلن میں ٹریفک کو لے کر جھگڑے کھڑے رہا کرتے تھے . روس نے ٹریفک کے سمبندھ میں پچھم برلن والوں کو کافی سودھائیں دے دی ہیں .

(3) روس نے اُتر کوریا والوں سے سفارش کی کہ وہ امریکہ' برطانیہ اور فرانس کے سویلین قیدیوں کو چھوڑ دے. ایسے قیدی چھوٹ بھی گئے ہیں .

(4) روسی کمانڈ نے برطانیہ کے ایک جہاز کو جرمنی میں گرا دیا تھا کیونکہ وہ روسی حلقے میں چلا آیا تھا. روس نے اِس درگھٹنا پر دکھ پرکٹ کیا اور برطانیہ کو لکھا کہ فرانس' برطانیہ' امریکہ اور روس بات چیت کر کے جہازوں کی اُڑان کے سمبندھ میں کچھ اُدار نیم بنالیں . برطانیہ نے یہ سجھاؤ مان لیا ہے .

(5) روس نے امریکہ کے دس جرنلسٹوں کو ویسا دیا تاکہ وہ روس گھوم سکیں اور چیزیں خود اپنی آنکھوں سے دیکھ سکیں .

(6) سویڈن کے منتری کو روس نے یونو کے جنرل سکریٹری کے روپ میں سویکار کر لیا .

دنیا کی جنتا اور خاص کر بھارت کی جنتا نے غور سے اِس بات کو نوٹ کیا ہے کہ روس اور روسی گٹ کے دوسرے دیش تو کوریائی لڑائی بند کرنے اور ٹھنڈی لڑائی کو ختم کرنے کے لئے ایک کے بعد دوسرا قدم اُٹھاتے جاتے ہیں لیکن امریکہ اور اُس کے گٹ کے دیش خاموش ہیں' سنکوچ کرتے ہیں. روس نے سد بھاؤنا دکھانے کے لئے کوئی شرط نہیں رکھی . اِس بیچ اُس نے یہ بھی نہیں کہا کہ امریکہ والے فلاں بات مان لیں تو صلح ہوسکتی ہے . اُن کی نیتی یہ نہیں ہے کہ وہ سجھاؤ رکھیں اور اُن سجھاؤں کو دوسرے مانیں بلکہ وہ ایک راستہ نکال لیتے ہیں اور اُس پر چل پڑتے ہیں. راستہ اتنا سیدھا اور جائز ہوتا ہے کہ دوسروں کو مجبور ہوکر اُس طرف قدم اُٹھانے پڑتے ہیں. شانتی پسند لوگ روس کے اِن اُدار

अगरेसर क़रार दे. तब यह व्यवस्था सूरत होगी कि अमरीका को भी इस अगरेशन में साझीदार ऐलान करने की बरमा मांग करेगा. इंगलैण्ड के वज़ीर मिस्टर एडिन ने एक सुझाव रखा है कि एक कमीशन मुक़र्रर कर दिया जाय जो इस मामले की जांच पड़ताल करे. लेकिन एशियाई मुल्कों को कमीशनों का पूरा तजुरबा है. वही मुजरिम, वही जज का ड्रामा दोबारा नहीं दुहराया जा सकता यूनो की जांच का समय है, इस वक़्त आज़माइश का समय है. अगर बरमा को इनसाफ़ नहीं मिलता, अगर एशिया की मुत्तहदा आवाज़ यूनो में ठुकरा दी जाती है, अगर अमरीका को अगरेसर क़रार नहीं दिया जाता और अगरेसर को मुनासिब सज़ा नहीं दी जाती तो यूनो अपनी मौत बुलायेगी, उस पर से रही सही श्रद्धा भी उठ जायगी.

6. 4. '53 —मुजीब रिज़वी

اگریسر کہہ سکے ۔ اُس وقت کیا صورت ہوگی جب امریکہ کو بھی اِس اگریشن میں ساجھی‌دار اعلان کرنے کی برما مانگ کرے گا. انگلینڈ کے وزیر مسٹر ایڈن نے ایک سجھاؤ رکھا ہے کہ ایک کمیشن مقرر کردیا جائے جو اِس معاملے کی جانچ پڑتال کرے ۔ لیکن ایشیائی ملکوں کو کمیشنوں کا پورا تجربہ ہے. وہی مجرم' وہی جج کا ڈرامہ دوبارہ نہیں دہرایا جاسکتا ۔ یونو کی جانچ کا سمے ہے' اِس وقت آزمائش کا سمے ہے. اگر برما کو انصاف نہیں ملتا' اگر ایشیا کی متحدہ آواز یونو میں ٹھکرا دی جاتی ہے' اگر امریکہ کو اگریسر قرار نہیں دیا جاتا اور اگریسر کو مناسب سزا نہیں دی جاتی تو یونو اپنی موت بلائےگی' اُس پر سے رہی سہی شردھا بھی اُٹھ جائےگی ۔

6-4-'53 —مجیب رضوی

जग शान्ति की समस्याएं

मुद्दतों के बाद दुनिया को यह उम्मीद बंधी है कि अन्तर राष्ट्री झगड़े शान्तिमय तरीक़े से तय हो सकते हैं. इस उम्मीद बंधाने का सेहरा रूस के सर है. रूस और चीन ने ऐसी उदारता दिखलाई है कि दुनिया भौंचक्की हो गई है. ख़ास कर अमरीकी गुट के देशों की जनता को और ज़ियादा अचम्भा हुआ है. सालों के रूस विरोधी प्रचार ने उनके सामने रूस को जंगबाज़ के रूप में पेश किया था. लेकिन आज जनता को दिखाई पड़ रहा है कि वह "जंग-बाज़" सुलह और शान्ति के लिये तो आगे बढ़ रहा है लेकिन अपने को निर्दोष बताने वाले संकोच कर रहे हैं.

रूस ने दो एक झगड़ों के सम्बन्ध में ही उदारता नहीं दिखाई बल्कि पूरी 'ठंडी लड़ाई' का रुख़ ही पलट दिया है और अन्तर राष्ट्री हर झगड़े को बातचीत कर के वह ख़तम कर देना चाहता है.

(1) कोरिया की सुलह के रास्ते में जंगी क़ैदियों की रिहाई का मसला एक रोड़ा बन गया था. रूस जिनेवा कनवेनशन के आधार पर जंगी क़ैदियों की रिहाई चाहता था और अमरीका वालों का कहना था कि क़ैदियों को बिना उनकी मरज़ी मालूम किये ज़बरदस्ती चीन और कोरिया वापस नहीं भेजा जा सकता. रूस का कहना था कि पहले लड़ाई बन्द हो जाय और तब क़ैदियों का सवाल हल किया जाय क्योंकि यही अन्तर राष्ट्री रिवाज है. पर अमरीका का कहना था कि पहले क़ैदियों के सवाल पर समझौता हो जाय तब लड़ाई बन्द की जाय. इसी आधार पर कोरिया वाली सुलह की बातचीत भंग हो गई और दुनिया निराश हो गई. लेकिन चीन के बड़े वज़ीर ने एक बीच का का रास्ता निकाल दिया और कोरिया में लड़ाई के बन्द

جگ شانتی کی سمسیائیں

مدتوں کے بعد دنیا کو یہ اُمید بندھی ہے کہ انتر راشٹری جھگڑے شانتی‌مے طریقے سے طے ہوسکتے ہیں ۔ اِس اُمید بندھانے کا سہرا روس کے سر ہے. روس اور چین نے ایسی اُدارتا دکھلائی ہے کہ دنیا بھونچکی ہوگئی ہے ۔ خاص کر امریکی گٹ کے دیشوں کی جنتا کو اور زیادہ اچمبھا ہوا ہے ۔ سالوں کے روس وِرودھی پرچار نے اُن کے سامنے روس کو جنگ‌باز کے روپ میں پیش کیا تھا. لیکن آج جنتا کو دکھائی پڑ رہا ہے کہ وہ "جنگ‌باز" صلح اور شانتی کے لئے تو آگے بڑھ رہا ہے لیکن اپنے کو نردوش بتانے والے سنکوچ کر رہے ہیں ۔

روس نے دو ایک جھگڑوں کے سمبندھ میں ہی اُدارتا نہیں دکھائی بلکہ پوری 'ٹھنڈی لڑائی' کا رخ ہی پلٹ دیا ہے اور انترراشٹری ہر جھگڑے کو بات چیت کرکے وہ ختم کردینا چاہتا ہے ۔

(1) کوریا کی صلح کے راستے میں جنگی قیدیوں کی رہائی کا مسئلہ ایک روڑا بن گیا تھا ۔ روس جنیوا کنونشن کے آدھار پر جنگی قیدیوں کی رہائی چاہتا تھا اور امریکہ والوں کا کہنا تھا کہ قیدیوں کو بنا اُن کی مرضی معلوم کئے زبردستی چین اور کوریا واپس نہیں بھیجا جاسکتا. روس کا کہنا تھا کہ پہلے لڑائی بند ہو جائے اور تب قیدیوں کا سوال حل کیا جائے کیونکہ یہی انترراشٹری رواج ہے. پر امریکہ کا کہنا تھا کہ پہلے قیدیوں کے سوال پر سمجھوتہ ہو جائے تب لڑائی بند کی جائے ۔ اِسی آدھار پر کوریا سمبندھی صلح کی بات چیت بھنگ ہوگئی اور دنیا نراش ہوگئی ۔ لیکن چین کے بڑے وزیر نے ایک بیچ کا راستہ نکال دیا اور کوریا میں لڑائی کے بند

इस तरह से बताया गया है कि कुछ लोगों के दिमागों में भरम पैदा हो गया है. लेकिन बरमा की सरकार ने जो बयान दिये हैं उनसे यह बात साफ़ हो जाती है कि यह माओ-त्से-तुंग के सिपाही नहीं बल्कि च्यांग काई शेक के ही आदमी हैं. बरमी फ़ौज ने कोमिनतांग वालों की एक टुकड़ी को मारा था. इस लड़ाई में तीन अमरीकन भी मरे हैं जो इन फ़ौजों को ट्रेनिंग देते थे. अमरीकी सरकार शायद यह कह देगी कि हर योरपी गोरा होता है, इसलिये इन गोरों को अमरीकी नहीं कहा जा सकता. लेकिन इन लोगों की जेबों से जो डायरियां मिली हैं उनसे इस बात का पक्का सबूत मिलता है कि वह अमरीकन थे. डायरियों में उनका पता, उनके रिश्तेदारों का पता और उनके ख़ानदान वालों की तस्वीरें भी मिली हैं. दूसरे काग़ज़ों से भी साफ़ पता चलता है कि इन फ़ौजों का फ़ारमूसा से पक्का नाता है और इन्हें थाईलैंड की तरफ़ से हथियार वग़ैरा की सप्लाई होती है. अपने हाल के दौरे का ज़िकर करते हुए पंडित नेहरू ने एक बात यह बताई है कि—''करन' (यह क़बायली लोग हैं और बरमा सरकार से हथियार ले कर लड़ रहे हैं) विद्रोह में बहुत से मिशनरी भी शामिल हैं. क्योंकि यह लोग ईसाई हैं.'' अख़बारों में ख़बर आ चुकी है कि करन और कोमिनतांग के सिपाही मिल जुल कर बरमा सरकार के ख़िलाफ़ लड़े हैं. अगर इस मेल को भी अमरीका और मिशनरियों से जोड़ दिया जाय तो कोई ग़लती न होगी और यह बात साफ़ हो जायगी कि कोमिनतांग वाले 'करन' वालों से क्यों मिल सके.

बरमा ने यूनो के जनरल सेक्रेटरी को केबिल भेज दिया है कि वह इस मसले को जनरल असेम्बली के सामने पेश कर दें. खुल्लम खुल्ला बात करने के लिये बरमा सरकार ने अपना दामन भी छुड़ा लिया है. पाइंट फ़ोर एड की मदद बरमा को भी अमरीका से मिलती है. यह फ़ोर 'एड' 'आपसी सुरक्षा क़ानून' के आधीन मिलती है. अमरीका का भंडा फोड़ने से पहले यह ज़रूरी था कि बरमा इस क़ानून से छुटकारा पा ले. बड़ी ख़ुशी की बात है कि उसने अमरीका को तकनीकी सहयोग समझौते को रद्द करने की नोटिस दे दी है और अमरीकी विशेषज्ञ वहां से अपना बोरिया बिस्तर बांध रहे हैं. दूसरे एशियाई मुल्कों को इस से सबक़ लेना चाहिये क्योंकि जिस ख़तरे का आभास बरमा ने आज कर लिया है उसे उन्हें कल करना ही पड़ेगा. अक़्लमंद वह है जो ज़हर खा कर ज़हर के असर का पता नहीं लगाता बल्कि दूसरे की हालत देख कर चौकन्ना हो जाता है.

यूनो के सामने यह मसला बड़ी दिक़्क़तें खड़ी कर देगा. क्या यूनो में यह हिम्मत है कि उन काग़ज़ों के आधार पर जो बरमा सरकार पेश करेगी वह अमरीका को

اس طرح سے بتایا گیا ہے کہ کچھ لوگوں کے دماغوں میں بھرم پیدا ہوگیا ہے۔ لیکن برما کی سرکار نے جو بیان دئے ہیں اُن سے یہ بات صاف ہو جاتی ہے کہ یہ ماؤزے تنگ کے سپاہی نہیں ہیں بلکہ چیانگ کائی شیک کے ہی آدمی ہیں۔ برمی فوج نے کومنتانگ والوں کی ایک ٹکڑی کو مارا تھا۔ اِس لڑائی میں تین امریکن بھی مرے ہیں جو اِن فوجوں کو ٹریننگ دیتے تھے۔ امریکی سرکار شاید یہ کہ دیگی کہ ہر یورپی گورا ہوتا ہے، اِس لئے اِن گوروں کو امریکی نہیں کہا جاسکتا۔ لیکن اِن لوگوں کی جیبوں سے جو ڈائریاں ملی ہیں اُن سے اِس بات کا پکا ثبوت ملتا ہے کہ وہ امریکن تھے۔ ڈائریوں میں اُن کا پتہ، اُن کے رشتےداروں کا پتہ اور اُن کے خاندان والوں کی تصویریں بھی ملی ہیں۔ دوسرے کاغذوں سے بھی صاف پتہ چلتا ہے کہ اِن فوجوں کا فارموسا سے پکا ناتہ ہے اور انہیں تھائی لینڈ کی طرف سے ہتھیار وغیرہ کی سپلائی ہوتی ہے۔ اپنے حال کے دورے کا ذکر کرتے ہوئے پنڈت نہرو نے ایک بات یہ بتائی ہے کہ—''کرن' (یہ قبائلی لوگ ہیں اور برما سرکار سے ہتھیار لے کر لڑ رہے ہیں) ودروہ میں بہت سے مشنری بھی شامل ہیں کیونکہ یہ لوگ عیسائی ہیں'' اخباروں میں خبر آچکی ہے کہ کرن اور کومنتانگ کے سپاہی مل جل کر برما سرکار کے خلاف لڑے ہیں۔ اگر اِس میل کو بھی امریکہ اور مشنریوں سے جوڑ دیا جائے تو کوئی غلطی نہ ہوگی اور یہ بات صاف ہو جائے گی کہ کومنتانگ والے 'کرن' والوں سے کیوں مل سکے۔

برما نے یونو کے جنرل سکریٹری کو کیبل بھیج دیا ہے کہ وہ اِس مسئلے کو جنرل اسمبلی کے سامنے پیش کردیں۔ کھلم کھلا بات کرنے کے لئے برما سرکار نے اپنا دامن بھی چھڑا لیا ہے۔ پائنٹ فور ایڈ کی مدد برما کو بھی امریکہ سے ملتی ہے۔ یہ فور 'ایڈ' آپسی سرکشا قانون' کے آدھین ملتی ہے۔ امریکہ کا بھنڈا پھوڑنے سے یہ ضروری تھا کہ برما اِس قانون سے چھٹکارا پالے۔ بڑی خوشی کی بات ہے کہ اُس نے امریکہ کو تکنیکی سہیوگ سمجھوتے کو رد کرنے کی نوٹس دے دی ہے اور امریکی وشیشگ وہاں سے اپنا بوریا بستر باندھ رہے ہیں۔ دوسرے ایشیائی ملکوں کو اِس سے سبق لینا چاہئے کیونکہ جس خطرے کا آبھاس برمانے آج کر لیا ہے اسے انہیں کل کرنا ہی پڑے گا۔ عقلمند وہ ہے جو زہر کھا کر زہر کے اثر کا پتہ نہیں لگاتا بلکہ دوسرے کی حالت دیکھ کر چوکنا ہو جاتا ہے۔

یونو کے سامنے یہ مسئلہ بڑی دقتیں کھڑی کر دیگا۔ کیا یونو میں یہ ہمت ہے کہ اُن کاغذوں کے آدھار پر جو برما سرکار پیش کرے گی وہ امریکہ کو

कोमिन्तांग की फ़ौजें तुम्हारी कुमक के काम आयंगी और बरमा सरकार ने उन फ़ौजों को पूरी छूट दे दी हो कि वह अपने को कमयुनिस्टों के ख़िलाफ़ लड़ने के लिये अच्छी तरह तैयार कर लें. लेकिन सवाल यह उठता है कि कौन सी परिस्थिति आज बदल गई है जिससे बरमा ने कोमिन तांग के फ़ौजों के सवाल को इतना भयानक बना दिया है और दुनिया के राजनीत में एक नई गोट फंसा दी है. इन्हीं जानकारों का कहना है कि यह सब बरतानिया और अमरीका की आपसी होड़ का नतीजा है एशिया में हर हर जगह बाज़ारों पर क़बज़ा करने की बरतानिया और अमरीका दौड़ लगा रहे हैं. बरतानिया इन बाज़ारों का पुराना सौदागर है और अमरीका जब आगे बढ़ता है तब उसे बरतानिया से टक्कर लेनी पड़ती है. दोनों देश कम्युनिस्टों के विरोध में तो एक हैं लेकिन एक दूसरे का भी विरोध वह हर सतह पर करते हैं. बरमा को बरतानिया ने हिम्मत दिलाई है और उसे अमरीका के ख़िलाफ़ एक ज़बरदस्त मोहरा बना दिया है, क्योंकि अगर बरमा ने खुल्लम खुल्ला अमरीकी करतूतों का भंडा फोड़ किया तो अमरीका का असर एशियाई मुल्कों पर ख़तम सा हो जायगा और हर जगह अमरीकियों पर अविश्वास फैल जायगा.

बरमा ने सिक्योरिटी कौन्सिल के सामने अपना मुक़दमा पेश करने के बजाए जनरल असेम्बली के सामने यह मुक़दमा रखा है. यह बात बड़ी महत्व की है. कुछ लोगों का कहना है कि सिक्योरिटी कौन्सिल के सामने बरमा ने इस लिये मुक़दमा नहीं रखा क्योंकि उसे कश्मीर का हाल मालूम था और उसे जानकारी थी कि सिक्योरिटी कौन्सिल में फ़ैसला कुछ नहीं हो पाएगा लेकिन देर बहुत लग जायगी. दूसरी वजह यह भी है कि बरमा के हमदर्द मुल्कों की सिक्योरिटी कौन्सिल में कमी है. कुछ जानकारों का कहना है कि चूंकि अमरीका और चांग काई शेक दोनों के ख़िलाफ़ बरमा की शिकायत है इस कारन यह दोनों देश पूरी कोशिश करेंगे कि यह मामला एजन्डा पर न आए वीटो का इस्तेमाल भी होगा. ऐसी हालत में बरतानिया और फ्रांस की पोज़ीशन नाज़ुक हो जायगी. बरतानिया जहां अमरीका के ख़िलाफ़ कुछ कह नहीं सकता है और अमरीका की करतूतों को ज़ाहिर कराए बिना उसे चैन भी नहीं है. ऐसी हालत में यह ठीक है कि जनरल असेम्बली में यह सवाल पेश किया जाए.

अमरीका वाले भी मामूली खिलाड़ी नहीं हैं उन्होंने हर तरह से प्रचार किया है कि चीन के यह सिपाही चांग काई शेक के आदमी नहीं हैं बल्कि चीनी रेड आरमी के सिपाही हैं जो भेस बदल कर आए हैं और बरमा के कमयुनिस्टों की मदद करते हैं. अख़बारों में इस ख़बर को

کومنتانگ کی فوجیں تمہاری کمک کے کام آئیں گی اور برما سرکار نے اُن فوجوں کو پوری چھوٹ دے دی ہو کہ وہ اپنے کو کمیونسٹوں کے خلاف لڑنے کے لئے اچھی طرح تیار کر لیں. لیکن سوال یہ اُٹھتا ہے کہ کونسی پرستتھی آج بدل گئی ہے جس سے برما نے کومنتانگ کے فوجوں کے سوال کو اتنا بھیانک بنا دیا ہے اور دنیا کے راج نیت میں ایک نئی گوٹ پھنسا دی ہے. انہیں جانکاروں کا کہنا ہے کہ یہ سب برطانیہ اور امریکہ کی آپسی ہوڑ کا نتیجہ ہے. ایشیا میں ہر ہر جگہ بازاروں پر قبضہ کرنے کی برطانیہ اور امریکہ دوڑ لگا رہے ہیں. برطانیہ اِن بازاروں کا پرانا سوداگر ہے اور امریکہ جب آگے بڑھتا ہے تب اُسے برطانیہ سے ٹکر لینی پڑتی ہے. دونوں دیش کمیونسٹوں کے وِرودھ میں تو ایک ہیں لیکن ایک دوسرے کا بھی وِرودھ وہ ہر سطح پر کرتے ہیں. برما کو برطانیہ نے ہمت دلائی ہے اور اُسے امریکہ کے خلاف ایک زبردست مہرہ بنا دیا ہے، کیوں کہ اگر برما نے کھلم کھلا امریکی کرتوتوں کا بھنڈا پھوڑ کیا تو امریکہ کا اثر ایشیائی ملکوں پر ختم سا ہو جائے گا اور ہر جگہ امریکیوں پر اوشواس پھیل جائے گا.

برما نے سیکیورٹی کونسل کے سامنے اپنا مقدمہ پیش کرنے کے بجائے جنرل اسمبلی کے سامنے یہ مقدمہ رکھا ہے. یہ بات بڑی مہتو کی ہے. کچھ لوگوں کا کہنا ہے کہ سیکیورٹی کونسل کے سامنے برما نے اِس لئے مقدمہ نہیں رکھا کیونکہ اُسے کشمیر کا حال معلوم تھا اور اُسے جانکاری تھی کہ سیکیورٹی کونسل میں فیصلہ کچھ نہیں ہو پائے گا لیکن دیر بہت لگ جائے گی. دوسری وجہ یہ بھی ہے کہ برما کے ہمدرد ملکوں کی سیکیورٹی کونسل میں کمی ہے. کچھ جانکاروں کا کہنا ہے کہ چونکہ امریکہ اور چانگ کائی شیک دونوں کے خلاف برما کی شکایت ہے اِس کارن یہ دونوں دیش پوری کوشش کریں گے کہ یہ معاملہ ایجنڈا پر نہ آئے. 'ویٹو' کا استعمال بھی ہوگا. ایسی حالت میں برطانیہ اور فرانس کی پوزیشن نازک ہو جائے گی. برطانیہ جہاں امریکہ کے خلاف کچھ کہ نہیں سکتا ہے اور امریکہ کی کرتوتوں کو ظاہر کرائے بنا اُسے چین بھی نہیں ہے. ایسی حالت میں یہ ٹھیک ہے کہ جنرل اسمبلی میں یہ سوال پیش کیا جائے.

امریکہ والے بھی معمولی کھلاڑی نہیں ہیں. اُنہوں نے ہر طرح سے پرچار کیا ہے کہ چین کے یہ سپاہی چانگ کائی شیک کے آدمی نہیں ہیں بلکہ چینی ریڈ آرمی کے سپاہی ہیں جو بھیس بدل کر آئے ہیں اور برما کے کمیونسٹوں کی مدد کرتے ہیں. اخباروں میں اس خبر کو

जैसे वह भी उसकी फौज की एक टुकड़ी हो. इस सम्बन्ध में बरमी सरकार का कहना है कि वह अपने अन्दरूनी झगड़ों में फंस गई और इधर से उसे ध्यान हटाना पड़ा. यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिये कि नये चीन की सरकार ने बरमा सरकार से प्रार्थना की कि वह चीन के साथ सहयोग करे और दोनों मिल कर कोमिनतांग की फ़ौजों से छुटकारा पा लें. लेकिन बरमा की सरकार ने यह प्रार्थना स्वीकार नहीं की और यह कह कर टला दिया कि वह अन्तर राष्ट्री झमेले में पड़ना नहीं चाहती.

बरमी सरकार की यह दलील नहीं जंचती कि वह अन्दरूनी गड़बड़ की वजह से कोमिनतांग की फ़ौजों पर ध्यान नहीं दे सकी और गहराई में जाने से शक होने लगता है कि अन्दरूनी गड़बड़ी के अलावा कोई दूसरी चीज थी जिसने सरकार को कामयाब क़दम उठाने से रोका. सोचने की बात है कि अन्दरूनी ख़तरे का पहले मुक़ाबला किया जाता है कि बाहरी ख़तरे का, वह भी बाहरी ख़तरा मामूली नहीं. कुछ हथियार बन्द सिपाही इधर उधर मुंह मारते, लूट खसोट करते नहीं फिरते बल्कि बाक़ायदा छावनी बनती है, हवाई अड्डा तैयार होता है, बाहरी मुल्कों से उन फ़ौजों का सम्बन्ध बढ़ता है, नये नये हथियार मुल्क के अन्दर आते हैं, फ़ौज की परेड होती है, नये नये रंगरूट भरती करके लाए जाते हैं और फ़ौज की तादाद रोज बढ़ती जाती है. बरमा की सरकार बाहरी हमलावर और भेड़िये का मुक़ाबला करने के बजाय अपने घर की बिल्लियों को मारने के लिये सारी ताक़त लगा देती है. मान, लिया घर का दुश्मन बहुत ख़तरनाक है, वह राज उलट देगा और मौजूदा सरकार को ख़तम कर देगा. लेकिन बाहरी दुशमन तो वह ख़तरा है जो सरकार को ही ख़तम नहीं करेगा बल्कि सारे देश को ही ख़तम कर देगा. सरकार ने जो रुख़ इस सम्बन्ध में इख़तियार किया उससे दो बातें साफ़ होती हैं: (1) मौजूदा सरकार को देश के मुक़ाबले में अपना ज़ियादा ख़याल है, अपनी ईंट न गिरने देने की उसे ज़ियादा चिन्ता है. (2) बाहर का चाहे जितना बड़ा ही ख़तरा क्यों न हो वह अपने देश के कमयुनिस्टों के मुक़ाबले में उसे कम ख़तरा समझती है. उसका एक मात्र लक्ष्य कमयुनिस्ट विरोध है.

यह बात साफ़ है कि बरमा पर बरतानिया का काफ़ी असर रहा है और एंग्लो अमरीकी ब्लाक चांग काई शेक की पीठ पर हाथ रखे हुए है. कुछ जानकारों का कहना है कि बरतानिया और अमरीका वालों ने बरमी सरकार को राय दी कि वह कमयूनिस्टों को मिटाने में सारी ताक़त लगा दे क्योंकि उन्हें डर है कहीं बरमा भी कमयुनिस्ट न हो जाय. हो सकता है कि उन्होंने यह भी कहा हो कि

جیسے یہ بھی اُسکی فوج کی ایک ٹکڑی ہو. اِس سمبندھ میں برمی سرکار کا کہنا ہے کہ وہ اپنے اندرونی جھگڑوں میں پھنس گئی اور اِدھر سے اُسے دھیان ہٹانا پڑا . یہ بات بھی دھیان میں رکھنی چاھئے کہ نئے چین کی سرکار نے برما سرکار سے پرارتھنا کی کہ وہ چین کے ساتھ سہیوگ کرے اور دونوں مل کر کومنتانگ کی فوجوں سے چھٹکارا پالیں . لیکن برما کی سرکار نے یہ پرارتھنا سویکار نہیں کی اور یہ کہکر ٹال دیا کہ وہ انتر راشٹری جھمیلے میں پڑنا نہیں چاھتی .

برمی سرکار کی یہ دلیل نہیں جچتی کہ وہ اندرونی گڑبڑ کی وجہ سے کومنتانگ کی فوجوں پر دھیان نہیں دے سکی اور گہرائی میں جانے سے شک ہونے لگتا ہے کہ اندرونی گڑبڑی کے علاوہ کوئی دوسری چیز تھی جس نے سرکار کو کامیاب قدم اُٹھانے سے روکا . سوچنے کی بات ہے کہ اندرونی خطرہ کا پہلے مقابلہ کیا جاتا ہے کہ باھری خطرے کا' وہ بھی باھری خطرہ معمولی نہیں . کچھ ھتھیار بند سپاھی اِدھر اُدھر منھ مارتے' لوٹ کھسوٹ کرتے نہیں پھرتے بلکہ باقاعدہ چھاونی بنتی ہے' ھوائی اڈا تیار ھوتا ہے' باھری ملکوں سے اُن فوجوں کا سمبندھ بڑھتا ہے' نئے نئے ھتھیار ملک کے اندر آتے ھیں' فوج کی پریڈ ھوتی ہے' نئے نئے رنگروٹ بھرتی کرکے لائے جاتے ھیں اور فوج کی تعداد روز بڑھتی جاتی ہے . برما کی سرکار باھری حملہ آور اور بھیڑئے کا مقابلہ کرنے کے بجائے اپنے گھر کی بلیوں کو مارنے کے لئے ساری طاقت لگا دیتی ہے . مان لیا گھر کا دشمن بہت خطرناک ہے' وہ راج اُلٹ دے گا اور موجودہ سرکار کو ختم کر دے گا . لیکن باھری دشمن تو وہ خطرہ ہے جو سرکار کو ھی ختم نہیں کرے گا بلکہ سارے دیش کو ھی ختم کر دے گا . سرکار نے جو رخ اس سمبندھ میں اختیار کیا اُس سے دو باتیں صاف ھوتی ھیں : (1) موجودہ سرکار کو دیش کے مقابلے میں اپنا زیادہ خیال ہے' اپنی اینٹ نہ گرنے دینے کی اُسے زیادہ چنتا ہے . (2) باھر کا چاھے جتنا بڑا ھی خطرہ کیوں نہ ھو وہ اپنے دیش کے کمیونسٹوں کے مقابلے میں اُسے کم خطرہ سمجھتی ہے . اُسکا ایک ماتر لکشیہ کمیونسٹ ورودھ ہے .

یہ بات صاف ہے کہ برما پر برطانیہ کا کافی اثر رہا ہے اور اینگلو امریکی بلاک چانگ کائی شیک کی پیٹھ پر ہاتھ رکھے ہوئے ہے. کچھ جانکاروں کا کہنا ہے کہ برطانیہ اور امریکہ والوں نے برمی سرکار کو رائے دی کہ وہ کمیونسٹوں کو مٹانے میں ساری طاقت لگادے کیونکہ اُنھیں ڈر ہے کہیں برما بھی کمیونسٹ نہ ھوجائے. ھوسکتا ہے کہ اُنھوں نے یہ بھی کہا ھو کہ

ऊपर के वाक़यात से यह बात साफ़ हो जाती है कि बरतानिया मासूम नहीं है बल्कि समझौते को ठुकराने की सारी ज़िम्मेदारी बरतानिया पर है और वह हर हथकंडे से एशियाई देशों पर क़ब्ज़ा जमाए रखना चाहता है.

5. 4. '53 —मुजीब रिज़वी

यूनो और बरमा

कोई भी मुल्क विदेसी फ़ौजों को अपनी ज़मीन पर बरदाश्त नहीं कर सकता. बरमा ने देर ज़रूर कर दी पर इस विषय में जो क़दम उसने उठाया है वह सराहनीय है. जब हम इस समस्या पर सोचते हैं तो रह रह कर यह सवाल उठता है कि सन '49 से ले कर अब तक बरमा इस विषय में ख़ामोश क्यों रहा ? चांग काई शेक सन '49 में चीन छोड़ कर भागे थे और चीन के यनान नामी सूबे में उस समय लड़ने वाली उनकी फ़ौज की एक टुकड़ी हार कर बरमा में घुस आई थी इसकी गिनती दो एक हज़ार थी. इस टुकड़ी ने बरमा की फ़ौज को अपने हथियार सौंप दिये और उन सिपाहियों को एक ख़ास इलाक़े में महसूर-सा कर दिया गया. बरमा के विदेश मंत्री के केबिल से पता चलता है कि सन '50 के शुरू में 1,700 सिपाही और बरमा में घुस आए. उनसे भी बरमी फ़ौज ने मांग की कि वह हथियार रख दें या मुल्क छोड़ कर चले जायं. इस टुकड़ी ने बरमी फ़ौज की मांग की परवाह नहीं की और अपना हेड क्वारटर मज़बूत करने में लगी रही. बरमी फ़ौज को अपनी मांग मनवाने के लिये हथियार उठाना पड़ा. सन '50 के बीच में कोमिनतांग की फ़ौजें बरमी फ़ौज के मुक़ाबले की ताब न ला कर पच्छिम की तरफ़ बढ़ गईं और उन्होंने बरमा और थाईलैंड की सरहद पर पर मांगषिट में अपना हेड क्वार्टर बना लिया. तब से इन फ़ौजों में दिन पर दिन बढ़ौती होती गई. यनान और चीन के दूसरे सरहदी सूबों में कोमिनतांगी ऐजन्ट गए और नए नए सिपाही भरती कर के लाए. मांगषिट में उन्होंने हवाई जहाज़ का अड्डा भी बना लिया जहां बराबर जहाज़ उतरते थे और नए नए हथियार और दूसरे ज़रूरी सामान इन फ़ौजों को मुहैया करते थे. विदेश मंत्री के बयान से और जहां तक हमारी जानकारी है बरमा सरकार के दूसरे बयानों से यह पता नहीं चलता कि मांगषिट में पहुँच जाने पर बरमी फ़ौज ने क्या रुख़ लिया ? क्या लड़ाई होती रही और बरमी फ़ौज इन्हें बाहर निकालने में नाकाम रही ? क्या इन फ़ौजों को संगठित होने दिया गया और सरकार मौन रही ? ज़ियादा छान बीन करने से पता चलता है कि सरकार ने कोमिनतांग की फ़ौजों को मनमानी करने के लिये छोड़ दिया और ऐसा रुख़ इख़तियार किया

اوپر کے واقعات سے یہ بات صاف ہو جاتی ہے کہ برطانیہ معصوم نہیں ہے بلکہ سمجھوتے کو ٹھکرانے کی ساری ذمہ داری برطانیہ پر ہے اور وہ ہر ہتھکنڈے سے ایشائی دیشوں پر قبضہ جمائے رکھنا چاہتا ہے ۔

5-4-'53 مجیب رضوی

یونو اور برما

کوئی بھی ملک بدیسی فوجوں کو اپنی زمین پر برداشت نہیں کر سکتا ۔ برما نے دیر ضرور کر دی پر اس وشے میں جو قدم اس نے اٹھایا ہے وہ سراہنی ہے ۔ جب ہم اس سمسیا پر سوچتے ہیں تو رہ رہ کر یہ سوال اٹھتا ہے کہ سن '49 سے لے کر اب تک برما اس وشے میں خاموش کیوں رہا ؟ چانگ کائی شیک سن '49 میں چین چھوڑ کر بھاگے تھے اور چین کے ینان نامی صوبے میں اس سمے لڑنے والی ان کی فوج کی ایک ٹکڑی ہار کر برما میں گھس آئی تھی ۔ اسکی گنتی دو ایک ہزار تھی ۔ اس ٹکڑی نے برما کی فوج کو اپنے ہتھیار سونپ دیئے اور ان سپاہیوں کو ایک خاص علاقے میں محصور سا کر دیا گیا ۔ برما کے ودیش منتری کے کیبل سے پتہ چلتا ہے کہ سن '50 کے شروع میں 1700 سپاہی اور برما میں گھس آئے ۔ ان سے بھی برمی فوج نے مانگ کی کہ وہ ہتھیار رکھ دیں یا ملک چھوڑ کر چلے جائیں ۔ اس ٹکڑی نے برمی فوج کی مانگ کی پروا نہیں کی اور اپنا ہیڈکوارٹر مضبوط کرنے میں لگی رہی ۔ برمی فوج کو اپنی مانگ منوانے کے لئے ہتھیار اٹھانا پڑا ۔ سن '50 کے بیچ میں کومنتانگ کی فوجیں برمی فوج کے مقابلے کی تاب نہ لا کر پچھم کی طرف بڑھ گئیں اور انہوں نے برما اور تھائی لینڈ کی سرحد پر مانگ زٹ میں اپنا ہیڈکوارٹر بنا لیا ۔ تب سے ان فوجوں میں دن پر دن بڑھوتی ہوتی گئی ۔ ینان اور چین کے دوسرے سرحدی صوبوں میں کومنتانگی ایجنٹ گئے اور نئے نئے سپاہی بھرتی کر کے لائے ۔ مانگ زٹ میں انہوں نے ہوائی جہاز کا اڈا بھی بنا لیا جہاں برابر جہاز اترتے تھے اور نئے نئے ہتھیار اور دوسرے ضروری سامان ان فوجوں کو مہیا کرتے تھے ۔ ودیش منتری کے بیان سے اور جہاں تک ہماری جانکاری ہے برما سرکار کے دوسرے بیانوں سے یہ پتہ نہیں چلتا کہ مانگ زٹ میں پہونچ جانے پر برمی فوج نے کیا رخ لیا ؟ کیا لڑائی ہوتی رہی اور برمی فوج انہیں باہر نکالنے میں ناکام رہی ؟ کیا ان فوجوں کو سنگٹھت ہونے دیا گیا اور سرکار مون رہی ؟ زیادہ چھان بین کرنے سے پتہ چلتا ہے کہ سرکار نے کومنتانگ کی فوجوں کو من مانی کرنے کے لئے چھوڑ دیا اور ایسا رخ اختیار کیا

यह कहने की ज़रूरत नहीं, कि अबदुल्ला सलीम जाने पहचाने अंगरेज़ी एजेन्ट हैं. हमले के बाद अंगरेज़ों ने भाड़े के जत्थे से उस जगह हमला कर दिया और ऐलान किया कि उन्होंने अबदुल्ला को भगा दिया है और वादीगोर पर उनका क़ब्ज़ा हो गया. बाद में यह भी ऐलान हुआ कि अबदुल्ला सलीम ने सुलतान मसक़त की भक्ति की क़सम खाली है.

इस तरह बरतानिया धीरे धीरे समझौते को तोड़ कर आगे बढ़ता रहा.

इसी समझौते की धारा 2 A में लिखा है कि अंगरेज़ों ने जो रुकावट लगा रखी है कि हवाई जहाज़ बूरेमी पर नीची उड़ान न भरें या माल इधर से उधर न जाय वह सब रद्द कर दी जायगी और अवाम के आने जाने पर कोई रोक थाम नहीं होगी. सऊदी अरब वाले भी कोई ऐसा काम नहीं करेंगे जिस से इश्तआल पैदा हो. धारा 3 D में यह भी लिखा है कि बूरेमी में शेख़क़म और अमन से वह सब सामान आ सकता है जिसका सम्बन्ध लड़ाई से नहीं है. लेकिन इस समझौते की स्याही भी नहीं सूखी और नीचे लिखी घटनायें होती रहीं :

(1) 2 मार्च या उसके लगभग बरतानिया ने बूरेमी के बाहर एक चौकी बैठा दी ताकि बूरेमी में सपलाई न आ सके.

(2) सऊदी अरब की तरफ़ से बूरेमी के अमीर ने पचास बोरे चावल भेजे थे उसे इस चौकी ने 22 मार्च को ज़ब्त कर लिया.

(3) 24 मार्च को 150 बोरे खजूर धनक से बेरूमी आ रहे थे उन्हें भी बरतानिया वालों ने क़ब्ज़े में कर लिया.

(4) नबी से बूरेमी के जज के लिये फ़रनीचर आ रहा था उसे भी ज़ब्त कर लिया गया.

(5) 19 मार्च से बरतानिया ने दाबी और बूरेमी के बीच ट्राफ़िक पर रोक लगा दी. इस इलाक़े में हथियार बन्द मोटर से पेट्रोल किया जाने लगा ताकि बूरेमी के अमीर तक कोई सामान न पहुँच सके. एक तरह से पूरी नाका बन्दी कर दी गई. इस नाका बन्दी से जनता में त्राह त्राह मची है.

अंगरेज़ अपनी पुरानी चालों को वहां फिर आज़मा रहे हैं. पहले कुत्ते को बदनाम करो और फिर उसे मार दो. 26 मार्च को अंगरेज़ों ने बूरेमी के बाज़ारों में जाकर उपद्रव जोत दी, लोगों को डराया, धमकाया, उसकाया और यह सब इसलिये किया ताकि वहां बलवा हो जाय. बलवा दबाने का बहाना करके अंगरेज़ फ़ौज वहां पूरी ताक़त से पहुँच जायगी और फिर शान्ति क़ायम करने के बहाने हमेशा के लिये पड़ाव डाल देगी.

یہ کہنے کی ضرورت نہیں کہ عبداللہ سلیم جانے پہچانے انگریزی ایجنٹ ہیں ۔ حملے کے بعد انگریزوں نے جتھے سے اُس جگہ حملہ کر دیا اور اعلان کیا کہ اُنہوں نے عبداللہ کو بھگا دیا ہے اور وادی گور پر اُن کا قبضہ ہو گیا ۔ بعد میں یہ بھی اعلان ہوا کہ عبداللہ سلیم نے سلطان مسقط کی بھگتی کی قسم کھا لی ہے ۔

اِس طرح برطانیہ دھیرے دھیرے سمجھوتے کو توڑ کر آگے بڑھتا رہا ۔

اِسی سمجھوتے کی دھارا 2 A میں لکھا ہے کہ انگریزوں نے جو رکاوٹ لگا رکھی ہے کہ ہوائی جہاز بوریمی پر نیچی اُڑان نہ بھریں یا مال اِدھر سے اُدھر نہ جائے وہ سب رد کر دی جائے گی اور عوام کے آنے جانے پر کوئی روک تھام نہیں ہوگی ۔ سعودی عرب والے بھی کوئی ایسا کام نہیں کریں گے جس سے اشتعال پیدا ہو ۔ دھارا 3 D میں یہ بھی لکھا ہے کہ بوریمی میں شیخقدم اور امن سے وہ سب سامان آ سکتا ہے جس کا سمبندھ لڑائی سے نہیں ہے ۔ لیکن اِس سمجھوتے کی سیاہی بھی نہیں سوکھی اور نیچے لکھی گھٹنائیں ہوتی رہیں :

(1) 20 مارچ یا اُس کے لگ بھگ برطانیہ نے بوریمی کے باہر ایک چوکی بیٹھا دی تاکہ بوریمی میں سپلائی نہ آ سکے ۔

(2) سعودی عرب کی طرف سے بوریمی کے امیر نے پچاس بورے چاول بھیجے تھے اُسے اس چوکی نے 22 مارچ کو ضبط کر لیا ۔

(3) 24 مارچ کو 150 بورے کھجور دھنک سے بیروسی آ رہے تھے ۔ اُنہیں بھی برطانیہ والوں نے قبضے میں کر لیا ۔

(4) نبی سے بوریمی کے جج کے لئے فرنیچر آ رہا تھا اُسے بھی ضبط کر لیا گیا ۔

(5) 19 مارچ سے برطانیہ نے دابی اور بوریمی کے بیچ ٹرافک پر روک لگا دی ۔ اِس علاقے میں ہتھیار بند موٹر سے پٹرول کیا جانے لگا تاکہ بوریمی کے امیر تک کوئی سامان نہ پہنچ سکے ۔ ایک طرح سے پوری ناکہ بندی کر دی گئی ۔ اِس ناکہ بندی سے جنتا میں تراہ تراہ مچی ہے ۔

انگریز اپنی پرانی چالوں کو وہاں پھر آزما رہے ہیں ۔ پہلے کتے کو بدنام کرو اور پھر اُسے مار دو ۔ 26 مارچ کو انگریزوں نے بوریمی کے بازاروں میں جا کر اپدرو جوت دی، لوگوں کو ڈرایا، دھمکایا، اُسکایا اور یہ سب اِس لئے کیا تاکہ وہاں بلوہ ہو جائے ۔ بلوہ دبانے کا بہانہ کر کے انگریز فوج وہاں پوری طاقت سے پہنچ جائے گی اور پھر شانتی قائم کرنے کے بہانے ہمیشہ کے لئے پڑاو ڈال دے گی ۔

चूंकि यह बात साफ़ नहीं है कि किसकी सरहद कहां ख़त्म होती है इसलिये यह जगह झगड़े की जड़ बन गई है. बरतानिया से इन मुल्कों का मुआहदानामा है लेकिन उसके मुताबिक़ सरहद का कुछ पता नहीं चलता. सुलतान मसक़त और [illegible] अंगरेज़ों की कठपुतली हैं. उनकी हालत ऐसी ही है जैसे हमारे राजाओं की थी. सऊदी अरब वालों का कहना है कि बूरेमी उनका है और उन्हीं के क़ब्ज़े में है और सन '51 में सुलतान मसक़त के अधिकारों के रक्षा का बहाना करके अंगरेज़ों ने फ़ारस की खाड़ी की तरफ़ से हमारे इलाक़े पर हमला कर दिया और हमारी ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लिया. अंगरेज़ों का कहना है कि सऊदी अरब वालों ने सुलतान मसक़त के इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर लिया है और हमें उसकी हिफ़ाज़त करना ज़रूरी है. इन दोनों दावों में से कौनसा सच है हम साफ़ तरीक़े से नहीं कह सकते. लेकिन यह बात साफ़ है कि बूरेमी के इलाक़े को ले कर झगड़ा शुरू हुआ और 26 अक्तूबर सन '52 को बरतानिया और सऊदी अरब में समझौता हुआ. इस समझौते की धारा 3 A में इस बात का बंधान है कि दोनों पारटियां अपनी अपनी जगह से आगे न बढ़ें और किसी तरह भी अपनी फ़ौजी ताक़त न बढ़ायें. सपलाई वग़ैरा के साथ कुछ सिपाही आ सकते हैं और थके सिपाहियों को ड्यूटी पर से हटाने के लिये नये सिपाही उनके बदले में आ सकते हैं, इस बात की भी इस समझौते में छूट दी गई थी. लेकिन जिस दिन से यह समझौता हुआ अंगरेज़ों ने उसे तोड़ना शुरू किया और सऊदी अरब ने हर दफ़ा उलाहना दिया लेकिन उसका जवाब यह मिला कि और दूसरी दफ़ा समझौता तोड़ दिया गया. असलियत पर रोशनी डालने के लिये नीचे लिखी घटनाओं की जानकारी ज़रूरी है :

(1) 11 नवम्बर को बूरेमी में बरतानिया के पोलीटिकल अफ़सर दो कारों और दस सिपाहियों के साथ आए.

(2) मसक़त से 40 हथियार बन्द आदमी ले कर एक मोटर बूरेमी आई.

(3) 19 नवम्बर को ब्रिटिश पोलीटिकल अफ़सर 30 सिपाहियों के साथ बूरेमी आए.

(4) 25 फ़रवरी सन '53 को पोलीटिकल अफ़सर चार जीपों में 26 सिपाही भर कर आए. दूसरी मोटरों में बहुत से संदूक़ आए जिन में गोलियां भरी थीं.

(5) 9 मार्च को तीन हथियार लाने वाली मोटरें आईं इन में 20 से ज़ियादा हथियार बंद सिपाही साथ आए.

(6) 19 मार्च को अजीब ड्रामा खेला गया. वादीगोर पर अंगरेज़ों ने अब्दुल्ला सलीम से हमला करा दिया.

چونکہ یہ بات صاف نہیں ہے کہ کس کی سرحد کہاں ختم ہوتی ہے اس لئے یہ جگہ جھگڑے کی جڑ بن گئی ہے. برطانیہ سے اِن ملکوں کا معاہدہ ہے لیکن اُس کے مطابق سرحد کا کچھ پتہ نہیں چلتا. سلطان مسقط اور [illegible] انگریزوں کی کٹھپتلی ہیں. اُن کی حالت ایسی ہی ہے جیسے ہمارے راجاؤں کی تھی . سعودی عرب والوں کا کہنا ہے کہ بوریمی اُن کا ہے اور اُنہیں کے قبضے میں ہے اور سن 51' میں سلطان مسقط کے ادھیکاروں کے رکشا کا بہانہ کرکے انگریزوں نے فارس کی کھاڑی کی طرف سے ہمارے علاقے پر حملہ کر دیا اور ہماری زمین پر قبضہ کر لیا . انگریزوں کا کہنا ہے کہ سعودی عرب والوں نے سلطان مسقط کے علاقے پر قبضہ کر لیا ہے اور ہمیں اُس کی حفاظت کرنا ضروری ہے . اِن دونوں دعوں میں سے کونسا سچ ہے ہم صاف طریقے سے نہیں کہہ سکتے. لیکن یہ بات صاف ہے کہ بوریمی کے علاقے کو لے کر جھگڑا شروع ہوا اور 26 اکتوبر سن 52' کو برطانیہ اور سعودی عرب میں سمجھوتہ ہوا . اِس سمجھوتے کی دھارا 3 A میں اِس بات کا بندھان ہے کہ دونوں پارٹیاں اپنی اپنی جگہ سے آگے نہ بڑھیں اور کسی طرح بھی اپنی فوجی طاقت نہ بڑھائیں . سپلائی وغیرہ کے ساتھ کچھ سپاہی آسکتے ہیں اور تھکے سپاہیوں کو ڈیوٹی پر سے ہٹانے کے لئے نئے سپاہی اُن کے بدلے میں آسکتے ہیں' اِس بات کی بھی اِس سمجھوتے میں چھوٹ دی گئی تھی. لیکن جس دن سے یہ سمجھوتہ ہوا انگریزوں نے اسے توڑنا شروع کیا اور سعودی عرب نے ہر دفعہ اُلاہنا دیا لیکن اُس کا جواب یہ ملا کہ اور دوسری دفعہ سمجھوتہ توڑ دیا گیا. اصلیت پر روشنی ڈالنے کے لئے نیچے لکھی گھٹناؤں کی جانکاری ضروری ہے :

(1) 11 نومبر کو بوریمی میں برطانیہ کے پولیٹکل افسر دو کاروں اور دس سپاہیوں کے ساتھ آئے .

(2) مسقط سے 40 ہتھیار بند آدمی لے کر ایک موٹر بوریمی آئی .

(3) 19 نومبر کو برٹش پولیٹکل افسر 30 سپاہیوں کے ساتھ بوریمی آئے .

(4) 25 فروری سن 53' کو پولیٹکل افسر چار جیپوں میں 26 سپاہی بھر کر آئے . دوسری موٹروں میں بہت سے صندوق آئے جن میں گولیاں بھری تھیں .

(5) 9 مارچ کو تین ہتھیار لانے والی موٹریں آئیں. ان میں 20 سے زیادہ ہتھیار بند سپاہی ساتھ آئے .

(6) 19 مارچ کو عجیب ڈرامہ کھیلا گیا . وادی گور پر انگریزوں نے عبداللہ سلیم سے حملہ کرا دیا .

स्तालिन की मुलाक़ात की चरचा करते हुए कहा कि—जब मैं रिपोर्ट पढ़ रहा था तभी खबर मिली कि मार्शल स्तालिन चल बसे. मुझे इस इन्टरवियू को पढ़ कर अचरज हुआ. मार्शल स्तालिन बहुत देर तक हिन्दुस्तान के भाषाई सवाल पर बातचीत करते रहे और हमारे राजदूत ने अपनी जानकारी के मुताबिक़ उन्हें जवाब दिया.

स्तालिन की मौत पर यह बात साफ़ हो गई कि रूस शान्ति चाहता है क्योंकि उसका आधार रचना है तोड़ फोड़ नहीं.

(4) पच्छिमी सामराजी यह कहते नहीं थकते थे कि स्तालिन सबसे बड़े सामराजी हैं. "रेड इमपीरियलिज़्म" दुनिया को हड़प लेना चाहता है. इस ख़तरे से दुनिया को बचाने के लिये अमरीका ने दूसरे सामराजी देशों की अगुवाई करना स्वीकार किया है और वह हर मुमकिन तरीक़े से इस बाढ़ को रोक कर रहेगा. लेकिन स्तालिन की मौत पर पता चला कि स्तालिन की ज़िन्दगी और रूस की ताक़त में ही एशिया के देश और दूसरे कुचले हुए भाग अपनी सलामती समझते थे. इसी कारन स्तालिन की मौत पर इन देशों में दुख की एक लहर छा गई और लोग अपने भेद भाव भूल कर स्तालिन का शोक मनाने एक प्लेटफ़ार्म पर जमा हो गए.

झूट का भांडा कभी न कभी फूट कर ही रहता है.

31. 3. '53. —मुजीब रिज़वी

बरतानिया का सऊदी अरब पर हमला

2 अप्रैल को लंदन से खबर आई है कि सन '51 और 26 अक्तूबर सन '52 में सऊदी अरब और बरतानिया में जो राज़ीनामा हुआ था वह रद्द कर दिया गया है. इसकी वजह यह बताई गई है कि सऊदी अरब वालों ने उन समझौतों को एक दिन भी नहीं माना और बरतानिया को इस बंधन में बांध कर वह नाजायज़ फ़ायदा उठा रहे हैं. रायटर यह बात हमारे देश वालों को सुनाना चाहता है जिससे अंगरेज़ और अमरीका वालों की मासूमियत ज़ाहिर होती हो. अफ़सोस यह है कि हमारे अख़बार बिना जांच किये अंधाधुंध इन ख़बरों को छापते जाते हैं. भारत वासियों को यह ख़बर पढ़ कर पता चला होगा कि बरतानिया वाले बड़े नेक हैं लेकिन सबर की भी एक हद होती है. तंग आ कर आख़िर उन्हें यह समझौता तोड़ना पड़ा. लेकिन वाक़िआ कुछ और है, असलियत कुछ और है. जो चोर है वही कोतवाल को डांट बता रहा है. इससे पहले कि हम असल मामले पर रोशनी डालें यह ज़रूरी है कि हम पूरे झगड़े को समझ लें.

फ़ारस की खाड़ी, मसक़त, ओमान और सऊदी अरब की सीमाओं पर बुरैमी नाम का एक नख़लिस्तान है और

اسٹالن کی ملاقات کی چرچا کرتے ہوئے کہا کہ—جب میں رپورٹ پڑھ رہا تھا تبھی خبر ملی کہ مارشل اسٹالن چل بسے. مجھے اس انٹرویو کو پڑھ کر اچرج ہوا. مارشل اسٹالن بہت دیر تک ہندستان کے بھاشائی سوال پر بات چیت کرتے رہے اور ہمارے راجدوت نے اپنی جانکاری کے مطابق انہیں جواب دیا.

اسٹالن کی موت پر یہ بات صاف ہوگئی کہ روس شانتی چاہتا ہے کیونکہ اس کا آدھار رچنا ہے توڑ پھوڑ نہیں.

(4) پچھمی سامراجی یہ کہتے نہیں تھکتے تھے کہ اسٹالن سب سے بڑے سامراجی ہیں. "ریڈ امپیریلزم" دنیا کو ہڑپ لینا چاہتا ہے. اس خطرے سے دنیا کو بچانے کے لئے امریکہ نے دوسرے سامراجی دیشوں کی اگوائی کرنا سویکار کیا ہے اور وہ ہر ممکن طریقے سے اس باڑھ کو روک کر رہے گا. لیکن اسٹالن کی موت پر پتہ چلا کہ اسٹالن کی زندگی اور روس کی طاقت میں ہی ایشیا کے دیش اور دوسرے کچلے ہوئے بھاگ اپنی سلامتی سمجھتے تھے. اسی کارن اسٹالن کی موت پر ان دیشوں میں دکھ کی ایک لہر چھا گئی اور لوگ اپنے بھید بھاؤ بھول کر اسٹالن کا شوک منانے ایک پلیٹ فارم پر جمع ہوگئے.

جھوٹ کا بھانڈا کبھی نہ کبھی پھوٹ کر ہی رہتا ہے.

31-3-'53 —مجیب رضوی

برطانیہ کا سعودی عرب پر حملہ

2 اپریل کو لندن سے خبر آئی ہے کہ سن '51 اور 26 اکتوبر سن '52 میں سعودی عرب اور برطانیہ میں جو راضی نامہ ہوا تھا وہ رد کر دیا گیا ہے. اس کی وجہ یہ بتائی گئی ہے کہ سعودی عرب والوں نے اُن سمجھوتوں کو ایک دن بھی نہیں مانا اور برطانیہ کو اس بندھن میں باندھ کر وہ ناجائز فائدہ اٹھا رہے ہیں. رائٹر وہ بات ہمارے دیش والوں کو سنانا چاہتا ہے جس سے انگریز اور امریکہ والوں کی معصومیت ظاہر ہوتی ہو. افسوس یہ ہے کہ ہمارے اخبار بنا جانچ کئے اندھادھند ان خبروں کو چھاپتے جاتے ہیں. بھارت واسیوں کو یہ خبر پڑھ کر پتہ چلا ہوگا کہ برطانیہ والے بڑے نیک ہیں لیکن صبر کی بھی ایک حد ہوتی ہے. تنگ آکر آخر انہیں یہ سمجھوتہ توڑنا پڑا. لیکن واقعہ کچھ اور ہے، اصلیت کچھ اور ہے. جو چور ہے وہی کوتوال کو ڈانٹ بتا رہا ہے. اس سے پہلے کہ ہم اصل معاملے پر روشنی ڈالیں یہ ضروری ہے کہ ہم پورے جھگڑے کو سمجھ لیں؛

فارس کی کھاڑی، مسقط، عمان اور سعودی عرب کی سرحدوں پر بریمی نام کا ایک نخلستان ہے اور

ज़बरदस्ती और ख़ौफ़ का राज क़ायम कर रखा है. रूस विरोधी इन्हीं देशों के प्रचार के साधनों से दुनिया ने स्तालिन की मौत पर यह भी सुना कि अपने नेता के आख़री दर्शन करने के लिये सोलह आदमियों की चौड़ी लाइन लगी हुई है और इसी चौड़ाई से यह लाइन दस मील तक चली गई है. आज का आदमी ख़ौफ़ और श्रद्धा में फ़र्क़ कर सकता है. संगीनों के बल बूते पर इस जोश से इनसानी भीड़ इकट्ठा नहीं की जा सकती, दुनिया इतना समझ सकती है !

(3) स्तालिन को हमेशा लड़ाई का पुजारी ठहराया जाता था. पच्छिमी प्रचारक यह कहते नहीं थकते थे कि स्तालिन और रूस लड़ाई चाहते हैं और हम शान्ति प्रेमी हैं. पर स्तालिन की मौत पर दुनिया ने यह जाना कि स्तालिन लड़ाई नहीं चाहते थे बल्कि वह शान्ति के खम्मे थे. इंगलैन्ड की जनता उनकी मौत पर बहुत दुखी हुई. अख़बारों का कहना है कि आम जनता इस बात से चिन्ता में पड़ गई थी कि अब शान्ति क़ायम रह सकेगी या नहीं क्योंकि वह महसूस करती थी कि "जब तक स्तालिन ज़िन्दा हैं शान्ति ज़िन्दा है."

स्तालिन का हर देश में शोक मनाया गया. अख़बारों में जो ख़बर आई है उससे पता चलता है कि ज़ियादातर लोगों ने स्तालिन के बारे में दो ही बातें कही हैं: (1) वह शान्ति प्रेमी थे. उनके रहते लड़ाई की सम्भावना नहीं थी और (2) वह रूस की रचना में लगे थे और उन्होंने रूस को अपनी रचना शक्ति की बदौलत एक महान देश बना दिया है. इसी सम्बन्ध में रूस की ख़ुशहाली और उसके कारनामों पर भी काफ़ी रोशनी पड़ी है.

दुनिया को पहली बार यह पता चला कि स्तालिन और पच्छिमी सरकारों के सोचने में क्या फ़र्क़ था. डाक्टर राधा कृष्नन ने दुनिया को बताया कि जब जब वह स्तालिन से मिले हैं उन्होंने यह कभी नहीं कहा—आप भारत सरकार पर ज़ोर डालिये कि वह हमारे गुट में हो जाय. हमेशा वह रचना की बातें करते थे और उन्हें हर देश के बारे में तफ़सीली जानकारी होती थी. डाक्टर राधा कृष्नन ने यह भी बताया कि स्तालिन ने एक मुलाक़ात में उनसे कहा था—मैं बूढ़ा हो चुका हूँ किसी दिन भी मर सकता हूं. मेरी ख़्वाहिश है कि अपने देश को शान्ति से फलता फूलता छोड़ कर जाऊं !

पंडित नेहरू ने कहा कि स्तालिन हमेशा शान्ति की तरफ़ ही झुकते थे. उन्होंने रूस में भारती राजदूत और

زبردستی اور خوف کا راج قائم کر رکھا ہے . روس وِرودھی انہیں دیشوں کے پرچار کے سادھنوں سے دنیا نے اسٹالن کی موت پر یہ بھی سنا کہ اپنے نیتا کے آخری درشن کرنے کے لئے سولہ آدمیوں کی چوڑی لائن لگی ہوئی ہے اور اسی چوڑائی سے یہ لائن دس میل تک چلی گئی ہے . آج کا آدمی خوف اور شردھا میں فرق کر سکتا ہے . سنگینوں کے بل بوتے پر اس جوش سے انسانی بھیڑ اکٹھا نہیں کی جا سکتی، دنیا اتنا سمجھ سکتی ہے !

(3) اسٹالن کو ہمیشہ لڑائی کا پجاری ٹھہرایا جاتا تھا . پچھمی پرچارک یہ کہتے نہیں تھکتے تھے کہ اسٹالن اور روس لڑائی چاہتے ہیں اور ہم شانتی پریمی ہیں . پر اسٹالن کی موت پر دنیا نے یہ جانا کہ اسٹالن لڑائی نہیں چاہتے تھے بلکہ وہ شانتی کے کھمبے تھے . انگلینڈ کی جنتا اُن کی موت پر بہت دکھی ہوئی . اخباروں کا کہنا ہے کہ عام جنتا اِس بات سے چنتا میں پڑ گئی تھی کہ اب شانتی قائم رہ سکے گی یا نہیں کیونکہ وہ محسوس کرتی تھی کہ " جب تک اسٹالن زندہ ہیں شانتی زندہ ہے ."

اسٹالن کا ہر دیش میں شوک منایا گیا. اخباروں میں جو خبر آئی ہے اس سے پتہ چلتا ہے کہ زیادہ تر لوگوں نے اسٹالن کے بارے میں دو ہی باتیں کہی ہیں : (1) وہ شانتی پریمی تھے. اُن کے رہتے لڑائی کی سمبھاونا نہیں تھی اور (2) وہ روس کی رچنا میں لگے تھے اور اُنہوں نے روس کو اپنی رچنا شکتی کی بدولت ایک مہان دیش بنا دیا ہے. اسی سمبندھ میں روس کی خوشحالی اور اُس کے کارناموں پر بھی کافی روشنی پڑی ہے .

دنیا کو پہلی بار یہ پتہ چلا کہ اسٹالن اور پچھمی سرکاروں کے سوچنے میں کیا فرق تھا . ڈاکٹر رادھا کرشنن نے دنیا کو بتایا کہ جب جب وہ اسٹالن سے ملے ہیں انہوں نے یہ کبھی نہیں کہا—آپ بھارت سرکار پر زور ڈالئے کہ وہ ہمارے گٹ میں ہو جائے . ہمیشہ وہ رچنا کی باتیں کرتے تھے اور اُنہیں ہر دیش کے بارے میں تفصیلی جانکاری ہوتی تھی. ڈاکٹر رادھا کرشنن نے یہ بھی بتایا کہ اسٹالن نے ایک ملاقات میں اُن سے کہا تھا—میں بوڑھا ہو چکا ہوں کسی دن بھی مر سکتا ہوں . میری خواہش ہے کہ اپنے دیش کو شانتی سے پھلتا پھولتا چھوڑ کر جاؤں !

پنڈت نہرو نے کہا کہ اسٹالن ہمیشہ شانتی کی طرف ہی جھکتے تھے . اُنہوں نے روس میں بھارتی راجدوت اور

की अन्तर्राष्ट्रीय कल्पना में सब इनसान शामिल थे. सब नसलों के आदमी रूसी लोकशाही में बराबर के हक़दार थे और आज वह सब अपने उस नेता को जो जारजिया में पैदा हुआ था, प्रेम और भक्ति से याद करते हैं और उसके उठ जाने पर शोक मना रहे हैं.

स्तालीन जैसा बड़ा आदमी कभी कभी ही पैदा होता है हम आशा करते हैं कि स्तालीन के योग्य उत्तराधिकारियों को अपने नेता की पालिसियों और प्रोग्राम को जारी रखने में जिस सहयोग की ज़रूरत है वह दुनिया से उन्हें मिलेगा. हमारी भगवान से प्रार्थना है कि दुखित मानव समाज के लिये स्तालीन के दिल में जो प्रेम था वह हमारे दिलों में भी हो, अपने मक़सद तक पहुंचने के लिये उसमें जो एकाग्रता थी वह हम में भी हो, उसकी निस्स्वार्थ लगन और सारे मानव समाज के लिये उसकी सी अनन्त उदारता हम सब में पैदा हो. इनसानी क़ौम का वह इतना बड़ा सेवक था कि भगवान करे उसकी मिसाल को सामने रख कर हम सब अपने जीवन को अधिक सफल बना सकें.

20. 3. '53. जे० सी० कुमारप्पा
सुन्दरलाल

स्तालीन की मौत के बाद

कहते हैं कि मरने वाला हमेशा सच बोलता है. लेकिन स्तालिन की मौत पर जो बातें ज़ाहिर हुई हैं उन्होंने साबित कर दिया है कि कुछ मरने वाले ऐसे भी हैं जो दूसरों को भी सच बोलने पर मजबूर कर देते हैं. स्तालिन की मौत पर नीचे लिखी बातों पर रोशनी पड़ी :

(1) देश देश में प्रचार किया गया था कि रूस में किसी धर्म का आदर नहीं होता. मस्जिदों में ताले लगा दिये गए हैं, गिरजे बन्द पड़े हैं. मज़हब का नाम लेने वाले को मौत की सज़ा दी जाती है. इसी आधार पर रूस में जगह जगह बग़ावत की ख़बरें भी पच्छिम वाले दुनिया को सुनाते थे. लेकिन जैसे ही स्तालिन बीमार पड़े रूस के कोने कोने से ख़बर आई कि मस्जिदों में दुआयें मांगी गईं, गिरजों में सरविसें हुईं, यहूदियों ने इबादत की. लेकिन ध्यान रहे कि रूस का यह प्रचार नहीं था क्योंकि पच्छिमी देशों के रेडियो बार बार इसी अचरज भरी बात का एलान खुद करते रहते थे. पहले पहले सुनने वालों को काफ़ी उलझन सी हुई थी. उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह रेडियो पहले जो बात कहते थे वह सच है या यह बात सच है जो वह अब कह रहे हैं. शायद वह सच बोलने पर मजबूर हो गए थे!

(2) पच्छिमी प्रचारक यह भी कहते थे कि हम जनता के हित का राज चाहते हैं और स्तालिन ने रूस में

کی انٹرنیشنل کلپنا میں سب انسان شامل تھے. سب نسلوں کے آدمی روسی لوک شاہی میں برابر کے حقدار تھے اور آج وہ سب اپنے اس نیتا کو جو جارجیا میں پیدا ہوا تھا پریم اور بھکتی سے یاد کرتے ہیں اور اس کے اٹھ جانے پر شوک منا رہے ہیں .

اِستالین جیسا بڑا آدمی کبھی کبھی ہی پیدا ہوتا ہے . ہم آشا کرتے ہیں کہ اِستالین کے یوگ اترادھاریوں کو اپنے نیتا کی پالیسیوں اور پروگرام کو جاری رکھنے میں جس سہیوگ کی ضرورت ہے وہ دنیا سے انہیں ملے گا . ہماری بھگوان سے پرارتھنا ہے کہ دکھیت مانو سماج کے لئے اِستالین کے دل میں جو پریم تھا وہ ہمارے دلوں میں بھی ہو، اپنے مقصد تک پہونچنے کے لئے اس میں جو ایکاگرتا تھی وہ ہم میں بھی ہو، اسکی نسوارتھ لگن اور سارے مانو سماج کے لئے اسکی سی اننت اُدارتا ہم سب میں پیدا ہو . انسانی قوم کا وہ اتنا بڑا سیوک تھا کہ بھگوان کرے اسکی مثال کو سامنے رکھکر ہم سب اپنے جیون کو ادھک سپھل بنا سکیں .

جے . سی. کمارپا
—سندر لال
20-3-'53

اِستالین کی موت کے بعد

کہتے ہیں کہ مرنے والا ہمیشہ سچ بولتا ہے . لیکن استالن کی موت پر جو باتیں ظاہر ہوئی ہیں اُنہوں نے ثابت کر دیا ہے کہ کچھ مرنے والے ایسے بھی ہیں جو دوسروں کو بھی سچ بولنے پر مجبور کر دیتے ہیں . اِستالن کی موت پر نیچے لکھی باتوں پر روشنی پڑی :

(1) دیش دیش میں پرچار کیا گیا تھا کہ روس میں کسی دھرم کا آدر نہیں ہوتا . مسجدوں میں تالے لگا دیئے گئے ہیں، گرجے بند پڑے ہیں . مذہب کا نام لینے والے کو موت کی سزا دی جاتی ہے . اسی آدھار پر روس میں جگہ جگہ بغاوت کی خبریں بھی پچھم والے دنیا کو سناتے تھے لیکن جیسے ہی اِستالن بیمار پڑے روس کے کونے کونے سے خبر آئی کہ مسجدوں میں دعائیں مانگی گئیں، گرجوں میں سروسیں ہوئیں، یہودیوں نے عبادت کی . لیکن دھیان رہے کہ روس کا یہ پرچار نہیں تھا کیونکہ پچھمی دیشوں کے ریڈیو بار بار اِسی اچرج بھری بات کا اعلان خود کرتے رہتے تھے . پہلے پہلے سننے والوں کو کافی اُلجھن سی ہوئی تھی . اُن کی سمجھ میں نہیں آ رہا تھا کہ یہ ریڈیو پہلے جو بات کہتے تھے وہ سچ ہے یا یہ بات سچ ہے جو وہ اب کہ رہے ہیں . شاید وہ سچ بولنے پر مجبور ہو گئے تھے !

(2) پچھمی پرچارک یہ بھی کہتے تھے کہ ہم جنتا کے ہت کا راج چاہتے ہیں اور اِستالن نے روس میں

है वह जंगल के क़ानून हैं, सोवियत रूस की आर्थिक व्यवस्था साफ़ दूसरी तरह की ही चमक रही है.

यह सच है कि यह सब हिंसा से किया गया. पर हिंसा न करने की क़सम किसने खा रखी है? अभी तक गांधी जी की आवाज़ केवल नक़्क़ार ख़ाने में तूती की आवाज़ है. हम लोगों को जिनके हाथ अभी तक अपने भाइयों के ख़ून से लाल हैं हिंसा अहिंसा की बात करते शरमाना चाहिये. जब तक हमारी अपनी आंख में लट्ठा है तब तक हम अपने भाई की आंख का तिल पकड़ भी कैसे सकते हैं!

स्तालीन एक ज़बरदस्त और बहादुर आदमी थे अपने देशवासियों के दिलों से उन्होंने डर निकाल कर बाहर कर दिया. अपने दुशमनों के दिलों में उन्होंने उनकी बदकारियों के बदले ख़ुदा का डर भर दिया. दुनिया भर की फ़ौजी ताक़त को उन्होंने आगे बढ़ कर रोक दिया. जंग के ख़िलाफ़ वह एक मज़बूत दीवार थे. उनका नाम अमन की ज़मानत था. जो लोग भी उनके असर में आए उन सब को उन्होंने संगठित करके रचनात्मक क़ौमी कामों में लगा दिया. यह सब रचनात्मक क़ौमी काम करने वाले अपने नेक काम को जारी रखने के लिये अमन क़ायम रखना चाहते थे और चाहते हैं. बाहर से हमलों का मुक़ाबला करने के लिये सरकार तेज़ी से अपने बचाव की तैयारियां ज़रूर करती रही, पर रूसी जनता के दिलों में किसी दुशमन का डर नहीं था. स्तालीन दूसरों को तलवार घुमा कर नहीं डराते थे. वह तबियत से शान्त और गम्भीर थे. उनकी दृढ़ता ने कई बार आते हुए जंग और झगड़ों को रोक दिया. यह ठीक है कि जिस तरह का अमन वह चाहते थे उसकी बुनियाद अपनी आत्मा को जीतने और आत्म संयम पर नहीं थी, फिर भी उनके चाहे हुए अमन ने इतने दिनों तक संसार का बहुत बड़ा उपकार किया. भड़कते हुए शोलों को बुझा कर उन्हें कुछ कुछ सुलगती हुई भूबल बना देना बहुत बड़ी बात है.

देश की रचना करने में वह चमत्कारी सूझ बूझ के आदमी थे. जिन साधनों से पहले थोड़े से आदमी ऐश इशरत में डूबे रहते थे उन्हीं साधनों को बदल कर उन्होंने उनके ज़रिये सारी जनता तक तालीम और कलचर पहुंचा दी. गाना, बजाना, कला, ड्रामा, नाच, खेल आज रूस में हर आदमी के सुख के साधन हैं. अच्छा खाना मिलना और तन्दुरुस्त रहना स्तालीन ने हर आदमी का जन्म सिद्ध अधिकार बना दिया है.

सारा मानव समाज किस तरह एक है इसे देखकर अचरज होता है. काले, गोरे, अमीर ग़रीब और अलग अलग धर्म सम्प्रदायों से दुनिया के लोग एक दूसरे के दुश्मन नहीं हो जाते, न झगड़ों में बंट जाते हैं. स्तालीन

ہے وہ جنگل کے قانون ہیں، سوویت روس کی آرتھک ویوستھا صاف دوسری طرح کی ہی چمک رہی ہے۔

یہ سچ ہے کہ یہ سب ہنسا سے کیا گیا۔ پر ہنسا نہ کرنے کی قسم کس نے کھا رکھی ہے؟ ابھی تک گاندھی جی کی آواز کیول نقارخانے میں طوطی کی آواز ہے۔ ہم لوگوں کے جن کے ہاتھ ابھی تک اپنے بھائیوں کے خون سے لال ہیں ہنسا اہنسا کی بات کرتے شرمانا چاہئے۔ جب تک ہماری اپنی آنکھ میں لٹھا ہے تب تک ہم اپنے بھائی کی آنکھ کا تل پکڑ بھی کیسے سکتے ہیں!

استالین ایک زبردست اور بہادر آدمی تھے۔ اپنے دیش واسیوں کے دلوں سے انہوں نے ڈر نکال کر باہر کر دیا۔ اپنے دشمنوں کے دلوں میں انہوں نے ان کی بدکاریوں کے بدلے خدا کا ڈر بھر دیا۔ دنیا بھر کی فوجی طاقت کو انہوں نے آگے بڑھکر روک دیا۔ جنگ کے خلاف وہ ایک مضبوط دیوار تھے۔ ان کا نام امن کی ضمانت تھا۔ جو لوگ بھی ان کے اثر میں آئے ان سب کو انہوں نے سنگٹھت کر کے رچناتمک قومی کاموں میں لگا دیا۔ یہ سب رچناتمک قومی کام کرنے والے اپنے نیک کام کو جاری رکھنے کے لئے امن قائم رکھنا چاہتے تھے اور چاہتے ہیں۔ باہر سے حملوں کا مقابلہ کرنے کے لئے سرکار تیزی سے اپنے بچاؤ کی تیاریاں ضرور کرتی رہی، پر روسی جنتا کے دلوں میں کسی دشمن کا ڈر نہیں تھا۔ استالین دوسروں کو تلوار گھما کر نہیں ڈراتے تھے۔ وہ طبیعت سے شانت اور گمبھیر تھے۔ ان کی درڑھتا نے کئی بار آتے ہوئے جنگ اور جھگڑوں کو روک دیا۔ یہ ٹھیک ہے کہ جس طرح کا امن وہ چاہتے تھے اسکی بنیاد اپنی آتما کو جیتنے اور آتم سنیم پر نہیں تھی، پھر بھی ان کے چاہے ہوئے امن نے اتنے دنوں تک سنسار کا بہت بڑا اپکار کیا۔ بھڑکتے ہوئے شعلوں کو بجھا کر انہیں کچھ کچھ سلگتی ہوئی بھوبل بنا دینا بہت بڑی بات ہے۔

دیش کی رچنا کرنے میں وہ چمتکاری سوجھ بوجھ کے آدمی تھے۔ جن سادھنوں سے پہلے تھوڑے سے آدمی عیش عشرت میں ڈوبے رہتے تھے انہیں سادھنوں کو بدل کر انہوں نے ان کے ذریعے ساری جنتا تک تعلیم اور کلچر پہونچا دی۔ گانا، بجانا، کلا، ڈرامہ، ناچ، کھیل آج روس میں ہر آدمی کے سکھ کے سادھن ہیں۔ اچھا کھانا ملنا اور تندرست رہنا استالین نے ہر آدمی کا جنم سدھ ادھکار بنا دیا ہے۔

سارا مانو سماج کس طرح ایک ہے اسے دیکھ کر اچرج ہوتا ہے۔ کالے، گورے، امیر غریب اور الگ الگ دھرم سمپردایوں سے دنیا کے لوگ ایک دوسرے کے دشمن نہیں ہو جاتے، نہ لڑائیوں میں بٹ جاتے ہیں۔ استالین

स्तालीन

जब कभी किसी देश के लोगों पर बहुत अधिक ज़ुल्म होते हैं तो एक समय आता है जब उस देश को उन ज़ुल्मों से छुटकारा दिलाने, लोगों को ऊपर उठाने और देश की फिर से रचना करने के लिये उनमें कोई आदमी पैदा होता है. फ़िरऔन के ज़ुल्म के नीचे इसराईल क़ौम जिस समय पिस रही थी उस समय हज़रत मूसा उनमें पैदा हुए जिन्होंने फ़िरऔन से कहा कि 'मेरी क़ौम के लोगों को छोड़ दो.' फ़िरऔन ने जब नहीं माना तो मिस्र में वह महामारियां फैलीं जिन से अन्त में मजबूर हो कर वहां के हाकिमों ने घुटने टेक दिये. रोम में जब अत्याचार हद को पहुँच गया तो हज़रत ईसा पैदा हुए. उन्होंने अध्यात्म और सदाचार के वह उसूल दुनिया के सामने रखे जिन से रोमी साम्राज की लड़खड़ाती हुई इमारत आख़िर ख़तम हो गई. अंगरेज़ी साम्राज शाही ने हिन्दुस्तान को कुचल कर उसका भेजा निकाल लिया था. उस समय गान्धी जी ने आ कर कुचले हुए लोगों में फिर से आशा और जान पैदा की. लोग फिर से अपना सिर ऊंचा कर के खड़े हो गए, यहां तक कि अपनी क़ुरबानियों से उन्होंने विदेशियों को अलग कर दिया. स्तालीन ने ज़ार के समय की सामन्त शाही को ख़तम कर के दबे हुए और नादार लोगों के लिये एक नई सभ्यता को जन्म दिया.

स्तालीन का ख़ास काम यह था कि उसने उस दुनिया को जो रईसों और बड़े लोगों के पैरों तले बेआस पड़ी हुई थी, साम्राजवादियों ने जिसका ख़ून चूस कर केवल हाड़ मास का एक ढ़चर बना दिया था, और बड़ी बड़ी फ़ौजों के मालिकों ने जिसके लिये उम्मीद की कोई किरन बाक़ी नहीं रखी थी, उस ना उम्मीदी में डूबी हुई दुनिया को उसने जीवन की एक नई राह दिखा दी. उसने सबके सामने बढ़ने के नए नए अवसर खोल दिये. जहां अंधेरा था वहां उसने रोशनी पैदा कर दी. भूकों को उसने खाना दिया. नंगों को उसने कपड़े दिये. सोवियत रूस जैसे समाजी ढांचे से बाहर का मानव समाज जिन क़ानूनों पर चलाया जा रहा

استالین

جب کبھی کسی دیش کے لوگوں پر بہت ادھک ظلم ہوتے ہیں تو ایک سمے آتا ہے جب اُس دیش کو اُن ظلموں سے چھٹکارا دلانے، لوگوں کو اوپر اُٹھانے اور دیش کی پھر سے رچنا کرنے کے لئے اُن میں کوئی آدمی پیدا ہوتا ہے. فرعون کے ظلم کے نیچے اِسرائیل قوم جس سمے پس رہی تھی اس سمے حضرت موسیٰ اُن میں پیدا ہوئے جنہوں نے فرعون سے کہا کہ 'میری قوم کے لوگوں کو چھوڑ دو،' فرعون نے جب نہیں مانا تو مصر میں وہ مہاماریاں پھیلیں جن سے انت میں مجبور ہوکر وہاں کے حاکموں نے گھٹنے ٹیک دئیے. روم میں جب اتیاچار حد کو پہونچ گیا تو حضرت عیسیٰ پیدا ہوئے. اُنہوں نے ادھیاتم اور سداچار کے وہ اصول دنیا کے سامنے رکھے جن سے رومی سامراج کی لڑکھڑاتی ہوئی عمارت آخر ختم ہوگئی. انگریزی سامراج شاہی نے ہندستان کو کچل کر اُس کا بھیجا نکال دیا تھا. اُس سمے گاندھی جی نے آکر کچلے ہوئے لوگوں میں پھر سے آشا اور جان پیدا کی. لوگ پھر سے اپنا سر اونچا کرکے کھڑے ہوگئے، یہاں تک کہ اپنی قربانیوں سے اُنہوں نے ودیشیوں کو الگ کردیا. استالین نے زار کے سمے کی سامنت شاہی کو ختم کرکے دبے ہوئے اور نادار لوگوں کے لئے ایک نئی سبھیتا کو جنم دیا.

استالین کا خاص کام یہ تھا کہ اُس نے اس دنیا کو جو رئیسوں اور بڑے لوگوں کے پیروں تلے بے آس پڑی ہوئی تھی، سامراجوادیوں نے جس کا خون چوس کر کیول ہاڑ چام کا ایک ڈھچر بنا دیا تھا، اور بڑی بڑی فوجوں کے مالکوں نے جس کے لئے اُمید کی کوئی کرن باقی نہیں رکھی تھی اُس ناامیدی میں ڈوبی ہوئی دنیا کو اُس نے جیون کی ایک نئی راہ دکھا دی. اُس نے سب کے سامنے بڑھنے کے نئے نئے اوسر کھول دئے. جہاں اندھیرا تھا وہاں اُس نے روشنی پیدا کردی. بھوکوں کو اُس نے کھانا دیا. ننگوں کو اُس نے کپڑے دئے. سوویت روس جیسے سماجی ڈھانچے سے باہر کا مانو سماج جن قانونوں پر چلایا جا رہا

बधाई के पात्र हैं. आज की हर समस्या और हर मुश्किल का हमला नौजवानों पर होता है. बेकारी फैलती है तो वह पीसे जाते हैं, लड़ाई होती है तो उनका बलिदान दिया जाता है दुनिया को और देश को बदलने की भी उन पर ही जिम्मेदारी है. बूढ़े और बच्चों के वही रखवाले और सहारे हैं ऐसी हालत में उन्हें एक जगह जमा हो कर देश और विदेश के सवालों पर एक राय होना चाहिये और इनसाफ़ के लिये हर तरह की क़ुरबानी कर देना चाहिये.

हमें खुशी है कि बिहार राज में नौजवानों का संगठन मजबूत हो रहा है और आज सारे नौजवान "जनवादी नौजवान संघ" के झंडे के नीचे जमा हो रहे हैं. दूसरे राजों में भी इस संगठन की सख्त ज़रूरत है.

"नौजवान" में अच्छे लेख और कविताएं भी हैं. नौजवानों के अन्तर राष्ट्री संगठन की खबरें भी क़ाफ़ीमात्रा में इस पत्रिका में मिलती हैं इस पत्रिका को जिन्दा रखना हर नौजवान का फ़र्ज है और हम आशा करते हैं कि नौजवान अपने फ़र्ज से मुंह न मोड़ेंगे.

—मुजीब रिज़वी

सलौना सच

लिखने वाले—महात्मा भगवानदीन; निकालने वाले—भारत जैन महा मंडल, वरधा; लिखावट हिन्दी; सफ़े 42; दाम दस आने.

बच्चों को बहलाने, पढ़ाने और शील बनाने में महात्मा भगवानदीन जी का बहुत कम लोग मुक़ाबला कर सकते हैं. इसका कारन बच्चों के मनोविज्ञान की जानकारी है. बच्चों के साहित्य की हमारे देश में ज़बरदस्त कमी है. बड़ी खुशी की बात है कि महात्मा जी ने इस तरफ़ ध्यान दिया है. "सलौना सच" में सच की समस्याओं को कहानी के रूप में समझाया गया है. जो बात हंसी हंसी में इस किताब से बच्चे समझ लेते हैं उसकी जानकारी हमारे पढ़े लिखे ग्रेजुएटों को भी नहीं होती. सच क्या है, सच की कितनी क़िस्में हैं, सच का पालन कैसे किया जा सकता है, इन सब सवालों का जवाब साफ़ ढंग से इस किताब में मिलता है और हर बात बच्चों के मनोविज्ञान का पुट देकर समझाई गई है. बच्चों के लिये ही फ़ायदेमन्द यह किताब नहीं है बल्कि बच्चों के बूढ़ों के दिमाग़ के जाले इससे साफ़ हो जायेंगे और सच को ले कर जो शक उनके मन में उठा करते हैं वह दूर हो जायंगे और मन को शान्ति मिलेगी.

सरकार को चाहिये कि 'सलौना सच' को बच्चों के कोरस में शामिल कर दे. इसके पढ़ाने से एक नई चेतना उनमें आयेगी, ऐसा पूरा विश्वास है.

—मुजीब रिज़वी

بدھائی کے پاتر ہیں ۔ آج کی ہر سمسیا اور ہر مشکل کا حملہ نوجوانوں پر ہوتا ہے ۔ بیکاری پھیلتی ہے تو وہ پیسے جاتے ہیں، لڑائی ہوتی ہے تو اُن کا بلیدان دیا جاتا ہے ۔ دنیا کو اور دیش کو بدلنے کی بھی اُن پر ہی ذمہ داری ہے ۔ بوڑھے اور بچوں کے وہی رکھوالے اور سہارے ہیں. ایسی حالت میں اُنہیں ایک جگہ جمع ہوکر دیش اور ودیش کے سوالوں پر ایک رائے ہونا چاہئے، اور انصاف کے لئے ہر طرح کی قربانی دینا چاہئے ۔

ہمیں خوشی ہے کہ بہار راج میں نوجوانوں کا سنگٹھن مضبوط ہو رہا ہے اور آج سارے نوجوان "جن وادی نوجوان سنگھ" کے جھنڈے کے نیچے جمع ہو رہے ہیں ۔ دوسرے راجوں میں بھی اس سنگٹھن کی سخت ضرورت ہے ۔

"نوجوان" میں اچھے لیکھ اور کویتائیں بھی ہیں ۔ نوجوان کے انتر راشٹری سنگٹھن کی خبریں بھی کافی ماترا میں اس پتریکا میں ملتی ہیں اِس پتریکا کو زندہ رکھنا ہر نوجوان کا فرض ہے اور ہم آشا کرتے ہیں کہ نوجوان اپنے فرض سے منہ نہ موڑیں گے ۔

—مجیب رضوی

سلونا سچ

لکھنے والے—مہاتما بھگوان دین؛ نکالنے والے—بھارت جین مہا منڈل، وردھا؛ لکھاوٹ ہندی؛ صفحے 42، دام دس آنے ۔

بچوں کو بہلانے، پڑھانے اور شیل بنانے میں مہاتما بھگوان دین جی کا بہت کم لوگ مقابلہ کرسکتے ہیں ۔ اِس کا کارن بچوں کے منو وگیان کی جانکاری ہے ۔ بچوں کے ساہتیہ کی ہمارے دیش میں زبردست کمی ہے ۔ بڑی خوشی کی بات ہے کہ مہاتما جی نے اِس طرف دھیان دیا ہے. "سلونا سچ" میں سچ کی سمسیاؤں کو کہانی کے روپ میں سمجھایا گیا ہے ۔ جو بات ہنسی ہنسی میں اِس کتاب سے بچے سمجھ لیتے ہیں اُس کی جانکاری ہمارے پڑھے لکھے گریجویٹوں کو بھی نہیں ہوتی. سچ کیا ہے، سچ کی کتنی قسمیں ہیں، سچ کا پالن کیسے کیا جاسکتا ہے، اِن سب سوالوں کا جواب صاف ڈھنگ سے اِس کتاب میں ملتا ہے اور ہر بات بچوں کے منو وگیان کا پٹ دے کر سمجھائی گئی ہے ۔ بچوں کے لئے ہی فائدہ مند یہ کتاب نہیں ہے بلکہ بچوں کے بوڑھوں کے دماغ کے بہت سے جالے اِس سے صاف ہو جائیں گے اور سچ کو لے کر جو شک اُن کے من میں اُٹھا کرتے ہیں وہ دور ہو جائیں گے اور من کو شانتی ملے گی ۔

سرکار کو چاہئے کہ "سلونا سچ" کو بچوں کے کورس میں شامل کردے ۔ اِس کے پڑھانے سے ایک نئی چیتنا اُن میں جاگے گی، ایسا پورا وشواس ہے ۔

—مجیب رضوی
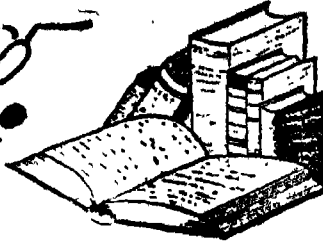
उदय पथ

लिखने वाले—'शील', निकालने वाले—पीपुल्स पबलीशिंग हाउस, बम्बई 4, लिखावट हिन्दी, सफ़ा 64, दाम एक रुपया.

'शील' का नाम हिन्दी प्रेमी जनता के लिये नया नहीं है. 'उदय पथ' से पहले वह 'अंगड़ाई' और 'एक पग' भेंट कर चुके हैं. शील की कविता में रस है, गंभीरता है और साथ ही साथ एक पैग़ाम है. वह कविता करने की नियत से नहीं लिखते बल्कि क़लम इसलिये उठाते हैं कि पिछड़ी जनता की चेतना को ऊपर उठा सकें. "नया आदमी मांग रहा है जीने का अधिकार" उस कविता की पहली लाइन है जिसे जब भी जनता में पढ़ा गया है लोग झूम उठते हैं. सिनेमा के गानों की तरह हर लाइन ज़बान पर चढ़ गई है और लोग सड़कों पर गुनगुनाते रहे हैं इसका रहस्य यह है कि यह कविता आम भाशा में लिखी गई है और आम जनता के भावों की इसमें चरचा है.

इस संग्रह की कुछ कविताएं इलाहाबाद में लिखी गई हैं, कुछ कानपुर में और कुछ बम्बई में. कहते हैं बम्बई जा कर कलाकार मर जाता है और कला का व्योपार करने वाली संस्थाओं का मज़दूर बन जाता है. लेकिन शील के बारे में यह सच नहीं है. बम्बई में लिखी कविताएं बाक़ी कविताओं से ज़ियादा अच्छी हैं—भाशा का निखार है, विचारों की सफ़ाई है और उनमें दिल मोह लेने वाला असर पैदा हो गया है. शील से हम आशा करते हैं कि 'नया आदमी' 'आदमी का गीत, 'वक़्त की आवाज़' जैसी कविताएं और भी जनता को भेंट करेंगे.

—मुजीब रिज़्वी

नौजवान

एडीटर—कृष्ण चन्द्र चौधरी, रामावतार शास्त्री, तेज नारायन झा, कपिलमुनी तिवारी, पता—ख़ज़ानची रोड, पटना 4; लिखावट हिन्दी, सफ़ा 32, दाम चार आना की कापी.

"नौजवान" वक़्त की एक बड़ी मांग को पूरा करता है. बिहार राज के उत्साही नौजवान अपनी कोशिश के लिये

اُدئے پتھ

لکھنے والے—"شیل"؛ نکالنے والے—پیپلس پبلیشنگ ہاؤس بمبئی 4؛ لکھاوٹ ہندی؛ صفحہ 64؛ دام ایک روپیہ.

"شیل" کا نام ہندی پریمی جنتا کے لئے نیا نہیں ہے. "اُدے پتھ" سے پہلے وہ "انگڑائی" اور "ایک پگ" بھینٹ کر چکے ہیں. شیل کی کویتا میں رس ہے، گمبھیرتا ہے اور ساتھ ہی ساتھ ایک پیغام ہے. وہ کویتا کرنے کی نیت سے نہیں لکھتے بلکہ قلم اس لئے اُٹھاتے ہیں کہ پچھڑی جنتا کی چیتنا کو اوپر اُٹھا سکیں. "نیا آدمی مانگ رہا ہے جینے کا ادھیکار" اس کویتا کی پہلی لائن ہے جسے جب بھی جنتا میں پڑھا گیا ہے لوگ جھوم اُٹھے ہیں. سنیما گانوں کی طرح ہر لائن زبان پر چڑھ گئی ہے اور لوگ سڑکوں پر گنگناتے رہے ہیں. اِس کا رہسیہ یہ ہے کہ یہ کویتا عام بھاشا میں لکھی گئی ہے اور عام جنتا کے بھاوؤں کی اِس میں چرچا ہے.

اِس سنگرہ کی کچھ کویتائیں الہ آباد میں لکھی گئی ہیں، کچھ کانپور میں اور کچھ بمبئی میں. کہتے ہیں بمبئی جا کر کلاکار مر جاتا ہے اور کلا کا بیوپار کرنے والی سنستھاؤں کا مزدور بن جاتا ہے. لیکن شیل کے بارے میں یہ سچ نہیں ہے. بمبئی میں لکھی کویتائیں باقی کویتاؤں سے زیادہ اچھی ہیں—بھاشا کا نکھار ہے، وچاروں کی صفائی ہے اور اُن میں دل موہ لینے والا اثر پیدا ہو گیا ہے. شیل سے ہم آشا کرتے ہیں کہ "نیا آدمی" "آدمی کا گیت" "وقت کی آواز" جیسی کویتائیں اور بھی جنتا کو بھینٹ کریں گے.

—مجیب رضوی

نوجوان

ایڈیٹر—کرشن چندر چودھری، رام اوتار شاستری، تیج نرائن جھا، کپل منی تواری؛ پتہ—خزانچی روڈ پٹنہ 4؛ لکھاوٹ ہندی؛ صفحہ 32؛ دام چار آنہ فی کاپی.

"نوجوان" وقت کی ایک بڑی مانگ کو پورا کرتا ہے. بہار راج کے اُتساہی نوجوان اپنی کوشش کے لئے

सब छूट जाती हैं. इस वास्ते फिर एक दफ़ा वह दरख़्त की जून से निकल कर जानवर की जून में आता है. और अगर इस जून में अपनी मरज़ी से अच्छे अच्छे काम करता जाए तो फिर दो चार जन्मों के बाद आदमी की जून में आ जाता है. और इस जून में भी अच्छे ही अच्छे काम करे तो फिर रफ़्ता रफ़्ता आदमियों से भी अच्छी और ऊपर की जून में चला जाता है. यहां इस दुनिया में तो आदमियों से ऊपर वाली जून है नहीं मगर और जो दुनियाएं और चांद हमारे सूरज के या और सूरजों के बहुत से मौजूद हैं उनमें उम्मीद है कि आदमियों से भी ऊपर वाली कई अच्छी जूनें होंगी. इस वास्ते आदमी के बदन को छोड़ कर इन दूसरी दुनियाओं में से किसी में जा कर किसी न किसी नए पैदा होने वाले बदन में आत्मा चली जाती है. और जब इसी तरह रोज़ बरोज़ ज़ियादा अच्छे ही अच्छे काम करते करते आत्मा ऐसे बदन, मन और दिल से जा कर मिलती है कि इसमें बिल्कुल कोई पाप नहीं तो फिर सब दुख दूर हो जाते हैं. अपने पिछले सब जन्मों का हाल मालूम हो जाता है. पिछले जन्मों में जिस जिस से पाला पड़ा था कोई किसी जन्म में मां थी, कोई किसी जन्म में बहन, कोई भाई सब मालूम हो जाते हैं. और उसी वक़्त मुक्ति हो जाती है. यानी बहुत बार का पैदा होना और मरना और आत्मा का आना जाना बन्द हो जाता है. भगवान को अच्छी तरह पहचान लेते हैं और हमेशा उसी के साथ रह कर उसकी महिमा का हाल मालूम करते रहते हैं. उस वक़्त भगवान की मरज़ी के मुताबिक़ सब चलते हैं और दुख, दर्द, तकलीफ़, रंज, फ़िक्र बिल्कुल कुछ किसी क़िस्म का नहीं होता. न आपस में किसी तरह की लड़ाई झगड़ा वग़ैरा होता है. बस इससे तुम्हें मालूम हुआ होगा कि अच्छे ही अच्छे काम करना और बुरे बुरे कामों को छोड़ना कैसा ज़रूरी है. जो आदमी बुरे काम करते हैं उनके रंज और तकलीफ़ें रोज़ बढ़ते जाते हैं और जो अच्छे काम करते हैं और अपने मन को अक़्ल के बस में रखते हैं उनका रंज, फ़िक्र रोज़ बरोज़ कम होता जाता है. असल में रंज, फ़िक्र और उदास रहने से बिल्कुल कुछ भी फ़ायदा नहीं है. इस वास्ते आदमी को चाहिये कि हमेशा हंसमुख रहे, किसी बात पर भी मुंह न बनाए, न नाक भौं चढ़ाए. जो आदमी अपने चेहरे को हमेशा ख़ुश और हंसता हुआ रखने की कोशिश करते हैं और अपने दिल को भी ख़ामख़ाह ख़राब नहीं होने देते, उनका मन कभी उदास या रंजीदा नहीं होने पाता. जब किसी को ग़ुस्सा, रंज या उदासी होती है तो पहले चेहरा बिगड़ता है. इसलिये अगर कोई अपने चेहरे को न बिगड़ने दे तो दिल भी ख़राब न होगा.

سب چھوٹ جاتی ہیں . اِس واسطے پھر ایک دفعہ وہ درخت کی جون سے نکل کر جانور کی جون میں آ جاتا ہے . اور اگر اس جون میں اپنی مرضی سے اچھے اچھے کام کرتا جائے تو پھر دو چار جنموں کے بعد آدمی کی جون میں آ جاتا ہے . اور اس جون میں بھی اچھے ہی اچھے کام کرے تو رفتہ رفتہ آدمیوں سے بھی اچھی اور اوپر کی جون میں چلا جاتا ہے . یہاں اِس دنیا میں تو آدمیوں سے اوپر والی جون ہے نہیں مگر اور جو دنیائیں اور چاند ہمارے سورج کے یا اور سورجوں کے بہت سے موجود ہیں اُن میں اُمید ہے کہ آدمیوں سے بھی اوپر والی کئی اچھی جونیں ہونگی . اِس واسطے آدمی کے بدن کو چھوڑ کر اِن دوسری دنیاؤں میں سے کسی میں جاکر کسی نہ کسی نئے پیدا ہونے والے بدن میں آتما چلی جاتی ہے . اور جب اِسی طرح روز بروز زیادہ اچھے ہی اچھے کام کرتے کرتے آتما ایسے بدن، من اور دل سے جا کر ملتی ہے کہ اس میں بالکل کوئی پاپ نہیں ہو تو پھر سب دکھ دور ہو جاتے ہیں . اپنے پچھلے سب جنموں کا حال معلوم ہو جاتا ہے . پچھلے جنموں میں جس جس سے پالا پڑا تھا، کوئی کسی جنم میں ماں تھی، کوئی کسی جنم میں بہن، کوئی بھائی سب معلوم ہو جاتے ہیں . اور اُسی وقت مکتی ہو جاتی ہے . یعنی بہت بار کا پیدا ہونا اور مرنا اور آتما کا آنا جانا بند ہوجاتا ہے . بھگوان کو اچھی طرح پہچان لیتے ہیں اور ہمیشہ اُسی کے ساتھ رہ کر اُس کی مہما کا حال معلوم کرتے رہتے ہیں . اُس وقت بھگوان کی مرضی کے مطابق سب چلتے ہیں اور دکھ، درد، تکلیف، رنج، فکر بالکل کچھ کسی قسم کا نہیں ہوتا . نہ آپس میں کسی طرح کی لڑائی جھگڑا وغیرہ ہوتا ہے . بس اس سے تمہیں معلوم ہوا ہوگا کہ اچھے ہی اچھے کام کرنا اور برے برے کاموں کو چھوڑنا کیسا ضروری ہے . جو آدمی برے کام کرتے ہیں اُن کے رنج اور تکلیفیں روز بڑھتے جاتے ہیں اور جو اچھے کام کرتے ہیں اور اپنے من کو عقل کے بس میں رکھتے ہیں اُن کا رنج، فکر روز بروز کم ہوتا جاتا ہے . اصل میں رنج، فکر اور اُداس رہنے سے بالکل کچھ بھی فائدہ نہیں ہے . اِس واسطے آدمی کو چاہئے کہ ہمیشہ ہنس مکھ رہے، کسی بات پر بھی منھ نہ بنائے، نہ ناک بھوں چڑھائے . جو آدمی اپنے چہرے کو ہمیشہ خوش اور ہنستا ہوا رکھنے کی کوشش کرتے ہیں اور اپنے دل کو بھی خواہ مخواہ خراب نہیں ہونے دیتے اُن کا من کبھی اُداس یا رنجیدہ نہیں ہونے پاتا . جب کسی کو غصہ، رنج یا اُداسی ہوتی ہے تو پہلے چہرہ بگڑتا ہے . اس لئے اگر کوئی اپنے چہرے کو نہ بگڑنے دے تو دل بھی خراب نہ ہوگا .

बच्चों की दुनिया

بچوں کی دنیا

सलोना सच

सच सोचना, सच बोलना, सच कर्म है अपना
सच राम है, रहमान है, सच धर्म है अपना.

चुभती न हो, खुभती न हो, फूलों की कली हो
जो बात कही जाय वह मिश्री की डली हो.

कांटे न झड़ें, फूल झड़ें बात जो बोलो
खोलो नहीं, खोलो तो हंसाने को मुंह खोलो.

लगती न कहो अरु कभी दब कर न कहो तुम
सच साफ़ कहो आप मुसीबत तो सहो तुम.

सच बात कहो खुल के कहो जी की लगी हो
कड़वी न हो खट्टी न हो वह रस की पगी हो.

—भगवानदीन

سلونا سچ

سچ سوچنا، سچ بولنا، سچ کرم ہے اپنا
سچ رام ہے، رحمان ہے، سچ دھرم ہے اپنا .

چبھتی نہ ہو، کھبتی نہ ہو، پھولوں کی کلی ہو
جو بات کہی جائے وہ مصری کی ڈلی ہو.

کانٹے نہ جھڑیں، پھول جھڑیں بات جو بولو
کھولو نہیں، کھولو تو ہنسانے کو منھ کھولو .

لگتی نہ کہو اور کبھی دب کر نہ کہو تم
سچ صاف کہو آپ مصیبت تو سہو تم.

سچ بات کہو کھل کے کہو جی کی لگی ہو
کڑوی نہ ہو کھٹی نہ ہو وہ رس کی پگی ہو.

—بھگوان دین

मुल्तान
13. 7. 06

राधे,

कल की चिट्ठी में लिखा था कि जब कोई बदन मरता है तो आत्मा उस बदन को छोड़ कर किसी ऐसे नए पैदा होने वाले बदन में आ जाती है कि जिस का मन और दिल भी तक़रीबन उसी तरह का हो जिस तरह का पीछे छोड़ा. इस तरह आत्मा के पैदा होने के वक़्त आ जाने और मरने के वक़्त निकल जाने को संस्कृत में 'आवागमन' कहते हैं क्योंकि आवागमन के माने भी आना जाना है. अब सुनो जब कोई आदमी कई जन्मों में बराबर बुरे ही बुरे काम करता चला जाए यहां तक कि मरने के वक़्त बिलकुल जानवरों की सी उसकी आदतें हों, तो फिर अगले जन्म में वह जानवर की जून में चला जाता है. और अगर जानवर की जून में जा कर भी बुरे ही बुरे काम करता रहे तो फिर आख़िर को दरख़्त की जून में चला जाता है. मगर यहां आ कर उसमें कोई काम करने की ताक़त और अक़्ल नहीं रहती. बिल्कुल क़ैदी की तरह हो जाता है. इस वास्ते जब बहुत दिन इस तरह क़ैद में पड़े पड़े हो जाते हैं तो फिर उसकी ख़राब आदतें

ملتان
13-7-06

رادھے،

کل کی چٹھی میں لکھا تھا کہ جب کوئی بدن مرتا ہے تو آتما اُس بدن کو چھوڑ کر کسی ایسے نئے پیدا ہونے والے بدن میں آ جاتی ہے کہ جس کا من اور دل بھی تقریباً اُسی طرح کا ہو جس طرح کا پیچھے چھوڑا . اِسطرح آتما کے پیدا ہونے کے وقت آجانے کے اور مرنے کے وقت نکل جانے کو سنسکرت میں 'آواگمن' کہتے ہیں . کیونکہ آواگمن کے معنی بھی آنا جانا ہے . اب سنو، جب کوئی آدمی کئی جنموں میں برابر برے ہی برے کام کرتا چلا جائے یہاں تک کہ مرنے کے وقت بالکل جانوروں کی سی اُس کی عادتیں ہوں، تو پھر اگلے جنم میں وہ جانور کی جون میں چلا جاتا ہے . اور اگر جانور کی جون میں جا کر بھی برے ہی برے کام کرتا رہے تو پھر آخر کو درخت کی جون میں چلا جاتا ہے . مگر یہاں آ کر اس میں کوئی کام کرنے کی طاقت اور عقل نہیں رہتی . بالکل قیدی کی طرح ہو جاتا ہے . اس واسطے جب بہت دن اِس طرح قید میں پڑے پڑے ہو جاتے ہیں تو پھر اُس کی خراب عادتیں

शिकार बाक़ी न रह जायगा तो वह हमारा खून चूसेगा. इससे पहले कि वह फिर अपने दांत निकाले. हमें उसे रोक देना चाहिये, जड़ को खतम कर देना चाहिये.

मलाया के शहीदों की पुकार यही है, आज़ादी की ललकार यही है, सारे एशिया की फ़रयाद यही है-हिन्दुस्तानियो ! एक आवाज़ हो कर अंगरेज़ को रोक दो कि वह हमारी ज़मीन पर मलाया के खून के छींटें न बिखराए !!

रोशनी

साम्प्रदायिक वातावरन हमें निराश कर देता है. हम ठंडी सांसें भरने लगते हैं. हमें विश्वास नहीं होता कि हिन्दुस्तान फिर कभी साम्प्रदायिक मेल मिलाप का आदर्श बन सकेगा. हमारी निराशा हट जाती है, मेल की ताक़तों में विश्वास बढ़ जाता है तिरचनापली का एक मंदिर हमें रोशनी देता है. हमें पैग़ाम देता है. आज नहीं, कल नहीं, अंगरेज़ों के राज से बहुत पहले—सात सौ साल पहले—हज़रत क़िबला आलम बादशाह नतहर वली रहमतुल्ला अलय तिरचनापली आए थे. वह फ़क़ीर थे, मानव प्रेमी थे, इनसान थे—उन्हें हर दम हर शक्ल में, हर व्यक्ति में ख़ुदा दिखाई पड़ता था, वह हर धर्म के पुजारी थे फिर भी किसी धर्म का उनसे सम्बन्ध नहीं था. तिरचनापली के हिन्दू राजे राजा को उनकी बानी भा गई वह उनका भक्त हो गया, तलवार के आगे जो सर नहीं झुके थे उन्हें प्रेम ने राम कर लिया था. शाह साहब के मरने पर राजा ने अपने खानदानी मंदिर में उनकी दरगाह बना दी—वह दरगाह आज भी बाक़ी है. आज भी उनकी पूजा होती है—हिन्दू मुसलमान लड़ते रहते हैं—पर उनकी भक्ति दोनों करते हैं. दोनों उस मंदिर में जाते हैं—हिन्दू दरगाह पर फूल चढ़ाते हैं, मुसलमान 'शिव लिंगम' पर चिराग़ जलाते हैं. किसी में साहस नहीं है कि वह क़ब्र उखाड़ दे और किसी में हिम्मत नहीं है कि वह लिंग वहां से हटा दे !

आज भी हम हट धर्म नहीं हैं, आज भी हम उदार हैं, आज भी हम कभी कभी इनसान बन जाते हैं—सब भूल कर सारे फ़िरक़ों पर परदा डाल कर हम एक साथ खड़े हो जाते हैं—मदरास के एक पुराने मंदिर में—शहर के दो सबसे बड़े मंदिरों में से एक मंदिर में एक सभा हो रही थी. किसी हिन्दू देवता का जन्म दिन नहीं था, कोई हिन्दू त्योहार नहीं था—हिन्दू मंदिर में हज़रत मुहम्मद का जन्म दिन मनाया जा रहा था, उनके जीवन पर भाषण हो रहे थे मंदिर के कम्पाउन्ड में ही मुसलमान, ईसाई, ब्रहमन, हरिजन, कांग्रेसी और कम्युनिस्ट जमा नहीं थे—सब मूरती के पास बैठे थे. सब मूरती को छू रहे थे—शैतान भाग रहा था, आडम्बरी धर्म खतम हो रहा था—असली धर्म, प्रेम धर्म जन्म ले रहा था—वातावरन में तालियों की गूंज छाई थी !

—मुजीब रिज़वी

شکار باقی نہیں رہ جائے گا تو وہ ہمارا خون چوسے گا. اس سے پہلے کہ وہ پھر اپنے دانت نکالے، ہمیں اسے روک دینا چاہئے، جڑ کو ختم کردینا چاہئے۔

ملایا کے شہیدوں کی پکار یہی ہے، آزادی کی للکار یہی ہے، سارے ایشیا کی فریاد یہی ہے—ہندستانیو! ایک آواز ہوکر انگریز کو روک دو کہ وہ ہماری زمین پر ملایا کے خون کے چھینٹے نہ بکھرائے!!

روشنی

سامپردائک واتاورن ہمیں نراش کر دیتا ہے. ہم ٹھنڈی سانسیں بھرنے لگتے ہیں۔ ہمیں وشواس نہیں ہوتا کہ ہندستان پھر کبھی سامپردائک میل ملاپ کا آدرش بن سکے گا. ہماری نراشا ہٹ جاتی ہے، میل کی طاقتوں میں وشواس بڑھ جاتا ہے۔ ترچناپلی کا ایک مندر ہمیں روشنی دیتا ہے۔ ہمیں پیغام دیتا ہے۔ آج نہیں، کل نہیں، انگریزوں کے راج سے بہت پہلے—سات سو سال پہلے حضرت قبلہ عالم بادشاہ نطہر ولی رحمتہ اللہ علیہ ترچناپلی آئے تھے۔ وہ فقیر تھے، مانو پریمی تھے، انسان تھے—انہیں ہر دم ہر شکل میں، ہر ویکتی میں خدا دکھائی پڑتا تھا، وہ ہر دھرم کے پجاری تھے پھر بھی کسی دھرم کا ان سے سمبندھ نہیں تھا. ترچناپلی کے ہندو راجے راجہ کو ان کی بانی بھا گئی، وہ ان کا بھگت ہو گیا، تلوار کے آگے جو سر نہیں جھکے تھے انہیں پریم نے رام کر لیا تھا. شاہ صاحب کے مرنے پر راجہ نے اپنے خاندانی مندر میں ان کی درگاہ بنا دی—وہ درگاہ آج بھی باقی ہے۔ آج بھی ان کی پوجا ہوتی ہے—ہندو مسلمان لڑتے رہتے ہیں—پر ان کی بھگتی دونوں کرتے ہیں، دونوں اس مندر میں جاتے ہیں—ہندو درگاہ پر پھول چڑھاتے ہیں، مسلمان "شیو لنگم" پر چراغ جلاتے ہیں۔ کسی میں ساہس نہیں ہے کہ وہ قبر اکھاڑ دے اور کسی میں ہمت نہیں ہے کہ وہ لنگ وہاں سے ہٹا دے!

آج بھی ہم ہٹ دھرم نہیں ہیں، آج بھی ہم ادار ہیں، آج بھی ہم کبھی کبھی انسان بن جاتے ہیں—سب بھول کر سارے فرقوں پر پردہ ڈال کر ہم ایک ساتھ کھڑے ہو جاتے ہیں—مدراس کے ایک پرانے مندر میں—شہر کے دو سب سے بڑے مندروں میں سے ایک مندر میں ایک سبھا ہو رہی تھی۔ کسی ہندو دیوتا کا جنم دن نہیں تھا، کوئی ہندو تیوہار نہیں تھا—ہندو مندر میں حضرت محمد کا جنم دن منایا جا رہا تھا، ان کے جیون پر بھاشن ہو رہے تھے. مندر کے کمپاؤنڈ میں ہی مسلمان، عیسائی، برہمن، ہریجن، کانگریسی اور کمیونسٹ جمع نہیں تھے—سب مورتی کے پاس بیٹھے تھے۔ سب مورتی کو چھو رہے تھے—شیطان بھاگ رہا تھا، آڈمبری دھرم ختم ہو رہا تھا—اصلی دھرم، پریم دھرم جنم لے رہا تھا—واتاورن میں تالیوں کی گونج چھائی تھی!

—مجیب رضوی

आइज़नहावर को रोको

चीन पर हमला करने की पूरी तैयारी हो गई थी. चियांग काई शेक का पट्टा ढीला कर दिया गया था. आइज़न हावर इस समझ में थे कि एशिया वालों को एशिया वालों से लड़ाने का उनका ख़ाब सच्चा हो. इधर अख़बारों में आइज़न हावर के मनसूबे के सम्बन्ध में ख़बरें छपीं और उधर एक ग़ुस्से की लहर दौड़ गई. जगह जगह लोगों ने सभाएं कीं—सब एक जगह आए, सबकी एक आवाज़ थी—एशिया वाले एशिया वालों से नहीं लड़ेंगे, वह अपने भाइयों का ख़ून बहता हुआ नहीं देखेंगे. वह यह बरदाश्त नहीं करेंगे कि उम्मीद का तारा फिर डूब जाय, चीन को फिर घुन लग जाय. हर विचार, हर पारटी के लोग एक जगह जमा हुए और उन्होंने बुलन्द आवाज़ से आइज़न हावर को चेतावनी दी—तुम अपने क़दम रोक दो, अपनी चालें बन्द करो. हिन्दुस्तान अब जाग रहा है, हिन्दुस्तानी जनता की आंखों में अब धूल नहीं झोंका जा सकता. वह जानती है कौन उसका दोस्त है और कौन उसका दुश्मन !

मलाया की पुकार

मलाया में हिन्दुस्तानियों को गोलियां मार दी जायं, उन्हें फांसी दे दी जाय...और हम चुप रहें.. यह शरम की बात है..मलाया के चीनियों को तबाह बरबाद कर दिया जाय....और हम ख़ामोश रहें..डूब मरने की जगह है... मलाई जनता को पीसा जाय..और हम मुंह ताकते रहें, लज्जा की बात है. अब जनता जियादा दिनों ख़ामोश नहीं रह सकती, अब जियादा दिनों हमें तमाशाई नहीं बनना है. मलाया जल रहा है...वह हमें पुकार रहा है, उसे हमारी सहायता की ज़रूरत है...

हिन्दुस्तानियो उठो, एक आवाज़ बन जाओ, एक ताक़त बन जाओ – अंगरेज़ों को मजबूर कर दो —भारत सरकार को मजबूर कर दो ! साफ़ कह दो—हिन्दुस्तान की ज़मीन पर गोरखे भरती नहीं होंगे, हिन्दुस्तान मलाया वालों के ख़ून के छींटे अपने दामन पर नहीं देख सकता... हिन्दुस्तान यह बरदाश्त नहीं कर सकता कि अंगरेज़ों की फ़ौजें हमारी ज़मीन पर कैम्प डाले पड़ी रहें ..अंगरेज़ अंगरेज़ है...जब वह आया था तब भी वह अंगरेज़ था और आज भी वह वही अंगरेज़ है. आज़माए हुए को आज़माना भूल है, जहालत है, नासमझी है. इस वक़्त, अभी, इस समय अंगरेज़ों नौकर गोरखे सिपाहियों से हिन्दुस्तान की ज़मीन साफ़ होनी चाहिये. इस तरह के सारे समझौते रद्द होने चाहियें, जला दिये जाने चाहियें—देर, भूल चूक अंगरेज़ को बुलाना है, उसे अपने सर पर सदा बिठाए रखना है. वह पड़ोसियों का ख़ून चूसेगा, और जब कोई

آئزن ہاور کو روکو

چین پر حملہ کرنے کی پوری تیاری ہو گئی تھی. چیانگ کائی شیک کا پٹہ ڈھیلا کر دیا گیا تھا . آئزن ہاور اِس تمنا میں تھے کہ ایشیا والوں کو ایشیا والوں سے لڑانے کا اُن کا خواب سچا ہو . اِدھر اخباروں میں آئزن ہاور کے منصوبے کے متعلق میں خبریں چھپیں اور اُدھر ایک غصے کی لہر دوڑ گئی. جگہ جگہ لوگوں نے سبھائیں کیں. سب ایک جگہ آئے' سب کی ایک آواز تھی—ایشیا والے ایشیا والوں سے نہیں لڑیں گے' وہ اپنے بھائیوں کا خون بہتا ہوا نہیں دیکھیں گے . وہ یہ برداشت نہیں کریں گے کہ اُمید کا تارا پھر ڈوب جائے چین پر پھر گھن لگ جائے . ہر وچار' ہر پارٹی کے لوگ ایک جگہ جمع ہوئے اور اُنہوں نے بلند آواز سے آئزن ہاور کو چیتاونی دی—تم اپنے قدم روک دو' اپنی چالیں بند کرو . ہندستان اب جاگ رہا ہے' ہندستانی جنتا کی آنکھوں میں اب دھول نہیں جھونکا جاسکتا. وہ جانتی ہے کون اُس کا دوست ہے اور کون اُس کا دشمن !

ملایا کی پکار

ملایا میں ہندستانیوں کو گولیاں مار دی جائیں' انہیں پھانسی دے دی جائے...اور ہم چپ رہیں... یہ شرم کی بات ہے...ملایا کے چینیوں کو تباہ برباد کر دیا جائے...اور ہم خاموش رہیں...ڈوب مرنے کی جگہ ہے...ملائی جنتا کو پیسا جائے...اور ہم منہ تاکتے رہیں...لجا کی بات ہے. اب جنتا زیادہ دنوں خاموش نہیں رہ سکتی' اب زیادہ دنوں ہمیں تماشائی نہیں بننا ہے . ملایا جل رہا ہے...وہ ہمیں پکار رہا ہے' اسے ہماری سہائتا کی ضرورت ہے...

ہندستانیوں اُٹھو' ایک آواز بن جاؤ' ایک طاقت بن جاؤ—انگریزوں کو مجبور کر دو—بھارت سرکار کو مجبور کر دو ! صاف کہہ دو—ہندستان کی زمین پر گورکھے بھرتی نہیں ہونگے' ہندستان ملایا والوں کے خون کے چھینٹے اپنے دامن پر نہیں دیکھ سکتا...ہندستان یہ برداشت نہیں کرسکتا کہ انگریزوں کی فوجیں ہماری زمین پر کیمپ ڈالے پڑی رہیں...انگریز انگریز ہے...جب وہ آیا تھا تب بھی وہ انگریز تھا اور آج بھی وہ وہی انگریز ہے . آزمائے ہوئے کو آزمانا بھول ہے' جہالت ہے' ناسمجھی ہے . اِس وقت' ابھی' اِس سمے' انگریزی نوکر گورکھے سپاہیوں سے ہندستان کی زمین صاف ہونی چاہئے . اِس طرح کے سارے سمجھوتے رد ہونے چاہئیں' جلا دئے جانے چاہئیں—دیر' بھول چوک—انگریز کو بلانا ہے' اُسے اپنے سر پر سدا بٹھائے رکھنا ہے. وہ پڑوسیوں کا خون چوسے گا اور جب کوئی

लोग हमला करते हैं......अमरीकी प्रतिनिधि दुनिया की राष्ट्रों को उपदेश देते रहे और गोलियां चलती रहीं, टैंक बेधड़क इनसानी शरीर को कुचलते रहे:

अक्तूबर को		युद्ध बन्दी	
13	कोजे द्वीप में	11	जख़मी हुए
14	कोजे द्वीप में	15	जख़मी हुए
23	पूसान में	9	जख़मी हुए
26	कोजे द्वीप में	76	मारे गए
27	यांग च्वान में	5	जख़मी हुए
28, 29, 30	कोजे और मेजू में	180	मारे गए
नवम्बर को		**युद्ध बन्दी**	
6	पोगाम में	21	जख़मी हुए
11	मेजू में	1	मारा गया
16	कोजे में	1	मारा गया
25	कोजे में	32	जख़मी हुए
दिसम्बर को		**युद्ध बन्दी**	
6	कोजे में	11	जख़मी हुए
7	कोजे में	1	मारा गया
7	कोजे में	1	जख़मी हुआ
10	कोजे में	1	मारा गया
10	कोजे में	10	जख़मी हुए
13	पोगाम में	87	मारे गए
13	पोगाम में	120	जख़मी हुए

शायद बन्दूकों और टैंकों से अमरीका वालों ने इन क़ैदियों को यह खुशख़बरी सुनाई है कि अब वह अपने देशों को वापस नहीं जायंगे और इन क़ैदियों को--ख़ुशी से मौत आ गई है !!

जग शान्ति कमेटी की बैठक

दुनिया चकरा सी गई है. एक तरफ़ उसे आशा बंधती है कि लड़ाई बन्द हो जायगा, सारे मसले हल हो जायंगे, दुनिया से लड़ाई का वातावरन ख़तम हो जायगा—दूसरी तरफ़ उसे विश्वास नहीं होता . ....उसे यक़ीन नहीं आता ... लड़ाई कैसे बन्द होगी. क्यों कर बन्द होगी... सामराज जब तक क़ायम हैं, अमीर ग़रीब जब तक मौजूद हैं, एक मुल्क पर दूसरा मुल्क जब तक क़ब्ज़ा किये है, तब तक शान्ति कैसे हो सकती है ? दिल कैसे साफ़ हो सकते हैं, प्यार कैसे बढ़ सकता है. अजीब उलझन है, अजीब समस्या है, कुछ समझ में नहीं आता क्या हो, क्या किया जाय. आम आदमी आशा और निराशा में लटका हुआ है.

ऐसे समय बुडापेस्ट में जग शान्ति कमेटी की बैठक हो रही है. जनता की आंखें 10 अप्रैल से बुडापेस्ट से आने वाली ख़बरों के लिये बेचैन रहेंगी !

لوگ حملہ کرتے ہیں...امریکی پرتیندھی دنیا کی راشٹروں کو اپدیش دیتے رہے اور گولیاں چلتی رہیں' ٹینک بےدھڑک انسانی شریر کو کچلتے رہے :

اکتوبر کو		یدھ بندی
13	کوجے دویپ میں	11 زخمی ہوئے
14	کوجے دویپ میں	15 زخمی ہوئے
23	پوسان میں	9 زخمی ہوئے
26	کوجے دویپ میں	76 مارے گئے
27	یانگ چوان میں	5 زخمی ہوئے
30 29 28	کوجے اور میجو میں	180 مارے گئے
نومبر کو		**یدھ بندی**
6	پوگام میں	21 زخمی ہوئے
11	میجو میں	1 مارا گیا
16	کوجے میں	1 مارا گیا
25	کوجے میں	32 زخمی ہوئے
دسمبر کو		**یدھ بندی**
6	کوجے میں	11 زخمی ہوئے
7	کوجے میں	1 مارا گیا
7	کوجے میں	1 زخمی ہوا
10	کوجے میں	1 مارا گیا
10	کوجے میں	10 زخمی ہوئے
13	پوگام میں	87 مارے گئے
13	پوگام میں	120 زخمی ہوئے

شاید بندوقوں اور ٹینکوں سے امریکہ والوں نے ان قیدیوں کو یہ خوش خبری سنائی ہے کہ اب وہ اپنے دیشوں کو واپس نہیں جائیں گے اور ان قیدیوں کو—خوشی سے موت آ گئی ہے !!

جگ شانتی کمیٹی کی بیٹھک

دنیا چکرا سی گئی ہے . ایک طرف اسے آشا بندھتی ہے کہ لڑائی بند ہو جائے گی' سارے مسئلے حل ہو جائیں گے' دنیا سے لڑائی کا واتاورن ختم ہو جائے گا—دوسری طرف اسے وشواس نہیں ہوتا...اسے یقین نہیں آتا.....لڑائی کیسے بند ہوگی' کیونکر بند ہوگی......سامراج جب تک قائم ہیں' امیر غریب جب تک موجود ہیں' ایک ملک پر دوسرا ملک جب تک قبضہ کئے ہے' تب تک شانتی کیسے ہو سکتی ہے؟ دل کیسے صاف ہو سکتے ہیں' پیار کیسے بڑھ سکتا ہے . عجیب الجھن ہے' عجیب سمسیا ہے . کچھ سمجھ میں نہیں آتا کیا ہو' کیا کیا جائے . عام آدمی آشا اور نراشا میں لٹکا ہوا ہے .

ایسے سمے بڈاپسٹ میں جگ شانتی کمیٹی کی بیٹھک ہو رہی ہے . جنتا کی آنکھیں دس اپریل سے بڈاپسٹ سے آنے والی خبروں کے لئے بےچین رہیں گی !

दिये. प्रेम के आधार पर जो काम होता है उसमें खीज नहीं होती, गुस्सा नहीं होता. जापानी नुमाइन्दों को विदा करते हुए चीनी नुमाइन्दे श्री लियाव छिंग छी ने कहा—"जापानी भाई यहां क़ानून के पूरी तरह पाबन्द रहे हैं और लोक सरकार की देख रेख में शान्ति से जीवन बिता रहे थे. मैं आशा करता हूँ कि जापान भी यह शान्ति और सुख का जीवन बिता सकेंगे इस बिना पर कि यह चीन में रहते थे और काम करते थे. जापानी सरकार इनके साथ न तो किसी तरह का भेद भाव बरतेगी और न इन्हें कोई तकलीफ़ पहुँचायगी."

उन्होंने यह भी कहा—"आज जापान में बीसियों हज़ार चीनी रह रहे हैं. उनमें बहुत से अपने वतन वापस आना चाहते हैं. मेरी आप लोगों से प्रार्थना है कि आप उनकी सहायता कीजिये ताकि वह आसानी से अपने देश आ सकें. उनके वापस लौटने में जो भी खरच होगा चीन की तरफ़ से पाई पाई चुका दिया जायगा."

कितना अपनापन है इस भाशन में, कितना मानव प्रेम है! जापानियों की आंखों में इसी कारन एहसानमन्दी के आंसू भर आए. उन्हें लड़ाई के भयानक सीन अवश्य याद आ गए होंगे. शायद तभी भावुक हो कर एक जापानी ने वहीं मंच से एलान किया—"युद्ध के दिनों में जिन चीनी क़ैदियों की जापान में मौत हुई है उनके फूल चीन वापस आयं, इसकी हम भरसक कोशिश करेंगे."

जहां इनसाफ़ होता है वहां पारटियां किसी को दबाने के बजाय एक दूसरे को कृतज्ञ करने में होड़ लगाती हैं. चीनी और जापानी जनता की ही यह जीत नहीं है, इसका श्रेय उन्हीं देशों को नहीं है. इस बात का सेहरा जग शान्ति आन्दोलन को है जिसने यह वातावरन पैदा कर दिया है, जिसमें यह चमत्कार हो रहे हैं. आज जनता को विश्वास हो चला है कि हर बात, हर समस्या शान्ति मय तरीक़े से मिल जुल कर हल हो सकती है और अच्छी तरह हल हो सकती है।

खरा खोटा

यूनो की जनरल असेम्बली में अमरीका के प्रतिनिधि कह रहे थे—"कोरिया और चीन के क़ैदी कमयुनिस्टों के गुलाम बनना नहीं चाहते. वह "आज़ाद" रहना चाहते हैं. उनका कहना है कि अगर उन्हें बिना उनकी मरज़ी के वापस भेजा गया तो वह आत्म हत्या कर लेंगे. हम उन क़ैदियों के साथ ज़ियादती नहीं कर सकते......"

और दूसरी तरफ़ जंगी क़ैदियों के कैम्पों में अमरीकी गोली चला रहे थे, टैंक से उन्हें कुचल रहे थे. कभी यह शिकायत थी कि वह क़ैदी कम्युनिस्ट गाने गाते हैं और कभी इस बात का बहाना था कि हमारे अफ़सरों पर यह

دیئے۔ پریم کے آدھار پر جو کام ہوتا ہے اُس میں کھیج نہیں ہوتی، غصہ نہیں ہوتا۔ جاپانی نمائندوں کو بدا کرتے ہوئے چینی نمائندے شری لیاؤ چھنگ چھی نے کہا—" جاپانی بھائی یہاں قانون کے پوری طرح پابند رہے ہیں اور لوک سرکار کی دیکھ ریکھ میں شانتی سے جیون بتا رہے تھے۔ میں آشا کرتا ہوں کہ جاپان میں بھی یہ شانتی اور سکھ کا جیون بتا سکیں گے اِس بنا پر کہ یہ چین میں رہتے تھے اور کام کرتے تھے۔ جاپانی سرکار اِن کے ساتھ نہ تو کسی طرح کا بھید بھاؤ برتے گی اور نہ انہیں کوئی تکلیف پہونچائے گی۔"

اُنھوں نے یہ بھی کہا—"آج جاپان میں بیسیوں ہزار چینی رہ رہے ہیں۔ اُن میں بہت سے اپنے وطن واپس آنا چاہتے ہیں۔ میری آپ لوگوں سے پرارتھنا ہے کہ آپ اُن کی سہائتا کیجئے تاکہ وہ آسانی سے اپنے دیش آسکیں۔ اُن کے واپس لوٹنے میں جو بھی خرچ ہوگا چین کی طرف سے پائی پائی چکا دیا جائے گا۔"

کتنا اپنا پن ہے اِس بھاشن میں، کتنا مانو پریم ہے! جاپانیوں کی آنکھوں میں اسی کارن احسان مندی کے آنسو بھر آئے۔ اُنہیں لڑائی کے بھیانک سین اوشیہ یاد آگئے ہونگے۔ شاید تبھی بھاوک ہو کر ایک جاپانی نے وہیں منچ سے اعلان کیا—"یدھ کے دنوں میں جن چینی قیدیوں کی جاپان میں موت ہوئی ہے اُن کے پھول چین واپس آئیں، اِس کی ہم بھرسک کوشش کریں گے۔"

جہاں انصاف ہوتا ہے وہاں پارٹیاں کسی کو دبانے کے بجائے ایک دوسرے کو کرتگ کرنے میں ہوڑ لگاتی ہیں۔ چینی اور جاپانی جنتا کی ہی یہ جیت نہیں ہے، اِس کا شریہ اُنہیں دیشوں کو نہیں ہے۔ اِس بات کا سہرا جگ شانتی آندولن کو ہے جس نے یہ واتاورن پیدا کر دیا ہے، جس میں یہ چمتکار ہو رہے ہیں۔ آج جنتا کو وشواس ہو چلا ہے کہ ہر بات، ہر سمسیا شانتی مے طریقے سے مل جل کر حل ہوسکتی ہے اور اچھی طرح حل ہو سکتی ہے!

کھرا کھوٹا

یونو کی جنرل اسمبلی میں امریکہ کے پرتیندھی کہہ رہے تھے—" کوریا اور چین کے قیدی کمیونسٹوں کے غلام بننا نہیں چاہتے۔ وہ "آزاد" رہنا چاہتے ہیں۔ اُن کا کہنا ہے کہ اگر انہیں بنا اُن کی مرضی کے واپس بھیجا گیا تو وہ آتم ہتیا کرلیں گے۔ ہم اُن قیدیوں کے ساتھ زیادتی نہیں کر سکتے......"

اور دوسری طرف جنگی قیدیوں کے کیمپوں میں امریکی گولی چلا رہے تھے، ٹینک سے اُنہیں کچل رہے تھے۔ کبھی یہ شکایت تھی کہ یہ قیدی کمیونسٹ گانے گاتے ہیں اور کبھی اِس بات کا بہانہ تھا کہ ہمارے افسروں پر یہ

नहीं. सिमेटरी अंगरेजों की है और सिमेटरी के सारे नौकर अंगरेजों के हैं, लन्दन के सेवक हैं, रानी एलजिबेथ के ताबेदार हैं. दुशमनों के यह खुले फिफ्थ कालमिस्ट कब तक हमारे सीनों पर मूंग दलते रहेंगे ! यह ख़तरा कब तक हमारे सिर पर सवार रहेगा. आख़िर यह कब तक !

काश आज के हिन्दुस्तान में वह शायर ज़िन्दा होता, अपनी आंख से वह देख लेता कि उसका शेर ग़लत है, उसके भाव ग़लत हैं. यहां शहीदों की चिताओं पर मेले नहीं होते, शहीद करने वालों को सम्मान मिलता है, उनकी समाधि बनाई जाती है .....वह ग़ुस्से में, पूरा यक़ीन है, अपनी इन लाइनों की हर प्रति को आग में जला देता—

"शहीदों की मज़ारों पर जुटेंगे हर बरस मेले
वतन पे मरने वालों का यही बाक़ी निशां होगा."

शान्ति आन्दोलन का चमत्कार

15 फ़रवरी को पीकिंग के एक सुन्दर हाल में दो प्रतिनिधि मंडल मिल रहे थे. शायद उस दिन दुनिया के दूसरे हालों में भी प्रतिनिधि मिले हों ! पर इन प्रतिनिधियों की रूप रेखा निराली थी, दूसरे प्रतिनिधि मंडलों से बिलकुल अलग, यह सरकार के नुमाइन्दे नहीं थे, यह जनता की आवाज़ थे. इन्हें कूटनीति नहीं आती थी, यह तो केवल प्रेम भाव के उपासक थे चरचिल आइज़नहावर भी मिले हैं, ईडन और डलेस भी मिले हैं. यूनो में रोज़ ही प्रतिनिधि मंडल मिलते रहते हैं—दूसरे प्रतिनिधि मंडल शायद समस्याएं पैदा किया करते हैं, झगड़ों को हवा दिया करते हैं .....पर यह प्रतिनिधि शान्ति से बैठ झगड़े का फ़ैसला कर रहे थे. यहां बात इस बात से शुरू नहीं हुई कि कौन किसका दुशमन है, किसने किसके साथ ज़ियादती की. यह गुज़री हुई बात थी और गुज़री हुई बातों पर ख़राब करने के लिये इनके पास समय नहीं था. इनके पास समस्या थी, सुलह की इच्छा थी, प्रेम का आधार था, विश्वास था और सामने ख़ूबसूरत भविष्य नाच रहा था.

बहुत से जापानी चीन में रहते हैं. इन लोगों को वापस जाने की समस्या पर ग़ौर करने के लिये जापान रेड क्रास सोसाइटी, जापान शान्ति कमेटी और चीन जापान मैत्री संघ के नुमाइन्दे चीन आए थे. चीन रेड क्रास सोसाइटी, चीन शान्ति कमेटी और चीन जापान मैत्री संघ के प्रतिनिधियों ने उनका स्वागत किया. जापान रेडक्रास सोसाइटी के श्री शिमा जो ने कहा—"हमारी बातचीत की सफलता यह बात साबित करती है कि शान्ति, दोस्ती और सच्चे मानव प्रेम के आधार पर हर तरह की कठिनाई पर क़ाबू पाया जा सकता है"

बातचीत सफल हो गई, मामले तय हो गए. 5 मार्च को एक समझौते पर दोनों प्रतिनिधियों ने दस्तख़त कर

نہیں . سنٹیمری انگریزوں کی ہے اور سمیٹری کے سارے نوکر انگریزوں کے ہیں' للدن کے سیوک ہیں' رانی الزابتھ کے تابعدار ہیں . دشمنوں کے یہ کھلے ففتھ کالمسٹ کب تک ہمارے سینوں پر مونگ دلتے رہیں گے! یہ خطرہ کب تک ہمارے سر پر سوار رہے گا . آخر یہ کب تک !

کاش آج کے ہندستان میں وہ شاعر زندہ ہوتا' اپنی آنکھ سے وہ دیکھ لیتا کہ اس کا شعر غلط ہے' اس کے بھاؤ غلط ہیں . یہاں شہیدوں کی چتاؤں پر میلے نہیں ہوتے' شہید کرنے والوں کو سمان ملتا ہے' ان کی سمادھی بنائی جاتی ہے......وہ غصے میں' پورا یقین ہے' اپنی ان لائنوں کی ہر پرتی کو آگ میں جلا دیتا—

"شہیدوں کی مزاروں پر جٹیں گے ہر برس میلے
وطن پہ مرنے والوں کا یہی باقی نشاں ہوگا."

شانتی آندولن کا چمتکار

15 فروری کو پیکنگ کے ایک سندر ہال میں دو پرتیندھی منڈل مل رہے تھے. شاید اس دن دنیا کے دوسرے ہالوں میں بھی پرتیندھی ملے ہوں ! پر ان پرتیندھیوں کی روپ ریکھا نرالی تھی' دوسرے پرتیندھی منڈلوں سے بالکل الگ' یہ سرکار کے نمائندے نہیں تھے' یہ جنتا کی آواز تھے. انہیں کوٹ نیتی نہیں آتی تھی' یہ تو کیول پریم بھاؤ کے اپاسک تھے . چرچل آئزن ہاور بھی ملے ہیں' ایڈن اور ڈلس بھی ملے ہیں یونو میں روز ہی پرتیندھی منڈل ملتے رہتے ہیں—دوسرے پرتیندھی منڈل شاید سمسیائیں پیدا کیا کرتے ہیں' جھگڑوں کو ہوا دیا کرتے ہیں......پر یہ پرتیندھی شانتی سے بیٹھ جھگڑے کا فیصلہ کر رہے تھے . یہاں بات اس بات سے شروع نہیں ہوئی کہ کون کس کا دشمن ہے' کس نے کس کے ساتھ زیادتی کی. یہ گزری ہوئی بات تھی اور گزری ہوئی باتوں پر خراب کرنے کے لئے ان کے پاس سمے نہیں تھا . ان کے پاس سمسیا تھی' صلح کی اچھا تھی' پریم کا آدھار تھا' وشواس تھا اور سامنے خوبصورت بھوشیہ ناچ رہا تھا .

بہت سے جاپانی چین میں رہتے ہیں . ان لوگوں کو واپس جانے کی سمسیا پر غور کرنے کے لئے جاپان ریڈکراس سوسائٹی' جاپان شانتی کمیٹی اور چین جاپان میتری سنگھ کے نمائندے چین آئے تھے' چین ریڈکراس سوسائٹی' چین شانتی کمیٹی اور چین جاپان میتری سنگھ کے پرتیندھیوں نے ان کا سواگت کیا . جاپان ریڈکراس سوسائٹی کے شری شما زو نے کہا—"ہماری بات چیت کی سپھلتا یہ بات ثابت کرتی ہے کہ شانتی' دوستی اور سچے مانو پریم کے آدھار پر ہر طرح کی کٹھنائی پر قابو پایا جاسکتا ہے".

بات چیت سپھل ہو گئی' معاملے طے ہو گئے. 5 مارچ کو ایک سمجھوتے پر دونوں پرتیندھیوں نے دستخط کر

प्रवासी की डायरी

इमफाल की ज़मीन पर क़दम रखते ही बीती यादें ताज़ा हो जाती हैं. संघर्ष की, आन्दोलन की, त्याग की तस्वीरों का एक अटूट तांता बंध जाता है. कभी मनुष्य सिहर उठता है, जिस्म में कंपन पैदा होता है और कभी उत्साह उत्पन्न होता है, ढारस बंधती है, कानों में "करो या मरो" का नारा गूंज उठता है. और इन्हीं चित्रों के बीच घूमते घूमते एक जगह विचार आकर रुक जाते हैं. आंखें ढूंढती हैं—उन्हें जिन्होंने देश से बहुत दूर आज़ादी का झंडा लहराया था, जिन्होंने ग़ुलामी की मक्खन रोटी से आज़ादी की घास को बेहतर समझा था. जिन्होंने दिल्ली पहुँचने की शपथ ली थी, जिन्होंने मातृ भूमि पर अपना अधिकार जमाने के लिये तन मन धन की बाज़ी लगा दी थी. वह वीर दिल्ली नहीं पहुंचे पर इमफाल ज़रूर आए थे. देश को वह आज़ाद नहीं देख सके पर आज़ादी के पौधे को वह अपने ख़ून से ज़रूर सींच गए. इमफाल में उस समय कितनी ख़ुशियां मनाई गई होंगी, कैसा सुहाना समां बंधा होगा जब आज़ाद हिन्द फ़ौज के सिपाहियों ने "आज़ाद हिन्द" का झंडा पहली बार लहराया होगा—पर यह सब यादें हैं, भुलाई हुई बातें !

इमफाल में उनकी यादगार होनी चाहिये थी, हमारे देश भक्तों की समाधि होनी चाहिये थी . ...पर यहां मामला उलटा है, यहां उलटी गंगा बहती है. जो अंगरेज़ों के साथी थे, जिन्होंने देश भक्तों पर गोली चलाई थी उनका आदर है, मान है, उनकी समाधि है. और देश भक्तों को ! याद के किसी कोने में मरोड़ कर डाल दिया गया.

इमफाल की सिमेटरी को देख कर एक बारगी मन बोझिल हो जाता है, दिमाग़ चकराने लगता है. यकायक सवाल उठता है—यहां राज किसका है—भारत वालों का या अंगरेज़ों का. अंगरेज़ के नमकख़ारों की समाधि पर हज़ारों रुपए ख़रच होते हैं, भारत सरकार कुल ख़रच का दस फ़ी सदी ख़ुद अदा करती है......पर आज़ाद हिन्द के सिपाहियों ने कौन सी ख़ता की है कि उनकी समाधि नहीं है, उनके कारनामों की याद की ज़रूरत नहीं है. शायद वह अंगरेज़ के बाग़ी थे और बाग़ियों को सम्मान देना कामनवेल्थ की रानी को नाख़ुश करना होगा !!

देश हमारा, धन हमारा, आदमी हमारे पर सिमेटरी के प्रबन्ध पर हमारा कोई अधिकार नहीं, कोई अंकुश

پرواسی کی ڈائری

اِمپھال کی زمین پر قدم رکھتے ہی بیتی یادیں تازہ ہو جاتی ہیں ۔ سنگھرش کی' آندولن کی' تیاگ کی تصویروں کا ایک اٹوٹ تانتا بندھ جاتا ہے ۔ کبھی منشیہ سہر اُٹھتا ہے' جسم میں کمپن پیدا ہوتا ہے اور کبھی اُتساہ اُتپن ہوتا ہے' ڈھارس بندھتی ہے' کانوں میں "کرو یا مرو" کا نعرہ گونج اُٹھتا ہے. اور انہیں چتروں کے بیچ گھومتے گھومتے ایک جگہ وچار آکر رک جاتے ہیں ۔ آنکھیں ڈھونڈھتی ہیں—اُنہیں جنہوں نے دیش سے بہت دور آزادی کا جھنڈا لہرایا تھا' جنہوں نے غلامی کی مکھن روٹی سے آزادی کی گھاس کو بہتر سمجھا تھا ۔ جنہوں نے دلی پہونچنے کی شپتھ لی تھی' جنہوں نے ماتر بھومی پر اپنا ادھیکار جمانے کے لئے تن من دھن کی بازی لگادی تھی ۔ وہ ویر دلی نہیں پہونچے پر امپھال ضرور آئے تھے ۔ دیش کو وہ آزاد نہیں دیکھ سکے پر آزادی کے پودھے کو وہ اپنے خون سے ضرور سینچ گئے. امپھال میں اُس سمے کتنی خوشیاں منائی گئی ہونگی' کیسا سہانا سماں بندھا ہوگا جب آزاد ہند فوج کے سپاہیوں نے "آزاد ہند" کا جھنڈا پہلی بار لہرایا ہوگا—پر یہ سب یادیں ہیں' بھلائی ہوئی باتیں !

امپھال میں اُن کی یادگار ہونی چاہئے تھی' ہمارے دیش بھکتوں کی سمادھی ہونی چاہئے تھی......پر یہاں معاملہ اُلٹا ہے' یہاں اُلٹی گنگا بہتی ہے ۔ جو انگریزوں کے ساتھی تھے' جنہوں نے دیش بھکتوں پر گولی چلائی تھی اُن کا آدر ہے' مان ہے' اُن کی سمادھی ہے ۔ اور دیش بھکتوں کو ! یاد کے کسی کونے میں مروڑ کر ڈال دیا گیا ۔

امپھال کی سمیٹری کو دیکھ کر ایک بارگی من بوجھل ہو جاتا ہے' دماغ چکرانے لگتا ہے. یکایک سوال اُٹھتا ہے—یہاں راج کس کا ہے—بھارت والوں کا یا انگریزوں کا ۔ انگریز کے نمکخواروں کی سمادھی پر ہزاروں روپیہ خرچ ہوتے ہیں' بھارت سرکار کل خرچ کا دس فی صدی خود ادا کرتی ہے... پر آزاد ہند کے سپاہیوں نے کونسی خطا کی ہے کہ اُن کی سمادھی نہیں ہے' ان کے کارناموں کی یاد کی ضرورت نہیں ہے ۔ شاید وہ انگریز کے باغی تھے اور باغیوں کو سمان دینا کامن ویلتھ کی رانی کو ناخوش کرنا ہوگا !!

دیش ہمارا' دھن ہمارا' آدمی ہمارے پر سمیٹری کے پربندھ پر ہمارا کوئی ادھیکار نہیں' کوئی انکش

और अगर पंडित पंत की राय में प्रजातंत्र में सत्याग्रह के लिये जगह नहीं है तो क्या दुराग्रह के लिये जगह है. उनको तो जनता का हौसला बढ़ाना चाहिये कि वह सत्याग्रह, सच्चे सत्याग्रह, के लिये हमेशा दिल जान से तैयार रहे.

अध्यापकों के सत्याग्रह के सम्बन्ध में हमारा विचार है कि उन्होंने यह क़दम मजबूर हो कर लाचारी की हालत में उठाया. उनका यह क़दम सरकार की लापरवाही का नतीजा दिखाता है न कि उनकी अपनी बेचैनी का. फिर सवाल यह है कि उनके आगे दूसरा रास्ता था ही क्या ? लिखा पढ़ी, चिट्ठी प्रार्थना तो वह काफ़ी कर चुके और कोई रास्ता न देखकर उन्होंने अनशन शुरू किया या यह अगला क़दम उठाया. उन्होंने यह बड़ा अच्छा किया कि पंजाब के अध्यापकों की तरह उत्तर प्रदेश वालों ने मुकम्मल हड़ताल नहीं की और अपने काम पर डटे रहे. इससे उनके नेक इरादों का पता चलता है.

सरकार का फ़र्ज़

ऊपर की तफ़सील से हर कोई महसूस करेगा कि अध्यापकों ने जो मांगें रखी हैं वह इनसानियत, ईमान और इनसाफ़ की मांगे हैं और उनके मनवाने के जो क़दम उठाया गया वह सरकार को ख़बरदार कर देने के लिये. सरकार का फ़र्ज़ है कि इनसाफ़ की इन मांगों पर इनसाफ़ से सोचे, इनसाफ़ से फ़ैसला दे और उन पर इनसाफ़ से चले और दूसरों को चलवाए. हम यह मानने से इनकार करते हैं कि सरकार के पास पैसा नहीं है. रामपुर बनारस या नैनीताल में सरकार कालिज चलाकर हजारों रुपया स्वाहा कर सकती है, जब वह रुड़की यूनिवर्सिटी या फ़ालतू के कारख़ाने खोल कर लाखों रुपया बर्बाद करसकती है. और जब पंडित पंत के शब्दों में 'बड़े बड़े पर अन्दर से खोखले" विभाग जैसे प्लानिंग, पंचायत और सहयोग वग़ैरा की मन चली योजनाओं में करोड़ों रुपया फूंक सकती है—तो देहात के स्कूलों में पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिये तनख़ा देने का इन्तज़ाम नहीं कर सकती ? कर सकती है—दिल की ज़रूरत है, दिल चाहिये.

आख़ीर में हमारी अरज़ है कि सरकार को चाहिये कि तालीम या शिक्षा को स्वावलम्बी बनाए और देहाती दस्तकारी के ज़रिये तालीम दी जाय. इसके लिये सरकार को अपनी उद्योग नीति, अर्थ नीति, घरेलू नीति वग़ैरा को बदल कर स्वावलम्बन और विकेन्द्र करन के रास्ते पर लाना होगा. और ऐसा करने में उस नाम के लोक कल्यान कारी या सैक्युलर राज की जगह सच्चे मानव हितकारी या सर्वोदय आदर्श को सामने रखना पड़ेगा. हमें विश्वास है कि अगर इस तरह सरकार चलने की हिम्मत दिखाए तो क्या अध्यापक और क्या जनता सभी उसका साथ देंगे.

—सुरेश रामभाई

اور اگر پنڈت پنت کی رائے میں پرجا تنتر میں ستیا گرہ کے لئے جگہ نہیں ہے تو کیا دُرا گرہ کے لئے جگہ ہے . اُن کو تو جنتا کا حوصلہ بڑھانا چاہئے کہ وہ ستیاگرہ سچے ستیاگرہ کے لئے ہمیشہ دل جان سے تیار رہے.

ادھیاپکوں کے ستیا گرہ کے سمبندھ میں ہمارا وچار ہے کہ اُنہوں نے یہ قدم مجبور ہو کر لاچاری کی حالت میں اُٹھایا . اُن کا یہ قدم سرکار کی لاپرواہی کا نتیجہ دکھاتا ہے نہ کہ اُن کی اپنی بے چینی کا . پھر سوال یہ ہے کہ اُن کے آگے دوسرا راستہ تھا ہی کیا ؟ لکھا پڑھی، چٹھی پرارتھنا تو وہ کافی کر چکے اور کوئی راستہ نہ دیکھ کر اُنہوں نے ان شن شروع کیا یا یہ اگلا قدم اُٹھایا . اُنہوں نے یہ بڑا اچھا کیا کہ پنجاب کے ادھیاپکوں کی طرح اُتر پردیش والوں نے مکمل ہڑتال نہیں کی اور اپنے کام پر ڈٹے رہے . اس سے اُن کے نیک اِرادوں کا پتہ چلتا ہے .

سرکار کا فرض

اُوپر کی تفصیل سے ہر کوئی محسوس کریگا کہ ادھیاپکوں نے جو مانگیں رکھی ہیں وہ اِنسانیت، ایمان اور انصاف کی مانگیں ہیں اور ان کے منوانے کے لئے جو قدم اُٹھایا گیا وہ سرکار کو خبردار کر دینے کے لئے . سرکار کا فرض ہے کہ اِنصاف کی اِن مانگوں پر اِنصاف سے سوچے، اِنصاف سے فیصلہ دے اور اُن پر اِنصاف سے چلے اور دوسروں کو چلوائے . ہم یہ ماننے سے اِنکار کرتے ہیں کہ سرکار کے پاس پیسہ نہیں ہے . رام پور، بنارس یا نینی تال میں سرکار کالج چلا کر ہزاروں روپیہ سواہا کر سکتی ہے، جب وہ رُڑکی یونیورسٹی یا فالتو کے کارخانے کھول کر لاکھوں روپیہ برباد کر سکتی ہے اور جب پنڈت پنت کے شبدوں میں " بڑے بڑے پر اندر سے کھوکھلے " وبھاگ جیسے پلاننگ، پنچایت اور سہیوگ وغیرہ کی من چلی یوجناؤں میں کروڑوں روپیہ پھونک سکتی ہے—تو دیہات کے اِسکولوں میں پڑھانے والے ادھیاپکوں کے لئے تنخواہ دینے کا انتظام نہیں کر سکتی ؟ کر سکتی ہے—دل کی ضرورت ہے، دل چاہئے .

آخیر میں ہماری عرض ہے کہ سرکار کو چاہئے کہ تعلیم یا شکشا کو سواولمبی بنائے اور دیہاتی دستکاری کے ذریعے تعلیم دی جائے . اِس کے لئے سرکار کو اپنی اُدیوگ نیتی ارتھ نیتی گھریلو نیتی وغیرہ کو بدل کر سواولمبن اور وکیندری کرن کے راستے پر لانا ہوگا . اور ایسا کرنے میں اُس نام کے لوک کلیان کاری یا سیکولر راج کی جگہ سچے مانو ہتکاری یا سروودے آدرش کو سامنے رکھنا پڑے گا . ہمیں وشواس ہے کہ اگر اِس طرف سرکار چلنے کی ہمت دکھائے تو کیا ادھیاپک اور کیا جنتا سبھی اُس کا ساتھ دیں گے .

—سریش رام بھائی

के जिस आय तो सही बताते चले गए. उन्हें क्या खबर कि कुल रुपया बोर्ड के पास कितना है कितना नहीं और बोर्ड के मंत्री जी मजबूर थे चुनाव में कांगरेस को जिताने पर.

इस तरह चुनाव काल का खमयाजा आजकल हमारे अध्यापकों को भुगतना पड़ रहा है.

क़दम सही या ग़लत

अब सवाल यह है कि अध्यापकों ने जो यह अनशन किया या अध्यापक मंडल के फ़ैसले के अनुसार अब जो सत्याग्रह चल रहा है वह सही है या ग़लत. प्रदेश के मुख्य मंत्री ने इसे बेजा दबाव कहा है और नये शिक्षा मंत्री ने राष्ट्रपिता की दुहाई देते हुए कहा है कि वह तो ऐसा काम कभी नहीं करते और ज़रूर ग़लत ठहराते. शिक्षा मंत्री ने यह भी धमकी दी कि अगर अध्यापक काम पर नहीं आते तो इसी तनख़्वाह पर नये आदमी भरती कर लिये जायंगे. उधर हमें यह भी पता चला है—कहां तक सही है हम नहीं कह सकते—कि सरकार ने ज़िला मजिस्ट्रेटों को लिखा है कि जो पटवारी स्तीफ़ा दे दिये हैं उनकी जगह अध्यापकों को पटवारी बना दो !!

उत्तर प्रदेश के शिक्षा मंत्री ने जिस ग़ैर-ज़िम्मेदारी का इज़हार अध्यापकों के मामले में किया है उससे बहुतों को शुबा है कि मुख्य मंत्री की यह पसंद कहां तक ठीक या कारगर थी. पर हमारा तो सिर्फ़ यह कहना है कि शिक्षा मंत्री को राष्ट्रपिता की दुहाई देना अच्छा नहीं लगता. राष्ट्रपिता का नाम लेने के पहले हमारे मिनिस्ट्रों को बंदरिया बाग़ की कोठियों, फ़ोर्ड या स्टूडी बेकर की विलायती मोटरों और कानपुर के रईसों के आराम घरों में बैठकें देना छोड़ना होगा. शिक्षा मंत्री केवल शिक्षा मंत्री की कुर्सी पर बैठाये जाने से बापू के नाम पर किसी को फटकारने के अधिकारी नहीं बन जाते. हम इस सम्बन्ध में ज़ियादा न कह कर शिक्षा मंत्री से प्रार्थना करेंगे कि वह राष्ट्रपिता राजेन्द्र बाबू का 17 जनवरी 1953 को गांधियन सेमीनार में नई दिल्ली में दिया हुआ भाषन ध्यान से पढ़ें और मनन करें. उसमें राष्ट्रपति ने कहा है कि भारत सरकार ने गांधी जी के, क्या आर्थिक क्या राजकाजी किसी कार्य क्रम को नहीं अपनाया और इसलिये वह (राजेन्द्र बाबू) बापू का नाम लेने लायक़ अपने को नहीं समझते. कहां राष्ट्रपति की नम्र और सच्ची बानी और कहां उत्तर प्रदेश के शिक्षा मंत्री की यह अकड़ और धौंस !

उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री अकसर कहा करते हैं कि प्रजातंत्र में सत्याग्रह के लिये जगह नहीं है. ताज्जुब है कि पंडित पंत जैसे अनुभवी और बुज़ुर्ग नेता ऐसी बात कहते हैं. क्योंकि, नम्रता से हमारा कहना है कि अगर सत्याग्रह, अहिंसा द्वारा सत्य पर आग्रह है तो हमेशा हर कहीं उसकी जगह है [illegible] इन्सान इन्सान हुए बिना नहीं [illegible].

کے بل [illegible] تو هر بتاتے چلے گئے. انہیں کیا خبر کہ کل روپیہ بورڈ کے پاس کتنا ہے کتنا نہیں اور بورڈ کے منتری جی مجبور تھے چناؤ میں کانگریس کو جتانے پر!

اس طرح چناؤ کال کا خمیازہ آج کل همارے ادھیاپکوں کو بھگتنا پڑ رہا ہے .

قدم صحیح یا غلط

اب سوال یہ ہے کہ ادھیاپکوں نے جو یہ ان شن کیا یا ادھیاپک منڈل کے فیصلے کے انوسار اب جو ستیاگرہ چل رہا ہے وہ صحیح ہے یا غلط. پردیش کے مکھیہ منتری نے اسے بیجا دباؤ کہا ہے اور نئے شکشا منتری نے راشٹر پتا کی دهائی دیتے ہوئے کہا ہے کہ وہ تو ایسا کام کبھی نہیں کرتے اور ضرور غلط ٹھہراتے . شکشا منتری نے یہ بھی دھمکی دی کہ اگر ادھیاپک کام پر نہیں آتے تو اسی تنخواہ پر نئے آدمی بھرتی کر لئے جائینگے . ادھر ہمیں یہ بھی پتہ چلا ہے—کہاں تک صحیح ہے ہم نہیں کہ سکتے—کہ سرکار نے ضلع مجسٹریٹوں کو لکھا ہے کہ جو پٹواری استعفیٰ دے دیئے ہیں اُن کی جگہ ادھیاپکوں کو پٹواری بنا دو !!

اُتر پردیش کے شکشا منتری نے جس غیر ذمہ داری کا اظہار ادھیاپکوں کے معاملے میں کیا ہے اُس سے بہتوں کو شبہ ہے کہ مکھیہ منتری کی یہ پسند کہاں تک ٹھیک یا کارگر تھی. پر همارا تو صرف یہ کہنا ہے کہ شکشا منتری کو راشٹر پتا کی دهائی دینا اچھا نہیں لگتا . راشٹر پتا کے نام لینے کے پہلے همارے منسٹروں کو بندریا باغ کی کوٹھیوں' فورڈ یا اسٹوڈ بیکر کی ولایتی موٹروں اور کانپور کے رئیسوں کے آرام گھروں میں بیٹھکیں دینا چھوڑنا ہوگا . شکشا منتری کیول شکشا منتری کی کرسی پر بیٹھائے جانے سے باپو کے نام پر کسی کو پھٹکارنے کے ادھیکاری نہیں بن جاتے . هم اس سمبندھ میں زیادہ نہ کہکر شکشا منتری سے پرارتھنا کرینگے کہ وہ راشٹر پتا راجیندر باپو کا 17 جنوری 1953 کو گاندھین سیمنار میں نئی دلی میں دیا ہوا بھاشن دھیان سے پڑھیں اور منن کریں . اس میں راشٹر پتی نے کہا ہے کہ بھارت سرکار نے گاندھی جی کے' کیا آرتھک' کیا راج کاجی' کسی کاریہ کرم کو نہیں اپنایا اور اس لئے وہ (راجیندر باپو) باپو کا نام لینے لائق اپنے کو نہیں سمجھتے . کہاں راشٹر پتی کی یہ نمر اور سچی بانی اور کہاں اُتر پردیش کے شکشا منتری کی یہ اکڑ اور دھونس !

اُتر پردیش کے مکھیہ منتری اکثر کہا کرتے ہیں کہ پرجا تنتر میں ستیاگرہ کے لئے جگہ نہیں ہے . تعجب ہے کہ پنڈت پنت جیسے انوبھوی اور بزرگ نیتا ایسی بات کہتے ہیں . کیونکہ' نمرتا سے همارا کہنا ہے کہ اگر ستیا گرہ' اہنسا دوارا ستیہ پر آگرہ ہے تو ہمیشہ ہر کہیں اُس کی جگہ ہے [illegible] انسان [illegible] ہوئے بنا نہیں [illegible]

ने गाय का महसूल एक रुपया मांगा. बेचारे अध्यापक के पास रुपया कहां था, गाय रोक ली गई. फिर कहीं से हाथ पैर जोड़ कर एक रुपया उधार ले कर आया, तब गाय मिली और उसके बाद वह शहर की हद छोड़ कर नज़दीक के गांव में जा कर रहने लगा !

इस तरह हम देखते हैं कि अध्यापकों की तमाम मांगें ठीक हैं. यह मांगें केवल इनसाफ़ चाहती हैं और किसी भी इन्साफ़ पसन्द हकूमत या सरकार को उन पर एतराज़ नहीं होना चाहिये. बल्कि उन्हें ख़ुशी होनी चाहिये कि अध्यापक वर्ग जगा हुआ है और अपनी ज़िम्मेदारी महसूस करता है.

यह मुसीबत क्यों ?

हर एक को ख़याल पैदा होगा कि जब ज़िला-बोर्ड अध्यापकों को तनख़ा नहीं दे सकते थे तो क्यों अध्यापक रखे गए, क्यों स्कूल बढ़ाए गए. क्या ज़िला-बोर्डों के सभापति या मंत्री को अपने बजट वग़ैरा का कोई अन्दाज़ नहीं था ? इस सम्बन्ध में हमें जो जानकारी अवध के एक ज़िले से मिली है वह यह है : नवम्बर-दिसम्बर 1951 में चुनाव का बोल बाला था और कांगरेस उन्हें जीतने के लिये पूरी ताक़त जुटा रही थी. ज़ियादातर ज़िला बोर्डों के सभापति कांगरेसी थे, बल्कि सरकार के नामज़द थे. यही नहीं, उनमें से कुछ तो ख़ुद भी असेम्बली कौन्सिल या पालियामेन्ट की मेम्बरी के लिये उम्मीदवार थे. इसलिये ज़रूरत पड़ी गांव घूम कर स्पीच दे कर वोट पकड़ने वालों की. लिहाज़ा यह हुआ कि जो कोई भी अच्छा बोलने वाला मिला—और अगर वह मिडिल पास हुआ—तो उससे कह दिया कि चुनाव में काम करो, अध्यापक बना देंगे इस तरह अकसर ज़िला बोर्डों की सारी मशीनरी कांगरेस की तरफ़ से चुनाव में फेर दी गई. नतीजा यह हुआ कि नवम्बर-दिसम्बर जनवरी-फ़रवरी (1951-1952) अकसर स्कूलों में कई कई दिन क्या हफ़्तों तक पढ़ाने वाले मास्टर का पता ही न होता. चुनाव की गर्मी में न हकूमत को, न कांगरेस को, न ज़िला बोर्ड के अफ़सरों को कुछ ध्यान ही रहा कि स्कूलों की क्या गत होने जा रही है.

यह जो नये नये चुनाव एजेन्ट रखे गये इनकी तनख़ा चुनाव के दौरान की, यानी नवम्बर, दिसम्बर, जनवरी की तो दे दी गई. पर उसके बाद जब कांगरेस अकसरियत से असेम्बली पालियामेन्ट में आ गई—जो मस्ती आई उसमें कहां ज़िला बोर्ड और कहां बेचारा अध्यापक ! हमें यह भी मालूम हुआ कि बोर्ड का पूरा बजट ख़र्च बोर्ड का मंत्री करता है, लेकिन मास्टरों की तनख़ा के बिल डिप्टी इन्स्पेक्टर आफ़ स्कूल नाम के पदाधिकारी किया करते हैं उनके पास जब नवम्बर-दिसम्बर 1951 जनवरी 1952 में अध्यापकों

گائے کا محصول ایک روپیہ مانگا. بیچارے ادھیاپک کے پاس روپیہ کہاں تھا؟ گائے روک لی گئی . پھر کہیں سے ہاتھ پیر جوڑ کر ایک روپیہ اُدھار لیکر آیا، تب گائے ملی اور اُس کے بعد وہ شہر کی حد چھوڑ کر نزدیک کے گاؤں میں جاکر رہنے لگا !

اِس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ ادھیاپکوں کی تمام مانگیں ٹھیک ہیں . یہ مانگیں کیول اِنصاف چاہتی ہیں اور کسی بھی اِنصاف پسند حکومت یا سرکار کو اُن پر اعتراض نہیں ہونا چاہئے. بلکہ اُنہیں خوشی ہونی چاہئے کہ ادھیاپک ورگ جگا ہوا ہے اور اپنی ذمہ‌داری محسوس کرتا ہے .

یہ مصیبت کیوں؟

ہر ایک کو خیال پیدا ہوگا کہ جب ضلع بورڈ ادھیاپکوں کو تنخواہ نہیں دے سکتے تھے تو کیوں ادھیاپک رکھے گئے، کیوں اِسکول بڑھائے گئے . کیا ضلع بورڈوں کے سبھاپتی یا منتری کو اپنے بجٹ وغیرہ کا کوئی انداز نہیں تھا؟ اِس سمبندھ میں ہمیں جو جانکاری اودھ کے ایک ضلع سے ملی ہے وہ یہ ہے: نومبر دسمبر 1951 میں چناؤ کا بول بالا تھا اور کانگریس اُنہیں جیتنے کے لئے پوری طاقت جٹا رہی تھی. زیادہ تر ضلع بورڈوں کے سبھاپتی کانگریسی تھے، سرکار کے نامزد تھے . یہی نہیں، اُن میں سے کچھ تو خود بھی اسمبلی کونسل یا پارلیامنٹ کی ممبری کے لئے اُمیدوار تھے . اس لئے ضرورت پڑی گاؤں گاؤں گھوم کر اسپیچ دے کر ووٹ پکڑنے والوں کی . لہذا یہ ہوا کہ جو کوئی بھی اچھا بولنے والا ملا—اور اگر وہ مڈل پاس ہوا—تو اُس سے کہہ دیا کہ 'چناؤ میں کام کرو' ادھیاپک بنا دینگے . اِس طرح اکثر ضلع بورڈوں کی ساری مشینری کانگریس کی طرف سے چناؤ میں پھیر دی گئی نتیجہ یہ ہوا کہ نومبر دسمبر جنوری فروری (1951-52) اکثر اِسکولوں میں کئی کئی دن کیا ہفتوں تک پڑھانے والے ماسٹروں کا پتہ ہی نہ ہوتا . چناؤ کی گرمی میں نہ حکومت کو، نہ کانگریس کو، نہ ضلع بورڈ کے افسروں کو کچھ دھیان ہی رہا کہ اِسکولوں کی کیا گت ہونے جارہی ہے .

یہ جو نئے نئے چناؤ ایجنٹ رکھے گئے اِن کی تنخواہ چناؤ کے دوران کی، یعنی نومبر، دسمبر، جنوری کی تو دے دی گئی. پر اُسکے بعد—جب کانگریس اکثریت سے اسمبلی پارلیامنٹ میں آگئی—جو مستی آئی اُس میں کہاں ضلع بورڈ اور کہاں بیچارا ادھیاپک ! ہمیں یہ بھی معلوم ہوا کہ بورڈ کا پورا بجٹ خرچ بورڈ کا منتری کرتا ہے، لیکن ماسٹروں کی تنخواہ کے بل ڈپٹی انسپکٹر آف اِسکول نام کے پدادھیکاری کیا کرتے ہیں. اُن کے پاس جب نومبر دسمبر 1951 یا جنوری 1952 میں ادھیاپکوں

खास कर तालीम के मिनिस्टर ने जो रुख इख्तयार किया (जिस की चर्चा हम आगे करेंगे) उससे पता चल गया कि सरकार को अध्यापकों के हित का रत्ती भर भी खयाल नहीं है. मजबूर हो कर अध्यापकों ने बड़े पैमाने पर सत्याग्रह शुरू किया. वह 12–15–20 के जत्थे बना कर आते हैं और गिरफ़्तार कर लिये जाते हैं. यही आज चल रहा है.

अध्यापकों की मांगें

ऊपर दिये इतिहास से साफ़ हो जाता है कि हमारे अध्यापकों की मांगें केवल तीन हैं:

(1) 1949 की सूची के अनुसार उनकी तनखा व मंहगाई भत्ते दिये जायं.

(2) जो उनकी पिछली तनखा बाक़ी है वह सब चुका दी जाय.

(3) आगे हर महीने की तनखा महीना खतम होने पर लगातार मिलती रहा करे.

इनमें से पहली मांग वही है जो चार बरस पहले खुद प्रदेश सरकार ने तय की थी. लोकल-बाडीज़-पे कमेटी के अनुसार ज़िला बोर्ड के हर कर्मचारी को तनखा मिल रही है सिवाय अध्यापक के! इसलिये अध्यापकों का यह कहना कि हमें भी उसी कमेटी के फ़ैसले के मुताबिक़ तनखा मिले किसी तरह ग़लत नहीं कहा जा सकता. अगर इस सम्बन्ध में सरकार यह कहे कि ज़िला बोर्डों का यह "निजी" मामला है और हम दखल नहीं देंगे तो यह वैसा ही हुआ जैसे कोई पिता कह दे कि बच्चे के पालन खर्च की पूरी ज़िम्मेदारी मां की है क्योंकि वह उसी के पेट से जन्मा है!

दूसरी तीसरी मांगों से पता चलता है कि हमारे ज़िला बोर्डों की हालत "थोथा चना बाजे घना" जैसे हो रही है. प्रदेश सरकार के लोकल सेल्फ़ गवरमेन्ट विभाग की 1951-52 की जो रिपोर्ट निकली है उसमें ज़िला बोर्डों के काम की तारीफ़ की गई है और खास कर इस बात पर कि स्कूलों की तादाद 26, 671 से 27, 951 हो गई और ज़िला बोर्डों ने 2, 266 निजी या प्राइवेट स्कूलों को भी मदद दी! कहां यह तारीफ़ और कहां अध्यापकों के बाल बच्चों का आधा पेट भूके रहना! हमें मालूम हुआ है कि प्रतापगढ़ ज़िले में हाल ही में मार्च 1952 से अक्तूबर 1952 तक की तनखा दी गई पर फ़रवरी की नहीं. वहां गरम अफ़वाह है कि फ़रवरी की तनखा गोल कर दी जायगी! रायबरेली ज़िले में भी मार्च से अक्तूबर का एक पैसा भी नहीं दिया गया. वहां के एक अध्यापक का क़िस्सा हमें मालूम है. उसके पास खाने पीने को कुछ न रहा तो उसने अपनी ससुराल से एक गाय मंगाई. ज़िले की हद पर चुंगी वालों

خاص کر تعلیم کے منسٹر نے جو رخ اختیار کیا (جس کی چرچہ ہم آگے کرینگے) اس سے پتہ چل گیا کہ سرکار کو ادھیاپکوں کے ہت کا رتی بھر بھی خیال نہیں ہے. مجبور ہوکر ادھیاپکوں نے بڑے پیمانے پر ستیاگرہ شروع کیا. وہ 12-15-20 کے جتھے بناکر آتے ہیں اور گرفتار کرلئے جاتے ہیں. یہی آج چل رہا ہے.

ادھیاپکوں کی مانگیں

اوپر دئے ہوئے اتہاس سے صاف ہو جاتا ہے کہ ہمارے ادھیاپکوں کی مانگیں کیول تین ہیں:

(1) 1949 کی سوچی کے انوسار ان کی تنخواہ و مہنگائی بھتے دئے جائیں.

(2) جو ان کی پچھلی تنخواہ باقی ہے وہ سب چکادی جائے.

(3) آگے ہر مہینے کی تنخواہ مہینہ ختم ہونے پر لگاتار ملتی رہا کرے.

ان میں سے پہلی مانگ وہی ہے جو چار برس پہلے خود پردیش سرکار نے طے کی تھی. لوکل باڈیز پے کمیٹی کے انوسار ضلع بورڈ کے ہر کرمچاری کو تنخواہ مل رہی ہے سوائے ادھیاپک کے! اس لئے ادھیاپکوں کا یہ کہنا کہ ہمیں بھی اسی کمیٹی کے فیصلے کے مطابق تنخواہ ملے کسی طرح غلط نہیں کہا جاسکتا. اگر اس سمبندھ میں سرکار یہ کہے کہ ضلع بورڈوں کا یہ "نجی" معاملہ ہے اور ہم دخل نہیں دینگے تو یہ ویسا ہی ہوا جیسے کوئی پتا کہہ دے کہ بچے کے پالن خرچ کی پوری ذمہ داری ماں کی ہے کیونکہ وہ اسی کے پیٹ سے جنما ہے!

دوسری تیسری مانگوں سے پتہ چلتا ہے کہ ہمارے ضلع بورڈوں کی حالت "تھوتھا چنا باجے گھنا" جیسی ہو رہی ہے. پردیش سرکار کے لوکل سلیف گورنمنٹ وبھاگ کی 1951-52 کی جو رپورٹ نکلی ہے اس میں ضلع بورڈوں کے کام کی تعریف کی گئی ہے اور خاص کر اس بات پر کہ اسکولوں کی تعداد 26, 671 سے 27, 951 ہوگئی اور ضلع بورڈوں نے 2, 266 نجی یا پرائیویٹ اسکولوں کو بھی مدد دی! کہاں یہ تعریف اور کہاں ادھیاپکوں کے بال بچوں کا آدھا پیٹ بھوکے رہنا! ہمیں معلوم ہوا ہے کہ پرتاپگڑھ ضلع میں حال ہی میں مارچ 1952 سے اکتوبر 1952 تک کی تنخواہ دی گئی پر فروری کی نہیں. وہاں گرم افواہ ہے کہ فروری کی تنخواہ گول کردی جائیگی! رائےبریلی ضلع میں بھی مارچ سے اکتوبر کا ایک پیسہ بھی نہیں دیا گیا. وہاں کے ایک ادھیاپک کا قصہ ہمیں معلوم ہے. اس کے پاس کھانے پینے کو کچھ نہ رہا تو اس نے اپنی سسرال سے ایک گائے منگائی. ضلع کی حد پر چنگی والوں

कुछ दूसरे प्रदेशों में क्या सूरत है, हम नीचे देते हैं :

पश्चिमी बंगाल	35–4–2–75–5–2–80
मध्य प्रदेश	30–1–40–2–60
मध्य भारत	40–5–70
हैदराबाद	65–3–95–4–115
पेप्सू	50–3–80–4–100
दिल्ली	55–3–85–4–125–5–130

कहीं कहीं जैसे दिल्ली और मध्य प्रदेश में अध्यापकों को पांच और पंद्रह रुपए के बीच हर माह मकान भत्ता भी दिया जाता है.

जब गेहूं दस सेर का था और घी सवा सेर का तब उत्तर प्रदेश के अध्यापक के लिये 25 रुपए भी कम नहीं थे. फिर अध्यापक का गांव व समाज में आदर था. इसलिये ख़ास मौक़ों पर दक्षिना के तौर पर भी विद्यार्थी घर से कुछ ले आता था. लेकिन जब अनाज घट कर सात पाव का रह गया और घी या तो ग़ायब या ढाई तीन छटांक पर आ गया तब दक्षिना मिलना उधर से बन्द हुई और घर का ख़र्च पूरा पड़ना इधर से बन्द हुआ. इस तंगी से परेशान हो कर हमारे अध्यापकों ने 1949 में हड़ताल की.

यह हड़ताल जिसमें प्रदेश के सभी, चालीस हज़ार के लगभग, अध्यापक शरीक थे, बहुत सफल हुई और सरकार ने यह तय किया कि लोकल बाडीज़ पे कमेटी (Local Bodies' Pay Committee) के सुझाव के अनुसार अध्यापकों को वेतन व मंहगाई वग़ैरा दी जाय. पर यह फ़ैसला काग़ज़ पर ही रह गया और जब ज़िला बोर्डों के चार्ज में स्कूल आए तो उनमें से ज़ियादातर इसे मानने से कतराए. जिन्होंने माना भी उनमें से कुछ कभी वेतन देते थे और कभी नहीं. मतलब यह कि ख़ूब मनमानी चलती थी और अध्यापकों के दुख का कोई ठिकाना नहीं रहा. इसलिये उन्होंने अपनी मुसीबतें सरकार के आगे पेश कीं लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई. बार बार मांग पेश की गई पर सरकार की तरफ़ से हां हूं हो कर रह जाती और बात टल जाती. इसलिये इस बार अध्यापकों ने ज़ियादा समझ बूझ कर और ठोस क़दम उठाया.

वह अपने अपने स्कूलों में बराबर पढ़ाते हैं लेकिन गिने चुने प्रतिनिधियों ने सारे अध्यापकों की तरफ़ से क़ुरबानी के लिये रज़ामन्दी ज़ाहिर की और आमरन अनशन तीन तीन की टोलियों में शुरू किया. अनशन करने वाले दो तीन रोज़ बाद अस्पताल भेजे जाने लगे, उनके अन्दर ज़बरदस्ती ख़ुराक पहुंचाई जाने लगी और फिर सरकार ने ऐलान किया कि जिस जगह वह अनशन कर रहे थे वहां मनाही है. इसलिये गिरफ़्तारियां शुरू हो गईं. साथ ही साथ असेम्बली व कौन्सिल में सरकारी हाकिमों,

کچھ دوسرے پردیشوں میں کیا صورت ہے، ہم نیچے دیتے ہیں.

پچھمی بنگال	35–4–2–75–5–280
مدھیہ پردیش	30–1–40–2–60
مدھیہ بھارت	40–5–70
حیدرآباد	65–3–95–4–115
پیپسو	50–3–80–4–100
دلی	55–3–85–4–125–5–130

کہیں کہیں جیسے دلی اور مدھیہ پردیش میں ادھیاپکوں کو پانچ اور پندرہ روپئے کے بیچ ہر ماہ مکان بھتہ بھی دیا جاتا ہے .

جب گیہوں دس سیر کا تھا اور گھی سواسیر کا تب اتر پردیش کے ادھیاپک کے لئے 25 روپئے بھی کم نہیں تھے. پھر ادھیاپک کا گاؤں و سماج میں آدر تھا . اس لئے خاص موقعوں پر دکشنا کے طور پر بھی ودیارتھی گھر سے کچھ لے آتا تھا. لیکن جب اناج گھٹ کر سات پاؤ کا رہ گیا اور گھی یا تو غائب یا ڈھائی تین چھٹانک پر آ گیا تب دکشنا ملنا اُدھر سے بند ہوئی اور گھر کا خرچ پورا پڑنا اِدھر سے بند ہوا . اس تنگی سے پریشان ہوکر ہمارے ادھیاپکوں نے 1949 میں ہڑتال کی .

یہ ہڑتال جس میں پردیش کے سبھی' چالیس ہزار کے لگ بھگ' ادھیاپک شریک تھے' بہت سپھل ہوئی اور سرکار نے یہ طے کیا کہ لوکل باڈیز پے کمیٹی (Local Bodies' Pay Committee) کے سجھاؤ کے انوسار ادھیاپکوں کو ویتن و مہنگائی وغیرہ دی جائے. پر یہ فیصلہ کاغذ پر ہی رہ گیا اور جب ضلع بورڈوں کے چارج میں اسکول آئے تو اُن میں سے زیادہ‌تر اسے ماننے سے کترائے . جنہوں نے مانا بھی اُن میں سے کچھ کبھی ویتن دیتے تھے اور کبھی نہیں. مطلب یہ کہ خوب من مانی چلتی تھی اور ادھیاپکوں کے دکھ کا کوئی ٹھکانہ نہیں رہا. اس لئے اُنہوں نے اپنی مصیبتیں سرکار کے آگے پیش کیں لیکن کوئی سنوائی نہیں ہوئی. بار با مانگ پیش کی گئی پر سرکار کی طرف سے ہاں ہوں ہو کر رہ جاتی اور بات ٹل جاتی . اس لئے اِس بار ادھیاپکوں نے زیادہ سمجھ بوجھ کر اور ٹھوس قدم اُٹھایا .

وہ اپنے اپنے اِسکولوں میں برابر پڑھاتے ہیں لیکن گنے چنے پرتی‌ندھیوں نے سارے ادھیاپکوں کی طرف سے قربانی کے لئے رضامندی ظاہر کی اور آمرن انشن تین تین کی ٹولیوں میں شروع کیا . انشن کرنے والے دو تین روز بعد اسپتال بھیجے جانے لگے' اُن کے اندر زبردستی خوراک پہونچائی جانے لگی اور پھر سرکار نے اعلان کیا کہ جس جگہ یہ انشن کر رہے تھے وہاں مناہی ہے . اس لئے گرفتاریاں شروع ہوگئیں . ساتھ ہی ساتھ اسمبلی و کونسل میں سرکاری حاکموں'

हमारे जिला बोर्डों के अध्यापकों का सवाल

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ की कौन्सिल हाउस के सामने आजकल रोज़ गिरफ़्तारियां हुआ करती हैं क्योंकि कुछ लोग वहां के पास एक ऐसी जगह घुस आते हैं जहां मनाही है. यह घुसने वाले लोग हमारे सूबे के 52 ज़िला बोर्डों के मातहत चलने वाले स्कूलों में पढ़ने वाले अध्यापक हैं और वह जगह महकमे तामीरात की बताई जाती है. ख़ूबी यह है कि यह अध्यापक भाई उस जगह पर जब शुरू शुरू में, फ़रवरी के आख़री हफ़्ते में आए तब तो कोई एतराज़ नहीं किया. लेकिन दस बारह रोज़ बाद लखनऊ के हाकिमों को पता चला कि यह जगह हर ख़ास-आम के लिये खुली नहीं है. अध्यापकों के इस आन्दोलन को आज एक महीने से ऊपर हो गया और लखनऊ की ताज़ी ख़बर है कि कल 24 मार्च को 13 अध्यापक गिरफ़्तार किये गए, जिसके बाद कुल गिरफ़्तारियों की तादाद 8 मार्च से ले कर—उत्तर प्रदेश अध्यापक मंडल ने सत्याग्रह करने का तय किया—अब तक 367 हो जाती है. इन में से 104 अध्यापकों के ख़िलाफ़ चार्ज शीट अदालत में फ़ाइल कर दिया गया है और 89 के ऊपर मुक़दमा चलने वाला है.

अध्यापकों के इस आन्दोलन की शुरूआत 23 फ़रवरी को तीन मास्टरों के अनशन से शुरू हुई और 8 मार्च को बाक़ायदा सत्याग्रह शुरू हुआ, जब अध्यापकों के जत्थे के जत्थे कौन्सिल हाउस के सामने आ कर जमा होने लगे. यह देखने के पहले कि अध्यापकों की मांगें क्या हैं और वह कहां तक ठीक हैं. हम पहले अध्यापकों के सवाल के इतिहास पर सरसरी निगाह डालेंगे.

पिछला इतिहास

हमारे देश के प्रदेशों में उत्तर प्रदेश की सब से बड़ी आबादी है जो साढ़े छै करोड़ के लगभग है. इसलिये लड़के लड़कियों और उनके स्कूलों की तादाद भी हमारे इस प्रदेश में सब से ज़ियादा है और उनको पढ़ाने वाले अध्यापकों की भी. इन स्कूलों का प्रबन्ध और शिक्षा का पूरा ज़िम्मा सूबे की सरकार का था. मगर पहली नवम्बर 1950 को देहातों के स्कूलों का इन्तज़ाम ज़िला बोर्डों के सुपुर्द कर दिया गया, हालांकि उनके ऊपर निगाह, मुआयना, पढ़ाई वग़ैरा वग़ैरा का ज़िम्मा सरकार का ही रहा.

अरसे से हमारे अध्यापकों को जो तनख़ा दी जाती है वह 25 रुपये से शुरू हो कर 45 तक चलती है. इसके ख़िलाफ़

ھمارے ضلع بورڈوں کے ادھیاپکوں کا سوال

اُتر پردیش کی راجدھانی لکھنؤ کی کونسل ھاؤس کے سامنے آج کل روز گرفتاریاں ھوا کرتی ھیں کیونکہ کچھ لوگ وھاں کے پاس ایک ایسی جگہ گھس آتے ھیں جہاں مناھی ھے. یہ گھسنے والے لوگ ھمارے صوبے کے 52 ضلع بورڈوں کے ماتحت چلنے والے اسکولوں میں پڑھانے والے ادھیاپک ھیں اور وہ جگہ محکمہ تعمیرات کی بتائی جاتی ھے. خوبی یہ ھے کہ یہ ادھیاپک بھائی اس جگہ پر جب شروع شروع میں، فروری کے آخری ھفتے میں آئے تب تو کوئی اعتراض نہیں کیا. لیکن دس بارہ روز بعد لکھنؤ کے حاکموں کو پتہ چلا کہ یہ جگہ ھر خاص عام کے لئے کھلی نہیں ھے. ادھیاپکوں کے اس آندولن کو آج ایک مہینے سے اوپر ھوگیا اور لکھنؤ کی تازی خبر ھے کہ کل 24 مارچ کو 13 ادھیاپک گرفتار کئے گئے جس کے بعد کل گرفتاریوں کی تعداد 8 مارچ سے لیکر—اُتر پردیش ادھیاپک منڈل نے ستیاگرہ کرنے کا طے کیا—اب تک 367 ھو جاتی ھے. ان میں سے 104 ادھیاپکوں کے خلاف چارج شیٹ عدالت میں فائل کردیا گیا ھے اور 89 کے اوپر مقدمہ چلنے والا ھے.

ادھیاپکوں کے اس آندولن کی شروعات 23 فروری کو تین ماسٹروں کے انشن سے شروع ھوئی اور 8 مارچ کو باقاعدہ ستیاگرہ شروع ھوا، جب ادھیاپکوں کے جتھے کے جتھے کونسل ھاؤس کے سامنے آکر جمع ھونے لگے. یہ دیکھنے کے پہلے کہ ادھیاپکوں کی مانگیں کیا ھیں اور وہ کہاں تک ٹھیک ھیں، ھم پہلے ادھیاپکوں کے اتہاس پر سرسری نگاہ ڈالینگے.

پچھلا اتہاس

ھمارے دیش کے پردیشوں میں اُتر پردیش کی سب سے بڑی آبادی ھے جو ساڑھے چھ کروڑ کے لگ بھگ ھے. اس لئے لڑکے لڑکیوں اور ان کے اسکولوں کی تعداد بھی ھمارے اس پردیش میں سب سے زیادہ ھے اور ان کو پڑھانے والے ادھیاپکوں کی بھی. ان اسکولوں کا پربندھ اور شکشا کا پورا ذمہ صوبے کی سرکار کا تھا. مگر پہلی نومبر 1950 کو دیہاتوں کے اسکولوں کا انتظام ضلع بورڈوں کے سپرد کردیا گیا حالانکہ ان کے اوپر نگاہ، معائنہ، پڑھائی وغیرہ وغیرہ کا ذمہ سرکار کا ھی رھا.

عرصے سے ھمارے ادھیاپکوں کو جو تنخواہ دی جاتی ھے وہ 25 روپئے سے شروع ھوکر 45 تک چلتی ھے. اس کے خلاف

दिया लेकिन अब सब लोगों में देश भक्ति की भावना इतनी भर गई है कि अब अधिक कंट्रोल की ज़रूरत नहीं रह गई.

(8) सरकार बज़ार पर हर वक़्त ध्यान रखती है. जहां भी किसी चीज़ की कमी हुई सरकार खुद माल ख़रीद कर उस जगह पहुंचा देती है. इससे भाव एक सा बना रहता है.

(9) बीच के दलालों, सट्टा बाज़ों का सरकार ने बिलकुल ख़ातमा कर दिया है. चीन में यह ब्योपार नहीं हो सकता.

(10) सरकार ने जनता की माली हालत दुरुस्त कर दी है. किसानों को अपनी अपनी ज़मीन मिल गई है. वह ज़ियादा पैदा करते हैं. उनके माल की बिकरी का भी अच्छा प्रबन्ध है. चूंकि उनकी जेब में पैसा होता है इसलिये वह ज़ियादा से ज़ियादा सामान ख़रीदते हैं. चूंकि ज़ियादा बिकरी होती है इसलिये कारख़ाने ज़ियादा पैदा करते हैं. अब चीनी दुकानदारों के पास हर समय और हर मौसम में गाहकों की भीड़ लगी रहती है.

(11) देश भक्ति की भावना ने पूंजीपति और मज़दूर दोनों को एक राय बना दिया है. हर मज़दूर समझता है कि वह देश के लिये काम करता है और बिना किसी हिचक के उसको उसका जायज़ हिस्सा मिल जाता है हर काम मालिक और मज़दूर के सहयोग से होता है. कारख़ाने की पैदावार की पिलानिंग करने और उसके हित की देख रेख करने के लिये एक कमेटी होती है. इस कमेटी में पांच मज़दूर यूनियन के नुमाइन्दे होते हैं और पांच कारख़ाने दार के इस कमेटी की दो हफ़्ते के बाद मीटिंग होती है. एक दफ़ा सदारत मज़दूर करता है तो दूसरी दफ़ा कारख़ाने दार. कमेटी के सारे फ़ैसले सब के हित को ध्यान में रखकर किये जाते हैं और हमेशा एक राय से होते हैं. अगर कभी यह कमेटी फ़ैसला न कर सके तो मज़दूर अदालतों को वह मामला सुपुर्द कर दिया जाता है.

मुनाफ़े की गारन्टी और सरकारी सहयोग के कारन पूंजी पतियों में ईमानदारी और देश भक्ति की भावना पैदा हो गई है. मज़दूर और मालिक दोनों को अपना अपना जायज़ हक़ मिल जाता है. बैंक का सूद कम हो गया है. इस कारन लोग उद्योगों में अपनी पूंजी लगाते हैं. स्वदेशी की भावना इतनी तेज़ हो गई है कि चीनी विदेशी माल के इस्तेमाल को नीची नज़र से देखते हैं. यही कारन है कि वह स्वावलम्बी हो गए हैं और दिन दूनी रात चौगुनी तरक़्क़ी कर रहे हैं.

—मुजीब रिज़वी

دیا لیکن اب سب لوگوں میں دیش بھکتی کی بھاونا اتنی بھر گئی ہے کہ اب ادھک کنٹرول کی ضرورت نہیں رہ گئی۔

(8) سرکار بازار پر ہر وقت دھیان رکھتی ہے ۔ جہاں بھی کسی چیز کی کمی ہوئی سرکار خود مال خرید کر اس جگہ پہونچا دیتی ہے ۔ اس سے بھاؤ ایک سا بنا رہتا ہے ۔

(9) بیچ کے دلالوں' سٹہ بازوں کا سرکار نے بالکل خاتمہ کر دیا ہے ۔ چین میں یہ بیوپار نہیں ہو سکتا ۔

(10) سرکار نے جنتا کی مالی حالت درست کر دی ہے ۔ کسانوں کو اپنی اپنی زمین مل گئی ہے ۔ وہ زیادہ پیدا کرتے ہیں ۔ ان کے مال کی بکری کا بھی اچھا پربندھ ہے ۔ چونکہ ان کے جیب میں پیسہ ہوتا ہے اس لئے وہ زیادہ سے زیادہ سامان خریدتے ہیں ۔ چونکہ زیادہ بکری ہوتی ہے اس لئے کارخانے زیادہ پیدا کرتے ہیں ۔ اب چینی دکانداروں کے پاس ہر سمے اور ہر موسم میں گاہکوں کی بھیڑ لگی رہتی ہے ۔

(11) دیش بھکتی کی بھاونا نے پونجی پتی اور مزدور دونوں کو ایک رائے بنا دیا ہے ۔ ہر مزدور سمجھتا ہے کہ وہ دیش کے لئے کام کرتا ہے اور بنا کسی جھجک کے اسکو اسکا جائز حصہ مل جاتا ہے ۔ ہر کام مالک اور مزدور کے سہیوگ سے ہوتا ہے ۔ کارخانے کی پیداوار کی پلاننگ کرنے اور اس کے ہت کی دیکھ ریکھ کرنے کے لئے ایک کمیٹی ہوتی ہے ۔ اس کمیٹی میں پانچ مزدور یونین کے نمائندے ہوتے ہیں اور پانچ کارخانے دار کے ۔ اس کمیٹی کی دو ہفتے کے بعد میٹنگ ہوتی ہے ۔ ایک دفعہ صدارت مزدور کرتا ہے تو دوسری دفعہ کارخانے دار ۔ کمیٹی کے سارے فیصلے سب کے ہت کو دھیان میں رکھکر کئے جاتے ہیں اور ہمیشہ ایک رائے سے ہوتے ہیں۔ اگر کبھی یہ کمیٹی فیصلہ نہ کر سکے تو مزدور عدالتوں کو وہ معاملہ سپرد کر دیا جاتا ہے ۔

منافع کی گارنٹی اور سرکاری سہیوگ کے کارن پونجی پتیوں میں ایمانداری اور دیش بھکتی کی بھاونا پیدا ہو گئی ہے ۔ مزدور اور مالک دونوں کو اپنا اپنا جائز حق مل جاتا ہے ۔ بینک کا سود کم ہو گیا ہے ۔ اس کارن لوگ ادیوگوں میں اپنی پونجی لگاتے ہیں ۔ سودیشی کی بھاونا اتنی تیز ہو گئی ہے کہ چینی ودیشی مال کے استعمال کو نیچی نظر سے دیکھتے ہیں۔ یہی کارن ہے کہ وہ سواولمبی ہو گئے ہیں اور دن دونی رات چوگنی ترقی کر رہے ہیں۔

—مجیب رضوی

शुरू शुरू में सरकार ने एक बड़ी रक़म सरकारी ख़ज़ानों में अलग कर दी थी. जहां किसी कारख़ाने के माल की बिक्री में कोई अड़चन हुई सरकार ने बाज़ार भाव उस माल को ख़रीद लिया. कभी कभी तो बाज़ार भाव से भी अधिक दाम सरकार देती थी.

(ii) सरकार ने पीपुल्स बैंक से बड़े बड़े क़रज़ देकर भी कारख़ानों की बड़ी मदद की. कोमिन तांग के ज़माने में रोज़ाना सूद कई कई फ़ीसदी होता था और दर हर घंटे बदल जाता था. नई सरकार के आने पर सन '49 में सूद का दर 66·5 फ़ी सदी महीना था. सन् 1950 के शुरू में यह दर घट कर 23·5 की सदी हो गया. जून सन 1950 में कुल 3 फ़ीसदी महीना ही सूद रह गया. अब उद्योग धन्धों संबन्धी क़रज़ों का दर 1·05 और 1·65 फ़ी सदी के बीच में रह गया है.

(iii) सरकार ने एक अच्छी टैक्स पालिसी अपनाई और खसूट-घसोट तरीक़े को छोड़ दिया. इस पालिसी में सबका ख़याल रखा गया. टैक्स के दर आम तरीक़े से पूंजी पति देशों के मुक़ाबले में कम हैं. व्योपार के मुक़ाबले उद्योगों पर कम टैक्स है. ज़रूरी सामानों पर ग़ैर ज़रूरी सामान के मुक़ाबले में कम टैक्स है. 5 फ़ी सदी से लेकर 30 फ़ी सदी तक टैक्स लगाया जाता है. ख़ास ख़ास चीज़ों और उद्योगों पर टैक्स में छूट भी दी जाती है.

मशीन बनाने वाले कारख़ानों और कोयला लोहा पैदा करने वाले कारख़ानों को 10 से 40 फ़ी सदी तक छूट मिलती है. वह सामान जिनसे जनता का मनोरंजन होता है उतनी ही छूट पाते हैं. घरेलू धन्धों के साथ टैक्स वग़ैरा में ख़ास रिआयत की जाती है.

(6) चीन के व्योपारी रिश्वत देने और बेईमानी करने में मशहूर थे. सरकार ने "सान फ़ान" आन्दोलन चलाया. बेईमानी के सारे हथकन्डों की तसवीरें बनवाईं और उनकी जगह जगह प्रदर्शनी की. इस तरह जनता यह समझ गई कि किस किस तरह बेईमानी से उसको लूटा जाता है और वह होशियार हो गई. इस संबन्ध में बहुत से व्योपारी पकड़े गए. लेकिन कुल एक फ़ी सदी पर मुक़दमा चलाया गया, सरकार का मक़सद उनको सज़ा देना नहीं था बल्कि उन्हें सुधारना था.

(7) चीन के सारे उद्योगों का आधार मुनाफ़ा न होकर आदमी है. आदमी को मुनाफ़े का साधन नहीं बनाया गया बल्कि हर काम आदमी की बेहतरी के लिये किया जाता है. ऐश आराम के सामानों को कोई महत्व नहीं दिया जाता. ज़रूरत की चीज़ें पैदा करने का हर एक को ध्यान रहता है. सरकार ने पहले इस संबन्ध में पूरी देख रेख की और पैदावार के प्लानिंग में कारख़ाने दारों को सलाह मशवरा

شروع شروع میں سرکار نے ایک بڑی رقم سرکاری خزانوں میں الگ کردی تھی ۔ جہاں کسی کارخانے کے مال کی بکری میں کوئی اڑچن ہوئی سرکار نے بازار بھاؤ اس مال کو خرید لیا ۔ کبھی کبھی تو بازار بھاؤ سے بھی ادھک دام سرکار دیتی تھی ۔

(ii) سرکار نے پیپلس بینک سے بڑے بڑے قرض دےکر بھی کارخانوں کی بڑی مدد کی ۔ کومنتانگ کے زمانے میں روزانہ سود کئی کئی فی صدی ہوتا تھا اور در ہر گھنٹے بدل جاتا تھا ۔ نئی سرکار کے آنے پر سن 49' میں سود کا در 66·5 فی صدی مہینہ تھا۔ سن 1950 کے شروع میں یہ در گھٹ کر 23·5 فی صدی ہوگیا۔ جون سن 1950 میں کل 3 فی صدی مہینہ ہی سود رہ گیا ۔ اب ادیوگ دھندوں سمبندھی قرضوں کا در 1·05 اور 1·65 فی صدی کے بیچ میں رہ گیا ہے ۔

(iii) سرکار نے ایک اچھی ٹیکس پالیسی اپنائی اور کفن گھسوٹ طریقے کو چھوڑ دیا۔ اس پالیسی میں سب کا خیال رکھا گیا ۔ ٹیکس کے در عام طریقے سے پونجی پتی دیشوں کے مقابلے میں کم ہیں ۔ بیوپار کے مقابلے میں ادیوگوں پر کم ٹیکس ہے ۔ ضروری سامانوں پر غیر ضروری سامانوں کے مقابلے میں کم ٹیکس ہے۔ 5 فی صدی سے لےکر 30 فی صدی تک ٹیکس لگایا جاتا ہے ۔ خاص خاص چیزوں اور ادیوگوں پر ٹیکس میں چھوٹ بھی دی جاتی ہے۔

مشین بنانے والے کارخانوں اور کوئلہ لوہا پیدا کرنے والے کارخانوں کو 10 سے 40 فیصدی تک چھوٹ ملتی ہے۔ وہ سامان جن سے جنتا کا منورنجن ہوتا ہے اتنی ہی چھوٹ پاتے ہیں ۔ گھریلو دھندوں کے ساتھ ٹیکس وغیرہ میں خاص رعایت کی جاتی ہے ۔

(6) چین کے بیوپاری رشوت دینے اور بے ایمانی کرنے میں مشہور تھے ۔ سرکار نے "سان فان" آندولن چلایا۔ بے ایمانی کے سارے ہتھکنڈوں کی تصویریں بنوائیں اور ان کی جگہ جگہ پردرشنی کی ۔ اس طرح جنتا یہ سمجھ گئی کہ کس کس طرح بے ایمانی سے اسکو لوٹا جاتا ہے اور وہ ہوشیار ہو گئی۔ اس سمبندھ میں بہت سے بیوپاری پکڑے گئے ۔ لیکن کل ایک فی صدی پر مقدمہ چلایا گیا۔ سرکار کا مقصد انکو سزا دینا نہیں تھا بلکہ انہیں سدھارنا تھا ۔

(7) چین کے سارے ادیوگوں کا آدھار منافع نہ ہو کر آدمی ہے ۔ آدمی کو منافع کا سادھن نہیں بنایا گیا بلکہ ہر کام آدمی کی بہتری کے لئے کیا جاتا ہے ۔ عیش آرام کے سامانوں کو کوئی مہتو نہیں دیا جاتا ۔ ضرورت کی چیزیں پیدا کرنے کا ہر ایک کو دھیان رہتا ہے ۔ سرکار نے پہلے اس سمبندھ میں پوری دیکھ ریکھ کی اور پیداوار کی پلاننگ میں کارخانے داروں کو صلاح مشورہ

सुपरिंटेंडेंटों वगैरा के बोनस और डायरेक्टरों के वेतन पर 60 फी सदी खर्च हो. 15 फी सदी से कम किसी सूरत में हाईजीन और सफाई पर न खर्च किया जाय. 15 फी सदी और उससे ज़ियादा मजदूरों की बेहतरी और उनको इनाम वगैरा की मद में दिया जाय.

मजदूरों को उसी रेट के मुताबिक़ वेतन मिलता है जो सरकार ने मुक़र्रर कर दिया है. इसमें किसी सूरत गड़बड़ नहीं हो सकती.

चीन के एक मजदूर की तनखा कम से कम सौ रुपया है. यह तनखा ग़ल्ले के भाव के आधार पर तय की जाती है. जितनी महंगाई बढ़ती है उतनी तनखा भी बढ़ जाती है. इस तरह मजदूर को कभी दिक़्क़त का सामना नहीं करना पड़ता.

मजदूरों को तीन वक़्त खाना मिलता है. खाने की लागत का आधा हिस्सा कारखाने को अदा करना पड़ता है.

कारखाने की तरफ़ से मजदूरों को रहने के लिये मुफ़्त मकान मिलते हैं. मजदूरों और उनके खानदान वालों का इलाज मुफ़्त होता है. इस इलाज में टानिक वगैरा भी शामिल हैं. इनजक्शन भी मुफ़्त लगाए जाते हैं. डाक्टर की सिफ़ारिश पर कमज़ोर मजदूर को शक्ति पहुँचाने वाला खाना भी बिना दाम दिया जाता है. आराम करने के लिये कैम्प होते हैं. इनमें मजदूरों को हर तरह की सुविधाएं दी जाती हैं. हर साल तनखा समेत उन्हें एक महीने की छुट्टी मिलती है जिसमें वह इन कैम्पों में जा कर आराम कर सकते हैं.

मजदूरों को अपने बच्चों की तालीम के लिये कुछ नहीं देना पड़ता. उनको भी तालीम दी जाती है. कारखाने में उन की शिक्षा का पूरा प्रबन्ध होता है.

सारे कारखानों में दिल बहलाव का प्रबन्ध होता है. मजदूर खेलते कूदते, नाचते गाते और दूसरे मनोरंजन का आनन्द लेते हैं.

हर कारखाने के सबसे अच्छे मजदूर को "लेबर हीरो" की उपाधि दी जाती है और उसका राष्ट्र भर में वह आदर किया जाता है जो किसी ज़माने में रायबहादुरों और खानबहादुरों का हमारे देश में हुआ करता था.

(5) चीनी सरकार उद्योगों को पूरी सहायता देती है. जिस कारखाने के हित को बचाने के लिये जितनी रक्षा की ज़रूरत होती है सरकार उसकी उतनी ही देख रेख करती है. नीचे लिखी सहायता सरकार कारखानों को देती है:

(i) सरकार कच्चा माल सपलाई करती है, बिकरी के साधन जुटाती है और मुनाफ़े की गारन्टी करती है.

سپرنٹنڈنٹوں وغیرہ کے بونس اور ڈائرکٹروں کے ویتن پر 60 فی صدی خرچ ہو۔ 15 فی صدی سے کم کسی صورت میں ہائیجین اور صفائی پر نہ خرچ کیا جائے۔ 15 فیصدی اور اس سے زیادہ مزدوروں کی بہتری اور ان کو انعام وغیرہ کی مد میں دیا جائے۔

مزدوروں کو اسی ریٹ کے مطابق ویتن ملتا ہے جو سرکار نے مقرر کر دیا ہے۔ اس میں کسی صورت گڑبڑ نہیں ہوسکتی۔ چین کے ایک مزدور کی تنخواہ کم سے کم 100 روپیہ ہے۔ یہ تنخواہ غلے کے بھاؤ کے آدھار پر طے کی جاتی ہے۔ جتنی مہنگائی بڑھتی ہے اتنی ہی تنخواہ بھی بڑھ جاتی ہے۔ اس طرح مزدور کو کبھی دقت کا سامنا نہیں کرنا پڑتا۔

مزدوروں کو تین وقت کھانا ملتا ہے۔ کھانے کی لاگت کا آدھا حصہ کارخانے کو ادا کرنا پڑتا ہے۔

کارخانے کی طرف سے مزدوروں کو رہنے کے لئے مفت مکان ملتے ہیں۔ مزدوروں اور ان کے خاندان والوں کا علاج مفت ہوتا ہے۔ اس علاج میں ٹانک وغیرہ بھی شامل ہیں۔ انجکشن بھی مفت لگائے جاتے ہیں۔ ڈاکٹر کی سفارش پر کمزور مزدور کو شکتی پہونچانے والا کھانا بھی بنا دام دیا جاتا ہے۔

آرام کرنے کے لئے کیمپ ہوتے ہیں۔ ان میں مزدوروں کو ہر طرح کی سوودھائیں دی جاتی ہیں۔ ہر سال تنخواہ سمیت انہیں ایک مہینے کی چھٹی ملتی ہے جس میں وہ ان کیمپوں میں جاکر آرام کرسکتے ہیں۔

مزدوروں کو اپنے بچوں کی تعلیم کے لئے کچھ نہیں دینا پڑتا۔ ان کو بھی تعلیم دی جاتی ہے۔ کارخانے میں ان کی شکشا کا پورا پربندھ ہوتا ہے۔

سارے کارخانوں میں دل بہلاؤ کا پربندھ ہوتا ہے۔ مزدور کھیلتے کودتے، ناچتے گاتے اور دوسرے منورنجن کا آنند لیتے ہیں۔

ہر کارخانے کے سب سے اچھے مزدور کو "لیبر ہیرو" کی اپادھی دی جاتی ہے اور اس کا راشٹر بھر میں وہ آدر کیا جاتا ہے جو کسی زمانے میں رائے بہادروں اور خان بہادروں کا ہمارے دیش میں ہوا کرتا تھا۔

(5) چینی سرکار ادیوگوں کو پوری سہائتا دیتی ہے۔ جس کارخانے کے ہت کو بچانے کے لئے جتنی رکشا کی ضرورت ہوتی ہے سرکار اس کی اتنی ہی دیکھ ریکھ کرتی ہے۔ نیچے لکھی سہائتا سرکار کارخانوں کو دیتی ہے:

(i) سرکار کچا مال سپلائی کرتی ہے، بکری کے سادھن جٹاتی ہے اور منافع کی گارنٹی کرتی ہے۔

(2) चीन में "पूर्णता" और खूबसूरती को बाद का दर्जा दिया गया और जरूरत का लिहाज पहले रखा गया:

ख्वाजा अहमद अब्बास को एक इनजीनियर अपनी बनाई जीप दिखा रहा था उसने कहा जीप तो बन गई पर भौंडी सी है. ख्वाजा अहमद अब्बास ने उत्तर दिया—नहीं ठीक है. उस चीनी ने हंस कर कहा—हम जानते हैं कि यह खूबसूरत नहीं है. पर यह चलती है, काम निकाल देती है और हमें फख्र है कि इसे चीन ने खुद बनाया है. दो चार साल में हम इसे खूबसूरत भी बना लेंगे. यह स्वदेशी भावना उनको आगे बढ़ाती है.

(3) चीनी सरकार को अपने ऊपर और जनता पर विश्वास है. उन्हें यक़ीन है कि वह सब कुछ बिना अमरीका की मदद के बना सकते हैं. जहां चाह होती है वहां राह निकल आती है. उनके पास "हाथ" हैं और वह हाथ का पूरा इस्तेमाल करके जादू जगाते चले जा रहे हैं.

(4) चीन में इजारेदारी नहीं चल सकती. वहां पूंजी और मजदूरी दोनों के हित का रक्षा की जाती है.

अगर उद्योग पति मजदूरी की दर, सफाई, रक्षा और मजदूर संबन्धी क़ानूनों की पाबन्दी करते हैं तो उन्हें भारी से भारी फ़ायदा उठाने का चीन में हक़ हासिल है. हर तरह की सुविधा दी जाती है कि कारखाने फ़ायदा कमायें, उत्पादन बढ़ायें और देश को माला माल करें. जब तक पूंजी पति व्योपार में बेईमानी नहीं करते और सरकारी पालिसी और क़ानून का उलंघन नहीं करते तब तक उनका मुनाफ़ा सुरक्षित है, उसे कोई आंच नहीं आ सकती. चीन में दस से ले कर तीस फ़ी सदी तक मुनाफ़ा कमाया जा सकता है. अगर कोई पूंजीपति ईमानदार ढंग से लागत कम कर ले और सारे क़ानूनों की पाबन्दी करते हुए और गाहकों के हित का ध्यान रखते हुए इससे भी ज़ियादा फ़ायदा कमा ले तो भी इस मुनाफ़े पर कोई रोक नहीं है. मुनाफ़े की यह दर पूंजीपति देशों से भी ज़ियादा है—हमें पूरा यक़ीन है कि हिन्दुस्तान का पूंजीपति भी कांगरेस सरकार के मुक़ाबले में चीन की कम्युनिस्ट सरकार का स्वागत करेगा. सरकार न केवल कच्चा माल सपलाई करती है, पूंजी उधार देती है और दूसरी सहायता करती है बल्कि मुनाफ़े की गारन्टी भी करती है. सरकार की एक ही शर्त है कि चीज़ अच्छी होनी चाहिये.

मुनाफ़े के बंटवारे पर रोक ज़रूर है: (1) पिछली घटौती पूरा करने और टैक्स अदा करने के बाद जो मुनाफ़ा बचे उसका 10 फ़ी सदी रिज़र्व फ़न्ड में डाल दिया जाय. (2) मुनाफ़े का 8 फ़ी सदी से ज़ियादा भाग हिस्सेदारों को न दिया जाय. (3) इस अदायगी के बाद जो रक़म बचे उसका बंटवारा इस तरह हो: हिस्सेदारों, मनीजरों,

(2) چین میں "پورنتا" اور خوبصورتی کو بعد کا درجہ دیا گیا اور ضرورت کا لحاظ پہلے رکھا گیا:

خواجہ احمد عباس کو ایک انجینیر اپنی بنائی جیپ دکھا رہا تھا۔ اس نے کہا جیپ تو بن گئی پر بھونڈی سی ہے۔ خواجہ احمد عباس نے اتر دیا—نہیں ٹھیک ہے۔ اس چینی نے ہنس کر کہا—ہم جانتے ہیں کہ یہ خوبصورت نہیں ہے۔ پر یہ چلتی ہے' کام نکال دیتی ہے اور ہمیں فخر ہے کہ اسے چین نے خود بنایا ہے۔ دو چار سال میں ہم اسے خوبصورت بھی بنا لیں گے۔ یہ سودیشی بھاونا ان کو آگے بڑھاتی ہے۔

(3) چینی سرکار کو اپنے اوپر اور جنتا پر وشواس ہے۔ انہیں یقین ہے کہ وہ سب کچھ بنا امریکہ کی مدد کے بنا سکتے ہیں۔ جہاں چاہ ہوتی ہے وہاں راہ نکل آتی ہے۔ ان کے پاس "ہاتھ" ہیں اور وہ ہاتھ کا پورا استعمال کر کے جادو جگاتے چلے جا رہے ہیں۔

(4) چین میں اجارہ داری نہیں چل سکتی۔ یہاں پونجی اور مزدوری دونوں کے ہت کی رکشا کی جاتی ہے:

اگر ادیوگ پتی مزدوری کی در' صفائی' رکشا اور مزدور سمبندھی قانونوں کی پابندی کرتے ہیں تو انہیں بھاری سے بھاری فائدہ اٹھانے کا چین میں حق حاصل ہے۔ ہر طرح کی سودھا دی جاتی ہے کہ کارخانے فائدہ کمائیں' اتپادن بڑھائیں اور دیش کو مالا مال کریں۔ جب تک پونجی پتی بیوپار میں بے ایمانی نہیں کرتے اور سرکار کی پالیسی اور قانون کا النگھن نہیں کرتے تب تک ان کا منافع سورکشت ہے' اسے کوئی آنچ نہیں آسکتی۔ چین میں دس سے لے کر تیس فی صدی تک منافع کمایا جا سکتا ہے۔ اگر کوئی پونجی پتی ایماندار ڈھنگ سے لاگت کم کر لے اور سارے قانونوں کی پابندی کرتے ہوئے اور گاہکوں کے ہت کا دھیان رکھتے ہوئے اس سے بھی زیادہ فائدہ کما لے تو بھی اس منافع پر کوئی روک نہیں ہے۔ منافع کی یہ در پونجی پتی دیشوں سے بھی زیادہ ہے— ہمیں پورا یقین ہے کہ ہندستان کا پونجی پتی بھی کانگریس سرکار کے مقابلے میں چین کی کمیونسٹ سرکار کا سواگت کریگا۔ سرکار نہ کیول کچا مال سپلائی کرتی ہے' پونجی ادھار دیتی ہے اور دوسری سہائتا کرتی ہے بلکہ منافع کی گارنٹی بھی کرتی ہے۔ سرکار کی ایک ہی شرط ہے کہ چیز اچھی ہونی چاہئے۔

منافع کے بٹوارے پر روک ضرور ہے: (1) پچھلی گھٹوتی پورا کرنے اور ٹیکس وغیرہ ادا کرنے کے بعد جو منافع بچے اس کا 10 فی صدی ریزرو فنڈ میں ڈال دیا جائے۔ (2) منافع کا 8 فی صدی سے زیادہ بھاگ حصے داروں کو نہ دیا جائے۔ (3) اس ادائگی کے بعد جو رقم بچے اس کا بٹوارہ اس طرح ہو: حصے داروں' منیجروں'

वह पैदावार की लागत में जोड़ दिया जायगा और चीज़ें मंहगी हो जायंगी. जो रक़म मज़दूर को मिली थी वह इस तरह हमारे पास फिर आजायगी. मज़दूर को तो बहुत नुक़सान नहीं होगा लेकिन किसान का तो जेब ही कट जायगा.

इससे पहले कि हम चीन की कामयाब नीति पर रोशनी डालें यह ज़रूरी है कि सन '49 से पहले की परिस्थिति को समझ लें. कोमिनतांग के राज में चीनी उद्योग धन्दे छिन्न भिन्न पड़े थे. घरेलू लड़ाई और बड़ी जंग ने उनकी कमर और भी तोड़ दी थी. 1947 में शंघाई के 5418 कारख़ानों में से कुल 582 किसी सूरत काम कर रहे थे. जिस वक़्त मौजूदा सरकार ने हुकूमत की बाग डोर संभाली तो टिन सिन के 70 फ़ी सदी, चिंग ताओ के 50 फ़ी सदी, केन्टन के 30 फ़ी सदी कारख़ाने बन्द पड़े थे. देश में हर चीज़ की कमी थी और बंडलों नोट से दिया-सलाई का एक दाना मिलने में भी दिक़्क़त होती थी.

सरकार ने बाग डोर संभालते ही यह पालिसी तय की: "उन सारे कारख़ानों को जो कि देश के माली ढांचे को मज़बूत करते हैं और जनता के रहन सहन के स्तर को ऊंचा उठाने में मददगार हैं सरकार प्रोत्साहन देगी कि वह पूरी ताक़त से पैदावार बढ़ाने में लग जायं और उनकी हर तरह से मदद करेगी." इसके बाद सरकार ने निजी कारख़ानों पर अंकुश रखने के लिये एक रेगुलेशन पास किया. इस रेगुलेशन में प्रोत्साहन दिया गया था कि लोग निजी कारख़ानों में पूंजी लगाएं, उनको जायज़ मुनाफ़े की गारन्टी की गई थी और मुनाफ़े के बंटवारे का दर तय किया गया था.

चीन में आज दो तरह का व्योपार है: एक सरकार के क़ब्ज़े में है और दूसरा प्राइवेट हाथों में. पर इन दोनों में टक्कर नहीं होती बल्कि दोनों सहयोग करते हैं. कोयला, बिजली और स्टील के कारख़ाने सरकार के हाथों में हैं. इनमें कोई निजी पूंजी नहीं लगी. दूसरे उद्योगों में निजी पूंजी लगी है और सरकार उसकी सहायता करती है. आज निजी कारख़ानेदार ख़ुश हैं और हमेशा से ज़ियादा और ईमानदारी से फ़ायदा कमा रहे हैं.

इस परिवर्तन को समझने के लिये ज़रूरी है कि हम चीनी सरकार की नीति को समझ लें:

(1) नई चीनी सरकार ने सामराजियों की लूट से अपने को बचा लिया और उनकी माली ग़ुलामी के जुए को उतार फेंका. सामराजियों ने उसको डराया धमकाया और नाकाबन्दी भी की. पर इन सब कारवाइयों से चीन को और हौसला हुआ कि वह अपने पैरों पर खड़ा हो जाय. अमरीका ने जितने जाल बुने चीनियों ने उतना ही उत्पादन और बढ़ाया.

وہ پیداوار کی لاگت میں جوڑ دیا جائےگا اور چیزیں مہنگی ہوجائیں گی. جو رقم مزدور کو ملی تھی وہ اس طرح ہمارے پاس پھر آجائے گی . مزدور کو تو بہت نقصان نہیں ہوگا لیکن کسان کا تو جیب ہی کٹ جائے گا .

اس سے پہلے کہ ہم چین کی کامیاب نیتی پر روشنی ڈالیں یہ ضروری ہے کہ سن '49 سے پہلے کی پرستھتی کو سمجھ لیں . کومنتانگ کے راج میں چینی اُدیوگ دھندے چھن بھن پڑے تھے . گھریلو لڑائی اور بڑی جنگ نے اُن کی کمر اور بھی توڑ دی تھی. 1947 میں شنگھائی کے 5418 کارخانوں میں سے کل 582 کسی صورت کام کر رہے تھے . جس وقت موجودہ سرکار نے حکومت کی باگ ڈور سنبھالی تو ٹین سن کے 70 فی صدی' چنگ تاؤ کے 50 فیصدی صدی' کینٹن کے 30 فیصدی کارخانے بند پڑے تھے . دیش میں ہر چیز کی کمی تھی اور بنڈلوں نوٹ سے دیا سلائی کا ایک دانہ ملنے میں بھی دقت ہوتی تھی.

سرکار نے باگ ڈور سنبھالتے ہی یہ پالیسی طے کی : " اُن سارے کارخانوں کو جو کہ دیش کے مالی ڈھانچے کو مضبوط کرتے ہیں اور جنتا کے رہن سہن کے استر کو اونچا اُٹھانے میں مددگار ہیں سرکار پروتساہن دے گی کہ وہ پوری طاقت سے پیداوار بڑھانے میں لگ جائیں اور اُن کی ہر طرح سے مدد کرے گی ." اس کے بعد سرکار نے نجی کارخانوں پر انکش رکھنے کے لئے ایک ریگولیشن پاس کیا. اس ریگولیشن میں پروتساہن دیا گیا تھا کہ لوگ نجی کارخانوں میں پونجی لگائیں' اُن کو جائز منافع کی گارنٹی کی گئی تھی اور منافع کے بٹوارے کا در طے کیا گیا تھا .

چین میں آج دو طرح کا بیوپار ہے : ایک سرکار کے قبضے میں ہے اور دوسرا پرائیویٹ ہاتھوں میں . پر ان دونوں میں ٹکر نہیں ہوتی بلکہ دونوں سہیوگ کرتے ہیں. کوئلہ' بجلی اور اسٹیل کے کارخانے سرکار کے ہاتھوں میں ہیں . ان میں کوئی نجی پونجی نہیں لگی . دوسرے اُدیوگوں میں نجی پونجی لگی ہے اور سرکار اس کی سہائتا کرتی ہے. آج نجی کارخانےدار خوش ہیں اور ہمیشہ سے زیادہ اور ایمانداری سے فائدہ کما رہے ہیں .

اس پریورتن کو سمجھنے کے لئے ضروری ہے کہ ہم چینی سرکار کی نیتی کو سمجھ لیں :

(1) نئی چینی سرکار نے سامراجیوں کی لوٹ سے اپنے کو بچا لیا اور ان کی مالی غلامی کے جوئے کو اُتار پھینکا . سامراجیوں نے اُس کو ڈرایا دھمکایا اور ناکہ بندی بھی کی . پر ان سب کاروائیوں سے چین کو اور حوصلہ ہوا کہ وہ اپنے پیروں پر کھڑا ہو جائے. امریکہ نے جتنے جال بنے چینیوں نے اُتنا ہی اُتپادن اور بڑھایا .

नहीं देती. कुछ कारखानेदारों ने सरकारी मशीन पर क़ब्ज़ा जमा लिया है और सरकारी सहायता उनकी इजारादारी हो गई है. इस इजारेदार गुट से जो उद्योग पति अलग हैं वह बे साहारा हैं और मौत और ज़िंदगी के बीच सांस ले रहे हैं.

(5) सरकार केवल इजारादार पूंजीपतियों के हित का ख़याल रखती है और मज़दूरों और छोटे छोटे कारख़ानेदारों के हित को ठुकरा देती है.

(6) टैक्स पालिसी बहुत ही नाजायज़ है. सरकार मनमाने ढंग से उद्योगों पर टैक्स लगाती है. इजारेदार पूंजीपति टैक्स में घुटाला कर जाते हैं और डकार तक नहीं लेते. दूसरे उद्योग पति चूसे जाते हैं. उनका दिल रखने के लिये सरकार उन्हें छूट दे देती है कि वह मनमाने ढंग से मज़दूर का शोषन करें और आम जनता को लूटें.

(7) आज की परिस्थिति में व्योपार में "ईमानदारी" का मतलब है ज़बरदस्त घाटा. बिना रिश्वत के एक तिनका भी नहीं हुलाया जा सकता.

(8) हमारे उद्योगों का आधार है "मुनाफ़ा". आदमी केवल मुनाफ़े का साधन है. इस कारन रोज़मर्रा की ज़रूरतों का ख़याल किये बिना वह चीज़ें हमारे देश में बनती हैं जिन पर ज़ियादा मुनाफ़ा होता है. इस तरह आम जनता के काम आने वाले सामान पर आराम तलबी के सामान को तरजीह दी जाती है. अगर कपड़े से ज़ियादा मुनाफ़ा लिपस्टिक में होता है तो हमारे उद्योग पति लिपस्टिक बनाने लगेंगे.

(9) सट्टा बाज़ी दाम चढ़ाती रहती है. सरकार उस पर कोई रोक नहीं लगा पाती.

(10) बीच के दलाल का मुनाफ़ा बढ़ा जा रहा है और इस बढ़ौती का भार जनता के कन्धों पर पड़ता है.

(11) जनता की माली हालत ख़राब है. उसके पास माल ख़रीदने के लिये पैसे ही नहीं हैं तो माल बिके कहां. हमारी सरकार न तो अपने उद्योगी सामानों के लिये देशी मारकेट में ख़ुशहाली पैदा कर सकी और न बाहरी मुल्कों में उनके लिये कोई बाज़ार ढूंढ पाई.

(12) मज़दूरों के हित का बिलकुल ख़याल नहीं रखा जाता. सरकार ने लेबर इन्श्योरेन्स क़ानून बनाए हैं. पर इससे मज़दूरों को कोई लाभ नहीं हुआ. कानपुर के एक अंगरेज़ उद्योग पति ने अपने एक लेख में लिखा था: सरकार हम से चाहती है कि हम मज़दूरों को ज़ियादा मज़दूरी दें, उन्हें आसानियां दें, उन्हें लेबर इन्श्योरेन्स की सुविधाएं दें. इससे हमारा कोई नुक़सान नहीं है. हम अपने फ़ायदे में से तो कौड़ी कम नहीं करेंगे. रहा यह ख़र्च सो

نہیں دیتی. کچھ کارخانے داروں نے سرکاری مشین پر قبضہ جما لیا ہے اور سرکاری سہائتا اُن کی اجارہ داری ہو گئی ہے . اِس اجارےدار گٹ سے جو اُدیوگ پتی الگ ہیں وہ بے سہارا ہیں اور موت اور زندگی کے بیچ سانس لے رہے ہیں.

(5) سرکار کیول اجارہ دار پونجی پتیوں کے ہت کا خیال رکھتی ہے اور مزدوروں اور چھوٹے چھوٹے کارخانےداروں کے ہت کو ٹھکرا دیتی ہے .

(6) ٹیکس کی پالیسی بہت ناجائز ہے. سرکار من مانے ڈھنگ سے اُدیوگوں پر ٹیکس لگاتی ہے . اجارےدار پونجی پتی ٹیکس میں گھٹالا کر جاتے ہیں اور ڈکار تک نہیں لیتے. دوسرے اُدیوگ پتی چوسے جاتے ہیں . اُن کا دل رکھنے کے لئے سرکار اُنہیں چھوٹ دے دیتی ہے کہ وہ من مانے ڈھنگ سے مزدور کا شوشن کریں اور عام جنتا کو لوٹیں .

(7) آج کی پرستھتی میں بیوپار میں "ایمانداری" کا مطلب ہے زبردست گھاٹا. بنا رشوت کے ایک تنکا بھی نہیں ہلایا جاسکتا .

(8) ہمارے اُدیوگوں کا آدھار ہے "منافع". آدمی کیول "منافع" کا سادھن ہے . اِس کارن روزمرہ کی ضرورتوں کا خیال کئے بنا وہ چیزیں ہمارے دیش میں بنتی ہیں جن پر زیادہ منافع ہوتا ہے . اس طرح عام جنتا کے کام آنے والے سامان پر آرام طلبی کے سامان کو ترجیح دی جاتی ہے . اگر کپڑے سے زیادہ منافع لپ اسٹک میں ہوتا ہے تو ہمارے اُدیوگ پتی لپ اسٹک بنانے لگیں گے .

(9) سٹہ بازی دام چڑھاتی رہتی ہے . سرکار اُس پر کوئی روک نہیں لگا پاتی .

(10) بیچ کے دلال کا منافع بڑھا جا رہا ہے اور اس بڑھوتی کا بھار جنتا کے کندھوں پر پڑتا ہے .

(11) جنتا کی مالی حالت خراب ہے . اس کے پاس مال خریدنے کے لئے پیسے ہی نہیں ہیں تو مال بکے کہاں . ہماری سرکار نہ تو اپنے اُدیوگی سامانوں کے لئے دیشی مارکیٹ میں خوشحالی پیدا کر سکی اور نہ باہری ملکوں میں اُن کے لئے کوئی بازار ڈھونڈھ پائی .

(12) مزدوروں کے ہت کا بالکل خیال نہیں رکھا جاتا . سرکار نے لیبر انشورنس قانون بنائے ہیں . پر اس سے مزدوروں کو کوئی لابھ نہیں ہوا . کانپور کے ایک انگریز اُدیوگ پتی نے اپنے ایک لیکھ میں لکھا تھا : سرکار ہم سے چاہتی ہے کہ ہم مزدوروں کو زیادہ مزدوری دیں، اُنہیں آسانیاں دیں، اُنہیں لیبر انشورنس کی سہولتیں دیں . اس میں ہمارا کوئی نقصان نہیں ہے . ہم اپنے فائدے میں سے تو کوڑی کم نہیں کریں گے . رہا یہ خرچ سو

(1) सामराजी देशों की आर्थिक गुलामी से आज़ाद होने का मतलब है कि उनसे दुशमनी मोल ली जाय. इस दुशमनी का विचार करके यह सरकार कांप उठती है. बड़े बड़े ज़िम्मेदार सरकारी लोगों का कहना है कि वह इस वक़्त इस परिस्थिति में नहीं हैं कि सामराजी लूट से छुटकारा पा सकें. वह फ़ौरन ईरान की मिसाल सामने रख देते हैं. उनका कहना है कि हम बर्रें का छत्ता नहीं छेड़ना चाहते. धीरे धीरे हम छुटकारा पा लेंगे. लेकिन छुटकारा हासिल करने के बजाय वह और ज़ियादा से ज़ियादा रिआयतें बाहरी पूंजी को देते जाते हैं और ऐसी शर्मनाक शर्तों पर क़रज़ लेते जाते हैं जो किसी देश को भी शोभा नहीं देतीं. यह ही वह विचार है जिसके आधार पर हमारी सरकार विदेशी व्योपार करती है.

(2) "ज़रूरत" का लिहाज़ बाद में रखा जाता है और "ख़ूबसूरती" का पहले. जो चीज़ें भी हम बनाएं वह ख़ूबसूरत हों, "परफ़ेक्ट" हों और अमरीका से टक्कर लेती हों. पर इस स्तर को पैदा करने के लिये मशीनों की ज़रूरत है. यह मशीनें अमरीका ही दे सकता है. इस लालच में हम उसके पीछे घूमते रहते हैं और उसे ख़ुश करने की कोशिश करते रहते हैं. पर अमरीका वाले पिघल के नहीं देते. ऐसे वह बेवक़ूफ़ भी नहीं हैं. वह जानते हैं कि चीन के बाद हिन्दुस्तान ही उनकी सबसे बड़ी मंडी है. अगर हिन्दुस्तान में सामान पैदा होने लगा तो अमरीकी माल सड़ जायगा.

(3) हमारी सरकार को अपनी जनता और उसकी बुद्धि पर विश्वास नहीं है. वह यह गुमान ही नहीं कर सकती कि "हिन्दुस्तानी" भी इस योग हैं कि अगर उन्हें साधन दिये जायं तो ज़रूरत को पूरा करने के लिये लगभग वह हर सामान बना सकते हैं. यह बात हमारे नेताओं की समझ से परे है कि मशीन का ठोंक पीट के किसी आदमी ने ही बनाया था और फिर उस हाथ की मशीन से आज की सारी मशीनें जनमी हैं. जो आदमी सदियों पहले मशीन बना सकता था आज वह ही आदमी फिर मशीन बना सकता है. ज़ाहिर बात है कि इस तरह की चीज़ें "परफ़ेक्ट" नहीं होंगी, ख़ूबसूरत नहीं होंगी लेकिन हमारी ज़रूरत अवश्य पूरा कर देंगी. कोशिश करके हम उन्हें ख़ूबसूरत भी बना लेंगे और हो सकता है कि इस दौड़ में हम औरों से आगे निकल जायं पर हमारी सरकार के लिये अमरीका की मशीनें आख़री हैं और उनसे आगे तरक़्क़ी की गुंजाइश नहीं है.

(4) हमारी सरकार उद्योगों की ज़रूरत ज़रूर है पर उनमें ख़ून डालने की कोशिश नहीं करती. कच्चा माल बग़ैरा कैसे कारख़ानों को मिले, सरकार इस बात को महत्त्व

(1) سامراجی دیشوں کی آرتھک غلامی سے آزاد ہونے کا مطلب ہے کہ اُن سے دشمنی مول لی جائے۔ اِس دشمنی کا وچار کرکے یہ سرکار کانپ اُٹھتی ہے۔ بڑے بڑے ذمہ دار سرکاری لوگوں کا کہنا ہے کہ وہ اِس وقت اِس پرستھتی میں نہیں ہیں کہ سامراجی لوٹ سے چھٹکارا پا سکیں۔ وہ فوراً ایران کی مثال سامنے رکھ دیتے ہیں۔ اُن کا کہنا ہے کہ ہم برّوں کا چھتہ نہیں چھیڑنا چاہتے۔ دھیرے دھیرے ہم چھٹکارا پالیں گے۔ لیکن چھٹکارا حاصل کرنے کے بجائے وہ اور زیادہ سے زیادہ رعائتیں باہری پونجی کو دیتے جاتے ہیں اور ایسی شرمناک شرطوں پر قرض لیتے جاتے ہیں جو کسی دیش کو بھی شوبھا نہیں دیتیں۔ یہ ہی وہ وچار ہے جس کے آدھار پر ہماری سرکار ودیشی بیوپار کرتی ہے۔

(2) "ضرورت" کا لحاظ بعد میں رکھا جاتا ہے اور "خوبصورتی" کا پہلے۔ جو چیزیں بھی ہم بنائیں وہ خوبصورت ہوں، "پرفکٹ" ہوں اور امریکہ سے ٹکر لیتی ہوں۔ پر اس استر کو پیدا کرنے کے لئے مشینوں کی ضرورت ہے۔ یہ مشینیں امریکہ ہی دے سکتا ہے۔ اس لالچ میں ہم اُس کے پیچھے گھومتے رہتے ہیں اور اُسے خوش کرنے کی کوشش کرتے رہتے ہیں۔ پر امریکہ والے پگھل کے نہیں دیتے۔ ایسے وہ بیوقوف بھی نہیں ہیں۔ وہ جانتے ہیں کہ چین کے بعد ہندستان ہی اُن کی سب سے بڑی منڈی ہے۔ اگر ہندستان میں سامان پیدا ہونے لگا تو امریکی مال سڑ جائے گا۔

(3) ہماری سرکار کو اپنی جنتا اور اُس کی بدھی پر وشواس نہیں ہے۔ وہ یہ گمان ہی نہیں کرسکتی کہ "ہندستانی" بھی اِس یوگ ہیں کہ اگر اُنہیں سادھن دئے جائیں تو ضرورت کو پورا کرنے کے لئے لگ بھگ وہ ہر سامان بنا سکتے ہیں۔ یہ بات ہمارے نیتاؤں کی سمجھ سے پرے ہے کہ مشین کو ٹھونک پیٹ کے کسی آدمی نے ہی بنایا تھا اور پھر اُس ہاتھ کی مشین سے آج کی ساری مشینیں جنمی ہیں۔ جو آدمی صدیوں پہلے مشین بنا سکتا تھا آج وہی آدمی پھر مشین بنا سکتا ہے۔ ظاہر بات ہے کہ اِس طرح کی چیزیں "پرفکٹ" نہیں ہوں گی، خوبصورت نہیں ہوں گی لیکن ہماری ضرورت اوشیہ پورا کردیں گی۔ کوشش کرکے ہم اُنہیں خوبصورت بھی بنالیں گے اور ہوسکتا ہے کہ اِس دوڑ میں ہم اوروں سے آگے نکل جائیں۔ پر ہماری سرکار کے لئے امریکہ کی مشینیں آخری ہیں اور ان سے آگے ترقی کی گنجائش نہیں ہے۔

(4) ہماری سرکار اُدیوگوں کو ضرورت ضرور ہے پر اُن میں خون ڈالنے کی کوشش نہیں کرتی۔ کچا مال وغیرہ کیسے کارخانوں کو ملے، سرکار اِس بات کو مہتو

नये चीन में कारख़ाने

अमरीका के एक लेखक ने चीन पर एक किताब लिखी थी और उसका नाम रखा था "चालीस करोड़ गाहक." उसके लिये चीन एक मुल्क नहीं था बल्कि एक मंडी थी. चीनी आदमी नहीं थे बल्कि "गाहक" थे. चीन संबंधी किताब का इससे अच्छा नाम वह सोच भी नहीं सकता था. इसमें कोई अचरज भी नहीं है. चीन सचमुच ही सन 49 तक अमरीका, बरतानिया और जापान की मंडी थी. चीन की किसी दुकान पर चले जाइये, आपको दुकान भर में शायद ही कोई चीन की बनी चीज़ मिल सके. यह सामान ड्यूटी से छूट पाए बन्दरगाहों से अन्दर लाए जाते थे. आख़ीर के दिनों में तो एक अमरीकी को ही कस्टम इन्सपेक्टर जनरल मुक़र्रर कर दिया गया था. लेकिन सन '49 के बाद यह मंडी ख़तम हो गई. इसकी ज़बरदस्त खीज है और अमरीका के दिल में रह रह कर टीस उठती है. यही नहीं कि चीन ने अमरीका और दूसरे साम्राजी देशों की लूट से अपने को बचा लिया बल्कि उसने खुद सब सामान बनाना शुरू कर दिया. दुकानें सामानों से लदी हैं, दिन भर गाहकों की भीड़ लगी रहती है, लेकिन एक ज़बरदस्त फ़रक़ है. अब इन दुकानों में सारी चीज़ें चीन की बनी होती हैं.

चीन और हिन्दुस्तान की आज़ादी में यही अन्तर है. हिन्दुस्तान के पास चीन से ज़ियादा कल कारख़ाने थे फिर भी आज हिन्दुस्तान के बाज़ार अमरीकी सामानों से पटे पड़े हैं. दूसरी तरफ़ चीन ख़ुद हर चीज़ बनाने लगा है और जो चीज़ वह नहीं बना पाता उसका या इस्तेमाल ही नहीं करता और अगर ज़रूरत के मुताबिक़ करता भी है तो उसे अपनी आज़ादी बेच कर नहीं हासिल करता. चीन में बाहरी माल की खपत नहीं है और हिन्दुस्तान में अमरीकी माल को इतना प्रोत्साहन मिल रहा है कि वह हमारे उद्योगों को भी हज़म किये जा रहा है. आज इन बातों को सामने रखकर गम्भीरता से यह सोचने की ज़रूरत है कि चीन वाले क्यों स्वालम्बन की तरफ़ तेज़ और सफल क़दम उठाने में कामयाब हैं और हम क्यों अपनी जगह से पीछे हटे जा रहे हैं!

हिन्दुस्तान और चीन के इस फ़रक़ को समझने के लिये ज़रूरी है कि हम दोनों सरकारों की नीति को अच्छी तरह समझ लें क्योंकि सरकारी नीती से ही उद्योग धन्धे और ब्योपार बढ़ते या ख़तम हो जाते हैं. भारत सरकार की नीति यह है:

نئے چین میں کارخانے

امریکہ کے ایک لیکھک نے چین پر ایک کتاب لکھی تھی اور اُس کا نام رکھا تھا "چالیس کروڑ گاہک"۔ اُس کے لئے چین ایک ملک نہیں تھا بلکہ ایک منڈی تھی۔ چینی آدمی نہیں تھے بلکہ "گاہک" تھے۔ چین سمبندھی کتاب کا اِس سے اچھا نام وہ سوچ بھی نہیں سکتا تھا۔ اِس میں کوئی اچرج بھی نہیں ہے۔ چین سچ مچ ہی سن 49' تک امریکہ، برطانیہ اور جاپان کی منڈی تھی۔ چین کی کسی دوکان پر چلے جائیے، آپ کو دوکان بھر میں شاید ہی کوئی چین کی بنی چیز مل سکے۔ یہ سامان ڈیوٹی سے چھوٹ پائے بندرگاہوں سے اندر لائے جاتے تھے۔ آخیر کے دنوں میں تو ایک امریکی کو ہی کسٹم انسپکٹر جنرل مقرر کردیا گیا تھا۔ لیکن سن 49' کے بعد یہ منڈی ختم ہوگئی۔ اس کی زبردست کھیج ہے اور امریکہ کے دل میں رہ رہ کر ٹیس اُٹھتی ہے۔ یہی نہیں کہ چین نے امریکہ اور دوسرے سامراجی دیشوں کی لوٹ سے اپنے کو بچا لیا بلکہ اس نے خود سب سامان بنانا شروع کردیا۔ دوکانیں سامانوں سے لدی ہیں، دن بھر گاہکوں کی بھیڑ لگی رہتی ہے۔ لیکن ایک زبردست فرق ہے۔ اب ان دوکانوں میں ساری چیزیں چین کی بنی ہوتی ہیں۔

چین اور ہندستان کی آزادی میں یہی انتر ہے۔ ہندستان کے پاس چین سے زیادہ کل کارخانے تھے پھر بھی آج ہندستان کے بازار امریکی سامانوں سے پٹے پڑے ہیں۔ دوسری طرف چین خود ہر چیز بنانے لگا ہے اور جو چیز وہ نہیں بنا پاتا اُس کا یا استعمال ہی نہیں کرتا اور اگر ضرورت کے مطابق کرتا بھی ہے تو اُسے اپنی آزادی بیچ کر نہیں حاصل کرتا۔ چین میں باہری مال کی کھپت نہیں ہے اور ہندستان میں امریکی مال کو اتنا پروتساہن مل رہا ہے کہ وہ ہمارے اُدیوگوں کو بھی ہضم کئے جا رہا ہے۔ آج ان باتوں کو سامنے رکھ کر گمبھیرتا سے یہ سوچنے کی ضرورت ہے کہ چین والے کیوں سوالمبن کی طرف تیز اور سپھل قدم اُٹھانے میں کامیاب ہیں اور ہم کیوں اپنی جگہ سے پیچھے ہٹے جا رہے ہیں!

ہندستان اور چین کے اِس فرق کو سمجھنے کے لئے ضروری ہے کہ ہم دونوں سرکاروں کی نیتی کو اچھی طرح سمجھ لیں کیونکہ سرکاری نیتی سے ہی اُدیوگ دھندے اور بیوپار بڑھتے یا ختم ہو جاتے ہیں۔ بھارت سرکار کی نیتی یہ ہے:

बाद को अनाज का दर तय कर दिया गया. इस तरह मामूली दरजे के किसानों को और ज़ियादा सहारा मिला. मामूली और ग़रीब किसानों के अनाजकी क़ीमत ज़ियादा रखी गई. इसके मुक़ाबले में बड़े काश्तकारों और रियासती फ़ारमों के अनाज की क़ीमत कम रखी गई. इस तरह मामूली और ग़रीब किसानों को उनकी कम पैदावार का ज़ियादा पैसा मिलने लगा और इस तरह उनकी हालत और अच्छी हो गई. दूसरी तरफ़ बड़े किसानों की दौलत में कमी आने लगी. इस तरह रुपया खिचकर गांव के मामूली किसानों में पहुँचने लगा. उनको खेतीबारी का सामान भी दिया गया.

एक क़ानून के ज़रिये मालगुज़ारी कम कर दी गई. मज़दूरों ने भी किसानों की बड़ी सहायता की. उन्होंने फ़सल कटते समय उनका हाथ बटाने के लिये वालनटियर भेजे जो उनके साथ मिल जुल कर काम करते थे. उसका असर यह हुआ कि किसानों की सूझ बूझ भी बढ़ गई.

उधर दो साला योजना के पूरे हो जाने के कारन किसानों के जीवन पर भी बड़ा अच्छा असर पड़ा. मुल्क की सनअती पैदावार बहुत बढ़ गई. अब ऐसे सामान बनने लगे जो खेती बारी के नये तरीक़ों में सहायता दे सकते थे. किसानों ने मिल जुल कर भी खेती बारी के औज़ार ख़रीदने शुरू कर दिये. सरकार ने भी किसानों की बड़ी मदद की और सहकारी खेतीबारी के केन्द्रों को ख़ूब बढ़ावा दिया. इसका नतीजा यह हुआ कि कुछ दिनों में छोटे छोटे फ़ारम बड़े बड़े फ़ारमों में बदल गए.

पर यह प्यारा देश हमारा, लूट शोशन का मारा,
ख़ून चूसने वाली जोंकें, अभी यहां करतीं पौ बारा
शासन उनका, राशन उनका, क़ानूनों पर आसन उनका,
गोली, गोलों, बन्दूक़ों पर रखा है सिंहासन उनका
गांव, गली, शहरों, नगरों, को जकड़े हैं बटमार
नया आदमी मांग रहा है जीने का अधिकार
—'शील'

بعد کو اناج کا نرخ طے کر دیا گیا۔ اس طرح معمولی درجے کے کسانوں کو اور زیادہ سہارا ملا۔ معمولی اور غریب کسانوں کے اناج کی قیمت زیادہ رکھی گئی۔ اس کے مقابلے میں بڑے کاشتکاروں اور ریاستی فارموں کے اناج کی قیمت کم رکھی گئی۔ اس طرح معمولی اور غریب کسانوں کو ان کی کم پیداوار کا زیادہ پیسہ ملنے لگا اور اس طرح ان کی حالت اور اچھی ہو گئی۔ دوسری طرف بڑے کسانوں کی دولت میں کمی آنے لگی۔ اس طرح روپیہ کھنچ کر گاؤں کے معمولی کسانوں میں پہنچنے لگا۔ ان کو کھیتی باڑی کا سامان بھی دیا گیا۔

ایک قانون کے ذریعہ مالگذاری کم کر دی گئی۔ مزدوروں نے بھی کسانوں کی بڑی سہائتا کی۔ انہوں نے فصل کٹتے سمے ان کا ہاتھ بٹانے کے لئے والنٹیر بھیجے جو ان کے ساتھ مل جل کر کام کرتے تھے۔ اس کا اثر یہ ہوا کہ کسانوں کی سوجھ بوجھ بھی بڑھ گئی۔

ادھر دو سالہ یوجنا کے پورے ہو جانے کے کارن کسانوں کے جیون پر بھی بڑا اچھا اثر پڑا۔ ملک کی صنعتی پیداوار بہت بڑھ گئی۔ اب ایسے سامان بننے لگے جو کھیتی باڑی کے نئے طریقوں میں سہائتا دے سکتے تھے۔ کسانوں نے مل جلکر بھی کھیتی باڑی کے اوزار خریدنے شروع کر دیئے۔ سرکار نے بھی کسانوں کی بڑی مدد کی اور سہکاری کھیتی باڑی کے کیندروں کو خوب بڑھاوا دیا۔ اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ کچھ دنوں میں چھوٹے چھوٹے فارم بڑے بڑے فارموں میں بدل گئے

پر یہ پیارا دیش ہمارا، لوٹ شوشن کا مارا،
خون چوسنے والی، جونکیں، ابھی یہاں کرتیں پو بارا
شاسن اُن کا، راشن اُن کا، قانونوں پر آسن اُن کا،
گولی، گولوں، بندوقوں پر رکھا ہے سنگھاسن اُن کا
گاؤں، گلی، شہروں، نگروں کو جکڑے ہیں بٹ مار
نیا آدمی مانگ رہا ہے جینے کا ادھیکار
—'شیل'

था मामूली दरजे के किसानों और मजदूर वर्ग का. चेकोस्लोवाकिया के इतिहास के इस हिस्से को हम दो भाग में बांट सकते हैं : पहला, 1945 से 1947 तक का जमाना, जब बिदेसी जागीरदारों की जमीन जब्त कर ली गई और चेकोस्लोवाकिया के खेत मजदूरों और गरीब किसानों में बांट दी गई. दूसरा जमाना फरवरी 1948 के बाद से शुरू होता है जिसके अनुसार सामन्त काल की बची खुची जागीरदारी परम्परा को बिलकुल खतम कर दिया गया. इन्क़लाब के पहले जमाने में सब से पहला सवाल तो यह उठा कि खेत मजदूरों या ऐसे काश्तकारों को भी जमीन दी जाय जिन के पास अपनी जमीनें नहीं हैं और दूसरों के यहां मजदूरी करने पर मजबूर हैं. इसके अनुसार जरमनों की जमीनें भी जब्त की गईं. यह जरमन हिटलर के जमाने में चेकोस्लोवाकिया आकर जमीन के मालिक बन बैठे थे. साथ ही साथ ऐसे लोगों की जमीनें भी छीनी गईं जिन्होंने देस के साथ ग़द्दारी की थी. यह काम बड़ी तेजी से अमल में लाया गया फिर बाद में यही जमीनें मामूली किसानों और खेत मजदूरों में बांट दी गईं. इस तरह बिदेसी छाप खतम कर दी गई.

इस तरह चेकोस्लोवाकिया की क्रान्ति का पहला दौर खतम हुआ और खेती सुधार का दौर शुरू हुआ.

फरवरी 1948 में सरकार ने अपने खेती सुधार पर एक नजर और डाली. इसके अनुसार बड़े बड़े जागीरदारों और गिरजाघरों की बड़ी रियासतों का अन्त कर दिया गया. और इसके साथ ही जमीनों को बटाई पर देने का तरीक़ा भी खतम हो गया. और अब मालूम हुआ कि जो तजरुबा रूस में किया गया था वह चेकोस्लोवाकिया की हालत के अनुसार ही था. इस नई योजना के अनुसार किसानों को जमीनें तो मिल गई थीं, लेकिन वह पैदावार को न बढ़ा सकते थे. इसका कारन यह था कि नए खेती सुधार के अनुसार जमीन बहुत छोटे छोटे टुकड़ों में बंट गई थी और इन खेतों में मशीनों का इस्तेमाल नहीं हो सकता था. इस व्यवस्था में छोटे पैमाने पर खेतीबारी से किसानों की हालत न सुधर सकती थी. यही कारन तो था जो नई सरकार ने सहकारी खेती को बढ़ावा दिया ताकि हर इलाक़े में मिल जुल कर काम हो सके. हर गांव में सहकारी खेती के अनुसार काम चालू हो गया. इस प्रोग्राम में किसान अपनी मरजी से शामिल हो सकते थे. बड़े किसानों के अधिकार जरूर कम कर दिये गए. इसका नतीजा बड़ा अच्छा हुआ. खेती बारी में खूब उन्नति हुई और देस उन्नति की तरफ़ बढ़ने लगा.

सहकारी खेती के अलावा देस में बड़े बड़े रियासती फ़ारम भी हैं जो बड़े जागीरदारों से नई सरकार ने छीने हैं.

تھا معمولی درجے کے کسانوں اور مزدور ورگ کا. چیکوسلوواکیا کے اتہاس کے اس حصے کو ہم دو بھاگ میں بانٹ سکتے ہیں : پہلا 1945 سے 1947 تک کا زمانہ، جب بدیسی جاگیرداروں کی زمین ضبط کر لی گئی اور چیکوسلوواکیا کے کھیت مزدوروں اور غریب کسانوں میں بانٹ دی گئی. دوسرا زمانہ فروری 1948 کے بعد سے شروع ہوتا ہے جس کے انوسار سامنت کال کی بچی کھچی جاگیرداری پرمپرا کو بالکل ختم کر دیا گیا. انقلاب کے پہلے زمانے میں سب سے پہلا سوال تو یہ اٹھا کہ کھیت مزدوروں یا ایسے کاشتکاروں کو بھی زمین دی جائے جن کے پاس اپنی زمینیں نہیں ہیں اور دوسروں کے یہاں مزدوری کرنے پر مجبور ہیں. اس کے انوسار جرمنوں کی زمینیں بھی ضبط کی گئیں یہ جرمن جو ہٹلر کے زمانے میں چیکوسلوواکیا آ کر زمین کے مالک بن بیٹھے تھے. ساتھ ہی ساتھ ایسے لوگوں کی زمینیں بھی چھینی گئیں جنہوں نے دیس کے ساتھ غداری کی تھی. یہ کام بڑی تیزی سے عمل میں لایا گیا. پھر بعد میں یہی زمین معمولی کسانوں اور کھیت مزدوروں میں بانٹ دی گئی. اس طرح بدیسی چھاپ ختم کر دی گئی.

اس طرح چیکوسلوواکیا کی کرانتی کا پہلا دور ختم ہوا اور کھیتی سدھار کا دور شروع ہوا.

فروری 1948 میں سرکار نے اپنے کھیتی سدھار پر ایک نظر اور ڈالی. اس کے انوسار بڑے بڑے جاگیرداروں اور گرجا گھروں کی بڑی بڑی ریاستوں کا انت کر دیا گیا اور اس کے ساتھ ہی زمینوں کو بٹائی پر دینے کا طریقہ بھی ختم ہو گیا. اور اب معلوم ہوا کہ جو تجربہ روس میں کیا گیا تھا وہ چیکوسلوواکیا کی حالت کے انوسار ہی تھا. اس نئی یوجنا کے انوسار کسانوں کو زمین تو مل گئی تھیں، لیکن وہ پیداوار کو نہ بڑھا سکتے تھے. اس کا کارن یہ تھا کہ نئے کھیتی سدھار کے انوسار زمین بہت چھوٹے چھوٹے ٹکڑوں میں بنٹ گئی تھی اور ان کھیتوں میں مشینوں کا استعمال نہیں ہو سکتا تھا. اس ویوستھا میں چھوٹے پیمانے پر کھیتی باڑی سے کسانوں کی حالت نہ سدھر سکتی تھی. یہی کارن تو تھا جو نئی سرکار نے سہکاری کھیتی کو بڑھاوا دیا تاکہ ہر علاقے میں مل جل کر کام ہو سکے. ہر گاؤں میں سہکاری کھیتی کے انوسار کام چالو ہو گیا. اس پروگرام میں کسان اپنی مرضی سے شامل ہو سکتے تھے.

بڑے کسانوں کے ادھیکار ضرور کم کر دیئے گئے. اس کا نتیجہ بڑا اچھا ہوا. کھیتی باڑی میں خوب اُنتی ہوئی اور دیش اُنتی کی طرف بڑھنے لگا.

سہکاری کھیتی کے علاوہ دیس میں بڑے بڑے ریاستی فارم ہیں جو بڑے جاگیرداروں سے نئی سرکار نے چھینے ہیں.

तो वह अधिक जमीन जब्त कर ली जायगी. इस क़ानून के अनुसार एक करोड़ एकड़ जमीन जब्त करली गई जो 200 जमींदारों के क़ब्ज़े में थी. मगर इसका बहुत थोड़ा हिस्सा किसानों को मिला. इसको इस तरह तक़सीम किया गया कि लगभग एक तिहाई जमीन पुराने मालिकों से कम दरजे के जमींदारों में बांटी गई, जो सब के सब जरमन या हंगेरियन थे. पन्द्रह फ़ी सदी जमीन जो बड़े बड़े जागीरदारों से छीनी गई थी वह बजाय इसके कि सबकी सब खेत मजदूरों और ग़रीब किसानों में बांट दी जाती उसको दो हजार टुकड़ों Residuary Estates में बांट दिया गया. हर टुकड़ा 250 एकड़ का था. इस तरह जब यह जमीन टुकड़ों में बंट गई तो इस में से छै फ़ी सदी जमीन सट्टे बाज़ों के हाथ बेच दी गई, जिसके पास रुपया था वह ही जमीन ख़रीद सकता था. इसके बाद जो जमीन बची वह बहुत ख़राब थी. उसको छै लाख तीस हज़ार ग़रीब खेत मज़दूरों में बांट दिया गया. इस तरह हर घराने के हिस्से में मुशकिल से ढाई एकड़ जमीन आई. यही हाल जंगलों का भी हुआ. बेचारे ग़रीब किसान इससे भी कोई लाभ न उठा सके. सरकार ने चौथाई जंगल तो अपने अधिकार में ले लिये और बाक़ी तीन चौथाई दो हज़ार बड़े बड़े जमींदारों में बांट दिये.

इस तरह हम देखते हैं कि शुरू शुरू के सुधार बिल्कुल असफल हुए. किसानों की हालत अच्छी न हो सकी. लगभग पांच लाख किसान ऐसे थे जो अपने घर बार की ज़रूरतों को पूरा नहीं कर सकते थे.

मगर जरमन फ़ासिस्त अधिकार के ख़तम होने पर 1945 में जो नई सरकार बनी उसने खेती बारी के बारे में यह सिद्धान्त बनाया कि जो ख़ुद बोए जोते उसको ही जमीन मिलनी चाहिये. इस असूल के अनुसार जमीन फिर से बांटी गई और यह तय किया गया कि हर घराने की ज़रूरत को सामने रख कर 25 और 33 एकड़ के अन्दर जमीन मिलनी चाहिये. इस तरह दो लाख किसानों को जमीन मिली और वह संतोष से रहने लगे. जिन लोगों की जमीन जब्त की गई उनको कोई मावज़ा नहीं दिया गया. इसके साथ ही किसानों को बड़ी मुद्दत वाले क़रज़े दिये गए. काश्तकारों की सहकारी संस्थाएं बनाई गईं जो इन क़रज़ों के अदा करने के विषय में शरतें बनायंगी. इस तरह चेकोस्लोवाकिया के जन आन्दोलन ने एक नई मंजिल का तरफ़ क़दम बढ़ाया. देसी पूंजीपतियों और विदेसी सामराजियों की साज़िश के ख़िलाफ़ एक नया मोरचा बनने लगा. और यह मोरचा

تو وہ ادھک زمین ضبط کرلی جائیگی. اس قانون کے انوسار ایک کروڑ زمین ضبط کرلی گئی جو 200 زمینداروں کے قبضے میں تھی. مگر اس کا بہت تھوڑا حصہ کسانوں کو ملا. اس کو اس طرح تقسیم کیا گیا کہ لگ بھگ ایک تہائی زمین پرانے مالکوں سے کم درجے کے زمینداروں میں بانٹی گئی، جو سب کے سب جرمن یا ھنگیرین تھے. پندرہ فی صدی زمین جو بڑے بڑے جاگیرداروں سے چھینی گئی تھی وہ بجائے اس کے کہ سب کی سب کھیت مزدوروں اور غریب کسانوں میں بانٹ دی جاتی اس کو دو ہزار ٹکڑوں Residuary Estates میں بانٹ دیا گیا. ہر ٹکڑا 250 ایکڑ کا تھا. اس طرح جب یہ زمین ٹکڑوں میں بٹ گئی تو اس میں سے چھ فی صدی اچھی زمین سٹہ بازوں کے ھاتھوں بیچ دی گئی. جس کے پاس روپیہ تھا وہ ھی زمین خرید سکتا تھا. اس کے بعد جو زمین بچی وہ بہت خراب تھی. اس کو چھ لاکھ تیس ہزار غریب کھیت مزدوروں میں بانٹ دیا گیا. اس طرح ہر گھرانے کے حصے میں مشکل سے ڈھائی ایکڑ زمین آئی. یہی حال جنگلوں کا بھی ہوا. بیچارے غریب کسان اس سے بھی کوئی لابھ نہ اٹھا سکے. سرکار نے چوتھائی جنگل تو اپنے ادھیکار میں لے لئے اور باقی تین چوتھائی دو ہزار بڑے بڑے زمینداروں میں بانٹ دئے.

اس طرح ہم دیکھتے ھیں کہ شروع شروع کے سدھار بالکل اسپھل ہوئے. کسانوں کی حالت اچھی نہ ہوسکی. لگ بھگ پانچ لاکھ کسان ایسے تھے جو اپنے گھربار کی ضرورتوں کو پورا نہیں کرسکتے تھے.

مگر جرمن فاسسٹ ادھیکار کے ختم ہونے پر 1945 میں جو نئی سرکار بنی اس نے کھیتی باڑی کے بارے میں یہ سدھانت بنایا کہ جو خود بوئے جوتے اس کو ھی ملنی چاہئے. اس اصول کے انوسار زمین پھر سے بانٹی گئیں اور یہ طے کیا گیا کہ ہر گھرانے کی ضرورت کو سامنے رکھ کر 25 اور 33 ایکڑ کے اندر زمین ملنی چاھئے. اس کے طرح دو لاکھ کسانوں کو زمین ملی اور وہ سنتوش سے رہنے لگے. جن لوگوں کی زمین ضبط کی گئی ان کو کوئی معاوضہ نہیں دیا گیا. اس کے ساتھ ھی کسانوں کو بڑی مدت والے قرضے دئے گئے. کاشتکاروں کی سہکاری سنستھائیں بنائی گئیں جو ان قرضوں کو ادا کرنے کے وشے میں شرطیں بنائیں گی. اس طرح چیکوسلوواکیا کے جن آندولن نے ایک نئی منزل کی طرف قدم بڑھایا. دیسی پونجی پتیوں اور بدیسی سامراجیوں کی سازش کے خلاف ایک نیا مورچا بننے لگا. اور یہ مورچہ

नये चेकोस्लोवाकिया में खेती बारी की तरक़्क़ी

(अतहर परवेज़)

चेकोस्लोवाकिया के इतिहास के पहले हिस्से में खेती बारी की प्रथा कुछ इस तरह थी कि ज़मीन सारे क़बीले की मिली जुली मिलकियत थी. सब किसान मिल जुल कर खेती बारी करते थे. इसी तरह खेती बारी के औज़ार भी कुटुम्ब (क़बीले) की मिलकियत हुआ करते थे. लेकिन नवीं और दसवीं सदी में जब रियासती प्रथा क़ायम हुई तो ज़मीन और मवेशी, कुटुम्ब की जगह व्यक्ति के हाथों में पहुँच गए. इस युग में ख़ास बात यह थी कि बड़े बड़े फ़ारमों पर धनी ज़मींदारों के ग़ुलाम काम करते थे. लेकिन यह हालत भी ज़ियादा दिन तक क़ायम न रही. ग़ुलामी का जैसे ही अन्त हुआ खेती बारी का रूप भी बदल गया. अब ज़मींदारी प्रथा आ गई. बड़े बड़े फ़ारमों का इन्तज़ाम बड़े बड़े ज़मींदारों के हाथ में जूं का तूं रहा मगर अब ग़ुलाम ख़तम हो गए और उनकी जगह किसानों ने ले ली. यह किसान छोटे मोटे खेतों पर खेती बारी करने लगे. 1848 में बेगार का अन्त हो गया. मगर किसानों के हाथ से जो ज़मीन निकल गई थी वह उनको वापस न मिली. योरप में पूंजीवाद ने जैसे ही ज़ोर पकड़ना शुरू किया तो उसके असर से चेकोस्लोवाकिया भी न बच सका और खेती की प्रथा में पूंजीवादी तरीक़ा भी शामिल हो गया पिछले सौ डेढ़ सौ साल में जब कि पूंजीवाद अपनी जड़ें मज़बूत कर रहा था, ग़रीब किसान ज़मीन की कमी के कारन परेशान थे. पर इस बीच में ज़मींदार, बैंक के मालिक और सट्टे बाज़ों वग़ैरा का ज़ोर बढ़ने लगा. उन्होंने अपनी ज़मीनों की बदौलत ख़ूब दौलत समेटी और ज़मीन का मोल और उसका लगान भी बढ़ा दिया. बेचारे किसान, जिनके पास अपना कुछ भी नहीं था, मजबूर हो कर इन पूंजीवादियों की शर्त के अनुसार काम करते थे. अगर ऐसा न करते तो फिर क्या करते. शहर में इनके लिये कोई काम भी तो न था. यह हालत चेकोस्लोवाकिया में सन 1918 तक रही. इस साल वहां पहली लोकशाही क़ायम हुई. इस समय मुल्क की एक तिहाई धरती पर देसी पूंजीपतियों और विदेसी पूंजीपतियों का अधिकार था.

सन 1918 में जब चेकोस्लोवाकिया में पहली लोकशाही क़ायम हुई तो ज़मीन को ज़ब्त करने का भी क़ानून बनाया गया. जिस के अनुसार यह तय हुआ कि अगर किसी व्यक्ति के पास पौने चार सौ एकड़ से अधिक ज़मीन होगी

نئے چیکوسلوواکیا میں کھیتی باری کی ترقی

(اطہر پرویز)

چیکوسلوواکیا کے اتہاس کے پہلے حصے میں کھیتی باری کی پرتھا کچھ اس طرح تھی کہ زمین سارے قبیلے کی ملی جلی ملکیت تھی ۔ سب کسان مل جل کر کھیتی باری کرتے تھے۔ اسی طرح کھیتی باری کے اوزار بھی کٹمب (قبیلے) کی ملکیت ہوا کرتے تھے ۔ لیکن نویں اور دسویں صدی میں جب ریاستی پرتھا قائم ہوئی تو زمین اور مویشی کٹمب کی جگہ ویکتی کے ہاتھوں میں پہونچ گئے۔ اس یگ میں خاص بات یہ تھی کہ بڑے بڑے فارموں پر دھنی زمینداروں کے غلام کام کرتے تھے ۔ لیکن یہ حالت بھی زیادہ دن تک قائم نہ رہی ۔ غلامی کا جیسے ہی انت ہوا کھیتی باری کا روپ بھی بدل گیا. اب زمینداری پرتھا آ گئی ۔ بڑے بڑے فارموں کا انتظام بڑے بڑے زمینداروں کے ہاتھ میں جوں کا توں رہا مگر اب غلام ختم ہوگئے اور ان کی جگہ کسانوں نے لے لی ۔ یہ کسان چھوٹے موٹے کھیتوں پر کھیتی باری کرنے لگے۔ 1848 میں بیگار کا انت ہوگیا ۔ مگر کسانوں کے ہاتھ سے جو زمین نکل گئی تھی وہ اُن کو واپس نہ ملی ۔

یورپ میں پونجی واد نے جیسے ہی زور پکڑنا شروع کیا تو اس کے اثر سے چیکوسلوواکیا بھی نہ بچ سکا اور کھیتی کی پرتھا میں پونجی وادی طریقہ بھی شامل ہوگیا۔ پچھلے سو ڈیڑھ سو سال میں جب کہ پونجی واد اپنی جڑیں مضبوط کر رہا تھا، غریب کسان زمین کی کمی کے کارن پریشان تھے ۔ پر اس بیچ میں زمیندار، بینک کے مالک، اور سٹہ بازوں وغیرہ کا زور بڑھنے لگا ۔ انہوں نے اپنی زمینوں کی بدولت خوب دولت سمیٹی اور زمین کا مول اور اس کا لگان بھی بڑھا دیا ۔ بیچارے کسان، جن کے پاس اپنا کچھ بھی نہیں تھا، مجبور ہوکر ان پونجی وادیوں کی شرط کے انوسار کام کرتے تھے ۔ اگر ایسا نہ کرتے تو پھر کیا کرتے ۔ شہر میں ان کے لئے کوئی کام بھی تو نہ تھا ۔ یہ حالت چیکوسلوواکیا میں سن 1918 تک رہی۔ اس سال وہاں پہلی لوک شاہی قائم ہوئی ۔ اس سمے ملک کی ایک تہائی دھرتی پر دیسی پونجی پتیوں اور بدیسی پونجی پتیوں کا ادھیکار تھا۔

سن 1918 میں جب چیکوسلوواکیا میں پہلی لوک شاہی قائم ہوئی تو زمین کو ضبط کرنے کا بھی قانون بنایا گیا ۔ جس کے انوسار یہ طے ہوا کہ اگر کسی ویکتی کے پاس پونے چار سو ایکڑ سے ادھک زمین ہوگی

पर खूब रंग लगी हुई थी. दूसरा नया और चमकता हुआ था. पर पैना वह भी न था. हमने जब उनके बारे में पूछा तो पता लगा वह इस बात की निशानी है कि उनके खानदान में से कभी कोई नागा दुशमन के दो सिर काट कर लाया था. कोई नागा दरवाज़े पर बरछे लगा कर नहीं रख सकता जिसके खानदान का कोई आदमी दुशमन के सिर काट कर न लाया हो. जितने सर कटा कर लाए गए हैं उतने बरछे निशान के तौर पर दरवाज़े पर लगे रह सकते हैं.

औरत का सिर काट कर लाना मर्द के सिर से ज़ियादा शान की बात समझा जाता है. पढ़ने वाले यह न समझें कि इस नामर्दी के काम को बे मतलब ही शान दी गई है. कोई नागा कभी अकेली औरत पर हाथ नहीं उठाएगा और न ख़ालिस औरतों के झुंड पर हमला करेगा. आम तौर से नागा औरतें बिल्लोची औरतों की तरह मज़बूत तो बहुत होती हैं पर लड़ाई में शामिल नहीं होतीं. लड़ाई के मौक़े पर वह सब एक जगह इकट्ठी हो जाती हैं. और मर्द जान पर खेल कर उनकी हिफ़ाज़त करते हैं. अब अगर कोई नागा उन आदमियों के झुंड को चीर कर दुशमन की किसी औरत का सर काट लाए तो औरत का वह सिर मर्द के सिर से ज़ियादा शानदार समझा जाता है.

धीरे धीरे ऐसी बातें अमल में बहुत कम रह गई हैं पर उनकी शान क़ायम है.

—भगवानदीन

پر خوب رنگ لگی ہوئی تھی۔ دوسرا نیا چمکتا ہوا تھا۔ پر پیتل بھی نہ تھا۔ ہم نے جب اُن کے بارے میں پوچھا تو پتہ لگا یہ اس بات کی نشانی ہے کہ ان کے خاندان میں سے کبھی کوئی ناگا دشمن کے دو سر کاٹ کر لیا تھا۔ کوئی ناگا دروازے پر برچھے لگاکر نہیں رکھ سکتا جس کے خاندان کا کوئی آدمی دشمن کے سر کاٹ کر نہ لیا ہو۔ جتنے سر کاٹ کر لائے گئے ہیں اُتنے برچھے نشان کے طور پر دروازے پر لگے رہ سکتے ہیں۔

عورت کا سر کاٹ کر لانا مرد کے سر سے زیادہ شان کی بات سمجھا جاتا ہے۔ پڑھنے والے یہ نہ سمجھیں کہ اس نامردی کے کام کو بے مطلب ہی شان دی گئی ہے۔ کوئی ناگا کبھی اکیلی عورت پر ہاتھ نہیں اُٹھائیگا اور نہ خالص عورتوں کے جھنڈ پر حملہ کریگا۔ عام طور سے ناگا عورتیں بلوچی عورتوں کی طرح مضبوط تو بہت ہوتی ہیں پر لڑائی میں شامل نہیں ہوتیں۔ لڑائی کے موقعہ پر وہ سب ایک جگہ اکٹھی ہو جاتی ہیں اور مرد جان پر کھیل کر اُن کی حفاظت کرتے ہیں۔ اب اگر کوئی ناگا اُن آدمیوں کے جھنڈ کو چیر کر دشمن کی کسی عورت کا سر کاٹ لائے تو عورت کا وہ سر مرد کے سر سے زیادہ شاندار سمجھا جاتا ہے۔

دھیرے دھیرے ایسی باتیں عمل میں بہت کم رہ گئی ہیں پر اُن کی شان قائم ہے۔

—بھگوان دین

भयंकरतम झूट वह नहीं जिसे बोला जाता है बल्कि वह जिस पर जिया जाता है.

—क्लार्क

किसी ने अरस्तू से पूछा, "आदमी झूट बोलकर क्या पाता है ?" 'यह कि जब वह सच बोलता है उसका कभी विश्वास नहीं किया जाता.' उसने जवाब दिया.

—अज्ञात

बुज़दिलों के सिवाय और कोई झूट नहीं बोलते.

—मरफ़ी

झूटे से देव और मनुष्य दोनों घृना करते हैं. झूटा अकसर बुज़दिल होता है, क्योंकि वह सचाई को तसलीम करने की हिम्मत नहीं कर पाता.

—सर वालटर रेले

بھیانکرتم جھوٹ وہ نہیں جسے بولا جاتا ہے بلکہ وہ جس پر جیا جاتا ہے۔

—کلارک

کسی نے ارسطو سے پوچھا، 'آدمی جھوٹ بول کر کیا پاتا ہے؟' 'یہ کہ جب وہ سچ بولتا ہے اُس کا کبھی وشواس نہیں کیا جاتا۔' اس نے جواب دیا۔

—اگیات

بزدلوں کے سوائے اور کوئی جھوٹ نہیں بولتے۔

—مرفی

جھوٹے سے دیو اور منشیہ دونوں گھرنا کرتے ہیں۔ جھوٹا اکثر بزدل ہوتا ہے، کیونکہ وہ سچائی کو تسلیم کرنے کی ہمت نہیں کر پاتا۔

—سر والٹر ریلے

नागा क़बीलों का सारा क्षेत्र दिल्ली सरकार के मातहत है. यों इसका सीधा संबन्ध आसाम के गवर्नर से है पर आसाम के मंत्रि मंडल से नहीं. यह सरकार की खुश क़िस्मती ही समझिये कि आजकल जो डी. सी. ए. डी. सी. और हाई स्कूल के हेड मास्टर कोहिमा में हैं वह इतने योग्य और बेलौस हैं जितने और जगह बहुत कम देखने को मिले. जो डी. सी. आजकल कोहिमा में हैं, पता लगा, वह लू शाई पहाड़ियों में भी रह चुके हैं. और उन्होंने ज़िले से तहसील तक मीलों लम्बी एक सड़क वहीं के लोगों की मदद से बनवाई थी, जिसे गांव वालों ने खुद बनाया था, जिस में सरकार का एक पैसा भी खर्च नहीं हुआ था. जैसे डी. सी. सरकार को कोहिमा में मिले हुए हैं वैसा एक भी चीफ़ मिनिस्टर अगर किसी रियासत को मिल जाय तो क्या चीन जैसी लहर के पैसे हमारे देश में पैदा नहीं हो सकती ?

पंडित सुन्दरलाल जी मिशन के पादरी से मिले. वह एक अमरीकी सज्जन हैं. वह दिल खोल कर मिले. बड़े साफ़ साफ़ बोलने वाले थे. बोलेः

"देखिये, जब यहां अंगरेज़ों का राज न था तब से हम यहां काम कर रहे हैं. और जो काम हमने किया है वह आपके सामने है. अंगरेज़ी राज में भी हम काम करते रहे. सन '47 से हिन्दुस्तान आज़ाद हुआ, और जब से हम आज़ाद हिन्दुस्तान में काम कर रहे हैं. हमारी राजकाजी मालों से कोई संबन्ध नहीं. हम अपने धर्म का प्रचार करते हैं. नागा लड़के लड़कियों को तालीम देते हैं. यह ठीक है कि नागा चर्च का संबन्ध अमरीका चर्च से है, पर अमरीका चर्च नागा चर्च पर शासन नहीं करता. उसको सलाह देता है. नागा चर्च बिल्कुल खुद मुख़्तार है. कि वह अमरीका चर्च की सलाह माने या न माने. नागा चर्च का अपना संगठन है. इसमें नागा ईसाइयों के सिवा और कोई शामिल नहीं."

कोहिमा में एक वार सिमेटरी यानी पिछले जंग में मरने वालों का क़बरिस्तान भी है. वैसा ही एक क़बरिस्तान इम्फाल में भी है. यह सब क़बरिस्तान ब्रिटिश कामनवेल्थ के मातहत हैं. इसका बड़ा दफ़्तर इंगलैन्ड में है. इन क़बरिस्तानों पर जो खर्च होता है उसका दस फ़ी सदी या कुछ कम ज़ियादे हिन्दुस्तानी सरकार देती है पर हिन्द सरकार का खर्च में कोई दख़ल नहीं. इसमें जो लोग काम करते हैं वह सब इंगलैन्ड दफ़्तर के मातहत हैं.

कोहिमा के अंगामी नागा अब सिर-शिकारी नहीं रह गए. फिर भी उसका अभिमान ज़रूर मानते हैं. कोहिमा गांव के मुखिया के यहां जब हम गए तो उसके दरवाज़े के दाईं तरफ़ दो बरछे लगे हुए थे. एक काफ़ी पुराना था जिस

ناگا قبیلوں کا سارا چھیتر دلی سرکار کے ماتحت ہے . یوں اس کا سیدھا سمبندھ آسام کے گورنر سے ہے پر آسام کے منتری منڈل سے نہیں . یہ سرکار کی خوش قسمتی ہی سمجھئے کہ آجکل جو ڈی. سی، اے؛ ڈی. سی اور ہائی اسکول کے ہیڈ ماسٹر کوہیما میں ہیں وہ اتنے یوگ اور بےلوث ہیں جتنے اور جگہ بہت کم دیکھنے کو ملے . جو ڈی. سی. آج کل کوہیما میں ہیں' پتہ لگا' وہ لوشائی پہاڑیوں میں بھی رہ چکے ہیں اور انہوں نے ضلع سے تحصیل تک میلوں لمبی ایک سڑک وہیں کے لوگوں کی مدد سے بنوائی تھی' جسے گاؤں والوں نے خود بنایا تھا' جس میں سرکار کا ایک پیسہ بھی خرچ نہیں ہوا تھا . جیسے ڈی . سی . سرکار کو کوہیما میں ملے ہوئے ہیں ویسا ایک بھی چیف منسٹر اگر کسی ریاست کو مل جائے تو کیا چین جیسی لہر کے پیسے ہمارے دیش میں پیدا نہیں ہوسکتی ؟

پنڈت سندر لال جی مشن کے پادری سے ملے . وہ ایک امریکن سجن ہیں . وہ دل کھول کر ملے . بڑے صاف صاف بولنے والے تھے . بولے :

"دیکھئے جب یہاں انگریزوں کا راج نہ تھا تب سے ہم یہاں کام کر رہے ہیں . اور جو کام ہم نے کیا ہے وہ آپ کے سامنے ہے . انگریزی راج میں بھی ہم کام کرتے رہے . سن 47' سے ہندستان آزاد ہوا' اور جب سے ہم آزاد ہندستان میں کام کر رہے ہیں . ہمارا راج کاجی معاملوں سے کوئی سمبندھ نہیں . ہم اپنے دھرم کا پرچار کرتے ہیں . ناگا لڑکے لڑکیوں کو تعلیم دیتے ہیں . یہ ٹھیک ہے کہ ناگا چرچ کا سمبندھ امریکہ چرچ سے ہے' پر امریکہ چرچ ناگا چرچ پر شاسن نہیں کرتا . اس کو صلاح دیتا ہے . ناگا چرچ بالکل خود مختار ہے کہ وہ امریکہ چرچ کی صلاح مانے یا نہ مانے . ناگا چرچ کا اپنا سنگھٹن ہے . اس میں ناگا عیسائیوں کے سوا اور کوئی شامل نہیں ."

کوہیما میں ایک وار سمیٹری یعنی پچھلی جنگ میں مرنے والوں کا قبرستان بھی ہے . ویسا ہی ایک قبرستان امپھال میں بھی ہے . یہ سب قبرستان برٹش کامن ویلتھ کے ماتحت ہیں . اس کا بڑا دفتر انگلینڈ میں ہے . ان قبرستانوں پر جو خرچ ہوتا ہے اس کا دس فی صدی یا کچھ کم زیادہ ہندستانی سرکار دیتی ہے پر ہند سرکار کا خرچ میں کوئی دخل نہیں . اس میں جو لوگ کام کرتے ہیں وہ سب انگلینڈ دفتر کے ماتحت ہیں .

کوہیما کے انگامی ناگا اب سر شکاری نہیں رہ گئے . پھر بھی اس کا ابھیمان ضرور مانتے ہیں . کوہیما گاؤں کے مکھیا کے یہاں جب ہم گئے تو اس کے دروازے کے داہنی طرف دو برچھے لگے ہوئے تھے . ایک کافی پرانا تھا جس

रहा था. इसमें से किसी ने ए. डी. सी. पूर्नेन्दु सेन को खबर दी कि नागा के एक गांव ने दूसरे गांव पर चढ़ाई कर दी. वह फ़ौरन उठ कर वहां से चल दिये. दूसरे दिन जो हाल उन्होंने सुनाया, वह यह था :

एक गांव ने दूसरे गांव पर चढ़ाई तो नहीं की थी, चढ़ाई की तैयारी कर रहा था. पुलिस की मदद से उसको रोक दिया गया. चढ़ाई की वजह यह थी कि गांव के एक आदमी को दूसरे गांव वालों ने मार डाला था. ख़ून का बदला लेना ज़रूरी था. पुलिस ने मारने वाले को पकड़ लिया. पकड़ने में कोई ख़ास दिक़्क़त नहीं हुई न मारने वाले का पता लगाने में देर लगी. इस सब में पुलिस की मुस्तैदी भर तो अपनी थी. बाक़ी सब काम तो गांव वालों का था और ख़ुद मारने वाले का. न गांव वालों ने क़ातिल को बताने में आनाकानी की और न क़ातिल ने अपने को पकड़ाने में कुछ अड़चन डाली. उसने सच सच बात ऐसे बता दी मानो कुछ हुआ ही न हो.

वह बोला, मरने वाले ने मुझ को कुछ मज़दूरी ठहरा कर सामान लाने के लिये राज़ी किया. मैं राज़ी हो गया. कुछ दूर चल कर मैंने अपनी मज़दूरी मांगी. वह बोला, घर चल कर दूंगा. मैंने कहा, मैं यहीं लूंगा. मैंने यह भी कहा, तीन बार कहने पर अगर तुम मुझे मेरी मज़दूरी नहीं दोगे तो मैं तुम्हारा सिर काट लूंगा. मैंने तीन बार मज़दूरी मांगी. उसने नहीं दी. मैंने दाव से उसका सिर काट लिया. और देखिये साहब, मैं अपनी बात का पूरा पक्का रहा. मैंने सिर्फ़ उसका सिर काटा है और कहीं दाव नहीं मारा.

अब कहिये, ऐसे सच बोलने वालों के लिये वकील बैरिस्टर की क्या ज़रूरत. हमें पूर्नेन्दु सेन साहब से यह भी पता चला कि सरकार की तरफ़ से कोहिमा गांव की एक पंचायत बनी हुई है, एक पंचायत घर भी बना हुआ है, पंचायत घर देखने की बात हम पहले कह चुके. कोहिमा गांव की पंचायत को बहुत इख़्तयार हासिल हैं. वह फ़ौजदारी दीवानी सभी तरह के मुक़द्दमे सुनती है, कभी कभी पंचायत क़तल तक के मुक़द्दमों का फ़ैसला कर लेती है. पर वही, जो गांव वाले सीधे उस पंचायत तक ले जाते हैं. पंचायत जो सज़ा देती है उसमें सरकारी अदालत कोई दख़ल नहीं देती गांव वाले भी उसे ख़ुशी से मान लेते हैं. और पंचायत की सज़ा को बरदाश्त करने में वह सुख मानते हैं, दुख नहीं. वह यह हरगिज़ नहीं समझते कि उनके साथ अन्याय हुआ है.

हां, कुछ मामले सरकारी कचहरी में भी आते हैं पर नागा वहां भी सच ही बोलते हैं. और कचहरी के इनसाफ़ को भी सर माथे ऐसे ही चढ़ाते हैं जैसे पंचायत के इनसाफ़ को.

رہا تھا . اِن میں سے کسی نے اے. ڈی. سی. پورنیندوسین کو خبر دی کہ ناگا کے ایک گاؤں نے دوسرے گاؤں پر چڑھائی کر دی . وہ فوراً اُٹھ کر وہاں سے چل دیئے . دوسرے دن جو حال اُنھوں نے سنایا ' وہ یہ تھا :

ایک گاؤں نے دوسرے گاؤں پر چڑھائی تو نہیں کی تھی ' چڑھائی کی تیاری کر رہا تھا . پولیس کی مدد سے اُس کو روک دیا گیا . چڑھائی کی وجہ یہ تھی کہ گاؤں کے ایک آدمی کو دوسرے گاؤں والوں نے مار ڈالا تھا خون کا بدلہ لینا ضروری تھا . پولیس نے مارنے والے کو پکڑ لیا . پکڑنے میں کوئی خاص دقت . نہیں ہوئی . نہ مارنے والے کا پتہ لگانے میں دیر لگی . اس سب میں پولیس کی مستعدی بھر تو اپنی تھی باقی سب کام تو گاؤں والوں کا تھا اور خود مارنے والے کا . نہ گاؤں والوں نے قاتل کو بتانے میں آنا کانی کی اور نہ قاتل نے اپنے کو پکڑوانے میں کچھ اڑچن ڈالی . اُس نے سچ سچ بات ایسے بتا دی مانو کچھ ہوا ہی نہ ہو .

وہ بولا ' مرنے والے نے مجھ کو کچھ مزدوری ٹھہرا کر سامان لانے کے لئے راضی کیا . میں راضی ہوگیا . کچھ دور چل کر میں نے اپنی مزدوری مانگی . وہ بولا ' گھر چل کر دونگا . میں نے کہا ' میں یہیں لونگا . میں نے یہ بھی کہا ' تین بار کہنے پر اگر تم مجھے میری مزدوری نہیں دوگے تو میں تمہارا سر کاٹ لونگا . میں نے تین بار مزدوری مانگی . اُس نے نہیں دی . میں نے داؤ سے اُس کا سر کاٹ لیا . اور دیکھئے صاحب ' میں اپنی بات کا پورا پکا رہا . میں نے صرف اُس کا سر کاٹا ہے اور کہیں داؤ نہیں مارا .

اب کہئے ' ایسے سچ بولنے والوں کے لئے وکیل بیرسٹر کی کیا ضرورت . ہمیں پورنیندو سین صاحب سے یہ بھی پتہ چلا کہ سرکار کی طرف سے کوہیما گاؤں کی ایک پنچایت بنی ہوئی ہے ' ایک پنچایت گھر بھی بنا ہوا ہے . پنچایت گھر دیکھنے کی بات ہم پہلے کہہ چکے . کوہیما گاؤں کی پنچایت کو بہت اختیار حاصل ہیں . وہ فوجداری دیوانی سبھی طرح کے مقدمے سنتی ہے ' کبھی کبھی پنچایت قتل تک کے مقدموں کا فیصلہ کرلیتی ہے . پر وہی ' جو گاؤں والے سیدھے اُس پنچایت تک لے جاتے ہیں . پنچایت جو سزا دیتی ہے اُس میں سرکاری عدالت کوئی دخل نہیں دیتی . گاؤں والے بھی اُسے خوشی سے مان لیتے ہیں . پنچایت کی سزا کو برداشت کرنے میں وہ سکھ مانتے ہیں ' دکھ نہیں . وہ یہ ہرگز نہیں سمجھتے کہ اُن کے ساتھ انیائے ہوا ہے .

ہاں ' کچھ معاملے سرکاری کچہری میں بھی آتے ہیں . پر ناگا وہاں بھی سچ ہی بولتے ہیں . اور کچہری کے انصاف کو بھی سر ماتھے ایسے ہی چڑھاتے ہیں جیسے پنچایت کے انصاف کو .

जरूरी है नहीं तो नागा लोग बुरा मानते हैं. हमको यह बात ए. डी. सी. साहब पूर्नेन्दू सेन ने समझा दी थी. चावल की इस शराब को तैयार करने के लिये कचौरी जितनी बड़ी सफ़ेद सफ़ेद रोटियां बाज़ार में बिकती हैं. यह रोटियां देखने में खांड के बने हुए गिदौड़े जैसी होती हैं. हां, कहीं कहीं उसमें काले निशान होते हैं. यह काले निशान उस बेल के पत्ते के होते हैं जिनकी मदद से वह रोटी तैयार की जाती है. उस बेल का नाम नागा बोली में 'होम' है. याद रहे 'स' और 'ह' आपस में बदल जाते हैं. आसाम वाले आसाम को असम लिखते हैं पर बोलते हैं उसे 'अहम'. इसलिये यह होम बेल वही सोम बेल है जिसको वेदिक समय के आर्य लोग इस्तेमाल करते थे. हम दो चार दिन अगर और ठहरते तो उस होम या सोम बेल का नमूना ज़रूर साथ लाते. पर वैसा न कर सके. अब भी कोई चाहे तो वहां से वह बेल मंगा सकता है और उसका मिलान उस सोम बेल के बयान से कर सकता है जो वेदों की रिचाओं में मौजूद है.

हमारी अपनी यह राय है कि नागों का जीवन बहुत कुछ वेद के समय के आर्यों से मिलता है. हां, नागाओं की शकल सूरत आर्यों से नहीं, मंगोलियों से ज़ियादा मिलती है शिखा सूत्र में से शिखा उनके पास है, सूत्र यानी जनेऊ नहीं. पर शिखा सूत्र दोनों का वेदों में कहीं ज़िकर नहीं मिलता. सूत्र यानी जनेऊ तो आज भी न सन्यासी पहनते हैं और न औरतें.

हमारे पिताजी सन 87 में इनजीनियर की हैसियत से नागा पहाड़ियों में काम कर चुके थे. वह हमें बताया करते थे कि नागा लोग न झूट बोलते हैं, न चोरी करते हैं, न उधार लेते देते हैं. अगर किसी की चीज़ गिर जाय तो सात रोज़ तक वहीं पड़ी रहेगी. सात रोज़ के बाद गांव के मुखिया के पास जायगी. उसके बारे में डोंडी पीटी जायगी. जिसकी हो उसको मिल जायगी. 50-60 बरस पहले की इतनी ऊंची सचाई तो सब नागा लोगों में अब नहीं रह गई पर आज भी क़सम दिलाने पर कोई नागा झूट नहीं बोल सकता. इस बारे में सरकारी अफ़सरों को कोई शिकायत नहीं. अगर चीनी सरकार ने अपने यहां से वकीलों को ख़तम कर दिया है तो हिन्दुस्तान के नागों ने झूट न बोलने की क़सम खा कर वकीलों को बेकार बना दिया है. ए. डी. सी. पूर्नेन्दू सेन तो इस मामले में नागों की तारीफ़ करते कभी अघाते ही न थे. कभी कभी तो वह इतने गद गद हो जाते थे कि उनका चेहरा देखने के लायक़ होता था.

दो मार्च 1953 का ज़िकर है : पंडित सुन्दर लाल जी का शाम के वक़्त कोहिमा की साहित्य सभा में भाषण हो

ضروری ہے نہیں تو ناگا لوگ برا مانتے ہیں۔ ہم کو یہ بات اے۔ ڈی۔ سی۔ صاحب پورنیندو سین نے سمجھا دی تھی۔ چاول کی اس شراب کو تیار کرنے کے لئے کچوری جتنی بڑی سفید سفید روٹیاں بازار میں بکتی ہیں۔ یہ روٹیاں دیکھنے میں کھانڈ کے بنے ہوئے گندوڑے جیسی ہوتی ہیں۔ ہاں، کہیں کہیں اس میں کالے نشان ہوتے ہیں۔ یہ کالے نشان اس بیل کے پتے کے ہوتے ہیں جن کی مدد سے وہ روٹی تیار کی جاتی ہے۔ اس بیل کا نام ناگا بولی میں 'ہوم' ہے۔ یاد رہے 'س' اور 'ہ' آپس میں بدل جاتے ہیں۔ آسام والے آسام کو اسم لکھتے ہیں پر بولتے ہیں اسے 'اہم'۔ اس لئے یہ ہوم بیل وہی سوم بیل ہے جس کو ویدک سمے کے آریہ لوگ استعمال کرتے تھے۔ ہم دو چار دن اگر اور ٹھہرتے تو اس ہوم یا سوم بیل کا نمونہ ضرور ساتھ لاتے۔ پر ویسا نہ کر سکے۔ اب بھی کوئی چاہے تو وہاں سے وہ بیل منگا سکتا ہے اور اس کا ملان اس سوم بیل کے بیان سے کر سکتا ہے جو ویدوں کی رچاؤں میں موجود ہے۔

ہماری اپنی یہ رائے ہے کہ ناگوں کا جیون بہت کچھ وید کے سمے کے آریوں سے ملتا ہے۔ ہاں، ناگوں کی شکل صورت آریوں سے نہیں، منگولیوں سے زیادہ ملتی ہے۔ شکھا سوتر میں سے شکھا ان کے پاس ہے، سوتر یعنی جنیو نہیں۔ پر شکھا سوتر دونوں کا ویدوں میں کہیں ذکر نہیں ملتا۔ سوتر یعنی جنیو تو آج بھی نہ سنیاسی پہنتے ہیں اور نہ عورتیں۔

ہمارے پتا جی سن 87 میں انجینیر کی حیثیت سے ناگا پہاڑیوں میں کام کر چکے تھے۔ وہ ہمیں بتایا کرتے تھے کہ ناگا لوگ نہ جھوٹ بولتے ہیں، نہ چوری کرتے ہیں، نہ ادھار لیتے دیتے ہیں۔ اگر کسی کی چیز گر جائے تو سات روز تک وہیں پڑی رہے گی۔ سات روز کے بعد گاؤں کے مکھیا کے پاس جائے گی۔ اس کے بارے میں ڈونڈی پیٹی جائے گی۔ جس کی ہو اس کو مل جائے گی۔ 50-60 برس پہلے کی اتنی اونچی سچائی تو سب ناگا لوگوں میں اب نہیں رہ گئی پر آج بھی قسم دلانے پر کوئی ناگا جھوٹ نہیں بول سکتا۔ اس بارے میں سرکاری افسروں کو کوئی شکایت نہیں۔ اگر چینی سرکار نے اپنے یہاں سے وکیلوں کو ختم کر دیا ہے تو ہندستان کے ناگوں نے جھوٹ بولنے کی قسم کر وکیلوں کو بیکار بنا دیا ہے۔ اے۔ ڈی۔ سی۔ پورنیندو سین تو اس معاملے میں ناگوں کی تعریف کرتے کبھی اگھاتے ہی نہ تھے۔ کبھی کبھی تو وہ اتنے گد گد ہو جاتے تھے کہ ان کا چہرہ دیکھنے کے لائق ہوتا تھا۔

2 مارچ 1953 کا ذکر ہے: پنڈت سندر لال جی کا شام کے وقت کوہیما کی ساہتیہ سبھا میں بھاشن ہو

नागों की दो जात आपस में शादी विवाह नहीं करतीं. आम तौर से एक जात दूसरी जात को दबाने की कोशिश में रहती है. यों जात जात में दुशमनी बनी रहती है. खून का बदला कभी चुक ही नहीं पाता. आए दिन बात बात पर लड़ाई छिड़ जाती है और दसियों को जान से हाथ धोना पड़ता है.

अब तक नागों के पास आग के हथियार न थे. दाव, बरछी, भाले ही थे. अब सरकार की तरफ़ से मामूली बन्दूकों का लाइसन्स भी मिल गया है.

नागों की सब लड़कियां बुनना जानती हैं और बहुत अच्छा कपड़ा बुनती हैं. कातने का रिवाज बिल्कुल नहीं सूत सब मिल का इस्तेमाल होता है. कोहिमा है तो ठंडा—4900 फ़िट ऊंचा—पर हमने किसी औरत मर्द के पास ऊनी कपड़े नहीं देखे. हां, जो सरकारी नौकर हैं उन सब को धारी वाल के ऊनी लाल कम्बल मिले हुए हैं जिसको वह इस तरह पहने रहते हैं जिस तरह बौद्ध साधु अपनी चादर ओढ़ते हैं. नागा मर्द आम तौर से एक कपड़ा कमर से इस तरह लपेटे रहते हैं जिस तरह महात्मा गांधी लपेटे रहते थे. वह कपड़ा कुछ डेढ़ फ़ुट से जियादा चौड़ा नहीं होता. उस कपड़े पर कुछ धारियां बनी रहती हैं जो इस बात का निशान हैं कि पहनने वाले को नागा समाज से कितना आदर प्राप्त है. एक दूसरा कपड़ा वह ओढ़े रहते हैं उसकी चौड़ाई भी गज सवा गज से जियादा नहीं होती. हमने जूता पहने किसी नागा को न देखा. हां, जो नागा ईसाई हो गए हैं उनमें और हम सब में ओढ़ावे पहनावे के लिहाज से कोई फ़र्क़ नहीं. नागा ईसाई लड़कियां ऐसे ही कपड़े पहनती हैं जैसे हिन्दुस्तान के और ईसाई. आम तौर से नागा लोग रंग के गोरे होते हैं ईसाई नागा लड़कियां या तो चीनी लड़कियां मालूम पड़ेंगी या योरपी.

नागा मर्द हिन्दुओं की तरह मोटी चोटी रखाते हैं.

खाना पान के मामले में वह चीनियों से बिल्कुल मिलते हैं. लगभग सब तरह के जानवरों का गोश्त खाते हैं. गाय पालते हैं पर गाय का दूध नहीं पीते. और न उसको दूध के लिये पालते हैं. वह तो उनकी बकरी है. जिन नागों ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया है वह कुत्ते बिल्ली का मांस छोड़ देते हैं. नागा घरों में मनों सूखा मांस लटका रहता है पर उसमें बू नहीं आती.

चावल से नागा लोग एक पीने की चीज़ तैयार करते हैं जिसको वह 'अजी' कह कर पुकारते हैं. वह एक तरह की शराब है. उसे पूजा के वक़्त खूब पीते पिलाते हैं. मेहमानों को पेश करते हैं. हमें भी एक एक गिलास पेश किया गया था. हमने पिया तो नहीं, पर होंटों के पास तक ज़रूर ले जाना पड़ा. क्योंकि ऐसा करना मेहमान के लिये

ناگوں کی دو جات آپس میں شادی واہ نہیں کرتیں. عام طور سے ایک جات دوسری جات کو دبانے کی کوشش میں رہتی ہے. یوں جات جات میں دشمنی بنی رہتی ہے. خون کا بدلہ کبھی چک ہی نہیں پاتا. آئے دن بات بات پر لڑائی چھڑ جاتی ہے اور دسیوں کو جان سے ہاتھ دھونا پڑتا ہے.

اب تک ناگوں کے پاس آگ کے ہتھیار نہ تھے. داو' برچھی' بھالے ہی تھے. اب سرکار کی طرف سے معمولی بندوقوں کا لائسنس بھی مل گیا ہے.

ناگوں کی سب لڑکیاں بننا جانتی ہیں اور بہت اچھا کپڑا بنتی ہیں. کاتنے کا رواج بالکل نہیں. سوت سب مل کا استعمال ہوتا ہے. کوہیما ہے تو ٹھنڈا -- 4900 فٹ اونچا— پر ہم نے کسی عورت مرد کے پاس اونی کپڑے نہیں دیکھے. ہاں' جو سرکاری نوکر ہیں ان سب کو دھاری وال کے اونی لال کمبل ملے ہوئے ہیں جس کو وہ اس طرح پہنے رہتے ہیں جس طرح بودھ سادھو اپنی چادر اوڑھتے ہیں. ناگا مرد عام طور سے ایک کپڑا کمر سے اس طرح لپیٹے رہتے ہیں جس طرح مہاتما گاندھی لپیٹے رہتے تھے. وہ کپڑا فٹ ڈیڑھ فٹ سے زیادہ چوڑا نہیں ہوتا. اس کپڑے پر کچھ دھاریاں بنی رہتی ہیں جو اس بات کا نشان ہیں کہ پہننے والے کو ناگا سماج سے کتنا آدر پراپت ہے. ایک دوسرا کپڑا وہ اوڑھے رہتے ہیں. اس کی چوڑائی بھی گز سوا گز سے زیادہ نہیں ہوتی. ہم نے جوتا پہنے کسی ناگا کو نہ دیکھا. ہاں' جو ناگا عیسائی ہو گئے ہیں ان میں اور ہم سب میں اوڑھاوے پہناوے کے لحاظ سے کوئی فرق نہیں. ناگا عیسائی لڑکیاں ایسے ہی کپڑے پہنتی ہیں جیسے ہندستان کے اور عیسائی. عام طور سے ناگا رنگ کے گورے ہوتے ہیں. عیسائی ناگا لڑکیاں یا تو چینی لڑکیاں معلوم پڑینگی یا یورپی.

ناگا مرد ہندوں کی طرح موٹی چوٹی رکھاتے ہیں.

کھان پان کے معاملے میں وہ چینیوں سے بالکل ملتے ہیں. لگ بھگ سب طرح کے جانوروں کا گوشت کھاتے ہیں. گائے پالتے ہیں پر گائے کا دودھ نہیں پیتے. اور نہ اس کو دودھ کے لئے پالتے ہیں. وہ تو ان کی بکری ہے. جن ناگوں نے عیسائی دھرم سویکار کر لیا ہے وہ کتے بلی کا ماس چھوڑ دیتے ہیں. ناگا گھروں میں منوں سوکھا مانس لٹکا رہتا ہے پر اس میں بو نہیں آتی.

چاول سے ناگا لوگ ایک پینے کی چیز تیار کرتے ہیں جس کو وہ 'اجی' کہکر پکارتے ہیں. وہ ایک طرح کی شراب ہے. اسے پوجا کے وقت خوب پیتے پلاتے ہیں، مہمانوں کو پیش کرتے ہیں. ہمیں بھی ایک ایک گلاس پیش کیا گیا تھا. ہم نے پیا تو نہیں پر ہونٹوں کے پاس تک ضرور لے جانا پڑا. کیونکہ ایسا کرنا مہمان کے لئے

स्कूल पहले अमरीकी मिशनरियों के हाथ में था, अब नहीं है. अब सरकार के हाथ में है. अब उसमें किसी खास धर्म की तालीम नहीं दी जाती. पर सुना यह गया कि हाई स्कूल से निकले हुए नागा विद्यार्थी ग्रेजुएट हो जाने पर आम तौर से ईसाई धर्म स्वीकार कर लेते हैं. मुमकिन है यह बात अब कम हो गई हो. इसकी वजह यह हो सकती है कि तालीम पाने पर धर्म की भूक जागती है. नागों का अपना पुराना धर्म अलग है जो केवल कुछ सीधे सादे रिवाजों और नियमों का समूह है. आगे की तालीम का कोहिमा में इन्तज़ाम नहीं. आगे की तालीम पाने के लिये नागा विद्यार्थी कलकत्ता चले आते हैं. कलकत्ते का मिशन कालिज उनका हर तरह का सुभीता कर देता है और उनके धर्म की भूक भी मिटा देता है, हाई स्कूल में लड़के लड़की साथ साथ पढ़ते हैं.

यह भी पता चला कि नागा लोग उन आदमियों को जो ईसाई धर्म स्वीकार कर लेते हैं उस नज़र से नहीं देखते जिस नज़र से उनको जो ईसाई धर्म स्वीकार नहीं करते. फिर भी मोटे तौर पर ईसाई नागा और ग़ैर ईसाई नागा दोनों खासे मिल जुल कर रहते हैं. ग़ैर ईसाई नागा लोगों की लड़कियां ईसाई नागों से शादी कर लेती हैं और शादी होने पर अकसर ईसाई धर्म भी स्वीकार कर लेती हैं. ईसाई लड़कियों ने ग़ैर ईसाई नागों से शादी की हो। ऐसी कोई मिसाल नहीं मिली. इसकी वजह यह भी हो सकती है कि ग़ैर ईसाई नागा पढ़े लिखे नहीं हैं.

अंगामी एक बोली भी है. अंगामी जात के नागा उसी बोली को बोलते हैं. उस बोली में थोड़ा बहुत साहित्य भी है, पर वह सबका सब रोमन लिपि में है. उस बोली की कोई चीज़ नागरी लिपि में लिखी हुई नहीं मिलती. बंगाली लिपि में इधर उधर से अंगामी बोली के दो चार शब्द भले ही मिल जायें. अंगामी जात के क़रीब क़रीब सब नागा आसामी बोली समझ लेते हैं. आसामी भाशा थोड़ी बहुत बोल भी लेते हैं. हाई स्कूल के सब नागा विद्यार्थी जितनी अच्छी अंगरेज़ी समझते हैं और जितनी अंगरेज़ी बोल सकते हैं उतनी न आसामी समझते हैं और न बोल सकते हैं. कोहिमा के आस पास के रहने वाले नागा दस बीस हिन्दी के शब्द समझ लेते हैं और बोल लेते हैं.

कोहिमा में सरकार के पास कुछ दुभाशिये रहते हैं. जिन्हें बोल चाल में डी. बी. कहा जाता है. यह आसामी और अंगामी जानते हैं. काम चलाऊ हिन्दी समझ लेते हैं. दस बीस हिन्दी शब्द बोल भी लेते हैं. थोड़ी बहुत अंगरेज़ी भी जानते हैं.

पढ़ने वाले इतना और याद रखें कि नागों की हर जात की बोली अलग अलग है.

اسکول پہلے امریکی مشنریوں کے ہاتھ میں تھا۔ اب نہیں ہے۔ اب سرکار کے ہاتھ میں ہے۔ اب اس میں کسی خاص دھرم کی تعلیم نہیں دی جاتی۔ پر سنا یہ گیا کہ ہائی اسکول سے نکلے ہوئے ناگا ودیارتھی گریجویٹ ہو جانے پر عام طور سے عیسائی دھرم سوئیکار کر لیتے ہیں۔ ممکن ہے یہ بات اب کم ہو گئی ہو۔ اس کی وجہ یہ ہو سکتی ہے کہ تعلیم پانے پر دھرم کی بھوک جاگتی ہے۔ ناگوں کا اپنا پرانا دھرم الگ ہے۔ جو کیول کچھ سیدھے سادے رواجوں اور نیموں کا سموہ ہے۔ آگے کی تعلیم کا کوہیما میں کوئی انتظام نہیں۔ آگے کی تعلیم پانے کے لئے ناگا ودیارتھی کلکتہ چلے آتے ہیں۔ کلکتے کا مشن کالج ان کا ہر طرح کا سبھیتا کر دیتا ہے اور ان کے دھرم کی بھوک بھی مٹا دیتا ہے۔ ہائی اسکول میں لڑکے لڑکی ساتھ ساتھ پڑھتے ہیں۔

یہ بھی پتہ چلا کہ ناگا لوگ ان آدمیوں کو جو عیسائی دھرم سوئیکار کر لیتے ہیں اس نظر سے نہیں دیکھتے جس نظر سے ان کو جو عیسائی دھرم سوئیکار نہیں کرتے۔ پھر بھی موٹے طور پر عیسائی ناگا اور غیر عیسائی دونوں خاصے مل جل کر رہتے ہیں۔ غیر عیسائی ناگا لوگوں کی لڑکیاں عیسائی ناگوں سے شادی کر لیتی ہیں اور شادی ہونے پر اکثر عیسائی دھرم بھی سوئیکار کر لیتی ہیں۔ عیسائی لڑکیوں نے غیر عیسائی ناگوں سے شادی کی ہو ایسی کوئی مثال نہیں ملی۔ اسکی وجہ یہ بھی ہو سکتی ہے کہ غیر عیسائی ناگا پڑھے لکھے نہیں ہیں۔

انگامی ایک بولی بھی ہے۔ انگامی جات کے ناگا اسی بولی کو بولتے ہیں۔ اس بولی میں تھوڑا بہت ساہتیہ بھی ہے۔ پر وہ سب کا سب رومن لپی میں ہے۔ اس بولی کی کوئی چیز ناگری لپی میں لکھی ہوئی نہیں ملتی۔ بنگالی لپی میں ادھر ادھر سے انگامی بولی کے دو چار شبد بھلے ہی مل جاویں۔ انگامی جات کے قریب قریب سب ناگا آسامی بولی سمجھ لیتے ہیں۔ آسامی بھاشا تھوڑی بہت بول بھی لیتے ہیں۔ ہائی اسکول کے سب ناگا ودیارتھی جتنی اچھی انگریزی سمجھتے ہیں اور جتنی انگریزی بول سکتے ہیں اتنی نہ آسامی سمجھتے ہیں اور نہ بول سکتے ہیں۔ کوہیما کے آس پاس کے رہنے والے ناگا دس بیس ہندی کے شبد سمجھ لیتے ہیں اور بول لیتے ہیں۔

کوہیما میں سرکار کے پاس کچھ دبھاشیے رہتے ہیں۔ جنہیں بول چال میں ڈی۔ بی۔ کہا جاتا ہے۔ یہ آسامی اور انگامی جانتے ہیں۔ کام چلاؤ ہندی سمجھ لیتے ہیں۔ دس بیس ہندی شبد بول بھی لیتے ہیں۔ تھوڑی بہت انگریزی بھی جانتے ہیں۔

پڑھنے والے اتنا اور یاد رکھیں کہ ناگوں کی ہر جات کی بولی الگ الگ ہے۔

आसाम के चीफ मिनिस्टर मेधी साहब ने कोहिमा के डी. सी. को भी खबर भेज दी थी, पर जब हम कोहिमा पहुँचे तो डी. सी. कोहिमा में न थे और न उनको खबर मिली थी. पंडित सुन्दरलाल जी और मैं थोड़े असमंजस में पड़े, पर तुरन्त ही एक सज्जन आ पहुँचे. और उन्होंने कुछ इस तरह बात करना शुरू की मानो वह हमें जानते हों. जब वह हमारा सब इन्तज़ाम करने लगे तब दास बाबू ने बताया कि आप यहां के ए. डी. सी. हैं और आप का नाम है पूर्णेन्दु सेन. फिर क्या हमारा एक मिनट भी खराब गया? और असमंजस का क्या कोई हलका सा निशान भी हमारे मन पर रह पाया?

हम को दूसरे दिन सुबह इमफाल जाना था इसलिये दो बजे दिन से रात के नौ बजे तक जितना हो सका उतना देख डाला. ए. डी. सी. साहब ने इतनी फुरती दिखाई जिसका अन्दाज़ा नहीं हो सकता. इस थोड़े समय में, जीप की मदद से, हम कोहिमा नाम का बड़ा नागा गांव देख आए, नागों का पंचायत घर देख लिया, अमरीकी मिशन हाउस देख लिया और बहुत से लोगों से ज़रूरी बातें कर लीं. रात को ठीक वक़्त सरकिट हाउस पहुँच गए.

यह ठीक है कोहिमा से न हमारा जी भरा और न दिखाने वालों का. आखिर यह तय हुआ कि हम इमफाल से लौटते हुए कोहिमा फिर ठहरें और यहां सब लोगों से और कोहिमा हाई स्कूल के विद्यार्थियों से बातचीत करें.

इस थोड़ी देर में हमने क्या सुना, क्या देखा, क्या जाना और क्या हमारे मन पर असर रहा वह हम नीचे लिखते हैं. वापसी पर कोहिमा देखने की सब बातें भी इसमें शामिल रहेंगी.

नागा लोग नंगे नहीं रहते. हमने जो सुन रखा था वह बात बिल्कुल ग़लत तो नहीं पर कुछ ग़लत ज़रूर निकली, दूर सरहद पर, सुना गया है, अब भी ऐसी नागा जात हैं जो बिल्कुल नंगी रहती हैं, आदमी के सिर का शिकार करती हैं और उसका उत्सव मनाती हैं.

नागों में भी कई जातियां हैं. कोहिमा के नागा ज़ियादातर अंगामी जात के हैं. इनमें से एक तिहाई या आधे पढ़ लिख गए हैं, कुछ कालिज की तालीम पाए हुए हैं, सरकारी नौकरियों में हैं, कुछ व्योपार करते हैं. इनमें कुछ ऐसे भी हैं जो रहते तो कोहिमा में हैं पर तनखा विदेश से पाते हैं. विदेश से तनखा पाने वाले या तो वह हैं जो वार सिमेटरी से संबन्ध रखते हैं या जो अमरीकी मिशन से संबन्ध रखते हैं.

यों तो कोहिमा में हाई स्कूल तक ही पढ़ाई होती है और विद्यार्थियों में आधे से ज़ियादा नागा विद्यार्थी ही हैं. फिर भी नागों में काफी तादाद ग्रेजुएटों की है. यह हाई

آسام کے چیف منسٹر میدھی صاحب نے کوہیما کے ڈی۔ سی۔ کو بھی خبر بھیج دی تھی۔ پر جب ہم کوہیما پہونچے تو ڈی۔ سی۔ کوہیما میں نہ تھے اور نہ اُن کو خبر ملی تھی۔ پنڈت سندر لال جی اور میں تھوڑے اسمنجس میں پڑے، پر ترنت ایک سجن آ پہونچے۔ اور انہوں نے کچھ اِس طرح بات کرنا شروع کی مانو وہ ہمیں جانتے ہیں۔ جب وہ ہمارا سب انتظام کرنے لگے تب داس بابو نے بتایا کہ آپ یہاں کے اے۔ ڈی۔ سی۔ ہیں اور آپ کا نام ہے پورنیندو سین۔ پھر کیا ہمارا ایک منٹ بھی خراب گیا؟ اسمنجس کا کیا کوئی ہلکا سا نشان بھی ہمارے من پر رہ پایا؟

ہم کو دوسرے دن صبح اِمپھال جانا تھا۔ اِس لئے دو بجے دن سے رات کے نو بجے تک جتنا ہو سکا اُتنا دیکھ ڈالا۔ اے۔ ڈی۔ سی۔ صاحب نے اتنی پھرتی دکھائی جس کا اندازہ نہیں ہو سکتا۔ اِس تھوڑے سمے میں جیپ کی مدد سے، ہم کوہیما نام کا بڑا ناگا گاؤں دیکھ آئے، ناگوں کا پنچایت گھر دیکھ لیا، امریکی مشن ہاؤس دیکھ لیا اور بہت سے لوگوں سے ضروری باتیں کر لیں۔ رات کو ٹھیک وقت سرکٹ ہاؤس پہونچ گئے۔

یہ ٹھیک ہے کوہیما سے نہ ہمارا جی بھرا اور نہ دکھانے والوں کا۔ آخر یہ طے ہوا کہ ہم اِمپھال سے لوٹتے ہوئے کوہیما پھر ٹھہریں اور یہاں کے لوگوں سے اور کوہیما ہائی اسکول کے ودیارتھیوں سے بات چیت کریں۔

اِس تھوڑی دیر میں ہم نے کیا سنا، کیا دیکھا، کیا جانا اور کیا ہمارے من پر اثر رہا وہ ہم نیچے لکھتے ہیں۔ واپسی پر کوہیما دیکھنے کی سب باتیں بھی اِس میں شامل رہینگی۔

ناگا لوگ ننگے نہیں رہتے۔ ہم نے جو سن رکھا تھا وہ بات بالکل غلط تو نہیں پر کچھ غلط ضرور نکلی۔ دور سرحد پر، سنا گیا ہے، اب بھی ایسی ناگا جات ہیں جو بالکل ننگی رہتی ہیں، آدمی کے سر کا شکار کرتی ہیں اور اس کا اتسو مناتی ہیں۔

ناگوں میں بھی کئی جاتیاں ہیں۔ کوہیما کے ناگا زیادہ تر انگامی جات کے ہیں۔ ان میں سے ایک تہائی یا آدھے پڑھ لکھ گئے ہیں۔ کچھ کالج کی تعلیم پائے ہوئے ہیں، سرکاری نوکریوں میں ہیں، کچھ بیوپار کرتے ہیں۔ اِن میں کچھ ایسے بھی ہیں جو رہتے تو کوہیما میں ہیں پر تنخواہ ودیش سے پاتے ہیں۔ ودیش سے تنخواہ پانے والے یا تو وہ ہیں جو وار سمیٹری سے سمبندھ رکھتے ہیں یا جو امریکی مشن سے سمبندھ رکھتے ہیں۔

یوں تو کوہیما میں ہائی اسکول تک ہی پڑھائی ہوتی ہے اور ودیارتھیوں میں آدھے سے زیادہ ناگا ودیارتھی ہی ہیں۔ پھر بھی ناگوں میں خاصی تعداد گریجویٹوں کی ہے۔ یہ ہائی

था. पर इस तरह की वारदात बरस में एक दो बार होती है क्योंकि गोहाटी के बिलकुल आसपास हाथियों के रहने लायक घने जंगल नहीं हैं हां, जिस जंगल में होकर सुबह के वक्त हमारी गाड़ी गुज़र रही थी वह इतना घना था कि उसमें हाथी रह सकते थे पर उसमें सचमुच कहीं तिल रखने की जगह न थी. हमें तो यह समझना मुश्किल हो गया कि ऐसे घने जंगल में हाथी कैसे समाता होगा और हाथी के झुंड कैसे एक जगह से दूसरी जगह जाते होंगे. पर श्री कामाख्या राम जी ने एक क्षण में हमारी तसल्ली कर दी. वह यह कि आदमी की जांघ जितने मोटे पेड़ हाथी के लिये घास से ज़ियादा मूल्य नहीं रखते और इस दलदल वाले जंगल में तो वह पेड़ हाथी की उलटी मदद करते हैं. अपने आप जंगली केलों के पेड़ों से तो जंगल ऐसा भरा मालूम होता था मानो किसी ने खेती कर रखी हो. और यह केलों के पेड़ हाथियों के लिये ऐसा ही चारा हैं जैसे घास गाय भैंसों के लिये. इन जंगलों को पार करती हुई हमारी गाड़ी दीमापुर पहुंच गई दीमापुर का दूसरा नाम मनीपुर रोड है.

गाड़ी लेट होने से जहां प्राकृतिक दृश्य देखने का आनन्द मिला, वहां एक दिक़्क़त भी सामने आई. वह यह कि कोहिमा जाने वाली बस छूट चुकी थी. लेकिन आसाम की खातिरदारी ने हमें एक मिनट भी दिक़्क़त महसूस न होने दी. दास बाबू नामी एक सज्जन मिल गए. उन्होंने हमें ऐसे ही अपनाया मानो हम उनके सगे रिश्तेदार हों. उनके दामाद दीमापुर में पुलिस में नौकर थे. बस वह अपनी बेटी के घर ले गए और एक मिनट में उसके इतनी जान पहचान करा दी कि हम उसे बेटी समझने लगे और वह हमें बाप. और फिर क्या किसी तरह की दिक़्क़त बाक़ी रह गई !

यह लिखना हम भूल गए कि सोहन सिंह नामी एक सिख सरदार हमें गाड़ी में ही मिल गए थे. और वह भी हम से इतना दिल खोलकर मिले कि हमेशा के लिये भाई बन बैठे. इन सरदार जी और दास बाबू की मदद से हमारी बस निकल जाने की दिक़्क़त भी हल हो गई एक ट्रक की अगली सीट पर मुझे और पंडित जी को जगह मिल गई और सरदार जी ने हमारी सारी तकलीफ़ अपने सिर ओढ़ ली, वह खुद हम सबके साथ ट्रक में सवार हो गए.

कोहिमा में

हम कोहिमा ठीक वक़्त से पहुँच गए. सरकिट हाउस [में] जगह मिल गई.

पढ़ने वाले इतना और जान लें कि कोहिमा जाने के लिये, कुछ दिनों से, सरकारी परमिट* की ज़रूरत होने लगी है, पहले नहीं होती थी. यह परमिट हमें उस वक़्त ही मिल गया था जब हम गोहाटी से शिलांग गए थे.

تھا ۔ پر اس طرح کی واردات برس میں ایک دو بار ھی ھوتی ھے کیونکہ گوھاٹی کے بالکل آس پاس ھاتھیوں کے رھنے لائق گھنے جنگل نہیں ھیں ۔ ھاں' جس جنگل میں ھوکر صبح کے وقت ھماری گاڑی گزر رھی تھی وہ اتنا گھنا تھا کہ اس میں ھاتھی رہ سکتے تھے پر اس میں سچ مچ کہیں تل رکھنے کو جگہ نہ تھی ۔ ھمیں تو یہ سمجھنا مشکل ھوگیا کہ ایسے گھنے جنگل میں ھاتھی کیسے سماتا ھوگا اور ھاتھی کے جھنڈ کیسے ایک جگہ سے دوسری جگہ جاتے ھونگے ۔ پر شری کاماکھیا رام جی نے ایک چھن میں ھماری تسلی کردی ۔ وہ یہ کہ آدمی کی جانگھ جتنے موٹے پیڑ ھاتھی کے لئے گھاس سے زیادہ مولیہ نہیں رکھتے اور اس دل دل والے جنگل میں تو وہ پیڑ ھاتھی کی الٹی مدد کرتے ھیں ۔ اپنے آپ جنگلی کیلوں کے پیڑوں سے تو جنگل ایسا بھرا معلوم ھوتا تھا مانو کسی نے کھیتی کر رکھی ھو ۔ اور یہ کیلوں کے پیڑ ھاتھیوں کے لئے ایسا ھی چارا ھیں جیسے گھاس گائے بھینسوں کے لئے ۔ ان جنگلوں کو پار کرتی ھوئی ھماری گاڑی دیماپور پہونچ گئی ۔ دیماپور کا دوسرا نام منی پور روڈ ھے ۔

گاڑی لیٹ ھونے سے' جہاں پراکرتک درشیہ دیکھنے کا آنند ملا' وھاں ایک دقت بھی سامنے آئی ۔ وہ یہ کہ کوھیما جانے والی بس چھوٹ چکی تھی ۔ لیکن آسام کی خاطرداری نے ھمیں ایک منٹ بھی دقت محسوس نہ ھونے دی ۔ داس بابو نامی ایک سجن مل گئے ۔ انہوں نے ھمیں ایسے ھی اپنایا مانو ھم ان کے سگے رشتہ دار ھوں ۔ ان کے داماد دیماپور میں پولیس میں نوکر تھے ۔ بس وہ اپنی بیٹی کے گھر لے گئے اور ایک منٹ میں اس سے اتنی جان پہچان کرادی کہ ھم اسے بیٹی سمجھنے لگے اور وہ ھمیں باپ ۔ اور پھر کیا کسی طرح کی دقت باقی رہ گئی !

یہ لکھنا ھم بھول گئے کہ سوھن سنگھ نامی ایک سکھ سردار ھمیں گاڑی میں ھی مل گئے تھے ۔ اور وہ بھی ھم سے اتنا دل کھول کر ملے کہ ھمیشہ کے لئے بھائی بن بیٹھے ۔ ان سردار جی اور داس بابو کی مدد سے ھماری بس نکل جانے کی دقت بھی حل ھوگئی ۔ ایک ٹرک کی اگلی سیٹ پر مجھے اور پنڈت جی کو جگہ مل گئی اور سردار جی نے ھماری ساری تکلیف اپنے سر اوڑھ لی' وہ خود ھم سب کے ساتھ ٹرک میں سوار ھوگئے ۔

کوھیما میں

ھم کوھیما ٹھیک وقت سے پہونچ گئے ۔ سرکٹ ھاؤس میں جگہ مل گئی ۔

پڑھنے والے اتنا اور جان لیں کہ کوھیما جانے کے لئے' کچھ دنوں سے' سرکاری پرمٹ کی ضرورت ھونے لگی ھے ۔ پہلے نہیں ھوتی تھی ۔ یہ پرمٹ ھمیں اس وقت ھی مل گیا تھا جب ھم گوھاٹی سے شلانگ گئے تھے ۔

नागा जीवन की एक झलक

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के समावर्तन (कनवोकेशन) के सिलसिले में पंडित सुन्दरलाल जी के साथ साथ मुझे भी गोहाटी जाने का बुलावा मिला था. सामावर्तन खतम होते ही राष्ट्र भाषा प्रचार समिति के संचालक, श्री रजनी कान्त चक्रवर्ती ने हम म शिलांग, कोहिमा और इमफाल देखने की इच्छा जगादी. और वह खुद ही हमको उन जगहों को देखने के लिये ले गए. इससे बढ़कर उन्होंने एक बात और, की, वह यह कि उन्होंने हमारे साथ जाने के लिये श्री कामाख्या राम जी को तैयार कर दिया गोहाटी में हम कामख्या राम जी के यहां ही ठहरे हुए थे. कामाख्या राम जी इमफाल में मनीपुर रियासतके चीफ़ जज रह चुके थे. उनके साथ होने से हमने एक हफ़्ते के दौरे में इतनी जानकारी हासिल कर ली जो अकेले घूमकर महीनों में हासिल नहीं कर सकते थे. मनीपुर, नागा क़बीले और आसाम की जानकारी के लिहाज़ से कामाख्या राम जी को अगर इनसाइक्लोपीडिया यानी विश्व कोष कहा जाय तो बेजा न होगा. अगर यह सज्जन हमारे साथ न होते तो हम नीचे जो कुछ लिख रहे हैं वह इतने विस्तार के साथ न लिख सकते.

रेल का सफ़र

गोहाटी का असली नाम है, गोहा हाटी. जिसका हिन्दी तरजुमा होगा—सुपारी मंडी. आज तो नहीं, हां कभी आसाम सुपारियों के लिये बेहद मशहूर था. कवियों ने आसाम की तारीफ़ करते हुए बड़ी शान के साथ लिखा है, जब पान की बेलें सुपारी के पेड़ पर चढ़ी हुई दिखाई देती हैं तब आदमी में श्रृंगार जाग उठता है और आसाम छोड़ने को जी नहीं चाहता. गोहाटी का दूसरा नाम 'कामरूप' है और 'कामरूप' का जादू देश के कोने कोने में मशहूर है. आज कामरूप अलग ज़िला भी है. कामरूप का एक नाम प्राग ज्योतिष पुर भी है.

हां, तो जब हम दीमापुर होते हुए कोहिमा जाने के लिये तैयार हुए तब यह जानकर कि हमें रात की आठ बजे की गाड़ी से गोहाटी छोड़ना होगा, हमारे दिल में एक हलका सा दुख महसूस हुआ; और वह इसलिये कि हम रातको सड़क के दाएं बाएं के दृश्य न देख सकेंगे और न जंगली जानवरों की आवाज़ सुन सकेंगे. होनहार की बात, रास्ते में किसी वजह से गाड़ी लेट हो गई, और सुबह के दो ढाई घंटे उन घने जंगलों में बीते जिनको देखने की हमारी बड़ी इच्छा थी.

यों तो हमारे गोहाटी पहुँचने के एक दिन पहले ही एक बड़े दांतों वाला हाथी गोहाटी में शिकार किया जा चुका

ناگا جیون کی ایک جھلک

اسم راشٹر بھاشا پرچار سمیتی کے سماورتن (کنووکیشن) کے سلسلے میں پنڈت سندر لال جی کے ساتھ ساتھ مجھے بھی گوہاٹی جانے کا بلاوا ملا تھا . سماورتن ختم ہوتے ہی راشٹر بھاشا پرچار سمیتی کے سنچالک' شری رجنی کانت چکرورتی نے ہم میں شلانگ' کوہیما اور امپھال دیکھنے کی اچھا جگا دی . اور وہ خود ہی ہمکو اُن جگہوں کو دیکھنے کے لئے لے گئے . اِس سے بڑھ کر انہوں نے ایک بات اور کی وہ یہ کہ انہوں نے ہمارے ساتھ جانے کے لئے شری کاماکھیا رام جی کو تیار کر دیا . گوہاٹی میں ہم کاماکھیا رام جی کے یہاں ہی ٹھہرے ہوئے تھے. کاماکھیا رام جی امپھال میں منی پور ریاست کے چیف جج رہ چکے تھے . اُن کے ساتھ ہونے سے ہم نے ایک ہفتے کے دورے میں اتنی جان کاری حاصل کرلی جو اکیلے گھوم کر مہینوں میں حاصل نہیں کرسکتے تھے . منی پور' ناگا قبیلے اور آسام کی جان کاری کے لحاظ سے کاماکھیا رام جی کو اگر اینسائکلوپیڈیا یعنی وشو کوش کہا جائے تو بیجا نہ ہوگا . اگر یہ سجن ہمارے ساتھ نہ ہوتے تو ہم نیچے جو کچھ لکھ رہے ہیں وہ اتنے وستار کے ساتھ نہ لکھ سکتے.

ریل کا سفر

گوہاٹی کا اصلی نام ہے' گوہاہاٹی . جس کا ہندی ترجمہ ہوگا—سپاری منڈی . آج تو نہیں' ہاں' کبھی آسام سپاریوں کے لئے بےحد مشہور تھا . کویوں نے آسام کی تعریف کرتے ہوئے بڑی شان کے ساتھ لکھا ہے' جب پان کی بیلیں سپاری کے پیڑ پر چڑھی ہوئی دکھائی دیتی ہیں تب آدمی میں شرنگار جاگ اُٹھتا ہے اور آسام چھوڑنے کو جی نہیں چاہتا . گوہاٹی کا دوسرا نام 'کام روپ' ہے اور 'کام روپ' کا جادو دیش کے کونے کونے میں مشہور ہے. آج کام روپ الگ ضلع بھی ہے . کام روپ کا ایک نام پراگ جیوتش پور بھی ہے.

ہاں' تو جب ہم دیماپور ہوتے ہوئے کوہیما جانے کے لئے تیار ہوئے تب یہ جان کر کہ ہمیں رات کی آٹھ بجے کی گاڑی سے گوہاٹی چھوڑنا ہوگا ہمارے دل میں ایک ہلکا سا دکھ محسوس ہوا؛ اور وہ اِس لئے کہ ہم رات کو سڑک کے دائیں بائیں کے درشیہ نہ دیکھ سکیںگے اور نہ جنگلی جانوروں کی آواز سن سکیںگے. ہونہار کی بات' راستے میں کسی وجہ سے گاڑی لیٹ ہوگئی' اور صبح کے دو ڈھائی گھنٹے ان گھنے جنگلوں میں بیتے جن کو دیکھنے کی ہماری بڑی اچھا تھی .

یوں تو ہمارے گوہاٹی پہونچنے کے ایک دن پہلے ہی ایک بڑے دانتوں والا ہاتھی گوہاٹی میں شکار کیا جا چکا

दिन में बच्चों के लिये धूप घर खुले हुए हैं. उनके लिये दिन में नाश्ता वग़ैरा का भी प्रबन्ध है. माएं सुबह के समय काम पर जाते वक़्त उनको ला कर दे जाती हैं. दिन में ज़रूरत पड़ने पर जैसे दूध पिलाने के लिये मां को बुला दिया जाता है. शाम को माएं बच्चों को घर ले जाती हैं. ज़रा बड़ी उमर के बच्चे किंडर गार्टन स्कूलों में पढ़ाए जाते हैं. जहां उनको खिलाया पिलाया और इस तरह से सिखाया जाता है कि जिससे वह आगे की तालीम के क़ाबिल बन सकें.

स्कूल जाने वाले लड़कों के लिये 'पायनियर महल' बने हुए हैं. यह इमारतें पहले ज़ार के कुछ दौलतमन्द साथियों और अफ़सरों के क़ब्ज़े में थीं. अब इन शानदार इमारतों को बच्चों के लिये नरसरी स्कूलों में बदल दिया गया है. यह नरसरी स्कूल बहुत ही सोच समझ के साथ क़ायम किये गए हैं. बच्चों के लिये लायब्रेरी, रीडिंग रूम, अमली ट्रेनिंग वग़ैरा का ख़ास प्रबन्ध है. यह ध्यान इसलिये रखा जाता है कि आगे जा कर बच्चे ही देश के भाग्य विधाता बनेंगे, वही देश की क़िसमत का फ़ैसला करेंगे. बच्चों की देख रेख ख़ास जानकारों की मातहती में की जाती है. इस देख रेख का सब ख़र्चा सरकार देती है. ज़रूरत पड़ने पर बड़े से बड़े जानकारों से सेवाएं बच्चों के लिये ली जाती हैं.

सेहत और भलाई

इन तमाम कोशिशों के अलावा तमाम जनता के हित के लिये स्वास्थ सुधार का प्रबन्ध है. डाक्टरों में अस्सी फ़ी सदी औरतें हैं, जो, मर्द या औरतें डाक्टरी का पेशा करते हैं वह निजी प्रैक्टिस नहीं करते. जनता की सेवा ही उनका मक़सद है. वह कोई तिजारत या पैसा पैदा करना नहीं चाहते. मुझे बड़ा अचरज एक बात पर हुआ वह यह कि अस्पतालों में स्पेशल मैटर्निटी वार्ड नहीं थे. पूछने पर पता चला कि वह जच्चाओं को बड़े अस्पतालों में नहीं रखते. बल्कि सब माओं के लिये थोड़े फ़ासलों पर ज़च्चाख़ाने की तमाम सुविधाएं हैं. यह सुविधाएं काम करने वालों के घरों से बहुत क़रीब हैं. अगर कोई चीड़फाड़ का केस हो जाता है तो उसको बड़े अस्पतालों में भेज दिया जाता है. इन सब बातों से हम को पता चलता है कि सोवियत सरकार कितना अधिक जनता के हित का ध्यान रखती है और उनकी तमाम ज़रूरतों को पूरा करती है. वहां की जनता नियम और एक डिस्प्लिन के अनुसार रहती है. पर इसे कोई "हिंसा" नहीं कह सकता. हमारे देश में अहिंसा भी अजीब रूप ले लेती है. हम आज़ादी से जहां चाहें थूक देते हैं, जो जहां दिल में आए गंदगी कर देते हैं. यह बात हम रेल, सड़क, घर के चारों तरफ़ सब जगह करते रहते हैं. यह बात रूस में नहीं होती. इसलिये मेरी समझ में नहीं आता कि कोई किसी दूसरे मुल्क के अच्छे शहरी जीवन की तारीफ़ करने पर क्यों नाराज़ हो.

دن میں بچوں کے لئے دھوپ گھر کھلے ہوئے ہیں۔ اُن کے لئے دن میں ناشتہ وغیرہ کا بھی پربندھ ہے. مائیں صبح کے سمے کام پر جاتے وقت اُن کو لا کر دے جاتی ہیں۔ دن میں ضرورت پڑنے پر جیسے دودھ پلانے کے لئے ماں کو بلا دیا جاتا ہے۔ شام کو مائیں بچوں کو گھر لے جاتی ہیں. ذرا بڑی عمر کے بچے کنڈر گارٹن اسکول میں پڑھائے جاتے ہیں. جہاں اُن کو کھلایا پلایا اور اس طرح سے سکھایا جاتا ہے کہ جس سے وہ آگے کی تعلیم کے قابل بن سکیں۔

اسکول جانے والے لڑکوں کے لئے 'پائینیر محل' بنے ہوئے ہیں۔ یہ عمارتیں پہلے زار کے کچھ دولت مند ساتھیوں اور افسروں کے قبضے میں تھیں۔ اب ان شاندار عمارتوں کو بچوں کے لئے نرسری اسکولوں میں بدل دیا گیا ہے۔ یہ نرسری اسکول بہت ہی سوچ سمجھ کے ساتھ قائم کئے گئے ہیں۔ بچوں کے لئے لائبریری' ریڈنگ روم' عملی ٹریننگ وغیرہ کا خاص پربندھ ہے۔ یہ دھیان اس لئے رکھا جاتا ہے کہ آگے جا کر بچے ہی دیش کے بھاگیہ ودھاتا بنیں گے' وہی دیش کی قسمت کا فیصلہ کریں گے۔ بچوں کی دیکھ ریکھ خاص جانکاروں کی ماتحتی میں کی جاتی ہے۔ اس دیکھ ریکھ کا سب خرچہ سرکار دیتی ہے۔ ضرورت پڑنے پر بڑے سے بڑے جانکاروں سے سیوائیں بچوں کے لئے لی جاتی ہیں۔

صحت اور بھلائی

اِن تمام کوششوں کے علاوہ تمام جنتا کے ہت کے لئے سواستھ سدھار کا پربندھ ہے۔ ڈاکٹروں میں 80 فیصدی عورتیں ہیں۔ جو مرد یا عورتیں ڈاکٹری کا پیشہ کرتے ہیں وہ نجی پریکٹس نہیں کرتے۔ جنتا کی سیوا ہی اُن کا مقصد ہے۔ وہ کوئی تجارت یا پیسہ پیدا کرنا نہیں چاہتے. مجھے بڑا اچرج ایک بات پر ہوا وہ یہ کہ اسپتالوں میں اسپیشل میٹرنٹی وارڈ نہیں تھے۔ پوچھنے پر پتہ چلا کہ وہ زچاؤں کو بڑے اسپتالوں میں نہیں رکھتے۔ بلکہ سب ماؤں کے لئے تھوڑے فاصلوں پر زچہ خانہ کی تمام سودھائیں ہیں. یہ سودھائیں کام کرنے والوں کے گھروں سے بہت قریب ہیں۔ اگر کوئی چیر پھاڑ کا کیس ہو جاتا ہے تو اس کو بڑے اسپتالوں میں بھیج دیا جاتا ہے۔ اِن سب باتوں سے ہم کو پتہ چلتا ہے کہ سوویت سرکار کتنا ادھک جنتا کے ہت کا دھیان رکھتی ہے اور اُن کی تمام ضرورتوں کو پورا کرتی ہے۔ وہاں کی جنتا نیم اور شسن کے انوسار رہتی ہے۔ پر اسے کوئی "ہنسا" نہیں کہہ سکتا۔ ہمارے دیش میں اہنسا بھی عجیب روپ لے لیتی ہے۔ ہم آزادی سے جہاں چاہے تھوک دیتے ہیں' جو جہاں دل میں آئے گندگی کر دیتے ہیں۔ یہ بات ہم ریل' سڑک' گھر کے چاروں طرف سب جگہ کرتے رہتے ہیں۔ یہ بات روس میں نہیں ہوتی۔ اس لئے میری سمجھ میں نہیں آتا کہ کوئی کسی دوسرے ملک کے اچھے شہری جیون کی تعریف کرنے پر کیوں ناراض ہو۔

[illegible] दिया हमें अधिक पसन्द है ? हमें सोच समझ कर फ़ैसला करना चाहिये. हमें यह न चाहिये कि इधर उधर के झूटे प्रचार को सच मान लें और उसमें अपने आप को झोंक दें.

खाना पीना

आज के रूस मे खाने पीने की चीज़ों की ज़रा भी कमी नहीं है. हर आदमी को न सिर्फ़ खाने की चीज़ें ही बल्कि बढ़िया से बढ़िया चीज़ें खाने को मिलती हैं. मौसम के अनुसार सब को कपड़े लत्ते भी मिल जाते हैं. जहां तक घरों का सवाल है उसका हल भी तेज़ी से किया जा रहा है.

तालीम

तालीम में बड़ी तेज़ी से प्रगति हो रही है. रात दिन इस बात की कोशिश की जा रही है कि सब काम करने वालों की क़ाबलियत बढ़े. शाम को कलचरी जगहों और दूसरी जगहों पर उन लोगों को तालीम दी जाती है जो तालीम हासिल करके उन्नति करना चाहते हैं. मर्द और औरत सब अपनी अपनी पसन्द का काम चुन लेते हैं. फिर उस काम में उनको ट्रेनिंग दी जाती है. कलचरी मुक़ामों पर अच्छे अच्छे मास्टर पढ़ाने के लिये रखे जाते हैं. बड़े बड़े महलों और हवेलियों को अब मज़दूरों के कलचरी महल बना दिया गया है. मास्को और लेनिनग्राद जैसे बड़े बड़े शहरों में हज़ारों आदमी शाम के समय तालीम और ट्रेनिंग पाते हैं.

इस अमली ट्रेनिंग के अलावा लोगों को कला संबन्धी बातों की भी जानकारी कराई जाती है. गाना, बजाना, चित्रकारी, ड्रामा और इस तरह की दूसरी कलाओं की तालीम दी जाती है. सिखाने वाले ख़ुद बहुत अच्छी जानकारी रखते हैं. अपने काम में महारत रखते हैं. इनका काम बहुत ऊंचे पैमाने का होता है. इनसान तो इनसान, सोवियत में जानवरों तक की भलाई का हर तरह का ख़याल रखा जाता है.

बच्चे

बहुत छुटपन से ही बच्चों की काफ़ी देख रेख की जाती है. जब मां काम में लगी रहती है उस समय बच्चों का हर तरह ध्यान रखा जाता है. इस बात पर कोई सवाल कर सकता है कि क्या यह जायज़ है कि मां एक छोटे बच्चे को छोड़ कर काम पर चली जाय ? लेकिन जिस तरीक़े से वह इस बात को करते और निभाते हैं उस में कोई दोश नहीं निकाला जा सकता. सफ़ाई का ख़ास ध्यान रखा जाता है, बच्चों को साफ़ से साफ़ कपड़े पहनाए जाते हैं. बच्चों को सिखाई हुई नरसें एहतियात से रखती हैं. बाहर के लोग जब उन जगहों पर जाते हैं तो उन्हें अपने सब कपड़ों के के ऊपर से नये धुले हुए सूती चोग़े पहन लेने पड़ते हैं.

امریکی جنتا ہمیں ادھک پسند ہے ؟ ہمیں سوچ سمجھ کر فیصلہ کرنا چاہئے . ہمیں یہ نہ چاہئے کہ اِدھر اُدھر کے جھوٹے پرچار کو سچ مان لیں اور اُس میں اپنے آپ کو جھونک دیں .

کھانا پینا

آج کے روس میں کھانے پینے کی چیزوں کی ذرا بھی کمی نہیں ہے . ہر آدمی کو نہ صرف کھانے کی چیزیں ہی بلکہ بڑھیا سے بڑھیا چیزیں کھانے کو ملتی ہیں . موسم کے انوسار سب کو کپڑے لتے بھی مل جاتے ہیں . جہاں تک گھروں کا سوال ہے اُس کا حل بھی تیزی سے کیا جا رہا ہے .

تعلیم

تعلیم میں بڑی تیزی سے پرگتی ہو رہی ہے . رات دن اِس بات کی کوشش کی جا رہی ہے کہ سب کام کرنے والوں کی قابلیت بڑھے . شام کو کلچری جگہوں اور دوسری جگہوں پر ان لوگوں کو تعلیم دی جاتی ہے جو تعلیم حاصل کر کے اُنّتی کرنا چاہتے ہیں . مرد اور عورت سب اپنی اپنی پسند کا کام چن لیتے ہیں . پھر اُس کام میں اُن کو ٹریننگ دی جاتی ہے . کلچری مقاموں پر اچھے اچھے ماسٹر پڑھانے کے لئے رکھے جاتے ہیں . بڑے بڑے محلوں اور حویلیوں کو اب مزدوروں کے کلچری محل بنا دیا گیا ہے . ماسکو اور لینن گراد جیسے بڑے بڑے شہروں میں ہزاروں آدمی شام کے سمے تعلیم اور ٹریننگ پاتے ہیں .

اِس عملی ٹریننگ کے علاوہ لوگوں کو کلا سمبندھی باتوں کی بھی جان کاری کرائی جاتی ہے . گانا، بجانا، چترکاری، ڈرامہ اور اِس طرح کی دوسری کلاؤں کی تعلیم دی جاتی ہے . سکھانے والے خود بہت اچھی جان کاری رکھتے ہیں . اپنے کام میں مہارت رکھتے ہیں . ان کا کام بہت اُونچے پیمانے کا ہوتا ہے . انسان تو انسان، سوویت میں جانوروں تک کی بھلائی کا ہر طرح کا خیال رکھا جاتا ہے .

بچے

بہت چھٹپن سے ہی بچوں کی کافی دیکھ ریکھ کی جاتی ہے . جب ماں کام میں لگی رہتی ہے اُس سمے بچوں کا ہر طرح دھیان رکھا جاتا ہے . اِس بات پر کوئی سوال کر سکتا ہے کہ کیا یہ جائز ہے کہ ماں ایک چھوٹے بچے کو چھوڑ کر کام پر چلی جائے ؟ لیکن جس طریقے سے وہ اِس بات کو کرتے اور نبھاتے ہیں اُس میں کوئی دوش نہیں نکالا جا سکتا . صفائی کا خاص دھیان رکھا جاتا ہے ، بچوں کو صاف سے صاف کپڑے پہنائے جاتے ہیں . بچوں کو سکھائی ہوئی نرسیں احتیاط سے رکھتی ہیں . باہر کے لوگ جب اُن جگہوں پر جاتے ہیں تو انہیں اپنے سب کپڑوں کے اوپر سے نئے دھلے ہوئے سوتی چوغے پہن لینے پڑتے ہیں .

हिंसा

जिस मुल्क में भी इन्क़लाब होता है और जहां का सारी ढांचा किसी नई योजना के आधार पर खड़ा किया जाता है वहां हिंसा का होना क़ुदरती है. रूस का इन्क़लाब इसी तरह की एक मिसाल है. उस इन्क़लाब ने रूस के सारे समाजी ढांचे को सिरे से बदल डाला. इसलिये वहां मार काट का होना क़ुदरती था. उन्होंने अहिंसा का कभी दावा भी नहीं किया. उनके सामने कोई और दूसरा रास्ता ही नहीं था. उनके पास महात्मा गांधी जैसा राह दिखाने वाला न था. उनको जो रोशनी दिखलाई पड़ी उसमें उन्होंने जो क़दम बढ़ाया वह उचित ही उठाया.

रूस में हिंसा हुई है यह बात अधिकतर अमरीकी हलक़ों से ही सुनने में आती है. अमरीकी इस मामले में रूसियों से किसी तरह कम नहीं हैं. अगर हम इस समय हिंसा के सवाल पर ग़ौर करें तो पता चलेगा कि अमरीका के रहने वाले संसार में हिंसा में सब से आगे बढ़े हुए हैं. कोरिया की लड़ाई एक जीती जागती मिसाल हमारे सामने है. जहां तक हमारे अपने देश का सवाल है. हमें इस मैदान में एक बहुत अच्छा नेता मिल गया. हमें ख़ुद तो अपने प्यारे नेता गांधी जी के असूलों की रोशनी में ही चलना चाहिये. उनके असूलों में विश्वास रखना चाहिये. हमारी ज़िम्मेदारी बहुत बड़ी है.

मैं अपने निजी अनुभव के बल पर कह सकता हूँ कि आज सोवियत में हिंसा नहीं के बराबर है. इस मामले में आज से 30 साल पहले रूस में क्या हुआ उस पर ग़ौर करना बेमानी है. आज का रूस 30 साल पहले का रूस नहीं है. नई पीढ़ी के लोगों ने उसमें बड़ी बड़ी तबदीलियां कर दी हैं. समय की गति के अनुसार रूस ने अपने आप को बदला है, अपने साधनों और तरीक़ों में अदल बदल की है. 30 बरस पहले के रूस की अब आलोचना करना रूस के साथ ज़ियादती करना होगा. आज के रूस की आलोचना 30 साल पुराने रूस के आधार पर करना ऐसा ही है जैसा आज के ईसाई धर्म की आलोचना हज़ार बरस पहले के ईसाई धर्म के आधार पर करना.

आजकल मैं देखता हूँ कि आप एक तरफ़ रूस की फ़र्ज़ी हिंसा पर दांतों तले उंगली दे लेते हैं और दूसरी तरफ़ हमारे रचनात्मक कारकर्ता एक दूसरे से होड़ ले रहे हैं और अमरीका की चलाई हुई कम्युनिटी योजनाओं में सहयोग दे रहे हैं. अमरीका की हिंसा के ज़रिये चलते फिरते इनसान ज़िन्दा जलती हुई मशालें बना दिये जाते हैं. अमरीका के नपाम बम अच्छे, भले और तन्दुरुस्त मर्दों, औरतों और बच्चों को मौत की नींद सुला देते हैं. इनसानों पर बीमारी के कीड़े फेंके जाते हैं. क्या यह

ہنسا

جس ملک میں بھی انقلاب ہوتا ہے اور جہاں کا سارا ڈھانچہ کسی نئی یوجنا کے آدھار پر کھڑا کیا جاتا ہے وہاں ہنسا کا ہونا قدرتی ہے ۔ روس کا انقلاب اسی طرح کی ایک مثال ہے ۔ اس انقلاب نے روس کے سارے سماجی ڈھانچے کو سرے سے بدل ڈالا ۔ اس لئے وہاں مارکاٹ کا ہونا قدرتی تھا ۔ انہوں نے اہنسا کا کبھی دعویٰ بھی نہیں کیا ۔ ان کے سامنے کوئی اور دوسرا راستہ ہی نہیں تھا ۔ ان کے پاس مہاتما گاندھی جیسا راہ دکھانے والا نہ تھا ۔ ان کو جو روشنی دکھلائی پڑی اس میں انہوں نے جو قدم بڑھایا وہ اچت ہی اٹھایا ۔

روس میں ہنسا ہوئی ہے یہ بات ادھکتر امریکی حلقوں سے ہی سننے میں آتی ہے ۔ امریکی اس معاملے میں روسیوں سے کسی طرح کم نہیں ہیں. اگر ہم اس سمے ہنسا کے سوال پر غور کریں تو پتہ چلیگا کہ امریکہ کے رہنے والے سنسار میں ہنسا میں سب سے آگے بڑھے ہوئے ہیں ۔ کوریا کی لڑائی ایک جیتی جاگتی مثال ہمارے سامنے ہے ۔ جہاں تک ہمارے اپنے دیش کا سوال ہے ہمیں اس میدان میں ایک بہت اچھا نیتا مل گیا ۔ ہمیں خود تو اپنے پیارے نیتا گاندھی جی کے اصولوں کی روشنی میں ہی چلنا چاہئے ۔ ان کے اصولوں میں وشواس رکھنا چاہئے ۔ ہماری ذمےداری بہت بڑی ہے ۔

میں اپنے نجی انوبھو کے بل پر کہہ سکتا ہوں کہ آج سوویت میں ہنسا نہیں کے برابر ہے ۔ اس معاملے میں آج سے 30 سال پہلے روس میں کیا ہوا اس پر غور کرنا بےمعنی ہے ۔ آج کا روس 30 سال پہلے کا روس نہیں ہے. نئی پیڑھی کے لوگوں نے اس میں بڑی بڑی تبدیلیاں کر دی ہیں ۔ سمے کی گتی کے انوسار روس نے اپنے آپ کو بدلا ہے، اپنے سادھنوں اور طریقوں میں ادل بدل کی ہے ۔ 30 برس پہلے کے روس کی اب آلوچنا کرنا روس کے ساتھ زیادتی کرنا ہوگا ۔ آج کے روس کی آلوچنا 30 سال پرانے روس کے آدھار پر کرنا ایسا ہی ہے جیسا آج کے عیسائی دھرم کی آلوچنا ہزار برس پہلے کے عیسائی دھرم کے آدھار پر کرنا ۔

آج کل میں دیکھتا ہوں کہ آپ ایک طرف روس کی فرضی ہنسا پر دانتوں تلے انگلی دے لیتے ہیں اور دوسری طرف ہمارے رچناتمک کارکرتا ایک دوسرے سے ہوڑ لے رہے ہیں اور امریکہ کی چلائی ہوئی کمیونٹی یوجناؤں میں سہیوگ دے رہے ہیں ۔ امریکہ کی ہنسا کے ذریعے چلتے پھرتے انسان زندہ جلتی ہوئی مشعلیں بنا دیئے جاتے ہیں. امریکہ کے نپام بم اچھے، بھلے اور تندرست مردوں، عورتوں اور بچوں کو موت کی نیند سلا دیتے ہیں. انسانوں پر بیماری کے کیڑے پھینکے جاتے ہیں. کیا یہ

रूस का राज जनता के भले का राज है

(डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा)

गांधी आश्रम, मेरठ के लोगों ने डाक्टर जे सी. कुमारप्पा से कुछ सवाल किये थे. नीचे हम उनके सवाल और डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा के जवाब का खुलासा दे रहे हैं.

सवाल

"आप हमेशा उस चीज़ की बुराई दिखाते रहते हैं जो गांधी जी के विचारों से नहीं मिलती. पर रूस में हिंसा से और बड़ी बड़ी कल मशीनों से काम लिया जाता है फिर भी आप रूस की तारीफ़ करते नहीं थकते ?" यह क्या बात है.

जवाब

यह बात बिल्कुल सही है कि जिस चीज़ में गांधी जी की निगाह नहीं अपनाई जाती उसकी मैं निन्दा करता हूँ. फिर भी अगर रूस की किसी बातों की मैं सराहना करता हूं तो उसके कई साफ़ कारन हैं.

मक़सद

मैं दो बातों से हर सरकार की जांच करता हूँ : एक यह कि उस सरकार से जनता के कष्टों का हल होता है या नहीं और दूसरे यह कि उससे जनता कैसे तरक़्क़ी करती है.

रूस की सोवियत सरकार ने अपना पूरा ध्यान मज़दूरों की भलाई की तरफ़ लगा दिया है. रूस में हर तरफ़ लोग काम में लगे हुए हैं. उनकी देखभाल सरकार करती है. सबके खाने पीने का ख़याल, कपड़े लत्ते और मकान वग़ैरा का ध्यान सरकार को रहता है. यहां तक कि ज़रूरत की मामूली चीज़ें भी सरकार मुहैया करती है. सब काम करने वालों के भले पर सरकार जो अचूक ध्यान रखती है वह सराहना के क़ाबिल है. यह बात सरमायादार मुल्कों में देखने में नहीं आती. जहां तक हमरे देश का संबन्ध है हम कह सकते हैं कि यहां जनता के दुखों पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया जाता. इन ही तमाम बातों को देख सुन कर मैं सोवियत रूस की सराहना करता हूँ. मेरे लिये इसके अलावा कोई चारा ही नहीं है. हम रूस के उपायों या साधनों में जो चाहे दोष निकालें पर जिस मंज़िल या मक़सद की तरफ़ वह बढ़ रहे हैं वह तारीफ़ के क़ाबिल है. शैतान के अन्दर भी अगर कोई भलाई हो तो उस भलाई को हमें स्वीकार करना चाहिये. मेरे कहने का मतलब यह हरगिज़ नहीं है कि मैं रूस की हर चीज़ पसन्द करता हूँ या उनके सब असूलों को मानता हूं.

روس کا راج جنتا کے بھلے کا راج ھے

(ڈاکٹر جے . سی . کمارپپا)

گاندھی آشرم' میرٹھ کے لوگوں نے ڈاکٹر جے . سی . کمارپپا سے کچھ سوال کئے تھے . نیچے ہم اُن کے سوال اور ڈاکٹر جے . سی . کمارپپا کے جواب کا خلاصہ دے رہے ھیں .

سوال

"آپ ھمیشہ اُس چیز کی برائی دکھاتے رہتے ھیں جو گاندھی جی کے وچاروں سے نہیں ملتی . پر روس میں ھنسا سے اور بڑی بڑی کل مشینوں سے کام لیا جاتا ھے پھر بھی آپ روس کی تعریف کرتے نہیں تھکتے ؟" یہ کیا بات ھے .

جواب

یہ بات بالکل صحیح ھے کہ جس چیز میں گاندھی جی کی نگاہ نہیں اپنائی جاتی اُس کی میں نندا کرتا ھوں . پھر بھی اگر روس کی کسی باتوں کی میں سراھنا کرتا ھوں تو اُس کے کئی صاف کارن ھیں .

مقصد

میں دو باتوں سے ھر سرکار کی جانچ کرتا ھوں : ایک یہ کہ اُس سرکار سے جنتا کے کشٹوں کا حل ھوتا ھے یا نہیں اور دوسرے یہ کہ اُس سے جنتا کیسے ترقی کرتی ھے .

روس کی سوویت سرکار نے اپنا پورا دھیان مزدوروں کی بھلائی کی طرف لگا دیا ھے . روس میں ھر طرف لوگ کام میں لگے ھوئے ھیں . اُن کی دیکھ بھال سرکار کرتی ھے . سب کے کھانے پینے کا خیال' کپڑے لتے اور مکان وغیرہ کا دھیان سرکار کو رھتا ھے . یہاں تک کہ ضرورت کی معمولی چیزیں بھی سرکار مہیا کرتی ھے . سب کام کرنے والوں کے بھلے پر سرکار جو اچوک دھیان رکھتی ھے وہ سراھنا کے قابل ھے یہ بات سرمایہ‌دار ملکوں میں دیکھنے میں نہیں آتی . جہاں تک ھمارے دیش کا سمبندھ ھے ہم کہہ سکتے ھیں کہ یہاں جنتا کے دکھوں پر بالکل دھیان نہیں دیا جاتا . ان ھی تمام باتوں کو دیکھ سن کر میں سوویت روس کی سراھنا کرتا ھوں . میرے لئے اِس کے علاوہ کوئی چارا ھی نہیں ھے . ہم روس کے اُپایوں یا سادھنوں میں جو چاھے دوش نکالیں پر جس منزل یا مقصد کی طرف وہ بڑھ رھے ھیں وہ تعریف کے قابل ھے . شیطان کے اندر بھی اگر کوئی بھلائی ھو تو اُس بھلائی کو ھمیں سوئیکار کرنا چاھئے . میرے کہنے کا مطلب یہ ھرگز نہیں ھے کہ میں روس کی ھر چیز پسند کرتا ھوں یا اُن کے سب اصولوں کو مانتا ھوں .

Unwithering	अन मुरझाव
Unwritten	अन लिखा
Vegetarian	तरकारया
Zero hour	सिफ़र घड़ी

इस असूल का फ़ायदापन अच्छी तरह समझने के लिये यह जरूरी है कि हम अपनी पेश की हुई इस्तलाहों का मुक़ाबला हिन्दी और उर्दू के बाज़ लफ़्ज़ों से करें.

हमने Fossil का तरजुमा पथराव किया है जिसका हिन्दी बराबर या (Equivalent) उत्खांत और जीवाश्म दिया गया है. यह शब्द भले ही हिन्दी में चलें मगर वह आम तौर पर नहीं चल पायेंगे और उनका मतलब समझना हमेशा कठिन होगा. इसके बरअक्स कम पढ़े लिखे लोग भी पथराव के माने ख़ुद बख़ुद समझ जायेंगे क्योंकि बहाव, चढ़ाव, लदाव की तरह और उन्हीं के क़यास पर यह शब्द भी बनाया गया.

एक और मिसाल लीजिये. Import और Export को हिन्दी में आयात और निर्यात कहते हैं. उर्दू में दरआमद और बरआमद. बरआमद तो बड़ी परेशानी पैदा करता है. दरआमद के माने सही होते हैं : अन्दर आया या अन्दर आई हुई चीज़ें. मगर बरआमद ठीक नहीं. इसके माने बाहर आया या बाहर आई हुई चीज़ों के होते हैं हालांकि हमारा मतलब बाहर गई हुई चीज़ें ज़ाहिर करना होता है. अगर दरआमद के उलटा बररफ़्त कहते तो भी बेहतर होता. निर्यात के मुश्किलपन और दरआमद बरआमद के उलझाव से बचने के लिये मैंने उनके बराबर आयात और जायात बनाए हैं. आयात से आने वाली चीज़ें मुराद हैं. यह हिन्दी का मुस्तनद शब्द है. आयात के मुक़ाबले में जायात से जाने वाली चीज़ें क़यास करना बहुत आसान है.

खाओ, लुटाओ, मिटाओ बहुत आम लफ़्ज़ हैं जिनके माने हर शख़्स जानता है कि खाने वाला, लुटाने वाला, मिटने वाला होते हैं. बिकाऊ मकान से मुराद बिकने वाला मकान है. इसी वज़न या तरकीब पर बहुत से लफ़्ज़ बन सकते हैं: जैसे Oscilleting Fan के लिये घुमाव पंखा याने घूमने वाला पंखा.

اَن مرجھاؤ	Unwithering
اَنلکھا	Unwritten
ترکاریا	Vegetarian
صفر گھڑی	Zero hour

اِس اصول کا فائدہ پن اچھی طرح سمجھنے کے لئے یہ ضروری ہے کہ ہم اپنی پیش کی ہوئی اصطلاحوں کا مقابلہ هندی اور اردو کے باز لفظوں سے کریں ۔

ہم نے Fossil کا ترجما پتھراؤ کیا ہے جس کا هندی برابر یا (Equivalent) اُتکھانت (उत्खांत) اور جیواشم (जीवाश्म) دیا گیا ہے ۔ یہ شبد بھلے ہی هندی میں چلیں مگر وہ آم طور پر نہیں چل پائینگے اور ان کا مطلب سمجھنا ہمیشہ کٹھن ہوگا۔ اس کے برعکس کم پڑھے لکھے لوگ بھی پتھراؤ کے مانے خد بخد سمجھ جائینگے کیونکہ بہاؤ' چڑھاؤ' لداؤ کی طرح اور انہیں کے قیاس پر یہ شبد بھی بنایا گیا ۔

ایک اور مثال لیجئے ۔ Import اور Export کو هندی میں آیات اور نریات کہتے ہیں ۔ اُردو میں درآمد اور برآمد۔ برآمد تو بڑی پریشانی پیدا کرتا ہے۔ در آمد کے مانے صحیح ہوتے ہیں : اندر آیا یا اندر آئی ہوئی چیزیں۔ مگر بر آمد ٹھیک نہیں ۔ اِس کے مانے باہر آیا یا باہر آئی ہوئی چیزوں کے ہوتے ہیں ۔ حالانکہ ہمارا مطلب باہر گئی ہوئی چیزیں ظاہر کرنا ہوتا ہے ۔ اگر در آمد کے اُلٹا بررفت کہتے تو بھی بہتر ہوتا ۔ نریات کے مشکلپن اور در آمد بر آمد کے اُلجھاؤ سے بچنے کے لئے میں نے ان کے برابر آیات اور جایات بنائے ہیں ۔ آیات سے آنے والی چیزیں مراد ہیں ۔ یہ هندی کا مستند شبد ہے۔ آیات کے مقابلے میں جایات سے جانے والی چیزیں قیاس کرنا بہت آسان ہے ۔

کھاؤ' لٹاؤ' مٹاؤ بہت آم لفظ ہیں جن کے مانے ہر شخص جانتا ہے کہ کھانے والا' لٹانے والا' مٹنے والا ہوتے ہیں ۔ بکاؤ مکان سے مراد بکنے والا مکان ہے ۔ اسی وزن یا ترکیب سے لفظ بن سکتے ہیں؛ جیسے Oscilletting Fan کے لئے گھماؤ پنکھا یانے گھومنے والا پنکھا ۔

Neutralization	बेजानियावा	بےجانیاوا	Neutralization
New Rich	नौ अमीरया-नौ अमीरये	نو امیریا ۔ نو امیرئے	New Rich
Oasis	दरख़िस्तान	درخستان	Oasis
Obstructionist	रुकावट बाज़	رکاوٹ باز	Obstructionist
Ocean	महा समुन्दर	مہا سمندر	Ocean
Oceanica	समन्दरस्तान	سمندرستان	Oceanica
Octagon	अठ कोनिया	اٹھ کونیا	Octagon
Octagonal	अठ कोनी	اٹھ کونی	Octagonal
Optimism	सुख पसन्दी	سکھ پسندی	Optimism
Oscillating Fan	घुमाव पंखा	گھماؤ پنکھا	Oscillating Fan
Panmovements	कलजहाव तहरीकें	کل جہاز تحریکیں	Panmovements
Parricide	बाप हत्या	باپ ہتیا	Parricide
Pathology	रोग विद्या	روگ ودیا	Pathology
Peace-feelers	शान्ति खोजी	شانتی کھوجی	Peace-feelers
Peninsula	टापू नुमा	ٹاپو نما	Peninsula
Physiology	तन विद्या	تن ودیا	Physiology
Prism	पुथला, पुथलवा,	پتھلا، پتھلوا	Prism
Psychology	मन विद्या	من ودیا	Psychology
Quadrangle	चार कोनिया	چار کونیا	Quadrangle
Quadrangular	चार कोनी	چارکونی	Quadrangular
Quadruplicate	चौगनाना	چوگنانا	Quadruplicate
Quadruplication	चौगनावा	چوگناوا	Quadruplication
Radiate	करनाना	کرنانا	Radiate
Radiation	करनाव	کرناؤ	Radiation
Ranarium	मेंढ़क घर	مینڈک گھر	Ranarium
Reflect	अकसाना	عکسانا	Reflect
Reversal	पिछलावा	پچھلاوا	Reversal
Reverse	पिछलाना	پچھلانا	Reverse
Script	लिखावट	لکھاوٹ	Script
Semicircle	अध घेरा	ادھ گھیرا	Semicircle
Semicircular	अध घेर, अध घेरी	ادھ گھیر، ادھ گھیری	Semicircular
Soluble	घुल सकनी	گھل سکنی	Soluble
Insoluble	अनघुल सकनी	ان گھل سکنی	Insoluble
Stratification	परतवावा	پرتھاوا	Stratification
Stratify	परतवाना	پرتھانا	Stratify
Treacherous	घातोनी-घातिया	گھاتونی-گھاتیا	Treacherous
Triangle	तिकोनिया	تکونیا	Triangle
Triplicate	तिगनाना	تگنانا	Triplicate
Triplication	तिगनावा	تگناوا	Triplication
Unapproachable	अपासया	اپاسیا	Unapproachable
Unbearable	अनझेलनी, असहनी	ان جھیلنی، اسہنی	Unbearable
Unbelievable	अनपतीनी	ان پتینی	Unbelievable
Undeniable	अन मुकरनी	ان مکرنی	Undeniable
Unwatered	अन सींचा	ان سینچا	Unwatered

Compressible	देबवार	دبیدار	Compressible
Continent	महादेस, महामुल्क	مہادیس، مہاملک	Continent
Cosmopolitanism	परदेसियत	پردیسیت	Cosmopolitanism
Cremation	अगनावो	اگناؤ	Cremation
Current Account	चालू खाता	چالو کھاتا	Current Account
Deprivable	महरूम सकनी	محروم سکنی	Deprivable
Diarchy (du'raj दुर राज)	दुराज	دراج (du' raj دوراج)	Diarchy
Dipsomaniac	शराब जनूनिया, शराब जनूनी	شراب جنونیا، شراب جنونی	Dipsomaniac
Discriminate	फिरक़ाना	فرقانا	Discriminate
Discrimination	फिरकाव	فرقاؤ	Discrimination
Elastic	लचकदार	لچکدار	Elastic
Electrification	बिजलियावा	بجلیاوا	Electrification
Elctrify	बिजलियाना	بجلیانا	Electrify
Eugenics	नसल सुधारयात	نسل سدھاریات	Eugenics
Export and Import	जायात और आयात	جایات اور آیات	Export and Import
Fishery	मछियारी, मछलीकारी	مچھیاری، مچھلی کاری	Fishery
Flirt	ठठोलनी	ٹھٹھولنی	Flirt
Floral tribute	फूल चढ़ावा	پھول چڑھاوا	Floral tribute
Forge	ठुकवाना	ٹھکانا	Forge
Fossil	पथराव	پتھراؤ	Fossil
Fossilate	पथराना	پتھرانا	Fossilate
Fossilation	पथरयावा	پتھریاوا	Fossilation
Fossilized	पथराया हुआ	پتھرایا ہوا	Fossilized
Gastrology	पकवान विद्या	پکوان ودیا	Gastrology
Gastronomy	पकवान	پکوان	Gastronomy
Half hearted	अधदिली-अधदिला	ادھ دلی - ادھ دلا	Half hearted
Half heartedness	अधदिलापन	ادھ دلاپن	Half heartedness
Hemisphere	अध गोला	ادھ گولا	Hemisphere
Hexagon	छेकोनिया	چھے کونیا	Hexagon
Hexagonal	छेकोनी	چھے کونی	Hexagonal
Informant	समाचारया	سماچاریا	Informant
Invertebrate	बेरीढ़या	بےریڑھیا	Invertebrate
Irredeemable debt	अनचुकाव क़र्ज़ (वह क़र्ज़ जो चुकाया न जा सके)	ان چکاؤ قرض (وہ قرض جو چکایا نہ جاسکے)	Irredeemable debt
Isthmus	ज़मीन जोड़	زمین جوڑ	Isthmus
Kakistocracy	गुन्डेराज	غنڈے راج	Kakistocracy
Labor force	मज़दूर दल	مزدور دل	Labor force
Misrepresentation	बदल बयानी	بدل بیانی	Misrepresentation
Multiplication	ज़रब	ضرب	Multiplication
Multiply	ज़रबाना	ضربانا	Multiply
Mutual	आपसी	آپسی	Mutual
Negligence	लापरवाही	لاپرواہی	Negligence
Neolithic Age	नया पत्थर युग	نیا پتھر جگ	Neolithic Age

ने मुझे बताया था कि आजकल डाकू खाली लिफ़ाफ़ा भेज कर डाका डालते हैं.

लीला : कल बताया था. (खूब ज़ोर से हंसती है)

पुरुश : हैं! हंसती क्यों है. इसमें हंसने की क्या बात है.

लीला : (उसी तरह हंसते हंसते) पिताजी, कल पहली अप्रैल थी. (हंसी......)

स्त्री : धत्त तेरे की. यूं ही सारे घर को घिस्सा दिया.

—भगवानदीन

نے مجھے بتایا تھا کہ آج کل ڈاکو خالی لفافہ بھیج کر ڈاکہ ڈالتے ہیں .

لیلا : کل بتایا تھا . (خوب زور سے ہنستی ہے)

پرش : ہیں ! ہنستی کیوں ہے . اس میں ہنسنے کی کیا بات ہے .

لیلا : (اسی طرح ہنستے ہنستے) پتاجی ' کل پہلی اپریل تھی . (ہنسی......)

استری : دھت تیرے کی . یوں ہی سارے گھر کو گھسا دیا .

—بھگوان دین

हिन्दुस्तानी शब्दयात का पांचवां असूल: आसान लफ़्ज़ों से नये शब्द

(डाक्टर जाफ़र हसन)

हिन्दुस्तानी के लिये नये नये शब्द बनाने का यह असूल भी होना चाहिये कि जहां तक बन पड़े चालू लफ़्ज़ों से नये लफ़्ज़ बनाए जायं. मसलन :

Agnostic	अनजानिया
Agnosticism	अनजानपन
Alternative	बदलाव
Amphibian, Amphibians	जलथलया, जलथलिये
Anesthesiology	बेहोशियात
Appeasement	फिसलाव
Aqwarium	समन्दरम
Archtic Region	उत्तरिस्तान, शुमालिस्तान
Assets & Liabilities	लेन दारियां और देन दारियां; हासिल दारियां और बार दरियां
Bimetalism	दुधातियत
Biology	जीवन विद्या
Black marketeer	काला बाज़ारिया
Black out	अन्धयारना, अन्धयार
Burial	दफ़नाव
Cardiology	दल विद्या
Cognizibility	पहचानें
Colorblind	रतौंधा
Color blindness	रतौंधापन
Comet	जोत तारा, रोब तारा
Compressibility	देनदारी

ہندستانی شبدیات کا پانچواں اسول: آسان لفزوں سے نئے شبد

(ڈاکٹر جافر حسن)

ہندستانی کے لئے نئے نئے شبد بنانے کا یہ اسول بھی ہونا چاہئے کہ جہاں تک بن پڑے چالو لفزوں سے نئے لفز بنائے جائیں . مسلن :

انجانیا	Agnostic
انجانپن	Agnosticism
بدلاؤ	Alternative
جل تھلیا ' جلتھلئے	Amphibian, Amphibians
بے ہوشیات	Anesthesiology
پھسلاؤ	Appeasement
سمندرم	Aqwarium
اترستان ' شمالستان	Archtic Region
لینداریاں اور دین داریاں؛ حاصل داریاں اور بارداریاں	Assets & Liabilities
دودھاتیت	Bimetalism
جیون ودیا	Biology
کالا بازاریا	Black marketeer
اندھیارنا ' اندھیار	Black out
دفناؤ	Burial
دل ودیا	Cardiology
پہچانیں	Cognizibility
رتوندھا	Color blind
رتوندھاپن	Color blindness
جوت تارا ' روب تارا	Comet
دینداری	Compressibility

पुरुश : अच्छा ! (कुछ रुक कर) बेटा, आज हमारे घर में डाका पड़ने वाला है.

लीला : डाका ! कैसा डाका !

स्त्री : यही कि डाकू आएंगे और डाका डालेंगे हमारे घर में.

लीला : डाकू आएंगे ! डाका डालेंगे ! हमारे घर में ! डाकू क्या पागल हो गए हैं !

पुरुश : नहीं बेटा, यह मज़ाक़ नहीं है. बिल्कुल सच्ची बात है. उन्होंने हमें पहले से ख़बर भी दे दी है कि वह आज रात को हमारे हां डाका डालेंगे.

लीला : ख़बर दे दी है कैसे. कौन ख़बर लाया था.

पुरुश : यह ख़ाली लिफ़ाफ़ा.

लीला : ख़ाली लिफ़ाफ़ा ! कैसा ख़ाली लिफ़ाफ़ा !

स्त्री : बिल्कुल ख़ाली.

पुरुश : देखो बेटा ! यह है वह लिफ़ाफ़ा. किशोर ने मुझे दिया है.

लीला : देखूं ज़रा यह लिफ़ाफ़ा. यह तो कल आपकी मेज़ पर रखा था.

पुरुश: मेरी मेज़ पर !

लीला : हां, हां.

पुरुश : अरी यह तो आज की डाक से आया है.

लीला : आज की डाक से आया है ! तो किशोर ज़रूर मेरे लिफ़ाफ़े की जगह इसी को कल डाल आया होगा. मैं बड़ी हैरान थी. किशोर कहता था मैं लिफ़ाफ़ा डाल आया और मेरा लिफ़ाफ़ा वहीं मेज़ पर ही पड़ा था.

पुरुश : (हैरानी में) यह तुम क्या कह रही हो !

लीला : यह देखिये न, इस पर यहीं की मोहर भी है

पुरुश : तो यह ख़ाली क्यों है !

लीला : यह मैं क्या जानूं.

[थोड़ा विराम (वक़्फ़ा)]

पुरुश : ओ हो, अब याद आया. (ज़ोर से हंसता है और हंसता रहता है)

लीला : अरे, आप हंस क्यों रहे हैं ! और इस ख़ाली लिफ़ाफ़े से डाका पड़ने की बात आप कैसे सोच बैठे.

पुरुश : बेटा, हंसा तो यों था कि यह लिफ़ाफ़ा वाक़ई में मेरा ही था. कोई दो बरस पहले का है, तब से मैंने इसे अपनी एक किताब में बुक मार्क बना का कर रखा हुआ था. कल मैं वह किताब पढ़ रहा था और वह उसमें से निकल कर मेज़ पर गिर गया होगा. इतने दिनों में वह चिपक कर फिर बन्द भी हो गया होगा, और किशोर ने ग़लती से तुम्हारा लिफ़ाफ़ा उठाने की बजाए यह लिफ़ाफ़ा उठा कर डाक में डाल दिया. डाके की बात यह है कि कल मेरे दोस्त

پرش : اچھا ! (کچھ رک کر) بیٹا' آج ہمارے گھر میں ڈاکہ پڑنے والا ہے .

لیلا : ڈاکہ ! کیسا ڈاکہ !

استری : یہی کہ ڈاکو آئیں گے اور ڈاکہ ڈالیں گے ہمارے گھر میں .

لیلا : ڈاکو آئیں گے ! ڈاکہ ڈالیں گے ! ہمارے گھر میں ! ڈاکو کیا پاگل ہوگئے ہیں !

پرش : نہیں بیٹا' یہ مذاق نہیں ہے . بالکل سچی بات ہے . انہوں نے ہمیں پہلے سے خبر بھی دے دی ہے کہ وہ آج رات کو ہمارے ہاں ڈاکہ ڈالینگے .

لیلا : خبر دے دی ہے کیسے . کون خبر لایا تھا .

پرش : یہ خالی لفافہ .

لیلا : خالی لفافہ ! کیسا خالی لفافہ !

استری : بالکل خالی .

پرش : دیکھو بیٹا' یہ ہے وہ لفافہ . کشور نے مجھے دیا ہے .

لیلا : دیکھوں ذرا یہ لفافہ . یہ تو کل آپ کی میز پر رکھا تھا .

پرش : میری میز پر !

لیلا : ہاں' ہاں .

پرش : اری' یہ تو آج کی ڈاک سے آیا ہے .

لیلا : آج کی ڈاک سے آیا ہے ! تو کشور ضرور میرے لفافے کی جگہ اسی کو کل ڈال آیا ہوگا . میں بڑی حیران تھی . کشور کہتا تھا میں لفافہ ڈال آیا اور میرا لفافہ وہیں میز پر ہی پڑا تھا .

پرش : (حیرانی میں) یہ تم کیا کہہ رہی ہو .

لیلا : یہ دیکھئے نہ' اس پر یہیں کی موہر بھی ہے .

پرش : تو یہ خالی کیوں ہے .

لیلا : یہ میں کیا جانوں .

[تھوڑا وِرام (وقفہ)]

پرش : او ہو' اب یاد آیا . (زور سے ہنستا ہے اور ہنستا رہتا ہے)

لیلا : ارے' آپ ہنس کیوں رہے ہیں ! اور اس خالی لفافے سے ڈاکہ پڑنے کی بات آپ کیسے سوچ بیٹھے .

پرش : بیٹا' ہنسا تو یوں تھا کہ لفافہ واقعی میں میرا ہی تھا . کوئی دو برس پہلے کا ہے' تب سے میں نے اسے اپنی ایک کتاب میں بک مارک بنا کر رکھا ہوا تھا . کل میں وہ کتاب پڑھ رہا تھا اور وہ اس میں سے نکل کر میز پر گر گیا ہوگا . اتنے دنوں میں وہ چپک کر پھر بند بھی ہوگیا ہوگا اور کشور نے غلطی سے تمہارا لفافہ اٹھانے کی بجائے یہ لفافہ اٹھا کر ڈاک میں ڈال دیا . ڈاکہ کی بات یہ ہے کہ کل میرے دوست

स्त्री : तो हम ही क्यों यहां रहें. चलो घर में ताला लगाओ और सब रहो देवर जी के यहां.

पुरुष : बात तो कुछ जंचती है. और फिर जो कुछ माल मताल हो वह भी ले चलो. (कुछ सोच कर) मगर सुना है यह डाकू बड़े वैसे होते हैं. इस दफ़ा कुछ न मिला तो वह फिर आयंगे. और अगर हम कहीं चले भी जायं तो उनकी नज़रों में यह और भी इस बात का सबूत होगा कि हमारे पास माल है, और फिर तो वह जहां भी हम होंगे वहीं हम पर धावा बोलेंगे.

स्त्री : तो फिर हम यहीं ठहर जायं.

पुरुष : कुछ समझ में नहीं आता कि क्या करें. यह लीला को भी आज ही कालिज में जाना था. न जाने किस वक़्त क्या हो जाय. अगर उसके आने से पहिले ही डाकुओं ने......

(दरवाज़े पर दस्तक)

पुरुष : (घबराहट से उछल कर) अरे, कौन आया. लीला की मां कहीं छिप जाओ जाओ जल्दी करो. हाए भगवान !

स्त्री : अरे इतना डरने से क्या होगा. ठहरो ज़रा देखने तो दो कौन आया है.

(दरवाज़े पर फिर दस्तक. दूर से लड़की की आवाज़)

लीला : अम्मी ! अम्मी ! दरवाज़ा खोलो.

स्त्री : लो, यह तो लीला है. आप वैसे ही डर रहे थे. अच्छा मैं दरवाज़ा खोलूं.

पुरुष : तो मुझे क्या पता था, डाकू कोई वक़्त बता कर थोड़े ही आते हैं.

(प्रवेश करके)

लीला : पिताजी, पिताजी, अम्मी कह रही हैं आपकी तबियत ठीक नहीं है. क्या हुआ आपको.

पुरुष : कुछ नहीं बेटा, यों ही ज़रा थकान हो रही है.

लीला : थकान वकान कुछ नहीं पिताजी. आपने अभी तक खाना नहीं भी नहीं खाया. उसी की कमज़ोरी होगी. आइए चलिये खाना खाएं. अम्मी, मुझे तो बड़ी भूक लग रही है. अच्छा है जादूगर का तमाशा ही जल्दी ख़तम हो गया. मुझे तो कोई ख़ास अच्छा भी नहीं लगा और आंतें वैसे ही सूखने लगीं. उठिये न पिताजी, आइये चलिये.

पुरुष : अच्छा बेटा चलता हूं. मगर आज भूक बिल्कुल नहीं लगी.

लीला : वाह, रोज़ तो आपको इतनी भूक लगती है कि आते ही शोर मचा देते हैं. आज क्या हो गया.

स्त्री : मेरा ख़याल है लीला को सारी बात बता देनी चाहिये. बड़ी हो गई है, कालिज में पढ़ती है. हो सकता है कोई अच्छी बात सुझा दे.

إستری : تو ہم ہی کیوں یہاں رہیں ۔ چلو گھر میں تالا لگاؤ اور سب رہو دیور جی کے یہاں ۔

پرش : بات تو کچھ جنچتی ہے ۔ اور پھر جو کچھ مال متال ہو وہ بھی لے چلو ۔ (کچھ سوچ کر) مگر سنا ہے یہ ڈاکو بڑے ویسے ہوتے ہیں ۔ اس دفعہ کچھ نہ ملا تو وہ پھر آئینگے ۔ اور اگر ہم کہیں چلے بھی جائیں تو اُن کی نظروں میں یہ اور بھی اِس بات کا ثبوت ہوگا کہ ہمارے پاس مال ہے، اور پھر تو وہ جہاں بھی ہم ہونگے وہیں ہم پر دھاوا بولیں گے ۔

إستری : تو پھر ہم یہیں ٹھہر جائیں ۔

پرش : کچھ سمجھ میں نہیں آتا کہ کیا کریں ۔ یہ لیلا کو بھی آج ہی کالج میں جانا تھا ۔ نہ جانے کس وقت کیا ہو جائے ۔ اگر اُس کے آنے سے پہلے ہی ڈاکوؤں نے......

(دروازے پر دستک)

پرش : (گھبراہٹ سے اچھل کر) ارے، کون آیا ۔ لیلا کی ماں کہیں چھپ جاؤ ۔ جاؤ جلدی کرو ۔ ہائے بھگوان !

إستری : ارے اِتنا ڈرنے سے کیا ہوگا ۔ ٹھہرو ذرا دیکھنے تو دو کون آیا ہے ۔

(دروازہ پر پھر دستک ۔ دور سے لڑکی کی آواز)

لیلا : امی ! امی ! دروازہ کھولو ۔

إستری : لو، یہ تو لیلا ہے ۔ آپ ویسے ہی ڈر رہے تھے ۔ اچھا میں دروازہ کھولوں ۔

پرش : تو مجھے کیا پتہ تھا، ڈاکو کوئی وقت بتا کر تھوڑے ہی آتے ہیں ۔

(پرویش کر کے)

لیلا : پتا جی، پتا جی، امی کہ رہی ہیں آپ کی طبیعت ٹھیک نہیں ہے ۔ کیا ہوا آپ کو ۔

پرش : کچھ نہیں بیٹا، یوں ہی ذرا تھکان ہو رہی ہے ۔

لیلا : تھکان وکان کچھ نہیں پتا جی ۔ آپ نے ابھی تک کھانا بھی نہیں کھایا ۔ اُسی کی کمزوری ہوگی ۔ آیئے چلئے کھانا کھائیں ۔ امی، مجھے تو بڑی بھوک لگ رہی ہے ۔ اچھا ہے جادوگر کا تماشا جلدی ہی ختم ہوگیا ۔ مجھے تو کوئی خاص اچھا بھی نہیں لگا اور آنتیں ویسی ہی سوکھنے لگیں ۔ اُٹھئے نہ پتا جی، آیئے چلئے ۔

پرش : اچھا بیٹا چلتا ہوں ۔ مگر آج بھوک بالکل نہیں لگی ۔

لیلا : واہ، روز تو آپ کو اتنی بھوک لگتی ہے کہ آتے ہی شور مچا دیتے ہیں ۔ آج کیا ہوگیا ۔

إستری : میرا خیال ہے لیلا کو ساری بات بتا دینی چاہئے ۔ بڑی ہوگئی ہے، کالج میں پڑھتی ہے ۔ ہو سکتا ہے کوئی اچھی بات سجھا دے ۔

पुरुष : यही तो मेरी समझ में भी नहीं आता. जितना सोचता हूं घबराहट बढ़ती जाती है क्योंकि विशम्भर कहता था कि यह मामला बिल्कुल सच है. वह लोग इसी तरह से डाका डालते हैं. मुझे तो पक्का यक़ीन है कि आज हमारे हां डाका पड़ेगा.

स्त्री : मगर क्यों पड़ेगा. यहां से डाकुओं को क्या मिलेगा.

पुरुष : मिलेगा या नहीं यह मैं नहीं जानता. मगर ख़ाली लिफ़ाफ़े की बात झूटी नहीं हो सकती. (और घबरा कर) लीला की मां, ज़रा मेरी नब्ज़ तो देखना. मेरा तो जी बहुत घबरा रहा है.

स्त्री : अरे तो आप घबराते क्यों हैं. घबराने से क्या काम चलेगा. लीजिये यहां पलंग पर लेट जाइये. हां बस. ज़रा चित्त को शान्त कीजिये. मैं ठंडा पानी लाती हूं.

(दरवाज़ा खुलने का शब्द)

पुरुष : हे भगवान. अब क्या होगा.

(दरवाज़ा बन्द होने का शब्द)

स्त्री : लीजिये, पानी पी लीजिये. तबियत संभल जाएगी.

(पानी पी कर कुछ इतमीनान से)

पुरुष : लीला की मां, अब देखो जो मैं कहूं वही करना होगा.

स्त्री : क्या करना होगा.

पुरुष : पहले तो किशोर और बिमल को यहां से फ़ौरन रवाना कर दो, इन दोनों को आज यहां नहीं सोना चाहिये. आज वह अपने चाचा के घर सो रहेंगे.

स्त्री : अच्छी बात है. अभी खाना खिला कर और कपड़े बदलवा कर भेजे देती हूं.

पुरुष : और हां लीला से यह बात बिल्कुल नहीं कहनी है. मेरा तो ख़याल है कि उसे भी किशोर और बिमल के साथ ही भेज देना चाहिये.

स्त्री : मगर वह तो बड़ी हो गई है. पूछेगी कि क्या बात है, उसे तो कुछ न कुछ बताना ही होगा.

पुरुष : अरे कुछ न कुछ बात सोच लेना उससे कहने के लिये. मगर उसे यहां एक पल भी नहीं रखना है. और हां, जो कुछ ज़ेवर गहना है, उसे फ़ौरन ही कहीं छुपा देना चाहिये. मेरे ख़याल में तो हम गोदाम के फ़र्श का पत्थर उठा कर उसे वहां गाड़ दें. शायद डाकुओं की नज़र चूक जाय.

स्त्री : और अगर नहीं चूकी तो. डाकू ऐसी बातें बड़ी जल्दी ताड़ लेते हैं.

पुरुष : अरे, नहीं चूकी तो ले जायंगे. बाबा और मनाना अगर हमें तुम्हें ज़िन्दा छोड़ जायें.

پرش : یہی تو میری سمجھ میں بھی نہیں آتا . جتنا سوچتا ہوں گھبراہٹ بڑھتی جاتی ہے کیونکہ بشمبھر کہتا تھا کہ یہ معاملہ بالکل سچ ہے . وہ لوگ اسی طرح سے ڈاکہ ڈالتے ہیں . مجھے تو پکا یقین ہے کہ آج ہمارے ہاں ڈاکہ پڑیگا .

استری : مگر کیوں پڑیگا . یہاں سے ڈاکوؤں کو کیا ملیگا .

پرش : ملیگا یا نہیں یہ میں نہیں جانتا . مگر خالی لفافے کی بات جھوٹی نہیں ہوسکتی . (اور گھبرا کر) لیلا کی ماں، ذرا میری نبض تو دیکھنا . میرا تو جی بہت گھبرا رہا ہے .

استری : ارے تو آپ گھبراتے کیوں ہیں . گھبرانے سے کیا کام چلیگا . لیجئے یہاں پلنگ پر لیٹ جائیے . ہاں بس . ذرا چت کو شانت کیجئے . میں ٹھنڈا پانی لاتی ہوں .

(دروازہ کھلنے کا شبد)

پرش : ہے بھگوان . اب کیا ہوگا .

(دروازہ بند ہونے کا شبد)

استری : لیجئے، پانی پی لیجئے . طبیعت سنبھل جائیگی .

(پانی پی کر کچھ اطمینان سے)

پرش : لیلا کی ماں، اب دیکھو جو میں کہوں وہی کرنا ہوگا .

استری : کیا کرنا ہوگا .

پرش : پہلے تو کشور اور بمل کو یہاں سے فوراً روانہ کر دو . اِن دونوں کو آج یہاں نہیں سونا چاہئے . آج یہ اپنے چاچا کے گھر سو رہیں گے .

استری : اچھی بات ہے . ابھی کھانا کھلا کر اور کپڑے بدلوا کر بھیجے دیتی ہوں .

پرش : اور ہاں لیلا سے یہ بات بالکل نہیں کہنی ہے . میرا تو خیال ہے کہ اُسے بھی کشور اور بمل کے ساتھ ہی بھیج دینا چاہئے .

استری : مگر وہ تو بڑی ہو گئی ہے . پوچھیگی کہ کیا بات ہے، اُسے تو کچھ نہ کچھ بتانا ہی ہوگا .

پرش : ارے کچھ نہ کچھ بات سوچ لینا اُس سے کہنے کے لئے . مگر اُسے یہاں ایک پل بھی نہیں رکھنا ہے . اور ہاں، جو کچھ زیور گہنا ہے، اُسے فوراً ہی کہیں چھپا دینا چاہئے . میرے خیال میں تو ہم گودام کے فرش کا پتھر اُٹھا کر اُسے وہاں گاڑ دیں . شاید ڈاکوؤں کی نظر چوک جائے .

استری : اور اگر نہیں چوکی تو . ڈاکو ایسی باتیں بڑی جلدی تاڑ لیتے ہیں .

پرش : ارے، نہیں چوکی تو لے جائیں گے . بابا اور منانا اگر ہمیں تمہیں زندہ چھوڑ جائیں .

किशोर : (कुछ अचरज से) पिताजी, इस में तो चिट्ठी मालूम नहीं होती.

पुरुश : (घबरा कर) क्या कहा. क्या कहते हो किशोर. चिट्ठी मालूम नहीं होती. लिफाफा खाली है.

किशोर : हां पिताजी, बिल्कुल खाली.

पुरुश : (घबराहट बढ़ गई) लाओ मुझे दिखाओ.

(काग़ज़ फड़फड़ाने का शब्द)

लिफ़ाफ़ा वाक़ई खाली है. ग़ज़ब हो गया.

स्त्री : (कुछ अचम्भे से) क्यों क्या हो गया ?

पुरुश : कुछ नहीं यों ही. तुम बच्चों को खाना खिलाओ, फिर मेरे पास आना.

स्त्री : क्या बात है. आप एक दम घबरा क्यों उठे.

पुरुश : (बहुत दुखी और अनमना) कुछ नहीं लीला की मां, यूं ही कुछ तबियत ख़राब हो रही है. इस वक़्त मैं खाना नहीं ख़ाऊंगा.

स्त्री : यह एक दम आपको क्या हो गया. अभी तो आप खाने को तैयार थे. आख़िर मैं भी तो जानूं कि यह माजरा क्या है. बेटा किशोर तुम अभी जाओ. अभी थोड़ी देर में खाना लग जायगा तो बुला लूंगी.

(किवाड़ का बन्द करना)

हां, तो बताओ क्या बात है.

पुरुश : (बिल्कुल हताश) क्या बताऊं, लीला की मां. तुम ने भी तो अपनी आंखों से देखा है कि लिफ़ाफ़ा ख़ाली था. उसमें कुछ नहीं था.

स्त्री : तो क्या हुआ. भेजने वाला उसमें चिट्ठी रखना भूल गया होगा. और यूं हीं लिफ़ाफ़ा बन्द कर के डाक में डाल दिया होगा. ऐसी ग़लतियां अकसर हो जाती हैं.

पुरुश : नहीं लीला की मां, यह बात नहीं हैं. यह ख़ाली लिफ़ाफ़ा बड़े मानी रखता है. बिशम्भर कल ही बता रहा था कि कुछ दिन हुए, उसने अख़बार में पढ़ा था कि डाकुओं ने डाका डालने का एक अजीब तरीक़ा निकाला है. वह किसी पैसे वाले के हां ख़ाली चिट्ठी भेज देते हैं और उसी दिन उसके हां डाका पड़ जाता है. अब तक ऐसी तीन वारदातें हो चुकी हैं.

स्त्री : मगर हमारे घर में कोई क्यों डाका डालेगा हम कैसे पैसे वालों में शुमार होने लगे अरे यहां तो यह हाल है कि महीने के दो दिन बीते हैं और तनखा ख़तम. ज़ेवर भी होंगे तो सौ दो सौ से ज़ियादा के न निकलेंगे. हमारे घर में डाका डालने की किसी को कैसे सूझ सकती है.

کشور : (کچھ اچرج سے) پتاجی، اس میں تو چٹھی معلوم نہیں ہوتی .

پرش : (گھبرا کر) کیا کہا. کیا کہتے ہو کشور، چٹھی معلوم نہیں ہوتی . لفافہ خالی ہے .

کشور : ہاں، پتا جی، بالکل خالی .

پرش : (گھبراہٹ بڑھ گئی) لاؤ مجھے دکھاؤ .

(کاغذ پھڑپھڑانے کا شبد)

لفافہ واقعی خالی ہے . غضب ہوگیا .

اِستری : (کچھ اچمبھے سے) کیوں کیا ہوگیا ؟

پرش : کچھ نہیں یوں ہی . تم بچوں کو کھانا کھلاؤ، پھر میرے پاس آنا .

اِستری : کیا بات ہے . آپ ایک دم گھبرا کیوں اٹھے .

پرش : (بہت دکھی اور انملا) کچھ نہیں لیلا کی ماں، یوں ہی کچھ طبیعت خراب ہو رہی ہے . اس وقت میں کھانا نہیں کھاؤنگا .

اِستری : یہ ایک دم آپ کو کیا ہوگیا. ابھی تو آپ کھانے کو تیار تھے . آخر میں بھی تو جانوں کہ یہ ماجرا کیا ہے . بیٹا کشور تم ابھی جاؤ . ابھی تھوڑی دیر میں کھانا لگ جائیگا تو بلا لونگی .

(کواڑ کا بند کرنا)

ہاں، تو بتاؤ کیا بات ہے .

پرش : (بالکل ہتاش) کیا بتاؤں، لیلا کی ماں، تم نے بھی تو اپنی آنکھوں سے دیکھا ہے کہ لفافہ خالی تھا . اُس میں کچھ نہیں تھا .

اِستری : تو کیا ہوا . بھیجنے والا اُس میں چٹھی رکھنا بھول گیا ہوگا . اور یوں ہی لفافہ بند کرکے ڈاک میں ڈال دیا ہوگا . ایسی غلطیاں اکثر ہو جاتی ہیں .

پرش : نہیں لیلا کی ماں، یہ بات نہیں ہے . یہ خالی لفافہ بڑے معنی رکھتا ہے . بشمبھر کل ہی بتا رہا تھا کہ کچھ دن ہوئے، اُس نے اخبار میں پڑھا تھا کہ ڈاکوؤں نے ڈاکہ ڈالنے کا ایک عجیب طریقہ نکالا ہے . وہ کسی پیسے والے کے ہاں خالی چٹھی بھیج دیتے ہیں اور اُسی دن اُس کے ہاں ڈاکہ پڑ جاتا ہے . اب تک ایسی تین وارداتیں ہو چکی ہیں .

اِستری : مگر ہمارے گھر میں کوئی کیوں ڈاکہ ڈالیگا . ہم کیسے پیسے والوں میں شمار ہونے لگے . ارے یہاں تو یہ حال ہے کہ مہینے کے دو دن بیتے ہیں اور تنخواہ ختم. زیور بھی ہونگے تو سو دو سو سے زیادہ کے نہ نکلینگے. ہمارے گھر میں ڈاکہ ڈالنے کی کسی کو کیسے سوجھ سکتی ہے .

खाली लिफ़ाफ़ा

(यह रेडियाई ड्रामा 31 जुलाई, 1952 को इलाहाबाद रेडियो स्टेशन से प्रसारित हो चुका है)

पात्र

पुरुष	40 बरस
स्त्री	35 "
लीला	16 "
किशोर	10 "

(दरवाज़े पर दस्तक दो बार)

पुरुष : अरे भई दरवाज़ा खोलो.

स्त्री : (दूर से) अभी आई (दरवाज़ा खुलने का शब्द) आज बड़ी देर हो गई ?

पुरुष : हां ज़रा, काम हो गया था. क्यों लीला कहां है ?

स्त्री : वह तो कालिज गई है.

पुरुष : कालिज ? रात में कालिज कैसा ?

स्त्री : कहती थी अमरीका का कोई जादूगर आया है, तमाशा दिखाएगा.

पुरुष : कब तक लौटने को कह गई है ?

स्त्री : यही ग्यारह बारह तक आने को कह गई है.

पुरुष : (कुछ रुक कर) अच्छा ! तब खाने के लिये उस का इन्तज़ार करना तो फ़िज़ूल है. किशोर और विमल कहां हैं.

स्त्री : वह तो यहीं हैं. तो खाना लगाऊं.

पुरुष : हां हां लगाओ, मैं ज़रा कपड़े उतार लूं.

(पिता को आया सुन भाग कर आन कर)

किशोर : पिता जी, पिता जी.

पुरुष : क्यों ! क्या है किशोर !

किशोर : पिता जी, आपकी एक चिट्ठी आई है !

पुरुष : (अचम्भे से) मेरी चिट्ठी.

किशोर : हां पिता जी, आपकी.

पुरुष : भई मेरी चिट्ठी कहां से आ सकती है. मैंने किसी को कोई ख़त नहीं लिखा. मेरे दोस्त भी कोई ऐसे नहीं हैं जो मुझे चिट्ठियां लिखते हों. फिर यह चिट्ठी कैसी !

स्त्री : अरे, तो आप खोल कर देख क्यों नहीं लेते कि किस की चिट्ठी है.

पुरुष : हां, लाना तो चिट्ठी किशोर.

किशोर : लीजिये पिता जी, यह है चिट्ठी. लाइए मैं [illegible] हूं.

(लिफ़ाफ़ा फाड़ने का शब्द फिर कुछ देर टटोलने का शब्द जैसे लिफ़ाफ़े में चिट्ठी खोज रहा हो और वह मिल न रही हो)

पुरुष : निकालो जी, चिट्ठी जल्दी निकालो.

خالی لفافہ

(یہ ریڈیائی ڈرامہ 31 جولائی 1952 کو الہ آباد ریڈیو اسٹیشن سے پرسارت ہو چکا ہے)

پاتر

پرش	40 برس
اِسکتری	35 "
لیلا	16 "
کشور	10 "

(دروازے پر دستک دو بار)

پرش : ارے بھئی دروازہ کھولو .

اِسکتری : (دور سے) ابھی آئی (دروازہ کھلنے کا شبد) آج بڑی دیر ہوگئی ؟

پرش : ہاں' ذرا کام ہوگیا تھا . کیوں لیلا کہاں ہے ؟

اِسکتری : وہ تو کالج گئی ہے .

پرش : کالج ؟ رات میں کالج کیسا ؟

اِسکتری : کہتی تھی امریکہ کا کوئی جادوگر آیا ہے' تماشے دکھائیگا .

پرش : کب تک لوٹنے کو کہہ گئی ہے ؟

اِسکتری : یہی گیارہ بارہ تک آنے کو کہہ گئی ہے .

پرش : (کچھ رک کر) اچھا ! تب کھانے کے لئے اُس کا انتظار کرنا تو فضول ہے . کشور اور بمل کہاں ہیں .

اِسکتری : وہ تو یہیں ہیں . تو کھانا لگاؤں .

پرش : ہاں ہاں' لگاؤ' میں ذرا کپڑے اُتار لوں .

(پتا کو آیا سن بھاگ کر آن کر)

کشور : پتاجی' پتا جی .

پرش : کیوں ! کیا ہے کشور !

کشور : پتا جی' آپ کی ایک چٹھی آئی ہے .

پرش : (اچمبھے سے) میری چٹھی .

کشور : ہاں پتا جی' آپ کی .

پرش : بھئی میری چٹھی کہاں سے آ سکتی ہے . میں نے کسی کو کوئی خط نہیں لکھا . میرے دوست بھی کوئی ایسے نہیں ہیں جو مجھے چٹھیاں لکھتے ہوں . پھر چٹھی کیسی .

اِسکتری : ارے' تو آپ کھول کر دیکھ کیوں نہیں لیتے کہ کس کی چٹھی ہے .

پرش : ہاں' لانا تو چٹھی کشور .

کشور : لیجئے پتا جی' یہ ہے چٹھی . لائیے میں کھول دوں .

(لفافہ پھاڑنے کا شبد پھر کچھ دیر ٹٹولنے کا شبد جیسے لفافے میں چٹھی کھوج رہا ہو اور وہ نہ مل رہی ہو)

پرش : نکالو جی' چٹھی جلدی نکالو .

अन्दर अपने रब को देखती हैं, वह इश्क़ यानी प्रेम में नहाती हैं, और प्रेम ही बनता है."

हिन्दू धर्म में जिन तीन गुणों को सत, आनन्द और चित नाम दिया गया है उन्हीं को इसलाम में वजूद, शुहूद और इल्म कहा गया है. सत, आनन्द और चित तीनों चैतन्य में जा मिलते हैं. इसलाम में चैतन्य को नूर कहा गया है वही 'परम ज्योति' या 'नूर क़ाहिर' भी है. इसी नूर से सारा जहान रौशन है. चीनी ताओ धर्म में इन तीनों का नाम शिंग, चीह और ची है. यही ब्रह्मा, शिव और विष्णु हैं. यही अल मालिक, अल रज़्ज़ाक़ और अल अलीम हैं. इसी तरह यहूदी, ईसाई, बौद्ध और पारसी धर्मों में भी इनके अलग अलग नाम हैं. इनके अलावा हिन्दू धर्म में विष्णु के हज़ार नाम हैं. क़ुरान में अल्लाह के सौ बड़े नाम गिनाए गए हैं. इसी तरह और धर्मों में.

नामों से हट कर जिन रूपों में वह बे नाम और बे रूप अपने को ज़ाहिर करता है वह भी अनन्त और बे शुमार हैं. ऊपर कहा जा चुका है कि पहुँची हुई रूहें भी अवतारों, मसीहों और रसूलों के रूप में सब प्राणियों के भले के लिये जन्म लेती रहती हैं.

महाभारत में कृष्ण ने कहा है :—

दास्यम् ऐश्वर्य वादेन ज्ञातीनाम् तु करोमि-अहम

यानी—सब का ईश्वर होते हुए भी मैं सब प्रानियों के लिये दास यानी ग़ुलाम का काम करता हूँ.

यही बात सूफ़ी ने इन शब्दों में कही है :—

"कसे मर्दे तमाम अस्त अज़ तमामी
कुनद, बा ख़्वाजगी कारे ग़ुलामी"

यानी—जो मर्दे कामिल है वह अपने कामिल होने ही की वजह से सब का मालिक होते हुए सब की ग़ुलामी यानी ख़िदमत करता है.

मोहम्मद साहब की एक हदीस है :—

"सय्यदुल क़ौम ख़ादिम हुम"

यानी - जो क़ौम का लीडर है वही क़ौम का सब से बड़ा ख़ादिम है. सूफ़ी ने कहा है :—

"आं कि ख़िदमत कर्दऊ मख़दूम शुद
आं कि ख़ुदरा दीदऊ महरूम शुद"

यानी—जिस किसी ने ख़िदमत यानी सेवा की वह मख़दूम यानी मालिक बन गया. और जिसने केवल अपनी तरफ़ देखा वह अलग उठा कर फेंक दिया गया.

इंजील में लिखा है :—

"तुम में जो सब से बड़ा है वही तुम्हारा सेवक होगा."

सोच समझ कर सब से अच्छा सेवक वही बन सकता है जो सब से ज़ियादा आज़ाद हो, और यह वही हो सकता है जिसने पूरी तरह इस बात को देख लिया, जान लिया और समझ लिया हो कि एक ही आत्मा हम सब के अन्दर काम कर रही है. यही सब मज़हबों के अन्दर ज़िन्दगी का आख़िरी मक़सद है. यही ईश्वर अल्लाह को पाना है.

اندر اپنے رب کو دیکھتی ہیں، وہ عشق یعنی پریم میں نہاتی ہیں اور پریم ہی بنتی ہے."

ہندو دھرم میں جن تین گنوں کو ست، آنند اور چت نام دیا گیا ہے انہیں کو اسلام میں وجود، شہود اور علم کہا گیا ہے. ست، آنند اور چت تینوں چیتنیہ میں جا ملتے ہیں. اسلام میں چیتنیہ کو نور کہا گیا ہے. وہی 'پرم جیوتی' یا 'نور قاہر' بھی ہے. اسی نور سے سارا جہان روشن ہے. چینی تاؤ دھرم میں ان تینوں کا نام شنگ، چیہ اور چی ہے. یہی برہما، شیو اور وشنو ہیں. یہی المالک، الرزاق اور العلیم ہیں. اسی طرح یہودی، عیسائی، بودھ اور پارسی دھرموں میں بھی ان کے الگ الگ نام ہیں. ان کے علاوہ ہندو دھرم میں وشنو کے ہزار نام ہیں. قرآن میں اللہ کے سو بڑے نام گنائے گئے ہیں. اسی طرح اور دھرموں میں.

ناموں سے ہٹ کر جن روپوں میں وہ بے نام اور بے روپ اپنے کو ظاہر کرتا ہے وہ بھی اننت اور بے شمار ہیں. اوپر کہا جا چکا ہے کہ پہونچی ہوئی روحیں بھی اوتاروں، مسیحوں اور رسولوں کے روپ میں سب پرانیوں کے بھلے کے لئے جنم لیتی رہتی ہیں.

مہا بھارت میں کرشن نے کہا ہے :—

داسیم ایشوریہ وادین گیاتی نام تو کرومیہم

یعنی—سب کا ایشور ہوتے ہوئے بھی میں سب پرانیوں کے لئے داس یعنی غلام کا کام کرتا ہوں.

یہی بات صوفی نے ان شبدوں میں کہی ہے :—

"کسے مرد تمام است از تمامی
کند با خواجگی کار غلامی"

یعنی—جو مرد کامل ہے وہ اپنے کامل ہونے ہی کی وجہ سے سب کا مالک ہوتے ہوئے سب کی غلامی یعنی خدمت کرتا ہے.

محمد صاحب کی ایک حدیث ہے :—

"سیدالقوم خادم ہم"

یعنی—جو قوم کا لیڈر ہے وہی ہے قوم کا سب سے بڑا خادم ہے.

صوفی نے کہا ہے :—

"آں کہ خدمت کرد او مخدوم شد
آں کہ خود را دید او محروم شد"

یعنی—جس کسی نے خدمت یعنی سیوا کی وہ مخدوم یعنی مالک بن گیا. اور جس نے کیول اپنی طرف دیکھا وہ الگ اٹھا کر پھینک دیا گیا.

انجیل میں لکھا ہے :—

"تم میں جو سب سے بڑا ہے وہی تمہارا سیوک ہوگا."

سوچ سمجھ کر سب سے اچھا سیوک وہی بن سکتا ہے جو سب سے زیادہ آزاد ہو، اور یہ وہی ہو سکتا ہے جس نے پوری طرح اس بات کو دیکھ لیا، جان لیا اور سمجھ لیا ہو کہ ایک ہی آتما ہم سب کے اندر کام کر رہی ہے. یہی سب مذہبوں کے اندر زندگی کا آخری مقصد ہے. یہی ایشور اللہ کو پانا ہے.

सूफ़ी कहता है :—

"जो दुनिया से बेहोश नहीं है वह इस होश के राज़ को नहीं जान सकता. सिवाय बे ज़बान कान के और कोई ज़बान की बात नहीं सुन सकता. जो जाग रहा है वह असलियत में ख़्वाब की हालत में है, उसका जागना उसके सोने से बदतर है, और जो इस दुनिया की तरफ़ से सोया हुआ है वही असल में जागता है. उसकी ग़फ़लत ही ऐन होशियारी है."

एक और सूफ़ी ने कहा है :—

"अयां ऐसा कि हर शै में निहां है.
निहां ऐसा कि हर शै में अयां है"

यानी—वह असल हक़ीक़त इस क़दर खुली है कि हर चीज़ के अन्दर छिपी हुई है, और इतनी छिपी हुई है कि हर चीज़ के अन्दर से चमक रही है.

हर खोजी के दिल में बार बार सवालों और शकों का पैदा होना क़ुदरती और लाज़मी है, चाहे वह किसी भी धर्म का मानने वाला क्यों न हो. यह सवाल और शक लम्बे ज़िक्र, फ़िक्र, ध्यान और मनन से ही हल हो सकते हैं.

एक पुरानी चीनी कहावत है :—

"दिल में उम्मीद लिये सफ़र करना मंज़िल पर पहुँच जाने से कहीं अच्छा है."

शेख़ सादी ने 'मामुक़ीमां' में कहा है :—

"जो जहान में हमेशा हर जगह ज़ाहिर हो रहा है, वह मेरी आंखों में नहीं समाता ! जिसकी कहीं कोई जगह नहीं है, मैं हैरान हूं कि वह हर वक़्त हर जगह मौजूद है ! अन्दर और बाहर, आगे और पीछे, दाएं और बाएं, नीचे और ऊपर ! वह दुई के लिबास में नहीं समाता, चूंकि वह अपनी यकताई के लिये मशहूर है. रात को एक कहने वाले ने दर्द भरे दिल से और प्रेम में भर कर मुझ से कहा,—ऐ आदमी ! दिल की आंखों से किसी को भी सिवाय दोस्त के और कुछ मत देख, यह जान ले कि जो कुछ तू देखता है सब उसी प्रीतम का ज़हूर है !"

इस सवाल का जवाब भी कि जो परिपूर्ण है उसमें इच्छा क्यों और कैसे पैदा हुई और 'अहद', 'ब्रह्म' से 'ख़ालिक़', 'ब्रह्मा' कैसे बन गया अपने अन्दर में सोचने से ही मिल सकता है. उपनिषदों में इसे इशारों में बयान किया गया है. मोहम्मद साहब की एक हदीस है :—

"ऐ नफ़्से मुतमइन्ना ! यानी ऐ वह रूह जिसे अल्लाह में इतमिनान हासिल हो गया है ! अपने रब की तरफ़ मुड़, वह तुझसे ख़ुश और तू उससे ख़ुश. फिर अल्लाह के इन बन्दों में जा कर मिल. जन्नत में दाख़िल हो ! जो रूहें सब के अन्दर मौजूद उस अल्लाह को नहीं देखतीं वह एक दूसरे से लड़ती झगड़ती हैं. और जो रूहें एक दूसरे के

صوفی کہتا ہے :—

"جو دنیا سے بےہوش نہیں ہے وہ اس ہوش کے راز کو نہیں جان سکتا ۔ سوائے بےزبان کان کے اور کوئی زبان کی بات نہیں سن سکتا ۔ جو جاگ رہا ہے وہ اصلیت میں خواب کی حالت میں ہے، اس کا جاگنا اس کے سونے سے بدتر ہے، اور جو اس دنیا کی طرف سے سویا ہوا ہے وہی اصل میں جاگتا ہے ۔ اس کی غفلت ہی عین ہوشیاری ہے ۔

ایک اور صوفی نے کہا ہے :—

"عیاں ایسا کہ ہر شے میں نہاں ہے
نہاں ایسا کہ ہر شے میں عیاں ہے"

یعنی—وہ اصل حقیقت اس قدر کھلی ہے کہ ہر چیز کے اندر چھپی ہوئی ہے، اور اتنی چھپی ہوئی ہے کہ ہر چیز کے اندر سے چمک رہی ہے ۔

ہر کھوجی کے دل میں بار بار سوالوں اور شکوں کا پیدا ہونا قدرتی اور لازمی ہے، چاہے وہ کسی بھی دھرم کا ماننے والا کیوں نہ ہو ۔ یہ سوال اور شک لمبے ذکر، فکر، دھیان اور منن سے ہی حل ہو سکتے ہیں ۔

ایک پرانی چینی کہاوت ہے :—

"دل میں امید لئے سفر کرنا منزل پر پہنچ جانے سے کہیں اچھا ہے ۔"

شیخ سعدی نے 'مامقیماں' میں کہا ہے :—

"جو جہان میں ہمیشہ ہر جگہ ظاہر ہو رہا ہے، وہ میری آنکھوں میں نہیں سماتا ! جس کی کہیں کوئی جگہ نہیں ہے، میں حیران ہوں کہ وہ ہر وقت ہر جگہ موجود ہے ! اندر اور باہر، آگے اور پیچھے، دائیں اور بائیں، نیچے اور اوپر ! وہ دوئی کے لباس میں نہیں سماتا، چونکہ وہ اپنی یکتائی کے لئے مشہور ہے ۔ رات کو ایک کہنے والے نے درد بھرے دل سے اور پریم میں بھر کر مجھ سے کہا—اے آدمی ! دل کی آنکھوں سے کسی کو بھی سوائے دوست کے اور کچھ مت دیکھ، یہ جان لے کہ جو کچھ تو دیکھتا ہے سب اسی پریتم کا ظہور ہے !"

اس سوال کا جواب بھی کہ جو پری پورن ہے اس میں اچھا کیوں اور کیسے پیدا ہوئی اور 'احد' 'برہم' سے 'خالق' 'برہما' کیسے بن گیا اپنے اندر میں سوچنے سے ہی مل سکتا ہے ۔ اپنشدوں میں اسے اشاروں میں بیان کیا گیا ہے ۔ محمد صاحب کی ایک حدیث ہے :—

"اے نفس مطمئنہ ! یعنی اے وہ روح جسے اللہ میں اطمینان حاصل ہو گیا ہے ! اپنے رب کی طرف مڑ، وہ تجھ سے خوش اور تو اس سے خوش ۔ پھر اللہ کے ان بندوں میں جا کر مل ۔ جنت میں داخل ہو ! جو روحیں سب کے اندر موجود اس اللہ کو نہیں دیکھتیں، وہ ایک دوسرے سے لڑتی جھگڑتی ہیں ۔ اور جو روحیں ایک دوسرے کے

'जीवन मुक्त' या 'इनसाने कामिल' होने के लिये बुराई से भलाई की तरफ़ और ना समझी से सच्ची समझ की तरफ़ जाना है. तभी वह अपने खोए हुए बल्कि भूले हुए अमरत्व यानी अबदी ज़िन्दगी को फिर से हासिल कर सकता है.

सब मज़हब हमें यही बताते हैं कि यह जगत 'असत' यानी 'अदम' है, मायाहै, लीला है, क्रीड़ा है, सपना है, नश्वर है, फ़साना है, फ़ितना है, जाल है, ख़याल है और बातिल यानी झूट है. दुनिया की ठोस ठोस चीज़ें देख कर कम समझ आदमी के लिये इस बात को समझना मुशकिल हो जाता है. पर यह सब ठोस समझी जाने वाली चीज़ें पल पल पर बदल रही हैं. जो बदलता है उसका वजूद ज़ाहिर है आरज़ी ही हो सकता है. नित्य और टिकाऊ केवल वही आत्मा है जो दुनिया के इस बदलते रहने को देखता और समझता है.

इस बारे में मोहम्मद साहब की कुछ हदीसें नीचे दी जाती हैं :—

"जो इन सब चीज़ों की असलियत है वही टिकने वाली चीज़ है, और बाक़ी यह सब आलम फ़ाना यानी नाशमान है

'यह सारी दुनिया महज़ एक ख़याल है—यह उसका ख़याल है जो ख़ुद ही अकेला हक़ीक़त है."

"दुनिया में जितने लोग हैं वह सब एक सपना देख रहे हैं, जब वह मरेंगे तब इस सपने से जागेंगे."

"सिवाय अल्लाह के बाक़ी सब चीज़ें बातिल यानी झूट हैं.'

क़ुरान की एक आयत है :—

"सिवाय उस अल्लाह के दीदार के बाक़ी सब चीज़ें नाश होने वाली हैं."

इस झूट, इस माया और इस धोके को जो चीज़ क़ायम रखे हुए है वह है तृष्णा, वासना, काम संकल्प और अविद्या. इन ही चारों को हिर्स, हवस, आरज़ू और ख़याल कहते हैं.

सूफ़ी कहता है :—

"यह सब एक जाल है, आरज़ू यानी इच्छा इस जाल के अन्दर का दाना है. इसलिये जितनी जल्दी तुझ से हो सके तू आरज़ू यानी हिर्स के इस जाल से निकल जा."

महाभारत में लिखा है :—

'यह सारा जगत ख़याल का बना हुआ है. जो इस सचाई को नहीं समझता उसके कामों का ठीक ठीक नतीजा पैदा नहीं हो सकता."

गीता में लिखा है :—

"सब प्राणियों के लिये जो रात है अपने को बस में रखने वाले आदमी के लिये वही जागने की चीज़ है. और जिस चीज़ की तरफ़ से और सब प्राणी जागे हुए हैं, देखने वाले मुनी के लिये वह सोने की रात है."

' جیون مکت ' یا ' انسانِ کامل ' ہونے کے لئے برائی سے بھلائی کی طرف اور نا سمجھی سے سچی سمجھ کی طرف جانا ہے . تبھی وہ اپنے کھوئے ہوئے بلکہ بھولے ہوئے امرتو یعنی ابدی زندگی کو پھر سے حاصل کر سکتا ہے .

سب مذہب ہمیں یہی بتاتے ہیں کہ یہ جگت ' اسَت ' یعنی ' عدم ' ہے ' مایا ہے ' لیلا ہے ' کریڑا ہے ' سپنا ہے ' نشور ہے ' فسانہ ہے ' فتنہ ہے ' جال ہے ' خیال ہے اور باطل یعنی جھوٹ ہے . دنیا کی ٹھوس ٹھوس چیزیں دیکھکر کم سمجھ آدمی کے لئے اس بات کو سمجھنا مشکل ہو جاتا ہے . پر یہ سب ٹھوس سمجھی جانے والی چیزیں پل پل پر بدل رہی ہیں . جو بدلتا ہے اس کا وجود ظاہر ہے عارضی ہی ہو سکتا ہے . نتیہ اور ٹکاؤ کیول وہی آتما ہے جو دنیا کے اس بدلتے رہنے کو دیکھتا اور سمجھتا ہے .

اس بارے میں محمد صاحب کی کچھ حدیثیں نیچے دی جاتی ہیں :—

' جو ان سب چیزوں کی اصلیت ہے وہی ٹکنے والی چیز ہے ' اور باقی یہ سب عالم فانی یعنی ناش مان ہے "

" یہ ساری دنیا محض ایک خیال ہے — یہ اس کا خیال ہے جو خود ہی اکیلا حقیقت ہے ."

' دنیا میں جتنے لوگ ہیں وہ سب ایک سپنا دیکھ رہے ہیں ' جب وہ مرینگے تب اس سپنے سے جاگینگے ."

" سوائے اللہ کے باقی سب چیزیں باطل یعنی جھوٹ ہیں ."

قرآن کی ایک آیت ہے : —

" سوائے اس اللہ کے دیدار کے باقی سب چیزیں ناش ہونے والی ہیں ."

اس جھوٹ ' اس مایا اور اس دھوکے کو جو چیز قائم رکھے ہوئے ہے وہ ہے ترشنا ' واسنا ' کام سنکلپ اور اودیا . ان ہی چاروں کو حرص ' ہوس ' آرزو اور خیال کہتے ہیں .

صوفی کہتا ہے :—

" یہ سب ایک جال ہے آرزو یعنی اچھا اس جال کے اندر کا دانہ ہے . اس لئے جتنی جلدی تجھ سے ہو سکے تو آرزو یعنی حرص کے اس جال سے نکل جا ."

مہابھارت میں لکھا ہے :—

" یہ سارا جگت خیال کا بنا ہوا ہے . جو اس سچائی کو نہیں سمجھتا اس کے کاموں کا ٹھیک ٹھیک نتیجہ پیدا نہیں ہوسکتا ."

گیتا میں لکھا ہے :—

" سب پرانیوں کے لئے جو رات ہے اپنے کو بس میں رکھنے والے آدمی کے لئے وہی جاگنے کی چیز ہے ' اور جس چیز کی طرف سے اور پرانی جاگے ہوئے ہیں دیکھنے والے منی کے لئے وہ سونے کی رات ہے ."

जोहर में लिखा है :—

"अल्लाह 'अन-सोफ़' यानी अनन्त है वह सब प्राणियों और सब गुणों से ऊपर है. जब यह चीज़ें हट जाती हैं तो न कोई गुण रह जाता है न कोई रूप. उसे केवल 'यह भी नहीं' 'यह भी नहीं' कह कर ही बयान किया जा सकता है. हम यह नहीं बता सकते कि अल्लाह क्या है हम केवल यह बता सकते हैं कि वह क्या नहीं है. दुनिया उसी से निकली है. इसके लिये उस अनन्त में कुछ गुण या सिफ़तें भी आ गई. गुण या सिफ़तें कोई अनन्त नहीं हो सकतीं. उनका असल वजूद कुछ नहीं. इसी से दुनिया में अंधेरा और बुराई पैदा हुए. यह वह परदे हैं जो सचाई को ढके रखते हैं. दुनिया में जो कुछ बुराई है वह धोका यानी माया है, फ़रेब है, पर कुछ नहीं. आदमी का फ़र्ज़ है कि उस अनन्त के साथ फिर से मिलने की कोशिश करे अनन्त को छोड़ कर आदमी का महदूद यानी असत्य चीज़ों की तरफ़ जाना ही बुराई है. असलियत की खोज में चलकर ही आदमी असलियत तक पहुंच सकता है. वही उसका घर है, वही उसकी असल है."

ऊपर जो इबरानी भाषा का शब्द 'अन-सोफ़' आया है वह शायद अरबी 'ऐनसूफ़' (सीन के साथ), या 'ऐन साफ़' (स्वाद के साथ) पढ़ा जाय तो उसके मानी वही होंगे जो संस्कृत में "शुद्ध चैतन्य" के हैं.

मिस्र में एक कहावत मशहूर है जिसका मतलब है :—
"मैं तुम से साफ़ कहता हूँ कि तुम्हारे दिमाग़ में जो कुछ भी ख़याल आ सकता है अल्लाह वह नहीं है."

दुनिया के प्रेमी राह दिखाने वाले हमें यही बताते रहे हैं कि बुराई का अपना कोई वजूद नहीं. दुनिया के दुख दर्द सब सपने की तरह आते जाते हैं. धीरे धीरे खोजी आत्मा को पता चलता है कि जिस तरह बुराई और दुख कोई चीज़ नहीं उसी तरह दुनिया की भलाई और सुख भी कोई चीज़ नहीं. यहां की भलाई केवल यहां की बुराई के मुक़ाबले में वजूद रखती है. ऐसे ही यहां के सुख केवल यहां के दुखों के मुक़ाबले में अपना वजूद रखते हैं. संसार की इस लीला में खोजी का फ़र्ज़ भलाई की तरफ़ रहना है. पर अन्त में उस अनन्त से मिलने का सुख कुछ और ही है. वह इन सब सुख दुखों से ऊपर है. वहां न बुराई रहती है और न भलाई. जल्दी या देर में सब को उसी रास्ते पर चलना है. वही परमानन्द है.

इंजील में लिखा है :—

"वह अकेला है. उसका कोई दूसरा नहीं. उसके न कोई बच्चा है न भाई."

भलाई भलाई है. बुराई बुराई है. समझ समझ है. ना समझी नासमझी है. पर यह सब एक ही नाटक के खेल हैं. पर आत्मा को फिर से 'ख़ुदा का बेटा' बनने के लिये,

زہر میں لکھا ہے :—

"اللہ 'ان سوف' یعنی اننت ہے . وہ سب پرانیوں اور سب گنوں سے اوپر ہے . جب یہ چیزیں ہٹ جاتی ہیں تو نہ کوئی گن رہ جاتا ہے نہ کوئی روپ . اُسے کیول 'یہ بھی نہیں' 'یہ بھی نہیں' کہہ کر ہی بیان کیا جا سکتا ہے ہم یہ نہیں بتا سکتے کہ اللہ کیا ہے. ہم کیول یہ بتا سکتے ہیں کہ وہ کیا نہیں ہے . دنیا اسی سے نکلی ہے . اِس کے لئے اس اننت میں کچھ گن یا صفتیں بھی آ گئیں . گن یا صفتیں کوئی اننت نہیں ہوسکتیں. اُن کا اصل وجود کچھ نہیں . اِسی سے دنیا میں اندھیرا اور برائی پیدا ہوئے . یہ وہ پردے ہیں جو سچائی کو ڈھکے رکھتے ہیں . دنیا میں جو کچھ برائی ہے وہ دھوکہ یعنی مایا ہے' فریب ہے' پر کچھ نہیں . آدمی کا فرض ہے کہ اُس اننت کے ساتھ پھر سے ملنے کی کوشش کرے . اننت کو چھوڑ کر آدمی کا محدود یعنی اسکتیہ چیزوں کی طرف جانا ہی برائی ہے . اصلیت کی کھوج میں چل کر ہی آدمی اصلیت تک پہونچ سکتا ہے . وہی اُس کا گھر ہے' وہی اُس کی اصل ہے ."

اوپر جو ایرانی بھاشا کا شبد 'ان سوف' آیا ہے وہ شاید عربی 'عین سوف' یا 'عین صاف' پڑھا جائے تو اُس کے معنی وہی ہونگے جو سنسکرت میں "شدھ چیتنیہ" کے ہیں .

مصر میں ایک کہاوت مشہور ہے جس کا مطلب ہے :—
"میں تم سے صاف کہتا ہوں کہ تمہارے دماغ میں جو کچھ بھی خیال آ سکتا ہے اللہ وہ نہیں ہے ."

دنیا کے پریمی راہ دکھانے والے ہمیں یہی بتاتے رہے ہیں کہ برائی کا اپنا کوئی وجود نہیں . دنیا کے دکھ درد سب سپنے کی طرح آتے جاتے ہیں. دھیرے دھیرے کھوجی آتما کو پتہ چلتا ہے کہ جس طرح برائی اور دکھ کوئی چیز نہیں اُسی طرح دنیا کی بھلائی اور سکھ بھی کوئی چیز نہیں . یہاں کی بھلائی کیول یہاں کی برائی کے مقابلے میں وجود رکھتی ہے . ایسے ہی یہاں کے سکھ کیول یہاں کے دکھوں کے مقابلے میں اپنا وجود رکھتے ہیں . سنسار کی اِس لیلا میں کھوجی کا فرض بھلائی کی طرف رہنا ہے . پر انت میں اُس اننت سے ملنے کا سکھ کچھ اور ہی ہے . وہ اِن سب سکھ دکھوں سے اوپر ہے. وہاں نہ برائی رہتی ہے اور نہ بھلائی . جلدی یا دیر میں سب کو اُسی راستے پر چلنا ہے . وہی پرمانند ہے .

اِنجیل میں لکھا ہے :—

"وہ اکیلا ہے . اُس کا کوئی دوسرا نہیں . اُس کے نہ کوئی بچہ ہے نہ بھائی ."

بھلائی بھلائی ہے . برائی برائی ہے . سمجھ سمجھ ہے . نا سمجھی نا سمجھی ہے . پر یہ سب ایک ہی ناٹک کے کھیل ہیں پر آتما کو پھر سے 'خدا کا بیٹا' بننے کے لئے

जो सब के अन्दर एक ही आत्मा को देखे वही दुनिया का सच्चा ख़ादिम हो सकता है

(डाक्टर भगवानदास)

ईश्वर अल्लाह के नज़दीक पहुंचने के भी बहुत से दरजे हैं. योग और वेदान्त में इन दरजों को सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य, आवेश, कलावतार, अंशावतार और पूर्णावतार, कहा गया है तसव्वुफ़ में इन्हें वज्द, जज़बा, वस्ल, क़ुरबे फ़रायज़ क़ुरबे नवाफ़िल, बुरूज़, हुलूल और मज़हरे अतम्म नामों से पुकारा गया है. यही कमाल यानी पूर्णता की सीढ़ियां हैं. रूह की इस चढ़ाई को संस्कृत में 'आरोह' और अरबी में 'उरूज' कहते हैं. इसके तीन ख़ास दरजे हैं. पहला दरजा 'द्वैत' यानी 'ईजादिया' है. दूसरा 'विशिष्टा द्वैत' यानी 'शुहू दिया' है. तीसरा 'अद्वैत' यानी 'वजूदिया' है. पहला सबसे कम समझ वाले लोगों के लिये है. दूसरा विद्वानों और साइन्सदानों के लिये. तीसरा आरिफ़ों यानी ज्ञानियों के लिये. हिन्दू फ़िलासफ़ी में इन्हें आरम्भवाद, परिणामवाद और विवर्तवाद भी कहा गया है. सूफ़ी इन तीनों हालतों को 'हमा अज़ ऊस्त', 'हमा-बाऊस्त' और 'हमाऊस्त' कह कर भी ज़ाहिर करते हैं.

यही बात इंजील में दूसरी तरह लिखी है :—

"सब चीज़ें उसी से निकली हैं, उसी से हैं, उसी में हैं."

यह तीनों बातें एक दूसरे के ख़िलाफ़ नहीं हैं. बजाय एक दूसरे को काटने को यह एक दूसरे को पूरा करती हैं. कामिल होकर ही इनसान महसूस करता है कि सच्ची ख़िदमते ख़ल्क़ यानी दुनिया की सेवा, सच्चा इश्क़ यानी प्रेम, और सच्ची मारफ़त यानी ज्ञान तीनों एक हैं.

तब समझ में आता है कि वह ज़ाते लासिफ़ात, वह निरंजननिरविरोध, वह ग़ायबउल ग़यूब यानी परम अव्यक्त केवल 'नेति नेति' (यह भी नहीं, यह भी नहीं) कह कर यानी केवल 'तनज़ीह' से ही बयान किया जा सकता है. उसकी कोई तशबीह नहीं, उसकी कोई मिसाल नहीं. नाम रूप का वहां कोई काम नहीं.

बौद्ध और जैन धर्म दोनों इस बात पर ज़ोर देते हैं कि उस असल हक़ीक़त को कोई शब्द बयान नहीं कर सकते. उसे 'यह भी नहीं' 'यह भी नहीं' कह कर ही बताया जा सकता है. यहूदी आलिमों ने भी यही कहा है. यहूदी किताब

جو سب کے اندر ایک ھی آتما کو دیکھے وھی دنیا کا سچا خادم ھو سکتا ھے

(ڈاکٹر بھگوان داس)

ایشور اللہ کے نزدیک پھونچنے کے بھی بہت سے درجے ھیں . یوگ اور ویدانت میں اِن درجوں کو سالوکیہ' سامیپیہ' ساروپیہ' سایوجیہ' آویش' کلاوتار' انشاوتار اور پورناوتار کہا گیا ھے . تصوف میں اِنھیں وجد' جذبہ' وصل' قرب فرائض' قرب نوافل' بروز' حلول اور مظہراتم ناموں سے پکارا گیا ھے . یہی کمال یعنی پورنتا کی سیڑھیاں ھیں . روح کی اس چڑھائی کو سنسکرت میں ' آروح ' اور عربی میں ' عروج ' کہتے ھیں . اس کے تین خاص درجے ھیں . پہلا درجہ ' دویت ' یعنی ' ایجادیا ' ھے . دوسرا ' وشستا دویت' یعنی 'شہودیا' ھے. تیسرا 'ادویت' یعنی ' وجودیا ' ھے . پہلا سب سے کم سمجھ والے لوگوں کے لئے ھے . دوسرا ودوانوں اور سائنسدانوں کے لئے . تیسرا عارفوں یعنی گیانیوں کے لئے . ھندو فلسفی میں اِنھیں آرمبھ واد' پری‌نام واد' اور وورت واد بھی کہا گیا ھے . صوفی اِن تینوں حالتوں کو ' ھمہ از اوست' 'ھمہ بااوست' اور ' ھمہ اوست ' کہکر بھی ظاھر کرتے ھیں .

یہی بات انجیل میں دوسری طرح لکھی ھے:—

" سب چیزیں اسی سے نکلی ھیں' اُسی سے ھیں' اُسی میں ھیں ."

یہ تینوں باتیں ایک دوسرے کے خلاف نہیں ھیں . بجائے ایک دوسرے کو کاٹنے کو یہ ایک دوسرے کو پورا کرتی ھیں . کامل ھو کر ھی انسان محسوس کرتا ھے کہ سچی خدمت خلق یعنی دنیا کی سیوا' سچا عشق یعنی پریم' اور سچی معرفت یعنی گیان تینوں ایک ھیں .

تب سمجھ میں آتا ھے کہ وہ ذات لاصفات' وہ نرنجن نروِرودھ وہ غائب الغیوب یعنی پرم اویکت کیول ' نیتی نیتی' (یہ بھی نہیں' یہ بھی نہیں) کہکر یعنی کیول 'تنزیہہ' سے ھی بیان کیا جا سکتا ھے. اُس کی کوئی تشبیہہ نہیں . اُس کی کوئی مثال نہیں. نام روپ کا وھاں کوئی کام نہیں .

بودھ اور جین دھرم دونوں اِس بات پر زور دیتے ھیں کہ اُس اصل حقیقت کو کوئی شبد بیان نہیں کر سکتے. اُسے ' یہ بھی نہیں' ' یہ بھی نہیں ' کہکر ھی بتایا جا سکتاھے. یہودی گیانیوں نے بھی یہی کہا ھے. یہودی کتاب

परेशां हाल नंगे पांव गुंजलक बाल भी सर के
कहा उसने निहायत इज्ज़ से आंखों को नम कर के

कि भगवन तुम तो हो बिरला के इस मेहमान खाने में
तुम्हें क्या, बीतती क्या है ग़रीबों पर ज़माने में

तुम्हें तो भोग दोनों वक़्त मिल जाता है बे खटके
तुम्हें क्या, भूक के मारे कहां किस किस तरह बहके

यहां तुम को तो दौलत गोद में झूला झुलाती है
पता उनका भी है कुछ जिनसे नींद आंखें चुराती है

यहां तुमको तो सुख की सेज है मख़मल का बिस्तर है
कुछ उनकी भी है सुध गूदड़ भी जिनको ना मेयस्सर है

सुना है आज हिन्दुस्तान का है जश्न आज़ादी
रची है हिन्द के इशरत कदे में हर तरफ़ शादी

यह आज़ादी मगर दुखियों की आज़ादी नहीं हरगिज़
अमीरों की है, मज़दूरों की यह शादी नहीं हरगिज़

यक़ीनन हम उसी दिन जश्न आज़ादी मनायेंगे
कि जिस दिन क़ैद 'बिरला' से तुम्हें भगवन छुड़ायेंगे

ख़िज्ल = शरमिन्दा, ऐशोतरब = रंगरलियां, परिस्तार = पुजारी, इमारत = अमीरी, ज़ियारत = दर्शन, गुंजलक = उलझे हुए, इज्ज़ = नम्रता, नामोयस्सर = न मिलना, इशरत कदा = सुख का घर,

پریشاں حال ننگے پاؤں گنجلک بال بھی سر کے
کہا اُس نے نہایت عجز سے آنکھوں کو نم کرکے

کہ بھگون تم تو ہو برلا کے اس مہمان خانے میں
تمہیں کیا' بیتتی کیا ہے غریبوں پر زمانے میں

تمہیں تو بھوگ دونوں وقت مل جاتا ہے بے کھٹکے
تمہیں کیا' بھوک کے مارے کہاں کس کس طرح بہکے

یہاں تم کو تو دولت گود میں جھولا جھلاتی ہے
پتہ اُن کا بھی ہے کچھ جن سے نیند آنکھیں چراتی ہے

یہاں تم کو تو سکھ کی سیج ہے مخمل کا بستر ہے
کچھ اُن کی بھی ہے سدھ گودڑ بھی جن کو نا میسر ہے

سنا ہے آج ہندستان کا ہے جشن آزادی
رچی ہے ہند کے عشرت کدے میں ہر طرف شادی

یہ آزادی مگر دکھیوں کی آزادی نہیں ہرگز
امیروں کی ہے' مزدوروں کی یہ شادی نہیں ہرگز

یقیناً ہم اُسی دن جشن آزادی منائینگے
کہ جس دن قید 'برلا' سے تمہیں بھگون چھڑائینگے

خجل = شرمندہ' عیش و طرب = رنگرلیاں' پرستار = پجاری' امارت = امیری' زیارت = درشن' گنجلک = اُلجھے ہوئے' عجز = نمرتا' نامیسر = نہ ملنا' عشرت کدہ = سکھ کا گھر

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 14 अप्रैल, सन '53 नम्बर 4

نمبر 4 اپریل، سن '53 جلد 14

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

बिरला मंदिर

'नाज़ुक' इलाहाबादी

नई दिल्ली में बिरला का जो आलीशान मंदिर है
वह जन्नत ही नहीं है बल्कि जन्नत से भी बढ़कर है

खिज्ल है आसमां पर इन्द्र की अमरावती इससे
अगर चाहें तो शोभा मांग लें कमला पती इससे

यहां ऐशोतरब का शोर है दौलत की मस्ती है
जिधर देखो उधर आकाश से मस्ती बरस्ती है

यहां बस लक्षमी ही के परिस्तारों का दंगल है
यहां कल्यान है निर्वान है मुक्ति है मंगल है

अगरचे है यह जीता जागता जादू इमारत का
मगर आख़िर तो मंदिर है ज़रिया है इबादत का

यहां हर देवता का इक नया मेहमान ख़ाना है
यहां के ठाट सब शाही हैं शाही कारख़ाना है

पुजारी तक यहां का चैन की बंसी बजाता है
कि जो भगवान से पहले ही मोहन भोग पाता है

यहां भक्तों को दर्शन प्रेम से भगवान देते हैं
उपासक को अचल भक्ति वह अपनी दान देते हैं

ज़ियारत को हज़ारों आदमी मंदिर में आते हैं
यहां आते ही सब दुनिया के दुख सुख भूल जाते हैं

अचानक एक दिन रंजो मशक़्क़त का थकाहारा
कहीं से आ गया मंदिर में एक मज़दूर बेचारा

برلا مندر

('نازک' الہ آبادی)

نئی دلی میں برلا کا جو عالی شان مندر ہے
وہ جنت ہی نہیں ہے بلکہ جنت سے بھی بڑھکر ہے

خجل ہے آسماں پر اِندر کی امراوتی اِس سے
اگر چاہیں تو شوبھا مانگ لیں کملا پتی اِس سے

یہاں عیش و طرب کا شور ہے دولت کی مستی ہے
جدھر دیکھو اُدھر آکاش سے مستی برستی ہے

یہاں بس لکشمی ہی کے پرستاروں کا دنگل ہے
یہاں کلیان ہے نروان ہے مکتی ہے منگل ہے

اگرچہ ہے یہ جیتا جاگتا جادو اِمارت کا
مگر آخر تو مندر ہے ذریعہ ہے عبادت کا

یہاں ہر دیوتا کا اِک نیا مہمان خانہ ہے
یہاں کے ٹھاٹ سب شاہی ہیں شاہی کارخانہ ہے

پجاری تک یہاں کا چین کی بنسی بجاتا ہے
کہ جو بھگوان سے پہلے ہی موہن بھوگ پاتا ہے

یہاں بھکتوں کو درشن پریم سے بھگوان دیتے ہیں
اُپاسک کو اچل بھکتی وہ اپنی دان دیتے ہیں

زیارت کو ہزاروں آدمی مندر میں آتے ہیں
یہاں آتے ہی سب دنیا کے دکھ سکھ بھول جاتے ہیں

اچانک ایک دن رنج و مشقت کا تھکا ہارا
کہیں سے آ گیا مندر میں اک مزدور بیچارا

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

" نیا ہند "

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

अप्रैल 1953 اپریل

स्तालीन—जे. सी. कुमारप्पा, सुन्दर लाल; स्तालीन की मौत के बाद—मुजीब रिज़वी, बरतानिया का सऊदी अरब पर हमला—मुजीब रिज़वी; बरमा और यूनो—मुजीब रिज़वी; जग शान्ति की समस्याएं—मुजीब रिज़वी;

استالن—جے. سی. کماراپا، سندر لال؛ استالن کی موت کے بعد—مجیب رضوی؛ برطانیہ کا سعودی عرب پر حملہ—مجیب رضوی؛ برما اور یونو—مجیب رضوی؛ جگ شانتی کی سمسیائیں—مجیب رضوی۔

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने.

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے.

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الٰہ آباد.

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

ایڈیٹر — تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب ایڈیٹر — سریش رام بھائی، مجیب رضوی

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

हमारी राय—

ہماری رائے

अप्रैल 1953 اپریل

झंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

"पिछले पचहत्तर बरस से आज तक की उर्दू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़कर आप को मालूम होगा कि उर्दू कविता ने किस तरह ख़यालों दुनिया को छोड़ कर ज़िन्दगी की सच्चाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है आज की उर्दू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ तक ही सीमित नहीं है. अब आप को उर्दू कविता में किसानों और मज़दूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. ग़ुलामी, अन्याय और लूट खसोट के ख़िलाफ़ आप एक ऐसी आवाज़ सुनेंगे जो आपके दिल की गहराइयों को छुएगी.

'इन कविताओं में अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय दोनों झलक मिलती है......सजीव तथा साकार हैं... ..वास्तव में हिन्दी संसार में यह प्रयास अनोखा है और उर्दू साहित्य के आधुनिक दौर में अद्वितीय है..."

23-2-'52 —रोज़ाना 'लोकवाणी' जयपुर

"जहां तक भाव का सम्बन्ध है कविताएं उच्चस्तर की हैं"

6.3.'52 —'विशाल भारत' कलकत्ता

'झंकार में प्रकाशित 72 उर्दू की कविताएं आज ही के युग की समस्याओं से ओत प्रोत हैं"

17-2-'52 — नव भारत टाइम्स' दिल्ली

"हिन्दी के पाठक स्नेह और चाव से इस संग्रह का आनन्द लेंगे और उनसे प्रेरणा ग्रहण करेंगे. यह निश्चित है."

13-1-'52 —'अमृत पत्रिका' इलाहाबाद

'हम उन की (कविताओं की) शक्ति, ताज़गी और सूत्र के क़ायल हैं वह एक नए युग का सन्देश देती हैं...भाषा अधिकतर सरल और बामुहावरा है. कहीं कहीं तो ठेठ हिन्दी है"

8-5-'52 —'जीवन साहित्य' दिल्ली

"झंकार की रचनाओं में युग की पुकार है और भाषा बिलकुल बोल चाल के निकट है" —'नया समाज' कलकत्ता

नागरी लिखावट में ऐसा भरपूर उर्दू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. सुन्दर जिल्द बढ़िया कागज़, उम्दा छपाई दाम सिर्फ़ तीन रुपया. दस किताबों का एक साथ ख़रीदारी पर पचास फ़ीसदी कमीशन.

मिलने का पता -

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

جھنکار

سمپادک—شری رگھوپتی سہائے 'فراق'

پچھلے پچہتر برس سے آج تک کی اردو کی چنی ہوئی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اردو کویتا نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے آج کی اردو شاعری گل و بلبل اور وصل و فراق تک ہی سیمت نہیں ہے. اب آپ کو اردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی. غلامی انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف آپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل کی گہرائیوں کو چھوئیگی

"ان کویتاؤں میں انترراشٹری تتھا راشٹری دونوں جھلکیں ملتی ہیں...سجیو تتھا ساکار ہیں... واستو میں ہندی سنسار میں یہ پریاس انوکھا ہے اور اردو ساہتیہ کے آدھنک دور میں ادویتیہ ہے..."

23-2-'52 —روزانہ 'لوک وانی' جے پور

"جہاں تک بھاؤ کا سمبندھ ہے کویتائیں اچ استر کی ہیں."

6-3-52 —'وشال بھارت' کلکتہ

"جھنکار میں پرکاشت 72 اردو کی کویتائیں آج ہی کے یگ کی سمسیاؤں سے اوت پروت ہیں."

17-2-'52 —'نو بھارت ٹائمس' دلی

"ہندی کے پاٹھک اسنیہ اور چاؤ سے اس سنگرہ کا آنند لینگے اور ان سے پریرنا گرہن کرینگے یہ نشچت ہے"

13-1-'52 —'امرت پتریکا' الہ آباد

"ہم ان کی (کویتاؤں کی) شکتی، تازگی اور سوتر کے قائل ہیں. وہ ایک نئے یگ کا سندیش دیتی ہیں... بھاشا ادھکتر سرل اور بامحاورہ ہے. کہیں کہیں تو ٹھیٹھ ہندی ہے."

8-5-'52 —'جیون ساہتیہ' دلی

"(جھنکار کی) رچناؤں میں یگ کی پکار ہے اور بھاشا بالکل بول چال کے نکٹ ہے."—'نیا سماج' کلکتہ

ناگری لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اردو کویتا کا سنگرہ آج تک نہیں نکلا. سندر جلد. بڑھیا کاغذ. عمدہ چھپائی دام صرف تین روپیہ. دس کتابوں کی ایک ساتھ خریداری پر پچاس فیصدی کمیشن.

ملنے کا پتہ—

منیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج الہ آباد.

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़. गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास, सेक्रेटरी - पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री श्री० जी० खेर, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا' پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں .

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں وغیرہ کا چھاپنا .

(3) پڑھائی گھروں' کتاب گھروں' سبھاؤں' کانفرنسوں' لیکچروں سے سب دھرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا .

—:٥:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ' وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق . گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال .

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود' ڈاکٹر تارا چند' مولوی سید سلیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوختہ' شری بی. جی . کھیر' پنڈت بشمبھر ناتھ' مہاتما بھگوان دین' سیٹھ پونم چند رانکا' قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے -

سندرلال

سکریٹری' ہندستانی کلچر سوسائٹی'

145' مٹھی گنج' الہ آباد .

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے . "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے .

हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें — ھمارے یہاں ملنےوالی کچھ اور کتابیں

नोटः—यह किताबें सिर्फ हिन्दी में हैं — نوٹ :—یہ کتابیں صرف ھندی میں ھیں ۔

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1. शेर ओ शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئیلی	1. شعر و شاعری
2. शेर ओ सुखन	,,	8	0	0	,,	2. شعر و سخن
3. गहरे पानी पैठ	,,	2	8	0	,,	3. گہرے پانی پیٹھ
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. ھمارے آرادھیہ
5. संस्मरण	,,	3	0	0	,,	5. سنس مرن
6. दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو ھزار ورش پرانی کہانیاں
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8. पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پتھ چنھ
9. पंथ प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم ۔ اے	9 پنتھ پردیپ
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنھیالال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.	5	0	0	شری ویریندر کمار جین ایم ۔ اے	11. مکتی دوت
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14. मेरे बापू	श्री तन्मय बुखारिया	2	8	0	شری تنمے بخاریا	14. میرے باپو
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال' بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला	5	0	0	شری بھگوان داس کیلا'	61. بھارتیہ ارتھ شاسترا
17. भारतीय शासन	,,	3	0	0	,,	17. بھارتیہ شاسن
18. नागरिक शास्त्र	,,	2	4	0	,,	18. ناگرک شاستر
19. साम्राज्य और उनका पतन	,,	2	8	0	,,	19. سامراج اور ان کا پتن
20. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन	,,	1	4	0	,,	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	,,	1	8	0	,,	21. سروودے ارتھ ووستھا
22. हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	22. ھماری آدم جاتیاں
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम ए. एल एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم ۔ اے ۔ ایل ایل ۔ بی ۔ گجادھر پرساد' امبشٹ' بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. راشٹر منڈل شاسن
26. जवानी	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانی
27. मारने की हिम्मत !	,,	1	0	0	,,	27. مارنے کی ھمت
28. सलीना सच	,,	0	8	0	,,	28 سلونا سچ
29. मेरे साथी	,,	1	0	0	,,	29. میرے ساتھی

मिलने का पता— — ملنے کا پتہ—

मैनेजर 'नया हिन्द' — مینیجر 'نیا ھند'

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3. — 145' مٹھی گنج' الہ آباد-3.

फ़िरक़ाबन्दी पर बापू

सम्पादक—श्री श्रीकृष्ण दास

इस पुस्तक में 1921 से सन 1948 तक गांधी जी ने साम्प्रदायिता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब आपको एक जगह मिलेगा.

भारत के आज़ाद होने पर यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हर भारतवासी साम्प्रदायिकता के नुक़सानों को समझे और इस ज़हर को अपने अन्दर से साफ़ करे.

सुन्दर जिल्द. अच्छा काग़ज़. दो सौ सफ़े. क़ीमत दो रुपया.

फ़رقہ بندی پر باپو

سمپادک—شری شریکرشن داس

اِس پستک میں سن 1921 سے سن 1948 تک گاندھی جی نے سامپردایکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا لکھا وہ سب آپکو ایک جگہ ملیگا .

بھارت کے آزاد ہونے پر یہ اور بھی ضروری ہو گیا ہے کہ ہر بھارت واسی سامپردایکتا کے نقصان کو سمجھے اور اِس زہر کو اپنے اندر سے صاف کرے .

سندر جلد . اچھا کاغذ . دو سو صفحے . قیمت دو روپیہ .

भाषा

लेखक—लाला मदन गोपाल

हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी की तकरार पर एक बे लाग राय इस किताब में आपको मिलेगी. राष्ट्र भाषा के सवाल में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई-बहन को इस किताब के पढ़ने से फ़ायदा होगा—सोचने की राहें सूझेंगी, जानकारी बढ़ेगी और तरह तरह की तंग नज़रियां मिटेंगी.

क़रीब सवा सौ सफ़े की सुन्दर किताब, दाम डेढ़ रुपया

بھاشا

لیکھک—لالہ مدن گوپال

ہندی اُردو اور ہندستانی کی تکرار پر ایک بے لاگ رائے اِس کتاب میں آپ کو ملے گی . راشٹر بھاشا کے سوال میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کو اِس کتاب کے پڑھنے سے فائدہ ہوگا—سوچنے کی راہیں سوجھیں گی' جانکاری بڑھے گی اور طرح طرح کی تنگ نظریاں مٹیں گی .

قریب سوا سو صفحے کی سندر کتاب' دام ڈیڑھ روپیہ .

---

700 PAGES,
32 ILLUSTRATION
2 COLOURED MAPS

"CHINA TODY"

BY PANDIT SUNDRLL

PRICE
Rs. 7 8 0

A vivid narration of the glorious and wonderful achievements of New China...A picture of China which is both convincing and authentic...the best book that has come out so far on New China in the English language ...the most objective in approach and comprehensive in treatment. **—National Herald, Lucknow.**

Highly infomative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserves to be widely known. **—Leader, Allahabad.**

Encyclopaedic...characterized by acute observation of detail as well as by...instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China. **—Blitz, Bombay.**

A mine of information which gives a picture of China as nothing else dose...the best guide to New China...Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it. **—Bharat Jyoti, Bombay**

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs. **—Indian Express, Madras**

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men and matter... brings to light the mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations for a tomorrow which is theirs. **—Vigil, Delhi.**

महात्मा गाँधी क वसयत

लेखक—श्री मंजर अली सोख्ता

अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने कांगरेस को लोक सेवा संघ में बदल देने के लिए अपनी तजवीज़ लिखी थी. यह देश के नाम उनकी आख़िरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिए इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. 225 सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपए.

अहिंसात्मक इन्क़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

इस छोटी सी किताब को पढ़ कर आपको पता चलेगा कि महात्मा गांधी क्या चाहते थे और किस तरह उनके रास्ते पर चल कर अहिंसात्मक ढंग से देश में इन्क़लाब लाया जा सकता है.

पैंतीस पन्ने की किताब, दाम सिर्फ़ चार आने.

आज के शहीद

लेखक—श्री रतन लाल बंसल

उन बहादुरों की कहानियां जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इनसानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में अपनी जान क़ुरबान कर दी. दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

मुस्लिम देश भक्त

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को गुलामी की ज़ंजीरों से आज़ाद कराने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے کانگریس کو لوک سیوا سنگھ میں بدل دینے کے لئے اپنی تجویز لکھی تھی۔ یہ دیش کے نام انکی آخری وصیت ہے اور سکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں۔

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے۔ 225 صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے۔

اہنساتمک اِنقلاب کا راستہ

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اِس چھوٹی سی کتاب کو پڑھکر آپ کو پتہ چلے گا کہ مہاتما گاندھی کیا چاہتے تھے اور کسطرح اُن کے راستے پر چل کر اہنساتمک ڈھنگ سے دیش میں انقلاب لایا جا سکتا ہے۔

پینتیس پنے کی کتاب، دام صرف چار آنے۔

آج کے شہید

لیکھک—شری رتن لال بنسل

اِن بہادروں کی کہانیاں جنھوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کی کوشش میں اپنی جان قربان کر دی۔ دام صرف ڈھائی روپیہ۔

مسلم دیش بھکت

سمپادک—شری رتن لال بنسل

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنھوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرانے کی کوشش کی۔ کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے۔ قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے۔

ملنے کا پتہ—

منیجر 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج، الٰہ آباد۔

गांधी जयन्ती पर नई भेंट

गांधी बाबा

लेखक—क़ुदसिया ज़ैदी

दो शब्द—जवाहरलाल नेहरू

यह अनमोल किताब जन्म से बलिदान तक की गांधी जी की पूरी और सच्ची जीवनी भी है और कहानी भी. हमारे देश में यह पुराना रिवाज रहा है कि माएं अपने बच्चों को महापुरुषों के जीवन चरित कहानी के रूप में सुनाती हैं. इस तरह की कहानियां आम तौर पर वीर राजाओं और उनके युद्धों की कहानियां होती हैं. बेगम क़ुदसिया ज़ैदी ने, जो महात्मा गांधी की परम भक्त हैं, अपनी इस किताब में गांधीजी की जीवनी और उनका सत्य, अहिंसा, प्रेम और त्याग का उपदेश बच्चों को ऐसी प्यारी, सीधी सादी बोली में और ऐसे ढंग से सुनाया है कि बच्चों के दिल में उतरता चला जाता है. हिन्दी में गांधीजी के ऊपर बच्चों के लिये इससे बढ़कर किताब नहीं है. इसमें कहानी का रस भी है और बच्चों को ऊंचा उठाने वाले उपदेश भी.

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने 'दो शब्द' में लिखा है—

> "उन्होंने (क़ुदसिया ज़ैदी ने) यह छोटी सी किताब सच्चे दिल से लिखी है. वह इसे सिर्फ़ एक किताब नहीं समझतीं. उनके लिये गांधीजी की कहानी एक बहुत ही महत्त्व की और प्यारी चीज़ है...मुझे ख़ुशी है कि यह किताब लिखी गई है."

मोटे काग़ज़ पर, मोटे टाइप में, बहुत सी रंगीन तसवीरें, आर्ट पेपर पर सुन्दर रंगीन कवर और दफ़्ती की मज़बूत जिल्द—दाम केवल दो रुपए.

विनोबा का सन्देश

लेखक—सुरेश रामभाई

एक शब्द—महात्मा भगवानदीन

विनोबाजी के भू-दान-यज्ञ से आज सारा देश वाक़िफ़ है. इस छोटी सी किताब में आपको मिलेगा कि यह भू-दान-यज्ञ कब और कैसे शुरू हुआ और इसका मक़सद क्या है

पहला एडीशन हाथों हाथ निकल गया. यह दूसरा एडीशन है. सफ़े 25, दाम केवल दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द'

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

گاندھی جینتی پر نئی بھینٹ

گاندھی بابا

لیکھک—قدسیہ زیدی

دو شبد—جواہر لال نہرو

یہ انمول کتاب جنم سے بلیدان تک کی گاندھی جی کی پوری اور سچی جیونی بھی ہے اور کہانی بھی. ہمارے دیش میں یہ پرانا رواج رہا ہے کہ مائیں اپنے بچوں کو مہاپرشوں کے جیون چرت کہانی کے روپ میں سناتی ہیں. اس طرح کی کہانیاں عام طور پر ویر راجاؤں اور ان کے یدھوں کی کہانیاں ہوتی ہیں. بیگم قدسیہ زیدی نے' جو مہاتما گاندھی کی پرم بھکت ہیں' اپنی اس کتاب میں گاندھی جی کی جیونی اور ان کا ستیہ' اہنسا' پریم اور تیاگ کا اپدیش بچوں کو ایسی پیاری' سیدھی سادی بولی میں اور ایسے ڈھنگ سے سنایا ہے کہ بچوں کے دل میں اترتا چلا جاتا ہے. ہندی میں گاندھی جی کے اوپر بچوں کے لئے اس سے بڑھ کر کتاب نہیں ہے. اس میں کہانی کا رس بھی ہے اور بچوں کو اونچا اٹھانے والے اپدیش بھی.

پنڈت جواہر لال نہرو نے اپنے 'دو شبد' میں لکھا ہے—

> "انہوں نے (قدسیہ زیدی نے) یہ چھوٹی سی کتاب سچے دل سے لکھی ہے. وہ اسے صرف ایک کتاب نہیں سمجھتیں. ان کے لئے گاندھی جی کی کہانی ایک بہت ہی مہتو کی اور پیاری چیز ہے.....مجھے خوشی ہے کہ یہ کتاب لکھی گئی ہے."

موٹے کاغذ پر' موٹے ٹائپ میں' بہت سی رنگین تصویریں' آرٹ پیپر پر سندر رنگین کور اور دفتی کی مضبوط جلد—دام کیول دو روپیہ.

ونوبا کا سندیش

لیکھک—سریش رام بھائی

ایک شبد—مہاتما بھگوان دین

ونوبا جی کے بھودان یگیہ سے آج سارا دیش واقف ہے. اس چھوٹی سی کتاب میں آپکو ملیگا کہ یہ بھودان یگیہ کب اور کیسے شروع ہوا اور اس کا مقصد کیا ہے.

پہلا ایڈیشن ہاتھوں ہاتھ نکل گیا. یہ دوسرا ایڈیشن ہے. صفحے 25 دام کیول دو آنے.

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند'

145 مٹھی گنج' الہ آباد.

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

गीता और क़ुरान

इस किताब में हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों के मेल की बातें, गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 16 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दौरे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक वर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिए ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

لیکھک—پنڈت سندر لال

گیتا اور قرآن

اِس کتاب میں ھندو دھرم اور اِسلام دونوں کے میل کی باتیں' گیتا کا بڑپن' گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ' قرآن کا بڑپن' لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آیتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے ۔

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ھے ۔

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ' ڈاک خرچ الگ ۔

ھندو مسلم ایکتا

اِس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ھیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے ۔

سو صفحے کی کتاب ۔ قیمت صرف بارہ آنے ۔

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی' مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اسکا علاج' جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ھمارے بیچ میں نہ رھنے دیا ۔

قیمت بارہ آنے ۔

پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے

مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے دورے کے بعد وھاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک ورنن ۔ اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ھیں ۔ قیمت چار آنے ۔

بنگال اور اُس سے سبق

اِس چھوٹی سی کتاب میں 1949–50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ھے اور ایسے جھگڑوں کو ھمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ھے ۔ قیمت صرف دو آنے ۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج' الٰہ آباد ۔

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों को और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायेगी. पूरी जानकारी के लिए लिखिये.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन 1950 से सारे भारत में लागू हुआ.

'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पंडित सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाषा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जायेगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इन्सान-इन्सान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा गांधी ने इस किताब के बारे में कहा है कि—

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े... "

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताब का दाम सिर्फ़ एक रुपया.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द', 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ھندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں کو اور بکسیلروں کو خاص رعائت دی جائیگی۔ پوری جانکاری کے لئے لکھئے۔

ڈاک یا ریل خرچ ھر حالت میں گاھک کے ذمے ھوگا۔

بھارت کا ودھان

پورا ھندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ھوا۔

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندرلال دوارا مول انگریزی سے انووادت۔

ھر بھارت واسی کا فرض ھے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اس سمے چل رھا ھے اُسے اچھی طرح سمجھے۔ بھارت کے ھر گھر میں اس پستک کا رھنا ضروری ھے۔

آسان بامحاورہ بھاشا۔ رایل اٹھ پیجی بڑا سائز۔ لگ بھگ چار سو پنّے۔ کپڑے کی سندر جلد۔ قیمت کیول ساڑھے سات روپئے۔

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے۔ سی۔ کمارپا۔

انوادک—سریش رام بھائی۔

اِس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ھے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ھے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابری' بھائی چارے' پریم اور اھنسا پر کتنا زور دیا ھے۔

مہاتما گاندھی نے اِس کتاب کے بارے میں کہا ھے کہ—

"ھر آستک سے' چاھے وہ عیسائی ھو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ھو' میری سفارش ھے کہ اِسے پڑھے..."

سندر جلد' بڑھیا کاغذ' قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر' 'نیا ھند' 145 مٹھی گنج' الٰہ آباد۔

चिराग़ बुझ गया !

स्टालिन चिराग़ थे पर रोशनी नहीं थे. वह एक युग थे पर समय नहीं थे. वह एक टावर थे पर ऊंचाई नहीं थे. वह एक पेड़ थे पर साया नहीं थे. वह एक महान इनसान थे पर इनसानियत नहीं थे. मौत ने दुनिया से स्टालिन छीन लिया है, उसने चिराग़ बुझा दिया है, उसने युग का अन्त कर दिया है, उसने टावर गिरा दिया है, उसने पेड़ काट दिया है, उसने इनसान को मुरदा कर दिया है. पर रोशनी क़ायम है, समय का बहाव जारी है, ऊंचाई अब भी इनसानियत को अपनी तरफ़ बुला रही है, साया अब भी बाक़ी है. इनसानियत अमर है, अजर है. चिराग़ बुझ जाने पर उस समय तक चकाचौंध होता है जब तक दूसरा चिराग़ रौशन नहीं हो जाता. युग की तरक़्क़ी में रोड़ा अटक जाता है जब तक कोई दूसरा युग निर्माता पैदा नहीं होता. टावर गिर जाने पर उस वक़्त तक ऊंचाई का अन्दाज़ा लगाने में दिक़्क़त होती है जब तक कोई दूसरा टावर न खड़ा हो जाय. पेड़ के गिर जाने से उस समय तक सूना सूना लगता है जब तक वहां किसी और चीज़ का निरमान न हो जाय. इनसानियत की प्रगति रुक जाती है जब तक कोई दूसरा इनसान उस प्रगति का अलमबरदार बन कर सामने न आ जाय. इसी कारन दुनिया को दुख था, वह स्टालिन की मौत को सोच कर एक कमी सी महसूस करने लगती थी. इनसान उस समय तक डरता है, उसका सोचना भी पाप समझता है, जब तक वह घटना न हो जाय. आज जब वह घटना हो गई है तो सब उसका मुक़ाबला करने के लिये तैयार हो गए हैं. डर की जगह हिम्मत ने ले ली है. ऐसे डर को भगा कर हिम्मत पैदा कर देना मरने वाले की आत्मा का करिश्मा है. आज हम सोवियत रूस की हालत पर जब ग़ौर करते हैं तो मालूम होता है कि रूसियों की आंखों में आंसू छलछला रहे हैं लेकिन उनके दिल में एकता की, काम करने की, शान्ति क़ायम करने की भावना तेज़ हो रही है. यह स्टालिन की आत्मा का करिश्मा है. स्टालिन की ज़िन्दगी जितनी शानदार थी उनकी मौत के बाद की घटनाओं से पता चलता है कि उनकी मौत भी उतनी ही शानदार है !

स्टालिन की एक इच्छा थी कि दुनिया में शान्ति क़ायम हो जाय, लड़ाई का नाम निशान तक मिट जाय. जब भी वह किसी विदेशी राजनैतिक से मिलते थे तो यह नहीं कहते थे कि हमारे साथ हो जाओ. उनकी यही इच्छा होती थी – आओ हम तुम मिल कर दुनिया में शान्ति क़ायम करने की कोशिश करें. स्टालिन की कोई यादगार अगर खड़ी की जा सकती है तो वह 'जग शान्ति' है. रूस की जनता और उन सब लोगों का जो स्टालिन को प्यार करते हैं यह कर्तव्य है कि वह शान्ति क़ायम करने के लिये अपना सारा ज़ोर लगा दें. स्टालिन का जो ख़्वाब ज़िन्दगी में पूरा न हो सका, उसे मौत के बाद पूरा ही होना चाहिये !!

—मुजीब रिज़वी

چراغ بجھ گیا !

اسٹالن چراغ تھے پر روشنی نہیں تھے ۔ وہ ایک یگ تھے پر سمے نہیں تھے ۔ وہ ایک ٹاور تھے پر اونچائی نہیں تھے۔ وہ ایک پیڑ تھے پر سایہ نہیں تھے۔ وہ ایک مہان انسان تھے پر انسانیت نہیں تھے ۔ موت نے دنیا سے اسٹالن چھین لیا ہے، اُس نے چراغ بجھا دیا ہے، اُس نے یگ کا انت کر دیا ہے، اُس نے ٹاور گرا دیا ہے، اُس نے پیڑ کاٹ دیا ہے، اُس نے انسان کو مردہ کر دیا ہے ۔ پر روشنی قائم ہے، سمے کا بہاؤ جاری ہے، اونچائی اب بھی انسانیت کو اپنی طرف بلا رہی ہے، سایہ اب بھی باقی ہے ۔ انسانیت امر ہے، اجر ہے ۔ چراغ بجھ جانے پر اُس سمے تک چکا چوندھ ہوتا ہے جب تک دوسرا چراغ روشن نہیں ہوجاتا۔ یگ کی ترقی میں روڑا اٹک جاتا ہے جب تک کوئی دوسرا یگ نرماتا پیدا نہیں ہوتا۔ ٹاور گر جانے پر اُس وقت تک اونچائی کا اندازہ لگانے میں دقت ہوتی ہے جب تک کوئی دوسرا ٹاور نہ کھڑا ہو جائے ۔ پیڑ کے گر جانے سے اُس سمے تک سونا سونا لگتا ہے جب تک وہاں کسی اور چیز کا نرمان نہ ہو جائے ۔ انسانیت کی پرگتی رک جاتی ہے جب تک کوئی دوسرا انسان اُس پرگتی کا علمبردار بن کر سامنے نہ آ جائے۔ اسی کارن دنیا کو دکھ تھا، وہ اسٹالن کی موت کو سوچ کر ایک کمی سی محسوس کرنے لگتی تھی۔ انسان اُس سمے تک ڈرتا ہے، اس کا سوچنا بھی پاپ سمجھتا ہے، جب تک وہ گھٹنا نہ ہو جائے ۔ آج جب وہ گھٹنا ہوگئی ہے تو سب اُس کا مقابلہ کرنے کے لئے تیار ہوگئے ہیں، ڈر کی جگہ ہمت نے لے لی ہے ۔ ایسے ڈر کو بھگا کر ہمت پیدا کر دینا مرنے والے کی آتما کا کرشمہ ہے ۔ آج ہم سوویت روس کی حالت پر جب غور کرتے ہیں تو معلوم ہوتا ہے کہ روسیوں کی آنکھوں میں آنسو چھلچھلا رہے ہیں لیکن اُن کے دل میں ایکتا کی، کام کرنے کی، شانتی قائم کرنے کی بھاونا تیز ہو رہی ہے ۔ یہ اسٹالن کی آتما کا کرشمہ ہے ۔ اسٹالن کی زندگی جتنی شاندار تھی ان کی موت کے بعد کی گھٹناؤں سے پتہ چلتا ہے کہ اُن کی موت بھی اُتنی ہی شاندار ہے !

اسٹالن کی ایک اچھا تھی کہ دنیا میں شانتی قائم ہو جائے، لڑائی کا نام نشان تک مٹ جائے ۔ جب بھی وہ کسی ودیشی راج نیتک سے ملتے تھے تو یہ نہیں کہتے تھے کہ ہمارے ساتھ ہو جاؤ ۔ اُن کی یہی اچھا ہوتی تھی — آؤ ہم تم مل کر دنیا میں شانتی قائم کرنے کی کوشش کریں۔ اسٹالن کی کوئی یادگار اگر کھڑی کی جا سکتی ہے تو وہ 'جگ شانتی' ہے ۔ روس کی جنتا اور ان سب لوگوں کا جو اسٹالن کو پیار کرتے ہیں یہ کرتبیہ ہے کہ وہ شانتی قائم کرنے کے لئے اپنا سارا زور لگا دیں ۔ اسٹالن کا جو خواب زندگی میں پورا نہ ہو سکا، اُسے موت کے بعد پورا ہی ہونا چاہئے !!

— مجیب رضوی

यूनो इस वक़्त तक सारी दुनिया की बेलौस और बेलाग पंचायत नहीं समझी जा सकती जब तक वह एटम बम और हाईड्रोजन बमों को एग्रेशन के हथियार क़रार नहीं दे देती,

यह खबर हर आदमी के मुंह पर है कि एटम बम विज्ञानियों से ज़बरदस्ती बनवाए जा रहे हैं. विज्ञानियों के साथ ज़बरदस्ती करना एक मुल्क पर चढ़ाई करने से ज़ियादा एग्रेशन है. एग्रेशन से बना हथियार एग्रेशन का ही काम कर सकता है. विज्ञानी लोग धर्मात्माओं की तरह जान पर खेल जाने वाले होते हैं. सरकारें उन पर आसानी से क़ाबू नहीं पा सकतीं वह ऐसा जुल्म से भरा काम करने के लिये कैसे तैयार हो गए, इस बारे में एक खबर हर एक की ज़बान पर है. वह यह कि उन्होंने एटम बम बनाने वाली सरकारों से यह क़सम ले ली है कि वह एटम बमों को न यूरोप के किसी मुल्क पर गिराएंगे न अमरीका के किसी मुल्क पर और न आस्ट्रेलिया के. बस अब बच रहे एशिया, अफ़रीका! अब तक दो बम जापान पर गिर चुके जो एशिया का मुल्क है. कोरिया पर बम गिराए जाने की धमकी दी जा रही है, कोरिया भी एशियाई मुल्क है. चीन पर एटम बम गिराने की तजवीज़ें सोची जा रही हैं वह भी एशियाई मुल्क है.

एशिया और अफ़रीक़ा ही इस के निशाने क्यों बनाए गए, इसकी वजह यह है कि जो विज्ञानी इस काम में लगे हुए हैं वह या तो योरोपी है या अमरीकी.

एटम बम एग्रेशन का हथियार तो है ही पर यह एग्रेशन से भी सवाया हो जाता है जब इसके ज़ोम में आ कर कोई मुल्क चक्रवर्ती होने की सोच बैठता है. यानी सब मुल्कों के मालिक बन बैठने की बात सोचता है और इस नाते अश्वमेध यज्ञ की तरह डालरमेध यज्ञ करने की तैयारी करने लगता है.

एटम बम के इतने ऐबों को जान कर भी अगर यूनो इसे एग्रेशन का हथियार नहीं कहती तो यूनो यूनो कहलाने के लायक नहीं. अगर लोकशाही के उसूलों पर यूनो बनी होती तो दूसरी लड़ाई में जिस तरह गैस मरी की मरी रह गई थी वैसे ही तीसरी लड़ाई के लिये एटम बम और हाईड्रोजन बम बेजान हो कर निकम्मे हो गए होते.

21. 2. '53 —भगवानदीन

कलकत्ता

ہماری رائے

یو . نو . اس وقت تک ساری دنیا کی بے لوس اور بے لاگ پنچایت نہیں سمجھی جا سکتی جب تک وہ ایٹم بم اور ہائیڈروجن بموں کو اگریشن کے ہتھیار قرار نہیں دے دیگی .

یہ خبر ہر آدمی کے منہ پر ہے کہ ایٹم بم وگیانیوں سے زبردستی بنوائے جا رہے ہیں . وگیانیوں کے ساتھ زبردستی کرنا ایک ملک پر چڑھائی کرنے سے زیادہ اگریشن ہے . اگریشن سے بنا ہتھیار اگریشن کا ہی کام کر سکتا ہے . وگیانی لوگ دھرماتماؤں کی طرح جان پر کھیل جانے والے ہوتے ہیں . سرکاریں ان پر آسانی سے قابو نہیں پا سکتیں وہ ایسا ظلم سے بھرا کام کرنے کے لئے کیسے تیار ہو گئے' اس بارے میں ایک خبر ہر ایک کی زبان پر ہے . وہ یہ کہ انہوں نے ایٹم بم بنانے والی سرکاروں سے یہ قسم لے لی ہے کہ وہ ایٹم بموں کو نہ یوروپ کے کسی ملک پر گرائیں گے نہ امریکہ کے کسی ملک پر اور نہ آسٹریلیا کے . بس اب بچ رہے ایشیا' افریقہ ! اب تک دو بم جاپان پر گر چکے جو ایشیا کا ملک ہے . کوریا پر بم گرائے جانے کی دھمکی دی جا رہی ہے' کوریا بھی ایشیائی ملک ہے . چین پر ایٹم بم گرانے کی تجویزیں سوچی جا رہی ہیں وہ بھی ایشیائی ملک ہے .

ایشیا اور افریقہ ہی اس کے نشانے کیوں بنائے گئے . اس کی وجہ یہ ہے کہ جو وگیانی اس کام میں لگے ہوئے ہیں وہ یا تو یوروپی ہیں یا امریکی .

ایٹم بم اگریشن کا ہتھیار تو ہے ہی پر یہ اگریشن سے بھی سوایا ہو جاتا ہے جب اس کے زعم میں آ کر کوئی ملک چکرورتی ہونے کی سوچ بیٹھتا ہے . یعنی سب ملکوں کے مالک بن بیٹھنے کی بات سوچتا ہے اور اس ناتے اشومیدھ یگیہ کی طرح ڈالر میدھ یگیہ کرنے کی تیاری کرنے لگتا ہے .

ایٹم بم کے اتنے عیبوں کو جان کر بھی اگر یونو اسے اگریشن کا ہتھیار نہیں کہتی تو یونو یونو کہلانے کے یوگ نہیں . اگر لوک شاہی کے اصولوں پر یونو بنی ہوتی تو دوسری لڑائی میں جس طرح گیس بھری کی بھری رہ گئی تھی ویسے ہی تیسری لڑائی کے لئے ایٹم بم اور ہائیڈروجن بم بے جان ہو کر نکمے ہو گئے ہوتے .

—بھگوان دین

کلکتہ

21-2-'53

घर में शान्ति बनाए रखने के लिये टैंकों से शायद ही कभी काम लेता हो, हां दूसरे मुल्कों पर चढ़ाई करने में यह सब से आगे होती हैं.

पंडुब्बियां यानी सबमैरीन भी पचीस फ़ी सदी अगर हिंसोपकरन हैं तो पचास फ़ी सदी रक्षोपकरन भी हैं. क्योंकि चढ़ाई के वक़्त यह समुन्दर में पहरा देने के काम आती हैं, पर उड़न क़िले बहुत कम रक्षोपकरन और बहुत ज़ियादा हिंसोपकरन हैं. टैंकों की तरह से यह उड़न क़िले भी ऐसे हो सकते हैं जिन पर यूनो कुछ पाबन्दी लगाए.

ज़मीन और समुन्दरी सुरंगें भी बराबर की हिंसोपकरन और रक्षोपकरन हैं. दूसरे और हथियार भी इस कसौटी पर कस कर देखे जा सकते हैं.

रहे सब से भयानक हथियार एटम बम और इसी का दादा गुरू हाइड्रोजन बम जिसके बारे में कुछ का कहना है: बन गया कुछ का कहना है बना नहीं है, बनने की तैयारी में है और कुछ का कहना है कि अभी यह कोरी कल्पना है. यह दोनों हथियार सोलहों आना हिंसोपकरन हैं. यह बचाव के काम में आ ही नहीं सकते. इन से तो हमला ही किया जा सकता है. यह हर तरह हर मानों में एग्रेशन के हथियार हैं.

अमरीका के पास एटम बम है, अगर कोई मुल्क पंडुब्बियों में बैठ कर या छतरियों से उड़ कर चोरी चोरी न्यूयार्क या वाशिंगटन पर हमला बोल दे तब अमरीका कभी भी अपने बचाव में न्यूयार्क या वाशिंगटन पर एटम बम या हाइड्रोजन बम गिराने की बेवक़ूफ़ी नहीं करेगा. इन दोनों भयानक हथियारों में यह बहुत बड़ी कमी है. जिस तरह शेर की छाती बेहद कमज़ोर होती है वैसे ही इन दोनों भयानक बमों का दिल बेहद कमज़ोर है. यह दोनों बम अपने देश को खड़े खड़े बरबाद होते देखते रहेंगे और सहमे खड़े रहेंगे.

लन्दन, पेरिस, ओटावा, मास्को अपने पास एटम बम रखते हुए अपनी बरबादी से नहीं बच सकते. इन्हें इनकी बरबादी से बचायगी सब से ज़ियादा इनकी तलवारें, उनसे कम इनकी तोपें और बन्दूक़ें और बेकार रहेंगे टैंक, उड़न क़िले और सब से ज़ियादा बेकार रहेगा एटम बम.

एटम बम हर तरह हर मानों में एग्रेशन का हथियार है. जो मुल्क इसके नाम पर दूसरे मुल्क को धमकी दे वह एग्रेसर. वह मुल्क कम एग्रेसर नहीं जो किसी मुल्क की दूसरे मुल्क पर एटम बम की धमकी सुन कर चुप रह जाय और उसके ख़िलाफ़ आवाज़ न उठाए! यूनो संस्था भी एग्रेसर होने के इलज़ाम से नहीं बच सकती अगर यह उस मुल्क को न धमकाए जिसने किसी दूसरे मुल्क पर एटम बम गिराने की धमकी दी हो.

گھر میں شانتی بنائے رکھنے کے لئے ٹینکوں سے شاید ھی کبھی کام لیتا ھو' ھاں دوسرے ملکوں پر چڑھائی کرنے میں یہ سب سے آگے ھوتی ھیں .

پنڈبیاں یعنی سب میرین بھی پچیس فی صدی اگر ھنسوپکرن ھیں تو پچاس فیصدی رکشو پکرن بھی ھیں . کیونکہ چڑھائی کے وقت یہ سمندر میں پہرہ دینے کے کام آتی ھیں' پر اُڑن قلعے بہت کم رکشو پکرن اور بہت زیادہ ھنسو پکرن ھیں. ٹینکوں کی طرح سے یہ اُڑن قلعے بھی ایسے ھو سکتے ھیں جن پر یو . نو . کچھ پابندی لگائے .

زمین اور سمندری سرنگیں بھی برابر کی ھنسوپکرن اور رکشو پکرن ھیں . دوسرے اور ھتھیار بھی اس کسوٹی پر کس کر دیکھے جا سکتے ھیں .

رھے سب سے بھیانک ھتھیار ایٹم بم اور اسی کا دادا گرو ھائیڈروجن بم جس کے بارے میں کچھ کا کہنا ھے: بن گیا کچھ کا کہنا ھے بنا نہیں ھے' بننے کی تیاری میں ھے اور کچھ کا کہنا ھے کہ ابھی یہ کوری کلپنا ھے . یہ دونوں ھتھیار سولہوں آنہ ھنسوپکرن ھیں . یہ بچاؤ کے کام میں آ ھی نہیں سکتے . ان سے تو حملہ ھی کیا جا سکتا ھے . یہ ھر طرح ھر معنوں میں اگریشن کے ھتھیار ھیں .

امریکہ کے پاس ایٹم بم ھے' اگر کوئی ملک پنڈبیوں میں بیٹھ کر یا چھتریوں سے اُڑ کر چوری چوری نیویارک یا واشنگٹن پر حملہ بول دے تب امریکہ کبھی بھی بچاؤ میں نیویارک یا واشنگٹن پر ایٹم بم یا ھائیڈروجن بم گرانے کی بیوقوفی نہیں کرے گا . ان دونوں بھیانک ھتھیاروں میں یہ بہت بڑی کمی ھے . جس طرح شیر کی چھاتی بے حد کمزور ھوتی ھے ویسے ان دونو بھیانک بموں کا دل بے حد کمزور ھے . یہ دونوں بم اپنے دیش کو کھڑے کھڑے برباد ھوتے دیکھتے رھیں گے اور سہمے کھڑے رھیں گے.

لندن' پیرس' اوٹاوا' ماسکو اپنے پاس ایٹم بم رکھتے ھوئے اپنی بربادی سے نہیں بچ سکتے . انہیں ان کی بربادی سے بچائے گی سب سے زیادہ ان کی تلواریں' اُن سے کم ان کی توپیں اور بندوقیں اور بیکار رھیں گے' ٹینک اُڑن قلعے اور سب سے زیادہ بیکار رھے گا ایٹم بم .

ایٹم بم ھر طرح ھر معنوں میں اگریشن کا ھتھیار ھے . جو ملک اس کے نام پر دوسرے ملک کو دھمکی دے وہ اگریسر . وہ ملک کم اگریسر نہیں جو کسی ملک کی دوسرے ملک پر ایٹم بم کی دھمکی سن کر چپ رہ جائے اور اس کے خلاف آواز نہ اٹھائے ! یو . نو . سنستھا بھی اگریسر ھونے کے الزام سے نہیں بچ سکتی اگر یہ اس ملک کو نہ دھمکائے جس نے کسی دوسرے ملک پر ایٹم بم گرانے کی دھمکی دی ھو .

चीनिया, जर्मनी तो आज तक शामिल नहीं हैं. एक तरह से सारी दुनिया की एक तिहाई आबादी की यह यूनो नाम धारी पंचायत अभी तक नुमाइन्दगी यानी प्रतिनिधित्व नहीं करती और कुल दुनिय की पंचायत बनी हुई है.

यह नाम धारी पंचायत लीग की तरह एक दिन अपना दम तो तोड़ेगी, क्या अच्छा हो अगर दम तोड़ने से पहले, यह एक आवाज़ ज़ोर की उठा दे कि जो हथियार किसी तरह रक्षोपकरन नहीं हैं यानी रक्षा के काम नहीं आते वह कोरे हिंसोपकरन हैं यानी दूसरे मुल्कों पर फेंकने के काम आ सकते हैं. वह सब हथियार एग्रेशन करने वाले माने जायं और जिन जिन के पास हथियार है वह सब अग्रेसर क़रार दे दिये जायं.

रक्षोपकरन और हिंसोपकरन से हमारा क्या मतलब है, उसको हम साफ़ कर देना चाहते हैं.

आदमी ने जिन हथियारों को अपनी जान बचाने के लिए तैयार किया वह सब हथियार रक्षोपकरन हैं. यह दूसरी बात है कि रक्षोपकरन से भी हिंसोपकरन का काम लिया जाता है. यह बात सब की समझ में आ जाय, इसलिये हम इसको यूं साफ़ किये देते हैं कि चाक़ू एक उपकरन है, चाक़ू से जब क़लम बनाया जाय तब वह ज्ञानोप करन कहलाएगा. ज्ञानोपकरन माने ज्ञान का औज़ार उसी चाक़ू से जब फोड़ा चीरने के लिए नश्तर का काम लिया जाय, तब वह रक्षोप करन कहलाएगा यानी बचाव का औज़ार. उसी चाक़ू से जब किसी की गर्दन मारी जाय तब वह हिंसोपकरन कहलाएगा यानी जान लेने वाला औज़ार.

हमारी ऊपर की कसौटी पर जब हमने सारे हथियारों को कसा तब अकेला एटम बम ही ऐसा हथियार निकला जो हर तरह हर माने में हिंसोपकरन है.

तलवार, छुरी, भाले हमला करने में काम आ सकते हैं और इस नाते हिंसोपकरन कहे जा सकते हैं, पर उनसे अपना बचाव भी किया जाता है. इस नाते रक्षोपकरन हैं. असल में यह हथियार जब बने थे, तब जान बचाने की नियत से बने थे.

आग के हथियार जैसे बन्दूक़ और तोप यह हमले के काम में आ सकते हैं और आते हैं, पर इनसे ज़ियादातर काम बचाव का ही लिया जाता है. एक मुल्क अपने ऊपर दूसरे मुल्क की चढ़ाई के समय अपने क़िलों पर जो तोपें चढ़ाता है वह बचाव के लिए होती हैं. हमले के लिए नहीं. इसलिये तोप बन्दूक़ भी कभी रक्षोपकरन होते हैं. सचमुच इनकी ईजाद भी आदमी ने जंगली जानवरों से बचने के लिये की.

टैंक बैंक बहुत कम रक्षोपकरन और बहुत ज़ियादा हिंसोपकरन हैं. तलवार बन्दूक़ की तरह कोई मुल्क अपने

تھے. کوریا جرمنی تو آج تک شامل نہیں ہیں. ایک طرح سے ساری دنیا کی ایک تہائی آبادی کی یہ یونو نام دھاری پنچایت ابھی تک نمائندگی یعنی پرتی نیدھتو نہیں کرتی اور کل دنیا کی پنچایت بنی ہوئی ہے.

یہ نام دھاری پنچایت لیگ کی طرح ایک دن اپنا دم تو توڑے گی، کیا ہی اچھی ہو اگر دم توڑنے سے پہلے، یہ ایک آواز زور کی اٹھا دے کہ جو ہتھیار کسی طرح رکھشوپکرن نہیں ہیں یعنی رکھشا کے کام نہیں آتے وہ کورے ہنسوپکرن ہیں یعنی دوسرے ملکوں پر پھینکنے کے کام آسکتے ہیں. وہ سب ہتھیار اگریشن کرنے والے مانے جائیں اور جن جن کے پاس ہتھیار ہے وہ سب اگریسر قرار دے دئے جائیں.

رکھشوپکرن اور ہنسوپکرن سے ہمارا کیا مطلب ہے، اس کو ہم صاف کر دینا چاہتے ہیں.

آدمی نے جن ہتھیاروں کو اپنی جان بچانے کے لئے تیار کیا وہ سب ہتھیار رکھشوپکرن ہیں. یہ دوسری بات ہے کہ رکھشوپکرن سے بھی ہنسوپکرن کا کام لیا جاتا ہے. یہ بات سب کی سمجھ میں آجائے اس لئے ہم اس کو یوں صاف کئے دیتے ہیں کہ چاقو ایک اپکرن ہے، چاقو سے جب قلم بنایا جائے تب وہ گیان اپکرن کہلائے گا. گیان اپکرن معنی گیان کا اوزار. اسی چاقو سے پھوڑا چیرنے کے لئے نشتر کا کام لیا جائے تب وہ رکھشوپکرن کہلائے گا یعنی بچاؤ کا اوزار. اسی چاقو سے جب کسی کی گردن ماری جائے تب وہ ہنسو اپکرن کہلائے گا یعنی جان لینے والا اوزار.

ہماری اوپر کی کسوٹی پر جب ہم نے سارے ہتھیاروں کو کسا تب اکیلا ایٹم بم ہی ایسا ہتھیار نکلا جو ہر طرح ایک معنے میں ہنسوپکرن ہے.

تلوار، چھری، بھالے حملہ کرنے میں کام آسکتے ہیں اور اس ناتے ہنسوپکرن کہے جاسکتے ہیں، پر ان سے اپنا بچاؤ بھی کیا جاتا ہے، اس ناتے رکھشوپکرن ہیں. اصل میں یہ ہتھیار جب بنے تھے، تب جان بچانے کی نیت سے بنے تھے.

آگ کے ہتھیار جیسے بندوق اور توپ یہ حملے کے کام میں آسکتے ہیں اور آتے ہیں، پر ان سے زیادہ تر کام بچاؤ کا ہی لیا جاتا ہے. ایک ملک اپنے اوپر دوسرے ملک کی چڑھائی کے سمے اپنے قلعوں پر جو توپیں چڑھاتا ہے وہ بچاؤ کے لئے ہوتی ہیں، حملے کے لئے نہیں. اس لئے توپ بندوق بھی کبھی کبھی رکھشوپکرن ہوتے ہیں. سچ مچ ان کی ایجاد بھی آدمی نے جنگلی جانوروں سے بچنے کے لئے کی.

ٹینک بینک بہت کم رکھشوپکرن اور بہت زیادہ ہنسوپکرن ہے. تلوار بندوق کی طرح کوئی ملک اپنے

यह झगड़े होते रहेंगे, खून खराबा होता रहेगा, बदअमनियां मचती रहेंगी जब तक साम्राजी ताक़तें अपना क़दम वहां जमाए हैं. ईरानी जनता को चाहिये कि शाह और मुसद्दिक़ के झगड़े को छोड़ कर वह इन साम्राजियों को पकड़े और इन्हें देश निकाला देने में पूरी ताक़त लगा दे. इसी में उसका भला है और इसी तरह ईरान में शान्ति क़ायम हो सकती है !

—मुजीब रिज़वी

یہ جھگڑے ہوتے رہیں گے، خون خرابہ ہوتا رہے گا، بدامنیاں مچتی رہیں گی جب تک سامراجی طاقتیں اپنا قدم وہاں جمائے ہیں۔ ایرانی جنتا کو چاہئے کہ شاہ اور مصدق کے جھگڑے کو چھوڑ کر وہ ان سامراجیوں کو پکڑے اور انہیں دیش نکالا دینے میں پوری طاقت لگا دے۔ اسی میں اس کا بھلا ہے اور اسی طرح ایران میں شانتی ہو سکتی ہے !

—مجیب رضوی

एटम बम और यूनो

लीग की तरह यूनो भी सिसक सिसक कर अपना जीवन बिता रही है. लीग अंगरेज़ों के हाथ की कठपुतली बन कर दूसरी लड़ाई का कारन हुई, यूनो अमरीकियों के हाथ का खिलौना बन कर दुनिया की तीसरी लड़ाई बुलाकर रहेगी.

तीसरी लड़ाई के बीज उस वक़्त बो दिए गए थे, जब जर्मनी कई ताक़तों में बांटा गया, कोरिया के दो टुकड़े किये गए, जापान में अमरीकी हवाई अड्डे बनाए गए और फ़ारमोसा को चीन से अलग कर के उसके चारों तरफ़ अमरीका ने जहाज़ी घेरा डाला.

यूनो के देखते देखते यह बीज चीन की घरेलू लड़ाई के रूप में किल्ले फोड़ने को तैयार है और जल्दी ही ऐसे ही किल्ले जर्मनी में फूट निकलने वाले हैं.

यूनो होनी तो इसलिये चाहिये कि वह दुनिया की फ़ौजी ताक़तों का संतोल बनाए रक्खे पर जाने अनजाने वह इस संतोल को जल्दी ही बिगाड़ देती है और शान्ति की संस्था होने की जगह लड़ाई की संस्था बन बैठती है. ऐसा क्यों हो जाता है ? इसकी वजह इसके सिवाय क्या हो सकती है कि लीग और यूनो जैसी कुल दुनिया पंचायत जन्म लेती हैं उन ताक़तों के हाथ से जो लड़ाई मिन्न होते हैं और जिनका पलड़ा दुनिया की लड़ाई में भारी होता रहा है. कुल दुनिया की पंचायत शान्ति रखने में उस वक़्त तक कामयाब नहीं हो सकती जब तक वह या तो लोकशाही ढंग से न बनाई गई हो या उन हथियारों को दुनिया से बिल्कुल नेस्त नाबूद न कर दें, जो किसी भी तरह रक्षोपकरन यानी रक्षा के हथियार नहीं हैं.

यूनो लोक शाही ढंग की बनाई हुई पंचायत नहीं है. क्योंकि उसको दुनिया के सब मुल्कों के नुमाइन्दों ने इकट्ठे होकर कभी उसको कोई दस्तूर बना कर नहीं दिया. चीन जैसा बड़ा मुल्क उसमें शामिल नहीं. बनते वक़्त जर्मनी, जापान, कोरिया जैसे नामवर छोटे मुल्क भी शामिल नहीं थे.

ایٹم بم اور یونو

لیگ کی طرح یونو بھی سسک سسک کر اپنا جیون بتا رہی ہے۔ لیگ انگریزوں کے ہاتھ کی کٹھپتلی بن کر دوسری لڑائی کا کارن ہوئی، یونو امریکیوں کے ہاتھ کا کھلونا بن کر دنیا کی تیسری لڑائی بلا کر رہے گی۔

تیسری لڑائی کے بیج اس وقت بو دئے گئے تھے، جب جرمنی کئی طاقتوں میں بانٹا گیا، کوریا کے دو ٹکڑے کئے گئے، جاپان میں امریکی ہوائی اڈے بنائے گئے اور فارموسا کو چین سے الگ کر کے اس کے چاروں طرف امریکہ نے جہازی گھیرا ڈالا۔

یونو کے دیکھتے دیکھتے یہ بیج چین کے گھریلو لڑائی کے روپ میں کلے پھوڑ نے کو تیار ہے اور جلدی ہی ایسے ہی کلے جرمنی میں پھوٹ نکلنے والے ہیں۔

یونو ہونی تو اس لئے چاہئے کہ وہ دنیا کی فوجی طاقتوں کا سنتول بنائے رکھے پر جانے انجانے وہ اس سنتول کو جلدی ہی بگاڑ دیتی ہے اور شانتی کی سنستھا ہونے کی جگہ لڑائی کی سنستھا بن بیٹھتی ہے۔ ایسا کیوں ہو جاتا ہے ؟ اس کی وجہ اس کے سوائے کیا ہو سکتی ہے کہ لیگ اور یونو جیسی کل دنیا پنچایت جنم لیتی ہیں ان طاقتوں کے ہاتھ سے جو لڑائی جیتے ہوتے ہیں اور جن کا پلڑا دنیا کی لڑائی میں بھاری ہوتا رہا ہے۔ کل دنیا کی پنچایت شانتی رکھنے میں اس وقت تک کامیاب نہیں ہو سکتی جب تک وہ یا تو لوک شاہی ڈھنگ سے نہ بنائی گئی ہو یا ان ہتھیاروں کو دنیا سے بالکل نیست و نابود نہ کر دیں، جو کسی بھی طرح رکشا اپکرن یعنی رکشا کے ہتھیار نہیں ہیں۔

یونو لوک شاہی ڈھنگ کی بنائی ہوئی پنچایت نہیں ہے کیونکہ اس کو دنیا کے سب ملکوں کے نمائندوں نے اکٹھے ہو کر کبھی اس کو کوئی دستور بنا کر نہیں دیا۔ چین جیسا بڑا ملک اس میں شامل نہیں۔ بنتے وقت جرمنی، جاپان، کوریا جیسے نامور چھوٹے ملک بھی شامل نہیں

को यह बात बुरी लगी और उन्होंने एलान कर दिया कि वह ईरान छोड़ कर चले जायंगे.

इस एलान के बाद तेहरान में एक तहलका मच गया. डाक्टर मुसद्दिक़ का घर घेर लिया गया, हर सड़क पर प्रदर्शन होने लगे. एक तरफ़ शाह के हमदर्द होते थे और दूसरी तरफ़ डाक्टर मुसद्दिक़ ने फ़ौरन ही हालत पर क़ाबू पा लिया और चीफ़ आफ़ स्टाफ़ को और 17 फ़ौजी अफ़सरों को गिरफ़्तार कर लिया. इन लोगों पर चार्ज यह है कि उन्होंने भीड़ को दबाने के बजाय उसे और शह दी. शाह से हमदर्दी रखने वाले पुलिस के अफ़सरों को भी अलग कर दिया है. तेहरान की हालत अब भी नाज़ुक है और जगह जगह शाह के हमदर्दों और मुसद्दिक़ के हमदर्दों में टकराव हो रहा है.

शाह ने देश छोड़ने का फ़ैसला अब वापस ले लिया है. शाह ने यह क़दम इसलिये उठाया था कि उन्हें अपने असर का अन्दाज़ा हो जाय. इन झगड़ों से पता चल गया कि मौक़ा पड़ने पर कुछ लोग शाह का साथ दे सकते हैं और उनकी हालत शाह फ़ारूक़ की सी न होगी डाक्टर मुसद्दिक़ ने भी इस बात को शायद समझ लिया है और वह शाह को जनता के हाथों ही शिकस्त देना चाहते हैं. इस समय सरकार उनके हाथ में है, और इन कुछ दिनों में उन्होंने फ़ौज और पुलिस पर भी क़ब्ज़ा जमा लिया है, जनता उनके साथ है ही. वह चाहें तो जनरल नजीब की तरह शाह के महल को घेर सकते हैं. इस समय डाक्टर मुसद्दिक़ का विरोध ज़रूर होगा लेकिन रिपोर्टों से पता चलता है कि अगर वह ऐसा करें तो जीत उनकी ही होगी. लेकिन उन्होंने जनरल नजीब का रास्ता नहीं अपनाया. उन्होंने मजलिस से कहा है कि वह उन्हें पूरे पूरे अधिकार दे नहीं तो वह जनता की राय इस सवाल पर मांगेंगे. अगर जनता ने डाक्टर मुसद्दिक़ का साथ दिया तो इसका मतलब यह होगा कि शाह के सहयोगी ढीले पड़ जायंगे और उनके मनसूबों को धक्का लगेगा और फिर शाह को सचमुच ही देश छोड़ना पड़ेगा. ऐसी कामयाबी डाक्टर मुसद्दिक़ के लिये एशियाई देशों की जनता में सद्भावना पैदा करेगी और अगर उनको नाकामयाबी भी हुई तो भी उनकी इज़्ज़त लोगों की नज़रों में बढ़ेगी.

सामराजवाद अब इस नतीजे पर पहुँचा है कि शाह और डाक्टर मुसद्दिक़ दोनों का असर ईरान पर है और दोनों की लड़ाई में सामराज का फ़ायदा नहीं है. उन्होंने साफ़ देख लिया है कि इस समय शाह और डाक्टर मुसद्दिक़ का मेल उनके हित में है. अमरीका के राजदूत मिस्टर हेन्डरसन ने डाक्टर मुसद्दिक़ से घंटों बातें की हैं और कोशिश जारी है कि शाह और डाक्टर मुसद्दिक़ मिल जायं.

تو یہ بری لگی اور انہوں نے اعلان کر دیا کہ وہ ایران چھوڑ کر چلے جائینگے۔

اس اعلان کے بعد طہران میں ایک تہلکہ مچ گیا۔ ڈاکٹر مصدق کا گھر گھیر لیا گیا، ہر سڑک پر پردرشن ہونے لگے۔ ایک طرف شاہ کے ہمدرد ہوتے تھے اور دوسری طرف ڈاکٹر مصدق نے فوراً ہی حالت پر قابو پا لیا اور چیف آف اسٹاف کو اور 17 فوجی افسروں کو گرفتار کر لیا۔ ان لوگوں پر چارج یہ ہے کہ انہوں نے بھیڑ کو دبانے کے بجائے اسے اور شہ دی۔ شاہ سے ہمدردی رکھنے والے پولیس کے افسروں کو بھی الگ کر دیا ہے۔ طہران کی حالت اب بھی نازک ہے اور جگہ جگہ شاہ کے ہمدردوں اور مصدق کے ہمدردوں میں ٹکراؤ ہو رہا ہے۔

شاہ نے دیش چھوڑنے کا فیصلہ اب واپس لے لیا ہے۔ شاہ نے یہ قدم اس لئے اٹھایا تھا کہ انہیں اپنے اثر کا اندازہ ہو جائے۔ ان جھگڑوں سے پتہ چل گیا کہ موقع پڑنے پر کچھ لوگ شاہ کا ساتھ دے سکتے ہیں اور ان کی حالت شاہ فاروق کی سی نہ ہوگی۔ ڈاکٹر مصدق نے بھی اس بات کو شاید سمجھ لیا ہے اور وہ شاہ کو جنتا کے ہاتھوں ہی شکست دینا چاہتے ہیں اس سمے سرکار ان کے ہاتھ میں ہے، اور ان کچھ دنوں میں انہوں نے فوج اور پولیس پر بھی قبضہ جما لیا ہے، جنتا ان کے ساتھ ہے ہی۔ وہ چاہیں تو جنرل نجیب کی طرح شاہ کے محل کو گھیر سکتے ہیں۔ اس سمے ڈاکٹر مصدق کا ورودھ ضرور ہوگا لیکن رپورٹوں سے پتہ چلتا ہے کہ اگر وہ ایسا کریں تو جیت ان کی ہی ہوگی۔ لیکن انہوں نے جنرل نجیب کا راستہ نہیں اپنایا۔ انہوں نے مجلس سے کہا ہے کہ وہ انہیں پورے پورے ادھیکار دے نہیں تو وہ جنتا کی رائے اس سوال پر مانگیں گے۔ اگر جنتا نے ڈاکٹر مصدق کا ساتھ دیا تو اس کا مطلب یہ ہوگا کہ شاہ کے سہیوگی ڈھیلے پڑ جائیں گے اور ان کے منصوبوں کو دھکا لگے گا اور پھر شاہ کو سچ مچ ہی دیش چھوڑنا پڑے گا۔ ایسی کامیابی ڈاکٹر مصدق کے لئے ایشیائی دیشوں کی جنتا میں سدبھاؤنا پیدا کرے گی اور اگر ان کو ناکامیابی بھی ہوئی تو بھی ان کی عزت لوگوں کی نظروں میں بڑھے گی۔

سامراج واد اب اس نتیجے پر پہونچا ہے کہ شاہ اور ڈاکٹر مصدق دونوں کا اثر ایران پر ہے اور دونوں کی لڑائی میں سامراج کا فائدہ نہیں ہے۔ انہوں نے صاف دیکھ لیا ہے کہ اس سمے شاہ اور ڈاکٹر مصدق کا میل ان کے ہت میں ہے۔ امریکہ کے راج دوت مسٹر ہنڈرسن نے ڈاکٹر مصدق سے گھنٹوں باتیں کی ہیں اور کوشش جاری ہے کہ شاہ اور ڈاکٹر مصدق مل جائیں۔

शाह से नहीं उन्हें बचा सकते हैं. तेल के राष्ट्री करन के फ़ैसले को रद्द न करके कुछ ऐसा बीच का रास्ता निकालने में कोई हरज नहीं है कि बरतानिया फिर ईरानी तेल के कारखाने चलाने लगे और ईरान की माली हालत दुरुस्त हो. अमरीका से फ़ौजी समझौता करने में और डालर की मदद लेने में फ़ायदा ही फ़ायदा है.

डाक्टर मुसद्दिक़ का कहना है : अब सवाल समझौते का नहीं है बल्कि समय का है. समय ही ख़ुद फ़ैसला कर देगा. जो देश सब्र से काम लेगा वह जीतेगा. इस बड़े फ़ायदे के लिये इन्तज़ार करना पड़ेगा. इस इन्तज़ार में क़ुरबानी भी देनी पड़ेगी. इसलिये ज़रूरी है कि हम ख़र्च कम करें, ज़ियादा से ज़ियादा सरकार को दें ताकि काम चलता रहे. कुछ अरसे के बाद सब ठीक हो जायगा और तेल का सारा फ़ायदा हम को मिलेगा.

शाह ने कोशिश की कि उनकी चले और मुसद्दिक़ रास्ते से हट जायं. उन्होंने मजलिस को आदेश दिया कि वह क़वामुस्सलतनत को बड़ा वज़ीर चुने. क़वामुस्सलतनत दो रोज़ भी राज न कर पाए. जनता उमड़ पड़ी और उसने मजलिस को अपना फ़ैसला वापस लेने के लिये मजबूर कर दिया. क़वामुस्सलतनत कहीं नज़र बन्द कर दिये गए और डाक्टर मुसद्दिक़ ने मांग की कि उन्हें ग़ैर मामूली ताक़तें मजलिस दे दे. मजलिस को देना पड़ा. शाह की हार हुई सो हुई. उनके अधिकारों पर भी असर पड़ा. फ़ौज तक डाक्टर मुसद्दिक़ ने अपने क़ब्ज़े में कर ली और बहुत से अफ़सरों को रिटायर कर दिया.

इस घटना से अमरीकी पालिसी में तबदीली आई. अमरीका का कहना था : शाह की मुसद्दिक़ के सामने कोई हक़ीक़त नहीं है.—शाह और मुसद्दिक़ के टकराव में शाह के साथ देने से कमयुनिज़्म मज़बूत होगा और मुसद्दिक़ का साथ देने में असरदार कम्युनिस्ट विरोधी हथियार लगेगा. बरतानिया वालों की राय दूसरी थी—मुसद्दिक़ ज़िद में ईरान की माली हालत बिगाड़ते जायंगे और आख़ीर में कम्युनिज़्म आ जायगा. नतीजा यह हुआ कि अमरीकी डाक्टर मुसद्दिक़ पर ज़ियादा डोरे डालने और बरतानिया वालों ने शाह पर असर डालने की कोशिश की.

देश की माली हालत बिगड़ रही है. इसे ठीक रखने के लिये डाक्टर मुसद्दिक़ ने एक बड़ी हद तक ख़र्च घटा दिया. बड़े अफ़सरों की तनख़ाहें भी कम कर दी गईं. डाक्टर मुसद्दिक़ ने शाह की जायदाद पर भी इनकम टैक्स लगवा दिया और जो रक़म शाह को दान के मद में हर महीने मिलती थी उसे बन्द करा दिया. ईरान मुसीबत में था और शाह का कर्तव्य था कि पूरी क़ुरबानी कर के वह डाक्टर मुसद्दिक़ के इस नेक काम में उनका साथ देते. लेकिन शाह

باوجود سے بھی انہیں بچا سکتے ہیں. تیل کے راشٹری کرن کے فیصلے کو رد نہ کر کے کچھ ایسا بیچ کا راستہ نکالنے میں کوئی حرج نہیں ہے کہ برطانیہ پھر ایرانی تیل کے کارخانے چلانے لگے اور ایران کی مالی حالت درست ہو. امریکہ سے فوجی سمجھوتہ کرنے میں اور ڈالر کی مدد لینے میں فائدہ ہی فائدہ ہے.

ڈاکٹر مصدق کا کہنا ہے : اب سوال سمجھوتے کا نہیں ہے بلکہ سمے کا ہے . سمے ہی خود فیصلہ کر دے گا . جو دیش صبر سے کام لے گا وہ جیتے گا . اس بڑے فائدے کے لئے انتظار کرنا پڑے گا. اس انتظار میں قربانی بھی دینی پڑے گی . اس لئے ضروری ہے کہ ہم خرچ کم کریں، زیادہ سے زیادہ سرکار کو دیں تاکہ کام چلتا رہے . کچھ عرصے کے بعد سب ٹھیک ہو جائے گا اور تیل کا سارا فائدہ ہم کو ملے گا .

شاہ نے کوشش کی کہ اُن کی چلے اور مصدق راستے سے ہٹ جائیں . اُنہوں نے مجلس کو آدیش دیا کہ وہ قوام السلطنت کو بڑا وزیر چنے . قوام السلطنت دو روز بھی راج نہ کر پائے . جنتا امڈ پڑی اور اُس نے مجلس کو اپنا فیصلہ واپس لینے کے لئے مجبور کر دیا . قوام السلطنت کہیں نظر بند کر دیئے گئے اور ڈاکٹر مصدق نے مانگ کی کہ انہیں غیر معمولی طاقتیں مجلس دے دے . مجلس کو دینا پڑا . شاہ کی ہار ہوئی سو ہوئی . اُن کے ادھیکاروں پر بھی اثر پڑا . فوج تک ڈاکٹر مصدق نے اپنے قبضے میں کر لی اور بہت سے افسروں کو ریٹائر کر دیا .

اِس گھٹنا سے امریکی پالیسی میں تبدیلی آئی . امریکہ کا کہنا تھا : شاہ کی مصدق کے سامنے کوئی حقیقت نہیں ہے—شاہ اور مصدق کے ٹکراؤ میں شاہ کے ساتھ دینے کے کمیونزم مضبوط ہوگا اور مصدق کا ساتھ دینے میں اثردار کمیونسٹ ورودھی ہتھیار ہاتھ لگے گا . برطانیہ والوں کی رائے دوسری تھی—مصدق ضد میں ایران کی مالی حالت بگاڑتے جائیں گے اور آخیر میں کمیونزم آ جائے گا . نتیجہ یہ ہوا کہ امریکی ڈاکٹر مصدق پر زیادہ ڈورے ڈالنے لگے اور برطانیہ والوں نے شاہ پر اثر ڈالنے کی کوشش کی .

دیش کی مالی حالت بگڑ رہی ہے . اسے ٹھیک رکھنے کے لئے ڈاکٹر مصدق نے ایک بڑی حد تک خرچ گھٹا دیا . بڑے افسروں کی تنخواہیں بھی کم کر دی گئیں . ڈاکٹر مصدق نے شاہ کی جائداد پر بھی انکم ٹیکس لگوا دیا اور جو رقم شاہ دان کے مد میں ہر مہینے ملتی تھی اُسے بند کرا دیا . ایران مصیبت میں تھا اور شاہ کا کرتبھا تھا کہ پوری قربانی کر کے وہ ڈاکٹر مصدق کے اس نیک کام میں اُن کا ساتھ دیتے . لیکن شاہ

मिट नहीं सकता है और देश को रेहन नहीं रख सकता है ? घटनायें ऐसी सामने आ रही हैं कि जिसे हम बरतानी सामराज का दुश्मन समझते हैं वह अमरीकी सामराज का मित्र बन जाता है और जो अमरीकी सामराज के खिलाफ़ ज़हर उगलता है वह बरतानिया का साथ देता है एक के चंगुल से बचने के लिये यह मुल्क दूसरे सामराज का सहारा लेते हैं. लेकिन नतीजे में और बुरी तरह से चंगुल में फंस जाते हैं.

शाह और डाक्टर मुसद्दिक़ का मतभेद छै महीने पहले शुरू हुआ था. उसके कारन दो ही हो सकते हैं: एक, मुसाहिबों ने शाह के कान भरे होंगे कि मुसद्दिक़ शाही ख़ानदान को मिटाने की कोशिश कर रहे हैं और उनकी साज़िश ख़तम करने के लिये उन्हें बड़े वज़ीर के पद से हटा दिया जाय. इस बात का गहरा असर भी शाही ख़ानदान के लोगों पर दिखाई पड़ता है. इस अरसे में शाह के कई रिश्ते के भाई और बहनें मुल्क छोड़ कर चली गई हैं और विदेशों में रहने लगी हैं. लेकिन डाक्टर मुसद्दिक़ की किसी बात से यह पता नहीं चलता कि वह शाह को ख़तम करके ईरान को रिपब्लिक बनाना चाहते हैं. काफ़ी अख़बारों और असरदार लोगों का ख़याल है कि वह शाह के भक्त हैं, पर यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिये कि मौजूदा शाह के पिता ने डाक्टर मुसद्दिक़ को नज़र बन्द किया था और डाक्टर मुसद्दिक़ आख़िर समय तक उनका विरोध करते रहे थे. बहरहाल ईरान के अन्दर क्या सूरत हो लेकिन बाहर की दुनिया को मुसद्दिक़ की तरफ़ से शाह के लिये किसी ख़तरे का आभास नहीं होता.

दूसरे, विदेशी एजेन्टों ने शाह के कान भरे होंगे—देश की माली हालत बिगड़ रही है, सारा देश ग़रीबी का शिकार है, माली व्यवस्था छिन्न भिन्न पड़ी है. ऐसी हालत में कम्युनिज़्म ताक़त पकड़ता है. कम्युनिज़्म को रोकना है तो फ़ौरन ईरान की माली हालत दुरुस्त हो जानी चाहिये. इस माली हालत को सुधारने के दो उपाय हैं: बरतानिया का कहना है कि ज़िद और हट को छोड़ कर समझौता कर लिया जाय और उसे फिर ईरान में तेल के कारख़ाने चलाने की इजाज़त मिल जाय. इस बार वह नफ़े का एक बड़ा हिस्सा तक ईरान को देने को तैयार है. अमरीका का कहना है कि वह डालर से ईरान की मदद करने को तैयार है, विश्व बैंक से भी क़र्ज़ दिलवा सकता है. इस तरह ईरान अपनी माली हालत दुरुस्त करके कम्युनिज़्म को दबा सकेगा. डाक्टर मुसद्दिक़ को घेर घार कर वाशिंगटन ले भी जाया गया है और बात भी चलाई गई है लेकिन अभी तक कोई समझौता नहीं हो पाया है.

शाह को साफ़ दिखाई पड़ रहा है : बरतानिया और अमरीका की दोस्ती में ही भला है और कम्युनिज़्म की

سکتا ہے اور دیش کو رہن نہیں رکھ سکتا ہے ؟ گھٹنائیں ایسی سامنے آرہی ہیں کہ جسے ہم برطانی سامراج کا دشمن سمجھتے ہیں وہ امریکی سامراج کا متر بن جاتا ہے اور جو امریکی سامراج کے خلاف زہر اُگلتا ہے وہ برطانیہ کا ساتھ دیتا ہے. ایک کے چنگل سے بچنے کے لئے یہ ملک دوسرے سامراج کا سہارا لیتے ہیں لیکن نتیجے میں اور بری طرح سے چنگل میں پھنس جاتے ہیں ۔

شاہ اور ڈاکٹر مصدق کا مت بھید چھ مہینے پہلے شروع ہوا تھا ۔ اُس کے کارن دو ہی ہوسکتے ہیں : ایک' مصاحبوں نے شاہ کے کان بھرے ہونگے کہ مصدق شاہی خاندان کو مٹانے کی کوشش کر رہے ہیں اور اُن کی سازش ختم کرنے کے لئے اُنہیں بڑے وزیر کے پد سے ہٹا دیا جائے ۔ اِس بات کا گہرا اثر بھی شاہی خاندان کے لوگوں پر دکھائی پڑتا ہے ۔ اس عرصے میں شاہ کے کئی رشتے کے بھائی اور بہنیں ملک چھوڑ کر چلی گئی ہیں اور ودیشوں میں رہنے لگی ہیں ۔ لیکن ڈاکٹر مصدق کی کسی بات سے یہ پتہ نہیں چلتا کہ وہ شاہ کو ختم کرکے ایران کو ریپبلک بنانا چاہتے ہیں ۔ کافی اخباروں اور اثردار لوگوں کا خیال ہے کہ وہ شاہ کے بھگت ہیں ۔ پر یہ بات بھی دھیان میں رکھنی چاہئے کہ موجودہ شاہ کے پتا نے ڈاکٹر مصدق کو نظر بند کیا تھا اور ڈاکٹر مصدق آخیر سمے تک اُن کا وروده کرتے رہے تھے ۔ بہرحال ایران کے اندر کیا صورت ہو لیکن باہر کی دنیا کو مصدق کی طرف سے شاہ کے لئے کسی خطرے کا آبھاس نہیں ہوتا ۔

دوسرے' ودیشی ایجنٹوں نے شاہ کے کان بھرے ہونگے — دیش کی مالی حالت بگڑ رہی ہے' سارا دیش غریبی کا شکار ہے' مالی ویوستھا چھن بھن پڑی ہے ۔ ایسی حالت میں کمیونزم طاقت پکڑتا ہے ۔ کمیونزم کو روکنا ہے تو فوراً ایران کی مالی حالت درست ہو جانی چاہئے ۔ اِس مالی حالت کو سدھارنے کے دو اُپائے ہیں : برطانیہ کا کہنا ہے کہ ضد اور ہٹ کو چھوڑ کر سمجھوتہ کرلیا جائے اور اُسے پھر ایران میں تیل کے کارخانے چلانے کی اِجازت مل جائے ۔ اِس بار وہ نفع کا ایک بڑا حصہ تک ایران کو دینے کو تیار ہے ۔ امریکہ کا کہنا ہے کہ وہ ڈالر سے ایران کی مدد کرنے کو تیار ہے' وشو بینک سے بھی قرض دلوا سکتا ہے ۔ اس طرح ایران اپنی مالی حالت درست کرکے کمیونزم کو دبا سکے گا ۔ ڈاکٹر مصدق کو گھیر گھار کر واشنگٹن لے بھی جایا گیا ہے اور بات بھی چلائی گئی ہے لیکن ابھی تک کوئی سمجھوتہ نہیں ہو پایا ہے ۔

شاہ کو صاف دکھائی پڑ رہا ہے : برطانیہ اور امریکہ کی دوستی میں ہی بھلا ہے اور کمیونزم کی

डाक्टर मुसद्दिक़ और शाह

जहां तेल के कुएं होते हैं, जहां सामराजवाद के पैर जमे होते हैं, जहां शाह और उनके मुसाहिब होते हैं वहां साज़िशें हुआ ही करती हैं. ईरान की बदक़िस्मती है कि यह तीनों की तीनों वहां मौजूद हैं. डाक्टर हुसैन फ़ातमी ने कहा कि इन दुर्घटनाओं के पीछे विदेशियों का हाथ है. डाक्टर मुसद्दिक़ ने भी शाह पर इलज़ाम लगाया है कि वह बिना उनकी जानकारी के विदेशी प्रतिनिधियों से सांठ गांठ किया करते हैं; उनका यह भी कहना है कि शाह के मुसाहिब लगातार साज़िशें कर रहे हैं. जहां तक मुसाहिबों की साज़िश का सवाल है वह विरासतन चली आती है और इसके अलावा और कोई चारा नहीं है कि ऐसी प्रथा को ही ख़तम कर दिया जाय. शाह के मुसाहिबों की एक पालिसी होती है, वह अपना असर डालने की पूरी कोशिश करते हैं और शाह जो विधानी अधिकार जनता को सौंपते हैं और उस विधान के आधार पर जो सरकार बनती है उसकी दूसरी पालिसी होती है. नतीजा यह होता है कि दोनों में लगातार टक्कर होती रहती है, मुसाहिब जनता के प्रतिनिधियों के ख़िलाफ़ शाह के कान भरते रहते हैं.

दूसरी जंग के बाद से बीच पूरब में बहुत से सियासी क़तल हो चुके हैं और हर क़तल या गड़बड़ी के पीछे विदेशी हाथ दिखाई पड़ता है. इन इलाक़ों को अमरीकी सामराजवाद बरतानिया की जायदाद समझता था लेकिन हाल की सूरत ने उसकी दिलचस्पी का रुख़ इधर भी मोड़ दिया है. एक के बजाय दो सामराजी ताक़तें साज़िशें करने पर उतर आई हैं. यह ताक़तें अपने अपने हमदर्द पैदा करती हैं, देश द्रोहियों को जन्म देती हैं और अपने रास्ते के कंकड़ों को साफ़ करने की कोशिश करती हैं. मुशकिल यह होती है कि कोई बरतानिया के रास्ते में रोड़ा बन जाता है और कोई अमरीका के. नतीजा यह होता है कि दोनों ताक़तें ऐसे लोगों को हटाने की कोशिश करती हैं. आम आदमी के लिये यह समझना मुश्किल हो जाता है कि जो बरतानिया का दुश्मन है क्या वह सचमुच जनवादी है,

ڈاکٹر مصدق اور شاہ

جہاں تیل کے کوئیں ہوتے ہیں، جہاں سامراج واد کے پیر جمے ہوتے ہیں، جہاں شاہ اور اُن کے مصاحب ہوتے ہیں وہاں سازشیں ہوا ہی کرتی ہیں۔ ایران کی بدقسمتی ہے کہ یہ تینوں کی تینوں وہاں موجود ہیں۔ ڈاکٹر حسین فاطمی نے کہا ہے کہ اِن دُرگھٹناؤں کے پیچھے ودیشیوں کا ہاتھ ہے۔ ڈاکٹر مصدق نے بھی شاہ پر الزام لگایا ہے کہ وہ بنا اُن کی جانکاری کے ودیشی پرتیندھیوں سے ساز گانٹھ کیا کرتے ہیں؛ اُن کا یہ بھی کہنا ہے کہ شاہ کے مصاحب لگاتار سازشیں کر رہے ہیں۔ جہاں تک مصاحبوں کی سازش کا سوال ہے وہ وراثتاً چلی آتی ہے اور اِس کے علاوہ اور کوئی چارہ نہیں ہے کہ ایسی پرتھا کو ہی ختم کردیا جائے۔ شاہ کے مصاحبوں کی ایک پالیسی ہوتی ہے، وہ اپنا اثر ڈالنے کی پوری کوشش کرتے ہیں اور شاہ جو ودھانی ادھیکار جنتا کو سونپتے ہیں اور اُس ودھان کے آدھار پر جو سرکار بنتی ہے اُس کی دوسری پالیسی ہوتی ہے۔ نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ دونوں میں لگاتار ٹکر ہوتی رہتی ہے، مصاحب جنتا کے پرتیندھیوں کے خلاف شاہ کے کان بھرتے رہتے ہیں۔

دوسری جنگ کے بعد سے بیچ پورب میں بہت سے سیاسی قتل ہو چکے ہیں اور ہر قتل یا گڑبڑی کے پیچھے ودیشی ہاتھ دکھائی پڑتا ہے۔ اِن علاقوں کو امریکی سامراج واد برطانیہ کی جائداد سمجھتا تھا لیکن حال کی صورت نے اُس کی دلچسپی کا رُخ اِدھر بھی موڑ دیا ہے۔ ایک کے بجائے دو سامراجی طاقتیں سازشیں کرنے پر اُتر آئی ہیں۔ یہ طاقتیں اپنے اپنے ہمدرد پیدا کرتی ہیں، دیش دروہیوں کو جنم دیتی ہیں اور اپنے راستے کے کنکڑوں کو صاف کرنے کی کوشش کرتی ہیں۔ مشکل یہ ہوتی ہے کہ کوئی برطانیہ کے راستے میں روڑا بن جاتا ہے اور کوئی امریکہ کے۔ نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ دونوں طاقتیں ایسے لوگوں کو ہٹانے کی کوشش کرتی ہیں۔ عام آدمی کے لئے یہ سمجھنا مشکل ہو جاتا ہے کہ جو برطانیہ کا دشمن ہے کیا وہ سچ مچ جنوادی ہے،

यह वह भाव है जो यूनो की क़ानूनी मशीन लोगों में नहीं पैदा कर सकती !

कहा जाता है कि शान्ति कांगरेस कम्युनिस्टों का ड्रामा है. नीचे लिखा टेबिल बात साफ़ कर देता है:

नाम	तादाद नुमाइन्दा	नाम	तादाद नुमाइन्दा
आस्ट्रिया	102	रूस	52
फ्रांस	174	भारत	30
बरतानिया	156	अमरीका	27
जरमनी	119	चीन	60
इटली	192	यूगोस्लाविया	12

रूस के कुल 52 नुमाइन्दे शान्ति कांगरेस में हिस्सा ले रहे थे जब कि ग़ैर कम्युनिस्ट मुलकों के नुमाइन्दों का ज़बरदस्त बहुमत था. चीन और भारत के नुमाइन्दों ने इस कांगरेस पर ज़बरदस्त असर डाला. भारत के एक नुमाइन्दे का कहना है कि शान्ति कांगरेस पर अगर किसी का असर था तो वह चीन और भारत के नुमाइन्दों का था.

डाक्टर किचलू के बोलने के बाद देर तक तालियां बजती रहीं. तालियों की गूंज में लोगों ने देखा कि एक तरफ़ से कुछ कोरियाई लड़कियां उठीं और दूसरे कोने से कुछ मलाया की लड़कियां आगे बढ़ीं. दोनों गिरोहों ने डाक्टर किचलू को बीच में ले लिया और लाल रंग के एक बड़े रेशमी थान को उनके गले में लपेट कर कोनों को दोनों तरफ़ फैला दिया. जोश में आ कर उन लड़कियों ने कुछ कहना आरम्भ किया. बहुत से लोगों को गुमान हुआ कि यह लड़कियां कहीं डाक्टर किचलू का गला न घोंट दें. बाद में पता चला कि इस कपड़े पर पंडित नेहरू के नाम एक अपील लिखी है. वह लड़कियां डाक्टर किचलू से अपील कर रही थीं: पंडित नेहरू आपके दोस्त हैं. आप उन तक पहुँच सकते हैं. हमारी आवाज़ उन तक शायद नहीं पहुँच पाएगी. आप हमारी यह अपील उन तक पहुंचा दीजिये, आप हमारी आवाज़ बन जाइये. उन से आप जा कर कहियेगा कि एशिया की बेटियां आपकी सहायता चाहती हैं. हम मलाया की ही बेटियां नहीं हैं, हम कोरिया ही की सन्तान नहीं हैं, हम भारत की भी सन्तान हैं. पंडित नेहरू से जा कर आप हमारा सन्देश दोहराइयेगा और एशिया की इज़्ज़त की दुहाई दे कर उनके सामने हमारी प्रार्थना रख दीजियेगा. उनसे कहियेगा कि वह शान्ति के अग्रदूत बन कर आगे आएं. आज उनसे बड़ी बड़ी आशाएं हैं. वह विश्व शान्ति के नेता बन कर आगे आएं, हमें लड़ाई की आग से बचाने में सहायता दें......उन तक आप हमारी यह प्रार्थना पहुंचा दीजियेगा.

काश पंडित नेहरू वहां मौजूद होते ! काश डाक्टर किचलू वह पूरा वातावरन विधाना से दिल्ली ला सकते !!

—प्रवासी

یہ وہ بھاؤ ہیں جو یونو کی قانونی مشین لوگوں میں نہیں پیدا کر سکتی !

کہا جاتا ہے کہ شانتی کانگریس کمیونسٹوں کا ڈرامہ ہے . نیچے لکھا ٹیبل بات صاف کر دیتا ہے :

نام	تعداد نمائندہ	نام	تعداد نمائندہ
آسٹریا	102	روس	52
فرانس	174	بھارت	30
برطانیہ	156	امریکہ	27
جرمنی	119	چین	60
اٹلی	192	یوگوسلاویا	12

روس کے کل 52 نمائندے شانتی کانگریس میں حصہ لے رہے تھے جب غیر کمیونسٹ ملکوں کے نمائندوں کا زبردست بہومت تھا . چین اور بھارت کے نمائندوں نے اس کانگریس پر بہت زبردست اثر ڈالا . بھارت کے ایک نمائندے کا کہنا ہے کہ شانتی کانگریس پر اگر کسی کا اثر تھا تو وہ چین اور بھارت کے نمائندوں کا تھا .

ڈاکٹر کچلو کے بولنے کے بعد دیر تک تالیاں بجتی رہیں . تالیوں کی گونج میں لوگوں نے دیکھا کہ ایک طرف سے کچھ کوریائی لڑکیاں اٹھیں اور دوسرے کونے سے کچھ ملایا کی لڑکیاں آگے بڑھیں . دونوں گروہوں نے ڈاکٹر کچلو کو بیچ میں لے لیا اور لال رنگ کے ایک بڑے ریشمی تھان کو اُن کے گلے میں لپیٹ کر کونوں کو دونوں طرف پھیلا دیا . جوش میں آ کر اُن لڑکیوں نے کچھ کہنا آرمبھ کیا . بہت سے لوگوں کو گمان ہوا کہ یہ لڑکیاں کہیں ڈاکٹر کچلو کا گلا نہ گھونٹ دیں . بعد میں پتہ چلا کہ اس کپڑے پر پنڈت نہرو کے نام ایک اپیل لکھی ہے . وہ لڑکیاں ڈاکٹر کچلو سے اپیل کر رہی تھیں : پنڈت نہرو آپ کے دوست ہیں . آپ اُن تک پہونچ سکتے ہیں . ہماری آواز اُن تک شاید نہیں پہونچ پائے گی . آپ ہماری یہ اپیل اُن تک پہونچا دیجئے، آپ ہماری آواز بن جائیے . اُن سے آپ جا کر کہیے گا کہ ایشیا کی بیٹیاں آپ کی سہائتا چاہتی ہیں . ہم ملایا کی ہی بیٹیاں نہیں ہیں، ہم کوریا ہی کی سنتان نہیں ہیں، ہم بھارت کی بھی سنتان ہیں . پنڈت نہرو سے جا کر آپ ہمارا سندیش دہرایئے گا اور ایشیا کی عزت کی دہائی دے کر اُن کے سامنے ہماری پرارتھنا رکھ دیجئے گا . اُن سے کہیے گا کہ وہ شانتی کے اگردوت بن کر آگے آئیں . آج اُن سے بڑی بڑی آشائیں ہیں . وہ وشو شانتی کے نیتا بن کر آگے آئیں، ہمیں لڑائی کی آگ سے بچانے میں سہائتا دیں...... اُن تک آپ ہماری یہ پرارتھنا پہونچا دیجئے گا .

کاش پنڈت نہرو وہاں موجود ہوتے ! کاش ڈاکٹر کچلو وہ پورا واتاورن ویانا سے دلی لا سکتے !!

—پرواسی

यही भावना थी जिसने 85 देशों के 1636 प्रतिनिधियों को एक जगह जमा कर दिया था. वह एक दूसरे का विरोध करते थे, अलग अलग व्यवस्थाओं को मानने वाले थे, पर लड़ाई का विरोध करने के लिये सब एक राय थे: सब की एक भावना थी.

यूनो और वियाना शान्ति कांगरेस में काफ़ी फ़रक़ था. यूनो में सरकार के नुमाइन्दे बैठते हैं और वियाना में जनता के आदमी शान्ति क़ायम करने के रास्ते की खोज कर रहे थे. यूनो में फ़ैसले लादे जाते हैं लेकिन शान्ति कांगरेस का जो फ़ैसला था वह सब को मान्य था. यूनो में सुलह के बजाय झगड़ा और बढ़ा दिया जाता है. यहां झगड़े का हर पहलू सुलह का रूख़ इख़्तियार कर लेता था. पुरानी दुश्मनियां लोग भूल जाते थे, मस्त हो उठते थे. शान्ति और सुलह के गीतों से हाल गूंज उठता था :

फ़्रांस और जरमनी की इतिहासी दुश्मनी चली आ रही है. ज़रा से इस्तेमाल पर भी दोनों तरफ़ की जनता आपस में लड़ सकती है, क्योंकि नफ़रत ने घर कर लिया है और वह एक दूसरे को मिटाने के लिये तैयार रहते हैं. फ़्रांस के एक बड़े विद्वान शान्ति प्रेमी ने अपने भाशन में जरमन और फ़्रांस के नवयुवकों से अपील की कि वह आपसी नफ़रत को भूल जायं, एक हो जायं, मानव हित के लिये छोटे मोटे फ़रक़ों को ख़तम कर दें. बोलने वाला अभी बैठ भी न पाया था कि तालियां बजने लगीं. लोग खड़े हो गए, तालियां बजती रहीं. इन्हीं तालियों की गूंज में गानों की आवाज़ सुनाई दी. एक तरफ़ फ़्रांसीसी लड़के लड़कियां थे और दूसरी तरफ़ जरमन नौजवान. दोनों गा रहे थे, एक दूसरे से अपील कर रहे थे, प्रन कर रहे थे—वह नहीं लड़ेंगे, वह एक दूसरे का ख़ून नहीं बहाएंगे, वह मिल कर, एक हो कर विश्व शान्ति की रक्षा करेंगे, अपनी रक्षा करेंगे, अपने देशों की रक्षा करेंगे, अपने साहित्य और कला की रक्षा करेंगे, उन सब की रक्षा करेंगे जो उनके पास जो उनके पास धरोहर है !

मलाया की एक लड़की बोलने के लिये खड़ी हुई. उसने किसी को गाली नहीं दी, किसी को बुरा भला नहीं कहा. केवल घटनाएं दुहराती रही. ब्रिटिश और मलाया के नुमाइन्दे दूर दूर बैठे हुए थे. लेकिन मलाया की लड़की ने जैसे ही तक़रीर ख़तम की लोगों ने देखा कि इंगलैंड के एक पादरी ने उस लड़की को गोद में उठा लिया है. वह नाच रहा है. सारा हाल खड़ा हो गया. एक गंभीर वातावरन छा गया. पादरी ने जब उस लड़की को गोद से अलग किया तो ऐसा सीन था जैसे बाप बेटी को विदा दे रहा हो—दोनों की आंखें छलछला उठी थीं. दोनों की आंखें नफ़रत को भूल कर प्रेम का अमृत बरसा रही थीं.

یہی بھاونا تھی جس نے 85 دیسوں کے 1636 پرتینِدھیوں کو ایک جگہ جمع کر دیا تھا ۔ وہ ایک دوسرے کا ورودھ کرتے تھے، الگ الگ ویوستھاؤں کو ماننے والے تھے، پر لڑائی کا ورودھ کرنے کے لئے سب ایک رائے تھے، سب کی ایک بھاونا تھی ۔

یونو اور ویانا شانتی کانگریس میں کافی فرق تھا ۔ یونو میں سرکار کے نمائندے بیٹھتے ہیں اور ویانا میں جنتا کے آدمی شانتی قائم کرنے کے راستے کی کھوج کر رہے تھے ۔ یونو میں فیصلے لادے جاتے ہیں لیکن شانتی کانگریس کا جو فیصلہ تھا وہ سب کو مانیہ تھا ۔ یونو میں صلح کے بجائے جھگڑا اور بڑھا دیا جاتا ہے ۔ یہاں جھگڑے کا ہر پہلو صلح کا رخ اختیار کر لیتا تھا ۔ پرانی دشمنیاں لوگ بھول جاتے تھے، مست ہو اٹھتے تھے، شانتی اور صلح کے گیتوں سے ہال گونج اٹھتا تھا :

فرانس اور جرمنی کی اتہاسی دشمنی چلی آ رہی ہے ۔ ذرا سے اشتعال پر بھی دونوں طرف کی جنتا آپس میں لڑ سکتی ہے، کیونکہ نفرت نے گھر کر لیا ہے اور وہ ایک دوسرے کو مٹانے کے لئے تیار رہتے ہیں ۔ فرانس کے ایک بڑے ودوان شانتی پریمی نے اپنے بھاشن میں جرمن اور فرانس کے نویوکوں سے اپیل کی وہ آپسی نفرت کو بھول جائیں، ایک ہو جائیں، مانو ہت کے لئے چھوٹے موٹے فرقوں کو ختم کر دیں ۔ بولنے والا ابھی بیٹھ بھی نہ پایا تھا کہ تالیاں بجنے لگیں ۔ لوگ کھڑے ہوگئے، تالیاں بجتی رہیں ۔ انہیں تالیوں کی گونج میں گانوں کی آواز سنائی دی ۔ ایک طرف فرانسیسی لڑکے لڑکیاں تھے اور دوسری طرف جرمن نوجوان ۔ دونوں گا رہے تھے، ایک دوسرے سے اپیل کر رہے تھے، پرن کر رہے تھے—وہ نہیں لڑیں گے، وہ ایک دوسرے کا خون نہیں بہائیں گے ۔ وہ مل کر، ایک ہو کر وشو شانتی کی رکشا کریں گے، اپنی رکشا کریں گے، اپنے دیشوں کی رکشا کریں گے، اپنے ساہتیہ اور کلا کی رکشا کریں گے، ان سب کی رکشا کریں گے جو ان کے پاس دھروہر ہے !

ملایا کی ایک لڑکی بولنے کے لئے کھڑی ہوئی ۔ اس نے کسی کو گالی نہیں دی، کسی کو برا بھلا نہیں کہا ۔ کیول گھٹنائیں دہراتی رہی، برٹش اور ملایا کے نمائندے دور دور بیٹھے ہوئے تھے ۔ لیکن ملایا کی لڑکی نے جیسے ہی تقریر ختم کی لوگوں نے دیکھا کہ انگلینڈ کے ایک پادری نے اس لڑکی کو گود میں اٹھا لیا ہے، وہ ناچ رہا ہے ۔ سارا ہال کھڑا ہو گیا ۔ ایک گمبھیر واتاورن چھا گیا ۔ پادری نے جب اس لڑکی کو گود سے الگ کیا تو ایسا سین تھا جیسے باپ بیٹی کو بدا دے رہا ہو—دونوں کی آنکھیں چھل چھلا اٹھی تھیں، دونوں کی آنکھیں نفرت کو بھول کر پریم کا امرت برسا رہی تھیں ۔

करता था. इस कोशिश में कई रोज़ गुज़र गए. यूं ही सरसरी घरेलू इलाज भी होता रहा मगर रोगी की हालत बेहतर न हो सकी. लगभग एक महीने तक यह और इनके दोस्त एड़ी चोटी का ज़ोर लगाते रहे मगर नाकाम रहे और 600 डालर भी ख़र्च हो गए. आख़िर एक दिन जब मरीज़ा आधी बेहोश थी उसने उसे सुबह ही सुबह अमरीका के सदर की रहने की जगह व्हाइट हाउस के सामने ले जाकर सड़क पर डाल दिया और ख़ुद भाग आया. मरीज़ा को समझा दिया था कि नाम ज़ाहिर न करे. यही एक तरक़ीब थी अस्पताल में दाख़िल होने की. तरकीब कारगर हुई. पुलिस को मरीज़ा का चार्ज लेना पड़ा. अस्पताल में दाख़ला तो मिल गया मगर बेचारी पांच दिन बाद मर गई.

यह अमरीका है. दुनिया भर का सबसे अच्छा, सबसे ताक़तवर, सबसे बड़ा मुल्क ! इसे रूज़वेल्ट डेमोक्रेसी का आर्सेनल कहा करते थे !! अमरीका जो माली "मदद" दूसरे मुल्कों की कर रहा है उसका अन्दाज़ा भी करना मुश्किल है. हर रोज़ अरबों डालर की मालियत के हथियार और दूसरे क़िस्म के जंगी सामान बाहर जाते हैं और हर उस मुल्क को जाते है जो कम्युनिस्ट नहीं है. इस बात को छोड़ कर इस पर ग़ौर कीजिये कि हथियार के बनाने और रिसर्च करने पर यहां कितनी रक़म ख़र्च हो रही है. एक साल जो हथियार बनते हैं वह दूसरे साल पुराने हो जाते हैं......" (रिसाला 'अदब' कराची के सालाना नम्बर से)

फ़िल्म का कमनटेटर कह रहा था : अमरीका में कोई ग़रीब नहीं है, कोई दुखी नहीं है, सबके पास कार है, सबके पास ऊंचे ऊंचे मकान हैं. कोई बीमार वहां नहीं पड़ता. वहां घर बैठे इलाज हो जाता है.

मैं इस सोच में पड़ गया इस फ़िलम की बात मानूं या अपने उस पाकिस्तानी दोस्त की जो अमरीका का प्रशंसक भी है और सहायक भी !!

वियाना कांगरेस

आस्ट्रिया के ख़ूबसूरत शहर वियाना में शान्ति कांगरेस हुई थी. यह कांगरेस दुनिया के इतिहास में एक नया युग शुरू करती है. आज तक इतने अलग अलग विचारों के लोग एक साथ कभी एक नुक़्ते पर एक राय नहीं हुए थे. सातरे ने ठीक ही कहा था—"मैं कम्युनिस्टों का विरोध करता हूँ, अब भी करूंगा, ज़िन्दगी भर करता रहूँगा. मेरा विरोध अपनी जगह पर है. पर मैं शान्ति का विरोध नहीं कर सकता. तीसरी लड़ाई में कम्युनिस्ट भी ख़तम हो जायेंगे और मैं भी और मेरी विचार धारा के दूसरे लोग भी. मैं कम्युनिस्टों का विरोध करूंगा पर तीसरी लड़ाई का भी विरोध करूंगा."

کرتا تھا اس کوشش میں کئی روز گزر گئے۔ یوں ہی سرسری گھریلو علاج بھی ہوتا رہا مگر روگی کی حالت بہتر نہ ہوسکی۔ لگ بھگ ایک مہینے تک یہ اور ان کے دوست ایڑی چوٹی کا زور لگاتے رہے مگر ناکام رہے اور 600 ڈالر بھی خرچ ہوگئے۔ آخر ایک دن جب مریضہ آدھی بیہوش تھی اس نے اسے صبح ہی صبح امریکہ کے صدر کی رہنے کی جگہ وہائٹ ہاؤس کے سامنے لے جاکر سڑک پر ڈال دیا اور خود بھاگ آیا۔ مریضہ کو سمجھا دیا تھا کہ نام ظاہر نہ کرے۔ یہی ایک ترکیب تھی اسپتال میں داخل ہونے کی۔ ترکیب کارگر ہوئی۔ پولیس کو مریضہ کا چارج لینا پڑا۔ اسپتال میں داخلہ تو مل گیا مگر بیچاری پانچ دن بعد مرگئی۔

یہ امریکہ ہے۔ دنیا بھر کا سب سے اچھا، سب سے طاقتور، سب سے بڑا ملک! اسے روزویلٹ ڈیموکریسی کا آرسنل کہا کرتے تھے!! امریکہ جو مالی "مدد" دوسرے ملکوں کی کر رہا ہے اس کا اندازہ بھی کرنا مشکل ہے۔ ہر روز اربوں ڈالر کی مالیت کے ہتھیار اور دوسرے قسم کے جنگی سامان باہر جاتے ہیں اور ہر اس ملک کو جاتے ہیں جو کمیونسٹ نہیں ہے۔ اس بات کو چھوڑ کر اس پر غور کیجئے کہ ہتھیار کے بنانے اور ریسرچ کرنے پر یہاں کتنی رقم خرچ ہو رہی ہے۔ ایک سال جو ہتھیار بنتے ہیں وہ دوسرے سال پرانے ہو جاتے ہیں......(رسالہ 'ادب' کراچی کے سالانہ نمبر سے)

فلم کا کمنٹیٹر کہہ رہا تھا: امریکہ میں کوئی غریب نہیں ہے، کوئی دکھی نہیں ہے، سب کے پاس کار ہے، سب کے پاس اونچے اونچے مکان ہیں۔ کوئی بیمار وہاں نہیں پڑتا۔ وہاں گھر بیٹھے علاج ہو جاتا ہے۔

میں اس سوچ میں پڑ گیا کہ اس فلم کی بات مانوں یا اپنے اس پاکستانی دوست کی جو امریکہ کا پرشنسک بھی ہے اور سہایک بھی!!

ویانا کانگریس

آسٹریا کے خوبصورت شہر ویانا میں شانتی کانگریس ہوئی تھی۔ یہ کانگریس دنیا کے اتہاس میں ایک نیا یگ شروع کرتی ہے۔ آج تک اتنے الگ الگ وچاروں کے لوگ ایک ساتھ کبھی ایک نکتے پر ایک رائے نہیں ہوئے تھے۔ سارترے نے ٹھیک ہی کہا تھا—"میں کمیونسٹوں کا ورودھ کرتا ہوں، اب بھی کرونگا، زندگی بھر کرتا رہونگا۔ میرا ورودھ اپنی جگہ پر ہے۔ پر میں شانتی کا ورودھ نہیں کرسکتا۔ تیسری لڑائی میں کمیونسٹ بھی ختم ہو جائیں گے اور میں بھی اور میری وچار دھارا کے دوسرے لوگ بھی۔ میں کمیونسٹوں کا ورودھ کرونگا پر تیسری لڑائی کا بھی ورودھ کرونگا۔"

खत लिखा था. वह कम्युनिस्ट नहीं थे, क्योंकि वह क़सम खा खा कर कम्युनिस्टों को गाली देने के लिये मशहूर रहे हैं. मेरी नज़रें एक पैराग्राफ़ पर आ कर रुक गईं :

"पिछले महीने में एक हफ़्ते के लिये न्यूयार्क गया था. वहां की ऊंची ऊंची इमारतों में मेरे लिये कोई खिंचाव न था. पर मेरा ध्यान ब्रुकलिन (Brookleyn) की ग़रीबी पर ज़रूर गया. इस इलाक़े में हब्शी नहीं बल्कि सफ़ेद अमरीकनों का ग़रीब तबक़ा रहता है. कराची में रहते हुए मुझे यह गुमान था कि गोरे अमरीकन तो सब दौलतमन्द होंगे. यहां आ कर पता चला कि ग़रीब हर जगह होते हैं. लेकिन ब्रुकलिन के वासियों की ग़रीबी तो सख़्त भयानक क़िस्म की है. अगर ख़ुदानाख़ास्ता बीमारी आ जाय तो घर के बरतन तक बिक जाते हैं. अस्पताल में पहले तो दाख़ला बड़ी मुश्किल से मिलता है और अगर मिल भी जाय तो मरीज़ को कोई इतमिनान नसीब नहीं होता. जिसमानी मर्ज़ से तो मुमकिन है तन्दुरुस्त हो जाय मगर अस्पताल से निकलते वक़्त बिलों के बोझ तले दब कर मर जाना यक़ीनी है. यह लफ़्फ़ाज़ी नहीं बल्कि असलियत है. कुछ हफ़्ते गुज़रे कि एक गोरे अमरीकन का बच्चा बीमार हुआ. डाक्टर घर पर न मिला. बाप अस्पताल ले गया. वहां किसी ने ध्यान न दिया. कह दिया गया कि एस्प्रीन खिलाओ. बेचारा निराश हो कर घर आया. बच्चा कुम्हला सा गया था. मां ने घबरा कर क़रीब की एक नर्स को बुलाया. नर्स ने देख कर कहा कि बच्चे को आकसीजन नहीं मिल रहा है. फ़ौरन अस्पताल ले जाओ. मां बाप फिर अस्पताल पहुँचे. वहां पहला सा सलूक होने लगा. जब यह दोनों अड़ गए तो एक नर्स ने बच्चे की मां का हाथ पकड़ा और एक कम्पाउन्डर को बुला कर दोनों को बाहर निकलवा दिया. बच्चे की मां ने आपे से बाहर हो कर चिल्लाना शुरू कर दिया. जिसे सुनकर कई लोग इकट्ठा हो गए. दोनों को छोड़ दिया गया. जब लोगों ने बात सुनी तो सब ने लानत मलामत और फटकार की. अब अस्पताल वालों ने मजबूर हो कर बच्चे को आकसीजन देना शुरू किया. मगर बहुत देर हो चुकी थी. बच्चे का रंग नीला पड़ चुका था. आकसीजन उसे न बचा सका. वह वहीं मर गया. इस बच्चे के मां बाप कहते हैं कि अगर हम और हमारे जैसे दूसरे अमरीकन कम्यु-निस्ट हो जायं तो हमें कौन इलज़ाम दे सकता है.

एक और इसी क़िस्म का बेरहमी का वाक़या ख़ुद मेरे अमरीकन दोस्तों में से एक को पेश आया. योरप से उनकी दूर की एक रिश्तेदार औरत आई हुई थी. वह बीमार हो गई. घर पर इलाज कराना बेहद मुश्किल था. उन्होंने चाहा कि अस्पताल में दाख़िल करा दें. कहीं जगह न मिली एक अस्पताल से दूसरे में जाते थे और कोई दाख़िल न

خط لکھا تھا ۔ وہ کمیونسٹ نہیں تھے' کیونکہ وہ قسم کھا کھا کر کمیونسٹوں کو گالی دینے کے لئے مشہور رہے ہیں ۔ میری نظریں ایک پیراگراف پر آکر رک گئیں :

"پچھلے مہینے میں ایک ہفتے کے لئے نیویارک گیا تھا ۔ وہاں کی اونچی اونچی عمارتوں میں میرے لئے کوئی کھچاؤ نہ تھا ۔ پر میرا دھیان بروکلین (Brookleyn) کی غریبی پر ضرور گیا ۔ اس علاقے میں حبشی نہیں بلکہ سفید امریکنوں کا غریب طبقہ رہتا ہے ۔ کراچی میں رہتے ہوئے مجھے یہ گمان تھا کہ گورے امریکن تو سب دولتمند ہوں گے ۔ یہاں آکر پتہ چلا کہ غریب ہر جگہ ہوتے ہیں۔ لیکن بروکلین کے واسیوں کی غریبی تو سخت بھیانک قسم کی ہے ۔ اگر خدا نخواستہ بیماری آ جائے تو گھر کے برتن تک بک جاتے ہیں ۔ اسپتال میں پہلے تو داخلہ بڑی مشکل سے ملتا ہے اور اگر مل بھی جائے تو مریض کو کوئی اطمینان نصیب نہیں ہوتا ۔ جسمانی مرض سے تو ممکن ہے تندرست ہو جائے مگر اسپتال سے نکلتے وقت بلوں کے بوجھ تلے دب کر مر جانا یقینی ہے ۔ یہ لفاظی نہیں بلکہ اصلیت ہے ۔ کچھ ہفتے گزرے کہ ایک گورے امریکن کا بچہ بیمار ہوا ۔ ڈاکٹر گھر پر نہ ملا ۔ باپ اسپتال لے گیا ۔ وہاں کسی نے دھیان نہ دیا ۔ کہہ دیا گیا کہ اسپرین کھلاؤ ۔ بیچارا نراش ہوکر گھر آیا ۔ بچہ کمہلا سا گیا تھا ۔ ماں نے گھبرا کر قریب کی ایک نرس کو بلایا نرس نے دیکھ کر کہا کہ بچے کو آکسیجن نہیں مل رہا ہے ۔ فوراً اسپتال لے جاؤ ۔ ماں باپ پھر اسپتال پہونچے ۔ وہاں پہلا سا سلوک ہونے لگا ۔ جب یہ دونوں اڑ گئے تو ایک نرس نے بچہ کی ماں کا ہاتھ پکڑا اور ایک کمپاؤنڈر کو بلاکر دونوں کو باہر نکلوا دیا ۔ بچے کی ماں نے آپے سے باہر ہوکر چلانا شروع کردیا جسے سن کر کئی لوگ اکٹھا ہوگئے ۔ دونوں کو چھوڑ دیا گیا ۔ جب لوگوں نے بات سنی تو سب نے لعنت ملامت اور پھٹکار کی ۔ اب اسپتال والوں نے مجبور ہوکر بچے کو آکسیجن دینا شروع کیا ۔ مگر بہت دیر ہو چکی تھی ۔ بچے کا رنگ نیلا پڑ چکا تھا۔ آکسیجن اسے نہ بچا سکا ۔ وہ وہیں مر گیا ۔ اس بچے کے ماں باپ کہتے ہیں کہ اگر ہم اور ہمارے جیسے دوسرے امریکن کمیونسٹ ہو جائیں تو ہمیں کون الزام دے سکتا ہے ۔

ایک اور اس قسم کا بیرحمی کا واقعہ خود میرے امریکن دوستوں میں سے ایک کو پیش آیا ۔ یورپ سے ان کی دور کی ایک رشتےدار عورت آئی ہوئی تھی ۔ وہ بیمار ہوگئی۔ گھر پر علاج کرانا بیحد مشکل تھا۔ انہوں نے چاہا کہ اسپتال میں داخل کرادیں کہیں جگہ نہ ملی۔ ایک اسپتال سے دوسرے میں جاتے تھے اور کوئی داخل نہ

"हमारे आपके मालिक" तशरीफ लाए हैं. मैं चौंक कर उनके स्वागत के लिये उठी.

"तुम से मैं नाराज हूं" ईसू मसीह ने कहा.

"मुझे अमर हो जाने दो मुझे अपने क़दमों में जगह दे दो" मैंने प्रार्थना की.

उन्होंने कहा—"नहीं, तुम यहां मौज उड़ाती हो, अफ़रात से पहनती हो, अच्छे खाने उड़ाती हो और कुछ लोग भूके हैं, नंगे हैं, बीमार हैं......"

"मैं उन भाइयों की सेवा करूंगी, अपना सब कुछ क़ुरबान कर दूंगी."

"तो जाओ" उन्होंने आदेश दिया.

"कहां"

"हिन्दुस्तान !" वहां के लोग भूके हैं, नंगे हैं. उन्हें जिसमानी ग़िज़ा दो और आत्मिक भोजन भी......"

"पर हिन्दुस्तान एक बड़ा मुल्क है."

"ठीक है. तुम हिन्दुस्तान जाओ. वहां यू. पी. के सूबे में एक छोटा सा शहर "रायबरेली" है. वहां तुम्हें जा कर प्रचार करना चाहिये. हमारा सन्देश उन लोगों तक पहुंचाना चाहिये."

उसी नौजवान ने कहा—"यह औरत हमें बेवक़ूफ़ समझती है. ऐसे पाखन्ड से अब हम असर नहीं ले सकते. इसे कहानी भी गढ़नी नहीं आती."

मैंने कहा—"कहानी क्यों ग़लत है......"

"हज़रत ईसा न हो गए, जुग़राफ़िया के मास्टर हो गए......"

"कहानी सच्ची है पर नायक का नाम ग़लत है...... ईसू मसीह की जगह अगर स्टेट डिपार्टमेन्ट के सिक्रेटरी का नाम रख दिया जाय तो.......?" मैंने कहा.

"तब कहानी ठीक है, बिल्कुल सही है"

फ़िलम की दूसरी रील ने जल्द ही हमारा ध्यान अपनी तरफ़ खींच लिया. अमरीका में लोगों के रहने सहने का बयान इस में था. इस में शक नहीं कि वह दुनिया अच्छी थी पर न जाने मुझे क्यों आभास हुआ कि यह सपने की दुनिया है. मैंने कहा यह तसवीर सही है, और हिन्दुस्तान को अमरीका बना देना चाहिये, हिन्दुस्तान में सुख सम्पन्न होना चाहिये, हिन्दुस्तान को आसमान पर उठा देना चाहिये. मैं अमरीकी क़िस्म के हिन्दुस्तान की कल्पना करने लगा. पर उस नौजवान को न जाने क्या सूझी, न जाने क्यों उसने मुझे चौंका दिया, मेरा ख़्वाब हवा कर दिया. मैं यथार्थ की दुनिया में लौटा तो देखा सामने वही फ़िलम चल रही है और मेरी आंखों के सामने उरदू का एक रिसाला है. मैंने उसे हटाना चाहा. पर उस नौजवान ने ज़िद की. पाकिस्तान के एक सज्जन ने अमरीका से यह

"ہمارے آپ کے مالک" تشریف لئے ہیں . میں چونک کر اُن کے سواگت کے لئے اُٹھی .

"تم سے میں ناراض ہوں" عیسیٰ مسیح نے کہا .

"مجھے امر ہو جانے دو' مجھے اپنے قدموں میں جگہ دے دو" میں نے پرارتھنا کی .

اُنہوں نے کہا—" نہیں' تم یہاں موج اُڑاتی ہو' افراط سے پہنتی ہو' اچھے کھانے اُڑاتی ہو اور کچھ لوگ بھوکے ہیں' ننگے ہیں' بیمار ہیں......"

"میں اُن بھائیوں کی سیوا کرونگی' اپنا سب قربان کر دوں گی."

"تو جاؤ" اُنہوں نے آدیش دیا .

"کہاں"

"ہندستان !" وہاں کے لوگ بھوکے ہیں' ننگے ہیں. اُنہیں جسمانی غذا اور آتمک بھوجن بھی......"

"پر ہندستان ایک بڑا ملک ہے ."

"ٹھیک ہے . تم ہندستان جاؤ . وہاں یو . پی کے صوبے میں ایک چھوٹا سا شہر "رائے بریلی" ہے . وہاں تمہیں جاکر پرچار کرنا چاہئے . ہمارا سندیش اُن لوگوں تک پہونچانا چاہئے ."

اُسی نوجوان نے کہا—"یہ عورت ہمیں بیوقوف سمجھتی ہے . ایسے پاکھنڈ سے اب ہم اثر نہیں لے سکتے . اِسے کہانی بھی گڑھنی نہیں آتی ."

میں نے کہا—"کہانی کیوں غلط ہے .... "

"حضرت عیسیٰ نہ ہوگئے' جغرافیہ کے ماسٹر ہوگئے..."

"کہانی سچی ہے پر نایک کا نام غلط ہے ...عیسیٰ مسیح کی جگہ اگر اسٹیٹ ڈپارٹمنٹ کے سکریٹری کا نام رکھ دیا جائے تو......؟" میں نے کہا .

"اب کہانی ٹھیک ہے' بالکل صحیح ہے ."

فلم کی دوسری ریل نے جلد ہی ہمارا دھیان اپنی طرف کھینچ لیا. امریکہ میں لوگوں کے رہنے سہنے کے بیان اِس میں تھا. اس میں شک نہیں کہ وہ دنیا اچھی ڈھنگ کا تھی پر نہ جانے مجھے کیوں اَبھاس ہوا کہ یہ سپنے کی میں نے کہا یہ تصویر صحیح ہے' اور ہندستان کو امریکہ بنا دینا چاہئے' ہندستان میں سکھ سمپن ہونا چاہئے' ہندستان کو آسمان پر اُٹھا دینا چاہئے . میں امریکی قسم کے ہندستان کی کلپنا کرنے لگا . پر اُس نوجوان کو نہ جانے کیا سوجھی' نہ جانے کیوں اُس نے مجھے چونکا دیا' میرا خواب ہوا کر دیا میں یتھارتھ کی دنیا میں لوٹا تو دیکھا سامنے وہی فلم چل رہی ہے اور میری آنکھوں کے سامنے اُردو کا ایک رسالہ ہے میں نے اسے ہٹانا چاہا . پر اس نوجوان نے ضد کی. پاکستان کے ایک سجن نے امریکہ سے یہ

प्रवासी की डायरी

उसका नाम पता मैं नहीं जानता, जानने की ज़रूरत भी नहीं है. इतना परिचय काफ़ी है कि वह एक अमरीकन थी, एक औरत थी और कहने को एक मिशनरी थी. मैं रायबरेली की एक सड़क पर चलते चलते एक भीड़ की तरफ़ न जाने क्यों मुड़ गया. शामियाना लगा हुआ था और एक अमरीकी महिला 'शुद्ध हिन्दी' में कुछ कह रही थीं. मेरे पहुंचने पर उन्होंने बात ख़तम कर के रेशम की लच्छियां और मिठाइयां बांटने का काम शुरू कर दिया. बच्चे मिठाई पर टूट पड़े और औरतों ने रेशम की लच्छियों के लिये हाथ फैलाए. हर एक को कुछ न कुछ देकर वह महिला मुस्करा देती थीं. उस मुस्कराहट को बहुत से माने पहनाए जा सकते हैं. पर मेरे लिये तो वह मुस्कराहट तिरस्कार भरी थी, उससे बड़बहम टपकता था, घमन्ड ज़ाहिर होता था. यह काम ख़तम करके उन्होंने ऐलान किया कि एक फ़िलम का प्रदर्शन किया जायगा. थोड़ी देर में फ़िलम परदे पर आ गई. लेकिन मेरा अचरज सीमा को लांघ गया. फ़िलम का हज़रत ईसू के जीवन से सम्बन्ध न था, उनकी सीख से इसका ताल्लुक़ नहीं था. ईसाई धर्म के किसी पहलू से इसका नाता नहीं था. इसमें अमरीका के स्काईस्क्रेपर दिखाई पड़ रहे थे, अमरीकी माली व्यवस्था की गुनगान की गई थी. दिखाई पड़ रहा था कि अमरीका में सब अमीर हैं, सब ख़ुश हैं, सब मौज कर रहे हैं.

"अमरीका में सब सुखी हैं" एक नौजवान ने मेरे बराल से कहा.

"यह सब प्रचार है" दूसरे ने जवाब दिया.

एक नौजवान फ़िलम के नज़्ज़ारों को सच मान रहा था. और दूसरा उसे धोका. उनकी बहस गरम हो चली थी, और मुझे उसमें मज़ा आने लगा था. पर अन्धेरा ख़तम हो गया, फ़िल्म ग़ायब हो गई, सब ख़तम हो गया. मेरा ध्यान उन महिला की तरफ़ फिर गया. वह कह रही थीं :

"आपने देखा अमरीका कितना दौलतमन्द देश है. अमरीका आपकी सहायता करना चाहता है. अमरीका हिन्दुस्तान को अमरीका बनाना चाहता है......हम अपना देश, अपना सुख चैन छोड़ कर आपकी सेवा करने आए हैं......आप पूछेंगे कि हमने अमरीका का सुख चैन क्यों छोड़ दिया और भारत में क्यों आ गए. मैं अपना पूरा क़िस्सा आपको सुना देना चाहती हूं. एक दिन मैं एक ख़ूबसूरत होटल में सो रही थी. रात को मैंने देखा कि

پرواسی کی ڈائری

اُس کا نام پتہ میں نہیں جانتا' جاننے کی ضرورت بھی نہیں ہے . اتنا پریچے کافی ہے کہ وہ ایک امریکن تھی' ایک عورت تھی اور کہنے کو ایک مشنری تھی. میں رائے بریلی کی ایک سڑک پر چلتے چلتے ایک بھیڑ کی طرف نہ جانے کیوں مڑ گیا . شامیانہ لگا ہوا تھا اور ایک امریکی مہلا ' شدھ ہندی ' میں کچھ کہہ رہی تھیں . میرے پہونچنے پر اُنھوں نے بات ختم کر کے ریشم کی لچھیاں اور مٹھائیاں بانٹنے کا کام شروع کر دیا . بچے مٹھائی پر ٹوٹ پڑے اور عورتوں نے ریشم کی لچھیوں کے لئے ہاتھ پھیلائے . ہر ایک کو کچھ نہ کچھ دےکر وہ مہلا مسکرا دیتی تھیں . اُس مسکراہٹ کو بہت سے معنی پہنائے جا سکتے ھیں . پر میرے لئے تو وہ مسکراہٹ ترسکار بھری تھی' اُس سے بڑوھم ٹپکتا تھا' گھمنڈ ظاہر ہوتا تھا . یہ کام ختم کر کے اُنھوں نے اعلان کیا کہ ایک فلم کا پردرشن کیا جائے گا . تھوڑی دیر میں فلم پردے پر آ گئی . لیکن میرا اچرج سیما کو لانگھ گیا . فلم کا حضرت عیسو کے جیون سے سمبندھ نہ تھا' اُن کی سیکھ سے اِس کا تعلق نہیں تھا . عیسائی دھرم کے کسی پہلو سے اِس کا ناتا نہیں تھا . اِس میں امریکہ کے اسکائی کریپر دکھائی پڑ رہے تھے' امریکی مالی ویوستھا کی گن گان کی گئی تھی . دکھائی پڑ رہا تھا کہ امریکہ میں سب امیر ھیں' سب خوش ھیں' سب موج کر رہے ھیں .

" امریکہ میں سب سکھی ھیں '' ایک نوجوان نے میرے بغل سے کہا .

" یہ سب پرچار ہے '' دوسرے نے جواب دیا .

ایک نوجوان فلم کے نظاروں کو سچ مان رہا تھا اور دوسرا اُسے دھوکا . اُن کی بحث گرم ہو چلی تھی اور مجھے اُس میں مزا آنے لگا تھا . پر اندھیرا ختم ہوگیا' فلم غائب ہو گئی' سب ختم ہو گیا . میرا دھیان اُن مہلا کی طرف پھر گیا . وہ کہہ رہی تھیں :

" آپ نے دیکھا امریکہ کتنا دولت مند دیش ہے . امریکہ آپ کی سہائتا کرنا چاھتا ہے . امریکہ ہندستان کو امریکہ بنانا چاھتا ہے......ہم اپنا دیش' اپنا سکھ چین چھوڑ کر آپ کی سیوا کرنے آئے ھیں...... آپ پوچھیں گے کہ ہم نے امریکہ کا سکھ چین کیوں چھوڑ دیا اور بھارت میں کیوں آ گئے . میں اپنا پورا قصہ آپ کو سنا دینا چاھتی ہوں . ایک دن میں ایک خوبصورت ہوٹل میں سو رہی تھی . رات کو میں دیکھا کہ

लड़ाई के मैदान में लाना चाहते थे और उन्हें अच्छे सत्याग्रही बनाना चाहते थे. जैनेन्द्र जी ने भी इस ज़रूरत को महसूस किया और अपने साहित्य के माध्यम से इस विचार का प्रचार किया. इसी बात को ठीक बताया और नैतिक समझा.

'सुखदा' के पात्र पाठक को अपनी तरफ़ आकर्शित नहीं करते बल्कि जैनेन्द्र जी की शैली पाठक को बांधे रखती है और आगे पढ़ने के लिये मजबूर करती है.— मुजीब रिज़वी

विवर्त

लिखने वाले—जैनेन्द्र कुमार; निकालने वाले – पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली; लिखावट हिन्दी; सफ़ा 230; दाम चार रुपए चार आने.

'सुखदा' के बाद जैनेन्द्र जी ने 'विवर्त' का उपहार पाठकों को भेंट किया है. सुखदा और विवर्त में कथावस्तु का बहुत बड़ा फ़र्क़ नहीं है. उसी गांधी जी के पहले के क्रान्तकारी युग का वर्नन इस नाविल में भी है. लेखक ने अपने लक्ष्य को बार बार दोहराया है—ऐसे क्रान्तिकारियों को खुद अपने को पुलिस के हवाले कर देना चाहिये, यही नैतिकता भी है, यही बेहतर भी है. नाविल के ख़ास पात्र जितेन्द्र ने इस बात को स्वीकार भी किया और अमल में लाया. इसके बदले लेखक ने अपनी, नाविल के नायिका की, नायिका के पति की, यहां तक पुलिस के सुप्रिनटेनडेन्ट तक की हमदर्दियां जितेन्द्र को प्रदान कर दीं. यही नाविल का लक्ष्य था और यहीं उसका अन्त हो गया.

सदा की तरह इस नाविल के पात्र भी आम नहीं बल्कि ख़ास "टाइप" हैं. और ऐसे "टाइप" हैं कि यह सोचना पड़ता है कि ऐसे व्यक्ति दुनिया के परदे पर मिल भी सकते हैं या नहीं ?

'सुखदा' और 'विवर्त' दोनों में एक छोटे से कुटुम्ब का चित्रन है. दोनों की नायिकाएं अपने पतियों पर पूरा कन्ट्रोल रखती हैं. दोनों पति बहुत शील हैं, बर्दाश्त करते हैं, पत्नी के हर सुख में अपना सुख समझते हैं, सब कुछ क़ुरबान करने को तैयार हैं. यहां तक कि उन में जिनसी जलन भी नहीं है और अपनी पत्नियों को दूसरों से प्रेम करने की भी इजाज़त देने को तैयार दिखाई पड़ते हैं.

दोनों नाविलों के पात्रों में से किसी के साथ हमदर्दी क़ायम नहीं रहती और नाविल ख़तम करने के बाद दिमाग़ पर कोई असर भी बाक़ी नहीं रहता है. "पतियों" पर ज़रूर रहम आता है !

जैनेन्द्र जी की शैली बहुत असरदार है और अगर नए विचारों को इस शैली का सहारा दिया जा सके तो असरदार साहित्य को जन्म दिया जा सकेगा !—मुजीब रिज़वी

لڑائی کے میدان میں لانا چاہتے تھے اور اُنہیں اچھے ستیا گرہی بنانا چاہتے تھے. جینندر جی نے بھی اِس ضرورت کو محسوس کیا اور اپنے ساہتیہ کے مادھیم سے اس وچار کا پرچار کیا. اسی بات کو ٹھیک بتایا اور نیتک سمجھا.

'سکھدا' کے پاتر پاٹھک کو اپنی طرف آدرشت نہیں کرتے بلکہ جینندر جی کی شیلی پاٹھک کو باندھے رکھتی ہے اور آگے پڑھنے کے لئے مجبور کرتی ہے.

— مجیب رضوی

وورت

لکھنے والے—جینیندر کمار؛ نکالنے والے—پوروودے پرکاشن' دلی؛ لکھاوٹ ہندی؛ صفحہ 230؛ دام چار روپیہ چار آنے.

'سکھدا' کے بعد جینیندر جی نے 'وورت' کا اُپہار پاٹھکوں کو بھینٹ کیا ہے. سکھدا اور وورت میں کتھا وستو کا بہت بڑا فرق نہیں ہے. اسی گاندھی جی کے پہلے کے کرانتکاری یگ کا ورنن اِس ناول میں بھی ہے. لیکھک نے اپنے لکش کو بار بار دہرایا ہے—ایسے کرانتکاریوں کو خود اپنے کو پولیس کے حوالے کر دینا چاہئے' یہی نیتکتا بھی ہے' یہی بہتر بھی ہے. ناول کے خاص پاتر جتیندر نے اِس بات کو سویکار بھی کیا اور عمل میں لایا. اِس کے بدلے لیکھک نے اپنی' ناول کے نائکا کی' نائکا کے پتی کی' یہاں تک پولیس کے سپرنٹنڈنٹ تک کی ہمدردیاں جتیندر کو پردان کردیں. یہی ناول کا لکش تھا اور یہیں اُس کا انت ہوگیا.

سدا کی طرح اِس ناول کے پاتر بھی عام نہیں بلکہ خاص "ٹائپ" ہیں اور ایسے "ٹائپ" ہیں کہ یہ سوچنا پڑتا ہے کہ ایسے ویکتی دنیا کے پردے پر مل بھی سکتے ہیں یا نہیں ؟

'سکھدا' اور 'وورت' دونوں میں ایک چھوٹے سے کٹمب کا چترن ہے. دونوں کی نائکائیں اپنے پتیوں پر پورا کنٹرول رکھتی ہیں. دونوں پتی بہت شیل ہیں' برداشت کرتے ہیں' پتنی کے ہر سکھ میں اپنا سکھ سمجھتے ہیں' سب کچھ قربان کرنے کو تیار ہیں. یہاں تک کہ اُن میں جنسی جلن بھی نہیں ہے اور اپنی پتنیوں کو دوسروں سے پریم کرنے کی بھی اجازت دینے کو تیار دکھائی پڑتے ہیں.

دونوں ناولوں کے پاتروں میں سے کسی کے ساتھ ہمدردی قائم نہیں رہتی اور ناول ختم کرنے کے بعد دماغ پر کوئی اثر بھی باقی نہیں رہتا ہے. "پتیوں" پر ضرور رحم آتا ہے !

جینیندر جی کی شیلی بہت اثردار ہے اور اگر نئے وچاروں کو اِس شیلی کا سہارا دیا جاسکے تو اثردار ساہتیہ کو جنم دیا جاسکے گا ! —مجیب رضوی

सुखदा

लिखने वाले—जैनेन्द्र कुमार; निकालने वाले—पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली; लिखावट हिन्दी; सफ़ा 210; दाम चार रुपया.

हिन्दी साहित्य को जैनेन्द्र ने जो देन दी है वह बे मिसाल है. आलोचकों का कहना है कि जैनेन्द्र के रूप में हिन्दी साहित्य को एक 'शरत चन्द्र' मिल गये हैं.

जैनेन्द्र का साहित्य पढ़ने की जितनी प्यास बढ़ी उतना ही उनका क़लम अपने कर्तव्य से भागने लगा. दस साल तक तो वह चुप से ही रहे. इस ख़ामोशी के बाद जब 'सुखदा' का एक भाग 'धर्मयुग' ने पाठकों को दिया तो साहित्यक क्षेत्र में एक हल चल मच गई. 'धर्म युग' अभी पूरा नाविल छाप भी न पाया था कि चार चार भाशाओं में इसके अनुवाद की मांग आने लगी.

जो लोग जैनेन्द्र जी को क़रीब से जानते हैं उनका कहना है कि उनकी कहानियों और नाविलों का आधार कोई न कोई सच्ची घटना होती है 'सुखदा' का भी आधार सच्चा है और जैनेन्द्र जी की रोचक, गम्भीर दिल को छूने वाली शैली और उनके अपने दर्शन ने इस घटना में जान डाल दी है. 'सुखदा' की नायिका एक "टाइप" है और यह टाइप भाग्य से ही देखने को मिलता है !

'सुखदा' में उस समय का बर्नन है जब गांधी जी राज-काजी मैदान में नहीं आये थे और देश भक्त छोटी छोटी टुकड़ियां बनाते थे, कुछ तोड़ फोड़ करते थे, भागे भागे फिरते थे. इन टुकड़ियों का जनता से सम्पर्क नहीं होता था और लुके छिपे ही सारा काम होता था. इन टुकड़ियों के मेम्बर भी एक 'टाइप' होते थे—शक्की, कट्टर, बेलाग यह सब मिल कर किसी एक की पूजा करने लगते थे और जब पूजा से ऊब जाते थे तो आपस में लड़ पड़ते थे, दल भंग हो जाता था. कुछ इन्हीं में से सी. आई. डी. बन जाते थे और कुछ ग़लत शक पर एक दूसरे की जान तक ले लेते थे. इस युग का और ऐसे आदमियों की एक झलक इस नाविल में मिलती है.

किसी ज़माने में इस बात की ज़रूरत गांधी जी ने महसूस की थी कि पुराने "इन्क़लाबी दल" के लोगों के दिल को मोहा जाये और उन्होंने ऐसे लोगों से अपील की थी कि वह अपने को ख़ुद पुलिस के हवाले कर दें. इस तरह गांधी जी ऐसे बेलाग लोगों को खुल्लम खुल्ला

سکھدا

لکھنے والے—جینیندر کمار؛ نکالنے والے—پوروودے پرکاشن، دلی؛ لکھاوٹ ہندی؛ صفحہ 210؛ دام چار روپیہ ۔

ہندی ساہتیہ کو جینیندر نے جو دین دی ہے وہ بے مثال ہے ۔ آلوچکوں کا کہنا ہے کہ جینیندر کے روپ میں ہندی ساہتیہ کو ایک 'شرت چندر' مل گئے ہیں ۔

جینیندر کا ساہتیہ پڑھنے کی جتنی پیاس بڑھی اتنا ہی اُن کا قلم اپنے کرتب سے بھاگنے لگا ۔ دس سال تک تو وہ چپ سے ہی رہے ۔ اِس خاموشی کے بعد جب سکھدا' کا ایک بھاگ 'دھرم یگ' نے پاٹھکوں کو دیا تو ساہتیک چھیتر میں ایک ہلچل مچ گئی ۔ 'دھرم یگ' ابھی پورا ناول چھاپ بھی نہ پایا تھا کہ چار چار بھاشاؤں میں اس کے انواد کی مانگ آنے لگی ۔

جو لوگ جینیندر جی کو قریب سے جانتے ہیں اُن کا کہنا ہے کہ اُن کی کہانیوں اور ناولوں کا آدھار کوئی نہ کوئی سچی گھٹنا ہوتی ہے ۔ 'سکھدا' کا بھی آدھار سچا ہے اور جینیندر جی کی روچک' گمبھیر' دل کو چھونے والی شیلی اور اُن کے اپنے درشن نے اِس گھٹنا میں جان ڈال دی ہے ۔ 'سکھدا' کی نائکا ایک "ٹائپ" ہے اور یہ ٹائپ بھاگ سے ہی دیکھنے کو ملتا ہے !

'سکھدا' میں اُس سمے کا ورنن ہے جب گاندھی جی راج کاجی میدان میں نہیں آئے تھے اور دیش بھگت چھوٹی چھوٹی ٹکڑیاں بناتے تھے' کچھ توڑ پھوڑ کرتے تھے' بھاگے بھاگے پھرتے تھے۔ اِن ٹکڑیوں کا جنتا سے سمپرک نہیں ہوتا تھا اور لکے چھپے ہی سارا کام ہوتا تھا ۔ اِن ٹکڑیوں کے ممبر بھی ایک 'ٹائپ' ہوتے تھے—شکی'کٹر' بےلاگ یہ سب مل کر کسی ایک کی پوجا کرنے لگتے تھے اور جب پوجا سے اوب جاتے تھے تو آپس میں لڑ پڑتے تھے' دل بھنگ ہو جاتا تھا۔ کچھ اِنھیں میں سے سی۔ آئی۔ ڈی بن جاتے تھے اور کچھ غلط شک پر ایک دوسرے کی جان تک لے لیتے تھے ۔ اِس یگ کا اور ایسے آدمیوں کی ایک جھلک اِس ناول میں ملتی ہے ۔

کسی زمانے میں اس بات کی ضرورت گاندھی جی نے محسوس کی تھی کہ پرانے "انقلابی دل" کے لوگوں کے دل کو موہا جائے اور اُنھوں نے ایسے لوگوں سے اپیل کی تھی کہ وہ اپنے کو خود پولیس کے حوالے کر دیں ۔ اس طرح گاندھی جی ایسے بےلاگ لوگوں کو کھلم کھلا

रफ़्ता रफ़्ता कई जन्मों के बाद सब कुछ बहुत ही अच्छा हो जाता है. मगर जो आदमी बुरे काम करते हैं, अच्छे कामों को छोड़ते हैं और भगवान के हुक्मों के बरख़िलाफ़ काम करते हैं उनका मन, दिल और बदन ख़राब होते जाते हैं. और मरने के वक़्त भी ख़राब होते हैं इसलिये उनको दूसरे जन्म में ख़राब मन, ख़राब दिल और, ख़राब बदन मिलता है. इसी तरह जो आदमी ऐसे काम करता है कि उनसे मन और दिल अच्छा होता जाय मगर ऐसे कोई काम नहीं करता कि जिनसे बदन भी अच्छा होता जाए तो उसको अगले जन्म में मन और दिल तो अच्छा मिलता है मगर बदन ख़राब मिलता है. और जो आदमी इस जन्म में ऐसे काम करता है कि जिनसे बदन तो अच्छा होता जाय और मन और दिल ख़राब होता जाय तो फिर अगले जन्म में उसको बदन तो अच्छा मिलता है मगर मन और दिल ख़राब मिलता है ग़रज़ यह कि जैसे जैसे काम कोई आदमी एक जन्म में करता है उन्हीं के मुताबिक़ बदन, मन और दिल से उसकी आत्मा दूसरे जन्म में मिल जाती है. मगर यह ज़रूरी नहीं कि अगर एक दफ़ा बुरा बदन या मन या दिल मिल जाय तो हमेशा बुरा ही चला जाय. नहीं बल्कि आत्मा में भगवान ने बड़ी ताक़त रक्खी है. आत्मा की कोशिश से हम बुरे से बुरे बदन को भी अच्छा कर सकते हैं. मगर इतना ज़रूर करना चाहिये कि हर एक काम और बात में ठीक भगवान की मरज़ी और भगवान के बनाए हुए क़ायदे क़ानूनों के मुताबिक़ चलें.

رفتہ رفتہ کئی جنموں کے بعد سب کچھ بہت ہی اچھا ہو جاتا ہے . مگر جو آدمی برے کام کرتے ہیں' اچھے کاموں کو چھوڑتے ہیں اور بھگوان کے حکموں کے برخلاف کام کرتے ہیں اُن کا من' دل اور بدن خراب ہوتے جاتے ہیں . اور مرنے کے وقت بھی خراب ہوتے ہیں . اس لئے اُن کو دوسرے جنم میں خراب من' خراب دل اور خراب بدن ملتا ہے . اِسی طرح جو آدمی ایسے کام کرتا ہے کہ اُن سے من اور دل اچھا ہوتا جائے مگر ایسے کوئی کام نہیں کرتا کہ جس سے بدن بھی اچھا ہوتا جائے تو اُس کو اگلے جنم میں' من اور دل تو اچھا ملتا ہے مگر بدن خراب ملتا ہے . اور جو آدمی اِس جنم میں ایسے کام کرتا ہے کہ جن سے بدن تو اچھا ہوتا جائے اور من اور دل خراب ہوتا جائے تو پھر اگلے جنم میں اُس کو بدن تو اچھا ملتا ہے مگر من اور دل خراب ملتا ہے. غرض یہ کہ جیسے جیسے کام کوئی آدمی ایک جنم میں کرتا ہے اُنہیں کے مطابق بدن' من اور دل سے اس کی آتما دوسرے جنم میں مل جاتی ہے . مگر یہ ضروری نہیں کہ اگر ایک دفعہ برا بدن یا من یا دل ملجائے تو ہمیشہ برا ہی چلا جائے . نہیں بلکہ آتما میں بھگوان نے بڑی طاقت رکھی ہے . آتما کی کوشش سے ہم برے سے برے بدن کو بھی اچھا کرسکتے ہیں . مگر اِتنا ضرور کرنا چاہئے کہ ہر ایک کام اور بات میں ٹھیک بھگوان کی مرضی اور بھگوان کے بنائے ہوئے قاعدے قانونوں کے مطابق چلیں .

नदी का सफ़र

(हामिद उल्ला अफ़सर)

नदिया ! धीरे धीरे चलना
नय्या मेरी डूब न जाय
जंगल में से हो के निकलना
छाओं का छप्पर सा छाय
छोड़ो रह रह के मचलना
डर के मारे जी घबराए
इतनी दूर अभी है चलना
कोई ढूंढे भी तो न पाए

('आजकल' से)

ندی کا سفر

(حامد اللہ افسر)

ندیا ! دھیرے دھیرے چلنا
نیا میری ڈوب نہ جائے
جنگل میں سے ہو کے نکلنا
چھاؤں کا چھپر سا چھائے
چھوڑو رہ رہ کے مچلنا
ڈر کے مارے جی گھبرائے
اتنی دور ابھی ہے چلنا
کوئی ڈھونڈھے بھی تو نہ پائے

('آجکل' سے)

बच्चों की दुनिया

بچوں کی دنیا

मुल्तान
12. 7. 06.

ملتان
12 . 7 . 06

राधे,

कल की चिट्ठी में इलैक्ट्रोनों का हाल लिखा था. संस्कृत में इलैक्ट्रोन को 'परमानू' कहते हैं. इन्हीं परमानुओं से मिलकर सारा जगत और उसमें जितनी चीज़ें हैं सब बनी हैं. और परमानू सब के सब भगवान की शक्ति के बने हुए हैं. इस वास्ते सारा जगत भी भगवान की शक्ति से बना हुआ है. आदमी का सारा बदन भी परमानुओं से बना हुआ है. मगर परमानुओं में चैतन्यता नहीं होती यानी जिस तरह हर एक आदमी को मालूम होता है कि मैं हूं उस तरह परमानुओं को कुछ मालूम नहीं होता. इससे मालूम हुआ कि आदमी में परमानुओं के सिवाए कुछ और भी है जिससे उसे मालूम होता है 'मैं हूँ' इस कुछ को जिससे आदमी को मालूम होता है कि 'मैं हूँ' आत्मा कहते हैं हर एक आदमी, जानवर और दरख़्त में आत्मा होती है. मगर ज्यों ज्यों कोई अच्छे अच्छे काम करता जाता है त्यों त्यों उसकी आत्मा बढ़ती जाती है और उसकी काम करने की ताक़त और अक़ल भी ज़ियादा होती जाती है. मगर ज्यों ज्यों कोई बुरे बुरे काम करता जाता है त्यों त्यों उसकी आत्मा घटती जाती है और काम करने की ताक़त और अक़ल भी कम होती जाती है. आत्मा कभी नहीं मरती बल्कि हमेशा ज़िन्दा रहती है. मगर आदमी का बदन पहले पैदा होता है, फिर रफ़्ता रफ़्ता बढ़ता और ताक़तवर होता जाता है. और फिर जवान हो जाता है. फिर घटना और कमज़ोर होना शुरू होता है. फिर बुड्ढा हो जाता है और आख़िरकार मर जाता है.

जब बदन मर जाता है तब आत्मा उसमें से निकल कर दूसरे बदन में चली जाती है. और फिर पहली तरह से बदन बढ़ना शुरू होता है. जो आदमी अच्छे अच्छे काम करता है, बुरे कामों से बचता है और हमेशा भगवान की मर्ज़ी के मुताबिक़ सब कुछ करता है, उसका मन, दिल और बदन भी अच्छे होते जाते हैं और मरने के वक़्त तक अच्छे रहते हैं. इस वास्ते अगले जन्म में भी अच्छा बदन, अच्छा मन और अच्छा दिल मिलता है. और इस तरह

رادھے'

کل کی چٹھی میں الیکٹرونوں کا حال لکھا تھا ، سنسکرت میں الکٹرون کو 'پرمانو' کہتے ہیں ۔ انہیں پرمانوؤں سے مل کر سارا جگت اور اس میں جتنی چیزیں ہیں سب بنی ہیں ۔ اور پرمانو سب کے سب بھگوان کی شکتی کے بنے ہوئے ہیں ۔ اس واسطے سارا جگت بھی بھگوان کی شکتی سے بنا ہوا ہے۔ آدمی کا سارا بدن بھی پرمانوؤں سے بنا ہوا ہے ۔ مگر پرمانوؤں میں چیتنیتا نہیں ہوتی یعنی جس طرح ہر ایک آدمی کو معلوم ہوتا ہے کہ میں ہوں اس طرح پرمانوؤں کو کچھ معلوم نہیں ہوتا ۔ اس سے معلوم ہوا کہ آدمی میں پرمانوؤں کے سوائے کچھ اور بھی ہے جس سے اسے معلوم ہوتا ہے کہ 'میں ہوں' اس کچھ کو جس سے آدمی کو معلوم ہوتا ہے کہ 'میں ہوں' آتما کہتے ہیں۔ ہر ایک آدمی' جانور اور درخت میں آتما ہوتی ہے ۔ مگر جیوں جیوں کوئی اچھے اچھے کام کرتا جاتا ہے تیوں تیوں اس کی آتما بڑھتی جاتی ہے اور اس کی کام کرنے کی طاقت اور عقل بھی زیادہ ہوتی جاتی ہے ۔ مگر جیوں جیوں کوئی برے برے کام کرتا جاتا ہے تیوں تیوں اس کی آتما گھٹتی جاتی ہے اور کام کرنے کی طاقت اور عقل بھی کم ہوتی جاتی ہے ۔ آتما کبھی نہیں مرتی بلکہ ہمیشہ زندہ رہتی ہے ۔ مگر آدمی کا بدن پہلے پیدا ہوتا ہے' پھر رفتہ رفتہ بڑھتا اور طاقتور ہوتا جاتا ہے' اور پھر جوان ہو جاتا ہے ۔ پھر گھٹنا اور کمزور ہونا شروع ہوتا ہے ۔ پھر بڈھا ہو جاتا ہے اور آخرکار مر جاتا ہے ۔

جب بدن مر جاتا ہے تب آتما اس میں سے نکل کر دوسرے بدن میں چلی جاتی ہے ۔ اور پھر پہلی طرح سے بدن بڑھنا شروع ہوتا ہے ۔ جو آدمی اچھے اچھے کام کرتا ہے' برے کاموں سے بچتا ہے اور ہمیشہ بھگوان کی مرضی کے مطابق سب کچھ کرتا ہے' اس کا من' دل اور بدن بھی اچھے ہوتے جاتے ہیں اور مرنے کے وقت تک اچھے رہتے ہیں ۔ اس واسطے اگلے جنم میں بھی اچھا بدن' اچھا من اور اچھا دل ملتا ہے ۔ اور اس طرح

नागरिकों के हाथ में रहने चाहियें. मुनाफ़ों पर टैक्स लगे हुए हैं. मुनाफ़े और पूंजी की रक़म देश के बाहर नहीं जा पाती. विदेशी कम्पनी अपनी मर्ज़ी के माफ़िक़ मज़दूरों और कर्मचारियों को बरख़ास्त नहीं कर सकती वग़ैरा.

अमरीकी पूंजीपति चाहते हैं कि यह तमाम बन्धन ख़तम हो जायें, तमाम इस तरह के क़ायदे क़ानून रद्द हो जायं, ताकि फिर वह बड़े पैमाने पर अपनी पूंजी यहां लगा सकें और अपनी थैलियां भर सकें.

विदेशी विभाग की उसी किताब में लिखा है:

"तकनीकी सहयोग का कार्य क्रम ख़ुद इस सवाल पर मुक़ामी सरकारों का रुख़ बदलवाने में सहायक सिद्ध हो सकता है."

यह झूठी उम्मीद नहीं है, इसका सबूत यह है कि भारत के साथ तकनीकी समझौता होने के लगभग साथ साथ भारत सरकार स्टैन्डर्ड आयल और कैलटैक्स कम्पनियों को वह तमाम सुविधाएं देना क़बूल कर लिया जो अमरीकी पूंजीपति चाहते हैं. मिसाल के लिये ये कम्पनियां तेल साफ़ करने के जो कारख़ाने यहां खोलेंगी, उनके सिर्फ़ 25 फ़ीसदी हिस्से हिन्दुस्तानियों के हाथ में रहेंगे 30 साल तक राष्ट्रीकरन नहीं होगा, उसके बाद भी होगा तो पूरा मुआवज़ा दिया जायगा; मुनाफ़े और पूंजी की रक़में बिना रोक टोक के अमरीका भेजी जा सकेंगी, सरकार का उद्योग नियन्त्रन क़ानून नये कारख़ानों पर लागू नहीं होगा, वग़ैरा.

संक्षेप में अमरीकी मदद के तीन साफ़ आर्थिक मक़सद हैं:

(1) भारत के कच्चे माल और खनिज पदार्थों के साधनों को हथियाना;

(2) भारत में अपनी पूंजी लगा कर मोटे मुनाफ़े कमाना;

(3) पूंजी लगाने के रास्ते में जितनी आर्थिक या राजकाजी कठिनाइयां हैं, उन्हें इस मदद के ज़रिये दूर करना.

इस मदद को लेना भारत की आर्थिक व्यवस्था को अमरीकी सरमाया दारों को सौंप देना है. इस मदद को क़बूल करना भारत को लूटने में अमरीकी धन्ना सेठों की मदद करना है.

सवाल है कि हमारी सरकार क्यों यह ना समझी का क़दम उठा रही है? और कौन लोग हैं जो हमारे देश को अमरीकियों के हाथ बेच देने पर तुले हुए हैं? इस सवाल पर हम अगले अंक में रोशनी डालेंगे.

ناگرکوں کے ہاتھ میں رہنے چاہئے ۔ منافعوں پر ٹیکس لگے ہوئے ہیں ۔ منافعے اور پونجی کی رقم دیش کے باہر نہیں جا پاتی۔ ودیشی کمپنی اپنی مرضی کے موافق مزدوروں اور کرمچاریوں کو برخاست نہیں کر سکتی وغیرہ ۔

امریکی پونجی پتی چاہتے ہیں کہ یہ تمام بندھن ختم ہو جائیں' تمام اِس طرح کے قاعدے قانون رد ہو جائیں' تاکہ پھر وہ بڑے پیمانے پر اپنی پونجی یہاں لگا سکیں اور اپنی تھیلیاں بھر سکیں ۔

ودیشی وبھاگ کی اسی کتاب میں لکھا ہے ۔

" تکنیکی سہیوگ کا کاریہ کرم خود اس سوال پر مقامی سرکاروں کا رخ بدلوانے میں سہائک سدھ ہو سکتا ہے ۔"

یہ جھوٹی اُمید نہیں ہے' اس کا ثبوت یہ ہے کہ بھارت کے ساتھ تکنیکی سمجھوتہ ہونے کے لگ بھگ ساتھ ساتھ بھارت سرکار اسٹینڈرڈ آئل اور کالٹیکس کمپنیوں کو وہ تمام سودھائیں دینا قبول کر لیا جو امریکی پونجی پتی چاہتے ہیں ۔ مثال کے لئے یہ کمپنیاں تیل صاف کرنے کے جو کارخانے یہاں کھولینگی ان کے صرف 25 فی صدی حصے ہندستانیوں کے ہاتھ میں رہینگے' 30 سال تک راشٹری کرن نہیں ہوگا' اس کے بعد بھی ہوگا تو پورا معاوضہ دیا جائے گا؛ منافع اور پونجی کی رقمیں بنا روک ٹوک کے امریکہ بھیجی جا سکینگی' سرکار کا اُدیوگ نینترن قانون نئے کارخانوں پر لاگو نہیں ہوگا' وغیرہ ۔

سنکچھیپ میں امریکی مدد کے تین صاف آرتھک مقصد ہیں :

(1) بھارت کے کچے مال اور کھنج پدارتھوں کے سادھنوں کو ہتھیانا ؛

(2) بھارت میں اپنی پونجی لگا کر موٹے منافع کمانا ؛

(3) پونجی لگانے کے راستے میں جتنی آرتھک یا راج کاجی کٹھنائیاں ہیں' اُنہیں اس مدد کے ذریعہ دور کرنا ۔

اِس مدد کو لینا بھارت کی آرتھک ویوستھا کو امریکی سرمایہ داروں کو سونپ دینا ہے ۔ اس مدد کو قبول کرنا بھارت کو لوٹنے میں امریکی دھنا سیٹھوں کی مدد کرنا ہے ۔

سوال ہے کہ ہماری سرکار کیوں یہ ناسمجھی کا قدم اٹھا رہی ہے ؟ اور کون لوگ ہیں جو ہمارے دیش کو امریکیوں کے ہاتھ بیچ دینے پر تلے ہوئے ہیں ؟ اس سوال پر ہم اگلے انک میں روشنی ڈالیں گے ۔

पूंजी लगाने की सख्त जरूरत है. इसमें बहुत बड़ी पूंजी की जरूरत होती है, और बहुत से देशों में इन सुविधाओं के न होने के कारन वहां प्राइवेट पूंजी के आने में बहुत बड़ी कठिनाई पैदा हो गई है क्योंकि जब तक यह सुविधाएं न हों, तब तक इन देशों के जाने पहचाने आर्थिक साधनों को भी फैलाया नहीं जा सकता." (सफा 53)

इसके अलावा पिछड़े हुए देशों के अलग अलग ढंग के साधनों की जांच करना, गिनती कराना, आंकड़े इकट्ठा करना भी जरूरी होता है, क्योंकि यह सब जानकारी इकट्ठा करने के बाद ही अमरीकी पूंजीपति तय कर सकते हैं कि किस धन्दे में कितनी पूंजी लगाई जाय.

अब जरा इस तरफ ध्यान दीजिये कि अमरीका से या उसकी देख रेख में चलने वाली पर अन्तर राष्ट्री कहलाने वाली संस्थाओं से हमें जो मदद मिली है, वह किन कामों में लग रही है [वह ठीक इन्हीं कामों में लग रही है जिनकी अमरीकी पूंजी को जरूरत है और जिनका ऊपर जिक्र किया गया है]

विश्व बैंक से क़र्जे मिले हैं तो बिजली की कलें खड़ी करने के लिये, कुछ सिंचाई का प्रबन्ध करने के लिये, रेल के इंजिन खरीदने के लिये और कांस के जंगल हटा कर परती जमीन तोड़ने के वास्ते ट्रैक्टर खरीदने के लिये.

तकनीकी सहयोग समझौते के जरिये अमरीकी सरकार से मदद मिली है तो बिजली के कुएं लगाने के लिये, सिंचाई का दूसरा प्रबन्ध करने के लिये, खाद खरीदने के लिये और हमारे तरह तरह के साधनों की गिनती कराने के लिये.

अमरीकी मदद का मक़सद भारत में सिर्फ़ ऐसी परिस्थितियां तैयार करना है जिन में यहां बड़े पैमाने पर प्राइवेट अमरीकी पूंजी आ सके.

अमरीकी विदेशी विभाग के जिस प्रकाशन का जिक्र हमने ऊपर किया है उसमें साफ़ साफ़ लिखा है:

"..... तकनीकी सहयोग का कार्य क्रम खुद उन मुश्किलों में से कुछ को दूर कर देगा जो विदेशों में प्राइवेट पूंजी लगाने के रास्ते में आड़े आती हैं." (सफा 71)

प्राइवेट पूंजी के रास्ते में दूसरी बड़ी मुश्किल राजकाजी है. खास कर दूसरी बड़ी लड़ाई के बाद से पिछड़े हुए देशों में राष्ट्री चेतना बहुत बढ़ गई है. वहां के लोग अपने आर्थिक साधनों पर अपना नियंत्रन रखना चाहते हैं. इन देशों की पूंजीवादी सरकारों तक ने तरह तरह के ऐसे क़ायदे क़ानून बना रखे हैं जिन से अमरीकी पूंजी को खुल कर मुनाफ़ा लूटने की छूट नहीं रहती. कहीं विदेशी पूंजी को हमेशा राष्ट्रीकरण का डर लगा रहता है. कहीं नियम है कि हर एक कम्पनी के 51 फ़ीसदी हिस्से देशी

پونجی لگانے کی سخت ضرورت ہے . اس میں بہت بڑی پونجی کی ضرورت ہوتی ہے . اور بہت سے دیشوں میں ان سودھاؤں کے نہ ہونے کے کارن وہاں پرائیویٹ پونجی کے آنے میں بہت بڑی کٹھنائی پیدا ہوگئی ہے کیونکہ جب تک یہ سودھائیں نہ ہوں' تب تک ان دیشوں کے جانے پہچانے آرتھک سادھنوں کو بھی پھیلایا نہیں جاسکتا ." (صفحہ 53)

اس کے علاوہ پچھڑے ہوئے دیشوں کے الگ الگ ڈھنگ کے سادھنوں کی جانچ کرنا' گنتی کرانا' آنکڑے اکٹھا کرنا بھی ضروری ہوتا ہے' کیونکہ یہ سب جانکاری اکٹھا کرنے کے بعد ہی امریکی پونجی پتی طے کرسکتے ہیں کہ کس دھندے میں کتنی پونجی لگائی جائے .

اب ذرا اس طرف دھیان دیجئے کہ امریکہ سے یا اس کی دیکھ ریکھ میں چلنے والی پر انٹرنیشنل کہلانے والی سنستھاؤں سے ہمیں جو مدد ملی ہے' وہ کن کاموں میں لگ رہی ہے . [وہ ٹھیک انہیں کاموں میں لگ رہی ہے جن کی امریکی پونجی کو ضرورت ہے اور جن کا اوپر ذکر کیا گیا ہے .]

وشو بینک سے قرضے ملے ہیں تو بجلی کی کلیں کھڑی کرنے کے لئے' کچھ سینچائی کا پربندھ کرنے کے لئے' ریل کے انجن خریدنے کے لئے اور کانس کے جنگل ہٹا کر پرتی زمین توڑنے کے واسطے ٹریکٹر خریدنے کے لئے .

تکنیکی سہیوگ سمجھوتے کے ذریعے امریکی سرکار سے مدد ملی ہے تو بجلی کے کنوئیں لگانے کے لئے' سینچائی کا دوسرا پربندھ کرنے کے لئے' کھاد خریدنے کے لئے اور ہمارے طرح طرح کے سادھنوں کی گنتی کرانے کے لئے .

امریکی مدد کا مقصد بھارت میں صرف ایسی پرستھتیاں تیار کرنا ہے جن میں یہاں بڑے پیمانے پر پرائیویٹ امریکی پونجی آ سکے .

امریکی ودیشی وبھاگ کے جس پرکاشن کا ذکر ہم نے اوپر کیا ہے اس میں صاف صاف لکھا ہے .

" ....تکنیکی سہیوگ کا کاریہ کرم خود ان مشکلوں میں سے کچھ کو دور کر دے گا جو ودیشوں میں پرائیویٹ پونجی لگانے کے راستے میں آڑے آتی ہیں ."
(صفحہ 71)

پرائیویٹ پونجی کے راستے میں دوسری بڑی مشکل راج کاجی ہے . خاص کر دوسری بڑی لڑائی کے بعد سے پچھڑے ہوئے دیشوں میں راشٹری چیتنا بہت بڑھ گئی ہے . وہاں کے لوگ اپنے آرتھک سادھنوں پر اپنا نینترن رکھنا چاہتے ہیں . ان دیشوں کی پونجی وادی سرکاروں تک نے طرح طرح کے ایسے قاعدے قانون بنا رکھے ہیں جن سے امریکی پونجی کو کھل کر منافع لوٹنے کی چھوٹ نہیں رہتی . کہیں ودیشی پونجی کو ہمیشہ راشٹریکرن کا ڈر لگا رہتا ہے . کہیں نیم ہے کہ ہر ایک کمپنی کے 51 فیصدی حصے دیشی

पिछड़े हुए देशों में अमरीकी प्राइवेट पूंजी भेजने पर इतना ज़ोर बिना वजह नहीं है. पिछड़े हुए देशों में कच्चा माल सस्ता मिलता है, मजदूरों को तनखा कम देनी पड़ती है और इसलिये मुनाफ़े मोटे होते हैं. मिसाल के लिये, अमरीका की चन्द बड़ी कम्पनियों को लीजिये और देखिये कि उन्हें अमरीका के अन्दर लगी हुई पूंजी से कितना मुनाफ़ा होता है और विदेशों में लगी हुई पूंजी से कितना.

1948 में मुनाफ़े की दर

कम्पनी का नाम	देश में लगी पूंजी पर मुनाफ़े की दर (फ़ी सदी)	विदेश में लगी पूंजी पर मुनाफ़े की दर
स्टैण्डर्ड आयल	11	33
जनरल मोटर्स	25	80
अनाकोण्डा कौपर	5	13
फ़ायर स्टोन रबर	7	26

स्वयं भारत में लगी हुई अमरीकी पूंजी पर 1948 में लगभग 40 फ़ीसदी मुनाफ़ा हुआ था. यानी पिछड़े हुए देशों में पूंजी लगाना अमरीका या योरप में पूंजी लगाने से कहीं अधिक मुनाफ़ा देता है. पर ऐसा करने में अमरीकी पूंजी को कई बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है.

पर मुश्किल यह है कि पिछड़े हुए देशों में बिजली का, रेलों सड़कों का, बन्दरगाहों और हवाई अड्डों का, नहरों, सिंचाई और सफ़ाई का प्रबंध इतना खराब है कि वहां बड़े पैमाने पर अमरीकी पूंजी लगा कर मुनाफ़ा कमाना ना मुमकिन है.

प्राइवेट पूंजी के लिये ज़मीन तैयार की जा रही है

अमरीकी विदेशी विभाग के प्रकाशन "चौथी बातः आर्थिक नज़र से पिछड़े हुए देशों के विकास का सहयोगी कार्य क्रम" में कहा गया है :

"यातायात की खराबियों से......आर्थिक ठहराव पैदा होता है और अन्तर राष्ट्री व्योपार की चाल कम हो जाती है......उनकी वजह से खनिज पदार्थों और लकड़ी को देशी खरीदारों तक और विदेशों को ले जाने में नामुमकिन हो जाता है......उनकी वजह से कल कारखानों के बने माल का बाज़ार सीमित हो जाता है और कल-कारखानों के लिये ज़रूरी कच्चे माल को पाना मंहगा पड़ जाता है." (सफ़ा 28)

"सिंचाई की व्यवस्था......बाढ़ रोकने का प्रबंध, नावों और जहाज़ों के आने जाने की सुविधाएं वग़ैरा आर्थिक विकास के लिये बहुत ज़रूरी हैं." (सफ़ा 27)

"बिजली की कलों, रेलों और सड़कों डाक तार, बन्दरगाहों के विकास और सिंचाई सफ़ाई वग़ैरा की व्यवस्थाओं में

پچھڑے ہوئے دیشوں میں امریکی پرائیویٹ پونجی بھیجنے پر اتنا زور بنا وجہ نہیں ہے. پچھڑے ہوئے دیشوں میں کچا مال سستا ملتا ہے، مزدوروں کو تنخواہ کم دینی پڑتی ہے اور اس لئے منافع موٹے ہوتے ہیں. مثال کے لئے، امریکہ کی چند بڑی کمپنیوں کو لیجئے اور دیکھئے کہ انہیں امریکہ کے اندر لگی ہوئی پونجی سے کتنا منافع ہوتا ہے اور ودیشوں میں لگی ہوئی پونجی سے کتنا.

1948 میں منافع کی در

کمپنی کا نام	دیش میں لگی پونجی پر منافع کی در (فیصدی)	ودیش میں لگی پونجی پر منافع کی در
اسٹینڈرڈ آئل	11	33
جنرل موٹرس	25	80
اناکونڈا کوپر	5	13
فائر اسٹون ربر	7	26

سوئم بھارت میں لگی ہوئی امریکی پونجی پر 1948 میں لگ بھگ 40 فیصدی منافع ہوا تھا. یعنی پچھڑے ہوئے دیشوں میں پونجی لگانا امریکہ یا یورپ میں پونجی لگانے سے کہیں ادھک منافع دیتا ہے. پر ایسا کرنے میں امریکی پونجی کو کئی بڑی مشکلوں کا سامنا کرنا پڑتا ہے.

پر مشکل یہ ہے کہ پچھڑے ہوئے دیشوں میں بجلی کا، ریلوں سڑکوں کا، بندرگاہوں اور ہوائی اڈوں کا، نہروں، سینچائی اور صفائی کا پربندھ اتنا خراب ہے کہ وہاں بڑے پیمانے پر امریکی پونجی لگا کر منافع کمانا ناممکن ہے.

پرائیویٹ پونجی کے لئے زمین تیار کی جا رہی ہے

امریکی ودیشی وبھاگ کے پرکاشن "چوتھی بات: آرتھک نظر سے پچھڑے ہوئے دیشوں کے وکاس کا سہیوگی کاریہ کرم" میں کہا گیا ہے:

"یاتایات کی خرابیوں سے......آرتھک ٹھہراؤ پیدا ہوتا ہے اور انتر راشٹری بیوپار کی چال کم ہو جاتی ہے......ان کی وجہ سے کھنج پدارتھوں اور لکڑی کو دیشی خریداروں تک اور ودیشوں کو لے جانے میں ناممکن ہو جاتا ہے......ان کی وجہ سے کل کارخانوں کے بنے مال کا بازار سیمت ہو جاتا ہے اور کل کارخانوں کے لئے ضروری کچے مال کو پانا مہنگا پڑ جاتا ہے." (صفحہ 28)

"سینچائی کی ویوستھا......باڑھ روکنے کا پربندھ، ناوؤں اور جہازوں کے آنے جانے کی سوودھائیں وغیرہ آرتھک وکاس کے لئے بہت ضروری ہیں." (صفحہ 27)

"بجلی کی کلوں، ریلوں اور سڑکوں، ڈاک تار، بندرگاہوں وکاس اور سینچائی صفائی وغیرہ کی ویوستھاؤں میں

जरूरतों को पूरा करने के लिये जरूरी है कि "पिछड़े हुए देशों को ऐसी तकनीकी और आर्थिक मदद दी जाय जिससे वह खेती, शिक्षा, तन्दुरुस्ती और यातायात के बुनियादी क्षेत्रों में जरूरी तरक्क़ी कर सकें." (सफ़ा 8)

आपसी सुरक्षा क़ानून की दफ़ा 514 में साफ़-साफ़ लिखा है कि

'इस क़ानून के दायरे में आने वाले इलाक़ों में, ऐसे कच्चे मालों की पैदावार बढ़ाने के लिये, जिनकी अमरीका में कमी है, 550 लाख डालर ख़र्च करने का अधिकार सरकार को दिया जाता है."

भारत को इसी मद में वह मदद मिली है जिससे नेहरू सरकार ग्राम-सुधार का काम चला रही है.

भारत से अमरीका को क्या चाहिये

अमरीका की प्रतिनिधि सभा के विदेशी नीति सम्बन्धी उप समिति ने अपनी एक रिपोर्ट में बताया है :

"भारत में ऐसे कितने ही कच्चे माल पाये जाते हैं जिन्हें अमरीका में फ़ौजी नज़र से महत्त्वपूर्न समझा जाता है. ऐसी जिन चीज़ों के अमरीका में भंडार इकट्ठा किये जा रहे हैं; उन में से नीचे लिखी चीज़ें हिन्दुस्तान में काफ़ी मात्रा में पाई जाती हैं : बेरिल, रेंडी के बीज, क्रोमाइट, गोले का तेल, कायनाइट, मैंगनीज़, अबरक, मोनेज़ाइट, 'अफ़ीम' काली मिर्च, रबड़, रूटाइल, लाख, खड़िया, और ज़िर-कौन. जूट, चमड़ा (बकरों और बछड़ों की खालें) और सीसम का तेल भी, जो अमरीका में इकट्ठा तो नहीं किये जाते पर जिनकी यहां काफ़ी कमी है, हिन्दुस्तान में पाए जाते हैं......इन सभी चीज़ों की अमरीका को आज सख़्त ज़रूरत है."

इस तरह साफ़ हो जाता है कि भारत में अमरीका की दिलचस्पी का पहला आर्थिक कारन हमारे कच्चे माल और फ़ौजी महत्त्व के खनिज पदार्थों के उत्पादन पर क़ब्ज़ा करना है.

प्राइवेट पूंजी लगा कर मुनाफ़ा कमाने का मक़सद

दूसरा कारन हमारे देश में पूंजी लगा कर ज़ियादा से ज़ियादा मुनाफ़ा कमाना है. इस मक़सद का उनके पहले मक़सद से यानी हमारे कच्चे माल को हथियाने के मक़सद से गहरा सम्बन्ध है.

अमरीकी शासकों की पक्की राय है कि सिर्फ़ सरकारी तौर पर भेजी गई आर्थिक या तकनीकी मदद से काम नहीं चलेगा. पाली कमीशन ने कहा है कि "इतिहास में यह काम (कच्चे मालों का उत्पादन बढ़ाना और उस पर क़ब्ज़ा करना) सदा प्राइवेट पूंजी ने किया है और अब भी पिछड़े हुए देशों में कच्चे माल का उत्पादन बढ़ाने की ख़ास ज़िम्मेदारी प्राइवेट अमरीकी पूंजी को संभालनी चाहिये."

ضرورتوں کو پورا کرنے کے لئے ضروری ہے کہ " پچھڑے ہوئے دیشوں کو ایسی تکنیکی اور آرتھک مدد دی جائے جس سے وہ کھیتی، شکشا، تندرستی اور یاتایات کے بنیادی چھیتروں میں ضروری ترقی کر سکیں." (صفحہ 8) .

آپسی سرکھشا قانون کی دفعہ 514 میں صاف صاف لکھا ہے کہ "اس قانون کے دائرے میں آنے والے علاقوں میں، ایسے کچے مالوں کی پیداوار بڑھانے کے لئے، جن کی امریکہ میں کمی ہے، 550 لاکھ ڈالر خرچ کرنے کا ادھیکار سرکار کو دیا جاتا ہے."

بھارت کو اسی مد میں وہ مدد ملی ہے جس سے نہرو سرکار گرام سدھار کا کام چلا رہی ہے.

بھارت سے امریکہ کو کیا چاہئے

امریکہ کی پرتی ندھی سبھا کی ودیشی نیتی سمبندھی اپ سمیتی نے اپنی ایک رپورٹ میں بتایا ہے :

" بھارت میں ایسے کتنے ہی کچے مال پائے جاتے ہیں جنہیں امریکہ میں فوجی نظر سے مہتوپورن سمجھا جاتا ہے . ایسی جن چیزوں کے امریکہ میں بھنڈار اکٹھا کئے جا رہے ہیں، ان میں نیچے لکھی چیزیں ہندستان میں کافی ماترا میں پائی جاتی ہیں: بیرل، ریلڈی کے بیج، کرومائٹ، گولے کا تیل، کاینائٹ، مینگنیز، ابرک، مونےزائٹ، افیم، کالی مرچ، ربڑ، روٹائل، لاکھ، کھڑیا اور زرکون . جوٹ، چمڑا (بکروں اور بچھڑوں کی کھالیں) اور سیسم کا تیل بھی، جو امریکہ میں اکٹھا تو نہیں کئے جاتے پر جن کی یہاں کافی کمی ہے، ہندستان میں پائے جاتے ہیں..... ان سبھی چیزوں کی امریکہ کو آج سخت ضرورت ہے."

اس طرح صاف ہو جاتا ہے کہ بھارت میں امریکہ کی دلچسپی کا پہلا آرتھک کارن ہمارے کچے مال اور فوجی مہتو کے کھنج پدارتھوں کے اتپادن پر قبضہ کرنا ہے.

پرائیویٹ پونجی لگا کر منافع کمانے کا مقصد

دوسرا کارن ہمارے دیش میں پونجی لگا کر زیادہ سے زیادہ منافع کمانا ہے . اس مقصد کا ان کے پہلے سے مقصد یعنی ہمارے کچے مال کو ہتھیانے کے مقصد سے گہرا سمبندھ ہے .

امریکی شاسکوں کی پکی رائے ہے کہ صرف سرکاری طور پر بھیجی گئی آرتھک یا تکنیکی مدد سے کام نہیں چلےگا . پالی کمیشن نے کہا ہے کہ "اتہاس میں یہ کام (کچے مالوں کا اتپادن بڑھانا اور اس پر قبضہ کرنا) سدا پرائیویٹ پونجی نے کیا ہے اور اب بھی پچھڑے ہوئے دیشوں میں کچے مال کا اتپادن بڑھانے کی خاص ذمہ داری پرائیویٹ امریکی پونجی کو سنبھالنی چاہئے."

पाली कमीशन ने पहले जांच की कि अमरीकी कल-कारखानों को आजकल कितने और कौन से कच्चे माल की ज़रूरत है, उसमें से कौन सा और कितना माल खुद अमरीका में पैदा हो जाता है और कितना बाहर से मंगाना पड़ता है. इसके बाद पाली कमीशन ने हिसाब लगाया कि अगले पचीस साल में अमरीका को कितने कच्चे माल की ज़रूरत होगी और वह कहां से आयेगा.

कच्चे माल की समस्या

पाली कमीशन जिस नतीजे पर पहुंचा वह थोड़े में यह है:

अमरीका के लिये कच्चे माल की समस्या बहुत गम्भीर शकल धारन करती जा रही है. 1900 में अमरीका जितना कच्चा माल खर्च करता था, उससे 15 फ़ी सदी से ज़ियादा वह खुद पैदा कर लेता था. 1950 तक वह अपनी पैदावार से भी नौ फ़ी सदी ज़ियादा खर्च करने लगा और 1975 तक वह पैदावार से 20 फ़ी सदी ज़ियादा खर्च करने लगेगा.

इसके अलावा, कमीशन ने कहा, अगले पचीस साल में किसी भी वक़्त बड़ी लड़ाई छिड़ सकती है. उसके लिये अमरीका को कच्चे मालों का बहुत बड़ा भंडार जमा करके रखना पड़ेगा. वह भंडार इतना बड़ा होना चाहिये कि दुश्मन के हवाई जहाज़ बम फेंक कर उसके एक भाग को नष्ट कर दें तो भी वह कम न पड़े.

इस तरह कच्चे माल की समस्या ने खतरनाक रूप पा लिया है और कमीशन की राय में अगर उसे हल न किया गया तो अमरीका की हिफ़ाज़त खतरे में पड़ जायगी.

कमीशन लिखता है: "असली सवाल यह है कि क्या उन पिछड़े हुए देशों में जहां ज़रूरी कच्चे माल सबसे सस्ते मिलते हैं, हम ज़रूरी पूंजी, मशीनें, और तकनीक और व्यवस्था से सम्बन्ध रखने वाले एक्सपर्ट भेज सकेंगे ताकि वहां हमारी ज़रूरत के मुताबिक़ कच्चा माल तैयार हो सके."

पिछड़े हुए देशों का महत्व

ज़ाहिर है, यह पिछड़े हुए देश, एशिया, अफ़्रीका और दक्खिनी अमरीका के ग़ुलाम या अधग़ुलाम देश हैं. जब आपसी सुरक्षा क़ानून (जिसके मातहत भारत को तकनीकी मदद मिली है) अमरीकी पार्लिमेन्ट के सामने पेश था, तब पार्लिमेन्ट के मेम्बरों को दूसरे देशों की मदद करने की ज़रूरत समझाने के लिये अमरीकी सरकार ने एक किताब निकाली थी. उसमें इन पिछड़े हुए देशों के बारे में लिखा था:

"संसार के ज़ियादातर क़ुदरती साधन इन्हीं देशों में पाये जाते हैं. दुनिया का सारा रबड़, सारा जूट, दो तिहाई तेल, और ज़ियादातर टिन, मैंगनीज़, कुनैन और दूसरे फ़ौजी महत्व के कच्चे माल इन्हीं देशों में मिलते हैं" (सफ़ा 7-8)

आगे चलकर इसी किताब में साफ़ साफ़ लिखा है कि ऊपर लिखी बातों को ध्यान में रखते हुए अमरीका की फ़ौजी

پالی کمیشن نے پہلے جانچ کی کہ امریکی کل کارخانوں کو آج کل کتنے اور کون سے کچے مال کی ضرورت ہے، اس میں سے کون سا اور کتنا مال خود امریکہ میں پیدا ہو جاتا ہے اور کتنا باہر سے منگانا پڑتا ہے۔ اس کے بعد پالی کمیشن نے حساب لگایا کہ اگلے پچیس سال میں امریکہ کو کتنے کچے مال کی ضرورت ہوگی اور وہ کہاں سے آئے گا۔

کچے مال کی سمسیا

پالی کمیشن جس نتیجے پر پہونچا وہ تھوڑے میں یہ ہے:

امریکہ کے لئے کچے مال کی سمسیا بہت گمبھیر شکل دھارن کرتی جا رہی ہے۔ 1900 میں امریکہ جتنا کچا مال خرچ کرتا تھا، اس سے 15 فیصدی سے زیادہ وہ خود پیدا کر لیتا تھا۔ 1950 تک وہ اپنی پیداوار سے بھی نو فیصدی زیادہ خرچ کرنے لگا اور 1975 تک وہ پیداوار سے 20 فیصدی زیادہ خرچ کرنے لگے گا۔

اِس کے علاوہ کمیشن نے کہا، اگلے پچیس سال میں کسی بھی وقت بڑی لڑائی چھڑ سکتی ہے۔ اُس کے لئے امریکہ کو کچے مالوں کا ایک بہت بڑا بھنڈار جمع کر کے رکھنا پڑے گا۔ وہ بھنڈار اتنا بڑا ہونا چاہئے کہ دشمن کے ہوائی جہاز بم پھینک کر اُس کے ایک بھاگ کو نشٹ کر دیں تو بھی وہ کم نہ پڑے۔

اِس طرح کچے مال کی سمسیا نے خطرناک روپ پا لیا ہے اور کمیشن کی رائے میں اگر اسے حل نہ کیا گیا تو امریکہ کی حفاظت خطرے میں پڑ جائے گی۔ کمیشن لکھتا ہے: "اصلی سوال یہ ہے کہ کیا اُن پچھڑے ہوئے دیشوں جہاں ضروری کچے مال سب سے سستے ملتے ہیں ہم ضروری پونجی، مشینیں، اور تکنیک اور ویوستھا سے سمبندھ رکھنے والے ایکسپرٹ بھیج سکیںگے تاکہ وہاں ہماری ضرورت کے مطابق کچا مال تیار ہو سکے۔"

پچھڑے ہوئے دیشوں کا مہتو

ظاہر ہے، یہ پچھڑے ہوئے دیش، ایشیا، افریقہ اور دکھنی امریکہ کے غلام یا ادھ غلام دیش ہیں۔ جب آپسی سرکشا قانون (جس کے ماتحت بھارت کو تکنیکی مدد ملی ہے) امریکی پارلیامنٹ کے سامنے پیش تھا، تب پارلیامنٹ کے ممبروں کو دوسرے دیشوں کی مدد کرنے کی ضرورت سمجھانے کے لئے امریکی سرکار نے ایک کتاب نکالی تھی۔ اُس میں اِن پچھڑے ہوئے دیشوں کے بارے میں لکھا تھا:

"سنسار کے زیادہ تر قدرتی سادھن اِنہیں دیشوں میں پائے جاتے ہیں۔ دنیا کا سارا ربڑ، سارا جوٹ، دو تہائی تیل، اور زیادہ تر ٹن، مینگنیز، کونین اور دوسرے فوجی مہتو کے کچے مال اِنہیں دیشوں میں ملتے ہیں۔"
(صفحہ 7-8)

آگے چل کر اسی کتاب میں صاف صاف لکھا ہے کہ اوپر لکھی باتوں کو دھیان میں رکھتے ہوئے اور امریکہ کی فوجی

रही है. "अगर यह प्रवृत्ति जारी रही तो भारत में कम्युनिस्टों की ताक़त बढ़ जायगी और एशिया में एक बहुत ख़तरनाक हालत पैदा हो जायगी." (20 मार्च 1952)

इसके लिये मिस्टर एचेसन ने अमरीकी कांग्रेस पर ज़ोर दिया कि वह फ़ौरन भारत को मदद भेजना मंज़ूर करे. उनके शब्द यह थे :

"हिन्दुस्तान में मौजूद हमारे सभी सलाहकारों की राय है कि अगर बड़े वज़ीर नेहरू के नेतृत्व में स्थापित नई सरकार अगले पांच साल में काफ़ी आर्थिक विकास करके नहीं दिखाती तो अगले चुनाव में जनवादी ताक़तें ख़तरे में पड़ जायेंगी और या तो अति उग्रवादी या कम्युनिस्ट ऊपर आ जायेंगे."

नतीजा यह हुआ कि चुनाव पूरी तरह ख़तम भी नहीं हुए थे कि 5 जनवरी 1952 को भारत और अमरीका के बीच तकनीकी सहयोग समझौता हो गया और अमरीकी मदद और कर्ज़ों की झड़ी भारत में लग गई. "अमृत बाज़ार पत्रिका" के नई दिल्ली में संवाददाता डाक्टर कृष्नलाल श्रीधरानी के शब्दों में :

"चुनाव की पटख़नियों से ख़ुद हारे हुए उम्मीदवारों को इतनी बौखलाहट नहीं हुई जितनी अमरीकी दर्शकों को हुई. तभी से नित नये अमरीकी मिशन यहां आने लगे और रोज़ नई मदद के वादे होने लगे......" ("पत्रिका" 20 अप्रैल 1952)

अमरीकी मदद का राजकाजी रहस्य

थोड़े में, जहां तक अमरीका के राजकाजी मक़सदों का सवाल है, चन्द बातें बिल्कुल साफ़ हो जाती हैं :

(1) जब से अमरीका ने दुनिया पर अपना क़बज़ा जमाने और समाजवादी रूस से लड़ने की ठानी, तब से उसकी नज़रों में भारत महत्वपूर्न बन गया.

(2) चीन के आज़ाद हो जाने पर भारत का महत्व और भी बढ़ गया; एशिया में अब अमरीका को अपना सहारा यही एक देश दिखाई देता है.

(3) पिछले आम चुनाव ने अमरीकियों को बदहवास कर दिया. उन्होंने समझ लिया कि अगर उन्होंने फ़ौरन हिन्दुस्तान को अपनी मुट्ठी में नहीं किया तो चीन की तरह वह भी उनके हाथ से निकल जायगा.

अमरीकी मदद का राजकाजी रहस्य, थोड़े में, यही है.

(2)

अब आर्थिक कारनों पर भी विचार कर लिया जाय.

जून 1951 में ट्रूमन ने कच्चे माल सम्बन्धी नीति के बारे में जांच करने के लिये विलियम पाली नामक एक बड़े पूंजीपति की सदारत में एक कमीशन क़ायम किया था. पाली कमीशन की चार जिल्दों की भारी-भरकम रिपोर्ट अभी हाल में छपी है. उससे भारत के आर्थिक साधनों में अमरीका की दिलचस्पी का कारन बिल्कुल साफ़ हो जाता है.

رہی ہے . " اگر یہ پرورتی جاری رہی تو بھارت میں کمیونسٹوں کی طاقت بڑھ جائے گی اور ایشیا میں ایک بہت خطرناک حالت پیدا ہو جائے گی." (20 مارچ 1952)

اس کے لئے مسٹر ایچے سن نے امریکی کانگریس پر زور دیا کہ وہ فوراً بھارت کو مدد بھیجنا منظور کرے . اُن کے شبد یہ تھے :

ہندستان میں موجود ہمارے سبھی صلاح کاروں . کی رائے ہے کہ اگر بڑے وزیر نہرو کے نیترتو میں استھاپت نئی سرکار اگلے پانچ سال میں کافی آرتھک وکاس کر کے نہیں دکھاتی تو اگلے چناؤ میں جن وادی طاقتیں خطرے میں پڑ جائیں گی اور یا تو آتی اگر وادی یا کمیونسٹ اوپر آجائیں گے."

نتیجہ یہ ہوا کہ چناؤ پوری طرح ختم بھی نہیں ہوئے تھے کہ 5 جنوری 1952 کو بھارت اور امریکہ کے بیچ تکنیکی سہیوگ سمجھوتہ ہو گیا اور امریکی مدد اور امریکی قرضوں کی جھڑی بھارت میں لگ گئی. " امرت بازار پتریکا " کے نئی دلی میں سمواددانا ڈاکٹر کرشن لال شری دھرانی کے شبدوں میں :

" چناؤ کی پٹخنیوں سے خود ہارے ہوئے امیدواروں کو اتنی بوکھلاہٹ نہیں ہوئی جتنی امریکی درشکوں کو ہوئی . تبھی سے نت نئے امریکی مشن یہاں آنے لگے اور روز نئی مدد کے وعدے ہونے لگے......" (" پتریکا " 20 اپریل 1952)

امریکی مدد کا راج کاجی رہسیہ

تھوڑے میں، جہاں تک امریکہ کے راج کاجی مقصدوں کا سوال ہے، چند باتیں بالکل صاف ہو جاتی ہیں :

(1) جب سے امریکہ نے دنیا پر اپنا قبضہ جمانے اور سماج وادی روس سے لڑنے کی ٹھانی، تب سے اس کی نظروں میں بھارت مہتو پورن بن گیا .

(2) چین کے آزاد ہو جانے پر بھارت کا مہتو اور بھی بڑھ گیا؛ ایشیا میں اب امریکہ کو اپنا سہارا یہی ایک دیش دکھائی دیتا ہے !

(3) پچھلے عام چناؤ نے امریکیوں کو بدحواس کر دیا . انہوں نے سمجھ لیا کہ اگر انہوں نے فوراً ہندستان کو اپنی مٹھی میں نہیں کیا تو چین کی طرح وہ بھی اُن کے ہاتھ سے نکل جائے گا .

(2)

امریکی مدد کا راج کاجی رہسیہ، تھوڑے میں، یہی ہے.

اب آرتھک کارنوں پر بھی وچار کر لیا جائے .

جون 1951 میں ٹرومن نے کچے مال سمبندھی نیتی کے بارے میں جانچ کرنے کے لئے ولیم پالی نامک ایک بڑے پونجی پتی کی صدارت میں ایک کمیشن قائم کیا تھا . پالی کمیشن کی چار جلدوں کی بھاری بھرکم رپورٹ ابھی حال میں چھپی ہے . اس نے بھارت کے آرتھک سادھنوں میں امریکہ کی دلچسپی کا کارن بالکل صاف ہو جاتا ہے .

कामनवेल्थ में रहने का असर

दिसम्बर 1949 में नई दिल्ली में एक भारत-अमरीका सम्मेलन हुआ जिसमें घनश्यामदास बिड़ला और कई बड़े भारती पूंजीपतियों ने भी भाग लिया. इस सम्मेलन में अमरीका के विदेश नीति संघ (फ़ारेन पालिसी एसोसियेशन) की मेम्बर, वीरा मिचलैस डीन ने अमरीका के नये दृष्टि-कोण को इन शब्दों में समझाया :

"एक बार चीन से निराश हो जाने के बाद अमरीका भारत की ओर बढ़ती हुई दिलचस्पी के साथ देखने लगा है....भारत अमरीका के लिये आर्थिक नज़र से भी महत्व-पूर्न है क्योंकि वह लाख, जूट, अबरक, मैंगनीज़ और ऐसी बहुत सी चीज़ें पैदा करता है जो फ़ौजी नज़र से बहुत ज़रूरी हैं. उधर, भारत बिजली पैदा करने और कल-कारख़ाने खोलने की एक भारी योजना तैयार कर रहा है जिसके लिये उसे अमरीका से तकनीकी और आर्थिक मदद लेनी पड़ेगी. कुछ अमरीकावासियों को पहले डर था कि भारत अमरीका और सोवियत संघ के बीच तटस्थता का रुख़ अपनायेगा. पर जब 1949 में भारत ने ब्रिटिश कामनवेल्थ में रहने का तय किया, जिसके साथ अमरीका का 1945 से ही पूरा राजकाजी, आर्थिक और फ़ौजी सहयोग चल रहा है, तो यह डर किसी क़दर दूर हो गया." ("लड़ाई से पहले अमरीकी विदेशी नीति की मुख्य "प्रवृत्तियां" नामक साइक्लोस्टाइल लेख जो नई दिल्ली के सम्मेलन में पढ़ा गया.)

जब नेहरू सरकार ने कोरिया में शान्ति क़ायम करने की कोशिश की और पंडित नेहरू ने स्टालिन और एचेसन को ख़त लिखे और जब भारत सरकार ने जापानी संधि के अमरीकी मसविदे पर दस्तख़त करने से इनकार कर दिया तो अमरीकी अफ़सर और अमरीकी पत्रकार बहुत बिगड़े और उन्होंने भारत सरकार और नेहरू को ख़ूब बुरा भला कहना शुरू कर दिया.

चुनाव के बाद की बौखलाहट

पर पिछले आम चुनाव में भारत के कुछ इलाक़ों में कम्युनिस्टों की जीतों ने अमरीकावालों को फिर से भारत का शुभ चिन्तक बना दिया.

दिसम्बर 1951 में केवल ट्रावनकोर कोचीन के चुनाव के नतीजे ही प्रकाशित हुए थे कि राजदूत चेस्टर बाउल्स दौड़े-दौड़े अमरीका पहुँचे और वहां फ़ौरन भारत की मदद बढ़ाने के लिये अमरीकी अधिकारियों से सिफ़ारिश की.

16 फ़रवरी 1952 को अमरीका के सहायक विदेश मंत्री मिस्टर थौर्प ने कहा :

"भारतीय चुनाव, जिनमें कम्युनिस्टों ने ताक़त पकड़ी, बतलाते हैं कि भारत सरकार को जल्दी ही आर्थिक विकास के काम में लग जाना चाहिये......अमरीकी सरकार इस प्रोग्राम में मदद करेगी."

विदेश मंत्री मिस्टर एचेसन ने कहा कि भारती चुनाव से ज़ाहिर है कि इस देश में एक ग़लत प्रवृत्ति ज़ोर पकड़

کامن ویلتھ میں رہنے کا اثر

دسمبر 1949 میں نئی دلی میں ایک بھارت-امریکہ سمیلن ہوا جس میں گھنشیام داس برلا اور کئی بڑے بھارتی پونجی پتیوں نے بھی بھاگ لیا . اس سمیلن میں امریکہ کے ودیش نیتی سنگھ (فارن پالیسی ایسوسی ایشن) کی ممبر ویرا مچلیس ڈین نے امریکہ کے نئے درشٹی کون کو ان شبدوں کو سمجھایا :

"ایک بار چین سے نراش ہوجانے کے بعد امریکہ بھارت کی اور بڑھتی ہوئی دلچسپی کے ساتھ دیکھنے لگا ہے...... بھارت امریکہ کے لئے آرتھک نظر سے بھی مہتو پورن ہے کیونکہ وہ لکھ' جوٹ' ابرک' مینگنیز اور اور ایسی بہت سی چیزیں پیدا کرتا ہے جو فوجی نظر سے بہت ضروری ہیں . ادھر' بھارت بجلی پیدا کرنے اور نئے کل کارخانے کھولنے کی ایک بڑی بھاری یوجنا تیار کر رہا ہے جس کے لئے اسے امریکہ سے تکنیکی اور آرتھک مدد لینی پڑے گی. کچھ امریکہ واسیوں کو پہلے ڈر تھا کہ بھارت امریکہ اور سوویت سنگھ کے بیچ تٹستھتا کا رخ اپنائے گا . پر جب 1949 میں بھارت نے برٹش کامن ویلتھ میں رہنے کا طے کیا' جس کے ساتھ امریکہ کا 1945 سے ہی پورا راج کاجی' آرتھک اور فوجی سہیوگ چل رہا ہے' تو یہ ڈر کسی قدر دور ہوگیا" (" لڑائی کے پہلے امریکی ودیشی نیتی کی مکھیہ پرورتیاں" نامک سائیکلو اسٹائل لیکھ جو نئی دلی کے سمیلن میں پڑھا گیا .)

جب نہرو سرکار نے کوریا میں شانتی قائم کرنے کی کوشش کی اور پنڈت نہرو نے اسٹالن اور ایچیسن کو خط لکھے اور جب بھارت سرکار نے جاپانی سندھی کے امریکی مسودے پر دستخط کرنے سے انکار کر دیا تو امریکی افسر اور امریکی پترکار بہت بگڑے اور انہوں نے بھارت سرکار اور نہرو کو خوب برا بھلا کہنا شروع کر دیا .

چناؤ کے بعد کی بوکھلاہٹ

پر پچھلے عام چناؤ میں بھارت کے کچھ علاقوں میں کمیونسٹوں کی جیتوں نے امریکہ والوں کو پھر سے بھارت کا شبھ چنتک بنا دیا .

دسمبر 1951 میں کیول ٹرانکور کوچین کے چناؤ کے نتیجے ہی پرکاشت ہوئے تھے کہ راجدوت چیسٹر باؤلس دوڑے دوڑے امریکہ پہونچے اور وہاں فوراً بھارت کی مدد بڑھانے کے لئے امریکی ادھیکاریوں سے سفارش کی .

16 فروری 1952 کو امریکہ کے سہائک ودیش منتری مسٹر تھارپ نے کہا :

" بھارتی چناؤ' جن میں کمیونسٹوں نے طاقت پکڑی' بتلاتے ہیں کہ بھارت سرکار کو جلدی ہی آرتھک وکاس کے کام میں لگ جانا چاہئے......امریکی سرکار اس پروگرام میں مدد کرے گی ."

ودیش منتری مسٹر ایچیسن نے کہا کہ بھارتی چناؤ سے ظاہر ہے کہ اس دیش میں ایک غلط پرورتی زور پکڑ

अमरीकी रक्षा विभाग ने अपने फ़ौजियों को भारत के बारे में जानकारी कराने के लिये एक किताब छापी है जिसका नाम है: 'भारत—पूर्व की तीसरी शक्ति?' इस किताब में भारत का महत्त्व इन शब्दों में समझाया गया है:

"हिन्दुस्तान का महत्त्व केवल इसी बात में नहीं है कि पाकिस्तान को मिला कर उसका रक़बा योरप के बराबर हो जाता है और उसकी आबादी बहुत बड़ी है. उसका महत्त्व इस बात में भी है कि अन्तरराष्ट्रीय मामलों में भारत जो रुख़ अपनाता है, उसका दूसरे एशियाई राष्ट्रों के रुख़ पर बड़ा गहरा असर पड़ता है."

1945 में जब अमरीकी पार्लिमेन्ट में अमरीका आने वाले हिन्दुस्तानियों के बारे में एक बिल पर बहस हो रही थी, तब उसके एक मेम्बर नोआ मैसन ने कहा था:

"अपनी क़ौम के हितों को ध्यान में रखते हुए और यह समझते हुए कि अमरीका और रूस के बीच रस्सा-क़शी अब शुरू होने वाली है, मैं कहता हूँ, कि हम लोगों को इस बिल का समर्थन करना चाहिये."

मतलब यह है कि लड़ाई ख़तम होने के बाद से ही अमरीकी शासक सोवियत रूस से लड़ने के लिये भारत की मदद लेने की कोशिश कर रहे हैं.

चीन की क्रान्ति के बाद महत्त्व और बढ़ गया

पहले एशिया में उन्हें दो देशों की सरकारों पर भरोसा था: चीन और जापान. चीन की चियांग काई शेक की सरकार उनकी मदद के सहारे खड़ी थी. जापान उनकी मुट्ठी में था. पर 1949 के आते आते चियांग काई शेक का बोरिया बिस्तर बंध गया और उसके साथ साथ एशिया में अमरीकी नीति एक गम्भीर संकट में फंस गई.

चियांग काई शेक के फ़ारमोसा भागने के पहले जनवरी 1949 में मशहूर अमरीकी पत्रकार वाल्टर लिपमैन ने लिखा था:

"अब, ज़ाहिर है, राष्ट्रवादी चीन, हालैण्ड और फ्रांस में यह ताक़त नहीं रह गई है कि वह एशिया में वह भूमिका पूरी कर सकें, जिसकी हम उनसे आशा करते थे. तो अब हमारे मददगार कहां से आयेंगे? एशिया में अमरीकी नीति तय करने के लिये हमें पहले इस बुनियादी समस्या को हल करना होगा......"

"मेरी राय में, बहुत उचित होगा अगर चीन और इन्डोनेशिया में अपनी पूरी नीति तय करने के लिये हम" नेहरू से बात चीत शुरू करें." ("न्यूयौर्क हैरल्ड ट्रिब्यून, 10 जनवरी 1949")

इसके कुछ हफ़्ते बाद ही पंडित नेहरू को अमरीका तशरीफ़ लाने की दावत दी गई. उन्होंने जाना भी क़बूल कर लिया.

30 अगस्त 1949 को युनाइटेड प्रेस आफ़ अमेरिका ने [illegible]

امریکی رکشا وبھاگ نے اپنے فوجیوں کو بھارت کے بارے میں جانکاری کرانے کے لئے ایک کتاب چھاپی ہے جس کا نام ہے : "بھارت—پورب کی تیسری شکتی؟" اِس کتاب میں بھارت کا مہتو ان شبدوں میں سمجھایا گیا ہے :

"ہندستان کا مہتو کیول اسی بات میں نہیں ہے کہ پاکستان کو ملاکر اُس کا رقبہ یورپ کے برابر ہو جاتا ہے اور اُس کی آبادی بہت بڑی ہے . اُس کا مہتو اِس بات میں بھی ہے کہ انترراشٹری معاملوں میں بھارت جو رخ اپناتا ہے، اُس کا دوسرے ایشیائی راشٹروں کے رخ پر بڑا گہرا اثر پڑتا ہے ."

1945 میں جب امریکی پارلیمنٹ میں امریکہ آنے والے ہندستانیوں کے بارے میں ایک بل پر بحث ہو رہی تھی، تب اُس کے ایک ممبر نوآ میسن نے کہا تھا :

"اپنی قوم کے ہتوں کو دھیان میں رکھتے ہوئے اور یہ سمجھتے ہوئے کہ امریکہ اور روس کے بیچ رسّا کشی اب شروع ہونے والی ہے، میں کہتا ہوں، کہ ہم لوگوں کو اِس بل کا سمرتھن کرنا چاہئے ."

مطلب یہ ہے کہ لڑائی ختم ہونے کے بعد سے ہی امریکی شاسک سوویت روس سے لڑنے کے لئے بھارت کی مدد لینے کی کوشش کر رہے ہیں .

چین کی کرانتی کے بعد مہتو اور بڑھ گیا

پہلے، ایشیا میں انہیں دو دیشوں کی سرکاروں پر بھروسہ تھا : چین اور جاپان . چین کی چیانگ کائی شیک کی سرکار ان کی مدد کے سہارے کھڑی تھی . جاپان اُن کی مٹھی میں تھا . پر 1949 کے آتے آتے چیانگ کائی شیک کا بوریا بستر بندھ گیا اور اُس کے ساتھ ساتھ ایشیا میں امریکی نیتی ایک گمبھیر سنکٹ میں پھنس گئی .

چیانگ کائی شیک کے فارموسا بھاگنے کے پہلے جنوری 1949 میں مشہور امریکی پترکار والٹر لپمین نے لکھا تھا :

"اب، ظاہر ہے، راشٹروادی چین، ہالینڈ اور فرانس میں یہ طاقت نہیں رہ گئی ہے کہ وہ ایشیا میں وہ بھومکا پوری کر سکیں جس کی ہم اُن سے آشا کرتے تھے . تو اب ہمارے مددگار کہاں سے آئیں گے؟ ایشیا میں امریکی نیتی طے کرنے کے لئے ہمیں پہلے اِس بنیادی سمسیا کو حل کرنا ہوگا......"

"میری رائے میں، بہت اُچت ہوگا اگر چین اور انڈونیشیا میں اپنی پوری نیتی طے کرنے کے لئے ہم نہرو سے بات چیت شروع کریں ." ("نیویارک ہیرالڈ ٹریبیون" 10 جنوری 1949)

اِس کے کچھ ہفتے بعد ہی پنڈت نہرو کو امریکہ تشریف لانے کی دعوت دی گئی . انہوں نے جانا بھی قبول کر لیا .

30 اگست 1949 کو یونائیٹڈ پریس آف امریکہ نے [illegible]

भारत में अमरीकी क़दम

(ओमप्रकाश संगल)

पिछले अंक में हमने देखा था कि भारत में आने वाली हर एक अमरीकी मदद और हर एक अमरीकी क़र्ज़ के साथ तरह तरह की राजकाजी और आर्थिक शर्तें लगी हुई हैं जिनसे न केवल हमारे देश का उद्योगीकरन रुकता है और उसकी आर्थिक व्यवस्था पर चोट पहुंचती है, बल्कि उसकी राजकाजी आज़ादी भी ख़तरे में पड़ जाती है.

इस बार हम देखेंगे कि अमरीका असल में किन किन मक़सदों को सामने रख कर हमारे देश पर चढ़ता आ रहा है और वह क्यों भारत की 'सहायता' करने को यकायक इतना उत्सुक हो उठा है.

(1)

जादूगरों का देश

यह बात सब जानते हैं कि चन्द बरस पहले अमरीका को भारत के मामलों में कोई ख़ास दिलचस्पी नहीं थी. डाक्टर भारतन कुमारप्पा ने लिखा है :

"हिन्दुओं (अमरीका वाले सभी हिन्दुस्तानियों को आम तौर से हिन्दू कहते हैं) के वास्ते अमरीका ने तटस्थता का सा रुख़ अपना रखा था. उसका विचार था कि हिन्दुस्तान ब्रिटेन की सम्पत्ति है जिसमें किसी दूसरे को बोलने का अधिकार नहीं है और इसलिये उसके मामलों के लिये बेलाग दर्शक का रुख़ अपनाना ही ठीक है. अमरीका को भारत में कुछ दिलचस्पी थी तो केवल जादूगरों और योगियों के देश के रूप में, जहां साधू कन्दराओं में रहते हैं, नाख़ून बढ़ाते हैं, कीलों के बिछौने पर सोते हैं और लोगों के हाथ देखते हैं." ("अमरीका में मेरा विद्यार्थी जीवन", सफ़ा 6)

दूसरे महायुद्ध के ज़माने में जब अमरीका की लाखों की फ़ौज हिन्दुस्तान में उतरी और हमारा देश चीन, बर्मा वग़ैरा में लड़ने वाली अमरीकी फ़ौज की सप्लाई का केन्द्र बन गया, तब अमरीका वालों का भारत की तरफ़ ज़ियादा ध्यान खिंचा मगर हमारी आक़ा ब्रिटिश सरकार ने अमरीका वालों को भारत की आर्थिक व्यवस्था में अधिक घुसने की इजाज़त नहीं दी. हां, भारत अमरीका व्योपार में ख़ासी बढ़ौती हो गई.

दूसरे महायुद्ध के बाद

लड़ाई ख़तम होने के बाद भी यह बढ़ौती जारी रही. और जैसे जैसे सारी दुनिया पर प्रभुत्व जमाने की अमरीकी योजनाएं पक्की होती गयीं, वैसे वैसे अमरीका की नज़रों में भारत का महत्व बढ़ता गया.

7 दिसम्बर 1947 को भारत में अमरीकी राजदूत हेनरी ग्रेडी ने कहा : "भारत को दुनिया की लड़ाई में अपने साथ रखना हमारे लिये भारी महत्व रखता है."

بھارت میں امریکی قدم

(اوم پرکاش سنگل)

پچھلے انک میں ہم نے دیکھا تھا کہ بھارت میں آنے والی ہر ایک امریکی مدد اور ہر ایک امریکی قرضے کے ساتھ طرح طرح کی راج کاجی اور آرتھک شرطیں لگی ہوئی ہیں جن سے نہ کیول ہمارے دیش کا ادیوگی کرن رکتا ہے اور اس کی آرتھک ویوستھا پر چوٹ پہونچتی ہے، بلکہ اس کی راج کاجی آزادی بھی خطرے میں پڑ جاتی ہے.

اس بار ہم دیکھینگے کہ امریکہ اصل میں کن کن مقصدوں کو سامنے رکھ کر ہمارے دیش پر چڑھتا آ رہا ہے اور وہ کیوں بھارت کی 'سہائتا' کرنے کو یکایک اتنا اتسک ہو اٹھا ہے.

(1)

جادوگروں کا دیش

یہ بات سب جانتے ہیں کہ چند برس پہلے امریکہ کو بھارت کے معاملوں میں کوئی خاص دلچسپی نہیں تھی. ڈاکٹر بھارتن کمارپپا نے لکھا ہے :

"ہندوؤں (امریکہ والے سبھی ہندستانیوں کو عام طور سے ہندو کہتے ہیں) کے واسطے امریکہ نے تٹستھتا کا رخ اپنا رکھا تھا. اس کا وچار تھا کہ ہندستان برٹین کی سمپتی ہے جس میں کسی دوسرے کو بولنے کا ادھیکار نہیں ہے اور اس لئے اس کے معاملوں کے لئے بےلاگ درشک کا رخ اپنانا ہی ٹھیک ہے. امریکہ کو بھارت میں کچھ دلچسپی تھی تو کیول جادوگروں اور یوگیوں کے دیش کے روپ میں، جہاں سادھو کندراؤں میں رہتے ہیں، ناخون بڑھاتے ہیں، کیلوں کے بچھونے پر سوتے ہیں اور لوگوں کے ہاتھ دیکھتے ہیں" ("امریکہ میں میرا ودیارتھی جیون" صفحہ 6)

دوسرے مہایدھ کے زمانے میں جب امریکہ کی لاکھوں کی فوج ہندستان میں اتری اور ہمارا دیش چین، برما وغیرہ میں لڑنے والی امریکی فوج کی سپلائی کا کیندر بن گیا، تب امریکہ والوں کا بھارت کی طرف زیادہ دھیان کھنچا. مگر ہماری آقا برٹش سرکار نے امریکہ والوں کو بھارت کی آرتھک ویوستھا میں ادھک گھسنے کی اجازت نہیں دی. ہاں، بھارت امریکہ بیوپار میں خاصی بڑھوتی ہو گئی.

دوسرے مہایدھ کے بعد

لڑائی ختم ہونے کے بعد بھی یہ بڑھوتی جاری رہی. اور جیسے جیسے ساری دنیا پر پربھتو جمانے کی امریکی یوجنائیں پکی ہوتی گئیں، ویسے ویسے امریکہ کی نظروں میں بھارت کا مہتو بڑھتا گیا.

7 دسمبر 1947 کو بھارت میں امریکی راجدوت ہینری گریڈی نے کہا : "بھارت کو دنیا کی لڑائی میں اپنے ساتھ رکھنا ہمارے لئے بھاری مہتو رکھتا ہے."

हम विदेश में आ गए. पीकिंग यूनिवर्सिटी में आज तक यह नहीं महसूस हुआ. घर सा लगता है.

हम लोग यहां Lecturer in Hindi नियुक्त हुए हैं. चन्द्र जी Assistant Lecture हैं. चिन का भी साहब प्रोफेसर हैं तीन और चीनी टीचर भी Assistant Lecturer हैं. हिन्दी विभाग में कुल आठ टीचर हैं.

यहां के चीनी विद्यार्थियों ने मेरे घर से आए हुए पत्र पढ़ लिये. मेरे घर के पत्रों में मुझे 'भाई जी' लिखा था. तब से सब लोग यहां मुझे भाई जी कहने लगे हैं. एक दिन मैंने दर्जे में कहा कि मैं विदेशी हूं तो सब लड़कों ने चिल्ला कर कहा कि आप विदेशी नहीं हैं हमारे भाई जी हैं. मुझे बहुत अच्छा लगा. यहां हर विद्यार्थी को दो घंटे समाज सेवा करनी पड़ती है.

यहां University में सामूहिक जीवन पर जोर दिया जाता है. Individualism (व्यक्तिवाद) को यहां कोई स्थान नहीं है भोजन घर में तीन हजार लड़के एक साथ खाते हैं, एक साथ रहते हैं, एक साथ कसरत करते हैं, एक समय सो कर उठते हैं और एक ही समय सोने जाते हैं. China Reconstructs के एडीटर और चीन के मशहूर अर्थशास्त्री Dr. Chen Hen Seng अभी मिले. वह कहते थे कि उन्हें 'China To Day' रिव्यू करने के लिये दी गई है और उनका लिखा रिव्यू 'People's China' में छपेगा. पंडित जी के बारे में पूछते थे. मुझसे कहा कि एक कागज़ पर पंडित जी के Achievements लिख दो जिससे कि Review में उसे इस्तेमाल कर सकें. मैंने मंजूर कर लिया. लिख रहा हूं वह पंडित जी के प्रशंसक हैं.

हम लोग यहां बहुत अच्छी तरह हैं अपना काम खूब मन लगा कर करते हैं. हम और किन किन बातों का ध्यान रक्खें जरूर लिखें. पंडित जी को मेरा प्रनाम कहें.

आपका आज्ञाकारी
पुरुषोत्तम.

ہم ودیش میں آ گئے . پیکنگ یونیورسٹی میں آج تک یہ نہیں محسوس ہوا . گھر سا لگتا ہے .

ہم لوگ یہاں Lecturer in Hindi نیکت ہوئے ہیں . چندر جی Assistant Lecturer ہیں . چن لو جی صاحب پروفیسر ہیں . تین اور چینی ٹیچر بھی Assistant Lecturer ہیں . ہندی وبھاگ میں کل آٹھ ٹیچر ہیں .

یہاں کے چینی ودیارتھیوں نے میرے گھر سے آئے ہوئے پتر پڑھ لئے . میرے گھر کے پتروں میں مجھے 'بھائی جی' لکھا تھا . تب سے سب لوگ یہاں مجھے بھائی جی کہنے لگے ہیں . ایک دن میں نے درجے میں کہا کہ میں ودیشی ہوں تو سب لڑکوں نے چلا کر کہا کہ آپ ودیشی نہیں ہیں ہمارے بھائی جی ہیں . مجھے بہت اچھا لگا . یہاں ہر ودیارتھی کو دو گھنٹے سماج سیوا کرنی پڑتی ہے .

یہاں University میں ساموہک جیون پر زور دیا جاتا ہے . Individualism (ویکتی واد) کو یہاں کوئی استھان نہیں ہے . بھوجن گھر میں تین ہزار لڑکے ایک ساتھ کھاتے ہیں، ایک ساتھ رہتے ہیں، ایک ساتھ کسرت کرتے ہیں، ایک سمے سو کر اٹھتے ہیں اور ایک ہی سمے سونے جاتے ہیں . 'China Reconstructs' کے ایڈیٹر اور چین کے مشہور ارتھ شاستری Dr. Chen Hen-Sang ابھی ملے . وہ کہتے تھے کہ انہیں 'China Today' ریویو کرنے کے لئے دی گئی ہے اور ان کا لکھا ریویو 'Peoples China' میں چھپے گا . پنڈت جی کے بارے میں پوچھتے تھے . مجھ سے کہا کہ ایک کاغذ پر پنڈت جی کے Achievements لکھ دو جس سے کہ Review میں اسے استعمال کر سکیں . میں نے منظور کر لیا . لکھ رہا ہوں . وہ پنڈت جی کے پرشنسک ہیں .

ہم لوگ یہاں بہت اچھی طرح ہیں . اپنا کام خوب من لگا کر کرتے ہیں . ہم اور کن کن باتوں کا دھیان رکھیں ضرور لکھیں . پنڈت جی کو میرا پرنام کہیں .

آپ کا آگیاکاری
پرشوتم

पूछा. उन्होंने कहा कि यहां यह ही रिवाज है. जैन साहब की रसोइयन जब जरूरत होती है मेज की ड्रार खोल कर अपने आप रुपया निकाल लाती है. कोशिश करने पर भी अभी मैं अपना रुपया मेज की ड्रार में नहीं रख सका हूं. आगे और कोशिश करूंगा. हम जिस Teacher's Hostel में रहते है वहां के सब कमरों में एक ही ताली लगती है. अजीब बात है! शुरू में तो मुझे बड़ी उलझन हुई. अब धीरे धीरे आदत पड़ रही है.

यहां आ कर चीनी भाषा पढ़ना अभी शुरू नहीं किया. हिन्दी से ही फ़ुरसत नहीं. अगर चीनी भाषा शुरू कर दूं तो हिन्दी पढ़ाने के काम में अभी रुकावट होगी इसलिये कुछ समय के लिये मुल्तवी कर दिया है.

अगर आप मई में आने वाले डेलीगेशन के मेम्बर हो कर आयें तो बड़ी सुविधाएं रहेंगी. यहां आ कर मालूम हुआ कि चीनी भाषा सीख कर ही चीन आना चाहिये. अंगरेजी और पच्छिमी सभ्यता की बुराइयों को जड़ मूल से उखाड़ कर फेंका जा रहा है. वैसे अंगरेजी पढ़ाने के लिये यहां एक विभाग है जहां पर दुभाषिये वगैरा तैयार किये जाते हैं. मगर शहर में और कहीं अंगरेजी का नाम निशान नहीं है.

यहां के हिन्दी पढ़ने वाले विद्यार्थी अंगरेजी नहीं जानते इसलिये मुझसे सब हिन्दी में बातें करते हैं.

हमारा स्वागत करते हुए चीनी विद्यार्थी हमें 'जय हिन्द' कहते हैं. जवाब में हमने उनसे 'जय चीन' कहना शुरू किया है. 'जय चीन' सुन कर दीवाने हो जाते हैं, खूब उछलते हैं और खुश होते हैं! हम में और विद्यार्थियों में होड़ लगी रहती है, देखें पहले कौन 'जय' कहता है वह हमें दूर से देखते ही 'जय हिन्द' 'जय हिन्द' खूब जोरों से चिल्लाते हैं और हम भी 'जय चीन' से जवाब देते हैं. कुछ विद्यार्थी कहते हैं—'जय हिन्द, चीन, रूस' बहुत मजा आता है.

यहां हिन्दुस्तान की तरह अंगरेजी अखबार नहीं हैं. एक छोटा सा चार सफे का Daily News Release निकलता है. उसमें नहीं के बराबर खबरें रहती हैं. चीनी भाषा में अलबत्ता बड़े बड़े अखबार निकलते हैं.

कल हमें Indian Embassy में बुलाया गया है क्योंकि 26 जनवरी है. वहां सब टाई बाज हैं. हिन्दुस्तान के बजाय इंगलिस्तान की Embassy मालूम होती है. हिन्दी कोई नहीं बोलता. राजदूत साहब खुद हिन्दी नहीं जानते. इसके अलावा बाकी सब अंगरेजी में ही बात चीत करते हैं. और वही शान शौकत!

हम 26 जनवरी को Indian Embassy गए. वहां का वातावरण 'अंगरेजियत' का था. 'टाई' का राज था हालांकि चीनी बिलकुल टाई नहीं लगाते. हमें [illegible]

پوچھا. انہوں نے کہا کہ یہاں یہ ہی رواج ہے . جین صاحب کی رسوئن جب ضرورت ہوتی ہے میز کی ڈرار کھول کر اپنے آپ روپیہ نکال لاتی ہے . کوشش کرنے پر بھی ابھی میں اپنا روپیہ میز کی ڈرار میں نہیں رکھ سکا ہوں . آگے اور کوشش کروں گا . ہم جس Teacher's Hostel میں رہتے ہیں وہاں کے سب کمروں میں ایک ہی تالی لگتی ہے . عجیب بات ہے ! شروع میں تو مجھے بڑی الجھن ہوئی. اب دھیرے دھیرے عادت پڑ رہی ہے .

یہاں آکر چینی بھاشا پڑھنا ابھی شروع نہیں کیا . ہندی سے ہی فرصت نہیں. اگر چینی بھاشا شروع کر دوں تو ہندی پڑھانے کے کام میں ابھی رکاوٹ ہوگی اس لئے کچھ سمے کے لئے ملتوی کر دیا ہے .

اگر آپ مئی میں آنے والے ڈیلی گیشن کے ممبر ہوکر آئیں تو بڑی سودھائیں رہینگی. یہاں آکر معلوم ہوا کہ چینی بھاشا سیکھ کر ہی چین آنا چاہئے . انگریزی اور پچھمی سبھیتا کی برائیوں کو جڑ مول سے اکھاڑ کر پھینکا جا رہا ہے. ویسے انگریزی پڑھانے کے لئے یہاں ایک وبھاگ ہے جہاں پر دوبھاشیے وغیرہ تیار کئے جاتے ہیں . مگر شہر میں اور کہیں انگریزی کا نام نشان نہیں ہے .

یہاں کے ہندی پڑھنے والے ودیارتھی انگریزی نہیں جانتے اس لئے مجھ سے سب ہندی میں باتیں کرتے ہیں.

ہمارا سواگت کرتے ہوئے چینی ودیارتھی ہمیں 'جے ہند' کہتے ہیں. جواب میں ہم نے ان سے 'جے چین' کہنا شروع کیا ہے . 'جے چین' سن کر دیوانے ہو جاتے ہیں خوب اچھلتے ہیں اور خوش ہوتے ہیں ! ہم میں اور ودیارتھیوں میں ہوڑ لگی رہتی ہے' دیکھیں پہلے کون 'جے' کہتا ہے . وہ ہمیں دور سے دیکھتے ہی 'جے ہند' 'جے ہند' خوب زوروں سے چلاتے ہیں اور ہم بھی 'جے چین' سے جواب دیتے ہیں. کچھ ودیارتھی کہتے ہیں—'جے ہند' چین' روس' بہت مزہ آتا ہے .

یہاں ہندستان کی طرح انگریزی اخبار نہیں ہیں. ایک چھوٹا سا چار صفحے کا Daily News Release نکلتا ہے . اس میں نہیں کے برابر خبریں رہتی ہیں . چینی بھاشا میں البتہ بڑے بڑے اخبار نکلتے ہیں .

کل ہمیں Indian Embassy میں بلایا گیا ہے کیونکہ 26 جنوری ہے . وہاں سب ٹائی باز ہیں . ہندستان کے بجائے انگلستان کی Embassy معلوم ہوتی ہے . ہندی کوئی نہیں بولتا . راجدوت صاحب خود ہندی نہیں جانتے. اس کے علاوہ باقی سب انگریزی میں ہی بات چیت کرتے ہیں. اور وہی شان شوکت !

ہم 26 جنوری کو Indian Embassy گئے . وہاں کا واتاورن 'انگریزیت' کا تھا . 'ٹائی' کا راج تھا حالانکہ چینی بالکل ٹائی نہیں لگاتے . ہمیں [illegible]

क़रीब 210 रुपए के बराबर होगी. हमें रसोइया रखना पड़ा है और हम सिर्फ़ सरकारी वग़ैरा खाते हैं इसलिये और चीनी प्रोफ़ेसरों के मुक़ाबले थोड़ी ज़ियादा है. यहां के टीचरों को पूरा समय विद्यार्थियों के लिये देना पड़ता है और तमाम समय योजना बनाने और सभाओं में ख़र्च करना पड़ता है. सब लोग इस काम को आसानी से नहीं कर सकते.

हमारे यहां से विश्वविख्यात 'समर पैलेस' उतनी ही दूर है जितनी दूर आपके यहां से राम बाग़ स्टेशन. अभी सर्दी बहुत है. जब कम होगी तब वहां घूमने जायंगे. यहां बरफ़ पर स्केटिंग लड़के लड़कियां ख़ूब करते हैं. नया साल बड़ी धूम धाम से मनाया गया. सब लड़के लड़कियां हम लोगों को पकड़ ले गए और नाश्ता कराया, गाना गाया, नाच हुआ. दावत की बेतकल्लुफ़ी हमेशा याद रहेगी प्लेटें वग़ैरा नहीं थीं. सारा सामान बिला टेबिल क्लाथ की मेज़ के ऊपर सबके सामने थोड़ा थोड़ा उल्टा दिया गया. और जब हम चलने लगे तो हमारी जेबों में ज़बरदस्ती भर दिया गया होली का सा वातावरन था. विद्यार्थियों ने हमें मान पत्र भी दिया. एक दिन हमारे कोट का बटन टूट गया तो सारी लड़कियां सुई डोरा लिये हुए हमारे कमरे में घुस पड़ीं और हमारा सारा सामान ठीक कर दिया और बटन टांक दिये. हिन्दी के विद्यार्थी जो 50 के क़रीब हैं ख़ूब हिन्दी बोलते हैं और उछलते कूदते बिलकुल बच्चों की तरह हैं. हम जब बोर्ड पर लिखते हैं तो डस्टर से साफ़ नहीं करने देते. ख़ुद बार बार साफ़ करते हैं, कहते हैं आपको ज़ुकाम हो जायगा. लड़कों की Hindi Writing इतनी अच्छी है कि शायद आपको विश्वास नहीं होगा. विद्यार्थियों को ग्रामर पूछने की बड़ी आदत है.

यहां की गालियां भारत की गालियों से बिलकुल मिलती जुलती हैं. हमें ताज्जुब हुआ यहां गाली में हमारे यहां की तरह 'साला' कहा जाता है जिसके मानी होते हैं बीवी का भाई, पूछने पर मालूम हुआ कि मां, बहन वग़ैरा की भी वैसी ही गालियां हैं. चीनी आम तौर से बड़े शान्ति प्रिय हैं. कभी एक दूसरे से झगड़ते नहीं देखा. माओ-त्से-तुंग की इतनी ज़ियादा इज़्ज़त करते हैं कि उन्हें ख़ुदा समझते हैं क्योंकि उन्होंने ग़रीबों का 'राज' क़ायम किया. रोटी, कपड़ा, नौकरी के बारे में किसी को चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं. चारों तरफ़ जोश ही जोश उमड़ा पड़ रहा है. हर एक के अन्दर काम करने का इतना जोश कैसे आया? इतनी सादगी कैसे? ईमानदारी की बात तो क्या कहना! मैंने एक प्रोफ़ेसर से जा कर पूछा कि वेतन के नोटों का बंडल कहां हिफ़ाज़त से रक्खूं तो मुझे बेहद अचरज हुआ कि उसने अपनी पढ़ने की मेज़ की ड्रार में सारे के सारे नोट रख छोड़े थे और हमेशा वहीं रखता था. मैंने जैन साहब से

قریب 210 روپئے کے برابر ہوگی. ہمیں رسوئیا رکھنا پڑا ہے اور ہم صرف ترکاری وغیرہ کھاتے ہیں اس لئے اور چینی پروفیسروں کے مقابلے تھوڑی زیادہ ہے . یہاں کے ٹیچروں کو پورا سمے ودیارتھیوں کے لئے دینا پڑتا ہے اور تمام سمے یوجنا بنانے اور سبھاؤں میں خرچ کرنا پڑتا ہے . سب لوگ اس کام کو آسانی سے نہیں کرسکتے .

ہمارے یہاں سے وشو وکھیات 'سمرپیلیس' اتنی ہی دور ہے جتنی دور آپ کے یہاں سے رام باغ اسٹیشن . ابھی سردی بہت ہے . جب کم ہوگی تب وہاں گھومنے جائینگے . یہاں برف پر اسکیٹنگ لڑکے لڑکیاں خوب کرتے ہیں . نیا سال بڑی دھوم دھام سے منایا گیا . سب لڑکے لڑکیاں ہم لوگوں کو پکڑ لے گئے اور ناشتہ کرایا، گانا گایا، ناچ ہوا . دعوت کی بےتکلفی ہمیشہ یاد رہے گی . پلیٹیں وغیرہ نہیں تھیں . سارا سامان بلا ٹیبل کلاتھ کی میز کے اوپر سب کے سامنے تھوڑا تھوڑا الٹا دیا گیا . اور جب ہم چلنے لگے تو ہماری جیبوں میں زبردستی بھر دیا گیا . ہولی کا سا واتاورن تھا . ودیارتھیوں نے ہمیں مان پتر بھی دیا . ایک دن ہمارے کوٹ کا بٹن ٹوٹ گیا تو ساری لڑکیاں سوئی ڈورا لئے ہوئے ہمارے کمرے میں گھس پڑیں اور ہمارا سارا سامان ٹھیک کر دیا اور بٹن ٹانک دیئے . ہندی کے ودیارتھی جو 50 کے قریب ہیں خوب ہندی بولتے ہیں اور اچھلتے کودتے بالکل بچوں کی طرح ہیں . ہم جب بورڈ پر لکھتے ہیں تو ڈسٹر سے صاف نہیں کرنے دیتے . خود بار بار صاف کرتے ہیں' کہتے ہیں آپ کو زکام ہوجائے گا . لڑکوں کی Hindi Writing اتنی اچھی ہے کہ شاید آپ کو وشواس نہیں ہوگا. ودیارتھیوں کو گرامر پوچھنے کی بڑی عادت ہے .

یہاں کی گالیاں بھارت کی گالیوں سے بالکل ملتی جلتی ہیں . ہمیں تعجب ہوا یہاں گالی میں ہمارے یہاں کی طرح 'سالا' کہا جاتا ہے جس کے معنی ہوتے ہیں بیوی کا بھائی . پوچھنے پر معلوم ہوا کہ ماں' بہن وغیرہ کی بھی ویسی ہی گالیاں ہیں . چینی عام طور سے بڑے شانتی پریہ ہیں . کبھی ایک دوسرے سے جھگڑتے نہیں دیکھا . ماؤتسے تنگ کی اتنی زیادہ عزت کرتے ہیں کہ انہیں خدا سمجھتے ہیں کیونکہ انہوں نے 'غریبوں کا راج' قائم کیا . روٹی' کپڑا' نوکری کے بارے میں کسی کو چنتا کرنے کی ضرورت نہیں . چاروں طرف جوش ہی جوش امڈا پڑ رہا ہے . ہر ایک کے اندر کام کرنے کا اتنا جوش کیسے آیا؟ اتنی سادگی کیسے؟ ایمانداری کی بات تو کیا کہنا ! میں نے ایک پروفیسر سے جاکر پوچھا کہ ویتن کے نوٹوں کا بنڈل کہاں حفاظت سے رکھوں تو مجھے بےحد اچرج ہوا کہ اس نے اپنی پڑھنے کی میز کی ڈرار میں سارے کے سارے نوٹ رکھ چھوڑے تھے اور ہمیشہ وہیں رکھتا تھا . میں نے جین صاحب سے

है वग़ैरा सवालों का जवाब देते देते हम थक गए. फिर यहां इस University में शायद दुनिया के हर मुल्क के लोग हैं. कोरियाई विभाग के North Korea के कोरियन प्रोफ़ेसर जब मिलते हैं तो इतनी ज़ोर से हाथ मिलाते हैं कि हाथ में दर्द होने लगता है. इन्डोनेशिया, बरमा, वियतनाम, मलाया, मंगोलिया, जापान, जैकोस्लावकिया, रूमानिया वग़ैरा कहां तक गिनाएं. सब से हमेशा पाला पड़ा करता है. एक मास्को का नौजवान बड़ा दिलचस्प है. उसे अंगरेज़ी नहीं आती. फिर भी वह हम से आ कर अंगरेज़ी में बोलता है. कहता है, रूस चलो; भारत, चीन और रूस एक हैं—भारत, चीन और रूस को कोई नहीं हरा सकता वग़ैरा वग़ैरा. हमें दूर से देखते ही लोग पहचान लेते हैं और 'इन्दू रेन, इन्दू रेन' कह कर चिल्लाने लगते हैं. छोटे छोटे बच्चे हमारे कमरे में घुस आते हैं और न मालूम क्या क्या चीनी में पूछते रहते हैं. इत्तफ़ाक़ से एक दिन चिन को मो साहब बैठे थे. उनसे मालूम हुआ कि लड़के पूछ रहे हैं कि 'तुम्हारा नेता कौन है? तुम्हारा बिल्ला कहां है? तुम्हारा गाना क्या है? तुम्हारा नारा क्या है? इतने छोटे छोटे बच्चों के यह सवाल सुन कर मैं चक्कर में आ गया छोटे बच्चे बड़े अच्छे लगते हैं और जिस किसी को पुचकारो वह आपके साथ चल देता है. इससे हमें पढ़ने में बड़ा Disturbance हुआ. अब हमने बच्चों को पुचकारना छोड़ दिया है.

यहां China-India Friendship Association ने एक दिन हम लोगों को ख़ास तौर से दावत दी. दावत में हम और वर्मा और डाक्टर जैन और चक्रेश बस. उस दिन पीकिंग के बड़े बड़े दिग्गजों के दर्शन हुए. सब लोग हम से तीन चार घंटे बात करते रहे. दावत भी ज़ोर की हुई. 'China Reconstructs' के एडीटर Chen Han-Seng तो 'China To-day' की इतनी तारीफ़ कर रहे थे कि पूछो मत. ऊपर के कवर का सारा मज़मून ज़बानी याद किये हुए थे. Dr. Ting Ling और Hung Hsen वग़ैरा पंडित सुन्दर लाल जी के बारे में पूछ रहे थे.

डाक्टर जैन यहां से इसी मार्च में भारत के लिये वापस रवाना हो रहे हैं. बम्बई में उनका बड़ा भारी परिवार है. उनके जाने के बाद हम और वर्मा पीकिंग में अकेले रह जायेंगे. यहां और कोई भारतीय नहीं. Embassy के लोग सरकारी आदमी हैं. ग़ैर सरकारी और कोई नहीं. चौरूमल (सिन्धी मरचेन्ट) भी हैं.

हम लोगों को दस लाख अट्ठासी हज़ार चीनी डालर तनख़ाह मिलेगी. हम से तनख़ाह वग़ैरा के बारे में पूछा गया. हमने कहा कि जो यहां चीनी प्रोफ़ेसरों को मिलती है उसमें से हम भी गुज़ारा चलायेंगे. भारतीय रुपए में यह

ہے وغیرہ سوالوں کا جواب دیتے دیتے ہم تھک گئے. پھر یہاں اِس یونیورسٹی میں شائد دنیا کے ہر ملک کے لوگ ہیں. کوریائی وبھاگ کے North Korea کے کورین پروفیسر جب ملتے ہیں تو اِتنی زور سے ہاتھ ملاتے ہیں کہ ہاتھ میں درد ہونے لگتا ہے. انڈونیشیا، برما، ویتنام، ملایا، منگولیا، جاپان، چیکوسلوویا، رومانیا وغیرہ کہاں تک گنائیں. سب سے ہمیشہ پالا پڑا کرتا ہے. ایک ماسکو کا نوجوان بڑا دلچسپ ہے. اُسے انگریزی نہیں آتی. پھر بھی وہ ہم سے آکر انگریزی میں بولتا ہے. کہتا ہے 'روس چلو' بھارت' چین اور روس ایک ہیں—بھارت' چین اور روس کو کوئی نہیں ہرا سکتا وغیرہ وغیرہ. ہمیں دور سے دیکھتے ہی لوگ پہچان لیتے ہیں اور 'اِندو ریِن' اِندو ریِن' کہہ کر چلانے لگتے ہیں. چھوٹے چھوٹے بچے ہمارے کمرے میں گھس آتے ہیں اور نہ معلوم کیا کیا چینی میں پوچھتے رہتے ہیں. اتفاق سے ایک دن چن‌کومو صاحب بیٹھے تھے. اُن سے معلوم ہوا کہ لڑکے پوچھ رہے ہیں کہ تمہارا نیتا کون ہے؟ تمہارا بلا کہاں ہے؟ تمہارا گانا کیا ہے؟ تمہارا نعرہ کیا ہے؟ اِتنے چھوٹے چھوٹے بچوں کے یہ سوال سن کر میں چکر میں آ گیا. چھوٹے بچے بڑے اچھے لگتے ہیں اور جس کسی کو پچکارو وہ آپ کے ساتھ چل دیتا ہے. اِس سے ہمیں پڑھنے میں بڑا Disturbance ہوا. اب ہم نے بچوں کو پچکارنا چھوڑ دیا ہے.

یہاں China-India Friendship Association نے ایک دن ہم لوگوں کو خاص طور سے دعوت دی. دعوت میں ہم اور ورما اور ڈاکٹر جین اور چکریش بس. اُس دن پیکنگ کے بڑے بڑے دگجوں کے درشن ہوئے. سب لوگ ہم سے تین چار گھنٹے بات کرتے رہے. دعوت بھی زور کی ہوئی. 'China Reconstructs' کے ایڈیٹر Chen-Han Seng تو 'China Today' کی اِتنی تعریف کر رہے تھے کہ پوچھو مت. اُوپر کے کور کا سارا مضمون زبانی یاد کئے ہوئے تھے. Dr. Ting Ling اور Hung Hsen وغیرہ پنڈت سندر لال جی کے بارے میں پوچھ رہے تھے.

ڈاکٹر جین یہاں سے اِسی مارچ میں بھارت کے لئے واپس روانہ ہو رہے ہیں. بمبئی میں اُن کا بڑا بھاری پریوار ہے. اُن کے جانے کے بعد ہم اور ورما پیکنگ میں اکیلے رہ جائیں گے. یہاں اور کوئی بھارتیہ نہیں. Embassy کے لوگ سرکاری آدمی ہیں. غیر سرکاری اور کوئی نہیں. چورومل (سندھی مرچنٹ) بھی ہیں.

ہم لوگوں کو دس لاکھ اٹھاسی ہزار چینی ڈالر تنخواہ ملے گی. ہم سے تنخواہ وغیرہ کے بارے میں پوچھا گیا. ہم نے کہا کہ جو یہاں چینی پروفیسروں کو ملتی ہے اُس سے ہم بھی گزارا چلائیں گے. بھارتیہ روپئے میں یہ

सिवाय दूसरों को कोई अनुमान नहीं हो सकता. आपको सुन कर ताज्जुब होगा कि यहां आज कल लोग चाय नहीं पीते. सिर्फ गरम पानी पीते हैं. क्योंकि चाय दूसरे मुल्कों को Export की जाएगी जिससे देश को पैसा मिलेगा. Peking University के पास ही HSIN.HUA University है जहां 5,800 लड़के Engineering पढ़ रहे हैं. सामने जनता University है जहां किसान मजदूरों के हजारों लड़के पढ़ते हैं. एक Minorities (कम गिनत लोगों) का कालेज भी अलग है. यह पूरा इलाक़ा ही विद्यार्थी मय है. क़रीब बीस हज़ार विद्यार्थी आस पास के इलाक़ों में ज़रूर होंगे. सब के कोट पर अपनी अपनी University का बिल्ला लगा है. बिना बिल्ला कहीं आ जा नहीं सकते. मेरे भी Peking University का चीनी में लिखा बिल्ला लगा हुआ है. एक दिन ग़लती से बिल्ला लगाना भूल गया तो बड़ी असुविधा हुई. शनिवार की शाम को हमेशा विद्यार्थियों के लिये यहां ही शिक्षाप्रद सिनेमा होता है. शहर से University को आखरी बस साढ़े सात बजे शाम को छूटती है. उसके बाद शहर से कोई बस नहीं आती. इसलिये जो भी अगर शहर जाए तो शाम तक लौट आए. शहर की तड़क भड़क से दूर गांओं के बीच में इतने विद्यार्थी ट्रेनिंग पा रहे हैं यह देख कर बड़ी ख़ुशी होती है. जब मैं कभी किसी लड़के या टीचर से उसके हित की बात छेड़ता हूँ तो हमेशा एक ही जवाब मिलता है—'हमें अपने हित की बात नहीं सोचना चाहिये, देश के हित में जी जान से लगना चाहिये' 'हम अकेले अमरीकियों को कोरिया से भगा देंगे' वग़ैरा लड़कों के मुंह से सुन कर बहुत अच्छा लगता है. हर विद्यार्थी को मालूम है कि उसे क्या बनना है. यहां परीक्षा में फ़ेल-पास नहीं होता. परीक्षा होती है और लड़के ख़ूब मेहनत करते हैं जब हम यहां आए तो कई दिन तक चिन को मो साहब यहां की प्रनाली हमें समझाते रहे—विद्यार्थी एक मोर्चे पर और टीचर दूसरे मोर्चे पर, ऐसा नहीं होना चाहिये, अध्यापक सहायक के रूप में होना चाहिये, योजना के हिसाब से पढ़ाना चाहिये, योजना बना कर विद्यार्थियों से वाद-विवाद करना चाहिये, विद्यार्थी हम से सीखें और हम विद्यार्थियों से सीखें, हर शनीचर विद्यार्थी हमारी आलोचना करेंगे. उससे हम अपने में सुधार करें वग़ैरा बातें हमें समझाई गईं. और अब हम उन पर अमल होता हुआ देख रहे हैं. भारत के अध्यापक जो तजुरबेकार हैं और टीचरी कर चुके हैं उनका यहां काम करना नामुमकिन है. विद्यार्थी कभी कभी बड़ी तादाद में घुस आते हैं और भारत के बारे में दिन भर पूछते रहते हैं. शान्ति (Peace) के कारन [illegible] है. भारत के लोग 'शान्ति' के लिये क्या कर रहे हैं, [illegible] क्या कर रही है. विद्यार्थी क्या कर रहे हैं [illegible] जनता क्या सोचती

چین کے باشندوں کو کوئی انومان نہیں ہو سکتا. آپ کو سن کر تعجب ہوگا کہ یہاں آج کل لوگ چائے نہیں پیتے. صرف گرم پانی پیتے ہیں. کیونکہ چائے دوسرے ملکوں کو Export کی جائیگی جس سے دیش کو پیسہ ملیگا. Peking University کے پاس ہی HSIN HUA University ہے جہاں 5,800 لڑکے Engineering پڑھ رہے ہیں. سامنے جنتا University ہے جہاں کسان مزدوروں کے ہزاروں لڑکے پڑھتے ہیں. ایک Minorities (کم گنتی لوگوں) کا کالج بھی الگ ہے. یہ پورا علاقہ ہی ودیارتھی مے ہے. قریب بیس ہزار ودیارتھی آس پاس کے علاقوں میں ضرور ہونگے. سب کے کوٹ پر اپنی اپنی University کا بلا لگا ہے. بلا بلا کہیں آ جا نہیں سکتے. میرے بھی Peking University کا چینی میں لکھا بلا لگا ہوا ہے. ایک دن غلطی سے بلا لگانا بھول گیا تو بڑی اسودھا ہوئی. شنیوار کی شام کو ہمیشہ ودیارتھیوں کے لئے یہاں ہی شکشا پرد سنیما ہوتا ہے. شہر سے University کو آخری بس ساڑھے سات بجے شام کو چھوٹتی ہے. اس کے بعد شہر سے کوئی بس نہیں آتی. اس لئے جو بھی اگر شہر جائے تو شام تک لوٹ آئے. شہر کی ٹوک بھوک سے دور گاؤں کے بیچ میں اتنے ودیارتھی ٹریننگ پا رہے ہیں یہ دیکھ کر بڑی خوشی ہوتی ہے. جب میں کبھی کسی لڑکے یا ٹیچر سے اس کے ہت کی بات چھیڑتا ہوں تو ہمیشہ ایک ہی جواب ملتا ہے—'ہمیں اپنے ہت کی بات نہیں سوچنا چاہئیے' دیش کے ہت میں جی جان سے لگنا چاہئیے' 'ہم اکیلے امریکیوں کو کوریا سے بھگا دینگے' وغیرہ. لڑکوں کے منہ سے سن کر بہت اچھا لگتا ہے. ہر ودیارتھی کو معلوم ہے کہ اسے کیا بننا ہے. یہاں پریکشا میں فیل پاس نہیں ہوتا. پریکشا ہوتی ہے اور لڑکے خوب محنت کرتے ہیں. جب ہم یہاں آئے تو کئی دن تک چن کومو صاحب یہاں کی پرنالی ہمیں سمجھاتے رہے—ودیارتھی ایک مورچے پر اور ٹیچر دوسرے مورچے پر ایسا نہیں ہونا چاہئیے' ادھیاپک سہائک کے روپ میں ہونا چاہئیے' یوجنا کے حساب سے پڑھانا چاہئیے' یوجنا بناکر ودیارتھیوں سے واد وواد کرنا چاہئیے' ودیارتھی ہم سے سیکھیں اور ہم ودیارتھیوں سے سیکھیں' ہر شنیچر ودیارتھی ہماری آلوچنا کریں گے. اس سے ہم اپنے میں سدھار کریں وغیرہ باتیں ہمیں سمجھائی گئیں. اور اب ہم ان پر عمل ہوتا ہوا دیکھ رہے ہیں. بھارت کے ادھیاپک جو تجربہ کار ہیں اور ٹیچری کر چکے ہیں ان کا یہاں کام کرنا ناممکن ہے. ودیارتھی کبھی کبھی بڑی تعداد میں گھس آتے ہیں اور بھارت کے بارے میں دن بھر پوچھتے رہتے ہیں. شانتی (Peace) کے کارن لنک میں [illegible] ہے. بھارت کے لوگ 'شانتی' کے لئے کیا کر رہے ہیں' لوکسبھا کیا کر رہی ہیں' ودیارتھی کیا کر رہے ہیں' کوریا کے بارے میں بھارتیہ جنتا کیا سوچتی

सकती है. [illegible] भी बहुत हैं. एक ही सी पोशाक, सब हमेशा साथ रहते हैं और बच्चों की तरह सरल स्वभाव के हैं. बड़े मेहनती और बहुत सीधे हैं. इनकी सिधाई देख कर भारत की याद आ जाती है. प्रोफेसर तो समझिये इनके सेवक हैं. मैं एक साहब को बहुत दिनों से प्रोफेसर समझता था. पिछले हफ्ते मालूम हुआ कि वह घंटा बजाने वाला चपरासी है. यहां यह बड़ी दिक्कत है कि किसी की हैसियत नहीं पता चलती. कभी कभी बड़ा धोका हो जाता है और शरमिन्दा होना पड़ता है. हमारा लड़कों का बड़ा [illegible] जब भारत से यहां विश्वविद्यालय में पहुँचा तो उसे Oriental Languages Department के प्रधान डाक्टर जी, जो दस साल जरमनी में संस्कृत पढ़े हैं और कल्चरल डेलीगेशन में भारत भी गए थे, एक चपरासी की मदद से खुद उठाये चले आ रहे थे. डाक्टर जी हमारे बगल के कमरे में रहते हैं और बिल्कुल गऊ हैं. रोज़ सवेरे उन्हें कमरे में झाड़ू लगाते देखता हूँ, अपना सारा काम खुद करते हैं क्योंकि यहां नौकर रखने का रिवाज नहीं है. हिन्दी डिपार्टमेन्ट के प्रधान श्री चिन को भी के कपड़े बहुत पुराने हैं, यह संस्कृत के विद्वान हैं. ऋगवेद वगैरा पढ़े हैं. अभी हिन्दी ठीक बोल नहीं पाते. इनके कपड़े बहुत सादे हैं. नम्र इतने हैं कि इनसे बात करना कठिन है. बहुत मेहनत करते हैं. 'नया हिन्द' हमेशा पढ़ते हैं उससे पाठ निकाल कर लड़कों को पढ़ाते हैं. हमें यहां यह देख कर बड़ा ताज्जुब हुआ कि 4th Year के लड़के पाठ में आपका लिखा हुआ 'बीमारी बम' वाला लेख सबक़ की तरह पढ़ रहे थे. यह लेख उनके पाठ (Text) में शामिल था. पंडित सुन्दरलाल जी का 'चीन को अलविदा' 1st और 2nd Year वालों के पाठ में था. 'नया हिन्द' में जो प्रूफ़ की गलतियां रह जाती हैं उससे इन्हें बड़ी हैरानी होती है. गलत छपा हुआ शब्द घंटों कोश में ढूंढा करते हैं. जब नहीं मिलता तो हमारे आने से पहले जैन साहब के यहां पूछने जाते थे. यहां लेखों को लिख कर साइक्लोस्टाइल करवा लेते हैं विद्यार्थियों के लिये. जब मैं आया तो हिन्दी विभाग के प्रधान चिन को भी 'प्रवासी जी' की शैली की बड़ी तारीफ़ कर रहे थे. जब उन्होंने मुझसे पूछा तो मुझे ध्यान नहीं आया. जब उन्होंने 'नया हिन्द' लाकर दिखाया तब मैंने उन्हें मुनीश साहब का हुलिया बताया. बहुत खुश हुए. 'नया हिन्द' में जो चीन से सम्बन्धित लेख छपते हैं इन सबका यहां बहुत इस्तेमाल होता है. और किसी मासिक या साप्ताहिक को ये लोग नहीं पढ़ते—'जन युग' को भी [illegible] 'नया हिन्द' में चीन के ऊपर [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] है कि [illegible]

سکتی ہیں۔ لڑکیاں بھی بہت ہیں۔ ایک ہی سی پوشاک سب ہمیشہ ساتھ رہتے ہیں اور بچوں کی طرح سرل سبھاؤ کے ہیں۔ بڑے محنتی اور بہت سیدھے ہیں۔ ان کی سدھائی دیکھ کر بھارت کی یاد آ جاتی ہے۔ پروفیسر تو سمجھئے سیوک ہیں۔ میں ایک صاحب کو بہت دنوں سے پروفیسر سمجھتا تھا۔ پچھلے ہفتے معلوم ہوا کہ وہ گھنٹہ بجانے والا چپراسی ہے۔ یہاں یہ بڑی دقت ہے کہ کسی کی حیثیت نہیں پتہ چلتی۔ کبھی کبھی بڑا دھوکہ ہو جاتا ہے اور شرمندہ ہونا پڑتا ہے۔ ہمارا لڑکوں کا بڑا بکس جب بھارت سے یہاں وشوودیالیہ میں پہونچا تو اسے Oriental Languages Department کے پردھان ڈاکٹر جی، جو دس سال جرمنی میں سنسکرت پڑھے ہیں اور کلچرل ڈیلی گیشن میں بھارت بھی گئے تھے، ایک چپراسی کی مدد سے خود اٹھائے چلے آ رہے تھے۔ ڈاکٹر جی ہمارے بغل کے کمرے میں رہتے ہیں اور بالکل گؤ ہیں۔ روز سویرے انہیں کمرے میں جھاڑو لگاتے دیکھتا ہوں۔ اپنا سارا کام خود کرتے ہیں کیونکہ یہاں نوکر رکھنے کا رواج نہیں ہے۔ ہندی ڈیپارٹمنٹ کے پردھان شری چن کوسو کے کپڑے بہت پرانے ہیں۔ یہ سنسکرت کے ودوان ہیں۔ رگ وید وغیرہ پڑھے ہیں۔ پر ابھی ہندی ٹھیک بول نہیں پاتے۔ ان کے کپڑے بہت سادے ہیں۔ نمر اتنے ہیں کہ ان سے بات کرنا کٹھن ہے۔ بہت محنت کرتے ہیں۔ 'نیا ہند' ہمیشہ پڑھتے ہیں۔ اس سے پاٹھ نکال کر لڑکوں کو پڑھاتے ہیں۔ ہمیں یہاں یہ دیکھ کر بڑا تعجب ہوا کہ 4th Year کے لڑکے پاٹھ میں آپ کا لکھا ہوا 'بیماری بم' والا لیکھ سبق کی طرح پڑھ رہے تھے۔ یہ لیکھ ان کے پاٹھ (Text) میں شامل تھا۔ پنڈت سندر لال جی کا 'چین کو الوداع' 1st اور 2nd Year والوں کے پاٹھ میں تھا۔ 'نیا ہند' میں جو پروف کی غلطیاں رہ جاتی ہیں اس سے انہیں بڑی حیرانی ہوتی ہے۔ غلط چھپا ہوا شبد گھنٹوں کوش میں ڈھونڈھا کرتے ہیں۔ جب نہیں ملتا تو ہمارے آنے سے پہلے جین صاحب کے یہاں پوچھنے جاتے تھے۔ یہاں لیکھوں کو لکھ کر سائکلو اسٹائل کروا لیتے ہیں ودیارتھیوں کے لئے۔ جب میں آیا تو ہندی وبھاگ کے پردھان چن کوسو 'پرواسی جی' کی شیلی کی بڑی تعریف کر رہے تھے۔ جب انہوں نے مجھ سے پوچھا تو مجھے دھیان نہیں آیا۔ جب انہوں نے 'نیا ہند' لا کر دکھایا تب میں نے منیش صاحب کا حلیہ بتایا۔ بہت خوش ہوئے۔ 'نیا ہند' میں جو چین سے سمبندھت لیکھ چھپتے ہیں ان سب کا یہاں بہت استعمال ہوتا ہے۔ اور کسی ماسک یا ساپتاہک کو یہ لوگ نہیں پڑھتے—'جن یگ' کو بھی [illegible] [illegible] [illegible]

और [illegible] की गंदगी नहीं. पान यहां नहीं होता. चीनी देसी [illegible] की विशाल दूकानें बड़ी दिलचस्प हैं. हमें उम्मीद है कि हमें और चीजें भी यहां मिल जायंगी. यहां चीनी देसी इलाज ही बहुत चलता है. शकरकन्द, मूंगफली और तिल का बना सामान यहां हर दस क़दम पर मिलता है. जिसे देखो उबली हुई शकरक़न्द खाता चला जा रहा है. चार आने में इतनी ज़ियादा मिल जाती है कि घर लाना मुश्किल हो जाता है. हम लोग दूकान पर खाते हैं और फिर जेब में भर कर घर ले आते हैं. फलों में सेब बहुत लोक प्रिय है. इसके अलावा अंगूर, नाशपाती, संतरा, अखरोट और कुछ नये चीनी फलों के ढेर जगह जगह लगे मिलते हैं. जो चीजें चीनी लोग अपने खाने में इस्तेमाल करते हैं वह बेहद सस्ती हैं. यहां चीनियों के कामन मेस में खाने का 20 रुपये महीना पड़ता है जिसमें सुबह का नाश्ता भी शामिल है और हर वक़्त खाने के साथ गोश्त मिलता है. गोश्त यहां बहुत ज़ियादा सस्ता है. सिर्फ़ तरकारी वग़ैरा खाना रईसी समझा जाता है. क़रीब क़रीब सभी लोग गोश्त खाते हैं. सर्दी बहुत ज़ियादा है बिना गोश्त खाये चीनी रह नहीं सकते. तरकारी भी गोश्त से मिला कर खाते हैं.

अभी यहां टेम्परेचर 10° के आस पास है. विकट सर्दी है. जब हवा ज़ोरों से चलती है तो ख़ुदा याद आ जाता है. हमारा कमरा भाप से गरम रहता है इसलिये कमरे के अन्दर बड़ा आराम रहता है. पर बाहर निकलते ही आफ़त आती है. फ़रवरी के अन्त तक सर्दी रहेगी. फिर बसन्त आयगा. यहां के रूई के कपड़े पहन कर हम भालू लगते हैं. ओढ़ने के लिये दो मोटे लिहाफ़, बिछाने के लिये दो मोटे गद्दे और पहनने के लिये सब रूई के मोटे मोटे कपड़े. जूते से लेकर टोपी तक रूई ही रूई. पीने के लिये हमेशा गरम पानी थरमस में रक्खा रहता है. यहां गरम पानी बराबर पीते रहना बहुत ज़रूरी है. नहाने का आम तौर से रिवाज नहीं है. पाख़ाने में पानी नहीं इस्तेमाल किया जाता. आम तौर से पाख़ानों में दरवाज़े भी नहीं होते. हमारे यहां तो लगे हैं फिर भी चीनी लोग दरवाज़ा बन्द नहीं करते.

विश्वविद्यालय शहर से क़रीब 10 मील दूर है. आस पास गांव हैं. विश्वविद्यालय के अन्दर के प्राकृतिक दृश्य कमाल के हैं. बड़े भारी इलाक़े में बसा हुआ है. छः हज़ार विद्यार्थी यहां रहते और पढ़ते हैं. रहने, खाने, पीने, पढ़ने का ख़र्च सरकार देती है. कपड़ा भी सरकार से मिलता है. यहां की सादगी के बारे में अगर लिखूं तो आपको यक़ीन नहीं आयगा. ऐसा मालूम होता है कि आश्रम में हैं. फ़ैशन का नाम निशान नहीं. ढीले ढाले रूई के कपड़े पहने विद्यार्थी और लड़कियां अजीब सी

اور آلودگی بھی پھیلتی نہیں . پان یہاں نہیں ہوتا. چینی دیسی دواؤں کی وشال دوکانیں بڑی دلچسپ ہیں، ہمیں امید ہے کہ ہمیں اور چیزیں بھی یہاں مل جائیں گی . یہاں چینی دیسی علاج ہی بہت چلتا ہے . شکر قند، مونگ پھلی اور تل کا بنا سامان یہاں ہر دس قدم پر ملتا ہے . جسے دیکھو اُبلی ہوئی شکر قند کھاتا چلا جا رہا ہے . چار آنے میں اتنی زیادہ مل جاتی ہے کہ گھر لانا مشکل ہو جاتا ہے . ہم لوگ دوکان پر کھاتے ہیں اور پھر جیب میں بھر کر گھر لے آتے ہیں . پھلوں میں سیب بہت لوک پریہ ہے . اس کے علاوہ انگور، ناشپاتی، سنترا، اخروٹ اور کچھ نئے چینی پھلوں کے ڈھیر جگہ جگہ لگے ملتے ہیں . جو چیزیں چینی لوگ اپنے کھانے میں استعمال کرتے ہیں وہ بے حد سستی ہیں . یہاں چینیوں کے کامن میس میں کھانے کا 20 روپیہ مہینہ پڑتا ہے جس میں صبح کا ناشتہ بھی شامل ہے اور ہر وقت کھانے کے ساتھ گوشت ملتا ہے. گوشت یہاں بہت زیادہ سستا ہے . صرف ترکاری وغیرہ کھانا رئیسی سمجھا جاتا ہے . قریب قریب سبھی لوگ گوشت کھاتے ہیں . سردی بہت زیادہ ہے . بنا گوشت کھائے چینی رہ نہیں سکتے . ترکاری بھی گوشت میں ملا کر کھاتے ہیں .

ابھی یہاں ٹمپریچر 10° کے آس پاس ہے . بکٹ سردی ہے . جب ہوا زوروں سے چلتی ہے تو خدا یاد آ جاتا ہے . ہمارا کمرہ بھاپ سے گرم رہتا ہے اس لئے کمرے کے اندر بڑا آرام رہتا ہے . پر باہر نکلتے ہی آفت آتی ہے . فروری کے انت تک سردی رہے گی . پھر بسنت آئے گا . یہاں کے روئی کے کپڑے پہن کر ہم بھالو لگتے ہیں . اوڑھنے کے لئے دو موٹے لحاف، بچھانے کے لئے دو موٹے گدے اور پہننے کے لئے سب روئی کے موٹے موٹے کپڑے . جوتے سے لیکر ٹوپی تک روئی ہی روئی . پینے کے لئے ہمیشہ گرم پانی تھرمس میں رکھا رہتا ہے . یہاں گرم پانی برابر پیتے رہنا بہت ضروری ہے . نہانے کا عام طور سے رواج نہیں ہے . پاخانے میں پانی نہیں استعمال کیا جاتا . عام طور سے پاخانوں میں دروازے بھی نہیں ہوتے . ہمارے یہاں تو لگے ہیں پھر بھی چینی لوگ دروازہ بند نہیں کرتے .

وشو ودیالیہ شہر سے قریب 10 میل دور ہے . آس پاس گاؤں ہیں . وشو ودیالیہ کے اندر کے پراکرتک درشیہ کمال کے ہیں . بڑے بھاری علاقے میں بسا ہوا ہے . چھ ہزار ودیارتھی یہاں رہتے اور پڑھتے ہیں . رہنے، کھانے، پینے، پڑھنے کا خرچ سرکار دیتی ہے . کپڑا بھی سرکار سے ملتا ہے . یہاں کی سادگی کے بارے میں اگر لکھوں تو آپ کو یقین نہیں آئے گا . ایسا معلوم ہوتا ہے کہ آشرم میں ہیں . فیشن کا نام نشان نہیں . ڈھیلے ڈھالے روئی کے کپڑے پہنے ودیارتھی اور لڑکیاں عجیب سی

आपको लिख रहा हूं. परीक्षा 10 फरवरी को खतम हो जायगी. फिर विश्वविद्यालय 8 मार्च को खुलेगा. इन छुट्टियों में हमें अगले छै महीने का पूरा कोर्स तैयार करना है. इधर उधर से पाठ छांट छांट कर रीडर बनानी है और हर दिन की पूरी योजना का खाका बनाना है. इसलिये छुट्टियों में भी हम शायद जरूरत से जियादा काम में लगे रहें. हम लोगों के काम से यहां के अधिकारी बहुत खुश हो गए हैं. यही हमारा उद्देश्य भी है. हम से जितनी भर सेवा हो सकती है उसमें तनिक भी कसर नहीं करेंगे. जिस से हमारी भी बदनामी न हो और देश का नाम भी ऊंचा रहे. भविष्य में हम अपना काम तन मन धन से करेंगे. आशा है आप हमेशा हमें उत्साहित करते रहेंगे.

फिलहाल हमारे खाने का अलग प्रबन्ध हो गया है. हमने एक रसोइया रख लिया है जो हमारे लिये शाकाहारी भोजन तैयार करता है. तरकारी वग़ैरा तो यहां सब मिल जाती है. गरम मसाला छोड़ कर बाक़ी और मसाले भी मिल जाते हैं. हां, मसालों के लिये ज़रा दौड़ धूप करना पड़ती है क्योंकि मसालों का चीनी नाम नहीं मालूम है. आजकल हमारी तरकारी में हल्दी, राई, काली मिर्च, नमक, लाल मिर्च वग़ैरा पड़ता है हमें खाने में कोई दिक़्क़त नहीं मालूम होती. हम रोज़ चावल, दाल, रोटी, गोभी, आलू की तरकारी, पालक, अदरक, गाजर मूली, प्याज़ लहसुन, शकरक़न्द, धनिया पत्ती, ककड़ी, अरवी, चुक़न्दर, पत्ता गोभी और कुछ नई चीनी तरकारियां भी इस्तेमाल करते हैं. खाने के साथ दूध और मक्खन भी रहता है लोग कहते हैं कि सरदी में यहां तरकारी कम होती है क्योंकि हम देखते हैं कि खेतों पर बरफ़ पड़ी हुई है. फिर भी ऊपर लिखी तरकारियां और चीज़ें बाज़ारों में भरी पड़ी हैं. मार्च में बसंत का मौसम आयगा तब टिमाटर, करेला और दूसरी तरकारियां बहुत सी मिलेंगी. हमारा रसोइया खाना बनाने में उस्ताद है इसलिये तरह तरह से चीज़ें बनाता है. हम उससे बोल नहीं सकते, इशारे से सब काम हो जाता है. दाल मूंग और मसूर यहां बहुत मिलती है. सेब सस्ता है. रसोइया रोज़ सेब की पकौड़ियां बना लाता है. आजकल हम लोग रोज़ ज़रूरत से जियादा खा जाते हैं. खाने में अभी खर्चा भी होता है पर कोई अंदाज़ा नहीं लग सका. रसोइया यहां कोई अलग से नहीं रखता. रसोइया को हम लोग अभी 50 रुपया वेतन देते हैं. हमें एक दिन बड़ा अचरज हुआ जब हमने चीनी देसी दवाइयों की दुकान पर सौंफ, लौंग, इलायची, सुपारी देखी. खुशी का ठिकाना न रहा. सौंफ यहां चीनी तरकारी में पड़ती है इसलिये बेहद सस्ती है. हमने क़रीब छै आने की सौंफ ली जो इतनी जियादा मिली कि हम से तीन महीने में भी खतम नहीं होगी. सुपारी कटी कटाई एक रुपये में तमाम सी मिल गई. लौंग

آپکو لکھ رہا ہوں. پریکشا 10 فروری کو ختم ہو جائیگی. پھر وشودیالیہ 8 مارچ کو کھلیگا . ان چھٹیوں میں ہمیں اگلے چھ مہینے کا پورا کورس تیار کرنا ہے . ادھر ادھر سے پاٹھ چھانٹ چھانٹ کر ریڈر بنانی ہے اور ہر دن کی پوری یوجنا کا خاکہ بنانا ہے . اسلئے چھٹیوں میں بھی ہم شاید ضرورت سے زیادہ کام میں لگے رہیں . ہم لوگوں کے کام سے یہاں کے ادھیکاری بہت خوش ہوگئے ہیں . یہی ہمارا اُدیش بھی ہے . ہم سے جتنی بھر سیوا ہو سکتی ہے اس میں تنک بھی کسر نہیں کرینگے. جس سے ہماری بھی بدنامی نہ اور دیش کا نام بھی اونچا رہے . بھوشیہ میں ہم اپنا کام تن من دھن سے کرینگے . آشا ہے آپ ہمیشہ ہمیں اتساہت کرتے رہینگے .

فی الحال ہمارے کھانے کا الگ پربندھ ہوگیا ہے . ہم نے ایک رسوئیا رکھ لیا ہے جو ہمارے لئے شاکاہاری بھوجن تیار کرتا ہے . ترکاری وغیرہ تو یہاں سب مل جاتی ہے . گرم مسالہ چھوڑ کر باقی اور مسالے بھی مل جاتے ہیں . ہاں، مسالوں کے لئے ذرا دوڑ دھوپ کرنا پڑتی ہے کیونکہ مسالوں کا چینی نام نہیں معلوم ہے . آج کل ہماری ترکاری میں ہلدی، رائی، کالی مرچ، نمک، لال مرچ وغیرہ پڑتا ہے . ہمیں کھانے میں کوئی دقت نہیں معلوم ہوتی. ہم روز چاول، دال، روٹی، گوبھی، آلو کی ترکاری، پالک، ادرک، گاجر، مولی، پیاز، لہسن، شکر قند، دھنیا پتی، ککڑی، اروی، چقندر، پتا گوبھی اور کچھ نئی چینی ترکاریاں بھی استعمال کرتے ہیں . کھانے کے ساتھ دودھ اور مکھن بھی رہتا ہے . لوگ کہتے ہیں کہ سردی میں یہاں ترکاری کم ہوتی ہے کیونکہ ہم دیکھتے ہیں کہ کھیتوں پر برف پڑی ہوئی ہے . پھر بھی اوپر لکھی ترکاریاں اور چیزیں بازاروں میں بھری پڑی ہیں . مارچ میں بسنت کا موسم آئیگا تب ٹماٹر، کریلا اور دوسری ترکاریاں بہت سی ملینگی . ہمارا رسوئیا کھانا بنانے میں استاد ہے اس لئے طرح طرح سے چیزیں بناتا ہے . ہم اس سے بول نہیں سکتے . اشارے سے سب کام ہو جاتا ہے . دال مونگ اور مسور یہاں بہت ملتی ہے . سیب سستا ہے . رسوئیا روز سیب کی پکوڑیاں بنا لاتا ہے . آج کل ہم لوگ ضرورت سے زیادہ کھا جاتے ہیں . کھانے میں ابھی خرچہ بھی ہوتا ہے پر کوئی اندازہ نہیں لگ سکا . رسوئیا یہاں کوئی الگ سے نہیں رکھتا . رسوئیا کو ہم لوگ ابھی پچاس روپیہ ویتن دیتے ہیں . ہمیں ایک دن بڑا اچرج ہوا، جب ہم نے چینی دیسی دوائیوں کی دکان پر سونف، لونگ، الائچی، سپاری دیکھی . خوشی کا ٹھکانہ رہا . سونف یہاں چینی ترکاری میں پڑتی ہے اس لئے بے حد سستی ہے . ہم نے قریب چھ آنے کی سونف لی جو اتنی زیادہ ملی کہ ہم سے تین مہینے میں بھی ختم نہیں ہوگی . سپاری کٹی کٹائی ایک روپئے میں تمام سی مل گئی . لونگ

चीन से एक ख़त

[श्री पुरुषोत्तम प्रसाद और श्री भान चन्द्र वर्मा 'नया हिन्द' परिवार के ही हैं. पुरुषोत्तम जी सितम्बर-अक्तूबर 1951 में पंडित सुन्दरलाल जी के साथ डेलीगेशन के सेक्रेटरी हो कर चीन गए थे. उन्हें चीन भा गया. वह 9 दिसम्बर 1952 को हवाई जहाज़ से उड़कर फिर पीकिंग पहुंच गए. श्री भानचन्द्र वर्मा और पुरुषोत्तम जी पीकिंग विश्व विद्यालय में हिन्दी के लेकचरार नियुक्त हुए हैं. उनका ख़त हम ख़ुशी से पाठकों के सामने पेश करते हैं. इस ख़त में चीनी जीवन की काफ़ी जानकारी मिलती है. हमें आशा है कि समय समय पर हम पाठकों को चीनी जीवन की ऐसी झांकियां बराबर भेंट करते रहेंगे—एडीटर]

पूज्य महात्मा जी,

एक पत्र मैंने आपको जल्दी में लिखा था. आशा है मिल गया होगा. आपका कृपा पत्र भी मिल गया बड़ी तसल्ली हुई. पर मैं जल्दी जवाब नहीं दे सका आशा है माफ़ करेंगे. पहला पत्र जब मैंने आपको लिखा था तब पढ़ाना शुरू नहीं किया था. 29 दिसम्बर से पढ़ाना शुरू किया. क़रीब एक महीना होने आया. शुरू शुरू में 3rd Year और 4th Year के विद्यार्थी मेरे पास आते थे और तरह तरह के ग्रामर के सवाल पूछते थे. मैंने कभी भी हिन्दी ग्रामर की कोई किताब नहीं पढ़ी थी, इसलिये पढ़ाई शुरू करने के पहले मैं नरवस हो गया कि 3rd Year और 4th Year के विद्यार्थीयों का कैसे पढ़ाऊंगा. हमें 3rd Year और 4th Year की ही ज़िम्मेदारी दी गई है. इसी नरवस होने की हालत में आपको पहला ख़त लिखा था. साथ ही साथ खाने का भी प्रबन्ध नहीं हुआ था इसलिये भी कुछ चिन्ता थी. लेकिन 29 दिसम्बर को क्लास में जाते ही सारी घबराहट ख़तम हो गई, मैं ख़ूब मेहनत से पढ़ाने लगा. विद्यार्थी बहुत ख़ुश हो गए. मुझे भी तैयारी में काफ़ी समय लगाना पड़ा. इस तरह 10 या 15 दिन बाद मैं ठीक हो गया. वर्मा जी भी ख़ूब मेहनत करते हैं और विद्यार्थी उनसे भी बहुत ख़ुश हैं. लेकिन हम लोगों को और किसी काम के लिये ज़रा भी समय नहीं मिलता है. पहली फ़रवरी से परीक्षा है. अगला हफ़्ता परीक्षा की तैयारी के लिये रक्खा गया है. इसलिये कोई नया पाठ तैयार नहीं करना है. अब समय मिला तो सबसे पहले

چین سے ایک خط

[شری پرشوتم پرساد اور شری بھان چندر ورما 'نیا ہند' پریوار کے ہی ہیں . پرشوتم جی ستمبر-اکتوبر 1951 میں پنڈت سندر لال جی کے ساتھ ڈیلی گیشن کے سکریٹری ہو کر چین گئے تھے. انہیں چین بھا گیا. وہ 9 دسمبر 1952 کو ہوائی جہاز سے اڑ کر پھر پیکنگ پہونچ گئے . شری بھان چندر ورما اور پرشوتم جی پیکنگ وشو ودیالیہ میں ہندی کے لکچرار نیوکت ہوئے ہیں . ان کا خط ہم خوشی سے پاٹھکوں کے سامنے پیش کرتے ہیں . اس خط میں چینی جیون کی کافی جانکاری ملتی ہے . ہمیں آشا ہے کہ سمے سمے پر ہم پاٹھکوں کو چینی جیون کی ایسی جھانکیاں برابر بھینٹ کرتے رہیں گے . — ایڈیٹر]

پوجیہ مہاتما جی،

ایک پتر میں نے آپ کو جلدی میں لکھا تھا . آشا ہے مل گیا ہوگا . آپ کا کرپا پتر بھی مل گیا بڑی تسلی ہوئی . پر میں جلدی جواب نہ دے سکا آشا ہے معاف کریںگے . پہلا پتر جب میں نے آپ کو لکھا تھا تب پڑھانا شروع نہیں کیا تھا . 29 دسمبر سے پڑھانا شروع کیا . قریب ایک مہینہ ہونے آیا . شروع شروع میں 3rd Year اور 4th Year کے ودیارتھی میرے پاس آتے تھے اور طرح طرح کے گرامر کے سوال پوچھتے تھے . میں نے کبھی بھی ہندی گرامر کی کوئی کتاب نہیں پڑھی تھی' اس لئے پڑھائی شروع کرنے کے پہلے میں نروس ہوگیا کہ 3rd Year اور 4th Year کے ودیارتھیوں کو کیسے پڑھاؤں گا . ہمیں 3rd Year اور 4th year کی ہی ذمہ داری دی گئی ہے . اسی نروس ہونے کی حالت میں آپ کو پہلا خط لکھا تھا . ساتھ ہی ساتھ کھانے کا بھی پربندھ نہیں ہوا تھا . اس لئے بھی کچھ چنتا تھی . لیکن 29 دسمبر کو کلاس میں جاتے ہی ساری گھبراہٹ ختم ہوگئی' میں خوب محنت سے پڑھانے لگا . ودیارتھی بہت خوش ہوگئے . مجھے بھی تیاری میں کافی سمے لگانا پڑا . اس طرح 10 یا 15 دن بعد میں ٹھیک ہوگیا . ورما جی بھی خوب محنت کرتے ہیں اور ودیارتھی ان سے بھی بہت خوش ہیں . لیکن ہم لوگوں کو اور کسی کام کے لئے ذرا بھی سمے نہیں ملتا ہے . پہلی فروری سے پریکشا ہے . اگلا ہفتہ پریکشا کی تیاری کے لئے رکھا گیا ہے . اس لئے کوئی نیا پاٹھ تیار نہیں کرنا ہے . اب سمے ملا تو سب سے پہلے

मुझे फ़िलासफ़र कह कर चिढ़ाया करते थे......लेकिन वह सब सपना था, कुंवर......वह सब सपना था......मैं फ़िलासफ़र बनना चाहता था और मौत मुझे यहां घसीट लाई......"

"मौत क्यों बाथ गेट......तुम ख़ुद यहां आ गए, कोरिया फ़तह करने, अमरीका को एशिया में घुस कर रखा करने......"

"नहीं कुंवर, मैं मजबूर था......मेरी तरह सारे अमरीकी नौजवान मजबूर हैं... ..मैं फ़िलासफ़र बनना चाहता था......मुझे लड़ाई से क्या मतलब ! लेकिन सरकार के हुक्म के अनुसार मुझे यहां आना पड़ा . ... मरना पड़ा......जब मैंने घर छोड़ा था......मेरी बहन रो रही थी......मेरी मां रो रही थी......पर इन आहों में, इन आंसुओं में वह ताक़त नहीं थी जो मुझे मौत के मुंह में जाने से रोक सकती......"

"लेकिन ताक़त पैदा हो रही है, दोस्त......अब कोई मां आसानी से अपनी गोद उजड़ने नहीं देगी...अब कोई बहन अपने भाई को मरते नहीं देखेगी......ताक़त पैदा हो रही है, बढ़ रही है, मज़बूत हो रही है......"

"किसकी ताक़त, कुंवर .....कौन सी ताक़त ..."

"शान्ति की ताक़त बाथगेट, शान्ति की ताक़त......"

"कम्युनिस्ट ! शूट !!" एक जीप सन्नाटे से आ कर सामने रुकी और उस में से आवाज़ आई.

तड़ तड़ तड़

और कुंवर मर गया !

पर शान्ति ज़िन्दा है !—अमर है !!

—मुजीब रिज़वी

ग़ुलाम और आज़ाद में यही फ़रक़ है कि ग़ुलाम मरने के लिये जीता है, मगर आज़ाद जीने के लिये मरता है, ग़ुलाम की ज़िन्दगी मौत के बराबर है मगर आज़ाद की मौत भी ज़िन्दगी है.

—अज्ञात

× × ×

क़ानून आदमियों को कभी आज़ाद नहीं बनाएगा, आदमियों को ही क़ानून को आज़ाद बनाना होगा.

—थोरो

مجھے فلاسفر کہہ کر چڑھایا کرتے تھے... لیکن وہ سب سپنا تھا کنور...وہ سب سپنا تھا.. میں فلاسفر بننا چاہتا تھا اور موت مجھے یہاں گھسیٹ لائی..."

"موت کیوں باتھ گیٹ...تم خود یہاں آگئے، کوریا فتح کرنے، امریکہ کو ایشیا میں گھس کر رکھا کرنے.."

"نہیں کنور، میں مجبور تھا...میری طرح سارے امریکی نوجوان مجبور ہیں...میں فلاسفر بننا چاہتا تھا...مجھے لڑائی سے کیا مطلب! لیکن سرکار کے حکم کے انوسار مجھے یہاں آنا پڑا...مرنا پڑا..جب میں نے گھر چھوڑا تھا.. میری بہن رو رہی تھی...میری ماں رو رہی تھی...پر ان آہوں میں، ان آنسوؤں میں وہ طاقت نہیں تھی جو مجھے موت کے منہ میں جانے سے روک سکتی... .."

"لیکن طاقت پیدا ہو رہی ہے، دوست...اب کوئی ماں آسانی سے اپنی گود اجڑنے نہیں دیگی...اب کوئی بہن اپنے بھائی کو مرتے نہیں دیکھے گی...طاقت پیدا ہو رہی، بڑھ رہی ہے، مضبوط ہو رہی ہے..."

"کس کی طاقت، کنور...کونسی طاقت..."

"شانتی کی طاقت باتھ گیٹ، شانتی کی طاقت.."

"کمیونسٹ! شوٹ!" ایک جیپ زناٹے سے آکر سامنے رکی اور اس میں سے آواز آئی۔

تڑ تڑ تڑ۔

اور کنور مر گیا!

پر شانتی زندہ ہے!—امر ہے!!

—مجیب رضوی

غلام اور آزاد میں یہی فرق ہے کہ غلام مرنے کے لئے جیتا ہے مگر آزاد جینے کے لئے مرتا ہے، غلام کی زندگی موت کے برابر ہے مگر آزاد کی موت بھی زندگی ہے۔

—اگیات

+ × × ×

قانون آدمیوں کو کبھی آزاد نہیں بنائے گا، آدمیوں کو ہی قانون کو آزاد بنانا ہوگا۔

—تھورو

"इन्सान इन्सान एक है, गोरे काले का फ़रक़ सामराज का एक जाल है."

"हर गोरा सामराजी है."

"नहीं, हर गोरा इन्सान है,' चन्द सिक्कों के लिये उसे अपनी इन्सानियत बेचनी पड़ती है. उसे वह करना पड़ता है जो मालिक उससे कराना चाहते हैं."

कुंवर धीरे धीरे उस आदमी के पास पहुँच गया. मुंह एक किताब से ढका हुआ था. ख़ून की पपड़ियां जम गई थीं. मालूम होता था बहुत देर से ज़ख़्मी पड़ा है.

कुंवर ने किताब मुंह से हटाया. उसके पन्ने ख़ून में लतपथ थे किताब का नाम वह पता नहीं लगा सका लेकिन एक सफ़े पर ख़ून के छींटों के पीछे उसको अपना नाम लिखा मालूम हुआ. ताज्जुब से उसने लाश को झिंझोड़ा.

"गधो, अभी मत खाओ मुझे......अभी मैं ज़िन्दा हूं..... अभी मैं बीत यादों का आनन्द ले रहा हूं......खा लेना......लेकिन थोड़ी देर की मोहलत दे दो......"

"गिध नहीं हैं भाई, मैं हूँ......एक आदमी......आंखें खोलो......"

एक ख़ामोशी छाई रही.

कुंवर दौड़ कर जीप से पानी लाया और उस आदमी का मुंह धुलाया.

"मुझे पानी पिलादो, मेरे अनजाने दोस्त......"

पानी पी कर ज़ख़्मी ने आंख खोल दीं. फिर उसने आंख बन्द कर ली.

"तुम कौन हो ?"

"मैं डाक्टर कुंवर हूँ......भारती एम्बूलेंस के साथ कोरिया के मोरचे पर आया हूँ......

"कुंवर" ! ज़ख़्मी ने ताज्जुब से कहा और एक ख़ुशी उसके मुंह पर खिल गई.

"मैं बाथ गेट हूँ, कुंवर..."

"बाथ गेट !"

और कुंवर ने हाथ फैला कर बाथगेट का सर जांगों पर रख लिया.

"कुंवर, मैं तुम्हारा तोहफ़ा हमेशा साथ रखता हूँ. याद है न......जब मैं अमरीका वापस जा रहा था तो तुम ने मुझे एक तोहफ़ा दिया था..."

"याद है बाथ गेट, ख़ूब याद है.......पर अगर मैं यह जानता कि तुम लड़ाई के मैदान में मिलोगे तो मैं तुम्हें गीताञ्जली भेंट न करता......मैंने तुम्हें कुछ और भेंट किया होता..."

"अब गुज़री बातें याद करने से क्या फ़ायदा......क्या क्या सपने थे......मैं फ़िलासफ़र बनना चाहता था...मैं लेखक बनना चाहता था......याद है न.....तुम लोग

"انسان انسان ایک ھیں' گورے کالے فرق سامراج کا ایک جال ھے"

"ھر گورا سامراجی ھے ."

"نہیں' ھر گورا انسان ھے' چلد سکوں کے لئے اسے اپنی انسانیت بیچنی پڑتی ھے' اسے وہ کرنا پڑتا ھے جو مالک اس سے کرانا چاھتے ھیں."

کنور دھیرے دھیرے اس آدمی کے پاس پہونچ گیا . منہ ایک کتاب سے ڈھکا ھوا تھا . خون کی پپڑیاں جم گئی تھیں . معلوم ھوتا تھا بہت دیر سے زخمی پڑا ھے .

کنور نے کتاب منہ سے ھٹایا . اس کے پنے خون میں لت پت تھے . کتاب کا نام وہ پتہ نہیں لگا سکا . لیکن ایک صفحے پر خون کے چھینٹوں کے پیچھے اس کو اپنا نام لکھا معلوم ھوا. تعجب سے اس نے لاش کو جھنجھوڑا.

"گدھو' ابھی مت کھاؤ مجھے...ابھی میں زندہ ھوں...ابھی میں بیتی یادوں کا آنند لے رھا ھوں... کھالینا...لیکن تھوڑی دیر کی مہلت دے دو..."

"گدھ نہیں ھیں بھائی' میں ھوں...ایک آدمی... آنکھیں کھولو..."

ایک خاموشی چھائی رھی .

کنور دوڑ کر جیپ سے پانی لایا اور اس آدمی کا منہ دھلایا .

"مجھے پانی پلا دو' میرے انجانے دوست..."

پانی پی کر زخمی نے آنکھ کھول دی . پھر اس نے آنکھ بند کرلی .

"تم کون ھو؟"

"میں ڈاکٹر کنور ھوں...بھارتی ایمبولنس کے ساتھ کوریا کے مورچے پر آیا ھوں..."

"کنور!" زخمی نے تعجب سے کہا اور ایک خوشی اس کے منہ پر کھل گئی .

"میں باتھ گیٹ ھوں' کنور..."

"باتھ گیٹ !"

اور کنور نے ھاتھ پھیلا کر باتھ گیٹ کا سر جانگوں پر رکھ لیا .

"کنور' میں تمہارا تحفہ ھمیشہ ساتھ رکھتا ھوں . یاد ھے نہ...جب میں امریکہ واپس جا رھا تھا تو تم نے مجھے ایک تحفہ دیا تھا..."

"یاد ھے باتھ گیٹ' خوب یاد ھے..." پر اگر میں یہ جانتا کہ تم لڑائی کے میدان میں ملوگے تو میں تمہیں گیتانجلی بھینٹ نہ کرتا...میں نے تمہیں کچھ اور بھینٹ کیا ھوتا..."

"اب گزری باتیں یاد کرنے سے کیا فائدہ...کیا کیا سپنے تھے......میں فلسفر بننا چاھتا تھا......میں لیکھک بننا چاھتا تھا......یاد ھے نہ......تم لوگ

जीप सन्नाटे से निकल गई और दूरी की गोद में आवाज़ गुम हो गई.

कुंवर ने भी रास्ता बदल दिया. वह जब सियूल में आया था तो अन्धेरा छाया था, मौत के सन्नाटे ने हर तरफ़ डेरा डाल रखा था. लेकिन......अब......भगदड़ हो रही थी. होली जल रही थी, गोलियां चल रही थीं, गोदाम जलाए जा रहे थे, सामान फेंका जा रहा था. अमरीकी सिपाही भाग रहे थे, आग लगा रहे थे, लूट रहे थे. लाशों का अम्बार लगता जा रहा था और बदमस्त देव की तरह ट्रक उनको रौंदते आगे बढ़ रहे थे.

कोरिया की सहायता हो रही थी ! उसकी आन बचाई जा रही थी !! उसको ज़िन्दा रखा जा रहा था !!!

उत्तरी कोरिया के जंगी क़ैदियों की टोली अमरीकी सिपाहियों के घेरे में ले जाई जा रही थी. उन्होंने सर नीचे कर रखे थे, मुंह पर कपड़े डाल लिये थे.

कुंवर ने ताज्जुब से इस सीन को देखा : एक कोरियाई स्त्री नंगी खड़ी कर दी गई थी और जंगी क़ैदियों को हुक्म था कि उसको सलूट करें. कोरियाई सिपाहियों ने आंखें बन्द कर ली थीं.

"मेरे बहादुर सिपाहियो, मत सर नीचा करो. कोई परवा नहीं है अगर आज तुम्हारी बहन नंगी खड़ी है. क़सम खाओ मेरे इस नग्न तन का कि तुम हिम्मत नहीं हारोगे, अत्याचार के सामने घुटना नहीं मोड़ोगे......"

तड़ तड़, गोलियां चलीं, और उस औरत की आवाज़ सदा के लिये बन्द कर दी गई......पर इनसानियत की आवाज़ बन्द नहीं हो सकती !!

कुंवर ऐसे हंगामे देखता हुआ न जाने कहां निकल गया—शहर से दूर, बहुत दूर—जीप थी, वह था, जीप में एक मुरदा लाश और बस ! रास्ता ही उसका साथी था और वह ही उसका हमदम.

जीप में ज़ोर की ब्रेक लगी और 'चिर' के एक लम्बे शोर के साथ जीप रुक गई. सामने एक लाश पड़ी हुई थी. कुंवर उतर कर उसके पास जाने लगा :

"यह किसी गोरे की लाश है, अच्छा हुआ मर गया......गोरा !" और उसके मुंह पर नफ़रत की एक रेखा झलक पड़ी.

"तुम इन्सान हो" किसी ने जैसे अन्दर से उसे झिंझोड़ा.

"लेकिन यह लोग इन्सान नहीं हैं......यह सिर्फ़ गोरे हैं......"

"सिपाही की क्या ख़ता हो सकती है......वह तो मज़लूम है......वह तो सामराज की वेदी का केवल एक बलिदान है......"

"है तो यह गोरा."

جیپ سناٹے سے نکل گئی اور دوری کی گود میں آواز گم ہوگئی۔

کنور نے بھی راستہ بدل دیا۔ وہ جب سیول میں آیا تھا تو اندھیرا چھایا تھا، موت کے سناٹے نے ہر طرف ڈیرا ڈال رکھا تھا۔ لیکن......اب......بھگدڑ ہو رہی تھی۔ ہولی جل رہی تھی، گولیاں چل رہی تھیں، گودام جلائے جا رہے تھے، سامان پھینکا جا رہا تھا۔ امریکی سپاہی بھاگ رہے تھے، آگ لگا رہے تھے، لوٹ رہے تھے۔ لاشوں کا انبار لگتا جا رہا تھا اور بدمست دیو کی طرح ٹرک اُن کو روندتے آگے بڑھ رہے تھے۔

کوریا کی سہائتا ہو رہی تھی! اُس کی آن بچائی جا رہی تھی!! اُس کو زندہ رکھا جا رہا تھا!!!

اُتری کوریا کے جنگی قیدیوں کی ٹولی امریکی سپاہیوں کے گھیرے میں لے جائی جا رہی تھی۔ انہوں نے سر نیچے کر رکھے تھے، منہ پر کپڑے ڈال لئے تھے۔

کنور نے تعجب سے اِس سین کو دیکھا: ایک کوریائی استری ننگی کھڑی کردی گئی تھی اور جنگی قیدیوں کو حکم تھا کہ اُس کو سلوٹ کریں۔ کوریائی سپاہیوں نے آنکھیں بند کرلی تھیں۔

"میرے بہادر سپاہیو، مت سر نیچا کرو۔ کوئی پرواہ نہیں ہے اگر آج تمہاری بہن ننگی کھڑی ہے۔ قسم کھاؤ میرے اِس ننگے تن کی کہ تم ہمت نہیں ہارو گے، اتیاچار کے سامنے گھٹنا نہیں موڑو گے......"

تڑ تڑ گولیاں چلیں، اور اُس عورت کی آواز سدا کے لئے بند کر دی گئی......پر انسانیت کی آواز بند نہیں ہوسکتی!!

کنور ایسے ہنگامے دیکھتا ہوا نہ جانے کہاں نکل گیا— شہر سے دور، بہت دور—جیپ تھی، وہ تھا، جیپ میں ایک مردہ لاش اور بس! راستہ ہی اُس کا ساتھی تھا اور وہ ہی اُس کا ہمدم۔

جیپ میں زور کی بریک لگی اور 'چر' کے ایک لمبے شور کے ساتھ جیپ رک گئی۔ سامنے ایک لاش پڑی ہوئی تھی۔ کنور اتر کر اس کے پاس جانے لگا:

"یہ کسی گورے کی لاش ہے، اچھا ہوا مر گیا... گورا!" اور اُس کے منہ پر نفرت کی ایک ریکھا جھلک پڑی۔

"تم انسان ہو" کسی نے جیسے اندر سے اُسے جھنجھوڑا۔

"لیکن یہ لوگ انسان نہیں ہیں...یہ صرف گورے ہیں..."

"سپاہی کی کیا خطا ہوسکتی ہے...وہ تو مظلوم ہے...وہ تو سامراج کی ویدی کا کیول ایک بلیدان ہے..."

"ہے تو یہ گورا۔"

डाक्टर ने कुंवर के मुंह पर तेज़ निगाह डाली और एक ज़हरीली मुस्कराहट उसके मुंह पर खिल पड़ी.

दोनों चुप खड़े रहे—कुंवर के मुंह पर ताज्जुब था और डाक्टर के मुंह पर कटीली मुस्कराहट.

"डाक्टर जल्दी करो...उसे बचालो...." कुंवर ने खामोशी तोड़ी.

"मर भी जाने दो, एक 'गुक' के मर जाने से क्या बिगड़ जायगा" डाक्टर ने इस तरह जवाब दिया जैसे कह रहा हो कि कुत्ते मरा ही करते हैं, उस पर परेशान होने की क्या ज़रूरत है.

"डाक्टर ?"

और कुंवर के दिमाग में अमरीकी सिपाही के वाक्य फिर गूंज उठे—"शायद तुम यह सोचते हो कि तुम भी इनसान हो...तुम काले हो और हम गोरे ..गोरे इसलिये हैं कि कालों पर राज करें..."

"डाक्टर, तुम डाक्टर हो, तुम्हें ऐसा नहीं सोचना चाहिये ...तुम ईसाई भी हो डाक्टर...तुम आदमी भी हो डाक्टर..."

"मैं अस्पताल का नियम नहीं तोड़ सकता. यहां गुकों का दाखला नहीं हो सकता यह योरपियनों के इलाज के लिये है .."

"मैं ज़ख़मी हो जाऊं तो मेरा भी नहीं हो सकता."

'तुम्हारा भी नहीं हो सकता" डाक्टर ने अपनी टाई ठीक करते हुए कहा.

कुंवर कुछ बोल न सका, उसका गला रुंध गया. उसने सिर्फ़ डाक्टर पर अपनी आंखें गड़ा दीं.

कालों की सहायता के दावे, आज़ादी, गुलामी, गुक, नेटिव, वह लाश, अमरीकी सिपाही की मार, कारियाई बूढ़े की कराह और फिर डाक्टर आल्टर की हंसी—सब ने उसे आदेश दिया—"भाग जाओ यहां से, निकल जाओ यहां से. यहां इनसान नहीं रहते."

सामने डाक्टर खड़ा उसी तरह हंस रहा था.

कुंवर ने गुस्से में फाटक बन्द किया और अपनी जीप स्टार्ट करके हिन्दुस्तानी एम्बुलेन्स के हेडक्वार्टर की तरफ़ चल पड़ा. आज उसे रोशनी मिली थी, सबक़ मिला था. वह इस पैग़ाम को सब को सुना देना चाहता था.

सामने से एक जीप ज़न्नाटे से आई. उसमें से एक जानी पहचानी आवाज़ सुनाई पड़ी—निकल चलो स्यूल घिर गया है चीनी वालनटियरों ने चारों तरफ़ से घेरा डाल दिया है. अमरीकन भाग चुके हैं......हर तरफ़ आग लगी है......यूनो के सिपाहियों ने शहर में आग लगा दी है......भाग चलो......ख़तरा है......निकल चलो......लौट आओ......

ڈاکٹر نے کنور کے منہ پر تیز نگاہ ڈالی اور ایک زہریلی مسکراہٹ اس کے منہ پر کھل پڑی۔

دونوں چپ کھڑے رہے—کنور کے منہ پر تعجب تھا اور ڈاکٹر کے منہ پر کٹیلی مسکراہٹ۔

"ڈاکٹر جلدی کرو... اسے بچالو..." کنور نے خاموشی توڑی

"مر بھی جانے دو، ایک 'گک' کے مر جانے سے کیا بگڑ جائے گا" ڈاکٹر نے اس طرح جواب دیا جیسے کہ رہا ہو کہ کتے مرا ہی کرتے ہیں، اس پر پریشان ہونے کی کیا ضرورت ہے۔

"ڈاکٹر؟"

اور کنور کے دماغ میں امریکی سپاہی کے واکیہ پھر گونج اٹھے—"شاید تم یہ سوچتے ہو کہ تم بھی انسان ہو......تم کالے ہو اور ہم گورے......گورے اس لئے ہیں کہ کالوں پر راج کریں......"

"ڈاکٹر، تم ڈاکٹر ہو، تمہیں ایسا نہیں سوچنا چاہئے......تم عیسائی بھی ہو ڈاکٹر......تم آدمی بھی ہو ڈاکٹر......"

"میں اسپتال کا نیم نہیں توڑ سکتا، یہاں گکوں کا داخلہ نہیں ہوسکتا۔ یہ یورپینوں کے علاج کے لئے ہے..."

"میں زخمی ہو جاؤں تو میرا بھی نہیں ہوسکتا۔"

"تمہارا بھی نہیں ہوسکتا" ڈاکٹر نے اپنی ٹائی ٹھیک کرتے ہوئے کہا۔

کنور کچھ نہ بول سکا اس کا گلا رندھ گیا۔ اس نے صرف ڈاکٹر پر اپنی آنکھیں گڑا دیں۔ کالوں کی سہائتا کے دعوے، آزادی، غلامی، گک، نیٹو، وہ لاش، امریکی سپاہی کی مار، کوریائی بوڑھے کی کراہ اور پھر ڈاکٹر آلٹر کی ہنسی—سب نے اسے آدیش دیا—"بھاگ جاؤ یہاں سے، نکل جاؤ یہاں سے۔ یہاں انسان نہیں رہتے۔"

سامنے ڈاکٹر کھڑا اسی طرح ہنس رہا تھا۔

کنور نے غصے میں پھاٹک بند کیا اور اپنی جیپ اسٹارٹ کرکے ہندستانی ایمبولنس کے ہیڈکوارٹر کی طرف چل پڑا۔ آج اسے روشنی ملی تھی، سبق ملا تھا۔ وہ اس پیغام کو سب کو سنا دینا چاہتا تھا۔

سامنے سے ایک جیپ زنانے سے آئی۔ اس میں سے ایک جانی پہچانی آواز سنائی پڑی—نکل چلو، سیول گھر گیا ہے۔ چینی والنٹیروں نے چاروں طرف سے گھیرا ڈال دیا ہے۔ امریکن بھاگ چکے ہیں......ہر طرف آگ لگی ہے......یونو کے سپاہیوں نے شہر میں آگ لگادی ہے......بھاگ چلو......خطرہ ہے......نکل چلو......لوٹ آؤ......

"फूल, नेटिव, क़ुली" अमरीकन बड़बड़ाया.

"हम तुम्हारे सहायक हैं" कुंवर ने उत्तर दिया.

"तुम और सहायक !...तुमको हमने डालर से खरीदा है."

"चुप रहो"

"तुम हट जाओ"

'तुम अब हाथ नहीं उठा सकते."

"इस कुत्ते का मैं खून पी जाऊंगा" अमरीकन ने कहा.

"क्यों, आखिर क्यों ?"

"कमीना हमारी बराबरी करता है...हम और यह... यह अपना अधिकार जताता है..हम से ज़बान लड़ाता है..."

"तुम भी इनसान हो, यह भी इनसान है..तुम इनकी रक्षा करने आए हो..."

"और शायद तुम यह सोचते हो कि तुम भी इनसान हो.. तुम काले हो और हम गोरे....गोरे इसलिये हैं कि कालों पर राज करें....बराबरी का दावा..."

कुंवर ने बूढ़े कोरियाई को कन्धे पर लादा और अपनी जीप की तरफ़ चल दिया.

गोरे ने मुक्का ताना ज़रूर पर वार नहीं किया वह केवल बड़बड़ाता रहा—"नेटिव, गुक, काला, क़ुली...."

जीप अस्पताल की तरफ़ बढ़ी जा रही थी और बूढ़ा कराह रहा था. कुंवर उसकी भाषा नहीं समझ सकता था लेकिन वेदना उसके दिल पर लकीर डालती जाती थी. हर कराह के साथ वह बेचैन हो जाता और स्पीड तेज़ कर देता—रह रह कर गोरे के वाक्य उसके दिमाग़ में गूंज रहे थे—

"शायद तुम यह सोचते हो कि तुम भी इनसान हो... तुम काले हो और हम गोरे...गोरे इसलिये हैं कि कालों पर राज करें..."

उसने अमरीकी अस्पताल के सामने जीप रोक दी. अन्धेरा छाया हुआ था. वह दौड़ा दौड़ा अन्दर गया. अजीब परेशानी छाई थी. उसने नरसों से डाक्टरों का पता पूछा. किसी ने ढंग से उत्तर न दिया. वह झल्लाया हुआ डाक्टर आल्टर के कमरे में घुस पड़ा.

डाक्टर आल्टर वहां टहल रहे थे. कुंवर ने हांपते हांपते कहा :

"एक कोरियाई बूढ़ा बहुत ज़ख़मी हो गया है...... डाक्टर उसे जल्दी बचाओ......चलो, डाक्टर......उसे जल्दी बचाओ......वह मर जायगा डाक्टर......उसे गोली नहीं लगी डाक्टर, एक सिपाही ने बूट की ठोकरें मारी हैं......बेचारा बड़ा दुखी है डाक्टर......वह मर जायगा डाक्टर......"

"فول، نیٹو، قلی" امریکن بڑبڑایا۔

"ہم تمہارے سہایک ہیں" کنور نے اتر دیا۔

"تم اور سہایک!......تم کو ہم نے ڈالر سے خریدا ہے"

"چپ رہو"

"تم ہٹ جاؤ"

"تم اب ہاتھ نہیں اٹھا سکتے۔"

"اس کتے کا میں خون پی جاؤنگا" امریکن نے کہا۔

"کیوں، آخر کیوں؟"

"کمینہ ہماری برابری کرتا ہے......ہم اور یہ...... یہ اپنا ادھیکار جتاتا ہے......ہم سے زبان لڑاتا ہے......"

"تم بھی انسان ہو، یہ بھی انسان ہے......تم ان کی رکشا کرنے آئے ہو......"

"اور شاید تم یہ سوچتے ہو کہ تم بھی انسان ہو...... تم کالے ہو اور ہم گورے......گورے اس لئے ہیں کہ کالوں پر راج کریں......برابری کا دعویٰ ......"

کنور نے بوڑھے کوریائی کو کندھے پر لادا اور اپنی جیپ کی طرف چل دیا۔

گورے نے مکہ تانا ضرور پر وار نہیں کیا۔ وہ کیول بڑبڑاتا رہا—"نیٹو، گک، کالا، قلی......"

جیپ اسپتال کی طرف بڑھی جا رہی تھی اور بوڑھا کراہ رہا تھا۔ کنور اس کی بھاشا نہیں سمجھ سکتا تھا لیکن ویدنا اس کے دل پر لکیر ڈالتی جاتی تھی۔ ہر کراہ کے ساتھ وہ بےچین ہو جاتا اور اسپیڈ تیز کر دیتا— رہ رہ کر گورے کے واکیہ اس کے دماغ میں گونج رہے تھے—

"شاید تم یہ سوچتے ہو کہ تم بھی انسان ہو...... تم کالے ہو اور ہم گورے......گورے اس لئے ہیں کہ کالوں پر راج کریں......"

اس نے امریکی اسپتال کے سامنے جیپ روک دی۔ اندھیرا چھایا ہوا تھا۔ وہ دوڑا دوڑا اندر گیا۔ عجیب پریشانی چھائی تھی۔ اس نے نرسوں سے ڈاکٹروں کا پتہ پوچھا۔ کسی نے ڈھنگ سے اتر نہ دیا۔ وہ جھلایا ہوا ڈاکٹر آلٹر کے کمرے میں گھس پڑا۔

ڈاکٹر آلٹر وہاں ٹہل رہے تھے۔ کنور نے ہانپتے ہانپتے کہا:

"ایک کوریائی بوڑھا بہت زخمی ہوگیا ہے......ڈاکٹر اسے جلدی بچاؤ......چلو، ڈاکٹر......اسے جلدی بچاؤ......وہ مر جائیگا ڈاکٹر......اسے گولی نہیں لگی ڈاکٹر، ایک سپاہی نے بوٹ کی ٹھوکریں ماری ہیں......بیچارا بڑا دکھی ہے ڈاکٹر......وہ مر جائیگا ڈاکٹر......"

"यह उत्तरी कोरिया है या दक्खिनी कोरिया ?" किसी ने जैसे उससे पूछा.

न यह उत्तरी कोरिया है, न दक्खिनी कोरिया. यह अलग अलग नहीं हैं. कोरिया की लाश के दो टुकड़े हैं......दो टुकड़े !

उस लाश पर उसने दो आंसू बहाए. भारी मन से जीप में आ कर बैठ गया. नक़्शा और कमपास निकाल कर अपने लिये एक रास्ता तय किया और एक धचके के साथ आगे बढ़ गया.

नाले, ख़न्दक़, खेत, मैदान, सब को पार करता वह आगे बढ़ता जा रहा था.

उसे एक ही ध्यान था कि उसे स्कूल जाना है.

स्कूल भी आ गया !

अभी चांदनी नहीं निकली थी. अभी अन्धेरे ने अपना मुंह नहीं छिपाया था स्कूल अन्धकारमय था. कहीं रोशनी नहीं थी. कहीं उजाला नहीं था.

कुंवर जीप उड़ाता जाता था. यूनो के भेस में अमरीकी सिपाही उसे टोकते थे और वह पास देता तेज़ी से आगे बढ़ता जाता था. एक चौराहे पर उसने सुना:

"गुक"

फिर मारने की आवाज़ आई—साथ में एक यातना भरी फ़रियाद भी.

कुंवर रुक गया—फिर चलने लगा.

फिर मार—बूट की ठोकर—फिर वही कराह.

वह उतर कर इस दृश्य के क़रीब चला गया.

"गुक, बदमाश" अमरीकी सिपाही ने कहा, और एक ठोकर जमाई.

बूढ़े कोरियाई ने ख़ून उगल दिया.

गोरे ने ताबड़ तोड़ मुक्के जमाए.

बूढ़ा हर बार सिर्फ़ इतना कहता—"बाबा, मैं कहां जाऊं, मेरा घर जल गया, मेरा ख़ानदान तितर बितर हो गया. मेरी जायदाद लुट गई. मैं अपनी ज़मीन पर चल भी नहीं सकता. अपने देश पर मुझे इतना भी अधिकार नहीं... मैं अपनी सड़कों पर क़दम भी नहीं रख सकता... "

कुंवर के होंट हिले और उसने दर्द से दोहराया—"मैं अपनी ज़मीन पर चल भी नहीं सकता, अपने देश पर मुझे इतना भी अधिकार नहीं...मैं अपनी ज़मीन पर चल भी नहीं सकता..."

गोरे ने बूढ़े को फिर एक मुक्का मारा...उसने फिर ख़ून उगल दिया.

कुंवर में जैसे बिजली की करन्ट दौड़ गई. वह बिना किसी चीज़ का ध्यान किये वहां पहुँच गया. उसने गोरे के उठते हुए हाथ रोक लिये.

"یہ اتری کوریا ہے یا دکھنی کوریا ؟" کسی نے جیسے اس سے پوچھا۔

نہ یہ اتری کوریا ہے، نہ دکھنی کوریا ۔ یہ الگ الگ نہیں ہیں ۔ کوریا کی لاش کے دو ٹکڑے ہیں......دو ٹکڑے !

اس لاش پر اس نے دو آنسو بہائے ۔ بھاری من سے جیپ میں آ کر بیٹھ گیا ۔ نقشے اور کمپاس نکال کر اپنے لئے ایک راستہ طے کیا اور ایک دھچکے کے ساتھ آگے بڑھ گیا ۔

نالے، خندق، کھیت، میدان، سب کو پار کرتا وہ آگے بڑھتا جا رہا تھا ۔

اسے ایک ہی دھیان تھا کہ اسے سکول جانا ہے ۔

سکول بھی آ گیا !

ابھی چاندنی نہیں نکلی تھی، ابھی اندھیرے نے اپنا منہ نہیں چھپایا تھا ۔ سکول اندھکار مے تھا ۔ کہیں روشنی نہیں تھی، کہیں اجالا نہیں تھا ۔

کنور جیپ اڑاتا جاتا تھا ۔ یو نو کے بھیس میں امریکی سپاہی اسے ٹوکتے تھے اور وہ پاس دیتا تیزی سے آگے بڑھتا جاتا تھا ۔ ایک چوراہے پر اس نے سنا :

"گک"

پھر مارنے کی آواز آئی—ساتھ میں ایک یاتنا بھری فریاد بھی ۔

کنور رک گیا—پھر چلنے لگا ۔

پھر مار—بوٹ کی ٹھوکر—پھر وہی کراہ ۔

وہ اتر کر اس درشیہ کے قریب چلا گیا ۔

"گک، بدمعاش" امریکی سپاہی نے کہا، اور ایک ٹھوکر جمائی ۔

بوڑھے کوریائی نے خون اگل دیا ۔

گورے نے تابڑ توڑ مکے جمائے ۔

بوڑھا ہر بار صرف اتنا کہتا—"بابا، میں کہاں جاؤں، میرا گھر جل گیا، میرا خاندان تتر بتر ہو گیا ۔ میری جائداد لٹ گئی ۔ میں اپنی زمین پر چل بھی نہیں سکتا ۔ اپنے دیش پر مجھے اتنا بھی ادھکار نہیں ......میں اپنی سڑکوں پر قدم بھی نہیں رکھ سکتا......"

کنور کے ہونٹ ہلے اور اس نے درد سے دہرایا—"میں اپنی زمین پر چل بھی نہیں سکتا، اپنے دیش پر مجھے اتنا بھی ادھکار نہیں.....میں اپنی زمین پر چل بھی نہیں سکتا......"

گورے نے بوڑھے کو پھر ایک مکہ مارا......اس نے پھر خون اگل دیا ۔

کنور میں جیسے بجلی کی کرنٹ دوڑ گئی ۔ وہ بنا کسی چیز کا دھیان کئے وہاں پہونچ گیا ۔ اس نے گورے کے اٹھے ہاتھ روک لئے ۔

"फ़र्ज़, फ़र्ज़ ! फ़र्ज़ से तो मैं तंग......"

मन की कोमलता मुंझलाहट के समय भी उससे अलग न थी.

उसने ज़ोर से सिगरेट के टुकड़े को ज़मीन पर फेंका और पैर पटक कर उस चीज़ की तरफ़ चल पड़ा—

तड़, तड़, तड़, तड़

गोलियों की बौछार होने लगी. कहां से और किधर से इसका पता नहीं लग सकता था. कुंवर का लक्ष्य ग़ायब हो गया, वह ख़ुद ही गुम सा हो गया. किस तरह वह जीप के नीचे लेटा था, इस विवरन को बताना उसके बस की बात नहीं थी. वह जीप के नीचे दम साधे पड़ा था.

कुछ देर के लिये सन्नाटा.

फिर गोलियों की बौछार.

जहाज़ की घरघराहट.

फिर सन्नाटा.

फिर बमों का धमाका

इस बार लम्बा सन्नाटा छाया रहा, कुंवर के दम में दम आया. मलेरिया का जाड़ा उतर गया था, पर डर अभी बाक़ी था. वह अपनी जगह से नहीं डिगा. पन्द्रह मिनट और बीत गए.

दिमाग़ ने कहा—"वह लौट जाय."

मन ने कहा—"नहीं, ज़ख़मी को ले कर जायगा."

इन्सान जीत गया.

कुंवर ने फिर लाइटर जलाया और तेज़ी से उस तरफ़ बढ़ गया.

फिर गोली चली.

वह वहीं लेट गया. लाइटर बुझ गया, रोशनी ख़तम हो गई, अन्धेरा छा गया.

फिर सन्नाटा छा गया. देर तक गोली नहीं चलो.

वह घिसलने लगा, घिसलता गया, घिसलते घिसलते थक सा गया .....फिर उसने लाइटर जलाया. उसने देखा :

बिलकुल उसी के सामने एक गज़ के फ़ासले पर एक औरत पड़ी है. एक बच्चा उसकी छाती से चिमटा हुआ है शायद मां ने मरते समय बच्चे को प्यार किया था, अपनी गोद में भींच लिया था. वह उसके बिलकुल क़रीब चला गया. लाश दो जगह से पिघुलली हो गई थी. जीप के पहियों ने इनसान पर चलने का सौभाग्य प्राप्त किया था !

वह मन ही मन गिड़गिड़ाने लगा, क्षमा चाहने लगा. उसने अपने को दोषी समझ लिया. उसका ख़याल था कि उसकी जीप ने ही यह अत्याचार किया है.

लाश के वह और क़रीब हो गया, लाइटर और क़रीब ले गया.

"فرض، فرض ! فرض سے تو میں تنگ......"

من کی کوملتا جھنجھلاہٹ کے سمے بھی اس سے الگ نہ تھی ۔ اس نے زور سے سگریٹ کے ٹکڑے کو زمین پر پھینکا اور پھر پٹک کر اس چیز کی طرف چل پڑا—

تڑ، تڑ، تڑ، تڑ

گولیوں کی بوچھار ہونے لگی، کہاں سے اور کدھر سے اسکا پتہ نہیں لگ سکتا تھا ۔ کنور کا لکش غائب ہو گیا، وہ خود ہی گم سا ہو گیا ۔ کس طرح وہ جیپ کے نیچے لیٹا تھا اس وورن کو بتانا اسکے بس کی بات نہیں تھی ۔ وہ جیپ کے نیچے دم سادھے پڑا تھا ۔

کچھ دیر کے لئے سناٹا ۔

پھر گولیوں کی بوچھار ۔

جہاز کی گھر گھراہٹ ۔

پھر سناٹا ۔

پھر بموں کا دھماکا ۔

اس بار لمبا سناٹا چھایا رہا، کنور کے دم میں دم آیا ۔ ملیریا کا جاڑا اُتر گیا تھا، پر ڈر ابھی باقی تھا ۔ وہ اپنی جگہ سے نہیں ڈگا ۔ پندرہ منٹ اور بیت گئے ۔

دماغ نے کہا—" وہ لوٹ جائے ۔"

من نے کہا—" نہیں، زخمی کو لے کر جائے گا ۔"

انسان جیت گیا ۔

کنور نے پھر لائٹر جلایا اور تیزی سے اس طرف بڑھ گیا ۔

پھر گولی چلی ۔

وہ وہیں لیٹ گیا ۔ لائٹر بجھ گیا، روشنی ختم ہو گئی، اندھیرا چھا گیا ۔

پھر سناٹا چھا گیا، دیر تک گولی نہیں چلی ۔

وہ گھسلنے لگا گھسلتا گیا، گھسلتے گھسلتے تھک سا گیا......پھر اس نے لائٹر جلایا ۔

اس نے دیکھا :

بالکل اُسی کے سامنے ایک گز کے فاصلے پر ایک عورت پڑی ہے ۔ ایک بچہ اُسکی چھاتی سے چمٹا ہوا ہے ۔ شاید ماں نے مرتے سمے بچے کو پیار کیا تھا، اپنی گود میں بھینچ لیا تھا ۔ وہ اس کے بالکل قریب چلا گیا ۔ لاش دو جگہ سے پگھلی ہو گئی تھی ۔ جیپ کے پہیوں نے انسان پر چلنے کا سوبھاگیہ پراپت کیا تھا !

وہ من ہی من گڑگڑانے لگا، چھما چاہنے لگا ۔ اس نے اپنے کو دوشی سمجھ لیا ۔ اُسکا خیال تھا کہ اُسکی جیپ نے ہی یہ اتیاچار کیا ہے ۔

لاش کے وہ اور قریب ہو گیا، لائٹر اور قریب لے گیا ۔

अन्धेरा, और आगे कुछ भी नहीं. उजाला......जहां तक आंख जाय......नये सवाल, नई समस्याएं, नई चिन्ताएं—अन्धेरा जहां परदा डाले था, उजाले ने उसे नंगा कर दिया—

कुंवर ने अपने को एक जंगल में पाया. यहां अब जंगल नहीं था केवल जंगल की निशानियां बाक़ी थीं. पेड़ नहीं थे बल्कि कुछ ऐसे देव खड़े थे, जिनका मुंह झुलस दिया गया हो, जिनका शरीर भूंज दिया गया हो. यह पेड़ नहीं थे, चिता की लुकाठियां थे ! कोरिया की लाश जल रही थी और कुछ इनसान हाथ ताप रहे थे. बमों को कहां फ़ुरसत कि इन पेड़ों की दुहाई सुन सकें. जहाजों के कहां हैं कान जो इनका रोना उन तक पहुँच सके, गोलियां केवल मारना जानती हैं, मार की पीड़ा क्या होती है, इसका उन्हें ज्ञान नहीं होता—कितनी लाशें चीखी होंगी, कितना चीत्कार इस जंगल में हुआ होगा !

कुंवर के होंट कांपे, आंखों में आंसू आ गए, पैरों में झुरझुरी आ गई. निराश हो उसने रोशनी खतम कर दी, अन्धेरा बुला लिया.

रोशनी का इलाज अन्धेरा नहीं हो सकता ? अन्धेरे की तरफ़ बढ़ना बुज़दिली है, कायरता है. उजाला है कोई चीज़, और मानवता के लिये वह बहुत ही जरूरी है. उजाले से से डर कर अन्धेरे की शरन में जाना इनसान की हार है. इनसान का जीत उजाले के रास्ते को साफ़ करना है, उसे समतल करना है.

कुंवर ने जीप स्टार्ट कर दी. वह सौ एक क़दम आगे बढ़ भी गया. फिर न जाने क्यों वह रुक गया. उसने जीप से बाहर आ कर सर सहलाया. थकान ने उस पर घेरा डाला. उसने जंभाही ली. न जाने क्यों उसका मन सिगरेट पीने के लिये मचल पड़ा. मुंह में दबी सिगरेट को उसने लाइटर की लौ पर रख दिया. लाइटर की लौ ने बढ़ कर सिगरेट का मुंह झुलस दिया या सिगरेट ने खुद लौ पर अपने को निछावर कर दिया, यह कहना जरा मुशकिल है.

सिगरेट जल गई, कुंवर ने लम्बा कश लिया.

लाइटर बुझाने की कुंवर को सुध आई.

सर उठाते ही. कुंवर ने मद्धम रोशनी में थोड़ी दूर पर कोई चीज़ पड़ी देखी. वह उसे देखने के लिये आगे बढ़ा.

वह पीछे लौट आया—जैसे किसी ने रोक दिया हो.

वह रुका रहा, सिगरेट पीता रहा, सोचता रहा.

"कोई ज़ख्मी आदमी न पड़ा हो" उसके मन ने कहा.

"होगा, लड़ाई का मैदान है. बम बरसा ही करते हैं, आदमी मरा ही करते हैं.....मैं क्या कर सकता हूँ" दिमाग़ ने जवाब दिया.

"फ़र्ज़"

اندھیرا، اور آگے کچھ بھی نہیں۔ اُجالا......جہاں تک آنکھ جائے...نئے سوال، نئی سمسیائیں، نئی چنتائیں—اندھیرا جہاں پردہ ڈالے تھا، اُجالے نے اُسے ننگا کر دیا—

کنور نے اپنے کو ایک جنگل میں پایا. یہاں اب جنگل نہیں تھا، کیول جنگل کی نشانیاں باقی تھیں۔ پیڑ نہیں تھے بلکہ کچھ ایسے دیو کھڑے تھے، جن کا منہ جھلس دیا گیا ہو، جن کا شریر بھونج دیا گیا ہو۔ یہ پیڑ نہیں تھے، چتا کی لوکاٹھیاں تھے! کوریا کی لاش جل رہی تھی اور کچھ انسان ہاتھ تاپ رہے تھے بموں کو کہاں فرصت کہ ان پیڑوں کی دہائی سن سکیں۔ جہازوں کے کہاں ہیں کان جو اِن کا رونا اُن تک پہونچ سکے گولیاں کیول مارنا جانتی ہیں، مار کی پیڑا کیا ہوتی ہے، اِس کا انہیں گیان نہیں ہوتا—کتنی لاشیں چیخی ہوں گی، کتنا چیتکار اِس جنگل میں ہوا ہوگا!

کنور کے ہونٹ کانپے، آنکھوں میں آنسو آگئے، پیروں میں جھر جھری آ گئی۔ نراش ہو اُس نے روشنی ختم کر دی، اندھیرا بلا لیا۔

روشنی کا علاج اندھیرا نہیں ہو سکتا؟ اندھیرے کی طرف بڑھنا بزدلی ہے، کایرتا ہے۔ اجالا ہے کوئی چیز، اور مانوتا کے لئے وہ بہت ہی ضروری ہے۔ اُجالے سے ڈر کر اندھیرے کے شرن میں جانا اِنسان کی ہار ہے۔ انسان کی جیت اُجالے کے راستے کو صاف کرنا ہے، اُسے سمتل کرنا ہے۔

کنور نے جیپ اسٹارٹ کر دی۔ وہ سو ایک قدم آگے بڑھ بھی گیا۔ پھر نہ جانے کیوں وہ رک گیا۔ اُس نے جیپ سے باہر آ کر سر سہلایا۔ تھکان نے اُس پر گھیرا ڈالا۔ اُس نے جمواہی لی۔ نہ جانے کیوں اُس کا من سگریٹ پینے کے لئے مچل پڑا۔ منہ میں دبی سگریٹ کو اس نے لائٹر کی لو پر رکھ دیا۔ لائٹر کی لو نے بڑھ کر سگریٹ کا منہ جھلس دیا یا سگریٹ نے خود لو پر اپنے کو نچھاور کر دیا، یہ کہنا ذرا مشکل ہے۔

سگریٹ جل گئی، کنور نے لمبا کش لیا۔

لائٹر بجھانے کی کنور کو سدھ آئی۔

سر اٹھاتے ہی، کنور نے مدھم روشنی میں تھوڑی دور پر کوئی چیز پڑی دیکھی وہ اُسے دیکھنے کے لئے آگے بڑھا۔

وہ پیچھے لوٹ آیا—جیسے کسی نے روک دیا ہو۔

وہ رکا رہا، سگریٹ پیتا رہا، سوچتا رہا۔

"کوئی زخمی آدمی نہ پڑا ہو" اس کے من نے کہا۔

"ہوگا، لڑائی کا میدان ہے۔ بم برسا ہی کرتے ہیں، آدمی مرا ہی کرتے ہیں......میں کیا کر سکتا ہوں" دماغ نے جواب دیا۔

"فرض"

फिर उनका दबाना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन होता है! केवल इसी का नाम ही सच की जीत है!

वह एक सपना सा देखने लगाः

"हर तरफ़ लड़ाई की तैयारियां हो रही हैं. वातावरन में भी लड़ाई की गूंज है. एटम बम की धमकी सुनाई देती है.... ...हाइड्रोजन बम की तैयारी की खबर दुनिया को भेजी जाती है...जैसे एक पागलपन सारी दुनिया पर छाया हुआ है...एक तरफ़ लड़ाई की शक्तियां संगठित हो रही हैं और... दूसरी तरफ़ शान्ति की शक्तियां अपनी बिखरी कड़ियां इकट्ठा कर रही हैं......लड़ाई के राक्षस यकायक टूट पड़ते हैं......एक कोमल गात को नोच डालते हैं, मसल डालते हैं. जमीन खून से रंग जाती है......लड़ाई के भूत आगे बढ़ते हैं......शान्ति की फ़ौज लिये भारत माता आगे आती है......उसकी ललकार सुनाई देती है—लड़ाई बन्द करो! पर लड़ाई बन्द नहीं होती......और तेज़ हो जाती है...... कुंवर एक अस्पताल में डाक्टर है. यहां ज़ख़मियों का इलाज होना है—किसी पारटी, किसी देश या किसी ग्रुप के ज़ख़मियों का इलाज नहीं. यहां दो ही बातें होती हैं— ज़ख़्म और इलाज........लेकिन बमों ने इस अस्पताल को भी न छोड़ा......वह आपरेशन कर रहा था और बम फट गया... एक साथ उसे न जाने कितनी चीखें सुनाई पड़ीं........"

वह सहम गया रोंगटे खड़े हो गए और जीप रुक गई. वातावरन में एक गड़गड़ाहट गूंजी और बमों की बारिश होने लगी. कुंवर जीप के नीचे लेट गया. कब तक बम बरसते रहे, कब तक वह लेटा रहा, इसका अनुमान नहीं किया जा सकता. समय की गति रुक सी गई थी. उसे केवल इतना याद था—बम और बम से बचने की कोशिश!

कुंवर ने मन ही मन में कहा—"अब निकल चलना चाहिये."

किसी ने जैसे रोका—"लड़ाई का मैदान है, ख़ाला जी का घर नहीं"

वह फिर दुबक कर लेट गया.

चारों तरफ़ अन्धेरा छाया था. हाथ को हाथ सुझाई न देता था. कुंवर जीप से बाहर निकल आया पर उसकी समझ में न आता था कि क्या करे, किधर जाय. रास्ते ने जैसे उसका साथ छोड़ दिया था. उसने चाहा कि हेडलाइट जला दे. पर सुइच तक हाथ जाते जाते वह सहम गया, उसे रुक जाना पड़ा. फिर उसने हिम्मत की... . फिर वह विफल रहा .....उसने फिर साहस की बिखरी सेना को इकट्ठा किया......

लाइट जल गई, अन्धेरा ख़तम हो गया!

जीवन में पहली बार वह महसूस कर रहा था कि उजाला कितना भयानक होता है—अन्धेरा.....केवल

پھر اُن کا دبانا مشکل ہی نہیں ناممکن ہوتا ہے! کیول اسی کا نام ہی سچ کی جیت ہے!

وہ ایک سپنا سا دیکھنے لگا:

"ہر طرف لڑائی کی تیاریاں ہو رہی ہیں. واتاورن میں بھی لڑائی کی گونج ہے. ایٹم بم کی دھمکی سنائی دیتی ہے......ہائڈروجن بم کی تیاری کی خبر دنیا کو بھیجی جاتی ہے...جیسے ایک پاگل پن ساری دنیا پر چھایا ہوا ہے......ایک طرف لڑائی کی شکتیاں سنگٹھت ہو رہی ہیں اور......دوسری طرف شانتی کی شکتیاں اپنی بکھری کڑیاں اکٹھا کر رہی ہیں......لڑائی کے راکھشس یکایک ٹوٹ پڑتے ہیں......ایک کومل گات کو نوچ ڈالتے ہیں، مسل ڈالتے ہیں، زمین خون سے رنگ جاتی ہے......لڑائی کے بھوت آگے بڑھتے ہیں...شانتی کی فوج لئے بھارت ماتا آگے آتی ہے......اس کی للکار سنائی دیتی ہے—لڑائی بند کرو! پر لڑائی بند نہیں ہوتی......اور تیز ہو جاتی ہے......کنور ایک اسپتال میں ڈاکٹر ہے. یہاں زخمیوں کا علاج ہوتا ہے—کسی پارٹی، کسی دیش یا کسی گروپ کے زخمیوں کا علاج نہیں. یہاں دو ہی باتیں ہوتی ہیں—زخم اور علاج..... لیکن بموں نے اس اسپتال کو بھی نہ چھوڑا... ..وہ آپریشن کر رہا تھا اور بم پھٹ گیا...ایک ساتھ اسے نہ جانے کتنی چیخیں سنائی پڑیں."

وہ سہم گیا، رونگٹے کھڑے ہو گئے اور جیپ رک گئی.

واتاورن میں ایک گڑگڑاہٹ گونجی اور بموں کی بارش ہونے لگی. کنور جیپ کے نیچے لیٹ گیا. کب تک بم برستے رہے، کب تک وہ لیٹا رہا، اس کا انومان نہیں کیا جا سکتا. سمے کی گتی رک سی گئی تھی. اسے کیول اتنا یاد تھا—بم اور بم سے بچنے کی کوشش!

کنور نے من ہی من کہا—"اب نکل چلنا چاہئے."

کسی نے جیسے روکا—"لڑائی کا میدان ہے، خالہ جی کا گھر نہیں."

وہ پھر دبک کر لیٹ گیا.

چاروں طرف اندھیرا چھایا تھا. ہاتھ کو ہاتھ سجھائی نہ دیتا تھا. کنور جیپ سے باہر نکل آیا پر اسکی سمجھ میں نہ آتا تھا کہ کیا کرے، کدھر جائے. راستے نے جیسے اس کا ساتھ چھوڑ دیا تھا. اس نے چاہا کہ ہیڈ لائٹ جلا دے. پر سوئچ تک ہاتھ جاتے جاتے وہ سہم گیا، اسے رک جانا پڑا. پھر اس نے ہمت کی...پھر وہ وپھل رہا... اس نے پھر ساہس کی بکھری سینا کو اکٹھا کیا...

لائٹ جل گئی، اندھیرا ختم ہو گیا!

جیون میں پہلی بار وہ محسوس کر رہا تھا کہ اُجالا کتنا بھیانک ہوتا ہے—اندھیرا......کیول

और वह मर गया.......?

रास्ता उसका नहीं था, अब वह खुद रास्ते का हो गया था !

स्टीयरिंग पर हाथ ज़रूर थे पर जीप न जाने किस के इशारे पर अपना रास्ता बनाती चली जा रही थी. मौत के रास्ते पर वह जा रहा है या ज़िन्दगी की तरफ़ क़दम उठ रहे हैं, इसका ज्ञान उसे नहीं था. अन्धेरा था, डर था, भय था......रास्ता ख़तरनाक था......उसके दिमाग़ में लेकिन एक ही ख़्याल था—उसका फ़र्ज़—ज़ख़्मियों को अस्पताल तक पहुंचाना !

कुंवर अपने ख़्यालों में डूबा था और जीप अन्धेरे के पर्दे को फाड़ती किसी अनजाने मुक़ाम की तरफ़ चली जा रही थी. कभी कभी स्पीड कम हो जाती थी. उसे आगे नाले या खाई का आभास होता था. लेकिन भरम के सिवाय उनका कोई वजूद न होता. वह धोका थे...... सारे डरों की तरह वह भी भरम थे, धोका थे. कुंवर स्पीड फिर तेज़ कर देता था.

कब और किस नियम के अनुसार जीप खेतों पर चलने लगी. इन्हें खेत कहा भी जा सकता है ? यहां हरियाली होनी चाहिये थी, यही तो मौसम है. पर यहां हरियाली नहीं थी, सिर्फ़ डन्ठल खड़े थे और कभी यहां हरियाली होने का सबूत दे रहे थे. खेतों की छातियां टेन्कों से कुचल दी गईं थीं. धरती ग़ल्ला क्यों कर उगती, उस पर ख़ून की पपड़ियां जम गईं थीं—उत्तरी कोरिया का ख़ून, दखिनी कोरिया का ख़ून, अमरीकी ख़ून, अंगरेज़ी ख़ून, सफ़ेद ख़ून, काला ख़ून, पीला ख़ून सब एक साथ मिल कर धरती पर जम गए थे. जो ख़ून उबाल पर न मिल सके थे, वह धरती पर गिर कर ऐसे मिल गए कि कोई भी उन्हें अब अलग अलग नहीं कर सकता !

जीप चली जा रही थी और कुंवर सोच रहा था :

"यह लड़ाई क्यों हो रही है, इसका क्या आधार है ?......आख़िर वह क्यों यहां है......ज़ख़्मियों की सेवा करने के लिये ! लेकिन एक तरफ़ा यह सेवा भाव क्यों ? उत्तरी कोरिया वाले क्या नहीं मरते ? फिर उनके ज़ख़्मी उठाने के लिये वह क्यों नहीं भेजा जाता ....."

अमरीकन जीप ने एक ज़ोर का झटका दिया और कुंवर के दिमाग़ से इन सवालों का ध्यान निकल सा गया ! मानव हृदय में उठते हुए यह सवाल दबाए जा सकते हैं, उनका समाधान नहीं किया जा सकता. वह हिम्मत की गरमी पा कर जागते हैं और इस तेज़ी से जागते हैं कि

اور وہ مر گیا......؟

راستہ اُسکا نہیں تھا، اب وہ خود راستے کا ہو گیا تھا!

اسٹیرنگ پر ہاتھ ضرور تھے پر جیپ نہ جانے کس کے اشارے پر اپنا راستہ بناتی چلی جا رہی تھی. موت کے راستے پر وہ جا رہا ہے یا زندگی کی طرف قدم اُٹھ رہے ہیں، اِسکا گیان اُسے نہیں تھا. اندھیرا تھا، ڈر تھا، بھے تھا......راستہ خطرناک تھا......اُس کے دماغ میں لیکن ایک ہی خیال تھا—اُس کا فرض—زخمیوں کو اسپتال تک پہونچانا!

کنور اپنے خیالوں میں ڈوبا تھا اور جیپ اندھیرے کے پردے کو پھاڑتی کسی انجانے مقام کی طرف چلی جا رہی تھی. کبھی کبھی اسپیڈ کم ہو جاتی تھی. اُسے آگے نالے یا کھائی کا آبھاس ہوتا تھا. لیکن بھرم کے سوائے اُن کا کوئی وجود نہ ہوتا وہ دھوکا تھے......سارے ڈروں کی طرح وہ بھی بھرم تھے، دھوکا تھے. کنور اسپیڈ پھر تیز کر دیتا تھا.

کب اور کس نیم کے انوسار جیپ کھیتوں پر چلنے لگی. اِنہیں کھیت کہا بھی جا سکتا ہے؟ یہاں ہریالی ہونی چاہئے تھی، یہی تو موسم ہے. پر یہاں ہریالی نہیں تھی، صرف ڈنٹھل کھڑے تھے اور کبھی یہاں ہریالی ہونے کا ثبوت دے رہے تھے. کھیتوں کی چھاتیاں ٹینکوں سے کچل دی گئی تھیں. دھرتی غلہ کیوں کر اُگتی، اس پر خون کی پپڑیاں جم گئیں تھیں—اُتری کوریا کا خون دکھنی کوریا کا خون، امریکی خون، انگریزی خون، سفید خون، کالا خون، پیلا خون سب ایک ساتھ مل کر دھرتی پر جم گئے تھے. جو خون اُبال پر نہ مل سکے تھے، وہ دھرتی پر گر کر ایسے مل گئے کہ کوئی بھی اُنہیں اب الگ الگ نہیں کر سکتا!

جیپ چلی جا رہی تھی اور کنور سوچ رہا تھا :

"یہ لڑائی کیوں ہو رہی ہے، اِسکا کیا آدھار ہے؟......آخر وہ کیوں یہاں ہے......زخمیوں کی سیوا کرنے کے لئے! لیکن ایک طرفہ یہ سیوا بھاؤ کیوں؟ اُتری کوریا والے کیا نہیں مرتے؟ پھر اُن کے زخمی اُٹھانے کے لئے وہ کیوں نہیں بھیجا جاتا......"

امریکن جیپ نے ایک زور کا جھٹکا دیا اور کنور کے دماغ سے اِن سوالوں کا دھیان نکل سا گیا! مانو ہردے میں اُٹھتے ہوئے یہ سوال دبائے جا سکتے ہیں، اُن کا سمادھان نہیں کیا جا سکتا. وہ ہمت کی گرمی پا کر جاگتے ہیں اور اس تیزی سے جاگتے ہیں کہ

है, न जाना जा सकता है. हमारी बुद्धि प्रकृति की सीमा नहीं लांघ सकती. बुद्धि यानी ज्ञान हमारी आत्मा का स्वभाव है. ज्ञान बुद्धि के सिवा कुछ नहीं. ज्ञान बुद्धि ही हम को कर्तव्य सिखाती है. कर्तव्य पालन का सम्बन्ध परलोक से नहीं, इस लोक से है. हमें परलोकवासियों से न दोस्ती करने की जरूरत है और न उनके लिये मेहनत. गुरु नानक का यह खेल अच्छा पाठ देता है, वह गंगाजी नहाते वक्त अपने गांव की तरफ मुंह करके पानी उलीचने लगे. जब यह करते देर हो गई तब लोग पूछ बैठे, गुरुजी, यह आप क्या कर रहे हैं ? गुरुजी बोले, अपने गांव के खेतों को पानी दे रहा हूँ. लोग बोले, महाराज यह कैसे हो सकता है ? गुरुजी बोले, क्यों नहीं हो सकता ? जब तुम यहां से सूरज को पानी दे सकते हो और श्राद्ध के जरिये परलोकवासियों को खाना पहुंचा सकते हो तो मेरा पानी मेरे गांव के खेतों तक क्यों नहीं पहुंचेगा ? यह कह कर गुरुजी ने साफ बता दिया कि परलोकवासियों के प्रति न हमारा कोई कर्तव्य है, न हम उनकी कोई सेवा कर सकते हैं. यह इसी लोक के लोगों से प्रेम करके, मोहब्बत करके, दोस्ती का बर्ताव करके, उनकी खातिर मेहनत करके हम अपने सारे कर्तव्य पालन कर सकते हैं. अगर हमें सचमुच ईश्वर या परलोक के लिये किसी कर्तव्य पालन की जरूरत है तो वह इस लोक के कर्तव्य पालने में समाया हुआ है. ईश्वर या परलोक के लिये अलग कोई कर्तव्य नहीं रह जाता. हमें संतोष के साथ काम में लगे रहने के सिवा कुछ नहीं सीखना.

चमत्कार हमारी कमर तोड़ देते हैं. हमें साहसी बनकर चमत्कारों की कमर तोड़नी होगी. चमत्कार हम से हमारी समझ और हमारी प्रसन्नता छीन लेते हैं. हम चमत्कारों का कार्यकारन भाव जानकर अपनी समझ और अपनी प्रसन्नता उन चमत्कारों से छीन लेंगे. और फिर अपने आप हमारे मन भलाई के लिये खुल जायंगे और हमारा मस्तक सचाई को अपनाने लगेगा. और यही होगी पूरी आजादी और हमारी यह आजादी ही मनुष्य समाज को सुखी बनायेगी, आजाद करेगी और हम उसी आजाद समाज की मदद पाकर सत्य की असलियत को समझ लेंगे और सत्य जो ईश्वर के नाम से पुकारा जाता है, उसके दर्शन कर लेंगे और यही होगा सच्चा और महान चमत्कार.

ہے' نہ جانا جاسکتا ہے. ہماری بدھی پرکرتی کی سیما نہیں لانگھ سکتی. بدھی یعنی گیان ہماری آتما کا سوبھاؤ ہے. گیان بدھی کے سوا کچھ نہیں. گیان بدھی ہی ہم کو کرتب سکھاتی ہے. کرتب پالن کا سمبندھ پرلوک سے نہیں' اِس لوک سے ہے. ہمیں پرلوک واسیوں سے نہ دوستی کرنے کی ضرورت ہے اور نہ اُن کے لئے محنت. گرونانک کا یہ کھیل اچھا پاٹھ دیتا ہے' وہ گنگا جی نہاتے وقت اپنی گاؤں کی طرف منھ کرکے پانی اُلیچنے لگے. جب یہ کرتے دیر ہوگئی تب لوگ پوچھ بیٹھے' گروجی' یہ آپ کیا کر رہے ہیں؟ گروجی بولے' اپنے گاؤں کے کھیتوں کو پانی دے رہا ہوں. لوگ بولے' مہاراج یہ کیسے ہوسکتا ہے ؟ گروجی بولے' کیوں نہیں ہوسکتا؟ جب تم یہاں سے سورج کو پانی دے سکتے ہو اور شرادھ کے ذریعہ پرلوک واسیوں کو کھانا پہونچا سکتے ہو تو میرا پانی میرے گاؤں کے کھیتوں تک کیوں نہ پہونچے گا؟ یہ کہکر گروجی نے صاف بتا دیا کہ پرلوک واسیوں کے پرتی نہ ہمارا کوئی کرتب ہے' نہ ہم اُن کی کوئی سیوا کرسکتے ہیں. یہ اِسی لوک کے لوگوں سے پریم کرکے' محبت کرکے' دوستی کا برتاؤ کرکے' اُن کی خاطر محنت کرکے ہم اپنے سارے کرتب پالن کرسکتے ہیں. اگر ہمیں سچ مچ ایشور یا پرلوک کے لئے کسی کرتب پالن کی ضرورت ہے تو وہ اِس لوک کے کرتب پالنے میں سمایا ہوا ہے. ایشور یا پرلوک کے لئے الگ کوئی کرتب نہیں رہ جاتا. ہمیں سنتوش کے ساتھ کام میں لگے رہنے کے سوا کچھ نہیں سیکھنا.

چمتکار ہماری کمر توڑ دیتے ہیں. ہمیں ساہسی بن کر چمتکاروں کی کمر توڑنی ہوگی. چمتکار ہم سے ہماری سمجھ اور ہماری پرسنتا چھین لیتے ہیں. ہم چمتکاروں کا کاریہ کارن بھاؤ جان کر اپنی سمجھ اور اپنی پرسنتا اُن چمتکاروں سے چھین لیں گے. اور پھر اپنے آپ ہمارے من بھلائی کے لئے کھل جائیں گے اور ہمارا مستک سچائی کو اپنانے لگے گا. اور یہی ہوگی پوری آزادی اور ہماری یہ آزادی ہی منش سماج کو سکھی بنائے گی' آزاد کرے گی اور ہم اُسی آزاد سماج کی مدد پاکر ستیہ کی اصلیت کو سمجھ لیں گے اور ستیہ جو ایشور کے نام سے پکارا جاتا ہے' اُس کے درشن کرلیں گے اور یہی ہوگا سچا اور مہان چمتکار.

कभी यह नहीं कहते कि वह कोई चमत्कार करना जानते हैं और उनके लिये वैसा कहना वाजिब है, पर हम मामूली अल्लाह के बन्दे यह कैसे मान लें कि पहुँचे हुए फ़क़ीर चमत्कारी नहीं होते. अगर ऐसा न होता तो ताज बन्द बादशाह नंगे, उघाड़े फ़क़ीरों के पांव छूने न जाया करते. हुज़ूर, कोई करिश्मा दिखाइये !

गुरु जी बोले, मैं करिश्मे या चमत्कार में विश्वास नहीं करता और न मैं कोई चमत्कार करता हूँ और न मैं जानता हूँ. मैं आपको यह सलाह देता हूँ कि आप चमत्कारों में विश्वास करना छोड़ दें.

गुरु जी के इस उपदेश से वज़ीर साहब के अन्दर करिश्मा देखने की इच्छा और ज़ियादा भड़की. वह हठ करने लगे. हुज़ूर. कोई एक तो दिखाइये ! आख़िर गुरु जी को सूझ गई और उन्होंने अपनी जेब से एक अशरफ़ी निकाल कर दिखाई. कहा, एक करिश्मा यानी चमत्कार यह है, इससे सैकड़ों काम हो सकते हैं.

वज़ीर साहब बोले, हुज़ूर का फ़रमाना बजा है. बेशक यह करिश्मा है और इस करिश्मे से बादशाह लोग बड़े बड़े काम निकालते हैं. पर फ़क़ीरों के पास तो यह करिश्मा नहीं होता. हुज़ूर, कोई करिश्मा दिखाइये ! अगर आप करामाती न होते तो लाखों आदमी इस तरह आपके पीछे न हो जाते. बड़ी इनायत होगी, कोई करिश्मा दिखाइये !

गुरुजी ने थोड़ा बिगड़कर अपने म्यान से तलवार खींची और उसे नंगा करके दिखाया और बोले, दूसरा करिश्मा यह है !

जवाब में वज़ीर साहब बोले, बेशक, यह बड़ा करिश्मा है, पर हुज़ूर यह चीज़ भी फ़क़ीरों के पास नहीं होती. कोई करिश्मा दिखाइये !

गुरुजी ने उन्हें लाख समझाया पर किसी तरह उनका विश्वास करिश्मे पर से न हट सका. यह है पढ़े लिखों का हाल. बचपन में जो चीज़ गहरी घर कर जाती है वह आसानी से नहीं निकल पाती. यही वजह है कि दुनिया के बड़े से बड़े सुधारक, बड़े से बड़े विज्ञानी बेहद ज़ोर लगाकर भी दुनिया को यह न सिखा पाए कि जब भी कोई अनोखी चीज़ देखो तब उसके कारन पर सोचो. अगर ठीक ठीक न जान सको तो उस काम का ग़लत कारन तो न मान बैठो. जनता के मन का यह अज्ञान और कार्यकारन सोचे बिना किसी घटना को ऊटपटांग तरीक़े से मान लेने की आदत उस वक़्त तक न छूटेगी जब तक बच्चों के संस्कार न बदले जायंगे. और स्कूल और कालेज उन आदमियों के हाथ से न छीन लिये जायंगे जो देववादी धर्म के विश्वासी हैं. देव या ईश्वर न जाना गया, न जाना जाता

کبھی یہ نہیں کہتے کہ وہ کوئی چمتکار کرنا جانتے ہیں اور ان کے لئے ویسا کہنا واجب ہے' پر ہم معمولی اللہ کے بندے یہ کیسے مان لیں کہ پہونچے ہوئے فقیر چمتکاری نہیں ہوتے. اگر ایسا نہ ہوتا تو تاج بند بادشاہ ننگے' اگھاڑے فقیروں کے پاؤں چھونے نہ جایا کرتے. حضور' کوئی کرشمہ دکھایئے!

گرو جی بولے' میں کرشمے یا چمتکار میں وشواس نہیں کرتا اور نہ میں کوئی چمتکار کرتا ہوں اور نہ میں جانتا ہوں. میں آپ کو یہ صلاح دیتا ہوں کہ آپ چمتکاروں میں وشواس کرنا چھوڑ دیں.

گرو جی کے اس اُپدیش سے وزیر صاحب کے اندر کرشمہ دیکھنے کی اِچھا اور زیادہ بھڑکی. وہ ہٹ کرنے لگے. حضور' کوئی ایک تو دکھایئے! آخر گرو جی کو سوجھ گئی اور اُنہوں نے اپنی جیب سے ایک اشرفی نکال کر دکھائی. کہا' ایک کرشمہ یعنی چمتکار یہ ہے' اس سے سیکڑوں کام ہو سکتے ہیں.

وزیر صاحب بولے' حضور کا فرمانا بجا ہے. بیشک یہ کرشمہ ہے اور اس کرشمے سے بادشاہ لوگ بڑے بڑے کام نکالتے ہیں. پر فقیروں کے پاس تو یہ کرشمہ نہیں ہوتا. حضور' کوئی کرشمہ دکھایئے! اگر آپ کراماتی نہ ہوتے تو لاکھوں آدمی اِس طرح آپ کے پیچھے نہ ہو جاتے. بڑی عنایت ہوگی' کوئی کرشمہ دکھایئے!

گرو جی نے تھوڑا بگڑ کر اپنے میان سے تلوار کھینچی اور اُسے ننگا کر کے دکھایا اور بولے' دوسرا کرشمہ یہ ہے.

جواب میں وزیر صاحب بولے' بیشک یہ بڑا کرشمہ ہے' پر حضور یہ چیز بھی فقیروں کے پاس نہیں ہوتی. کوئی کرشمہ دکھایئے!

گرو جی نے اُنہیں لاکھ سمجھایا پر کسی طرح اُن کا وشواس کرشمے پر سے نہ ہٹ سکا. یہ ہے پڑھے لکھوں کا حال. بچپن میں جو چیز گہری گھر کر جاتی ہے وہ آسانی سے نہیں نکل پاتی. یہی وجہ ہے کہ دنیا کے بڑے سے بڑے سدھارک' بڑے سے بڑے وگیانی بیحد زور لگا کر بھی دنیا کو یہ نہ سکھا پائے کہ جب بھی کوئی انوکھی چیز دیکھو تب اُس کے کارن پر سوچو. اگر ٹھیک ٹھیک نہ جان سکو تو اُس کام کا غلط کارن تو نہ مان بیٹھو. جنتا کے من کا یہ اگیان اور کاریہ کارن سوچے بنا کسی گھٹنا کو اوٹ پٹانگ طریقے سے مان لینے کی عادت اُس وقت تک نہ چھوٹے گی جب تک بچوں کے سنسکار نہ بدلے جائیں گے. اور اسکول اور کالج اُن آدمیوں کے ہاتھ سے نہ چھین لئے جائیں گے جو دیو وادی دھرم کے وشواسی ہیں. دیو یا ایشور نہ جانا گیا' نہ جانا جاتا

कि रैल किन किन कारनों से चला करती है और यह कि रेल के चलने के काम में उसके चालक का मुक्का मारना किसी तरह का कारन नहीं हो सकता

हमारे पढ़ने वाले अगर हमारी बात ठीक ठीक समझ गए हों तो वह आसानी से खुद और मिसालें सोच कर निकाल सकते हैं, हम इतनी ही मिसालों पर सन्तोश करते हैं और अन्त में यही कहना चाहते हैं कि वह अपने बच्चों के बारे में इस बात का खयाल रखें कि उनके दिमाग़ इस तरह मैले न होने पाएं कि वह चमत्कारों में विश्वास करके काम का ठीक ठीक कारन खोजना छोड़ बैठें.

चमत्कार में और मामूली घटना में कोई अन्तर नहीं होता. चमत्कारी के लिये चमत्कार वैसे ही मामूली घटना है, जैसे बाज़ीगरी के खेल बाज़ीगर के लिये रेडिओ के यंत्र जो दिन भर घर घर में गाते रहते हैं किसी ऐसे गांव में जहां अब तक रेडियो न पहुंचा हो चमत्कार की चीज़ समझे जायंगे. हो सकता है कोई रेडियो के यंत्र को अचानक देख कर डर जाय और यह समझे कि इसके अन्दर भूत प्रेत बैठे गाना गा रहे हैं. भूत प्रेतों के बारे में अक्सर जो कहानियां कही जाती हैं उनमें यही बताया जाता है कि उनके घुंघरूओं की छमछम की आवाज़ सुनाई देती है और गाना सुनाई देता है. पर वह दिखाई नहीं देते. दूसरी बात उनके बारे में यह बताई जाती है कि वह छोटी से छोटी जगह में आ सकते हैं. जिन्नों को शीशों में उतारने की बात किसने नहीं सुनी? शीशे में उतारना अब आम मुहावरा बन गया है जो रेडिओ शहर वालों के लिये मामूली चीज़ है वही गांव वालों के लिये चमत्कारी चीज़ हो सकता है

चमत्कार मामूली घटनायें हैं, फिर भी चमत्कार पढ़े लिखों में इतने गहरे घर कर गए हैं कि वह अपने दिल से निकाल कर नहीं फेंक सकते जब कोई हिन्दू अपने धर्म के चमत्कार फेंक कर मुसलमान हो जाता है तब वह मुसलमान धर्म के चमत्कार अपना लेता है यही हाल किसी मुसलमान का आर्य समाजी हो कर हो जाता है आदमी सर्वज्ञ नहीं है, बहुत अंशों में अजानकार है इसलिये चमत्कारों में विश्वास करने में उसे आनन्द आता है. एक बार का ज़िकर है, सिक्खों के दूसरे गुरु गोविन्द सिंह जो हिन्दुओं में बड़े चमत्कारी मशहूर हो गए थे और जिनको सैकड़ों मुसलमान चमत्कारी मानते थे एक बार दिल्ली के वज़ीर के मेहमान हुए. वज़ीर ने बड़ी श्रद्धा के साथ उनसे पूछा मैंने सुना है, आप बड़े बड़े करिश्मे वाली चमत्कार कर सकते हैं, कोई करिश्मा दिखाइये. गुरु जी बोले आप बादशाह के वज़ीर हो कर करिश्मों में विश्वास करते हैं. भला करिश्मे भी कोई चीज़ होते हैं? मैं न चमत्कार करिश्मा जानता हूं और न कर सकता हूं. वज़ीर साहब बोले, सब पहुंचे हुए फ़क़ीरों का यही हाल होता है. वह

کہ ریل کن کن کارنوں سے چلا کرتی ہے اور یہ کہ ریل کے چلنے کے کام میں اُس کے چالک کا مکہ مارنا کسی طرح کا کارن نہیں ہوسکتا ۔

ہمارے پڑھنے والے اگر ہماری بات ٹھیک ٹھیک سمجھ گئے ہوں تو وہ آسانی سے خود اور مثالیں سوچ کر نکال سکتے ہیں، ہم اتنی ہی مثالوں پر سنتوش کرتے ہیں اور انت میں یہی کہنا چاہتے ہیں کہ وہ اپنے بچوں کے بارے میں اِس بات کا خیال رکھیں کہ اُن کے دماغ اِس طرح میلے نہ ہونے پائیں کہ وہ چمتکاروں میں وشواس کرکے کام کا ٹھیک ٹھیک کارن کھوجنا چھوڑ بیٹھیں ۔

چمتکار میں اور معمولی گھٹنا میں کوئی انتر نہیں ہوتا چمتکار چمتکاری کے لئے، ویسی ہی معمولی گھٹنا ہے، جیسے بازی گری کے کھیل بازی گر کے لئے ریڈیو کے یَنتر جو دن بھر گھر گھر میں گاتے رہتے ہیں، کسی ایسے گاؤں میں جہاں اب تک ریڈیو نہ پہونچا ہو چمتکار کی چیز سمجھے جائیں گے ۔ ہوسکتا ہے کوئی ریڈیو کے ینتر کو اچانک دیکھکر ڈر جائے اور یہ سمجھے کہ اِس کے اندر بھوت پریت بیٹھے گانا گا رہے ہیں ۔ بھوت پریتوں کے بارے میں اکثر جو کہانیاں کہی جاتی ہیں اُن میں یہی بتایا جاتا ہے کہ اُن کے گھنگھروؤں کی چھم چھم کی آواز سنائی دیتی ہے اور گانا سنائی دیتا ہے، پر وہ دکھائی نہیں دیتے ۔ دوسری بات اُن کے بارے میں یہ بتائی جاتی ہے کہ وہ چھوٹی سے چھوٹی جگہ میں آ سکتے ہیں ۔ جنوں کو شیشوں میں اتارنے کی بات کس نے نہیں سنی؟ شیشے میں اتارنا اب عام محاورہ بن گیا ہے ۔ جو ریڈیو شہر والوں کے لئے معمولی چیز ہے وہی گاؤں والوں کے لئے چمتکاری چیز ہو سکتا ہے ۔

چمتکار معمولی گھٹنائیں ہیں ۔ پھر بھی چمتکار پڑھے لکھوں میں اتنے گہرے گھر کر گئے ہیں کہ وہ اپنے دل سے نکال کر نہیں پھینک سکتے ۔ جب کوئی ہندو اپنے دھرم کے چمتکار پھینک کر مسلمان ہو جاتا ہے تب وہ مسلمان دھرم کے چمتکار اپنا لیتا ہے ۔ یہی حال کسی مسلمان کا آریہ سماجی ہو کر ہو جاتا ہے ۔ آدمی سروگیہ نہیں ہے، بہت انشوں میں اجانکار ہے اِس لئے چمتکاروں میں وشواس کرنے میں اسے آنند آتا ہے ۔ ایک بار کا ذکر ہے، سکھوں کے دوسرے گرو گووند سنگھ جو ہندوؤں میں بڑے چمتکاری مشہور ہو گئے تھے اور جن کو سیکڑوں مسلمان چمتکاری مانتے تھے ایک بار دلی کے وزیر کے مہمان ہوئے ۔ وزیر نے بڑی شردھا کے ساتھ اُن سے پوچھا، میں نے سنا ہے، آپ بڑے بڑے کرشمے یعنی چمتکار کر سکتے ہیں، کوئی کرشمہ دکھائیے ۔ گرو جی بولے آپ بادشاہ کے وزیر ہو کر کرشموں میں وشواس کرتے ہیں، بھلا کرشمے بھی کوئی چیز ہوتے ہیں؟ میں نہ چمتکار کرشمہ جانتا ہوں اور نہ کرسکتا ہوں وزیر صاحب بولے، سب پہونچے ہوئے فقیروں کا یہی حال ہوتا ہے ۔ وہ

"रेल के इंतज़ाम में कोई ऐसी गड़बड़ी हो गई है कि गाड़ी अभी जल्दी न चलेगी, आप बोले जाइये. गांधी जी सुभीते से बोलते रहे और जब वह बोलकर गाड़ी में जा बैठे, रेल का इंतज़ाम ठीक हो गया. और गाड़ी चल दी. गाड़ी के गोन्दिया से छूटने से पहले पहले गोन्दिया से नागपुर तक और इधर गोन्दिया से रायपुर तक यह ख़बर फैल गई कि गांधीजी बड़े चमत्कारी हैं उनके चमत्कार से गाड़ी रुक गई और उनके उस चमत्कार की बात का कभी किसी समझदार आदमी ने खंडन नहीं किया, उल्टा मंडन किया, क्योंकि उस वक़्त हिन्दुस्तान के सारे समझदारों का स्वार्थ इस बात में था कि गांधी जी को अवतारी, चमत्कारी और महाचमत्कारी साबित किया जाय. हम गोंदिया स्टेशनपर मौजूद थे. यह सब कार्रवाही स्टेशन के आदमियों ने जान बूझ कर की थी, वह सब गांधी जी का व्याख्यान जी भर कर सुनना चाहते थे और यह भी चाहते थे कि वह गाड़ी रोकने के इलज़ाम से बचे रहें. पढ़ने वालों को यह याद रहे कि स्टेशन की रिपोर्ट में गाड़ी रुकने की वजह यह नहीं बताई गई कि गांधी जी के चमत्कार से गाड़ी रुक गई. क्योंकि रेलवे अफ़सर इतने बेवक़ूफ़ न थे कि वह इस तरह के झांसे में आ जाते, उनको तो बुद्धि में जंचने वाली ऐसी ही कुछ वजह बताई गई थी जैसे सिगनल का ख़राब हो जाना, या इंजन का फ़ोरवाल्व यानी अगली नली बिगड़ जाना यह होते हैं चमत्कार और यह है चमत्कारों का उपयोग.

चमत्कारों की सचाई हर बच्चे को उसकी जन्म घुट्टी में पिलाई जाती है. जब कोई तीन चार साल का बच्चा स्टेशन पर रेलगाड़ी के देर तक खड़े रहने से ऊब उठे तब वह रेलगाड़ी में मुक्का मार मार कर चल चल कहना शुरू कर देता है और अगर कहीं उसके पहले दूसरे तीसरे मुक्के पर गाड़ी चल पड़े तो चट उसके मुंह से निकल जायगा, "मेरे हुक्म से गाड़ी चल दी" उधर उसकी मां के मुंह से निकल जायगा, "मेरा लाल बड़ा चमत्कारी है." बच्चे को जितना इस बात में विश्वास है कि उसके हुक्म से गाड़ी चली, उतना ही उसकी मां को उसके चमत्कारी होने में विश्वास होता है. वह अपने बालक को यों ही चमत्कारी नहीं कह बैठती, उसको सचमुच उसका बालक चमत्कारी जंचने लगता है, उसके मन में वैसी गुदगुदी पैदा होने लगती है. वह वैसा सोचने की हर तरह अधिकारी है. अगर कंस जैसे पापी की बहन देवकी कृश्न जैसे चमत्कारी को जन्म दे सकती है तो वह क्यों नहीं वैसे ही चमत्कारी को जन्म दे सकती. और क्यों गाड़ी उसके बालक के चमत्कार से नहीं चल सकती. उस मां को पीढ़ियों की धार्मिक तालीम उसके सिर पर आ सवार होती है और फिर वह यह सोचने का तनिक भी कष्ट नहीं उठाती

"ریل کے انتظام میں کوئی ایسی گڑ بڑی ہو گئی ہے کہ گاڑی ابھی جلدی نہ چلے گی' آپ بولے جائیے." گاندھی جی سبھیتے سے بولتے رہے اور جب وہ بول کر گاڑی میں جا بیٹھے' ریل کا انتظام ٹھیک ہو گیا' اور گاڑی چل دی. گاڑی کے گوندیا سے چھٹنے سے پہلے پہلے گوندیا سے ناگپور تک اور ادھر گوندیا سے رائے پور تک یہ خبر پھیل گئی کہ گاندھی جی بڑے چمتکاری ہیں' اور اُن کے چمتکار سے گاڑی رک گئی اور اُن کے اُس چمتکار کی بات کا کبھی کسی سمجھدار آدمی نے کھنڈن نہیں کیا' اُلٹا منڈن کیا' کیونکہ اُس وقت ہندستان کے سارے سمجھداروں کا سوارتھ اِس بات میں تھا کہ گاندھی جی کو اوتاری' چمتکاری' اور مہاچمتکاری ثابت کیا جائے. ہم گوندیا اسٹیشن پر موجود تھے یہ سب کاروائی اسٹیشن کے آدمیوں نے جان بوجھ کر کی تھی' وہ سب گاندھی جی کا ویاکھیان جی بھر کر سننا چاہتے تھے اور یہ بھی چاہتے تھے کہ وہ گاڑی روکنے کے الزام سے بچے رہیں. پڑھنے والوں کو یہ یاد رہے کہ اسٹیشن رپورٹ میں گاڑی رکنے کی وجہ یہ نہیں بتائی گئی کہ گاندھی جی کے چمتکار سے گاڑی رک گئی. کیونکہ ریلوے افسر اتنے بیوقوف نہ تھے کہ وہ اِس طرح کے جھانسے میں آ جاتے' ان کو تو بدھی میں جنچنے والی ایسی ہی کچھ وجہ بتائی گئی تھی جیسے سگنل کا خراب ہو جانا' یا انجن کا فور بالو یعنی اگلی نلی بگڑ جانا. یہ ہوتے ہیں چمتکار اور یہ ہے چمتکاروں کا اُپیوگ.

چمتکاروں کی سچائی ہر بچے کو اُس کی جنم گھٹی میں پلائی جاتی ہے جب کوئی تین چار سال کا بچہ اسٹیشن پر ریل گاڑی کے دیر تک کھڑے رہنے سے اوب اٹھے تب ریل گاڑی میں مکہ مار مار کر چل چل کہنا شروع کر دیتا ہے اور اگر کہیں اُس کے پہلے دوسرے تیسرے مکے پر گاڑی چل پڑے تو چٹ اُس کے منھ سے نکل جائے گا "میرے حکم سے گاڑی چل دی." ادھر اُس کی ماں کے منھ سے نکل جائے گا "میرا لال بڑا چمتکاری ہے." بچے کو جتنا اِس بات میں وشواس ہے کہ اُس کے حکم سے گاڑی چلی' اتنا ہی اُس کی ماں کو اُس کے چمتکاری ہونے میں وشواس ہوتا ہے. وہ اپنے بالک کو یوں ہی چمتکاری نہیں کہہ بیٹھتی' اُس کو سچ مچ اُس کا بالک چمتکاری جنچنے لگتا ہے' اُس کے من میں ویسی گدگدی پیدا ہونے لگتی ہے' وہ ویسا سوچنے کی ہر طرح ادھیکاری ہے. اگر کنس جیسے پاپی کی بہن دیوکی کرشن جیسے چمتکاری کو جنم دے سکتی ہے تو وہ کیوں نہیں ویسے ہی چمتکاری کو جنم دے سکتی' اور کیوں گاڑی اُس کے بالک کے چمتکار سے نہیں چل سکتی. اُس ماں کی پیڑھیوں کی دھارمک تعلیم اُس کے سر پر آ سوار ہوتی ہے اور پھر وہ یہ سوچنے کا تنک بھی کشٹ نہیں اٹھاتی

मूर्ति ज़मीन पकड़ गई

नगर का नाम तो याद नहीं रहा. उस नगर के मंदिर में एक मूर्ति ज़मीन पकड़ गई. किसी तरह उठाए न उठी. उस नगर के लिये यह बात चमत्कार बन गई. विज्ञान के लिए यह बात बिलकुल मामूली है. दो चीज़ों के बीच में जब बिलकुल हवा न रहे तब बहुत मज़बूती से चिपक जाती है और आमने सामने से दो हाथी भी ज़ोर लगाकर उन्हें अलग करना चाहें तो नहीं कर सकते. हां, पहलू की तरफ़ से दिया हुआ मामूली धक्का उन दो चीज़ों को अलग कर देगा. यही हाल उस अचल मूर्ति का हुआ. जैसे ही एक तरफ़ से धक्का दिया गया हवा अन्दर पहुंच गई और मूर्ति के अचलपन का चमत्कार ख़तम हो गया. पर उस मूर्ति के मामले में एक और नया तमाशा हुआ. मूर्ति का चमत्कार हटा तो वह मूर्ति हटानेवाले से जा चिपका. यानी अब मूर्ति हटानेवाला चमत्कारी बन बैठा. यह है अन्ध विश्वास की तालीम का फल.

मुर्ग़ी का अन्डा

एक जगह और ऐसा ही चमत्कार देखने को मिला. वह चमत्कार यह था कि एक आदमी बड़े अहिंसक मशहूर थे. इसलिये उनको यह रिद्धि हासिल हो गई थी कि वह अगर मुर्ग़ी के अन्डे को अपने हाथ से ऊंचा उछालकर मकान के पीछे के मैदान में फेंक दें तो न अन्डा फूटेगा और न उसके अन्दर रहने वाले प्राणी को कोई चोट लगेगी. वह इस करामात की वजह से पुजने लगे पर जब हमने इसकी अच्छी तरह जांच की तो पता चला कि मुर्ग़ी के हर ताज़े अन्डे में यह ख़ासियत रहती है कि उसे कितना भी ऊंचा घास उगे मैदान पर फेंका जाय तो वह हमेशा अपनी नोक के बल ज़मीन पर गिरेगा, पर न कभी टूटेगा, न अन्दर कोई चोट खाएगा. यह विज्ञान की सीधी-सादी बात है. इसे मूरख फेंके तब भी वही नतीजा होगा, हिंसावादी फेंके तब भी वही नतीजा होगा. बस इसका सचाई जब तक अंधेरे में है तभी तक यह चमत्कार. नहीं तो मामूली घटना.

गांधीजी और चमत्कार

सन् 1921 की बात है. असहयोग आन्दोलन ज़ोरों पर था. अंगरेज़ी सरकार का आसन हिल गया था. गांधीजी सारे देश में चमत्कारी पुरुष के नाम से मशहूर हो चुके थे. वह डाकगाड़ी से कलकत्ता जा रहे थे. मध्यप्रदेश के गोन्दिया स्टेशन पर डाकगाड़ी शायद आध घंटा ठहरती थी. इसलिए गोन्दिया वालों ने स्टेशन के प्लेटफ़ार्म पर एक सभा का बन्दोबस्त कर लिया. गाड़ी पहुँचने पर सभा शुरू होगई. गांधीजी बोलने लगे. जब गाड़ी चलने में दो एक मिनिट बाकी रह गए तब गांधी जी ने गाड़ी में जा बैठने की बात सोची. लोगों ने फ़ौरन अवाज़ उठाई,

مورتی زمین پکڑ گئی

نگر کا نام تو یاد نہیں رہا. اس نگر کے مندر میں ایک مورتی زمین پکڑ گئی. کسی طرح اٹھائے نہ اٹھی. اس نگر کے لئے یہ بات چمتکار بن گئی. وگیان کے لئے یہ بات بالکل معمولی ہے. دو چیزوں کے بیچ میں جب بالکل ہوا نہ رہے تب بہت مضبوطی سے چپک جاتی ہیں اور آمنے سامنے سے دو ہاتھی ہاتھی بھی زور لگا کر انہیں الگ کرنا چاہیں تو نہیں کر سکتے. ہاں، پہلو کی طرف سے دیا ہوا معمولی دھکا ان دو چیزوں کو الگ کر دیگا. یہی حال اس اچل مورتی کا ہوا. جیسے ہی ایک طرف سے دھکا دیا گیا ہوا اندر پہونچ گئی اور مورتی کے اچل پن کا چمتکار ختم ہوگیا. پر اس مورتی کے معاملے میں ایک اور نیا تماشہ ہوا. مورتی کا چمتکار ہٹا تو وہ مورتی ہٹانے والے سے جا چپکا. یعنی اب مورتی ہٹانے والا چمتکاری بن بیٹھا. یہ ہے اندھوشواس کی تعلیم کا پھل.

مرغی کا انڈا

ایک جگہ اور ایسا ہی چمتکار دیکھنے کو ملا. وہ چمتکار یہ تھا کہ ایک ادمی بڑے اہنسک مشہور تھے. اس لئے ان کو یہ ردھی حاصل ہو گئی تھی کہ وہ اگر مرغی کے انڈے کو اپنے ہاتھ سے اونچا اچھال کر مکان کے میدان میں پھینک دیں تو نہ انڈا پھوٹے گا اور نہ اس کے اندر رہنے والے پرانی کو کوئی چوٹ لگے گی. وہ اس کرامات کی وجہ سے پجنے لگے پر جب ہم نے اس کی اچھی طرح جانچ کی تو پتہ چلا کہ مرغی کے ہر تازے انڈے میں یہ خاصیت رہتی ہے کہ اسے کتنا بھی اونچا گھاس اگے میدان پر پھینکا جائے تو وہ ہمیشہ اپنی نوک کے بل زمین پر گرے گا، پر نہ کبھی ٹوٹے گا نہ اندر کوئی چوٹ کھائے گا. یہ وگیان کی سیدھی سادی بات ہے. اسے مورکھ پھینکے تب بھی وہی نتیجہ ہوگا، ہنساوادی پھینکے تب بھی وہی نتیجہ ہوگا. بس اس کی سچائی جب تک اندھیرے میں ہے تبھی تک یہ چمتکار، نہیں تو معمولی گھٹنا.

گاندھی جی اور چمتکار

سن 1951 کی بات ہے. اسہیوگ آندولن زوروں پر تھا. انگریزی سرکار کا آسن ہل گیا تھا. گاندھی جی سارے دیش میں چمتکاری پرش کے نام سے مشہور ہو چکے تھے. وہ ڈاک گاڑی سے کلکتہ جا رہے تھے. مدھیہ پردیش کے گوندیا اسٹیشن پر ڈاک گاڑی شاید آدھ گھنٹہ ٹھہرتی تھی. اس لئے گوندیا والوں نے اسٹیشن کے پلیٹ فارم پر ایک سبھا کا بندوبست کر لیا. گاڑی پہونچنے پر سبھا شروع ہوگئی. گاندھی جی بولنے لگے. جب گاڑی چلنے میں دو ایک منٹ باقی رہ گئے تب گاندھی جی نے گاڑی میں جا بیٹھنے کی بات سوچی. لوگوں نے فوراً آواز اٹھائی،

असलियत तक पहुँचने का स्वभाव मनुष्य समाज का नष्ट सा हो गया है. और हमारी कच्ची उम्र के बच्चे पढ़ाई-लिखाई से भाग कर देवी-देवताओं को मनाने में लग गए है. वह समझ बैठे कि उनको सिद्ध कर लेने से ज़रा देर में पढ़ना-लिखना आ जायगा वह इतने बड़े विद्वान बन जायगे कि कोई उनका मुकाबला न कर सकेगा.

मूर्ति अधर कैसे

एक बार हमने सुना कि एक मन्दिर में ऐसी मूर्ति है जो अधर है. और वह इस वास्ते अधर है कि उसे देवता थामे हुए हैं. हम चमत्कारों में विश्वास नहीं करते, हमने दलील करना शुरू की :

1. जब उस मूर्ति को देवता थामे हैं तो इसमें चमत्कार क्या हुआ ? अगर मूर्ति अपने आप अधर होती तब कोई चमत्कार हो सकता था.

2. अगर मूर्ति अपने आप निराधार है, तब भी कोई चमत्कारी बात नहीं. क्योंकि सारे ग्रह निराधार घूम रहे हैं और बन्दूक से फेंका हुई गाली और हाथ से फेंका हुआ ठीकरा, बहुत देर न सही, थोड़ी देर निराधार रहते ही हैं. फिर निराधार रहने में चमत्कारीपन क्या है ?

3. विज्ञानियों का कहना है कि चुम्बक की मदद से ऐसा सम्भव है कि कोई चीज़ हवा में अधर थामी जा सके. यह विज्ञान की एक सचाई है, इसे कोई भो कर सकता है. यह चमत्कार नहीं कहा जा सकता.

पर हम यह मानते है कि वह मूर्ति जिसकी तुम बात कह रहे हो न देवताओं के हाथ में थमी है, न ग्रहों की तरह निराधार है, और न चुम्बक पत्थर से निराधार बनाई गई है. हम अगर आंख से देख पायें तो हम उसके निराधार होने की सारी पोल खोल दें.

होनहार की बात हम अपनी बड़ी बहन समेत बहुत दिनों बाद उसी जगह जा पहुंचे जहां अधर मूर्ति वाला मंदिर था. हमने एक रुपया पुजारी को देकर उस मूर्ति की खुद जांच की वह अधर न पाई गई. उसमें चुम्बक की कोई कारीगरी न थी. वह मूर्ति पीठ के पीछे दो ढाई इंच लम्बे और इतने ही चौड़े आसन पर टिकी हुई थी. इसलिए कपड़े का टुकड़ा पलोथी के दायें बांयें घुटनों के नीचे होकर साफ़ निकल जाता था. अगर कोई आमने सामने डोरे निकालने की कोशिश करता तो अधर रहने के सारे चमत्कार की पोल खुल गई होती. चमत्कार में विश्वास करने वाले इस तरह की बात सोचन भी क्यों लगे ?

اصلیت تک پہونچنے کا سبھاؤ منشیہ سماج کا نشٹ سا ہو گیا ہے اور ہماری کچی عمر کے بچے پڑھائی لکھائی سے بھاگ کر دیوی دیوتاؤں کو منانے میں لگ گئے ہیں وہ سمجھ بیٹھے کہ ان کو سدھ کر لینے سے ذرا دیر میں پڑھنا لکھنا آ جائے گا، وہ اتنے بڑے ودوان بن جائیں گے کہ کوئی ان کا مقابلہ نہ کر سکے گا۔

مورتی ادھر کیسے

ایک بار ہم نے سنا کہ ایک مندر میں ایسی مورتی ہے جو ادھر ہے، اور وہ اس واسطے ادھر ہے کہ اسے دیوتا تھامے ہوئے ہیں۔ ہم چمتکاروں میں وشواس نہیں کرتے۔ ہم نے اس طرح دلیل کرنا شروع کی :

1. جب اس مورتی کو دیوتا تھامے ہیں تو اس میں چمتکار کیا ہوا ؟ اگر مورتی اپنے آپ ادھر ہوتی تب کوئی چمتکار ہوسکتا تھا۔

2. اگر مورتی اپنے آپ نرادھار ہے، تب بھی کوئی چمتکاری بات نہیں۔ کیونکہ سارے گرہ نرادھار گھوم رہے ہیں اور بندوق سے پھینکی ہوئی گولی اور ہاتھ سے پھینکا ہوا ٹھیکرا، بہت دیر نہ سہی تھوڑی دیر نرادھار رہتے ہی ہیں۔ پھر نرادھار رہنے میں چمتکاری پن کیا ہے ؟

3. وگیانیوں کا کہنا ہے کہ چمبک کی مدد سے ایسا ممکن ہے کہ کوئی چیز ہوا میں ادھر تھامی جاسکے۔ یہ وگیان کی ایک سچائی ہے، اسے کوئی بھی کرسکتا ہے۔ یہ چمتکار نہیں کہا جاسکتا۔

پر ہم یہ مانتے ہیں کہ وہ مورتی جس کی تم بات کہہ رہے ہو نہ دیوتاؤں کے ہاتھ میں تھمی ہے، نہ گرہوں کی طرح نرادھار ہے، اور نہ چمبک پتھر سے نرادھار بنائی گئی ہے۔ ہم اگر آنکھ سے دیکھ پائیں تو ہم اس کے نرادھار ہونے کی ساری پول کھول دیں۔

ہونہار کی بات۔ ہم اپنی بڑی بہن سمیت بہت دنوں بعد اسی جگہ جا پہونچے جہاں ادھر مورتی والا مندر تھا۔ ہم نے ایک روپیہ پجاری کو دے کر اس مورتی کی خود جانچ کی۔ وہ ادھر نہ پائی گئی۔ اس میں چمبک کی کوئی کاریگری نہ تھی۔ وہ مورتی پیٹھ کے پیچھے دو ڈھائی انچ لمبے اور اتنے ہی چوڑے آسن پر ٹکی ہوئی تھی۔ اس لئے کپڑے کا ٹکڑا پلوتھی کے دائیں بائیں گھٹنوں کے نیچے ہوکر صاف نکل جاتا تھا۔ اگر کوئی آمنے سامنے ڈورے نکالنے کی کوشش کرتا تو ادھر رہنے کے سارے چمتکار کی پول کھل گئی ہوتی۔ چمتکار میں وشواس کرنے والے اس طرح کی بات سوچنے بھی کیوں لگے ؟

पर अपने धर्म का रंग नहीं चढ़ा सकता. चमत्कार धर्म के महल की बुनियाद बन बैठा है. कौन नहीं जानता कि बुनियाद के हिलने से इमारत हिल जाया करती है. इस वास्ते कोई धर्म वाला यह नहीं चाहता कि चमत्कारों के खिलाफ़ कोई आवाज़ उठाई जाय.

चमत्कार ऐसी चीज़ हैं जो सब धर्मों में समान रूप से पाए जाते हैं और जो जितना पुराना धर्म है, उतना ही ज़ियादा वह चमत्कारों से भरा मिलेगा.

चमत्कारों का गढ़ना

चमत्कार बड़ी आसानी से गढ़े जा सकते हैं. उनके गढ़ने में कल्पना शक्ति पर ज़ियादा ज़ोर नहीं डालना पड़ता. आग गरम है, उसे ठंडा बताकर चमत्कारों की एक इमारत खड़ी हो सकती है. आग के बारे में एक चमत्कार की बात सारी दुनिया में फैली हुई है जो आदमी दहकते कोयले पर नंगे पांव निकल जाता है चमत्कारी मान लिया जाता है. उस चमत्कार को जब ज़ियादा बढ़ाकर कहा जाता है तब वह गैरक़ुदरती हो जाता है और सत्य से बहुत दूर पड़ जाता है. आग पर चलने वाले चमत्कारी के बारे में यह कहा जाता है कि इसको कोई देवता सिद्ध है और वह देवता इसके पांव नहीं जलने देता. यह बात बिलकुल झूट है, पर लाखों पढ़े बे पढ़े यह सुनते हैं. और अचरज में पड़ जाते हैं अपनी इस समझ को कि आग बिना दुवा डाले जलाना नहीं छोड़ सकती, एकदम दिमाग़ से निकाल फेंकते हैं. चमत्कारी, जादूगर और बाज़ीगर तीनों शब्दों का एक ही मतलब है. साधु की बाज़ीगरी चमत्कार नाम से पुकारी जाती है और बाज़ीगर का दिखाया हुआ चमत्कार बाज़ीगरी नाम पाता है. वही चमत्कार चुपके से किसी को दुख पहुँचाने के काम में लाया जाय तो जादूगरी नाम ले बैठता है.

जैसे दहकती आग पर चलना चमत्कार है वैसे ही आदमी का पानी पर पांव पांव चलना चमत्कार नाम पाता है. पानी पर पांव पांव चलने की बात बहुत साधुओं के बारे में कही जाती है.

हवा में उड़ने की बात भी कुछ कम रिवाज में नहीं है. इस बारे में लोगों का कहना है कि कितने ही साधु हवा में उड़ सकते हैं. धर्म-ग्रन्थों में जहां रिद्धि-सिद्धियों का ज़िकर है वहां हवा में उड़ने की बात भी कही गई है. मतलब यह है कि चमत्कार और करामातों की कोई गिनती नहीं.

चमत्कारों से नुक़सान

चमत्कारों में विश्वास करने से मनुष्य समाज को बहुत नुक़सान हुए, पर सब से बड़ा नुक़सान यह हुआ कि चमत्कारों को ज्यों का त्यों सत्य मान लेने से सच की

پر اپنے دھرم کا رنگ نہیں چڑھا سکتا . چمتکار دھرم کے محل کی بنیاد بن بیٹھا ہے . کون نہیں جانتا کہ بنیاد کے ہلنے سے عمارت ہل جایا کرتی ہے . اس واسطے کوئی دھرم والا یہ نہیں چاہتا کہ چمتکاروں کے خلاف کوئی آواز اٹھائی جائے .

چمتکار ایسی چیز ہیں جو سب دھرموں میں سمان روپ سے پائے جاتے ہیں اور جو جتنا پرانا دھرم ہے' اتنا ہی زیادہ وہ چمتکاروں سے بھرا ملے گا .

چمتکاروں کا گڑھنا

چمتکار بڑی آسانی سے گڑھے جاسکتے ہیں . اُن کے گڑھنے میں کلپنا شکتی پر زیادہ زور نہیں ڈالنا پڑتا . آگ گرم ہے' اسے ٹھنڈا بتا کر چمتکاروں کی ایک عمارت کھڑی ہوسکتی ہے آگ کے بارے میں ایک چمتکار کی بات ساری دنیا میں پھیلی ہوئی ہے . جو آدمی دہکتے کوئلے پر ننگے پاؤں نکل جاتا ہے چمتکاری مان لیا جاتا ہے . اس چمتکار کو جب زیادہ بڑھا کر کہا جاتا ہے تب وہ غیر قدرتی ہو جاتا ہے اور ستیہ سے بہت دور پڑ جاتا ہے . آگ پر چلنے والے چمتکاری کے بارے میں یہ کہا جاتا ہے کہ اس کو کوئی دیوتا سدھ ہے اور وہ دیوتا اس کے پاؤں نہیں جلنے دیتا. یہ بات بالکل جھوٹ ہے' پر لاکھوں پڑھے بے پڑھے یہ سنتے ہیں اور اچرج میں پڑ جاتے ہیں . اپنی اس سمجھ کو کہ آگ بنا دوا ڈالے جلانا نہیں چھوڑ سکتی' ایکدم دماغ سے نکال پھینکتے ہیں. چمتکاری' جادوگر اور بازیگر تینوں شبدوں کا ایک ہی مطلب ہے . سادھو کی بازیگری چمتکار نام سے پکاری جاتی ہے اور بازیگر کا دکھایا ہوا چمتکار بازیگری نام پاتا ہے. وہی چمتکار چپکے سے کسی کو دکھ پہونچانے کے کام میں لایا جائے تو جادوگری نام لے بیٹھتا ہے .

جیسے دہکتی آگ پر چلنا چمتکار ہے ویسے ہی آدمی کا پانی پر پاؤں پاؤں چلنا چمتکار نام پاتا ہے پانی پر پاؤں پاؤں چلنے کی بات بہت سادھوؤں کے بارے میں کہی جاتی ہے .

ہوا میں اڑنے کی بات بھی کچھ کم رواج میں نہیں ہے . اس بارے میں بھی لوگوں کا کہنا ہے کہ کتنے ہی سادھو ہوا میں اڑ سکتے ہیں . دھرم گرنتھوں میں جہاں ردھی سدھیوں کا ذکر ہے وہاں ہوا میں اڑنے کی بات بھی کہی گئی ہے. مطلب یہ کہ چمتکار اور کراماتوں کی کوئی گنتی نہیں.

چمتکاروں سے نقصان

چمتکاروں میں وشواس کرنے سے منشیہ سماج کو بہت نقصان ہوئے' پر سب سے بڑا نقصان یہ ہوا کہ چمتکاروں کو جیوں کا تیوں ستیہ مان لینے سے سچ کی

चमत्कार और धर्म

धर्म ग्रंथ हैं कि चमत्कारों से भरे पड़े हैं और धर्म का अन्धश्रद्धालु कितना ही विद्वान क्यों न हो साधु सन्तों और महापुरुषों के चमत्कारों पर विश्वास करता है. उसे चमत्कारों के विश्वास करने में आनन्द आता है. विज्ञान की इस बीसवीं सदी में हिन्दुस्तान की सरकार के मिनिस्टर जब एक बच्चे से इलाज कराने के लिये उड़ीसा के एक छोटे गांव अंगुल दौड़ सकते हैं, तब आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि धर्म चमत्कारों की तालीम दे कर आदमी के विश्वास को कितना निर्बल बना सकता है और क्या क्या कर सकता है.

चमत्कार की तालीम

आजकल हमारे बच्चों को चमत्कार की तालीम उस दिन से मिलने लगती है जिस दिन वह पालने में लेटते हैं. यह इस वास्ते जरूरी है कि कोई आदमी धर्म के पैग़म्बरों पर ईमान ही नहीं ला सकता, जब तक उसे यह साबित कर के न दिखा दिया जाय कि वह आदमी नहीं ईश्वर के भेजे हुए देवता या फ़रिश्ते थे और चमत्कारी थे. छोटे पन से किसी दिमाग़ में इस तरह की बातें भर दी जायं तब यह बड़ी बात नहीं कि बड़े हो कर वह बालक चमत्कारों में ऐसे ही विश्वास करने लगें, जैसे दुनिया की और बातों में.

साधु लोग चमत्कारी होते हैं. यह बात आजकल हर एक अपढ़ में जगह किये हुए है और औरतों की तो कुछ न पूछिये. वह तो चमत्कारों में इतना ज़ियादा विश्वास रखती हैं जिसका कुछ ठिकाना नहीं. उनके इस विश्वास का यह नतीजा हुआ है कि हमारे बालक भिकमंगों से ऐसे डरने लगे हैं जैसे अंगरेज़ी राज में पुलिस से डरते थे, और ऐसा ही हाल हमारी मां बहनों का है.

कोई साधु यानी भिकमंगा अगर ज़रा चालाक है, तो किसी ऐसे घर से, जिस घर में कोई मर्द न हो, औरतों से चमत्कार की बात कह कर ज़ेवर उतरवा कर ले जा सकता है. हम यह बात अंदाज़े से नहीं कह रहे हैं. हमारी बहन से एक भिकारी ख़ाली हाथों से बाजरा गिराने का चमत्कार दिखा कर कुछ पैसे, कपड़े, पूरियां पा गया था. उस वक़्त हमारी बहन का तीन बरस का बच्चा बीमार था हम बड़ी मुश्किल से अपनी बहन के चमत्कार सम्बन्धी अन्धविश्वास को तोड़ पाए थे. चमत्कारों का जब सिलसिला चल पड़ता है तब वह ख़तम नहीं होता. कहीं चमत्कारों की बात छिड़ जाय तो फिर शायद ही कोई ऐसा हो जो अपना चमत्कार न सुनाए. चमत्कार के वायु मन्डल में पले बालक मुश्किल से सत्य की खोज में लग सकते हैं.

आज का कोई धर्म चमत्कारों से ख़ाली नहीं. इतना ही क्यों, कोई धर्म चमत्कार बताए बिना किसी दूसरे धर्मवाले

چمتکار اور دھرم

دھرم گرنتھ ھیں کہ چمتکاروں سے بھرے پڑے ھیں اور دھرم کا اندھ شردھالو کتنا ھی ودوان کیوں نہ ھو سادھو سنتوں اور مہاپرشوں کے چمتکاروں پر وشواس کرتا ھے۔ اُسے چمتکاروں کے وشواس کرنے میں آنند آتا ھے۔ وگیان کی اِس بیسویں صدی میں ھندستان کی سرکار کے منسٹر جب ایک بچے سے علاج کرانے کے لئے اُڑیسہ کے ایک چھوٹے گاؤں انگل دوڑ سکتے ھیں، تب آپ اندازہ لگا سکتے ھیں کہ دھرم چمتکاروں کی تعلیم دے کر آدمی کے وشواس کو کتنا نربل بنا سکتا ھے اور کیا کیا کر سکتا ھے۔

چمتکار کی تعلیم

آج کل ھمارے بچوں کو چمتکار کی تعلیم اُس دن سے ملنے لگتی ھے جس دن وہ پالنے میں لیٹتے ھیں۔ یہ اس واسطے ضروری ھے کہ کوئی آدمی دھرم کے پیغمبروں پر ایمان ھی نہیں لا سکتا، جب تک اُسے یہ ثابت کر کے نہ دکھا دیا جائے کہ وہ آدمی نہیں ایشور کے بھیجے ھوئے دیوتا یا فرشتے تھے اور چمتکاری تھے۔ چھوٹے پن سے کسی دماغ میں اس طرح کی باتیں بھر دی جائیں تب یہ بڑی بات نہیں کہ بڑے ھو کر وہ بالک چمتکاروں میں ایسے ھی وشواس کرنے لگیں، جیسے دنیا کی اور باتوں میں۔

سادھو لوگ چمتکاری ھوتے ھیں، یہ بات آج کل ھر ایک اپڑھ میں جگہ کئے ھوئے ھے اور عورتوں کی تو کچھ نہ پوچھئے۔ وہ تو چمتکاروں میں اتنا زیادہ وشواس رکھتی ھیں جس کا کچھ ٹھکانا نہیں۔ اُن کے اِس وشواس کا یہ نتیجہ ھوا ھے کہ ھمارے بالک بھکمنگوں سے ایسے ڈرنے لگے ھیں جیسے انگریزی راج میں پولیس سے ڈرتے تھے، اور ایسا ھی حال ھماری ماں بہنوں کا ھے۔

کوئی سادھو یعنی بھکمنگا اگر ذرا چالاک ھے، تو کسی ایسے گھر سے، جس گھر میں کوئی مرد نہ ھو، عورتوں سے چمتکار کی بات کہہ کر زیور اُتروا کر لے جا سکتا ھے۔ ھم یہ بات اندازے سے نہیں کہہ رھے ھیں۔ ھماری بہن سے ایک بھکاری خالی ھاتھوں سے باجرہ گرانے کا چمتکار دکھا کر کچھ پیسے، کپڑے، پوریاں پا گیا تھا۔ اُس وقت ھماری بہن کا تین برس کا بچہ بیمار تھا۔ ھم بڑی مشکل سے اپنی بہن کے چمتکار سمبندھی اندھ وشواس کو توڑ پائے تھے۔ چمتکاروں کا جب سلسلہ چل پڑتا ھے تب وہ ختم نہیں ھوتا۔ کہیں چمتکاروں کی بات چھڑ جائے تو پھر شاید ھی کوئی ایسا ھو جو اپنا چمتکار نہ سنائے۔ چمتکار کے وایومنڈل میں پلے بالک مشکل سے ستیہ کی کھوج میں لگ سکتے ھیں۔

آج کا کوئی دھرم چمتکاروں سے خالی نہیں۔ اتنا ھی نہیں، کوئی دھرم چمتکار بتائے بنا کسی دوسرے دھرم والے

सत्य और चमत्कार

चमत्कार और अजानकारी

चमत्कार अपने आप में कुछ नहीं होते, उनका मोल मामूली घटना जितना होता है. एक का चमत्कार दूसरे के लिये मामूली घटना से नीचे दरजे की बात हो सकती है जिसके लिये जो चमत्कार है वह उतना ही उसका अजानकार है. अजानकारी और चमत्कार एक सिक्के के दो पहलू हैं. किसी चीज़ को देख जब एक आदमी को अचरज होता है, तब वह उसे चमत्कार नाम दे देता है. जो जितना अजानकार और मूरख है, उतना ही चमत्कार दुनिया में उसके लिये है. दूध पीता बालक अगर बोल सकता होता तो आए दिन सैकड़ों चमत्कारों का हाल सुनाता, क्योंकि वह दुनिया की सभी बातों से अजानकार होता है.

चमत्कार और अचरज

चूल्हे में पड़कर जब रोटी फूलती है तब, बच्चे ही नहीं, बड़े बड़े फड़क उठते हैं. और अगर वह यह कहें कि यह आग का चमत्कार है, तो क्या झूठ कहते हैं? गहराई से सोचा जाय तो वह सत्य के तनिक भी पास नहीं. आग में अगर फुलाने की ताक़त होती यानी आग फुलाने का चमत्कार दिखा सकती होती तो वह लोहे के पतरे की रोटी भी फुला देती? पर वह ऐसा नहीं करती. इसलिये जो यह समझता है कि रोटी फूलना आग का चमत्कार है, अपनी अजानकारी का सबूत देता है. अचरज को सब ने अजानकारी का पुत्र माना है. अचरज के बिना कोई घटना चमत्कार नाम नहीं पा सकती. अब रही अचरज की पहुँच, वह बच्चों तक सीमित नहीं, उसकी सीमा बहुत बड़ी है. उस में बड़े बड़े विद्वान समा सकते हैं. अगर ऐसा न होता तो बड़े बड़े विद्वान बाज़ीगरों का तमाशा देखने न आते. कभी कभी मामूली बातें भी बड़े बड़े विद्वानों और विज्ञानियों के लिये चमत्कार साबित हो सकती हैं. मिसाल के लिये अमरीका में जब हिन्दुस्तान से कोई जलेबी बनाने वाला पहुँच गया तो वहां के लोगों को यह चमत्कार ही मालूम हुआ कि आटे की इतनी बारीक थैली में किस तरह रस भर कर एक पहिये जैसी चीज़ बना दी जाती है. वह बनाने वाले से जलेबी की मशीन दिखाने के लिये कहने लगे. जब उन्हें मालूम हुआ कि उसकी कोई मशीन नहीं होती और वह हाथ से बन जाती है तब उनके अचरज का ठिकाना न रहा. जब उन्होंने अपनी आंखों जलेबी बनते देख लिया तब उनके मुंह से निकल गया, एकदम चमत्कार. यह है आपका चमत्कार!

ستیہ اور چمتکار

چمتکار اور اجانکاری

چمتکار اپنے آپ میں کچھ نہیں ہوتے' اُن کا مول معمولی گھٹنا جتنا ہوتا ہے . ایک کا چمتکار دوسرے کے لئے معمولی گھٹنا سے نیچے درجے کی بات ہوسکتی ہے. جس کے لئے جو چمتکار ہے وہ اُتنا ہی اس کا اجانکار ہے . اجانکاری اور چمتکار ایک سکے کے دو پہلو ہیں . کسی چیز کو دیکھ جب ایک آدمی کو اچرج ہوتا ہے' تب وہ اُسے چمتکار نام دے دیتا ہے . جو جتنا اجانکار اور مورکھ ہے' اُتنا ہی چمتکار دنیا میں اُس کے لئے ہے . دودھ پیتا بالک اگر بول سکتا ہوتا تو آئے دن سیکڑوں چمتکاروں کا حال سناتا' کیونکہ وہ دنیا کی سبھی باتوں سے اجانکار ہوتا ہے .

چمتکار اور اچرج

چولہے میں پڑ کر جب روٹی پھولتی ہے تب' بچے ہی نہیں' بڑے بڑے پھڑک اُٹھتے ہیں . اور اگر وہ یہ کہیں کہ یہ آگ کا چمتکار ہے تو کیا جھوٹ کہتے ہیں ؟ گہرائی سے سوچا جائے تو وہ ستیہ کے تنک بھی پاس نہیں . آگ میں اگر پھلانے کی طاقت ہوتی یعنی آگ پھلانے کا چمتکار دکھا سکتی ہوتی تو وہ لوہے کے پترے کی روٹی بھی پھلا دیتی ؟ پر وہ ایسا نہیں کرتی . اس لئے جو یہ سمجھتا ہے کہ روٹی پھولنا آگ کا چمتکار ہے' اپنی اجانکاری کا ثبوت دیتا ہے . اچرج کو سب نے اجانکاری کا پتر مانا ہے . اچرج کے بنا کوئی گھٹنا چمتکار نام نہیں پا سکتی . اب رہی اچرج کی پہونچ' وہ بچوں تک سیمت نہیں' اُس کی سیما بہت بڑی ہے . اس میں بڑے بڑے ودوان سما سکتے ہیں . اگر ایسا نہ ہوتا تو بڑے بڑے ودوان بازیگروں کا تماشہ دیکھنے نہ آتے . کبھی کبھی معمولی باتیں بھی بڑے بڑے ودوانوں اور وگیانیوں کے لئے چمتکار ثابت ہو سکتی ہیں . مثال کے لئے امریکہ میں جب ہندستان سے کوئی جلیبی بنانے والا پہونچ گیا تو وہاں کے لوگوں کو یہ چمتکار ہی معلوم ہوا کہ آٹے کی اتنی باریک تھیلی میں کس طرح رس بھر کر ایک پہئے جیسی چیز بنا دی جاتی ہے . وہ بنانے والے سے جلیبی کی مشین دکھانے کے لئے کہنے لگے . جب اُنہیں معلوم ہوا کہ اُس کی کوئی مشین نہیں ہوتی اور وہ ہاتھ سے بن جاتی ہے تب اُن کے اچرج کا ٹھکانا نہ رہا . جب اُنہوں نے اپنی آنکھوں جلیبی بنتے دیکھ لیا تب اُن کے منہ سے نکل گیا' ایکدم چمتکار . یہ ہے آپ کا چمتکار !

की पिछली टांगें, अगली टांगों से लम्बी होती हैं. समझे बुद्धू!

अच्छे अच्छे लफ़्ज़ों का तरजुमा करना इस वजह से भी ठीक नहीं क्योंकि तरजुमे में असल की बात नहीं आती. मिसाल के तौर पर सबोताज को लीजिये जिसको "तख़रीब आलात" कहा गया. किसीने 'Coup detat' को सियासी झपट्टा कहा. किसी ने बुरजुआई का मुराद अशराफ़िया ढूंढ निकाला.

हैदराबाद में आम समझ लफ़्ज़ों के बारे में भी दो (एक दूसरे के उलटे) रुजहान पाए जाते हैं. एक तरफ़ अंगरेज़ी लफ़्ज़ों का इतना ख़याल किया जाता है कि उनकी पूरी पूरी नक़ल करवाने की कोशिश की जाती है और लन्दन जैसे मशहूर नाम या सितम्बर जैसे आम लफ़्ज़ का सही तलफ़्फ़ुज़ करवाने के लिये लन्डन और सेप्टेम्बर लिखा जाता है. दूसरी तरफ़ इन लफ़्ज़ों का भी तरजुमा किया जाता है जो बहुत आम हो चुके हैं चुनांचे हैदराबाद में राशन को रातिब कहते हैं. यहां 1944 में "कुल हिन्द उर्दू कांगरेस" हुई थी. इसके एक इजलास के सभापति अलीगढ़ यूनीवर्सिटी के प्रोफ़ेसर रशीद अहमद साहब थे. उन्होंने हैदराबाद की बहुत तारीफ़ की. साथ ही डरते डरते यह भी कहा कि यहां के लोगों को परदेसी लफ़्ज़ों के तरजुमे करने का बहुत शौक़ है. हालांकि उर्दू में इसकी ज़ियादा ज़रूरत नहीं क्योंकि उर्दू ख़ुद एक मिलवां भाशा है और इसमें हज़ारों अंगरेज़ी लफ़्ज़ खप सकते हैं. इस सिलसिले में उन्होंने रातिब का ज़िकर किया और कहा कि राशन का लफ़्ज़ सारे हिन्दुस्तान में चल पड़ा है, चालू लफ़्ज़ों को छोड़ना ज़बान की तरक़्क़ी नहीं है. दूसरे रोज़ इसी उर्दू कांगरेस के भरे जलसे में हसन निज़ामी देहलवी ने राशन का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया, कुछ रुके और कहा "मैं रातिब नहीं कहूंगा, रातिब कुत्तों के लिये होता है." मगर शाबाश है हैदराबाद पर जो न दुशमन से कुछ सीखता है न दोस्त से, जो न कपटी मोतारज़ की परवा करता है न हमदर्द नक़्क़ाद (पारखी) की.

बहरहाल अगर हम अपनी ज़बान को फैलाना और परवान चढ़ाना चाहते हैं तो हमारे लिये अटल है कि बहुत से पौधों, दरख़्तों, बेलों और जानवरों के नाम या तो जूं के तूं अपनी ज़बान में ले लें या ज़रूरत हो तो उसको हिन्दया लें याने हिन्दुस्तानी सांचे में ढाल कर अपना लें उसी तरह तमाम नई नई चीज़ों, तहरीकों और इदारों के नाम जो आसानी से अपनाए जा सकते हैं असल शकल में या थोड़ी बहुत तबदीली के साथ ले लें गोया हिन्दया लिये जायं इसी को हिन्दयावा कहते हैं और यही हमारी भाशा को तरक़्क़ी देने का बड़ा अहम ज़रिया है.

کی پچھلی ٹانگیں اگلی ٹانگوں سے لمبی ہوتی ہیں۔ سمجھے بدھو!

اچھے اچھے لفظوں کا ترجما کرنا اس وجہ سے بھی ٹھیک نہیں کیوں کہ ترجمے میں اصل کی بات نہیں آتی۔ مثال کے طور پر سبوتاژ کو لیجئے جس کو "تخریب آلات" کہا گیا۔ کسی نے 'Coup detat' کو سیاسی جھپٹا کہا۔ کسی نے برژوائی کا مراد اشرافیہ ڈھونڈھ نکالا۔

حیدرآباد میں عام سمجھ لفظوں کے بارے میں بھی دو (ایک دوسرے کے الٹے) رجحان پائے جاتے ہیں۔ ایک طرف انگریزی لفظوں کا اتنا خیال کیا جاتا ہے کہ ان کی پوری پوری نقل کروانے کی کوشش کی جاتی ہے اور لندن جیسے مشہور نام یا ستمبر جیسے عام لفظ کا صحیح تلفظ کروانے کے لئے لنڈن اور سپٹمبر لکھا جاتا ہے۔ دوسری طرف ان لفظوں کا بھی ترجما کیا جاتا ہے جو بہت عام ہو چکے ہیں۔ چنانچہ حیدرآباد میں راشن کو راتب کہتے ہیں۔ یہاں 1944 میں "کل ہند اردو کانگریس" ہوئی تھی۔ اس کے ایک اجلاس کے سبھاپتی علی گڑھ یونیورسٹی کے پروفیسر رشید احمد صاحب تھے۔ انہوں نے حیدرآباد کی بہت تاریف کی۔ ساتھ ہی ڈرتے ڈرتے یہ بھی کہا کہ یہاں کے لوگوں کو پردیسی لفظوں کے ترجمے کرنے کا بہت شوق ہے حالانکہ اردو میں اس کی زیادہ ضرورت نہیں کیونکہ اردو خود ایک ملواں بھاشا ہے اور اس میں ہزاروں انگریزی لفظ کھپ سکتے ہیں۔ اس سلسلے میں انہوں نے راتب کا ذکر کیا اور کہا راشن کا لفظ سارے ہندستان میں چل پڑا ہے، چالو لفظوں کو چھوڑنا زبان کی ترقی نہیں ہے۔ دوسرے روز اسی اردو کانگریس کے بھرے جلسے میں حسن نظامی دہلوی نے راشن کا لفظ استعمال کیا، کچھ رکے اور کہا "میں راتب نہیں کہونگا، راتب کتوں کے لئے ہوتا ہے۔" مگر شاباش ہے حیدرآباد پر جو نہ دشمن سے کچھ سیکھتا ہے نہ دوست سے، جو نہ کپٹی معترض کی پرواہ کرتا ہے، نہ ہمدرد نقاد (پارکھی) کی۔

بہرحال اگر ہم اپنی زبان کو پھیلانا اور پروان چڑھانا چاہتے ہیں تو ہمارے لئے اٹل ہے کہ بہت سے پودوں، درختوں، بیلوں اور جانوروں کے نام یا تو جوں کے توں اپنی زبان میں لے لیں یا ضرورت ہو تو اس کو ہندیا لیں یانے ہندستانی سانچے میں ڈھال کر اپنا لیں۔ اسی طرح تمام نئی نئی چیزوں، تحریکوں اور اداروں کے نام جو آسانی سے اپنائے جاسکتے ہیں اصل شکل میں یا تھوڑی بہت تبدیلی کے ساتھ لے لیں، گویا ہندیا لئے جائیں۔ اسی کو ہندیاوا کہتے اور یہی ہماری بھاشا کو ترقی دینے کا بڑا اہم ذریعہ ہے۔

है, मेरी एक न चली. बोट मिल्ली से यह लफ्ज मन्जूर कर लिया गया. डिक्शनरी छप गई. मगर उससे जबान और अदब को जो फ़ायदा होना चाहिये था वह नहीं हुआ. आप खुद ही सोच लीजिये कि नारमल की बजाय मेयार का लफ्ज हिन्दी में चल सकना तो अलग रहा उर्दू में भी कभी चल सकेगा ?

उर्दू के पाकबाज़ों ने कलचर के बजाय सक़ाफ़त इस्तैमाल करना शुरू तो किया मगर यह लफ्ज अब तक आम नहीं हुआ. सिक्योरिटी (Security) का तरजुमा सियानत किया गया और इसको भी चालू करने की थोड़ी बहुत कोशिश की गई. हैदराबाद का एक अखबार अब भी सिक्योरिटी कौंसिल (Security Council) को सियानती कौंसिल लिखता है. काश सियानत की तरह कौंसिल के लिये भी कोई आम समझ लफ्ज ढूंढ लिया जाय ताकि हिन्दुस्तान में उर्दू और भी ज़ियादा तेज़ी से फैल सके !

ज़िराफ़ा सब से ऊंचे जानवर का नाम है जो सिर्फ़ अफ़रीक़ा के महा देस में पाया जाता है. जिस तरह कैंगरू या लामा नामी जानवरों के नाम का बदलना पागलपन होता उसी तरह ज़िराफ़ा का तरजुमा करना नादानी होती. इसीलिये तमाम योरपी भाशाओं ने इस लफ्ज़ को अपना लिया और अपनी अपनी भाशाई फ़ितरत के मुताबिक़ उसे किसी क़द्र बदल दिया. अंगरेज़ों ने Giraffe कहा तो जरमनों ने गिराफ़ख. मगर हिन्दी वालों ने एक डिक्शनरी में जो इलाहाबाद में छपी है इसका तरजुमा तीन तरह किया है :

(1) अफ़रीक़ा का चौपाया जिसकी अगली टांगें पिछली टांगों से लम्बी होती हैं.

(2) एक प्रकार का ऊंट.

(3) चित्रोष्ट्र.

ग़रज़ हिन्दी लुग़त (डिक्शनरी) लिखने वालों ने नाक रख ली मगर ज़िराफ़े को Giraffe या हिन्दी सांचे में ढाल कर जिराफ़ा न लिखा. अगर हिन्दी कोश बनाने वाले को ज़िराफ़े से कपट थी क्योंकि यह अरबी भाशा का शब्द है तो दुराकर्णक की तरह चित्रोष्ट्र से भी अच्छा लफ्ज बना लेता. मगर यह तो कोई तुक की बात न हुई कि हम ज़िराफ़े की बजाय एक प्रकार का ऊंट कहें. इस तरह तो हम हर चिड़िया, हर जानवर, हर पेड़ का "तरजुमा" कर सकते हैं और इंगलिस्तान के एक मशहूर पेड़ को जिसे ओक (Oak) कहते हैं "एक प्रकार का पीपल" कहें और कैंगरू के बारे में लिखें : "आस्ट्रेलिया का चौपाया जिसकी पिछली टांगें अगली टांगों से लम्बी होती हैं." अब हम आसानी से ज़िराफ़े और कैंगरू में फ़रक़ कर सकते हैं. एक की अगली टांगें पिछली टांगों से और दूसरे

ہے . میری ایک نہ چلی . ووٹ ملتی سے یہ لفظ منظور کر لیا گیا . ڈکشنری چھپ گئی مگر اس سے زبان اور ادب کو جو فائدا ہونا چاہئے تھا وہ نہیں ہوا . آپ خد ہی سوچ لیجئے کہ نارمل کی بجائے معیار کا لفظ ہندی میں چل سکنا تو الگ رہا اُردو میں بھی کبھی چل سکے گا ؟

اُردو کے پاکبازوں نے کلچر کے بجائے ثقافت استعمال کرنا شرو تو کیا مگر یہ لفظ اب تک آم نہیں ہوا . سیکورٹی (Security) کا ترجما صیانت کیا گیا اور اس کو بھی چالو کرنے کی تھوڑی بہت کوشش کی گئی . حیدرآباد کا ایک اخبار اب بھی سیکورٹی کونسل (Security Council) کو صیانتی کونسل لکھتا ہے . کاش صیانت کی طرح کاونسل کے لئے بھی کوئی آم سمجھ لفظ ڈھونڈ لیا جائے تاکہ ہندستان میں اُردو اور بھی زیادا تیزی سے پھیل سکے !

زرافہ سب سے اُونچے جانور کا نام ہے جو صرف افریقا کے مہادیس میں پایا جاتا ہے . جس طرح کینگرو یا لاما نامی جانوروں کے نام کا بدلنا پاگل پن ہوتا اسی طرح زرافہ کا ترجما کرنا نادانی ہوتی . اس لئے تمام یورپی بھاشاؤں نے اس لفظ کو اپنا لیا اور اپنی اپنی بھاشائی فطرت کے مطابق اسے کسی قدر بدل دیا . انگریزوں نے Giraffe کہا تو جرمنوں نے گراف . مگر ہندی والوں نے ایک ڈکشنری میں جو الہ آباد میں چھپی ہے اس کا ترجما تین طرح کیا ہے :

(1) افریقا کا چوپایا جس کی اگلی ٹانگیں پچھلی ٹانگوں سے لمبی ہوتی ہیں .

(2) ایک پرکار کا اونٹ .

(3) چترواشٹر .

غرز ہندی لغت (ڈکشنری) لکھنے والوں نے ناک رکھ لی مگر زرافے کو Giraffe یا ہندی سانچے میں ڈھال کر جرافہ نہ لکھا . اگر ہندی کوش بنانے والے کو زرافے سے کپٹ تھی کیونکہ یہ اربی بھاشا کا شبد ہے تو دوراکرنک کی طرح چترواشٹر (चित्रोष्ट्र) سے بھی اچھا لفظ بنا لیتا مگر یہ تو کوئی تک کی بات نہ ہوئی کہ ہم زرافے کی بجائے ایک پرکار کا اونٹ کہیں . اس طرح تو ہم ہر چڑیا، ہر جانور، ہر پیڑ کا "ترجما" کرسکتے ہیں اور انگلستان کے ایک مشہور پیڑ کو جسے اوک (Oak) کہتے ہیں "ایک پرکار کا پیپل" کہیں اور کینگرو کے بارے میں لکھیں : "آسٹریلیا کا چوپایا جس کی پچھلی ٹانگیں اگلی ٹانگوں سے لمبی ہوتی ہیں." اب ہم آسانی سے زرافے اور کینگرو میں فرق کرسکتے ہیں . ایک کی اگلی ٹانگیں پچھلی ٹانگوں سے اور دوسرے

से दुनिया भर की इस्तलाहें बेतरतीबी से तरतीब दी हैं. और ग़लतियों के अलावा सब से बड़ी ग़लती उन्होंने वही की है जो अब हिन्दी वालों की आम ग़लती हो गई है याने क़ठियल, मुशकिल, कम फ़हम और बोभिल तरजुमे. इस डिक्शनरी में टेलीफ़ोन जैसे लफ़्ज़ का तरजुमा, दूराकर्णक किया गया है. इसी लफ़्ज़ का एक और तरजुमा मैंने कहीं ध्वनीप्रक्षेपक यन्त्र पढ़ा था. इसी तरह यार लोगों ने स्टेशन के लिये भापरथस्थान, रूमाल के लिये मुख मंजल वस्त्र माला बनाया है. शाहकार तरजुमा तो बस यह हुआ है अग्नि रथगमनागमन पथ निर्देशकमय सुचक ताम्रधवल लोह पाटिका. इतना बड़ा लफ़्ज़ सिर्फ़ सिगनल के लिये गढ़ा गया है! लफ़्ज़ बनाने वालों से कौन कहे और कहे तो कौन सुनता है कि सिगनल का हिन्दी बराबर यह सिगनल की तरह छोटा नहीं बल्कि ख़ुद रेल है वह भी माल गाड़ी!

भाशाई तरक़्क़ी के लिये बेहतरीन असूल मुक़र्रर करने वाले भारत के विधान में एक से ज़ियादा बार "अछूत" जैसे लफ़्ज़ को छोड़ कर "अस्पर्षयता" का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है. विधानी असूलों का उलटा अमल देखना हो तो विधान का हिन्दी तरजुमा पढ़िये जिस में ठीक उन्हीं असूलों को ठुकराया गया, जिनपर विधान ने सब से ज़ियादा ज़ोर दिया है? इस विधान के शुरु के लफ़्ज़ सुनिये और फ़ैसला कीजिये कि आप क्या समझ सकते हैं और तदब्बुर और सियासत के इस ज़ख़ीरे से कितना आपके पल्ले पड़ता है:

'हम भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिये तथा उस के समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के के लिये, तथा उसके समस्त नागरिकों में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता सुनिश्चित करने वाली बन्धुता बढ़ाने के लिये, दृढ़ संकल्प होकर इस संविधान को अङ्गीकृत, अधनियमित और आत्मार्पित करते है.'

थर्मामीटर को कुछ उर्दू के मेहरबान मिक़्यास उलहरारत कहते हैं. नारमल का तरजुमा अन्जुमन तरक़्क़ी उर्दू ने मेयार किया है. मैं ख़ुद इस कमेटी में मौजूद था जिसने नारमल जैसे करोड़ों की ज़बान पर चढ़े हुए लफ़्ज़ का तरजुमा मेयार किया. मैंने बहुत मुख़ालफ़त की थी. साफ़ साफ़ कहा था कि इन क़िस्म के बेजान लफ़्ज़ों का बनाना हमारी बड़ी भारी भूल है. "जब तक सांस तब तक आस" सही तो है मगर बिलकुल मुरदा और बेजान पैदा होने वाले बच्चों के पलपने और परवान चढ़ने की आस रखना हसरत नाक बुत-परस्ती और जाहिलाना ख़ुश ऐतक़ादी

میں دنیا بھر کی اسطلاحیں بے ترتیبی سے ترتیب دی ہیں۔ اور غلطیوں کے الاوا سب سے بڑی غلطی اُنہوں نے وہی کی ہے جو اب ہندی والوں کی آم غلطی ہو گئی ہے یانے کٹھِل، مشکل، کم فہم اور بوجھل ترجمے۔ اس ڈکشنری میں ٹیلیفون جیسے لفظ کا ترجما دوراکرنک (दूराकर्णक) کیا گیا ہے۔ اسی لفظ کا ایک اور ترجما میں نے کہیں دھونی انشیپک یتر پڑھا تھا۔ اسی طرح یار لوگوں نے اسٹیشن کے لئے بھاپ رتھستان، رومال کے لئے مکھ منجل وستر مالا بنایا ہے۔ شاہکار ترجما تو بس یہ ہوا ہے اگنی رتھ گمنا گمن پتھ نردیشک سے سوچک تامر دھول لوہ پٹیکا۔ اتنا بڑا لفظ صرف سگنل کے لئے گڑھا گیا ہے! لفظ بنانے والوں سے کون کہے اور کہے تو کون سنتا ہے کہ سگنل کا ہندی برابر یہ سگنل کی طرح چھوٹا نہیں بلکہ خد ریل ہے، وہ بھی مال گاڑی!

بھاشای ترقی کے لئے بہترین اسول مقرر کرنے والے بھارت کے ودھان میں ایک سے زیادہ بار "اچھوت" جیسے لفظ کو چھوڑ کر "اسپرشیتا" کا لفظ استعمال کیا گیا ہے۔ ودھانی اسولوں کا اُلٹا عمل دیکھنا ہو تو ودھان کا ہندی ترجما پڑھئے جس میں ٹھیک اُنہیں اسولوں کو ٹھکرایا گیا، جن پر ودھان نے سب سے زیادا زور دیا ہے؟ اس ودھان کے شروع کے لفظ سنئے اور فیصلہ کیجئے کہ آپ کیا سمجھ سکتے ہیں اور تدبر اور سیاست کے اس ذخیرے سے کتنا آپ کے پلے پڑتا ہے:—

"ہم بھارت کے لوگ، بھارت کو ایک سمپورن پربھتو سمپن لوک تنترآتمک گن راجیہ بنانے کے لئے تتھا اُس کے سمست ناگروں کو سماجک، آرتھک اور راج نیتک نیائے، وچار، ابھی ویکت، وشواس، دھرم اور اُپاسنا کی سوتنترتا؛ پرتشٹھا اور اوسر کی سمتا پراپت کرانے کے لئے، تتھا اُس کے سمست ناگروں میں ویکتی کی گریما اور راشٹر کی ایکتا سونشچت کرنے والی بندھوتا بڑھانے کے لئے، دڑھ سنکلپ ہو کر اس سمودھان کو انگی کرت، ادھ نیمت اور آتم ارپت کرتے ہیں۔"

تھرمامیٹر کو کچھ اُردو کے مہربان مقیاس الحرارت کہتے ہیں۔ نارمل کا ترجما انجمن ترقی اُردو نے معیار کیا ہے۔ میں خد اس کمیٹی میں موجود تھا جس نے نارمل جیسے کروڑوں کی زبان پر چڑھے ہوئے لفظ کا ترجما معیار کیا۔ میں نے بہت مخالفت کی تھی۔ صاف صاف کہا تھا کہ اس قسم کے بےجان لفظوں کا بنانا ہماری بڑی بھاری بھول ہے۔ "جب تک سانس تب تک آس" صحیح تو ہے مگر بلکل مردا اور بےجان پیدا ہونے والے بچوں کے پلپنے اور پروان چڑھنے کی آس رکھنا حسرت ناک بت پرستی اور جاہلانہ خش اعتقادی

Fetish	फ़ैटिश	فیٹش	Fetish
Gang	गैंग	گینگ	Gang
Gesture	जेस्चर	جسچر	Gesture
Griaffe	जिराफ़ - ज़िराफ़ा	جراف - زرافہ	Griaffe
Hygiene	हाइजीन	ہائجین	Hygiene
Kangaroo	कैंगरू	کینگرو	Kangaroo
Kilogram	किलोग्राम	کیلو گرام	Kilogram
Kilometre	किलो मीटर	کیلو میٹر	Kilometre
Kindergarten	किन्डर गार्टन	کنڈرگارٹن	Kindergarten
Lynching to Lynch	लिनचिंग-लिनचाव	لنچنگ - للچاو	Lynching to Lynch
Mood	मूड	موڈ	Mood
Orbit	आरबिट	آربٹ	Orbit
Oxide	इकसिद	اِکسِید	Oxide
Oxidization	अकसिदयावा	اِکسیدیاوا	Oxidization
Oxidize	आकसीदना	اِکسیدنا	Oxidize
Party	पारटी	پارٹی	Party
Pattern	पैटर्न	پیٹرن	Pattern
Pillary	पिलरी	پلری	Pillary
Program	प्रोग्राम	پروگرام	Program
Polyanna	पोलिआना	پولی انا	Polyanna
Proletarian	प्रोलेतेरिअन	پرولے تے ری ان	Proletarian
Proletariat	प्रोलेतारिया	پرولے تاریا	Proletariat
Sabotage	सेबोताज	سبوتاج	Sabotage
Sail Reptile	सेलयासेलावर	سیلیا سیلاور	Sail Reptile
Stegosaurus	स्तेगावर	استیگاور	Stegosaurus
Surplus	सरपलस	سرپلس	Surplus
Taboo	टाबू-ताबू	ٹابو/تابو	Taboo
Tact	टैक्ट	ٹیکٹ	Tact
Techniquie	टैकनिक	ٹکنیک	Techniquie
Tort	टार्ट	ٹارٹ	Tort
Tyranosaurus	तिरनावर	ترناور	Tyranosaurus
Zone	ज़ोन	زون	Zone

इस तरीक़े के बरख़िलाफ़ जब उर्दू के पाकबाज़ और शुद्धीगर हर परदेसी शब्द का तरजुमा करना चाहते हैं, चाहे वह कितना ही चल पड़ा और मशहूर हो चुका हो और चाहे वह शब्द संसार की तमाम बड़ी बड़ी ज़बानों में भी बोला जाता हो तो ऐसे भौंडे, भयानक और बोझल लफ़्ज़ बनते हैं, जिनका चलना ख़ुद उर्दू या हिन्दी में नामुमकिन या इन्तहाई कठिन होता है.

अन्तर क़ौमी और संसारी अहमियत रखने वाले शब्दों के चन्द नमूनों पर ग़ौर कीजिये जो उर्दू के पाकबाज़ों और हिन्दी के शुद्धीगरों ने किये हैं.

सुख सम्पतराय भंडारी ने चार बड़ी और मोटी जिल्दों

اِس طریقے کے برخلاف جب اُردو کے پاکباز اور شدھی کر ہر پردیسی شبد کا ترجما کرنا چاہتے ہیں' چاہے وہ کتنا ہی چل پڑا اور مشہور ہو چکا ہو اور چاہے وہ شبد سنسار کی تمام بڑی بڑی زبانوں میں بھی بولا جاتا ہو تو ایسے بھونڈے' بھیانک اور بوجھل لفظ بنتے ہیں' جن کا چلنا خد اُردو یا ہندی میں ناممکن یا انتہائی کٹھن ہوتا ہے۔

انترقومی اور سنساری اہمیت رکھنے والے شبدوں کے چند نمونوں پر غور کیجئے جو اُردو کے پاکبازوں اور ہندی کے شدھی کروں نے کئے ہیں۔

سکھ سمپت رائے بھنڈاری نے چار بڑی اور موٹی جلدوں

हिन्दुस्तानी शब्दियात का चौथा असूल: हिन्दयावा

(डाक्टर जाफ़र हसन)

राजकाजी, साइन्सी और अदबी बोलचाल में हमें जिन लफ़्ज़ों की ज़रूरत पड़ती है और जिनका तरजुमा सरल हिन्दी या आसान उर्दू में मुमकिन नहीं उनको हिन्दयाना और हिन्दयाकर हिन्दुस्तानी के शब्द सागर में दाख़िल कर लेना चाहिये. नये ज़माने की बहुत सी चीज़ों के नाम अन्तर क़ौमी हो गए हैं और जहां जहां पच्छिमी ज़बानें फैल चुकी हैं या फैलती जा रही हैं या उनका गहरा असर पड़ा है उन चीज़ों के नाम जूं के तूं दूसरी भाशाओं में ले लिये गए हैं.

जिस तरह रेडियो, टेलीफ़ोन, राशन, कलचर, वाइस-राय, थर्मामीटर, पार्लिमेन्ट, पालिसी, अलकहल, अल्जैबरा, कैफ़े, चा, केमरा, गार्ड, सिनेमा, फ़िलम, थेटर, ड्रामा, प्लाट, बार, बेंच, बियर, व्हिसकी, कीमिया, चाकलेट, सिगार, सिगरेट, कलब, सरकस, काकटेल, काफ़ी, चेक, कालर, कालज, कमेटी, कम्पनी, यूनिवर्सिटी, वाइस चान्सलर, इन्सपेक्टर, डाइरेक्टर, बम, अरारोट, पेंसिल, पासपोर्ट पम्प वग़ैरा हिन्दुस्तानी में दाख़िल हो गए हैं और न सिर्फ़ हिन्दी या उर्दू में बल्कि हिन्दुस्तान की दूसरी भाशाओं में भी इस्तेमाल किये जाते हैं. इसी तरह हमें और भी बहुतेरे लफ़्ज़ हिन्दया कर ले लेना चाहिये.

"हिन्दयावा" से मुराद हिन्दी सांचे में ढालना है. जिस तरह हर ज़बान में ग़ैर ज़बानों के लफ़्ज़ अपनी शकल सूरत बदल कर अपनाए जाते हैं और चन्द ही लफ़्ज़ अपनी असल शकल सूरत बाक़ी रख सकते हैं इसी तरह हिन्दुस्तानी में जितने लफ़्ज़ दूसरी भाशाओं से लिये जा चुके हैं या लिये जायंगे, उनमें से ज़ियादातर लफ़्ज़ हिन्दयाए जायंगे. हर ज़बान की फ़ितरत के मुताबिक़ दूसरी ज़बान से आए हुए अकसर लफ़्ज़ों की लिखावट और बोल चाल में तबदीली होती है. इस अमल को हिन्दुस्तानी की हद तक हिन्दयावा कहते हैं.

इस अमल के मुताबिक़ हम और भी लफ़्ज़ दूसरी भाशाओं से ले सकते हैं जैसे:

Bank	बैंक
Bourgeois	बुरज़ुआ
Brotasaurus	बुरोतावर
Charter	चारटर
Dinosour	डिनावर
Fashion	फ़ैशन

هندستانی شبدیات کا چوتھا اسول: هندیاوا

(ڈاکٹر جافر حسن)

راج کاجی، سائنسی اور ادبی بول چال میں همیں جن لفزوں کی ززورت پڑتی هے اور جن کا ترجما سرل هندی یا آسان اردو میں ممکن نهیں ان کو هندیانا اور هندیا کر هندستانی کے شبدساگر میں داخل کر لینا چاهئے. نئے زمانے کی بهت سی چیزوں کے نام انتر قومی هوگئے هیں اور جهاں جهاں پچهمی زبانیں پهیل چکی هیں یا پهیلتی جا رهی هیں یا ان کا گهرا اثر پڑا هے اُن چیزوں کے نام جوں کے توں دوسری بهاشاؤں میں لے لئے گئے هیں.

جس ترہ ریڈیو، ٹیلیفون، راشن، کلچر، وائسرائے، تهرما میٹر، پارلیمنٹ، پالیسی، الکهل، الجبرا، کیفے، چا، کیمرا، گارڈ، سنیما، فلم، تهیٹر، ڈراما، پلاٹ، بار، بنچ، بیر، وهسکی، کیمیا، چاکلیٹ، سگار، سگریٹ، کلب، سرکس، کاک ٹیل، کافی، چک، کالر، کالج، کمیٹی، کمپنی، یونیورسٹی، وائس چانسلر، انسپکٹر، ڈائرکٹر، بم، اراروٹ، پنسل، پاسپورٹ، پمپ وغیرہ هندستانی میں داخل هو گئے هیں اور نہ سرف هندی یا اردو میں بلکہ هندستان کی دوسری بهاشاؤں میں بهی استعمال کئے جاتے هیں. اسی ترہ همیں اور بهی بهتیرے لفز هندیا کر لے لینا چاهئے.

" هندیاوا " سے مراد هندی سانچے میں ڈهالنا هے. جس ترہ هر زبان میں غیر زبانوں کے لفز اپنی شکل صورت بدل کر اپنائے جاتے هیں اور چند هی لفز اپنی اسل شکل باقی رکھ سکتے هیں اسی ترہ هندستانی میں جتنے لفز دوسری بهاشاؤں سے لئے جا چکے هیں یا لئے جائینگے، ان میں سے زیادہ تر لفز هندیائے جائینگے. هر زبان کی فطرت کے مطابق دوسری زبان سے آئے هوئے اکسر لفزوں کی لکهاوٹ اور بول چال میں تبدیلی هوتی هے. اس عمل کو هندستانی کی حد تک هندیاوا کہتے هیں.

اس عمل کے مطابق هم اور بهی لفز دوسری بهاشاؤں سے لے سکتے هیں جیسے:

Bank	بینک
Bourgeois	برژوآ
Brotosaurus	بروتاور
Charter	چارٹر
Dinosour	ڈناور
Fashion	فیشن

है. हसी हुई कई, नम्र और अच्छी हैसियत वाले लोग हैं. उन्हें किसी से नफ़रत नहीं है. वह झगड़ालू भी नहीं हैं. वह शान्ति प्रेमी हैं. शान्ति के लिये वह कोई दिखावा नहीं करते. शान्ति को वह रचना की जड़ समझते हैं. यही उनका पहला असूल है.

हम अपने मुल्क में भी शान्ति बनाए रख सकते हैं. लेकिन यह काम तभी हो सकता है जब हम इस बड़े काम में जी जान से जुट जायं. जहां तक क़ुदरती परिस्थितियां, समाजी रीत रिवाज और कलचरी सवालों का सम्बन्ध है हिन्दुस्तान और रूस में काफी फ़रक़ है. हमारे काम करने के तौर तरीक़े भी दूसरे हैं. लेकिन जहां तक शान्ति का सवाल है हम सब की मंज़िल एक ही है.

हमारे मुल्क में अकाल, बीमारी और छूत छात है. इसके ख़िलाफ़ हम को लड़ना है. क़ुदरत हम से कुछ नाराज़ सी मालूम पड़ती है. समाज और राजकाज ने हम को तारीक पहलू दिखाए हैं. अब सवाल उठता है कि हम किस तरह इन सब को दूर करें. इसके लिये हम को क़ुदरत पर क़ाबू पाना होगा हम को वैसा ही करना होगा जैसा सोवियत ने ज़मीन को हरा भरा बनाने, ज़मीन में सिंचाई करने, किसानों को तालीम देने वग़ैरा के लिये किया है. यह सब काम हमें अपने निजी फ़ायदे के लिये नहीं बल्कि सारे देश के हित के लिये करने होंगे. मिसाल के लिये ज़मीन को बेकार के कामों में इस्तेमाल नहीं किया जायगा, जोतने वाले के अन्दर उत्साह पैदा करना होगा, हम उसके भले का ही चेतेंगे. जोतने-बोने वाला समाज का एक ज़रूरी अंग है, वही समाज में एक आर्डर ला सकता है. उसके सहयोग के बिना हमारे नेताओं के काम यूं ही धरे रह जायंगे.

मुस्तक़िल शान्ति क़ायम करने के लिये ज़रूरी है कि हम अपना तन, मन, धन खेती बारी और गांव के जीवन स्तर को ऊंचा करने के काम में लगा दें. हमें इस बात की जी जान से कोशिश करना चाहिये कि हम कम से कम सोवियत की तरह अनाज और ज़िन्दगी की ज़रूरयात की दूसरी चीज़ें अपने मुल्क में ही पैदा कर लें. दूसरे देशों से ऐसी चीज़ें जो हमारे मुल्क में आती हैं उन पर रोक लगायें. महात्मा गांधी शान्ति के अवतार थे और उनकी भी यही राय थी. सोवियत वाले इसी असूल को अपने तरीक़े से अपने देस में अपना रहे हैं. विदेशी लोग हमारी ज़ियादा मदद नहीं कर सकते. अपने हित को ठीक ठीक समझ कर और अपने में विश्वास रख कर ही हम अपनी मंज़िल पर पहुंचेंगे. अगर हर देश के लोग इस पालिसी पर अमल करेंगे तो लड़ाई का नाम निशान मिट जायगा और सभी देश शान्ति के साथ रह सकेंगे. शान्ति ज़िन्दाबाद!

ہے. روسی ہنسی مکھ' نمر اور اچھی حیثیت والے لوگ ہیں. انہیں کسی سے نفرت نہیں ہے. وہ جھگڑالو بھی نہیں ہیں. وہ شانتی پریمی ہیں. شانتی کے لئے وہ کوئی دکھاوا نہیں کرتے. شانتی کو وہ رچنا کی جڑ سمجھتے ہیں. یہی اُن کا پہلا اصول ہے.

ہم اپنے ملک میں بھی شانتی بنائے رکھ سکتے ہیں. لیکن یہ کام تبھی ہوسکتا ہے جب ہم اس بڑے کام میں جی جان سے جٹ جائیں. جہاں تک قدرتی پرستھتیاں' سماجی ریت رواج اور کلچری سوالوں کا سمبندھ ہے ہندستان اور روس میں کافی فرق ہے. ہمارے کام کرنے کے طور طریقے بھی دوسرے ہیں. لیکن جہاں تک شانتی کا سوال ہے ہم سب کی منزل ایک ہی ہے.

ہمارے ملک میں اکال' بیماری اور چھوت چھات ہے. اِس کے خلاف ہم کو لڑنا ہے. قدرت ہم سے کچھ ناراض سی معلوم پڑتی ہے. سماج اور راج کاج نے ہم کو تاریک پہلو دکھائے ہیں. اب سوال اٹھتا ہے کہ ہم کس طرح اِن سب کو دور کریں. اِس کے لئے ہم کو قدرت پر قابو پانا ہوگا. ہم کو ویسا ہی کرنا ہوگا جیسا سوویت نے زمین کو ہرا بھرا بنانے' زمین میں سینچائی کرنے' کسانوں کو تعلیم دینے وغیرہ کے لئے کیا ہے. یہ سب کام ہمیں اپنے نجی فائدے کے لئے نہیں بلکہ سارے دیش کے ہت کے لئے کرنے ہونگے. مثال کے لئے زمین کو بیکار کے کاموں میں استعمال نہیں کیا جائے گا' جوتنے والے کے اندر اُتساہ پیدا کرنا ہوگا' ہم اس کے بھلے کا ہی چیتیں گے. جوتنے بونے والا سماج کا ایک ضروری انگ ہے' وہ ہی سماج میں ایک آرڈر لاسکتا ہے. اس کے سہیوگ کے بنا ہمارے نیتاؤں کے کام یوں ہی دھرے رہ جائیں گے.

مستقل شانتی قائم کرنے کے لئے ضروری ہے کہ ہم اپنا تن من دھن کھیتی باری اور گاؤں کے جیون استر کو اونچا کرنے کے کام میں لگا دیں. ہمیں اِس بات کی جی جان سے کوشش کرنا چاہئے کہ ہم کم سے کم سوویت کی طرح اناج اور زندگی کی ضروریات کی دوسری چیزیں اپنے ملک میں ہی پیدا کرلیں. دوسرے دیشوں سے ایسی چیزیں جو ہمارے ملک میں آتی ہیں ان پر روک لگائیں. مہاتما گاندھی شانتی کے اوتار تھے اور اُن کی بھی یہی رائے تھی. سوویت والے اِسی اصول کو اپنے طریقے سے اپنے دیش میں اپنا رہے ہیں. ودیشی لوگ ہماری زیادہ مدد نہیں کرسکتے. اپنے ہت کو ٹھیک ٹھیک سمجھ کر اور اپنے میں وشواس رکھ کر ہی ہم اپنی منزل پر پہونچیں گے. اگر ہر دیش کے لوگ اِس پالیسی پر عمل کریں گے تو لڑائی کا نام نشان مٹ جائے گا اور سبھی دیش شانتی کے ساتھ رہ سکیں گے. شانتی زندہ باد!

और उनकी योगता के मुताबिक़ मिलती है. कहीं कहीं पर एक अच्छे मज़दूर की मज़दूरी एक प्रोफ़ेसर से भी ज़ियादा है, ऐसा हमारे देखने में आया.

लोगों में उत्साह पैदा करने के लिये बहुत सी तहरीकें चलाई जाती हैं. एक मज़दूर जो अच्छा काम करता है उसको केवल ज़ियादा मज़दूरी ही नहीं दी जाती बल्कि उसके कामों की सराहना अख़बारों में छापकर की जाती है, उसको बड़े बड़े इनामों से सुशोभित किया जाता है. इस तरह दूसरे लोग उससे सबक़ हासिल करते हैं. जब पैदावार में तरक़्क़ी होती है, मज़दूर की माली और समाजी हालत सुधरती है, तब उसको इस बात का ध्यान कराया जाता है कि वह मुक़ामी समाज का ही नहीं बल्कि देश का एक अंग है.

मज़दूरों में जागृति है. उनको यक़ीन है कि वह सिर्फ़ बैल गाय नहीं हैं बल्कि अपने देश को संवारने और बनाने वालों में से एक हैं. वह अपने देश का भला बुरा ख़ूब चेतते हैं.

पैदावार बढ़ाते समय इस बात का ख़ास ध्यान रखा जाता है कि मज़दूर के काम के घन्टों और रहन सहन में कोई फ़रक़ न पड़े. उनको अपना विकास करने के लिये तमाम आसानियां दी जाती हैं. थेटर, जिनको पहले 'ऊंचे दरजे के लोग' ही देख सकते थे अब सब क़िस्म के लोगों के लिये खोल दिये गए हैं वह उसमें आर्टिस्ट और दर्शक दोनों हैसियतों से शामिल हो सकते हैं. उनके जीवन को नाच, गानों और कला के ज़रिये अच्छा बनाया जाता है. इन चीज़ों को जनता का कलचरी स्तर ऊंचा करने के काम में लाया जाता है.

मज़दूरों के लिये सैनिटोरियम और आरामगाह जगह जगह पर बने हुए हैं. वहां पर मज़दूर अपनी तन्दुरुस्ती बेहतर बना सकते हैं.

जनता नियमों को मानती और अनुशासन का पालन करती है. उसे धार्मिक आज़ादी है.

सब लोगों के रहन सहन का अच्छा इन्तज़ाम हो इसके लिये एक ख़ास प्रोग्राम बनाया गया है. वहां की इमारतें सिर्फ़ मामूली ईंटों की ही बनी हुई नहीं हैं बल्कि उन पर सुन्दर सुन्दर कला के नमूने भी बने हुए हैं. जनता की भलाई के लिये जो काम भी किये गए हैं वह सिर्फ़ जिसमानी ताक़त के द्वारा ही नहीं किये गए.

एक महान देश, जो इस तरह अपने मुल्क के फिर बनाव में लगा है, इनसानी समाज को कलचरी देन दे रहा है, उसके लिये यह कहना ग़लत और बे बुनियाद होगा कि वह जंग चाहता है. जंग उसके तमाम बड़े कामों में, जिनको वह करने जा रहा है एक बड़ी अड़चन होगी. उसको अपनी कामयाबियों पर बड़ा फ़ख़्र है और उन को पूरा करने के लिये वह अपनी जानकी बाज़ी लगाने के लिये भी तैयार

اور اُن کی یوگتا کے مطابق ملتی ہے. کہیں کہیں پر ایک اچھے مزدور کی مزدوری ایک پروفیسر سے بھی زیادہ ہے' ایسا ہمارے دیکھنے میں آیا.

لوگوں میں اُتساہ پیدا کرنے کے لئے بہت سی تحریکیں چلائی جاتی ہیں. ایک مزدور جو اچھا کام کرتا ہے اُس کو کیول زیادہ مزدوری ہی نہیں دی جاتی بلکہ اُس کے کاموں کی سراہنا اخباروں میں چھاپ کر کی جاتی ہے' اُس کو بڑے بڑے انعاموں سے سوشوبھت کیا جاتا ہے. اِس طرح دوسرے لوگ اُس سے سبق حاصل کرتے ہیں. جب پیداوار میں ترقی ہوتی ہے' مزدور کی مالی اور سماجی حالت سدھرتی ہے تب اُس کو اِس بات کا دھیان کرایا جاتا ہے کہ وہ مقامی سماج کا ہی نہیں بلکہ دیش کا ایک انگ ہے.

مزدوروں میں جاگرتی ہے. اُن کو یقین ہے کہ وہ صرف بیل گائے نہیں ہیں بلکہ اپنے دیش کو سنوارنے اور بنانے والوں میں سے ایک ہیں. وہ اپنے دیش کا بھلا برا خوب چیتتے ہیں.

پیداوار بڑھاتے سمے اِس بات کا خاص دھیان رکھا جاتا ہے کہ مزدور کے کام کے گھنٹوں اور رہن سہن میں کوئی فرق نہ پڑے. اُن کو اپنا وکاس کرنے کے لئے تمام آسانیاں دی جاتی ہیں. تھیٹر' جن کو پہلے 'اونچے درجے کے لوگ' ہی دیکھ سکتے تھے اب سب قسم کے لوگوں کے لئے کھول دئے گئے ہیں. وہ اُس میں آرٹسٹ اور درشک دونوں حیثیتوں سے شامل ہوتے ہیں. اُن کے جیون کو ناچ' گانوں اور کلا کے ذریعے اچھا بنایا جاتا ہے. اِن چیزوں کو جنتا کا کلچری استر اونچا کرنے کے کام میں لایا جاتا ہے.

مزدوروں کے لئے سینی ٹوریم اور آرام گاہ جگہ جگہ پر بنے ہوئے ہیں. وہاں پر مزدور اپنی تندرستی بہتر بنا سکتے ہیں.

جنتا نیموں کو مانتی اور انوشاسن کا پالن کرتی ہے. اُسے دھارمک آزادی ہے.

سب لوگوں کے رہن سہن کا اچھا انتظام ہو اِس کے لئے ایک خاص پروگرام بنایا گیا ہے. وہاں کی عمارتیں صرف معمولی اینٹوں کی ہی بنی ہوئی نہیں ہیں بلکہ اُن پر سندر سندر کلا کے نمونے بھی بنے ہوئے ہیں. جنتا کی بھلائی کے لئے جو کام بھی کئے گئے ہیں وہ صرف جسمانی طاقت کے دوارا ہی نہیں کئے گئے.

ایک مہان دیش جو اِس طرح اپنے ملک کے پھر بناؤ میں لگا ہے' انسانی سماج کو کلچری دین دے رہا ہے' اُس کے لئے یہ کہنا غلط اور بے بنیاد ہوگا کہ وہ جنگ چاہتا ہے. جنگ اُس کے تمام بڑے کاموں میں' جن کو وہ کرنے جا رہا ہے' ایک بڑی اڑچن ہوگی. اُس کو اپنی کامیابیوں پر بڑا فخر ہے اور اُن کو پورا کرنے کے لئے وہ اپنی جان کی بازی لگانے کے لئے بھی تیار

ज़रूरी चीज़ों के उत्पादन को बढ़ाने में लगे हैं और सोवियत रूस में हर शख़्स को एक मामूली आराम की ज़िन्दगी बसर करने का पूरा यक़ीन दिला दिया गया है. लोगों की ज़रूरतों और ज़ियादा अनाज पैदा करने की अहमियत को वहां ख़ूब समझ लिया गया है. प्रकृति की बहुत सी चीज़ों पर भी क़ाबू पा लिया गया है.

दलदली ज़मीन को खेती बारी के क़ाबिल बना लिया है. हज़ारों एकड़ ज़मीन जिसके अन्दर एक दाना अन्न का भी पैदा नहीं किया जा सकता था, वहां अब हरे भरे खेत दानों से लदे लहलहा रहे हैं क्योंकि वहां सिंचाई का अच्छा प्रबन्ध कर दिया गया है. वहां के बाग़ फूलों और फलों से लदे हुए हैं. जो ज़मीन जुताई के क़ाबिल है उसको आपसी सहयोग वाली खेती के लिये छोड़ दिया गया है. वहां के किसान बहुत ख़ुश हैं क्योंकि वह जानते हैं कि उनकी मेहनत का फल उनको मिलेगा. उनको किसी क़िस्म का डर नहीं रहता. किसान ज़ियादा से ज़ियादा पैदा करने की फ़िकर में रहते हैं. लोगों में तालीम का प्रचार करने और साइन्स की मालूमात बढ़ाने के लिये वहां रेडियो और कलचरी संस्थाओं का बन्दोबस्त है. इस तरह लोगों को अपने घर बैठे बैठे तमाम मालूमात हासिल हो जाती हैं. 'जनता की आवाज़' में ज़ोर है. वहां के लोग जी जान से अपने मुल्क की तरक़्क़ी में हाथ बटाते हैं.

आज के रूस में एक बात अहम है. वह यह कि वहां पर जो काम भी शुरू किया जाता है वह एक ढंग और सोच विचार के बाद किया जाता है. लोग काम से पहले उस पर बहस करते हैं. जब सब पहलुओं पर ग़ौर हो चुकता है तब उस योजना को अमल में लाया जाता है.

ज़रूरत की तमाम चीज़ें पैदा करने के बाद, पैदा करने वाले को इस बात का पक्का यक़ीन रहता है कि उसका बदलाव ठीक ढंग से किया जायगा. यह सब काम सरकार अपनी देख रेख में करती है. इस तरह का अदल बदल मुल्क की अन्दरूनी करेन्सी पर काफ़ी असर डालता है. रूबल एक तरह का कूपन होता है. इसको सूद पर देने का रिवाज नहीं है, न कोई इसे जमा कर सकता है और न इसको अपनी तिजोरी में रख सकता है. इस तरह एक बड़ा फ़ायदा होता है और वह यह है कि लोग हमेशा रूबल दे कर रोज़ाना की चीज़ें लेने के लिये उत्सुक रहते हैं. दुकानें रोज़मर्रा के इस्तेमाल के चीज़ों से भरी हुई हैं. खाने वाली चीज़ों की वहां काफ़ी इफ़रात है. इसके अलावा शौक़ की चीज़ें भी वहां काफ़ी मात्रा में पाई जाती हैं.

काम को अच्छे ढंग पर चलाने के लिये वहां के मज़दूरों को अच्छी मज़दूरी दी जाती है. यह मज़दूरी उनकी मेहनत

ضروری چیزوں کے اُتپادن کو بڑھانے میں لگے ہیں اور سوویت روس میں ہر شخص کو ایک معمولی آرام کی زندگی بسر کرنے کا پورا یقین دلا دیا گیا ہے ۔ لوگوں کی ضرورتوں اور زیادہ اناج پیدا کرنے کی اہمیت کو وہاں خوب سمجھ لیا گیا ہے ۔ پرکرتی کی بہت سی چیزوں پر بھی قابو پا لیا گیا ہے ۔

دلدلی زمین کو کھیتی باری کے قابل بنا لیا ہے ۔ ہزاروں ایکڑ زمین جس کے اندر ایک دانا ان کا بھی پیدا نہیں کیا جا سکتا تھا، وہاں اب ہرے بھرے کھیت دانوں سے لدے لہلہا رہے ہیں کیونکہ وہاں سینچائی کا اچھا پربندھ کردیا گیا ہے۔ وہاں کے باغ پھولوں اور پھلوں سے لدے ہوئے ہیں۔ جو زمین جوتائی کے قابل ہے اس کو آپسی سہیوگ والی کھیتی کے لئے چھوڑ دیا گیا ہے ۔ وہاں کے کسان بہت خوش ہیں کیونکہ وہ جانتے ہیں کہ اُن کی محنت کا پھل اُن کو ملے گا ۔ اُن کو کسی قسم کا ڈر نہیں رہتا ۔ کسان زیادہ سے زیادہ پیدا کرنے کی فکر میں رہتے ہیں ۔ لوگوں میں تعلیم کا پرچار کرنے اور سائنس کی معلومات بڑھانے کے لئے وہاں ریڈیو اور کلچری سنستھاؤں کا بندوبست ہے ۔ اِس طرح لوگوں کو اپنے گھر بیٹھے بیٹھے تمام معلومات حاصل ہو جاتی ہیں ۔ 'جنتا کی آواز' میں زور ہے ۔ وہاں کے لوگ جی جان سے اپنے ملک کی ترقی میں ہاتھ بٹاتے ہیں ۔

آج کے روس میں ایک بات اہم ہے وہ یہ کہ وہاں پر جو کام بھی شروع کیا جاتا ہے وہ ایک ڈھنگ اور سوچ وچار کے بعد کیا جاتا ہے ۔ لوگ کام سے پہلے اُس پر بحث کرتے ہیں ۔ جب سب پہلوؤں پر غور ہو چکتا ہے تب اُس یوجنا کو عمل میں لایا جاتا ہے ۔

ضرورت کی تمام چیزیں پیدا کرنے کے بعد پیدا کرنے والے کو اس بات کا پکا یقین رہتا ہے کہ اُس کا بدلاؤ ٹھیک ڈھنگ سے کیا جائے گا ۔ یہ سب کام سرکار اپنی دیکھ ریکھ میں کرتی ہے ۔ اِس طرح کا ادل بدل ملک کی اندرونی کرنسی پر کافی اثر ڈالتا ہے ۔ روبل ایک طرح کا کوپن ہوتا ہے ۔ اِس کو سود پر دینے کا رواج نہیں ہے، نہ کوئی اِسے جمع کر سکتا ہے اور نہ اُس کو اپنی تجوری میں رکھ سکتا ہے ۔ اِس طرح ایک بڑا فائدہ ہوتا ہے اور وہ یہ کہ لوگ ہمیشہ روبل دے کر روزانہ کی چیزیں لینے کے لئے اُتسک رہتے ہیں۔ دکانیں روز مرہ کے استعمال کے چیزوں سے بھری ہوئی ہیں ۔ کھانے والی چیزوں کی وہاں کافی افراط ہے ۔ اِس کے علاوہ شوق کی چیزیں بھی وہاں کافی ماترا میں پائی جاتی ہیں ۔

کام کو اچھے ڈھنگ پر چلانے کے لئے وہاں کے مزدوروں کو اچھی مزدوری دی جاتی ہے۔ یہ مزدوری اُن کی محنت

जग शान्ति और रूस

(डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा)

शान्ति की कई क़िसमें होती हैं. उनके फ़रक़ को साफ़ साफ़ समझ लेना हम सब के लिये ज़रूरी है. सब से पहले 'क़ब्रिस्तान की शान्ति' का नम्बर आता है. 'क़बरिस्तान की शान्ति' उस शान्ति को कहते हैं जब एक मुल्क दूसरे मुल्क पर चढ़ाई कर देता है और उसको मुर्दा और बेजान बना कर छोड़ देता है इसके बाद ज्वालामुखी की शान्ति का नम्बर आता है. हम एक राष्ट्र को जीतने के बाद और फ़ौजी ताक़त से ग़ुलाम बनाने के बाद वहां शान्ति क़ायम कर देते हैं लेकिन हारे हुए राष्ट्र में नफ़रत की भावना पैदा होती है और वह हमेशा खुली बग़ावत की ताक में रहता है तीसरी तरह की वह शान्ति है जिसे हम आरज़ी सुलह का नाम देते हैं. इसमें शान्ति क़ायम रहती है क्योंकि दोनों फ़रीक़ों को अपनी ताक़त का पूरा अन्दाज़ा नहीं होता और वह अपने को मज़बूत करने के लिये मोहलत चाहते हैं.

ऊपर लिखी हालतों को असली शान्ति के नाम से नहीं पुकारा जा सकता. असली शान्ति बाहरी और दिखावटी चीज़ों से हासिल नहीं की जा सकती. इसके लिये ज़रूरी है कि हम अपने अन्दर की आवाज़ को सुनें. उसको पहचानें और अमल में लाने की कोशिश करें. असली शान्ति के लिये यह भी ज़रूरी है कि जनता को इस बात का यक़ीन हो कि उसकी ज़िन्दगी की तमाम आवश्यकताओं को पूरा किया जायगा. यह काम तभी किया जा सकता है जब जनता भी इस काम में हाथ बटाए. इस तरह यह साफ़ हो जाता है कि दुनिया के हर देश को इस बात की कोशिश करनी चाहिये कि इनसानी ज़रूरत की तमाम चीज़ें सहयोग से पैदा कर ली जायं.

इस तरह की शान्ति की राह पर ही सोवियत रूस अपना क़दम बढ़ा रहा है. सोवियत रूस में दूसरे मुलकों से तिजारत सरकार के माध्यम से की जाती है. इसके अलावा वहां इस बात की कोशिश हो रही है कि हर स्त्री, पुरुष, बच्चे को जीवन की तमाम ज़रूरी सहूलियतें पहुंचाई जायं. साथ ही लोगों की कलचरी मांगों को भी पूरा किया जा रहा है. अगर दुनिया के तमाम देश इस तरह ईमानदारी, मेहनत और लगन से काम करें तो विश्व भर में मुस्तक़िल शान्ति क़ायम हो सकती है.

गांधी जी ने हम को बताया था कि एक भूके आदमी को भगवान रोटी की शकल में दर्शन देते हैं. इसी असूल को मान कर सोवियत वाले अनाज और ज़िन्दगी की दूसरी

جگ شانتی اور روس

(ڈاکٹر جے . سی . کمارپا)

شانتی کی کئی قسمیں ہوتی ہیں . اُن کے فرق کو صاف صاف سمجھ لینا ہم سب کے لئے ضروری ہے . سب سے پہلے ' قبرستان کی شانتی' کا نمبر آتا ہے . ' قبرستان کی شانتی' اُس شانتی کو کہتے ہیں جب ایک ملک دوسرے ملک پر چڑھائی کر دیتا ہے اور اُس کو مردہ اور بے جان بنا کر چھوڑ دیتا ہے . اِس کے بعد جوالا مکھی کی شانتی کا نمبر آتا ہے . ہم ایک راشٹر کو جیتنے کے بعد اور فوجی طاقت سے غلام بنانے کے بعد وہاں شانتی قائم کر دیتے ہیں لیکن ہارے ہوئے راشٹر میں نفرت کی بھاونا پیدا ہوتی ہے اور وہ ہمیشہ کھلی بغاوت کی تاک میں رہتا ہے . تیسری طرح کی وہ شانتی ہے جسے ہم عارضی صلح کا نام دیتے ہیں . اِس میں شانتی قائم رہتی ہے کیونکہ دونوں فریقوں کو اپنی طاقت کا پورا اندازہ نہیں ہوتا اور وہ اپنے کو مضبوط کرنے کے لئے مہلت چاہتے ہیں .

اوپر لکھی حالتوں کو اصلی شانتی کے نام سے نہیں پکارا جا سکتا . اصلی شانتی باہری اور دکھاوٹی چیزوں سے حاصل نہیں کی جا سکتی . اس کے لئے ضروری ہے کہ ہم اپنے اندر کی آواز کو سنیں' اس کو پہچانیں اور عمل میں لانے کی کوشش کریں . اصلی شانتی کے لئے یہ بھی ضروری ہے کہ جنتا کو اس بات کا یقین ہو کہ اس کی زندگی کی تمام آوشیکتاؤں کو پورا کیا جائے گا . یہ کام تبھی کیا جا سکتا ہے جب جنتا بھی اِس کام میں ہاتھ بٹائے . اِس طرح یہ صاف ہو جاتا ہے کہ دنیا کے ہر دیش کو اِس بات کی کوشش کرنی چاہئے کہ انسانی ضرورت کی تمام چیزیں سہیوگ سے پیدا کر لی جائیں .

اِس طرح کی شانتی کی راہ پر ہی سوویت روس اپنا قدم بڑھا رہا ہے . سوویت روس میں دوسرے ملکوں سے تجارت سرکار کے مادھیم سے کی جاتی ہے . اِس کے علاوہ وہاں اس بات کی کوشش ہو رہی ہے کہ ہر اِستری' پرش' بچے کو جیون کی تمام ضروری سہولتیں پہونچائی جائیں . ساتھ ہی لوگوں کی کلچری مانگوں کو بھی پورا کیا جا رہا ہے . اگر دنیا کے تمام دیش اِس طرح ایمانداری' محنت اور لگن سے کام کریں تو وشو بھر میں مستقل شانتی قائم ہو سکتی ہے .

گاندھی جی نے ہم کو بتایا تھا کہ ایک بھوکے آدمی کو بھگوان روٹی کی شکل میں درشن دیتے ہیں . اِسی اصول کو مان کر سوویت والے اناج اور زندگی کی دوسری

इसी को दूसरे सूफ़ी ने इन शब्दों में कहा है :—

"दर्दे दिल के वास्ते पैदा किया इनसान को
वरना ताअत के लिये कुछ कम न थे कर्रोबियां" (फ़रिश्ते)

इन्जील में भी यह ख़याल बार बार तरह तरह से आता है. लिखा है :—

"हम इस बात को अच्छी तरह समझकर कि असल में रूह और ख़ुदा एक हैं. ख़ुदा के साथ मिल सकते हैं और एक हो सकते हैं, जिनके दिल पाक हैं वही ख़ुदा को देख सकते हैं."

यह बात भी सब मज़हबों में मिलती है कि जब आदमी इस हालत को पहुँच जाता है तो फिर उसे धर्म और मज़हबों के इस तरह के हुकमों की ज़रूरत नहीं रहती—यह करो और यह न करो. वह इन नियमों से ऊपर उठ जाता है. उसी को 'धर्मात्मा' या 'सलीम' कहते हैं.

शंकराचार्य ने लिखा है :—

"जो आदमी तीनों गुणों से ऊपर उठ जाता है उसके लिये फिर न कोई विधि रह जाती है और न कोई निषेध."

जो रूहें इस बात को अनुभव कर लेती हैं कि सबके अन्दर एक ही आत्मा है, कोई ग़ैर नहीं, कोई अलग नहीं, कोई दूसरा नहीं, वही पूर्ण पुरुष, दिव्य पुरुष, जीवन मुक्त, अवतार, बुद्ध, बोधि सत्त्व, अर्हत, तीर्थंकर, मसीह, क्राइस्ट, इनसाने कामिल, मज़हरे अतम्म, वग़ैरा वग़ैरा नामों से पुकारी जाती हैं.

इंजील में लिखा है :—

"जिस तरह स्वर्ग में तुम्हारा पिता (यानी परमेश्वर) कामिल है उसी तरह तुम भी कामिल हो जाओ, और तुम सचाई को जान लोगे, और सचाई तुम्हें आज़ाद कर देगी, तुम देवता हो.

मोहम्मद साहब की एक हदीस है :—

"अल्लाह कहता है ऐ आदमी ! तू मेरे क़ानूनों पर चल, बिला शुबह तू मेरी ही तरह हो जायगा, फिर अगर तू किसी बात के लिये भी कहेगा वह हो जाय तो वह बात फ़ौरन हो जायगी !"

गीता में लिखा है :—

"वह रिशी लोग जिन के सब पाप धुल गए हैं, जिनकी दुविधा मिट गई है, जिन्होंने आत्मा को जीत लिया है, जो सब प्राणियों के भले में लगे रहते हैं, जिनकी इन्द्रियां यानी नफ़्स उनके क़ाबू में हैं. जो सब को एक निगाह से देखते हैं वही भगवान को पाते हैं."

सूफ़ी कहता है :—

"जो आदमी मर्दे कामिल हो जाता है वह सब का मालिक होते हुए भी सब की ग़ुलामी यानी ख़िदमत में लगा रहता है."

इसीलिये ईश्वर अल्लाह के नामों में से एक नाम दासानुदास यानी दासों का दास भी है.

اسی کو دوسرے صوفی نے ان شبدوں میں کہا ہے :—

'' درد دل کے واسطے پیدا کیا انسان کو
ورنہ طاعت کے لئے کچھ کم نہ تھے کرو بیاں'' (فرشتے)

انجیل میں بھی یہ خیال بار بار طرح طرح سے آتا ہے . لکھا ہے :—

'' ہم اس بات کو اچھی طرح سمجھکر کہ اصل میں روح اور خدا ایک ہیں' خدا کے ساتھ مل سکتے ہیں اور ایک ہو سکتے ہیں' جن کے دل پاک ہیں وہی خدا کو دیکھ سکتے ہیں .''

یہ بات بھی سب مذہبوں میں ملتی ہے کہ جب آدمی اس حالت کو پہنچ جاتا ہے تو پھر اسے دھرم اور مذہبوں کے اس طرح کے حکموں کی ضرورت نہیں رہتی —یہ کرو اور یہ نہ کرو . وہ ان نیموں سے اوپر اٹھ جاتا ہے . اسی کو دھرماتما' یا ' سلیم ' کہتے ہیں .

شنکر اچاریہ نے لکھا ہے :—

'' جو آدمی تینوں گنوں سے اوپر اٹھ جاتا ہے اس کے لئے پھر نہ کوئی ودھی رہ جاتی ہے اور نہ کوئی نشیدھ .''

جو روحیں اس بات کو انوبھو کر لیتی ہیں کہ سب کے اندر ایک ہی آتما ہے' کوئی غیر نہیں' کوئی الگ نہیں' کوئی دوسرا نہیں' وہی پورن پرش' دویہ پرش' جیون مکت' اوتار' بدھ' بودھی ستو' ارہت' تیرتھنکر' مسیح' کرائسٹ' انسان کامل' مظہر اتم' وغیرہ وغیرہ ناموں سے پکاری جاتی ہیں .

انجیل میں لکھا ہے :—

'' جس طرح سورگ میں تمہارا پتا (یعنی پرمیشور) کامل ہے اسی طرح تم بھی کامل ہو جاؤ' اور تم سچائی کو جان لوگے اور سچائی تمہیں آزاد کر دے گی' تم دیوتا ہو .''

محمد صاحب کی ایک حدیث ہے :—

'' اللہ کہتا ہے اے آدمی ! تو میرے قانونوں پر چل' بلا شبہ تو میری ہی طرح ہو جائے گا' پھر اگر تو کسی بات کے لئے بھی کہے گا یہ ہو جائے تو وہ بات فوراً ہو جائے گی!''

گیتا میں لکھا ہے :—

'' وہ رشی لوگ جن کے سب پاپ دھل گئے ہیں' جن کی دبدھا مٹ گئی ہے' جنہوں نے آتما کو جیت لیا ہے' جو سب پرانیوں کے بھلے میں لگے رہتے ہیں' جن کی اندریاں یعنی نفس ان کے قابو میں ہیں' جو سب کو ایک نگاہ سے دیکھتے ہیں وہ ہی بھگوان کو پاتے ہیں .''

صوفی کہتا ہے :

'' جو آدمی مرد کامل ہو جاتا ہے وہ سب کا مالک ہوتے ہوئے بھی سب کی غلامی یعنی خدمت میں لگا رہتا ہے .''

اسی لئے ایشور اللہ کے ناموں میں سے ایک نام داسانوداس یعنی داسوں کا داس بھی ہے .

हर आन हंसी, हर आन खुशी
हर वक़्त अमीरी है बाबा
जब आशिक़ मस्त फ़क़ीर हुए
फिर क्या दिल गीरी है बाबा"

इसलाम का मशहूर मक़ूला है :—"जिसने अपने आपको जान लिया उसने अपने रब को पहचान लिया."

दुनिया के सब सन्त महात्माओं, अवतारों, पैग़म्बरों और तीर्थंकरों ने, सब बड़े बड़े धर्मों ने और सब धर्म ग्रंथों ने तरह तरह से इसी एक सचाई को दुनिया के लोगों के दिलों पर जमाने की कोशिश की है.

पारसी गाथा में लिखा है :—

"मेरी अन्तर आत्मा मेरे अन्दर जागी. उसने हिलाकर मुझ से पूछा 'सोच तू कौन है ? किसका है ? यहां क्यों है ? क्या कर रहा है ? इस ज़िन्दगी का मक़सद तू कब समझेगा ? उस समय मैंने समझा कि मैं ही सब कुछ हूँ, मैं ही अहुरमज़्द हूं मैं ही सब की आत्मा हूँ, सब में मैं ही रमा हुआ हूं."

उपनिषद् में लिखा है :—

"अपनी आत्मा को जानो. आत्मा ही एक जानने की चीज़ है. आत्मा ही को ढंढो, अपनी आत्मा को जान लिया तो सारी दुनिया को जान लिया. आत्मा ही देखने की, सुनने की, समझने की और ध्यान करने की चीज़ है. और कुछ है ही नहीं."

मशहूर यूनानी सन्त सोलोन कहा करता था :—

"अपने आपको जानो."

क़ुरान में लिखा है :—

"जो अल्लाह को भूल जाता है वह अपने को भूल जाता है."

एक हिन्दू सन्त ने इसी बात को दूसरी तरह कहा है :— "जाके घर सुख का भंडारा
सो क्यों भरमे दर दर मारा

सूफ़ी कहता है :—

"हो के सुलताने हक़ीक़त इसी आब ओगिल (पानी और मिट्टी) में
दर बदर मिस्ले गदा (भिकारी) था, मुझे मालूम न था"

उपनिषदों में यह ख़याल जगह जगह बहुत ही गहराई और तफ़सील के साथ ज़ाहिर किया गया है.

अपने में भगवान को देखना तब ही मुमकिन है जब आदमी पहले दूसरों में अपने को देखे. इसीलिये सूफ़ी ने कहा है :— "कुफ़्र काफ़िर रा व दीन दीनदार रा
ज़र्रए दर्दे दिले अत्तार रा

यानी—काफ़िर को कुफ़्र मुबारक रहे, और दीनदार को दीन मुबारक रहे. अत्तार (नाम सन्त) के दिल के लिये प्रेम रूपी गुलाब की पंखड़ी का एक ज़र्रा काफ़ी है."

ہر آن ہنسی، ہر آن خوشی
ہر وقت امیری ہے بابا
جب عاشق مست فقیر ہوئے
پھر کیا دلگیری ہے بابا."

اسلام کا مشہور مقولہ ہے :—

" جس نے اپنے آپ کو جان لیا اُس نے اپنے رب کو پہچان لیا."

دنیا کے سب سنت، مہاتماؤں، اوتاروں، پیغمبروں اور تیرتھنکروں نے، سب بڑے بڑے دھرموں نے اور سب دھرم گرنتھوں نے طرح طرح سے اسی ایک سچائی کو دنیا کے لوگوں کے دلوں پر جمانے کی کوشش کی ہے.

پارسی گاتھا میں لکھا ہے :—

" میری انتر آتما میرے اندر جاگی. اُس نے ہلا کر مجھ سے پوچھا ' سوچ تو کون ہے ؟ کس کا ہے ؟ یہاں کیوں ہے ؟ کیا کر رہا ہے ؟ اس زندگی کا مقصد تو کب سمجھے گا ؟ اُس سمے میں نے سمجھا کہ میں ہی سب کچھ ہوں، میں ہی اہرمزد ہوں، میں ہی سب کی آتما ہوں، سب میں میں ہی رما ہوا ہوں."

اُپنشد میں لکھا ہے :—

" اپنی آتما کو جانو. آتما ہی ایک جاننے کی چیز ہے. آتما ہی کو ڈھونڈھو. اپنی آتما کو جان لیا تو ساری دنیا کو جان لیا. آتما ہی دیکھنے کی، سننے کی، سمجھنے کی اور دھیان کرنے کی چیز ہے. اور کچھ ہے ہی نہیں."

مشہور یونانی سنت سولون کہا کرتا تھا :—

" اپنے آپ کو جانو."

قرآن میں لکھا ہے :—

" جو اللہ کو بھول جاتا ہے وہ اپنے کو بھول جاتا ہے."

ایک ہندو سنت نے اِسی بات کو دوسری طرح کہا ہے :—

" جاکے گھر سکھ کا بھنڈارا
سو کیوں بھرمے در در مارا."

صوفی کہتا ہے :—

" ہو کے سلطانِ حقیقت اِسی آب گل (پانی اور مٹی) میں در بدر مثل گدا (بھکاری) تھا، مجھے معلوم نہ تھا."

اُپنشدوں میں یہ خیال جگہ جگہ بہت ہی گہرائی اور تفصیل کے ساتھ ظاہر کیا گیا ہے.

اپنے میں بھگوان کو دیکھنا تب ہی ممکن ہے جب آدمی پہلے دوسروں میں اپنے کو دیکھے. اِسی لئے صوفی نے کہا ہے :—

کفر کافر را و دین دیندار را
ذرۂ دردے دل عطا را

یعنی—کافر کو کفر مبارک رہے، اور دین دار کو دین مبارک رہے. عطار (نام سنت) کے دل کے لئے پریم روپی گلاب کی پنکھڑی کا ایک ذرا کافی ہے."

बुलबुला नेम, कि अज़ क़ज़ा व क़द्र
ओफ़्तादा जुदा ज़े गुलज़ारेम
मन न दानम कि अन्दर ईं हैरत
ब विसाले कि दाद पैग़ामेम
कि ब चश्माने दिल मबीं जुज़ दोस्त
हरचे बीनी बिदां कि मज़हरे ओस्त."

"यानी—हम अपने प्रीतम परमात्मा के कूचे के रहने वाले हैं. इस दुनिया की तरफ़ या रीत रिवाज वाले दीनों की तरफ़ हम मुंह नहीं करते. हम उस बाग़ की बुलबुलें हैं जहां से क़ज़ा और क़द्र ने यानी भाग्य ने हमें बाहर फेंक दिया है. अब हैरत है कि उस प्रीतम के विसाल यानी फिर से मिलने ने हमें यह संदेशा दिया है कि अपने दिल की आंखों से जिस किसी को देखो उसे सिवाय अपने दोस्त के और कुछ न समझो, जान लो कि जो कुछ तुम देख रहे हो सब उसी प्रीतम का ज़हूर है, उसी का रूप है."

वेद का कहना है:—

"मित्रस्य चक्षुषा पश्येम"

यानी सारी दुनिया को मित्र यानी दोस्त की आंख से देखो.

सूफ़ी लिखता है:—

"कुफ़्रो इसलाम दर रहत पोयां
वहदहू लाशरीक लह गोयां"

"हर कस तालिबे यारन्द चे हुशियारो चे मस्त
हमा जा खानए इश्क़ अस्त, चे मस्जिद चे कनिश्त"

"तू ही मक़सूद है काबा व बुतख़ाना बहाना है."

यानी—कुफ़्र और इसलाम दोनों उसी अल्लाह की राह की राह में दौड़े जा रहे हैं, दोनों यही कहते हैं—वह एक है, उस का कोई शरीक नहीं, हर आदमी उसी प्रीतम को खोज रहा है, क्या समझदार और क्या मस्त. सब घर उसी के प्रेम के घर हैं. क्या मस्जिद और क्या गिरजा. असली मक़सद या लक्ष्य वही ईश्वर अल्लाह है, काबा और बुतख़ाना उसी तक पहुँचने के रास्ते हैं.

हिन्दुस्तान के मशहूर सन्त शायर नज़ीर अकबर आबादी ने कहा है:—

"जिस सिम्त नज़र कर देखे है
उस दिलबर की फुलवारी है
कहीं सबज़ी की हरियाली है
कहीं फूलों की गुल कारी है
दिन रात मगन ख़ुश बैठे हैं
और आस उसी की भारी है
बस आप ही वह दातारी है
और आप ही वह भंडारी है

بلبلۂ ایم کہ از قضا و قدر
اوفتادہ جدا ز گلزاریم
من نہ دانم کہ اندر ایں حیرت
با وصالے کہ داد پیغا میم
کہ با چشمانِ دل مبیں جز دوست
ہر چہ بینی بداں کہ مظہرے اوست"

"یعنی—ہم اپنے پریتم پرماتما کے کوچے کے رہنے والے ہیں. اس دنیا کی طرف یا ریت رواج والے دینوں کی طرف ہم منہ نہیں کرتے. ہم اس باغ کی بلبلیں ہیں جہاں سے قضا اور قدر نے یعنی بھاگیہ نے ہمیں باہر پھینک دیا ہے. اب حیرت ہے کہ اس پریتم کے وصال یعنی پھر سے ملنے نے ہمیں یہ سندیشا دیا ہے کہ اپنے دل کی آنکھوں سے جس کسی کو دیکھو اسے سوائے اپنے دوست کے اور کچھ نہ سمجھو، جان لو کہ جو کچھ تم دیکھ رہے ہو سب اسی پریتم کا ظہور ہے، اسی کا روپ ہے."

وید کا کہنا ہے:—

" مترسیہ چکشوشا پشیم "

یعنی ساری دنیا کو متر یعنی دوست کی آنکھ سے دیکھو.

صوفی لکھتا ہے :—

" کفرو اسلام در رہت پویاں
وحدہ لاشریک لہ گویاں"

" ہر کس طالب یار اند چہ ہوشیار وچہ مست
ہما جا خانۂ عشق است، چہ مسجد چہ کنشت"

" تو ہی مقصود ہے کعبہ و بت خانہ بہانا ہے."

یعنی—کفر اور اسلام دونوں اسی اللہ کی راہ میں دوڑے جا رہے ہیں، دونوں یہی کہتے ہیں—وہ ایک ہے، اس کا کوئی شریک نہیں، ہر آدمی اسی پریتم کو کھوج رہا ہے، کیا سمجھدار اور کیا مست. سب گھر اسی کے پریم کے گھر ہیں، کیا مسجد اور کیا گرجا. اصلی مقصد یا لکش وہی ایشور اللہ ہے، کعبہ اور بت خانہ اسی تک پہنچنے کے راستے ہیں.

ہندستان کے مشہور سنت شاعر ' نظیر ' اکبر آبادی نے کہا ہے :—

" جس سمت نظر کر دیکھے ہے
اس دلبر کی پھلواری ہے
کہیں سبزی کی ہریالی ہے
کہیں پھولوں کی گلکاری ہے
دن رات مگن خوش بیٹھے ہیں
اور آس اسی کی بھاری ہے
بس آپ ہی وہ داتا ری ہے
اور آپ ہی وہ بھنڈاری ہے

उपनिषद् में लिखा है :—

"परमात्मा इस सृष्टि को रच कर उसमें इसी तरह रम जाता है जिस तरह जिस्म के अन्दर रूह. यह विश्व ही उसका जिस्म है. जो इस बात को समझ ले और इस एकता को देख ले उसके लिये फिर न कोई मोह है और न कोई शोक."

मुसलमान सूफ़ी लिखता है:—

"हक़ यानी परमेश्वर सारे जहान की जान है, और यह सारा जहान उसका जिस्म है, यही तौहीद है और सब रोज़गार और खेल हैं."

इसी हालत को 'सरूरे जावेदानी,' 'आत्म लाभ,' 'विसाल' या 'कैवल्य' 'एकी भाव' या 'वहदत' कहते हैं.

अपने अपने रास्तों से, अलग अलग और तरह तरह के रास्तों से, सब लोग सब जानदार उसी तरफ़ जा रहे हैं. यह मंज़िल सब के अन्दर है, इसीलिये सब अन्दर की तरफ़ मुड़ रहे हैं. दुनिया के सब धर्म, मज़हब और फ़िलासफ़ियां केवल अपने घर वापिस जाने की बेचैनी हैं. इसीलिये कृष्ण ने गीता में कहा है:—

"ऐ अर्जुन लोग सब तरफ़ से चल कर मुझ तक ही पहुंचते हैं, जो जिस रास्ते से आता है उसे उसी रास्ते से मैं मिलता हूँ."

पारसी गाथा में लिखा है:—

"ज्ञान और बढ़ते हुए विचारों के ज़ोर से, ऐ अहुर मज़्द, हम तुझमें आ मिलेंगे. वही हमारी शुरू की ज़िन्दगी थी."

जैन ग्रंथ 'ज्ञानार्णव, में लिखा है:—

यही सब से बड़ा ज्ञान है, यही विज्ञान है, यही ध्यान है, यही परम तप है कि यह आत्मा फिर से अपने को पहचान ले और फिर से अपने रूप में लीन हो जाय."

यहूदी किताब ज़ोहर में लिखा है:—

"दुनिया की सब चीज़ें, सब रूहें और उनके सब जिस्म अपने जिस असल से निकले थे उसी में जा मिलेंगे."

गीता में भगवान ने कहा है कहा है :—

"बहुत से जन्मों के बाद ज्ञानी मुझे आ मिलता है."

चीनी ताओ धर्म की किताब 'ताओ तेह किंग' में लिखा है :—

"ज़िन्दगी बाहर निकलना है, मौत घर लौटना है."

शेख़ सादी ने एक बहुत ही प्यारी, सुन्दर छोटी सी किताब लिखी है जिस का नाम है मा मुक़ीमां. उसकी शुरू की और आख़िरी की लाइनें यह हैं:—

"मा मुक़ी माने कूए दिल दारेम
कश बदुनिया बदीन नमी आरेम

اپنشد میں لکھا ہے :—

"پرماتما اس سرشٹی کو رچ کر اس میں اسی طرح رم جاتا ہے جس طرح جسم کے اندر روح . یہ وشو ہی اس کا جسم ہے' جو اس بات کو سمجھ لے اور اس ایکتا کو دیکھ لے اس کے لئے پھر نہ کوئی موہ ہے اور نہ کوئی شوک ."

مسلمان صوفی لکھتا ہے :—

"حق یعنی پرمیشور سارے جہان کی جان ہے' اور یہ سارا جہان اس کا جسم ہے' یہی توحید ہے اور سب روزگار اور کھیل ہیں ."

اسی حالت کو 'سرور جاودانی' 'آتم لابھ' 'وصال' یا 'کیولیہ' 'ایکی بھاؤ' یا 'وحدت' کہتے ہیں .

اپنے اپنے راستوں سے' الگ الگ اور طرح طرح کے راستوں سے سب لوگ سب جاندار اسی طرف جا رہے ہیں . یہ منزل سب کے اندر ہے' اسی لئے سب اندر کی طرف مڑ رہے ہیں . دنیا کے سب دھرم' مذہب اور فلاسفیاں کیول اپنے گھر واپس جانے کی بےچینی ہیں . اسی لئے کرشن نے گیتا میں کہا ہے :—

"اے ارجن لوگ سب طرف سے چل کر مجھ تک ہی پہنچتے ہیں' جو جس راستے سے آتا ہے اسے اسی راستے سے میں ملتا ہوں ."

پارسی گاتھا میں لکھا ہے :—

"گیان اور بڑھتے ہوئے وچاروں کے زور سے' اے اہورمزد ہم تجھ میں آ ملیں گے . وہی ہماری شروع کی زندگی تھی ."

جین گرنتھ گیان آرنو' میں لکھا ہے :—

"یہی سب سے بڑا گیان ہے' یہی وگیان ہے' یہی دھیان ہے' یہی پرم تپ ہے کہ یہ آتما پھر سے اپنے کو پہچان لے اور پھر سے اپنے روپ میں لین ہو جائے ."

یہودی کتاب زہر میں لکھا ہے :—

"دنیا کی سب چیزیں' سب روحیں اور ان کے سب جسم اپنے جس اصل سے نکلے تھے اسی میں جا ملیں گے."

گیتا میں بھگوان نے کہا ہے :—

"بہت سے جنموں کے بعد گیانی مجھے آ ملتا ہے ."

چینی تاؤ دھرم کی 'کتاب تاؤ تہ کنگ' میں لکھا ہے :—

"زندگی باہر نکلنا ہے' موت گھر لوٹنا ہے ."

شیخ سعدی نے ایک بہت ہی پیاری سندر چھوٹی سی کتاب لکھی ہے جس کا نام ہے مامقیماں . اس کی شروع کی اور آخیر کی لائنیں یہ ہیں :—

"ما مقیمان کوئے دل داریم
رخ با دنیا و دین نمی آریم

अपनी ही लीला है, इसमें कोई गैर नहीं. तब आत्मा डर, शक और दुख के बन्धनों से आज़ाद हो जाता है. फिर न पाप रहता है न पुन्य, न कोई वहम या अन्ध विश्वास. किसी न किसी समय, जल्दी या देर में यह मुक्ति, यह नजात हर जीव आत्मा को हासिल होती है. तरह तरह के सुख दुखों, पाप पुन्यों और ज़िन्दगी की ऊंच नीच में से निकलते हुए सब इस मंज़िल पर जा पहुँचते हैं, क्योंकि सब रूहें आखिर उसी एक रूहे कुल का अंश हैं.

वैदिक धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म में इसे मुक्ति या निर्वान और इसलाम में इसे नजात या फ़ना फ़िल्लाह कहते हैं. फ़ना फ़िल्लाह के ठीक वही मानी हैं जो निर्वान के हैं यानी अपनी अलहदगी का फ़ना या खतम हो जाना. क़ुरान की मशहूर आयत है—

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन

यानी हम सब अल्लाह से आए हैं और लौट कर अल्लाह ही में जा मिलेंगे.

यहूदी इस आखिरी हालत को "प्रेम का महल" कहते हैं. ग्नोस्टिक समप्रदाय के लोग इसे 'अनन्त ज्योति या अब्दी नूर का भन्डार" कहा करते थे. ईसाई इसे "किंगडम आफ़ हैविन" यानी स्वर्ग का राज कहते हैं. अलग अलग धर्मों के सन्तों, सूफ़ियों और महात्माओं ने इसे और भी तरह तरह से बयान किया है. सेन्ट पाल ने लिखा है कि:—

"सचाई (यह सचाई कि आत्मा और परमात्मा एक हैं) तुम्हें सब बन्धनों से आज़ाद कर देगी."

इस हालत को पहुंच कर फिर कोई 'इतरता' यानी 'गैरियत' नहीं रह जाती. "अंश" "पूर्ण" हो जाता है. 'अनानियते अदना' 'अनानियते आला' हो जाती है. 'शख़सियते अदना' 'शख़सियते आला' हो जाती है. ख़ुद या ख़ुदी ख़ुदा हो जाती है. बूंद समन्दर हो जाती है. यहां पहुँच कर रूह को इश्क़े मजाज़ी और इश्क़े हक़ीक़ी का फ़र्क़ समझ में आता है. इसी हालत का नाम सच्चिदानन्द है.

ऋगवेद में एक प्रार्थना आती है:—

"यद् अग्ने स्याम् अह मृत्वं, त्वंवाधा स्या अहम्"

यानी ऐ अग्नि मैं तू हो जाऊं और तू मैं हो जाय.

अग्नि आत्मा के अन्दर की उस रोशनी का नाम है जो आदमी को आगे का रास्ता दिखाती है.

सूफ़ी ने इसी हालत को बयान करते हुए कहा है:—

मन तू शुदम तू मन शुदी मन तन शुदम तू जां शुदी
ता कस न गोयद बाद अज़ीं मन दीगरम तू दीगरी

यानी मैं तू हो गया और तू मैं हो गया मैं जिस्म हो गया और तू जान हो गया. ताकि इसके बाद कोई यह न कहे कि मैं और हूँ और तू और है.

اپنی ہی لیلا ہے، اس میں کوئی غیر نہیں. تب آتما ڈر، شک اور دکھ کے بندھنوں سے آزاد ہو جاتا ہے . پھر نہ پاپ رہتا ہے نہ پنیہ، نہ کوئی وہم یا اندھ وشواش. کسی نہ کسی سمے، جلدی یا دیر میں یہ مکتی، یہ نجات ہر جیو آتما کو حاصل ہوتی ہے. طرح طرح کے سکھ دکھوں، پاپ پنیوں اور زندگی کی اونچ نیچ میں سے نکلتے ہوئے سب اِس منزل پر جا پہنچتے ہیں، کیونکہ سب روحیں آخر اسی ایک روح کل کا انش ہیں .

ویدک دھرم، بودھ دھرم اور جین دھرم میں اِسے مکتی یا نروان اور اِسلام میں اِسے نجات یا فنافی اللہ کہتے ہیں . فنافی اللہ کے ٹھیک وہی معنی ہیں جو نروان کے ہیں یعنی اپنی علیحدگی کا فنا یا ختم ہو جانا . قرآن کی مشہور آیت ہے—

اِنّا للہ و انّا اِلیہ راجعون

یعنی ہم سب اللہ سے آئے ہیں اور لوٹ کر اللہ ہی میں جا ملیں گے .

یہودی اِس آخری حالت کو "پریم کا محل" کہتے ہیں . گنوسٹک سمپردائے کے لوگ اِسے "اننت جیوتی یا ابدی نور کا بھنڈار" کہا کرتے تھے . عیسائی اِسے "کنگڈم آف ہیون" یعنی سورگ کا راج کہتے ہیں . الگ الگ دھرموں کے سنتوں، صوفیوں اور مہاتماؤں نے اِسے اور بھی طرح طرح سے بیان کیا ہے . سنٹ پال نے لکھا ہے کہ :—

"سچائی (یہ سچائی کہ آتما اور پرماتما ایک ہیں) تمہیں سب بندھنوں سے آزاد کردے گی ."

اِس حالت کو پہنچ کر پھر کوئی 'اِترتا' یعنی 'غیریت' نہیں رہ جاتی . "انش" "پورن" ہو جاتا ہے . 'انانیت ادنیٰ' 'انانیت اعلیٰ' ہو جاتی ہے. شخصیت ادنیٰ شخصیت اعلیٰ ہو جاتی ہے . خود یا خودی خدا ہو جاتی ہے . بوند سمندر ہو جاتی ہے' یہاں پہنچ کر روح کو عشق مجازی اور عشق حقیقی کا فرق سمجھ میں آتا ہے . اِسی حالت کا نام سچدانند ہے .

رگ وید میں ایک پرارتھنا آتی ہے :—

"ید اگنے سیام اہم توم' توم وادھاسیا اہم"

یعنی اے اگنی میں تو ہو جاؤں اور تو میں ہو جائے.

اگنی آتما کے اندر کی اس روشنی کا نام ہے جو آدمی کو آگے کا راستہ دکھاتی ہے .

صوفی نے اِسی حالت کو بیان کرتے ہوئے کہا ہے :—

من تو شدم تو من شدی من تن شدم تو جاں شدی
تاکس نہ گوید بعد ازیں من دیگرم تو دیگری

یعنی میں تو ہوگیا اور تو میں ہوگیا' میں جسم ہوگیا اور تو جان ہوگیا . تاکہ اِس کے بعد کوئی یہ نہ کہے کہ میں اور ہوں اور تو اور ہے .

ज़िन्दगी का मक़सद है—सबके अन्दर एक ही आत्मा को देखना.

(डाक्टर भगवानदास)

हमारी ज़िन्दगी की आख़िरी सबसे बड़ी सचाई ही हमारी ज़िन्दगी का मक़सद है. आत्मा लौट कर अपने असल आपे में जा मिलती है, अपने उस अनन्त रूप में जा मिलती है जिसे वह भूल गया था और जो उसे अब फिर से याद आ जाता है भटका हुआ मुसाफ़िर अपने घर लौट आता है. दूसरे शब्दों में ज्ञान यानी मारफ़त का सांप ख़ुद अपनी दुम निगल लेता है. आत्मा का एक चक्कर ख़तम हो जाता है. दोनों सिरे एक दूसरे से जा मिलते हैं. तब दिखाई देता है कि छोटे से छोटा महदूद ज़र्रा ही बेअन्त लामहदूद भी है, ज़र्रा ही आफ़ताब है, बूंद ही समन्दर है, जीव आत्मा और परमात्मा, रूहे शख़सी और रूहे कुल एक हैं.

ज़िन्दगी का अन्त, उसका लक्षय यानी उसका मक़सद दो तरह का है. पहला मक़सद है 'अभ्युदय' जिसे 'इक़बाल मन्दी' या 'नेमते दुनियावी' कहा जाता है, यानी इस दुनिया के अन्दर की ख़ुशहाली और कामयाबी, या इन्द्रियों और हाथ पैरों के ज़रिये दुनिया के जायज़ सुखों का भोग करना. हिन्दू शास्त्रों में इसके तीन हिस्से किये गए हैं—धर्म, अर्थ और काम. सूफ़ी इस्तलाह में इन तीनों को दयानत, दौलत और लज़्ज़ते दुनिया कहा जाता है. इन तीनों को उलट कर और मिला कर समझना चाहिये. इनका मतलब यह है कि दुनिया की लज़्ज़तों यानी गृहस्थी की ज़िन्दगी को धन दौलत, सम्पत्ति और मिलकियत के साथ मिला कर 'धार्मिक नियमों' यानी 'क़ानूने इलाही' की रोशनी में अपने फ़र्ज़ कर्तव्य को निगाह के सामने रखते हुए, बताना चाहिये. यह है ज़िन्दगी के शुरू के आधे हिस्से के लिये. ज़िन्दगी का दूसरा और आख़िरी हिस्सा दूसरे और आख़िरी मक़सद को हासिल करने में ख़र्च करना चाहिये. वह असल मक़सद है मोक्ष यानी नजात, सब तरह के दुखों से छुटकारा. इसी को 'निःश्रेयस' या 'हफ़्ज़े आला' कहते हैं. यही 'परमानन्द' है. इससे बढ़ कर कोई आनन्द नहीं' कोई सुख नहीं. यह है परमात्मा की तरह हो जाना, परमात्मा में लीन या फ़ना हो जाना, स्वयं परमात्मा हो जाना.

हर आदमी के दिल के अन्दर जाने या अनजाने ज़िन्दगी का यही मक़सद हिलोरें लेता रहता है. अपने जिस हाल से हम भटक गए थे उसी में फिर लौट जावें. हमें पूरी तरह पता चल जावे कि यह सारा संसार चक्र हमारी

زندگی کا مقصد ہے۔سب کے اندر ایک ہی آتما کو دیکھنا

(ڈاکٹر بھگوان داس)

ہماری زندگی کی آخری سب سے بڑی سچائی ہی ہماری زندگی کا مقصد ہے ۔ آتما لوٹ کر اپنے اصل آپے میں جا ملتی ہے، اپنے اُس اننت روپ میں جا ملتی ہے جسے وہ بھول گیا تھا اور جو اُسے اب پھر سے یاد آ جاتا ہے ۔ بھٹکا ہوا مسافر اپنے گھر لوٹ آتا ہے ۔ دوسرے شبدوں میں گیان یعنی معرفت کا سانپ خود اپنی دم نگل لیتا ہے ۔ آتما کا ایک چکر ختم ہو جاتا ہے ۔ دونوں سرے ایک دوسرے سے جا ملتے ہیں ۔ تب دکھائی دیتا ہے کہ چھوٹے سے چھوٹا محدود ذرا ہی بے انت لامحدود بھی ہے، ذرا ہی آفتاب ہے، بوند ہی سمندر ہے، جیو آتما اور پرماتما، روح شخصی اور روح کل ایک ہیں ۔

زندگی کا انت، اُس کا لکش یعنی اُس کا مقصد دو طرح کا ہے ۔ پہلا مقصد ہے 'ابھیودے' جسے 'اقبال مندی' یا 'نعمت دنیاوی' کہا جاتا ہے، یعنی اِس دنیا کے اندر کی خوش حالی اور کامیابی' یا اِندریوں اور ہاتھ پیروں کے ذریعے دنیا کے جائز سکھوں کا بھوگ کرنا ۔ ہندو شاستروں میں اِس کے تین حصے کئے گئے ہیں—دھرم' ارتھ اور کام ۔ صوفی اِصطلاح میں اِن تینوں کو دیانت' دولت اور لذت دنیا کہا جاتا ہے ۔ اِن تینوں کو اُلٹ کر اور ملا کر سمجھنا چاہئے ۔ اِن کا مطلب یہ ہے کہ دنیا کی لذتوں یعنی گرہستی کی زندگی کو' دھن دولت' سمپتی اور ملکیت کے ساتھ ملا کر 'دھارمک نیموں' یعنی 'قانون الٰہی' کی روشنی میں اپنے فرض کرتب کو نگاہ کے سامنے رکھتے ہوئے' بتانا چاہئے ۔ یہ ہے زندگی کے شروع کے آدھے حصے کے لئے ۔ زندگی کا دوسرا اور آخری حصہ دوسرے اور آخری مقصد کو حاصل کرنے میں خرچ کرنا چاہئے ۔ وہ اصل مقصد ہے موکش یعنی نجات' سب طرح کے دکھوں سے چھٹکارا ۔ اِسی کو 'نہ شریس' یا 'حفظ اعلیٰ' کہتے ہیں ۔ یہی 'پرمانند' ہے ۔ اِس سے بڑھکر کوئی آنند نہیں' کوئی سکھ نہیں ۔ یہ ہے پرماتما کی طرح ہو جانا' پرماتما میں لین یا فنا ہو جانا' سویم پرماتما ہو جانا ۔

ہر آدمی کے دل کے اندر جانے یا انجانے زندگی کا یہی مقصد ہلوریں لیتا رہتا ہے ۔ اپنے جس حال سے ہم بھٹک گئے تھے اُسی میں پھر لوٹ جائیں ۔ ہمیں پوری طرح پتہ چل جائے کہ یہ سارا سنسار چکر ہماری

यह ज़िन्दगी वह हसीन फूल बन नहीं सकती
कि जिसके सीने की भौंरे मिठास खा जायं
यह हलकी जोत नहीं है अन्धेरे कमरे की
उभर के जिसको अन्धेरे यूं ही पचा जायं
मैं ज़िन्दगी के यह अनजाम चाहता ही नहीं
मेरे खुदा मैं मुसीबत से खेल सकता हूँ
मैं आंधियों में उमड़ती हुई घटाओं में
वतन की शोख़ मुहब्बत से खेल सकता हूं
मैं वह दरख्त बनूं जिसकी नरम डालों से
मुसीबतों की घटाओं की बिजलियां गुज़रें
समय के झोंके ज़मीन से उखाड़ दें जिसको
अमल की राह पे मेरे वह आंधियां उभरें
मैं एक चट्टान बनूं इतने ऊंचे परबत की
जो लड़ते लड़ते ही आंधी से टूट कर गिर जाय
बिखर पड़े जो वतन की हसीन घाटी पर
हर एक टूटे हुए मन पे देस इतराय
गुलाम क़ौम ने सालों की बेड़ियां तोड़ीं
वह आज ढूंढ़ रही है भलाई के मैदान
सिपाहियों के हसीन रूप की सुनहरी चमक
बढ़ा रही है उभरते हुए निशान की शान
तमाम दुनिया में छा जाय गूंज शेरों की
फ़ुग़ां के नीचे मज़ालिम समय के दब जायं
हर एक रूप से फूटें हयात की किरनें
यों ज़ालिमों के स्याह कारनामें धुल जायं
हयात अपनी वहीं पर निसार मैं कर दूं
वहीं पे अपने लहू की बहाऊं मैं धारा
वहीं पे गूंजे मेरी आखरी हयात की चीख़
वहीं पे डूबे मेरी ज़ीस्त का हसीन तारा
वहीं पे नाव डुबो दूं मैं अपने जीवन की
लरज़ते गूंजते लोहों की खड़खड़ा हट में
बिगुल की शोख़ सदाओं में डूब जाऊं मैं
वहीं पे तोप की डूबूं मैं घड़घड़ाहट में
कुचल कुचल के वहीं मेरी लाश से गुज़रे
वह अस्प जिसकी है मंज़िल मुक़ामे आज़ादी
वहीं पे बिखरी हुई हड्डियों पे बिखरा दे
हसीन गीत कोई ले के नाम आज़ादी
वह मौत मौत है जिस पर हयात नाज़ करे
कि जिस पे नाज़ करे अपनी सुबह आज़ादी
वह जोत फूटे मेरी हड्डियों के टुकड़ों से
हसीन नूर से भर जाय वक़्त की वादी

अनुवादक—चरन सरन 'नाज़'

یہ زندگی وہ حسین پھول بن نہیں سکتی
کہ جس کے سینے کی بھونرے مٹھاس کھا جائیں
یہ ہلکی جوت نہیں ہے اندھیرے کمرے کی
ابھر کے جس کو اندھیرے یوں ہی پچا جائیں
میں زندگی کے یہ انجام چاہتا ہی نہیں
میرے خدا میں مصیبت سے کھیل سکتا ہوں
میں آندھیوں میں امڈتی ہوئی گھٹاؤں میں
وطن کی شوخ محبت سے کھیل سکتا ہوں
میں وہ درخت بنوں جس کی نرم ڈالوں سے
مصیبتوں کی گھٹاؤں کی بجلیاں گذریں
سمے کے جھونکے زمین سے اکھاڑ دیں جسکو
عمل کی راہ پہ میرے وہ آندھیاں ابھریں
میں اک چٹان بنوں اتنے اونچے پربت کی
جو لڑتے لڑتے ہی آندھی سے ٹوٹ کر گر جائے
بکھر پڑے جو وطن کی حسین گھاٹی پر
ہر ایک ٹوٹے ہوئے من پہ دیس اترائے
غلام قوم نے سالوں کی بیڑیاں توڑیں
وہ آج ڈھونڈھ رہی ہے بھلائی کے میدان
سپاہیوں کے حسین روپ کی سنہری چمک
بڑھا رہی ہے ابھرتے ہوئے نشان کی شان
تمام دنیا میں چھا جائے گونج شیروں کی
فغاں کے نیچے مظالم سمے کے دب جائیں
ہر ایک روپ سے پھوٹیں حیات کی کرنیں
یوں ظالموں کے سیہ کارنامے دھل جائیں
حیات اپنی وہیں پر نثار میں کردوں
وہیں پہ اپنے لہو کی بہاؤں میں دھارا
وہیں پہ گونجے میری آخری حیات کی چیخ
وہیں پہ ڈوبے میری زیست کا حسین تارا
وہیں پہ ناؤ ڈبو دوں میں اپنے جیون کی
لرزتے گونجتے لوہوں کی کھڑ کھڑاہٹ میں
بگل کی شوخ صداؤں میں ڈوب جاؤں میں
وہیں پہ توپ کی ڈوبوں میں گھڑ گھڑاہٹ میں
کچل کچل کے وہیں میری لاش سے گذرے
وہ اسپ جس کی ہے منزل مقام آزادی
وہیں پہ بکھری ہوئی ہڈیوں پہ بکھرا دے
حسین گیت کوئی لے کے نام آزادی
وہ موت موت ہے جس پر حیات ناز کرے
کہ جس پہ ناز کرے اپنی صبح آزادی
وہ جوت پھوٹے مری ہڈیوں کے ٹکڑوں سے
حسین نور سے بھر جائے وقت کی وادی

انوادک—چرن سرن 'ناز'

जिल्द 14 | मार्च, सन '53 | नम्बर 3

جلد 14 | مارچ، سن '53 | نمبر 3

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

सिपाही का ग़म

(सेन्दोर पेतोफ़ी)

[सेन्दोर पेतोफ़ी 1 जनवरी 1923 को हंगरी के किलेकौरास गांव में पैदा हुआ था. उसका बाप एक मामूली किसान था. 16 साल की उमर में वह अपने घर से निकल पड़ा. वह गांव गांव और शहरों शहरों फिरा. वहां उसने अपने मुल्क की ग़रीबी देखी, उसने देखा हैप्सबर्ग ख़ानदान के राजा किस तरह ग़रीब जनता पर ज़ुल्म करते हैं. उन दिनों लोगों में चेतना पैदा हो रही थी, वह भी हैप्सबर्ग के ख़िलाफ़ अपने मुल्क को स्वतंत्र करने में जी जान से जुट गया. धीरे धीरे वह वहां के जन आन्दोलन का नेता बन बैठा. उसने अपनी कविताओं के ज़रिये तमाम हंगरी में एक नई जान फूंक दी. उसकी कविताओं में सादगी, पवित्रता और एक नया सन्देश है. 31 जुलाई 1948 में 26 बरस की भरी जवानी में सेज्सबर के मैदान में लड़ते लड़ते वह शहीद हो गया. पेतोफ़ी के नाम से आज हंगरी का बच्चा बच्चा परिचित है. हंगरी के निवासी उसको 'आज़ादी का कवि' नाम से याद करते हैं. नीचे हम उसकी मशहूर कविता 'सिपाही का ग़म' का आज़ाद तरजुमा दे रहे हैं. आशा है शहीद नौजवान पेतोफ़ी की यह कविता हमारे पाठकों को पसन्द आएगी—एडीटर]

❀ ❀ ❀

मुझे यह ग़म है कहीं ज़िन्दगी के दिन और रात
गुज़र न जायें यूँ ही करवटें बदलते हुए
वह ज़िन्दगी तो कोई ज़िन्दगी नहीं होती
जो नरम सेज पे कट जाती है बहलते हुए

سپاہی کا غم

(سینڈور پیٹوفی)

[سینڈور پیٹوفی 1 جنوری 1923 کو ہنگری کے کلیکوراس گاؤں میں پیدا ہوا تھا۔ اس کا باپ ایک معمولی کسان تھا۔ 16 سال کی عمر میں وہ اپنے گھر سے نکل پڑا۔ وہ گاؤں گاؤں اور شہروں شہروں پھرا۔ وہاں اس نے اپنے ملک کی غریبی دیکھی، اس نے دیکھا ہیپس برگ خاندان کے راجہ کس طرح غریب جنتا پر ظلم کرتے ہیں۔ ان دنوں لوگوں میں چیتنا پیدا ہو رہی تھی، وہ بھی ہیپس برگ کے خلاف اپنے ملک کو سوتنتر کرنے میں جی جان سے جٹ گیا۔ دھیرے دھیرے وہ وہاں کے جن آندولن کا نیتا بن بیٹھا۔ اس نے اپنی کویتاؤں کے ذریعے تمام ہنگری میں ایک نئی جان پھونک دی۔ اس کی کویتاؤں میں سادگی، پوترتا اور ایک نیا سندیش ہے۔ 31 جولائی 1948 میں 26 برس کی بھری جوانی میں سیجسبر کے میدان میں لڑتے لڑتے وہ شہید ہو گیا۔ پیٹوفی کے نام سے آج ہنگری کا بچہ بچہ پریچت ہے۔ ہنگری کے نواسی اس کو 'آزادی کا کوی' نام سے یاد کرتے ہیں۔ نیچے ہم اس کی مشہور کویتا 'سپاہی کا غم' کا آزاد ترجمہ دے رہے ہیں۔ آشا ہے شہید نوجوان پیٹوفی کی یہ کویتا ہمارے پاٹھکوں کو پسند آئے گی۔ —ایڈیٹر]

❀ ❀ ❀

مجھے یہ غم ہے کہیں زندگی کے دن اور رات
گذر نہ جائیں یوں ہی کروٹیں بدلتے ہوئے
وہ زندگی تو کوئی زندگی نہیں ہوتی
جو نرم سیج پہ کٹ جاتی ہے بہلتے ہوئے

"नया हिन्द"

" نیا ہند "

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का माहवारी परचा

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا ماہواری پرچا

मार्च 1953 مارچ

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने.

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے .

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد .

Registered No. A—210

झंकार

सम्पादक श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

पिछले पन्द्रह बरस से आज तक की उरदू की चुनी हुई कविताओं का यह सग्रह पढ़कर आप को मालूम होगा कि उरदू कविता ने किस तरह ख़याली दुनिया को छोड़ कर ज़िन्दगी की सच्चाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज की उरदू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ तक ही सीमित नहीं है. अब आप को उरदू कविता में किसानों और मज़दूरों के दिलों की धड़कने सुनाई देंगी. ग़ुलामी, अन्याय और लूट खसोट के ख़िलाफ़ आप एक ऐसी आवाज़ सुनेंगे जो आपके दिल की गहराइयों को छुएगी.

"इन कविताओं में अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय दोनों झलकें मिलती है ... सजीव तथा साकार हैं ... वास्तव में हिन्दी संसार में यह प्रयास अनोखा है और उरदू साहित्य के आधुनिक दौर में अद्वितीय है..."

23-2-'52 — रोज़ाना 'लोकवाणी' जयपुर

'जहां तक भाव का सम्बन्ध है, कविताएं उच्चस्तर की हैं"

6-3-'52 —'विशाल भारत' कलकत्ता

'झंकार में प्रकाशित 72 उरदू की कविताएं आज ही के युग की समस्याओं से ओत प्रोत हैं"

17-2-'52 — 'नव भारत टाइम्स' दिल्ली

"हिन्दी के पाठक स्नेह और चाव से इस संग्रह का आनन्द लेंगे और उनसे प्रेरणा ग्रहण करेंगे, यह निश्चय है."

13-1-'52 — 'अमृत पत्रिका' इलाहाबाद

'हम उन की (कविताओं की) शक्ति, ताज़गी और सूझ के क़ायल हैं. वह एक नए युग का सन्देश देती हैं ... भाषा अधिकतर सरल और बामहावरा है. कहीं कहीं तो ठेठ हिन्दी है"

8-5-'52 —'जीवन साहित्य' दिल्ली

"झंकार की रचनाओं में युग की पुकार है और भाषा बिलकुल बोल चाल के निकट है" —'नया समाज' कलकत्ता

नागरी लिखावट में ऐसा भरपूर उरदू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, उम्दा छपाई. दाम सिर्फ़ तीन रुपया. दस किताबों की एक साथ ख़रीदारी पर पचास फ़ीसदी कमीशन.

मिलने का पता

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

جھنکار

سمپادک—شری رگھوپتی سہائے 'فراق'

پچھلے پندرہ برس سے آج تک کی اُردو کی چنی ہوئی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اُردو کویتا نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے۔ آج کی اُردو شاعری گل و بلبل اور وصل و فراق تک ہی سیمت نہیں ہے اب آپ کو اُردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی غلامی، انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف آپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل کی گہرائیوں کو چھوئیگی

"ان کویتاؤں میں انترراشٹریہ تتھا راشٹریہ دونوں جھلکیں ملتی ہیں...سجیو تتھا ساکار ہیں... واستو میں ہندی سنسار میں یہ پریاس انوکھا ہے اور اُردو ساہتیہ کے آدھنک دور میں ادتیہ ہے۔"

23-2-'52 —روزانہ 'لوک وانی' جے پور

"جہاں تک بھاؤ کا سمبندھ ہے کویتائیں اُچ استر کی ہیں۔"

6-3-'52 —'وشال بھارت' کلکتہ

"جھنکار میں پرکاشت 72 اُردو کی کویتائیں آج ہی کے یگ کی سمسیاؤں سے اوت پروت ہیں۔"

17-2-'52 —'نو بھارت ٹائمس' دلی

"ہندی کے پاٹھک اسنیہ اور چاؤ سے اس سنگرہ کا آنند لینگے اور اُن سے پریرنا گرہن کرینگے یہ نشچے ہے"

13-1-'52 —'امرت پتریکا' الہ آباد

"ہم اُن کی (کویتاؤں کی) شکتی، تازگی اور سوجھ کے قائل ہیں۔ وہ ایک نئے یگ کا سندیش دیتی ہیں... بھاشا ادھکتر سرل اور بامحاورہ ہے کہیں کہیں تو ٹھیٹھ ہندی ہے۔"

8-5-'52 —'جیون ساہتیہ' دلی

"(جھنکار کی) رچناؤں میں یگ کی پکار ہے اور بھاشا بالکل بول چال کے نکٹ ہے۔"—'نیا سماج' کلکتہ

ناگری لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اُردو کویتا سنگرہ آج تک نہیں نکلا۔ سندر جلد۔ بڑھیا کاغذ۔ عمدہ چھپائی دام صرف تین روپیہ۔ دس کتابوں کی ایک ساتھ خریداری پر پچاس فیصدی کمیشن۔

ملنے کا پتہ—

منیجر 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج الہ آباد۔

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफरेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मो, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों मे का मेल बढ़ाना

—: ० :—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट —मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़. गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट डा० भगवानदास, सेक्रेटरी प० सुन्दरलाल.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मज़हर अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, प० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द राका, काज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये --

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

115, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट- सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں ۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا ۔

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لیکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا ۔

—: ० :—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — مسٹر عبدالمجید خواجہ، وائس پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق ۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال ۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر مظہر علی سوختہ، شری بی۔ جی کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند راکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے ۔

سندر لال

سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی،

115 مٹھی گنج، الہ آباد ۔

نوٹ — سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں ان کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا ۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے ۔

फ़िरक़ाबन्दी पर बापू

सम्पादक—श्री श्रीकृष्ण दास

इस पुस्तक में 1921 से सन 1948 तक गांधी जी ने साम्प्रदायिता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब आपको एक जगह मिलेगा.

भारत के आज़ाद होने पर यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हर भारतवासी साम्प्रदायिकता के नुक़सानों को समझे और इस ज़हर को अपने अन्दर से साफ़ करे.

सुन्दर जिल्द. अच्छा काग़ज़. दो सौ सफ़े. क़ीमत दो रुपया.

فرقہ بندی پر باپو

سمپادک—شری شریکرشن داس

اِس پستک میں سن 1921 سے سن 1948 تک گاندھی جی نے سامپردایکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا لکھا وہ سب آپکو ایک جگہ ملیگا .

بھارت کے آزاد ہونے پر یہ اور بھی ضروری ہو گیا ہے کہ ہر بھارت واسی سامپردایکتا کے نقصان کو سمجھے اور اِس زہر کو اپنے اندر سے صاف کرے .

سندر جلد . اچھا کاغذ . دو سو صفحے . قیمت دو روپیہ .

भाषा

लेखक—लाला मदन गोपाल

हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी की तकरार पर एक बे लाग राय इस किताब में आपको मिलेगी. राष्ट्र भाषा के सवाल में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई-बहन को इस किताब के पढ़ने से फ़ायदा होगा—सोचने की राहें सूझेंगी, जानकारी बढ़ेगी और तरह तरह की तंग नज़रियां मिटेंगी.

क़रीब सवा सौ सफ़े की सुन्दर किताब, दाम डेढ़ रुपया

بھاشا

لیکھک—لالہ مدن گوپال

ہندی اُردو اور ہندستانی کی تکرار پر ایک بے لاگ رائے اِس کتاب میں آپ کو ملے گی . راشٹر بھاشا کے سوال میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کو اِس کتاب کے پڑھنے سے فائدہ ہوگا—سوچنے کی راہیں سوجھیں گی، جانکاری بڑھے گی اور طرح طرح کی تنگ نظریاں مٹیں گی .

قریب سوا سو صفحے کی سندر کتاب، دام ڈیڑھ روپیہ .

---

700 PAGES,
32 ILLUSTRATION
2 COLOURED MAPS

"CHINA TODAY"

BY PANDIT SUNDARLAL

PRICE
Rs. 7 8 0

A vivid narration of the glorious and wonderful achievements of New China...A picture of China which is both convincing and authentic...the best book that has come out so far on New China in the English language ...the most objective in approach and comprehensive in treatment. **—National Herald, Lucknow.**

Highly infomative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserves to be widely known. **—Leader, Allahabad.**

Encyclopaedic...characterized by acute observation of detail as well as by...instinctive grasp of the fundamental perspective.. To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China. **—Blitz, Bombay.**

A mine of information which gives a picture of China as nothing else does...the best guide to New China...Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it. **—Bharat Jyoti, Bombay**

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs. **—Indian Express, Madras**

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men and matter... brings to light the mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations for a tomorrow which is theirs. **—Vigil, Delhi.**

महात्मा गाँधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने कांगरेस को लोक सेवा संघ में बदल देने के लिए अपनी तजवीज़ लिखी थी. यह देश के नाम उनकी आख़िरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिए इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. 225 सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपए.

अहिंसात्मक इन्क़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

इस छोटी सी किताब को पढ़ कर आपको पता चलेगा कि महात्मा गांधी क्या चाहते थे और किस तरह उनके रास्ते पर चल कर अहिंसात्मक ढंग से देश में इन्क़लाब लाया जा सकता है.

पैंतीस पन्ने की किताब, दाम सिर्फ़ चार आने.

आज के शहीद

लेखक—श्री रतन लाल बंसल

उन बहादुरों की कहानियां जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इनसानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में अपनी जान क़ुरबान कर दी. दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

मुस्लिम देश भक्त

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामी की ज़ंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

मिलने का पता—
सैक्रेटरी नया हिन्द 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے کانگریس کو لوک سیوا سنگھ میں بدل دینے کے لئے اپنی تجویز لکھی تھی۔ یہ دیش کے نام انکی آخری وصیت ہے اور اسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں ۔

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اسکا پڑھنا بہت ضروری ہے ۔ 225 صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے ۔

اہنساتمک انقلاب کا راستہ

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اِس چھوٹی سی کتاب کو پڑھکر آپ کو پتہ چلے گا کہ مہاتما گاندھی کیا چاہتے تھے اور کسطرح اُن کے راستے پر چل کر اہنساتمک ڈھنگ سے دیش میں انقلاب لایا جا سکتا ہے ۔

پینتیس پنے کی کتاب، دام صرف چار آنے ۔

آج کے شہید

لیکھک—شری رتن لال بنسل

اِن بہادروں کی کہانیاں جنھوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کی کوشش میں اپنی جان قربان کر دی۔ دام صرف ڈھائی روپیہ۔

مسلم دیش بھکت

سمپادک—شری رتن لال بنسل

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنھوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی۔ کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے ۔
قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے ۔

ملنے کا پتہ—
سکریٹری نیا ہند 145 مٹھی گنج الہ آباد ۔

गांधी जयन्ती पर नई भेंट

गांधी बाबा

लेखक—क़ुदसिया ज़ैदी

दो शब्द—जवाहरलाल नेहरू

यह अनमोल किताब जन्म से बलिदान तक की गांधी जी की पूरी और सच्ची जीवनी भी है और कहानी भी. हमारे देश में यह पुराना रिवाज रहा है कि माएं अपने बच्चों को महापुरुषों के जीवन चरित कहानी के रूप में सुनाती हैं. इस तरह की कहानियां आम तौर पर वीर राजाओं और उनके युद्धों की कहानियां होती हैं. बेगम क़ुदसिया ज़ैदी ने, जो महात्मा गांधी की परम भक्त हैं, अपनी इस किताब में गांधीजी की जीवनी और उनका सत्य, अहिंसा, प्रेम और त्याग का उपदेश बच्चों को ऐसी प्यारी, सीधी सादी बोली में और ऐसे ढंग से सुनाया है कि बच्चों के दिल में उतरता चला जाता है. हिन्दी में गांधीजी के ऊपर बच्चों के लिये इससे बढ़कर किताब नहीं है. इसमें कहानी का रस भी है और बच्चों को ऊंचा उठाने वाले उपदेश भी.

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने 'दो शब्द' में लिखा है—

> "उन्होंने (क़ुदसिया ज़ैदी ने) यह छोटी सी किताब सच्चे दिल से लिखी है. वह इसे सिर्फ़ एक किताब नहीं समझतीं. उनके लिये गांधीजी की कहानी एक बहुत ही महत्त्व की और प्यारी चीज़ है...मुझे ख़ुशी है कि यह किताब लिखी गई है."

मोटे काग़ज़ पर, मोटे टाइप में, बहुत सी रंगीन तसवीरें, आर्ट पेपर पर सुन्दर रंगीन कवर और दफ़्ती की मज़बूत जिल्द—दाम केवल दो रुपए.

विनोबा का सन्देश

लेखक—सुरेश रामभाई

एक शब्द—महात्मा भगवानदीन

विनोबाजी के भू-दान-यज्ञ से आज सारा देश वाक़िफ़ है. इस छोटी सी किताब में आपको मिलेगा कि यह भू-दान-यज्ञ कब और कैसे शुरू हुआ और इसका मक़सद क्या है

पहला एडीशन हाथों हाथ निकल गया. यह दूसरा एडीशन है. सफ़े 25, दाम केवल दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द'

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

گاندھی جینتی پر نئی بھینٹ

گاندھی بابا

لیکھک—قدسیہ زیدی

دو شبد—جواہر لال نہرو

یہ انمول کتاب جنم سے بلیدان تک کی گاندھی جی کی پوری اور سچی جیونی بھی ہے اور کہانی بھی. ہمارے دیش میں یہ پرانا رواج رہا ہے کہ مائیں اپنے بچوں کو مہاپرشوں کے جیون چرت کہانی کے روپ میں سناتی ہیں. اِس طرح کی کہانیاں عام طور پر ویر راجاؤں اور اُن کے یدھوں کی کہانیاں ہوتی ہیں. بیگم قدسیہ زیدی نے' جو مہاتما گاندھی کی پرم بھکت ہیں' اپنی اِس کتاب میں گاندھی جی کی جیونی اور اُن کا ستیہ' اہنسا' پریم اور تیاگ کا اُپدیش بچوں کو ایسی پیاری' سیدھی سادی بولی میں اور ایسے ڈھنگ سے سنایا ہے کہ بچوں کے دل میں اُترتا چلا جاتا ہے . ہندی میں گاندھی جی کے اوپر بچوں کے لئے اس سے بڑھ کر کتاب نہیں ہے . اس میں کہانی کا رس بھی ہے اور بچوں کو اونچا اُٹھانے والے اُپدیش بھی .

پنڈت جواہر لال نہرو نے اپنے 'دو شبد' میں لکھا ہے—

> "اُنہوں نے (قدسیہ زیدی نے) یہ چھوٹی سی کتاب سچے دل سے لکھی ہے . وہ اِسے صرف ایک کتاب نہیں سمجھتیں . اُن کے لئے گاندھی جی کی کہانی ایک بہت ہی مہتو کی اور پیاری چیز ہے..... مجھے خوشی ہے کہ یہ کتاب لکھی گئی ہے ."

موٹے کاغذ پر' موٹے ٹائپ میں' بہت سی رنگین تصویریں' آرٹ پیپر پر سندر رنگین کور اور دفتی کی مضبوط جلد—دام کیول دو روپیہ .

ونوبا کا سندیش

لیکھک—سریش رام بھائی

ایک شبد—مہاتما بھگوان دین

ونوبا جی کے بھودان یگیہ سے آج سارا دیش واقف ہے. اِس چھوٹی سی کتاب میں آپکو ملیگا کہ یہ بھودان یگیہ کب اور کیسے شروع ہوا اور اِس کا مقصد کیا ہے .

پہلا ایڈیشن ہاتھوں ہاتھ نکل گیا . یہ دوسرا ایڈیشن ہے . صفحے 25' دام کیول دو آنے .

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند'

145 مٹھی گنج' الٰہ آباد

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

गीता और क़ुरान

इस किताब में हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों के मेल की बातें, गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के दौरे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक वर्नन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिए ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

لیکھک—پنڈت سندر لال

گیتا اور قرآن

اِس کتاب میں ہندو دھرم اور اِسلام دونوں کے میل کی باتیں، گیتا کا بڑپن، گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ، قرآن کا بڑپن، لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آیتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے ۔

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ہے ۔

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ، ڈاک خرچ الگ ۔

ہندو مسلم ایکتا

اِس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیئٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے ۔

سو صفحے کی کتاب ۔ قیمت صرف بارہ آنے ۔

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج، جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا ۔

قیمت بارہ آنے ۔

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے دورے کے بعد وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک ورنن ۔ اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں ۔ قیمت چار آنے ۔

بنگال اور اُس سے سبق

اِس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ‌وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے ۔ قیمت صرف دو آنے ۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج، الہ آباد ۔

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों को और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायेगी. पूरी जानकारी के लिए लिखिये.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन 1950 से सारे भारत में लागू हुआ.

'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पंडित सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाशा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जायेगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इन्सान-इन्सान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा गांधी ने इस किताब के बारे में कहा है कि—

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े... "

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताब का दाम सिर्फ़ एक रुपया.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द', 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ھندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں کو اور بکسیلروں کو خاص رعائت دی جائیگی . پوری جانکاری کے لئے لکھئے .

ڈاک یا ریل خرچ ھر حالت میں گاھک کے ذمے ھوگا .

بھارت کا ودھان

پورا ھندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ھوا .

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندرلال دوارا مول انگریزی سے انووادت .

ھر بھارت واسی کا فرض ھے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اس سمے چل رھا ھے اُسے اچھی طرح سمجھے . بھارت کے ھر گھر میں اس پستک کا رھنا ضروری ھے .

آسان بامحاورہ بھاشا. رایل اٹھ پیجی بڑا سائز . لگ بھگ چار سو پنے . کپڑے کی سندر جلد . قیمت کیول ساڑھے سات روپئے .

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے . سی . کمارپا.

انووادک—سریش رام بھائی.

اِس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ھے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ھے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابری' بھائی چارے' پریم اور اھنسا پر کتنا زور دیا ھے .

مہاتما گاندھی نے اِس کتاب کے بارے میں کہا ھے کہ—

"ھر آستک سے' چاھے وہ عیسائی ھو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ھو' میری سفارش ھے کہ اِسے پڑھے..."

سندر جلد' بڑھیا کاغذ' قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ .

ملنے کا پتہ—

مینیجر' 'نیا ھند' 145 مٹھی گنج' الہ آباد .

करा दे तो कुत्ता अगरेसर समझा जायगा या वह भड़काने वाला ? एक बेवक़ूफ़ भी कुत्ते को अगरेसर न कहेगा तो भड़काने वाला ही अगरेसर समझा जायगा.

अगर सरकस कम्पनी का मैनेजर अपने किसी शेर को किसी के ऊपर छोड़ दे या सिर्फ़ शेर के पिंजड़े का दरवाज़ा खोल दे और शेर किसी पर हमला कर दे तो शेर अगरेसर समझा जायगा या सरकस कम्पनी का मैनेजर ? एक बेवक़ूफ़ भी शेर को अगरेसर नहीं कहेगा.

मां बाप के इशारे पर ही नहीं अगर उनके देखते देखते घर का कोई समझदार बच्चा किसी की बेइज़्ज़ती कर बैठे तो बच्चा अगरेसर समझा जायगा या मां बाप ? सब समझदार एक राय हो कर मां बाप को ही ज़िम्मेदार समझेंगे और उन्हीं को बुरा भला कहेंगे.

आज जब खुल्लम खुल्ला आइज़न हावर यह कह कर 'एशिया वाले एशिया वालों से लड़ें, अपना जहाज़ी बेड़ा फ़ारमूसा से हटा रहे हैं और च्यांग काई शेक के जनरैलों को बुला कर उन्हें चीन पर हमला करने की तरकीबें बता रहे हैं तब क्या यह चीन पर फ़ारमूसा का अगरेशन माना जायगा ? यह अमरीका की चीन पर चढ़ाई होगी और इसमें हर तरह अमरीका अगरेसर समझा जायगा. पर किसी को अगरेसर साबित कर देने का फ़ैसला 'नया हिन्द' के क़ाबू की बात नहीं, किसी के क़ाबू की बात नहीं. जिसके क़ाबू की बात है उसका नाम है यू. एन. ओ. और वह है अमरीका के हाथ की कठ पुतली. वह तो माओ त्से तुंग को अगरेसर कहेगी : जब चीन का एक भी गोला फ़ारमूसा पर गिरेगा या जापान के उस अड्डे पर गिरेगा जहां अमरीकी एटम बम के नशे में मस्त च्यांग काई शेक के जनरैलों को उईलै उईलै कर कर ललकार रहे होंगे.

रही हिन्दुस्तान की सरकार, फिर वह भी लाल चीन को अगरेसर कहे बिना कैसे रह सकेगी. आख़िर कोरिया के मामले में भी वह ऐसा ही कह चुकी है. और सुनते हैं हिन्दुस्तानी हुकूमत का कहना है कि उसकी उंगली पत्थर तले दबी हुई है और उसे यह आशा है कि ऐसे मौक़ों पर 'हां' कहने से शायद उंगली पत्थर तले से निकल आए. कोरिया के मामले में जिस तरह 'नया हिन्द' की पालिसी अब तक वैसी ही बनी हुई है जैसी उस वक़्त थी जब कोरिया की घरेलू लड़ाई शुरू हुई थी; वैसे ही 'नया हिन्द' ने उसी वक़्त से अमरीका को एशिया के ख़िलाफ़ अगरेसर मान लिया है, जिस वक़्त से आइज़न हावर के मुंह से यह निकला कि 'एशिया वाले एशिया वालों से लड़ें.'

5. 2. '53 —भगवानदीन

کرا دے تو کتا اگریسر سمجھا جائے گا یا وہ بھڑکانے والا؟ ایک بیوقوف بھی کتے کو اگریسر نہ کہیگا تو بھڑکانے والا ہی اگریسر سمجھا جائے گا.

اگر سرکس کمپنی کا منیجر اپنے کسی شیر کو کسی کے اوپر چھوڑ دے یا صرف شیر کے پنجرے کا دروازہ کھول دے اور شیر کسی پر حملہ کر دے تو شیر اگریسر سمجھا جائے گا یا سرکس کمپنی کا منیجر؟ ایک بیوقوف بھی شیر کو اگریسر نہیں کہیگا.

ماں باپ کے اشارے پر ہی نہیں اگر اُن کے دیکھتے دیکھتے گھر کا کوئی سمجھدار بچہ کسی کی بےعزتی کر بیٹھے تو بچہ اگریسر سمجھا جائے گا یا ماں باپ؟ سب سمجھدار ایک رائے ہوکر ماں باپ کو ہی ذمےدار سمجھیں گے اور اُنہیں کو برا بھلا کہیں گے.

آج جب کھلم کھلا آئزن هاور یہ کہ کر 'ایشیا والے ایشیا والوں سے لڑیں' اپنا جہازی بیڑا فارموسا سے ہٹا رہے ہیں اور چیانگ کائی شیک کے جنریلوں کو بلاکر اُنہیں چین پر حملہ کرنے کی ترکیبیں بتا رہے ہیں تب کیا یہ چین پر فارموسا اگریشن مانا جائے گا؟ یہ امریکہ کی چین پر چڑھائی ہوگی اور اِس میں ہر طرح امریکہ اگریسر سمجھا جائے گا. پر کسی کو اگریسر ثابت کر دینے کا فیصلہ 'نیا ہند' کے قابو کی بات نہیں' کسی کے قابو کی بات نہیں. جس کے قابو کی بات ہے اُس کا نام ہے یو. این. او. اور وہ ہے امریکہ کے ہاتھ کی کٹھ پتلی. وہ تو ماؤتسے تنگ کو اگریسر کہے گی: جب چین کا ایک بھی گولا فارموسا پر گریگا یا جاپان کے اُس اڈے پر گریگا جہاں امریکی ایٹم بم کے نشے میں مست چیانگ کائی شیک کے جنریلوں کو اُئی لے اُئی لے کہ کر للکار رہے ہوں گے.

رہی ہندستان کی سرکار' پھر وہ بھی لال چین کو اگریسر کہے بنا کیسے رہ سکے گی. آخر کوریا کے معاملے میں بھی وہ ایسا ہی کہ چکی ہے. اور سنتے ہیں ہندستانی حکومت کا کہنا ہے کہ اُس کی اُنگلی پتھر تلے دبی ہوئی ہے اور اُسے یہ آشا ہے کہ ایسے موقعوں پر 'ہاں' کہنے سے شاید اُنگلی پتھر تلے سے نکل آئے. کوریا کے معاملے میں جس طرح 'نیا ہند' کی پالیسی اب تک ویسی ہی بنی ہوئی ہے جیسی اُس وقت تھی جب کوریا کی گھریلو لڑائی شروع ہوئی تھی ویسے ہی 'نیا ہند' نے اُسی وقت سے امریکہ کو ایشیا کے خلاف اگریسر مان لیا ہے' جس وقت آئزن هاور سے منہ یہ نکلا کہ 'ایشیا والے ایشیا والوں سے لڑیں'.

5 . 2 . '53 —بھگوان دین

एटम बम परमेश्वर ने अमरीका की जापान से जान बचाई. अब अगर अमरीका यह चाहे कि उस एटम बम परमेश्वर का दुनिया भर पर राज हो जाय तो उसमें अचरज की क्या बात ?

अमरीका की कमज़ोरी की यह सब से बड़ी पहचान है कि वह एशिया से इतनी दूर रहते हुए भी एशियाई ताक़तों से बेहद डरा हुआ है. और डरा हुआ आदमी या तो एकदम दूसरे पर हमला करने की सोच बैठता है या किन्हीं दो को आपस में लड़ाने की तरकीब ढूंढ़ निकालता है.

एशिया के लिहाज़ से ट्रूमन के अमरीका में और आइज़न हावर के अमरीका में कोई अन्तर नहीं आया. ट्रूमन ने दक्खिनी कोरिया को भड़काया और उससे उत्तरी कोरिया पर छुट पुट हमले कराए. और जब उत्तरी कोरिया ने अपने बचाव की ख़ातिर दक्खिनी कोरिया पर हमला बोल दिया तो उसे अगरेशन कह कर अमरीका लड़ाई में कूद पड़ा और चालाकी से अपने कूदने को यू. एन. ओ. से ठीक साबित करा लिया. आइज़न हावर का अमरीका आज वही करने जा रहा है जो ट्रूमन ने किया. ट्रूमन ने जो काम दब छिप कर किया था उसी काम को आइज़न हावर डंके की चोट पर करना चाहते हैं. आज फ़ारमूसा और चीन बिलकुल ऐसे ही हैं जैसे दक्खिनी कोरिया और उत्तरी कोरिया. फ़ारमूसा की सरकार अलग. वह बिलकुल दूसरों के क़ाबू में. चीन की सरकार अलग उसकी हकूमत बिलकुल अपने ढंग की. फिर भी कोरिया की तरह से चीन और फ़ारमूसा एक, यानी एक ही मुल्क के दो हिस्से.

आइज़न हावर चाहते हैं फ़ारमूसा चीन पर हमला बोल दे और यू. एन. ओ. उसे अगरेशन न कहे. लेकिन अगर चीन अपने बचाव में फ़ारमूसा पर हमला बोल दे और इसी नाते उन जापानी अड्डों पर बम गिरा दे जहां फ़ारमूसा के अमरीकी मददगार फ़ारमूसा वालों को बम गिराने की तालीम दे रहे हों तो उसको यू. एन. ओ. अगरेशन क़रार दे दे.

हिन्दुस्तानी पालिसी के बारे में हिन्दुस्तान की हकूमत जाने कि वह कब किसको अगरेशन का नाम देगी.

एक आदमी किसी दूसरे की तरफ़ एक ईंट उठा कर फेंकता है तो ईंट अगरेसर मानी जाय या ईंट फेंकने वाला. कोई बेवक़ूफ़ भी ईंट को अगरेसर नहीं कहेगा.

अगर कोई आदमी कम्बल ओढ़ कर शहद की मक्खियों के छत्ते को भड़का कर घर वालों पर हमला करा दे तो शहद की मक्खियां अगरेसर समझी जायंगी या कम्बल वाला ? एक बेवक़ूफ़ भी शहद की मक्खियों को अगरेसर नहीं कहेगा. वह भी अगरेसर कम्बल वाले को कहेगा

अगर किसी मुहल्ले में एक आदमी मुहल्ले के किसी कुत्ते को भड़का कर किसी आने जाने वाले पर हमला

ایٹم بم پرمیشور نے امریکہ کی جاپان سے جان بچائی. اب اگر امریکہ یہ چاہے کہ اُس ایٹم بم پرمیشور کا دنیا بھر پر راج ہو جائے تو اُس میں اچرج کی کیا بات ؟

امریکہ کی کمزوری کی یہ سب سے بڑی پہچان ہے کہ وہ ایشیا سے اِتنی دور رہتے ہوئے بھی ایشیائی طاقتوں سے بےحد ڈرا ہوا ہے . اور ڈرا ہوا آدمی یا تو ایک دم دوسرے پر حملہ کرنے کی سوچ بیٹھتا ہے یا کنھیں دو کو آپس میں لڑانے کی ترکیب ڈھونڈھ نکالتا ہے .

ایشیا کے لحاظ سے ٹرومن کے امریکہ میں اور آئزن هاور کے امریکہ میں کوئی انتر نہیں آیا. ٹرومن نے دکھنی کوریا کو بھڑکایا اور اُس سے اُتری کوریا پر چھٹ پٹ حملے کرائے . اور جب اُتری کوریا نے اپنے بچاؤ کی خاطر دکھنی کوریا پر حملہ بول دیا تو اُسے اگریشن کہہ کر امریکہ لڑائی میں کود پڑا اور چالاکی سے اپنے کودنے کو یو. این. او سے ٹھیک ثابت کرا لیا . آئزن هاور کا امریکہ آج وہی کرنے جا رہا ہے جو ٹرومن نے کیا . ٹرومن نے جو کام دب چھپ کر کیا تھا اُسی کام کو آئزن هاور ڈنکے کی چوٹ پر کرنا چاہتے ہیں . آج فارموسا اور چین بالکل ایسے ہی ہیں جیسے دکھنی کوریا اور اُتری کوریا . فارموسا کی سرکار الگ . وہ بالکل دوسروں کے قابو میں . چین کی سرکار الگ اُس کی حکومت بالکل اپنے ڈھنگ کی . پھر بھی کوریا کی طرح سے چین اور فارموسا ایک' یعنی ایک ہی ملک کے دو حصے .

آئزن هاور چاہتے ہیں فارموسا چین پر حملہ بول دے اور یو. این. او. اُسے اگریشن نہ کہے. لیکن اگر چین اپنے بچاؤ میں فارموسا پر حملہ بول دے اور اِسی ناتے اُن جاپانی اڈوں پر بم گرا دے جہاں فارموسا کے امریکی مددگار فارموسا والوں کو بم گرانے کی تعلیم دے رہے ہوں تو اُس کو یو. این. او. اگریشن قرار دے دے .

ہندستانی پالیسی کے بارے میں ہندستان کی حکومت جانے کہ وہ کب کس کو اگریشن کا نام دے گی .

ایک آدمی کسی دوسرے کی طرف ایک اینٹ اُٹھاکر پھینکتا ہے تو اینٹ اگریسر مانی جائے یا اینٹ پھینکنے والا . کوئی بیوقوف بھی اینٹ کو اگریسر نہیں کہیگا .

اگر کوئی آدمی کمبل اوڑھ کر شہد کی مکھیوں کے چھتے کو بھڑکا کر گھروالوں پر حملہ کرادے تو شہد کی مکھیاں اگریسر سمجھی جائیں گی یا کمبل والا ؟ ایک بیوقوف بھی شہد کی مکھیوں کو اگریسر نہیں کہیگا، وہ بھی اگریسر کمبل والے کو کہیگا .

اگر کسی محلے میں ایک آدمی محلے کے کسی کتے کو بھڑکا کر کسی آنے جانے والے پر حملہ

आज़ादी के बाद से ऐसी सब बातों को त्याग दिया गया है. जो जितनी लम्बी रिश्वत दे सकता है वह उतनी ही बड़ी आमदनी की जगह पर पहुँच सकता है. यह बात ठीक है कि पहले भी ट्राफ़िक की ग़लतियों से दुर्घटनायें होती थीं, लाइन क्लियर वग़ैरा देने में ग़लती हो जाती थी. लेकिन यह ग़लतियां अब बढ़ गई हैं और शायद बढ़ती ही जा रही हैं.

ऊपर की बातों से दो मोटे नतीजे निकलते हैं: एक यह कि रिश्वत का बाज़ार बुरी तरह गरम है जिसके कारन तजुर्बा वग़ैरा का ख़याल किये बिना ग़ैर ज़िम्मेदार लोगों को ज़िम्मेदार ओहदे मिल जाते हैं. यह लोग काम करने के बजाए पैसा कमाने के चक्कर में रहते हैं. इस सम्बन्ध में एक क़िस्सा सुनने में आया है जिस पर कोई समझदार देश भक्त दुख प्रकट किये बिना न रहेगा—अभी हाल में लखनऊ और इलाहाबाद के बीच चलने वाली जनता एक्सप्रेस 'ऊंचाहार' के क़रीब पटरी से उतर गई थी. कहा जाता है कि इसमें सरासर इंजीनियर की ग़लती थी. गैंग-मैन ने बार बार चेतावनी दी लेकिन इंजीनियर साहब ने उसकी बात नहीं मानी. नतीजा जो होना था सो हुआ.

दूसरा नतीजा यह है कि सरकार जान बचाने के बजाए रुपया बचाने के चक्कर में रहती है. इसी कारन स्टाफ़ ज़रूरत से ज़ियादा कम है.

इस तरह बात साफ़ हो जाती है कि किसी व्यक्ति या संस्था की यह ज़िम्मेदारी नहीं है बल्कि सरकारी मशीनरी के कारन ही यह दुर्घटनाएं हो रही हैं. सरकार रिश्वत बाज़ी बन्द नहीं कर सकती, यह उसके बस के बाहर की बात है. लेकिन वह स्टाफ़ ज़रूर बढ़ा सकती है. सिर्फ़ काम के घंटे घटा देने से ही काफ़ी दुर्घटनाओं से छुटकारा मिल सकता है. इनसानी जानों और भारत की गाढ़ी कमाई से ख़रीदे इंजिनों की बरबादी के नाम पर हमारी सरकार से अपील है कि वह इस तरफ़ ध्यान दे!

5. 2. '53 —मुजीब रिज़वी

नये ढंग का अगरेशन

अगर अमरीका के पास एटम बम न हों तब अमरीका दुनिया की ताक़तों में तीसरे दरजे की तो क्या चौथे दरजे की भी ताक़त न रह जाय. ज़मीन की लड़ाई में वह सब ताक़तों से कमज़ोर है. आमने सामने हो कर लड़ाई लड़ना तो उसकी ताक़त से एक दम बाहर है.

एटम बम ने अमरीका को बेहद फुला दिया है और इसी एटम बम के ज़ोम में वह उस एशिया से बदला लेने की सोच रहा है जिसके एक छोटे से मुल्क जापान ने अभी दस बरस भी नहीं बीते उसका नाकों दम कर दिया था.

آزادی کے بعد سے ایسی سب باتوں کو تیاگ دیا گیا ہے۔ جو جتنی لمبی رشوت دے سکتا ہے وہ اُتنی ہی بڑی آمدنی کی جگہ پر پہونچ سکتا ہے۔ یہ بات ٹھیک ہے کہ پہلے بھی ٹرافک کی غلطیوں سے درگھٹنائیں ہوتی تھیں، لائن کلیر وغیرہ دینے میں غلطی ہو جاتی تھی۔ لیکن یہ غلطیاں اب بڑھ گئی ہیں اور شاید بڑھتی ہی جا رہی ہیں۔

اُوپر کی باتوں سے دو موٹے نتیجے نکلتے ہیں: ایک یہ کہ رشوت کا بازار بری طرح گرم ہے جس کے کارن تجربہ وغیرہ کا خیال کئے بنا غیر ذمےدار لوگوں کو ذمےدار عہدے مل جاتے ہیں۔ یہ لوگ کام کرنے کے بجائے پیسہ کمانے کے چکر میں رہتے ہیں۔ اِس سمبندھ میں ایک قصہ سننے میں آیا ہے جس پر کوئی سمجھدار دیش بھکت دکھ پرکٹ کئے بنا نہ رہے گا—ابھی حال میں لکھنؤ اور الہ آباد کے بیچ چلنے والی جنتا ایکسپریس 'اونچاہار' کے قریب پٹری سے اُتر گئی تھی۔ کہا جاتا ہے کہ اِس میں سراسر انجینیر کی غلطی تھی۔ گینگ مین نے بار بار چیتاونی دی لیکن انجینیر صاحب نے اُس کی بات نہیں مانی۔ نتیجہ جو ہونا تھا سو ہوا۔

دوسرا نتیجہ یہ ہے کہ سرکار جان بچانے کے بجائے روپیہ بچانے کے چکر میں رہتی ہے۔ اسی کارن اسٹاف ضرورت سے کم زیادہ کم ہے۔

اِس طرح بات صاف ہو جاتی ہے کہ کسی ویکتی یا سنستھا کی یہ ذمےداری نہیں ہے بلکہ سرکاری مشینری کے کارن ہی یہ درگھٹنائیں ہو رہی ہیں۔ سرکار رشوت بازی بند نہیں کرسکتی، یہ اُس کے بس کے باہر کی بات ہے۔ لیکن وہ اسٹاف ضرور بڑھا سکتی ہے۔ صرف کام کے گھنٹے گھٹا دینے سے ہی کافی درگھٹناؤں سے چھٹکارا مل سکتا ہے۔ انسانی جانوں اور بھارت کی گاڑھی کمائی سے خریدے انجنوں کی بربادی کے نام پر ہماری سرکار سے اپیل ہے کہ وہ اِس طرف سے دھیان دے!

—مجیب رضوی 5. 2. '53

نئے ڈھنگ کا اگریشن

اگر امریکہ کے پاس ایٹم بم نہ ہوں تب امریکہ دنیا کی طاقتوں میں تیسرے درجے کی تو کیا چوتھے درجے کی بھی طاقت نہ رہ جائے۔ زمین کی لڑائی میں وہ سب طاقتوں سے کمزور ہے۔ آمنے سامنے ہوکر لڑائی لڑنا تو اُس کی طاقت سے ایک دم باہر ہے۔

ایٹم بم نے امریکہ کو بےحد پھلا دیا ہے اور اُسی ایٹم بم کے زعم میں وہ اُس ایشیا سے بدلہ لینے کی سوچ رہا ہے جس کے ایک چھوٹے سے ملک جاپان نے ابھی دس برس بھی نہیں بیتے اُس کا ناکوں دم کردیا تھا۔

पटरियाँ ठीक न होंगी तो दुर्घटनायें लाज़मी तौर पर होंगी. लाइनों पर काम करने वाले मजदूरों ने जो जानकारी हमें दी है वह यह है: लाइन पर पहले पांच फ़ुट गहरा गढ़ा खोदा जाता है और फिर उसको गिट्टी से पाटा जाता है. इस काम को "पटरी गलाना" कहते हैं. गिट्टियों पर सिलपट बिछाई जाती है और सिलपट के ऊपर लोहे की लाइनें जड़ी जाती हैं. जितना ही गहरा गढ़ा होगा उतना ही कम हचका लाइनों को लगेगा. ब्रिटिश ज़माने में तीन मील की लाइन ठीक करने के लिये बीस आदमियों का गैंग रहता था. वह पूरी लाइन का ज़िम्मेदार था. दो आदमियों के लिये ज़रूरी था कि वह आठ सिलपट रोज़ गलाया करें.

कांगरेस सरकार आने पर काम के ढंग में तबदीली की गई: (1) गढ़ा पांच फ़ीट गहरा खोदने की जगह तीन फ़ीट ही खोदा जाने लगा (2) आठ सिलपट रोज़ गलाने की जगह दो आदमियों को चौदह सिलपट रोज़ गलाने का हुक्म दिया गया (3) पूरे हिन्दुस्तान में ढ़ाई लाख गैंगमैन थे. सरकार ने पचास हज़ार की छटनी कर दी. इस कारन जो बीस आदमी तीन मील लाइन के ज़िम्मेदार थे उन्हें चार मील की ज़िम्मेदारी दे दी गई.

मज़दूरों का कहना है कि उनको पहले ही ज़रूरत से ज़ियादा काम करना पड़ता था, ऊपर से इतना काम और बढ़ा दिया गया है. वह अफ़सरी धौंस में आ कर काम की खाना पूरी कर देते हैं. लेकिन उन्हें इससे मतलब नहीं होता कि काम ख़राब हुआ है या अच्छा. न उनका कुछ बिगड़ता है और न अधिकारियों का. जनता की जान जाती है और उसकी गाढ़ी कमाई से ख़रीदे हुए इंजिनों की बरबादी होती है.

ब्रिटिश ज़माने में होशियार गैंगमैन रखे जाते थे. एक तरह से इनकी एक नस्ल चल गई थी. जो गैंगमैन दो चार बार काम कर लेता था उसको हमेशा काम दिया जाता था. आज़ादी के बाद से गैंगमैनों की भरती में भी ज़ोरों की रिश्वत चलने लगी. जो दो चार बार काम कर लेता है वह समझता है कि काम मिलना उसका हक़ है और वह रिश्वत नहीं देता. नये लोग आते हैं तो अधिकारियों की जेब गरम होती है. नतीजा यह है कि हमेशा नये नये आदमियों के सुपुर्द लाइन का काम कर दिया जाता है.

लाइनें इतनी ख़राब बन रही हैं कि एक ड्राइवर ने शिकायत करते हुए कहा: हचकोले से हमारा पेट हिलने लगता है और तबियत परेशान हो जाती है.

ट्राफ़िक

ब्रिटिश ज़माने में नये नये रंगरूटों को पहले छोटे छोटे स्टेशनों पर रख कर ट्रेनिंग दी जाती थी और पुराने तजुर्बेकार लोगों को बड़े बड़े स्टेशनों पर भेजा जाता था. लेकिन

پٹریاں ٹھیک نہ ہوں گی تو دُرگھٹنائیں لازمی طور پر ہوں گی۔ لائنوں پر کام کرنے والے مزدوروں نے جو جانکاری ہمیں دی ہے وہ یہ ہے: لائن پر پہلے پانچ فٹ گہرا گڑھا کھودا جاتا ہے اور پھر اُس کو گٹی سے پاٹا جاتا ہے۔ اس کام کو "پٹری گلانا" کہتے ہیں۔ گٹیوں پر سلیپٹ بچھائی جاتی ہے اور سلیپٹ کے اوپر لوہے کی لائنیں جڑی جاتی ہیں۔ جتنا ہی گہرا گڑھا ہوگا اُتنا ہی کم ہچکا لائنوں کو لگے گا۔ برٹش زمانے میں تین میل کی لائن ٹھیک کرنے کے لئے بیس آدمیوں کا گینگ رہتا تھا۔ وہ پوری لائن کا ذمے دار تھا۔ دو آدمیوں کے لئے ضروری تھا کہ وہ 8 سلیپٹ روز گلایا کریں۔

کانگریس سرکار آنے پر کام کے ڈھنگ میں تبدیلی کی گئی: (1) گڑھا پانچ فٹ گہرا کھودنے کی جگہ تین فٹ ہی کھودا جانے لگا (2) 8 سلیپٹ روز گلانے کی جگہ دو آدمیوں کو چودہ سلیپٹ روز گلانے کا حکم دیا گیا۔ (3) پورے ہندستان میں ڈھائی لاکھ گینگ مین تھے۔ سرکار نے پچاس ہزار کی چھٹنی کر دی۔ اِس کارن جو بیس آدمی تین میل لائن کے ذمےدار تھے اُنہیں چار میل کی ذمے داری دے دی گئی۔

مزدوروں کا کہنا ہے کہ اُن کو پہلے ہی ضرورت سے زیادہ کام کرنا پڑتا تھا، اوپر سے اتنا کام اور بڑھا دیا گیا ہے۔ وہ افسری دھونس میں آکر کام کی خانہ پری کر دیتے ہیں لیکن انہیں اِس سے مطلب نہیں ہوتا کہ کام خراب ہوا ہے یا اچھا۔ نہ اُن کا کچھ بگڑتا ہے اور نہ ادھیکاریوں کا۔ جنتا کی جان جاتی ہے اور اُس کی گاڑھی کمائی سے خریدے ہوئے انجنوں کی بربادی ہوتی ہے۔

برٹش زمانے میں ہوشیار گینگ مین رکھے جاتے تھے۔ ایک طرح سے اِن کی ایک نسل چل گئی تھی۔ جو گینگ مین دو چار بار کام کر لیتا تھا اس کو ہمیشہ کام دیا جاتا تھا۔ آزادی کے بعد سے گینگ مینوں کی بھرتی میں بھی زوروں کی رشوت چلنے لگی۔ جو دو چار بار کام کر لیتا ہے وہ سمجھتا ہے کہ کام ملنا اس کا حق ہے اور وہ رشوت نہیں دیتا۔ نئے لوگ آتے ہیں تو ادھیکاریوں کی جیب گرم ہوتی ہے۔ نتیجہ یہ ہے کہ ہمیشہ نئے نئے آدمیوں کے سپرد لائن کا کام کر دیا جاتا ہے۔

لائنیں اتنی خراب بن رہی ہیں کہ ایک ڈرائیور نے شکایت کرتے ہوئے کہا: ہچکولے سے ہمارا پیٹ ہلنے لگتا ہے اور طبیعت پریشان ہو جاتی ہے۔

ٹرافک

برٹش زمانے میں نئے نئے رنگروٹوں کو پہلے چھوٹے چھوٹے اسٹیشنوں پر رکھ کر ٹریننگ دی جاتی تھی اور پرانے تجربہ کار لوگوں کو بڑے بڑے اسٹیشنوں پر بھیجا جاتا تھا۔ لیکن

होती है. कोयला झोंकने के लिये दो आदमी आवश्यक हैं. शुरू शुरू में दो आदमी मुक़र्रर भी किये गए थे. बाद में पैसा बचाने के लिये एक आदमी से पूरा काम लिया जाने लगा. ज़ाहिर बात है काम पूरा नहीं हो सकता और इस कारन ड्राइवर को भी इस तरफ़ ध्यान देना पड़ता है. ड्राइवर का ध्यान बँट जाने पर दुर्घटनाओं का होना क़ुदरती है.

किसी किसी पुराने इंजिनों में तो आगे का लैम्प तक नहीं है. कहा जाता है कि सिर्फ़ नारदर्न रेलवे में छै ऐसे इंजिन हैं जिनमें हेड लाइट नहीं हैं. गार्ड और ड्राइवर जब इस बात की शिकायत करते हैं तो अधिकारी हँस कर कह देते हैं : "लेभी जाओ यह देसी रेल है, देसी रेल." जो लोग कुछ भी दुर्घटनाओं के बारे में जानते हैं उन्हें पता है कि इंजिन की हेड लाइट कितनी ज़रूरी है.

ड्राइवर की नौकरी कितनी कठिन होती है यह कहने की ज़रूरत नहीं उसे आग में झुलसना पड़ता है, बैठने की भी कोई जगह इंजिन में नहीं होती. उसे पैरों पर खड़ा रहना पड़ता है. ज़ाहिर है ऐसा काम कोई आदमी पूरे ध्यान से आठ घंटे से ज़ियादा नहीं कर सकता. आठ घंटे के काम के बाद भी ज़रूरत इस बात की है कि उसे अच्छी ख़ुराक मिले और ऐसा प्रबन्ध हो जिससे उसके जिस्म को फिर से खोई हुई ताक़त मिल जाय. हमारे ड्राइवरों को आठ घंटे की जगह बाईस बाईस घंटे काम करना पड़ता है. यह ठीक है कि सरकार उन्हें ओवरटाइम (Over-time) देती है और वह इसी लालच में काम करते रहते हैं. लेकिन सरकार को सोचना चाहिये कि वह इतनी देर तक ध्यान पूर्वक काम कर भी सकते हैं या नहीं. शायद सरकार को यह सब सोचने की फ़ुर्सत नहीं. वह तो यह सोचती रहती है कि काम चलता रहे और आदमी किसी सूरत से न बढ़ने पाएं.

इस पक्ष में सरकार का कहना है : आज़ादी से पहले ज़ियादातर ड्राइवर मुसलमान और ऐंग्लोइन्डियन थे. उनकी एक बड़ी तादाद पाकिस्तान चली गई है. इस कारन ड्राइवरों से ओवरटाइम कराना पड़ता है. पांच साल के बाद यह दलील बिलकुल नहीं जँचती. सरकार चाहती तो इस अरसे में न जाने कितने हज़ार ड्राइवर ट्रेन्ड कर लेती. दूसरी तरफ़ ट्रेन्ड लोगों को निकम्मा रखने की सरकारी पालिसी समझ में नहीं आती. ऐसे रेलवे कर्मचारियों की काफ़ी तादाद है जिन्होंने फ़ारम पर "पाकिस्तान" जाने की बात तो लिख दी थी लेकिन वह पाकिस्तान नहीं गए और यहीं काम करते रहे. न जाने किस लिये सरकार ने उन्हें नौकरी से अलग कर दिया है. ज़रूरत की भी मांग है और क़ानूनन भी उनका हक़ है कि ऐसे सब लोगों को ड्यूटी दी जाय.

इंजीनियरिंग

इंजीनियरिंग विभाग की ज़िम्मेदारी है कि वह रेल की पटरियों को ठीक रखे. ज़ाहिर बात है अगर रेल की

ہوتی ہے ۔ کوئلہ جھونکنے کے لئے دو آدمی آوشیک ہیں ۔ شروع شروع میں دو آدمی مقرر بھی کئے گئے تھے ۔ بعد میں پیسہ بچانے کے لئے ایک آدمی سے پورا کام لیا جانے لگا۔ ظاہر بات ہے کام پورا نہیں ہو سکتا اور اس کارن ڈرائیور کو بھی اس طرف دھیان دینا پڑتا ہے ۔ ڈرائیور کا دھیان بٹ جانے پر درگھٹناؤں ہونا قدرتی ہے ۔

کسی کسی پرانے انجنوں میں تو آگے کا لیمپ تک نہیں ہے ۔ کہا جاتا ہے کہ صرف ناردن ریلوے میں چھ ایسے انجن ہیں جن میں ہیڈلائٹ نہیں ہیں ۔ گارڈ اور ڈرائیور جب اس بات کی شکایت کرتے ہیں تو ادھیکاری ہنس کر کہ دیتے ہیں: "لےبھی جاؤ' یہ دیسی ریل ہے' دیسی ریل"۔ جو لوگ کچھ بھی درگھٹناؤں کے بارے میں جانتے ہیں انہیں پتہ ہے کہ ان کی ہیڈلائٹ کتنی ضروری ہے ۔

ڈرائیور کی نوکری کتنی کٹھن ہوتی ہے یہ کہنے کی ضرورت نہیں ۔ اسے آگ میں جھلسنا پڑتا ہے' بیٹھنے کی بھی کوئی جگہ انجن میں نہیں ہوتی ۔ اسے پیروں پر کھڑا رہنا پڑتا ہے ۔ ظاہر ہے ایسا کام کوئی آدمی پورے دھیان سے آٹھ گھنٹے سے زیادہ نہیں کرسکتا ۔ آٹھ گھنٹے کے کام کے بعد بھی ضرورت اس بات کی ہے کہ اسے اچھی خوراک ملے اور ایسا پربندھ ہو جس سے اس کے جسم کو پھر سے کھوئی ہوئی طاقت مل جائے ۔ ہمارے ڈرائیوروں کو آٹھ گھنٹے کی جگہ بائیس بائیس گھنٹے کام کرنا پڑتا ہے۔ یہ ٹھیک ہے کہ سرکار انہیں اورٹائم (Over-time) دیتی ہے اور وہ اسی لالچ میں کام کرتے ہیں ۔ لیکن سرکار کو سوچنا چاہئے کہ وہ اتنی دیر تک دھیان پوروک کام کر بھی سکتے ہیں یا نہیں۔ شاید سرکار کو یہ سب سوچنے کی فرصت نہیں ۔ وہ تو یہ سوچتی رہتی ہے کہ کام چلتا رہے اور آدمی کسی صورت سے نہ بڑھنے پائیں ۔

اس پکش میں سرکار کا کہنا ہے : آزادی سے پہلے زیادہ‌تر ڈرائیور مسلمان اور اینگلوانڈین تھے۔ ان کی ایک بڑی تعداد پاکستان چلی گئی ہے ۔ اس کارن ڈرائیوروں سے اورٹائم کرانا پڑتا ہے ۔ پانچ سال کے بعد یہ دلیل بالکل نہیں جنچتی ۔ سرکار چاہتی تو اس عرصے میں نہ جانے کتنے ہزار ڈرائیور ٹرینڈ کرلیتی ۔ دوسری طرف ٹرینڈ لوگوں کو نکما رکھنے کی سرکاری پالیسی سمجھ میں نہیں آتی ۔ ایسے ریلوے کرمچاریوں کی کافی تعداد ہے جنہوں نے فارم پر "پاکستان" جانے کی بات تو لکھ دی تھی لیکن وہ پاکستان نہیں گئے اور یہیں کام کرتے رہے ۔ نہ جانے کس لئے سرکار نے انہیں نوکری سے الگ کردیا ہے۔ ضرورت کی بھی مانگ ہے اور قانوناً بھی ان کا حق ہے کہ ایسے سب لوگوں کو ڈیوٹی دی جائے ۔

انجینئرنگ

انجینئرنگ وبھاگ کی ذمے داری ہے کہ وہ ریل کی پٹریوں کو ٹھیک رکھے۔ ظاہر بات ہے اگر ریل کی

(7) हिन्दुस्तान के तटस्थ बने रहने में और बने रहने देने में ही सब मुल्कों का नफ़ा है और दुनिया का नफ़ा है.

(8) हिन्दुस्तान के तटस्थ रहते रहते यह बात मुश्किल ही मालूम होती है कि कोई लड़ाई दुनिया की लड़ाई में बदल जाय. और अगर बदल ही जाय तो वह तीसरी लड़ाई दुनिया की बरबादी का इतना ज़बरदस्त कारन न बन सकेगी जितना वह जब बनती जब हिन्दुस्तान किसी एक ब्लाक में मिल गया होता.

(9) हिन्दुस्तान का फूल गांधी जान पर खेल गया, पर सब को खुशबू देता रहा. किसी एक का बनकर न रहा. अपनी पाली पोसी कांग्रेस से भी अलग हो गया. पर सबको एक आंख से देखने की आदत न छोड़ी. आज के हिन्दुस्तान की हुकूमत उसी की देन है. उस की निगरानी में सारा हिन्दुस्तान जान पर खेल जाना पसन्द करेगा. पर किसी एक ब्लाक में मिलकर न देगा और अपने जीते जी दोनों का समतोल बनाए रखेगा.

5. 2. '53 —भगवानदीन

रेलवे दुर्घटनायें क्यों?

आज़ादी के बाद से रेलवे दुर्घटनायें बहुत बढ़ गई हैं. इनकी ज़िम्मेदारी सरकार कभी किसी राजकाजी पार्टी के सिर थोप देती है और कभी किसी व्यक्ति को दोशी ठहराती है. लेकिन आज तक सरकार दोश लगाती तो ज़रूर रही है पर उन्हें सिद्ध नहीं कर पाई. इसीलिये सरकार के बयान हमारे गले नहीं उतरते. जांच कमीशन बैठाए ज़रूर जाते हैं लेकिन वह गोलमोल बात कर के मामला टला देते हैं और सरकार अपने को समझा लेती है कि दस-पांच दुर्घटनायें भी हिन्दुस्तान में न हों तो बात ही क्या है; अमरीका वग़ैरा में तो आए दिन ऐसे हादसे होते रहते हैं.

इस सम्बन्ध में हमने छानबीन की है. ड्रायवरों, फ़ायरमैनों, कुलियों, गार्डों, गेंगमैनों और रेलवे के दूसरे तजुरबेकार मुलाज़िमों से जो जानकारी हमें मिली है वह हम पाठकों के सामने रखते हैं. यह लोग मोटे तौर पर पूरे रेलवे महकमे को तीन हिस्सों में बांटते हैं: (1) लोकोमोटिव (2) इंजीनीरिंग (3) ट्राफ़िक. ऊपर लिखे सब तरह के व्यक्तियों से बात करने के बाद हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि महकमे के तीनों भाग दुर्घटनाओं के ज़िम्मेदार हैं.

लोकोमोटिव

ज़ियादातर गाड़ियों में कनाडियन इंजिन लगा दिये गए हैं. यह इंजिन देखने में तो बहुत भारी भर कम हैं लेकिन इनकी बाडी बहुत ख़राब है. चलते समय यह पटरियों को बहुत धक्का देते हैं, जिसकी वजह से पटरी से उतर जाने का ख़तरा रहता है. भारी होने के कारन इन्हें ईंधन की ज़ियादा ज़रूरत

(7) ہندستان کے تٹستھ بنے رہنے میں اور بنے رہنے دینے میں ہی سب ملکوں کا نفع ہے اور دنیا کا نفع ہے .

(8) ہندستان کے تٹستھ رہتے رہتے یہ بات مشکل ہی معلوم ہوتی ہے کہ کوئی لڑائی دنیا کی لڑائی میں بدل جائے . اور اگر بدل ہی جائے تو وہ تیسری لڑائی دنیا کی بربادی کا اتنا زبردست کارن نہ بن سکے گی جتنا وہ جب بنتی جب ہندستان کسی ایک بلاک میں مل گیا ہوتا .

(9) ہندستان کا پھول گاندھی جان پر کھیل گیا، پر سب کو خوشبو دیتا رہا . کسی ایک کا بن کر نہ رہا . اپنی پالی پوسی کانگریس سے بھی الگ ہو گیا پر سب کو ایک آنکھ سے دیکھنے کی عادت نہ چھوڑی . آج کے ہندستان کی حکومت اسی کی دین ہے . اسکی نگرانی میں سارا ہندستان جان پر کھیل جانا پسند کرے گا پر کسی ایک بلاک میں مل کر نہ دے گا اور اپنے جیتے جی دونوں کا سمتول بنائے رکھے گا .

5-2-'53 —بھگوان دین

ریلوے درگھٹنائیں کیوں؟

آزادی کے بعد سے ریلوے درگھٹنائیں بہت بڑھ گئی ہیں . ان کی ذمے داری سرکار کبھی کسی راج کاجی پارٹی کے سر تھوپ دیتی ہے اور کبھی کسی ویکتی کو دوشی ٹھہراتی ہے . لیکن آج تک سرکار دوش لگاتی تو ضرور رہی ہے پر انہیں سدھ نہیں کر پائی . اسی لئے سرکار کے بیان ہمارے گلے نہیں اترتے . جانچ کمیشن بٹھائے ضرور جاتے ہیں لیکن وہ گول مول بات کر کے معاملہ ٹلا دیتے ہیں اور سرکار اپنے کو سمجھا لیتی ہے کہ دس پانچ درگھٹنائیں بھی ہندستان میں نہ ہوں تو بات ہی کیا ہے؛ امریکہ وغیرہ میں تو آئے دن ایسے حادثے ہوتے رہتے ہیں .

اس سمبندھ میں ہم نے چھان بین کی ہے . ڈرائیوروں، فورمینوں، قلیوں، گارڈوں، گینگ مینوں اور ریلوے کے دوسرے تجربے کار ملازموں سے جو جانکاری ہمیں ملی ہے وہ ہم پاٹھکوں کے سامنے رکھتے ہیں . یہ لوگ موٹے طور پر پورے ریلوے محکمے کو تین حصوں میں بانٹتے ہیں: (1) لوکوموٹیو (2) انجینیرنگ (3) ٹرافک . اوپر لکھے سب طرح کے ویکتیوں سے بات کرنے کے بعد ہم اس نتیجے پر پہونچے ہیں کہ محکمے کے تینوں بھاگ درگھٹناؤں کے ذمے دار ہیں .

لوکوموٹیو

زیادہ تر گاڑیوں میں کناڈین انجن لگا دیئے گئے ہیں . یہ انجن دیکھنے میں تو بہت بھاری بھرکم ہیں لیکن ان کی باڈی بہت خراب ہے . چلتے سمے یہ پٹریوں کو بہت دھکا دیتے ہیں، جس کی وجہ سے پٹری سے اتر جانے کا خطرہ رہتا ہے . بھاری ہونے کے کارن انہیں ایندھن کی زیادہ ضرورت

(1) हिन्दुस्तान ग़रीब मुल्क है. इसके यह माने नहीं कि यह कोई भूकों मरता देश है. हां, दो एक मुल्क से कम मालदार है यानी अगर इस की सारी सम्पत्ति सब लोगों में ठीक से बांट दी जाय तो फिर यह ग़रीब देश नहीं रह जायगा. ग़रीब देश हम सिर्फ़ इसको इस लिये कह रहे हैं कि यहां ग़रीबों की तादाद बहुत ज़ियादा है और मालदारों की तादाद बहुत कम.

(2) ग़लत या सही मामूली प्रचार से ग़रीब लोगों में समाजवाद का पौदा जितनी जल्दी जड़ पकड़ता है उतनी जल्दी पूंजीवाद का पौदा जड़ नहीं पकड़ सकता. हिन्दुस्तान में कुछ ही दिनों में समाजवादी ख़्यालों ने आधे से ज़ियादा आदमियों को अपने दायरे मे ले लिया है. बाक़ी आधे से कम भी पूंजीवाद के पक्के पैरोकार नहीं. मौक़ा पड़ने पर उनकी बहुत बड़ी तादाद समाजवाद की तरफ़ झुकेगी. इसलिये समाजवाद का पल्ला और भी वज़नी हो जायगा.

(3) कोई विदेशी बहुत कोशिश करने पर भी यह पता नहीं लगा सकता कि हिन्दुस्तान में कितने समाजवादी हैं. हिन्दुस्तान की हकूमत भी अगर चाहे तो उनकी तादाद का पता नहीं लगा सकती.

(4) समाजवाद एक धर्म है. हिन्दुस्तान में धर्म अनोखे ढंग से फैलते हैं. जब आर्यसमाजी एक लाख थे तब आर्य-समाज के ख़्याल के आदमियों की तादाद एक करोड़ थी. और अब तो एक तरह से दसियों करोड़ आर्यसमाज के ख़्याल रखते हैं, पर अपने को आर्यसमाजी नहीं कहते. हिन्दुस्तान में ठीक इसी तरह से समाजवाद फैल चुका है. समाजवादियों की ठीक ठीक तादाद गवर्मेन्ट का क़रीब क़रीब हर एक आदमी अलग अलग अच्छी तरह जानता है, पर सरकार के मेम्बर की हैसियत से बिलकुल नहीं जानता, क्योंकि उसके लिये सबूत चाहिये पर खाते बही वाला सबूत कहीं है ही नहीं.

(5) समाजवादियों का न दिखलाई देने वाला बिखराव उसी वक़्त तक न दिखलाई देने वाला रहेगा जब तक हिन्दुस्तानी सरकार तटस्थ बनी रहेगी. जैसे ही हिन्दुस्तानी सरकार का पलड़ा पूंजीवाद की तरफ़ मामूल से ज़ियादा झुका तो समाज वादियों का यह सारा बिखराव एक दम संगठित हो जायगा और सरकार के मुक़ाबले के लिये तय्यार हो जायगा यानी हिन्दुस्तान में घरेलू लड़ाई छिड़ जायगी.

(6) अगर हिन्दुस्तानी सरकार मामूल से ज़ियादा समाजवाद की तरफ़ झुकी तो उंगलियों पर गिना जाने वाला पूंजीवादी दल विदेशियों के पांचवें कालम का काम करेगा उसकी वजह से एक तूफ़ान तो खड़ा होगा पर जल्दी दबाया जा सकेगा. उनकी वजह से घरेलू लड़ाई की नौबत आ जाय ऐसा नहीं हो सकेगा.

(1) ھندستان غریب ملک ھے ۔ اس کے یہ معنے نہیں کہ یہ کوئی بھوکوں مرتا دیش ھے۔ ھاں، دو ایک ملک سے کم مالدار ھے ۔ یعنی اگر اِس کی ساری سمپتی سب لوگوں میں ٹھیک سے بانٹ دی جائے تو پھر یہ غریب دیش نہیں رہ جائے گا ۔ غریب دیش ھم صرف اِس کو اس لئے کہہ رھے ھیں کہ یہاں غریبوں کی تعداد بہت زیادہ ھے اور مالداروں کی تعداد بہت کم ۔

(2) غلط یا صحیح معمولی پرچار سے غریب لوگوں میں سماج واد کا پودا جتنی جلدی جڑ پکڑتا ھے اتنی جلدی پونجی واد کا پودا جڑ نہیں پکڑ سکتا ۔ ھندستان میں کچھ ھی دنوں میں سماج وادی خیالوں نے آدھے سے زیادہ آدمیوں کو اپنے دائرے میں لے لیا ھے، باقی آدھے سے کم بھی پونجی واد کے پکے پیروکار نہیں ۔ موقع پڑنے پر اُن کی بہت بڑی تعداد سماج واد کی طرف جھکے گی ۔ اس لئے سماج واد کا پلہ اور بھی وزنی ھو جائے گا۔

(3) کوئی ودیشی بہت کوشش کرنے پر بھی یہ پتہ نہیں لگا سکتا کہ ھندستان میں کتنے سماج وادی ھیں۔ ھندستان کی حکومت بھی اگر چاھے تو اُن کی تعداد کا پتہ نہیں لگا سکتی ۔

(4) سماج واد ایک دھرم ھے ۔ ھندستان میں دھرم انوکھے ڈھنگ سے پھیلتے ھیں ۔ جب آریہ سماجی ایک لاکھ تھے تب آریہ سماج کے خیال کے آدمیوں کی تعداد ایک ایک کروڑ تھی ۔ اور اب تو ایک طرح سے دسیوں کروڑ آریہ سماج کے خیال رکھتے ھیں، پر اپنے کو آریہ سماجی نہیں کہتے ۔ ھندستان میں ٹھیک اِسی طرح سے سماج واد پھیل چکا ھے ۔ سماج وادیوں کی ٹھیک ٹھیک تعداد گورنمنٹ کا قریب قریب ھر ایک آدمی الگ الگ اچھی طرح جانتا ھے، پر سرکار کے ممبر کی حیثیت سے بالکل نہیں جانتا، کیونکہ اُس کے لئے ثبوت چاھئے ۔ پر کھاتے بہی والا ثبوت کہیں ھے ھی نہیں ۔

(5) سماج وادیوں کا نہ دکھائی دینے والا بکھراؤ اُسی وقت تک نہ دکھائی دینے والا رھے گا جب تک ھندستانی سرکار تٹستھ بنی رھے گی۔ جیسے ھی ھندستانی سرکار کا پلڑا پونجی واد کی طرف معمول سے زیادہ جھکا تو سماج وادیوں کا یہ سارا بکھراؤ ایک دم سنگٹھت ھو جائے گا اور سرکار کے مقابلے کے لئے تیار ھو جائے گا یعنی ھندستان میں گھریلو لڑائی چھڑ جائے گی ۔

(6) اگر ھندستانی سرکار معمول سے زیادہ سماج واد کی طرف جھکی تو انگلیوں پر گنا جانے والا پونجی وادی دل ودیشیوں کے پانچویں کالم کا کام کرے گا ۔ اُس کی وجہ سے ایک طوفان تو کھڑا ھوگا پر جلدی دبایا جاسکے گا ۔ اُن کی وجہ سے گھریلو لڑائی کی نوبت آ جائے ایسا نہیں ھو سکے گا ۔

लड़ाई के बादल

आइज़न हावर के गद्दीपर बैठते ही दूर पूरब में लड़ाई के बादल जमने लग गए.

कुछ दिनों यह हाल रहेगा कि कभी कभी ऐसा मालूम होगा कि बादल गहरे जम गए और बरसने को ही हैं. और जल्दी ही यह मालूम होने लगेगा कि बादल तितर बितर हो रहे हैं और बारिश नहीं होगी.

अकाल के मौक़े पर मामूली बादल का टुकड़ा अनाज के भाव पर असर डाल देता है. ठीक इसी तरह शान्ति की हालत में लड़ाई के बादल का मामूली सा टुकड़ा दुनिया की तमाम चीज़ों के भावों पर असर डाल देता है. हो सकता है अमरीका ने इसी ख़याल से लड़ाई के बादल का यह टुकड़ा आसमान पर फेंका हो, ईश्वर करे यही बात सच निकले.

पर यह बात सच्ची होती नज़र नहीं आती, क्यों कि अमरीका की गद्दी एक फ़ौजी जनरल के हाथ में है, और फ़ौजी जनरल भी ऐसा जिसके ऊपर किसी का दबाव नहीं.

अमरीका सिर्फ़ कहने के लिये लोकशाही है. अमली तौर पर वह कट्टर राजशाही और साम्राजशाही है और फिर तानाशाही तो है ही.

कोरिया के मामले में वह हुआ जो ट्रूमन साहब ने चाहा और ट्रूमन साहब ने वह चाहा जो फ़ौजी जनरल मैक आर्थर ने चाहा.

दुनिया के किसी हिस्से पर आज इतनी ज़ोर की अगर लड़ाई छिड़ती है जो तीसरी दुनिया की लड़ाई का कारन बन सकती है, वह अमरीका यानी आइज़न हावर की छेड़ी हुई हो सकती है, या उस के इशारे पर छिड़ी हो सकती है.

लड़ाई के बादल के जो टुकड़े दूर पूरब में सारी दुनिया को नज़र आने लगे हैं, वह अमरीका के हाथ के फेंके हुए हैं, यह सारी दुनिया जानती है. इसलिये हो सकता है कि यह टुकड़े तीसरी लड़ाई की सुरंग का फ़लीता साबित हों. ईश्वर न करे ऐसा हो! अगर ऐसा हुआ तो हिन्दुस्तान के बारे में सारी दुनिया आमतौर से और अमरीका ख़ासतौर से नीचे की बातें नोट कर ले.

لڑائی کے بادل

آئزن ہاور کے گدی پر بیٹھتے ہی دور پورب میں لڑائی کے بادل جمنے لگ گئے.

کچھ دنوں یہ حال رہے گا کہ کبھی کبھی ایسا معلوم ہوگا کہ بادل گہرے جم گئے ہیں اور برسنے کو ہی ہیں. اور جلدی ہی یہ معلوم ہونے لگے گا کہ بادل تتر بتر ہو رہے ہیں اور بارش نہیں ہوگی.

اکال کے موقعے پر معمولی بادل کا ٹکڑا اناج کے بھاؤ پر اثر ڈال دیتا ہے. ٹھیک اسی طرح شانتی کی حالت میں لڑائی کے بادل کا معمولی سا ٹکڑا دنیا کی تمام چیزوں کے بھاؤں پر اثر ڈال دیتا ہے. ہو سکتا ہے امریکہ نے اسی خیال سے لڑائی کے بادل کا یہ ٹکڑا آسمان پر پھینکا ہو، ایشور کرے یہی بات سچ نکلے.

پر یہ بات سچی ہوتی نظر نہیں آتی، کیونکہ امریکہ کی گدی ایک فوجی جنرل کے ہاتھ میں ہے، اور فوجی جنرل بھی ایسا جس کے اوپر کسی کا دباؤ نہیں.

امریکہ صرف کہنے کے لئے لوک شاہی ہے. عملی طور پر وہ کٹر راج شاہی اور سامراج شاہی ہے اور پھر تانا شاہی تو ہے ہی.

کوریا کے معاملے میں وہ ہوا جو ٹرومن صاحب نے چاہا اور ٹرومن صاحب نے وہ چاہا جو فوجی جنرل میک آرتھر نے چاہا.

دنیا کے کسی حصہ پر آج اتنی زور کی اگر لڑائی چھڑتی ہے تو جو تیسری دنیا کی لڑائی کا کارن بن سکتی ہے، وہ امریکہ یعنی آئزن ہاور کی چھیڑی ہوئی ہو سکتی ہے یا اس کے اشارے پر چھڑی ہو سکتی ہے.

لڑائی کے بادل کے جو ٹکڑے دور پورب میں ساری دنیا کو نظر آنے لگے ہیں، وہ امریکہ کے ہاتھ کے پھینکے ہوئے ہیں، یہ ساری دنیا جانتی ہے. اس لئے ہو سکتا ہے کہ یہ ٹکڑے تیسری لڑائی کی سرنگ کا فلیتا ثابت ہوں. ایشور نہ کرے ایسا ہو! اگر ایسا ہوا تو ہندستان کے بارے میں ساری دنیا عام طور سے اور امریکہ خاص طور سے نیچے کی باتیں نوٹ کر لے :

'नया हिन्द' में कर चुके हैं. आज सातवीं पुस्तक "धर्म के नाम पर" किताब के बारे में नीचे लिखते हैं—

यह किताब 128 सफ़े की है. दाम है डेढ़ रुपया, छपाई बहुत साफ़ है. यह करनल इंगर सोल के व्याख्यान और निबन्धों का मंभी हिन्दी में बामहावरा अनुवाद है. अनुवादक हैं भदन्त आनन्द कौसल्यायन. आनन्द जी की लेखनी से सब हिन्दी पाठक अच्छी तरह परचित हैं. रही किताब की बात वह सचमुच ऐसी है कि उसको पढ़ कर यह हो ही नहीं सकता कि आदमी के अन्दर का आत्मा एक बार हर तरह आज़ाद होने के लिये उछल न पड़े. यों तो इस किताब में ईसाई धर्म के ख़िलाफ़ ही ज़ियादा लिखा गया है पर वह ऐसा लिखा गया है कि हर धर्म के ख़िलाफ़ उसे पढ़ा जा सकता है. धर्म अगर सचाई, ईमानदारी, प्रेम, शील और संतोश जैसे गुनों का नाम है तब तो यह कहना चाहिये कि यह पुस्तक सच्चे मानों में धर्म पुस्तक है क्योंकि इस में इन्हीं गुनों पर ज़ोर दिया गया है. हां, अगर धर्म से यह मतलब है कि गिरजों, मंदिर, मसजिद जाना, या पादरी, मुल्ला, प्रोहितों के हाथ बिक जाना, या नरक से डरना और स्वर्ग पाने की इच्छा करना या यह समझना कि सब कुछ ईश्वर के ही हाथ में है तब यह पुस्तक बेशक धर्म के ख़िलाफ़ है. यह किताब तो विचारों की पूरी आज़ादी देती है और इस नाते हो सकता है जो धर्म के कट्टर हैं वह इससे बिगड़ बैठे और ऐसी सरकारें भी इस किताब को पढ़ कर नाक भौं चढ़ाएं जो बेमतलब के दिखावे में विश्वास रखती हैं, और जो तमाशे के लिये अपने राजाओं पर या अपने प्रेसीडेन्टों पर लाखों का स्वाहा कर देती हैं.

यह पुस्तक ही नहीं, इस माला की सब पुस्तकें इस क़ाबिल हैं कि घर में रहें और हर हिन्दी जानकार के हाथ में दिखाई दें.

इसी हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर की दो किताबें हमें और मिली हैं. एक शरत् पत्रावलो यानी बंगाली मशहूर उपन्यास का शरत बाबू की चिट्ठियों का हिन्दी अनुवाद और दूसरी है उनकी उन कहानियों का संग्रह जो शरत् बाबू पूरी न कर पाए, अधूरी छोड़ गए.

शरत बाबू की किताबों के अनुवाद के बारे में इतना कहना काफ़ी है कि यह अनुवाद और अनुवादकों से अच्छा तो है ही पर कहीं भी ऐसा नहीं हुआ कि बंगाली का आनन्द कम हुआ हो. उसके अनुवादक हैं महादेव जी साहा. प्रकाशक खुद भी तो बंगला के बहुत अच्छे जानकार हैं.

—भगवानदीन

'نیا ہند' میں کرچکے ہیں. آج ساتویں پستک "دھرم کے پر" کتاب کے بارے میں نیچے لکھتے ہیں—

یہ کتاب 188 صفحے کی ہے' دام ہے ڈیڑھ روپیہ' چھپائی بہت صاف ہے . یہ کرنل اِنگر سول کے ویاکھیان اور نبندھوں کا ملجوی ہندی میں بامحاورہ انواد ہے . انوادک ہیں بھدنت آنند کوسلیاین . آنند جی کی لیکھنی سے سب ہندی پاٹھک اچھی طرح پرچت ہیں . رہی کتاب کی بات وہ سچ مچ ایسی ہے کہ اُس کو پڑھ کر یہ ہو ہی نہیں سکتا کہ آدمی کے اندر کا آتما ایک بار ہر طرح آزاد ہونے کے لئے اُچھل نہ پڑے. یوں تو اِس کتاب میں عیسائی دھرم کے خلاف ہی زیادہ لکھا گیا ہے پر وہ ایسا لکھا گیا ہے کہ ہر دھرم کے خلاف اُسے پڑھا جا سکتا ہے . دھرم اگر سچائی' ایمانداری' پریم' شیل اور سنتوش جیسے گنوں کا نام ہے تب تو یہ کہنا چاہئے کہ یہ پستک سچے معنوں میں دھرم پستک ہے کیونکہ اِس میں اِنہیں گنوں پر زور دیا گیا ہے . ہاں' اگر دھرم سے یہ مطلب ہے کہ گرجوں' مندر' مسجد جانا' یا پادری' ملا' پروہتوں کے ہاتھ بک جانا' یا نرک سے ڈرنا اور سورگ پانے کی اچھا کرنا یا یہ سمجھنا کہ سب کچھ ایشور کے ہی ہاتھ میں ہے تب یہ پستک بے شک دھرم کے خلاف ہے . یہ کتاب تو وچاروں کی پوری آزادی دیتی ہے اور اِس ناتے ہو سکتا ہے جو دھرم کے کٹر ہیں وہ اِس سے بگڑ بیٹھیں اور ایسی سرکاریں بھی اِس کتاب کو پڑھکر ناک بھوں چڑھائیں جو بے مطلب کے دکھاوے میں وشواس رکھتی ہیں اور جو تماشے کے لئے اپنے راجاؤں پر یا اپنے پریسیڈنٹوں پر لاکھوں کا سواہا کر دیتی ہیں .

یہ پستک ہی نہیں' اِس مالا کی سب پستکیں اِس قابل ہیں کہ گھر میں رہیں اور ہر ہندی جانکار کے ہاتھ میں دکھائی دیں .

اِسی ہندی گرنتھ رتنا کر کی دو کتابیں ہمیں اور ملی ہیں . ایک شرت پتراولی یعنی بنگالی مشہور اپنیاس کا شرت بابو کی چٹھیوں کا ہندی انواد اور دوسری ہے اُن کی اُن کہانیوں کا سنگرہ جو شرت بابو پوری نہ کر پائے' ادھوری چھوڑ گئے .

شرت بابو کی کتابوں کے انواد کے بارے میں اتنا کہنا کافی ہے کہ یہ انواد اور انوادوں سے اچھا تو ہے ہی پر کہیں بھی ایسا نہیں ہوا کہ بنگالی کا آنند کم ہوا ہو. اُس کے انوادک ہیں مہا دیو جی ساہا . پرکاشک خود بھی تو بنگلہ کے بہت اچھے جانکار ہیں .

—بھگوان دین

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर

हीरा बाग, गिरगांव, बम्बई नम्बर 4 में इस नाम का एक फ़र्म है. यह हिन्दी पुस्तकें निकालने का काम करता है. 'नाम बड़ा गुन थोड़े' की कहावत इस पर नहीं फबती. इस का नाम बड़ा है, तो काम भी बड़ा है. इस फ़र्म ने अब तक जितनी किताबें निकाली हैं उनको सचमुच हिन्दी ग्रन्थ रत्न कहा जा सकता है. हिन्दी प्रकाशकों में यह प्रकाशक ऐसे क्यों हैं, इसका कारन है. इस फ़र्म के प्रकाशक ख़ुद एक ऊंचे दरजे के साहित्यक हैं, और असाधारन नहीं तो साधारन कवि भी हैं. साहित्य को परखने की परख तो उनमें कमाल की है. लोगों ने भी उन्हें परख लिया और नागपुर की जनता ने उन्हें एक प्रेम पोथी यानी अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया. फ़र्म को ऐसा प्रकाशक मिल जाय इसे हिन्दी का भाग्य ही समझना चाहिये.

इस फ़र्म के प्रकाशक श्री नाथूराम प्रेमी ख़ुद एक पत्र के सम्पादक रह चुके हैं, किताब लिख चुके हैं. यह लेखक से प्रकाशक इसलिये नहीं बने कि मालदार हो जायें. पर इसलिये बने कि हिन्दी पाठकों को जो देने लायक़ चीज़ें हैं सिर्फ़ वही उन तक पहुंचाएं. इस में यह सफल हुए.

प्रेमी जी यह चाहते थे कि उनका क़ायम किया हुआ यह फ़र्म आगे भी इसी तरह के ग्रन्थ रत्न लोगों के सामने पेश करता रहे. इसलिये उन्होंने अपने बेटे को लिखने के काम में लगाया और वह जल्दी ही उनकी मर्ज़ी की माफ़िक़ ऊंचे दरजे का लेखक बन गया. पर "जा कि यहां चाहना है वाकी वहां चाहना है" इस सचाई के अनुसार वह इनका बेटा, हेमचन्द्र मोदी, भरी जवानी में दो बच्चे और बेवा छोड़ कर चल बसा. प्रेमी जी का दिल तो टूटा, पर हिम्मत न टूटने पाई. उसी के नाम पर हेम चन्द्र मोदी पुस्तक माला शुरू कर दी और उसमें दस हज़ार रुपया इस नीयत से लगा दिया कि उससे जो किताबें निकलें वह लागत के दाम पर बेचकर या ज़रूरत पड़े तो कुछ किताबों को लागत से कम दामों पर बेचकर उस रक़म की पूर्ती की जाती रहे. और अगर न हो सके तो वह रक़म पुस्तकों पर ही ख़त्म कर दी जाये. उस ग्रन्थ माला की अब तक सात किताबें निकल चुकी हैं, जिनकी समालोचना समय समय पर हम

هندی گرنتھ رتناکر

هیرا باغ، گرگاؤں، بمبئی نمبر 4 میں اِس نام کا ایک فرم ھے. یہ هندی پستکیں نکالنے کا کام کرتا ھے. 'نام بڑا گن تھوڑے' کی کہاوت اِس پر نہیں پھبتی. اِس کا نام بڑا ھے، تو کام بڑا ھے. اِس فرم نے اب تک جتنی کتابیں نکالی ھیں اُن کو سچ مچ هندی گرنتھ رتن کہا جاسکتا ھے. هندی پرکاشکوں میں یہ پرکاشک ایسے کیوں ھیں، اِس کا کارن ھے. اِس فرم کے پرکاشک خود ایک اُونچے درجے کے ساهتیک ھیں، اور اسادھارن نہیں تو سادھارن کوی بھی ھیں. ساهتیہ کو پرکھنے کی پرکھ تو اُن میں کمال کی ھے. لوگوں نے بھی اُنھیں پرکھ لیا اور ناگپور کی جنتا نے اُنھیں ایک پریم پوتھی یعنی ابھینندن گرنتھ بھینٹ کیا. فرم کو ایسا پرکاشک مل جائے اِسے هندی کا بھاگیہ هی سمجھنا چاهئے.

اِس فرم کے پرکاشک شری ناتھو رام پریمی خود ایک پتر کے سمپادک رہ چکے ھیں، کتاب لکھ چکے ھیں. یہ لیکھک سے پرکاشک اِس لئے نہیں بنے کہ مالدار ھو جائیں. پر اِس لئے بنے کہ هندی پاٹھکوں کو جو دینے لائق چیزیں ھیں صرف وھی اُن تک پہونچائیں. اِس میں یہ سپھل ھوئے.

پریمی جی یہ چاھتے تھے کہ اُن کا قائم کیا ھوا یہ فرم آگے بھی اِسی طرح کے گرنتھ رتن لوگوں کے سامنے پیش کرتا رھے. اِس لئے اُنھوں نے اپنے بیٹے کو لکھنے کے کام میں لگایا اور وہ جلدی هی اُن کی مرضی کی موافق اُونچے درجے کا لیکھک بن گیا. پر "جا کی یہاں چاھنا ھے وا کی وھاں چاھنا ھے". اِس سچائی کے انوسار وہ اِن کا بیٹا ھیم چندر مودی، بھری جوانی میں دو بچے اور بیوہ چھوڑ کر چل بسا. پریمی جی کا دل تو ٹوٹا، پر ھمت نہ ٹوٹنے پائی. اُسی کے نام پر ھیم چندر مودی پستک مالا شروع کر دی اور اُس میں دس ھزار روپیہ اِس نیت سے لگا دیا کہ اُس سے جو کتابیں نکلیں وہ لاگت کے دام پر بیچ کر یا ضرورت پڑے تو کچھ کتابوں کو لاگت سے کم داموں پر بیچ کر اُس رقم کی پورتی کی جاتی رھے. اور اگر نہ ھو سکے تو وہ رقم پستکوں پر ھی ختم کر دی جائے. اُس گرنتھ مالا کی اب تک سات کتابیں نکل چکی ھیں، جن کی سمالوچنا سمے سمے پر ھم

से कम चुंगी ली जायगी. नई कम्पनी पर सरकार का इन्डस्ट्रीज़ (डवलेपमेन्ट एण्ड रेगुलेशन) एक्ट भी लागू न होगा.

और आखिर में सरकार ने यह भी मान लिया कि इस कारखाने में साफ़ होने वाला तेल उसी भाव पर बेचा जायगा जिस भाव पर बाहर से आने वाला साफ़ तेल यहां बिकता है. देश के अन्दर कारखाना खुल जाने पर भी खरीदारों को पहले से थोड़ा भी सस्ता तेल न मिलेगा.

इसके अलावा जो दो विदेशी कम्पनियां (एक अंगरेज़ी और एक अमरीकी) यहां तेल साफ़ करने के कारखाने खोलने वाली हैं, उनको भी यह सारी सुविधाएं मिलेंगी.

अमरीकी पूंजीपतियों के लालच की हद नहीं

अमरीकी राजदूत चेस्टर बाउल्स ने इन सुविधाओं का ज़िक्र करते हुए लिखा है कि विदेशी पूंजी के बारे में भारती नेताओं का रुख बदल रहा है:

"उन तीन तेल की कम्पनियों को जो भारत में तेल साफ़ करने के कारखाने बना रही हैं, 25 साल तक राष्ट्रीकरण न करने का जो आश्वासन और जो दूसरे लालच दिये गए हैं उनकी दो एक साल पहले कल्पना भी न की जा सकती थी!" (अमरीकी पत्र फ़ौरेन एफ़ेयर्स में प्रकाशित 'नवीन भारत" शीर्षक लेख)

पर इन सुविधाओं से भी अमरीकी पूंजीपतियों को संतोष नहीं है. नफ़े के लालची और साम्राज के घमन्डी जितना पाते हैं, उतना ही और मांगते हैं. बाउल्स साहब इसी लेख में आगे फ़रमाते हैं :

"बहुत से लोगों की राय है कि देशी और विदेशी नई पूंजी लगाने वालों को आकर्षित करने के लिये भारत सरकार अभी और लालच दे सकती है. हाल में पोर्टोरिको में जो नीति अपनाई गई है उसने लोगों का काफ़ी ध्यान खींचा है. वहां नई पूंजी पर सरकारी टैक्स माफ़ कर दिये गए हैं और दूसरी अनेक सुविधाएं दी गई हैं जिन से बड़ी तेज़ी से औद्योगिक विकास होने लगा है."

पोर्टोरिको अमरीका का एक ग़ुलाम देश है. बाउल्स चाहते हैं कि हमारी सरकार न सिर्फ़ बुनियादी उद्योगों को अमरीकी पूंजीपतियों के हाथों में सौंप दे और उन्हें मनमाने ढंग से हिन्दुस्तानी मज़दूरों और हिन्दुस्तानी खरीदारों को लूटने दे, बल्कि ग़ुलाम पोर्टोरिको की तरह उन पर टैक्स भी न लगाए.

यही वह बाउल्स साहब हैं जिनके भारत प्रेम से गद् गद् हो कर राजपाल श्री प्रकाश ने कहा था कि उन्हें अमरीका का नहीं, बल्कि भारत का राजदूत समझना चाहिये !

سے کم چنگی لی جائے گی . نئی کمپنی پر سرکار کا انڈسٹریز (ڈیولپمنٹ اینڈ ریگولیشن) ایکٹ بھی لاگو نہ ہوگا .

اور آخر میں سرکار نے یہ بھی مان لیا کہ اِس کارخانے میں صاف ہونے والا تیل اُسی بھاؤ پر بیچا جائے گا جس بھاؤ پر باہر سے آنے والا صاف تیل یہاں بکتا ہے . دیش کے اندر کارخانہ کھل جانے پر بھی خریداروں کو پہلے سے تھوڑا بھی سستا تیل نہ ملیگا .

اِس کے علاوہ جو دو ودیشی کمپنیاں (ایک انگریزی اور ایک امریکی) یہاں تیل صاف کرنے کے کارخانے کھولنے والی ہیں' اُن کو بھی یہ ساری سووِدھائیں ملینگی .

امریکی پونجی پتیوں کے لالچ کی حد نہیں

امریکی راج دوت چسٹر باؤلس نے اِن سووِدھاؤں کا ذکر کرتے ہوئے لکھا ہے کہ ودیشی پونجی کے بارے میں بھارتی نیتاؤں کا رخ بدل رہا ہے :

" اُن تین تیل کی کمپنیوں کو' جو بھارت میں تیل صاف کرنے کے کارخانے بنا رہی ہیں' 25 سال تک راشٹری کرن نہ کرنے کا جو آشواسن اور جو دوسرے لالچ دے گئے ہیں اُن کی دو ایک سال پہلے کلپنا بھی نہ کی جا سکتی تھی !" (امریکی پتر فارن افیرس میں پرکاشت " نوین بھارت" شیرشک لیکھ)

اِن سووِدھاؤں سے بھی امریکی پونجی پتیوں کو سنتوش نہیں ہے . نفعے کے لالچی اور سامراج کے گھمنڈی جتنا پاتے ہیں' اتنی ہی اور مانگتے ہیں . باؤلس صاحب اسی لیکھ میں آگے فرماتے ہیں :

" بہت سے لوگوں کی رائے ہے کہ دیشی اور ودیشی نئی پونجی لگانے والوں کو آکرشت کرنے کے لئے بھارت سرکار ابھی اور لالچ دے سکتی ہے . حال میں پورٹوریکو میں جو نیتی اپنائی گئی ہے اُس نے لوگوں کا کافی دھیان کھینچا ہے . وہاں نئی پونجی پر سرکاری ٹیکس معاف دیئے گئے ہیں اور دوسری انیک سووِدھائیں دی گئی ہیں جن سے بڑی تیزی سے ادیوگ وکاس ہونے لگا ہے ."

پورٹوریکو امریکہ کا ایک غلام دیش ہے . باؤلس چاہتے ہیں کہ ہماری سرکار نہ صرف بنیادی اُدیوگوں کو امریکی پونجی پتیوں کے ہاتھوں میں سونپ دے اور انہیں من مانے ڈھنگ سے ہندستانی مزدوروں اور ہندستانی خریداروں کو لوٹنے دے' بلکہ غلام پورٹوریکو کی طرح اُن پر ٹیکس بھی نہ لگائے .

یہی وہ باؤلس صاحب ہیں جن کے بھارت پریم سے گد گد ہو کر راج پال شری پرکاش نے کہا تھا کہ انہیں امریکہ کا نہیں' بلکہ بھارت کا راج دوت سمجھنا چاہئے !

इसी क़ानून की धारा 511 (B) में लिखा है :

"किसी देश को आर्थिक या तकनीकी सहायता उस वक़्त तक न दी जायगी जब तक राजपति यह न समझें कि ऐसी सहायता देने से अमरीका की सुरक्षा नीति मज़बूत होगी... ..और जब तक मदद पाने वाला देश यह स्वीकार न कर ले कि दुनिया में तनाव के कारनों को दूर करने के लिये वह ऐसी कारवाई करेगा जो दोनों देश ज़रूरी समझें."

यह शर्तें पूरी हो जाने के बाद ही भारत को डालरों, खाद और अमरीकी गांव सुधारकों की मदद मिली है. पर पंडित नेहरू इनको भी शायद शर्तें नहीं मानते !

❀ ❀ ❀

तेल साफ़ करने के कारख़ाने

अब तेल साफ़ करने के उस कारख़ाने पर भी विचार कर लेना चाहिये जिस में अमरीका की स्टैन्डर्ड वैकुअम आयल कम्पनी ने 1680 लाख रुपए की पूंजी लगाने का फ़ैसला किया है.

भारत सरकार बहुत दिनों से इस नीति पर अड़ी हुई थी कि कम कि से कम बुनियादी और प्रमुख उद्योगों में अगर विदेशी पूंजी को आने दिया जायगा तो सिर्फ़ इस शर्त पर कि हिस्सेदारों में हिन्दुस्तानियों का बहुमत रहेगा. अप्रैल 1918 में भारती पार्लिमेन्ट ने यही नीति अपनाई थी.

पर जब तेल साफ़ करने के कारख़ाने खोलने की बातचीत शुरू हुई तो इस शर्त को भी भुला दिया गया भारत सरकार ने स्वीकार किया कि नई कम्पनी के केवल 25 फ़ी सदी हिस्से हिन्दुस्तानियों के हाथ में रहेंगे. यानी, नये उद्योग पर पूरा पूरा अमरीका वालों का नियंत्रन रहेगा.

भारत सरकार ने यह भी वादा किया कि 25 साल तक वह इस नये उद्योग के राष्ट्रीकरन की बात भी न करेगी और उसके बाद भी "उचित" मुआवज़ा देकर ही ऐसा किया जा सकेगा. ध्यान रहे, इसके पहले भारत सरकार ने राष्ट्रीकरन का सवाल केवल अगले दस साल के लिये टाल दिया था.

साथ ही अमरीकी कम्पनी को यह अधिकार होगा कि जब चाहे उद्योग को बन्द कर दे और अपनी पूंजी मय कमाए हुए मुनाफ़े के अमरीका उठा ले जाय. यानी अमरीकी पूंजीपतियों को हक़ होगा कि चाहें तो हमारे उद्योग को ठप कर दें, पर सरकार उसका राष्ट्रीकरन भी न कर सकेगी.

इसके अलावा भारत सरकार ने कई और असाधारन सुविधाएं नयी कम्पनी को देना स्वीकार किया. उसने माना कि कच्चे तेल पर चुंगी नहीं लगाई जायगी और नये कारख़ाने के लिये आने वाली मशीनों पर सरकारी नियम

اسی قانون کی دھارا 511 (B) میں لکھا ہے:

"کسی دیش کو آرتھک یا تکنیکی سہائتا اُس وقت تک نہ دی جائے گی جب تک راج پتی یہ نہ سمجھیں کہ ایسی سہائتا دینے سے امریکہ کی سرکشا نیتی مضبوط ہوگی.....اور جب تک مدد پانے والا دیش یہ سویکار نہ کرلے کہ دنیا میں تناؤ کے کارنوں کو دور کرنے کے لئے وہ ایسی کاروائی کرے گا جو دونوں دیش ضروری سمجھیں."

یہ شرطیں پوری ہو جانے کے بعد ہی بھارت کو ڈالر، کھاد اور امریکی گاؤں سدھارکوں کی مدد ملی ہے. پر پنڈت نہرو اِن کو بھی شاید شرطیں نہیں مانتے.

❀ ❀ ❀

تیل صاف کرنے کے کارخانے

اب تیل صاف کرنے کے اس کارخانے پر بھی وچار کر لینا چاہئے جس میں امریکہ کی اسٹینڈرڈ ویکوم آئل کمپنی نے 1680 لاکھ روپئے کی پونجی لگانے کا فیصلہ کیا ہے.

بھارت سرکار بہت دنوں سے اِس نیتی پر اڑی ہوئی تھی کہ کم سے کم بنیادی اور پرمکھ ادیوگوں میں اگر ودیشی پونجی کو آنے دیا جائے گا تو صرف اس شرط پر کہ حصے داروں میں ہندستانیوں کا بہومت رہے گا. اپریل 1948 میں بھارتی پارلیمنٹ نے یہی نیتی اپنائی تھی.

پر جب تیل صاف کرنے کے کارخانے کھولنے کی بات چیت شروع ہوئی تو اس شرط کو بھی بھلا دیا گیا. بھارت سرکار نے سویکار کیا کہ نئی کمپنی کے کیول 25 فیصدی حصے ہندستانیوں کے ہاتھ میں رہیں گے. یعنی نئے ادیوگ پر پورا پورا امریکہ والوں کا نینترن رہے گا.

بھارت سرکار نے یہ بھی وعدہ کیا کہ 25 سال تک وہ اس نئے ادیوگ کے راشٹری کرن کی بات بھی نہ کریگی اور اُس کے بعد بھی "اُچت" معاوضہ دے کر ہی ایسا کیا جا سکے گا. دھیان رہے، اِس کے پہلے بھارت سرکار نے راشٹری کرن کا سوال کیول اگلے دس سال کے لئے ٹال دیا تھا.

ساتھ ہی امریکی کمپنی کو یہ ادھیکار ہوگا کہ جب چاہے ادیوگ کو بند کر دے اور اپنی پونجی معہ کمائے منافعے کے امریکہ اُٹھائے جائے. یعنی امریکی پونجی پتیوں کو حق ہوگا کہ چاہیں تو ہمارے ادیوگ کو ٹھپ کر دیں، پر سرکار اُس کا راشٹری کرن بھی نہ کر سکے گی.

اِس کے علاوہ بھارت سرکار نے کئی اور اسادھارن سودھائیں نئی کمپنی کو دینا سویکار کیا. اس نے مانا کہ کچے تیل پر چنگی نہیں لگائی جائے گی اور نئے کارخانے کے لئے آنے والی مشینوں پر سرکاری نیم

(2) अनाज के दाम बहुत ऊंचे लगा गए. 1950-51 में अमरीका में गेहूँ का भाव 73·9 डालर फ़ी टन था. भारत से 105 डालर फ़ी टन वसूल किये गए.

(3) अगरचे भारत अनाज के पूरे दाम मय सूद के देने वाला है, फिर भी देश विदेश में प्रचार किया गया कि अमरीका ने रहम के मारे भूके भारत को 'मदद के तौर पर' अनाज दिया है.

(4) इस क़र्ज़े के सम्बन्ध में भारत सरकार ने जो क़ानून बनाया, (इन्डियन इमेर्जेंसी फूड एक्ट) उसकी दूसरी धारा में साफ़ कहा गया कि अनाज की क़ीमत के एक हिस्से के एवज़ में फ़ौजी नज़र से महत्वपूर्न कच्चा माल भारत अमरीका को देगा.

(5) हमारे ख़रीदे हुए अनाज के बंटवारे की देख रेख करने के लिये एक पूरा अमरीकी महकमा नई दिल्ली में खुल गया.

(6) शर्त रखी गई कि कम से कम आधा अनाज अमरीकी जहाज़ों पर लाद कर ले जाया जाय. यह तय होना था कि अमरीकी जहाज़ों ने अपना किराया साढ़े 10 डालर से बढ़ा कर 25 डालर फ़ी टन कर दिया. और चूंकि ज़ियादातर अनाज अमरीकी जहाज़ों में ही लाया गया, इसलिये केवल इस मद में भारत को साढ़े 14 करोड़ रुपए का नुक़सान उठाना पड़ा.

यह राजकाजी शर्तें ऊपर से देखने में कुछ न थीं. पर सभी जानते हैं कि सितम्बर 1951 में, जब भारत सरकार ने अमरीका के तैयार किये हुए जापानी संधि के मसविदे पर दस्तख़त करने से इनकार किया तो यकायक अनाज का आना एक दम कम हो गया. यह बात भी मतलब से ख़ाली नहीं है कि अमरीका के साथ भारत का पहला फ़ौजी समझौता मार्च 1951 में हुआ.

ग्राम सुधार के लिये मदद

भारत अमरीका तकनीकी सहयोग समझौते के मातहत भारत सरकार ने ग्राम सुधार करने के लिये अमरीका से एक्सपर्ट, खाद, औज़ार और बीज मंगाए हैं इस सम्बन्ध में अधिक कहने की ज़रूरत नहीं है.

यह सब जानते हैं कि यह मदद भारत को अमरीका के आपसी सुरक्षा क़ानून के मातहत मिली है अमरीकी कांगरेस (पार्लियामेन्ट) ने इस क़ानून को किस मक़सद से बनाया है, यह क़ानून के ही शब्दों में सुनिये :

"कांगरेस ऐलान करती है कि इस क़ानून का मक़सद संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सुरक्षा नीति को मज़बूत करना और उसकी विदेशी नीति को आगे बढ़ाना है, जिस के लिये मित्र देशों को फ़ौजी, आर्थिक और तकनीकी मदद देने का प्रबंध किया जायगा......" (आपसी सुरक्षा क़ानून की धारा 2)

(2) اناج کے دام بہت اونچے لگائے گئے ۔ 1950-51 میں امریکہ میں گیہوں کا بھاؤ 73·9 ڈالر فی ٹن تھا ۔ بھارت سے 105 ڈالر فی ٹن وصول کئے گئے ۔

(3) اگرچہ بھارت اناج کے پورے دام مع سود کے دینے والا ہے، پھر بھی دیش ودیش میں پرچار کیا گیا کہ امریکہ نے رحم کے مارے بھوکے بھارت کو 'مدد کے طور پر' اناج دیا ہے ۔

(4) اس قرضے کے سمبندھ میں بھارت سرکار نے جو قانون بنایا، (انڈین امرجینسی فوڈ ایکٹ) اس کی دوسری دھارا میں صاف کہا گیا کہ اناج کی قیمت کے ایک حصے کے عوض میں فوجی نظر سے مہتو پورن کچا مال بھارت امریکہ کو دے گا ۔

(5) ہمارے خریدے ہوئے اناج کے بٹوارے کی دیکھ ریکھ کرنے کے لئے ایک پورا امریکی محکمہ نئی دلی میں کھل گیا ۔

(6) شرط رکھی گئی کہ کم سے کم آدھا اناج امریکی جہازوں پر لاد کر لے جایا جائے ۔ یہ طے ہونا تھا کہ امریکی جہازوں نے اپنا کرایہ ساڑھے دس ڈالر سے بڑھا کر 25 ڈالر فی ٹن کر دیا ۔ اور چونکہ زیادہ‌تر اناج امریکی جہازوں میں ہی لایا گیا، اس لئے کیول اس مد میں بھارت کو ساڑھے چودہ کروڑ روپئے کا نقصان اٹھانا پڑا ۔

یہ راج کاجی شرطیں اوپر سے دیکھنے میں کچھ نہ تھیں ۔ پر سبھی جانتے ہیں کہ ستمبر 1951 میں، بھارت سرکار نے امریکہ کے تیار کئے ہوئے جاپانی سندھی کے مسودے پر دستخط کرنے سے انکار کیا تو یکایک اناج کا آنا ایک دم کم ہو گیا ۔ یہ بات بھی مطلب سے خالی نہیں ہے کہ امریکہ کے ساتھ بھارت کا پہلا فوجی سمجھوتہ مارچ 1951 میں ہوا ۔

گرام سدھار کے لئے مدد

بھارت امریکہ تکنیکی سہیوگ سمجھوتے کے ماتحت بھارت سرکار نے گرام سدھار کرنے کے لئے امریکہ سے ایکسپرٹ، کھاد، اوزار اور بیج منگائے ہیں ۔ اس سمبندھ میں کہنے کی ضرورت نہیں ہے ۔

یہ سب جانتے ہیں کہ یہ مدد بھارت کو امریکہ کے آپسی سرکشا قانون کے ماتحت ملی ہے ۔ امریکی کانگریس (پارلیامنٹ) نے اس قانون کو کس مقصد سے بنایا ہے، یہ قانون کے ہی شبدوں میں سنئے :

" کانگریس اعلان کرتی ہے کہ اس قانون کا مقصد سنیکت راج امریکہ کی سرکشا نیتی کو مضبوط کرنا اور اسکی ودیشی نیتی کو آگے بڑھانا ہے، جس کے لئے متر دیشوں کو فوجی، آرتھک اور تکنیکی مدد دینے کا پربندھ کیا جائے گا......" (آپسی سرکشا قانون کی دھارا 2)

के यहां रहन होने के कारन हिन्दुस्तानी कम्पनी के हिस्से अन्तर राष्ट्री शेयर (Share) मार्केट में बिकने लगेंगे और फिर एक दिन ऐसा भी आ सकता है कि पूरी कम्पनी विदेशियों के हाथों में चली जाय.

विश्व बैंक अनेक छोटे बड़े देशों को क़र्ज़ा दे चुका है मगर इतनी शर्मनाक, ऐसी देश घातक शर्तें आज ही सुनने में आई हैं. और वह हमारी इस 'राष्ट्री' सरकार ने मानी हैं जिसके प्रधान मंत्री कहते हैं कि वह किसी शर्त को मानने के पहले इस्तीफ़ा दे देंगे.

कहने की ज़रूरत नहीं कि इस्पात का उद्योग किसी भी देश की आर्थिक व्यवस्था में बुनियाद का काम करता है, उसके विदेशियों के हाथों में चले जाने देने का मतलब होता है देश की आज़ादी का ख़ातमा.

❀ ❀ ❀

अनाज वाला क़र्ज़

अब अमरीकी सरकार के दिये हुए उस क़र्ज़ को लीजिये जो भारत सरकार ने गेहूँ ख़रीदने के लिये लिया था. लड़ाई के बाद से ही भारत हर साल करोड़ों डालर अमरीका से गेहूँ वग़ैरा ख़रीदने पर ख़र्च करता आ रहा है. 1949 में अनाज के बारे में देश की हालत कुछ विशेश ख़राब जान पड़ी तो भारत सरकार ने अमरीका की तरफ़ निहारा. वह 2 करोड़ 80 लाख मन अनाज अमरीका से लेना चाहती थी. पंडित नेहरू अक्तूबर में अमरीका की यात्रा को गए तो उन्होंने बार बार इस बात का ज़िकर किया. अमरीकी सरकार ने जवाब दिया—हां, अनाज मिल सकता है, मगर बदले में मैंगनीज़ और अबरक दोनों देने पड़ेंगे. दिसम्बर में भारत सरकार ने कुछ काम बनता न देख कर बातचीत बन्द कर दी.

पर 1950 में देश की हालत और बिगड़ती गई. जून में भारत सरकार ने कुछ ज्वार अमरीका से ख़रीदी. नवम्बर में उसने अनाज ख़रीदने के लिये अमरीकी सरकार से क़र्ज़ मांगा. 15 दिसम्बर को श्रीमती पंडित ने बाक़ायदा 5 करोड़ 60 लाख मन अनाज उधार की मांग की. अमरीका के पास उस वक़्त 28 करोड़ मन सिर्फ़ फ़ालतू गेहूँ मौजूद था. फिर भी उसने भारत की प्रार्थना को सुना अनसुना कर दिया. अमरीका की तरफ़ से कहा गया कि गेहूँ चाहते हो तो अपनी विदेशी नीति बदलो और चीन के ख़िलाफ़ अमरीका का समर्थन करो. छै महीने के बाद, जब अमरीका में बहुत शोर मचा, तब कहीं 15 जून 1951 को अमरीका ने भारत को क़र्ज़ देना स्वीकार किया.

इस क़र्ज़े के सिलसिले में नीचे लिखी बातें महत्वपूर्न थीं:

(1) यह कि जैसा भारत चाहता था, उसे पूरा गेहूँ नहीं मिला. अनाज का काफ़ी हिस्सा ज्वार और मक्के का था.

کے یہاں رہن ہونے کے کارن هندستانی کمپنی کے حصے انتر راشٹری شیر (Share) مارکیٹ میں بکنے لگینگے اور پھر ایک دن ایسا بھی آسکتا ہے کہ پوری کمپنی ودیشیوں کے ہاتھوں میں چلی جائے .

وشو بینک انیک چھوٹے بڑے دیشوں کو قرضہ دے چکا ہے مگر اتنی شرمناک' ایسی دیش گھاتک شرطیں آج ہی سننے میں آئی ہیں . اور وہ ہماری اِس راشٹری' سرکار نے مانی ہیں جس کے پردھان منتری کہتے ہیں کہ وہ کسی شرط کو ماننے کے پہلے استعفیٰ دے دیں گے .

کہنے کی ضرورت نہیں کہ اسپات کا ادیوگ کسی بھی دیش کی آرتھک ویوستھا میں بنیاد کا کام کرتا ہے . اُس کو ودیشیوں کے ہاتھوں میں چلے جانے دینے کا مطلب ہوتا ہے دیش کی آزادی کا خاتمہ .

❀ ❀ ❀

اناج والا قرض

اب امریکی سرکار کے دئے ہوئے اُس قرض کو لیجئے جو بھارت سرکار گیہوں خریدنے کے لئے لیا تھا . لڑائی کے بعد سے ہی بھارت ہر سال کروڑوں ڈالر امریکہ سے گیہوں وغیرہ خریدنے پر خرچ کرتا آرہا ہے . 1949 میں اناج کے بارے میں دیش کی حالت کچھ وشیش خراب جان پڑی تو بھارت سرکار نے امریکہ کی طرف نہارا . وہ 2 کروڑ 80 لاکھ من اناج امریکہ سے لینا چاہتی تھی . پنڈت نہرو اکتوبر میں امریکہ کی یاترا کو گئے تو اُنہوں نے بار بار اِس کا ذکر کیا . امریکی سرکار نے جواب دیا—ہاں' اناج مل سکتا ہے' مگر بدلے میں مینگنیز اور ابرک دونوں دینے پڑیں گے. دسمبر میں بھارت سرکار نے کچھ کام بنتا نہ دیکھ کر بات چیت بند کردی .

پر 1950 میں دیش کی حالت اور بگڑتی گئی. جون میں بھارت سرکار نے کچھ جوار امریکہ سے خریدی . نومبر میں اُس نے اناج خریدنے کے لئے امریکی سرکار سے قرض مانگا . 15 دسمبر کو شریمتی پنڈت نے باقاعدہ 5 کروڑ 60 لاکھ من اناج اُدھار کی مانگ کی. امریکہ کے پاس اُس وقت 28 کروڑ من صرف فالتو گیہوں موجود تھا. پھر بھی اُس نے بھارت کی پرارتھنا کو سنا ان سنا کر دیا. امریکہ کی طرف سے کہا گیا کہ گیہوں چاہئے ہو تو اپنی ودیشی نیتی بدلو اور چین کے خلاف امریکہ کا سمرتھن کرو . چھ مہینے کے بعد' جب امریکہ میں بہت شور مچا' تب کہیں 15 جون 1951 کو امریکہ نے بھارت کو قرض دینا سویکار کیا .

اس قرضے کے سلسلے میں نیچے لکھی باتیں مہتو پورن تھیں :

(1) یہ کہ جیسا بھارت چاہتا تھا' اُسے پورا گیہوں نہیں ملا . اناج کا کافی حصہ جوار اور مکے کا تھا .

किया और लौटते हुए ऐलान कर गया कि भारत को इस्पात की सख्त ज़रूरत है; इसका उत्पादन बढ़ाने के लिये सरकार ने जो योजनाएं बनाई हैं, वह हमें पसन्द हैं; हम बैंक से सिफ़ारिश करेंगे कि इस काम के लिये क़र्ज़ा देना स्वीकार करे. कितना क़र्ज़ा मिलेगा, यह बात गोल रही. मगर किन शर्तों पर मिलेगा, यह बात लोगों ने समझा, साफ़ हो गई. कहा गया शर्तें सिर्फ़ चार हैं:

(1) इस्पात बनाने वाले दो बड़े भारती कारख़ाने—स्टील कार्पोरेशन आफ़ बंगाल और इन्डियन आइरन एन्ड स्टील कम्पनी—मिला कर एक कर दिये जायं; (2) देशी इस्पात के दाम बढ़ा दिये जायं; (3) नये कारख़ानों के लिये मशीनें अमरीका से ख़रीदी जायं; (4) भारत सरकार क़र्ज़दारों की ज़ामिन बने यानी ज़िम्मेदारी ले कि विश्व बैंक का रुपया डूबेगा नहीं .

मतलब साफ़ था. दो कारख़ानों को मिला कर अमरीकी पूंजीपति हमारे देश में भी इजारेदारी या एकाधिकार क़ायम होने की क्रिया को तेज़ करना चाहते थे. देशी इस्पात के दाम बढ़ा कर वह विदेशी इस्पात के लिये हिन्दुस्तानी बाज़ार खोल देना चाहते थे. तीसरी और चौथी शर्तों का मक़सद तो साफ़ था ही.

पर हमारी देशी सरकार ने एक एक कर के चारों शर्तें मान लीं.

अक्तूबर 1952 में इस्पात के भारती कारख़ानों के मालिकों वग़ैरा का एक मिशन अमरीका गया. उसने क्या शर्तें क़बूल कीं, किसी को पता न चला. अन्त में क़र्ज़ा मिल गया. विश्व बैंक ने 1575 लाख रुपए देने स्वीकार कर लिये. भारत सरकार ने एक आर्डिनेंस निकाल कर दोनों हिन्दुस्तानी कारख़ानों को एक कर दिया.

भांडा फूट गया

भांडा फूटना था सो फूट कर रहा. ख़ुद अमरीका के मशहूर दैनिक पत्र 'न्यूयार्क टाइम्स' ने इस राज़ को खोल दिया कि ऊपर लिखी चार शर्तों के अलावा दो शर्तें और भी हैं: (i) यह कि क़र्ज़े के एवज़ में हिन्दुस्तानी कम्पनियों की सारी असल सम्पत्ति—यानी मशीन, ज़मीन, मकान, जायदाद वग़ैरा—विश्व बैंक के यहां रहन या गिरवी रख दी जायगी; और (ii) यह कि कम्पनी की बाक़ी सम्पत्ति पर भी विश्व बैंक का पहला हक़ माना जायगा.

भारत के सबसे अधिक अमरीका परस्त अख़बार, 'थाट' तक को इन शर्तों की निन्दा करनी पड़ी. उसने लिखा है कि यह बड़ी ही अनुचित बात है कि भारत सरकार ने इन शर्तों को क़बूल करने के पहले जनता से राय लेना ज़रूरी नहीं समझा और बाद में जान बूझ कर उन पर पर्दा डाले रखा. 'थाट' ने लिखा है कि विश्व बैंक

کیا اور لوٹتے ہوئے اعلان کر گیا کہ بھارت کو اسپات کی سخت ضرورت ہے؛ اس کا اُتپادن بڑھانے کے لئے سرکار نے جو یوجنائیں بنائی ہیں، وہ ہمیں پسند ہیں؛ ہم بینک سے سفارش کریں گے کہ اِس کام کے لئے قرضہ دینا سویکار کرے. کتنا قرضہ ملیگا، یہ بات گول رہی. مگر کن شرطوں پر ملیگا، یہ بات لوگوں نے سمجھا صاف ہوگئی. کہا گیا شرطیں صرف چار ہیں:

(1) اِسپات بنانے والے دو بڑے بھارتی کارخانے—اسٹیل کارپوریشن آف بنگال اور اِنڈین آئرن اینڈ اسٹیل کمپنی ملا کر ایک کر دئے جائیں؛ (2) دیشی اِسپات کے دام بڑھا دئے جائیں؛ (3) نئے کارخانوں کے لئے مشینیں امریکہ سے خریدی جائیں؛ (4) بھارت سرکار قرضداروں کی ضامن بنے یعنی ذمےداری لے کہ وشوبینک کا روپیہ ڈوبیگا نہیں.

مطلب صاف تھا. دو کارخانوں کو ملا کر امریکی پونجی پتی ہمارے دیش میں بھی اِجارے داری یا ایکادھیکار قائم ہونے کی کریا کو تیز کرنا چاہتے تھے. دیشی اسپات کے دام بڑھا کر وہ ودیشی اسپات کے لئے ہندستانی بازار کھول دینا چاہتے تھے. تیسری اور چوتھی شرطوں کا مقصد تو صاف تھا ہی.

پر ہماری دیشی سرکار نے ایک ایک کرکے چاروں شرطیں مان لیں.

اکتوبر 1952 میں اسپات کے بھارتی کارخانوں کے مالکوں وغیرہ کا ایک مشن امریکہ گیا. اُس نے کیا شرطیں قبول کیں، کسی کو پتہ نہ چلا. انت میں قرضہ مل گیا. وشوبینک نے 1575 لاکھ روپئے دینے سویکار کرلئے. بھارت سرکار نے ایک آرڈیننس نکال کر دونوں ہندستانی کارخانوں کو ایک کر دیا.

بھانڈا پھوٹ گیا

بھانڈا پھوٹنا تھا سو پھوٹ کر رہا. خود امریکہ کے مشہور دینک پتر 'نیویارک ٹائمس' نے اس راز کو کھول دیا کہ اوپر لکھی چار شرطوں کے علاوہ دو شرطیں اور بھی ہیں: (i) یہ کہ قرضے کے عوض میں ہندستانی کمپنیوں کی ساری اصل سمپتی—یعنی مشین، زمین، مکان، جائداد وغیرہ—وشوبینک کے یہاں رہن یا گروی رکھ دی جائے گی؛ اور (ii) یہ کہ کمپنی کی باقی سمپتی پر بھی وشوبینک کا پہلا حق مانا جائیگا.

بھارت کے سب سے ادھک امریکہ پرست اخبار 'تھاٹ' تک کو اِن شرطوں کی نندا کرنی پڑی. اس نے لکھا ہے کہ یہ بڑی ہی انوچت بات ہے کہ بھارت سرکار نے اِن شرطوں کو قبول کرنے کے پہلے جنتا سے رائے لینا ضروری نہیں سمجھا اور بعد میں جان بوجھ کر اُن پر پردہ ڈالے رکھا. 'تھاٹ' نے لکھا ہے کہ وشوبینک

यह क़र्ज़े हैं या गुलामी की ज़ंजीरें ?

थोड़े में, विश्व बैंक के क़र्ज़ों के सम्बन्ध में नीचे लिखी बातें हर देशभक्त को ध्यान में रखनी चाहियें.

(1) सूद की दर — 4 फ़ी सदी — बहुत ऊंची है.

(2) विश्व बैंक में भारत 40 करोड़ की पूंजी लगा चुका है, उसे देखते हुए क़र्ज़ों की रक़में बहुत ज़ियादा नहीं हैं.

(3) क़र्ज़ों की रक़मों को अमरीका में ही ख़र्च करना पड़ता है. ट्रैक्टर, इंजिन, बिजली की मशीनें सब अमरीका या कनाडा से ख़रीदनी पड़ती हैं. यानी इन क़र्ज़ों के ज़रिये अमरीका को अपना फ़ालतू सामान और फ़ालतू इंजीनियर हमरे मत्थे मढ़ने में मदद मिलती है.

(4) कोई क़र्ज़ा भारत का उद्योगीकरन करने के लिये नहीं मिला. कर्ज़े केवल ऐसी योजनाओं के लिये दिये गये जिन से देश का उद्योगीकरन नहीं होता, बल्कि इन कच्चे मालों की पैदावार बढ़ती है जिनकी अमरीका को ज़रूरत है या जिन से अमरीकी माल को लाने और भारती कच्चे माल को ले जाने के लिये ज़रूरी यातायात के साधन सुधरते हैं.

(5) यह क़र्ज़े भी उस वक़्त मिले जब भारत सरकार ने अमरीकी पूंजीपतियों की यह मांग मान ली कि दस साल तक किसी उद्योग धन्दे का राष्ट्री करन न किया जायगा और उनकी पूंजी के साथ देशी पूंजी जैसा व्योहार किया जायगा.

(6) आख़री बात यह कि क़र्ज़ों के समझौतों के अनुसार विश्व बैंक को यह अधिकार दे दिया गया है कि वह अपने नुमाइन्दे भेज कर हमारी सरकार के हिसाब किताब की जांच करा सकता है, योजना की देख रेख करा सकता है और जो माल क़र्ज़े की रक़मों से ख़रीदा जाय उसकी जांच करा सकता है. कहने की ज़रूरत नहीं कि अमरीका वाले इस अधिकार का पूरा पूरा उपयोग कर रहे हैं.

पर विश्व-बैंक के भी पुराने सारे कारनामे मात हो गए, जब हाल में इण्डियन आइरन एन्ड स्टील कम्पनी को दिये गये 1575 लाख के क़र्ज़े की शर्तों का भांडा फूटा.

हम जान बूझ कर "भांडा फूटा" शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं क्योंकि भारत सरकार ने अपनी पूरी ताक़त लगा कर इन शर्तों को भारती जनता से छिपाने की कोशिश की थी.

पिछले जून के महीने में मिस्टर जार्ज डी० वुड्स के नेतृत्व में विश्व बैंक का एक तकनीकी मिशन भारत आया था. उसने हमारे लोहे और इस्पात के कारख़ानों का दौरा

یہ قرضے ہیں یا غلامی کی زنجیریں ؟

تھوڑے میں، وشوبینک کے قرضوں کے سمبندھ میں نیچے لکھی باتیں ہر دیش بھکت کو دھیان میں رکھنی چاہئے :

(1) سود کی در — 4 فی صدی — بہت اونچی ہے .

(2) وشوبینک میں بھارت 40 کروڑ کی پونجی لگا چکا ہے، اسے دیکھتے ہوئے قرضوں کی رقمیں بہت زیادہ نہیں ہیں .

(3) قرضوں کی رقموں کو امریکہ میں ہی خرچ کرنا پڑتا ہے . ٹریکٹر، انجن، بجلی کی مشینیں سب امریکہ یا کناڈا سے خریدنی پڑتی ہیں . یعنی، ان قرضوں کے ذریعے امریکہ کو اپنا فالتو سامان اور فالتو انجینیر ہمارے متھے مڑھنے میں مدد ملتی ہے .

(4) کوئی قرضہ بھارت کا ادیوگی کرن کرنے کے لئے نہیں ملا . قرضے کیول ایسی یوجناؤں کے لئے دئے گئے جن سے دیش کا ادیوگی کرن نہیں ہوتا، بلکہ ان کچے مالوں کی پیداوار بڑھتی ہے جن کی امریکہ کو ضرورت ہے یا جن سے امریکی مال کو لانے اور بھارتی کچے مال کو لے جانے کے لئے ضروری یاتایات کے سادھن سدھرتے ہیں .

(5) یہ قرضے بھی اس وقت ملے جب بھارت سرکار نے امریکی پونجی پتیوں کی یہ مانگ مان لی کہ دس سال تک کسی ادیوگ دھندے کا راشٹری کرن نہ کیا جائے گا اور ان کی پونجی کے ساتھ دیشی پونجی جیسا بیوہار کیا جائے گا .

(6) آخری بات یہ کہ قرضوں کے سمجھوتوں کے انوسار وشوبینک کو یہ ادھیکار دے دیا گیا ہے کہ وہ اپنے نمائندے بھیج کر ہماری سرکار کے حساب کتاب کی جانچ کرا سکتا ہے، یوجنا کی دیکھ ریکھ کرا سکتا ہے اور جو مال قرضے کی رقموں سے خریدا جائے اس کی جانچ کرا سکتا ہے . کہنے کی ضرورت نہیں کہ امریکہ والے اس ادھیکار کا پورا پورا اپیوگ کر رہے ہیں .

پر وشوبینک کے بھی پرانے سارے کارنامے مات ہوگئے، جب حال میں انڈین آئرن اینڈ اسٹیل کمپنی کو دئے گئے 1575 لاکھ کے قرضے کی شرطوں کا بھانڈا پھوٹا.

ہم جان بوجھ کر "بھانڈا پھوٹا" شبدوں کا پریوگ کر رہے ہیں کیونکہ بھارت سرکار نے اپنی پوری طاقت لگا کر ان شرطوں کو بھارتی جنتا سے چھپانے کی کوشش کی تھی .

پچھلے جون کے مہینے میں مسٹر جارج ڈی. وڈس کے نیترتو میں وشوبینک کا ایک تکنیکی مشن بھارت آیا تھا . اس نے ہمارے لوہے اور اسپات کے کارخانوں کا دورہ

"यह बात आज भी लोगों के दिमाग़ों में ताज़ा है कि 1943 की सत्यानाशी बाढ़ ने किस तरह ग्रैन्ड ट्रंक रोड और ईस्ट इन्डियन रेलवे को तोड़ डाला था, और पूर्वी भारत को बाक़ी देश से काट दिया था, और इस तरह, लड़ाई के ज़माने में एक बहुत ही नाज़ुक मौक़े पर देश रक्षा की व्यवस्था के रास्ते में मुश्किलें पैदा कर दी थीं. सैनिक विशेषज्ञों के अनुसार, अकेली इस बाढ़ के कारन पूरे छः महीने तक बर्मा के मोर्चे पर फ़ौजी कार्रवाइयां रुकी रही थीं."

वास्तव में, 1943 में ही चर्चिल सरकार ने दामोदर घाटी का बांध बनाने का फ़ैसला कर लिया था. जवाहरलाल जी की सरकार केवल उसका अनुसरन कर रही है !

मगर दामोदर घाटी योजना का फ़ौजी महत्व इतना ही नहीं है. ऊपर लिखे प्रकाशन में आगे लिखा है :

"यह सब की जानी हुई एक साधारन बात है कि किसी देश की निहित सैनिक शक्ति सब से अधिक कोयला, लोहा और इस्पात, अलुमिनियम, और कैमिकलों वग़ैरा के ख़ास उद्योगों पर निर्भर करती है. दामोदर घाटी में यह ख़ास पदार्थ बहुतायत से पाए जाते हैं. इसलिये, लाज़िमी तौर पर यह घाटी देश रक्षा के लिये आवश्यक अधिकतर उद्योगों का केन्द्र बन जायगी. सच तो यह है कि इसे भारत का भावी जनवादी 'शस्त्रागार' समझना चाहिये."

लेकिन इस पूरी योजना में सब से पहले बांध बनाने या सिंचाई की व्यवस्था करने का काम नहीं शुरू किया गया. शुरूआत हुई बिजली की कल खड़ी करने से, क्योंकि उसे विश्व-बैंक ने सहारा देने की कृपा की.

18 अप्रैल 1950 को एक क़र्ज़े के समझौते पर दस्तख़त हो गए उसकी 11 वीं धारा में कुछ शर्तों का ज़िक्र था जिनके पूरा होने पर ही क़र्ज़ा मिल सकता था. वह शर्तें भी 2 फ़रवरी 1951 तक पूरी कर दी गईं

बिजली की कल के लिये सामान अमरीका की इन्टर नेशनल जनरल इलैक्ट्रिक कम्पनी से मंगाया गया और उसे खड़ा करने का ठेका अमरीकी कम्पनी कुलजियान कार्पोरेशन को सौंपा गया. रुपया जहां से आया था, वहीं पहुंच गया !

यही नहीं, हर दो महीने के बाद बैंक के प्रतिनिधि आकर जांच कर जाते हैं कि भारत सरकार ठीक ठीक काम कर रही है या नहीं. अगस्त 1950 और मई 1951 के बीच तीन ऐसे अमरीकी विशेषज्ञ आए. उनके नाम थे : जार्ज बरजोस, एल. ग्रे मार्शल और जनरल व्हीलर.

इसके अलावा एक अमरीकी इंजीनियर पूरी योजना का प्रमुख नियुक्त किया गया है. उसे दस हज़ार रुपए से अधिक मासिक तनख़्वा मिलती है !

"یہ بات آج بھی لوگوں کے دماغوں میں تازہ ہے کہ 1943 کی ستیاناشی باڑھ نے کس طرح گرینڈ ٹرنک روڈ اور ایسٹ انڈین ریلوے کو توڑ ڈالا تھا' اور پوربی بھارت کو باقی دیش سے کاٹ دیا تھا' اور اس طرح' لڑائی کے زمانے میں ایک بہت ہی نازک موقعے پر دیش رکشا کی ویوستھا کے راستے میں مشکلیں پیدا کر دی تھیں. سینک وشیشگیوں کے انوسار' اکیلی اس باڑھ کے کارن پورے چھ مہینے تک برما کے مورچے پر فوجی کارروائیاں رکی رہی تھیں."

واستو میں' 1943 میں ہی چرچل سرکار نے دامودر گھاٹی کا باندھ بنانے کا فیصلہ کر لیا تھا. جواہر لال جی کی سرکار کیول اس کا انوسرن کر رہی ہے !

مگر دامودر گھاٹی یوجنا کا فوجی مہتو اتنا ہی نہیں ہے. اوپر لکھے پرکاشن میں آگے لکھا ہے :

"یہ سب کی جانی ہوئی ایک سادھارن بات ہے کہ کسی دیش کی نہت سینک شکتی سب سے ادھک کوئلہ لوہا اور اسپات' المونیم اور کیمیکلوں وغیرہ کے خاص ادیوگوں پر نربھر کرتی ہے. دامودر گھاٹی میں یہ خاص پدارتھ بہتائت سے پائے جاتے ہیں. اس لئے لازمی طور پر یہ گھاٹی دیش رکشا کے لئے آوشیک ادھکتر ادیوگوں کا کیندر بن جائے گی. سچ تو یہ ہے کہ اسے بھارت کا بھاوی جن وادی 'شستراگار' سمجھنا چاہئے."

لیکن اس پوری یوجنا میں سب سے پہلے باندھ بنانے یا سینچائی کی ویوستھا کرنے کا کام نہیں شروع کیا گیا. شروعات ہوئی بجلی کی کل کھڑی کرنے سے' کیونکہ اسے وشو بینک نے سہارا دینے کی کرپا کی.

18 اپریل 1950 کو ایک قرضے کے سمجھوتے پر دستخط ہوگئے. اس کی 11 ویں دھارا میں کچھ شرطوں کا ذکر تھا جن کے پورا ہونے پر ہی قرضہ مل سکتا تھا. وہ شرطیں بھی 2 فروری' 1951 تک پوری کر دی گئیں.

بجلی کی کل کے لئے سامان امریکہ کی انٹرنیشنل جنرل الیکٹرک کمپنی سے منگایا گیا اور اسے کھڑا کرنے کا ٹھیکہ امریکی کمپنی کلجیان کارپوریشن کو سونپا گیا. روپیہ جہاں سے آیا تھا' وہیں پہنچ گیا!

یہی نہیں. ہر دو مہینے کے بعد بینک کے پرتی ندھی آکر جانچ کر جاتے ہیں کہ بھارت سرکار ٹھیک ٹھیک کام کر رہی ہے یا نہیں. اگست 1950 اور مئی 1951 کے بیچ تین ایسے امریکی وشیشگیہ آئے. ان کے نام تھے : جارج برجوس' ایل. گرے مارشل اور جنرل ہیلر.

اس کے علاوہ ایک امریکی انجینیر یوجنا کا پرمکھ نیکت کیا گیا ہے. اسے دس ہزار روپئے سے ادھک ماسک تنخواہ ملتی ہے!

चाहिये. 18 अगस्त 1949 को बैंक ने भारत को 340 लाख डालर का जो क़र्ज़ दिया है, उसका यही उद्देश्य है.........

"भारत सरकार ने बैंक के सामने रेल के इंजिन बनाने की भी एक योजना रखी थी. हमारे सलाहकारों ने इसका सख्त विरोध किया........"

यानी, ऐसी कोई योजना जिसे भारत खुद अपनी ज़रूरत की चीज़ें बनाने लगे और औद्योगिक नज़र से स्वतंत्र हो जाय, विश्व-बैंक के अमरीकी आक़ाओं को मंज़ूर न थी. पहले क़र्ज़े के साथ साफ़ साफ़ यह शर्त लगी हुई थी कि उसका कोई हिस्सा इंजिन बनाने पर खर्च न किया जायगा.

ट्रैक्टर ख़रीदने के लिये क़र्ज़

विश्व-बैंक से मिलने वाला दूसरा क़र्ज़ा भी किसी औद्योगिक योजना के लिये न था. इसका उद्देश्य यह था कि कांस हटा कर परती ज़मीन तोड़ने के लिये भारत सरकार अमरीकी ट्रैक्टर ख़रीद सके.

असल में, इस क़र्ज़े के मिलने के बहुत पहले से भारत सरकार कांस हटा कर परती ज़मीन जोतने की योजना चला रही थी. यह क़र्ज़ा तब मिला जब मेजर जे. एच. कौनार्स नामी अमरीकी भारत सरकार के ट्रैक्टर विभाग का प्रमुख नियुक्त किया गया. क़र्ज़ा मिल जाने के बाद मेजर कौनार्स ने भारत सरकार की नौकरी छोड़ दी और उनको बैंक की ओर से कांस योजना की देख रेख करने वाले इंजीनियर के रूप में नियुक्त कर दिया गया; और उस समय से ही धड़ाधड़ इस विभाग में अमरीकियों की भरती होने लगी.

ध्यान देने की बात है कि यह क़र्ज़ भी ट्रैक्टर बनाने के लिये नहीं, बल्कि महज़ 180 ट्रैक्टर ख़रीदने के लिये दिया गया था और यह ट्रैक्टर भी सिर्फ़ अमरीका से ही ख़रीदे जाने वाले थे !

बिजली कल बनाने के लिये क़र्ज़

तीसरा क़र्ज़ा 18 अप्रैल 1950 को दामोदर घाटी योजना के मातहत बोकारो कोनार की बिजली की कल खड़ी करने के लिये दिया गया. सरकारी प्रचारक कहते हैं कि दामोदर घाटी योजना का उद्देश्य "बाढ़ को रोकना और बड़े पैमाने पर सिंचाई का प्रबंध करना है." लेकिन दामोदर से कहीं अधिक भयंकर और सत्यानाशी बाढ़ हर साल कोसी में आती है जिससे पूरा उत्तरी बिहार चौपट हो जाता है. फिर दामोदर नदी को बांधने की ही इतनी क्या जल्दी थी ? दामोदर घाटी कार्पोरेशन का एक प्रकाशन उत्तर देता है :

چاھئے ۔ 18 اگست 1949 کو بینک نے بھارت کو 340 لاکھ ڈالر کا جو قرض دیا ھے' اُس کا یہی اُدیش ھے ....

"بھارت سرکار نے بینک کے سامنے ریل کے انجن بنانے کی بھی ایک یوجنا رکھی تھی ۔ ھمارے صلاح‌کاروں نے اِس کا سخت وِرودھ کیا ...."

یعنی' ایسی کوئی یوجنا جس سے بھارت خود اپنی ضرورت کی چیزیں بنانے لگے اور اودیوگک نظر سے سوتنتر ھو جائے' وشوبینک کے امریکی آقاؤں کو منظور نہ تھی ۔ پہلے قرضے کے ساتھ صاف صاف یہ شرط لگی ھوئی تھی کہ اُس کا کوئی حصہ انجن بنانے پر خرچ نہ کیا جائے گا ۔

ٹریکٹر خریدنے کے لئے قرض

وشوبینک سے ملنے والا دوسرا قرضہ بھی کسی اودیوگک یوجنا کے لئے نہ تھا ۔ اِس کا اُدیش یہ تھا کہ کانس ھٹا کر پرتی زمین توڑنے کے لئے بھارت سرکار امریکی ٹریکٹر خرید سکے ۔

اصل میں' اِس قرضے کے ملنے کے بہت پہلے سے بھارت سرکار کانس ھٹا کر پرتی زمین جوتنے کی یوجنا چلا رھی تھی ۔ یہ قرضہ تب ملا جب میجر جے ۔ ایچ کونرس نامی امریکی بھارت سرکار کے ٹریکٹر وبھاگ کا پرمکھ نیوکت کیا گیا ۔ قرضہ مل جانے کے بعد میجر کونرس نے بھارت سرکار کی نوکری چھوڑ دی اور اُن کو بینک کی اور سے کانس یوجنا کی دیکھ ریکھ کرنے والے انجینیر کے روپ میں نیوکت کر دیا گیا؛ اور اُس سمے سے ھی دھڑا دھڑ اِس وبھاگ میں امریکیوں کی بھرتی ھونے لگی۔

دھیان دینے کی بات ھے کہ یہ قرض بھی ٹریکٹر بنانے کے لئے نہیں' بلکہ محض 180 ٹریکٹر خریدنے کے لئے دیا گیا تھا اور یہ ٹریکٹر بھی صرف امریکہ سے ھی خریدے جانے والے تھے ۔

بجلی کل بنانے کے لئے قرض

تیسرا قرضہ' 18 اپریل 1950 کو دامودر گھاٹی یوجنا کے ماتحت بوکارو کونار کی بجلی کی کل کھڑی کرنے کے لئے دیا گیا ۔ سرکاری پرچارک کہتے ھیں کہ دامودر گھاٹی یوجنا کا اُدیش "باڑھ کو روکنا اور بڑے پیمانے پر سینچائی کا پربندھ کرنا ھے۔" لیکن دامودر سے کہیں ادھک بھینکر اور ستیاناشی باڑھ ھر سال کوسی میں آتی ھے جس سے پورا اُتری بہار چوپٹ ھو جاتا ھے ۔ پھر دامودر ندی کو باندھنے کی ھی اتنی کیا جلدی تھی ؟ دامودر گھاٹی کارپوریشن کا ایک پرکاشن اُتر دیتا ھے :

इसके अलावा टाटा हाइड्रो-इलैक्ट्रिक कम्पनी को 720 लाख रुपए और खुद भारत सरकार को इस्पात का कारखाना खोलने के लिये भी विश्व बैंक से एक काफ़ी बड़ी रक़म क़र्ज़ मिलने वाली है.

6. अमरीकी सरकार से आई मदद

म्यूचुअल सिक्योरिटी एक्ट (आपसी सुरक्षा क़ानून) के मातहत तकनीकी सहयोग समझौते के अनुसार यह मदद मिली है.

	तारीख़	रक़म (लाख रुपए)
1.	5 जनवरी, 1952	2560
2.	3 नवम्बर, 1952	2270
	जोड़	4830

इस तरह भारत में लगी कुल प्राइवेट अमरीकी पूंजी 54 करोड़ 60 लाख रुपए की होती है, और अमरीकी सरकार और अन्तर राष्ट्रीय कहलाने वाली अमरीकी संस्थाओं से भारत ने 1 अरब 65 करोड़ 25 लाख रुपए क़र्ज़ लिये हैं; और अमरीकी सरकार ने हमें 48 करोड़ 30 लाख रुपए की मदद दी है.

इसका मतलब है कि प्राइवेट अमरीकी पूंजी का अभी इतना महत्व नहीं है जितना सरकारी और अर्ध सरकारी क़र्ज़ों और मदद का है. इसके कारन पर हम बाद में ग़ौर करेंगे. पहले देखना चाहिये कि यह क़र्ज़ और मदद हमें किन शर्तों पर मिली है.

❀ ❀ ❀

इंजिन ख़रीदने के लिये क़र्ज़

मिसाल के लिये, विश्व-बैंक के क़र्ज़ों को लीजिये. भारत सरकार ने कई बार विश्व-बैंक को दरख़ास्तें दीं कि उसे नये, विशेष कर, भारी उद्योग खोलने के लिये क़र्ज़ दिया जाय. लेकिन हर बार उसकी दरख़ास्त नामंजूर कर दी गई. भारत सरकार ने रेलवे इंजिन बनाने का कारख़ाना खोलने के लिये क़र्ज़ मांगा. उस पर भी इनकार हो गया. बैंक ने साफ़ साफ़ कहा : इंजिन ख़रीदने के लिये हम क़र्ज़ दे सकते हैं, बनाने के लिये नहीं ! लाचार, हमारे नेताओं ने इसी पर सन्तोष किया. 23 अक्तूबर 1949 को विश्व बैंक के अमरीकी अध्यक्ष, मिस्टर ई. आर. ब्लैक ने भारत को दिये गये पहले क़र्ज़े का ऐलान करते हुए एक बयान में कहा :

'थोड़े में यह, हमारे सलाहकारों ने सिफ़ारिश की कि बैंक को अमरीका और कनाडा से 650 रेल के इंजिन और बुआयलर पुर्ज़े और बायलर मंगाने के लिये क़र्ज़ा दे देना

اِس کے علاوہ ٹاٹاھائڈرو الیکٹرک کمپنی کو 720 لاکھ روپئے اور خود بھارت سرکار کو اسپات کا کارخانہ کھولنے کے لئے بھی وشوبینک سے ایک کافی بڑی رقم قرض ملنے والی ہے۔

6. امریکی سرکار سے آئی مدد

میوچول سیکورٹی ایکٹ (آپسی سرکشا قانون) کے ماتحت ٹکنیکی سہیوگ سمجھوتے کے انوسار یہ مدد ملی ہے :

	تاریخ	رقم (لاکھ روپئے)
.1	5 جنوری 1952	2560
.2	3 نومبر 1952	2270
	جوڑ	4830

اِس طرح بھارت میں لگی کل پرائیویٹ امریکی پونجی 54 کروڑ 60 لاکھ روپئے کی ہوتی ہے' اور امریکی سرکار اور انتر راشٹری کہلانے والی امریکی سنستھاؤں سے بھارت نے 1 ارب 65 کروڑ 25 لاکھ روپئے قرض لئے ہیں؛ اور امریکی سرکار نے ہمیں 48 کروڑ 30 لاکھ روپئے کی مدد دی ہے ۔

اِس کا مطلب ہے کہ پرائیویٹ امریکی پونجی کا ابھی اتنا مہتو نہیں ہے جتنا سرکاری اور ادھ سرکاری قرضوں اور مدد کا ہے ۔ اِس کے کارن پر ہم بعد میں غور کریں گے ۔ پہلے دیکھنا چاہئے کہ یہ قرض اور مدد ہمیں کن شرطوں پر ملی ہے ۔

❀ ❀ ❀

انجن خریدنے کے لئے قرض

مثال کے لئے' وشوبینک کے قرضوں کو لیجئے ۔ بھارت سرکار نے کئی بار وشوبینک کو درخواستیں دیں کہ اُسے نئے' وشیش کر بھاری اُدیوگ کھولنے کے لئے قرض دیا جائے ۔ لیکن ہر بار اُس کی درخواست نامنظور کر دی گئی ۔ بھارت سرکار نے ریلوے انجن بنانے کا کارخانہ کھولنے کے لئے قرض مانگا ۔ اُس پر بھی انکار ہوگیا ۔ بینک نے صاف صاف کہا : انجن خریدنے کے لئے ہم قرض دے سکتے ہیں' بنانے کے لئے نہیں! لاچار ہمارے نیتاؤں نے اِسی پر سنتوش کیا ۔ 23 اکتوبر 1949 کو وشوبینک کے امریکی ادھیکش' مسٹر ای. آر. بلیک نے بھارت کو دئے گئے پہلے قرضے کا اعلان کرتے ہوئے ایک بیان میں کہا :

"تھوڑے سے میں' ہمارے صلاح کاروں نے سفارش کی کہ بینک کو امریکہ اور کناڈا سے 650 ریل کے انجن اور بوائلر پرزے اور بائیلر منگانے کے لئے قرض دے دینا

3. 1948 और 1951 के बीच आने वाली अमरीकी पूँजी

पिछले 12 जून 1952 को भारत की पार्लिमेन्ट में व्योपार मंत्री नें बताया कि 1948 से ले कर 1951 तक, चार बरस में, 321 लाख रुपए की अमरीकी पूंजी भारत में आई.

4. 1952 में आने वाली अमरीकी पूंजी

पूरे आंकड़े अभी नहीं मिल सकते, लेकिन इतना सब को मालूम है कि इस साल अमरीका की स्टैन्डर्ड वैकुअम आयल कम्पनी को बम्बई में तेल साफ करने का कारख़ाना खोलने के लिये 1680 लाख रुपए की की पूंजी लगाने की इजाज़त मिल चुकी है और काल्टैक्स कम्पनी को भी इसी तरह की इजाज़त मिलने वाली है.

3. 1948 اور 1951 کے بیچ آنےوالی امریکی پونجی

پچھلے 12 جون 1952 کو بھارت کی پارلیمنٹ میں بیوپار منتری نے بتایا کہ 1948 سے لے کر 1951 تک، چار برس میں، 321 لکھ روپئے کی امریکی پونجی بھارت میں آئی۔

4. 1952 میں آنے والی امریکی پونجی

پورے آنکڑے ابھی نہیں مل سکتے، لیکن اتنا سب کو معلوم ہے کہ اِس سال امریکہ کی اسٹینڈرڈ ویکوم آئل کمپنی کو بمبئی میں تیل صاف کرنے کا کارخانہ کھولنے کے لئے 1680 لاکھ روپئے کی پونجی لگانے کی اجازت مل چکی ہے اور کالٹیکس کمپنی کو بھی اِسی طرح کی اجازت ملنے والی ہے۔

5. अमरीकी सरकार और अन्तर राष्ट्री सस्थाओं से लिया गया क़र्ज़

5. امریکی سرکار اور انتر راشٹری سنستھاؤں سے لیا گیا قرض

संस्था سنستھا	तारीख़ تاریخ	रक़म (लाख रुपए में) رقم (لاکھ روپئے میں)	मक़सद مقصد	सूद की दर سود کی در
1. इन्टरनेशनल मौनिटरी फ़न्ड या विश्वकोष. انٹرنیشنل مونیٹری فنڈ یا وشو کوش۔	1948-49	2740	अमरीका, कनाडा वग़ैरा डालर वाले देशों से माल मंगाने के लिये امریکہ، کناڈا وغیرہ ڈالر والے دیشوں سے مال منگانے کے لئے	1/2% से शुरू कर के 4% तक बढ़ती जायगी 1/2% سے شروع کرکے 4% تک بڑھتی جائے گی
2. विश्वबैंक وشو بینک	अगस्त 1949 اگست	1700	रेल के इंजन ख़रीदने के लिये ریل کے انجن خریدنے کے لئے	4 फ़ीसदी 4 فیصدی
3. „ „	सितम्बर 1949 ستمبر	481	काँस हटा कर परती ज़मीन तोड़ने के लिये کانس ہٹا کر پرتی زمین توڑنے کے لئے	साढ़े तीन फ़ीसदी ساڑھے تین فیصدی
4. „ „	अप्रैल 1950 اپریل	890	बिजली की कलें खोलने के लिये بجلی کی کلیں کھولنے کے لئے	4 फ़ीसदी 4 فیصدی
5. अमरीकी सरकार امریکی سرکار	जून 1951 جون	9139	अमरीकी गेहूँ ख़रीदने के लिये امریکی گیہوں خریدنے کے لئے	ढाई फ़ीसदी ڈھائی فیصدی
6. विश्व बैंक وشو بینک	दिसम्बर 1952 دسمبر	1575	इंडियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी को दिया गया क़र्ज़ انڈین آئرن اینڈ اسٹیل کمپنی کو دیا گیا قرض	? ?
	जोड़	16525	جوڑ	

भारत में लगी हुई अमरीकी पूंजी

1948 में

(i) सीधे लगाई गई पूंजी

	लाख रुपए
कल कारखाने (जूट मिलें और पेट्रोल के डिपो)	... 559
यातायात, पानी कलें, बिजली की कलें वगैरा	... 36
बैंक वगैरा	... 192
फुटकर	... 301
जोड़	1132

(ii) दूसरी तरह लगाई गई पूंजी

जमीन, जागीर, ट्रस्ट वगैरा	... 233
सरकारी और अध सरकारी हुन्डियां	... 96
जमीन, मकान वगैरा	... 47
जमा वगैरा	... 159
जोड़	535
(iii) धार्मिक और शिक्षा सम्बन्धी संस्थाएं	... 658
कुल जोड़	2325

(यह आंकड़े बम्बई के 'कामर्स' नामक पत्र के 10 जुलाई 1948 के अंक में प्रकाशित हुए थे जो उसने अमरीकी सरकार द्वारा प्रकाशित विदेशों में लगी हुई पूंजी की गिनती की रिपोर्ट से लिये थे.)

1948 में

भारती रिज़र्व बैंक ने विदेशी पूंजी की गिनती कर के जो रिपोर्ट 30 जून 1948 को प्रकाशित की थी, उसमें भारत में लगी अमरीकी पूंजी के बारे में नीचे लिखे आंकड़े दिये गये हैं:

(1) लम्बे अरसे के लिये

(लाख रुपए)

काम	ऐसी पूंजी जिसका काम उद्योग पर नियंत्रन है	ऐसी पूंजी जिसका उद्योग पर नियंत्रन नहीं है
कल कारखाने	20	493
व्योपार	34	484
सार्वजनिक हित के व्यवसाय	1	...
यातायात	1	2
खानें	18	...
बैंक वगैरा	2	694
फुटकर	30	38
जोड़	106	1711
(2.) थोड़े अरसे के लिये		1642
कुल जोड़		3459

بھارت میں لگی ہوئی امریکی پونجی

1948 میں .

(i) سیدھے لگائی گئی پونجی .

لاکھ روپے	
559 ...	کل کارخانے (جوٹ ملیں اور پٹرول کے ڈپو)
36 ...	یاتایات' پانی کلیں' بجلی کی کلیں وغیرہ
192 ...	بینک وغیرہ
301 ...	پھٹکر
1132 ...	جوڑ

(ii) دوسری طرح لگائی گئی پونجی

233 ...	زمین' جاگیر' ٹرسٹ وغیرہ
96 ...	سرکاری اور ادھ سرکاری ہنڈیاں
47 ...	زمین' مکان وغیرہ
159 ...	جمع وغیرہ
535 ...	جوڑ
658	(iii) دھارمک اور شکشا سمبندھی سنستھائیں
2325	کل جوڑ

(یہ آنکڑے بمبئی کے ' کامرس ' نامک پتر کے 10 جولائی 1948 کے انک میں پرکاشت ہوئے تھے جو اس نے امریکی سرکار دوارا پرکاشت ودیشوں میں لگی ہوئی پونجی کی گنتی کی رپورٹ سے لئے تھے .)

1948 میں .

بھارتیہ رزرو بینک نے ودیشی پونجی کی گنتی کر کے جو رپورٹ 30 جون' 1948 کو پرکاشت کی تھی' اس میں بھارت میں لگی امریکی پونجی کے بارے میں نیچے لکھے آنکڑے دیئے گئے ہیں :

(1) لمبے عرصے کے لئے

(لاکھ روپئے)

ایسی پونجی جسکا ادیوگ پر نینترن نہیں ہے	ایسی پونجی جسکا ادیوگ پر نینترن ہے	کام
493	20	کل کارخانے
484	34	بیوپار
...	1	ساروجنک ہت کے بیوسائے
2	1	یاتایات
...	18	کھانیں
694	2	بینک وغیرہ
38	80	پھٹکر
1711	106	جوڑ
	1642	(2) تھوڑے عرصے کے لئے
	3459	کل جوڑ

भारत में अमरीकी क़दम

(ओम प्रकाश संगल)

अभी दो महीने भी नहीं हुए कि भारत वासियों को अख़बारों में अपने प्रधान मंत्री का नीचे लिखा बयान पढ़ कर बड़ी ख़ुशी हुई थी. लखनऊ के एक प्रेस सम्मेलन में पंडित जी ने फ़रमाया था:

"यह सरकार अगर हमें मदद देने वाली किसी विदेशी सरकार के दबाव के सामने झुकने लगेगी और जनता को भी ऐसी मदद स्वीकार करने पर मजबूर करेगी तो मैं एक दिन के लिये भी उसका प्रधान रहना पसन्द नहीं करूंगा.
(अमृत बाज़ार पत्रिका, 23 दिसम्बर 1952)

पंडित जी का दावा

आगे पंडित जी ने कहा था:

"शर्तों के साथ आने वाली विदेशी मदद पर निर्भर रहने से...हम यह ज़ियादा पसन्द करेंगे कि तकलीफ़ में रहें."

पंडित जी के इन बयानों का क्या मतलब था और जनता को उन्हें सुन कर क्यों ख़ुशी हुई थी ? भारत सरकार ने अब तक जितनी विदेशी सहायता स्वीकार की है, उसका अधिकतर भाग या तो संयुक्त राष्ट्र अमरीका से आया है, या अन्तर राष्ट्री कहलाने वाली, विश्व बैंक वग़ैरा ऐसी संस्थाओं से. इन संस्थाओं में अमरीका की ही चलती है और अमरीका एक बहुत ताक़तवर साम्राजवादी देश है. भारत वासियों को साम्राजवादी ग़ुलामी का दो सौ बरस का अनुभव है. इसलिये उन्हें चिन्ता है कि अगर अमरीका के क़दम हमारे देश में पड़ेंगे तो उसका बंटाढार किये बिना न छोड़ेंगे.

पंडित जी के इन बयानों से उनकी ज़रूर कुछ दिल जमई हुई होगी, क्योंकि उनका साफ़ मतलब यह था कि (1) अमरीकी मदद के साथ किसी तरह की शर्तें नहीं लगी हैं, और (2) अमरीका भारत सरकार के ऊपर किसी तरह का दबाव नहीं डाल रहा है.

सवाल है कि क्या यह बातें सचाई से मेल खाती हैं ?

❀ ❀ ❀

अमरीकी पूंजी का लेखा जोखा

भारत को अमरीका से अभी तक कितनी और किस तरह की मदद मिली है और उसकी और कितनी पूंजी यहां आई है: यह नीचे के आंकड़ों से साफ़ हो जायगा:

بھارت میں امریکی قدم

(اوم پرکاش سنگل)

ابھی دو مہینے بھی نہیں ہوئے کہ بھارت واسیوں کو اخباروں میں اپنے پردھان منتری کا نیچے لکھا بیان پڑھ کر بڑی خوشی ہوئی تھی ۔ لکھنؤ کے ایک پریس سمیلن میں پنڈت جی نے فرمایا تھا :

" یہ سرکار اگر ہمیں مدد دینے والی کسی ودیشی سرکار کے دباؤ کے سامنے جھکنے لگے گی اور جنتا کو بھی ایسی مدد سویکار کرنے پر مجبور کرے گی تو میں ایک دن کے لئے بھی اُس کا پردھان رہنا پسند نہیں کروں گا."
(امرت بازار پتریکا' 23 دسمبر 1952)

پنڈت جی کا دعویٰ

آگے پنڈت جی نے کہا تھا :

" شرطوں کے ساتھ آنے والی ودیشی مدد پر نربھر رہنے سے......ہم یہ زیادہ پسند کریں گے کہ تکلیف میں رہیں ."

پنڈت جی کے اِن بیانوں کا کیا مطلب تھا اور جنتا کو اُنہیں سن کر کیوں خوشی ہوئی تھی ؟ بھارت سرکار نے اب تک جتنی ودیشی سہائتا سویکار کی ہے' اُس کا ادھک تر بھاگ یا تو سنیکت راشٹر امریکہ سے آیا ہے' یا انتر راشٹری کہلانے والی' وشو بینک وغیرہ ایسی سنستھاؤں سے ۔ اِن سنستھاؤں میں امریکہ کی ہی چلتی ہے اور امریکہ ایک بہت طاقتور سامراج وادی دیش ہے ۔ بھارت واسیوں کو سامراج وادی غلامی کا دو سو برس کا انوبھو ہے ۔ اِس لئے اُنہیں چنتا ہے کہ اگر امریکہ کے قدم ہمارے دیش میں پڑیں گے تو اُس کا بنٹا ڈھار کئے بنا نہ چھوڑیں گے ۔

پنڈت جی کے اِن بیانوں سے اُن کی ضرور کچھ دل جمعی ہوئی ہوگی' کیونکہ اُن کا صاف مطلب یہ تھا کہ (1) امریکی مدد کے ساتھ کسی طرح کی شرطیں نہیں لگی ہیں' اور (2) امریکہ بھارت سرکار کے اوپر کسی طرح کا دباؤ نہیں ڈال رہا ہے ۔

سوال ہے کہ کیا یہ باتیں سچائی سے میل کھاتی ہیں؟

❀ ❀ ❀

امریکی پونجی کا لیکھا جوکھا

بھارت کو امریکہ سے ابھی تک کتنی اور کس طرح کی مدد ملی ہے اور اُس کی اور کتنی پونجی یہاں آئی ہے : یہ نیچے کے آنکڑوں سے صاف ہو جائے گا :

ही होगा. बाक़ी 90 फ़ी सदी किसान जहां के तहां रहेंगे. और जैसे देश की पैदावार पिछले 50 साल से गिरती आ रही है वैसे ही गिरती जायगी. चावल की पैदावार जो 1921-22 में 957 पौंड फ़ी एकड़ थी, 1945-46 तक घटते घटते 717 रह गई और गेहूँ की पैदावार 845 से 580 रह गई, यानी 25 फ़ी सदी और 19·3 फ़ी सदी कम.

प्लान का असली रूप

इस तरह हम देखते हैं कि कई सौ करोड़ रुपए खर्च करने के बाद भी हमारे देश की बुनियादी समस्या—खेती की समस्या—हल होती नज़र नहीं आती. सच तो यह है कि सरकार के प्लान से आम जनता और किसान का कोई फ़ायदा नहीं होता. सरकार का विचार साझेदारी की खेती बढ़ाने का है, और प्लानिंग कमीशन की तजवीज़ है कि अगर गांव के दो तिहाई किसान या ऐसे आदमी जिनके पास गांव की आधी ज़मीन है तय कर लें, तो बाक़ी लोगों के लिये ज़रूरी हो जाता है कि वह भी साझे की खेती में शामिल हों. इसका साफ़ अर्थ यह है कि थोड़े से बड़े ज़मींदार और धनी किसान बाक़ी गांव वालों को मजबूर कर सकते हैं कि वह अपने खेत उनके हाथ में सौंप दें.

बेकारी के सवाल का कोई हल प्लान में नहीं है. सरकार को चाहिये था कि बाहर से बड़ी बड़ी मशीनें मंगाने के बजाय, जहां तक हो सके देश के लाखों करोड़ों बेकारों की मेहनत से फ़ायदा उठाए. चीन की सरकार ने भी ऐसा ही किया है. सरकार 'डिगनिटी आफ़ लेबर वीक' का स्वांग तो रचा सकती है लेकिन ऐसा ठोस काम नहीं कर सकती. प्लान के असली रूप को देख कर किसी को उसके लिये जोश या उत्साह पैदा नहीं हो सकता.

प्लान में बताया गया है कि इस योजना के तहत खूब कच्चा माल पैदा होगा और बाहर से तैयार माल मंगाने के लिये उसे बाहर भेजा जायगा. इससे साफ़ ज़ाहिर है कि भारत का कच्चा माल सस्ते दामों मिलेगा और उसी माल से उद्योगी सामान तैयार कर के विदेशी हम से मन-माने दाम ऐंठेंगे. इस तरह हम पर क़र्ज़ का भार बढ़ता जायगा. मुल्क में दौलत आने के बजाय देश की पूंजी विदेशियों की भेंट चढ़ती रहेगी.

ہی ہوگا. باقی 90 فیصدی کسان جہاں کے تہاں رہینگے. اور جیسے دیش کی پیداوار پچھلے 50 سال سے گرتی آ رہی ہے' ویسے ہی گرتی جائیگی. چاول کی پیداوار جو 22-1921 میں 957 پونڈ فی ایکڑ تھی' 46-1945 تک گھٹتے گھٹتے 717 رہ گئی اور گیہوں کی پیداوار 845 سے 580 رہ گئی' یعنی 25 فیصدی اور 19·3 فیصدی کم.

پلان کا اصلی روپ.

اِس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ کئی سو کروڑ روپئے خرچ کرنے کے بعد بھی ہمارے دیش کی بنیادی سمسیا— کھیتی کی سمسیا—حل ہوتی نظر نہیں آتی. سچ یہ ہے کہ سرکار کے اِس پلان سے عام جنتا اور کسان کا کوئی فائدہ نہیں ہوتا. سرکار کا وچار ساجھے داری کی کھیتی بڑھانے کا ہے' اور پلاننگ کمیشن کی تجویز ہے کہ اگر گاؤں کے دو تہائی کسان یا ایسے آدمی جن کے پاس گاؤں کی آدھی زمین ہے طے کر لیں' تو باقی لوگوں کے لئے ضروری ہو جاتا ہے کہ وہ بھی ساجھے کی کھیتی میں شامل ہوں. اِس کا صاف ارتھ یہ ہے کہ تھوڑے سے بڑے زمیندار اور دھنی کسان باقی گاؤں والوں کو مجبور کر سکتے ہیں کہ وہ اپنے کھیت اُن کے ہاتھ میں سونپ دیں.

بیکاری کے سوال کا کوئی حل پلان میں نہیں ہے. سرکار کو چاہئے تھا کہ باہر سے بڑی بڑی مشینیں منگانے کی بجائے' جہاں تک ہو سکے دیش کے لاکھوں کروڑوں بیکاروں کی محنت سے فائدہ اُٹھائے. چین کی سرکار نے بھی ایسا ہی کیا ہے. سرکار 'ڈگنٹی آف لیبر ویک' کا سوانگ تو رچا سکتی ہے لیکن ایسا ٹھوس کام نہیں کر سکتی. پلان کے اصلی روپ کو دیکھکر کسی کو اُس کے لئے جوش یا اُتساہ نہیں پیدا ہوسکتا.

پلان میں بتایا گیا ہے کہ اس یوجنا کے تحت خوب کچا مال پیدا ہوگا اور باہر سے تیار مال منگانے کے لئے اُسے باہر بھیجا جائیگا. اس سے صاف ظاہر ہے کہ بھارت کا کچا مال سستے داموں ملے گا اور اُسی مال سے اُدیوگی سامان تیار کر کے ودیشی ہم سے من مانے دام اینٹھیں گے. اس طرح ہم پر قرض کا بھار بڑھتا جائے گا. ملک میں دولت آنے کے بجائے دیش کی پونجی ودیشیوں کی بھینٹ چڑھتی رہے گی.

दूसरी योजनाएं

कुएं और तालाब खुदवाना, बीज बांटना, खाद इकट्ठा करना वग़ैरा कोई नई योजनाएं नहीं हैं. 'पैदावार बढ़ाओ' या 'अधिक अनाज पैदा करो' आन्दोलन के नाम का ढोल ब्रिटिश सरकार बहुत दिन तक पीटती रही है. इस आन्दोलन में उसने करोड़ों रुपए खर्च भी किये थे. बाद में उसे मानना पड़ा कि इस स्कीम से कोई ख़ास फ़ायदा नहीं हुआ. (देखिये रिज़र्व बैंक आफ़ इंडिया के रूरल एकनामिक्स डिवीज़न्स और बम्बई यूनिवर्सिटी स्कूल आफ़ इकनामिक्स एन्ड सोश्यालोजी की रिपोर्टें)

आज टीम टाम ज़ियादा है, धूम धाम ज़ियादा है. ख़र्चा पहले से चौगना बढ़ गया है. लेकिन स्कीम में कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं है. स्कीम के मुख्य अंग यह हैं :—

(i) सारा काम अफ़सरों की देख रेख में होगा. हर ज़िले में कलक्टर की सदारत में एक कमेटी बनेगी. इस कमेटी में एक प्लानिंग अफ़सर और दूसरे नामज़द किये हुए लोग होंगे. प्लानिंग अफ़सर ऐसी ही कमेटियां हर तहसील में बनाएगा. सूबाई पैमाने पर एक बड़ा अफ़सर सब स्कीमों का जोड़ बैठाएगा.

(ii) कोई ऐसे सुधार नहीं किये जायंगे जिससे किसान के हाथ में पहले से ज़ियादा रुपया आए और खेतिहर को खेत मिले. ज़मींदारी ख़ातमे की जो स्कीमें हैं उनमें लगान कम होना तो अलग रहा, उल्टे किसान को दसगुना मुआवज़े में देना होगा. यानी पहले दस गुना रुपया इकट्ठा करो, तब 15 साल के बाद फ़ायदा हो. जो न दे सके उसे कोई फ़ायदा नहीं. ज़ाहिर है हिन्दुस्तान के अधिकतर किसान दस गुना दाम नहीं दे सकते. ज़मींदारी ख़ातमे से उल्टे अफ़सरशाही को किसानों को परेशान करने के दस बहाने और मिल गए.

कमयुनिटी प्रोजेक्ट्स

सरकार की योजना में 90 करोड़ रुपए कमयुनिटी प्रोजेक्ट्स के लिये रखे गए हैं. भारत सरकार और अमरीकी समझौते के मुताबिक़ कमयुनिटी प्रोजेक्ट्स के 55 केन्द्र खोले जायंगे. हर केन्द्र में 300 गांव शामिल होंगे. इन केन्द्रों के ज़रिये नए औज़ार, खाद, बीज वग़ैरा किसानों को मुहैया किये जायंगे. उन्हें खेतों की उपज बढ़ाने और मवेशियों की नस्ल सुधारने वग़ैरा की सीख भी दी जायगी. इस सब ख़र्च का आठवां हिस्सा अमरीकी सरकार देगी. पर अमरीका की सलाह के बिना भारत सरकार कोई क़दम न उठा सकेगी.

दूसरी सरकारी स्कीमों की तरह इस योजना में भी दिखावट अधिक है, असलियत कम. किसान अफ़सर शाही से तंग होगा और फ़ायदा सिर्फ़ थोड़े से धनी किसानों, सरकारी दलालों और पैसे वाले ज़मींदारों को

دوسری یوجنائیں

کنوئیں اور تالاب کھدوانا، بیج بانٹنا، کھاد اکٹھا کرنا وغیرہ کوئی نئی یوجنائیں نہیں ہیں۔ ' پیداوار بڑھاؤ ' یا ' ادھک اناج پیدا کرو ' آندولن کے نام کا ڈھول برٹش سرکار بہت دن تک پیٹتی رہی ہے۔ اس آندولن میں اس نے کروڑوں روپئے خرچ بھی کئے تھے۔ بعد میں اسے ماننا پڑا کہ اس اسکیم سے کوئی خاص فائدہ نہیں ہوا۔ (دیکھئے رزرو بینک آف انڈیا کے رورل ایکنامکس ڈویژنس، اور بمبئی یونیورسٹی اسکول آف ایکنامکس اینڈ سوشیولاجی کی رپورٹیں)

آج ٹیم ٹام زیادہ ہے، دھوم دھام زیادہ ہے۔ خرچہ پہلے سے چوگنا بڑھ گیا ہے۔ لیکن اسکیم میں کوئی خاص فرق نہیں ہے۔ اسکیم کے مکھیہ انگ یہ ہیں۔

(i) سارا کام افسروں کی دیکھ ریکھ میں ہوگا۔ ہر ضلعے میں کلکٹر کی صدارت میں ایک کمیٹی بنے گی۔ اس کمیٹی میں ایک پلاننگ افسر اور دوسرے نامزد کئے ہوئے لوگ ہونگے۔ پلاننگ افسر ایسی ہی کمیٹیاں ہر تحصیل میں بنائے گا۔ صوبائی پیمانے پر ایک بڑا افسر سب اسکیموں کا جوڑ بیٹھائے گا۔

(ii) کوئی ایسے سدھار نہیں کئے جائیں گے جس سے کسان کے ہاتھ میں پہلے سے زیادہ روپیہ آئے، اور کھیتی ہر کو کھیت ملے۔ زمینداری خاتمے کی جو اسکیمیں ہیں ان میں لگان کم ہونا تو الگ رہا، الٹے کسان کو دس گنا معاوضہ میں دینا ہوگا۔ یعنی پہلے دس گنا روپیہ اکٹھا کرو، تب 15 سال کے بعد فائدہ ہو۔ جو نہ دے سکے اسے کوئی فائدہ نہیں۔ ظاہر ہے ہندستان کے ادھک تر کسان دس گنا دام نہیں دے سکتے۔ زمینداری خاتمے سے الٹے افسر شاہی کو کسانوں کو پریشان کرنے کے دس بہانے اور مل گئے۔

کمیونٹی پروجیکٹس

سرکار کی یوجنا میں 90 کروڑ روپئے کمیونٹی پروجیکٹس کے لئے رکھے گئے ہیں۔ بھارت سرکار اور امریکی سمجھوتے کے مطابق کمیونٹی پروجیکٹ کے 55 کیندر کھولے جائینگے۔ ہر کیندر میں 300 گاؤں شامل ہونگے۔ ان کیندروں کے ذریعے نئے اوزار، کھاد، بیج وغیرہ کسانوں کو مہیا کئے جائیں گے۔ انہیں کھیتوں کی اپج بڑھانے اور مویشیوں کی نسل سدھارنے وغیرہ کی سیکھ بھی دی جائے گی۔ اس سب خرچ کا آٹھواں حصہ امریکی سرکار دے گی۔ پر امریکہ کی صلاح کے بنا بھارت سرکار کوئی قدم نہ اٹھا سکے گی۔

دوسری سرکاری اسکیموں کی طرح اس یوجنا میں بھی دکھاوٹ ادھک ہے، اصلیت کم۔ کسان افسر شاہی سے تنگ ہوگا اور فائدہ صرف تھوڑے سے دھنی کسانوں، سرکاری دلالوں اور پیسے والے زمینداروں کو

दो जून पेट भर खाना देना और देश में पैदावार बढ़ाना. प्लान के मुताबिक़ देश की आमदनी पांच साल में 11 फ़ी सदी बढ़ जायगी. लेकिन हमारी आबादी भी इस दौरान में बढ़ेगी ही. इसलिये उस से जनता की आमदनी में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा. प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डाक्टर वी. के. आर. वी. राव का कहना है कि अगले 15 साल तक जनता की आमदनी में कोई बढ़ौती नहीं हो सकती.

एक क़दम और. अगर सरकार की इस दलील को भी हम मान लें कि इस समय ज़रूरत पैदावार बढ़ाने की है, और आगे की तरक़्क़ी की तरफ़ क़दम बढ़ाना है तो क्या इस प्लान से हमारी पैदावार और ख़ास तौर से अनाज की पैदावार का सवाल हल हो जाता है? अगर यह प्लान इतना ही कर सके तो कम नहीं!

प्लानिंग कमीशन का अन्दाज़ा है कि 1955-56 तक पैदावार की बढ़ौती इस तरह से होगी:

ग़ल्ला	मौजूदा	बढ़ौती
(मिलियन टन)	54	61·6
कपास (लाख गांठ)	29·7	42·2
पटसन (लाख गांठ)	33·0	53·9
चीनी (मिलियन टन)	5·6	6·3

ऊपर की टेबिल से मालूम होता है कि ग़ल्ले की पैदावार 7·6 मिलियन टन या 14 फ़ी सदी, कपास की 12·6 लाख गांठ या 42 फ़ी सदी, पटसन की 20·9 लाख गांठ या 63 फ़ी सदी, और चीनी की पैदावार 7 लाख टन या 12 फ़ी सदी बढ़ाने की योजना है. लेकिन सवाल यह है कि पैदावार बढ़ेगी किस तरह? सरकार का विचार है कि बड़ी बड़ी आबपाशी की योजनाओं (दामोदर, हीराकुंड, भकरा, नंगल) के ज़रिये 23 लाख टन ग़ल्ला पैदा किया जा सकेगा. बाक़ी 49 लाख छोटी आबपाशी की योजनाओं, कुओं, अच्छी खाद, बीज वग़ैरा की मदद से और ऊसर ज़मीन को जोत बो कर पैदा किया जा सकेगा.

छोटी योजनाएं

यह कहना मुश्किल है कि बड़ी बड़ी नदियों को सुखाने की जो स्कीमें सरकार ने बनाई हैं उनसे असल पैदावार में कितनी बढ़ौती होगी. अभी तो इन योजनाओं में पानी की तरह रुपया बहाया जा रहा है. दामोदर घाटी स्कीम का ख़र्च 37 करोड़ से बढ़ कर 75 करोड़ हो गया है. दूसरी तरफ़ योजनाओं के ख़र्चे में भी उसी पैमाने पर तरक़्क़ी हो रही है. साफ़ है कि जिस तरह इन योजनाओं के द्वारा बड़े बड़े अफ़सरों की पेट पुजाई हो रही है उसी तरह जब नये खेत बांटने का सवाल आएगा तब दूसरे अफ़सरों की पेट पुजाई होगी. अमरीकी "ऐक्सपर्टों" की तो पौ बारह है.

دو جون پیٹ بھر کھانا دینا اور دیش میں پیداوار بڑھانا۔ پلان کے مطابق دیش کی آمدنی پانچ سال میں 11 فیصدی بڑھ جائیگی۔ لیکن ہماری آبادی بھی اس دوران میں بڑھے گی ہی۔ اس لئے جنتا کی آمدنی میں کوئی فرق نہیں پڑے گا۔ پرسدھ ارتھ شاستری ڈاکٹر وی۔ کے۔ آر۔ وی۔ راؤ کا کہنا ہے کہ اگلے 15 سال تک جنتا کی آمدنی میں کوئی بڑھوتی نہیں ہو سکتی۔

ایک قدم اور۔ اگر سرکار کی اس دلیل کو بھی مان لیں کہ اس سمے ضرورت پیداوار بڑھانے کی ہے، اور آگے کی ترقی کی طرف قدم بڑھانا ہے تو کیا اس پلان سے ہماری پیداوار اور خاص طور سے اناج کی پیداوار کا سوال حل ہو جاتا ہے؟ اگر یہ پلان اتنا ہی کر سکے تو کم نہیں!

پلاننگ کمیشن کا اندازہ ہے کہ 1955-56 تک پیداوار کی بڑھوتی اس طرح سے ہوگی۔

غلہ	موجودہ	بڑھوتی
(ملین ٹن)	54	61·6
کپاس (لاکھ گانٹھ)	29·7	42·2
پٹسن (لاکھ گانٹھ)	33·0	53·9
چینی (ملین ٹن)	5·6	6·3

اوپر کی ٹیبل سے معلوم ہوتا ہے کہ غلے کی پیداوار 7 ملین ٹن یا 14 فیصدی، کپاس کی 12·6 لاکھ گانٹھ یا 42 فیصدی، پٹسن کی 20·9 لاکھ گانٹھ یا 63 فیصدی اور چینی کی پیداوار 7 لاکھ ٹن یا 12 فیصدی بڑھانے کی یوجنا ہے۔ لیکن سوال یہ ہے کہ پیداوار بڑھے گی کس طرح؟ سرکار کا وچار ہے کہ بڑی بڑی آبپاشی کی یوجناؤں ('دامودر، ہیراکنڈ، بھکرا، ننگل) کے ذریعے 23 لاکھ ٹن غلہ پیدا کیا جا سکیگا۔ باقی 49 لاکھ چھوٹی آبپاشی کی یوجناؤں، کنوؤں، اچھی کھاد بیج وغیرہ کی مدد سے اور اوسر زمین کو جوت بو کر پیدا کیا جا سکیگا:

چھوٹی یوجنائیں

یہ کہنا مشکل ہے کہ بڑی بڑی ندیوں کو سکھانے کی جو اسکیمیں سرکار نے بنائی ہیں اُن سے اصل پیداوار میں کتنی بڑھوتی ہوگی۔ ابھی تو ان یوجناؤں میں پانی کی طرح روپیہ بہایا جا رہا ہے۔ دامودر گھاٹی اسکیم کا خرچ 37 کروڑ سے بڑھکر 75 کروڑ ہوگیا ہے۔ دوسری یوجناؤں کے خرچے میں بھی اسی پیمانے پر ترقی ہو رہی ہے۔ صاف ہے کہ جس طرح ان یوجناؤں کے دوارا بڑے بڑے افسروں کی پیٹ پجائی ہو رہی ہے اسی طرح جب نئے کھیت بانٹنے کا سوال آئے گا تب دوسرے افسروں کی پیٹ پجائی ہوگی۔ امریکی "ایکسپرٹوں" کی تو پو بارہ ہے۔

दिमाग की पैदावार थीं. यह हो भी कैसे ? सरकार के नुमाइन्दे आए दिन विदेशी पूंजी को दावत देते रहते हैं. दुनिया का सबसे बड़ा पूंजीपति देश, अमरीका, रुपया देने को हर दम तैयार बैठा है. यह कहने की ज़रूरत नहीं कि साहूकार बिना किसी झमेले और शर्त के पैसा उधार नहीं देता. अमरीका की शर्तें यह हैं—अमरीकी और हिन्दुस्तानी पूंजी में कोई भेद भाव न रखा जाय, राष्ट्रीकरन न करने का यक़ीन दिलाया जाय, मुनाफ़ा बाहर भेजने की पूरी सहूलियतें दी जायं वग़ैरा. भारत सरकार यह ज़ियादातर शर्तें मानने को तैयार है. लेकिन इस पर भी अमरीकी पूंजीपति संतुष्ट नहीं हैं. असल में उन को हिन्द सरकार की विदेशी नीति से शिकायत है. वह चाहते हैं कि सरकार साफ़ साफ़ कम्यूनिज़्म के ख़िलाफ़ जिहाद में अमरीकनों की मदद करने का वायदा करे, अमरीकनों को भारत में फ़ौजी अड्डे बनाने दे ताकि ज़रूरत पड़ने पर वह भारत के अंदरूनी मामलों में भी दख़ल अंदाज़ी कर सकें. इसके अलावा वह ऐसी रिआयतें भी चाहते हैं जो भारत सरकार हिन्दुस्तानी पूंजीपतियों को भी नहीं देती.

ज़ाहिर है कि बड़ी मात्रा में विदेशी पूंजी हमें अपनी आज़ादी पूरी तरह बेच देने से ही मिल सकेगी. और तब भी यह पूंजी देश को पच्छिमी देशों की आर्थिक ग़ुलामी से आज़ादी दिलाने के लिये नहीं लगाई जायगी. क्योंकि जो विदेशी पूंजी देश में आएगी वह कच्चा माल पैदा करने और यातायात के साधनों को बढ़ाने के काम में ही लगाई जायगी.

ऊपर की बात से साफ़ हो जाता है कि विदेशी पूंजी पहले तो जिन शर्तों पर शायद हमें मिल सके वह एक आज़ाद देश की शान के ख़िलाफ़ हैं; और दूसरे उसका मक़सद हमारे देश को आज़ाद और ख़ुशहाल बनाना नहीं है. हमें लड़ाई का अड्डा बनाना, हमारे कच्चे माल को हासिल करना और हमारी नई आज़ादी को ख़तम करना उसका लक्ष्य है.

हमारा अपना तजुर्बा और दूसरे देशों का तजुर्बा भी यही सिखाता है कि अगर हमें अपने देश को मज़बूत और ख़ुशहाल बनाना है तो हमें अपने ही साधनों, अपनी ही मेहनत और क़ुर्बानियों पर ही निर्भर रहना पड़ेगा. यह दुख की बात है कि सरकार और प्लानिंग कमीशन ने इस बात को 'झक' और विदेशी पूंजी के ख़तरे को 'बे मतलब शक' कह कर टालना चाहा है.

खेती की समस्या

सवाल यह उठता है कि अगर हम थोड़ी देर के लिये विदेशी पूंजी के सवाल को नज़रअंदाज़ भी कर दें तो क्या उससे हमारी समस्या हल हो जाती है ? बुनियादी सवाल हैं—देश में जनता के जीवन के स्तर को ऊंचा उठाना, उन्हें

دماغ کی پیداوار تھیں. یہ ہو بھی کیسے؟ سرکار کے نمائندے آئے دن ودیشی پونجی کو دعوت دیتے رہتے ہیں . دنیا کا سب سے بڑا پونجی پتی دیش، امریکہ، روپیہ دینے کو ہر دم تیار بیٹھا ہے . یہ کہنے کی ضرورت نہیں کہ ساہوکار بنا کسی جھمیلے اور شرط کے پیسہ اُدھار نہیں دیتا . امریکہ کی شرطیں یہ ہیں— امریکی اور ہندستانی پونجی میں کوئی بھید بھاؤ نہ رکھا جائے، راشٹری کرن نہ کرنے کا یقین دلایا جائے، منافع باہر بھیجنے کی پوری سہولتیں دی جائیں وغیرہ . بھارت سرکار یہ زیادہ‌تر شرطیں ماننے کو تیار ہے. لیکن اس پر بھی امریکی پونجی پتی سنتشٹ نہیں ہیں. اصل میں اُن کو ہند سرکار کی ودیشی نیتی سے شکایت ہے . وہ چاہتے ہیں کہ سرکار صاف صاف کمیونزم کے خلاف جہاد میں امریکنوں کی مدد کرنے کا وعدہ کرے، امریکنوں کو بھارت میں فوجی اڈے بنانے دے تاکہ ضرورت پڑنے پر وہ بھارت کے اندرونی معاملوں میں بھی دخل اندازی کرسکیں. اس کے علاوہ وہ ایسی رعائتیں بھی چاہتے ہیں جو بھارت سرکار نے ہندستانی پونجی پتیوں کو بھی نہیں دیتی.

ظاہر ہے کہ بڑی ماترا میں ودیشی پونجی ہمیں اپنی آزادی پوری طرح بیچ دینے سے ہی مل سکے گی . اور تب بھی یہ پونجی دیش کو پچھمی دیشوں کی آرتھک غلامی سے آزادی دلانے کے لئے نہیں لگائی جائیگی. کیونکہ جو ودیشی پونجی دیش میں آئیگی وہ کچا مال پیدا کرنے اور یاتایات کے سادھنوں کو بڑھانے کے کام میں ہی لگائی جائے گی .

اوپر کی بات سے صاف ہو جاتا ہے کہ ودیشی پونجی پہلے تو جن شرطوں پر شاید ہمیں مل سکے وہ ایک آزاد دیش کی شان کے خلاف ہیں؛ اور دوسرے اُس کا مقصد ہمارے دیش کو آزاد اور خوشحال بنانا نہیں ہے . ہمیں لڑائی کا اڈا بنانا، ہمارے کچے مال کو حاصل کرنا اور ہماری نئی آزادی کو ختم کرنا اُس کا لکشیہ ہے .

ہمارا اپنا تجربہ اور دوسرے دیشوں کا تجربہ بھی یہی سکھاتا ہے کہ اگر ہمیں اپنے دیش کو مضبوط اور خوشحال بنانا ہے تو ہمیں اپنے ہی سادھنوں، اپنی ہی محنت اور قربانیوں پر ہی نربھر رہنا پڑیگا . یہ دکھ کی بات ہے کہ سرکار اور پلاننگ کمیشن نے اس بات کو 'جھک' اور ودیشی پونجی کے خطرے کو 'بے مطلب شک' کہہ کر ٹالنا چاہا ہے .

کھیتی کی سمسیا

سوال یہ اٹھتا ہے کہ اگر ہم تھوڑی دیر کے لئے ودیشی پونجی کے سوال کو نظر انداز بھی کردیں تو کیا اس سے ہماری سمسیا حل ہو جاتی ہے؟ بنیادی سوال ہیں— دیش میں جنتا کے جیون استر کو اونچا اٹھانا، انہیں

लगाने का काम सूबे की सरकारों पर छोड़ दिया गया है. इसका कारन यह है कि केन्द्रीय सरकार का यह इरादा नहीं है कि आमदनी के खास ज़रियों को जिन्हें वह अब तक दबाए हुए है छोड़ दे. बड़े बड़े पूंजीपतियों को पूरी छूट दी गई है क्योंकि सरकार का विचार है कि अगर उनके हाथ में में रुपया न बढ़ा तो सरकार को रुपया उधार लेने में कठिनाई होगी. इसलिये अधिक मुनाफ़ा टैक्स नहीं लगाया जायगा, कम्पनियों के टैक्स में कमी होगी, और दूसरी आसानियां भी सरमायादारों को दी जायेंगी.

सरकार जब नोट छापने की बात करती है तो इस के मानी होते हैं चीज़ों के दामों में बढ़ौती करना. ज़ाहिर है कि यह भार भी जनता के कंधों पर पड़ेगा.

विदेशी पूंजी

इस योजना की सब से ख़तरनाक बात दूसरे मुल्कों से 655 करोड़ रुपए की पूंजी उधार लेना है. हमें अपने तजुर्बे से यह बात अच्छी तरह मालूम है कि विदेशी पूंजी के क्या माने होते हैं. अंगरेज़ी पूंजी आज भी हमारे देश के आर्थिक जीवन को अपनी मुट्ठी में लिये हुए है. पटसन, चाय के बग़ीचे, कोयले की खानें, इंजीनियरिंग उद्योग क़रीब क़रीब पूरी तरह से अंगरेज़ों के हाथ में हैं. बिजली, ट्राम और कपड़ा जैसे उद्योगों में या काफ़ी अंगरेज़ी पूंजी लगी है और या ऐसे कारख़ानों का इन्तज़ाम अंगरेज़ी मैनेजिंग एजन्सियों के हाथ में है. इसके अलावा बहुत सी ऐसी नई नई कम्पनियां खुलती जा रही हैं जिनमें अंगरेज़ और हिन्दुस्तानी पूंजीपतियों की मिली जुली पूंजी लगी है. नाम के लिये इन कम्पनियों का उद्देश्य है देश में नये उद्योग धन्धे क़ायम करना. लेकिन यह कम्पनियां विदेशी चीज़ों को ही देशी नाम देकर बेचती हैं. बिरला की हिन्दुस्तान मोटर ख़ुद उन्हीं के कहने के मुताबिक़ सिर्फ़ 60 फ़ी सदी हिन्दुस्तानी है. यही बात हवाई जहाज़ और जहाज़ों के बारे में कही जा सकती है.

विदेशी पूंजी के ज़रिये हर साल देश से करोड़ों रुपया बाहर चला जाता है. पंडित जवाहरलाल नेहरू की सदारत में राष्ट्रीय प्लानिंग कमेटी ने (1932-42) में इस बारे में काफ़ी सोच विचार किया था और यह फ़ैसला किया था कि जहां विदेशी पूंजी लगे वहां आधे से ज़ियादा हिस्सा हिन्दुस्तानियों का होना चाहिये और यह शर्त होनी चाहिये कि हिन्दुस्तानियों को सब तकनीकी काम सिखाए जायं.

होना तो यह चाहिये था कि विदेशी पूंजी का बिलकुल सहारा न लिया जाय, लेकिन इस प्लान में इन शर्तों का भी कहीं ज़िक्र नहीं है जो ख़ुद पंडित जवाहरलाल नेहरू के

لگانے کا کام صوبے کی سرکاروں پر چھوڑ دیا گیا ہے ۔ اس کا کارن یہ ہے کہ کیندریہ سرکار کا یہ ارادہ نہیں ہے کہ آمدنی کے خاص ذریعوں کو، جنہیں وہ اب تک دبائے ہوئے ہے، چھوڑ دے ۔ بڑے بڑے پونجی پتیوں کو پوری چھوٹ دی گئی ہے کیونکہ سرکار کا وچار ہے کہ اگر ان کے ہاتھ میں روپیہ نہ بڑھا تو سرکار کو روپیہ اُدھار لینے میں کٹھنائی ہوگی ۔ اس لئے ادھک منافع ٹیکس نہیں لگایا جائیگا، کمپنیوں کے ٹیکس میں کمی ہوگی، اور دوسری آسانیاں بھی سرمایہداروں کو دی جائینگی ۔

سرکار جب نوٹ چھاپنے کی بات کرتی ہے تو اس کے معنی ہوتے ہیں چیزوں کے داموں میں بڑھوتی کرنا ۔ ظاہر ہے کہ یہ بھار بھی جنتا کے کندھوں پر ہی پڑیگا ۔

ودیشی پونجی

اس یوجنا کی سب سے خطرناک بات دوسرے ملکوں سے 655 کروڑ روپئے کی پونجی اُدھار لینا ہے ۔ ہمیں اپنے تجربے سے یہ بات اچھی طرح معلوم ہے کہ ودیشی پونجی کے کیا معنی ہوتے ہیں. انگریزی پونجی آج بھی ہمارے دیش کے آرتھک جیون کو اپنی مٹھی میں لئے ہوئے ہے ۔ پٹسن، چائے کے باغیچے، کوئلے کی کھانیں، انجینیرنگ ادیوگ قریب قریب پوری طرح سے انگریزوں کے ہاتھ میں ہیں ۔ بجلی، ترام اور کپڑا جیسے ادیوگوں میں یا کافی انگریزی پونجی لگی ہے اور یا ایسے کارخانوں کا انتظام انگریزی مینیجنگ ایجنسیوں کے ہاتھ میں ہے ۔ اس کے علاوہ بہت سی ایسی نئی نئی کمپنیاں کھلتی جارہی ہیں جن میں انگریز اور ہندستانی پونجی پتیوں کی ملی جلی پونجی لگی ہے ۔ نام کے لئے ان کمپنیوں کا مقصد ہے دیش میں نئے ادیوگ دھندے قائم کرنا ۔ لیکن یہ کمپنیاں ودیشی چیزوں کو ہی دیشی نام دے کر بیچتی ہیں ۔ برلا کی ہندستان موٹر خود انہیں کے کہنے کے مطابق صرف 60 فیصدی ہندستانی ہے ۔ یہی بات ہوائی جہاز اور جہازوں کے بارے میں کہی جاسکتی ہے ۔

ودیشی پونجی کے ذریعے ہر سال دیش سے کروڑں روپیہ باہر چلا جاتا ہے ۔ پنڈت جواہر لال نہرو کی صدارت میں راشٹریہ پلاننگ کمیٹی نے (1932-42) میں اس بارے میں کافی سوچ وچار کیا تھا اور یہ فیصلہ کیا تھا کہ جہاں ودیشی پونجی لگے وہاں آدھے سے زیادہ حصہ ہندستانیوں کا ہونا چاہئے اور یہ شرط ہونی چاہئے کہ ہندستانیوں کو سب تکنیکی کام سکھائے جائیں ۔

ہونا تو یہ چاہئے تھا کہ ودیشی پونجی کا بالکل سہارا نہ لیا جائے، لیکن اس پلان میں ان شرطوں کا بھی کہیں ذکر نہیں ہے جو خود پنڈت جواہر لال نہرو کے

भारत सरकार की पंचसाला योजना

(डाक्टर सतीशचन्द्र)

भारत सरकार की पंचसाला योजना की पिछले दो तीन साल से देश में काफ़ी चरचा हुई है. अब सरकार ने योजना का आखिरी खाका तैयार कर लिया है. अगरचे यह आखरी खाका पुरानी योजना से बहुत अलग नहीं है फिर भी सरकार का दावा है कि जितनी आलोचना जायज़ थी उसको नज़र में रख कर पुरानी योजना में तबदीली की गई है.

नये प्लान के मुताबिक़ कुल खर्चा 1493 करोड़ से बढ़कर 2069 करोड़, यानी पहले से 567 करोड़ ज़ियादा हो गया है. खर्चे का मोटा मोटा ब्योरा नीचे दिया जाता है. नीचे के टेबिल में लाख की रक़म छोड़ दी गई है.

		पुरानी योजना (करोड़)	नया प्लान (करोड़)
1.	खेती बारी और कम्युनिटी प्रोजेक्ट्स	191	361
2.	सिंचाई और बिजली	440	561
3.	यातायात	388	497
4.	उद्योग धन्दे	100	173
5.	समाज सेवा	333	476
6.	बाक़ी चीज़ें	28	...
		1493	2068

इस तरह हम देखते हैं कि खर्च खेती बारी, कम्युनिटी प्रोजेक्ट्स, सिंचाई, बिजली, यातायात और उद्योग धन्दों के ऊपर बढ़ा दिया गया है.

सवाल यह उठता है कि 2069 करोड़ रुपए की रक़म सरकार के हाथ में आएगी कहां से ? प्लान में यह सवाल सबसे बाद में उठाया गया है. ग़ौर से देखा जाय तो मालूम होगा कि यह प्लान का वह हिस्सा है जिसके बग़ैर प्लान केवल काग़ज़ी प्लान बन कर रह जायगा. जनता के लिये भी यह सवाल काफ़ी अहम है. सरकार का विचार है कि टैक्सों की शकल में 738 करोड़ रुपया वसूल किया जाय और 520 करोड़ रुपया जनता से उधार लिया जाय. 156 करोड़ विदेशी मदद सरकार को मिल चुकी है. 655 करोड़ रुपए की रक़म विदेशों से और ली जायगी. बाक़ी नये टैक्स लगा कर हासिल की जायगी और या नोट छाप कर पूरी की जायगी.

बिक्री टैक्स, विकास टैक्स, पानी टैक्स वग़ैरा वग़ैरा खास टैक्स लगाए जायंगे. इसके अलावा नये नये टैक्स

بھارت سرکار کی پنچ سالہ یوجنا

(ڈاکٹر ستیش چندر)

بھارت سرکار کی پنچ سالہ یوجنا کی پچھلے دو تین سال سے دیش میں کافی چرچا ہوئی ہے ۔ اب سرکار نے یوجنا کا آخری خاکہ تیار کر لیا ہے ۔ اگرچہ یہ آخری خاکہ پرانی یوجنا سے بہت الگ نہیں ہے پھر بھی سرکار کا دعویٰ ہے کہ جتنی آلوچنا جائز تھی اُس کو نظر میں رکھ کر پرانی یوجنا میں تبدیلی کی گئی ہے ۔

نئے پلان کے مطابق کل خرچہ 1493 کروڑ سے بڑھ کر 2069 کروڑ یعنی پہلے سے 567 کروڑ زیادہ ہوگیا ہے. خرچے کا موٹا موٹا بیورا نیچے دیا جاتا ہے ۔ نیچے کے ٹیبل میں لاکھ کی رقم چھوڑ دی گئی ہے ۔

		پرانی یوجنا (کروڑ)	نیا پلان (کروڑ)
1.	کھیتی باری اور کمیونٹی پروجیکٹس	191	361
2.	سینچائی اور بجلی	440	561
3.	یاتایات	388	497
4.	اُدیوگ دھندے	100	173
5.	سماج سیوا	333	476
6.	باقی چیزیں	28	...
		1493	2868

اِس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ خرچ کھیتی باری' کمیونٹی پروجیکٹس' سینچائی' بجلی' یاتایات اور اُدیوگ دھندوں کے اوپر بڑھا دیا گیا ہے ۔

سوال یہ اُٹھتا ہے کہ 2069 کروڑ روپئے کی رقم سرکار کے ہاتھ میں آئیگی کہاں سے؟ پلان میں یہ سوال سب سے بعد میں اُٹھایا گیا ہے ۔ غور سے دیکھا جائے تو معلوم ہوگا کہ یہ پلان کا وہ حصہ ہے جس کے بغیر پلان کیول کاغذی پلان بن کر رہ جائیگا ۔ جنتا کے لئے بھی یہ سوال کافی اہم ہے ۔ سرکار کا وچار ہے کہ ٹیکسوں کی شکل میں 738 کروڑ روپیہ وصول کیا جائے اور 520 کروڑ روپیہ جنتا سے اُدھار لیا جائے ۔ 156 کروڑ ودیشی مدد سرکار کو مل چکی ہے ۔ 655 کروڑ روپئے کی رقم ودیشوں سے اور لی جائیگی ۔ باقی نئے ٹیکس لگا کر حاصل کی جائے گی اور یا نوٹ چھاپ کر پوری کی جائے گی ۔

بکری ٹیکس' وکاس ٹیکس' پانی ٹیکس وغیرہ وغیرہ خاص ٹیکس لگائے جائینگے ۔ اس کے علاوہ نئے نئے ٹیکس

इसकी तू फ़िकर न कर. इस बार मैं जेल नहीं जा सकूंगा. खान मराब मार कर मर जाय उसे एक गवाह नहीं मिलेगा. तू यह बता कि लोकमन ने मुझे जेल करादी तो क्या अब वह मेरा भाई नहीं रहा ? तो क्या उसकी औरत मेरी भौजाई नहीं रही ? और क्या उसका लड़का मेरा भतीजा नहीं रहा ?

लतीफ़न तिनक कर बोली—तुम मर्द भी अजीब होते हो ? जाने तुम्हारी नाक मोम की है या काहे की. मेरे लिये तो मुन्नू एक दिन मट्ठा ले कर आया था मैंने साफ़ इनकार कर दिया और मुन्नू से कहा—कह देना अपनी अम्मा से कि मैं यह उनके देवर के जेल भिजवाने की खुशी का तबर्रुक नहीं लेना चाहती.

अरी भली मानुस, यह तूने क्या किया ! तूने तो मुग़ल ख़ानदान की इज़्ज़त को बट्टा लगा दिया. कहा सुनी मेरी और लोकमन की हुई थी और किन भाई भाई में आपस में झगड़ा नहीं होता ? तुझसे तो न लड़ने लोकमन आया था और न लोकमन की औरत. और बच्चा ! उस प्यारे बच्चे को तुझसे पुचकारा भी न गया ! बहुत करती तो लोकमन से न बात करती. लोकमन से तो तू वैसे भी परदा करती है पर मेरी भौजाई और भतीजे ने क्या बिगाड़ा था ? भाई भाई लड़े तो क्या तू दुनिया भर को दुश्मन मान लेगी ?

लतीफ़न की आंखों से टप टप आंसू गिरने लगे.

—भगवानदीन

اُس کی تو فکر نہ کر ۔ اِس بار میں جیل نہیں جا سکونگا ۔ خاں مغو سار کر مر جائے اُسے ایک گواہ نہیں ملیگا۔ تو یہ بتا کہ لوک من نے مجھے جیل کرادی تو کیا اب وہ میرا بھائی نہیں رہا؟ تو کیا اُس کی عورت میری بھوجائی نہیں رہی ؟ اور کیا اُس کا لڑکا میرا بھتیجا نہیں رہا ؟

لطیفاً تنک کر بولی—تم مرد بھی عجیب ہوتے ہو ؟ جانے تمہاری ناک موم کی ہے یا کاہے کی ۔ میرے لئے تو منو ایک دن مٹھا لیکر آیا تھا' میں نے صاف اِنکار کر دیا اور منو سے کہا—کہ دینا اپنی اماں سے کہ میں یہ اُن کے دیور کے جیل بھجوانے کی خوشی کا تبرک نہیں لینا چاہتی ۔

اری بھلی مانس' یہ تونے کیا کیا ! تونے تو مغل خاندان کی عزت کو بٹا لگا دیا ۔ کہا سنی میری اور لوک من کی ہوئی تھی اور کن بھائی بھائی میں آپس میں جھگڑا نہیں ہوتا؟ تجھ سے تو نہ لڑنے لوک من آیا تھا اور نہ لوک من کی عورت ۔ اور بچہ ! اُس پیارے بچے کو تجھ سے پچکارا بھی نہیں گیا ! بہت کرتی تو لوک من سے نہ بات کرتی ۔ لوک من سے تو تو ویسے ہی پردہ کرتی ہے پر میری بھوجائی اور بھتیجے نے کیا بگاڑا تھا ؟ بھائی بھائی لڑے تو کیا دنیا بھر کو دشمن مان لیگی !

لطیفاً کی آنکھوں سے ٹپ ٹپ آنسو گرنے لگے۔

—بھگوان دین

"ईट चूने की चुनाई के पहले हृदय मंदिर की चुनाई बहुत ज़रूरी है. अगर यह हो जाय तो और सब तो हुआ ही है"

—महात्मा गांधी

"اینٹ چونے کی چنائی کے پہلے ہردے مندر کی چنائی بہت ضروری ہے ۔ اگر یہ ہو جائے تو سب اور تو ہوا ہی ہے۔"

—مہاتما گاندھی

रहमान, ज़बान संभाल कर बात कर, रुपए लिये हैं ढाई आने सूद पर. मैं आज ही साढ़े सात आने पहुँचा दूँगा.

ज़बान मैं क्या संभालूं, ज़बान तू संभाल. बेईमान कहीं का, झूट बोलता है, ढाई रुपए को ढाई आना कहता है.

बेईमान तू !

इसके जवाब में रहमान के मुंह से लोकमन को मां की गाली निकली. उसी वक़्त जेल से छूट कर अहमद अली आ पहुंचा. रहमान की गाली उसके कान में पड़ चुकी थी. रहमान दायें हाथ में एक छोटा सा डंडा लिये हुए था और बायें हाथ से लोकमन का बायां हाथ पकड़े हुए था. वह डंडा उठा कर जमाने को ही था कि अहमद अली ने रहमान ख़ां के हाथ से डंडा खींच कर एक दम आवाज़ दी- ख़ान, लोकमन का हाथ छोड़.

मोहल्ले के लोग तो यह समझे कि अब अहमद अली ने लिया लोकमन से बदला. अब मुन्नू मज़ा चखेगें, अहमद अली को जेल भेजवाने का. इतने में अहमद अली का डंडा पड़ा ख़ान के हाथ पर. वह लोकमन का हाथ छोड़ अहमद अली की तरफ़ लपका. जब तक अहमद अली ने उसकी खोपड़ी पर दो और कस के जमाए. अब ख़ान को भागते ही बना. इधर मोहल्ले वाले आ कर अहमद अली से बोले—

तुमने फिर जेल जाने की तैयारी कर ली. लोकमन से तुम्हें इतनी मोहब्बत थी तो न कुछ बात के लिये तुमने इसका हाथ क्यों तोड़ा ?

तुम भी अजीब आदमी हो. वह रोज़ी का सवाल था, पेट का सवाल था, उसूल का सवाल था.

और अब जिसने तुम्हें जेल भिजवाया था उसकी ख़ातिर तुम में इतना प्यार कहां से जाग आया ?

तुम लोगों में शर्म नहीं है तो मैंने तो अपनी शर्म नहीं बेच खाई. लोकमन की मां मेरी चाची होती है कि नहीं, और तुम में से भी किसी की ताई है, किसी की बुआ है और किसी की कुछ. उस कमबख़्त ख़ान ने जब इसको मां की गाली दी तो मेरी चाची को गाली दी कि नहीं, और तुम्हारी ताई और बुआ को गाली दी कि नहीं. यह लोकमन का सवाल नहीं है, मोहल्ले की इज़्ज़त का सवाल है. अगर तुम आज इस तरह मोहल्ले की इज़्ज़त लुटवा दोगे तो कल फ़िरंगियों की जूतियां खाते फिरोगे.

सब मोहल्ले वाले यह कहते हुए कि अहमद अली बात तो पते की कहता है, अपने अपने घर चल दिये.

अहमद अली जैसे ही घर पहुँचा लतीफ़न ने ताना दिया—जिसने तुम्हें जेल भिजवाया अब उसकी ख़ातिर फिर जेल जाने की तैयारी कर ली !

رحمان، زبان سنبھال کر بات کر، روپئے لئے ہیں ڈھائی آنے سود پر. میں آج ہی ساڑھے سات آنے پہونچا دونگا .

زبان میں کیا سنبھالوں، زبان تو سنبھال . بےایمان کہیں کا، جھوٹ بولتا ہے، ڈھائی روپئے کو ڈھائی آنہ کہتا ہے .

بےایمان تو !

اس کے جواب میں رحمان کے منھ سے لوک من کو ماں کی گالی نکلی . اسی وقت جیل سے چھٹ کر احمد علی آ پہونچا. رحمان کی گالی اس کے کان میں پڑ چکی تھی. رحمان دائیں ہاتھ میں ایک چھوٹا سا ڈنڈا لئے ہوئے تھا اور بائیں ہاتھ سے لوک من کا بایاں ہاتھ پکڑے ہوئے تھا . وہ ڈنڈا اٹھا کر جمانے کو ہی تھا کہ احمد علی نے رحمان خاں کے ہاتھ سے ڈنڈا کھینچ کر ایکدم آواز دی—خان، لوک من کا ہاتھ چھوڑ .

محلے کے لوگ تو یہ سمجھے کہ اب احمد علی نے لیا لوک من سے بدلا . اب منو مزا چکھینگے، احمد علی کو جیل بھجوانے کا . اتنے میں احمد علی کا ڈنڈا پڑا خان کے ہاتھ پر . وہ لوک من کا ہاتھ چھوڑ احمد علی کی طرف لپکا . جب تک احمد علی نے اس کی کھوپڑی پر دو اور کس کے جمائے . اب خان کو بھاگتے ہی بنا . ادھر محلے والے آکر احمد علی سے بولے .

تم نے پھر جیل جانے کی تیاری کرلی . لوک من سے تمھیں اتنی محبت تھی تو نہ کچھ بات کے لئے تم نے اس کا ہاتھ کیوں توڑا ؟

تم بھی عجیب آدمی ہو . وہ روزی کا سوال تھا، پیٹ کا سوال تھا، اصول کا سوال تھا .

اور اب جس نے تمہیں جیل بھجوایا تھا اس کی خاطر تم میں اتنا پیار کہاں سے جاگ آیا ؟

تم لوگوں میں شرم نہیں ہے تو میں نے تو اپنی شرم نہیں بیچ کھائی . لوک من کی ماں میری چاچی ہوتی ہے کہ نہیں، اور تم میں سے بھی کسی کی تائی ہے، کسی کی بوا ہے اور کسی کی کچھ . اس کمبخت خاں نے جب اس کو ماں کی گالی دی تو میری چاچی کو گالی دی کہ نہیں، اور تمہاری تائی اور بوا کو گالی دی کہ نہیں . یہ لوک من کا سوال نہیں ہے، محلے کی عزت کا سوال ہے . اگر تم آج اس طرح محلے کی عزت لٹوا دوگے تو کل فرنگیوں کی جوتیاں کھاتے پھروگے .

سب محلے والے یہ کہتے ہوئے کہ احمد علی بات تو پتے کی کہتا ہے، اپنے اپنے گھر چل دئے .

احمد علی جیسے ہی گھر پہونچا لطیفن نے طعنہ دیا—جس نے تمہیں جیل بھجوایا اب اس کی خاطر پھر جیل جانے کی تیاری کرلی !

सलाह ले लो. पर मेरे घर में तो देवी मौजूद थी और मैंने उससे सलाह न ली.

अच्छा, अब दुख न मानो. मैं मट्ठा तो अभी मुन्नू के हाथ लतीफन के यहां भेज रही हूँ और आटे दाल सब का प्रबन्ध कर दूँगी, तुम बे-फ़िकर रहो.

× × ×

मुन्नू बेटा क्या लाए हो ?

चाची, मट्ठा लाया हूँ.

किसने भेजा है ?

अम्मा ने !

देवर को जेल भिजवाने की ख़ुशी में.

मुन्नू इस व्यंग को कुछ न समझा. बोला—नहीं चाची, अभी अभी निकाला है. आज तो अम्मा ने इसमें से निकाल कर हमें मक्खन भी नहीं दिया.

अच्छा अच्छा ले जा. अपनी अम्मा से कह देना, चाची मट्ठे की भूकी नहीं.

× × ×

अम्मा, चाची ने तो मट्ठा नहीं लिया.

देखा, मुन्नू के दद्दा ! मुझे भी डर था कि वह बन्दी मर जायगी पर मट्ठा न लेगी. मुग़लों का राज चला गया तो क्या, मुग़लों का ख़ून तो नहीं चला गया.

मुन्नू की अम्मा अब क्या होगा ?

फ़िकर न करो, मैं उसका इलाज जानती हूँ. देवर नहीं है तो क्या भूकी मरने दुँगी ?

तो क्या करोगी ?

करूंगी क्या, हाशिम बेग के घर भैंस है और वह मौलवी भी है. उनकी मारफ़त सब चीज़ पहुंचवाऊंगी तब तो इन्कार नहीं करेगी ?

(3)

लोकमन तुमने पच्चीस रुपए उधार लिये थे. न तुमने रुपए लौटा के दिये और न तीन महीने से सूद चुकाया.

रहमान ख़ां, अभी तीन महीने कहां पूरे हुए हैं ?

तुम्हें शर्म नहीं आती, तीन महीने पूरे होने में पांच छै दिन बाक़ी होंगे. तुम दो महीने का अगर पांच रुपए सूद चुका देते तो मैं काहे को मांगने आता.

अरे, तुम यह पांच रुपए कैसे मांग रहे हो ! तुमने तो ढाई आना महीने सूद की बात कही थी, सो तीन महीने के हुए साढ़े सात आने. अब क्या साढ़े सात रुपए लोगे ?

अगर मेरा नाम रहमान ख़ां है तो साढ़े सात लुंगा, साढ़े सात. रुपया लेते वक़्त कैसा भोला बना हुआ था, अब सारी चालाकी आ गई. निकाल साढ़े सात, नहीं तो तेरे सर पर जूते जमाता हूँ.

صلح لے لو' پر میرے گھر میں تو دیوی موجود تھی اور میں نے اُس سے صلح نہ لی ۔

اچھا' اب دکھ نہ مانو ۔ میں مٹھا تو ابھی منّو کے ہاتھ لطیفن کے یہاں بھیج رہی ہوں اور آٹے دال سب کا پربندھ کر دونگی ۔ تم بے فکر رہو ۔

× × ×

منّو بیٹا کیا لائے ہو ؟

چاچی' مٹھا لایا ہوں ۔

کس نے بھیجا ہے ؟

اماں نے !

دیور کو جیل بھجوانے کی خوشی میں ۔

منّو اس ویَنگ کو کچھ نہ سمجھا بولا—نہیں چاچی' ابھی ابھی نکالا ہے ۔ آج تو اماں نے اس میں سے نکال کر ہمیں مکھن بھی نہیں دیا ۔

اچھا اچھا لے جا ۔ اپنی اماں سے کہ دینا چاچی مٹھے کی بھوکی نہیں ۔

× × ×

اماں' چاچی نے تو مٹھا نہیں لیا ۔

دیکھا' منّو کے ددا ! مجھے بھی ڈر تھا کہ وہ بندی مر جائیگی پر مٹھا نہ لیگی ۔ مغلوں کا راج چلا گیا تو کیا' مغلوں کا خون تو نہیں چلا گیا ۔

منّو کی اماں اب کیا ہوگا ؟

فکر نہ کرو' میں اُس کا علاج جانتی ہوں ۔ دیور نہیں ہے تو کیا بھوکی مرنے دونگی !

تو کیا کروگی ؟

کرونگی کیا' ہاشم بیگ کے گھر بھینس ہے اور وہ مولوی بھی ہے ۔ اُس کی معرفت سب چیز پہنچواؤنگی تب تو اِنکار نہیں کریگی ؟

(3)

لوک من' تم نے پچیس روپئے اُدھار لئے تھے ۔ نہ تم نے روپئے لوٹا کے دیئے اور نہ تین مہینے سے سود چکایا ۔

رحمان خاں' ابھی تین مہینے کہاں پورے ہوئے ہوں؟

تمہیں شرم نہیں آتی' تین مہینے پورے ہونے میں پانچ چھ دن باقی ہونگے ۔ تم دو مہینے کا اگر پانچ روپئے سود چکا دیتے تو میں کاہے کو مانگنے آتا ۔

ارے' تم یہ پانچ روپئے کیسے مانگ رہے ہو ! تم نے تو ڈھائی آنہ مہینے سود کی بات کہی تھی سو تین مہینے کے ہوئے ساڑھے سات آنے ۔ اب کیا ساڑھے سات روپئے لوگے ؟

اگر میرا نام رحمان خاں ہے تو ساڑھے سات لونگا. ساڑھے سات ۔ روپیہ لیتے وقت کیسا بھولا بنا ہوا تھا' اب ساری چالاکی آ گئی ۔ نکال ساڑھے سات' نہیں تو تیرے سر پر جوتے جماتا ہوں ۔

लोकमन यह चुनौती सुनकर ताव में आ गया और गाहक का हाथ पकड़ कर बोला—ले तोड़ मेरा हाथ.

अहमद अली इस चुनौती को बर्दाश्त न कर सका. उसने उठाया एक डंडा और मारा लोकमन के हाथ में. लोकमन के चोट तो बड़े ज़ोर की बैठी पर गरम गरम चोट थी गुस्से में भूल गया और अहमद अली से लिपट पड़ा और दोनों में गुत्थम गुत्था होने लगी. दूसरे दूकानदार बचाने के लिये दौड़ पड़े और उनको अलग कर दिया. गाहक पैसा छोड़ चलता बना. दुकानदारों ने क़सूर लोकमन का ही साबित किया. उनकी दलील यह थी कि लोकमन को गाहक से पैसा लिये बग़ैर सौदा नहीं करना चाहिये था. लोकमन इस फ़ैसले से चुप तो हो गया पर अब उसकी चोट ठंडी हो चुकी थी और बुरी तरह दुख देने लगी थी. और जैसे ही उसने चोट पर हाथ रक्खा तो उसे ऐसा मालूम हुआ कि उसकी हड्डी टूट गई है. अब वह कुछ चोट से कुछ हार से, खिसिया कर दुकान बढ़ा कर चल दिया और थाने में रपट लिखा आया. दस दिन के अन्दर डिपटी साहब के यहां से फ़ैसला हो गया. अहमद अली को तीन महीने की जेल हो गई. मुक़द्दमे में सब मिला कर लोकमन के पच्चीस रुपये सात आने ख़र्च हुए पर जीत की ख़ुशी में वह इस पैसे की चोट को को बर्दाश्त कर गया.

(2)

देख री, मुन्नू की मां, जब तक अहमद अली जेल से छुट कर ना आए अहमद अली की औरत लतीफ़न को किसी तरह की तकलीफ़ न होने पाए.

इसमें तुम्हारे कहने की क्या ज़रूरत है, तुम्हारे छोटे भाई की बहू है तो वह मेरे देवर की भी तो औरत है, मेरी देवरानी है. मैं उसे तकलीफ़ क्यों होने दुँगी. पर यह तो बताओ कि तुमने मेरे देवर को जेल भिजवा कर क्या कोई हाथ का ज़ख़्म अच्छा कर लिया. गुस्सा सब को हराम है तुम्हीं को आ जाता और तुम उस पर डंडा चला बैठते और फिर वह थाने में जाता तो क्या तुम्हें न जेल हो जाती. और जब दुकानदारों ने फ़ैसला कर दिया था तब तुम फ़िरंगियों की अदालत में क्यों पहुंच गए.

मुन्नू की मां, बात तो तुम बड़ी अक़्ल की करती हो पर अब तो जो हो गया सो हो गया. अब यह अनहुआ तो नहीं हो सकता और मैं तो बीच में भी मुक़द्दमा वापस ले रहा था पर यह शैतान के बच्चे वकील साहब मुझसे बोले अगर तुम मुक़द्दमा वापस लोगे तो तुम फंस जाओगे. अब तुम्हीं बताओ मैं क्या करता ?

तुम यह करते कि थाने में रपट लिखाने से पहले मुझ से मिल कर जाते तो मैं तुम्हें रपट ही न लिखाने देती.

हां, मुन्नू की मां, यह तो भूल हुई. मैंने कान पकड़े. संतों का कहना है कि कोई न हो तो अपनी पगड़ी से ही

لوک من یہ چنوتی سن کر تاؤ میں آگیا اور گاہک کا ہاتھ پکڑ کر بولا—لے توڑ میرا ہاتھ ۔

احمد علی اس چنوتی کو برداشت نہ کر سکا ۔ اس نے اٹھایا ایک ڈنڈا اور مارا لوک من کے ہاتھ میں ۔ لوک من کے چوٹ تو بڑے زور کی بیٹھی پر گرم گرم چوٹ تھی غصہ میں بھول گیا اور احمد علی سے لپٹ پڑا اور دونوں میں گتھم گتھا ہونے لگی۔ دوسرے دوکان دار بچانے کے لئے دوڑ پڑے اور ان کو الگ کر دیا ۔ گاہک پیسہ چھوڑ چلتا بنا ۔ دوکان داروں نے قصور لوک من کا ہی ثابت کیا ۔ ان کی دلیل یہ تھی کہ لوک من کو گاہک سے پیسہ لئے بغیر سودا نہیں کرنا چاہئے تھا ۔ لوک من اس فیصلہ سے چپ تو ہوگیا۔ پر جب اسکی چوٹ ٹھنڈی ہو چکی تھی اور بری طرح دکھ دینے لگی تھی اور جیسے ہی اس نے چوٹ پر ہاتھ رکھا تو اسے ایسا معلوم ہوا کہ اسکی ہڈی ٹوٹ گئی ہے ۔ اب وہ کچھ چوٹ سے' کچھ ہار سے' ۔کھسیا کر دوکان بڑھا کر چل دیا اور تھانے میں رپٹ لکھا آیا ۔ دس دن کے اندر ڈپٹی صاحب کے یہاں سے فیصلہ ہوگیا ۔ احمد علی کو تین مہینے کی جیل ہوگئی ۔ مقدمے میں سب ملا کر لوک من کے پچیس روپے سات آنے خرچ ہوئے' پر جیت کی خوشی میں وہ اس پیسے کی چوٹ کو برداشت کر گیا ۔

(2)

دیکھ ری' منو کی ماں' جب تک احمد علی جیل سے چھٹ کر نہ آئے احمد علی کی عورت لطیفن کو کسی طرح کی تکلیف نہ ہونے پائے ۔

اس میں تمہارے کہنے کی کیا ضرورت ہے' تمہارے چھوٹے بھائی کی بہو ہے تو وہ میرے دیور کی بھی تو عورت ہے۔ میری دیورانی ہے۔ میں اسے تکلیف کیوں ہونے دونگی۔ پر یہ تو بتاؤ کہ تم نے میرے دیور کو جیل بھجوا کر کیا کوئی ہاتھ کا زخم اچھا کرلیا۔ غصہ سب کو حرام ہے۔ تمہیں کو آجاتا اور تم اس پر ڈنڈا چلا بیٹھتے اور پھر وہ تھانے میں جاتا تو کیا تمہیں نہ جیل ہو جاتی ۔ اور جب دوکانداروں نے فیصلہ کردیا تھا تب تم فرنگیوں کی عدالت میں کیوں پہونچ گئے ۔

منو کی ماں' بات تو تم بڑی عقل کی کرتی ہو پر اب تو جو ہوگیا سو ہوگیا ۔ اب یہ انہوا تو نہیں ہوسکتا اور میں تو بیچ میں بھی مقدمہ واپس لے رہا تھا پر یہ شیطان کے بچے وکیل صاحب مجھ سے بولے' اگر تم مقدمہ واپس لوگے تو تم پھنس جاؤ گے ۔ اب تمہیں بتاؤ میں کیا کرتا ؟

تم یہ کرتے کہ تھانے میں رپٹ لکھانے سے پہلے مجھ سے مل کر جاتے تو میں تمہیں رپٹ ہی نہ لکھانے دیتی۔

ہاں' منو کی ماں' یہ تو بھول ہوئی ۔ میں نے کان پکڑے ۔ سنتوں کا کہنا ہے کہ کوئی نہ ہو تو اپنی پگڑی سے ہی

नकली बड़ी चालाक. नजर के तीर फेंक कर चली गई.

थोड़ी देर में दोनों ने मिल कर खरबूजे खरीदे और बांट बांट कर खाए. चार बज गए और कोई गाहक दोनों में से किसी की दुकान पर न आया. आध घंटे के बाद एक गाहक अहमद अली के पास आया. रिवाज के मुताबिक़ अहमद अली ने बैठते ही उससे एक पैसा मांगा. उसने पैसा दे दिया और अब गाहक दुकान पर से थान उठा उठा कर देखने लगा.

वह पैसा इसलिये दिया जाता था कि जब तक गाहक उस पैसे को वापस न ले ले तब तक दूसरा दुकानदार उस गाहक को अपने पास बुलाने का हक़दार नहीं.

अहमद अली से वह सौदा न पटा. गाहक उठ खड़ा हुआ और अपना पैसा वापस मांगने लगा. वह देने में टाल मटोल कर रहा था और गाहक को छोड़ना नहीं चाहता था. गाहक अब बिलकुल ऊब गया था और वह उससे लेना नहीं चाहता था. जब अहमद अली ने पैसा देने में आनाकानी की तो गाहक पैसा लिये बग़ैर लोकमन के फड़ के सामने आ गया और बैठ कर उस दुकान के थान देखने लगा. इस पर अहमद अली बिगड़ बैठा और लोकमन से बोला—

भाई लोकमन, यह गाहक मेरा है, तुम इसे थान नहीं दिखा सकते, इसे मेरे पास भेजो.

लोकमन बोला—यह खूब, तुमने कोई गाहक मोल खरीद लिया है. मैंने तो उसे बुलाया नहीं. वह अपने आप आया, बैठा और देखने लगा. मैं क्यों न थान दिखाऊं?

अहमद अली बोला—हां, मैंने गाहक खरीद लिया है. उसका पैसा अभी मेरे पास है. तुमने अगर थान का मोल तोल किया तो अच्छा नहीं होगा. मेरा गाहक मेरे पास भेज दो.

लोकमन बोला—तुम अच्छे आए कहीं के नवाब, जो मुझ पर हुक्म चलाते हो. गाहक का एक पैसा नहीं देते और कहते हो गाहक मेरा है. अब मेरी दुकान के सामने आ गया, अब मेरा है.

देखो लोकमन, बात बढ़कर न करो. गाहक मेरा है, तुम्हारा नहीं.

अबे जा, देख लिया गाहक वाले. देखें तो तू मेरी दुकान के सामने से गाहक ले जाय.

होश की दवा कर लोकमन, होश की दवा. जो तूने गाहक से सौदा पटाया तो तेरी गर्दन तोड़ दूंगा.

तू तड़ाक कर के तो बोल नहीं, हिम्मत हो तो आ जा. हो जाने दे दो दो हाथ.

अहमद अली बोला—अच्छा तू पकड़ तो गाहक का हाथ, अगर तेरा हाथ ही न तोड़ दूं तो मेरा नाम भी अहमद नहीं.

نکلی بڑی چالاک. نظر کے تیر پھینک کر چلی گئی.

تھوڑی دیر میں دونوں نے مل کر خربوزے خریدے اور بانٹ بانٹ کر کھائے. چار بج گئے اور کوئی گاہک دونوں میں سے کسی کی دکان پر نہ آیا. آدھ گھنٹے کے بعد ایک گاہک احمد علی کے پاس آیا. رواج کے مطابق احمد علی نے بیٹھتے ہی اُس سے ایک پیسہ مانگا. اس نے پیسہ دے دیا اور گاہک دکان پر سے تھان اُٹھا اُٹھا کر دیکھنے لگا.

یہ پیسہ اس لئے دیا جاتا تھا کہ جب تک گاہک اُس پیسے کو واپس نہ لے لے تب تک دوسرا دوکان دار اُس گاہک کو اپنے پاس بلانے کا حقدار نہیں.

احمد علی سے وہ سودا نہ پٹا. گاہک اُٹھ کھڑا ہوا اور اپنا پیسہ واپس مانگنے لگا. وہ دینے میں ٹال مٹول کر رہا تھا اور گاہک کو چھوڑنا نہیں چاہتا تھا. گاہک اب بالکل اُوب گیا تھا اور وہ اُس سے لینا نہیں چاہتا تھا. جب احمد علی نے پیسہ دینے میں آنا کانی کی تو گاہک پیسہ لئے بغیر لوک من کے پھڑ کے سامنے آگیا اور بیٹھ کر اُس دوکان کے تھان دیکھنے لگا. اس پر احمد علی بگڑ بیٹھا اور لوک من سے بولا—

بھائی لوک من، یہ گاہک میرا ہے، تم اسے تھان نہیں دکھا سکتے، اِسے میرے پاس بھیجو.

لوک مان بولا—یہ خوب، تم نے کوئی گاہک مول خرید لیا ہے. میں نے تو اُسے بلایا نہیں. وہ اپنے آپ آیا، بیٹھا اور دیکھنے لگا. میں کیوں نہ تھان دکھاؤں؟

احمد علی بولا—ہاں، میں نے گاہک خرید لیا ہے. اس کا پیسہ ابھی میرے پاس ہے. تم نے اگر تھان کا مول تول کیا تو اچھا نہیں ہوگا. میرا گاہک میرے پاس بھیج دو.

لوک من بولا—تم اچھے آئے کہیں کے نواب، جو مجھ پر حکم چلاتے ہو. گاہک کا ایک پیسہ نہیں دیتے اور کہتے ہو گاہک میرا ہے. اب میری دکان کے سامنے آگیا، اب میرا ہے.

دیکھو لوک من، بات بڑھ کر نہ کرو. گاہک میرا ہے، تمہارا نہیں.

ابے جا، دیکھ لیا گاہک والے. دیکھیں تو تو میری دکان کے سامنے سے گاہک لے جائے.

ہوش کی دوا کر لوک من، ہوش کی دوا. جو تو نے گاہک سے سودا پٹایا تو تیری گردن توڑ دونگا.

تو تڑاک کر کے تو بول نہیں، ہمت ہو تو آ جا. ہو جانے دے دو دو ہاتھ.

احمد علی بولا—اچھا تو پکڑ تو گاہک کا ہاتھ، اگر تیرا ہاتھ ہی نہ توڑ دوں تو میرا نام بھی احمد نہیں.

आसानी से सुलझा देती थी. गाहकों को लेकर भी कभी कभी झगड़ा भी हो जाता था. लोगों में खूब दम था. ब्यालीस बरस की गुलामी का इन लोगों पर बहुत ही कम असर हुआ था जो सन सत्तावन से पहले की औलाद थे और जिन्होंने अपना राज अपनी आंखों देखा था. ऐसे लोग ज़रा सी भी बेइज्ज़ती बर्दाश्त नहीं कर सकते थे.

हिन्दू मुसलमान खूब मिल कर रहते थे. एक पेशा करने वाले हिन्दू मुसलमान तो ऐसे मिलकर रहते थे मानो मां जाये भाई हों. हर एक दूसरे के ख़ातिर हर वक्त खून पसीना बहाने के लिये तैयार रहता था. गांव और शहरों की बसावट में हिन्दू मुसलमानों का कोई ख़याल नहीं रक्खा जाता था. ब्राह्मन और मुसलमान एक ही मकान में रह लेते थे. कभी कोई दिक्क़त न होती थी.

पेंठ लगी हुई थी. अतरौली क़स्बे के नवादा मोहल्ले के दो बजाज पास पास बैठे बातें कर रहे थे. एक का नाम था अहमद अली और दूसरे का नाम था लोकमन. लोकमन की उमर 37 की रही होगी और अहमद अली तीस बत्तीस का था. अहमद अली कह रहा था—

भाई लोकमन, आज पेंठ का रंग ढीला रहता मालूम होता है.

लोकमन बोला—पेंठ का पूरा रंग तीन बजे के बाद जमेगा, अभी तो एक ही बजा है.

हमेशा तो ऐसा नहीं होता था !

आजकल खेतों की कटाई हो रही है कटाई, गाहक तीन बजे से आने शुरू होंगे. पांच बजे इसी पेंठ में इतनी भीड़ होगी कि मियां अहमद अली तुम से गाहक संभाले न संभलेंगे.

इतने में अहमद अली की नज़र एक औरत पर पड़ी जो बीस-पच्चीस की रही होगी, पर थी बड़े गठीले जिस्म की. वह इधर उधर सब दुकानों पर नज़र डालती आगे बढ़ती आ रही थी. अहमद अली बोला—भाई लोकमन, इसकी आंखें बड़ी चुटीली हैं.

लोकमन बोला—आंखें क्या हैं नींबू की फांकें हैं.

इसकी नाक तो देखो कैसी सुडौल है. और देखो, इसने अपनी चोली कितनी कस कर बांध रक्खी है.

देखो, अब वह पास आ गई, हमारी बातें सुन लेगी. गाहक को अगर यह मालूम हो जाय कि हमारी नज़र ख़राब है तो फिर वह दुकान पर भी नहीं फटकेगा.

हां, बात तो तुम ठीक कहते हो पर क्या करें. इसकी शक्ल ही ऐसी है कि बात किये बग़ैर रुका न जाय.

वह औरत दोनों तरफ़ निगाह डालती हुई निकल गई. किसी दुकान पर सौदे के लिये न टिकी. अब अहमद अली और लोकमन दोनों ठहाका मार कर हंसे और बोले—यह

آسانی سے سلجھا دیتی تھی۔ گاہکوں کو لے کر بھی کبھی کبھی جھگڑا بھی ہو جاتا تھا۔ لوگوں میں خوب دم تھا۔ بیالیس برس کی غلامی کا اُن لوگوں پر بہت ہی کم اثر ہوا تھا جو سن ستاون سے پہلے کی اولاد تھے اور جنھوں نے اپنا راج اپنی آنکھوں دیکھا تھا۔ ایسے لوگ ذرا سی بھی بے عزتی برداشت نہیں کر سکتے تھے۔

ہندو مسلمان خوب مل کر رہتے تھے۔ ایک پیشہ کرنے والے ہندو مسلمان تو ایسے مل کر رہتے تھے مانو ماں جائے بھائی ہوں۔ ہر ایک دوسرے کے خاطر ہر وقت خون پسینہ بہانے کے لئے تیار رہتا تھا۔ گاؤں اور شہروں کی بساوٹ میں ہندو مسلمانوں کا کوئی خیال نہیں رکھا جاتا تھا۔ براہمن اور مسلمان ایک ہی مکان میں رہ لیتے تھے۔ کبھی کوئی دقت نہ ہوتی تھی۔

پینٹھ لگی ہوئی تھی۔ اترولی قصبہ کے نوادہ محلے کے دو بجاج پاس پاس بیٹھے باتیں کر رہے تھے۔ ایک کا نام تھا احمد علی اور دوسرے کا نام تھا لوک من۔ لوک من کی عمر 37 کی رہی ہوگی اور احمد علی تیس بتیس کا تھا۔ احمد علی کہہ رہا تھا—

بھائی لوک من، آج پینٹھ کا رنگ ڈھیلا رہتا معلوم ہوتا ہے۔

لوک من بولا—پینٹھ کا پورا رنگ تین بجے کے بعد جمے گا، ابھی تو ایک ہی بجا ہے۔

ہمیشہ تو ایسا نہیں ہوتا تھا !

آج کل کھیتوں کی کٹائی ہو رہی ہے کٹائی، گاہک تین بجے سے آنے شروع ہونگے۔ پانچ بجے اسی پینٹھ میں اتنی بھیڑ ہوگی کہ میاں احمد علی تم سے گاہک سنبھالے نہ سنبھلیں گے۔

اتنے میں احمد علی کی نظر ایک عورت پر پڑی جو بیس پچیس کی رہی ہوگی، پر تھی بڑے گٹھیلے جسم کی۔ وہ اِدھر اُدھر سب دوکانوں پر نظر ڈالتی آگے بڑھتی آ رہی تھی۔ احمد علی بولا— بھائی لوک من، اِس کی آنکھیں بڑی چٹیلی ہیں۔

لوک من بولا—آنکھیں کیا ہیں نیبو کی پھانکیں ہیں۔

اِسکی ناک تو دیکھو کیسی سڈول ہے۔ اور دیکھو اِس نے اپنی چولی کتنی کس کر باندھ رکھی ہے۔

دیکھو، اب وہ پاس آ گئی، ہماری باتیں سن لے گی۔ گاہک کو اگر یہ معلوم ہو جائے کہ ہماری نظر خراب ہے تو پھر وہ دوکان پر بھی نہیں پھٹکے گا۔

ہاں، بات تو تم ٹھیک کہتے ہو پر کیا کریں۔ اِسکی شکل ہی ایسی ہے کہ بات کئے بغیر رکا نہ جائے۔

وہ عورت دونوں طرف نگاہ ڈالتی ہوئی نکل گئی۔ کسی دکان پر سودے کے لئے نہ ٹکی۔ اب احمد علی اور لوک من دونوں ٹھہاکا مار کر ہنسے اور بولے—یہ

वह भी क्या थे ?

उन्नीसवीं सदी ख़तम होने में कुछ महीने बाक़ी थे. अंगरेज़ी राज को जमे ब्यालीस बरस बीतने को थे फिर भी नार्वे की दियासलाई को छोड़कर सारी चीज़ें गांव की पैंठ में देशी ही होती थीं. बढ़ई गड्डूलने और रेढ़ू लेकर आते थे. लोहार चाक़ू, क़ैंची, उस्तरे, कजरौटे और इसी तरह घर की दूसरी ज़रूरी चीज़ें बेचते नज़र आते थे. हाथ के बने काग़ज़ भी मिल सकते थे. कुम्हार मिट्टी के खिलौने लाते थे. लखेरे लाख की चूड़ियां बेचते मिलते थे. उन्हीं के पास बच्चों के खेलने के लिये लाख की गेंदें मिलती थीं, जो पैसे में चार तक मिल जाती थीं. यह गोबर की बनी हुई होती थीं और इन पर लाख चढ़ी रहती थी. आज की रबर की गेंद से भी ज़ियादा हलकी होती थीं. काग़ज़ के बने हुए भी तरह तरह के खिलौने मिल जाते थे. पंखे वाले पंखे बेचते थे. कंजरियां सिरकी के झुनझुने और डोली बनाकर बेचती थीं, जिनके दाम दो कौड़ी होते थे. यानी एक पैसे में चालीस. देशी शक्कर, गुड़ और परचूनी की और चीज़ें सभी पैंठ में मिल जाती थीं. हांडियों में घी देख कर तबियत ख़ुश हो जाती थी. रवादार घी जब आधी आधी छटांक बानगी में चखने को मिल जाता था तो लुत्फ़ आ जाता था. विलायती कपड़ा देखने को भी न था. हाथ के कते सूत को ले लेकर छोटी छोटी लड़कियां और बड़ी बूढ़ियां आती थीं और जुलाहों को वह सूत बेच देती थीं. जुलाहे अपने हाथ के बुने थान उन लोगों के हाथ बेच देते थे जो उनको रंगने और छाप कर तरह तरह की छींटों में तबदील करने का काम जानते थे. एक ख़ास तरह का कपड़ा होता था जिसकी ज़मीन नीली होती थी पर बीच बीच में सफ़ेद जगह रहती थी और उसमें छोटा सा गुलाब का फूल बना रहता था, उस कपड़े का नाम सुरगुल होता था. यह पैंठ में बिकने तो कम आता था, ज़ियादातर काबुल चला जाता था. उसी पैंठ में तैयार कपड़े के बेचने वाले बज़ाज़ भी रहते थे जिनके पास हर रंग और हर तर्ज़ का कपड़ा रहता था. लाल रंग के कपड़े को सूरज पाखी कहते थे. ऊदे रंग के बारीक बारीक बूटियों समेत कपड़े का ज़री नाम रहता था. तोशक और लिहाफ़ के बेल बूटेदार अबरे भी मिल जाते थे.

पैंठ में आम तौर से दुकानदारों की जगह पहले से ही नियत रहती थी. गांव की छोटी सी कमेटी उन से कुछ मामूली किराया वसूल कर लेती थी. जगहों के लिये कभी कभी झगड़ा भी हो जाता था पर गांव कमेटी उसको बड़ी

وہ بھی کیا تھے !

اُنیسویں صدی ختم ہونے میں کچھ مہینے باقی تھے. انگریزی راج کو جمے بیالیس برس بیتنے کو تھے پھر بھی ناروے کی دیاسلائی کو چھوڑ کر ساری چیزیں گاؤں کی پینٹھ میں دیشی ہی ہوتی تھیں . بڑھئی کٹھولنے اور ریڑو لے کر آتے تھے . لوہار چاقو' قینچی' اُسترے' کجروٹے اور اِسی طرح گھر کی دوسری ضروری چیزیں بیچتے نظر آتے تھے . ہاتھ کے بنے کاغذ بھی مل سکتے تھے . کمہار مٹی کے کھلونے لاتے تھے. لکھیرے لاکھ کی چوڑیاں بیچتے ملتے تھے. اُنہیں کے پاس بچوں کے کھیلنے کے لئے لاکھ کی گیندیں ملتی تھیں' جو پیسے میں چار تک مل جاتی تھیں . یہ گوبر کی بنی ہوئی ہوتی تھیں اور اِن پر لاکھ چڑھی رہتی تھی . آج کی ربر کی گیند سے بھی زیادہ ہلکی ہوتی تھیں . کاغذ کے بنے ہوئے بھی طرح طرح کے کھلونے مل جاتے تھے . پنکھے والے پنکھے بیچتے تھے . کنجریاں سرکی کے جھن جھنے اور ڈولی بنا کر بیچتی تھیں' جن کے دام دو کوڑی ہوتے تھے . یعنی ایک پیسے میں چالیس . دیشی شکر' گڑ اور پرچونی کی اور چیزیں سبھی پینٹھ میں مل جاتی تھیں . ہانڈیوں میں گھی دیکھکر طبیعت خوش ہو جاتی تھی . روادار گھی جب آدھی آدھی چھٹانک بانگی میں چکھنے کو مل جاتا تھا تو لطف آ جاتا تھا . ولایتی کپڑا دیکھنے کو بھی نہ تھا . ہاتھ کے کتے سوت کو لے لے کر چھوٹی چھوٹی لڑکیاں اور بڑی بوڑھیاں آتی تھیں اور جولاہوں کو وہ سوت بیچ دیتی تھیں . جولاہے اپنے ہاتھ کے بنے تھان اُن لوگوں کے ہاتھ بیچ دیتے تھے جو اُن کو رنگنے اور چھاپ کر طرح طرح کی چھینٹوں میں تبدیل کرنے کا کام جانتے تھے . ایک خاص طرح کا کپڑا ہوتا تھا جس کی زمین نیلی ہوتی تھی پر بیچ بیچ میں سفید جگہ رہتی تھی اور اُس میں چھوٹا سا گلاب کا پھول بنا رہتا تھا' اُس کپڑے کا نام سرگل ہوتا تھا . یہ پینٹھ میں تو بکنے کم آتا تھا' زیادہ‌تر کابل چلا جاتا تھا . اُسی پینٹھ میں تیار کپڑے کے بیچنے والے بزاز بھی رہتے تھے جن کے پاس ہر رنگ اور ہر طرز کا کپڑا رہتا تھا لال رنگ کے کپڑے کو سورج پاکھی کہتے تھے . اودے رنگ کے باریک باریک بوٹیوں سمیت کپڑے کا زری نام رہتا تھا. توشک اور لحاف کے بیل بوٹے دار ابرے بھی مل جاتے تھے .

پینٹھ میں عام طور سے دوکان داروں کی جگہ پہلے سے ہی نیست رہتی تھی . گاؤں کی چھوٹی سی کمیٹی اُن سے کچھ معمولی کرایہ وصول کر لیتی تھی. جگہوں کے لئے کبھی کبھی جھگڑا بھی ہو جاتا تھا پر گاؤں کمیٹی اُس کو بڑی

श्रीमान, यह भारतमाता का मंदिर है; क़िबला, यह आपकी खाला का घर नहीं है. यहां प्रसाद सब को बराबर मिलता है; यहां अब यह नहीं होने दिया जायेगा कि आप हर रोज़ ईद मनायें और हर रात शबबरात; और बाक़ी बचे लोग दिन को रोज़ा और रात को फ़ाक़ा करें. क्या आपने गांधी को यह कभी कहते नहीं सुना कि "जो चीज़ करोड़ों की नहीं हो सकती वह मुझे मान्य नहीं है. अहिंसा अगर करोड़ों की नहीं हो सकती तो वह मेरे लिये कौड़ी काम की नहीं." लिहाज़ा आपकी यह ईदें और शबबरातें अगर हम करोड़ों की नहीं हो सकतीं तो हुज़ूर पुरनूर के लिये भी हराम होनी चाहियें.

आप को पांच साल, सात साल अवधि दी जा रही है. और वक़्त चाहिये और ले लीजिये, मगर बता दीजिये कुल कितना वक्त लेंगे. तब तक यक़ीन मानिये, हम अहिंसा की क़सम खाए खड़े रहेंगे. मगर गुस्ताख़ी माफ़, आपने रामायन तो पढ़ी होगी. जब राम के अंगद की बात रावन ने नहीं मानी थी तो क्या हुआ था? और महाभारत तो आपने ज़रूर पढ़ी होगी. पढ़ी क्या, पढ़ाई होगी. जब पांडवों के कृश्न की शिश्टाई की दुर्योधन ने उपेक्षा कर दी थी तो आपके ख़ानदान वालों की क्या हालत हुई थी. बारे-ख़ातिर न हो तो अपनी मुहलत के दौरान में अपने इन अवतारों की लीलाओं के हश्र को याद रखियेगा.

ज़रा और सुनिये. भारत के पुनीत विधान में 'आर्थिक समानता' की घोशना कर दी गई है और मैं बिरला और भिकारी, डालमिया और मज़लूमियां, टाटा और परकाटा की आर्थिक असमानता देख रहा हूँ. जनता-जनार्दन, दरिद्र नारायन, अब अपने क्षीर सागर वाली शेष शैया पर लक्ष्मी विलास के लिये आतुर हो रहे हैं. कल्पान्त हुआ चाहता है.

"........जो धर्म शुद्ध अर्थ का विरोधी है वह धर्म नहीं है. जो धर्म राजनीति का विरोधी है वह धर्म नहीं है. धर्म के बिना अर्थ बेमानी है. धर्म के बिना राजसत्ता शैतानी है. अर्थ वग़ैरा से अलग धर्म नाम की कोई चीज़ नहीं......"

—महात्मा गांधी

شری مان' یہ بھارت ماتا کا مندر ہے؛ قبلہ' یہ آپ کی خالا کا گھر نہیں ہے . یہاں پرساد سب کو برابر ملتا ہے؛ یہاں اب یہ نہیں ہونے دیا جائے گا کہ آپ ہر روز عید منائیں اور ہر رات شب برات؛ اور باقی بچے لوگ دن کو روزہ اور رات کو فاقہ کریں . کیا آپ نے گاندھی کو یہ کبھی کہتے نہیں سنا کہ " جو چیز کروڑوں کی نہیں ہو سکتی وہ مجھے مانیہ نہیں ہے . اہنسا اگر کروڑوں کی نہیں ہو سکتی تو وہ میرے لئے کوڑی کام کی نہیں ." لہذا آپ کی یہ عیدیں اور شب براتیں اگر ہم کروڑوں کی نہیں ہو سکتیں تو حضور پرنور کے لئے بھی حرام ہونی چاہئیں .

آپ کو پانچ سال' سات سال اودھی دی جا رہی ہے . اور وقت چاہئے اور لے لیجئے' مگر بتا دیجئے کل کتنا وقت لیجئے. تب تک یقین مانئے' ہم اہنسا کی قسم کھائے کھڑے رہیں گے . مگر گستاخی معاف' آپ نے رامائن تو پڑھی ہوگی . جب رام کے انگد کی بات راون نے نہیں مانی تھی تو کیا ہوا تھا ؟ اور مہا بھارت تو آپ نے ضرور پڑھی ہوگی . پڑھی کیا' پڑھائی ہوگی . جب پانڈوں کے کرشن کی ششٹائی کی دریودھن نے اپیکشا کر دی تھی تو آپ کے خاندان والوں کی کیا حالت ہوئی تھی . بار خاطر نہ ہو تو اپنی مہلت کے دوران میں اپنے ان اوتاروں کی لیلاؤں کے حشر کو یاد رکھئے گا .

ذرا اور سنئے . بھارت کے پنیت ودھان میں آرتھک سمانتا کی گھوشنا کر دی گئی ہے اور میں برلا اور بھکاری' ڈالمیا اور مظلومیاں' ٹاٹا اور پرکاٹا کی آرتھک اسمانتا دیکھ رہا ہوں . جنتا جناردن' در در نارائن' اب اپنے چھیرساگر والی شیش شیا پر لکشمی ولاس کے لئے آتر ہو رہے ہیں . کلپانت ہوا چاہتا ہے .

" ....جو دھرم شدھ ارتھ کا ورودھی ہے وہ دھرم نہیں ہے . جو دھرم راج نیتی کا ورودھی ہے وہ دھرم نہیں ہے . دھرم کے بنا ارتھ بے معنی ہے . دھرم کے بنا راج ستا شیطانی ہے . ارتھ وغیرہ سے الگ دھرم نام کی کوئی چیز نہیں....."

—مہاتما گاندھی

जब तक शरीर है तब तक कार्य से छुट्टी कहां ? आपको मोक्ष के लिये कुछ भी करना भले ही बाक़ी न रहा हो, लेकिन अगर शरीर से काम लेना बन्द कर दिया तो यह ज़रूर सड़ने लगेगा. केवली प्राप्त हो जाने पर भी शरीर रहने तक मन, वचन, काया की क्रियाएं होती ही रहती हैं.

इस ख़ाक की ख़ूराक जिस्म को सेवा में घिस क्यों न डाला जाय ? चाक़ू का ज़ंग खा खा कर मिटने से तो उसका काम में आते आते एक चमचमाती ज़िन्दगी बसर करते हुए फ़ना हो जाना अच्छा !

सन्यास का मतलब निकम्मापन मान कर हम ग़ुलाम बने, दुश्टों के शासन तले कुचले जाते रहे. अगर अब भी हमने सन्यासी का मतलब 'लोक संग्रहार्थ बे-ग़रज़ बे-लौस सेवा करने वाला' न किया तो ग़ुलामी फिर धर दबोचने वाली है. ज्ञानियों, तपस्वियों, सिद्धों, जीवनमुक्तों, अवतारों और ख़ुदाओं ने अगर हकूमत की बाग हाथ में न ली तो वह विदेशी आततायियों और देशी गुंडों के हाथ में चला जाने वाला है या तो सज्जन आगे आ कर समाज की बाग डोर परित्रांनाय साधू नाम् (भगवान को बचाने के लिये) हाथ में ले ले, और दुर्जनों को विनाशायाच्छ दुश्कृताम् (बुराई को नाश करने के लिये) दबा कर रक्खे, वर्ना दुर्जन सज्जनों पर रावन राज चलाते रहेंगे. कलयुग में संघ शक्ति का महात्म्य गाया गया है. पर आज हलकट लोग ही संगठित है, उद्भट लोग विघटित. चुनांचे जो लोग किसी मवेशी ख़ाने के भी लायक़ नहीं आज इन्द्रों के-से भोग भोग रहे हैं, और जो राजरिशी होने लायक़ हैं वह अर्थपिशाचों के अस्तबल के घोड़ों की लीद उठाने की ड्यूटी पर तैनात हैं.

इने-गिने लोग ज्ञान को बहुत बारीक कातने की हसीन दुष्टता करते रहे और दुनिया को उल्लू बना कर उन पर हकूमत चलाते रहे. मगर वह काठ की हंडिया चढ़ चुकी है. तसव्वुरे जानां में बैठे रहनेवालों की फ़ुर्सत के रात दिन चले गए, अब देहात का दहक़ान और शहर का आग़लूल जाग गया है. वह ऐसे राम बान सवाल करने लगा है जिन के सामने सोने के मायावी हिरन अपनी चौकड़ियां भूलने लगे हैं. यह बन्दरों और रीछों की सेना अब सोने की लंकाओं को लूट ही लेने वाली है. अब इन चौपायों (या चतुर्भुजों ?) को कौन समझाए कि फ़लां उपनिषद्कार कह गया है कि 'दूसरे की दौलत को गृद्ध दृष्टि से मत देख' ? त्रेता में राम की वानर सेना के बन्दरों को यह उपनिषदकार अपनी उपर्युक्त उक्ति का आईना दिखाता ही रह गया, पर लंका लुटनी थी सो लुट गई.

आज समाज के गुरु घंटाल ख़ुद तो ककड़ी खा रहे हैं और देश के करोड़ों भूखे नंगे चेले चिन्टारियों को लकड़ी खाने को कह रहे हैं.

جب تک شریر ہے تب تک کاریہ سے چھٹی کہاں ؟ آپ کو مُوکش کے لئے کچھ بھی کرنا بھلے ہی باقی نہ رہا ہو' لیکن اگر شریر سے کام لینا بند کر دیا تو یہ ضرور سڑنے لگے گا . کیولی پراپت ہو جانے پر بھی شریر رہنے تک من' وچن' کایا کی کریائیں ہوتی ہی رہتی ہیں .

اِس خاک کی خوراک جسم کو سیوا میں گھس کیوں نہ ڈالا جائے ؟ چاقو کا زنگ کھا کھا کر مٹنے سے تو اُس کا کام میں آتے آتے ایک چمچماتی زندگی بسر کرتے ہوئے فنا ہو جانا اچھا !

سنیاس کا مطلب نکماپن مان کر ہم غلام بنے' دشٹوں کے شاسن تلے کچلے جاتے رہے . اگر اب بھی ہم نے سنیاسی کا مطلب 'لوک سنگرہارتھ بےغرض بےلوث سیوا کرنے والا' نہ کیا تو غلامی پھر دھر دبوچنے والی ہے. گیانیوں' تپسویوں' سدھوں' جیون مکتوں' اوتاروں اور خداؤں نے اگر حکومت کی باگ ہاتھ میں نہ لی تو وہ ودیشی آتتائیوں اور دیشی گنڈوں کے ہاتھ میں چلا جانے والا ہے یا تو سجن آگے آکر سماج کی باگ‌ڈور پری ترا نائے سادھو نام (بھگوان کو کو بچانے کے لئے) ہاتھ میں لے لے' اور درجنوں کو وناشا یاچ دشکرتام (برائی کو ناش کرنے کے لئے) دبا کر رکھے' ورنا ردجن سجنوں پر راون راج چلاتے رہیں گے . کلیگ میں سنگھ شکتی کا مہاتم گایا گیا ہے . پر آج ہلکٹ لوگ ہی سنگٹھت ہے' اُدبھٹ لوگ وگھٹت . چنانچہ جو لوگ کسی مویشی خانے کے بھی لائق نہیں' آج اِندروں کے سے بھوگ بھوگ رہے ہیں' اور جو راج رشی ہونے لائق ہیں وہ ارتھ پشاچوں کے اصطبل کے گھوڑوں کی لید اُٹھانے کی ڈیوٹی پر تعینات ہیں .

اِنے گنے لوگ گیان کو بہت باریک کاتنے کی حسین دشٹتا کرتے رہے اور دنیا کو اُلو بنا کر اُن پر حکومت چلاتے رہے . مگر وہ کاٹھ کی ہنڈیا چڑھ چکی ہے . تصورِ جاناں میں بیٹھے رہنے والوں کی فرصت کے رات دن چلے گئے . اب دیہات کا دہقان اور شہر کا ژاغلول جاگ گیا ہے . وہ ایسے رام بان سوال کرنے لگا ہے جن کے سامنے سونے کے مایاوی ہرن اپنی چوکڑیاں بھولنے لگے ہیں . یہ بندروں اور ریچھوں کی سینا اب سونے کی لنکاؤں کو لوٹ ہی لینے والی ہے . اب اِن چوپائیوں (یا چتر بھجوں ؟) کو کون سمجھائے کہ فلاں اُپنشد کار کہا گیا ہے کہ دوسرے کی دولت کو گردھ درشٹی سے مت دیکھ ؟' تریتا میں رام کی بانر سینا کے بندروں کو یہ اُپنشد کار اپنی اپریکت اُکتی کا آئینہ دکھاتا ہی رہ گیا' پر لنکا لٹنی تھی سو لٹ گئی .

آج سماج کے گرو گھنٹال خود تو ککڑی کھا رہے ہیں اور دیش کے کروڑوں بھوکے ننگے چیلے چنٹاریوں کو لکڑی کھانے کو کہہ رہے ہیں .

इस तरह 14 करोड़ की आबादी चार सूबों में बंटे तो दक्खिन की राजकाजी सत्ता भाशाबार होगी, वह खुद पूरी और काफ़ी बलवान भी होगी. हां, इन दो भाशा बोलने वाले सूबों का संगठन व शासन कैसे हो, इस पर ग़ोर करना ज़रूरी है.

اِس طرح 14 کروڑ کی آبادی چار صوبوں میں بٹے تو دکھن کی راج کاجی ستا بھاشاوار ہوگی' وہ خود پوری اور کافی بلوان بھی ہوگی ۔ ہاں' اِن دو بھاشا بولنے والے صوبوں کا سنگٹھن و شاسن کیسا ہو' اِس پر غور کرنا ضروری ہے ۔

वेदान्त कल्पान्त

(नारायन प्रसाद जैन)

वेदान्त नहीं कहता कि दुनिय छोड़ दो. वेदान्त नहीं कहता कि अपने रोज़-ब-रोज़ के ज़रूरी काम न करो. वेदान्त सिर्फ़ लगाव, तृष्ना, राग द्वेश, आसना वासना, इच्छा कामना, वग़ैरा मन के दोशों को छोड़ने के लिये कहता है.

वेदान्त कहता है, 'यह सब पसारा ब्रह्म है' 'अपनी आत्मा ही ब्रह्म है', 'ब्रह्म आनन्द स्वरूप है' यानी यह सब कुछ राम ही राम है, मैं ही मैं हूँ. आनन्द ही आनन्द है. मगर यह राम, मैं या आनन्द कुछ भी न करे तो जड़ हो जाय. इसलिये यह रामलीला, मेरा खेल या आनन्द की मस्ती, या रासलीला हमेशा से चलती आ रही है और हमेशा चलती रहेगी. इस रासलीला से मुक्ति नहीं है. आपको दुख से मुक्ति मिल सकती है, आनन्द से मुक्ति नहीं मिल सकती, आनन्द कोई शिलाखंड नहीं कि किसी उजाड़ खंड में मुर्दे की तरह पड़ा रहे ! कोई बालक बुत बना बैठा रहे तो घर वाले घबरा जायं और किसी डाक्टर को दिखलाने दौड़ें ! कोई खिलाड़ी खेले नहीं तो वह खिलाड़ी कैसा ? कोई नाचने वाली नाचे नहीं तो क्या शोभा दे ?

'सत् का सार चित् (हलन चलन) है और चित् का सार आनन्द है.' आनन्द को चिद् रूप होना ही चाहिये. ईश्वर निश्क्रिय (निकम्मा) (Static) नहीं, क्रियाशील (Dynamic) है. साइन्स का कहना है, हर चीज़ घूम रही है. बदलाव ही एक नियम है, जो कभी नहीं बदलता. यों हमेशा इन्क़लाब ज़िन्दा रहता है !

वेदान्त हमें काम में जुटाता है. बे-ग़रज़ बे-लौस काम का बढ़िया आनन्द ईश्वर का ऐश्वर्य है, सौन्दर्य है यानी ख़ुदा की ख़ुदाई और शान है !

आप जीवन मुक्त, अरिहन्त, भी क्यों न हो गए हों,

ویدانت کلپانت

(نارائن پرساد جین)

ویدانت نہیں کہتا کہ دنیا چھوڑ دو ۔ ویدانت نہیں کہتا کہ اپنے روز بروز کے ضروری کام نہ کرو ۔ ویدانت صرف لگاؤ' ترشنا' راگ دویش' آسنا واسنا' اِچھا کامنا وغیرہ من کے دوشوں کو چھوڑنے کے لئے کہتا ہے ۔

ویدانت کہتا ہے' 'یہ سب پسارا برہم ہے' اپنی 'آتما ہی برہم ہے' 'برہم آنندسوروپ ہے' یعنی یہ سب کچھ رام ہی رام ہے' میں ہی میں ہوں' آنند ہی آنند ہے ۔ مگر یہ رام' میں یا آنند کچھ بھی نہ کرے تو جڑ ہو جائے ۔ اِس لئے یہ رام لیلا' میرا کھیل یا آنند کی مستی' یا راس لیلا ہمیشہ سے چلتی آ رہی ہے اور ہمیشہ چلتی رہے گی ۔ اِس راس لیلا سے مکتی نہیں ہے ۔ آپ کو دکھ سے مکتی مل سکتی ہے' آنند سے مکتی نہیں مل سکتی' آنند کوئی شلا کھنڈ نہیں کہ کسی اُجاڑ کھنڈ میں مردے کی طرح پڑا رہے ! کوئی بالک بت بنا بیٹھا رہے تو گھر والے گھبرا جائیں اور کسی ڈاکٹر کو دکھلانے دوڑیں ! کوئی کھلاڑی کھیلے نہیں تو وہ کھلاڑی کیسا؟ کوئی ناچنے والی ناچے نہیں تو کیا شوبھا دے؟

'ست کا سار چت (ہلن چلن) ہے اور چت کا سار آنند ہے'. آنند کو چد روپ ہونا ہی چاہئے. ایشور نشکریہ (نکما) (Static) نہیں' کریاشیل (Dynamic) ہے . سائنس کا کہنا ہے' ہر چیز گھوم رہی ہے . 'بدلاؤ ہی ایک نیم ہے' جو کبھی نہیں بدلتا . یوں ہمیشہ انقلاب زندہ رہتا ہے !

ویدانت ہمیں کام میں جٹاتا ہے . بےغرض بےلوث کا کام بڑھیا آنند ایشور کا ایشوریہ ہے' سوندریہ ہے یعنی خدا کی خدائی اور شان ہے !

آپ جیون مکت' اریہنت' بھی کیوں نہ ہوگئے ہوں'

सीखना किसी मेम्बर के लिये आसान हो सकता है. लेकिन तीन तीन भाशाओं का सीखना और उसमें बोलना मुश्किल ही नहीं, बल्कि नामुमकिन ही होगा. इसके बजाय अगर मदरास राज की विधान सभा में तमिल और तेलुगु भाशा भाशी ही रहें तो एक दूसरे की भाशा सीखने में उनको अधिक समय नहीं लगता. तमिल और तेलुगु दोनों की तादाद पांच करोड़ के लगभग है और बाक़ी की 70 लाख. कन्नड़ और मलयालम के दोनों छोटे टुकड़े कन्नड़ और केरल प्रान्त में मिल जायं, असानी से चार भाशाओं के बजाय दो ही भाशाएं हों तो काम कितना आसान हो जायगा ! इस पर जरूर सोचा जाना चाहिये.

अगर हमारे सारे शासन के काम विकेन्द्रित हों और लोक सभा में सिर्फ़ अलग अलग महत्व की बातों पर नीति का ही फ़ैसला हो तो यह काम और आसान हो जायगा. यही बात हैदराबाद और बम्बई के लिये भी लागू हो सकती है. इससे अलग अलग भाशा भाशियों को पड़ोमी भाशाओं के लिये आदर दिखाने और उसको सीखने का भी मौक़ा मिलेगा आख़िर तमिल और तेलुगु में कितना फ़रक़ है, कन्नड़ और मराठी में कौन बड़ा फ़रक़ है, मलयालम और तमिल में ख़ास फ़रक़ कहां है, यह सब सिर्फ़ नज़रिये और भावना की बात है. भाशा के ज़रिये सेवा ही हमें करना हो तो एक से ज़ियादा भाशा सीखने में नुक़सान नहीं, फ़ायदा है.

इसी तरह सारे बम्बई राज का भी इन्तज़ाम हो सकता है. कई रियासतों की साढ़े तीन करोड़ आबादी में इस समय लगभग 50 लाख कन्नड़ भाशा भाशी हैं. कन्नड़ भाशा भाशी टुकड़ा करनाटक में मिल जाय तो कुल 3 करोड़ की आबादी रह जाती है जो मराठी और गुजराती भाशा भाशी हैं. मराठी और गुजराती भाशाएं सदियों से सगी बहनों की तरह रहीं हैं. दोनों भाशा भाशी एक दूसरे सूबे में लाखों की तादाद में पाए जाते हैं. ख़ास कर मराठी भाशा भाशी गुजरात में काफ़ी तादाद में हैं, जैसे कि तेलुगु भाशा भाशी तमिल सूबे में हैं. विकेन्द्रित ढंग पर आज का बम्बई दो भाशाओं का सूबा बनाया जाय तो बहुत ही फ़ायदा हो सकता है. किसी न किसी वक़्त हैदराबाद को तो विकेन्द्रित होना ही पड़ेगा. बम्बई और मदरास अपनी अपनी राजधानी बनाकर दो भाशी सूबे हो जायंगे तो सिर्फ़ सवाल करनाटक और केरल का रह जाता है. वह दोनों सूबे ज़ियादातर समुन्दर के किनारे और साथ ही मिले हुए हैं. वह ऊपर लिखी कार्रवाई से अपने आप सूबे बन जाते हैं, बंगलौर और तिरुवनन्तपुरम ख़ुद काफ़ी बड़े केन्द्र हैं. इन दोनों शहरों को राजधानी बना कर यह दोनों सूबे अपनी अपनी हकूमत का काम बख़ूबी चला सकते हैं.

سیکھنا کسی ممبر کے لئے آسان ہو سکتا ہے. لیکن تین تین بھاشاؤں کا سیکھنا اور اسمیں بولنا مشکل ہی نہیں، بلکہ ناممکن ہی ہوگا. اس کے بجائے اگر مدراس راج کی ودھان سبھا میں تمل اور تیلگو بھاشا بھاشی ہی رہیں تو ایک دوسرے کی بھاشا سیکھنے میں ان کو ادھک سمے نہیں لگتا. تمل اور تیلگو دونوں کی تعداد پانچ کروڑ کے لگ بھگ ہے اور باقی کی 70 لاکھ. کنڑ اور ملیالم کے دونوں چھوٹے ٹکڑے کنڑ اور کیرل پرانت میں مل جائیں، آسانی سے چار بھاشاؤں کے بجائے دو ہی بھاشائیں ہوں تو کام کتنا آسان ہو جائے گا ! اس پر ضرور سوچا جانا چاہئے.

اگر ہمارے سارے شاسن کے کام وکیندرت ہوں اور لوک سبھا میں صرف الگ الگ مہتو کی باتوں پر نیتی کا ہی فیصلہ ہو تو یہ کام اور آسان ہو جائے گا. یہی بات حیدرآباد اور بمبئی کے لئے بھی لاگو ہو سکتی ہے. اس سے الگ الگ بھاشا بھاشیوں کو پڑوسی بھاشاؤں کے لئے آدر دکھانے اور اسکو سیکھنے کا بھی موقع ملے گا. آخر تمل اور تیلگو میں کتنا فرق ہے، کنڑ اور مراٹھی میں کون بڑا فرق ہے، ملیالم اور تمل میں خاص فرق کہاں ہے، یہ سب صرف نظریئے اور بھاونا کی بات ہے. بھاشا کے ذریعہ سیوا ہی ہمیں کرنا ہو تو ایک سے زیادہ بھاشا سیکھنے میں نقصان نہیں، فائدہ ہے.

اسی طرح سارے بمبئی راج کا بھی انتظام ہو سکتا ہے. کئی ریاستوں کی ساڑھے تین کروڑ آبادی میں اس سمے لگ بھگ 50 لاکھ کنڑ بھاشا بھاشی ہیں. کنڑ بھاشابھاشی ٹکڑا کرناٹک میں مل جائے تو کل تین کروڑ کی آبادی رہ جاتی ہے جو مراٹھی اور گجراتی بھاشابھاشی ہیں. مراٹھی اور گجراتی بھاشائیں صدیوں سے سگی بہنوں کی طرح رہیں. دونوں بھاشا بھاشی ایک دوسرے صوبے میں لاکھوں کی تعداد میں پائے جاتے ہیں. خاص کر مراٹھی بھاشا بھاشی گجرات میں کافی تعداد میں ہیں، جیسے کہ تیلگو بھاشا بھاشی تمل صوبے میں ہیں. وکیندرت ڈھنگ پر آج بمبئی دو بھاشاؤں کا صوبہ بنایا جائے تو بہت ہی فائدہ ہو سکتا ہے. کسی نہ کسی وقت حیدرآباد کو تو وکیندرت ہونا ہی پڑے گا. بمبئی اور مدراس اپنی اپنی راجدھانی بنا کر دو بھاشی صوبے ہو جائیں گے تو صرف سوال کرناٹک، اور کیرل کا رہ جاتا ہے. وہ دونوں صوبے زیادہ تر سمندر کے کنارے اور ساتھ ہی ملے ہوئے ہیں. وہ اوپر لکھی کاروائی سے اپنے آپ صوبے بن جاتے ہیں، بنگلور اور تروونتپرم خود کافی کیندر ہیں. ان دونوں شہروں کو راجدھانی بنا کر یہ دونوں صوبے اپنی اپنی حکومت کا کام بخوبی چلا سکتے ہیں.

एक दूसरा असूल यह भी है कि अपने देश के शासन क्षेत्र का विकेन्द्रीकरन हो. यह विकेन्द्रीकरन हमारे आर्थिक, नैतिक और कलचरी संगठन के लिये जरूरी है. इससे हमारा शासन-क्षेत्र ही विकेन्द्रित नहीं होगा, बल्कि हमारी राजकाजी क्षेत्र और साथ ही आर्थिक क्षेत्र भी विकेन्द्रित होगा. इस विकेन्द्रीकरन से हमारी शक्ति बढ़ेगी. हमारी लोकशाही ज़ियादा सफल होगी. इस असूल से होनेवाला दोश तभी दूर हो सकता है कि हमारा हर एक प्रान्त अपनी भाशा के साथ साथ एक दूसरी भाशा को ज़रूर सीखने और काम में लाने का भी बन्दोबस्त करे. जो हिन्दी भाशा-भाशी प्रान्त हैं वहां हर सभी पढ़े-लिखे लोगों को एक सूबाई भाशा का सीखना ज़रूरी बना दिया जाय. जो बग़ैर हिन्दी भाशा-भाशी हैं, उन्हें एक पड़ोसी भाशा को सीखना बहुत ज़रूरी मानना चाहिये. विकेन्द्रीकरन की योजना में हमारा कोई सूबा ऐसा भी नहीं होना चाहिये जिससे आर्थिक नज़र से ही नहीं बल्कि भाशावार संगठन की नज़र से भी अपना काम चलाने के लिये असमर्थ न हो जाय.

इस समय हमारी कुछ ऐसी रियासतें हैं जो रक़बे की नज़र से ज़रूरत से ज़ियादा बड़ी हैं. जब ऐसी रियासतों में एक से ज़ियादा भाशाएं बोली जाती हैं तो नेतृत्व की विविधता बढ़ जाती है, जैसा कि मदरास, बंबई और हैदराबाद में इस वक़्त है. मदरास में 4, बंबई में 3, हैदराबाद में 3 भाशाओं का क्षेत्र है. इसके लिये अलग अलग कांगरेस कमेटियां भी हैं और दूसरे राजकाजी दलों के संगठन भी भाशावार ही बने हुए हैं. जब कि सारे हुकूमत के काम के लिये एक ही को नेतृत्व हासिल है तब दूसरी भाशाओं के दलों के नेताओं में उसके लिये होड़ चलती है. तादाद की ज़ियादती से ही इसका तय तोड़ होत है. इस होड़ का फ़क़त कारन यही है कि हमारी राजकाजी सत्ता ही नहीं, बल्कि हमारी सारी आर्थिक सत्ता और शासन भी इस समय हद से ज़ियादा केन्द्रित है. इसका विकेन्द्रित होना बहुत ज़रूरी है. विकेन्द्रीकरन से ही ऐसी परिस्थिति पैदा होगी जिससे नेतृत्व तादाद के ज़रिये हासिल करने की होड़ कम हो सकती है.

हमारी सारी ताक़त जहां तक राज्यों का सवाल है विधान सभाओं में निहित है. इन विधान सभाओं में अलग अलग भाशा के मेम्बर अपने अपने प्रदेश से चुन कर आ जाते हैं. मिसाल के लिये मदरास की विधान सभा को लिया जाय. इसमें 375 मेम्बर हैं—140 आन्ध्र भाशा भाशी, 190 तमिल भाशा भाशी, 30 मेम्बर मलयालम भाशा भाशी, क़रीब 15 मेम्बर कन्नड़ भाशा भाशी हैं. जब चारों प्रान्तों के मेम्बर अपनी अपनी मातृ भाशा में बोलने के हक़ पर ज़ोर देते हैं तो सभा का चलना मुश्किल हो जाता है. अपनी भाशा के साथ साथ सिर्फ़ एक और भाशा

ایک دوسرا اصول یہ بھی ہے کہ اپنے دیش کے شاسن چھیتر کا وکیندری‌کرن ہو ۔ یہ وکیندری‌کرن ہمارے آرتھک، نیتک اور کلچری سنگھٹن کے لئے ضروری ہے ۔ اس سے ہمارا شاسن‌چھیتر ہی وکیندرت نہیں ہوگا، بلکہ ہمارا راج‌کاجی‌چھیتر اور ساتھ ہی آرتھک‌چھیتر بھی وکیندرت ہوگا ۔ اس وکیندری‌کرن سے ہماری شکتی بڑھیگی ۔ ہماری لوک شاہی زیادہ سپھل ہوگی ۔ اس اصول سے ہونے والا دوش تبھی دور ہوسکتا ہے کہ ہمارا ہر ایک پرانت اپنی بھاشا کے ساتھ ساتھ ایک دوسری بھاشا کو ضرور سیکھنے اور کام میں لانے کا بھی بندوبست کرے ۔ جو ہندی بھاشا بھاشی پرانت ہیں وہاں ہر سبھی پڑھے لکھے لوگوں کو ایک صوبائی بھاشا کا سیکھنا ضروری بنا دیا جائے ۔ جو بغیر ہندی بھاشا بھاشی ہیں، انہیں ایک پڑوسی بھاشا کو سیکھنا بہت ضروری ماننا چاہئے ۔ وکیندری‌کرن کی یوجنا میں ہمارا کوئی صوبہ ایسا بھی نہیں ہونا چاہئے جس سے آرتھک نظر سے ہی نہیں بلکہ بھاشاوار سنگھٹن کی نظر سے بھی اپنا کام چلانے کے لئے اسمرتھ نہ ہوجائے ۔

اس سمے ہماری کچھ ایسی ریاستیں ہیں جو رقبے کی نظر سے ضرورت سے زیادہ بڑی ہیں ۔ جب ایسی ریاستوں میں ایک سے زیادہ بھاشائیں بولی جاتی ہیں تو نیترتو کی وِوِیدھتا بڑھ جاتی ہے، جیسا کہ مدراس، بمبئی اور حیدرآباد میں اس وقت ہے ۔ مدراس میں چار، بمبئی میں تین، حیدرآباد میں تین بھاشاؤں کا چھیتر ہے ۔ اس کے لئے الگ الگ کانگریس کمیٹیاں بھی ہیں اور دوسرے راج کاجی دلوں کے سنگٹھن بھی بھاشاوار ہی بنے ہوئے ہیں ۔ جب کہ سارے حکومت کے کام کے لئے ایک ہی کو نیترتو حاصل ہے تب دوسری بھاشاؤں کے دلوں کے نیتاؤں میں اس کے لئے ہوڑ چلتی ہے ۔ تعداد کی زیادتی سے ہی اسکا طے توڑ ہوتا ہے ۔ اس ہوڑ کا فقط کارن یہی ہے کہ ہماری راج کاجی ستا ہی نہیں، بلکہ ہماری ساری آرتھک ستا اور شاسن بھی اس سمے حد سے زیادہ کیندرت ہے ۔ اسکا وکیندرت ہونا بہت ضروری ہے ۔ وکیندری کرن سے ہی ایسی پرستھتی پیدا ہوگی جس سے نیترتو تعداد کے ذریعے حاصل کرنے کی ہوڑ کم ہو سکتی ہے ۔

ہماری ساری طاقت جہاں تک راجیوں کا سوال ہے ودھان سبھاؤں میں نہت ہے ۔ ان ودھان سبھاؤں میں الگ الگ بھاشا کے ممبر اپنے اپنے پردیش سے چن کر آجاتے ہیں ۔ مثال کے لئے مدراس کی ودھان سبھا کو لیا جائے ۔ اسمیں 375 ممبر ہیں— 140 آندھر بھاشا بھاشی، 190 تمل بھاشا بھاشی، 30 ممبر ملیالم بھاشا بھاشی، قریب 15 ممبر کنڑ بھاشا بھاشی ہیں ۔ جب چاروں پرانتوں کے ممبر اپنی اپنی ماتر بھاشا میں بولنے کے حق پر زور دیتے ہیں تو سبھا کا چلنا مشکل ہو جاتا ہے ۔ اپنی بھاشا کے ساتھ ساتھ صرف ایک اور بھاشا

पागलपन है. अपनी भाशा के वास्ते प्रेम दर्शाने के लिये दूसरी भाशा पर दोश लगाने की आदत भी देश के लिये नुक़सान पहुंचाने वाली है. लेकिन किया क्या जाय ? एक एक रियासत के लिये चार-चार भाशाओं में हकूमत का काम चलाना भी तो मुश्किल है. देश भर के लोगों की एक आम भाशा जब तक न हो तब तक इस मसले को रोक रखना भी नुक़सान दे है. इसलिये कोई इन्तज़ाम करना बहुत ज़रूरी है. असल में हमारी इन दिक़्क़तों के मूल में ही बहुत बड़ी अड़चन सत्ता हासिल करने की जल्दबाज़ी है. यह कैसे कहा जाय कि जिन रियासतों में भाशा की एकता है, वह विकास की राह पर आगे बढ़ रही हैं. उड़िसा के लोगों को अपना राज मिले सोलह साल हो गये. इससे उस भाशा की कितनी तरक़्क़ी हुई और उस भाशा का इस्तेमाल उस राज के हकूमत के कामों में कहां तक हो रहा है ? बंगला और असामी भाशाओं के भी अपने अपने राज क़ायम हैं. उनको कहां तक फ़ायदा पहुँचा ? क्या यह भाशायें दूसरी भाशाओं से कहीं आगे बढ़ी हैं ? हिन्दुस्तान की सभी भाशाओं की स्थिति क़रीब क़रीब एक सी है. आज भी सब जगह अंगरेज़ी ही राज कर रही है. हकूमत के काम के लिये हम अपनी भाशा का नाम लेते हैं, लेकिन आसानी अंगरेज़ी का ही इस्तेमाल करने में ही है. भाशावार नये प्रान्त बन जाने से तुरन्त ही किसी भाशा को नया पद मिल सकता हो सो बात नहीं. इसलिये भाशावार प्रान्त के पहले देशी भाशाओं की तरक़्क़ी पर विचार करना बहुत ज़रूरी है.

यह भी ज़रूरी है कि हम देशी भाशाओं की तरक़्क़ी पर एक साथ विचार करें और उन्हें इस लायक़ बनावें जिससे कि वह अंगरेज़ी का स्थान ही नहीं, बल्कि हमारे सारे कामों को चलाने के लिये अच्छे माध्यम बन सकें.

सब से पहले अपने पड़ोसी भाशा-भाशियों के लिये प्रेम और इज़्ज़त की, सब भाशाओं के स्तर को एक ही मानने की, हिन्दुस्तान की सभी भाशाएं अपनी ही हैं, ऐसा समझने की मनोवृत्ति का हर एक भारतवासी में पैदा होना बहुत ज़रूरी है. ऐसी भावना सिर्फ़ उपदेश से या अच्छी इच्छा से ही पैदा नहीं होगी, बल्कि भाशाओं के सामूहिक विकास योजना के काम धाम से ही बन सकती है. यह साफ़ है कि अलग-अलग भाशा इकाइयों से जितना फ़ायदा होगा, उतना न हो तो कुछ न कुछ नुक़सान ज़रूर होगा. इसे दूर करना हो तो हमारे लिये यह ज़रूरी है कि हम हर एक भाशा की इकाई में ऐसे दो भाशा-भाशियों को भी जगह दें जिससे कि हमें अपने पड़ोसियों के लिये सद्भावना को बढ़ाने और दूसरों की भाशाओं के लिये अधिक आदर दिखाने का मौक़ा मिल सके.

कहा जाता है कि भाशावार प्रान्तों के बंटवारे के पीछे

پاگل پن ھے. اپنی بھاشا کے واسطے پریم درشانے کے لئے دوسری بھاشا پر دوش لگانے کی عادت بھی دیش کے لئے نقصان پہونچانے والی ھے . لیکن کیا کیا جائے ؟ ایک ایک ریاست کے لئے چار چار بھاشاؤں میں حکومت کا کام چلانا بھی تو مشکل ھے . دیش بھر کے لوگوں کی ایک عام بھاشا جب تک نہ ھو تب تک اِس مسئلے کو روک رکھنا بھی نقصان دہ ھے . اِس لئے کوئی اِنتظام کرنا بہت ضروری ھے . اصل میں ھماری اِن دقتوں کے مول میں ھی بہت بڑی اڑچن ستا حاصل کرنے کی جلدبازی ھے . یہ کیسے کہا جائے کہ جن ریاستوں میں بھاشا کی اِیکتا ھے' وہ وکاس کی راہ پر آگے بڑھ رھی ھیں . اُڑیسہ کے لوگوں کو اپنا راج ملے سولہ سال ھوگئے . اِس سے اُس بھاشا کی کتنی ترقی ھوئی اور اُس بھاشا کا اِستعمال اُس راج کے حکومت کے کاموں میں کہاں تک ھو رھا ھے؟ بنگلہ اور آسامی بھاشاؤں کے بھی اپنے اپنے راج قائم ھیں . اُن کو کہاں تک فائدہ پہونچا ؟ کیا یہ بھاشائیں دوسری بھاشاؤں سے کہیں آگے بڑھی ھیں ؟ ھندستان کی سبھی بھاشاؤں کی اِستھتی قریب قریب ایک سی ھے . آج بھی سب جگہ انگریزی ھی راج کر رھی ھے . حکومت کے کام کے لئے ھم اپنی بھاشا کا نام لیتے ھیں' لیکن آسانی انگریزی کا ھی اِستعمال کرنے میں ھی ھے . بھاشاوار نئے پرانت بن جانے سے ترنت ھی کسی بھاشا کو نیا پد مل سکتا ھو سو بات نہیں ھے . اِس لئے بھاشاوار پرانت کے پہلے دیشی بھاشاؤں کی ترقی پر وچار کرنا بہت ضروری ھے .

یہ بھی ضروری ھے کہ ھم دیشی بھاشاؤں کی ترقی پر ایک ساتھ وچار کریں اور اُنھیں اِس لائق بناویں جس سے کہ وہ انگریزی کا استھان ھی نہیں' بلکہ ھمارے سارے کاموں کو چلانے کے لئے اچھے مادھیم بن سکیں .

سب سے پہلے اپنے پڑوسی بھاشا بھاشیوں کے لئے پریم اور عزت کی' سب بھاشاؤں کے استر کو ایک ھی ماننے کی' ھندستان کی سبھی بھاشائیں اپنی ھی ھیں' ایسا سمجھنے کی' منوورتی کا ھر ایک بھارت واسی میں پیدا ھونا بہت ضروری ھے . ایسی بھاونا صرف اُپدیش سے یا اچھی اِچھا سے ھی پیدا نہیں ھوگی' بلکہ بھاشاؤں کے ساموھک وکاس یوجنا کے کام دھام سے ھی بن سکتی ھے . یہ صاف ھے کہ الگ الگ بھاشا اِکائیوں سے جتنا فائدہ ھوگا' اتنا نہ ھو تو کچھ نہ کچھ نقصان ضرور ھوگا . اِسے دور کرنا ھو تو ھمارے لئے یہ ضروری ھے کہ ھم ھر ایک بھاشا کی اِکائی میں ایسے دو بھاشا بھاشیوں کو بھی جگہ دیں جس سے کہ ھمیں اپنے پڑوسیوں کے لئے سدبھاونا کو بڑھانے اور دوسروں کی بھاشاؤں کے لئے ادھک آدر دکھانے کا موقع مل سکے .

کہا جاتا ھے کہ بھاشاوار پرانتوں کے بٹوارے کے پیچھے

गुजराती	...	17
आसामी	...	14
कश्मीरी	...	6

इन आंकड़ों से यह साफ़ है कि कोई बड़े बड़े पांच सूबे मिल कर भी हिन्दी के बराबर नहीं हो सकते यह ज़ाहिर है कि पार्लिमेन्ट में ही सारी हकूमत की बागडोर है, उसी से सब क़ानून निकलते हैं और उसी के ज़रिये सारा शासन चलता है; सभी रियासतों को शक्ति और मदद प्राप्त होती है. इस हालत में भाशावार बंटे हुए भारत में अपनी अपनी भाशा की आत्मीयता के साथ जुदा जुदा रियासतों के प्रतिनिधि हर एक चीज़ को देखने लगें तो हमारा सारा राजकाजी जीवन बहुत ही कठिन और दुखदाई हो जायगा.

हिन्दुस्तान में दक्खिन भारत ही एक ऐसा प्रदेश है जहां भाशाओं का अधिक से अधिक झगड़ा है. तेलुगु, तमिल, मलयालम, कन्नड़, मराठी भाशा-भाशी प्रान्तों से ही भाशावार रियासतों के बंटवारे की मांग है. अगर भाशावार रियासतें इन भाशा-भाशियों के लिये बन जायं तो इस समय बंबई, मैसूर, तिरुवितांकूर-कोचि, मदरास, कुर्ग, हैदराबाद और मध्यप्रदेश कुल 7 रियासतों के स्थान पर चार रियासतें हो जायंगी और एक-एक रियासत की जन संख्या डेढ़ करोड़ और तीन करोड़ के बीच में रहेगी. यह मांग बहुत पुरानी है. इस मांग को ठीक समझ कर महात्मा गांधी और कांगरेस ने भी जल्दी पूरा करने के लिये वादा किया था. लेकिन इस बीच में ही अपनी अपनी सरहदों के और बंबई, मदरास जैसे शहरों के ऊपर अधिकारों के सवाल को लेकर इतने झगड़े उठ खड़े हुए कि इस सवाल को हाथ में लेते ही हमारे देश के नेता डर रहे हैं. इस स्थिति के लिये वह ही लोग जिम्मेदार हैं जो भाशावार रियासतें की मांग करते हैं. इस झगड़े की बुनियाद को दूर करना उतना ही ज़रूरी है जितना कि भाशावार रियासतें क़ायम करना. यह काम कौन करे? हमारे बड़े वज़ीर पंडित जवाहरलाल नेहरू पर इस समस्या के हल की ज़िम्मेदारी डालना तो बहुत ही ग़ैर मुनासिब है.

थोड़ा इस बात पर भी विचार किया जाय कि क्या हमारे लिये यह बहुत ज़रूरी है कि हम अपने को एक भाशा-भाशी एकाइयों में बांट ही लें? क्या अपने सफल राजकाजी जीवन के लिये और देश के आर्थिक, कलचरी और और औद्योगिक विकास के लिये एक भाशा-भाशी सूबे फ़ायदे मन्द साबित होंगे? एक सूबे में दो-तीन भाशा-भाशी निवासियों के होने से क्या झगड़ा बढ़ता ही रहेगा? इस पर भी हमें ज़रूर सोच लेना चाहिये. हमारा देश बहुभाशा-भाशी है, बहुभाशा-भाशी ही रहेगा. भाशाओं को मिटा कर उसे एक भाशा-भाशी बनाना नामुमकिन ही नहीं,

گجراتی	...	17
آسامی	...	14
کشمیری	...	6

اِن آنکڑوں سے یہ صاف ہے کہ کوئی بڑے بڑے پانچ صوبے مل کر بھی ہندی کے برابر نہیں ہوسکتے. یہ ظاہر ہے کہ پارلیمنٹ میں ہی ساری حکومت کی باگ‌ڈور ہے، اُسی سے سب قانون نکلتے ہیں اور اُسی کے ذریعے سارا شاسن چلتا ہے؛ سبھی ریاستوں کو شکتی اور مدد پراپت ہوتی ہے. اُس حالت میں بھاشاوار بٹے ہوئے بھارت میں اپنی اپنی بھاشا کی آتمیتا کے ساتھ جدا جدا ریاستوں کے پرتی‌ندھی ہر ایک چیز کو دیکھنے لگیں تو ہمارا سارا راج‌کاجی جیون بہت ہی کٹھن اور دکھ دائی ہوجائیگا.

ہندستان میں دکھن بھارت ہی ایک ایسا پردیش ہے جہاں بھاشاؤں کا ادھک سے ادھک جھگڑا ہے. تیلگو، تمل، ملیالم، کنڑ، مراٹھی بھاشا بھاشی پرانتوں سے ہی بھاشاوار ریاستوں کے بٹوارے کی مانگ ہے. اگر بھاشاوار ریاستیں اِن بھاشا بھاشیوں کے لئے بن جائیں تو اُس سمے بمبئی، میسور، تھروویتاں‌کور کوچچی، مدراس، کرگ، حیدرآباد اور مدھیہ پردیش کل سات ریاستوں کے استھان پر چار ریاستیں ہو جائینگی اور ایک ایک ریاست کی جن سنکھیا ڈیڑھ کرور اور تین کروڑ کے بیچ میں رہیگی. یہ مانگ بہت پرانی ہے. اِس مانگ کو ٹھیک سمجھ کر مہاتما گاندھی اور کانگریس نے بھی جلدی پورا کرنے کے لئے وعدہ کیا تھا. لیکن اِس بیچ میں ہی اپنی اپنی سرحدوں کے اور بمبئی، مدراس جیسے شہروں کے اوپر ادھیکاروں کے سوال کو لے کر اِتنے جھگڑے اُٹھ کھڑے ہوئے کہ اِس سوال کو ہاتھ میں لیتے ہی ہمارے دیش کے نیتا ڈر رہے ہیں. اِس استھتی کے لئے وہ ہی لوگ ذمےدار ہیں جو بھاشاوار ریاستوں کی مانگ کرتے ہیں. اِس جھگڑے کی بنیاد دو دور کرنا اتنا ہی ضروری ہے جتنا کہ بھاشاوار ریاستیں قائم کرنا. یہ کام کون کرے؟ ہمارے بڑے وزیر پنڈت جواہر لال نہرو پر اِس سمسیا کے حل کی ذمےداری ڈالنا تو بہت ہی غیر مناسب ہے.

تھوڑا اس بات پر بھی وچار کیا جائے کہ کیا ہمارے لئے یہ بہت ضروری ہے کہ ہم اپنے کو ایک بھاشا بھاشی اِکائیوں میں بانٹ ہی لیں؟ کیا اپنے سپھل راج‌کاجی جیون کے لئے اور دیش کے آرتھک، کلچری اور اودیوگک وکاس کے لئے بھاشا بھاشی صوبے فائدےمند ثابت ہونگے؟ ایک صوبے میں دو تین بھاشا بھاشی نواسیوں کے ہونے سے کیا جھگڑا بڑھتا ہی رہیگا؟ اِس پر بھی ہمیں ضرور سوچ لینا چاہئے. ہمارا دیش بہوبھاشا بھاشی ہے، بہوبھاشا بھاشی ہی رہیگا. بھاشاؤں کو مٹا کر اُسے ایک بھاشا بھاشی بنانا ناممکن ہی نہیں،

केरल प्रान्तों में अपने पड़ोसी प्रान्तों के भाशा भाषी काफ़ी तादाद में बसे हुए हैं. हां, वह बिखरे हुए ज़रूर हैं. जैसे कि, मैसूर में क़रीब 25 फ़ी सदी ग़ैर कन्नड़ी हैं. केरल में क़रीब 15 फ़ी सदी ग़ैर मलयाली हैं. तमिल में क़रीब पचास लाख ग़ैर तमिल हैं. आन्ध्र में काफ़ी तादाद में तमिल और कन्नड़ी हैं. इससे यह ज़ाहिर है कि इसके पहले भाशा का कोई सवाल नहीं था. रोज़ी के सवाल ने लोगों को दूसरे प्रान्तों में बसने को मजबूर किया था. इतिहास की घटनाओं ने भी बाक़ायदा भाशावार प्रान्तों को बनने नहीं दिया.

प्रजातंत्र में राजसत्ता हासिल करने के लिए जैसा कहा पहले गया है प्रजा सेवकों की इच्छा जैसे जैसे बढ़ती जाती है वैसे वैसे नए मसले भी पैदा होते जाते हैं जिनमें सब से बड़ी और ज़ियादा उलझी हुई समस्या आजकल भाशा की है.

ऊपर के आंकड़ों से मालूम होता है कि ऐसे राज्यों की तादाद जिन्होंने हिन्दी अपनी सूबाई भाशा मान ली है कुल 11 है और उनकी जन संख्या साढ़े पंद्रह करोड़ है. बाक़ी 21 करोड़ लोग 11 भाशाओं और 18 रियासतों के बीच में बंटे हुए हैं. इनमें अगर कश्मीर को छोड़ दिया जाय तो आसाम की तादाद सब से छोटी है—क़रीब एक करोड़ की है, उसके बाद उड़ीसा की है; गुजराती और मलयालम डेढ़ करोड़ से भी कम; उसके बाद बाक़ी भाशाओं की. फ़र्ज़ किया जाय कि हरेक प्रान्त ने अपना काम अपनी अपनी सूबाई भाशा में चलाना शुरू कर दिया, लोगों के बीच में अपनी सूबाई भाशा का अपना-पन इतना बढ़ गया कि वह अपने अपने प्रान्त के लिये ज़ियादा से ज़ियादा सत्ता हासिल करने की कोशिश करने लगे और ऐसा अपना-पन हिन्दी भाशा बोलने वालों में भी उतनी ही मात्रा में आ गया जितना कि दूसरे प्रान्तों में है. तब क्या होगा? क्या हिन्दी के सामने दूसरी भाशाएं टिक सकेंगी? इसका साफ़ साफ़ सबूत हमें पाना हो तो पार्लियामेन्ट की ही मिसाल ले सकते हैं. आजकल पार्लियामेन्ट के कुल मेम्बरों की तादाद इस वक़्त कोई 485 है, वह नीचे लिखे अनुसार भाशावार बंटे हुए हैं :—

हिन्दी	...	210
तेलुगु	...	43
मराठी	...	40
तमिल	...	37
बंगला	...	34
कन्नड़	...	26
पंजाबी	...	20
उड़िया	...	20
मलयालम	...	18

کیرل پرانتوں میں اپنے پڑوسی پرانتوں کے بھاشا بھاشی کافی تعداد میں بسے ہوئے ہیں. ہاں، وہ بکھرے ہوئے ضرور ہیں . جیسے کہ، میسور میں قریب 25 فیصدی غیر کنڑی ہیں . کیرل میں قریب 15 فیصدی غیر ملیالی ہیں. تمل میں قریب پچاس لاکھ غیر تمل ہیں . آندھر میں کافی تعداد میں تمل اور کنڑی ہیں . اس سے یہ ظاہر ہے کہ اس کے پہلے بھاشا کا کوئی سوال نہیں تھا . روزی کے سوال نے لوگوں کو دوسرے پرانتوں میں بسنے کو مجبور کیا تھا . اتہاس کی گھٹناؤں نے بھی باضابطہ بھاشا وار پرانتوں کو بننے نہیں دیا .

پرجاتنتر میں راج سنتا حاصل کرنے کے لئے جیسا پہلے کہا گیا ہے پرجا سیوکوں کی اچھا جیسے جیسے بڑھتی جاتی ہے ویسے ویسے نئے مسئلے بھی پیدا ہوتے جاتے ہیں جن میں سب سے بڑی اور زیادہ اُلجھی ہوئی سمسیا آج کل بھاشا کی ہے .

اوپر کے آنکڑوں سے معلوم ہوتا ہے کہ ایسے راجیوں کی تعداد جنہوں نے ہندی اپنی صوبائی بھاشا مان لی ہے کل 11 ہے اور اُن کی جن سنکھیا ساڑھے پندرہ کروڑ ہے . باقی 21 کروڑ لوگ 11 بھاشاؤں اور 18 ریاستوں کے بیچ بنٹے ہوئے ہیں . ان میں اگر کشمیر کو چھوڑ دیا جائے تو آسام کی تعداد سب سے چھوٹی ہے—قریب ایک کروڑ کی ہے، اس کے بعد اُڑیسہ کی ہے؛ گجراتی اور ملیالم ڈیڑھ کروڑ سے بھی کم؛ اس کے بعد باقی بھاشاؤں کی. فرض کیا جائے کہ ہر ایک پرانت نے اپنا اپنا کام اپنی اپنی صوبائی بھاشا میں چلانا شروع کر دیا، لوگوں کے بیچ میں اپنی صوبائی بھاشا میں چلانا شروع کر دیا، لوگوں کے بیچ میں اپنی صوبائی بھاشا کا اپنا پن اتنا بڑھ گیا کہ وہ اپنے اپنے پرانت کے لئے زیادہ سے زیادہ ستا حاصل کرنے کی کوشش کرنے لگے اور ایسا اپنا پن ہندی بھاشا بولنے والوں میں بھی اُتنی ہی ماترا میں آگیا جتنا کہ دوسرے پرانتوں میں ہے. تب کیا ہوگا؟ کیا ہندی کے سامنے دوسری بھاشائیں ٹک سکیں گی؟ اس کا صاف صاف ثبوت ہمیں پانا ہو تو پارلیمنٹ کی ہی مثال لے سکتے ہیں . آج کل پارلیمنٹ کے کل ممبروں کی تعداد اس وقت کوئی 485 ہے، وہ نیچے لکھے انوسار بھاشا وار بٹے ہوئے ہیں :—

ہندی	...	210
تیلگو	...	43
مراٹھی	...	40
تمل	...	37
بنگلا	...	34
کنڑ	...	26
پنجابی	...	20
اڑیا	...	20
ملیالم	...	18

राज راج	रक़बा (वर्गमील) رقبہ (ورگ میل)	जन संख्या جن سنکھیا	भाषाएं بھاشائیں
कच्छ کچھ	8 461	567,825	गुजराती گجراتی
जम्मू-कश्मीर جمو - کشمیر	82,258	43,70,000	कश्मीरी کشمیری
मैसूर میسور	29,458	90,71,678	कन्नड़ کنڑ
हैदराबाद حیدرآباد	82,313	1,86,52,964	तेलगू, मराठी, कन्नड़ تیلگو' مراٹھی' کنڑ
तिरुवतांकुर कूचि ترووتانکور کوچی	9,115	92,65,157	तमिल, मलयालम ملیالم' تمل
हिमाचल प्रदेश ہماچل پردیش	10,600	9,89,437	हिन्दी और पंजाबी ہندی اور پنجابی
पैपसू پیپسو	10,099	34,68,631	पंजाबी پنجابی
दिल्ली دلی	574	17,43,992	हिन्दी ہندی
अजमेर اجمیر	2,425	6,92,506	" "
सिक्किम سکم	2,745	1,35,646	" "
कुर्ग کرگ	1,593	2,29,255	कन्नड़ کنڑ
बिलासपूर بلاس پور	453	1,27,566	हिन्दी ہندی
अंडमान-निकोबार انڈمان نیکوبار	3,143	30,963	" "
त्रिपुरा تریپورا	4,049	6,49,930	बंगला بنگلہ
मनीपुर منی پور	8,620	5,79,058	असामी اسامی

ऊपर के आंकड़े अगर फिर भाषावार बांटे जायं तो नतीजा क़रीब क़रीब इस तरह होगा :—

भाषा	जनसंख्या	
हिन्दी	15 करोड़	50 लाख
तेलुगु	3 "	20 "
मराठी	3 "	0 "
तमिल	2 "	80 "
बंगला	2 "	56 "
कन्नड़	2 "	0 "
उड़िया	1 "	50 "
पंजाबी	1 "	40 "
गुजराती	1 ,,	30 "
मलयालम	1 "	40 "
आसामी, मनिपुरी	1 "	0 "
कश्मीरी		44 "
	36	10

اوپر کے آنکڑے اگر پھر بھاشا وار بانٹے جائیں تو نتیجہ قریب قریب اس طرح ہوگا :—

بھاشا	جن سنکھیا	
ہندی	15 کروڑ	50 لاکھ
تیلگو	3 "	20 "
مراٹھی	3 "	0 "
تمل	2 "	80 "
بنگلہ	2 "	56 "
کنڑ	2 "	0 "
اڑیا	1 "	50 "
پنجابی	1 "	40 "
گجراتی	1 "	30 "
ملیالم	1 "	40 "
آسامی ملی پوری	1 "	0 "
کشمیری		44 "
	36	10

जब भाषावार रियासतें बनेंगी जैसा कि इस वक़्त मांग की जा रही है और ऊपर लिखी तादाद के अनुसार रियासतें बनाई जायंगी तो इसका यह मतलब नहीं कि उन रियासतों में दूसरे भाषा भाषी नहीं रहेंगे. भाषावार प्रान्त जब बनेंगे तो उन दो भाषा बोलने वालों को भी अपनी सूबाई भाषा को ही मानना पड़ेगा और उसी में कारोबार चलाना पड़ेगा— ऐसा एक मत है. दूसरा मत यह है कि हर एक भाषा भाषी को अपनी मातृ भाषा का उपयोग करने का हक़ भी रहेगा बशर्ते कि उनकी तादाद काफ़ी हो. मिसाल के लिए दक्खिन भारत को ही ले लिया जाय. कन्नड़, तेलुगु, तामिल और

جب بھاشا وار ریاستیں بنیں گی جیسا کہ اس وقت مانگ کی جا رہی ہے اور اوپر لکھی تعداد کے انوسار ریاستیں بنائی جائینگی تو اس کا یہ مطلب نہیں کہ ان ریاستوں میں دوسرے بھاشا بھاشی نہیں رہیں گے ۔ بھاشا وار پرانت جب بنیں گے تو ان دو بھاشا بولنے والوں کو بھی اپنی صوبائی بھاشا کو ہی ماننا پڑے گا اور اسی میں کاروبار چلانا پڑے گا—ایسا ایک مت ہے ۔ دوسرا مت یہ ہے کہ ہر ایک بھاشا بھاشی کو اپنی ماتر بھاشا کا اپیوگ کرنے کا حق بھی رہے گا بشرطیکہ ان کی تعداد کافی ہو ۔ مثال کے لئے دکھن بھارت کو ہی لے لیا جائے۔ کنڑ' تیلگو' تمل اور

हो सकता है कि चूंकि हमारे राज की आमदनी कम है, इस से दो भाशा बोलने वाली मिली जुली भाशा-भाशी जनता को भी अपने राज के अन्दर मिलाएं, तो उसकी आमदनी बढ़ सकती है और उस आमदनी के ज़रिये जनता का भला हो सकता है. इसलिये हमें अपनी-अपनी भाशा का राज क्षेत्र बढ़ाना चाहिये. एक तीसरा कारन यह है कि हम प्रजातन्त्र का मतलब तादाद मानने लग गये हैं. तादाद में हमारा विश्वास बहुत ज़ियादा बढ़ता जा रहा है. क्योंकि जब तक ज़ियादा तादाद में हमारे आदमी न हों तब तक राजकाजी सत्ता हमें नहीं मिल सकती. लोकशाही की बुनियाद में, जैसा कि पिछले चुनाव में देखा गया कि तादाद का बल क्या है. इस तरह अपनी और अपने हिमायतों की तादाद बढ़ाने की मनोवृत्ति भाशा क्षेत्रों में भी आ गई है. अगर किसी भाशा के बोलनेवाले ज़ियादा तादाद में मिलें, तो वह अपने को बलवान मानते हैं. हम चूंकि मानते हैं कि मातृभाशा के प्रति प्रेम स्वाभाविक है इसलिये इसके ज़रिये अपनी तादाद बढ़ाना चाहते हैं या शायद हमारी भाशा के झगड़े में किसी जगह पर तीनों कारन मौजूद हैं तो किसी जगह पर दो और किसी जगह पर एक. हां, तादाद का मोह सब से बलवान है.

हमारा देश इस समय 29 रियासतों में बंटा हुआ है और इन 29 रियासतों में 12 भाशाएं चालू हैं. कुछ रियासतें ऐसी हैं, जिनमें एक ही भाशा को माना गया है, कुछ में दो और कुछ रियासतों में तीन और कुछ में चार को. भारत की रियासतों का और उनकी भाशाओं का ब्योरा यों है :—

ہو سکتا ہے کہ چونکہ ہمارے راج کی آمدنی کم ہے' اس سے دو بھاشا بولنے والی ملی جلی بھاشا بھاشی جنتا کو بھی اپنے راج کے اندر ملائیں' تو اس کی آمدنی بڑھ سکتی ہے اور اس آمدنی کے ذریعے جنتا کا بھلا ہو سکتا ہے . اس لئے ہمیں اپنی اپنی بھاشا کا راج چھیتر بڑھانا چاہئے . ایک تیسرا کارن یہ ہے کہ ہم پرجاتنتر کا مطلب تعداد ماننے لگ گئے ہیں. تعداد میں ہمارا وشواس بہت زیادہ بڑھتا جارہا ہے. کیونکہ جب تک زیادہ تعداد میں ہمارے آدمی نہ ہوں تب تک راج کاجی ستا ہمیں نہیں مل سکتی . لوک شاہی کی بنیاد میں' جیسا کہ پچھلے چناؤ میں دیکھا گیا کہ تعداد کا بل کیا ہے . اس طرح اپنی اور اپنے حمایتوں کی تعداد بڑھانے کی منوورتی بھاشا چھیتروں میں بھی آ گئی ہے . اگر کسی بھاشا کے بولنے والے زیادہ تعداد میں ملیں' تو وہ اپنے کو بلوان مانتے ہیں . ہم چونکہ مانتے ہیں کہ ماتر بھاشا کے پرتی پریم سوابھاوک ہے اس لئے اس کے ذریعے اپنی تعداد بڑھانا چاہتے ہیں یا شاید ہماری بھاشا کے جھگڑے میں کسی جگہ پر تینوں کارن موجود ہیں تو کسی جگہ پر دو اور کسی جگہ پر ایک . ہاں' تعداد کا موہ سب سے بلوان ہے .

ہمارا دیش اس سمے 29 ریاستوں میں بٹا ہوا ہے اور ان 29 ریاستوں میں 12 بھاشائیں چالو ہیں . کچھ ریاستیں ایسی ہیں' جن میں ایک ہی بھاشا کو مانا گیا ہے' کچھ میں دو اور کچھ ریاستوں میں تین اور کچھ میں چار کو . بھارت کی ریاستوں کا اور ان کی بھاشاؤں کا بیورا یوں ہے :—

राज / راج	रक़बा (वर्गमील) / رقبہ (ورگ میل)	जन संख्या / جن سنکھیا	भाशाएं / بھاشائیں
उत्तरप्रदेश اتر پردیش	1,12,523	6,32,54,118	हिन्दी ہندی
बिहार بہار	70,368	4,02,18,916	,, ,,
बम्बई بمبئی	1,15,570	3,59,43,559	मराठी, गुजराती, कन्नड़ مراٹھی' گجراتی' کنڑ
मद्रास مدراس	1,27,768	5,69,52,332	तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम تمل' تیلگو' کنڑ' ملیالم
मध्यप्रदेश مدھ پردیش	1,30,323	2,13,27,898	हिन्दी और मराठी ہندی اور مراٹھی
पंजाब پنجاب	37,428	126,38,611	पंजाबी پنجابی
पच्छमी बंगाल پچھمی بنگال	29,476	2,47,86,683	बंगला بنگلہ
उड़ीसा اڑیسہ	59,869	1,46,44,293	उड़िया اڑیا
आसाम آسام	54,084	91,29,442	असामी آسامی
राजस्थान راجستھان	1,28,424	1,52,97,979	हिन्दी ہندی
मध्य भारत مدھیہ بھارت	46,610	79,41,642	,, ,,
विन्ध्यप्रदेश وندھیہ پردیش	24,600	35,77,431	,, ,,
भोपाल بھوپال	6,921	8,38,107	,, ,,
सौराष्ट्र سوراشٹر	21,062	41,36,005	गुजराती گجراتی

अपने भाई की तरह मानते हैं और उसके अनुसार हम अपना परिवारिक, सामाजिक, आर्थिक और राजकाजी गठ बन्धन कर लेते हैं. अगर हमारे देश के लोग सहज ही सभी सूबों में समझी जाने वाली किसी एक भाशा को अपनी सूबाई भाशाओं के साथ साथ समझ लेते तो भाशा के सवाल को ले कर हमारे देश में इतनी चख चख नहीं होती. पता नहीं, वह जमाना कब आएगा जब कि इस देश के निवासी अपनी भाशा के साथ साथ देश की दूसरी भाशा को भी समझ सकें. ऐसी कोशिश तो हम लोगों की 50 साल से जारी है. लेकिन जितनी सफलता की उम्मीद थी अब तक हम को नहीं मिली. इस बीच में मराठी, गुजराती, बंगला, हिन्दी, पंजाबी वगैरा पड़ोसी भाशाओं और संघ की भाशा हिन्दी के बीच में रोजाना झगड़ा चलता आ रहा है.

बंगाली और बिहारी अपने सूबे की सरहद के फ़ैसले के बारे में बहुत पुराना झगड़ा जारी किये हुए हैं. पंजाबी और हिन्दी के बीच में झगड़ा कम नहीं हो रहा है. हिन्दी और मराठी के बारे में मध्यप्रदेश के कारकर्ताओं में हमेशा कानाफूसी रहती है. सिरोही के मसले को लेकर राजस्थान और गुजरात के बीच में कम झगड़ा नहीं है.

तमिल और तेलुगु के बीच में झगड़ा बहुत पुराना है जिसके फलस्वरूप आन्ध्र के लोग अपना प्रान्त अलग करना चाहते हैं; करनाटक और मराठी सदियों से पड़ोसी होने पर भी आज अपने-अपने हक़ों के बारे में ऐसे जागरूक हैं कि समय आए तो लड़ पड़ें. कन्नड़ और तेलुगु लोगों के बीच में बल्लारी जिले को लेकर जो झगड़ा शुरू हुआ अब तक शान्त नहीं हुआ. क्या भाशा हमें अपने जीवन की सुविधा के लिये और सेवा के साधन के लिये ही नहीं बल्कि अपने अड़ोस पड़ोस के लोगों के साथ झगड़ा करने के लिये भी चाहिये ?

अगर हमें एक की जगह दो भाशाएँ मालूम हों और दोनों के ज़रिये हम अपने और अपने समाज की सेवा कर सकते हों तो क्या नुक़सान होगा ? हम इतने कट्टर क्यों हैं कि अपने पड़सियों को, जो हम से अलग भाशा बोलते हैं, अपने से जुदा समझते हैं ? हम उस क्षेत्र को अपने क्षेत्र में क्यों मिलाना चाहते हैं जो भाशा के अनुसार हम समझते हैं कि हमें मिल सकता है ? इस के जरूर कुछ कारन होंगे. इस मनोवृत्ति की वजह से जो मनमुटाव पैदा हो रहा है उसे दूर करना हमारा धर्म है. उन कारनों में एक खास कारन यह हो सकता है कि भाशा के ज़रिये हम अपने देश की लोकशाही का संगठन करना चाहते हैं और चूंकि हमारे क्षेत्र की प्रजा एक खास भाशा बोलती है, इसलिये इसके संगठन में उसका क्षेत्र दो भाशा वाला क्षेत्र हो तो निश्चित नेतृत्व के अन्दर नहीं आ सकता. इसलिये हमें अपने क्षेत्र को अपनी भाशा से बांधना चाहिये. एक दूसरा कारन यह

اپنے بھائی کی طرح مانتے ہیں اور اس کے انوسار ہم اپنا پریوارک، ساماجک، آرتھک اور راج کاجی گٹھبندھن کر لیتے ہیں. اگر ہمارے دیش کے لوگ سہج ہی سبھی صوبوں میں سمجھی جانے والی کسی ایک بھاشا کو اپنی صوبائی بھاشاؤں کے ساتھ ساتھ سمجھ لیتے تو بھاشا کے سوال کو لے کر ہمارے دیش میں اتنی چخ چخ نہیں ہوتی. پتا نہیں، وہ زمانہ کب آئے گا جب کہ اس دیش کے نواسی اپنی بھاشا کے ساتھ ساتھ دیش کی دوسری بھاشا کو بھی سمجھ سکیں. ایسی کوشش تو ہم لوگوں کی 50 سال سے جاری ہے. لیکن جتنی سپھلتا کی امید تھی اب تک ہم کو نہیں ملی. اس بیچ میں مراٹھی، گجراتی، بنگلا، ہندی، پنجابی وغیرہ پڑوسی بھاشاؤں اور سنگھ کی بھاشا ہندی کے بیچ میں روزانہ جھگڑا چلتا آ رہا ہے.

بنگالی اور بہاری اپنے صوبے کی سرحد کے فیصلے کے بارے میں بہت پرانا جھگڑا جاری کئے ہوئے ہیں. پنجابی اور ہندی کے بیچ میں جھگڑا کم نہیں ہو رہا ہے. ہندی اور مراٹھی کے بارے میں مدھیہ پردیش کے کاریہ کرتاؤں میں ہمیشہ کانا پھوسی رہتی ہے. سروہی کے مسئلے کو لے کر راجستھان اور گجرات کے بیچ میں کم جھگڑا نہیں ہے.

تمل اور تیلگو کے بیچ میں جھگڑا بہت پرانا ہے جس کے پھل سوروپ آندھر کے لوگ اپنا پرانت الگ کرنا چاہتے ہیں؛ کرناٹک اور مراٹھی صدیوں سے پڑوسی ہونے پر بھی آج اپنے اپنے حقوں کے بارے میں ایسے جاگروک ہیں کہ سمے آئے تو لڑ پڑیں. کنڑ اور تیلگو لوگوں کے بیچ میں بلاری ضلعے کو لے کر جو جھگڑا شروع ہوا اب تک شانت نہیں ہوا. کیا بھاشا ہمیں اپنے جیون کی سویدھا کے لئے اور سیوا کے سادھن کے لئے ہی نہیں بلکہ اپنے اڑوس پڑوس کے لوگوں کے ساتھ جھگڑا کرنے کے لئے بھی چاہئے؟

اگر ہمیں ایک کی جگہ دو بھاشائیں معلوم ہوں اور دونوں کے ذریعے ہم اپنے اور اپنے سماج کی سیوا کر سکتے ہوں تو کیا نقصان ہوگا؟ ہم اتنے کٹر کیوں ہیں کہ اپنے پڑوسیوں کو، جو ہم سے الگ بھاشا بولتے ہیں، اپنے سے جدا سمجھتے ہیں؟ ہم اس چھیتر کو اپنے چھیتر میں کیوں ملانا چاہتے ہیں جو بھاشا کے انوسار ہم سمجھتے ہیں کہ ہمیں مل سکتا ہے؟ اس کے ضرور کچھ کارن ہونگے. اس منوورتی کی وجہ سے جو من مٹاؤ پیدا ہو رہا ہے اسے دور کرنا ہمارا دھرم ہے. ان کارنوں میں ایک خاص کارن یہ ہو سکتا ہے کہ بھاشا کے ذریعے ہم اپنے دیش کی لوک شاہی کا سنگٹھن کرنا چاہتے ہیں اور چونکہ ہمارے چھیتر کی پرجا ایک خاص بھاشا بولتی ہے، اس لئے اس کے سنگٹھن میں اسکا چھیتر دو بھاشا والا چھیتر ہو تو نشچت نیترتو کے اندر نہیں آ سکتا. اس لئے ہمیں اپنے چھیتر کو اپنی بھاشا سے باندھنا چاہئے. ایک دوسرا کارن یہ

प्रजातंत्र भारत में भाषावार प्रान्त

(मो० सत्यनारायन)

भारत एक बहुत बड़ा भू खंड है. दो हिस्सों में बंटने पर भी आज इसकी आबादी चीन को छोड़ कर दुनिया के किसी भी देश से कम नहीं है. इसकी आबादी रूस और अमरीका दोनों की मिली हुई आबादी से भी बड़ी है. 1951 की मर्दुमशुमारी के अनुसार 36,12,61,624 आदमी इस देश में रहते हैं. यह 1,22,17,200 वर्ग मीलों में बंटा हुआ है. इस देश में सभी तरह की आब हवा मिलती है और बहुत पुरानी जातियां बसती हैं.

हमारा देश जितना बड़ा है, उतनी ही बड़ी बड़ी समस्याएं भी हमारे सामने हैं. अब तक इस देश के सामने हिन्दू-मुसलमान सामप्रदायिक संघर्ष एक बहुत बड़ा मसला था. लाख कोशिश करने पर भी हम उसे हल नहीं कर पाए. आखिर उसका हल हमें अपने देश को मुसलमान हिन्दुस्तान, हिन्दू हिन्दुस्तान के तौर पर दो हिस्सों में बांटने से ही मिला.

सामप्रदायिक संघर्ष के बाद हमारे देश में भाषा के मसले को ले कर काफी बहस मुबाहसा हुआ. बहुत बड़ा देश होने के कारन यह स्वाभाविक है कि हमारे देश के लोग अपने अपने प्रदेशों में अपनी अपनी भाषाएं बोलें और यह भाषाएं मुहावरा, आवाज़, रचना को ले कर एक दूसरे से अलग हों पिछले 50 बरसों से हमने अपनी भाषाओं को ज़ियादा ठोस और प्रमानिक बनाने की कोशिश की. हम आज सर जार्ज की ग्रियर्सन की रिपोर्ट के अनुसार सैकड़ों भाषाओं के बीच में बंटे हुए नहीं हैं. हमारे देश में आज कुल 12 भाषाएं हैं. प्राचीन भाषा संस्कृत और जगह जगह फैली हुई दूसरी भाषाएं और उर्दू को मिला कर कुल 14 भाषाओं को हमने माना है. यही बात विधान की आठवीं सूची में दर्ज है. विधान परिशद ने भारत की सूबाई भाषाओं के और संघ राज की भाषा के बीच का जो सम्बन्ध और संघ राज की भाषा और सूबाई भाषाओं के उपयोग का जो फ़ैसला किया उसका ब्योरा विधान के सतरहवें अध्याय में दिया गया है.

वैसे तो भाषा एक साधन मात्र है. उसके द्वारा एक आदमी को दूसरे आदमी से बोलने की सुविधा मिलती है. हमारे जीवन में अकसर सभी क्षेत्रों में इस सुविधा की ज़रूरत पड़ती है. एक दूसरे की भाषा को समझने की सुविधा से हम एक दूसरे के नज़दीक आते हैं. जो हमारे नज़दीक होते हैं और हमारी भाषा समझते हैं, उन्हें हम

پرجاتنتر بھارت میں بھاشاوار پرانت

(مو. ستیہ نارائن)

بھارت ایک بہت بڑا بھوکھنڈ ہے . دو حصوں میں بٹنے پر بھی آج اس کی آبادی چین کو چھوڑ کر دنیا کے کسی بھی دیش سے کم نہیں ہے . اس کی آبادی روس اور امریکہ دونوں کی ملی ہوئی آبادی سے بھی بڑی ہے . 1951 کی مردم‌شماری کے انوسار 36,12,61,624 آدمی اس دیش میں رہتے ہیں. یہ 1,22,17,200 ورگ میلوں بٹا ہوا ہے . اس دیش میں سبھی طرح کی آب و ہوا ملتی ہے اور بہت پرانی جاتیاں بستی ہیں .

ہمارا دیش جتنا بڑا ہے، اتنی ہی بڑی بڑی سمسیائیں بھی ہمارے سامنے ہیں . اب تک اس دیش کے سامنے ہندو مسلمان سامپردائک سنگھرش ایک بہت بڑا مسئلہ تھا . لاکھ کوشش کرنے پر بھی ہم اسے حل نہیں کر پائے . آخر اس کا حل ہمیں اپنے دیش کو مسلمان ہندستان، ہندو ہندستان کے طور پر دو حصوں میں بانٹنے سے ہی ملا .

سامپرائیک سنگھرش کے بعد ہمارے دیش میں بھاشا کے مسئلہ کو لے کر کافی بحث مباحثہ ہوا . بہت بڑا دیش ہونے کے کارن یہ سوابھاوک ہے کہ ہمارے دیش کے لوگ اپنے اپنے پردیشوں میں اپنی اپنی بھاشائیں بولیں اور یہ بھاشائیں محاورہ، آواز، رچنا کو لے کر ایک دوسرے سے الگ ہوں . پچھلے 50 برسوں سے ہم نے اپنی بھاشاؤں کو زیادہ ٹھوس اور پرمانک بنانے کی کوشش کی . ہم آج سر جارج گریرسن کی رپورٹ کے انوسار سیکڑوں بھاشاؤں کے بیچ میں بٹے ہوئے نہیں ہیں. ہمارے دیش میں آج کل 12 بھاشائیں ہیں. پراچین بھاشا سنسکرت اور جگہ جگہ پھیلی ہوئی دوسری بھاشائیں اور اردو کو ملا کر کل 14 بھاشاؤں کو ہم نے مانا ہے . یہی بات ودھان کی آٹھویں سوچی میں درج ہے . ودھان پریشد نے بھارت کی صوبائی بھاشاؤں کے اور سنگھ راج کی بھاشا کے بیچ کا جو سمبندھ اور سنگھ راج کی بھاشا اور صوبائی بھاشاؤں کے اپیوگ کا جو فیصلہ کیا اس کا بیورا ودھان کے سترھویں ادھیائے میں دیا گیا ہے .

ویسے تو بھاشا ایک سادھن ماتر ہے . اس کے دوارا ایک آدمی کو دوسرے آدمی سے بولنے کی سویدھا ملتی ہے. ہمارے جیون میں اکثر سبھی چھیتروں میں اس سویدھا کی ضرورت پڑتی ہے. ایک دوسرے کی بھاشا کو سمجھنے کی سویدھا سے ہم ایک دوسرے کے نزدیک آتے ہیں. جو ہمارے نزدیک ہوتے ہیں اور ہماری بھاشا سمجھتے ہیں، انہیں ہم

नक़ल करे और आप के सत्याग्रह का खिलवाड़ करे. हम आप के साथ रहे हैं जितना हम सत्याग्रह को समझते हैं उतना यह क्या समझ सकते हैं जिन्होंने आप के कभी दर्शन भी नहीं किये. भला तनख़ा न लेना कोई सत्याग्रह हो सकता है, यह तो एक तरह का असहयोग हुआ, और असहयोग कहीं अपनी सरकार से किया जाता है! आप ने असहयोग किया था तो उस सरकार से किया था जो विदेशी थी! भला, यह अपनी सरकार को विदेशी सरकार की तरह समझते हैं तब इन के साथ कोई रियायत कैसे की जा सकती है, और फिर हम भी तो निर्दयी कैसे बन सकते हैं! यह हम कैसे बरदाश्त कर सकते हैं कि एक आदमी हमारी नौकरी ठीक ठीक बजाए, ठीक वक़्त पर आए और ठीक वक़्त पर जाय और खाने के लिये तनख़ा न ले फिर वह जियेगा कैसे? यह तो एक तरह की ख़ुदकुशी यानी आत्मघात हुआ, और आत्मघात क़ानून की नज़र में जुर्म है, फिर ऐसे मुजरिमों को सज़ा न दी जाय तो क्या किया जाय! हमारे इस काम पर कुछ लोग उंगली उठाएं तो उठाएं, हम परवा क्यों करें?

बापू, आप के जीवन का फ़िलसफ़ा कुछ इस क़िस्म का है जिसे हम लोग ही समझ सकते हैं क्योंकि हम आप के साथ रहे हैं. दूसरे लोग तो उस का मज़ाक़ ही उड़ा सकते हैं या भद्दी नक़ल कर सकते हैं. अच्छा, उड़ायें मज़ाक़, करें नक़ल और भुगतें उसका नतीजा.

क्यों बापू हम ठीक कहते हैं न!

आप चुप हैं, हम समझ गए, चुप रहना एक तरह हां ही है.

—भगवानदीन

نقل کرے اور آپ کے ستیاگرہ کا کھلواڑ کرے . ہم آپ کے ساتھ رہے ہیں جتنا ہم ستیا گرہ کو سمجھتے ہیں اتنا یہ کیا سمجھ سکتے ہیں جنہوں نے آپ کے کبھی درشن بھی نہیں کئے. بھلا تنخواہ نہ لینا کوئی ستیاگرہ ہوسکتا ہے' یہ تو ایک طرح کا اسہیوگ ہوا! اور اسہیوگ کہیں اپنی سرکار سے کیا جاتا ہے! آپ نے اسہیوگ کیا تھا تو اُس سرکار سے کیا تھا جو ودیشی تھی! بھلا' یہ اپنی سرکار کو ودیشی سرکار کی طرح سمجھتے ہیں تب اِن کے ساتھ کوئی رعایت کیسے کی جا سکتی ہے' اور پھر ہم بھی تو نردئی کیسے بن سکتے ہیں! یہ ہم کیسے برداشت کر سکتے ہیں کہ ایک آدمی ہماری نوکری ٹھیک ٹھیک بجائے' ٹھیک وقت پر آئے اور ٹھیک وقت پر جائے اور کھانے کے لئے تنخواہ نہ لے پھر وہ جئے گا کیسے؟ یہ تو ایک طرح کی خود کشی یعنی آتم گھات ہوا' اور آتم گھات قانون کی نظر میں جرم ہے' پھر ایسے مجرموں کو سزا نہ دی جائے تو کیا کیا جائے! ہمارے اِس کام پر کچھ لوگ اُنگلی اُٹھائیں تو اُٹھائیں' ہم پرواہ کیوں کریں؟

باپو' آپ کے جیون کا فلسفہ کچھ اِس قسم کا ہے جسے ہم لوگ ہی سمجھ سکتے ہیں کیونکہ ہم آپ کے ساتھ رہے ہیں . دوسرے لوگ تو اُس کا مذاق ہی اُڑا سکتے ہیں یا بھدی نقل کر سکتے ہیں . اچھا' اُڑائیں مذاق' کریں نقل، اور بھگتیں اُس کا نتیجہ .

کیوں باپو ہم ٹھیک کہتے ہیں!

آپ چپ ہیں' ہم سمجھ گئے' چپ رہنا ایک طرح ہاں ہی ہے .

—بھگوان دین

एक ख़ास मियाद के अन्दर हर सूबे की अदालतों और असेम्बलियों का काम काज उसी सूबे की भाषा में जारी होना चाहिये. अपील की आख़री अदालत की ज़बान हिन्दुस्तानी क़रार दी जाय, लिखावट चाहे देव नागरी हो या फ़ारसी. सेन्ट्रल गवर्नमेन्ट और असेम्बलियों की भाषा भी हिन्दुस्तानी ही हो. अन्तर राष्ट्री राज व्योहार की भाषा अंगरेज़ी रहे. मुझे भरोसा है कि अगर आपको यह तजवीज़ अपने विचार के मुताबिक़ नज़र न आई और आपने यह ख़याल किया कि मैं स्वराज की इच्छा में हद से बाहर चला गया हूँ तो भी आप छूटते ही इसकी हंसी न उड़ाने लगेंगे.

—महात्मा गांधी

ایک خاص میعاد کے اندر ہر صوبے کی عدالتوں اور اسمبلیوں کا کام کاج اُسی صوبے کی بھاشا میں جاری ہونا چاہئے . اپیل کی آخری عدالت کی زبان ہندستانی قرار دی جائے' لکھاوٹ چاہے دیوناگری ہو یا فارسی . سینٹرل گورنمنٹ اور اسمبلیوں کی بھاشا بھی ہندستانی ہی ہو . انتر راشٹری راج بیوہار کی بھاشا انگریزی رہے . مجھے بھروسہ ہے کہ اگر آپ کو یہ تجویز اپنے وچار کے مطابق نظر نہ آئی اور آپ نے یہ خیال کیا کہ میں سوراج کی اچھا میں حد سے باہر چلا گیا ہوں تو بھی آپ چھوٹتے ہی اِس کی ہنسی نہ اُڑانے لگیں گے .

—مہاتما گاندھی

जल्दी आज़ाद कर सकते हैं और इसी अक़ीदे के आधार पर हम आपकी समाधी से अपना माथा रगड़ते हैं और समझते हैं कि इतना कर लेने भर से हम ज़रूर भारत को हमेशा आज़ाद बनाए रखेंगे ! कुछ ना समझ हमारे इस काम को झूटी मूरत पूजा समझते रहें तो समझते रहें !

बापू, आप देश की ख़ातिर हमेशा ख़ून बहाने के लिये तैयार रहते थे, हम भी आप की तरह हमेशा ख़ून बहाने के लिये तैयार हैं. फ़र्क़ इतना है कि आप हम से बहुत पीछे थे हम आप से बहुत आगे हैं. आप सिर्फ़ अपना ख़ून बहा सकते थे, हम देश की ख़ातिर अपनों का बहा सकते हैं, बहाते हैं, ज़रूरत पड़े तो बहाने को तैयार मिलेंगे. ग़ैरों के ख़ून बहाने की तो बात ही क्या ? रही अपने तन की बात उसका ख़ून हम कैसे बहायें, और कैसे बहने दें ? वह तो अब हमारा है ही नहीं, वह तो देश और समाज का हो चुका, उस के तो हम ट्रस्टी भर हैं ! हमारी इतनी सीधी बात न जाने कुछ लोग क्यों नहीं समझ पाते, और हां, बापू, आपको भी सब लोग कहां समझ पाए !

बापू, हम तलवार की नोक से लोगों को सच बोलना सिखा कर रहेंगे, बड़ी बड़ी सज़ाएं दे कर लोगों को ईमानदार बना देंगे और लाखों झूटे लालच दे कर लोगों को अहिंसक बना कर छोड़ेंगे. आप के सत्य और अहिंसा दोनों व्रतों को जैसे बनेगा वैसे क़ायम रखेंगे.

बापू, आप यह न समझना कि हम सिर्फ़ आप के दो ही व्रतों पर ध्यान रखेंगे. हमें वह श्लोक अच्छी तरह याद है जिसमें आपके सब के सब ग्यारह व्रत आ जाते हैं. व्रतों के मामले में हम आप के अनासक्तयोग के क़ायल हैं. हम स्वादिश्ट से स्वादिश्ट चीज़ और चटपटी गरम मसालेदार चीज़ें जब भी खाते हैं तो उस में कोई आसक्ती नहीं रखते. इस अनासक्ती की बात को लोग समझते हैं नहीं, हम पर चटोरा होने का इलज़ाम लगाते हैं. लगाया करें ! जैसे बापू आप अपने टीकाकारों की परवा न कर के अपने काम में लगे रहते थे, वैसे ही हम टीकाकारों की तरफ़ से अपने कानों को बन्द कर देश की तरक़्क़ी में जुटे हुए हैं !

बापू, आप को ग़ुस्सा नहीं आता था, क्योंकि आप से बढ़ कर आप के कामों की कोई नक़ल करने वाला आप के सामने था ही नहीं ! ग़ुस्सा तो हमें भी नहीं आना चाहिये और अकसर नहीं भी आता पर आप की तरह जब कोई सत्याग्रह कर बैठे जो असल में होगी तो नक़ल पर वह कहेगा उसे असल, तब हमें ग़ुस्सा आ जाता है और फिर ऐसे ही सत्याग्रही या सत्याग्रहियों का हम पुलिस और फ़ौज से मुक़ाबला करते हैं और मिन्टों में ठीक कर देते हैं. हम यह हरगिज़ गवारा नहीं कर सकते कि कोई आप की भद्दी

جلدی آزاد کرسکتے ھیں اور اسی عقیدے کے آدھار پر ہم آپ کی سمادھی سے اپنا ماتھا رگڑتے ھیں اور سمجھتے ھیں کہ اِتنا کرلینے بھر سے ہم ضرور بھارت کو ھمیشہ آزاد بنائے رکھینگے ! کچھ نا سمجھ ھمارے اِس کام کو جھوٹی مورت پوجا سمجھتے رھیں توسمجھتے رھیں !

باپو، آپ دیش کی خاطر ھمیشہ خون بہانے کے لئے تیار تھے، ہم بھی آپ کی طرح ھمیشہ خون بہانے کے لئے تیار ھیں . فرق اتنا ھے کہ آپ ہم سے بہت پیچھے تھے ہم آپ سے بہت آگے ھیں . آپ صرف اپنا خون بہا سکتے تھے، ہم دیش کی خاطر اپنوں کا بہا سکتے ھیں، بہاتے ھیں، ضرورت پڑے تو بہانے کو تیار ملیں گے . غیروں کے خون بہانے کی تو بات ھی کیا ؟ رھی اپنے تن کی بات اُس کا خون ہم کیسے بہائیں اور کیسے بہنے دیں ؟ وہ تو اب ھمارا ھی نہیں، وہ تو دیش اور سماج کا ھو چکا، اس کے تو ہم ٹرسٹی بھر ھیں ! ھماری اتنی سیدھی بات نہ جانے کچھ لوگ کیوں نہیں سمجھ پاتے، اور ھاں، باپو، آپ کو بھی سب لوگ کہاں سمجھ پائے !

باپو، ہم تلوار کی نوک سے لوگوں کو سچ بولنا سکھا کر رھیں گے، بڑی بڑی سزائیں دے کر لوگوں کو ایماندار بنا دیں گے اور لاکھوں جھوٹے لالچ دے کر لوگوں کو اہنسک بنا کر چھوڑینگے . آپ کے ستیہ اور اہنسا دونوں برتوں کو جیسے بنیگا ویسے قائم رکھیں گے .

باپو، آپ یہ نہ سمجھنا کہ ہم صرف آپ کے دو ھی برتوں پر دھیان رکھیں گے . ھمیں وہ اِشلوک اچھی طرح یاد ھے جس میں آپکےسب کے سب گیارہ برت آجاتے ھیں. برتوں کے معاملے میں ہم آپ کے اناسکتیوگ کے قائل ھیں . ہم سوادشٹ سے سوادشٹ چیز اور چٹپٹی گرم مسالے دار چیزیں جب بھی کھاتے ھیں تو اُس میں کوئی آسکتی نہیں رکھتے . اس اناسکتی کی بات کو لوگ سمجھتے ھیں، نہیں ہم پر چٹورا ھونے کا الزام لگاتے ھیں . لگایا کریں! جیسےباپو آپ اپنےٹیکہ کاروں کیپرواہ نہ کر کے اپنے کام میں لگے رھتے تھے، ویسے ھی ہم ٹیکہ کاروں کی طرف سے اپنے کانوں کو بند کر دیش کی ترقی میں جٹے ھوئے ھیں !!

باپو، آپ کو غصہ نہیں آتا تھا، کیونکہ آپ سے بڑھکر آپ کے کاموں کی کوئی نقل کرنے والا آپ کے سامنے تھا ھی نہیں ! غصہ تو ھمیں بھی نہیں آنا چاھئے اور اکثر نہیں بھی آتا پر آپ کی طرح جب کوئی ستیاگرہ کر بیٹھے جو اصل میں ھوگی تو نقل پر وہ کہے گا اُسے اصل، تب ھمیں غصہ آ جاتا ھے اور پھر ایسے ھی ستیاگرھی یا ستیاگرھیوں کا ہم پولیس اور فوج سے مقابلہ کرتے ھیں اور منٹوں میں ٹھیک کر دیتے ھیں . ہم یہ ہرگز گوارا نہیں کر سکتے کہ کوئی آپ کی بھدی

बापू, ऊपर की बातें तो हमने यों ही कह दीं. असल में हम यह कहना चाहते हैं कि हमने यह समझ लिया है कि हम अपने देह के ट्रस्टी हैं ! यह देह देश का है ! बस इसी नाते, बापू, हम इसको हर तरह का आराम पहुंचाते हैं, अपनी खातिर नहीं सिर्फ अपने इस जिस्म की खातिर, जिसके हम ट्रस्टी हैं, मालिक किसी तरह नहीं. कुछ जुटा लेते हैं, तो, न जाने, इस बात को ले कर कुछ मूरख क्यों हाय तोबा मचा उठते हैं ? हम कुछ अपने लिये मोटर थोड़े रखते हैं. हम तो उस तन की खातिर रखते हैं जिसके हम ट्रस्टी हैं ! हम अपने तन को बढ़िया से बढ़िया माल खिलाते हैं क्योंकि वह हमारा नहीं है ! वह देश का है ! हमारे पास धरोहर है ! हम तो उसके ट्रस्टी भर हैं ! उस तन को तकलीफ़ दे कर क्या हम अपने कर्तव्य को बट्टा नहीं लगायंगे ! कुछ मूरख चिल्लाते रहें कि हम हज़ार हज़ार, पांच पांच हज़ार, तनखा लेते हैं, हम उनकी एक नहीं सुनेंगे ! और हम तन को अपनी ट्रस्टीशिप में किसी तरह दुबला नहीं होने देंगे ! आपने भी कब किसी सेठ को दुबला होने दिया था ! हां, आप भी तो जीते जी अपने को अपने तन के ट्रस्टी समझते रहे और मरते दम तक उसे ऐसा ही चिकना चुपड़ा रखा जैसा कोई असली मालिक उसे रखता ! क्या आपके खाने पीने पर लोगों की उंगलियां नहीं उठीं थीं ! और क्या आपने दो टूक जवाब नहीं दिया था ? बापू, इस मामले में हम आपसे बहुत आगे बढ़ गए हैं ! हम पर यह कह कर लाखों करोड़ों उंगलियां उठती हैं कि हम बड़ी बड़ी तनखाहें लेते हैं, सेठों से भी ज़ियादा मोटे हो गए हैं, और, न जाने, क्या क्या, पर हम हैं, कि उसकी कौड़ी भर परवा नहीं करते ! आप दो टूक जवाब देते थे, हम सौ टूक जवाब देते हैं !

आपके ट्रस्टी के विचार की जय !

बापू, लोगों का मुंह बन्द करने के लिये हम कभी किसी का वेतन आधा कर देते हैं, पर, बापू, आप घबरायें नहीं. हम वैसा कर के भी टोटे में नहीं रहते ! टोटे में रह कर क्या हम अपने ट्रस्टी शिप को बट्टा लगायंगें ? हमें तो जो तन देश वालों ने धरोहर के तौर पर दे रखा है उसको लाख जतन कर के वैसा ही बनायें रखेंगे जैसा आप बनाए रखते थे !

बापू, हीरो वर्शिप यानी नायक पूजा में हम आप से बहुत आगे निकल गए हैं. आपने लोकमान्य तिलक की रथी को कंधा भर लगाया था और ऐसे ही देशबंधु चित रंजन दास और भाई मोतीलाल जी की रथी को कंधा दिया था, पर हम तो अपना सिर उस समाधी पर रगड़ डालते हैं जिस के अन्दर आपकी हड्डी के कुछ फूल हैं ! हमारा ख्याल है आपका यह विश्वास ज़रूर रहा होगा कि आप नायकों की रथी को कंधा लगा कर भारत को

باپو' اوپر کی باتیں تو ہم نے یوں ہی کہہ دیں . اصل میں ہم یہ کہنا چاہتے ہیں کہ ہم نے یہ سمجھ لیا ہے کہ ہم اپنے دیہہ کے ٹرسٹی ہیں ! یہ دیہہ دیش کا ہے ! بس اسی ناتے' باپو' ہم اس کو ہر طرح کا آرام پہونچاتے ہیں' اپنی خاطر نہیں صرف اپنے اس جسم کی خاطر' جس کے ہم ٹرسٹی ہیں' مالک کسی طرح نہیں . کچھ جٹا لیتے ہیں' تو' نہ جانے' اس بات کو لیکر کچھ مورکھ کیوں ہائے توبہ مچا اٹھتے ہیں؟ ہم کچھ اپنے لئے موٹر تھوڑے رکھتے ہیں . ہم تو اس تن کی خاطر رکھتے ہیں جس کے ہم ٹرسٹی ہیں ! ہم اپنے تن کو بڑھیا سے بڑھیا مال کھلاتے ہیں کیونکہ وہ ہمارا نہیں ہے ! وہ دیش کا ہے ! ہمارے پاس دھروہر ہے! ہم تو اس کے ٹرسٹی بھر ہیں ! اس تن کو تکلیف دے کر کیا ہم اپنے کرتویہ کو بٹا نہیں لگائینگے! کچھ مورکھ چلاتے رہیں کہ ہم ہزار ہزار' پانچ پانچ ہزار' تنخواہ لیتے ہیں' ہم ان کی ایک نہیں سنینگے ! اور ہم تن کو اپنی ٹرسٹی شپ میں کسی طرح دبلا نہیں ہونے دینگے! آپنے بھی کب کسی سیٹھ کو دبلا ہونے دیا تھا! ہاں' آپ بھی تو جیتے جی اپنے کو اپنے تن کے ٹرسٹی سمجھتے رہے اور مرتے دم تک اسے ایسا ہی چکنا چپڑا رکھا جیسا کوئی اصلی مالک اسے رکھتا ! کیا آپ کے کھانے پینے پر لوگوں کی انگلیاں نہیں اٹھی تھیں ! اور کیا آپ نے دو ٹوک جواب نہیں دیا تھا ؟ باپو' اس معاملے میں ہم آپ سے بہت آگے بڑھ گئے ہیں ! ہم پر یہ کہہ کر لاکھوں کروڑوں انگلیاں اٹھتی ہیں کہ ہم بڑی بڑی تنخواہیں لیتے ہیں' سیٹھوں سے بھی زیادہ موٹے ہوگئے ہیں' اور' نہ جانے' کیا کیا' پر ہم ہیں' کہ اس کی کوڑی بھر پرواہ نہیں کرتے! آپ دو ٹوک جواب دیتے تھے' ہم سو ٹوک جواب دیتے ہیں .

آپ کے ٹرسٹی وچار کی جے !

باپو' لوگوں کا منھ بند کرنے کے لئے ہم کبھی کسی کا ویتن آدھا کر دیتے ہیں' پر' باپو آپ گھبرائیں نہیں . ہم ویسا کرکے بھی ٹوٹے میں نہیں رہتے ! ٹوٹے میں رہ کر کیا ہم اپنے ٹرسٹی شپ کو بٹا لگائینگے؟ ہمیں تو جو تن دیش والوں نے دھروہر کے طور پر دے رکھا ہے اس کو لاکھ جتن کرکے ویسا ہی بنائے رکھینگے جیسا آپ بنائے رکھتے تھے !

باپو' ہیرو ورشپ یعنی نائک پوجا میں ہم آپ سے بہت آگے نکل گئے ہیں . آپنے لوک مانیہ تلک کی رتھی کو کندھا بھر لگایا تھا اور ایسے ہی دیش بندھو چترنجن داس اور بھائی موتی لال جی کی رتھی کو کندھا دیا تھا' پر ہم تو اپنا سر اس سمادھی پر رگڑے ڈالتے ہیں جس کے اندر آپ کی ہڈی کے کچھ پھول ہیں! ہمارا خیال ہے آپ کا یہ وشواس ضرور رہا ہوگا کہ آپ نائکوں کی رتھی کو کندھا لگاکر بھارت کو

हिन्दुस्तानी सही हिन्दी है. यह आपस में तीन बहनें हैं. तीन सोकिनें नहीं. तीन दोस्त हैं, तीन दुश्मन नहीं. अगर इन तीन में से हिन्दी को राजकुमारी बनाया गया है तो बिलकुल ठीक हुआ, उसका अधिकार जियादा था और वह राज गद्दी का हक़ भी रखती थी. राज गद्दी पर बैठ कर उसे पहले से जियादा न्याय करना चाहिये और अपनी आम मक़बूलियत या हर दिल प्रेम बढ़ाने के लिये जनताई भाशा का रूप धारन करना पड़ेगा. आजकल की राज गद्दी साम्राज की गद्दी नहीं होती वह जनता राज की गद्दी होतीहै. अगर हिन्दी इस सचाई को भूल जायगी तो शायद उसका राज गद्दी पर बैठना और बैठ भी जाय तो संभलना मुश्किल होगा. यह किसी हिन्दी कपटी की बद्दुआ और मनहूस ख़ाहिश नहीं है बल्कि हिन्दी प्रेमी की वक़्त से पहले आगाही है. अगर वक़्त से पहले आगाह करने वाले हिन्दी प्रेमी को आप हिन्दी शत्रु समझें तो आपकी न समझी और मेरा दुर्भाग्य है. अपना फ़र्ज़ समझकर मुझे हिन्दी की भलाई की ख़ातिर हिन्दुस्तानी का प्रचार करना है क्योंकि हिन्दुस्तानी का रूप धारन कर के ही सारे देस और राष्ट्र की भाशा बन सकती है.

ھندستانی سہی ھندی ھے. یہ آپس میں تین بہنیں ھیں . تین سوکنیں نہیں. تین دوست ھیں' تین دشمن نہیں. اگر ان تین میں سے ھندی کو راج کماری بنایا گیا ھے تو بالکل ٹھیک ھوا' اس کا ادھیکار زیادہ تھا اور وہ راج گدی کا حق بھی رکھتی تھی. راج گدی پر بیٹھکر اسے پہلے سے زیادہ نیائے کرنا چاھئے اور اپنی آم مقبولیت یا ھردل پریم بڑھانے کے لئے جنتائی بھاشا کا روپ دھارن کرنا پڑے گا. آج کل کی راج گدی سامراج کی گدی نہیں ھوتی وہ جنتا راج کی گدی ھوتی ھے. اگر ھندی اس سچائی کو بھول جائے گی تو شاید اس کا راج گدی پر بیٹھنا اور بیٹھ بھی جائے تو سنبھلنا مشکل ھوگا. یہ کسی ھندی کپٹی کی بددعا اور منحوس خواھش نہیں ھے بلکہ ھندی پریمی کی وقت سے پہلے آگاھی ھے. اگر وقت سے پہلے آگاہ کرنے والے ھندی پریمی کو آپ ھندی شترو سمجھیں تو آپ کی ناسمجھی اور میرا دربھاگیہ ھے. اپنا فرض سمجھکر مجھے ھندی کی بھلائی کی خاطر ھندستانی کا پرچار کرنا ھے کیوں کہ ھندی ھندستانی کا روپ دھارن کر کے ھی سارے دیس اور راشٹر کی بھاشا بن سکتی ھے.

बापू से

बापू, जब हमें आपकी 'ट्रस्टी' वाली नई सूझ की याद आ जाती है तो जी फड़क उठता है! आपका ट्रस्टी का आइडिया सचमुच कैपिटलिज्म को गुड़ दे कर मारने जैसा है! ट्रस्टी का विचार वह आग है जो पूंजीवाद की रस्सी के बल क़ायम रखती है. पर उसको राख बना देती है! आपका ट्रस्टी वाला विचार हमें बेहद पसन्द है! आपने अपने जीते जी किसी सेठ साहूकार को ग़रीब नहीं होने दिया, उसे जी भर फलने फूलने दिया! यह दूसरी बात है कोई इक्का दुक्का अंगरेज़ी राज की सख़्ती का शिकार हो कर ग़रीब हो गया! हां, अगर वह इक्का दुक्का ज़रा औरों जैसा चालाक होता तो वह भी ग़रीब न हो पाता!

कम्युनिज्म से आपके कुछ भक्तों को चिढ़ सी हो गई है. बापू, हमारे 'कुछ' शब्द को आप नोट कर लें, क्यों कि आपके कुछ भक्त ऐसे भी हैं जिन का यह कहना है कि गांधीवाद का मतलब है 'हिंसा रहित कम्युनिज्म' जिनका यह कहना है कि गांधीवाद हिंसा रहित कम्युनिज्म है उन्हीं का यह कहना है कि ट्रस्टी पने का विचार वह विचार है जो पूंजीवादियों में आपो आप कम्युनिज्म पैदा करता है!

باپو سے

باپو' جب ھمیں آپ کی 'ٹرسٹی' والی نئی سوجھ کی یاد آ جاتی ھے تو جی پھڑک اٹھتا ھے! آپ کا ٹرسٹی کا آئڈیا سچ مچ کیپٹلزم کو گڑ دیکر مارنے جیسا ھے! ٹرسٹی کا وچار وہ آگ ھے جو پونجی واد کی رسی کے بٹ قائم رکھتی ھے' پر اس کو راکھ بنا دیتی ھے! آپ کا ٹرسٹی والا وچار ھمیں بےحد پسند ھے! آپ نے اپنے جیتے جی کسی سیٹھ ساھوکار کو غریب نہیں ھونے دیا' اسے جی بھر پھلنے پھولنے دیا! یہ دوسری بات ھے کوئی اکا دکا انگریزی راج کی سختی کا شکار ھوکر غریب ھوگیا! ھاں' اگر وہ اکا دکا ذرا اوروں جیسا چالاک ھوتا تو وہ بھی غریب نہ ھو پاتا!

کمونزم سے آپ کے کچھ بھکتوں کو چڑھ سی ھوگئی ھے. باپو' ھمارے 'کچھ' شبد کو آپ نوٹ کرلیں' کیونکہ آپ کے کچھ بھکت ایسے بھی ھیں جن کا یہ کہنا ھے کہ گاندھی واد کا مطلب ھے 'ھنسا رھت کمونزم' جن کا یہ کہنا ھے کہ گاندھی واد ھنسا رھت کمونزم ھے انہیں کا یہ کہنا ھے کہ ٹرسٹی پن کا وچار وہ وچار ھے جو پونجی وادیوں میں آپ و آپ کمونزم پیدا کرتا ھے!

बिलकुल अलग अलग हैं. आप उलटी तरफ़ जा रहे हैं. हम सीधी तरफ़. आप पूरब को जा रहे हैं तो हम पच्छिम को, आप विद्वानों का कठिन रास्ता पसन्द करते हैं, हम आम जनताई रास्ता. आप में और हम में मेल हो ही नहीं सकता.

हां, अगर आप जनता के उच्चारन और तलफ़्फ़ुज़ को बदलाव तलफ़्फ़ुज़ (Alternative Pronunciation) की हैसियत ही मान लें और उस को बिगाड़ या अपभ्रंश कहना छोड़ दें तो भी आप हम एक रास्ते पर जा सकते हैं. यह रास्ता सरल हिन्दी का रास्ता है, यही आसान उरदू का रास्ता है और यही हिन्दुस्तानी का रास्ता है. अगर मंज़िल और ठिकाना एक हो तब भी ग़नीमत है, आप चाहे मोटर में जायं, चाहे हवाई जहाज़ में जायं, चाहे पैदल चलें, बहरहाल देर सवेर एक ही मंज़िल पर तो पहुँचेंगे बशर्ते कि सब की मंज़िल एक हो : मगर तरक़्क़ी दोस्तों और राजभगतियों की मंज़िल एक नहीं होती; इनक़िलाबियों और तोड़इनक़िलाबियों के रास्ते अलग अलग और एक दूसरे के उलटे होते हैं. अगर हमने वह रास्ता इख़्तियार नहीं किया जिसे पिछली सदी में इन्शाअल्लाह ख़ां ने, इसी सदी के शुरू में शिबली नेमानी, आज़ाद और हाली ने दिखाया था और जो हमारे ज़माने में सुनीति कुमार चटरजी दिखा रहे हैं और सब से बढ़ कर महात्मा गांधी दिखा गए हैं तो हम जनता की तरक़्क़ी में रोड़े अटका कर, भाशा को कठिन बना कर न सिर्फ़ देस और क़ौम को नुक़सान पहुंचायेंगे बल्कि दो तीन दहाइयों में अपनी कोशिशों को नाकाम होता हुआ देख कर निरास और हट धर्म हो जायंगे.

मुझे पूरा यक़ीन है कि तीन दहाइयों पहले उसमानिया यूनिवर्सिटी और निज़ाम सरकार ने आसान उरदू का रास्ता इख़्तियार किया होता और बदलाव लिखावट और बदलाव तलफ़्फ़ुज़ के साथ साथ इस्तलाहों के बनाने में ज़ियादातर संस्कृत और हिन्दी से मदद ली होती तो आज भारत में भाशाई मसला बिल्कुल ग़ैर अहम होता. हैदराबाद और उसमानिया यूनिवर्सिटी ने तो अपना मौक़ा खो दिया अब हिन्दी को मौक़ा मिला है अगर हिन्दी भी जनता का विरोध करने लगेगी, भांत भांत के प्रदेशों की भाशाओं से शब्द क़बूल नहीं करेगी, अगर वह चालू शब्दों को निकालना चाहेगी, मोटे मोटे कड़ियल और भयानक इस्तलाहें गढ़ती रहेगी तो सब से ज़ियादा फ़ायदा अंगरेज़ी को होगा और वह समाज और ब्योपार, राज और कामकाज की भाशा रहेगी. हिन्दी प्रेम के माने हिन्दुस्तानी प्रेम के हैं उन में विरोध पन हरगिज़ नहीं हो सकता भगवान का रूप अवतार में होता है सही हदीसें ज़बानी कलाम की टीका करती हैं. वह दोनों एक दूसरे के हम रंग और हम आहंग हैं. ठीक उसी तरह आसान उरदू हिन्दुस्तानी है और

بالکل الگ الگ ہیں . آپ اُلٹی طرف جا رہے ہیں، ہم سیدھی طرف. آپ پورب کو جا رہے ہیں تو ہم پچھم کو، آپ ودوانوں کا کٹھن راستہ پسند کرتے ہیں، ہم آم جنتائی راستہ. آپ میں اور ہم میں میل ہو ہی نہیں سکتا.

ہاں اگر آپ جنتا کے اچارن اور تلفظ کو بدلاؤ تلفظ (Alternative Pronunciation) کی حیثیت ہی مان لیں اور اس کو بگاڑ یا اپبھرنش کہنا چھوڑ دیں تو بھی آپ ہم ایک راستے پر جا سکتے ہیں . یہ راستہ سرل ہندی کا راستہ ہے، یہی آسان اردو کا راستہ ہے اور یہی ہندستانی کا راستہ ہے . اگر منزل اور ٹھکانا ایک ہو تب بھی غنیمت ہے، آپ چاہے موٹر میں جائیں، چاہے ہوائی جہاز میں جائیں، چاہے پیدل چلیں، بہر حال دیر سویر ایک ہی منزل پر تو پہونچیں گے بشرطیکہ سب کی منزل ایک ہو : مگر ترقی دوستوں اور راج بھگتوں کی منزل ایک نہیں ہوتی، انقلابیوں اور توڑ انقلابیوں کے راستے الگ الگ اور ایک دوسرے کے اُلٹے ہوتے ہیں . اگر ہم نے وہ راستہ اختیار نہیں کیا جسے پچھلی صدی میں انشاءاللہ خاں نے، اسی صدی کے شروع میں شبلی نعمانی، آزاد اور حالی نے دکھایا تھا اور جو ہمارے زمانے میں سنیتی کمار چٹرجی دکھا رہے ہیں اور سب سے بڑھکر مہاتما گاندھی دکھا گئے ہیں تو ہم جنتا کی ترقی میں روڑے اٹکا کر، بھاشا کو کٹھن بنا کر نہ صرف دیس اور قوم کو نقصان پہنچائیں گے بلکہ دو تین دہائیوں میں اپنی کوششوں کو ناکام ہوتا ہوا دیکھکر نراس اور ہٹ دھرم ہو جائیں گے .

مجھے پورا یقین ہے کہ تین دہائیوں پہلے عثمانیہ یونیورسٹی اور نظام سرکار نے آسان اردو کا راستہ اختیار کیا ہوتا اور بدلاؤ لکھاوٹ اور بدلاؤ تلفظ کے ساتھ ساتھ اصطلاحوں کے بنانے میں زیادہ تر سنسکرت اور ہندی سے مدد لی ہوتی تو آج بھارت میں بھاشائی مسئلہ بالکل غیر اہم ہوتا . حیدرآباد اور عثمانیہ یونیورسٹی نے تو اپنا موقع کھو دیا اب ہندی کو موقع ملا ہے . اگر ہندی بھی جنتا کا ورودھ کرنے لگیگی، بھانت بھانت کے پردیشوں کی بھاشاؤں سے شبد قبول نہیں کریگی، اگر وہ چالو شبدوں کو نکالنا چاہے گی، موٹے موٹے کڑیل اور بھیانک اصطلاحیں گڑھتی رہے گی تو سب سے زیادہ فائدہ انگریزی کو ہوگا اور وہ سماج اور بیوپار، راج اور کام کاج کی بھاشا رہے گی. ہندی پریم کے معنے ہندستانی پریم کے ہیں ان میں ورودھ پن ہرگز نہیں ہو سکتا . بھگوان کا روپ اوتار میں ہوتا ہے . سچی حدیثیں زبانی کلام کی ٹیکا کرتی ہیں . وہ دونو ایک دوسرے کے ہم رنگ اور ہم آہنگ ہیں . ٹھیک اسی طرح آسان اردو ہندستانی ہے اور

बदलावों को बिगाड़, अपभ्रंश, सत्यानासी से ताबीर कर के अपना ज़ोर चलाते और चला सकते हैं. बाज़ मरतबा वह कहते हैं कि विद्याई या अदबी ज़रूरतों के तहत "शुद्ध उच्चारन" लाज़मी है मिसाल के तौर पर वह कहते हैं कि नर्म और गर्म को नरम और गरम पढ़ा जाय तो उरदू के सैकड़ों शेर बे वज़न और बे असर हो जायंगे. जैसे इस मशहूर शेर में :—

बाहम सलूक था तो उठाते थे नर्म गर्म
काहे को 'मीर' कोई दबे, जब बिगड़ गई

कोई नरम गरम की 'र' को हरकत दे तो कलाम बे मौज़ूं हो जाता है.

हिन्दी वाले कहते हैं कि स्टेशन और स्नान की तरह अगर हम स्पष्ट को अस्पष्ट कहे तो इसका अर्थ ही उलटा हो जाता है.

इन एतराज़ों का जवाब यह है कि अदबी या कविताई और विद्याई ज़रूरतों के तहत लफ़्ज़ों के उच्चारन को बदलना हर ज़बान में ठीक माना गया है और इस क़िस्म की मिसालें बहुत कम हैं.

बहर हाल हिन्दी वालों के संस्कृत प्रेम और उरदू वालों की फ़ारसी परस्ती और अरबी दोस्ती को देखते हुए, उनके बलबूते को जानते हुए, सब से बढ़ कर आजकल की फ़िज़ा और आपसी रंजिशों का ख़याल करते हुए हम यह सुझाव रखते हैं कि हिन्दुस्तानी को तरक़्क़ी देने के लिये बदलाव तलफ़्फ़ुज़ को असूली तौर पर सही मान लेना चाहिये. और इन लफ़्ज़ों के तलफ़्फ़ुज़ को ठीक मान लेना चाहिये जो विद्याई या कविताई मजबूरी से आम तलफ़्फ़ुज़ से अलग हो. जैसे हिन्दुस्तान के क़ौमी तराने में "यमुना" का लफ़्ज़ आया है या उरदू शायरी में नर्म को नरम पढ़ना पड़े.

शख़सी नामों की हद तक तो यह असूल सारे संसार में चल पड़ा है कि हर शख़्स का नाम इसकी इच्छा के मुताबिक़ लिखना चाहिये.

राबिन्द्र नाथ टैगोर को रवीन्द्र नाथ ठाकुर लिखना या कहना आम सभ्यता और महफ़िल के आदाब के ख़िलाफ़ है. जो शख़्स अपने आपको वंशीधर कहलवाना चाहता है उसे इसी तरह याद करना चाहिये. आम बोलचाल की हद तक बदलाव उच्चारन के असूल के मुताबिक़ विद्याई तलफ़्फ़ुज़ के साथ साथ आम तलफ़्फ़ुज़ भी सही है. हिन्दी जनता और उरदू जनता के तलफ़्फ़ुज़ को बिगाड़ कहना, उसे अपभ्रंश ठहराना और हर हालत में ग़लत समझना तो किसी तरह जायज़ नहीं, अगर आप देश ही कहने पर इसरार करेंगे और देस हर हालत में ग़लत ठहरायेंगे तो इस के यह मानी होंगे कि आप के और हमारे रास्ते

بدلاؤں کو بگاڑ' ابھرنش' ستیاناسی سے تابیر کرکے اپنا زور چلاتے اور چلا سکتے ھیں . باز مرتبہ وہ کہتے ھیں کہ ودیای یا ادبی ضرورتوں کے تحت " شدھ اچارن " لازمی ھے . مسال کے تور پر وہ کہتےھیں کہ نرم اور گرم کو اور گرم نرم پڑھا جاے تو اردو کے سیکڑوں شعر بےوزن اور بےاسر ھو جائیں گے. جیسےاس مشہور شعر میں :—

باہم سلوک تھا تو اُٹھاتے تھے نرم گرم
کاہے کو 'میر' کوئی دبے' جب بگڑ گئی

کوئی نرم گرم کی ر کو حرکت دے تو کلام بے موزوں ھو جاتا ھے .

ھندی والے کہتے ھیں کہ اسٹیشن اور اشنان کی ترہ اگر ھم سپشٹ کو اسپشٹ کہیں تو اس کا ارتھ ھی الٹا ھو جاتا ھے .

ان ایترازوں کا جواب یہ ھے کہ ادبی یا کویتای اور ودیای ضرورتوں کے تحت لفزوں کے اچارن کو بدلنا ھر زبان میں ٹھیک مانا گیا ھے. اور اس قسم کی مسالیں بہت کم ھیں .

بہرحال ھندی والوں کے سنسکرت پریم اور اردو والوں کی فارسی پرستی اور اربی دوستی کو دیکھتے ھوے' ان کے بل بوتے کو جانتے ھوے' سب سے بڑھکر آجکل کی فزا اور آپسی رنجشوں کا خیال کرتے ھوے ھم یہ سجھاو رکھتے ھیں کہ ھندستانی کو ترقی دینے کے لئے بدلاؤ تلفز کو اسولی تور پر سہی مان لینا چاھئے . اور ان لفزوں کے تلفز کو ٹھیک مان لینا چاھئے جو ودیای یا کویتای مجبوری سے آم تلفز سے الگ ھو . جیسے ھندستان کے قومی ترانے میں " یمونا " کا لفز آیا ھے یا اردو شایری میں نرم کو نرم پڑھنا پڑے .

شخصی ناموں کی ھد تک تو یہ اسول سارے سنسار میں چل پڑا ھے کہ ھر شخص کا نام اس کی اچھا کے متابق لکھنا چاھئے .

رابندر ناتھ ٹیگور کو رویندر ناتھ ٹھاکر لکھنا یا کہنا آم سبھیتا اور محفل کے آداب کے خلاف ھے . جو شخص اپنے آپ کو ونشی دھر کہلوانا چاھتا ھے' اسے اسی ترہ یاد کرنا چاھئے . آم بول چال کی حد تک بدلاؤ اچارن کے اسول کے متابق ودیای تلفز کے ساتھ ساتھ آم تلفز بھی سہی ھے. ھندی جنتا اور اردو جنتا کے تلفز کو بگاڑ کہنا' اسے ابھرنش ٹھہرانا اور ھر حالت میں غلت سمجھنا تو کسی ترہ جائز نہیں' اگر آپ دیش ھی کہنے پر اسرار کریں گے اور دیس ھر ھالت میں غلت ٹھہرائیں گے تو اس کے یہ مانے ھونگے کہ آپ کے اور ھمارے راستے

है जिस पर टकसाल का ठप्पा पड़ चुका है. अब हर शख़्स जान सकता है और पहचान सकता है कि यह तोला भर चांदी है. इसके लेन देन में किसी को न झिझक हो सकती है न डर.

सच पूछिये तो यह कहना बड़ा मुश्किल है कि कौन सा लफ़्ज़ "असली" था और कौन सा बदला हुआ है जिसे हम संस्कृत या लातीनी या अरबी या यूनानी लफ़्ज़ कहते हैं, उन में भी हज़ारों लफ़्ज़ बहुत पुरानी ज़बानों से लिये गए हैं. इसलिये यह बहसें कि फ़लां शब्द संस्कृत का है, लिहाज़ा इसका उच्चारन संस्कृति तरीक़े पर होना चाहिये हमारी महाभूल है क्योंकि यह भी क्या मालूम कि वह सचमुच संस्कृत का ही लफ़्ज़ है, किसी और भाशा से लिया हुआ नहीं. हां वह लोग जो संस्कृत को देव बानी समझते हैं, उन से हमारी बहस नहीं. दुनिया को चपटी समझने वालों से जुग़राफ़िया जानने वाले बहस कर ही क्या सकते हैं, इसी तरह इनसानियात और समाज विद्या के जानने वाले जो यक़ीन करते हैं कि सारी तहज़ीब धीरे धीरे वजूद में आई थी, बराबर बदलती रही थी, अब तक बदल रही है और आयन्दा भी बदलती रहेगी, किसी ज़बान के पैदाइशी बड़प्पन होने को तसलीम नहीं कर सकते.

ग़रज़ भाशाइयात और शब्दयात के अटल क़ायदे के अनुसार हिन्दुस्तानी में भी

राज	कहना चाहिये, न कि	राज्य
दीवाली	ही सही है, न कि	दीपावली
बरस	शुद्ध है ,,	वर्ष
बारिश	ठीक ,,	वर्षा

इसी तरह

लालटेन	की बजाय	लेनटर्न
डिप्टी	,,	डिप्यूटी
लन्दन	,,	लन्डन
ब्रन्दाबन	,,	विरन्दाबन
बंसीधर	,,	वंशीधर
बम	,,	बौम्ब
गरम	,,	गर्म
बेनकेट	,,	बेनेकट

कहलवाने की कोशिश करना या तो झूठ वहम है (यानी Inferiority Complex जिस का तहतिया बिला कारन समझ लेता है कि उसकी सभ्यता नीच है और दूसरे देसों या ज़मानों की तहज़ीब बेहतर थी या है) या नहीं तो इलमी नुमायश यानी Pedantry.

फिर भी मानना पड़ेगा कि उरदू में पाक बाज़ और हिन्दी के शुद्ध प्रेमी काफ़ी बलवान हैं. वह समाज और राज की अहम ख़िदमतों पर फ़ायज़ हैं जनता में इनका काफ़ी विक़ार (मान) है. वह भाशाई तबदीलियों और लफ़्ज़ी

ھے جس پر ٹکسال کا ٹھپا پڑ چکا ھے . اب ھر شخص جان سکتا اور پہچان سکتا ھے کہ یہ تولا بھر چاندی ھے . اس کے لین دین میں کسی کو نہ جھجھک ھوسکتی ھے نہ ڈر .

سچ پوچھئے تو یہ کہنا بڑا مشکل ھے کہ کون سا لفظ "اصلی" تھا اور کون سا بدلا ھوا ھے جسے ہم سنسکرت یا لاطینی یا عربی یا یونانی لفظ کہتے ھیں' ان میں بھی ھزاروں لفظ بہت پرانی زبانوں سے لئے گئے ھیں . اس لئے یہ بحثیں کہ فلاں شبد سنسکرت کا ھے' لہاذا اس کا اچارن سنسکرتی طریقے پر ھونا چاھئے . ھماری مہا بھول ھے کیونکہ یہ بھی کیا معلوم کہ وہ سچ مچ سنسکرت کا ھی لفظ ھے' کسی اور بھاشا سے لیا ھوا نہیں . ھاں وہ لوگ جو سنسکرت کو دیوبانی سمجھتے ھیں' ان سے ھماری بحث نہیں . دنیا کو چپٹی سمجھنے والوں سے جغرافیہ جاننے والے بحث کر ھی کیا سکتے ھیں' اسی طرح انسانیات اور سماج ودیا کے جاننے والے جو یقین کرتے ھیں کہ ساری تہذیب دھیرے دھیرے وجود میں آئی تھی' برابر بدلتی رھی تھی' اب تک بدل رھی ھے اور آئندا بھی بدلتی رھیگی' کسی زبان کے پیدائشی بڑپن ھونے کو تسلیم نہیں کرسکتے .

غرض بھاشائیات اور شبدیات کے اٹل قاعدے کے انوسار ھندستانی میں بھی .

راج	کہنا چاھئے' نہ کہ	راجیہ
دیوالی	ھی صحی ھے' نہ کہ	دیپا ولی
برس	شدھ ھے' ,,	ورش
بارش	ٹھیک ھے' ,,	ورشا

اسی طرح

لالٹین	کی بجائے	لینٹرن
ڈپٹی	,,	ڈپیوٹی
لندن	,,	لنڈن
برندابن	,,	ورنداون
بنسی دھر	,,	ونشی دھر
بم	,,	بوامب
گرم	,,	گرم
بنکٹ	,,	ویلکٹ

کہلوانے کی کوشش کرنا یا تو جھوٹ وھم ھے (یانے Inferiority Complex جس کا تحتیا بلا کارن سمجھ لیتا ھے کہ اس کی سبھیتا نیچ ھے اور دوسرے دیسوں یا زمانوں کی تہذیب بہتر تھی یا ھے) یا نہیں تو علمی نمایش یانے Pedantry .

پھر بھی ماننا پڑے گا کہ اردو میں پاکباز اور ھندی کے شدھ پریمی کافی بلوان ھیں . وہ سماج اور راج کی اھم خدمتوں پر فایز ھیں . جنتا میں ان کا کافی وقار (مان) ھے . وہ بھاشائی تبدیلیوں اور لفظی

मेरे वालिद मरहूम यही कहते थे. यह सब ग़लत तलफ़्फ़ुज़ क्यों कर कर सकते हैं और ज़बान में आख़िर सही और ग़लत का मेयार ही क्या है ? ज़बान हमारी है न कि अरबों और ईरानियों, अंगरेज़ों या तुरकों की. इसका जवाब वह यही देते थे कि मैं ग़लती कर रहा हूँ, हट धर्म हूँ और गुस्ताख़ हूँ ! बहरहाल वह मरते मर गए मगर कभी अपनी ग़लती महसूस नहीं की. उनके ज़िन्दा चरबे आज भी सैकड़ों नहीं हज़ारों हैं जो अपनी ज़बान में ग़ैर ज़बानों की नक़्क़ाली करना और करवाना चाहते हैं. इन लोगों की कोशिश कभी सफ़ल नहीं हुई और न आगे होगी. हां, इनकी बदौलत इल्म का प्रचार नहीं हो सकेगा, ज़बान की दिक़्क़तों से इल्म जकड़ा रहेगा इल्म की दुशवारियों के साथ साथ ज़बान की दुशवारियां भी रहेंगी और इन दो के मिलवां भार का उठाना बहुत बड़ी अकसरीयत के लये ना मुमकिन होगा.

न मालूम हम कब इस क़ुदरती क़ानून को जानेंगे कि शिक्षा के ज़रिये सरकार और विद्याई सभायें जनता को थोड़ा बहुत कनट्रोल कर सकती हैं मगर जनता के झुकाव को इसकी हसरतों और ख़ाहिशों को एकदम नहीं बदल सकती. उसी तरह हम जनताई उच्चारन या आम तलफ़्फ़ुज़ थोड़ा बहुत कनट्रोल में ला सकते हैं. मगर यह क़तई ना मुमकिन है कि इसके रुख़ को बिलकुल ही बदल डालें.

जब दाऊद और David, इसहाक़ और Issac, मूसी और Moses, इबराहीम और Abraham, एक ही लफ़्ज़ से बने हुए दो अलग उच्चारन की वजह से दो अलग भाशाओं में सही हैं तो संस्कृत "प्रसाद" और हिन्दी प्रशाद या संस्कृत देश और हिन्दी देस या अरबी क़ला और उरदू क़िला क्यों ग़लत हो सकते हैं ? जब अरबी में यूनानी लफ़्ज़, अंगरेज़ी में फ़्रेन्च लफ़्ज़, अपना "असल" तलफ़्फ़ुज़ बाक़ी नहीं रख सकते तो हिन्दुस्तानी में भी दूसरी ज़बानों से लिये हुए लफ़्ज़ों का "असल तलफ़्फ़ुज़" या "शुद्ध उच्चारन" कभी बाक़ी नहीं रह सकता. हर भाशा के उच्चारन झुकाव के अनुसार ग़ैर लफ़्ज़ के उच्चारन में कुछ न कुछ तबदीली अटल है.

इस अटल तबदीली को "बिगाड़" कहना, "ख़राबी" से ताबीर करना, "अपभ्रंश" का शूद्र नाम देना हमारी दास प्रकृति, छूट वहम और जहालत का सबूत है.

मैं पूरे यक़ीन के साथ कह सकता हूं कि क़ला Qale को क़िला Qile की तरह उरदू में बोले जाने वाले अरबी लफ़्ज़ों पर अरबी तलफ़्फ़ुज़ लादने की तमाम कोशिशें इसी तरह बेकार जाएंगी जैसे जमना को यमुना या जनता को जन्ता कहलवाने की कोशिशें आख़िरकार ना काम रहेंगी

हमें अच्छी तरह से मालूम कर लेना चाहिये कि हिन्दयाए हुए शब्द ही हिन्दुस्तानी का जुज़ बन सकते हैं. हिन्दयाया हुआ शब्द मानो उस तोले भर चांदी की तरह

میرے والد مرحوم یہی کہتے تھے . یہ سب غلط تلفظ کیوں کر کرسکتے ھیں اور زبان میں آخر سہی اور غلط کا میار ھی کیا ھے؟ زبان ھماری ھے نہ کہ اربوں اور ایرانیوں، انگریزوں یا ترکوں کی . اس کا جواب وہ یہی دیتے تھے کہ میں غلطی کر رھا ھوں، ھٹ دھرم ھوں اور گستاخ ھوں ! بہر حال وہ مرتے مرگئے مگر کبھی اپنی غلطی محسوس نہیں کی . ان کے زندہ چربے آج بھی سیکڑوں نہیں ھزاروں ھیں جو اپنی زبان میں غیر زبانوں کی نقالی کرنا اور کروانا چاھتے ھیں . ان لوگوں کی کوشش کبھی سپھل نہیں ھوئی اور نہ آگے ھوگی . ھاں ان کی بدولت اِلم کا پرچار نہیں ھوسکیگا زبان کی دقتوں سے اِلم جکڑا رھیگا . اِلم کی دشواریوں کے ساتھ ساتھ زبان کی دشواریاں بھی رھینگی اور ان دو کے ملواں بھار کا اٹھانا بہت بڑی اکسریت کے لئے ناممکن ھوگا .

نہ معلوم ھم کب اس قدرتی قانون کو جانینگے کہ شکشا کے ذریعے سرکار اور ودیائی سبھائیں جنتا کو تھوڑا بہت کنٹرول کرسکتی ھیں مگر جنتا کے جھکاؤ کو اس کی حسرتوں اور خاھشوں کو ایک دم نہیں بدل سکتی . اسی ترہ ھم جنتائی اچارن یا آم تلفظ تھوڑا بہت کنٹرول میں لاسکتے ھیں . مگر یہ قطعی ناممکن ھے کہ اس کے رخ کو بالکل ھی بدل ڈالیں .

جب داؤد اور David، اسحاق اور Isaac، موسی اور Moses، ابراھیم اور Abraham ایک ھی لفظ سے بنے ھوئے دو الگ اچارن کی وجہ سے دو الگ بھاشاؤں میں سہی ھیں تو سنسکرت "پرساد" اور ھندی پرشاد یا سنسکرت دیش اور ھندی دیس یا اربی قلعہ اور اردو قلعہ کیوں غلط ھوسکتے ھیں ؟ جب اربی میں یونانی لفظ، انگریزی میں فرنچ لفظ، اپنا "اصل" تلفظ باقی نہیں رکھ سکتے تو ھندستانی میں بھی دوسری زبانوں سے لئے ھوئے لفظوں کا "اصل تلفظ" یا "شدھ اچارن" کبھی باقی نہیں رہ سکتا . ھر بھاشا کے اچارن جھکاؤ کے انوسار غیر لفظ کے اچارن میں کچھ نہ کچھ تبدیلی اٹل ھے .

اس اٹل تبدیلی کو "بگاڑ" کہنا، "خرابی" سے تابیر کرنا، "اپ بھرنش" کا شودر نام دینا ھماری داس پرکرتی، چھوٹ وھم اور جہالت کا سبوت ھے .

میں پورے یقین کے ساتھ کہہ سکتا ھوں کہ قلعہ Qale کو قلعہ Qile کی ترہ اردو میں بولے جانے والے اربی لفظوں پر اربی تلفظ لادنے کی تمام کوششیں اسی ترہ بے کار جائینگی جیسے جمنا کو یمونا یا جنتا کو جنتا کہلوانے کی کوششیں آخرکار ناکام رھینگی .

ھمیں اچھی ترہ سے معلوم کرلینا چاھئے کہ ھندیائے ھوئے شبد ھی ھندستانی کا جز بن سکتے ھیں . ھندیایا ھوا شبد مانو اس تولے بھر چاندی کی ترہ

का तलफ़्फ़ुज़ संस्कृत या फ़ारसी या अरबी या अंगरेज़ी के मुताबिक़ हो.

हैदराबाद की यूनिवर्सिटी में अरबी डिपार्टमेन्ट के पिछले सदर ने एक बार मुझे "उमरानियात" कहते हुए टोका था उस ज़माने में डीन होने की वजह से वह मेरे बड़े अफ़सर भी थे. कई मरतबा बहस करने के बावजूद वह "उमरानियात" कहलाने पर इसरार करते थे और मुझ से सख़्त नाराज़ रहते थे. हैदराबाद ही के एक बड़े वज़ीर के मोतमिद उर्दू में इस्तेमाल होने वाले अरबी लफ़्ज़ों का "सही तलफ़्फ़ुज़" अपने मातहतों को बताते थे और इनमें से बाज़ अपनी वाक़फ़ियत अपने जान पहचान वालों पर जतलाते थे. आजकल भी इसी क़िस्म की ज़हनियत रखने वाले बीसियों बुज़ुर्गवार हमारी स्टेट में मौजूद हैं. मगर हैदराबाद से उर्दू का तख़्त और तख़्ता चूंकि उलट गया है, इन अरबी परस्त शुदबुदियों की अहमियत घट गई है.

आजकल के हिन्दी डिपार्टमेन्ट के सदर अपना नाम ख़ालिस संस्कृति तौर पर कहलवाने पर बड़ा ज़ोर देते हैं. शुद्ध उच्चारन के बारे में उनके वही ख़यालात हैं जो पिछले ज़माने के अरबी के प्रोफ़ेसर साहब के थे.

"नूरउललुग़ात" हमारी ज़बान की एक प्रमानिक लुग़त मानी जाती है. इसमें इरशाद होता है:

"क़ुलफ़ी : क़ुलफ़ी ग़लत है, सही क़ुफ़ली है."

इसी डिक्शनरी में.

"क़ुलन्ज" के बारे में लिखा है "क़ौलन्ज का बिगड़ा हुआ."

'क़ला" पर फ़र्ज़ ग़रज़ से ज़बर दिया ताकि आप क़िला न पढ़ें.

"क़नदील" के नीचे ज़बर दिया ताकि आप क़नदेल न कहें.

अगर ख़ुद डिक्शनरी की तरतीब देने वाली ऐसी गुमराही में मुबतिला हों तो सरकारी ओहदेदारों या बड़ वहम में लतपत विद्वानों का क्या ज़िकर. ख़याल तो कीजिये. उरदू डिक्शनरी में अरबी और फ़ारसी तलफ़्फ़ुज़ को सही और उरदू बोलने वाली मां बहनों, पढ़े लिखों और ख़ुद आलिमों का तलफ़्फ़ुज़ ग़लत है ! सही तलफ़्फ़ुज़ को ग़लत समझना ही सबसे बड़ी ग़लती है.

मुझे ख़ूब याद है कि मैंने अरबी ज़दा पिछले रेक्टर साहब से कहा था कि "इमरानी अलूम" मैंने बीसियों बार इलयास बरनी साहब के लेक्चरों में सुना था, मैं ख़ुद दो तीन दहाइयो से यही बोलता चला आया हूं, मेरे बीसियों शागिर्द भी इमरानी ही कहते रहे, अनीस के ख़ानदान के एक बुज़ुर्ग दूल्हा साहब की ज़बानी भी मैंने इमरानी सुना;

کا تلفظ سنسکرت یا فارسی یا اربی یا انگریزی کے مطابق ہو۔

حیدرآباد کی یونیورسٹی میں عربی ڈپارٹمنٹ کے پچھلے صدر نے ایک بار مجھے "عمرانیات" کہتے ہوئے ٹوکا تھا ۔ اس زمانے میں ڈین ہونے کی وجہ سے وہ میرے بڑے افسر بھی تھے ۔ کئی مرتبہ بحث کرنے کے باوجود وہ "عمرانیات" کہلانے پر اصرار کرتے تھے اور مجھ سے سخت ناراض رہتے تھے ۔ حیدرآباد ہی کے ایک بڑے وزیر کے معتمد اُردو میں استعمال ہونے والے اربی لفظوں کا "صحیح تلفظ" اپنے ماتحتوں کو بتاتے تھے اور ان میں سے باز اپنی واقفیت اپنے جان پہچان والوں پر جتلاتے تھے ۔ آجکل بھی اسی قسم کی ذہنیت رکھنے والے بیسیوں بزرگوار ہماری اسٹیٹ میں موجود ہیں ۔ مگر حیدرآباد سے اُردو کا تخت اور تختہ چونکہ اُلٹ گیا ہے، ان اربی پرست شدبدیوں کی اہمیت گھٹ گئی ہے ۔

آجکل کے ہندی ڈپارٹمنٹ کے صدر اپنا نام خالص سنسکرتی طور پر کہلوانے پر بڑا زور دیتے ہیں. شدھ اچارن کے بارے میں ان کے وہی خیالات ہیں جو پچھلے زمانے کے اربی کے پروفیسر صاحب کے تھے :

"نوراللغات" ہماری زبان کی ایک پرمانک لغت مانی جاتی ہے ۔ اس میں ارشاد ہوتا ہے ۔

"قلفی : قلفی غلط ہے، صحیح قفلی ہے ."

اسی ڈکشنری میں ۔

"قلنج" کے بارے میں لکھا ہے "قولنج کا بگڑا ہوا"

"قلعہ" پر فرض غرز سے زبر دیا تاکہ آپ قلعہ نہ پڑھیں

"قندیل" کے نیچے زبر دیا تاکہ آپ قندیل نہ کہیں ۔

اگر خد ڈکشنری ترتیب دینے والے ایسی گمراہی میں مبتلا ہوں تو سرکاری عہدہ داروں یا بڑوہم میں لت پت ودوانوں کا کیا ذکر ۔ خیال تو کیجئے ۔ اُردو ڈکشنری میں اربی اور فارسی تلفظ کو سہی اور اُردو بولنے والی ماں بہنوں، پڑھے لکھوں اور خد آلموں کا تلفظ غلط ہے! صحیح تلفظ کو غلط سمجھنا ہی سب سے بڑی غلطی ہے ۔

مجھے خوب یاد ہے کہ میں نے اربی زدہ پچھلے ریکٹر صاحب سے کہا تھا کہ "عمرانی علوم" میں نے بیسیوں بار الیاس برنی صاحب کے لکچروں میں سنا تھا، میں خد دو تین دہائیوں سے یہی بولتا چلا آیا ہوں، میرے بیسیوں شاگرد بھی عمرانی ہی کہتے رہے، انیس کے خاندان کے ایک بزرگ دولہ صاحب کی زبانی بھی میں نے عمرانی سنا؛

अस्पताल या हस्पताल, स्टाम्प, स्टेशन, बिदागी, टिकट, फ़्रन्ट, लालटेन, फ़लालेन, जारजट, जमना, मौसम, मैयत जैसे हज़ारों लफ़्ज़ हैं जिन का तलफ़्फ़ुज़ उर्दू या हिन्दी में इन लफ़्ज़ों की "असल ज़बानों" के तलफ़्फ़ुज़ से अलग होता है.

जनताई तलफ़्फ़ुज़ या आम उच्चारन की अहमियत

जनता याने अवाम के तलफ़्फ़ुज़ को ग़लत समझ कर बहुतेरे लोग कोशिश कर चुके और करते रहते हैं कि हमारी भाशा में बोले जाने वाले लफ़्ज़ों का "सही तलफ़्फ़ुज़" हो. इस क़िस्म की ज़ेहनियत रखने वाले और कोशिश करने वाले वही लोग हैं जो भाशाइयात और आवाज़ियात के इलमों से नावाक़िफ़, आम समझ से महरूम, अपनी जुज़ क़ाबलियत की नुमायश के शौक़ीन और सब पर तुर्रा यह कि सियासी या मज़हबी वजहों से छूट वहम में मुबतिला हैं.

ख़ान बहादुरों और राय बहादुरों की तरह मरूबियत में लतपत हज़ारों नाम मात्र आलम और किसी न किसी वजह से थोड़ी बहुत इज़्ज़त या रसूख़ पाए हुए लोग कहते हैं कि फ़लां लफ़्ज़ ग़लत है, इसका तलफ़्फ़ुज़ यूं नहीं यों होना चाहिये. दिसम्बर ग़लत है इसे डिसम्बर लिखना और बोलना चाहिये बिनोद ग़लत है विनोद होना चाहिये. इसी तरह जमना नहीं यमुना शुद्ध है. प्रशाद को प्रसाद कहना चाहिये और देस को देश! क्योंकि इन छूट वहमियों के क़यास के मुताबिक़ यह लफ़्ज़ अंगरेज़ी या संस्कृत से आए हैं और इनका वही तलफ़्फ़ुज़ भी होना चाहिये.

यह लोग इतना भी नहीं जानते कि हज़ारों लफ़्ज़ जिन्हें वह अपनी महदूद वाक़फ़ियत की बिना पर अंगरेज़ी समझते हैं, सिरे से अंगरेज़ी ही नहीं बल्कि अंगरेज़ी में लातीनी या यूनानी या फ़्रेन्च या किसी और ज़बान से आए हैं. बिला मुबालग़ा हज़ारों क़दीम योरपी भाशाओं के लफ़्ज़ों को हम अंगरेज़ी लफ़्ज़ समझते हैं और उसका उच्चारन भी अंगरेज़ी की तरह करना चाहते हैं. मैं बड़ा निरास होता हूं जब हिन्दी और उर्दू किताबों में "अंगरेज़ी" शब्दों को हिन्दुस्तानी तरीक़े पर लिखने के बजाय "असल" अंगरेज़ी बोल चाल के मुताबिक़ या उसकी क़रीबी नक़्क़ाली में लिखा हुआ देखता हूं जैसे:

स्टेशन	की बजाय	सटेशन
लन्दन	,,	लन्डन
अमरीका	,,	अमेरीका

ख़ास कर पंजाब और हैदराबाद में न सिर्फ़ थोड़े पढ़े लिखे बल्कि डिगरियां रखने वाले, अहम सरकारी ख़िदमतों पर क़ाइम इन्तहा यह कि ख़ुद उर्दू के प्रोफ़ेसर, रीडर, लेक्चरार और लेक्चरारनियां इस ख़ब्त में फंसे हैं कि हिन्दी और उर्दू में आम तौर पर बोले जाने वाले लफ़्ज़ों

اسپتال یا هسپتال، اسٹامپ، اسٹیشن، بداگی، ٹکٹ، فرنٹ، لالٹین، فلالین، جارجٹ، جمنا، موسم، میت جیسے ہزاروں لفز ھیں جن کا تلفز اردو یا ھندی میں ان لفزوں کی "اصل زبانوں" کے تلفز سے الگ ہوتا ھے ۔

جنتائی تلفز یا آم اچارن کی اہمیت

جنتا یانے اوام کے تلفز کو غلت سمجھ کر بہتیرے لوگ کوشش کر چکے اور کرتے رہتے ھیں کہ ھماری بھاشا میں بولے جانے والے لفزوں کا "صحیح تلفظ" ھو ۔ اس قسم کی زہنیت رکھنے والے اور کوشش کرنے والے وہی لوگ ھیں جو بھاشائیات اور آوازیات کے اِلموں سے ناواقف، آم سمجھ سے محروم، اپنی جز قابلیت کی نمایش کے شوقین اور سب پر ترا یہ کہ سیاسی یا مذھبی وجہوں سے چھوٹ وھم میں مبتلا ھیں ۔

خان بہادروں اور رائے بہادروں کی طرح مروبیت میں لت پت ہزاروں نام ماتر آلم اور کسی نہ کسی وجہ سے تھوڑی بہت عزت یا رسوخ پائے ھوئے لوگ کہتے ھیں کہ فلاں لفز غلت ھے، اس کا تلفز یوں نہیں یوں ھونا چاھئے. دسمبر غلت ھے . اسے ڈسمبر لکھنا اور بولنا چاھئے . بنود غلت ھے ونود ھونا چاھئے . اسی طرح جمنا نہیں یمونا شدھ ھے . پرشاد کو پرساد کہنا چاھئے اور دیس کو دیش ! کیونکہ ان چھوٹ وھمیوں کے قیاس کے مطابق یہ لفز انگریزی یا سنسکرت سے آئے ھیں اور ان کا وھی تلفز بھی ھونا چاھئے ۔

یہ لوگ اتنا بھی نہیں جانتے کہ ہزاروں لفز جنہیں وہ اپنی محدود واقفیت کی بنا پر انگریزی سمجھتے ھیں، سرے سے انگریزی ھی نہیں بلکہ انگریزی میں لاتینی یا یونانی یا فرنچ یا کسی اور زبان سے آئے ھیں . بلامبالغہ ہزاروں قدیم یورپی بھاشاؤں کے لفزوں کو ھم انگریزی لفز سمجھتے ھیں اور اس کا اچارن بھی انگریزی طرح کرنا چاھتے ھیں . میں بڑا نراس ھوتا ھوں جب ھندی اور اردو کتابوں میں "انگریزی" شبدوں کو ھندستانی طریقے پر لکھنے کے بجائے "اصل" انگریزی بولچال کے مطابق یا اسکی قریبی نقالی میں لکھا ھوا دیکھتا ھوں جیسے :

اسٹیشن	کی بجائے	سٹیشن
لندن	,,	لنڈن
امریکا	,,	امیریکا

خاص کر پنجاب اور حیدرآباد میں نہ صرف تھوڑے پڑھے لکھے بلکہ ڈگریاں رکھنے والے، اہم سرکاری خدمتوں پر قایم انتہا یہ کہ خد اردو کے پروفیسر، ریڈر، لکچرار اور لکچرارنیاں اس خبط میں پھنسے ھیں کہ ھندی اور اردو میں آم طور پر بولے جانے والے لفزوں

जिब्राईल, मैकाईल, इसराफ़ील, इ ज़राईल, इसमाईल, इसहाक़ वग़ैरा भी ख़ालिस अरबी लफ़्ज़ नहीं हैं बल्कि हीब्रू और सीरया इससे पहले की ज़बानों से अरबी में चलन पाए हुए फ़रिश्तों और इनसानों के नाम हैं.

फ़ारसियाए हुए लफ़्ज़

ईरान से जितने ख़त आते हैं उस पर "पस्त ईरान" लिखा होता है. यह "पस्त" ऊंचाई का उलटा नहीं है बल्कि फ़्रान्सीसी ज़बान के ज़रिये दाख़िल किया हुआ योरपी लफ़्ज़ है, जिसे अंगरेज़ी में Post कहते हैं याने पट्टा. इल्म और फ़न का फ़रक़ लक़ब जिसे अंगरेज़ी में डोक्टर (Doctor) कहते हैं, फ़ारसी में डाक्टर नहीं बल्कि दक्तोर (बरवज़न अंगूर) कहा जाता है. फ़ारसी लुग़त (शब्दावली) उठा कर ग़ौर से देखिये या ख़ालिस फ़ारसी दानों से बातचीत कीजिये आपको सैकड़ों नहीं हज़ारों मिसालें मिलेंगी, जिन से साबित होगा कि ईरानी ग़ैर ज़बानों के अकसर लफ़्ज़ों को अपनी ज़बान की बोल चाली फ़ितरत के मुताबिक़ बदल देते हैं.

"सख़ुन दान फ़ारस" में मोहम्मद हुसैन आज़ाद ने सैकड़ों फ़ारसी लफ़्ज़ दिये हैं जो संस्कृत से लिये गए हैं हैं. आपने सही लिखा है:

"जिस तरह मुलकों की आब व हवा आदमियों के रंग रूप, डील डौल, रस्म व रिवाज बदल देती है, इसी तरह लहजों, आवाज़ों और तलफ़्फ़ुज़ के फ़रक़ से इन लफ़्ज़ों के डील डौल और इबारतों के जोड़ तोड़ में फ़रक़ आ गया..."‡

आगे चल कर आप ने क्या ख़ूब लिखा है :—

"तजुर्बे और मुशाहिदे ने क़ानून बनाया कि अकसर अलफ़ाज़ शुरू में लचर और ग़लत शुमार होते हैं फिर अगर महावरे ने उन्हे मंज़ूर कर लिया और ख़वास ने ज़बान में जगह दी और नज़म व नसर ने लिखावटी सनद दे दी तो वही ग़लत सलत लफ़्ज़ मुस्तक़िल लुग़ात हो कर अजज़ाए ज़बान हो जाते हैं.........मुल्के सख़ुन में कोई लफ़्ज़ सही नहीं, कोई लफ़्ज़ ग़लत नहीं. जिस पर क़बूले आम और रिवाजे ताम मोहर कर दे वह लफ़्ज़ सही है. यह न हो तो सही भी मर्दूद."*

उरदुआए हुए लफ़्ज़

क़ुदरत के अटल क़ानून के मुताबिक़ हमारी ज़बान में ग़ैर ज़बानों के हज़ारों लफ़्ज़ बदल गए हैं. अरारोट,

‡. मतबा मुफ़ीद आम, लाहौर का छपा हुआ एडीशन 1907 ई० सफ़ा 2 और 3.

* सफ़ा 53

جبرئیل، میکائیل، اسرافیل، ازرائیل، اسماعیل، اسحاق وغیرہ بھی خالس اربی لفز نہیں ہیں بلکہ ہیبرو اور سیریا اس سے پہلے کی زبانوں سے اربی میں چلن پائے ہوئے فرشتوں اور انسانوں کے نام ہیں ۔

فارسیائے ہوئے لفز

ایران سے جتنے خت آتے ہیں اس پر "پست ایران" لکھا ہوتا ہے ۔ یہ "پست" اونچائی کا الٹا نہیں ہے بلکہ فرانسیسی زبان کے زریعے داخل کیا ہوا یورپی لفز ہے، جسے انگریزی میں Psot کہتے ہیں یانے پٹہ ۔ الم اور فن کا فرق لقب جیسے انگریزی میں ڈوکٹر (Doctor) کہتے ہیں۔ فارسی میں ڈاکٹر نہیں بلکہ دکتور (بروزن انگور) کہا جاتا ہے۔ فارسی لغت (شبداولی) اٹھاکر غور سے دیکھئے یا خالس فارسی دانوں سے بات چیت کیجئے آپ کو سیکڑوں نہیں ہزاروں مسالیں ملیں گی، جن سے سابت ہوگا کہ ایرانی غیر زبانوں کے اکسر لفزوں کو اپنی زبان کی بولچالی فطرت کے مطابق بدل دیتے ہیں ۔

" سخندان فارس " میں محمد حسین آزاد نے سیکڑوں فارسی لفز دئے ہیں جو سنسکرت سے لئےگئے ہیں ۔ آپ نے سہی لکھا ہے:

" جس طرح ملکوں کی آب‌وہوا آدمیوں کے رنگ‌روپ، ڈیل ڈول، رسم و رواج بدلتی ہے، اسی طرح لہجوں، آوازوں اور تلفظ کے فرق سے ان کے لفظوں کے ڈیل ڈول اور عبارتوں کے جوڑ توڑ میں فرق آگیا......"*

آگے چل کر آپ نے کیا خوب لکھا ہے :—

" تجربےاور مشاہدے نے قانون بنایا کہ اکثر الفاظ شروع میں لچر اور غلط شمار ہوتے ہیں ۔ پھر اگر محاورے نے انہیں منظور کرلیا اور خواص نے زبان میں جگہ دی اور نظم و نثر نے لکھاوٹی سند دے دی تو وہی غلط سلط لفظ مستقل لغت ہو کر اجزائے زبان ہو جاتے ہیں.........ملک سخن میں کوئی لفظ صحیح نہیں، کوئی لفظ غلط نہیں ۔ جس پر قبول عام اور رواج تام مہر کر دےوہ لفظ صحیح ہے۔ یہ نہ ہو تو صحیح بھی مردود "**

اردوائے ہوئے لفز

قدرت کے اٹل قانون کے مطابق ہماری زبان میں غیر زبانوں کے ہزاروں لفز بدل گئے ہیں ۔ اراروٹ،

* مطبع مفید عام، لاہور کا چھپا ہوا اڈیشن ۔ 1907ع صفحہ 2 اور 3 .

** صفحہ 53 .

को नास्सियत कहते थे. बस इसी रोब से वह भी हमेशा नास्सी कह कर अपनी जरमन वाक़फ़ियत जतलाते फिरते थे.

योरपी महीनों के लातीनी नाम फ्रेन्च में अलग तरह से बोले जाते हैं, अंगरेज़ी में अलग तरह से और हिन्दुस्तानी में अलग तरह से. मग़रबियत के साथ साथ मग़रिबी वक़्त शुमारी भी सारे संसार में फैल गई हम यक़ीन के साथ कह सकते हैं कि हर ज़बान में उनका तलफ़्फ़ुज़ कुछ न कुछ इख़्तिलाफ़ के साथ होता है. इसका अन्दाज़ा हम बाद में दिये हुए टेबिल से कर सकते हैं जिस में योरपी महीनों के नाम जरमन, अंगरेज़ी और हिन्दुस्तानी तलफ़्फ़ुज़ के लिहाज़ से लिखे गए हैं.

लातीनी महीनों के नाम

अंगरेज़ी	जरमन	हिन्दुस्तानी
जैनवरी	यानुआर	जनवरी
फ़ैबरूअरी	फ़ैब्र आर	फ़रवरी
मार्च	मैरतस	मार्च
एप्रिल	आप्रिल	अप्रैल
मे	मई	मई
जून	यूनी	जून
जोलाई	यूली	जुलाई
ओगस्ट	आवगस्ट	अगस्त
सेप्टेम्बर	ज़ेप्टेम्बर	सितम्बर
अक्टोबर	अक्टूबर	अक्तूबर
नोवम्बर	नौवेम्बर	नवम्बर
डिसम्बर	दीसम्बर	दिस्मबर

इसी एक टेबिल से हम दुनिया भर की ज़बानों पर लागू हो सकने वाले क़ानून का पता चला सकते हैं, जो क़ुदरती होने की वजह से साइन्सी क़ानूनों की तरह अटल है.

"तमाम मशहूर मुक़ामों और शख़्सियतों के नाम, तमाम मशहूर चीज़ों के नामों की तरह हर ज़बान में उस ज़बान के लब व लहजे, बनावट और झुकाव के मुताबिक़ मुख़्तलिफ़ शकल इख़्तियार करते हैं."

इसी क़ानून की संसारयाना अहमियत ज़ाहिर करने के लिये हम मुख़्तलिफ़ ज़बानों में चलन पाए हुए ग़ैर ज़बानों के लफ़्ज़ों की मिसालें पेश करते हैं.

अरबियाए हुए लफ़्ज़

सुक़रात, अफ़लातून और अरस्तू की तरह बुक़रात, जालीनूस, फ़ैसा ग़ोरस ख़ास नाम हैं. क़ैसर, फ़लसफ़ा और जुग़राफ़िया, क़न्दील, क़ौनसिल और फ़ील की तरह दूसरी ज़बानों के लफ़्ज़ हैं जो अरबी सांचे में ढाल कर अरबियाए गए हैं. दूसरी संसारी जंग में चर्चिल का नाम लोगों की ज़बानों पर चढ़ा हुआ था. अरबी में सिरे से च है ही नहीं लिहाज़ा तमाम अरब चर्चिल को शर्शिल या तर्शिल कहते और लिखते थे.

و ناتسیمت کہتے تھے. بس اسی روز سے وہ بھی ھمیشہ ناتسی کہ کر اپنی جرمن واقفیت جتاتے پھرتے تھے .

یوروپی مہینوں کے لاتینی نام فرنچ میں الگ ترہ سے بولے جاتے ھیں' انگریزی میں الگ ترہ سے اور ھندستانی میں الگ ترہ سے . مغربیت کے ساتھ ساتھ مغربی وقت شماری بھی سارے سنسار میں پھیل گئی . ھم یقین کے ساتھ کہ سکتے ھیں کہ ھر زبان میں ان کا لفظ کچھ نہ کچھ اختلاف کے ساتھ ھوتا ھے . اس کا اندازہ ھم باد میں دئے ھوئے (ٹیبل) سے کرسکتے ھیں جس میں یوروپی مہینوں کے نام جرمن' انگریزی اور ھندستانی تلفظ کے لحاظ سے لکھے گئے ھیں .

لاتینی مہینوں کے نام

انگریزی	جرمن	ھندستانی
جینوری	یانوآر	جنوری
فیبرووَاری	فیبروآر	فروری
مارچ	میرتس	مارچ
ایپرل	آپرل	اپریل
مے	مئی	مئی
جون	یونی	جون
جولائی	یولی	جولائی
اوگسٹ	آوگسٹ	اگست
سپٹمبر	زیپٹمبر	ستمبر
اکٹوبر	اکٹوبر	اکتوبر
نووِمبر	نووِیمبر	نومبر
ڈسمبر	دیسمبر	دسمبر

اسی ایک (ٹیبل) سے ھم دنیا بھر کی زبانوں پر لاگو ھوسکنے والے قانون کا پتا چلا سکتے ھیں' جو قدرتی ھونے کی وجہ سے سائنسی قانونوں کی ترہ اٹل ھے .

"تمام مشہور مقاموں اور شخصیتوں کے نام' تمام مشہور چیزوں کے ناموں کی ترہ ھر زبان میں اس زبان کے لب ولہجے' بناوٹ اور جھکاؤ کے مطابق مختلف شکل اختیار کرتے ھیں."

اسی قانون کی سنسار یانہ اھمیت ظاھر کرنے کے لئے ھم مختلف زبانوں میں چلن پائے ھوئے غیر زبانوں کے لفظوں کی مثالیں پیش کرتے ھیں:—

عربیائے ھوئے لفظ

سقراط' افلاطون اور ارسطو کی ترہ بقراط' جالینوس' فیثاغورث خاص نام ھیں . قیصر' فلسفہ اور جغرافیہ' قندیل' قونسل اور فیل کی ترہ دوسری زبانوں کے لفظ ھیں جو عربی سانچے میں ڈھال کر عربیائے گئے ھیں . دوسری سنساری جنگ میں چرچل کا نام لوگوں کی زبانوں پر چڑھا ھوا تھا . عربی میں سرے سے چ ھے ھی نہیں لہٰذا تمام عرب چرچل کو شرشل یا تشرشل کہتے اور لکھتے تھے .

हिन्दुस्तानी शब्दयात का तीसरा असूल: बदलाव उच्चारन और आम तलफ़्फ़ुज़

(डाक्टर जाफ़र हसन)

हिन्दुस्तानी शब्दयात का तीसरा असूल यह है कि लफ़्ज़ चाहे कहीं के हों: योरप के या भारत के; पुरानी ज़बानों के या नई भाशाओं के; लफ़्ज़ चाहे कहीं से लिये गए हों, अंगरेज़ी से, लातीनी से, यूनानी से, अरबी से, फ़ारसी से, तुरकी से, संस्कृत से. दिली झुकाव यह होना चाहिये कि इन लफ़्ज़ों को हिन्दुस्तानी सांचे में ढाल कर हिन्दयाया जाय. यह ज़रूरी नहीं कि कोई लफ़्ज़ अपने असली रूप में बाक़ी न रहे, मगर अकसर शब्दों के रंग रूप का बदलना भाशाइयात का अटल क़ानून है. इस अहम क़ानून की नावाक़फ़ियत से जिस क़दर नुक़सान हिन्दी और उर्दू को पहुँच चुका और पहुँच रहा है उसका अन्दाज़ा करना ही मुश्किल है. इस क़ानून की मुजरिमाना नावाक़फ़ियत हमारे कई पंडितों और मौलवियों बल्कि आलिमों और विद्वानों की सब से बड़ी भूल है.

यूनानी और लातीनी के हज़ारों शब्द योरप की तमाम भाशाओं में चालू हैं मगर इन शब्दों के उच्चारन भांत भांत के हो गए हैं. शब्दों को जाने दीजिये इनसानों और मुक़ामों के नाम अकसर बदल जाते हैं और हर ज़बान में उसकी निजी फ़ितरत के मुताबिक़ उनका उच्चारन किया जाता है.

जैसे अंगरेज़ी में

काली घाट या कलकत्ता को		Calcutta
देहली या दिल्ली	,,	Delhi
बम्बई	,,	Bombay
हैदराबाद	,,	Hyderabad

बोलते हैं. जरमन अपनी ज़बान के क़ायदे और फ़ितरी झुकाव के अनुसार कलकत्ते को Kalkutta लिखते और कल कता कहते हैं. जरमन भाशा में ज सिरे से है ही नहीं. लिहाज़ा वह जापान को यापान और शाहजहां को शाह-यहां कहते हैं और यही तलफ़्फ़ुज़ जरमन की हद तक सही है. अगर आप जरमन बोलते हुए Kalkutta की बजाय कलकत्ता कहें तो सुनने वाले ख़्याल करेंगे कि आप सिर्फ़ अपनी वाक़फ़ियत जतलाना चाहते हैं. इल्म नुमाई या विद्या प्रदर्शनी बुराई है. दूसरी संसारी जंग में हिटलर का नाम अनगिनत मौक़ों पर लिया जाता था. इसी सिलसिले में नाज़ी पारटी और नाज़ीयत का ज़िकर अैर होता था. हमारे देस के एक साहब ने किसी से सुन लिया कि ख़ुद जरमन नाज़ी तहरीक को नात्सी और नाज़ीयत

ھندستانی شبدیات کا تیسرا اسول: بدلاؤ اُچارن اور آم تلفز

(ڈاکٹر جافر ھسن)

ھندستانی شبدیات کا تیسرا اسول یہ ھے کہ لفز چاھے کہیں کے ھوں: یورپ کے یا بھارت کے؛ پرانی زبانوں کے یا نئی بھاشاؤں کے؛ لفز چاھے کہیں سے لئے گئے ھوں، انگریزی سے، لاتینی سے، یونانی سے، اربی سے، فارسی سے، ترکی سے، سنسکرت سے. دلی جھکاؤ یہ ھونا چاھئے کہ ان لفزوں کو ھندستانی سانچے میں ڈھال کر ھندیایا جائے. یہ زروری نہیں کہ کوئی لفز اپنے اسلی روپ میں باقی نہ رھے، مگر اکسر شبدوں کے رنگ روپ کا بدلنا بھاشائیات کا اٹل قانون ھے. اس اھم قانون کی ناواقفیت سے جس قدر نقسان ھندی اور اُردو کو پہنچ چکا اور پہنچ رھا ھے اس کا اندازہ کرنا ھی مشکل ھے. اس قانون کی مجرمانہ ناواقفیت ھمارے کئی پنڈتوں اور مولویوں بلکہ آلموں اور ودوانوں کی سب سے بڑی بھول ھے.

یونانی اور لاتینی کے ھزاروں شبد یورپ کی تمام بھاشاؤں میں چالو ھیں مگر ان شبدوں کے اُچارن بھانت بھانت کے ھوگئے ھیں. شبدوں کو جانے دیجئے انسانوں اور مقاموں کے نام اکسر بدل جاتے ھیں اور ھر زبان میں اس کی نجی فطرت کے مطابق ان کا اُچارن کیا جاتا ھے.

جیسے انگریزی میں

Calcutta	کو	کالی گھاٹ یا کلکتہ
Delhi	,,	دھلی یا دلی
Bombay	,,	بمبئی
Hyderabad	,,	حیدرآباد

بولتے ھیں. جرمن اپنی زبان کے قاعدے اور فطری جھکاؤ کے انوسار کلکتے کو Kalkutta لکھتے اور دل کتا کہتے ھیں. جرمن بھاشا میں ج سرے سے ھے ھی نہیں. لہازا وہ جاپان کو یاپان اور شاھجہاں کو شاھیہاں کہتے ھیں اور یہی تلفز جرمن کی حد تک سہی ھے. اگر آپ جرمن بولتے ھوئے Kalkutta کی بجائے کلکتہ کہیں تو سننے والے خیال کریںگے کہ آپ سرف اپنی واقفیت جتلانا چاھتے ھیں. الم نمائی یا ودیا پردرشنی برائی ھے. دوسری سنساری جنگ میں ھٹلر کا نام ان‌گنت موقعوں پر لیا جاتا تھا. اسی سلسلے میں نازی پارٹی اور نازیت کا زکر کثیر ھوتا تھا. ھمارے دیس کے ایک صاحب نے کسی سے سن لیا کہ خود جرمن نازی تحریک کو ناتسی اور نازیت

का दुश्मन है ? फिर उस तीन की कमेटी में ज़ाहिर है कि कम्युनिस्ट चीन और कोरिया के हक़ में अपनी राय देगा और ग़ैर कम्युनिस्ट संयुक्त राष्ट्र संघ के पक्ष में. पर वह तीसरा बिचौलिया ? वह भी क्या उस संयुक्त राष्ट्र संघ के पक्ष में राय न देगा जिसके लड़ाई एलान करने में वह शरीक रहा है ? इस तरह इस कमेटी की हक़ीक़त असलियत में नहीं के बराबर हो जाती है. तीसरी बात यह है कि आख़िर किस प्वाइन्ट पर पान मुन जान की बातचीत रुक गई थी ? इसी बात पर न कि क़ैदी किस उसूल से लौटाए जायें ? और उस निस्बत चीन और कोरिया का कहना एक था और संयुक्त राष्ट्र संघ या अमरीका का दूसरा. वह बुनियादी झगड़ा हिन्दुस्तानी मसविदे में बदस्तूर क़ायम है. इसलिये उस मसले पर मामला जहां का तहां रह जाता है और चीन या कोरिया देखता है कि जिस बात के लिये वह पान मुन जान में अड़ा था उस में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा. इस तरह हिन्दुस्तान के मसविदे ने समझौते को आगे नहीं बढ़ाया और उस की इबारत की लफ़्फ़ाज़ी हटा देने पर झगड़े की हक़ीक़त वहीं की वहीं रह जाती है. फिर कोई वजह नहीं कि सारे संसार का माना हुआ जिनेवा का उसूल न माना जाय. सोवियत रूस ने जो लड़ाई को बिलकुल बन्द कर देने की बात उठाई है वह भी एक ज़रूरी बात है जिसका हवाला हिन्दुस्तानी मसविदे में नहीं है. जब हम सुलह की बात चीत करते हैं तो उस बातचीत में पहली शर्त यही होनी चाहिये कि लड़ाई बिलकुल बन्द कर दी जाय आख़िर ऐसा करने में अमन पसंद क़ौमों को क्या और क्यों एतराज़ हो सकता है ? उन लोगों को अक़ल से कोई वास्ता नहीं जो यह समझते हैं कि लड़ाई रुकते ही चीन, कोरिया या रूस वालों को लड़ाई के सामान बनाने का मौक़ा मिल जायगा क्योंकि उन्हें समझना चाहिये कि मोर्चों पर लड़ने वाली फ़ौजें घर लौट कर हथियार नहीं बनातीं, उन्हें घर वाले ही बनाते हैं और बनाते रहते हैं.

कोरिया की लड़ाई की हक़ीक़त यह है. कोरिया और चीन को लड़ाई मंज़ूर नहीं क्योंकि लड़ाई उनके निर्मान के कामों के ख़िलाफ़ जायगी. वह अपने घर में बैठे दूसरों की ताक़त और घमंड भरी बरबरता का शिकार हो रहे हैं, उन की बरबरता का जो अपने मुल्क की हदों से बाहर दूसरों की ज़मीन पर हैं और वहां अपनी आज़ादी की रक्षा कर रहे हैं ! चीन के चांद तारे उस के अमन की कैफ़ियत जानते हैं और कोरिया की ज़मीन लहू से उस का सबूत देती है. उस की हवा में अमन के लिये मरे हुओं की पुकार गूंज रही है.

کا دشمن ھے ؟ پھر اُس تین کی کمیٹی میں ظاھر ھے کہ کمیونسٹ چین اور کوریا کے حق میں اپنی رائے دے گا اور غیر کمیونسٹ سنیکت راشٹر سنگھ کے پکش میں . پر وہ تیسرا بچولیا؟ وہ بھی کیا اُس سنیکت راشٹر سنگھ کے پکش میں رائے نہ دے گا جس کے لڑائی اعلان کرنے میں وہ شریک رہا ھے ؟ اِسطرح اِس کمیٹی کی حقیقت اصلیت میں نہیں کے برابر ھو جاتی ھے . تیسری بات یہ ھے کہ آخر کس پوائنٹ پر پان من جان کی بات چیت رک گئی تھی ؟ اسی بات پر نہ کہ قیدی کس اُصول سے لوٹائے جائیں ؟ اور اس نسبت چین اور کوریا کا کہنا ایک تھا اور سنیکت راشٹر سنگھ یا امریکہ کا دوسرا . وہ بنیادی جھگڑا ھندستانی مسودے میں بدستور قائم ھے . اس لئے اُس مسئلے پر معاملہ جہاں کا تہاں رہ جاتا ھے اور چین یا کوریا دیکھتا ھے کہ جس بات کے لئے وہ پان من جان میں اَڑا تھا اس میں کوئی فرق نہیں پڑا . اِسطرح ھندستان کے مسودے نے سمجھوتے کو آگے نہیں بڑھایا اور اُسکی عبارت کی لفاظی ھٹا دینے پر جھگڑے کی حقیقت وھیں کی وھیں رہ جاتی ھے . پھر کوئی وجہ نہیں کہ سارے سنسار کا مانا ھوا جنیوا کا اُصول نہ مانا جائے. سوویت روس نے جو لڑائی کو بالکل بند کر دینے کی بات اُٹھائی ھے وہ بھی ایک ضروری بات ھے جس کا حوالہ ھندستانی مسودے میں نہیں ھے . جب ھم صلح کی بات چیت کرتے ھیں تو اُس بات چیت میں پہلی شرط یہی ھونی چاھئے کہ لڑائی بالکل بند کر دی جائے . آخر ایسا کرنے میں امن پسند قوموں کو کیا اور کیوں اعتراض ھو سکتا ھے؟ اُن لوگوں کو عقل سے کوئی واسطہ نہیں جو یہ سمجھتے ھیں کہ لڑائی رکتے ھی چین' کوریا یا روس والوں کو لڑائی کے سامان بنانے کا موقع مل جائے گا کیونکہ اُنہیں سمجھنا چاھئے کہ مورچوں پر لڑنے والی فوجیں گھر لوٹ کر ھتھیار نہیں بناتیں' اُنھیں گھر والے ھی بناتے ھیں اور بناتے رھتے ھیں .

کوریا کی لڑائی کی حقیقت یہ ھے . کوریا اور چین کو لڑائی منظور نہیں کیونکہ لڑائی اُن کے نرمان کے کاموں کے خلاف جائے گی . وہ اپنے گھر میں بیٹھے' دوسروں کی طاقت اور گھمنڈ بھری بربرتا کا شکار ھو رہے ھیں' ان کی بربرتا کا جو اپنے ملک کی حدوں سے باھر دوسروں کی زمین پر ھے اور وھاں اپنی آزادی کی رکشا کر رہے ھیں ! چین کے چاند تارے اُسکے امن کی کیفیت جانتے ھیں اور کوریا کی زمین لہو سے اُس کا ثبوت دیتی ھے . اُسکی ھوا میں امن کے لئے مرے ھوؤں کی پکار گونج رھی ھے .

मच्छर वग़ैरा ढेर के ढेर बम के टुकड़ों के साथ ऐसी जगहों में मिले जहां बग़ैर ले जाय गए उनका पहुँच सकना मुमकिन न था. उन टाइफ़ाइड, कालरा, मलेरिया, चेचक वग़ैरा बीमारियों के जरियों को हमने ख़ुद देखा, पीकिंग की नुमायश में. हम इस बात से डरते थे कि हमारे कहने का लोग यक़ीन न करेंगे पर जो अन्तरराष्ट्री निश्पक्ष वैज्ञानिकों की रिपोर्ट निकली उस पर टीका टिप्पणी करते हुए 'मैनचसटर गारजियन' ने लिखा कि हम उस हर चीज़ को झूट नहीं कह सकते जो कम्युनिस्ट दुनिया से आती है. जिस लन्दन यूनिवरसिटी के अंगरेज़ वैज्ञानिक की तहक़ीक़ात की कैफ़ियत और राय इस बारे में छपी है उस ने 30 बरस वैज्ञानिक तरीक़ों से इंगलैंड में ईमानदार खोजें की हैं और कोई वजह नहीं कि हम उसकी बात को झूट क़रार दे दें.

सुलह की बात इधर चल ही रही थी कि उधर कोरिया और चीन के क़ैदी कनसनट्रेशन कैम्पों में ग़ोल के ग़ोल, सैकड़ों की तादाद में मारे जाने लगे और आज भी मारे जा रहे हैं. सवाल यह है कि लड़ाई के क़ैदियों का क्या हो. इसी एक बात पर सारा मामला लटका हुआ है कोरिया और चीन का कहना यह है कि 1949 में जिनेवा कानफ़ान्स में जो उसूल एक बार तय हो चुका है उसी के मुताबिक़ क़ैदियों को लड़ाई बन्द होते ही अपने पक्ष को लौटा दिया जाय. पर अमरीका इस की मुख़ालफ़त इसलिये लगातार करता रहा है कि चीनी और उत्तर कोरिया के क़ैदियों को वह चियांग काई शेक और सिंग मन री को देकर उन्हें अपने ही मुल्क की तोपों के मुंह में झोंक दिया जाय या उन्हें अमरीकी रेडियो के सामने खड़ा कर उन से कहलाया जाय कि वह अपने कम्युनिस्ट मुल्क में तबाह हैं. यक़ीनन इसे न उत्तर कोरिया मंज़ूर कर सकता है और न चीन.

इधर हाल में हिन्दुस्तान ने संयुक्त राष्ट्र संघ के सामने मसविदा पेश किया था जिस में एक कम्युनिस्ट, एक ग़ैर कम्युनिस्ट और एक बिचौलिये की एक कमेटी क़ायम करने की सलाह दी गई. अमरीका पहले उसकी मुख़ालफ़त करता रहा पर जैसे ही उसने देखा कि सोवियत उस के ख़िलाफ़ है वैसे ही उसने दुनिया की राय को सोवियत के ख़िलाफ़ करने के लिये हिन्दुस्तानी मसविदे को उछालना शुरू किया. चीन के उसे ना मंज़ूर करने से बहुत से लोगों के दिल को चोट पहुंची और बहुतों ने नाक भौं सिकोड़ी. पर इस के मुताल्लिक़ कुछ बुनियादी बातें समझ लेनी ज़रूरी हैं. अव्वल तो यह कि इस लड़ाई में एक फ़रीक़ क़ानूनन संयुक्त राष्ट्र संघ है, दूसरा कोरिया चीन है. जब तक कि दूसरे फ़रीक़ को उस सभा में बैठने का हक़ हासिल न होगा तब तक उस संस्था का कोई प्रस्ताव क्या एक तरफ़ा न होगा और वह उस ख़ुद एक फ़रीक़ का जो दूसरे

مچھر وغیرہ ڈھیر کے ڈھیر بم کے ٹکڑوں کے ساتھ ایسی جگہوں میں ملے جہاں بغیر لے جائے گئے اُن کا پہنچ سکنا ممکن نہ تھا. اُن ٹائفائڈ، کالرا، ملیریا، چیچک وغیرہ بیماریوں کے ذریعوں کو ہم نے خود دیکھا، پیکنگ کی نمائش میں. ہم اِس بات سے ڈرتے تھے کہ ہمارے کہنے کا لوگ یقین نہ کریں گے پر جو انتر راشٹری نشپکش' ویگیانکوں کی رپورٹ نکلی اس پر ٹیکا ٹپنی کرتے ہوئے' مینچسٹر گارجین' نے لکھا کہ ہم اُس ہر چیز کو جھوٹ نہیں کہہ سکتے جو کمیونسٹ دنیا سے آتی ہے. جس لندن یونیورسٹی کے انگریز ویگیانک کی تحقیقات کی کیفیت اور رائے اِس بارے میں چھپی ہے اُس نے 30 برس ویگیانک طریقوں سے انگلینڈ میں ایماندار کھوجیں کی ہیں اور کوئی وجہ نہیں کہ ہم اُس کی بات کو جھوٹ قرار دے دیں.

صلح کی بات ادھر چل ہی رہی تھی کہ اُدھر کوریا اور چین کے قیدی کنسنٹریشن کیمپوں میں غول کے غول' سیکڑوں کی تعداد میں مارے جانے لگے اور آج بھی مارے جا رہے ہیں. سوال یہ ہے کہ لڑائی کے قیدیوں کا کیا ہو. اِسی ایک بات پر سارا معاملہ لٹکا ہوا ہے. کوریا اور چین کا کہنا یہ ہے کہ 1949 میں جنیوا کانفرنس میں جو اصول ایک بار طے ہو چکا ہے اُسی کے مطابق قیدیوں کو لڑائی بند ہوتے ہی اپنے پکش کو لوٹا دیا جائے. پر امریکہ اِس کی مخالفت اِس لئے لگاتار کرتا رہا ہے کہ چینی اور اُتر کوریا کے قیدیوں کو وہ چیانگ کائی شیک اور سنگ من ری کو دے کر اُنہیں اپنے ہی ملک کی توپوں کے منہ میں جھونک دیا جائے یا اُنہیں امریکی ریڈیو کے سامنے کھڑا کر اُن سے کہلایا جائے کہ وہ اپنے کمیونسٹ ملک میں تباہ ہیں. یقیناً اِسے نہ اُتر کوریا منظور کر سکتا ہے اور نہ چین.

اِدھر حال میں ہندستان نے سنیکت راشٹر سنگھ کے سامنے مسودہ پیش کیا تھا جس میں ایک کمیونسٹ' ایک غیر کمیونسٹ اور ایک بچولئے کی ایک کمیٹی قائم کرنے کی صلاح دی گئی. امریکہ پہلے اس کی مخالفت کرتا رہا پر جیسے ہی اس نے دیکھا کہ سوویت اُس کے خلاف ہے ویسے ہی اس نے دنیا کی رائے کو سوویت کے خلاف کرنے کے لئے ہندستانی مسودے کو اُچھالنا شروع کیا. چین کے اُسے نامنظور کرنے سے بہت سے لوگوں کے دل کو چوٹ پہونچی اور بہتوں نے ناک بھوں سکوڑی. پر اس کے متعلق کچھ بنیادی باتیں سمجھ لینی ضروری ہیں. اول تو یہ کہ اِس لڑائی میں ایک فریق قانوناً سنیکت راشٹر سنگھ ہے' دوسرا کوریا چین ہے. جب تک کہ دوسرے فریق کو اس سبھا میں بیٹھنے کا حق حاصل نہ ہوگا تب تک اُس سنستھا کا کوئی پرستاؤ کیا ایک طرفہ نہ ہوگا اور وہ اُس خود ایک فریق کا جو دوسرے

26 साल का तोपची था. उसके दस्ते ने एक गांव की रक्षा करते हुए 17 साल की एक लड़की और एक बच्चे को बचाया बच्चा तुरन्त मर गया पर लड़की जिसकी मरहम पट्टी करनी थी जब शर्म के मारे ज़मीन में गड़ चली तो वांग ने उस से कहा—बहन, मैं तुझ से कई साल बड़ा भाई हूँ. भाई के सामने परदा कर अपनी जान न खो जिस्म के कपड़े उतार डाल जिस से तेरी मरहम पट्टी कर सकूं और जान कि मेरे भी बहनें हैं जिनको बचपन में मैंने नंगी देखा है. लड़की ने कपड़े उतार दिये. अजनबी भाई मरहम पट्टी कर दुश्मनों के फ़िराक़ में चल पड़ा और कोरिया डेलीगेशन के उस प्रधान ने सिन सिन ज़ा का जो बयान कि या वह तो इनसान के इतिहास में सोने के हरफ़ों में लिखा जायगा. सिन सिन ज़ा उस अस्पताल की नर्स थी जिसे गांव के साथ ही अमरीकी फ़ौजों ने बरबाद कर दिया था. सिन सिन ज़ा को पकड़ कर ऊंचे चबूतरे पर मादरज़ाद नंगी खड़ा कर दिया गया और उस के पीछे एक आदम क़द शीशा टिका दिया गया. फिर उत्तर कोरिया के सिपाहियों को उसे देखते हुए सामने से गुज़रने का हुक्म मिला. वह ठिठके और उन्होंने अपनी आंखें ढक लीं. सिन सिन ज़ा ने चिल्ला कर कहा—"कोरिया के बहादुर सिपाहियो, अपनी इनसानियत की नंगी इज़्ज़त को बे ख़ौफ़ देख लो और यह कि कोरिया की बेटी किस शान से मरना जानती है, जिस से तुम उस के दुशमनों से बदला ले सको." बे ख़ौफ़ कोरियन सिपाहियों ने नारा बुलन्द किया—'अमरीकी सामराजवाद मुरदाबाद!' फिर तो दुशमनों पर कुछ ऐसा ख़ौफ़ छा गया कि सिन सिन ज़ा और उसके साथियों को छोड़ कर वह चुपचाप चले गए.

यह रोंगटे खड़े कर देने वाली क़ुरबानियां हैं, और यह कुल नहीं महज़ कुछ हैं, उन बे शुमार क़ुरबानियों में से कुछ जो कोरिया की लड़ाई में आज़ादी के योद्धाओं ने की हैं. दुनिया के जनमत और अपनी मुश्किलों से परेशान हो कर अमरीका ने सुलह की बात छेड़ी. सुलह की बात होने लगी पर उस बीच भी सुलह के मरकज़ पर भी अमरीकी बमबाज़ों ने हमले किये और गोकि उन के जनरल पहले उस ज़िम्मेदारी से इनकार करते गए पर आख़िर में उन्हें मानना पड़ा कि क़ायदा उनके बमबाज़ों ने तोड़ा है. सुलह की बात चीत के बीच अगर लड़ाई बिलकुल रोकी नहीं जा सकती थी तो कम से कम उसकी तेज़ी में तो नरमी लाई ही जा सकती थी. पर ऐसा कुछ न कर 500 अमरीकी बमबाज़ों ने यालू की सरहद पर, चीनी ज़मीन पर, ग़ैर लड़ाकू आबादी पर, बम बरसाए. सारी दुनिया ने इस अमरीकी बेहयाई पर लानत भेजी. ख़ुद पंडित नेहरू ने पार्लियामेन्ट में बड़ी झल्लाहट के साथ उस ख़बर का ज़िकर किया. साथ ही ज़हरीले बम फेंके जाने लगे और मक्खी, मक्खियां,

26 سال کا توپچی تھا۔ اُس کے دستے نے ایک گاؤں کی رکشا کرتے ہوئے 17 سال کی ایک لڑکی اور ایک بچے کو بچایا۔ بچہ تُرنت مر گیا پر لڑکی جسکی مرہم پٹی کرنی تھی جب شرم مارے کے زمین میں گڑ چلی تو وانگ نے اُس سے کہا—بہن، میں تجھ سے کئی سال بڑا بھائی ہوں۔ بھائی کے سامنے پردہ کر اپنی جان نہ کھو۔ جسم کے کپڑے اُتار ڈال جس سے تیری مرہم پٹی کر سکوں اور جان کہ میرے بھی بہنیں ہیں جن کو بچپن میں میں نے ننگی دیکھا ہے۔ لڑکی نے کپڑے اُتار دیئے۔ اجنبی بھائی مرہم پٹی کر دشمنوں کے فراق میں چل پڑا اور کوریا ڈیلیگیشن کے اُس پردھان نے سن سن زا کا جو بیان کیا وہ تو انسان کے اِتہاس میں سونے کے حرفوں میں لکھا جائے گا۔ سن سن زا اُس اسپتال کی نرس تھی جسے گاؤں کے ساتھ ہی امریکی فوجوں نے برباد کر دیا تھا۔ سن سن زا کو پکڑ کر اُونچے چبوترے پر مادرزاد ننگی کھڑا کر دیا گیا اور اُس کے پیچھے ایک آدم قد شیشہ ٹکا دیا گیا۔ پھر اُتر کوریا کے سپاہیوں کو اُسے دیکھتے ہوئے سامنے سے گذرنے کا حکم ملا۔ وہ ٹھٹکے اور اُنہوں نے اپنی آنکھیں ڈھک لیں۔ سن سن زا نے چلا کر کہا—"کوریا کے بہادر سپاہیو، اپنی انسانیت کی ننگی عزت کو بے خوف دیکھ لو اور یہ کہ کوریا کی بیٹی کس شان سے مرنا جانتی ہے، جس سے تم اُس کے دشمنوں سے بدلا لے سکو۔" بے خوف کورین سپاہیوں نے نعرہ بلند کیا—'امریکی سامراج واد مردہ باد!' پھر تو دشمنوں پر کچھ ایسا خوف چھا گیا کہ سن سن زا اور اُس کے ساتھیوں کو چھوڑ کر وہ چپ چاپ چلے گئے۔

یہ رونگٹے کھڑے کر دینے والی قربانیاں ہیں، اور یہ کل نہیں محض کچھ ہیں، اُن بے شمار قربانیوں میں سے کچھ جو کوریا کی لڑائی میں آزادی کے یودھاؤں نے کی ہیں۔ دنیا کے جن مت اور اپنی مشکلوں سے پریشان ہو کر امریکہ نے صلح کی بات چھیڑی۔ صلح کی بات ہونے لگی پر اُس بیچ بھی صلح کے مرکز پر بھی امریکی بم بازوں نے حملے کئے اور گو کہ اُن کے جنرل پہلے اس ذمہ داری سے انکار کرتے گئے پر آخر میں اُنہیں ماننا پڑا کہ قاعدہ اُن کے بم بازوں نے توڑا ہے۔ صلح کی بات چیت کے بیچ اگر لڑائی بالکل روکی نہیں جا سکتی تھی تو کم سے کم اُس کی تیزی میں تو نرمی لائی ہی جا سکتی تھی۔ پر ایسا کچھ نہ کر 500 امریکی بم بازوں نے یالو کی سرحد پر، چینی زمین پر، غیر لڑاکو آبادی پر، بم برسائے۔ ساری دنیا نے اِس امریکی بے حیائی پر لعنت بھیجی۔ خود پنڈت نہرو نے پارلیامنٹ میں بڑی جھلاہٹ کے ساتھ اُس خبر کا ذکر کیا۔ ساتھ ہی زہریلے بم پھینکے جانے لگے اور مکھی، مکھیاں،

क्या हाल होगा ? और अगर रूस के अलग रहते कोरिया की लड़ाई की कैफ़ियत यह है कि अमरीका को मुंह चुराने की नौबत आ गई है तो चीन को हमलावर क़रार देने पर दोनों की दोस्ताना सुलह के मुताबिक़ जब चीन पर हमले के बाद रूस खुल्लम खुल्ला लड़ाई के मैदान में उतर कर चार दिन में पच्छिमी योरप को रौंद डालेगा तो उसे कौन बचाएगा ?

लड़ाई चलती रही. चीन के किसान और मज़दूर रोज़ के काम के घंटों के बाद आध घंटा और इसलिये मेहनत करने लगे कि कोरिया के मोरचे पर लड़ने वाले चीनी वालनटियरों या कोरियन लड़ाकों को खाने पहनने की कमी न हो. इस बीच अमरीका के कारख़ानों ने तोपें उगलीं, हवाई जहाज़ उगले, नपाम और जरमीले बम उगले. और कोरिया के साथ साथ चीन की सरहद्दी ज़मीन यालू की की घाटी ख़ून से लाल हो गई. जब तक 38 वीं पड़ी सरहद्दी लकीर दूर थी एचेसन और बेविन कहते रहे मंज़िल वही है, बस वही. पर वहां तक पहुँचते ही उन्होंने अपनी बेहया ज़बान बदल दी और कहा, उस लकीर को पार कर जाना तो बिल्कुल ठीक है. और वह पार कर गए.

आज कोरिया के शहर और गांव मिट्टी में मिल चुके हैं, तोपों की तड़प से पहाड़ की छाती फट चुकी है, उसकी गुफाओं में लोगों ने पनाह ली है. इस बीच की हुई कोरिया की क़ुरबानियां बयान तवारीख़ के वरक़ पुकार पुकार कर सुनायेंगे

इन क़ुरबानियों का जो चित्र पीकिंग कानफ़रेन्स में आए कोरियन डेलीगेशन के पेशवा हान सुल या ने खींचा वह भुलाया नहीं जा सकता. कहने लगे हमारे गांवों में एक घर खड़ा नहीं, एक मर्द नहीं, एक बच्चा नहीं, एक औरत नहीं जिसकी असमत बची हो, जिसके जिस्म की शरम की जगहें संगीनों से फाड़ न डाली गई हों. मेरे सामने रौलट एक्ट के बाद का उस पंजाबी गांव का रूप खड़ा हो गया जिसका ज़िकर महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा में किया है— कि किस तरह वहां के मर्द पकड़ लिए गए थे और औरतों पर ग़ैर इनसानी ज़ुल्म ढाए गए थे.

हान सुल या ने अपनी आंखों में आंसू भर कर बताया कि किस तरह एक कमरे में 77 बच्चे बरफ़ में जम गए थे. जिन के नाख़ुन इसलिये उखड़ गए थे कि जब चीख़ते चिल्लाते उन्होंने खिड़कियों को पकड़ा तो उनके हाथों में संसार की आज़ादी के ज़िम्मेदार अमरीकी सिपाहियों ने संगीनें भोंक दी थीं ! हान सुल या के मुंह का कौर निगला न जा सका.

और हमदर्दी और दिलेरी की जो मिसालें उन्होंने दीं वह लड़ाई के इतिहास में लासानी हैं. वांग लिन पो

کیا حال ہوگا؟ اور اگر روس کے الگ رہتے کوریا کی لڑائی کی کیفیت یہ ہے کہ امریکہ کو منہ چرانے کی نوبت آ گئی ہے تو چین کو حملہ‌ور قرار دینے پر دونوں کی دوستانہ صلح کے مطابق جب چین پر حملے کے بعد روس کھلم کھلا لڑائی کے میدان‌میں اتر کر چار دن میں پچھمی یورپ کو روند ڈالیگا تو اسے کون بچائیگا ؟

لڑائی چلتی رہی . چین کے کسانوں اور مزدور روز کے کام کے گھنٹوں کے بعد آدھ گھنٹہ اور اس لئے محنت کرنے لگے کہ کوریا کے مورچے پر لڑنے والے چینی والنٹیروں یا کورین لڑاکوں کو کھانے پہننے کی کمی نہ ہو . اِس بیچ امریکہ کے کارخانوں نے توپیں اگلیں' ہوائی جہاز اگلے' نپام اور جرمیلے بم اگلے . اور کوریا کے ساتھ ساتھ چین کی سرحدی زمین یالو کی گھاٹی خون سے لال ہوگئی . جب تک 38 ویں پڑی سرحدی لکیر دور تھی اچےسن بیون کہتے رہے منزل وہی ہے' بس وہی. پر وہاں تک پہونچتے ہی انہوں نے اپنی بےحیا زبان بدل دی اور کہا' اس لکیر کو پار کر جانا تو بالکل ٹھیک ہے . اور وہ پار کر گئے .

آج کوریا کے شہر اور گاؤں مٹی میں مل چکے ہیں' توپوں کی تڑپ سے پہاڑ کی چھاتی پھٹ چکی ہے' اس کی گپھاؤں میں لوگوں نے پناہ لی ہے . اِس بیچ کی ہوئی کوریا کی قربانیاں‌بیان تواریخ کے ورق‌پکار پکار کر سنائینگے.

اُن قربانیوں کا جو چتر پیکنگ کانفرنس میں آئے کورین ڈیلی گیشن کے پیشوا ہان‌سل‌یا نے کھینچا وہ بھلایا نہیں جاسکتا . کہنے لگے ہمارے گاؤں میں ایک گھر کھڑا نہیں' ایک مرد نہیں' ایک بچہ نہیں' ایک عورت نہیں جس کی عصمت بچی ہو' جس کے جسم کی شرم کی جگہیں سنگینوں سے پھاڑ نہ ڈالی گئی ہوں. میرے سامنے رولٹ ایکٹ کے بعد کا اُس پنجابی گاؤں کا روپ کھڑا ہوگیا جس کا ذکر مہاتما گاندھی نے اپنی آتم کتھا میں کیا ہے . کہ کس طرح وہاں کے مرد پکڑ لئے گئے تھے اور عورتوں پر غیر اِنسانی ظلم ڈھائے گئے تھے .

ہان سل‌یا نے اپنی آنکھوں میں آنسو بھرکر بتایا کہ کس طرح ایک کمرے میں 77 بچے برف میں جم گئے تھے. جن کے ناخون اِس لئے اُکھڑ گئے تھے کہ جب چیختے چلاتے انہوں نے کھڑکیوں کو پکڑا تو اُن کے ہاتھوں میں سنسار کی آزادی کے ذمےدار امریکی سپاہیوں نے سنگینیں بھونک دی تھیں! ہان سل‌یا کے منہ کا کور نگلا نہ جاسکا .

اور ہمدردی اور دلیری کی جو مثالیں اُنہوں نے دیں وہ لڑائی کے اتہاس میں لاثانی ہیں . وانگ لن پو'

बरसाता रहा. उसका एलान था कि वह 'कोई चलती हुई चीज़ ज़िन्दा न छोड़ेगा' और उसने न केवल गांव के गांव जला डाले, खेत और मवेशी नश्ट कर दिये, बच्चों की ज़रा सी जान पर वह दांत भींच कर पड़ा बल्कि पहाड़ों तक को उसने चूर चूर कर डाला. यहां तक कि उसकी यह ध्वंसलीला ख़ुद सिंग मन री की सरकार के वज़ीरों को बर्दाश्त न हो सका, दक्खिन कोरिया के पार्लिमेन्ट के मेम्बरों ने बग़ावत कर दी और सिंग मन री को उन्हें क़ैद करना पड़ा. सिंग मन री की अपने ही देश में वही दशा हुई जो चियांग काई शेक की चीन में हुई थी. आज भी वह अमरीका के बूते दक्खिन कोरिया में खड़ा है.

जब अमरीका द्वारा दक्खिन कोरिया के बाशिन्दों का बेशुमार ख़ून चीन को बरदाश्त न हो सका तब उसके वालिनटियर लाखों की तादाद में संसार की शान्ति भंग करती हुई उस अमरीकी फ़ौज के ख़िलाफ़ अपने पड़ोसी की हिफ़ाज़त के लिये लड़ाई के मैदान में कूद पड़े. पांसा पलट गया. जून 1950 और मई 1951 के बीच जो अमरीकी सेना की हार हुई है वह इतिहास में अपना स्थान रखेगी. 38 वीं पड़ी रेखा पार, सियोल लांघ, दूर दक्खिन समन्दर किनारे की तरफ़ विदेशी फ़ौज भाग चली, अपने पक्ष वालों के ही गांव जलाती, पुल तोड़ती, रेल उखाड़ती, सड़कें नश्ट करती, इमारतें गिराती, खड़ी खेती जलाती, अपने सारे अस्त्रशास्त्रों के साथ, तोपें साथ लिये टैंकों में भागती, फिर फिर देखती और उनके पीछा करने वाले निहत्थे कोरियन और चीनी लड़ाके सिर्फ़ नाम को हथियार लिये, ज़ीरो डिगरी से नीचे की सरदी में दौड़ते पसीने में तरबतर जिनके रुकते ही लिबास जम जाते थे. अमरीकी फ़ौज के कालिख लग गई, अफ़रीक़ा के मैदानों से जरमन फ़ौजें इतनी तेज़ न भागी थीं और न ग्रीस की ज़मीन से जरमनों के सामने से अंगरेज़ जनता कोरिया के मैदानों से बेटरन भागे. ख़ूनी मैकार्थर का बड़ी बात कहता छोटा ओबड़ नीचे लटक गया. ट्रूमन ने उसे निकम्मा कह उसे लड़ाई के मैदान से बरख़ास्त कर दिया.

अमरीका ने यूनो की बैठकों में हर चन्द कोशिश की कि चीन को हमलावर क़रार दे दिया जाय जिससे उस पर एटम बम फेंका जा सके. पर सोवियत और हिन्दुस्तान के मारे वह न हो सका. जनरल वू ने कहा—आख़िर कितने एटम बम चीन पर तोड़ोगे—पांच, दस, पन्द्रह, कितने ? पन्द्रह का मतलब है शायद पचास लाख चीनी जानें. जो चीन अपनी और एशिया की हिफ़ाज़त के लिये बख़ुशी क़ुरबान कर देगा. पर अगर कहीं हमने पांच सादे बम, उन हिफ़ाज़ती बैलूनों को भेद कर, जिन्हें हम ज़रूर ही भेद लेंगे, न्यूयार्क पर फेंक दिये तो भला मैन हटन का

برساتا رہا. اُس کا اعلان تھا کہ وہ 'کوئی چلتی ہوئی چیز زندہ نہ چھوڑیگا' اور اُس نے نہ کیول گاؤں کے گاؤں جلا ڈالے' کھیت اور مویشی نشٹ کر دئیے' بچوں کی ذرا سی جان پر وہ دانت بھینچ کر پڑا بلکہ پہاڑوں تک کو اُس نے چور چور کر ڈالا . یہاں تک کہ اُس کی یہ دھونس لیلا خود سنگ من ری کی سرکار کے وزیروں کو برداشت نہ ہوسکا' دکھن کوریا کے پارلیمنٹ کے ممبروں نے بغاوت کردی اور سنگ من ری کو اُنھیں قید کرنا پڑا . سنگ من ری کی اپنے ہی دیش میں وہی دشا ہوئی جو چیانگ کائی شیک کی چین میں ہوئی تھی . آج بھی وہ امریکہ کے بوتے دکھن کوریا میں کھڑا ہے .

جب امریکہ دوارا دکھن کوریا کے باشندوں کا بےشمار خون چین کو برداشت نہ ہوسکا تب اُس کے والنٹیر لاکھوں کی تعداد میں سنسار کی شانتی بھنگ کرتی ہوئی اُس امریکی فوج کے خلاف اپنے پڑوسی کی حفاظت کے لئے لڑائی کے میدان میں کود پڑے . پانسا پلٹ گیا . جون 1950 اور مئی 1951 کے بیچ جو امریکی سینا کی ہار ہوئی ہے وہ اتہاس میں اپنا استھان رکھیگی. 38 ویں پڑی ریکھا پار' سیؤل لانگھ' دور دکھن سمندر کنارے کی طرف ودیشی فوج بھاگ چلی' اپنے پکش والوں کے ہی گاؤں جلاتی' پل توڑتی' ریل اکھاڑتی' سڑکیں نشٹ کرتی' عمارتیں گراتی' کھڑی کھیتی جلاتی . اپنے سارے استر شستروں کے ساتھ' توپیں ساتھ لئے ٹینکوں میں بھاگتی' پھر پھر دیکھتی اور اُن کے پیچھا کرنے والے نہتے کورین اور چینی لڑاکے صرف نام کو ہتھیار لئے' زیرو ڈگری سے نیچے کی سردی میں دوڑتے پسینے میں تر بتر جنکے رکتے ہی لباس جم جاتے تھے . امریکی فوج کے کالکھ لگ گئی' افریقہ کے میدانوں سے جرمن فوجیں اِتنی تیز نہ بھاگی تھیں اور نہ گریس کی زمین سے جرمنوں کے سامنے سے انگریز جنتا کوریا کے میدانوں سے ویٹرن بھگے . خونی میکارتھر کا بڑی بات کہتا چھوٹا تھوبڑ نیچے لٹک گیا . ٹرومن نے اُسے نکما کہ اُسے لڑائی کے میدان سے برخاست کردیا .

امریکہ نے یونو کی بیٹھکوں میں ہر چند کوشش کی کہ چین کو حملہ آور قرار دے دیا جائے جس سے اُس پر ایٹم بم پھینکا جاسکے . پر سوویت اور ہندستان کے مارے وہ نہ ہوسکا . جنرل وو نے کہا— آخر کتنے ایٹم بم چین پر توڑوگے—پانچ' دس' پندرہ' کتنے ؟ پندرہ کا مطلب ہے شاید 50 لاکھ چینی جانیں' جو چین اپنی اور ایشیا کی حفاظت کے لئے بخوشی قربان کر دیگا. پر اگر کہیں ہم نے پانچ سادے بم' اُن حفاظتی بیلونوں کو بھید کر' جنھیں ہم ضرور ہی بھید لینگے' نیویارک پر پھینک دئے تو بھلا مین ہٹن کا

डरने लगता है और जो आख़ीर में जा कर इस तरह के एक वजूद में ख़तम होते हैं जो सब को घेरे हुए है और जो हमारे ख़याल की दूर से दूर की पहुँच से भी परे है."

कोरिया

(डाक्टर भगवत सरन उपाध्याय)

यह कोरिया है, ख़ून से नहाया हुआ, आज कई साल से वह जूझ रहा है इसलिये कि अपनी आज़ादी को इनसान की आज़ादी के दुश्मनों से रक्षा कर सके और अपनी उस आज़ादी के लिये कोई क़ीमत, कोई क़ुरबानी उसने मंहगी नहीं समझी है.

सवाल यह नहीं है कि किसने किस पर क्यों हमला किया? वह सवाल घरेलू है, उत्तरी दक्खिनी कोरिया का अपना. कोई आज़ाद रहेगा या साथ यह उनकी अपनी बात है जिसे वह चाहे जैसे तय करे झगड़े की बुनियाद तो तभी पड़ गई जब एक क़ौम के दो हिस्से कर दिये गए, बनावटी हिस्से जिनका अलग अलग अपना कोई मतलब नहीं हो सकता था सवाल बुनियादी यह है कि कौन किस की ज़मीन पर है?

कौन किस की ज़मीन पर है—कोरिया और चीन संयुक्त राज अमरीका की ज़मीन पर, संयुक्त राज अमरीका कोरिया और चीन की ज़मीन पर?

यह लड़ाई कौन लड़ रहा है? संयुक्त राष्ट्र संघ? संयुक्त राज अमरीका? संयुक्त राष्ट्र संघ के नाम पर संयुक्त राज अमरीका अपने 48 पिट्ठुओं के साथ ताबड़ तोड़ कोरिया पर लड़ाई ऐलान कर उसकी ज़मीन पर उतर पड़ा. सिंग मन री की सरकार उसके हाथ की कठपुतली थी. और अमरीका के उन पिट्ठुओं में से कितने उस मैदान में उतरे यह भी किसी से छिपा नहीं. हिन्दुस्तान ने सिर्फ़ मरहम पट्टी करने वाला एक डाक्टरी दस्ता भेजा और इंगलैंड अपने जहाज़ी बेड़े के साथ कोरिया के टापू से लगा मंडराता रहा. हां, तुरकी के डर और भोलेपन का अमरीका ने अच्छा फ़ायदा उठाया क्योंकि कोरिया के देश भक्तों की गहरी मार तुरकों को ही अपने सीनों पर झेलना पड़ी.

अमरीका ने अपनी सारी ताक़त लगा दी. दिन रात कोरिया की ज़मीन पर वह गोले उगालता रहा, बम

ڈرنے لگتا ہے اور جو آخیر میں جا کر اِس طرح کے ایک وجود میں ختم ہوتے ہیں جو سب کو گھیرے ہوئے ہے اور جو ہمارے خیال کی دور سے دور کی پہونچ سے بھی پرے ہے."

کوریا

(ڈاکٹر بھگوت سرن اُپادھیائے)

یہ کوریا ہے، خون سے نہایا ہوا، آج کئی سال سے وہ جوجھ رہا ہے اِس لئے کہ اپنی آزادی کو اِنسان کی آزادی کے دشمنوں سے رکشا کرسکے. اور اپنی اُس آزادی کے لئے کوئی قیمت، کوئی قربانی اُس نے مہنگی نہیں سمجھی ہے.

سوال یہ نہیں ہے کہ کس نے کس پر کیوں حملہ کیا؟ وہ سوال گھریلو ہے، اُتری دکھنی کوریا کا اپنا. کوئی آزاد رہیگا یا ساتھ یہ اُن کی اپنی بات ہے جسے وہ چاہے جیسے طے کرے. جھگڑے کی بنیاد تو تبھی پڑگئی جب ایک قوم کے دو حصے کر دئے گئے، بناوٹی حصے جن کا الگ الگ اپنا کوئی مطلب نہیں ہوسکتا تھا. سوال بنیادی یہ ہے کہ کون کس کی زمین پر ہے؟

کون کس کی زمین پر ہے—کوریا اور چین سنیُکت راج امریکہ کی زمین پر، سنیُکت راج امریکہ کوریا اور چین کی زمین پر؟

یہ لڑائی کون لڑ رہا ہے؟ سنیُکت راشٹر سنگھ؟ سنیُکت راج امریکہ؟ سنیُکت راشٹر سنگھ کے نام پر سنیُکت راج امریکہ اپنے 48 پٹھوؤں کے ساتھ تابڑ توڑ کوریا پر لڑائی اعلان کر اُس کی زمین پر اُتر پڑا. سنگ من ری کی سرکار اُس کے ہاتھ کی کٹھ پُتلی تھی. اور امریکہ کے اُن پٹھوؤں میں سے کتنے اُس میدان میں اُترے یہ بھی کسی سے چھپا نہیں. ہندستان نے صرف مرہم پٹی کرنے والا ایک ڈاکٹری دستہ بھیجا اور اِنگلینڈ اپنے جہازی بیڑے کے ساتھ کوریا کے ٹاپو سے لگا منڈراتا رہا. ہاں، ترکی کے ڈر اور بھولےپن کا امریکہ نے اچھا فائدہ اُٹھایا کیونکہ کوریا کے دیش بھکتوں کی گہری مار ترکوں کو ہی اپنے سینوں پر جھیلنا پڑی.

امریکہ نے اپنی ساری طاقت لگا دی. دن رات کوریا کی زمین پر وہ گولے اُگالتا رہا، بم

बलिदान से वह दूसरों में प्रेम की आग सुलगाते हैं, और जब जब यह आग फिर धीमी पड़ जाती है उसे बार बार आ कर जगाते रहते हैं. उनके बाद फिर और उनसे छोटे दरजे के लोग आते हैं जो उनके उपदेशों पर टीका करते हैं, उनका मतलब समझाते हैं. यह टीका करने वाले जब तक इनसानी समाज का सच्चा भला चेतने वाले होते हैं तब तक दीन धर्म फलता फूलता और फैलता है जब यह लोग ख़ुदग़रज़, झूटे और घमन्डी हो जाते हैं तो दीन धर्म गिरने लगता है, मिलाने की जगह वह फाड़ने का काम करने लगता है. बहुत से अलग अलग फ़िरक़े खड़े होने लगते हैं. दीन धर्म मुरझाने लगता है. फिर नए सिरे से किसी राह दिखाने वाले की ज़रूरत पड़ती है.

साइन्स भी इनसानी समाज के इस तरह के रास्ता दिखाने वालों के वजूद को मानती है. साइन्स के मशहूर अंगरेज़ पंडित प्रोफ़ेसर टी. एच. हक्सले ने अपनी किताब 'ऐसेज़ आन सम कन्ट्रोवरटेड क्वेशचन्स' में लिखा है:—

"इस सारे मामले को अगर बहुत ही कड़ी साइन्सी निगाह से देखा जाय तो मुझे ऐसा मालूम होता है कि यह समझ लेना कि इस अनन्त आकाश में जो लाखों दुनियाएं बिखरी हुई हैं उनमें कहीं कोई ऐसा समझदार वजूद नहीं हो सकता जिसकी समझ आदमी की समझ से उतनी ही ऊंची हो जितनी आदमी की समझ एक काले भौंरे की समझ से ऊंची है, या यह समझ लेना कि कोई वजूद ऐसा नहीं हो सकता जिसमें क़ुदरत के धारे को मोड़ देने की शक्ति आदमी से उतनी ही अधिक हो जितनी यह शक्ति आदमी में एक केचुए से अधिक है. इस तरह की बातें समझ लेना न केवल बे बुनियाद ही है बल्कि गुसताख़ी भी है. जो बातें हमें मालूम हैं उनकी हद के अन्दर रहते हुए भी हम आसानी से इस बड़े आलम को इस तरह के वजूदों से आबाद समझ सकते हैं जो दरजे ब दरजे ऊपर जाते हुए किसी ऐसे वजूद तक पहुँच जायं कि अमली तौर पर हम उस वजूद में और सर्व शक्तिमान, सर्व व्यापक और सर्वज्ञ, यानी क़ादिरे मुतलक़, सब जगह हाज़िर नाज़िर और आलिमे कुल में कोई फ़रक़ न कर सकें."

हाल में दूसरे मशहूर योरोपियन विद्वान साइन्सदां सर ओलिवर लाज ने इसी बात को इन शब्दों में लिखा है:—

"दो बातों का मेरे दिल पर गहरा असर है—पहली यह कि सचमुच हमारे इस तरह के शक्तिशाली मददगार मौजूद हैं जो किसी न किसी सीधे और नज़दीकी तरीक़े पर हमें रास्ता दिखाते हैं, हमारा प्रबन्ध करते हैं और एक मुनासिब हद के अन्दर हमें बस में रखते हैं, और जो अपने काम में लगे हुए हैं, पर जो सर्व शक्तिमान यानी क़ादिरे मुतलक़ नहीं हैं. दूसरी बात यह कि इस आलम (विश्व) के इससे भी ऊंचे पहलू हैं जिनकी शान का ख़याल करके दिल

بلیدان سے وہ دوسروں میں پریم کی آگ سلگاتے ہیں' اور جب جب وہ آگ پھر دھیمی پڑ جاتی ہے اسے بار بار آکر جگاتے رہتے ہیں۔ ان کے بعد پھر اور ان سے چھوٹے درجے کے لوگ آتے ہیں جو ان کے اپدیشوں پر ٹیکا کرتے ہیں' ان کا مطلب سمجھاتے ہیں۔ یہ ٹیکا کرنے والے جب تک انسانی سماج کا سچا بھلا چیتنے والے ہوتے ہیں تب تک دین دھرم پھلتا پھولتا اور پھیلتا ہے۔ جب یہ لوگ خود غرض' جھوٹے اور گھمنڈی ہو جاتے ہیں تو دین دھرم گرنے لگتا ہے' ملانے کی جگہ وہ پھاڑنے کا کام کرنے لگتا ہے' بہت سے الگ الگ فرقے کھڑے ہونے لگتے ہیں۔ دین دھرم مرجھانے لگتا ہے۔ پھر نئے سرے سے کسی راہ دکھانے والے کی ضرورت پڑتی ہے۔

سائنس بھی انسانی سماج کے اس طرح کے راستہ دکھانے والوں کے وجود مانتی ہے۔ سائنس کے مشہور انگریز پنڈت پروفیسر ٹی۔ ایچ۔ ہکسلے نے اپنی کتاب 'ایسیز آن سم کنٹروورٹڈ کوئشچنس' میں لکھا ہے:—

" اس سارے معاملے کو اگر بہت ہی کڑی سائنسی نگاہ سے دیکھا جائے تو مجھے ایسا معلوم ہوتا ہے کہ یہ سمجھ لینا کہ اس اننت آکاش میں جو لاکھوں دنیائیں بکھری ہوئی ہیں ان میں کہیں کوئی ایسا سمجھدار وجود نہیں ہو سکتا جسکی سمجھ آدمی کی سمجھ سے اتنی ہی اونچی ہو جتنی آدمی کی سمجھ ایک کالے بھونرے کی سمجھ سے اونچی ہے' یا یہ سمجھ لینا کہ کوئی وجود ایسا نہیں ہو سکتا جس میں قدرت کے دھارے کو موڑ دینے کی شکتی آدمی سے اتنی ہی ادھک ہو جتنی یہ شکتی آدمی میں ایک کیچوے سے ادھک ہے۔ اس طرح کی باتیں سمجھ لینا نہ کیول بے بنیاد ہی ہے بلکہ گستاخی ہے۔ جو باتیں ہمیں معلوم ہیں ان کی حد کے اندر رہتے ہوئے بھی ہم آسانی سے اس بڑے عالم کو اس طرح کے وجودوں سے آباد سمجھ سکتے ہیں جو درجہ بہ درجہ اوپر جاتے ہوئے کسی ایسے وجود تک پہونچ جائیں کہ عملی طور پر ہم اس وجود میں اور سروشکتی مان' سرو ویاپک اور سروگیہ' یعنی قادر مطلق' سب جگہ حاضر ناظر اور عالم کل میں کوئی فرق نہ کر سکیں۔"

حال میں دوسرے مشہور یورپین ودوان سائنسداں سر آلیور لاج نے اسی بات کو ان شبدوں میں لکھا ہے:—

" دو باتوں کا میرے دل پر گہرا اثر ہے—پہلی یہ کہ سچ مچ ہمارے اس طرح کے شکتی شالی مددگار موجود ہیں جو کسی نہ کسی سیدھے اور نزدیکی طریقے پر ہمیں راستہ دکھاتے ہیں' ہمارا پربندھ کرتے ہیں اور ایک مناسب حد کے اندر ہمیں بس میں رکھتے ہیں' اور جو اپنے کام میں لگے ہوئے ہیں' پر جو سرو شکتی مان یعنی قادر مطلق نہیں ہیں؛ دوسری بات یہ کہ اس عالم (وشو) کے اس سے بھی اونچے پہلو ہیں جن کی شان کا خیال کرکے دل

एक और हदीस लोग नक़ल करते हैं जिसमें कहा गया है कि:—

"हिन्दुस्तान में एक नबी हुआ है जिसका रंग सांवला और जिसका नाम काहिन था."

ज़ाहिर है काहिन से मतलब कान्ह या कृष्ण से है. कृष्ण के मानी भी सांवले के हैं.

पारसी किताब गाथा में लिखा है:—

"इन्सान की क़ौम से प्रेम करने वाले सोयन्तों के बताए हुए वचनों को ले लो, उनसे तुम्हारी आत्मा का भला होगा. मन से, वचन से और अमल से उन पर चलो. हर देश में, यहां तक कि असभ्य देशों में भी सोश्यन्त हुए हैं जिन्होंने परमात्मा की परम शान्ति को हासिल किया है. इस आलम के सम्राट ने जो सबके अन्दर रमा हुआ है हम सबके पास सोश्यन्त भेजे हैं ताकि वह हमें ठीक रास्ता दिखायें."

बुद्ध ने कहा है:—

"समय बीतने पर दूसरा बुद्ध आएगा. उसे लोग मैत्रेय कहेंगे."

मैत्रेय का मतलब है जो सब का मित्र यानी भला चाहने वाला हो.

हज़रत ईसा ने इन्जील में कहा है:—

"मैं फिर आऊंगा और तुम्हें अपने साथ ले चलूंगा ताकि जहां मैं जाता हूँ तुम भी जा सको."

इन्जील में इसी तरह की बातें बार बार कही गई हैं, और यह साफ़ लिखा है कि—

"इस तरह की राह दिखाने वाले शुरू ज़माने से आज तक हमेशा आते रहे हैं."

क़ुरान में बार बार इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि मोहम्मद के मुंह से अल्लाह बोलता है.

हज़रत ईसा ने भी इन्जील में यही बात कही है.

हम अगर केवल इन महान आत्माओं का ख़्याल रखें और यह समझें कि यह सब हमारे प्रेमी और मददगार थे तो हम अपने अन्दर रूहानी और इख़लाक़ी ताक़त पैदा कर सकते हैं और अपने अन्दर की ताक़तों को जगा कर रूहानी तरक़्क़ी की आगे की मंज़िलें तय कर सकते हैं.

ज़िन्दगी की बुनियादी सचाइयां और धर्म के असूल सब जगह एक ही से हैं और सदा एक ही से रहेंगे. केवल वह ऊपर के ढांचे, वह रीति-रिवाज, वह तरीक़े, वह शब्द जिनमें वह सचाइयां ज़ाहिर की गई थीं पुराने पड़ जाते हैं. उनका असर कम हो जाता है. इसलिये उन्हीं सचाइयों को फिर से दोहराने की ज़रूरत पड़ती है. यही काम इन महापुरुषों का है. यह लोग सच्चे प्रेम यानी इश्क़े हक़ीक़ी से भरे होते हैं. वह सदा सब का भला चेतते हैं. इस प्रेम की आग में ही वह अपने को जला डालते हैं. अपने इस

ایک اور حدیث لوگ نقل کرتے ہیں جس میں کہا گیا ہے کہ:—

"ہندوستان میں ایک نبی ہوا ہے جس کا رنگ سانولا ہے اور جس کا نام کاہن تھا."

ظاہر ہے کاہن سے مطلب کانہ یا کرشن سے ہے. کرشن کے معنی بھی سانولے کے ہیں.

پارسی کتاب گاتھا میں لکھا ہے:—

"انسان کی قوم سے پریم کرنے والے سوشینتوں کے بتائے ہوئے وچنوں کو لے لو، ان سے تمہاری آتما کا بھلا ہوگا. من سے، وچن سے اور عمل سے ان پر چلو. ہر دیش میں، یہاں تک کہ اسبھیہ دیشوں میں بھی سوشینت ہوئے ہیں جنہوں نے پرماتما کی پرم شانتی کو حاصل کیا ہے. اس عالم کے سمراٹ نے جو سب اندر رما ہوا ہے ہم سب کے پاس سوشینت بھیجے ہیں تاکہ وہ ہمیں ٹھیک راستہ دکھائیں."

بدھ نے کہا ہے:—

"سمے بیتنے پر دوسرا بدھ آئے گا. اسے لوگ میتریے کہیں گے." میتریے کا مطلب ہے جو سب کا مِتر یعنی بھلا چاہنے والا ہو.

حضرت عیسیٰ نے انجیل میں کہا ہے:—

"میں پھر آؤں گا اور تمہیں اپنے ساتھ لے چلوں گا تاکہ جہاں میں جاتا ہوں تم بھی جا سکو."

انجیل میں اسی طرح کی باتیں بار بار کہی گئی ہیں، اور یہ صاف لکھا ہے کہ—

"اس طرح کی راہ دکھانے والے شروع زمانے سے آج تک ہمیشہ آتے رہے ہیں."

قرآن میں بار بار اس بات پر زور دیا گیا ہے کہ محمد کے منہ سے اللہ بولتا ہے.

حضرت عیسیٰ نے بھی انجیل میں یہی بات کہی ہے.

ہم اگر کیول ان مہان آتماؤں کا خیال رکھیں اور یہ سمجھیں کہ یہ سب ہمارے پریمی اور مددگار تھے تو ہم اپنے اندر روحانی اور اخلاقی طاقت پیدا کر سکتے ہیں اور اپنے اندر کی طاقتوں کو جگا کر روحانی ترقی کی آگے کی منزلیں طے کر سکتے ہیں.

زندگی کی بنیادی سچائیاں اور دھرم کے اصول سب جگہ ایک ہی سے ہیں اور سدا ایک ہی سے رہیں گے. کیول وہ اوپر کے ڈھانچے، وہ ریت رواج، وہ طریقے، وہ شبد جن میں وہ سچائیاں ظاہر کی گئی تھیں پرانے پڑ جاتے ہیں، ان کا اثر کم ہو جاتا ہے. اس لئے انہیں سچائیوں کو پھر سے دوہرانے کی ضرورت پڑتی ہے. یہی کام ان مہاپرشوں کا ہے. یہ لوگ سچے پریم یعنی عشق حقیقی سے بھرے ہوتے ہیں. وہ سدا سب کا بھلا چیتتے ہیں. اس پریم کی آگ میں ہی وہ اپنے کو جلا ڈالتے ہیں. اپنے اس

कुतुब, पीर, अवतार, पैगम्बर, वली, नबी और रसूल कहा गया है. ईसाई धर्म में इन्हें सेन्ट, मसीह और और खुदा का बेटा कहा गया है. इन्जील में इसी तरह के और भी बहुत से नाम हैं. यहूदियों में इन्हें सेज, प्राफेट और पैट्रियार्क कहते हैं. पारसी धर्म में इन्हें सोश्यन्त, और नरोइश नरो कहा गया है. सोश्यन्त का मतलब है 'प्रेमी' यानी इनसानी समाज के प्रेमी. नरोइश नरो का मतलब है 'आदमियों के आदमी', 'ऊंचे आदमी' इन सब में बड़े छोटे दरजे हैं.

यह ऊंची रूहें जमीन पर आदमी की शकल में भी आती रहती हैं.

चीन के ताओ धर्म की किताब में लिखा है:—

"ऊंचे आसमानों का बड़ा सम्राट जमीन पर उतरता है, सैकड़ों बार उतरता है, इसलिये कि आम लोगों के साथ रहे और उन्हें सचाई सिखावे, रोगियों को अच्छा करे, खुद इन के साथ कष्ट भोगे और बार बार अपने प्राण दे, ताकि उसके कष्टों से बहुत से दिलों के लिये खुशी और नेकी का चश्मा फूट निकले.

कृष्न ने गीता में साफ कहा है:—

"ऐ अर्जुन! जब जब धर्म में गिरावट आती है और अधर्म फैलता है तब तब मैं पैदा होता हूं ताकि नेक लोगों को बचाऊं और बुराई करने वालों को खतम करूं, और धर्म को फिर से क़ायम करूं. इस काम के लिये मैं युग युग में पैदा होता रहता हूं."

यही बात दुर्गा सप्त शती और दूसरी हिन्दू किताबों में बार बार और तरह तरह से कही गई है.

फ़ैज़ी ने गीता की ऊपर की मशहूर लाइनों का बड़ा सुन्दर फ़ारसी तरजुमा किया है:—

चुं बुनियादे दीन सुस्त गरदद बसे
नुमायेम खुद रा ब शकले कसे

यानी—जब दीन की बुनियाद बहुत सुस्त हो जाती है तब हम आदमी की शकल में अपने को ज़ाहिर करते हैं.

क़ुरान में यही बात दूसरी तरह कही गई है. लिखा है कि—

"लेकुल्ले क़ौमिन हाद" यानी—हर क़ौम में हादी यानी रास्ता दिखाने वाले भेजे गए हैं.

इसी तरह की बहुत सी आयतें हैं जैसे यह कि:—

"कोई ऐसी क़ौम नहीं जिस में लोगों को बुराई से डराने और बचाने वाले न आते रहे हों.

"हर क़ौम में रसूल भेजे जाते रहे हैं" वग़ैरा वग़ैरा.

अबू दाऊद ने एक हदीस बयान की है जिसमें लिखा है कि "खुदा हर सौ साल के बाद हर क़ौम में एक राह दिखाने वाला भेजता है जो दुनिया में दीन को फिर से ताज़ा करता है."

قطب، پیر، اوتار، پیغمبر، ولی، نبی اور رسول کہا گیا ہے۔ عیسائی دھرم میں انہیں سینٹ، مسیح اور خدا کا بیٹا کہا گیا ہے۔ انجیل میں اسی طرح کے اور بھی بہت سے نام ہیں۔ یہودیوں میں انہیں سیج، پرافیٹ اور پیٹری آرک کہتے ہیں۔ پارسی دھرم میں انہیں سوشینت، اور نروئش نرو کہا گیا ہے۔ سوشینت کا مطلب ہے 'پریمی' یعنی انسانی سماج کے پریمی۔ نروئش نرو کا مطلب ہے 'آدمیوں کے آدمی' 'اونچے آدمی'۔ ان سب میں بڑے چھوٹے درجے ہیں۔

یہ اونچی روحیں زمین پر آدمی کی شکل میں بھی آتی رہتی ہیں۔

چین کے تاؤ دھرم کی کتاب میں لکھا ہے:—

"اونچے آسمانوں کا بڑا سمراٹ زمین پر اترتا ہے، سیکڑوں بار اترتا ہے، اس لئے کہ عام لوگوں کے ساتھ رہے اور انہیں سچائی سکھاوے، روگیوں کو اچھا کرے، خود ان کے ساتھ کشٹ بھوگے اور بار بار اپنے پران دے، تاکہ اس کے کشٹوں سے بہت سے دلوں کے لئے خوشی اور نیکی کا چشمہ پھوٹ نکلے۔

کرشن نے گیتا میں صاف کہا ہے:—

"اے ارجن! جب جب دھرم میں گراوٹ آتی ہے اور ادھرم پھیلتا ہے تب تب میں پیدا ہوتا ہوں تاکہ نیک لوگوں کو بچاؤں اور برائی کرنے والوں کو ختم کروں، اور دھرم کو پھر سے قائم کروں۔ اس کام کے لئے میں یگ یگ میں پیدا ہوتا رہتا ہوں۔"

یہی بات درگا سپت شتی اور دوسری ہندو کتابوں میں بار بار اور طرح طرح سے کہی گئی ہے۔

فیضی نے گیتا کی اوپر کی مشہور لائنوں کا بڑا سندر فارسی ترجمہ کیا ہے:—

چوں بنیاد دیں سست گردد بسے
نمائیم خود را بہ شکلِ کسے

یعنی—جب دین کی بنیاد بہت سست ہو جاتی ہے تب ہم آدمی کی شکل میں اپنے کو ظاہر کرتے ہیں۔

قرآن میں یہی بات دوسری طرح کہی گئی ہے۔ لکھا ہے کہ—

"لِکُلِّ قَومٍ ھاد" یعنی—ہر قوم میں ہادی یعنی راستہ دکھانے والے بھیجے گئے ہیں۔

اسی طرح کی بہت سی آیتیں ہیں جیسے یہ کہ:—

"کوئی ایسی قوم نہیں جس میں لوگوں کو برائی سے ڈرانے اور بچانے والے نہ آتے رہے ہوں۔

"ہر قوم میں رسول بھیجے جاتے رہے ہیں" وغیرہ وغیرہ۔

ابو داؤد نے ایک حدیث نقل کی ہے جس میں لکھا ہے کہ "خدا ہر سو سال کے بعد ہر قوم میں ایک راہ دکھانے والا بھیجتا ہے جو دنیا میں دین کو پھر سے تازہ کرتا ہے۔"

इन्जील में लिखा है—"वह पूरा उसकी है जो सब को सब में भरे हुए है."

यहूदी किताब तलमूद में लिखा है—"इस इतने बड़े आलम के अन्दर कोई ज़र्रा नष्ट नहीं होता. आदमी की आत्मा के अन्दर सारा आलम छिपा हुआ है. वह नष्ट कैसे हो सकती है ?"

ओस की हर बून्द के अन्दर पूरा सूरज दिखाई देता है और हर अक्स सूरज से है. हर छोटे से छोटे बीज के अन्दर पूरा दरख़्त छिपा हुआ है और बीज की हस्ती दरख़्त से है.

साइन्स हमें बताती है कि हर बीज और हर ज़र्रे के अन्दर बे अन्त फैल जाने की शक्ति है. हर एटम अनगिनत चक्कर लगा रहा है, हर ऐटम दूसरे सब ऐटमों के ऊपर असर डाल रहा है, रोशनी की बे अन्त किरनें हर ज़र्रे पर सब ज़र्रों के अनगिनत अक्स या फ़ोटो फेंक रही हैं. यह अनगिनत फ़ोटो चारों तरफ़ से पड़ रहे हैं और दूर दूर के सितारों से भी आ रहे हैं. यही हाल आवाज़ों का है. जो चीज़ जहां असर डालती है वह लाज़मी तौर पर वहां है. ग़रज़ यह कि सब सब जगह है. मशहूर विद्वान बर्गसन ने अपनी किताब "क्रीएटिव एवोलूशन" में लिखा है—"कोई माद्दी नुक़्ता ऐसा नहीं है जो हर दूसरे माद्दी नुक़्ते पर असर न डालता हो. जब हम देखते हैं कि जो चीज़ जहां असर डालती है वहां वह ज़रूर ख़ुद भी है तो हमें फ़ैरेडे की तरह यह मानना पड़ता है कि सृष्टि के सब एटम एक दूसरे में घुसे हुए हैं और उन में से हर एक सारे आलम में रमा हुआ है."

इसलिये किसी एक ज़र्रे को पूरी तरह देख लेना और समझ लेना सारी दुनिया को देख लेना और समझ लेना है, ख़ुदा को देख लेना और समझ लेना है.

इसी तरह का एक और ख़याल है जो सब मज़हबों में एक सा पाया जाता है वह यह है कि जिस तरह आदमी से नीचे वजूदों या हस्तियों का एक सिलसिला है जैसे जानवर, दरख़्त, सोना, चांदी, मिट्टी, पत्थर वग़ैरा उसी तरह आदमी से ऊपर भी वजूदों का एक सिलसिला है. इन ऊपर के वजूदों में इस तरह की रूहें भी हैं जो आदमी की उसी तरह देख रेख करती रहती हैं, उसे रास्ता दिखाती रहती हैं, उसे भटकने से बचाती रहती हैं जिस तरह मां बाप या उस्ताद अपने बच्चों या शागिर्दों को बचाते रहते हैं. योरप के बड़े बड़े मशहूर साइन्सदां खुले इस ख़याल की ताईद कर चुके हैं. सब मज़हब इसे मानते हैं. वैदिक धर्म में इन्हें रिशी, मुनि, मनु, कुमार और अवतार नामों से पुकारा गया है. इन के अपने अपने दरजे हैं. बौद्ध धर्म में इन्हें बोधिसत्व, प्रत्येकबुद्ध और बुद्ध नाम दिया गया है. जैन धर्म इन्हें अरहन्त और तीर्थंकर कहता है. इसलाम में इन्हीं को

انجیل میں لکھا ہے—"بھرپورتا اُس کی ہے جو سب کو سب میں بھرے ہوئے ہے".

یہودی کتاب طلمود میں لکھا ہے—"اس اتنے بڑے عالم کے اندر کوئی ذرہ نشٹ نہیں ہوتا . آدمی کی آتما کے اندر سارا عالم چھپا ہوا ہے. وہ نشٹ کیسے ہوسکتی ہے؟".

اوس کی ہر بوند کے اندر پورا سورج دکھائی دیتا ہے اور ہر عکس سورج سے ہے . ہر چھوٹے سے چھوٹے بیج کے اندر پورا درخت چھپا ہوا ہے اور بیج کی ہستی درخت سے ہے .

سائنس ہمیں بتاتی ہے کہ ہر بیج اور ہر ذرے کے اندر بےانت پھیل جانے کی شکتی ہے . ہر ایٹم ان‌گنت چکر لگا رہا ہے' ہر ایٹم دوسرے سب ایٹموں کے اوپر اثر ڈال رہا ہے' روشنی کی بےانت کرنیں ہر ذرے پر سب ذروں کے ان‌گنت عکس یا فوٹو پھینک رہی ہے . یہ ان‌گنت فوٹو چاروں طرف سے پڑ رہے ہیں اور دور دور کے ستاروں سے بھی آ رہے ہیں . یہی حال آوازوں کا ہے . جو چیز جہاں اثر ڈالتی ہے وہ لازمی طور پر وہاں ہے . غرض یہ کہ سب سب جگہ ہے . مشہور ودوان برگسن نے اپنی کتاب "کریئٹو ایولوشن" میں لکھا ہے—"کوئی مادی نقطہ ایسا نہیں ہے جو ہر دوسرے مادی نقطے پر اثر نہ ڈالتا ہو . جب ہم دیکھتے ہیں کہ جو چیز جہاں اثر ڈالتی ہے وہاں وہ ضرور خود بھی ہے تو ہمیں فیریڈے کی طرح یہ ماننا پڑتا ہے کہ سرشٹی کے سب ایٹم ایک دوسرے میں گھسے ہوئے ہیں اور ان میں سے ہر ایک سارے عالم میں رما ہوا ہے".

اس لئے کسی ایک ذرے کو پوری طرح دیکھ لینا اور سمجھ لینا ساری دنیا کو دیکھ لینا اور سمجھ لینا ہے' خدا کو دیکھ لینا اور سمجھ لینا ہے .

اسی طرح کا ایک اور خیال ہے جو سب مذہبوں میں ایک سا پایا جاتا ہے وہ یہ ہے کہ جس طرح آدمی سے نیچے وجودوں یا ہستیوں کا ایک سلسلہ ہے جیسے جانور' درخت' سونا چاندی' مٹی' پتھر وغیرہ اسی طرح آدمی سے اوپر بھی وجودوں کا ایک سلسلہ ہے . ان اوپر کے وجودوں میں اس طرح کی روحیں بھی ہیں' جو آدمی کی اسی طرح دیکھ ریکھ کرتی ہیں' اسے راستہ دکھاتی رہتی ہیں' اسے بھٹکنے سے بچاتی رہتی ہیں جس طرح ماں باپ یا استاد اپنے بچوں یا شاگردوں کو بچاتے رہتے ہیں . یورپ کے بڑے بڑے مشہور سائنس‌دان کھلے اس خیال کو تائید کر چکے ہیں . سب مذہب اسے مانتے ہیں . ویدک دھرم میں انہیں رشی' منی' منو' کمار اور اوتار ناموں سے پکارا گیا ہے . ان کے اپنے اپنے درجے ہیں . بودھ دھرم میں انہیں بودھی ستو' پرتیک بدھ اور بدھ نام دیا گیا ہے . جین دھرم انہیں ارہنت اور تیرتھنکر کہتا ہے . اسلام میں انہیں کو

यहूदी मजहब की किताब जोहर में लिखा है—"बुद्धिमान आदमी इस सृष्टि यानी आलम के सारे रहस्यों यानी राजों को किसी भी एक आदमी के चेहरे में पढ़ सकता है." यहूदी कब्बाला की मशहूर कहावत है—"जो ऊपर है वही नीचे है."

तलमूद में लिखा है—"ठीक जिस तरह रूह इस जिस्म के अन्दर रमी हुई है उसी तरह खुदा सारे आलम के अन्दर रमा हुआ है, जिस तरह रूह जिस्म को संभाले हुए है उसी तरह खुदा आलम को संभाले हुए है, जिस तरह रूह देखती है लेकिन देखी नहीं जा सकती, उसी तरह खुदा देखता है लेकिन देखा नहीं जाता.

मुसलमान सूफी इनसान के जिस्म और सारे आलम की इस तमसील या उपमा को बहुत अधिक बढ़ा कर ले गए हैं और उन्होंने बड़ी तफसील के साथ इस को बयान किया है, यहां तक कि पढ़ने वाले को बिलकुल ऐसा लगने लगता है कि यह सारा आलम एक जीता जागता जिस्म है जिस के हम सब अंग या जर्रे हैं. ख़ाजा खां ने अपनी अंगरेज़ी किताब 'दि फ़िलासफ़ी आफ़ इसलाम' में मुसलमान सूफ़ियों के इस तरह के बयानों और वेद, पुराणों और उपनिषदों के बयानों को खूब तफ़सील के साथ मिला कर दिखाया है. खास कर दक्खिन के मुसलमान सूफ़ियों के बयानों और हिन्दू पुराणों के बयानों में तो फ़रक़ निकाल सकना ना मुमकिन है.

कुछ साइन्स वालों ने यह राय भी ज़ाहिर की है कि आसमान के सूरज, चांद, तारे और नक्षत्र सब अलग अलग जीती जागती जानदार हस्तियां हैं. एक जरमन साइन्सदां फैकनर ने ख़याल ज़ाहिर किया है कि हमारी यह ज़मीन एक जानदार हस्ती है. मशहूर अमरीकी दार्शनिक विलयम जेम्स ने भी अपनी एक किताब 'ए प्लूरैलिस्टिक यूनिवर्स' में बड़ी विद्वत्ता के साथ इस ख़याल की ताईद की है. हिन्दुस्तान के पुराणों में पृथ्वी को 'देवी' कहा ही गया है. इसी तरह के ख़याल इसलाम और दूसरे धर्मों में भी मिलते हैं.

यह सब बात क़ुदरती है. जब ईश्वर अल्लाह एक है, एक ही आत्मा सब के अन्दर रमा हुआ है तो सब के अन्दर इस एकता का होना भी लाज़मी है. ऊपरी नाम रूपों की अलाहदगी हमें इस एकता को देखने के लिये और भी बेचैन कर देती है. इसीलिये राज काज यानी सियासत में आदमी "बराबरी! बराबरी!" का नारा ऊंचा करने पर मजबूर हो जाता है, और धार्मिक आदमी कहता है—'सर्वम् सर्वत्र सर्वदा' यानी सब सब जगह और हमेशा है.

सूफ़ी इसी को 'इन्दराजे कुल फ़िलकुल' कहता है. दोनों के एक ही मानी हैं.

یہودی مذہب کی کتاب زہر میں لکھا ہے—"بدھیمان آدمی اِس سرشٹی یعنی عالم کے سارے رہسیوں یعنی رازوں کو کسی بھی ایک آدمی کے چہرے میں پڑھ سکتا ہے". یہودی کبالا کی مشہور کہاوت ہے—"جو اوپر ہے وہی نیچے ہے".

تلمود میں لکھا ہے—"ٹھیک جس طرح روح اِس جسم کے اندر رمی ہوئی ہے اُسی طرح خدا سارے عالم کے اندر رما ہوا ہے، جس طرح روح جسم کو سنبھالے ہوئے ہے اُسی طرح خدا عالم کو سنبھالے ہوئے ہے، جس طرح روح دیکھتی ہے لیکن دیکھی نہیں جاسکتی، اُسی طرح خدا دیکھتا ہے لیکن دیکھا نہیں جاتا.

مسلمان صوفی اِنسان کے جسم اور سارے عالم کی اِس تمثیل یا اُپما کو بہت ادھک بڑھا کر لے گئے ہیں اور انہوں نے بڑی تفصیل کے ساتھ اِس کو بیان کیا ہے، یہاں تک کہ پڑھنے والے کو بالکل ایسا لگنے لگتا ہے کہ یہ سارا عالم ایک جیتا جاگتا جسم ہے جس کے ہم سب انگ یا ذرے ہیں. خواجہ خاں نے اپنی انگریزی کتاب 'دی فلاسفی آف اِسلام' میں مسلمان صوفیوں کے اس طرح کے بیانوں اور وید، پرانوں اور اُپنشدوں کے بیانوں کو خوب تفصیل کے ساتھ ملا کر دکھایا ہے. خاص کر دکھن کے مسلمان صوفیوں کے بیانوں اور ہندو پرانوں کے بیانوں میں تو فرق نکال سکنا ناممکن ہے.

کچھ سائنس والوں نے یہ رائے بھی ظاہر ہے آسمان کے سورج، چاند، تارے اور نکشتر سب الگ الگ جیتی جاگتی جاندار ہستیاں ہیں. ایک جرمن سائنسداں فیکنر نے خیال ظاہر کیا ہے کہ ہماری یہ زمین ایک جاندار ہستی ہے. مشہور امریکی دارشنک ولیم جیمس نے بھی اپنی ایک کتاب 'اے پلورلسٹک یونیورس' میں بڑی ودوتا کے ساتھ اس خیال کی تائید کی ہے. ہندستان کے پرانوں میں پرتھوی کو 'دیوی' کہا ہی گیا ہے. اِسی طرح کے خیال اسلام اور دوسرے دھرموں میں بھی ملتے ہیں.

یہ سب بات قدرتی ہے. جب ایشور اللہ ایک ہے، ایک ہی آتما سب کے اندر رما ہوا ہے تو سب کے اندر اس ایکتا کا ہونا بھی لازمی ہے. اوپری نام روپوں کی علیحدگی ہمیں اِس ایکتا کو دیکھنے کے لئے اور بھی بےچین کر دیتی ہے. اِس لئے راج کاج یعنی سیاست میں آدمی "برابری! برابری!" کا نعرہ اونچا کرنے پر مجبور ہو جاتا ہے، اور دھارمک آدمی کہتا ہے—'سروم سروتر سروداً' یعنی سب سب جگہ اور ہمیشہ ہے.

صوفی اِسی کو 'اندراجِ کل فالکل' کہتا ہے. دونوں کے ایک ہی معنی ہیں.

एक ही ख़याल सब जगह

(डाक्टर भगवानदास)

एक और सचाई जिसकी तरफ़ दुनिया के सब मज़हब हमारा ध्यान दिलाते हैं यह है कि जो कुछ इस सारे आलम में है वही सब हर छोटे से छोटे ज़र्रे में भी है. हिन्दू धर्म में इनसान के जिस्म को पिंड और इस सारे विश्व या आलम को ब्रह्माण्ड कहा जाता है. वेदान्त की एक मशहूर कहावत है :—

यथापिंडे तथा ब्रह्माण्डे

यानी—जो कुछ पिंड के अन्दर है वही ब्रह्माण्ड के अन्दर है. पिंड और ब्रह्माण्ड ही को 'क्षुद्र विराट' और 'महा विराट' भी कहते हैं. मुसलमान सूफ़ी इन्हीं को 'आलमे सग़ीर' और 'आलमे कबीर, कहते हैं. अंगरेज़ी में इन्हीं को 'माइक्रो काज़्म' और 'मैकरो काज़्म' कहते हैं.

ज़ाहिर है कि जब जो कुछ पिंड में है वही ब्रह्माण्ड में है तो जो कुछ एक पिंड में है वही सब पिंडों में होना चाहिये. इसीलिये श्री कृष्ण ने भगवत् गीता में कहा है :—

विद्या विनय सम्पन्ने
ब्राह्मने गवि हस्तिनि
शुनि चैव श्वपाके च
पंडिताः सम दर्शिनः

यानी—जो लोग पंडित या सच्चे जानकार हैं वह उस ब्राह्मन को जो विद्या और विनय (इज्ज़) से सम्पन्न है, गाय को, हाथी को, कुत्ते को और चाण्डाल को सब को एक निगाह से देखते हैं.

सूफ़ी कहता है कि :—

मोहक़्क़िक़ हमीं बीनद अन्दर एबिल
कि दर ख़ूबरूयाने चीन-ओ-चगिल

यानी—जो सचाई को जानने वाला है वह ऊंट के टेढ़े मेढ़े जिस्म के अन्दर भी उसी चीज़ को देखता है जिसे वह चीन या चगिल के ख़ूबसूरत लोगों के अन्दर देखता है.

इसी का नाम समदर्शिता है. यही सच्चा ज्ञान है यही असलियत को देखना है दुनिया की सारी साइन्सें अपने अपने ढंग से इसी समदर्शिता के उसूल से निकली हैं. मन्तिक़ या लाजिक में इसी का नाम इन्डक्शन है. यह इन्डक्शन ही साइन्स की बुनियाद है. साइन्सदां हमें बताते हैं कि जो कुछ इस सारे सोलर सिसटम और जगत यानी निज़ामे शमसी में है वही हर एटम, अणु या ज़र्रे में है.

यही बात तरह तरह से यहूदी मज़हब, ईसाई मज़हब और इसलाम तीनों में बार बार कही गई है.

ایک ھی خیال سب جگہ

(ڈاکٹر بھگوان داس)

ایک اور سچائی جس کی طرف دنیا کے سب مذھب ھمارا دھیان دلاتے ھیں یہ ھے کہ جو کچھ اِس سارے عالم میں ھے وھی سب ھر چھوٹے سے چھوٹے ذرے میں بھی ھے. ھندو دھرم میں اِنسان کے جسم کو پنڈ اور اِس سارے وشو یا عالم کو برھمانڈ کہا جاتا ھے . ویدانت کی ایک مشہور کہاوت ہے :—

یتھا پنڈے تتھا برھمانڈے

یعنی—جو کچھ پنڈ کے اندر ھے وھی برھمانڈ کے اندر ھے. پنڈ اور برھمانڈ ھی کو 'چھدر وراٹ' اور 'مہاوراٹ' بھی کہتے ھیں . مسلمان صوفی انھیں کو 'عالم صغیر' اور 'عالم کبیر' کہتے ھیں. انگریزی میں انھیں کو 'مائکروکازم' اور 'میکروکازم' کہتے ھیں .

ظاھر ھے کہ جب جو کچھ پنڈ میں ھے وھی برھمانڈ میں ھے تو جو کچھ ایک پنڈ میں ھے وھی سب پنڈوں میں ھونا چاھئے . اِسی لئے شری کرشن نے بھگوت گیتا میں کہا ہے :—

ودیا ونے سمپنے
براھمنے گوی ھستنی
شنی چیو شوپاکے چہ
پنڈتاہ سم درشناہ

یعنی—جو لوگ پنڈت یا سچے جانکار ھیں وہ اُس براھمن کو جو ودیا اور ونے (عجز) سے سمپن ھے' گائے کو' ھاتھی کو' کتے کو اور چانڈال کو سب کو ایک نگاہ سے دیکھتے ھیں .

صوفی کہتا ہے کہ :—

محقق ھمیں بیند اندر ابل
کہ در خوبرویان چین و چگل

یعنی—جو سچائی کو جاننے والا ھے وہ اونٹ کے ٹیڑھے میڑھے جسم کے اندر بھی اُسی چیز کو دیکھتا ھے جسے وہ چین یا چگل کے خوبصورت لوگوں کے اندر دیکھتا ھے .

اِسی کا نام سم درشتا ہے . یہی سچا گیان ھے . یہی اصلیت کو دیکھنا ھے . دنیا کی ساری سائنسیں اپنے اپنے ڈھنگ سے اِسی سمدرشتا کے اصول سے نکلی ھیں. منطق یا لاجک میں اِسی کا نام اِنڈکشن ھے یہ اِنڈکشن ھی سائنس کی بنیاد ھے . سائنسداں ھمیں بتاتے ھیں کہ جو کچھ اِس سارے سولرسسٹم اور جگت یعنی نظام شمسی میں ھے وھی ھر ایٹم' انو یا ذرے میں ھے .

یہی بات طرح طرح سے یہودی مذھب' عیسائی مذھب اور اِسلام تینوں میں بار بار کہی گئی ھے .

आज़ादी है इनकी लौंडी
इन के उड़ने को तैयारे
ढोल का लेकिन पोल खिलाती
खाने लगीं क़समें बेचारे
लाख तरीक़ों से फुसलाया
लाख जतन भी करके हारे
गुज़रा वक़्त कभी लौटा है
कोई भी इसको लाख पुकारे
ठाट पड़े रह जाते हैं सब
चल पड़ते हैं जब बनजारे

पहेली— मजबूरन इस पेट की ख़ातिर
रूप नये फ़नकार ने धारे
भांड बना और कोई मेम्बर
और बने कुछ राज दुलारे
लाल बुझक्कड़ समझे लेकिन
नाम न लेंगे डर के मारे

शहर आशोब— नदी नाले ख़ून की भैया
खेतों में बोए अंगारे
जंग अजब यह जंग है साथी
हारा जीते जीता हारे

क़सीदा— सुलह की कोशिश अमन के जलसे
उमड़े हुए अमृत के धारे
रूस और चीन की बातें सुनकर
जाग उठे अफ़कार हमारे
ज़ह्न में एक जन्नत सी बनाकर
नाच गए आंखों में नज़ारे
आगे बढ़ते जायेंगे साथी
कांधा जोड़े सीना उभारे
होगी जब आज़ाद यह भूमि
रक़्स करेंगे चांद सितारे
गायेगी ले कर गोद में सोना
रक़्स करेंगे चांद सितारे

लोरी— सरसों फूली फूल बसन्ती
नन्हे नन्हे प्यारे प्यारे
सोजा सोजा मेरी गुड़िया
सुबह चलेंगे खेत किनारे
घोल के पानी में साबुन को
नलकी से छोड़ेंगे गुब्बारे
सोजा सोजा मेरी गुड़िया
हिंडोले में पांव पसारे
आंख मिचोली निंदिया खेले
चन्दा मामा थपकी मारे.

آزادی ہے ان کی لونڈی
ان کے اڑنے کو طیارے
ڈھول کا لیکن پول کھلتی
کھانے لگے قسمیں بیچارے
لاکھ طریقوں سے پھسلایا
لاکھ جتن بھی کرکے ہارے
گزرا وقت کبھی لوٹا ہے
کوئی بھی اس کو لاکھ پکارے
ٹھاٹ پڑے رہ جاتے ہیں سب
چل پڑتے ہیں جب بنجارے

پہیلی— مجبوراً اس پیٹ کے خاطر
روپ نئے فنکار نے دھارے
بھانڈ بنا اور کوئی ممبر
اور بنے کچھ راج دلارے
لال بجھکڑ سمجھے لیکن
نام نہ لینگے ڈر کے مارے

شہر آشوب— ندی نالے خون کی بھیا
کھیتوں میں بوئے انگارے
جنگ عجب یہ جنگ ہے ساتھی
ہارا جیتے جیتا ہارے

قصیدہ— صلح کی کوشش امن کے جلسے
امڈے ہوئے امرت کے دھارے
روس اور چین کی باتیں سنکر
جاگ اٹھے افکار ہمارے
ذہن میں اک جنت سی بناکر
ناچ گئے آنکھوں میں نظارے
آگے بڑھتے جائیں گے ساتھی
کاندھا جوڑے سینہ ابھارے
ہوگی جب آزاد یہ بھومی
رقص کریں گے چاند ستارے
گائیگی لے کر گود میں سونا
رقص کریں گے چاند ستارے

لوری— سرسوں پھولی پھول بسنتی
ننھے ننھے پیارے پیارے
سوجا سوجا میری گڑیا
صبح چلیں گے کھیت کنارے
گھول کے پانی میں صابن کو
نلکی سے چھوڑیں گے غبارے
سوجا سوجا میری گڑیا
ہنڈولے میں پاؤں پسارے
آنکھ مچولی نندیا کھیلے
چندا ماما تھپکی مارے۔

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 14 फ़रवरी, सन '53 नम्बर 2

نمبر 2 فروری' سن '53 جلد 14

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی' پریم دھرم ہے' ہندستانی بولی'
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی .

सब रंग

'वामिक़' जौनपुरी

ग़ज़ल— रोज़ के हमदम शब के सहारे
ढलके आंसू टूटे तारे
नज़रें मिल कर हट जाने में
हो जाते हैं लाख इशारे
डूबती किश्ती देख के अकसर
आंख चुरा लेते हैं किनारे
फिर भी बचने वाले बचे हैं
तूफ़ां में मौजों के सहारे
'वामिक़' जब मयख़ाना अपना
साक़ी साक़ी कौन पुकारे

वासोख़्त— ग़ुरबत का एहसास क़यामत
चल जाते हैं रूह पे आरे
नंगे रह कर जी सकते हैं
कट जायें यह भूक के मारे
चन्द ग़ुलाम आक़ा बन बैठे
पाप यह सिर से कौन उतारे

तन्ज़ (व्यंग)— यह टोपी नेताओं की है
क़हत व वबा जिन के हरकारे
पूंजी पतियों के हर घर में
गूँजते हैं उनके जयकारे
यह तो भारत के हैं मदारी
परमिट से पुर उन के पिटारे
यह जो चाहें कर सकते हैं
उनके सब क़ानून न्यारे

سب رنگ

('وامق' جونپوری)

غزل— روز کے ہمدم شب کے سہارے
ڈھلکے آنسو ٹوٹے تارے
نظریں ملکر ہٹ جانے میں
ہو جاتے ہیں لاکھ اشارے
ڈوبتی کشتی دیکھ کے اکثر
آنکھ چرا لیتے ہیں کنارے
پھر بھی بچنے والے بچے ہیں
طوفاں میں موجوں کے سہارے
'وامق' جب میخانہ اپنا
ساقی ساقی کون پکارے

واسوخت— غربت کا احساس قیامت
چل جاتے ہیں روح پہ آرے
ننگے رہ کر جی سکتے ہیں
کٹ جائیں یہ بھوک کے مارے
چند غلام آقا بن بیٹھے
پاپ یہ سر سے کون اتارے

طنز (ویَنگ)— یہ ٹوپی نیتاؤں کی ہے
قحط و وبا جنکے ہرکارے
پونجی پتیونکے کے ہر گھر میں
گونجتے ہیں انکے جیکارے
یہ تو بھارت کے ہیں مداری
پرمٹ سے پر انکے پٹارے
یہ جو چاہیں کرسکتے ہیں
انکے سب قانون نیارے

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

फ़रवरी 1953

क्या किसस — सफ़ा

" نیا ہند "

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

فروری 1953

کیا کس سے — صفحہ

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने .

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے .

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد .

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

اڈیٹر—تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب اڈیٹر— سریش رام بھائی، مجیب رضوی

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

इस नम्बर के ख़ास लेख

हमारी राय—

اِس نمبر کے خاص لیکھ

ہماری رائے—

स्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद ستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد

फ़रवरी 1953 فروری

क़ीमत दस आना — قیمت دس آنہ

Registered No. A—210

नई किताब

चाइना टुडे

लेखक—सुन्दरलाल

पहली अक्तूबर 1951 को नये चीन के लोकराज की दूसरी साल गिरह के मौक़े पर हिन्दुस्तान से एक गुडविल मिशन चीन गया था, जिस के नेता पंडित सुन्दरलाल थे.

इस किताब से आपको मालूम होगा कि इस मिशन ने चालीस रोज़ नये चीन में रह कर क्या क्या देखा और, आज का चीन कैसा है, किस तरह वहां से बेरुआपन, भिकमंगी और बेरोज़गारी को ख़त्म किया गया, किस तरह वहां के बेज़मीन वाले करोड़ों किसानों को ज़मीन दी गई और नये खेती सुधार क़ानून से चीन कैसे भिकमंगे से अन्नदाता बन गया. किस तरह अमरीका की नाके बन्दी के बावजूद उसने अपने उद्योग धन्दे और कल कारख़ाने सभाल कर अपने को स्वावलम्बी बना लिया. किस तरह अपने तालीम के नये ढंग से पुराने पढ़े लिखों के दिमाग़ फेर कर उन्हें दुरुस्त किया और देश में नई जान फूक दी, किस तरह शादी के नये क़ानून ने चीनी औरत को समाज के अन्दर मर्द के बराबर इज़्ज़त की जगह दी, किस तरह वहां के नेताओं ने ईमानदारी, सादगी और जनता की सेवा के तीन उसूलों पर चल कर देश के अन्दर से रिश्वत ख़ोरी, काम चोरी और सीना ज़ोरी ख़त्म की, देश के आर्थिक संगठन को ठीक किया, वग़ैरा वग़ैरा.

अगर आप विस्तार के साथ इन सवालों का जवाब पाना चाहते हैं और यह जानना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान नये चीन से क्या सबक़ ले सकता है तो इस किताब से आपको काफ़ी मदद मिलेगी. साथ ही साथ यह किताब एक सफ़र नामा है जिस में चालीस रोज़ की डायरी बेहतरीन और दिलचस्प ढंग से दी गई है.

700 से ज़ियादा सफ़े, बढ़िया काग़ज़, कपड़े की जिल्द, एक तिरंगी और तीस एकरंगी तसवीरें, दो रंगीन नक़्शों के साथ—दाम सिर्फ़ साढ़े सात रुपये या 15 शिलिंग.

अपने यहां के बुकसेलरों से मंगाइये या हमें लिखिये.

मिलने का पता—

मैनेजर, नया हिन्द, 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

نئی کتاب

چائنا ٹو ڈے

لیکھک—سندر لال

پہلی اکتوبر 1951 کو نئے چین کے لوک راج کی دوسری سالگرہ کے موقعے پر ہندستان سے ایک گڈول مشن چین گیا تھا جس کے نیتا پنڈت سندر لال تھے۔

اس کتاب سے آپکو معلوم ہوگا کہ اِس مشن نے چالیس روز نئے چین میں رہکر کیا کیا دیکھا اور' آج کا چین کیسا ہے' کس طرح وہاں سے ویشیاپن' بھکمنگی اور بیروزگاری کو ختم دیا گیا' کس طرح وہاں کے بیزمین والے کروڑوں کسانوں کو زمین دی گئی اور نئے کھیتی سدھار قانون سے چین کیسے بھکمنگے سے ان داتا بن گیا' کسطرح امریکہ کی ناکے بندی کے باوجود اُس نے اپنے ادیوگ دھندے اور کل کارخانے سنبھال کر اپنے کو سواولمبی بنا لیا' کس طرح اپنے تعلیم کے نئے ڈھنگ سے پرانے پڑھے لکھوں کے دماغ پھیر کر اُنہیں درست کیا اور دیش میں نئی جان پھونک دی' کس طرح شادی کے نئے قانون نے چینی عورت کو سماج کے اندر مرد کے برابر عزت کی جگہ دی' کس طرح وہاں کے نیتاؤں نے ایمانداری' سادگی اور جنتا کی سیوا کے تین اُصولوں پر چل کر دیش کے اندر سے رشوت خوری' کام چوری اور سینہ زوری ختم کی' دیش کے آرتھک سنگھٹن کو ٹھیک کیا' وغیرہ وغیرہ۔

اگر آپ وستار کے ساتھ اِن سوالوں کا جواب پانا چاہتے ہیں اور یہ جاننا چاہتے ہیں کہ ہندستان نئے چین سے کیا سبق لے سکتا ہے تو اس کتاب سے آپ کو کافی مدد ملیگی۔ ساتھ ہی ساتھ یہ کتاب ایک سفرنامہ ہے جس میں چالیس روز کی ڈائری بہترین اور دلچسپ ڈھنگ سے دی گئی ہے۔

700 سے زیادہ صفحے' بڑھیا کاغذ' کپڑے کی جلد' ایک ترنگی اور تیس یک رنگی تصویریں' دو رنگین نقشوں کے ساتھ—دام صرف ساڑھے سات روپئے یا 15 شلنگ۔

اپنے یہاں کے بکسیلروں سے منگائیے یا ہمیں لکھئے۔

ملنے کا پتہ—

منیجر' نیا ہند' 145' مٹھی گنج الہ آباد۔

Printed and Publi[illegible] by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना

—:o:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़ गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास, सेक्रेटरी - पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لیکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ، وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس: سکریٹری — پنڈت سندرلال۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر مظہر علی سوختہ، شری بی۔ جی کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندر لال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،

145، مٹھی گنج، الہ آباد۔

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے۔

(7) इसी दरमियान बड़े वज़ीर ने फ़ौज बुला ली और सत्याग्रही पुलिस को घेरे में कर लिया और उससे हथियार रखवा लिये. साथ ही साथ उनकी पंचायत के दफ़्तर को भी घेर लिया और उसके काग़ज़ अपने क़ब्ज़े में कर लिये.

अब मद्रास पर पुलिस की जगह फ़ौज का पहरा है.

यह भी ख़बर मिली है कि जिस वक़्त पुलिस पंचायत घर पर घेरा डाला गया उस वक़्त पुलिस के कुछ आदमियों ने ऐसे काम किये जो सत्याग्रह के दायरे में नहीं आते और अपराध के दायरे में आते हैं.

इस आख़री ख़बर को भी सच मान कर हम यही कहते रहेंगे कि मद्रास पुलिस का यह सत्याग्रह आज तक के सब सत्याग्रहों से ऊंचे दरजे का सत्याग्रह था और ऐसा सत्याग्रह था जिससे बहुत से लोग सबक़ ले सकते हैं.

ऐसा लिखने के लिये हमारे मन ने हमें मजबूर किया और उसने यह कह कर मजबूर किया कि ऐसे मौक़े पर चुप रहना सत्याग्रही की स्पिरिट को बट्टा लगाना है. हमें अब ऐसा मालूम होने लगा है कि सत्याग्रह करना मामूली आदमी का काम नहीं, इसके लिये ताक़त, हिम्मत और त्याग की सब से ज़ियादा ज़रूरत है. इनके बिना सत्याग्रह जैसा काम हो ही नहीं सकता. इनके साथ साथ और भी ऊंचे दरजे के गुन हों तो कहना ही क्या. यह कह कर हम यह कहना चाहते हैं कि ख़ाली ऊंचे दरजे के गुन वाले आदमी ऊंचे दरजे का सत्याग्रह नहीं कर सकते जब तक उन में ताक़त, हिम्मत और त्याग के गुन न हों.

हमारा दिल यही कहता है कि मद्रास के पुलिस सत्याग्रहियों से न मद्रास राज को ख़तरा है, न भारत देश को, न किसी और को. अगर उन से किसी को ख़तरा है तो दुराग्रहियों को और उन को जो अन्याय पर कमर कसे हुए हैं.

हमें आशा है मद्रास के पुलिस सत्याग्रही अपनी परीक्षा में पूरे उतरेंगे और आख़री दम तक अहिंसक बने हुए सचाई पर डटे रहेंगे.

12. 1. '53 —भगवानदीन

(7) اسی درمیان بڑے وزیر نے فوج بلا لی اور ستیا گرہی پولیس کو گھیرے میں کر لیا اور اُس سے ہتھیار رکھوا لئے . ساتھ ہی ساتھ اُن کی پنچایت کے دفتر کو بھی گھیر لیا اور اُسکے کاغذ اپنے قبضے میں کر لئے .

اب مدراس پر پولیس کی جگہ فوج کا پہرہ ہے .

یہ بھی خبر ملی ہے کہ جس وقت پولیس پنچایت گھر پر گھیرا ڈالا گیا اُسوقت پولیس کے کچھ آدمیوں نے ایسے کام کئے جو ستیا گرہ کے دائرے میں نہیں آتے اور اپرادھ کے دائرے میں آتے ہیں .

اِس آخری خبر کو بھی سچ مان کر ہم یہی کہتے رہیں گے کہ مدراس پولیس کا یہ ستیا گرہ آج تک کے سب ستیا گرہوں سے اونچے درجے کا ستیاگرہ تھا اور ایسا ستیاگرہ تھا جس سے بہت سے لوگ سبق لے سکتے ہیں .

ایسے لکھنے کے لئے ہمارے من نے ہمیں مجبور کیا اور اُس نے یہ کہکر مجبور کیا کہ ایسے موقعے پر چپ رہنا ستیا گرہی کی اِسپرٹ کو بٹا لگانا ہے . ہمیں اب ایسا معلوم ہونے لگا ہے کہ ستیاگرہ کرنا معمولی آدمی کا کام نہیں، اِس کے لئے طاقت، ہمت اور تیاگ کی سب سے زیادہ ضرورت ہے . اِن کے بنا ستیاگرہ جیسا کام ہو ہی نہیں سکتا . اِن کے ساتھ ساتھ اور بھی اونچے درجے کے گن ہوں تو کہنا ہی کیا . یہ کہکر ہم یہ کہنا چاہتے ہیں کہ خالی اونچے درجے کے گن والے آدمی اونچے درجے کا ستیاگرہ نہیں کر سکتے جب تک اُن میں طاقت، ہمت اور تیاگ کے گن نہ ہوں .

ہمارا دل یہی کہتا ہے کہ مدراس کے پولیس ستیا گرہیوں سے نہ مدراس راج کو خطرہ ہے نہ بھارت دیش کو، نہ کسی اور کو . اگر اُن سے کسی کو خطرہ ہے تو دراگرہیوں کو اور اُن کو جو انیائے پر کمر کسے ہوئے ہیں .

ہمیں آشا ہے مدراس کے پولیس ستیاگرہی اپنی پریکشا میں پورے اُتریں گے اور آخری دم تک اہنسک بنے ہوئے سچائی پر ڈٹے رہیں گے .

—بھگوان دین 12-1-'53

बाद जितने सत्याग्रह अमल में आए उन सब से यह सत्याग्रह हमें ऊंचे दरजे का जचा. राजा जी, जो आज कल मदरास के बड़े वज़ीर हैं, गांधी जी के साथ रह चुके हैं, सत्याग्रह की अच्छी जानकारी रखते हैं. उस जानकारी के बल पर वह मदरास पुलिस सत्याग्रह को शायद सत्याग्रह न कहें, पर उनकी यह बात हमारे गले नहीं उतरेगी क्योंकि वह जिस जगह बैठे हुए हैं वहां से मदरास पुलिस के सत्याग्रह पर ऐसा फ़ैसला नहीं दे सकते जो सत्य की कसौटी पर सोलहो आने ठीक उतर सके. इसलिये हम मदरास पुलिस सत्याग्रह को इस वक़्त तक सब से ऊंचे दरजे का सत्याग्रह मानते रहेंगे जब तक इस से ऊंचे दरजे का सत्याग्रह हम को देखने को न मिले.

ऐसे अवसर पर राजा जी की जगह अगर हम होते तो सत्याग्रही पुलिस के मुक़ाबले में फ़ौज को बुला कर यही मानते कि हमारी सत्याग्रह की जानकारी का दिवाला निकल गया. हम यह सोचे बग़ैर हरगिज़ न रहते कि कल अगर फ़ौज इसी तरह का सत्याग्रह कर बैठी तब हम क्या करेंगे और किसे अपनी मदद के लिये बुलायेंगे ?

हम तो अपनी जान को ख़तरे में डाल कर अकेले ही सत्याग्रही पुलिस के पास जाते और उन से हथियार वापस मांग लेते. हमें उम्मीद है हमें हथियार वापस मिल जाते, हो सकता है, हमारी उम्मीद झूटी साबित होती. तब हम अपने को नालायक़ समझते और अपनी जगह अपने से ज़ियादा भले आदमी के हाथ ताक़त सौंप देते.

पुलिस सत्याग्रह क्यों शुरू हुआ उस की जो ख़बरें हमें मिली हैं उस का ख़ुलासा यह है :—

(1) मदरास पुलिस को कुछ तकलीफ़ें थीं उन तकलीफ़ों को दूर करने के लिये उसने सरकार से लिखा पढ़ी की लेकिन नतीजा कुछ न हुआ.

(2) मदरास पुलिस की एक पंचायत थी उस पंचायत को सरकार ने मानता दे रखी थी.

(3) अब यह हुआ कि मदरास सरकार अनुशासन की कारवाई कर बैठी.

(4) पुलिस की तकलीफ़ें जब दूर नहीं हुईं तो पुलिस ने एक नये ढंग का सत्याग्रह कर दिया. उस सत्याग्रह का रूप यह था कि काम पर जाना, काम ठीक ठीक करना पर तनख़ा न लेना.

(5) इस सत्याग्रह के बाद यह ख़बर मिली कि मदरास के बड़े वज़ीर ने यह मान लिया है कि उनकी कुछ तकलीफ़ें ठीक हैं और उनको दूर करने की ज़रूर कोशिश की जायगी. पुलिस को चाहिये कि वह अपनी तनख़ा ले ले.

(6) कुछ पुलिस वालों ने तनख़ा ले ली पर बहुतों ने नहीं ली.

بعد جتنے ستیاگرہ عمل میں آئے اُن سب سے یہ ستیاگرہ ہمیں اُونچے درجے کا جنچا. راجا جی' جو آج کل مدراس کے بڑے وزیر ہیں' گاندھی جی کے ساتھ رہ چکے ہیں' ستیاگرہ کی اچھی جانکاری رکھتے ہیں. اُس جانکاری کے بل پر وہ مدراس پولیس ستیاگرہ کو شاید ستیاگرہ نہ کہیں' پر اُن کی یہ بات ہمارے گلے نہیں اُترے گی کیوں کہ وہ جس جگہ بیٹھے ہوئے ہیں وہاں سے مدراس پولیس کے ستیاگرہ پر ایسا فیصلہ نہیں دے سکتے جو ستیہ کی کسوٹی پر سولہو آنے ٹھیک اُتر سکے. اِس لئے ہم مدراس پولیس ستیاگرہ کو اس وقت تک سب سے اُونچے درجے کا ستیاگرہ مانتے رہیں گے جب تک اِس سے اُونچے درجے کا ستیاگرہ ہم کو دیکھنے کو نہ ملے.

ایسے اوسر پر راجا جی کی جگہ اگر ہم ہوتے تو ستیاگرہی پولیس کے مقابلے میں فوج کو بلاکر یہی مانتے کہ ہماری ستیاگرہ کی جانکاری کا دیوالہ نکل گیا. ہم یہ سوچے بغیر ہرگز نہ رہتے کہ کل اگر فوج اِسی طرح کا ستیاگرہ کو بیٹھی تب ہم کیا کریں گے اور کسے اپنی مدد کے لئے بلائیں گے ؟

ہم تو اپنی جان کو خطرے میں ڈال کر اکیلے ہی ستیاگرہی پولیس کے پاس جاتے اور اُن سے ہتھیار واپس مانگ لیتے. ہمیں اُمید ہے ہمیں ہتھیار واپس مل جاتے' ہوسکتا ہے' ہماری اُمید جھوٹی ثابت ہوتی. تب ہم اپنے کو نالائق سمجھتے اور اپنی جگہ اپنے سے زیادہ بھلے آدمی کے ہاتھ طاقت سونپ دیتے.

پولیس ستیاگرہ کیوں شروع ہوا. اُس کی جو خبریں ہمیں ملی ہیں اُس کا خلاصہ یہ ہے :—

(1) مدراس پولیس کو کچھ تکلیفیں تھیں اُن تکلیفوں کو دور کرنے کے لئے اُس نے سرکار سے لکھا پڑھی کی لیکن نتیجہ کچھ نہ ہوا.

(2) مدراس پولیس کی ایک پنچایت تھی اُس پنچایت کو سرکار نے مانتا دے رکھی تھی.

(3) اب یہ ہوا کہ مدراس سرکار انوشاسن کی کاروائی کر بیٹھی.

(4) پولیس کی تکلیفیں جب دور نہیں ہوئیں تو پولیس نے ایک نئے ڈھنگ کا ستیاگرہ کر دیا. اُس ستیاگرہ کا روپ یہ تھا کہ کام پر جانا' کام ٹھیک کرنا پر تنخواہ نہ لینا.

(5) اِس ستیاگرہ کے بعد یہ خبر ملی کہ مدراس کے بڑے وزیر نے یہ مان لیا ہے کہ اُن کی کچھ تکلیفیں ٹھیک ہیں اور اُن کو دور کرنے کی ضرور کوشش کی جائے گی پولیس کو چاہئے کہ وہ اپنی تنخواہ لے لے.

(6) کچھ پولیس والوں نے تنخواہ لے لی پر بہتوں نے نہیں لی.

सकता क्योंकि उसके दिल में इनसानी भावना कूट कूट कर भरी है. और वह नहीं चाहता है कि इनसान रूसी दरिन्दों के क़बज़े में चले जायं. वह यह भी नहीं चाहता है कि चीनी क़ैदी फिर कम्यूनिस्टों के ग़ुलाम बन जायं. इस उपकार के लिये दो चार लाख को सिर्फ़ ग़ुलामी से बचाने के लिये वह रोज़ लाखों को बमों के घाट उतार देता है, नेपाम बम इस्तेमाल करता है, ज़हरीले बम फेंकता है. यह इनसान को बचाने के लिये है. डर है कहीं कम्युनिस्ट इनसानों को खा न जायं इसलिये अमरीका ख़ुद ही उन्हें क्यों न भून दे !

नतीजा

किसी ने ठीक कहा है कि नेक नियती से लोग दोज़ख़ का रास्ता तैयार करते हैं. हिन्दुस्तान ने सचमुच तैयार कर दिया है. सुलह तो नहीं हो सकी लेकिन जंग के बढ़ने का पूरा ख़तरा पैदा हो गया है. अपने कारनामे की तारीफ़ करते हुए पंडित नेहरू ने भी इस ख़तरे को माना है. आइज़न हावर ने कोरिया का दौरा ख़तम कर लिया है. मेकार्थर ने एलान किया है कि उनके पास जंग ख़तम करने का एक नया प्रोग्राम है. मेकार्थर का प्रोग्राम सारी दुनिया जानती है. आइज़न हावर ने तार दे कर उस प्रोग्राम की तफ़सील मांगी है. मेकार्थर और चांग काई शेक की ज़बरदस्त दोस्ती है. वह प्रोग्राम इसके सिवाए कुछ नहीं है कि चांग काई शेक अमरीकी मदद से चीन पर हमला कर दे और आइज़न हावर का ख़ाब पूरा हो—"एशिया वालों को आपस में ही जंग करने दो."

सुलह का दो ही आधार है. एक दूर पूरब से बाहरी देशों की फ़ौजें हटाई जायं, अमरीकन सियोल की हिफ़ाज़त करने के बजाय वाशिंगटन को रक्षा करें, कोरिया से दोनों तरफ़ की फ़ौजें वापस चली जायं. दूसरे, चीन को उसकी जगह यूनो में मिले. सरकारें चाहे मानें या न मानें लेकिन जनता को आवाज़ उठाना चाहिये और अपनी अपनी सरकारों को मजबूर कर देना चाहिये कि वह मानें जनता की आवाज़ में बहुत ताक़त है !

10. 1. '53 —मुजीब रिज़वी

मदरास पुलिस सत्याग्रह

किसी आग्रह को हर आदमी हर तरह सत्याग्रह नहीं कह सकता. किसी गरम चीज़ को भी कब हर आदमी हर हालत में गरम कहता है. हर चीज़ जब गरम कही जायगी तब किसी ठंडी चीज़ को सामने रख कर कही जायगी. गरम चीज़ अपने से ज़ियादा गरम चीज़ के सामने ठंडी रह जाती है. इस दलील को ध्यान में रख कर हम मदरास पुलिस के आग्रह को सत्याग्रह कह रहे हैं. गांधी जी के

سکتا کیونکہ اُسکے دل میں انسانی بھاونا کوٹ کوٹ کر بھری ہے ۔ اور وہ نہیں چاہتا ہے کہ انسان روسی درندوں کے قبضے میں چلے جائیں ۔ وہ یہ بھی نہیں چاہتا ہے کہ چینی قیدی پھر کمیونسٹوں کے غلام بن جائیں ۔ اِس اُپکار کے لئے دو چار لاکھ کو صرف غلامی سے بچانے کے لئے وہ روز لاکھوں کو بموں کے گھاٹ اُتار دیتا ہے' نیپام بم استعمال کرتا ہے' زہریلے بم پھینکتا ہے ۔ یہ انسان کو بچانے کے لئے ہے ۔ ڈر ہے کہیں کمیونسٹ انسانوں کو کھا نہ جائیں اِسلئے امریکہ خود ہی اُنہیں کیوں نہ بھون دے !

نتیجہ

کسی نے ٹھیک کہا ہے کہ نیک نیتی سے لوگ دوزخ کا راستہ تیار کرتے ہیں ۔ ہندستان نے سچ مچ تیار کر دیا ہے ۔ صلح تو نہیں ہو سکی لیکن جنگ کے بڑھنے کا پورا خطرہ پیدا ہو گیا ہے ۔ اپنے کارنامے کی تعریف کرتے ہوئے پنڈت نہرو نے بھی اِس خطرے کو مانا ہے ۔ آئزن ہاور نے کوریا کا دورہ ختم کر لیا ہے ۔ میک آرتھر نے اعلان کیا ہے کہ اُن کے پاس جنگ ختم کرنے کا ایک نیا پروگرام ہے ۔ میک آرتھر کا پروگرام ساری دنیا جانتی ہے ۔ آئزن ہاور نے تار دے کر اُس پروگرام کی تفصیل مانگی ہے ۔ میک آرتھر اور چانگ کائی شیک کی زبردست دوستی ہے ۔ یہ پروگرام اِسکے سوائے کچھ نہیں ہے کہ چانگ کائی شیک امریکی مدد سے چین پر حملہ کر دے اور آئزن ہاور کا خواب پورا ہو—"ایشیا والوں کو آپس میں ہی جنگ کرنے دو ۔"

صلح کا دو ہی آدھار ہے ۔ ایک دور پورب سے باہری دیشوں کی فوجیں ہٹائی جائیں' امریکن سیئول کی حفاظت کرنے کے بجائے واشنگٹن کی رکشا کریں' کوریا سے دونوں طرف کی فوجیں واپس چلی جائیں ۔ دوسرے' چین کو اُسکی جگہ یونو میں ملے ۔ سرکاریں چاہے مانیں یا نہ مانیں لیکن جنتا کو آواز اُٹھانا چاہئے اور اپنی اپنی سرکاروں کو مجبور کر دینا چاہئے کہ وہ مانیں ۔ جنتا کی آواز میں بہت طاقت ہے !

10-1-'53 —مجیب رضوی

مدراس پولیس ستیاگرہ

کسی آگرہ کو ہر آدمی ہر طرح ستیاگرہ نہیں کہہ سکتا ۔ کسی گرم چیز کو بھی کب ہر آدمی ہر حالت میں گرم کہتا ہے ۔ ہر چیز جب گرم کہی جائے گی تب کسی ٹھنڈی چیز کو سامنے رکھکر کہی جائے گی ۔ گرم چیز اپنے سے زیادہ گرم چیز کے سامنے ٹھنڈی رہ جاتی ہے ۔ اِس دلیل کو دھیان میں رکھکر ہم مدراس پولیس کے آگرہ کو ستیاگرہ کہہ رہے ہیں ۔ گاندھی جی کے

उन्होंने कहा है कि जंगी क़ैदियों के कैम्पों में अमरीकी काफ़ी जुल्म कर रहे हैं. अखबारों से उनकी इस बात का सबूत मिलता है. अजीब मज़ाक़ है कि अमरीका वाले जिस कैम्प के बारे में यह कहते हैं कि यह लोग चीन लौटना नहीं चाहते उन्हीं कैम्पों पर उन्हीं टैन्कों से गोली बरसानी पड़ती है. अमरीका इस बात पर ज़ोर इसलिये दे रहा है ताकि वह चीनी सिपाहियों को बददिल कर सके. सरदार की जीत और हार सिपाहियों के बल बूते पर होती है. एक सिपाही के हित के लिये सरदार ख़ुद क़ुरबानी करता है. कम से कम पूरबी देशों की यही प्रथा रही है. फिर यह कैसे हो सकता है कि माओ त्से तुंग तो अमरीकी सदर से हाथ मिलायें, डिनर उड़ायें और बेचारे सिपाहियों को अमरीकनों को सौंप दें. अगर चीन वाले इस बात को मान लेते तो यह बड़ी ज़लील हरकत होती. हमें ख़ुशी है कि उन्हें अपनी जनता का बेहद ख़याल है और उन्होंने इस वक़्त हमारे पुराने उसूलों को निभाया है. अफ़सोस की बात है कि भारत इस पुराने उसूल को न निभा सका.

अमरीका और भारती ठहराव

अमरीका का कहना है कि चीनी और उत्तरी कोरिया के जंगी क़ैदी अपने अपने देशों को अपनी मरज़ी के ख़िलाफ़ न भेजे जायं. भारत के ठहराव ने इस बात को हु-बहु मान लिया. अमरीका का कहना है कि पहले जंगी क़ैदियों की रिहाई का मसला तय हो और फिर आरज़ी सुलह हो भारत ने यह भी मान लिया. हम यह विश्वास से नहीं कह सकते कि भारती ठहराव मेनन के बजाय एचीसन का तैयार किया हुआ था लेकिन ठहराव देख कर ऐसा शक ज़रूर होता है.

ऐसी सूरत में इसे अमरीका को मानना ही चाहिये और रूस और चीन के लिये इसकी मुख़ालफ़त करना आवश्यक है.

इस सम्बन्ध में अमरीका के अधिकारी दो बातें कहते हैं: एक यह कि स्टालिन चाहता है कि लड़ाई जारी रहे और अमरीका और उसके साथी छोटे छोटे राष्ट्रों से लड़कर कमज़ोर होते रहें और वह ख़ुद रूस की फ़ौजी ताक़त को मज़बूत करते रहें. कहने का मतलब यह है कि अमरीका शान्ति चाहता है और रूस जंग. मामूली अक़्ल का आदमी भी पूछेगा कि फिर जान बूझ कर अमरीका स्टालिन का खिलौना क्यों बना हुआ है? क्या वह इतना भोला है? जो बात स्टालिन करवाना चाहता है वही अमरीका कर रहा है. अमरीका को चाहिये था कि वह हर सूरत में लड़ाई बन्द कर देता. अपने बचाओ के लिये ज़रूरी था कि वह रूस के ही सुझाव को यूनो में मान लेता. लेकिन अमरीका ने ऐसा नहीं किया और न वह करेगा. वह ऐसा नहीं कर

اُنہوں نے کہا ھے کہ جنگی قیدیوں کے کیمپوں میں امریکی کافی ظلم کر رھے ھیں . اخباروں سے اُن کی اس بات کا ثبوت ملتا ھے . عجیب مزاق ھے کہ امریکہ والے جس کیمپ کے بارے میں یہ کہتے ھیں کہ یہ لوگ چین لوٹنا نہیں چاھتے اُنہیں کیمپوں پر اُنہیں ٹینکوں سے گولی برسانی پڑتی ھے . امریکہ اس بات پر زور اِس لئے دے رھا ھے تاکہ وہ چینی سپاھیوں کو بد دل کر سکے . سردار کی جیت اور ھار سپاھیوں کے بل بوتے پر ھوتی ھے . ایک سپاھی کے ھت کے لئے سردار خود قربانی کرتا ھے . کم سے کم پوربی دیشوں کی یہی پرتھا رھی ھے . پھر یہ کیسے ھو سکتا ھے کہ ماؤتسے تنگ تو امریکی صدر سے ھاتھ ملائیں ڈنر اُڑائیں اور بیچارے سپاھیوں کو امریکنوں کو سونپ دیں . اگر چین والے اِس بات کو مان لیتے تو یہ بڑی ذلیل حرکت ھوتی . ھمیں خوشی ھے کہ اُنہیں اپنی جنتا کا بے حد خیال ھے اور اُنہوں نے اِس وقت ھمارے پرانے اصولوں کو نبھایا ھے . افسوس کی بات ھے کہ بھارت اِس پرانے اصول کو نہ نبھا سکا .

امریکہ اور بھارتی ٹھہراؤ

امریکہ کا کہنا ھے کہ چینی اور اُتری کوریا کے جنگی قیدی اپنے اپنے دیشوں کو اپنی مرضی کے خلاف نہ بھیجے جائیں . بھارت کے ٹھہراؤ نے اس بات کو ھو بھو مان لیا . امریکہ کا کہنا ھے کہ پہلے جنگی قیدیوں کی رھائی کا مسئلہ طے ھو اور پھر عارضی صلح ھو . بھارت نے یہ بھی مان لیا . ھم یہ وشواس سے نہیں کہہ سکتے کہ بھارتی ٹھہراؤ مینن کے بجائے ایچسن کا تیار کیا ھوا تھا لیکن ٹھہراؤ دیکھکر ایسا شک ضرور ھوتا ھے .

ایسی صورت میں اِسے امریکہ کو ماننا ھی چاھئے اور روس اور چین کے لئے اِسکی مخالفت کرنا آوشیک ھے .

اِس سمبندھ میں امریکہ کے ادھیکاری دو باتیں کہتے ھیں : ایک یہ کہ اسٹالن چاھتا ھے کہ لڑائی جاری رھے اور امریکہ اور اُسکے ساتھی چھوٹے چھوٹے راشٹروں سے لڑ کر کمزور ھوتے رھیں اور وہ خود روس کی فوجی طاقت کو مضبوط کرتے رھیں . کہنے کا مطلب یہ ھے کہ امریکہ شانتی چاھتا ھے اور روس جنگ . معمولی عقل کا آدمی بھی پوچھے گا کہ پھر جان بوجھکر امریکہ اسٹالن کا کھلونا کیوں بنا ھوا ھے؟ کیا وہ اتنا بھولا ھے ؟ جو بات اسٹالن کروانا چاھتا ھے وھی امریکہ کر رھا ھے . امریکہ کو چاھئے تھا کہ وہ ھر صورت میں لڑائی بند کر دیتا . اپنے بچاؤ کے لئے ضروری تھا کہ وہ روس کے ھی سجھاؤ کو یونو میں مان لیتا . لیکن امریکہ نے ایسا نہیں کیا اور نہ وہ کرے گا . وہ ایسا نہیں کر

भारताई की सन्धि में जिस बात पर अमल करने के लिये ज़ोर दिया गया है उसी का ज़िकर यहां भी है. इसी कन्वेनशन के 118 वीं दफ़ा में लिखा है कि जैसे ही लड़ाई की सरगरमी ख़तम हो वैसे ही जंगी क़ैदी रिहा कर दिये जायं. यह बंधान आरज़ी सुलह के सिलसिले में बन्द होने वाली लड़ाई के सम्बन्ध में लागू नहीं हो सकता. शायद दूसरी जंग के बाद नतीजों के आधार पर यह बन्धान बनाया गया है. जरमनी, जापान और इटली ने बिना शर्त के हथियार डाल दिये और लड़ाई बन्द हो गई. हांलाकि इस बात की उम्मीद नहीं रह गई थी कि लड़ाई फिर शुरू हो. फिर भी कई साल तक पारटियों में कोई सन्धि नहीं हुई.

"यह सारी बातें चाहे किताबी बकवास मालूम होती हों लेकिन आज अन्तर राश्ट्री क़ानून में इतना घपला है और वह इस डांवाडोल हालत में है कि टरमों के इस्तेमाल को ले कर उसमें और घपला फैलाना अच्छा नहीं लगता."

क़ानून शास्त्र के इस पंडित के ख़त से पता चलता है कि अब तक का रिवाज यही रहा है कि पहले आरज़ी सुलह हो और फिर सन्धि की जाय. जंगी क़ैदियों की रिहाई का सवाल सन्धि का एक अंग होना चाहिये न कि सन्धि उसका एक अंग बना दी जाय. इस तरह हम देखते हैं कि रूस इनसाफ़ की तरफ़ था और भारती ठहराव ने उसकी बात ठुकरा कर ग़ैर जानिबदारी के फ़र्ज़ से मुंह मोड़ा है.

चीन और भारती ठहराव

भारती ठहराव को पहले रूस ने मानने से इनकार किया और उसने यह भी बताया कि चीन भी इसे नहीं मानेगा. इस बात को ले कर भी ख़ूब प्रचार किया गया है कि चीन वही सब करता है जो रूस कहता है यानी चीन रूस का ग़ुलाम है. यह बात सोचने की है कि चीन ऐसी हालत में क्या कर सकता था. उसका कोई प्रतिनिधि अमरीका वाले यूनो में नहीं आने देते. फिर अगर उसने अपने एक दोस्त के ज़रिये अपनी बात कहलाई तो इससे यह कैसे सिद्ध होता है कि वह रूस का ग़ुलाम है.

भारती ठहराव की कापी चीन भेजी गई थी. उसका जवाब वहां के बड़े वज़ीर चू एन लाई ने दिया है. उनके जवाब में अपने पक्ष की मज़बूती है, इनसाफ़ की गरज है और साथ ही साथ सहयोग की भावना है. वह कह सकते थे चूंकि वह यूनो के मेम्बर नहीं हैं इसलिये उनके लिये यूनो का ठहराव ग़ैर क़ानूनी है. उन्होंने यह नहीं कहा बल्कि इस ठहराव के मानने पर जो ख़तरे सामने आयेंगे उनका उन्होंने ज़िकर किया है और बाद में शान्ति क़ायम करने के लिये अपने सुझाव दिये हैं. यह सुलह चाहने वाले की बातें हैं लड़ाई जारी रखने वालों की नहीं.

وارساٸی کی سندھی میں جس بات پر عمل کرنے کے لئے زور دیا گیا ہے اُسی کا ذکر یہاں بھی ہے ۔ اِسی کنونیشن کے 118ویں دفعہ میں لکھا ہے کہ جیسے ہی لڑائی کی سرگرمی ختم ہو ویسے ہی جنگی قیدی رہا کر دیئے جائیں ۔ یہ بندھان عارضی صلح کے سلسلے میں بند ہونے والی لڑائی کے سمبندھ میں لاگو نہیں ہو سکتا ۔ شاید دوسری جنگ کے بعد کے نتیجوں کے آدھار پر یہ بندھان بنایا گیا ہے ۔ جرمنی' جاپان اور اٹلی نے بنا شرط کے ہتھیار ڈال دیئے اور لڑائی بند ہوگئی ۔ حالانکہ اِس بات کی اُمید نہیں رہ گئی تھی کہ لڑائی پھر شروع ہو پھر بھی کئی سال تک پارٹیوں میں کوئی سندھی نہیں ہوئی ۔

" یہ ساری باتیں چاہے کتابی بکواس معلوم ہوتی ہوں لیکن آج انتر راشٹری قانون میں اتنا گھپلا ہے اور وہ اِس ڈانوا ڈول حالت میں ہے کہ ٹرموں کے استعمال کو لے کر اُس میں اور گھپلا پھیلانا اچھا نہیں لگتا ."

قانون شاستر کے اِس پنڈت کے خط سے پتہ چلتا ہے کہ اب تک کا رواج یہی رہا ہے کہ پہلے عارضی صلح ہو اور پھر سندھی کی جائے ۔ جنگی قیدیوں کی رہائی سوال سندھی کا ایک انگ ہونا چاہئے نہ کہ سندھی اُس کا ایک انگ بنا دی جائے ۔ اسطرح ہم دیکھتے ہیں کہ روس انصاف کی طرف تھا اور بھارتی ٹھہراؤ نے اسکی بات ٹھکرا کر غیرجانبداری کے فرض سے منہ موڑا ہے ۔

چین اور بھارتی ٹھہراؤ

بھارتی ٹھہراؤ کو پہلے روس نے ماننے سے انکار کیا اور اُسی نے یہ بھی بتایا کہ چین بھی اِسے نہیں مانے گا ۔ اِس بات کو لے کر بھی خوب پرچار کیا گیا ہے کہ چین وہی سب کرتا ہے جو روس کہتا ہے یعنی چین روس کا غلام ہے ۔ یہ بات سوچنے کی ہے کہ چین ایسی حالت میں کیا کر سکتا تھا ۔ اُس کا کوئی پرتیندھی امریکہ والے یونو میں نہیں آنے دیتے ۔ پھر اگر اُس نے اپنے ایک دوست کے ذریعہ اپنی بات کہلائی تو اس سے یہ کیسے سدھ ہوتا ہے کہ وہ روس کا غلام ہے ۔

بھارتی ٹھہراؤ کی کاپی چین بھیجی گئی تھی ۔ اُس کا جواب وہاں کے بڑے وزیر چو این لائی نے دیا ہے ۔ اُن کے جواب میں اپنے پکش کی مضبوطی ہے' انصاف کی گرج ہے اور ساتھ ہی ساتھ سہیوگ کی بھاؤنا ہے ۔ وہ کہہ سکتے تھے چونکہ وہ یونو کے ممبر نہیں ہیں اس لئے اُن کے لئے یونو کا ٹھہراؤ غیر قانونی ہے ۔ اُنہوں نے یہ نہیں کہا بلکہ اِس ٹھہراؤ کے ماننے پر جو خطرے سامنے آئیں گے اُن کا اُنہوں نے ذکر کیا ہے اور بعد میں شانتی قائم کرنے کے لئے اپنے سجھاؤ دیئے ہیں ۔ یہ صلح چاہنے والے کی باتیں ہیں لڑائی جاری رکھنے والے کی نہیں ۔

सवाल को पहले रखा और लड़ाई के अन्त करने के सवाल को बाद में. रूस ने चाहा था कि लड़ाई के अन्त का सवाल पहले और फिर बाद में क़ैदियों के बदलाव का सवाल आए. न जाने क्यों भारत ने इस मासूम सुझाव को क्यों नहीं माना ! तीसरी कमज़ोरी यह थी कि जंगी क़ैदियों का बदलाव यूनो की मातहती में होने वाला था. ध्यान रहे कि यूनो ख़ुद एक पारटी है और उसी के नाम पर अमरीका कोरिया में लड़ रहा है, फिर कोई पारटी कैसे जज बन सकती है.

रूस ने ठहराव क्यों नहीं माना

रूस ने भारती सुझाव को नहीं माना. चीन ने भी नहीं माना. हमें यह सोचना चाहिये कि आख़िर उनके इनकार में कोई तत्व है या नहीं. इस सम्बन्ध में ज़रूरी है कि इंगलैंड के मशहूर वकील लार्ड सायमन के ख़त को हम पढ़ लें. वह लार्ड चान्सलर भी रह चुके हैं. पहली दिसम्बर 1952 को उन्होंने 'टाइम्स' में नीचे दिया ख़त लिखा था:

"अगर हम आरज़ी सुलह का यह एक असूल मान लेते हैं कि हर आरज़ी सुलह के बाद सारे जंगी क़ैदियों की रिहाई का अधिकार है तो अन्तर राष्ट्री क़ानून में काफ़ी घपला मच जाने का डर है. कोरिया के सम्बन्ध में यह आधार चाहे ठीक हो लेकिन आम तरीक़े से आरज़ी सुलह के बाद ऐसा कभी नहीं हुआ. आरज़ी सुलह का मतलब यह है कि लड़ने वाली ताक़तों में लड़ाई बन्द कर देने का समझौता हो जाय और बाद में वह पूरी शान्ति क़ायम करने के लिये रास्ते निकाल सकें. मिसाल के तौर पर हम पहली जंग के बाद जरमनी की आरज़ी सुलह को ले लें. इसमें जंगी क़ैदियों की रिहाई की शर्त नहीं थी. असल में आरज़ी सुलह का मतलब यह नहीं है कि कुछ दिनों के लिये शान्ति क़ायम हो जाती है क्योंकि दोनों तरफ़ लड़ाई की परिस्थिति उसी तरह बन रहती है, केवल गोले बारूद नहीं छूटते.

"जब आरज़ी सुलह हो रही है तो उस समय भी जंगी क़ैदियों की रिहाई के सवाल पर समझौता हो सकता है. लेकिन आम तरीक़े से यही होता है कि संधि के समय ही इस सवाल को हल किया जाता है वारसाई संधि को ही ले लीजिये. इसकी दफ़ा 214 में लिखा है: इस सन्धि के बाद फ़ौरन जंगी क़ैदियों और सिविलियन क़ैदियों की रिहाई अमल में आनी चाहिये. यह काम बहुत तेज़ी से होना चाहिये. इसके बाद एक कमीशन के मुक़र्रर करने का बन्धान है जो रिहाई को जल्द अमल में ला सके.

"1949 के जिनेवा कनवेनशन के जिस भाग का सम्बन्ध जंगी क़ैदियों के साथ व्योहार करने से है उसकी 75 वीं दफ़ा में लिखा है कि सन्धि के बाद जितनी जल्दी मुमकिन हो सके जंगी क़ैदियों की रिहाई अमल में लाई जाय.

سوال کو پہلے رکھا اور لڑائی کے انت کرنے کے سوال کو بعد میں۔ روس نے چاہا تھا کہ لڑائی کے انت کا سوال پہلے ہو اور پھر بعد میں قیدیوں کے بدلاؤ کا سوال آئے. نہ جانے کیوں بھارت نے اِس معصوم سجھاؤ کو کیوں نہیں مانا ! تیسری کمزوری یہ تھی کہ جنگی قیدیوں کا بدلاؤ یونو کی ماتحتی میں ہونے والا تھا . دھیان رہے کہ یونو خود ایک پارٹی ہے اور اُسی کے نام پر امریکہ کوریا میں لڑ رہا ہے' پھر کوئی پارٹی کیسے جج بن سکتی ہے .

روس نے ٹھہراؤ کیوں نہیں مانا

روس نے بھارتی سجھاؤ کو نہیں مانا . چین نے بھی نہیں مانا . ہمیں یہ سوچنا چاہئے کہ آخر اُن کے انکار میں بھی کوئی تتو ہے یا نہیں . اس سمبندھ میں ضروری ہے کہ انگلینڈ کے مشہور وکیل لارڈ سائمن کے خط کو ہم پڑھ لیں . وہ لارڈ چانسلر بھی رہ چکے ہیں . پہلی دسمبر 1952 کو اُنہوں نے 'ٹائمس' میں نیچے دیا خط لکھا تھا:

" اگر ہم عارضی صلح کا یہ ایک اصول مان لیتے ہیں کہ ہر عارضی صلح کے بعد سارے جنگی قیدیوں کو رہائی کا ادھیکار ہے تو انتر راشٹری قانون میں کافی گھپلا مچ جانے کا ڈر ہے . کوریا کے سمبندھ میں یہ آدھار چاہے ٹھیک ہو لیکن عام طریقے سے عارضی صلح کے بعد ایسا کبھی نہیں ہوا . عارضی صلح کا مطلب یہ ہے کہ لڑنے والی طاقتوں میں لڑائی بند کر دینے کا سمجھوتہ ہوجائے اور بعد میں وہ پوری شانتی قائم کرنے کے لئے راستے نکال سکیں . مثال کے طور پر ہم پہلی جنگ کے بعد جرمنی کی عارضی صلح کو لے لیں . اِسمیں جنگی قیدیوں کی رہائی کی شرط نہیں تھی . اصل میں عارضی صلح کا مطلب یہ نہیں ہے کہ کچھ دنوں کے لئے شانتی قائم ہو جاتی ہے کیونکہ دونوں طرف لڑائی کی پرستھتی اُسی طرح بنی رہتی ہے' کیول گولے بارود نہیں چھوٹتے .

"جب عارضی صلح ہو رہی ہے تو اُس سمے بھی جنگی قیدیوں کی رہائی کے سوال پر سمجھوتہ ہو سکتا ہے . لیکن عام طریقے سے یہی ہوتا ہے کہ سندھی کے سمے ہی اِس سوال کو حل کیا جاتا ہے. وار سائی سندھی کو ہی لے لیجئے . اِسکی دفعہ 214 میں لکھا ہے : اِس سندھی کے بعد فوراً جنگی قیدیوں اور سویلین قیدیوں کی رہائی عمل میں آنی چاہئے . یہ کام بہت تیزی سے ہونا چاہئے . اِس کے بعد ایک کمیشن کے مقرر کرنے کا بندھان ہے جو رہائی کو جلد عمل میں لا سکے .

"1949 کے جنیوا کنوینشن کے جس بھاگ کا سمبندھ جنگی قیدیوں کے ساتھ بیوہار کرنے سے ہے اُسکی 75ویں دفعہ میں لکھا ہے کہ سندھی کے بعد جتنی جلدی ممکن ہو سکے جنگی قیدیوں کی رہائی عمل میں لائی جائے .

अफ़सोस की बात है कि दूसरा फ़र्ज़ भी हिन्दुस्तान पूरा न कर सका. हमने पंडित नेहरू और दूसरे ज़िम्मेदार भारती नेताओं के बयानों को ग़ौर से पढ़ा है. कहीं यह पता नहीं चलता कि किसी भी हालत में नया चीन ने ठहराव को स्वीकार किया हो. किसी बात को मान कर मुकर जाना बहुत बड़ा पाप है, दोस्ती में तो यह चीज़ विश्वासघात के अपराध के बराबर है. लेकिन चीन ने ऐसा कोई अपराध नहीं किया. हिन्दुस्तान ने उस से मशवरा किया कि वह कोरिया में शान्ति लाने के लिये कोशिश करना चाहता है. चीन ने इस कोशिश की सराहना की और पूरी तरह सहयोग देने का वचन दिया. लेकिन उसे यह पता नहीं था कि यह कोशिश किस आधार पर होगी. अफ़सोस है कि भारत ने अमरीका के सामने अपने घुटने टेक दिये और अपने ठहराव में तब्दीली कर ली. ऐसी हालत में ठहराव को मानने से इनकार करने का चीन को पूरा अधिकार था.

हम इन आधारों पर कह सकते हैं कि भारत बिचौलिये का दूसरा फ़र्ज़ भी नहीं निभा सका: एक यह कि चीन और कोरिया से पूरी बात कर के न ठहराव रखा गया और न ही अमरीकी सुझावों को मानते समय चीन और रूस से राय ली गई. भारत के अधिकारियों ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि यूनो में चीन के प्रतिनिधि की ग़ैर हाज़री की वजह से पूरा मशवरा चीन से नहीं हो सका. दूसरे यह कि जब भारत को मालूम हो गया कि चीन और उत्तरी कोरिया वाले उस के ठहराव के आधार पर सुलह करने को तैयार नहीं हैं तो उसे अपने ठहराव को वापस ले लेना चाहिये था और फिर बातचीत कर के दूसरा ठहराव लाना चाहिये था या चुप बैठ जाना चाहिये था. बिचौलिये का काम है ऐसे नुक़ते ढूंढ निकालना जिस पर दोनों पारटी राज़ी हो जावें. उस का काम ठहराव पास कराना नहीं है. लेकिन न जाने क्यों भारत ने बिचौलिये की हैसियत छोड़ कर एक पारटी की हैसियत अख़्तियार कर ली और ठहराव के पास होने या न होने के सवाल को अपनी हार और जीत समझ बैठा.

ठहराव की कमज़ोरियां

पूरे ठहराव की बुनियाद एक थी और बाक़ी सब तफ़सीली चीज़ें थीं. वह बुनियाद यह थी कि चीनी और उत्तरी कोरिया के उन जंगी क़ैदियों का बदलाव न किया जाय जो चीन और कोरिया लौटना नहीं चाहते. यह बात अमरीका दुहराता है और यही उसका पक्ष है. अमरीकन पक्ष को पूरी तरह भारत ने मान लिया. फिर सुलह की गुंजायश कहां रह जाती है. यह बात समझौते का नुक़ता नहीं हो सकती थी बल्कि दूसरे फ़रीक़ के पक्ष को झूटा ठहराना था और अमरीकी पक्ष को जायज़. इस ठहराव की दूसरी कमज़ोरी यह थी कि इस ने क़ैदियों के बदलाव के

افسوس کی بات ہے کہ دوسرا فرض بھی ہندستان پورا نہ کر سکا. ہم نے پنڈت نہرو اور دوسرے ذمہ دار بھارتی نیتاؤں کے بیانوں کو غور سے پڑھا ہے . کہیں یہ پتہ نہیں چلتا کہ کسی بھی حالت میں نیا چین نے ٹھہراؤ کو سویکار کیا ہو . کسی بات کو مان کر مکر جانا بہت بڑا پاپ ہے . دوستی میں تو یہ چیز وشواس گھات کے اپرادھ کے برابر ہے . لیکن چین نے ایسا کوئی اپرادھ نہیں کیا . ہندستان نے اُس سے مشورہ کیا کہ وہ کوریا میں شانتی لانے کے لئے کوشش کرنا چاہتا ہے . چین نے اِس کوشش کی سراہنا کی اور پوری طرح سہیوگ دینے کا وچن دیا . لیکن اُسے یہ پتہ نہیں تھا کہ یہ کوشش کس آدھار پر ہوگی. افسوس ہے کہ بھارت نے امریکہ کے سامنے اپنے گھٹنے ٹیک دیئے اور اپنے ٹھہراؤ میں تبدیلی کرلی . ایسی حالت میں ٹھہراؤ کو ماننے سے انکار کرنے کا چین کو پورا ادھیکار تھا .

ہم اِن آدھاروں پر کہہ سکتے ہیں کہ بھارت بچولئے کا دوسرا فرض بھی نہیں نبھا سکا : ایک یہ کہ چین اور کوریا سے پوری بات کرکے نہ ٹھہراؤ رکھا گیا اور نہ ہی امریکی سجھاؤں کو مانتے سمے چین اور روس سے رائے لی گئی . بھارت کے ادھیکاریوں نے بھی اِس بات کو سویکار کیا ہے کہ یونو میں چین کے پرتیندھی کی غیر حاضری کی وجہ سے پورا مشورہ چین سے نہیں ہوسکا . دوسرے یہ کہ جب بھارت کو معلوم ہوگیا کہ چین اور اُتری کوریا والے اُس کے ٹھہراؤ کے آدھار پر صلح کرنے کو تیار نہیں ہیں تو اُسے اپنے ٹھہراؤ کو واپس لے لینا چاہئے تھا اور پھر بات چیت کرکے دوسرا ٹھہراؤ لانا چاہئے تھا یا چپ بیٹھ جانا چاہئے تھا . بچولئے کا کام ہے ایسے نقطے ڈھونڈھ نکالنا جس پر دونوں پارٹی راضی ہو جائیں . اُس کا کام ٹھہراؤ پاس کرانا نہیں ہے . لیکن نہ جانے کیوں بھارت نے بچولئے کی حیثیت چھوڑ کر ایک پارٹی کی حیثیت اختیار کرلی اور ٹھہراؤ کے پاس ہونے یا نہ ہونے کے سوال کو اپنی ہار اور جیت سمجھ بیٹھا .

ٹھہراؤ کی کمزوریاں

پورے ٹھہراؤ کی بنیاد ایک تھی اور باقی سب تفصیلی چیزیں تھیں . وہ بنیاد یہ تھی کہ چینی اور اُتری کوریا کے اُن جنگی قیدیوں کا بدلاؤ نہ کیا جائے جو چین اور کوریا لوٹنا نہیں چاہتے . یہ بات امریکہ دہراتا ہے اور یہی اُس کا پکش ہے . امریکن پکش کو پوری طرح بھارت نے مان لیا . پھر صلح کی گنجائش کہاں رہ جاتی ہے . یہ بات سمجھوتے کا نقطہ نہیں ہوسکتی تھی بلکہ دوسرے فریق کے پکش کو جھوٹا ٹھہرانا تھا اور امریکی پکش کو جائز . اِس ٹھہراؤ کی دوسری کمزوری یہ تھی کہ اِس نے قیدیوں کے بدلاؤ کے

हिन्दुस्तान को गाली दे रहा था वही दूसरे दिन इन दोनों की तारीफ़ करते नहीं थकता था. यहां तक कि न्यूयार्क टाइम्स ऐसे हिन्दुस्तान विरोधी अमरीकी अखबार ने भी भारत सरकार की नीचे लिखे शब्दों में तारीफ़ की :

"हिन्दुस्तान के सामने तीन रास्ते थे—एक ठहराव में तबदीली करके उसे वोट के लिये रखा जाय, दूसरे तबदीली करने से साफ़ इनकार कर दिया जाय और तीसरे ठहराव को वापस ले लिया जाय. फ़ैसला बहुत मुश्किल था क्योंकि हिन्दुस्तान को ग़ैर जानिबदारी और बिचौलिये की हैसियत को छोड़ कर साफ़ साफ़ कम्युनिस्टों के ख़िलाफ़ खड़ा होना पड़ता लेकिन भारत ने हिम्मत से काम लिया. वोट के नतीजे से साफ़ ज़ाहिर है : 54 ने पक्ष में वोट दिया. नैशनलिस्ट चीन ने वोट नहीं दिया और रूसी गुट के पांच देशों ने मुख़ालिफ़त की"

न्युयार्क टाइम्स और उसकी विचार धारा वाले दूसरे देशी और विदेशी अख़बारों ने भारत सरकार की तारीफ़ के पुल सिर्फ़ इसीलिये बांधे हैं क्योंकि भारत ग़ैर जानिबदारी और बिचौलिये की हैसियत को छोड़ कम्युनिस्टों के ख़िलाफ़ खड़ा हुआ. या दूसरे शब्दों में यूं कहिये कि ख़ामोश लड़ाई में हिन्दुस्तान ने अमरीका को अपने कन्धे पर बन्दूक़ रख कर छुड़ाने दिया और हारी हुई लड़ाई में एक दफ़ा फिर उसे सांस लेने का मौक़ा मिल गया.

अगर हिन्दुस्तान बिचौलिया नहीं रह गया, अगर उसने ग़ैर जानिबदारी छोड़ दी, अगर वह अमरीका का दोस्त बन गया तो ज़ाहिर बात है कि रूसी गुट वाले उस पर विश्वास नहीं रख सकते. भारत की नियत पर भी अगर वह हमले करते हैं तो उन्हें पूरा हक़ है.

क्या हिन्दुस्तान ग़ैर जानिबदार नहीं था ?

अमरीकी पक्ष वाले इस संबंध में हिन्दुस्तान को अपने पक्ष में गिनते हैं और रूस के इनकार को अपनी जीत समझते हैं. रूसी गुट भी इस बात की ताईद करता है. लेकिन हमें ख़ुद ठंडे दिल से सोचना चाहिये कि हिन्दुस्तान ग़ैर जानिबदार रह सका या नहीं और उस ने बिचौलिये के फ़र्ज़ को निभाया यह नहीं ? हमारा जवाब है कि हिन्दुस्तान अपने फ़र्ज़ को नहीं निभा सका. बिचौलिये और वह भी ग़ैर जानिबदार बिचौलिये के दो फ़र्ज़ होते हैं. एक यह कि वह इस बात का सही अन्दाज़ा लगाए कि उस ख़ास झगड़े में ज़ियादती किस की है, और दूसरे यह कि दोनों पार्टियों से बात चीत कर के एक ऐसा सुझाव रखे कि जिस पर दोनों राज़ी हो जायें. पहला फ़र्ज़ हिन्दुस्तान ने नहीं निभाया और वह निभा भी नहीं सकता था. वह ख़ुद ऐसा जज था जो उत्तरी कोरिया वालों को क़सूरवार ठहरा चुका है. इस पर हम ज़ोर नहीं देते लेकिन यह बात भी एक बिचौलिये के मान और उस के फ़ैसले की अहमियत को बहुत कम कर देती है.

ہندستان کو گالی دے رہا تھا وہی دوسرے دن ان دونوں کی تعریف کرتے نہیں تھکتا تھا . یہاں تک کہ نیویارک ٹائمس ایسے ہندستان ورودھی امریکی اخبار نے بھی بھارت سرکار کی نیچے لکھے شبدوں میں تعریف کی :

"ہندستان کے سامنے تین راستے تھے—ایک ٹھہراو میں تبدیلی کرکے اسے ووٹ کے لئے رکھا جائے' دوسرے تبدیلی کرنے سے صاف انکار کر دیا جائے اور تیسرے ٹھہراو کو واپس لے لیا جائے . فیصلہ بہت مشکل تھا کیونکہ ہندستان کو غیر جانبداری اور بچولئے کی حیثیت کو چھوڑ کر صاف صاف کمیونسٹوں کے خلاف کھڑا ہونا پڑتا لیکن بھارت نے ہمت سے کام لیا . ووٹ کے نتیجے سے صاف ظاہر ہے : 54 نے پکش میں دیا . نیشنلسٹ چین نے ووٹ نہیں دیا اور روسی گٹ کے پانچ دیشوں نے مخالفت کی".

نیویارک ٹائمس اور اس کی وچار دھارا والے دوسرے دیشی اور ودیشی اخباروں نے بھارت سرکار کی تعریف کے پل صرف اسی لئے باندھے ہیں کیونکہ بھارت غیر جانبداری اور بچولئے کی حیثیت کو چھوڑ کمیونسٹوں کے خلاف کھڑا ہوا . یا دوسرے شبدوں میں یوں کہئے کہ خاموش لڑائی میں ہندستان نے امریکہ کو اپنے کندھے پر بندوق رکھ کر چھوڑنے دیا اور ہاری ہوئی لڑائی میں ایک دفعہ پھر اسے سانس لینے کا موقع مل گیا .

اگر ہندستان بچولیا نہیں رہ گیا' اگر اس نے غیر جانبداری چھوڑ دی' اگر وہ امریکہ کا دوست بن گیا تو ظاہر بات ہے کہ روسی گٹ والے اس پر وشواس نہیں رکھ سکتے . بھارت کی نیت پر بھی اگر وہ حملے کرتے ہیں تو انہیں پورا حق ہے .

کیا ہندستان غیر جانبدار نہیں تھا ؟

امریکی پکش والے اس سمبندھ میں ہندستان کو اپنے پکش میں گنتے ہیں اور روس کے انکار کو اپنی جیت سمجھتے ہیں . روسی گٹ بھی اس بات کی تائید کرتا ہے . لیکن ہمیں خود ٹھنڈے دل سے سوچنا چاہئے کہ ہندستان غیر جانبدار رہ سکا یا نہیں اور اس نے بچولئے کے فرض کو نبھایا یا نہیں ؟ ہمارا جواب ہے کہ ہندستان اپنے فرض کو نہیں نبھا سکا . بچولئے اور وہ بھی غیر جانبدار بچولئے کے دو فرض ہوتے ہیں . ایک یہ کہ وہ اس بات کا صحیح اندازہ لگائے کہ اس خاص جھگڑے میں زیادتی کس کی ہے' اور دوسرے یہ کہ دونوں پارٹیوں سے بات چیت کرکے ایک ایسا سجھاو رکھے کہ جس پر دونوں راضی ہو جائیں . پہلا فرض ہندستان نے نہیں نبھایا اور وہ نبھا بھی نہیں سکتا تھا . وہ خود ایسا جج تھا جو اتری کوریا والوں کو قصوروار ٹھہرا چکا ہے . اس پر ہم زور نہیں دیتے لیکن یہ بات بھی ایک بچولئے کے مان اور اس کے فیصلے کی اہمیت کو بہت کم کر دیتی ہے .

हिन्दी उर्दू हिन्दुस्तानी का ही [illegible] होगी, बल्कि विधान की आठवीं फ़हरिस्त में गिनाई हुई चौदहों भाषाओं के भंडार से अपने को माला माल करेगी, और तब ही वह राष्ट्र भाषा कहला सकेगी.''

हम सत्य नारायन जी की इस बात से पूरी तरह सहमत हैं, और हमें विश्वास है कि दक्खिन के हिन्दी विरोधी समझे जाने वाले भाइयों के विचार भी इससे भिन्न नहीं हैं. आवश्यकता केवल हमारे अपने अपने दिलों को बड़ा करने की है.

5. 1. '53 —सुन्दरलाल

भारत का शान्ति ठहराव

दुनिया की आम जनता आज लड़ाई से नफ़रत करती है. लड़ाई का वातावरन पैदा करने वाले प्रचार के बीच जब उसे शान्ति की आवाज़ सुनाई देती है तो वह आशा भरी निगाहों से शान्ति प्रचारक व्यक्ति या देश की तरफ़ देखने लगती है. भारत ने जब इस बात का एलान किया कि वह कोरिया की लड़ाई के अन्त के लिये एक सुझाव रखेगा तो दुनिया की आम जनता ने उस को बधाई दी. हम भारतवासी तो फूले नहीं समाते थे. हमारी वजह से शान्ति क़ायम हो जाय यह कोई कम गर्व की बात न थी. लेकिन हमें भी निराश होना पड़ा और दुनिया की आम जनता भी निराश हो गई.

जब किसी चीज़ को पाने की ज़बरदस्त ख़ाहिश होती है और वह नहीं मिल पाती तो हम व्याकुल से हो उठते हैं. जिन कारनों से हम नाकामयाब होते हैं उनकी चरचा होती है और तरह तरह की बातें निकल पड़ती हैं. भारत के शान्ति ठहराव की नाकामयाबी पर जब हम मोटे तरीक़े से सोचते हैं तो एक ही वजह समझ में आती है. अगर रूसी गुट के देश भी इस ठहराव को मान लेते तो शान्ति ज़रूर क़ायम हो जाती. और इस बात को मानने का ज़रूरी नतीजा यह निकलता है कि अमरीकी गुट कोरिया की लड़ाई ख़तम करना चाहता है लेकिन रूसी गुट लड़ाई को जारी रखना चाहता है.

कम से कम थोड़ी देर के लिये भोली जनता के दिमाग़ में यह ख़याल ज़रूर जगह कर गया. अमरीकी प्रचार ने ज़ोर लगाया. हिन्दुस्तान के काफ़ी अख़बारों ने लेख छापे और एडीटोरियल लिखे. सब का सार यही था कि रूसी गुट के देश शान्ति नहीं चाहते. ख़ामोश लड़ाई में अमरीका की यह बहुत बड़ी जीत थी और इस जीत का पूरा सेहरा हिन्दुस्तान के सर है.

हिन्दुस्तान की तारीफ़

जो अमरीकी प्रेस एक दिन पहले तक नेहरू और

ہندی اردو ہندستانی کا ہی سنگم نہیں بلکہ ودھان کی آٹھویں فہرست میں گنائی ہوئی چودھوں بھاشاؤں کے بھنڈار سے اپنے کو مالا مال کرے گی اور تب ہی وہ راشٹر بھاشا کہلا سکے گی۔"

ہم ستیہ نارائن جی کی اس بات سے پوری طرح سہمت ہیں' اور ہمیں وشواس ہے کہ دکھن کے ہندی ورودھی سمجھے جانے والے بھائیوں کے وچار بھی اس سے بھن نہیں ہیں۔ آوشکتا کیول ہمارے اپنے اپنے دلوں کو بڑا کرنے کی ہے۔

5-1-53 —سندر لال

بھارت کا شانتی ٹھہراؤ

دنیا کی عام جنتا آج لڑائی سے نفرت کرتی ہے۔ لڑائی کا واتاورن پیدا کرنے والے پرچار کے بیچ جب اسے شانتی کی آواز سنائی دیتی ہے تو وہ آشا بھری نگاہوں سے شانتی پرچارک ویکتی یا دیش کی طرف دیکھنے لگتی ہے۔ بھارت نے جب اس بات کا اعلان کیا کہ وہ کوریا کی لڑائی کے انت کے لئے ایک سجھاؤ رکھے گا تو دنیا کی عام جنتا نے اس کو بدھائی دی۔ ہم بھارت واسی تو پھولے نہیں سماتے تھے۔ ہماری وجہ سے شانتی قائم ہو جائے یہ کوئی کم گرو کی بات نہ تھی۔ لیکن ہمیں بھی نراش ہونا پڑا اور دنیا کی عام جنتا بھی نراش ہوگئی۔

جب کسی چیز کو پانے کی زبردست خواہش ہوتی ہے اور وہ نہیں مل پاتی تو ہم بیاکل سے ہو اٹھتے ہیں۔ جن کارنوں سے ہم ناکامیاب ہوتے ہیں ان کی چرچا ہوتی ہے اور طرح طرح کی باتیں نکل پڑتی ہیں۔ بھارت کے شانتی ٹھہراؤ کی ناکامیابی پر جب ہم موٹے طریقے سے سوچتے ہیں تو ایک ہی وجہ سمجھ میں آتی ہے۔ اگر روسی گٹ کے دیش بھی اس ٹھہراؤ کو مان لیتے تو شانتی ضرور قائم ہو جاتی۔ اور اس بات کو ماننے کا ضروری نتیجہ یہ نکلتا ہے کہ امریکی گٹ کوریا کی لڑائی ختم کرنا چاہتا ہے لیکن روسی گٹ لڑائی کو جاری رکھنا چاہتا ہے۔

کم سے کم تھوڑی دیر کے لئے بھولی جنتا کے دماغ میں یہ خیال ضرور جگہ کر گیا۔ امریکی پرچار نے زور لگایا۔ ہندستان کے کافی اخباروں نے لیکھ چھاپے اور ایڈیٹوریل لکھے۔ سب کا سار یہی تھا کہ روسی گٹ کے دیش شانتی نہیں چاہتے۔ خاموش لڑائی میں امریکہ کی یہ بہت بڑی جیت تھی اور اس جیت کا پورا سہرا ہندستان کے سر ہے۔

ہندستان کی تعریف

جو امریکی پریس ایک دن پہلے تک نہرو اور

केवल सरकारी पहलू से नहीं, तो सारे देश की बहुत ही काम की सेवा करेगी. दक्खिन भारत के लोगों के गलों से अगर हिन्दी ज़बरदस्ती उतारी गई तो हमेशा इस बात की सम्भावना रहेगी कि लोग उसका विरोध करें. पर मुझे पूरा विश्वास है कि अगर हिन्दी की जानकारी उसके कलचरी यानी सांस्कृतिक पहलू और सांस्कृतिक फ़ायदे को सामने रख कर फैलाने की कोशिश की गई तो लोग इसे बहुत पसन्द करेंगे. कुछ भी हो, हिन्दी अंगरेज़ी की तरह कोई विदेशी भाषा नहीं है. एक और मिसाल लीजिये. हमारे देश के लोग लगभग एक सौ बरस से योरपी संगीत सुनते आ रहे हैं. फिर भी योरपी गाने हमें कभी पसन्द न आए. वह हमारे यहां न फैल सके. पर हम सब रोज़ देखते हैं कि मदरास प्रान्त के हर हिस्से में छोटे छोटे लड़के और लड़कियां तक आ जा कर रोज़ ताज़े से ताज़े हिन्दुस्तानी फ़िल्मी गाने गाते रहते हैं. इससे पता चलता है कि उत्तर और दक्खिन की बोलियों और कलचरों में बुनियादी तौर पर कोई दुश्मनी नहीं है. मैं आशा करता हूँ और मुझे उम्मीद है कि यह सभा, बिना ज़बरदस्ती के और बिना सरकार का सहारा लिये इस सारे प्रान्त भर में हिन्दी को फैलाने की और ज़ियादा कोशिश करेगी."

श्री राजमन्नार के भाषन से हमने जान बूझ कर इतना लम्बा हिस्सा नक़ल किया है. उनकी बातें उत्तर और दक्खिन दोनों जगहों के हिन्दी प्रेमियों के लिये ध्यान देने की हैं. दक्खिन में लाखों हिन्दू और मुसलमान उर्दू बोलते हैं. उनमें सैकड़ों बल्कि हज़ारों ही उर्दू के अच्छे विद्वान, लेखक और कवि भी हैं. तमिल, तैलिगू, मलयालम और कन्नड़ का तो वह घर ही है. यह सब भाषाएं बहुत उन्नत भाषाएं हैं. अगर इन सब की मदद से दक्खिन के हिन्दी सेवक राष्ट्र भाषा हिन्दी को माला माल करने, बढ़ाने और सजाने की कोशिश करेंगे तो हमें इस में कोई सन्देह नहीं कि दक्खिन भारत उसी तरह इस देश की आगे की राष्ट्र भाषा हिन्दी का जन्म स्थान और गहवारा साबित होगा जिस तरह वह आज से कई सौ बरस पहले खड़ी बोली रेख़्ता का जन्म स्थान रह चुका है.

इस में कोई शक नहीं कि दक्खिन के हिन्दी सेवक और हिन्दी प्रचारक चुपचाप आने वाले राष्ट्र की सच्ची तामीर में लगे हुए हैं. मदरास हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री सत्यनारायन जी ने बात करते हुए हम से कहा—"हम दक्खिन वालों ने हिन्दी को राष्ट्र भाषा और राष्ट्र एकता के नाम पर अपनाया था. फिर जब हिन्दी उर्दू का झगड़ा चला तो हमने हिन्दुस्तानी को दोनों के संगम के रूप में अपनाया, और अब हम ने हिन्दी को फिर विधान की उन धाराओं के अनुसार 'राष्ट्र भाषा के रूप में अपनाया है, जिन में साफ़ कहा गया है कि राष्ट्र भाषा हिन्दी न केवल

کیول سرکاری پہلو سے نہیں، تو سارے دیش کی بہت ہی کام کی سیوا کرے گی۔ دکھن بھارت کے لوگوں کے گلوں سے اگر ہندی زبردستی اتاری گئی تو ہمیشہ اس بات کی سمبھاونا رہے گی کہ لوگ اس کا ورودھ کریں۔ پر مجھے پورا وشواس ہے کہ اگر ہندی کی جانکاری اسکے کلچری یعنی سانسکرتک پہلو اور سانسکرتک فائدے کو سامنے رکھکر پھیلانے کی کوشش کی گئی تو لوگ اسے بہت پسند کریں گے۔ کچھ بھی ہو، ہندی انگریزی کی طرح کوئی ودیشی بھاشا نہیں ہے۔ ایک اور مثال لیجئے۔ ہمارے دیش کے لوگ لگ بھگ ایک سو برس سے یورپی سنگیت سنتے آ رہے ہیں۔ پھر بھی یورپی گانے ہمیں کبھی پسند نہ آئے، وہ ہمارے یہاں نہ پھیل سکے۔ پر ہم سب روز دیکھتے ہیں کہ مدراس پرانت کے ہر حصے میں چھوٹے چھوٹے لڑکے اور لڑکیاں تک آ جا کر روز تازے سے تازے ہندستانی فلمی گانے گاتے رہتے ہیں۔ اس سے پتہ چلتا ہے کہ اتر اور دکھن کی بولیوں اور کلچروں میں بنیادی طور پر کوئی دشمنی نہیں ہے۔ میں آشا کرتا ہوں اور مجھے امید ہے کہ یہ سبھا، بنا زبردستی کے اور بنا سرکار کا سہارا لئے اس سارے پرانت بھر میں ہندی کو پھیلانے کی اور زیادہ کوشش کرے گی۔"

شری راج منار کے بھاشن سے ہم نے جان بوجھ کر اتنا لمبا حصہ نقل کیا ہے۔ ان کی باتیں اتر اور دکھن دونوں جگہوں کے ہندی پریمیوں کے لئے دھیان دینے کی ہیں۔ دکھن میں لاکھوں ہندو اور مسلمان اردو بولتے ہیں۔ ان میں سیکڑوں بلکہ ہزاروں ہی اردو کے اچھے ودوان، لیکھک اور کوی بھی ہیں۔ تمل، تیلگو، ملیالم اور کنڑ کا تو وہ گھر ہی ہے۔ یہ سب بھاشائیں بہت انت بھاشائیں ہیں۔ اگر ان سب کی مدد سے دکھن کے ہندی سیوک راشٹر بھاشا ہندی کو مالا مال کرنے، بڑھانے اور سجانے کی کوشش کریں گے تو ہمیں اس میں کوئی سندیہ نہیں کہ دکھن بھارت اسی طرح اس دیش کی آگے کی راشٹر بھاشا ہندی کا جنم استھان اور گہوارا ثابت ہوگا جس طرح وہ آج سے کئی سو برس پہلے کھڑی بولی ریختہ کا جنم استھان رہ چکا ہے۔

اس میں کوئی شک نہیں کہ دکھن کے ہندی سیوک اور ہندی پرچارک چپ چاپ آنے والے راشٹر کی سچی تعمیر میں لگے ہوئے ہیں۔ مدراس ہندی پرچار سبھا کے منتری شری ستیہ نارائن جی نے بات کرتے ہوئے ہم سے کہا— "ہم دکھن والوں نے ہندی کو راشٹر بھاشا اور راشٹری ایکتا کے نام پر اپنایا تھا۔ پھر جب ہندی اردو کا جھگڑا چلا تو ہم نے ہندستانی کو دونوں کے سنگم کے روپ میں اپنایا، اور اب ہم نے ہندی کو پھر ودھان کی ان دھاراؤں کے انوسار راشٹر بھاشا کے روپ میں اپنایا ہے، جن میں صاف کہا گیا ہے کہ راشٹر بھاشا ہندی نہ کیول

एक कारन यह है कि हिन्दी में संस्कृत शैली की शान और उसके वैभव के लिये भी जगह है और उसमें फ़ारसी के सुरीले संगीत भरे कोमल शब्दों और मुहावरों के लिये भी गुंजायश है. मुझे हिन्दी इसलिये पसन्द है क्योंकि उसमें यह लचीलापन है. इसी लचीलेपन और आवाज़ों के उतार चढ़ाव के कारन उसमें सब तरह के भाव और नाज़ुक से नाज़ुक ख़याल ज़ाहिर किये जा सकते हैं. यह एक आज कल की ज़िन्दा ज़बान है जो बढ़ सकती है. मेरी यह राय है कि अगर इस देश में कोई भाषा ऐसी है जो कभी कम से कम कुछ कामों के लिये सारे देश की भाषा का काम दे सकती है तो वह हिन्दी है. विधान की दफ़ा 351 में साफ़ बताया गया है कि हिन्दी का यह काम क्या है. दफ़ा 351 में लिखा है कि हिन्दी को एक ऐसा माध्यम बनना है जिसके ज़रिये भारत की मिली जुली कलचर के सब अंग और सब हिस्से ज़ाहिर हो सकें. हिन्दी का यही पहलू मुझे सबसे ज़ियादा अच्छा लगता है. हिन्दी का दूसरा पहलू है अलग अलग सूबों के बीच या सूबों और यूनियन सरकार के बीच दफ़्तरी पत्र व्यवहार के काम में आना. किसी भी राष्ट्र के जीवन में यह एक बहुत ही छोटी सी बात है, करोड़ों जनता में से कितने हैं जिन्हें इस दफ़्तरी पत्र व्यवहार से काम पड़ता हो. मुझ से पूछिये तो यह पत्र व्यवहार किसी भी भाषा में हो मुझे कोई परवाह नहीं. मुझे कोई एतराज़ नहीं अगर हर सूबा अपनी ही सूबाई भाषा में चिट्ठियां भेजे और उसके साथ जो भी सरकारी भाषा हो उसमें चिट्ठी का अनुवाद साथ लगा दिया करे. छोटे से स्विटज़रलैन्ड में कई सरकारी भाषाएं हैं, पर इससे वहां की संघ सरकार के चलाने में कभी कोई बहुत बड़ी कठिनाई नहीं आई. लेकिन मैं यह ज़रूर मानता हूं, लोगों के दिमाग़ों पर इसका बहुत बड़ा असर पड़ता है और यह बड़ी ज़रूरी चीज़ है कि कोई न कोई एक इस तरह की भाषा होनी चाहिये जिस में यूनियन भर के सब पढ़े लिखे लोग एक दूसरे से अपने अपने विचार प्रकट कर सकें और सब एक दूसरे से बोल सकें. मिसाल के लिये धारा सभाओं के मेम्बर, राजकाजी और समाजी काम करने वाले, साहित्यकार, कलावन्त, साइन्सदां, व्योपारी, यानी वह सब लोग जो या तो अपने सूबे से बाहर देश के दूसरे सूबों में आते जाते रहते हैं, या जिन्हें अपने कारबार में दूसरे सूबों के लोगों से वास्ता पड़ता है, इन सब लोगों को अच्छी तरह हिन्दी आनी चाहिये. सचमुच इसी से भारती राष्ट्र और भारती कलचर की बुनियादी एकता का ख़याल लोगों में फैलेगा. पुराने ज़माने में जब पढ़े लिखे लोग बहुत कम थे संस्कृत भाषा इन सबको मिलाप रखती थी और भारत की बुनियादी एकता को प्रकट करती थी. आज हिन्दी कहीं अधिक अच्छी तरह यह काम दे सकती है. यह सभा अगर इस बारे में हिन्दी की जानकारी सब तरफ़ फैला सके,

ایک کارن یہ ہے کہ ہندی میں سنسکرت شیلی کی شان اور اُس کے ویبھو کے لئے بھی جگہ ہے اور اُس میں فارسی کے سریلے سنگیت بھرے کومل شبدوں اور محاوروں کے لئے بھی گنجائش ہے۔ مجھے ہندی اِس لئے پسند ہے کیونکہ اُس میں یہ لچیلاپن ہے۔ اِسی لچیلےپن اور آوازوں کے اُتار چڑھاؤ کے کارن اُس میں سب طرح کے بھاؤ اور نازک سے نازک خیال ظاہر کئے جاسکتے ہیں۔ یہ ایک آج کل کی زندہ زبان ہے جو بڑھ سکتی ہے۔ میری یہ رائے ہے کہ اگر اِس دیش میں کوئی بھاشا ایسی ہے جو کبھی کم سے کم کچھ کاموں کے لئے سارے دیش کی بھاشا کا کام دے سکتی ہے تو وہ ہندی ہے۔ ودھان کی دفعہ 351 میں صاف بتایا گیا ہے کہ ہندی کا یہ کام کیا ہے۔ دفعہ 351 میں لکھا ہے کہ ہندی کو ایک ایسا مادھیم بننا ہے جس کے ذریعے بھارت کی ملی جلی کلچر کے سب انگ اور سب حصے ظاہر ہوسکیں۔ ہندی کا یہی پہلو مجھے سب سے زیادہ اچھا لگتا ہے۔ ہندی کا دوسرا پہلو ہے الگ الگ صوبوں کے بیچ یا صوبوں اور یونین سرکار کے بیچ دفتری پتر بیوہار کے کام میں آنا۔ کسی بھی راشٹر کے جیون میں یہ ایک بہت ہی چھوٹی سی بات ہے۔ کروڑوں جنتا میں سے کتنے ہیں جنہیں اِس دفتری پتر بیوہار سے کام پڑتا ہو۔ مجھ سے پوچھئے تو یہ پتر بیوہار کسی بھی بھاشا میں ہو مجھے کوئی پرواہ نہیں۔ مجھے کوئی اعتراض نہیں اگر ہر صوبہ اپنی ہی صوبائی بھاشا میں چٹھیاں بھیجے اور اُس کے ساتھ جو بھی سرکاری بھاشا ہو اُس میں چٹھی کا انواد ساتھ لگادیا کرے۔ چھوٹے سے سوئٹزرلینڈ میں کئی سرکاری بھاشائیں ہیں، پر اِس سے وہاں کی سنگھ سرکار کے چلانے میں کبھی کوئی بہت کٹھنائی نہیں آئی۔ لیکن میں یہ ضرور مانتا ہوں، لوگوں کے دماغوں پر اِس کا بہت بڑا اثر پڑتا ہے اور یہ بڑی ضروری چیز ہے کہ کوئی نہ کوئی ایک اِسطرح کی بھاشا ہونی چاہئے جس میں یونین بھر کے سب پڑھے لکھے لوگ ایک دوسرے سے اپنے اپنے وچار پرکٹ کر سکیں اور سب ایک دوسرے سے بول سکیں۔ مثال کے لئے دھارا سبھاؤں کے ممبر، راج کاجی اور سماجی کام کرنے والے، ساہتیہ کار، کلاونت، سائنسداں، بیوپاری، یعنی وہ سب لوگ جو یا تو اپنے صوبے سے باہر دیش کے دوسرے صوبوں میں جاتے آتے رہتے ہیں، یا جنہیں اپنے کاروبار میں دوسرے صوبوں کے لوگوں سے واسطہ پڑتا ہے، اِن سب لوگوں کو اچھی طرح ہندی آنی چاہئے۔ سچ مچ اِسی سے بھارتی راشٹر اور بھارتی کلچر کی بنیادی ایکتا کا خیال لوگوں میں پھیلے گا۔ پرانے زمانے میں جب پڑھے لکھے لوگ بہت کم تھے سنسکرت بھاشا اُن سب کو ملاپ رکھتی تھی اور بھارت کی بنیادی ایکتا کو پرکٹ کرتی تھی۔ آج ہندی کہیں ادھک اچھی طرح یہ کام دے سکتی ہے۔ یہ سبھا اگر اِس پہلو سے ہندی کی جانکاری سب طرف پھیلا سکے،

अधिक है. यह भी सच है कि दक्खिन में हिन्दी के खिलाफ़ भावना मौजूद है. पर इस मनमुटाव की ज़िम्मेदारी जितनी दक्खिन के कुछ भाइयों की कमनिगाही पर है उस से कहीं अधिक उत्तर के कुछ हिन्दी प्रेमियों की ना समझी और कट्टरता पर है. हिन्दी विरोधी आन्दोलन के सब से बड़े नेता श्री रामास्वामी नायकर हमारे एक पुराने मित्र और पुराने देश भक्त हैं. ब्राह्मनों के बड़प्पन के वह ख़िलाफ़ हैं. हमने उनका यह बयान पढ़ा है कि अगर जात पात की ऊँच नीच का ख़याल हमारे राष्ट्र के जीवन से बिलकुल जाता रहे और राष्ट्र भाषा का विकास बिलकुल गांधी जी की बताई राह पर हो तो वह पूरी तरह उसके साथ हैं. हाल में उन्होंने हिन्दी प्रचार सभा के काम की तारीफ़ भी की है. हमें विश्वास है कि अगर हम प्रेम और समझ से काम लें तो राष्ट्र भाषा के विरोध के यह बादल सारे भारत से बहुत जल्द छटते हुए दिखाई दें.

हिन्दी प्रचार सभा मद्रास के सन 1952 के पदवी दान समारोह में भाषन देते हुए मद्रास के गवर्नर श्री प्रकाश जी ने सभा के संचालकों और काम करने वालों से कहा था—"यह एक बहुत बड़ी और सच्ची बात है कि आप ने राष्ट्र भाषा के ज़रिये देश को एक करने का सपना उस समय देखा जब कि चारों तरफ़ अंधेरा था और जब अभी कोई यह अनुमान भी नहीं कर सकता था कि विदेशी सरकार हमारे देश से हट जायगी. यह कोई छोटी बात नहीं है. अपने इस आदर्श पर आप मज़बूती के साथ जमे रहे. उस तक पहुँचने के लिये आपने बड़े बड़े त्याग किये और अधिक से अधिक मेहनत और कोशिशें कीं."

श्री प्रकाश जी ने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि हिन्दी प्रचार के रास्ते से रुकावटों को दूर करने की असल ज़िम्मेदारी हिन्दी बोलने वालों पर है, और उन्हें इस काम में महात्मा गांधी के से बड़े दिल, मेल और प्रेम से काम लेना चाहिये. उन्होंने यह भी कहा कि उत्तर भारत के हर आदमी को अपनी भाषा के साथ साथ कम से कम एक भाषा दक्खिन की भी अच्छी तरह सीखनी चाहिये, जिससे एक दूसरे को समझें और एकता बढ़े.

श्री राजगोपालाचारी ने दिल्ली पार्लिमेन्ट में ठीक कहा था कि—"मैं सचाई और अभिमान के साथ दावे से यह कह सकता हूँ, कि भारत की किसी और एक संस्था ने राष्ट्र भाषा हिन्दी को फैलाने और बढ़ाने में इतना काम नहीं किया जितना मद्रास की दक्खिन भारत हिन्दी प्रचार सभा ने."

26 अप्रैल सन 1952 को सभा के राजा जी होस्टल को खोलते हुए मद्रास के विद्वान चीफ़ जस्टिस श्री पी. वी. राजमन्नार ने कहा था:

"हिन्दी भाषा मुझे कई कारनों से प्यारी लगती है.

اسکے ہے ۔ یہ بھی سچ ہے کہ دکھن میں ہندی کے خلاف بھاؤنا موجود ہے ۔ پر اس من مٹاؤ کی ذمہ داری جتنی دکھن کے کچھ بھائیوں کی کم نگاہی پر ہے اس سے کہیں ادھک اتر کے کچھ ہندی پریمیوں کی ناسمجھی اور کٹرتا پر ہے ۔ ہندی ورودھی آندولن کے سب سے بڑے نیتا شری راما سوامی نائکر ہمارے ایک پرانے متر اور پرانے دیش بھکت ہیں ۔ براہمنوں کے بڑپن کے وہ خلاف ہیں ۔ ہم نے ان کا یہ بیان پڑھا ہے کہ اگر جات پات کی اونچ نیچ کا خیال ہمارے راشٹر کے جیون سے بالکل جاتا رہے اور راشٹر بھاشا کا وکاس بالکل گاندھی جی کی بتائی راہ پر ہو تو وہ پوری طرح اس کے ساتھ ہیں ۔ حال میں انہوں نے ہندی پرچار سبھا کے کام کی تعریف بھی کی ہے ۔ ہمیں وشواس ہے کہ اگر ہم پریم اور سمجھ سے کام لیں تو راشٹر بھاشا کے ورودھ کے یہ بادل سارے بھارت سے بہت جلد چھٹتے ہوئے دکھائی دیں ۔

ہندی پرچار سبھا مدراس کے سن 1952 کے پدوی دان سماروہ میں بھاشن دیتے ہوئے مدراس کے گورنر شری پرکاش جی نے سبھا کے سنچالکوں اور کام کرنے والوں سے کہا تھا—"یہ ایک بہت بڑی اور سچی بات ہے کہ آپ نے راشٹر بھاشا کے ذریعے دیش کو ایک کرنے کا سپنا اس سمے دیکھا جب کہ چاروں طرف اندھیرا تھا اور جب ابھی کوئی یہ انومان بھی نہیں کرسکتا تھا کہ ودیشی سرکار ہمارے دیش سے ہٹ جائیگی ۔ یہ کوئی چھوٹی بات نہیں ہے ۔ اپنے اس آدرش پر آپ مضبوطی کے ساتھ جمے رہے ۔ اس تک پہونچنے کے لئے آپ نے بڑے بڑے تیاگ کئے اور ادھک سے ادھک محنت اور کوششیں کیں"۔

شری پرکاش جی نے اس بات پر بھی زور دیا کہ ہندی پرچار کے راستے سے رکاوٹوں کو دور کرنے کی اصل ذمہ داری ہندی بولنے والوں پر ہے' اور انہیں اس کام میں مہاتما گاندھی کے سے بڑے دل' میل اور پریم سے کام لینا چاہئے ۔ انہوں نے یہ بھی کہا کہ اتر بھارت کے ہر آدمی کو اپنی بھاشا کے ساتھ ساتھ کم سے کم ایک بھاشا دکھن کی بھی اچھی طرح سیکھنی چاہئے' جس سے ایک دوسرے کو سمجھیں اور ایکتا بڑھے ۔

شری راجگوپالاچاری نے دلی پارلیامنٹ میں ٹھیک کہا تھا کہ—"میں سچائی اور ابھیمان کے ساتھ دعوے سے یہ کہہ سکتا ہوں کہ بھارت کی کسی اور ایک سنستھا نے راشٹر بھاشا ہندی کو پھیلانے اور بڑھانے میں اتنا کام نہیں کیا جتنا مدراس کی دکھن بھارت ہندی پرچار سبھا نے"۔

25 اپریل سن 1952 کو سبھا کے راجا جی ہوسٹل کو کھولتے ہوئے مدراس کے ودوان چیف جسٹس شری پی ۔ وی ۔ راج منار نے کہا تھا :

"ہندی بھاشا مجھے کئی کارنوں سے پیاری لگتی ہے۔

न मिल सकते हों. एक खास बात यह है—और शायद इसी से हिन्दी प्रचार में सब से अधिक मदद मिली है—कि वहां हिन्दी सीखने में औरतों ने मर्दों से भी बढ़ कर हिस्सा लिया है. दूर दूर के गांव तक में शायद ही कोई जगह ऐसी हो जहां हिन्दी अच्छी तरह बोल सकने और समझ सकने वाली काफ़ी बहनें न मिल सकती हों.

हिन्दी प्रचार सभा, मदरास के प्रधान मंत्री श्री मो. सत्यनारायन ने हमारे पास सभा के 35 बरस के काम की एक छोटी सी रिपोर्ट भेजी है. रिपोर्ट से पता चलता है कि मदरास सूबे भर के अन्दर जगह जगह इस समय लगभग चार हज़ार प्रचारक या अध्यापक हिन्दी पढ़ाने का काम कर रहे हैं. सन 1951 में इन प्रचारकों के ज़रिये हिन्दी पढ़ने वालों की तादाद दो लाख से ऊपर थी. उस साल तक 25 लाख विद्यार्थी हिन्दी सीख सीख कर निकल चुके थे और 5,45,783 सभा के इम्तहानों में बैठ चुके थे. अकेले सन 1951 में सभा के इम्तहानों में बैठने वालों की तादाद 1,00,6,28 थी. हिन्दी की ऊंची से ऊंची डिग्री पाए हुए लोगों की तादाद उस समय प्रान्त में ग्यारह हज़ार थी पिछले पन्द्रह बरस के अन्दर सभा चालीस लाख रुपए से ऊपर अपने काम पर ख़र्च कर चुकी है. सभा के अपने स्कूलों के अलावा प्रान्त भर के अन्दर 160 कालिजों और 2,900 हाई स्कूलों में हिन्दी पढ़ाने का पूरा पूरा प्रबन्ध है. सभा का एक काम प्रचारक या अध्यापक तैयार करना है. इन में एक बहुत बड़ी तादाद स्त्रियों की है. गांव के लोगों में सभा का प्रचार शहर के लोगों से भी अधिक है और बढ़ रहा है.

पहले अट्ठारह बरस तक सभा ने किराए के मकानों में काम किया. आज सभा के अपने सुन्दर और शानदार भवन हैं. अपना प्रेस है जिस में अंगरेज़ी के अलावा देश की आठ भाषाओं में सुन्दर साफ़ छपाई होती है. हिन्दी की पढ़ाई और प्रचार के लिये सभा अब तक 167 किताबें छाप कर निकाल चुकी है जिन की सब मिला कर एक करोड़ से ऊपर कापियां दक्खिन भारत में फैल चुकी हैं. सभा हिन्दी के दो माहवारी रिसाले निकालती है, 'हिन्दी प्रचार समाचार' और 'दक्खिन भारत'. चारों भाषाई इलाक़ों में सभा की अलग अलग सूबाई शाखाएं हैं.

इस में सन्देह नहीं कि मदरास सूबे में ऊपर के पढ़े लिखे लोगों में अब भी हज़ारों आदमी ऐसे हैं जो अंगरेज़ी जानते हैं और अंगरेज़ी में काम कर सकते हैं, पर न हिन्दी जानते हैं और न हिन्दी में काम कर सकते हैं पर इन से कहीं अधिक तादाद ऐसे लोगों की है जो न अंगरेज़ी जानते हैं और न अंगरेज़ी में काम कर सकते हैं, पर हिन्दी जानते हैं और हिन्दी में काम कर सकते हैं. कुल मिला कर हिन्दी जानने वालों की तादाद अंगरेज़ी जानने वालों से

نہ مل سکتی ہوں. ایک خاص بات یہ ہے—اور شاید اِسی سے ہندی پرچار میں سب سے ادھک مدد ملی ہے—کہ وہاں ہندی سیکھنے میں عورتوں نے مردوں سے بھی بڑھکر حصہ لیا ہے. دور دور کے گاؤں تک میں شاید ہی کوئی جگہ ایسی ہو جہاں ہندی اچھی طرح بول سکنے اور سمجھ سکنے والی کافی بہنیں نہ مل سکتی ہوں.

ہندی پرچار سبھا' مدراس کے پردھان منتری شری مو. ستیہ نرائن کے ہمارے پاس سبھا کے 35 برس کے کام کی ایک چھوٹی سی رپورٹ بھیجی ہے. رپورٹ سے پتہ چلتا ہے کہ مدراس صوبہ بھر کے اندر جگہ جگہ اِس سمے لگ بھگ چار ہزار پرچارک یا ادھیاپک ہندی پڑھانے کا کام کر رہے ہیں. سن 1951 میں ان پرچارکوں کے ذریعے ہندی پڑھنے والوں کی تعداد دو لاکھ سے اوپر تھی. اس سال تک 25 لاکھ ودیارتھی ہندی سیکھ سیکھ کر نکل چکے تھے اور 5,45,783 سبھا کے اِمتحانوں میں بیٹھ چکے تھے. اکیلے سن 1951 میں سبھا کے اِمتحانوں میں بیٹھنے والوں کی تعداد 1,00,628 تھی. ہندی کی اونچی سے اونچی ڈگری پائے ہوئے لوگوں کی تعداد اس سمے پرانت میں گیارہ ہزار تھی. پچھلے پندرہ برس کے اندر سبھا چالیس لاکھ روپئے سے اوپر اپنے کام پر خرچ کرچکی ہے. سبھا کے اپنے اِسکولوں کے علاوہ پرانت بھر کے اندر 160 کالجوں اور 2,900 ہائی اسکولوں میں ہندی پڑھانے کا پورا پورا پربندھ ہے. سبھا کا ایک کام پرچارک یا ادھیاپک تیار کرنا ہے. اِن میں ایک بہت بڑی تعداد اِستریوں کی ہے. گاؤں کے لوگوں میں سبھا کا پرچار شہر کے لوگوں سے بھی ادھک ہے اور بڑھ رہا ہے.

پہلے اٹھارہ برس تک سبھا نے کرائے کے مکانوں میں کام کیا. آج سبھا کے اپنے سندر اور شاندار بھون ہیں. اپنا پریس ہے جس میں انگریزی کے علاوہ دیش کی آٹھ بھاشاؤں میں سندر صاف چھپائی ہوتی ہے. ہندی کی پڑھائی اور پرچار کے لئے سبھا اب تک 167 کتابیں چھاپ کر نکال چکی ہے جن کی سب ملا کر ایک کروڑ سے اوپر کاپیاں دکھن بھارت میں پھیل چکی ہیں. سبھا ہندی کے دو ماہواری رسالے نکالتی ہے 'ہندی پرچار سماچار' اور 'دکھن بھارت'. چاروں بھاشائی علاقوں میں سبھا کی الگ صوبائی شاکھائیں ہیں.

اِس میں سندیہہ نہیں کہ مدراس صوبے میں اوپر کے پڑھے لکھے لوگوں میں اب بھی ہزاروں آدمی ایسے ہیں جو انگریزی جانتے ہیں اور انگریزی میں کام کرسکتے ہیں پر نہ ہندی جانتے ہیں اور نہ ہندی میں کام کرسکتے ہیں. پر ان سے کہیں ادھک تعداد ایسے لوگوں کی ہے جو نہ انگریزی جانتے ہیں اور نہ انگریزی میں کام کرسکتے ہیں، پر ہندی جانتے ہیں اور ہندی میں کام کرسکتے ہیں. کل ملا کر ہندی جاننے والوں کی تعداد انگریزی جاننے والوں سے

का कोई रूप जो सत्य और अहिंसा की कसौटी पर पूरा न उतरे और कुछ भी हो 'सत्याग्रह' नहीं कहा जा सकता और न हमारी राय में उससे किसी देश का भला हो सकता है. इस तरह के मामलों में विवेक और समझने समझाने की जगह केवल भावुकता और आवेश से काम लेना देश को रसातल में ले जाना है. देश के इसी तरह के भीतरी मामलों में हमें हर तरह की तंगनज़री और मेरे तेरे के सवालों से ऊपर उठ कर सब के और सारे देश के दूर तक के भले को निगाह में रख कर अपने फ़ैसले करने चाहियें और उन फ़ैसलों की रोशनी में ही सोच समझ कर क़दम बढ़ाना चाहिये.

भाषा या भाषाओं के सवाल पर अगर हमें देश को ग़लत रास्ते पर पड़ने से बचाना है तो एक पहली बात हमें यह करनी चाहिये कि देश का हर पढ़ा लिखा आदमी देश की बड़ी बड़ी भाषाओं में से कम से कम कोई दो अच्छी तरह सीखे. हमारी पार्लिमेन्ट और धारा सभाओं के मेम्बरों, वज़ीरों और बड़े सरकारी अफ़सरों के लिये ज़रूरी होना चाहिये कि वह देश की कम से कम दो भाषाओं में अच्छी तरह सब काम कर सकें. इस तरह के उदार और मेल के उपायों से ही हम देश के इस कठिन सवाल का ठीक ठीक हल कर सकते हैं.

22. 12. '52 —सुन्दरलाल

کا کوئی روپ جو ستیہ اور اھنسا کی کسوٹی پر پورا نہ اترے اور کچھ بھی ھو ' ستیا گرہ ' نہیں کہا جا سکتا اور نہ ھماری رائے میں اس سے کسی دیش کا بھلا ھو سکتا ھے . اسطرح کے معاملوں میں وویک اور سمجھنے سمجھانے کی جگہ کیول بھاوکتا اور آویش سے کام لینا دیش کو رسا‌تل میں لے جانا ھے . دیش کے اسی طرح کے بھیتری معاملوں میں ھمیں ھر طرح کی تنگ نظری اور میرے تیرے کے سوالوں سے اوپر اٹھکر سب کے اور سارے دیش کے دور تک کے بھلے کو نگاہ میں رکھکر اپنے فیصلے کرنے چاھئیں اور ان فیصلوں کی روشنی میں ھی سوچ سمجھ کر قدم بڑھانا چاھئے .

بھاشا یا بھاشاؤں کے سوال پر اگر ھمیں دیش کو غلط راستے پر پڑنے سے بچانا ھے تو ایک پہلی بات ھمیں یہ کرنی چاھئے کہ دیش کا ھر پڑھا لکھا آدمی دیش کی بڑی بڑی بھاشاؤں میں سے کم سے کم کوئی دو اچھی طرح سیکھے . ھماری پارلیمنٹ اور دھارا سبھاؤں کے ممبروں' وزیروں اور بڑے سرکاری افسروں کے لئے ضروری ھونا چاھئے کہ وہ دیش کی کم سے کم دو بھاشاؤں میں اچھی طرح سب کام کر سکیں . اس طرح کے ادار اور میل کے اپایوں سے ھی ھم دیش کے اس کٹھن سوال کا ٹھیک ٹھیک حل کر سکتے ھیں .

22-12-'52 —سندر لال

हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

महात्मा गांधी ने जो बहुत से काम देश में प्रेम, एकता और बल पैदा करने के लिये किये उन में उनका एक बहुत बड़ा काम सन 1918 में दक्खिन भारत हिन्दी प्रचार सभा की बुनियाद डालना था. उन दिनों हिन्दी के बड़े से बड़े भक्त हिन्दी प्रचार की ख़ास जगह उत्तर और पच्छिम के उन प्रान्तों को ही बनाना चाहते थे जहां की भाषाएं हिन्दी से मिलती हैं. गांधी जी के सोचने का ढंग दूसरा था. उनकी निगाह पहले धुर दक्खिन के उन इलाक़ों पर गई जहां की भाषाएं हिन्दी से बहुत दूर दिखाई देती थीं. आज 35 बरस के मदरास हिन्दी प्रचार सभा के काम को देखने से पता चलता है कि गांधी जी की *निगाह कितनी दूर* की और उन की सलाह कितनी काम की थी.

दक्खिन की चारों उन्नत भाषाओं टैलिगु, तमिल, कनड़ और मलयालम के इलाक़ों में आज हज़ारों नहीं लाखों आदमी इतनी अच्छी, इतनी साफ़ और इतनी सही हिन्दी बोलते हैं कि बहुत से उत्तर वालों को भी उनके सामने सिर झुकाना पड़ता है. दक्खिन का कोई छोटे से छोटा शहर ऐसा नहीं है जहां हिन्दी हिन्दुस्तानी में लैकचर देने वाले को सुनने और समझने वाले हज़ारों की तादाद में

ھندی پرچار سبھا' مدراس

مہاتما گاندھی نے جو بہت سے کام دیش میں پریم' ایکتا اور بل پیدا کرنے کے لئے کئے ان میں ان کا ایک بہت بڑا کام سن 1918 میں دکھن بھارت ھندی پرچار سبھا کی بنیاد ڈالنا تھا . ان دنوں ھندی کے بڑے سے بڑے بھکت ھندی پرچار کی خاص جگہ اتر اور پچھم کے ان پرانتوں کو ھی بنانا چاھتے تھے جہاں کی بھاشائیں ھندی سے ملتی ھیں . گاندھی جی کے سوچنے کا ڈھنگ دوسرا تھا . ان کی نگاہ پہلے دھر دکھن کے ان علاقوں پر گئی جہاں کی بھاشائیں ھندی سے بہت دور دکھائی دیتی تھیں . آج 35 برس کے مدراس ھندی پرچار سبھا کے کام کو دیکھنے سے پتہ چلتا ھے کہ گاندھی جی کی نگاہ کتنی دور کی اور ان کی صلاح کتنی کام کی تھی .

دکھن کی چاروں انت بھاشاؤں تیلگو' تمل' کنڑ اور ملیالم کے علاقوں میں آج ھزاروں نہیں لاکھوں آدمی اتنی اچھی' اتنی صاف اور اتنی صحیح ھندی بولتے ھیں کہ بہت سے اتر والوں کو بھی ان کے سامنے سر جھکانا پڑتا ھے . دکھن کا کوئی چھوٹے سے چھوٹا شہر ایسا نہیں ھے جہاں ھندی ھندستانی میں لیکچر دینے والے کو سننے اور سمجھنے والے ھزاروں کی تعداد میں

तहसील बंगाल में जाय और कौन बिहार में, कौन गुजरात में और कौन महाराष्ट्र में, किस गांव में तमिल बोलने वाले अधिक हैं और किस में तैलिगू बोलने वाले और फिर इनके साथ लगा हुआ कमगिनत आबादी के इधर से उधर हटाए जाने का भी सवाल खड़ा हो जाय तो यह सारा सवाल पूरे देश के लिये सन '47 के साम्प्रदायिक बटवारे से भी कहीं अधिक दुखभरा सवाल बन सकता है. इस दुनिया में काटना आसान है जोड़ना मुश्किल है, और फिर इस तरह की बहसों में जब कड़ुवापन आ जाता है और दिल फट जाते हैं तो उन्हें जोड़ना और भी मुश्किल हो जाता है.

जो बात बम्बई के बारे में ठीक है वही हैदराबाद रियासत और एक दरजे तक मदरास खास कर मदरास शहर के बारे में ठीक है. निज़ाम या निज़ाम की हकूमत से नफ़रत या देश के किसी गिरोह से अपने पराए के भाव में फंस कर हम देश के और मानव समाज के असली भविश्य की तरफ़ से आंखें बन्द क्यों कर लें? प्रान्तों का भाशावार बटवारा अगर एक दरजे तक होना भी है तो उसके साथ साथ हमें देश के अन्दर इस तरह के टापुओं या टुकड़ों को घटाना नहीं बढ़ाना और बड़ा करना है जिन में अलग अलग बोलियों, अलग अलग धर्मों और अलग अलग रहन सहन के लोग प्रेम के साथ मिल कर रह सकें और एक साथ फल फूल सकें. यह टुकड़े ही एक दरजे तक आने वाले भारत के नमूने होंगे.

हमें यह बात भी याद रखनी चाहिये कि भाशा कोई ध्येय या मक़सद नहीं है. भाशा केवल एक साधन है. भाशाएं सदा बनती और बदलती रहती हैं. एक तमिल के सिवा हमारे देश की कोई भी इस समय की बोली एक हज़ार बरस से ज़ियादा पुरानी नहीं है. देश में इस समय भी सैकड़ों छोटी छोटी मुक़ामी बोलियां धीरे धीरे खतम हो कर किसी एक बड़ी बोली में मिलती जा रही हैं. हम सैकड़ों से बारह तक पहुँचे हैं, और जैसे और कई मामलों में वैसे ही भाशा या बोली के मामले में भी दुनिया धीरे धीरे बहुत से कम और कम से और कम और फिर शायद एक की तरफ़ जा रही है. इसी पर मानव समाज की एकता और शान्ति का दारमदार है. आख़ीर में सारे मानव समाज को एक कुटम्ब का रूप देने में ही हम सब का कल्यान है.

इसके अलावा भी पोट्टि श्रीरामुलु के उपवास के साथ साथ जिस तरह मदरास प्रान्त में जगह जगह रेलगाड़ियां रोकी गईं, हज़ारों बे गुनाहों को कष्ट भोगने पड़े और उसके बाद जिस तरह रेलगाड़ियां खड़ी कर के लूटी गईं और करोड़ों की सम्पत्ति जला डाली गई वह सब काम किसी भी आन्दोलन के न मान को बढ़ा सकते हैं और न उसे उसका फ़ायदा पहुँचा सकते हैं. किसी भी आन्दोलन

تحصیل بنگال میں جائے اور کون بہار میں، کون گجرات میں اور کون مہاراشٹر میں، کس گاؤں میں تمل بولنے والے ادھک ہیں اور کس میں تیلگو بولنے والے پھر ان کے ساتھ لگا ہوا کم گنت آبادی کے ادھر سے ادھر ہٹائے جانے کا بھی سوال کھڑا ہو جائے تو یہ سارا سوال پورے دیش کے لئے سن '47 کے سمپردائک بٹوارے سے بھی کہیں ادھک دکھ بھرا سوال بن سکتا ہے. اس دنیا میں کاٹنا آسان ہے جوڑنا مشکل ہے، اور پھر اس طرح کی بحثوں میں جب کڑوا پن آجاتا اور دل پھٹ جاتے ہیں تو انہیں جوڑنا اور بھی مشکل ہو جاتا ہے .

جو بات بمبئی کے بارے میں ٹھیک ہے وہی حیدرآباد ریاست اور ایک درجے تک مدراس خاص کر مدراس شہر کے بارے میں ٹھیک ہے . نظام یا نظام کی حکومت سے نفرت یا دیش کے کسی گروہ سے اپنے پرائے کے بھاؤ میں پھنس کر ہم دیش کے اور مانو سماج کے اصلی بھوشیہ کی طرف سے آنکھیں بند کیوں کر لیں ؟ پرانتوں کا بھاشا وار بٹوارہ اگر ایک درجے تک ہونا بھی ہے تو اس کے ساتھ ساتھ ہمیں دیش کے اندر اس طرح کے ٹاپوؤں یا ٹکڑوں کو گھٹانا نہیں بڑھانا اور بڑا کرنا ہے جن میں الگ الگ بولیوں، الگ الگ دھرموں اور الگ الگ رہن سہن کے لوگ پریم کے ساتھ مل کر رہ سکیں اور ایک ساتھ پھل پھول سکیں . یہ ٹکڑے ہی ایک درجے تک آنے والے بھارت کے نمونے ہوں گے .

ہمیں یہ بات بھی یاد رکھنی چاہئے کہ بھاشا کوئی دھیہ یا مقصد نہیں ہے . بھاشا کیول ایک سادھن ہے . بھاشائیں سدا بنتی اور بدلتی رہتی ہیں . ایک تمل کے سوا ہمارے دیش کی کوئی بھی اس سمے کی بولی ایک ہزار برس سے زیادہ پرانی نہیں ہے . دیش میں اس سمے بھی سیکڑوں چھوٹی چھوٹی مقامی بولیاں دھیرے دھیرے ختم ہو کر کسی ایک بڑی بولی میں ملتی جا رہی ہیں . ہم سیکڑوں سے بارہ تک پہونچے ہیں، اور جیسے اور کئی معاملوں میں ویسے ہی بھاشا یا بولی کے معاملے میں بھی دنیا دھیرے دھیرے بہت سے کم اور کم سے اور کم اور پھر شاید ایک کی طرف جا رہی ہے . اسی پر مانو سماج کی ایکتا اور شانتی کا دارمدار ہے. آخیر میں سارے مانو سماج کو ایک کٹمب کا روپ دینے میں ہی ہم سب کا کلیان ہے .

اسکے علاوہ شری پوٹی شری راملو کے اپواس کے ساتھ ساتھ جس طرح مدراس پرانت میں جگہ جگہ ریل گاڑیاں روکی گئیں، ہزاروں بے گناہوں کو کشٹ بھوگنے پڑے اور اسکے بعد جس طرح ریل گاڑیاں کھڑی کر کے لوٹی گئیں اور کروڑوں کی سمپتی جلا ڈالی گئی وہ سب کام کسی بھی آندولن کے نہ مان کو بڑھا سکتے ہیں اور نہ اسے اسکا فائدہ پہونچا سکتے ہیں . کسی بھی آندولن

प्रेम और सब से अधिक खुशहाली का होना. दुनिया भर की भाशाओं के इतिहास से और खुद अपने ही देश के इतिहास से इन सब बातों के अनगिनत उदाहरन दिये जा सकते हैं. इस तरह के भाशाई आन्दोलनों से आज तक एक भी काम की चीज़ या दुनिया की निगाहों में चढ़ने वाली चीज़ किसी देश में पैदा नहीं हुई. हमारा आजकल का भाशाओं और भाशावार प्रान्तों का आन्दोलन एक बहुत बड़े दरजे तक ग़लत, बहकी हुई और हानिकर चीज़ है. इतना ही नहीं यह आन्दोलन देश में जिस तरह का रूप लेता जा रहा है वह रूप कहीं कहीं इस सवाल को फ़िरक़ेवाराना सवाल से भी ज़ियादा ख़तरनाक और देश की उन्नति के लिये उस से भी अधिक घातक बनाता हुआ दिखाई देता है.

हम बम्बई शहर ही को ले लें. बम्बई का शहर भारत का एक ऐसा इलाक़ा है जहां अनेक भाशाओं के बोलने वाले और अनेक धर्मों के लोग रहन सहन के अपने अलग अलग ढंग रखते हुए भी कम से कम कई सौ बरस से प्रेम के साथ मिल जुल कर रहते आए हैं. बम्बई में मराठी बोलने वाले, गुजराती बोलने वाले, तमिल बोलने वाले, तैलिगु बोलने वाले, मारवाड़ी बोलने वाले, हिन्दुस्तानी बोलने वाले, पारसी, ईसाई, हिन्दू, शिया और सुन्नी सब हैं. उनकी एक ही कचहरियां हैं, एक हाईकोर्ट है, एक शानदार युनिवरसिटी है, एक ही बाज़ारों में सब करोड़ों का धन्दा करते हैं और भारत के और सब इलाक़ों और शहरों के मुक़ाबले में सब ख़ुश और मालामाल हैं. बम्बई के राजकाजी और आर्थिक आन्दोलनों में भी इस रंगारंगी के कारन कुछ मदद ही मिलती है, बाधा कोई नहीं पड़ती. इस निगाह से और इस दरजे तक बम्बई संयुक्त और अखंड भारत का एक छोटा सा नमूना है और हमें आगे की राह दिखाने वाला एक दीपक है.

ख़ुश क़िस्मती से बम्बई के बारे में अभी सब यह मान चुके हैं कि अगर बाक़ी बम्बई प्रान्त का भाशावारी बंटवारा भी हो तब भी बम्बई शहर न किसी एक भाशा वालों की तरफ़ जायगा न उसके टुकड़े होंगे. लेकिन अगर कभी हमारे गुजराती बोलने वाले और मराठी बोलने वाले भाई अपनी अपनी मातृबोलियों के अनुचित मोह या बेजा तरफ़दारी में आ कर इस बात पर लड़ जायं कि बम्बई शहर महाराष्ट्र के साथ जाय या गुजरात के या उसके टुकड़े किये जायें तो यह अपनी भाशाओं की उन्नत करना नहीं होगा, यह होगा सारे देश का रुख़ उन्नति की ओर से हटा कर अवनति की ओर मोड़ना और देश को बरबादी की तरफ़ ले जाना.

ऐसे ही अगर प्रान्तों के भाशावार बटवारे के सिलसिले में यह सवाल झगड़े की जड़ बन जायं कि कौन ज़िला या

پریم اور سب سے ادھک خوش حالی کا ھونا . دنیا بھر کی بھاشاؤں کے اِتہاس سے اور خود اپنے ھی دیش کے اِتہاس سے ان سب باتوں کے انگنت اُداھرن دیئے جا سکتے ھیں . اِس طرح کے بھاشائی آندولنوں سے آج تک ایک بھی کام کی چیز یا دنیا کی نگاھوں میں چڑھنے والی چیز کسی دیش میں پیدا نہیں ھوئی. ھمارا آجکل کا بھاشاؤں اور بھاشاوار پرانتوں کا آندولن ایک بہت بڑے درجے تک غلط، بہکی ھوئی اور ھانی کر چیز ھے . اتنا ھی نہیں یہ آندولن دیش میں جس طرح کا روپ لیتا جا رھا ھے وہ روپ کہیں کہیں اس سوال کو فرقہ وارانہ سوال سے بھی زیادہ خطرناک اور دیش کی اُنتی کے لئے اُس سے بھی ادھک گھاتک بناتا ھوا دکھائی دیتا ھے .

ھم بمبئی شہر ھی کو لے لیں. بمبئی کا شہر بھارت کا ایک ایسا علاقہ ھے جہاں انیک بھاشاؤں کے بولنے والے اور انیک دھرموں کے لوگ رہن سہن کے اپنے الگ الگ ڈھنگ رکھتے ھوئے بھی کم سے کم کئی سو برس سے پریم کے ساتھ مل جل کر رھتے آئے ھیں . بمبئی میں مراٹھی بولنے والے، گجراتی بولنے والے، تمل بولنے والے، تیلگو بولنے والے، مارواڑی بولنے والے، ھندستانی بولنے والے، پارسی، عیسائی، ھندو، شیعہ اور سنی سب ھیں . اُن کی ایک ھی کچہریاں ھیں، ایک ھائی کورٹ ھے، ایک شاندار یونیورسٹی ھے، ایک ھی بازاروں میں سب کروڑوں کا دھندا کرتے ھیں اور بھارت کے اور سب علاقوں اور شہروں کے مقابلے میں سب خوش اور مالا مال ھیں . بمبئی کے راج کاجی اور آرتھک آندولنوں میں بھی اِس رنگا رنگی کے کارن کچھ مدد ھی ملتی ھے، بادھا کوئی نہیں پڑتی . اِس نگاہ سے اور اس درجے تک بمبئی سیلکت اور اکھنڈ بھارت کا ایک چھوٹا سا نمونہ ھے اور ھمیں آگے کی راہ دکھانے والا ایک دیپک ھے .

خوش قسمتی سے بمبئی کے بارے میں ابھی سب یہ مان چکے ھیں کہ اگر باقی بمبئی پرانت کا بھاشاواری بٹوارا بھی ھو تب بھی بمبئی شہر نہ کسی ایک بھاشا والوں کی طرف جائے گا نہ اُسکے ٹکڑے ھونگے . لیکن اگر کبھی ھمارے گجراتی بولنے والے اور مراٹھی بولنے والے بھائی اپنی اپنی ماں بولیوں کے انوچت موہ یا بیجا طرفداری میں آ کر اِس بات پر لڑ جائیں کہ بمبئی شہر مہاراشٹر کے ساتھ یا جائے یا گجرات کے اُسکے ٹکڑے کئے جاویں تو یہ اپنی بھاشاؤں کی اُنت کرنا نہیں ھوگا، یہ ھوگا سارے دیش کا رخ اُنتی کی اور سے ھٹا کر اونتی کی اور موڑنا اور دیش کو بربادی کی طرف لے جانا .

ایسے ھی اگر پرانتوں کے بھاشا وار بٹوار سلسلے میں یہ سوال جھگڑے کی جڑ بن جاویں کہ کون ضلع یا

प्रान्तों के बंटवारे के असूल को मान चुकी है. इसी असूल को मान कर सरकार इस से पहले भी यह एलान कर चुकी थी कि आन्ध्र को बाक़ी मदरास से अलग कर दिया जायगा. आन्ध्र के लोगों में और मदरास प्रदेश के बाक़ी लोगों में, आन्ध्र के लोगों में और सरकार में झगड़ा इस बात पर नहीं था. झगड़ा कुछ ऐसे इलाक़ों के बारे में था जिन की कुछ आबादी तैलिगू बोलने वालों की है और कुछ तमिल बोलने वालों की. ख़ास कर झगड़ा यह था और यह झगड़ा अभी तक बाक़ी है कि मदरास शहर को, जो तैलिगु इलाक़े दोनों के बीच में है, और जिस में लगभग अड़सठ फ़ी सदी आबादी तमिल बोलने वालों की और सोलह फ़ी सदी तैलिगु बोलने वालों की बताई जाती है, किधर रखा जाय.

तमिल बोलने वाले चाहते हैं कि अगर आन्ध्र को अलग किया ही जाय तो आबादी के बहुमत के कारन मदरास शहर तमिल के साथ रहे. आन्ध्र नेताओं में दो दल हैं. एक कहते हैं कि मदरास शहर आन्ध्र में मिलाया जाय. उनकी दलीलों में जाने की हमें ज़रूरत नहीं है. दूसरे कहते हैं कि मदरास दोनों में से किसी को न दिया जाय, उसे एक अलग कमिश्नरी सूबा बना दिया जाय. इसी तरह के कुछ और तफ़सीली झगड़े भी अभी हैं. इस लिये नए सरकारी कमीशन का काम इतना आसान नहीं है. आन्ध्र आन्दोलन अभी जारी है.

यह ठीक है कि किसी भी देश या प्रदेश के बच्चों की तालीम जितनी अच्छी तरह उनकी अपनी माबोली में दी जा सकती है उतनी किसी दूसरी बोली में नहीं दी जा सकती. यह भी ठीक है कि हर इलाक़े का अदालती और दफ़्तरी काम जहां तक हो सके वहीं की बोली में होना चाहिये. इसी लिये कांगरेस ने भाशावार प्रान्तों के बंटवारे के असूल को माना था. पर यह बिलकुल ग़लत है कि किसी भाशा की उन्नति के लिये उस भाशा के बोलने वालों का एक अलग प्रान्त या अलग राज होना ज़रूरी है. यह भी ग़लत है कि कोई भाशा अपने एक भाशी प्रान्त में जितनी उन्नति कर सकती है उतनी या उस से भी अधिक दो या दो से भी अधिक भाशाओं वाले प्रान्तों में रह कर नहीं कर सकती. जिन जगहों में कई कई बोलियां बोली जाती हैं वहां बच्चे आम तौर पर शुरू से दो दो और तीन तीन बोलियां बहुत आसानी के साथ और एक सी रवानी के साथ एक साथ बोलने और समझने लगते हैं. कलकत्ता, मदरास, बम्बई, बंगलोर, हैदराबाद और पंजाब जैसी जगहों में अब भी लाखों के पढ़े आदमी कई कई भाशाएं आसानी से और अच्छी तरह बोलते समझते हैं. किसी भाशा की उन्नति और उस के विकास के लिये भाशावार प्रान्त का होना उतना ज़रूरी नहीं है जितना देश में अमन, एकता,

پرانتوں کے بٹوارے کے اصول کو مان چکی ہے ۔ اسی اصول کو مان کر سرکار اس سے پہلے بھی یہ اعلان کر چکی تھی کہ آندھر کو باقی مدراس سے الگ کر دیا جائے گا ۔ آندھر کے لوگوں میں اور مدراس پردیش کے باقی لوگوں میں، آندھر کے لوگوں میں اور سرکار میں جھگڑا اس بات پر نہیں تھا ۔ جھگڑا کچھ ایسے علاقوں کے بارے میں تھا جن کی کچھ آبادی تیلگو بولنے والوں کی ہے اور کچھ تمل بولنے والوں کی۔ خاص کر جھگڑا یہ تھا اور یہ جھگڑا ابھی تک باقی ہے کہ مدراس شہر کو، جو تیلگو علاقے اور تمل علاقے دونوں کے بیچ میں ہے اور جس میں لگ بھگ اڑسٹھ فیصدی آبادی تمل بولنے والوں کی اور سولہ فیصدی تیلگو بولنے والوں کی بتائی جاتی ہے، کدھر رکھا جائے ۔

تمل بولنے والے چاہتے ہیں کہ اگر آندھر کو الگ کیا ہی جائے تو آبادی کے بہومت کے کارن مدراس شہر تمل کے ساتھ رہے ۔ آندھر نیتاؤں میں دو دل ہیں ۔ ایک کہتے ہیں کہ مدراس شہر آندھر میں ملایا جائے ۔ ان کی دلیلوں میں جانے کی ہمیں ضرورت نہیں ہے ۔ دوسرے کہتے ہیں کہ مدراس دونوں میں سے کسی کو نہ دیا جائے، اسے ایک الگ کمشنری صوبہ بنا دیا جائے ۔ اسی طرح کے کچھ اور تفصیلی جھگڑے بھی ابھی ہیں۔ اسلئے نئے سرکاری کمیشن کا کام اتنا آسان نہیں ہے ۔ آندھر آندولن ابھی جاری ہے ۔

یہ ٹھیک ہے کہ کسی بھی دیش یا پردیش کے بچوں کی تعلیم جتنی اچھی طرح ان کی اپنی ماں بولی میں دی جا سکتی ہے اتنی کسی دوسری بولی میں نہیں دی جا سکتی ۔ یہ بھی ٹھیک ہے کہ ہر علاقے کا عدالتی اور دفتری کام جہاں تک ہو سکے وہیں کی بولی میں ہونا چاہئے ۔ اسی لئے کانگریس نے بھاشا وار پرانتوں کے بٹوارے کے اصول کو مانا تھا ۔ یہ بالکل غلط ہے کہ کسی بھاشا کی اُنتی کے اس بھاشا کے لئے بولنے والوں کا ایک الگ پرانت یا الگ راج ہونا ضروری ہے ۔ یہ بھی غلط ہے کہ کوئی بھاشا اپنے ایک بھاشی پرانت میں جتنی اُنتی کر سکتی ہے اتنی یا اس سے بھی ادھک دو یا دو سے بھی ادھک بھاشاؤں والے پرانتوں میں رہ کر نہیں کر سکتی ۔ جن جگہوں میں کئی کئی بولیاں بولی جاتی ہیں وہاں بچے عام طور پر شروع سے دو دو اور تین تین بولیاں بہت آسانی کے ساتھ اور ایک سی روانی کے ساتھ ایک ساتھ بولنے اور سمجھنے لگتے ہیں ۔ کلکتہ، مدراس، بمبئی، بنگلور، حیدرآباد اور پنجاب جیسی جگہوں میں اب بھی لاکھوں پڑھے آدمی کئی کئی بھاشائیں آسانی سے اور اچھی طرح بولتے سمجھتے ہیں ۔ کسی بھاشا کی اُنتی اور اسکے وکاس کے لئے بھاشا وار پرانت کا ہونا اتنا ضروری نہیں ہے جتنا دیش میں امن، ایکتا،

उन्हें सब मिल कर हल करें, चर्खे पर हाथ से सूत कतवाने और उस सूत से कपड़ा बुनने की तरफ़ ज़ियादे से ज़ियादे ध्यान दें ताकि कम से कम सूती कपड़ों में वह बहुत दरजे तक मिलों की ग़ुलामी से बच जायें, सरकार को जाने वाले मेमोरेन्डम पर सूबे भर के अठारह साल से ऊपर उमर के बुनकरों के ज़ियादा से ज़ियादा दस्तख़त या अंगूठों के निशान हासिल करें, 7 जनवरी को अमन, एकता और पूरी सरगरमी के साथ अपनी मांग का दिन मनावें, और उसके बाद बनारस कानफ़रेन्स के फ़ैसले के मुताबिक़ 19 जनवरी से 26 जनवरी तक "हैन्डलूम हफ़्ता" मनावें जिस में फेरी लगा कर और दूसरे तरीक़ों से अपने करघों के बने कपड़े की ज़ियादा से ज़ियादा बिकरी की कोशिश करें.

उत्तरप्रदेश के सब भाइयों और बहनों से मेरी अपील है कि वह इस नेक और ज़रूरी काम में अपनी पूरी शक्ति भर और हर तरह मदद दें. अगर इस नाज़ुक समय में हम सब ने मिल कर अपनी माली और रोज़गारी मुसीबतों को हल न किया तो हमारी अधूरी राजकाजी आज़ादी भी धोके की और चन्दरोज़ा साबित होगी. हम सबका ईश्वर अल्लाह हमें शक्ति दे कि हम हिम्मत के साथ इस समय की मुसीबतों को पार कर सकें और सब मिल कर देश को सच्ची तरक़्क़ी, ख़ुशहाली और बहबूदी की तरफ़ ले जा सकें!

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद
12. 12.52

—सुन्दरलाल
सदर, यू० पी० बुनकर फ़ेडरेशन

اُنھیں سب مل کر حل کریں' چرخے پر ہاتھ سے سوت کتوانے اور اُس سوت سے کپڑا بننے کی طرف زیادہ سے زیادہ دھیان دیں تاکہ کم از کم سوتی کپڑوں میں وہ بہت درجے تک ملوں کی غلامی سے بچ جائیں' سرکار کو جانے والے میمورنڈم پر صوبے بھر کے اٹھارہ سال سے اوپر عمر کے بنکروں کے زیادہ سے زیادہ دستخط یا انگوٹھوں کے نشان حاصل کریں' 7 جنوری کو امن' ایکتا اور پوری سرگرمی کے ساتھ اپنی مانگ کا دن منائیں' اور اُس کے بعد بنارس کانفرنس کے فیصلے کے مطابق 19 جنوری سے 26 جنوری تک "ہینڈلوم ہفتہ" منائیں جس میں پھیری لگا کر اور دوسرے طریقوں سے اپنے کرگھوں کے بنے کپڑوں کی زیادہ سے زیادہ بکری کی کوشش کریں۔

اُتر پردیش کے سب بھائیوں اور بہنوں سے میری اپیل ہے کہ وہ اِس نیک اور ضروری کام میں اپنی پوری شکتی بھر اور ہر طرح مدد دیں۔ اگر اس نازک سمے میں ہم سب نے مل کر اپنی مالی اور روزگاری مصیبتوں کو حل نہ کیا تو ہماری ادھوری راجکاجی آزادی بھی دھوکے کی اور چند روزہ ثابت ہوگی۔ ہم سب کا ایشور اللہ ہمیں شکتی دے کہ ہم ہمت کے ساتھ اس سمے کی مصیبتوں کو پار کرسکیں اور سب مل کر دیش کو سچی ترقی' خوشحالی اور بہبودی کی طرف لے جا سکیں!

145' متھی گنج
الہ آباد
12-12-'52

سندرلال
صدر' یو۔ پی۔ بنکر فیڈریشن

श्री रामुलू का शरीर त्याग और भाशावार प्रान्तों का बंटवारा

श्री पोट्टि श्री रामुलू आन्ध्र के रहने वाले इस देश के सच्चे और निस्वार्थ काम करने वालों में से थे. अट्ठावन दिन के उपवास के बाद 15 दिसम्बर सन '52 की रात को मदरास में उन्होंने शरीर छोड़ा. उन की मौत ने देश में और ख़ास कर मदरास प्रदेश में एक ख़ासी हलचल पैदा कर दी. उन के उपवास की ग़रज़ थी देश पर और सरकार पर इस बात के लिये दबाव डालना कि आन्ध्र यानी उस इलाक़े को जहां तैलिगु बोली जाती है बाक़ी मदरास प्रदेश से काट कर एक अलग प्रान्त बना दिया जाय. उनके मरने के बाद दिल्ली सरकार की तरफ़ से पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एलान कर दिया है कि आन्ध्र एक अलग प्रान्त बना दिया जायगा. इस काम के लिये सरकार ने एक हाई कोर्ट जज का एक कमीशन भी नियुक्त कर दिया है.

आन्ध्र के एक अलग प्रान्त बनाए जाने का आन्दोलन चालीस बरस से ऊपर का आन्दोलन है. कांगरेस भाशावार

شری راملو کا شریر تیاگ اور بھاشا وار پرانتوں کا بٹوارا

شری پوٹی شری راملو آندھر کے رہنے والے اِس دیش کے سچے اور نسوارتھ کام کرنے والوں میں سے تھے۔ اٹھاون دن کے اپواس کے بعد 15 دسمبر سن '52 کی رات کو مدراس میں اُنھوں نے شریر چھوڑا۔ اُن کی موت نے دیش میں اور خاص کر مدراس پردیش میں ایک خاصی ہل چل پیدا کر دی۔ اِن کے اپواس کی غرض تھی۔ دیش پر اور سرکار پر اِس بات کے لئے دباؤ ڈالنا کہ آندھر یعنی اُس علاقے کو جہاں تیلگو بولی جاتی ہے باقی مدراس پردیش سے کاٹ کر ایک الگ پرانت بنا دیا جائے۔ اُن کے مرنے کے بعد دلی سرکار کی طرف سے پنڈت جواہرلال نہرو نے اعلان کر دیا ہے کہ آندھر ایک الگ پرانت بنا دیا جائے گا۔ اِس کام کے لئے سرکار نے ایک ہائی کورٹ جج کا ایک کمیشن بھی نیکت کر دیا ہے۔

آندھر کے ایک الگ پرانت بنائے جانے کا آندولن چالیس برس سے اوپر کا آندولن ہے۔ کانگریس بھاشا وار

तक अब वह कहते हुए नहीं शरमाते कि अमुक विदेशी चीज़ वह इसलिये काम में लाते हैं, क्योंकि उसके मुक़ाबले की देश की बनी चीज़ इतनी साफ़ सुथरी नहीं होती. हमें स्वदेशी के उस पुराने पाठ को फिर से दोहराना होगा.

सबसे पहले हमारे सब बुनकर भाइयों और बहनों का फ़र्ज़ है कि वह अपने रोज़मर्रा के बरतने में और ख़ुशी ग़मी के सब मौक़ों पर सिवाय अपने या अपने बुनकर भाइयों के करघों के बने कपड़े के और कोई कपड़ा काम में न लावें. हिन्दू बुनकरों और मुसलिम बुनकरों दोनों को इसे अपना धार्मिक और दीनी फ़र्ज़ समझ कर इस पर अमल करना चाहिये. बुनकर भाइयों का यह भी फ़र्ज़ है कि वह अपने जूते, बरतन और दूसरी सब चीज़ों के ख़रीदने में भी जहां तक हो सके अपने देशी कारीगरों के हाथ की बनी चीजें ही ख़रीदें और उन्हीं को बरतें. हम सब एक दूसरे के धन्दे को बचाने की कोशिश करेंगे तभी हम सब बच सकते हैं.

देश की सारी जनता का यह फ़र्ज है कि वह देशी मिलों के कपड़ों या विदेशी कपड़ों का इस्तेमाल बन्द कर के जहां तक हो सके अपनी सारी कपड़े की ज़रूरतों को देशी करघों के बने कपड़ों से पूरा करे. इसमें कुछ पैसा अधिक भी ख़र्च करना पड़े तो कोई हर्ज नहीं. ख़ास कर अमरीका की बनी रेमशी साड़ियों और अमरीकी रेशमी कपड़ों का बेचना, ख़रीदना और बरतना तीनों को हमें पाप समझना चाहिये. आए दिन की अपनी और सब ज़रूरतों के सम्बन्ध में भी हमें स्वदेशी के असूल और अपने देश के धन्दों को ज़िन्दा रखने के इस असूल पर अमल करना चाहिये, चाहे इसमें थोड़ी तकलीफ़ और ज़ेरबारी भी क्यों न उठानी पड़े.

साथ ही देश की जनता को अपने राजकाजी अधिकारों और अपनी शक्ति को भी पूरी तरह समझना चाहिये, और हर जायज़ और अहिंसात्मक तरीक़े से या तो सरकार को अपनी मांग पूरी करने पर मजबूर करना चाहिये और या मौक़ा आने पर इस सरकार की जगह ऐसी सरकार क़ायम करना चाहिये जो देश की जनता के सच्चे नफ़े नुक़सान को समझ सके और जनता की राय के मुताबिक़ चल सके.

आख़ीर में देश के और ख़ास कर उत्तरप्रदेश के बुनकर भाइयों का फ़र्ज़ है कि वह अपने संगठन को मज़बूत करें, जिन जिन ज़िलों में बुनकरों की काफ़ी तादाद है उनमें अपनी यूनियन, सभा या ऐसोसिएशन बनायें. इस तरह की जितनी बुनकर संस्थाएं सूबे में मौजूद हैं या जो नई बनें, वह सब यू० पी० बुनकर फ़ेडरेशन के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ लें, सूत ख़रीद, माल की बिकरी, तरह तरह के टैक्स और रेलवे वग़ैरा में दिन रात बुनकरों को जो दिक़्क़तें होती हैं

تک اب یہ کہتے ہوئے نہیں شرماتے کہ امک ودیشی چیز وہ اس لئے کام میں لاتے ہیں کیونکہ اس کے مقابلے کی دیش کی بنی چیز اتنی صاف ستھری نہیں ہوتی. ہمیں سودیشی کے اس پرانے پاٹھ کو پھر سے دہرانا ہوگا.

سب سے پہلے ہمارے سب بنکر بھائیوں اور بہنوں کا فرض ہے کہ وہ اپنے روزمرہ کے برتنے میں اور خوشی غمی کے سب موقعوں پر سوائے اپنے یا اپنے بنکر بھائیوں کے کرگھوں کے بنے کپڑے کے اور کوئی کپڑا کام میں نہ لاویں. ہندو بنکروں اور مسلم بنکروں دونوں کو اسے اپنا دھارمک اور دینی فرض سمجھ کر اس پر عمل کرنا چاہئے. بنکر بھائیوں کا یہ بھی فرض ہے کہ وہ اپنے جوتے، برتن اور دوسری سب چیزوں کے خریدنے میں بھی جہاں تک ہو سکے اپنے دیشی کاریگروں کے ہاتھ کی بنی چیزیں ہی خریدیں اور انہیں کو برتیں. ہم سب ایک دوسرے کے دھندے کو بچانے کی کوشش کرینگے تبھی ہم سب بچ سکتے ہیں.

دیش کی ساری جنتا کا یہ فرض ہے کہ وہ دیشی ملوں کے کپڑوں یا ودیشی کپڑوں کا استعمال بند کرکے جہاں تک ہوسکے اپنی ساری کپڑے کی ضرورتوں کو دیشی کرگھوں کے بنے کپڑوں سے پورا کرے. اس میں کچھ پیسہ ادھک بھی خرچ کرنا پڑے تو کوئی حرج نہیں. خاص کر امریکہ کی بنی ریشمی ساڑیوں اور امریکی ریشمی کپڑوں کا بیچنا، خریدنا اور برتنا تینوں کو ہمیں پاپ سمجھنا چاہئے. آئے دن کی اپنی اور سب ضرورتوں کے سمبندھ میں بھی ہمیں سودیشی کے اصول اور اپنے دیش کے دھندوں کو زندہ رکھنے کے اس اصول پر عمل کرنا چاہئے، چاہے اس میں تھوڑی تکلیف اور زیرباری بھی کیوں نہ اٹھانی پڑے.

ساتھ ہی دیش کی جنتا کو اپنے راجکاجی ادھیکاروں اور اپنی شکتی کو بھی پوری طرح سمجھنا چاہئے، اور ہر جائز اور اہنساتمک طریقے سے یا تو سرکار کو اپنی مانگ پوری کرنے پر مجبور کرنا چاہئے اور یا موقع آنے پر اس سرکار کی جگہ ایسی سرکار قائم کرنا چاہئے جو دیش کی جنتا کے سچے نفع نقصان کو سمجھ سکے اور جنتا کی رائے کے مطابق چل سکے.

آخیر میں دیش کے اور خاص کر اتر پردیش کے بنکر بھائیوں کا فرض ہے کہ وہ اپنے سنگھٹن کو مضبوط کریں، جن جن ضلعوں میں بنکروں کی کافی تعداد ہے ان میں اپنی یونین، سبھا یا ایسوسی ایشن بناویں. اس طرح کی جتنی بنکر سنستھائیں صوبے میں موجود ہیں یا جو نئی بنیں، وہ سب یو. پی. بنکر فیڈریشن کے ساتھ اپنا سمبندھ جوڑ لیں، سوت خرید، مال کی بکری، طرح طرح کے ٹیکس اور ریلوے وغیرہ میں دن رات بنکروں کو جو دقتیں ہوتی ہیں

पड़े हैं. उनके होशियार कारीगर जिन पर इस सूबे को और सारे देश को घमंड था, कुछ रिक्शा चला कर अपने बच्चों को पालने की कोशिश कर रहे हैं, कुछ मजदूरी की तलाश में बम्बई और दूसरे शहरों को निकल गए हैं और जो हज़ारों अभी बनारस में मौजूद हैं, उनकी यह हालत है कि उनके घरों में हफ़्ते में मुश्किल से दो या तीन दिन चूल्हा जलता है. नन्हे नन्हे बच्चों को फ़ाक़ों पर फ़ाक़े गुज़र रहे हैं. झोपड़ियों की छतें गिर गई हैं, दरवाज़े टूट गए हैं, लेकिन पैसा नहीं कि मरम्मत करा सकें. मैंने यह हालत और इससे कहीं बदतर हालत जिसे बयान कर सकना नामुमकिन है, पचासों घरों में घुस घुस कर देखी है. बनारस की यह पुरानी कारीगरी मिट रही है.

हमारी सरकार अगर चाहती तो यह हालत एक दिन में दुरुस्त हो सकती थी. वह चाहती तो यह नौबत ही न आती. लेकिन सरकार का ढंग कुछ दूसरा ही दिखाई दे रहा है. श्री राजगोपालाचारी ने चाहा था कि ख़ास नम्बर तक के सूत की धोतियां और साड़ियां बुनने से मिलों को रोक दिया जावे और यह काम देश के करघों के लिये छोड़ दिया जावे ताकि यह करोड़ों की आबादी बेकारी और भूक से बच जावे. लेकिन इससे मिलों के मुनाफ़े में कुछ कमी आती. दिल्ली सरकार को यह बात पसन्द न आई. बनारसी साड़ियों में जो रेशम काम में आता था वह ज़ियादा तर जापान और इटली से आता था. हमारी सरकार ने उस रेशम के मुल्क में आने पर इतना भारी टैक्स लगा दिया जिससे कि बनारस की साड़ियां मंहगी पड़ने लगीं. दूसरी तरफ़ बनारसी साड़ियों की टक्कर की पहले कोई चीज़ बाहर से नहीं आती थी. अब अमरीका की बनी उसी तरह की रेशमी साड़ियां खुले बन्दों देश में आ रही हैं और सस्ते दामों बिक रही हैं. उन पर कोई रोक टोक नहीं. बनारस के बुनकर उनसे सस्ता नहीं बेच सकते. शक होने लगता है कि हमारे देश में किस का राज है, अमरीकी पूंजीपतियों और उनके हिस्सेदार कुछ हिन्दुस्तानी पूंजीपतियों का या इस देश के नुमाइन्दों का ! फिर भी 6 और 7 दिसम्बर सन '52 की बनारस की यू० पी० बुनकर कानफ़रेन्स ने दिल्ली सरकार और उत्तरप्रदेश की सरकार, दोनों के पास एक मेमोरेन्डम या प्रार्थनापत्र भेजा है जिसमें बताया गया है कि किस किस तरह सरकार देश के इस इतने बड़े धन्धे को अब भी बरबादी से बचा सकती है और करोड़ों देशवासियों को फिर से काम पर लगा सकती है.

पर इस समय सबसे बड़ा सवाल यह है कि देश की जनता और ख़ुद हमारे बुनकर भाई इस बारे में क्या करें ? चालीस बरस से ऊपर तक स्वदेशी का जी क़ीमती पाठ हम पढ़ते रहे, उसे यह अधूरी आज़ादी पाते ही हमने एक दम भुला दिया. धारा सभाओं के अन्दर हमारे मिनिस्टर

پڑے ہیں ۔ اُن کے ہوشیار کاریگر جن پر اس صوبے کو اور سارے دیش کو گھمنڈ تھا' کچھ رکشا چلا کر اپنے بچوں کو پالنے کی کوشش کر رہے ہیں' کچھ مزدوری کی تلاش میں بمبئی اور دوسرے شہروں کو نکل گئے ہیں اور جو ہزاروں ابھی بنارس میں موجود ہیں' اُن کی یہ حالت ہے کہ اُن کے گھروں میں ہفتے میں مشکل سے دو یا تین دن چولہا جلتا ہے ۔ ننھے ننھے بچوں کو فاقوں پر فاقے گذر رہے ہیں ۔ جھونپڑیوں کی چھتیں گر گئی ہیں' دروازے ٹوٹ گئے ہیں' لیکن پیسہ نہیں کہ مرمت کرا سکیں. میں نے یہ حالت اور اِس سے کہیں بدتر حالت' جسے بیان کرسکنا ناممکن ہے' پچاسوں گھروں میں گھس گھس کر دیکھی ہے ۔ بنارس کی یہ پرانی کاریگری مٹ رہی ہے ۔

ہماری سرکار اگر چاہتی تو یہ حالت ایک دن میں درست ہوسکتی تھی ۔ وہ چاہتی تو یہ نوبت ہی نہ آتی ۔ لیکن سرکار کا ڈھنگ کچھ دوسرا ہی دکھائی دے رہا ہے ۔ شری راج گوپالا چاری نے چاہا تھا کہ خاص نمبر تک کے سوت کی دھوتیاں اور ساڑیاں بننے سے ملوں کو روک دیا جاوے اور یہ کام دیش کے کرگھوں کے لئے چھوڑ دیا جاوے تاکہ یہ کروڑوں کی آبادی بیکاری اور بھوک سے بچ جاوے ۔ لیکن اِس سے ملوں کے منافعے میں کچھ کمی آتی ۔ دلی سرکار کو یہ بات پسند نہ آئی ۔ بنارسی ساڑیوں میں جو ریشم کام میں آتا تھا وہ زیادہ‌تر جاپان اور اٹلی سے آتا تھا ۔ ہماری سرکارنے اُس ریشم کے ملک میں آنے پر بھاری ٹیکس لگا دیا جس سے کہ بنارس کی ساڑیاں مہنگی پڑنے لگیں ۔ دوسری طرف بنارسی ساڑیوں کی ٹکر کی پہلے کوئی چیز باہر سے نہیں آتی تھی ۔ اب امریکہ کی بنی اُسی طرح کی ریشمی ساڑیاں کھلے بندوں دیش میں آ رہی ہیں اور سستے داموں بک رہی ہیں ۔ اُن پر کوئی روک ٹوک نہیں ۔ بنارس کے بنکر اُن سے سستا نہیں بیچ سکتے ۔ شک ہونے لگتا ہے کہ ہمارے دیش میں کس کا راج ہے' امریکی پونجی پتیوں اور اُن کے حصےدار کچھ ہندستانی پونجی پتیوں کا یا اِس دیش کے نمائندوں کا ! پھر بھی 6 اور 7 دسمبر سن '52 کی بنارس کی یو ۔ پی ۔ بنکر کانفرنس نے دلی سرکار اور اُتر پردیش کی سرکار' دونوں کے پاس ایک میمورنڈم یا پرارتھنا پتر بھیجا ہے جس میں بتایا گیا ہے کہ کس کس طرح سرکار دیش کے اِس اتنے بڑے دھندے کو اب بھی بربادی سے بچا سکتی ہے اور کروڑوں دیش واسیوں کو پھر سے کام پر لگا سکتی ہے۔

پر اِس سمے سب سے بڑا سوال یہ ہے کہ دیش کی جنتا اور خود ہمارے بنکر بھائی اِس بارے میں کیا کریں ؟ چالیس برس سے اُوپر تک سودیشی کا جو قیمتی پاٹھ ہم پڑھتے رہے' اُسے یہ ادھوری آزادی پاتے ہی ہم نے ایک دم بھلا دیا ۔ دھارا سبھاؤں کے اندر ہمارے منسٹر

हमारे घरेलू धन्दों की बरबादी—
एक अपील

हमारे देश को इस समय एक बहुत गहरे संकट का सामना करना पड़ रहा है. एक एक कर के देश के लगभग सब धन्दे और सब रोज़गार तेज़ी से मिटते जा रहे हैं. चारों तरफ़ बेकारी बढ़ रही है और बेकारों की तादाद करोड़ों तक पहुँच गई है. यहां मैं केवल कपड़े के धन्दे की बात करना चाहता हूँ.

हाल में मदरास के बड़े वज़ीर श्री राजगोपालाचारी ने दुनिया को बताया था कि वहां पर बुनकर भाइयों का धन्दा क़रीब क़रीब ठप हो गया है जिसकी वजह से अकेले मदरास प्रदेश में 50 लाख से ऊपर लोगों पर, जो इस धन्दे में लगे हुए थे, फ़ाक़े की नौबत आ गई है. हमारे सूबे उत्तरप्रदेश में कुल लगभग तीन लाख करघे हैं जिनमें आठ लाख कारीगर काम करते हैं. इस काम से कम से कम चालीस लाख मर्द, औरत और बच्चों का पेट पलता है. आज इन चालीस लाख में से अधिकतर सख़्त मुसीबत और परेशानी में हैं. यही हालत और सब सूबों की है.

6 दिसम्बर से 9 दिसम्बर तक मुझे बनारस में रह कर वहां के बुनकरों की हालत देखने का मौक़ा मिला. बनारस की रेशमी साड़ियों की दस्तकारी वह बढ़िया और सुन्दर दस्तकारी है जिस पर सारे हिन्दुस्तान को हज़ारों बरस से नाज़ रहा है. ज़री का काम वहां बहुत होता है. वहां के कारीगरों में इतना एका है कि अगर कोई कारीगर झूटी ज़री लगाते हुए पकड़ा जाय तो उसका बिरादरी में हुक़्क़ा पानी और ब्याह शादी तक बन्द कर दिया जाता है. नतीजा यह है कि बनारसी साड़ियों का काम सदियों से टकसाली काम रहा है जिसे गाहक आंख बन्द कर के ख़रीद सकता है. बनारस की इस दस्तकारी को डेढ़ सौ बरस के अंगरेज़ी राज में भी कोई नुक़सान नहीं पहुँचा और यह बराबर फलती-फूलती रही. लेकिन आज बनारस के लगभग पांच हज़ार करघों में से क़रीब क़रीब चार हज़ार बन्द

ہمارے گھریلو دھندوں کی بربادی۔
ایک اپیل

ہمارے دیش کو اس سمے ایک بہت گہرے سنکٹ کا سامنا کرنا پڑ رہا ہے۔ ایک ایک کرکے دیش کے لگ بھگ سب دھندے اور سب روزگار تیزی سے مٹتے جا رہے ہیں۔ چاروں طرف بیکاری بڑھ رہی ہے اور بیکاروں کی تعداد کروڑوں تک پہونچ گئی ہے۔ یہاں میں کیول کپڑے کے دھندے کی بات کرنا چاہتا ہوں۔

حال میں مدراس کے بڑے وزیر شری راج گوپالاچاری نے دنیا کو بتایا تھا کہ وہاں پر بنکر بھائیوں کا دھندہ قریب قریب ٹھپ ہو گیا ہے جس کی وجہ سے اکیلے مدراس پردیش میں 50 لاکھ سے اوپر لوگوں پر، جو اس دھندے میں لگے ہوئے تھے، فاقے کی نوبت آ گئی ہے۔ ہمارے صوبے اتر پردیش میں کل لگ بھگ تین لاکھ کرگھے ہیں جن میں آٹھ لاکھ کاریگر کام کرتے ہیں۔ اس کام سے کم سے کم چالیس لاکھ مرد، عورت اور بچوں کا پیٹ پلتا ہے۔ آج ان چالیس لاکھ میں سے ادھک تر سخت مصیبت اور پریشانی میں ہیں۔ یہی حالت اور سب صوبوں کی ہے۔

6 دسمبر سے 9 دسمبر تک مجھے بنارس میں رہ کر وہاں کے بنکروں کی حالت دیکھنے کا موقع ملا۔ بنارس کی ریشمی ساڑیوں کی دستکاری وہ بڑھیا اور سندر دستکاری ہے جس پر سارے ہندوستان کو ہزاروں برس سے ناز رہا ہے۔ زری کا کام وہاں بہت ہوتا ہے۔ وہاں کاریگروں میں اتنا ایکا ہے کہ اگر کوئی کاریگر جھوٹی زری لگاتے ہوئے پکڑا جائے تو اس کا برادری میں حقہ پانی اور بیاہ شادی تک بند کر دیا جاتا ہے۔ نتیجہ یہ ہے کہ بنارسی ساڑیوں کا کام صدیوں سے ٹکسالی کام رہا ہے جسے گاہک آنکھ بند کرکے خرید سکتا ہے۔ بنارس کی اس دستکاری کو ڈیڑھ سو برس کے انگریزی راج میں بھی کوئی نقصان نہیں پہونچا اور یہ برابر پھلتی پھولتی رہی۔ لیکن آج بنارس کے لگ بھگ پانچ ہزار کرگھوں میں سے قریب قریب چار ہزار بند

और राजनीति के बारे में राष्ट्रीय साहित्य देते चले आ रहे हैं. आज़ादी के बाद से उनकी राष्ट्रीयता ने सर्वोदय विचार धारा का बाना पहना और अपने गहरे चिन्तन व पुराने अनुभव के बल पर उन्होंने लगभग एक बरस हुआ "सर्वोदय अर्थशास्त्र" नाम की एक अनोखी रचना देश को दी जो अपने ढंग की लासानी किताब है.

अर्थशास्त्र के बाद केला जी राजनीति की तरफ़ झुकते मालूम होते हैं और इस छोटी सी किताब से पता चलता है कि वह इस दिशा में भी कोई बड़ी देन देना चाहते हैं जिस के लिये यह किताब भूमिका रूप जैसी मालूम पड़ती है. इस किताब में केला जी ने ज़ोरदार अपील की है कि हमारे राजकाज को सर्वोदय के उसूल पर बदल देना चाहिये.

हमें उम्मीद है कि राजनीति से दिलचस्पी रखने वाले विद्यार्थी, शिक्षक और नेतागन इस पुस्तक से पूरा पूरा फ़ायदा उठायेंगे.

× × ×

झाडू (मश्रूवाला स्मृति नम्बर)

अक्तूबर-नवम्बर 1952; सम्पादक—नवरंग प्रसाद जायसवाल और गोपाल कृष्ण मलिक; निकालने वाले—विद्यापति भवन, ख़ज़ान्ची रोड, पटना; सालाना चंदा पांच रुपये; इस नम्बर का एक रुपया.

आचार्य किशोरलाल घनश्यामलाल मश्रूवाला हमारे देश के उनके चोटी के विचारकों और सोचने वालों में थे जिनकी कसौटी में हर किसी को विश्वास था. वह मानो एक हमेशा जागते रहने वाले चौकीदार थे जो हिंसा या केन्द्रीकरन की आहट पाते ही सब को चौकन्ना कर देते थे. लेकिन वह साथ ही साथ इतने नम्र और संकोची थे कि उनके बारे में ज़ियादा जानकारी लोगों को हो ही नहीं पाई.

इसलिये हम "झाडू" के इस नम्बर का स्वागत करते हैं जिससे मश्रूवाला जी जैसे छिपे हुए हीरे के जुदा जुदा पहलुओं पर कुछ रोशनी पड़ती है. इस में आचार्य विनोबा, काका कालेलकर, श्री श्रीकृष्ण दास जाजू, श्री केदार नाथ, पंडित सुन्दरलाल, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, श्रीमती जानकी देवी बजाज वग़ैरा के सुन्दर लेख हैं. पर ताज्जुब की बात है कि पूज्य किशोरलाल भाई की जन्म से लेकर मृत्यु तक पूरी जीवन कहानी कहने वाला एक लेख भी नहीं है जो बहुत खटकता है. फिर भी "झाडू" के सम्पादकों को हम बधाई देते हैं कि इतना कम समय रहते हुए उन्होंने इतना सुन्दर नम्बर निकाला. हमें विश्वास है कि क्या रचनात्मक कार्यकर्ता और क्या हिन्दी प्रेमी दोनों इससे फ़ायदा उठायेंगे और "झाडू" को ज़ियादा से ज़ियादा सेवा करने के लिये प्रोत्साहन देंगे.

—सुरेश रामभाई

اور راج نیت کے بارے میں راشٹریہ ساہتیہ دیتے چلے آ رہے ہیں . آزادی کے بعد سے اُن کی راشٹریتا نے سروودے وچار دھارا کا بانا پہنا اور اپنے گہرے چنتن و پرانے انوبھو کے بل پر انہوں نے لگ بھگ ایک برس ہوا "سروودے ارتھ شاستر" نام کی ایک انوکھی رچنا دیش کو دی جو اپنے ڈھنگ کی لاثانی کتاب ہے .

ارتھ شاستر کے بعد کیلا جی راج نیت کی طرف جھکتے معلوم ہوتے ہیں اور اس چھوٹی سی کتاب سے پتہ چلتا ہے کہ وہ اس دشا میں بھی کوئی بڑی دین دینا چاہتے ہیں جس کے لئے یہ کتاب بھومکا روپ جیسی معلوم پڑتی ہے . اس کتاب میں کیلا جی نے زوردار اپیل کی ہے کہ ہمارے راجکاج کو سروودے کے اصول پر بدل دینا چاہئے .

ہمیں اُمید ہے کہ راج نیت سے دلچسپی رکھنے والے ودیارتھی، شکشک اور نیتا گن اس پستک سے پورا فائدہ اُٹھائیں گے .

× × ×

جھاڑو (مشروالا اِسمرتی نمبر)

اکتوبر-نومبر 1952؛ سمپادک—نورنگ پرشاد جائسوال اور گوپال کرشن ملک؛ نکالنے والے—ودیاپتی بھون، خزانچی روڈ، پٹنہ؛ سالانہ چندہ پانچ روپیہ؛ اس نمبر کا ایک روپیہ .

آچاریہ کشور لال گھن شیام لال مشروالا ہمارے دیش کے اُن چوٹی کے وچارکوں اور سوچنے والوں میں تھے جنکی کسوٹی میں ہر کسی کو وشواس تھا. وہ مانو ایک ہمیشہ جاگتے رہنے والے چوکیدار تھے. جو ہنسا یا کیندری کرن کی آہٹ پاتے ہی سب کو چوکنا کردیتے تھے . لیکن وہ ساتھ ہی ساتھ اتنے نمر اور سنکوچی تھے کہ ان کے بارے میں زیادہ جانکاری لوگوں کو ہو ہی نہیں پائی .

اس لئے ہم "جھاڑو" کے اس نمبر کا سواگت کرتے ہیں جس سے مشروالا جی جیسے چھپے ہوئے ہیرے کے جدا جدا پہلوؤں پر کچھ روشنی پڑتی ہے . اس میں آچاریہ ونوبا، کاکا کالیلکر، شری شری کرشن داس جاجو، شری کیدار ناتھ پنڈت سندرلال، شریمتی رامیشوری نہرو، شریمتی جانکی دیوی بجاج وغیرہ کے سندر لیکھ ہیں. پر تعجب کی بات ہے کہ پوجیہ کشور لال بھائی کی جنم سے لیکر مرتیو تک پوری جیون کہانی کہنے والا ایک لیکھ بھی نہیں ہے جو بہت کھٹکتا ہے . پھر بھی "جھاڑو" کے سمپادکوں کو ہم بدھائی دیتے ہیں کہ اتنا کم سمے رہتے ہوئے انہوں نے اتنا سندر نمبر نکالا . ہمیں وشواس ہے کہ کیا رچناتمک کاریہ کرتا اور کیا ہندی پریمی دونوں اس سے فائدہ اُٹھائینگے اور جھاڑو کو زیادہ سے زیادہ سیوا کرنے کے لئے پروتساہن دینگے .

—سریش رام بھائی

हमारे पड़ोसी पर जब फूट की चारों तरफ़ से बौछार हो रही है, 'नया चीन' नामी मासिक पत्र दिया के समान है इस दिया को न बुझने देने की उन सब को क़सम खानी चाहिये जो सच की जीत देखना चाहते हैं और उन्हें 'नया चीन' को हर तरह की सहायता देनी चाहिये.

'नया चीन' की हर चीज़ सुन्दर है—सम्पादन, कवर, गेटअप और लेख—हिन्दी जानने वालों के लिये 'नया चीन' बहुत बड़ा ख़ज़ाना है.

हमें विश्वास है कि भारत की जनता अपने हित के लिये 'नया चीन' को कभी बन्द न होने देगी. लेखकों और पाठकों से हमारी अपील है कि वह योगता के मुताबिक़ 'नया चीन' की अधिक से अधिक मदद करें.

—मुजीब रिज़वी

همارے پڑوسی پر جب جھوٹ کی چاروں طرف سے بوچھار هو رهی هے' ' نیا چین ' نامی ماسک پتر دیا کے سمان هے . اِس دیا کو نه بجھنے دینے کی اُن سب کو قسم کھانی چاهئے جو سچ کی جیت دیکھنا چاهتے هیں اور اُنهیں 'نیا چین' کو هر طرح کی سهائتا دینی چاهئے .

' نیا چین ' کی هر چیز سندر هے—سمپادن' کور' گٹ اپ اور لیکھ—هندی جاننے والوں کے لئے 'نیا چین' بہت بڑا خزانه هے .

همیں وشواس هے که بھارت کی جنتا اپنے هت کے لئے ' نیا چین ' کو کبھی بند نه هونے دے گی . لیکھکوں اور پاٹھکوں سے هماری اپیل هے که وہ یوگتا کے مطابق 'نیا چین' کی ادھک سے ادھک مدد کریں .

—مجیب رضوی

'नया समाज'—परिवार नियोजन अंक

सम्पादक—मोहन सिंह सेंगर; पता—33 नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता-1; लिखावट हिन्दी; सफ़ा 120; दाम एक रुपया.

'नया समाज' पांच साल से निकल रहा है. हिन्दी के शायद कुछ ही पत्र इसकी छपाई और गेटअप का मुक़ाबला कर सकेंगे. 'नया समाज' का जनवरी अंक 'परिवार नियोजन अंक' (औलाद पर रोक) है. इस बात को लेकर हिन्दुस्तान में बहुत बहस चली है. कुछ का कहना है कि ग़ैर क़ुदरती ढंग से औलाद की कमी न होनी चाहिये और कुछ का कहना है कि इस संबंध में जितनी भी मदद हम साइन्स से ले सकते हैं वह लेनी चाहिये. इस विशय से संबंध रखने वाले सभी पहलुओं पर काफ़ी लिखा जा चुका है. लेकिन यह सब साहित्य अधिकतर अंगरेज़ी में है और कभी कभार ही हिन्दी पाठकों को थोड़ा बहुत पढ़ने को मिलता है. 'नया समाज' ने इस विशय पर यह अंक निकाल कर अच्छी साहित्य सेवा की है. इस अंक की एक बड़ी कमज़ोरी यह है कि यह एक पक्ष ही की बात पाठक के सामने रखता है. ऐसी योजनाओं के विरोधियों के विचारों को इसमें जगह नहीं मिली. इस कारन से अंक का महत्व कम हो जाता है.

—मुजीब रिज़वी

'نیا سماج'—پریوار نیوجن انک

سمپادک—موهن سنگھ سینگر؛ پته—33 نیتاجی سبھاش روڈ' کلکته 1؛ لکھاوٹ هندی؛ صفحه 120؛ دام ایک روپیه.

' نیا سماج ' پانچ سال نکل رها هے . هندی کے شاید کچھ هی پتر اِسکی چھپائی اور گٹ اپ کا مقابله کر سکیں گے . 'نیا سماج' کا جنوری انک ' پریوار نیوجن انک ' (اولاد پر روک) هے . اس بات کو لے کر هندستان میں بہت بحث چلی هے . کچھ کا کہنا هے که غیر قدرتی ڈھنگ سے اولاد کی کمی نه هونی چاهئے اور کچھ کا کہنا هے که اِس سمبندھ میں جتنی بھی مدد هم سائنس سے لے سکتے هیں وہ لینی چاهئے . اِس وشے سے سمبندھ رکھنے والے سبھی پہلوؤں پر کافی لکھا جا چکا هے . لیکن یه سب ساهتیه ادھک تر انگریزی میں هے اور کبھی کبھار هی هندی پاٹھکوں کو تھوڑا بہت پڑھنے کو ملتا هے . 'نیا سماج' نے اِس وشے پر یه انک نکال کر اچھی ساهتیه سیوا کی هے . اس انک کی ایک بڑی کمزوری یه هے که یه ایک پکش هی کی بات پاٹھک کے سامنے رکھتا هے . ایسی یوجناؤں کے ورودھیوں کے وچاروں کو اس میں جگه نہیں ملی . اس کارن سے انک کا مہتو کم هو جاتا هے .

—مجیب رضوی

सर्वोदय राज क्यों और कैसे ?

लेखक—भगवानदास केला; निकालने वाले—भारतीय ग्रंथ माला, दारागंज, इलाहाबाद; लिखावट नागरी; सफ़े 71; दाम दस आने; पहली बार 1952.

श्री भगवानदास केला हिन्दी जगत के उन बुज़ुर्गों में से हैं जो सन 1915 से अब तक लगातार अर्थशास्त्र

سرووڈے راج کیوں اور کیسے ؟

لیکھک—بھگوان داس کیلا؛ نکالنے والے—بھارتیه گرنتھ مالا' دارا گنج' الهآباد؛ لکھاوٹ ناگری؛ صفحه 71؛ دام دس آنه؛ پہلی بار 1952 .

شری بھگوان داس کیلا هندی جگت کے اُن بزرگوں میں سے هیں جو سن 1915 سے اب تک لگاتار ارتھشاستر

इस संग्रह की आख़िरी नज़्म में राही ने दुनिया को उसकी असली शकल दिखाने की कोशिश की है:

आज हर सिम्त अंधेरा ही मिलेगा तुझ को
रात के पास अंधेरे के सिवा कुछ भी नहीं

लेकिन शायर मायूस नहीं है और वह कहता है:

और तूफ़ां के मचलने में भी अब देर नहीं
और सूरज के निकलने में भी अब देर नहीं

जिस जोश से लोग राही की नज़में मुशायरों में सुनते हैं हमारा ख़याल है कि उसी जोश से राही का 'नया साल' ख़रीदेंगे भी.

—मुजीब रिज़वी

आहंग

लिखने वाले—इसरारुलहक़ 'मजाज़', निकालने वाले—आज़ाद किताब घर, कलां महल, देहली; लिखावट उरदू; दाम चार रुपया; सफ़ा 216.

'आहंग' उरदू के मशहूर शायर 'मजाज़' की नज़मों और ग़ज़लों का संग्रह है. इस में मजाज़ की सन 30 से सन 52 तक की रचनायें शामिल हैं. किताब का दूसरा एडीशन है. छपाई 28 पौंड के सफ़ेद काग़ज़ पर है. कवर वग़ैरा बेहद ख़ूबसूरत हैं.

'मजाज़' की रचनाओं की तीन मंज़िल रही है—जाम और सुराही—इनक़िलाबी ललकार—सुराही की क़ुलक़ुल से निकलने वाली इनक़िलाबी ललकार—फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़' ने इस किताब के दीबाचे में मजाज़ की शायरी पर काफ़ी रोशनी डाली है.

इसरारुल हक़ को शराब ने मारा है और इसरारुल हक़ ने 'मजाज़' का गला घोंट दिया है. अब भी कभी कभी वह जागता है लेकिन कब तक यह चिंगारी और जलेगी कहा नहीं जा सकता.

—मुजीब रिज़वी

नया चीन

एडीटर—मनोरमा सैटिन; मिलने का पता-D47/411 रामापुरा, बनारस; लिखावट हिन्दी; सालाना चन्दा तीन रुपया; एक कापी का दाम पांच आना.

'नया चीन' कुछ लोगों की आंखों में खटकता है और कुछ लोगों को हिम्मत देता है, आशा बंधाता है. पहला गिरोह नया चीन को बदनाम करने पर तुला हुआ है, झूट सच जिस तरह से भी हो डालर के ज़ोर पर भ्रम पैदा करने की कोशिश में है. दूसरा गिरोह निर्धन है पर उसे अपने पक्ष की सचाई पर विश्वास है. हिन्दुस्तान में भी यह दो गिरोह हैं.

اِس سنگرہ کی آخری نظم میں راہی نے دنیا کو اُسکی اصلی شکل دکھانے کی کوشش کی ہے :

آج ہر سمت اندھیرا ہی ملے گا تجھکو
رات کے پاس اندھیرے کے سوا کچھ بھی نہیں

لیکن شاعر مایوس نہیں ہے اور وہ کہتا ہے :

اور طوفاں کے مچلنے میں بھی اب دیر نہیں
اور سورج کے نکلنے میں بھی اب دیر نہیں

جس جوش سے لوگ راہی کی نظمیں مشاعروں میں سنتے ہیں ہمارا خیال ہے کہ اسی جوش سے راہی کا 'نیا سال' خریدیں گے بھی .

—مجیب رضوی

آھنگ

لکھنے والے—اِسرارالحق مجاز؛ نکالنے والے—آزاد کتاب گھر، کلاں محل، دہلی؛ لکھاوٹ اُردو؛ دام چار روپیہ؛ صفحہ 216 .

' آھنگ ' اُردو کے مشہور شاعر مجاز کی نظموں اور غزلوں کا سنگرہ ہے . اِسمیں مجاز کی سن 30 سے سن 52 تک کی رچنائیں شامل ہیں. کتاب کا دوسرا ایڈیشن ہے . چھپائی 28 پونڈ کے سفید کاغذ پر ہے . کور وغیرہ بے حد خوبصورت ہیں .

'مجاز' کی رچناؤں کی تین منزل رہی ہے—جام اور صراحی—انقلابی للکار—صراحی کی قل قل سے نکلنے والی انقلابی للکار—فیض احمد 'فیض' نے اِس کتاب کے دیباچے میں مجاز کی شاعری پر کافی روشنی ڈالی ہے .

اِسرارالحق کو شراب نے مارا ہے اور اِسرارالحق نے مجاز کا گلا گھونٹ دیا ہے . اب بھی کبھی کبھی وہ جاگتا ہے لیکن کب تک یہ چنگاری اور جلے گی کہا نہیں جاسکتا .

—مجیب رضوی

نیا چین

ایڈیٹر—منورما سیٹن؛ ملنے کا پتہ—D47/411 راما پورا، بنارس؛ لکھاوٹ ہندی؛ سالانہ چندہ تین روپیہ؛ ایک کاپی کا دام پانچ آنہ .

'نیا چین' کچھ لوگوں کی آنکھوں میں کھٹکتا ہے اور کچھ لوگوں کو ہمت دیتا ہے، آشا بندھاتا ہے . پہلا گروہ نیا چین کو بدنام کرنے پر تلا ہوا ہے، جھوٹ سچ جس طرح سے بھی ہو ڈالر کے زور پر بھرم پیدا کرنے کی کوشش میں ہے . دوسرا گروہ نردھن ہے پر اُسے اپنے پکش کی سچائی پر وشواس ہے . ہندستان میں بھی یہ دو گروہ ہیں .
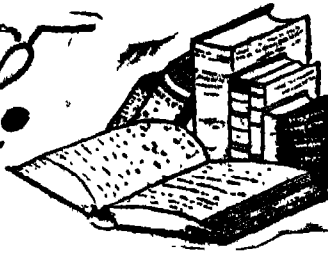
नया साल

लिखने वाले—राही मासूम रज़ा; निकालने वाले—अवामी किताब घर, बशीर मंज़िल, ग़ाज़ीपुर; लिखावट उर्दू; दाम बारह आना; सफ़ा 64.

मासूम रज़ा और 'राही' दोनों एक ही आदमी के नाम हैं लेकिन फिर भी दोनों में काफ़ी फ़र्क़ है. मासूम रज़ा का नाम सुनकर लोग सोचने लगते हैं कि यह किसका नाम है. पर 'राही' का नाम आते ही लोगों के दिल में गुद गुदी होने लगती है. उनके सामने भोला, मुसकराता हुआ एक ऐसा चेहरा नाच उठता है जिसकी आवाज़ और जिसकी नज़्में मुशायरे में जान डाल देती हैं. राही की उमर चाहे जितनी भी कम हो लेकिन जिस राह का वह राही है, वह पुराना रास्ता है. वह क़ुरबानी, त्याग, हिम्मत का रास्ता है. यही क़ुरबानी उसकी नज़्मों की जान है, यही हिम्मत उसकी आवाज़ में ललकार पैदा करती है.

'नया साल' उसी नौजवान शायर की पांच नज़्मों का संग्रह है. पहली नज़्म पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के पूंजी पतियों को चेतावनी है. राही का निश्चय इतना मज़बूत है कि किसी आफ़त के सामने भी वह सर झुकाने को तैयार नहीं है. वह कहता है :—

सर—मगर मौत की ख़ाहिश पे नहीं झुक सकते
गति—लोहे की सलाख़ों से नहीं रुक सकते.

हार जीत का असर सच्चे इनक़िलाबियों की हिम्मत पर नहीं पड़ता. उनके सामने एक मक़सद होता है और वह इतमिनान से कठिनाइयों का मुक़ाबला करते हुए उसे हासिल करने के लिये आगे बढ़ते जाते हैं. राही ने उसी उसूल को यों नज़्म किया है :

अपनी ही फ़तह, कोई जंग का दस्तूर नहीं
यूं तो साहिल का सफ़र मौजों से कुछ दूर नहीं
यूं तो कब दार नहीं, जुरअते मंसूर नहीं
ज़िन्दगी मौत के क़ानून से मजबूर नहीं
जिस्म मर जाय पे ईमान नहीं मर सकता
मौत मर जायगी, इनसान नहीं मर सकता

نیا سال

لکھنے والے—راہی معصوم رضا؛ نکالنے والے—عوامی کتاب گھر، بشیر منزل، غازی پوری؛ لکھاوٹ اُردو؛ دام بارہ آنہ؛ صفحہ 64 .

معصوم رضا اور 'راہی' دونوں ایک ہی آدمی کے نام ہیں لیکن پھر بھی دونوں میں کافی فرق ہے . معصوم رضا کا نام سن کر لوگ سوچنے لگتے ہیں کہ یہ کس کا نام ہے . پر 'راہی' کا نام آتے ہی لوگوں کے دل میں گدگدی ہونے لگتی ہے، اُن کے سامنے بھولا، مسکراتا ہوا ایک ایسا چہرا ناچ اُٹھتا ہے جس کی آواز اور جس کی نظمیں مشاعرے میں جان ڈال دیتی ہیں . راہی کی عمر چاہے جتنی بھی کم ہو لیکن جس راہ کا وہ راہی ہے وہ پرانا راستہ ہے، وہ قربانی، تیاگ، ہمت کا راستہ ہے . یہی قربانی اُسکی نظموں کی جان ہے، یہی ہمت اُسکی آواز میں للکار پیدا کرتی ہے .

'نیا سال' اُسی نوجوان شاعر کی پانچ نظموں کا سنگرہ ہے . پہلی نظم پاکستان اور ہندستان کے پونجی پتیوں کو چیتاونی ہے . راہی کا نشچے اِتنا مضبوط ہے کہ کسی آفت کے سامنے بھی وہ سر جھکانے کو تیار نہیں ہے . وہ کہتا ہے :—

سر—مگر موت کی خواہش پہ نہیں جھک سکتے .
گیت—لوہے کی سلاخوں سے نہیں رک سکتے .

ہار جیت کا اثر سچے انقلابیوں کی ہمت پر نہیں پڑتا . اُن کے سامنے ایک مقصد ہوتا ہے اور وہ اطمینان سے کٹھنائیوں کا مقابلہ کرتے ہوئے اُسے حاصل کرنے کے لئے آگے بڑھتے جاتے ہیں . راہی نے اُسی سوال کو یوں نظم کیا ہے :

اپنی ہی فتح، کوئی جنگ کا دستور نہیں
یوں تو ساحل کا سفر موجوں سے کچھ دور نہیں
یوں تو کب دار نہیں، جرأت منصور نہیں
زندگی موت کے قانون سے مجبور نہیں
جسم مرجائے پر ایمان نہیں مر سکتا
موت مر جائے گی، انسان نہیں مر سکتا

सरकार ने इस कमेटी को इसलिये बिठाया था कि वह इस बात पर रिपोर्ट करे कि ज़ियादा से ज़ियादा कितनी ज़मीन हर एक आदमी के क़ब्ज़े में रहने दी जाय, कैसे खेती न करने वाले और ग़ैर सकूनती रैयतों को ख़तम किया जाय, किसानों को कैसे खेत का मालिक बनाया जाय और लगान कैसे मुक़र्रर हो. कमेटी को हिदायत दी गई थी कि वह ख़ास अफ़सर की और कुमारप्पा कमेटी दोनों की रिपोर्टों पर भी ग़ौर करे.

इस कमेटी की रिपोर्ट 1951 में छपी. इस रिपोर्ट में किसानों के बजाय ज़मींदारों के हित की रक्षा की गई थी. कांगरेस के इस मसले पर सारे पुराने सुझावों और पुरानी मांगों की यह रिपोर्ट विरोध में थी.

आज भी मद्रास में खेती का मसला जूं का तूं बना हुआ है.

سرکار نے اس کمیٹی کو اس لئے بٹھایا تھا کہ وہ اِس بات پر رپورٹ کرے کہ زیادہ سے زیادہ کتنی زمین ہر ایک آدمی کے قبضے میں رہنے دی جائے' کیسے کھیتی نہ کرنے والے اور غیر سکونتی رعیتوں کو ختم کیا جائے' کسانوں کو کیسے کھیت کا مالک بنایا جائے اور لگان کیسے مقرر ہو. کمیٹی کو ہدایت دی گئی تھی کہ وہ خاص افسر کی اور کماریپا کمیٹی دونوں کی رپورٹوں پر بھی غور کرے .

اِس کمیٹی کی رپورٹ 1951 میں چھپی . اِس رپورٹ میں کسانوں کے بجائے زمینداروں کے ہت کی رکشا کی گئی تھی . کانگریس کے اِس مسئلے پر سارے پرانے سجھاؤں اور پرانی مانگوں کی یہ رپورٹ وِرودھ میں تھی.

آج بھی مدراس میں کھیتی کا مسئلہ جوں کا توں بنا ہوا ہے .

किसान बिनती

(स्वामी मारहरवी)

कर के मेड़ मेड़ी बाखर तुमने ऊंचे महल बनाए
जगमग मेरे दिये बुझाकर अपने घर के दीप जलाए
मेरे सुनहरे खलिहानों पर आड़े तिरछे दांव लगाए
लूट लई निर्बल की आशा ऐसे तुमने जाल बिछाए.

सूखे खांखड़ हार हैं मेरे, लाल फुलरवा गाल तुम्हारे
देह के ढंगर बालक मेरे लालों के हैं लाल तुम्हारे
भूक में हम एक कौर को तरसें घर में तर माल तुम्हारे
अपनी कमाई आह लुटा कर हो गए हम कंगाल तुम्हारे.

मेरे धन से मिलें बनाएं, भांत भांत की कलें लगाएं
आप मनेजर, आप डिरेक्टर, आप ही जग दाता कहलाएं
मेरी पैदावार से फिर फिर आप ही सारा लाभ उठाएं
कड़ुवा कड़ुवा थू थू कर के, मीठा मीठा हप कर जाएं.

کسان بنتی

(سوامی مارہروی)

کر کے میڑ میڑی باکھر تم نے اونچے محل بنائے
جگ مگ میرے دیئے بجھا کر اپنے گھر کے دیپ جلائے
میرے سنہرے کھلیانوں پر آڑے ترچھے داؤں لگائے
لوٹ لئی نربل کی آشا ایسے تم نے جال بچھائے .

سوکھے کھانکھڑ ہار ہیں میرے' لال پھلروا گال تمہارے
دیہہ کے ڈھنگر بالک میرے لالوں کے ہیں لال تمہارے
بھوک میں ہم ایک کور کو ترسیں گھر میں ہیں تر مال تمہارے
اپنی کمائی آہ لٹا کر ہوگئے ہم کنگال تمہارے.

میرے دھن سے ملیں بنائیں' بھانت بھانت کی کلیں لگائیں
آپ منیجر' آپ ڈریکٹر' آپ ہی جگ داتا کہلائیں
میری پیداوار سے پھر پھر آپ ہی سارا لابھ اٹھائیں
کڑوا کڑوا تھو تھو کر کے' میٹھا میٹھا ہپ کر جائیں .

कारनों से और भी जरूरी है कि किसानों की हिफ़ाज़त की जाय.

दूसरी बात जो कमेटी ने कही वह यह थी कि किसानों की मिलकियत की हिफ़ाज़त का मसला खेती सुधार से अलग एक अहम मसला है. चूंकि कमेटी के मेम्बर इस मसले पर एक राय नहीं हो पाए इसलिये इस सवाल पर दूसरी कमेटी बैठाई जाय.

3 दिसम्बर 1938 को मद्रास असेम्बली में श्री प्रकाशम ने एलान किया :

"कांगरेस और दूसरे हलक़े सरकार से मांग कर रहे हैं कि सूबे में ज़मीन के क़बज़े संबंधी एक क़ानून पास होना चाहिये. रैयतवारी प्रथा के मातहत जो इलाक़े हैं वहां काश्तकारों को क़बज़े का हक़ देने का मतलब है कि पट्टादारों से सारे अधिकार छीन लिये जायं. सरकार इस सवाल पर सोच विचार नहीं कर रही है."

यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि ऊपर की बात मद्रास के ज़मींदार इस मसले पर बात करते हुए हमेशा कहा करते हैं.

प्रकाशम कमेटी की सिफ़ारिश पर 1946 में सरकार ने एक ख़ास अफ़सर मुक़र्रर किया कि वह इस बात का पता लगाए कि रैयत वारी इलाक़ों में लगानदारी की कितनी क़िसमें हैं और उन में क्या सुधार किया जा सकता है. इस अफ़सर ने 1948 में अपनी रिपोर्ट पेश कर दी. इस रिपोर्ट में सारे ज़रूरी सुधारों की सिफ़ारिश की गई थी. लेकिन इस रिपोर्ट को रोक लिया गया और यह कहा गया कि कुमारप्पा कमेटी के छपने पर इस पर कार्रवाई की जायगी.

इतना समय काफ़ी था. काश्तकार ज़बरदस्ती बेदख़ल कर दिये गए. लगान का दर बेहद बेहद बढ़ गया और परिस्थिति ख़राब होने लगी. शोर मचने पर काश्तकारों की आरज़ी रक्षा के लिये एक बिल तैयार किया गया ताकि न तो किसानों को खेत से बेदख़ल किया जा सके और न लगान ही बढ़ाया जा सके लेकिन इस में भी ऐसी शर्त रखी गई कि वही किसान फ़ायदा उठा सके जो कम से कम तीन बरस पहले से खेत को जोत रहा हो. ऐसी परिस्थिति में जब रैयतवारी पट्टेदार हर साल अपने काश्तकार बदलते हों यह बात साफ़ थी कि शायद ही इने गिने किसानों को फ़ायदा हो सके. लेकिन मज़े की बात यह है कि यह बिल भी असेम्बली में नहीं लाया गया और कुमारप्पा कमेटी की रिपोर्ट न निकलने का बहाना किया गया.

कुमारप्पा कमेटी की रिपोर्ट 1949 में निकल गई. मद्रास सरकार ने एक मालगुज़ारी सुधार कमेटी बैठाई.

کارنوں سے اور بھی ضروری ہے کہ کسانوں کی حفاظت کی جائے ۔

دوسری بات جو کمیٹی نے کہی وہ یہ تھی کہ کسانوں کی ملکیت کی حفاظت کا مسئلہ کھیتی سدھار سے الگ ایک اہم مسئلہ ہے ۔ چونکہ کمیٹی کے ممبر اس مسئلے پر ایک رائے نہیں ہو پائے اس لئے اس سوال پر دوسری کمیٹی بیٹھائی جائے ۔

3 دسمبر 1938 کو مدراس اسمبلی میں شری پرکاشم نے اعلان کیا :

'' کانگریس اور دوسرے حلقے سرکار سے مانگ کر رہے ہیں کہ صوبے میں زمین کے قبضے سمبندھی ایک قانون پاس ہونا چاہئے ۔ رعیت واری پرتھا کے ماتحت جو علاقے ہیں وہاں کاشتکاروں کو قبضے کا حق دینے کا مطلب ہے کہ پٹہ داروں سے سارے ادھیکار چھین لئے جائیں. سرکار اس سوال پر سوچ وچار نہیں کر رہی ہے .''

یہ کہنے کی ضرورت نہیں کہ اوپر کی بات مدراس کے زمیندار اس مسئلے پر بات کرتے ہوئے ہمیشہ کہا کرتے ہیں ۔

پرکاشم کمیٹی کی سفارش پر 1946 میں سرکار نے ایک خاص افسر مقرر کیا کہ وہ اس بات کا پتہ لگائے کہ رعیت واری علاقوں میں لگانداری کی کتنی قسمیں ہیں اور ان میں کیا سدھار کیا جاسکتا ہے. اس افسر نے 1948 میں اپنی رپورٹ پیش کر دی ۔ اس رپورٹ میں سارے ضروری سدھاروں کی سفارش کی گئی تھی ۔ لیکن اس رپورٹ کو روک لیا گیا اور یہ کہا گیا کہ کمارپا کمیٹی کے چھپنے پر اس پر کاروائی کی جائے گی ۔

اتنا سمے کافی تھا. کاشتکار زبردستی بے دخل کر دیئے گئے ۔ لگان کا در بے حد بڑھ گیا اور پرستھتی خراب ہونے لگی ۔ شور مچنے پر کاشتکاروں کی عارضی رکشا کے لئے ایک بل تیار کیا گیا تاکہ نہ تو کسانوں کو کھیت سے بے دخل کیا جا سکے اور نہ لگان ہی بڑھایا جا سکے ۔ لیکن اس میں بھی ایسی شرط رکھی گئی کہ وہی کسان فائدہ اٹھا سکے جو کم سے کم تین برس پہلے سے کھیت کو جوت رہا ہو ۔ ایسی پرستھتی میں جب رعیت واری پٹہ دار ہر سال اپنے کاشتکار بدلتے ہوں یہ بات صاف تھی کہ شاید ہی ان گنے کسانوں کو فائدہ ہو سکے ۔ لیکن مزے کی بات یہ ہے کہ یہ بل بھی اسمبلی میں نہیں لیا گیا اور کمارپا کمیٹی کی رپورٹ نہ نکلنے کا بہانہ کیا گیا ۔

کمارپا کمیٹی کی رپورٹ 1949 میں نکل گئی ۔ مدراس سرکار نے ایک مالگذاری سدھار کمیٹی بیٹھائی ۔

वसूलते हैं. यह मालगुज़ारी की कमी भी एक वजह है जिस ने लोगों को ज़मीन खरीदने पर उकसाया. किसी समय भी सरकार ने मुनाफ़े की रक़म का आधे से ज़ियादा मालगुज़ारी के रूप में नहीं वसूला हालांकि मौजूदा क़ानून के मातहत वह ज़ियादा वसूल सकती थी. आम तरीक़े से सरकारी मालगुज़ारी और ज़मींदार के लगान में एक और चार की निस्बत होती थी. आजकल 1 और 10 की निस्बत है. यानी अगर ज़मींदार सरकार को एक रुपया मालगुज़ारी देता है तो वह किसान से दस रुपया लगान वसूल करता है.

कमेटियां

1936 की फ़िरोज़पुर कांगरेस में किसान समस्या पर काफ़ी विचार हुआ था. कांगरेस ने मांग की थी कि लगान में कमी हो, लगान की हद मुक़र्रर हो, किसान अपने खेत पर क़ब्ज़ा रख सके, और क़ानून पास कर के खेतों पर काम करने वालों की मज़दूरी मुक़र्रर कर दी जाय. 1937 में कांगरेस कारकारनी ने असेम्बली के मेम्बरों को हिदायत दी थी कि वह ऊपर के प्रोग्राम को अमली जामा पहिनवाने की कोशिश करें. 1946 में चुनाव के समय कांगरेस ने फिर एलान किया कि वह राज का भार संभालने पर सरकार और किसानों के बीच के दलालों को ख़तम कर देगी और दूसरे सुधार भी लागू करेगी. 1948 में एक कांगरेस आर्थिक प्रोग्राम कमेटी बनी थी जिस के चेयरमैन पंडित जवाहरलाल नेहरू थे. 1949 में कांगरेस ने डाक्टर कुमारप्पा की सदारत फिर इस सवाल पर एक कमेटी बिठाई थी. लेकिन इन सब कमेटियों और प्रोग्रामों का कोई असर मद्रास की सरकार पर नहीं पड़ा.

हम पहले लिख चुके हैं कि इतिहास के पन्नों से पता चलता है कि हाल तक किसानों को अपनी अपनी ज़मीन पर क़ब्ज़ा रखने का हक़ था. खेती की समस्या के सुधार के लिये ज़रूरी है कि यह हक़ फिर इन किसानों को मिल जाय. 1938 में इस सवाल पर श्री प्रकाशम की सदारत में एक कमेटी बैठी. इस कमेटी ने असली कारतकार की मिलकियत के हक़ को नहीं माना. इस रिपोर्ट में लिखा है: "जब खेत के लिये किसानों में होड़ लगी हो और ज़ियादा से ज़ियादा रक़म देकर वह ज़मीन पर क़ब्ज़ा करना चाहते हों तो यह फ़ैसला नहीं किया जा सकता कि खेत का कारतकार कौन है. कारतकार की पहचान करना मुमकिन नहीं जो ज़मींदार के पास पहुंचता है और उचित रक़म देता है ज़मींदार उसी को ज़मीन दे देता है. हर साल यह क्रम चलता रहता है. ऐसे कारतकार को ज़मीन का मालिक कैसे माना जा सकता है."

थोड़ी बहुत समझ का आदमी भी यह कहेगा कि इन्हीं

وصولتے ہیں . یہ مالگذاری کی کمی بھی ایک وجہ ہے جس نے لوگوں کو زمین خریدنے پر اُکسایا. کسی سمے بھی سرکار نے منافع کی رقم کا آدھے سے زیادہ مالگذاری کے روپ میں نہیں وصولا حالانکہ موجودہ قانون کے ماتحت وہ زیادہ وصول سکتی تھی . عام طریقے سے سرکاری مالگذاری اور زمیندار کے لگان میں ایک اور چار کی نسبت ہوتی تھی. آجکل ایک اور دس کی نسبت ہے . یعنی اگر زمیندار سرکار کو ایک روپیہ مالگذاری دیتا ہے تو وہ کسان سے دس روپیہ لگان وصول کرتا ہے .

کمیٹیاں

1936 کی فیروز پور کانگریس میں کسان سمسیا پر کافی وچار ہوا تھا . کانگریس نے مانگ کی تھی کہ لگان میں کمی ہو' لگان کی حد مقرر ہو' کسان اپنے کھیت پر قبضہ رکھ سکے' اور قانون پاس کر کے کھیتوں پر کام کرنے والوں کی مزدوری مقرر کر دی جائے . 1937 میں کانگریس کارکارنی نے اسمبلی کے ممبروں کو ہدایت دی تھی کہ وہ اوپر کے پروگرام کو عملی جامہ پہنوانے کی کوشش کریں . 1946 میں چناؤ کے سمے کانگریس پھر اعلان کیا کہ وہ راج کا بھار سنبھالنے پر سرکار اور کسانوں کے بیچ کے دلالوں کو ختم کر دے گی اور دوسرے سدھار بھی لاگو کرے گی . 1948 میں ایک کانگریس آرتھک پروگرام کمیٹی بنی تھی جیئرمین پنڈت جواہر لال نہرو تھے . 1949 میں کانگریس نے ڈاکٹر کماریپا کی صدارت میں پھر اِس سوال پر ایک کمیٹی بیٹھائی تھی . لیکن اِن سب کمیٹیوں اور پروگراموں کا کوئی اثر مدراس کی سرکار پر نہیں پڑا .

ہم پہلے لکھ چکے ہیں کہ اِتہاس کے پنوں سے پتہ چلتا ہے کہ حال تک کسانوں کو اپنی اپنی زمین پر قبضہ رکھنے کا حق تھا . کھیتی سمسیا کے سدھار کے لئے ضروری ہے کہ یہ حق پھر اِن کسانوں کو ملجائے . 1938 میں اسی سوال پر شری پرکاشم کی صدارت میں ایک کمیٹی بیٹھی . اِس کمیٹی نے اصلی کاشتکار کی ملکیت کے حق کو نہیں مانا . اِس رپورٹ میں لکھا ہے : " جب کھیت کے لئے کسانوں میں ہوڑ لگی ہو اور زیادہ سے زیادہ رقم دے کر وہ زمین پر قبضہ کرنا چاہتے ہوں تو یہ فیصلہ نہیں کیا جا سکتا کہ کھیت کا کاشتکار کون ہے. کاشتکار کی پہچان کرنا ممکن نہیں . جو زمیندار کے پاس پہونچتا ہے اور اُچت رقم دیتا ہے زمیندار اُسی کو زمین دے دیتا ہے . ہر سال یہ کرم چلتا رہتا ہے . ایسے کاشتکار کو زمین کا مالک کیسے مانا جا سکتا ہے ."

تھوڑی بہت سمجھ کا آدمی بھی یہ کہے گا کہ انہیں

मालगुज़ारी

सारे रैयत वारी इलाक़े की नाप जोख की गई. ऐसी नाप जोख के लिये यूनिट बना दिये गए. एक यूनिट में जियादा से जियादा दस एकड़ ज़मीन आती थी. एकड़ के सौवें हिस्से की भी यूनिट बन गई थीं. पैमाइश के बाद अलग अलग यूनिट का अलग अलग लगान मुक़र्रर कर दिया गया. मोटे ढंग से ज़मीन की दो क़िस्में मानी गईं. एक सिंचाई वाली और दूसरे बिना सिंचाई वाली. सरकारी मालगुज़ारी का मतलब है कि पैदावार में सरकार का जो हिस्सा है उसका नक़द दाम. इस दाम को हमेशा के लिये मुक़र्रर करने के लिये खेतों की पैदावार और उपजाऊ पन वग़ैरा का अन्दाज़ा लगाया गया. हर इलाक़े के लिये एक अनाज स्टैन्डर्ड मान लिया गया. सिंचाई वाली ज़मीन के लिये धान और बिना सिंचाई वाली के लिये 'छोलम' और 'रगी' स्टैन्डर्ड अनाज मान लिये गए खेतों की पैदावार का अन्दाज़ा लगाते समय पुराने तजुरबों के आधार पर फ़सल की ख़राबी और ग़ैर उपजाऊ ज़मीन के लिये रियायतें दी गई. गांव की स्थिति से नफ़ा नुकसान को और सिंचाई के ढंगों को सामने रख कर और भी छूट दी गई. ऐसे बीस साल के भावों का औसत ले लिया गया जिन में कहत न पड़ा हो. अब जो पैदावार बची उसका दाम इस आधार पर तय किया गया. इस रकम में से कुछ फ़ी सदी ढुलाई वग़ैरा के ख़र्चे के लिये छोड़ दी गई. फिर बाक़ी रक़म में से कुछ हिस्सा फ़सल की तैयारी की लागत के तौर पर छोड़ी गई. अब मुनाफ़े को रुपया में तबदील कर लिया गया. इस रक़म का एक हिस्सा जो लगभग आधा तक होता है सरकारी मालगुज़ारी के रूप में मुक़र्रर कर दिया जाता है. इस व्यवस्था को बन्दोबस्त कहा जाता है. हर तीस साल के बाद पैदावार में सरकारी हिस्से की क़ीमत ऊपर बताए ढंग से आंकी जाती है. ऐसा लगता है कि 1837 के बाद फिर तीस साला बन्दोबस्त नहीं हुआ.

मालगुज़ारी का मौजूदा तरीक़ा अपने हर रूप में बड़े ज़मींदारों के मुक़ाबले में छोटे किसानों को बहुत जियादा चूसता है. 1937 में कांगरेसी सरकार ने मालगुज़ारी में साढ़े बारह फ़ी सदी की छूट दे दी थी. मिसाल के तौर पर हम इसी छूट को ले लें. यह छूट उस समय दी गई थी जब खेती की पैदावार के दाम बहुत बढ़ गए थे. इस छूट से छोटे काश्तकारों को कोई फ़ायदा नहीं हुआ. दो चार आने पैसे जो उनके पल्ले पड़े होंगे वह भी मालगुज़ारी अफ़सरों की नज़र हो गए. लेकिन बड़े बड़े ज़मींदारों को इससे काफ़ी बचत हुई.

बड़े बड़े ज़मींदार ग़ैर सींचाऊ ज़मीन पर दो रुपया से जियादा मालगुज़ारी सरकार को नहीं देते, लेकिन सब जानते हैं कि ऐसी ज़मीन पर बहुत जियादा लगान वह

مالگذاری

سارے رعیتواری علاقے کی ناپ جوکھ کی گئی . ایسی ناپ جوکھ کے لئے یونٹ بنا دئے گئے . ایک یونٹ میں زیادہ سے زیادہ دس ایکڑ زمین آتی تھی . ایکڑ کے سویں حصے کی بھی یونٹ بن گئی تھیں. پیمائش کے بعد الگ الگ یونٹ کا الگ الگ لگان مقرر کر دیا گیا . موٹے ڈھنگ سے زمین کی دو قسمیں مانی گئیں . ایک سینچائی والی اور دوسرے بنا سینچائی والی . سرکاری مالگذاری کا مطلب ہے کہ پیداوار میں سرکار کا جو حصہ ہے اُس کا نقد دام . اِس دام کو ہمیشہ کے لئے مقرر کرنے کے لئے کھیتوں کی پیداوار اور اُپجاؤپن وغیرہ کا اندازہ لگایا گیا . ہر علاقے کے لئے ایک اناج اسٹینڈرڈ مان لیا گیا . سینچائی والی زمین کے لئے دھان اور بنا سینچائی والی کے لئے 'چھولم' اور 'رگی' اسٹینڈرڈ اناج مان لئے گئے . کھیتوں کی پیداوار کا اندازہ لگاتے سمے پرانے تجربوں کے آدھار پر فصل کی خرابی اور غیر اپجاؤ زمین کے لئے رعائتیں دی گئیں . گاؤں کی استھتی سے نفع نقصان کو اور سینچائی کے ڈھنگوں کو سامنے رکھکر اور بھی چھوٹ دی گئی . ایسے بیس سال کے بھاؤوں کا اوسط لے لیا گیا جن میں قحط نہ پڑا ہو. اب جو پیداوار بچی اُس کا دام اِس آدھار پر طے کیا گیا. اِس رقم میں سے کچھ فیصدی ڈھلائی وغیرہ کے خرچ کے لئے چھوڑ دی گئی . پھر باقی رقم میں سے کچھ حصہ فصل کی تیاری کی لاگت کے طور پر چھوڑی گئی . اب منافع کو روپیہ میں تبدیل کر لیا گیا . اس رقم کا ایک حصہ جو لگ بھگ آدھا تک ہوتا ہے سرکاری مالگذاری کے روپ میں مقرر کر دیا جاتا ہے. اِس ویوستھا کو بندوبست کہا جاتا ہے . ہر تیس سال کے بعد پیداوار میں سرکاری حصے کی قیمت اوپر بتائے ڈھنگ سے آنکی جاتی ہے . ایسا لگتا ہے کہ 1837 کے بعد پھر تیس سالا بندوبست نہیں ہوا .

مالگذاری کا موجودہ طریقہ اپنے ہر روپ میں بڑے زمینداروں کے مقابلے میں چھوٹے کسانوں کو بہت زیادہ چوستا ہے . 1937 میں کانگریسی سرکار نے مالگذاری میں ساڑھے بارہ فیصدی کی چھوٹ دے دی تھی. مثال کے طور پر ہم اسی چھوٹ کو لے لیں . یہ چھوٹ اُس سمے دی گئی تھی جب کھیتی کی پیداوار کے دام بہت بڑھ گئے تھے . اِس چھوٹ سے چھوٹے کاشتکاروں کو کوئی فائدہ نہیں ہوا . دو چار آنے پیسے جو اُن کے پلے پڑے ہونگے وہ بھی مالگذاری افسروں کی نذر ہوگئے. لیکن بڑے بڑے زمینداروں کو اِس سے کافی بچت ہوئی .

بڑے بڑے زمیندار غیر سینچاؤ زمین پر دو روپیہ سے زیادہ مالگذاری سرکار کو نہیں دیتے' لیکن سب جانتے ہیں کہ ایسی زمین پر بہت زیادہ لگان وہ

खाता नम्बर दस का रजिस्टर ज़रूर मिलता है. यह रजिस्टर गांव के मालगुज़ारी अफ़सर के पास रहता है. यह अफ़सर कहीं पटवारी कहलाता है कहीं पटेल कहलाता है और मदरास में यह 'करनम' कहलाता है. यह रजिस्टर इसलिये होता है कि हर खेत की तफ़सील इसमें दर्ज की जाय. आम तरीक़े से इसमें तबदीली उसी वक़्त की जाती है जब कि फ़रीक़ ऐसा करने की दरख़ास्त दे. किसी आदमी के मरने पर वारिसों का नाम उसके नाम की जगह इस खाते में चढ़ा दिया जाता है.

लेकिन इस खाता नम्बर दस से यह पता नहीं चल पाता कि किस ज़मीन का कौन मालिक है, कौन उस पर खेती करता है और कौन उसका शिकमी काश्तकार है. इस तरह इस रजिस्टर की भी कोई क़ीमत नहीं रह जाती.

बेमतलब काग़ज़

यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है कि 1880 के अकाल कमीशन की इस सिफ़ारिश के बाद भी कि मिल्कियत का हक़ साबित करने वाला एक रजिस्टर तैयार हो अंगरेज़ सरकार ने इस तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया. कांगरेस ने मदरास पर 1937 से 1939 तक पहले राज किया था और 1946 से अब तक दोबारा राज कर रही है. ताज्जुब की बात है कि किसानों के साथ हमदरदी जताने के बावजूद भी सरकार ऐसा कोई काग़ज़ तैयार नहीं करवा सकी. यह बात ध्यान देने की है कि जब तक ऐसा कोई रजिस्टर नहीं बनता तब तक लाखों किसानों को हरगिज़ हरगिज़ उनका हक़ नहीं मिल सकता. खाता नम्बर दस बिल्कुल बेकार सी चीज़ है क्योंकि आज कोई ऐसा क़ानूनी बन्धान नहीं है जिस के अनुसार लोग उस खाते में जायज़ तबदीली करवा सकें.

टाल मटोल की पालीसी

1947 में एक बार कांगरेस सरकार ने काग़ज़ों को ठीक करवाने की बात पर बहस की थी. लेकिन इस कारन से उसे टला दिया गया क्योंकि ज़मींदारी अन्त क़ानून पास होने वाला था और यह ठीक नहीं था कि मिल्कियत का कोई रजिस्टर उस समय बने जब कि पूरी चीज़ साफ़ न हो.

1948 में कांगरेस सरकार ने कुमारप्पा जांच कमेटी बिठाई थी. उस समय सरकार के आदमियों ने कहा कि वह कुमारप्पा कमेटी की रिपोर्ट के इन्तज़ार में हैं नहीं तो मदरास के लिये ऐसा मालगुज़ारी कोड तयार करायें जिस तरह का बम्बई में है और जैसे ही कोड का काम पूरा हो जायगा सरकार मिल्कियत सम्बन्धी काग़ज़ फ़ौरन तैयार करा लेगी.

कुमारप्पा कमेटी ने 1949 में अपनी रिपोर्ट पेश कर दी. अब 1953 शुरू हो गया है. लेकिन अब तक इस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं किया गया.

کھاتہ نمبر دس کا رجسٹر ضرور ملتا ہے. یہ رجسٹر گاؤں کے مالگذاری افسر کے پاس رہتا ہے . یہ افسر کہیں ملتا ہے پٹواری کہلاتا ہے' کہیں پٹیل کہلاتا ہے اور مدراس میں یہ 'کرنم' کہلاتا ہے . یہ رجسٹر اس لئے ہوتا ہے کہ ہر کھیت کی تفصیل اِس میں درج کی جائے . عام طریقے سے اِس میں تبدیلی اُس وقت کی جاتی ہے جب کہ فریق ایسا کرنے کی درخواست دے . کسی آدمی کے مرنے پر وارثوں کا نام اُس کے نام کی جگہ اِس کھاتے میں چڑھا دیا جاتا ہے .

لیکن اِس کھاتہ نمبر دس سے یہ پتہ نہیں چل پاتا کہ کس زمین کا کون مالک ہے' کون اُس پر کھیتی کرتا ہے کون اُس کا شکمی کاشتکار ہے . اس طرح اِس رجسٹر کی بھی کوئی قیمت نہیں رہ جاتی .

بے مطلب کاغذ

یہ کوئی تعجب کی بات نہیں ہے کہ 1880 کے اکال کمیشن کی اِس سفارش کے بعد بھی کہ ملکیت کا حق ثابت کرنے والا ایک رجسٹر تیار ہو انگریز سرکار نے اِس طرف کوئی دھیان نہیں دیا . کانگریس نے مدراس پر 1937 سے 1939 تک پہلے راج کیا تھا اور 1946 سے اب تک دوبارہ راج کر رہی ہے . تعجب کی بات ہے کہ کسانوں کے ساتھ ہمدردی جتانے کے باوجود بھی سرکار ایسا کوئی کاغذ تیار نہیں کرواسکی . یہ بات دھیان دینے کی ہے کہ جب تک ایسا کوئی رجسٹر نہیں بنتا تب تک لاکھوں کسانوں کو ہرگز ہرگز اُن کا حق نہیں مل سکتا . کھاتہ نمبر 10 بالکل بیکاری چیز ہے کیونکہ آج کوئی ایسا قانونی بندھان نہیں ہے جس کے انوسار لوگ اس کھاتے میں جائز تبدیلی کرواسکیں .

ٹال مٹول کی پالیسی

1947 میں ایک بار کانگریس سرکار نے کاغذوں کو ٹھیک کروانے کی بات پر بحث کی تھی . لیکن اِس کارن سے اُسے ٹلا دیا گیا کیونکہ زمینداری انت قانون پاس ہونے والا تھا اور یہ ٹھیک نہیں تھا کہ ملکیت کا کوئی رجسٹر اُسی سمے بنے جب کہ پوری چیز صاف نہ ہو .

1948 میں کانگریس سرکار نے کماریپا جانچ کمیٹی بٹھائی تھی . اُس سمے سرکار کے آدمیوں نے کہا کہ وہ کماریپا کمیٹی کی رپورٹ کے انتظار میں ہیں نہیں تو مدراس کے لئے ایسا مالگذاری کوڈ تیار کرائیں جس طرح کا بمبئی میں ہے اور جیسے ہی کوڈ کا کام پورا ہو جائے گا سرکار ملکیت سمبندھی کاغذ فوراً تیار کرا لے گی .

کماریپا کمیٹی نے 1949 میں اپنی رپورٹ پیش کر دی . اب 1953 شروع ہوگیا ہے . لیکن اب تک اِس سمبندھ میں کچھ بھی نہیں کیا گیا .

बात का इतमिनान हो जाय कि उसे आए दिन खेत न छोड़ना पड़ेगा. इस मांग के पीछे एक इतिहास है. किसानों को पहले ऐसे अधिकार और सुविधायें हासिल थीं. धीरे धीरे ईस्ट इंडिया कम्पनी ने किसानों से यह अधिकार छीन कर एक ऐसे तबक़े के हाथ में ज़मीन सौंपी जो कम्पनी को मालगुज़ारी वसूल कर के दे दिया करे. इस बात को सामने रख कर ही हमें कांग्रेस के कारनामे को देखना और समझना चाहिये.

अकाल कमीशन की सिफ़ारिशें

पूरी हालत समझने के लिये यह भी ज़रूरी है कि हम 1880 के अकाल कमीशन की सिफ़ारिशों के बारे में भी जान लें. कमीशन ने तीन अहम सिफ़ारिशें की थीं: पहली यह थी कि ज़मींदारी इलाक़ों में लगानदारों की मिल्कियत के हक़ में बढ़ौती की जाय. दूसरी यह कि शिकमी पट्टादारी पर रोक लगाई जाय क्योंकि शुरू के रैयतों से कुछ ऐसे लोगों ने ज़मीन ख़रीद ली है जो देहातों में नहीं रहते और मन माने दामों पर शिकमी काश्तकारों को खेत देते हैं. तीसरी सिफ़ारिश नीचे के शब्दों में यह थी कि रैयत वारी इलाक़ों में भी शिकमी पट्टादारी पर रोक लगाई जाय.

"जो लोग सरकारी काग़ज़ों में रैयत माने जाते हैं उनका यह रुख़ है कि वह किसानों को खेत लगान पर देते हैं और इस तरह सरकारी लगान अदा करने के बाद जो रक़म उनके पास बच रहती है उससे अपना गुज़ारा चलाते हैं. इस तरह उन शिकमी किसानों का एक तबक़ा पैदा होता जा रहा है जो हमेशा के लिये खेत से फ़ायदा नहीं उठा सकता और उसे इतना ज़ियादा लगान देना पड़ता है कि यह ज़रूरी हो जाता है कि वह हमेशा ग़रीब रहे इन काश्तकारों को सरकारी मानता नहीं मिली. ऐसे तबक़े के वजूद से वही बुराइयां पैदा होती हैं जिनका ज़िक्र उत्तर हिन्दुस्तान के किसानों की चरचा करते हुए हमने किया है. हमारा विचार है कि मुक़ामी सरकार इस बात पर ध्यान दे कि क्या मालगुज़ारी बन्दोबस्त के मातहत सरकारी रैयतों को यह हक़ हासिल है कि वह दूसरों को लगान पर खेत दे सकें और अगर ऐसा है तो सरकार को चाहिये कि वह ऐसे काश्तकारों को मानता दे और जो रक़बा काश्तकारों के क़बज़े में है, जो लगान वह देते हैं और इनके लगान दारी की प्रथा सब का इन्द्राज सरकारी काग़ज़ों में कराए."

खाता नम्बर दस

मदरास के सूबे में किसानों के हक़ को जायज़ बतलाने वाले आज भी वह रजिस्टर नहीं हैं जो हिन्दुस्तान के दूसरे रैयत वारी इलाक़ों जैसे बम्बई वग़ैरा में हैं. हर गांव में

بات کا اطمینان ہوجائے کہ اسے آئے دن کھیت نہ چھوڑنا پڑے گا. اِس مانگ کے پیچھے ایک اتہاس ہے. کسانوں کو پہلے ایسے ادھیکار اور سودھائیں حاصل تھیں. دھیرے دھیرے ایسٹ انڈیا کمپنی نے کسانوں سے یہ ادھیکار چھین کر ایک ایسے طبقے کے ہاتھ میں زمین سونپی جو کمپنی کو مالگذاری وصول کرکے دے دیا کرے . اِس بات کو سامنے رکھ کر ہی ہمیں کانگریس کے کارنامے کو دیکھنا اور سمجھنا چاہئے .

اکال کمیشن کی سفارشیں

پوری حالت سمجھنے کے لئے یہ بھی ضروری ہے کہ ہم 1880 کے اکال کمیشن کی سفارشوں کے بارے میں بھی جان لیں . کمیشن نے تین اہم سفارشیں کی تھیں: پہلی یہ تھی کہ زمینداری علاقوں میں لگان داروں کی ملکیت کے حق میں بڑھوتی کی جائے. دوسری یہ کہ شکمی پٹہ داری پر روک لگائی جائے کیونکہ شروع کے رعیتوں سے کچھ ایسے لوگوں نے زمین خرید لی ہے جو دیہاتوں میں نہیں رہتے اور من مانے داموں پر شکمی کاشتکاروں کو کھیت دیتے ہیں. تیسری سفارش نیچے کے شبدوں میں یہ تھی کہ رعیت واری علاقوں میں بھی شکمی پٹہ داری پر روک لگائی جائے .

"جو لوگ سرکاری کاغذوں میں رعیت مانے جاتے ہیں اُن کا یہ رخ ہے کہ وہ کسانوں کو کھیت لگان پر دیتے ہیں اور اِس طرح سرکاری لگان ادا کرنے کے بعد جو رقم ان کے پاس بچ رہتی ہے اُس سے اپنا گزارا چلاتے ہیں . اس طرح اُن شکمی کسانوں کا ایک طبقہ پیدا ہوتا جا رہا ہے جو ہمیشہ کے لئے کھیت سے فائدہ نہیں اُٹھا سکتا اور اُسے اِتنا زیادہ لگان دینا پڑتا ہے کہ یہ ضروری ہو جاتا ہے کہ وہ ہمیشہ غریب رہے . اِن کاشتکاروں کو سرکاری مانتا نہیں ملی. ایسے طبقے کے وجود سے وہی برائیاں پیدا ہوتی ہیں جن کا ذکر اُتر ہندستان کے کسانوں کی چرچا کرتے ہوئے ہم نے کیا ہے . ہمارا وچار ہے کہ مقامی سرکار اِس بات پر دھیان دے کہ کیا مالگذاری بندوبست کے ماتحت سرکاری رعیتوں کو یہ حق حاصل ہے کہ وہ دوسروں کو لگان پر کھیت دے سکیں اور اگر ایسا ہے تو سرکار کو چاہئے کہ وہ ایسے کاشتکاروں کو مانتا دے اور جو رقبہ کاشتکاروں کے قبضے میں ہے' جو لگان وہ دیتے ہیں اور اُن کے لگان داری کی پرتھا سب کا اندراج سرکاری کاغذوں میں کرائے".

کھاتہ نمبر دس

مدراس کے صوبے میں کسانوں کے حق کو جائز بتانے والے آج بھی وہ رجسٹر نہیں ہیں جو ہندستان کے دوسرے رعیت واری علاقوں جیسے بمبئی وغیرہ میں ہیں. ہر گاؤں میں

को रैयतवारी और ज़मींदारी दोनों इलाक़ों में पीढ़ियों से खेत पर क़बज़ा रखने का जो हक़ था वह पिछली सदी में ख़तम हो गया.

1880 का अकाल कमीशन

मदरास के किसानों की हालत की चरचा 1880 के अकाल कमीशन की रिपोर्ट में भी पाई जाती है. इस वक़्त तक खेत नक़द लगान पर उठने शुरू हो गए थे और किसानों के क़बज़े के हक़ ख़तम हो गए थे उत्तर मदरास के 'उलकुडी' और दक्खिन के 'कुदीम' उस समय तक ही खेत पर कबज़ा रख सकते थे जब तक कि मीरासीदार की मरज़ी हो. पैदावार में मीरासीदार का हिस्सा बढ़ गया था.

मदरास सरकार ने अकाल कमीशन के सामने एक मेमोरेन्डम पेश किया था. उस में मदरास के मालगुज़ारी बोर्ड ने लगानदारी के बारे में नीचे लिखी बातें कही हैं :

"1871-72 में बोर्ड ने खेती करने वाली आबादी की गिनती की. कुल 71 लाख आदमी इस पेशे में लगे हुए हैं. इन में 20 लाख सत्तर हज़ार ऐसे हैं जो खेतों पर काम ज़रूर करते हैं लेकिन उनका अपना कोई खेत नहीं है 32 लाख पचास हज़ार ऐसे हैं जिन के पास कुछ ज़मीन है और जो तीस रुपया से कम मालगुज़ारी अदा करते हैं. यह लोग मेहनत मज़दूरी करते हैं या अपनी ज़मीन को लगान पर दे कर पेट पालते हैं. पांच लाख के क़रीब ऐसे लोग हैं जिन के पास थोड़ी बहुत ज़मीन भी है लेकिन वह व्योपार वग़ैरा करते हैं. बारह लाख पचास हज़ार आदमी लगान पर खेत उठाते हैं और उसी से गुज़ारा चलाते हैं. इस बारह लाख में से 1800 पट्टेदार ऐसे हैं जो पांच सौ रुपया और उससे ऊपर मालगुज़ारी अदा करते हैं और 5,288 ऐसे पट्टेदार हैं जो 250 रुपया से लेकर पांच सौ रुपया तक मालगुज़ारी अदा करते हैं."

ब्रह्मन ज़मींदारों की लूट

ऊपर के मेमोरेन्डम में ही छिंगलीपट के कलक्टर मिस्टर प्राइस ने इस बात की सख़्त शिकायत की है कि ब्रह्मन ज़मींदार ज़मीन को परती रखते हैं और उन्होंने यह भी कहा है कि चालीस फ़ी सदी ज़मीन ऐसे ज़मींदारों के क़बज़े में है जो न तो किसानी का पेशा ही करते हैं और न गांव में ही रहते हैं. यह लोग किसानों को ख़ूब चूसते हैं और हर तरीक़े से रक़म हज़म करने की कोशिश में रहते हैं. उनका कहना है कि जब से वह इस ज़िले में आए थे उन्होंने आधे दरजन भी खाते पीते काश्तकार नहीं देखे.

कांगरेस राज और किसान

आज मदरास का किसान इस बात की मांग करता है कि कम से कम जायज़ लगान मुक़र्रर हो जाय और इस

کو رعیت‌واری اور زمینداری دونوں علاقوں میں پیڑھیوں سے کھیت پر قبضہ رکھنے کا جو حق تھا وہ پچھلی صدی میں ختم ہوگیا .

1880 کا اکال کمیشن

مدراس کے کسانوں کی حالت کی چرچا 1880 کے اکال کمیشن کی رپورٹ میں بھی پائی جاتی ہے . اس وقت تک کھیت نقد لگان پر اُٹھنے شروع ہوگئے تھے اور کسانوں کے قبضے کے حق ختم ہوگئے تھے . اُتر مدراس کے 'اُلکُڈی' اور دکھن کے 'کدیم' اُس سمے تک ہی کھیت پر قبضہ رکھ سکتے تھے جب تک کہ میراثی‌دار کی مرضی ہو . پیداوار میں میراثی‌دار کا حصہ بڑھ گیا تھا .

مدراس سرکار نے اکال کمیشن کے سامنے ایک میمورنڈم پیش کیا تھا . اُس میں مدراس کے مالگذاری بورڈ نے لگانداری کے بارے میں نیچے لکھی باتیں کہی ہیں :

"1871-72 میں بورڈ نے کھیتی کرنے والی آبادی کی گنتی کی . کل 71 لاکھ آدمی اس پیشے میں لگے ہوئے ہیں . اِن میں سے 20 لاکھ ستر ہزار ایسے ہیں جو کھیتوں پر کام ضرور کرتے ہیں لیکن اُن کا اپنا کوئی کھیت نہیں ہے: 32 لاکھ پچاس ہزار ایسے ہیں جن کے پاس کچھ زمین ہے اور جو تیس روپیہ سے کم مالگذاری ادا کرتے ہیں . یہ لوگ محنت مزدوری کرتے ہیں یا اپنی زمین کو لگان پر دے کر پیٹ پالتے ہیں . پانچ لاکھ کے قریب ایسے لوگ ہیں جن کے پاس تھوڑی بہت زمین بھی ہے لیکن وہ بیوپار وغیرہ کرتے ہیں . بارہ لاکھ پچاس ہزار آدمی لگان پر کھیت اُٹھاتے ہیں اور اُسی سے گزارا چلاتے ہیں . اِس بارہ لاکھ میں سے 1800 پٹےدار ایسے ہیں جو پانچ سو روپیہ اور اُس سے اوپر مالگذاری ادا کرتے ہیں اور 5,288 ایسے پٹےدار ہیں جو 250 روپیہ سے لے کر پانچ سو روپیہ تک مالگذاری ادا کرتے ہیں".

برہمن زمینداروں کی لوٹ

اوپر کے میمورنڈم میں ہی چھنگلی‌پٹ کے کلکٹر مسٹر پرائس نے اِس بات کی سخت شکایت کی ہے کہ برہمن زمیندار زمین کو پرتی رکھتے ہیں اور اُنہوں نے یہ بھی کہا ہے کہ چالیس فی‌صدی زمین ایسے زمینداروں کے قبضے میں ہے جو نہ تو کسانی کا پیشہ ہی کرتے ہیں اور نہ گاؤں میں ہی رہتے ہیں . یہ لوگ کسانوں کو خوب چوستے ہیں اور ہر طریقے سے رقم ہضم کرنے کی کوشش میں رہتے ہیں . اُن کا کہنا ہے کہ جب سے وہ اِس ضلع میں آئے تھے اُنہوں نے آدھے درجن بھی کھاتے پیتے کاشتکار نہیں دیکھے .

کانگریس راج اور کسان

آج مدراس کا کسان اِس بات کی مانگ کرتا ہے کہ کم سے کم جائز لگان مقرر ہو جائے اور اِس

व्योपारियों ने इस उम्मीद में धन लगाना शुरू किया कि उन्हें कम से कम छै फ़ी सदी मुनाफ़ा तो ज़रूर ही होगा. बड़े बड़े वकीलों और उन लोगों ने जिन्होंने शहरों में काफ़ी रुपया कमाया था अपने धन से ज़मीन ख़रीदने को बहुत अच्छा और सुरक्षित व्योपार समझा. गांव के वह छोटे छोटे लोग जिन के पास ज़मीन की मिल्कियत का हक़ था किसानों को लगान पर खेत दे देते थे और धीरे धीरे लगान वसूल कर के अपना गुज़ारा चलाते थे इस के अलावा उन के पास पेट पालने का और कोई साधन नहीं था. ऐसे लोग दिन पर दिन ग़रीब होते गए और आख़ीर में ज़मीन बेचने, गिरवीं रखने के अलावा और कोई चारा न रह गया. इस तरह गांव की माली व्यवस्था में और ज़ियादा केन्द्रीकरन शुरू हुआ. एक तरफ़ मुट्ठी भर लोगों का ज़ियादा से ज़ियादा ज़मीन पर क़बज़ा होने लगा और दूसरी तरफ़ ज़ियादा से ज़ियादा लोग उन खेतों से भी हाथ धो बैठे जिन पर किसी न किसी सूरत में उनका क़बज़ा था.

श्री श्रीनिवास राघव आयंगर ने मदरास राज की चालीस साला उन्नति पर एक मेमोरन्डम लिखा है. उस में उन्होंने 1850 और 1890 के बीच में लगानदारी के तरीक़े में जो विकास हुआ है उसकी भी चरचा की है. वह लिखते हैं :—

"ग़ल्ले या नक़द के रूप में लगान लेने का तरीक़ा तनजौर ज़िले में ख़तम सा हो रहा है. साझे की खेती का रिवाज बढ़ रहा है."

"दक्खिनी अरकाट के किसान ऐसे लगानदार हैं जिन्हें खेत पर क़बज़ा रखने का उस समय तक अधिकार है जब तक कि वह ख़ुद उस हक़ के इस्तेमाल से इस्तीफ़ा न दे दें. निजी ताल्लुक़ों पर किसान नौकरी करते हैं. और ऐसे नौकरों को 'पदयाल' कहा जाता है. ताल्लुक़ेदार और किसान के बीच में बिचौलिये होते हैं. यह बिचौलिये किसानों को ज़मीन लगान पर देते हैं. लगान नक़दी शकल में भी लिया जाता है लेकिन अधिकतर ग़ल्ले के रूप में ही लेने की कोशिश बिचौलिये करते हैं. बिचौलिये जब चाहें किसान को फ़सल के ख़तम होने पर खेत से हटा सकते हैं."

अंगरेज़ों ने उत्तरी हिन्दुस्तान में मालगुज़ारी की वसूली के लिये ज़मींदार पैदा किये थे. उन्हें इससे फ़ायदा हुआ था. उन्होंने यही तरीक़े यहां भी लागू करने चाहे. अंगरेज़ों ने मालगुज़ारी की जो लम्बी लम्बी रक़म मुक़र्रर कर रखी थी उसकी वसूली के लिये ज़रूरी था कि वह मीरासीदारों को ज्यों का त्यों बना रहने दें. जिस तरह उन्होंने ज़मींदार को ज़मीन का मालिक बना दिया था उसी तरह मीरासीदार को भी ज़मीन का मालिक बना दिया. इन मीरासीदारों के नीचे जो किसान थे उनको कोई क़ानूनी हक़ खेत पर नहीं दिया गया. नतीजा यह हुआ कि किसान

بیوپاریوں نے اِس اُمید میں دھن لگانا شروع کیا کہ اُنہیں کم سے کم چھ فیصدی منافع تو ضرور ہی ہوگا ۔ بڑے بڑے وکیلوں اور اُن لوگوں نے جنہوں نے شہروں میں کافی روپیہ کمایا تھا اپنے دھن سے زمین خریدنے کو بہت اچھا اور سرکشت بیوپار سمجھا ۔ گاؤں کے وہ چھوٹے چھوٹے لوگ جن کے پاس زمین کی ملکیت کا حق تھا کسانوں کو لگان پر کھیت دے دیتے تھے اور دھیرے دھیرے لگان وصول کرکے اپنا گزارا چلاتے تھے ۔ اِس کے علاوہ اُن کے پاس پیٹ پالنے کا اور کوئی سادھن نہیں تھا ۔ ایسے لوگ دن پر دن غریب ہوتے گئے اور آخیر میں زمین بیچنے' گروی رکھنے کے علاوہ اور کوئی چارہ نہ رہ گیا ۔ اِس طرح گاؤں کی مالی ویوستھا میں اور زیادہ کیندری کرن شروع ہوا۔ ایک طرف مٹھی بھر لوگوں کا زیادہ سے زیادہ زمین پر قبضہ ہونے لگا اور دوسری طرف زیادہ سے زیادہ لوگ اُن کھیتوں سے بھی ہاتھ دھو بیٹھے جن پر کسی نہ کسی صورت میں اُن کا قبضہ تھا ۔

شری شری نواس راگھو آئنگر نے مدراس راج کی چالیس سالا اُنتی پر ایک میمورنڈم لکھا ہے. اُس میں اُنہوں نے 1850 اور 1890 کے بیچ میں لگان داری کے طریقے میں جو وکاس ہوا ہے اُس کی بھی چرچا کی ہے. وہ لکھتے ہیں:—

"غلے یا نقد کے روپ میں لگان لینے کا طریقہ تنجور ضلعے میں ختم سا ہو رہا ہے ۔ ساجھے کی کھیتی کا رواج بڑھ رہا ہے".

"دکھنی ارکاٹ کے کسان ایسے لگان دار ہیں جنہیں کھیت پر قبضہ رکھنے کا اُس سمے تک ادھیکار ہے جب تک کہ وہ خود اُس حق کے استعمال سے استعفیٰ نہ دے دیں. نجی تعلقوں پر کسان نوکری کرتے ہیں اور ایسے نوکروں کو 'پدیال' کہا جاتا ہے ۔ تعلقہ دار اور کسان کے بیچ میں بچولئے ہوتے ہیں ۔ یہ بچولئے کسانوں کو زمین لگان پر دیتے ہیں۔ لگان نقدی شکل میں بھی لیا جاتا ہے لیکن ادھکتر غلے کے روپ میں ہی لینے کی کوشش بچولئے کرتے ہیں ۔ بچولئے جب چاہیں کسانوں کو فصل کے ختم ہونے پر کھیت سے ہٹا سکتے ہیں".

انگریزوں نے اُتری ہندستان میں مالگذاری کی وصولی کے لئے زمیندار پیدا کئے تھے. اُنہیں اِس سے فائدہ ہوا تھا ۔ اُنہوں نے یہی طریقے یہاں بھی لاگو کرنے چاہے ۔ انگریزوں نے مالگذاری کی جو لمبی لمبی رقم مقرر کر رکھی تھی اُس کی وصولی کے لئے ضروری تھا کہ وہ میراثی داروں کو جوں کا توں بنا رہنے دیں ۔ جس طرح اُنہوں نے زمیندار کو زمین کا مالک بنا دیا تھا اُسی طرح میراثی دار کو بھی زمین کا مالک بنا دیا. اِن میراثی داروں کے نیچے جو کسان تھے اُن کو کوئی قانونی حق کھیت پر نہیں دیا گیا ۔ نتیجہ یہ ہوا کہ کسان

हक़ है और उनके मरने के बाद वह हक़ उनकी औलाद को हासिल हो जाता है. 'कुडीमिरास' वह लोग होते हैं जो ज़मीन के मालिक होते हैं और जो मिलकियत का हक़ दूसरे को भी दे सकते हैं."

पैदायशी अछूत काश्तकार

इसी तरह के और बहुत से एतबार के क़ाबिल कागज़ों से इस बात को सिद्ध किया जा सकता है कि मद्रास में ज़मीन पर किसान का क़बज़ा पीढ़ियों से चला आता था और बहुत सी सूरतों में उसे मिल्कियत का हक़ तबदील करने का भी अधिकार था.

मद्रास मालगुज़ारी बोर्ड के एक मेम्बर मिस्टर ए. डी. केम्पबिल ने सर थामस मुनरो के लिये एक रिपोर्ट तैयार की थी. उसमें उन्हों ने लिखा है:

"मीरासीदारों का क़बज़ा होने के बजाय गांव में और खास कर ब्रह्मन गांव में अछूत ही खेतों को बोते जोतते हैं. यह लोग जन्म के आधार पर खेती का पेशा अख़्तियार करते हैं." लेकिन क़ानून ऐसे क़बजे को नहीं मानता.

प्रिवी कौंसिल के एक अहम फ़ैसले का ज़िकर यहां ग़ैर ज़रूरी न होगा. यह इसी बात से सम्बन्ध रखता है. त्रिचनापल्ली के बीसियों गांव में किसान पिढ़ियों से खेत पर जुताई बोआई करता था और ज़मीन उसके क़बजे में भी होती थी फिर भी उसका क़ानूनी क़बज़ा नहीं माना जाता था. इस नुक़ते को ले कर प्रिवी कौंसिल में एक मुक़दमा चला था जिसमें प्रिवी कौंसिल ने बोने जोतने वाले को ज़मीन का मालिक माना था.

इस तरह के सारे मुक़दमे प्रिवी कौंसिल तक नहीं पहुँच सकते थे. सरकार को चाहिये था कि प्रिवी कौंसिल के फ़ैसले के आधार पर वह कोई क़ानून बना देती. पर सरकार ने इस सम्बन्ध में कुछ न किया. उलटे किसान के क़रज़े पर ठेके के अनुसार क़बज़ेदारों को तरजीह दे दी गई. मातहत कचहरियों ने ऐसे मुक़दमों में अपने क़बज़े के सबूत का बोझ किसानों के कंधों पर डाल दिया जो उन के लिये बहुत मुश्किल हो गया. मालगुज़ारी के प्रबंधकारों का उद्देश सिर्फ़ ऐसे आदमी को मुक़र्रर करना था जो मालगुज़ारी अदा कर दिया करे. उन्होंने जानबूझ कर खेत के जोतने वालों की तरफ़ से लापरवाही बरती. नतीजा यह हुआ कि खेत तो किसान के क़बज़े में रहा लेकिन क़ानून ने उसका क़बज़ा न माना.

खेती पर ब्योपारियों की नज़र

उन्नीसवीं सदी जब आधा चक्कर पूरा कर रही थी तो परिस्थिति में एक तबदीली आई. खेती की पैदावार का दाम बढ़ने की वजह से ज़मीन भी ब्योपार की चीज़ बन गई.

حق ھے اور اُن کے مرنے کے بعد، وہ حق اُن کی اولاد کو حاصل ہو جاتا ھے. 'کڑی میراسی' وہ لوگ ہوتے ھیں جو زمین کے مالک ہوتے ھیں اور جو ملکیت کا حق دوسرے کو بھی دے سکتے ھیں."

پیدائشی اچھوت کاشتکار

اسی طرح کے اور بہت سے اعتبار کے قابل کاغذوں سے اِس بات کو سدھ کیا جاسکتا ھے کہ مدراس میں زمین پر کسان کا قبضہ پیڑھیوں سے چلا آتا تھا اور بہت سی صورتوں میں اُسے ملکیت کا حق تبدیل کرنے کا بھی ادھیکار تھا.

مدراس مالگذاری بورڈ کے ایک ممبر مسٹر اے. ڈی. کیمپبل نے سرتھامس منرو کے لئے ایک رپورٹ تیار کی تھی. اُس میں اُنہوں نے لکھا ھے:

"میراسی‌داروں کا قبضہ ہونے کے بجائے گاؤں میں اور خاص کر برہمن گاؤں میں اچھوت ہی کھیتوں کو بوتے جوتتے ھیں، یہ لوگ جنم کے آدھار پر کھیتی کا پیشہ اختیار کرتے ھیں". لیکن قانون ایسے قبضے کو نہیں مانتا.

پریوی کونسل کے ایک اہم فیصلے کا ذکر یہاں غیر ضروری نہ ہوگا. یہ اسی بات سے سمبندھ رکھتا ھے. ترچناپلی کے بیسیوں گاؤں میں کسان پیڑھیوں سے کھیت پر جتائی بوائی کرتا تھا اور زمین اُس کے قبضے میں بھی ہوتی تھی پھر بھی اُس کا قانونی قبضہ نہیں مانا جاتا تھا. اِس نقطے کو لے کر پریوی کونسل میں ایک مقدمہ چلا تھا جس میں پریوی کونسل نے بونے جوتنے والے کو زمین کا مالک مانا تھا.

اِس طرح کے سارے مقدمے پریوی کونسل تک نہیں پہونچ سکتے تھے. سرکار کو چاہئے تھا کہ پریوی کونسل کے فیصلے کے آدھار پر وہ کوئی قانون بنا دیتی. پر سرکار نے اِس سمبندھ میں کچھ نہ کیا. اُلٹے کسان کے قرضے پر ٹھیکے کے انوسار قبضےداروں کو ترجیح دے دی گئی. ماتحت کچہریوں نے ایسے مقدموں میں اپنے قبضے کے ثبوت کا بوجھ کسانوں کے کندھوں پر ڈال دیا جو اُن کے لئے بہت مشکل ہوگیا. مالگذاری کے پربندھکاروں کا اُدیش صرف ایسے آدمی کو مقرر کرنا تھا جو مالگذاری ادا کردیا کرے. اُنہوں نے جان بوجھ کر کھیت کے جوتنے والوں کی طرف سے لاپرواہی برتی. نتیجہ یہ ہوا کہ کھیت تو کسان کے قبضے میں رہا لیکن قانون نے اُس کا قبضہ نہ مانا.

کھیتی پر بیوپاریوں کی نظر

اُنیسویں صدی جب آدھا چکر پورا کر رہی تھی تو پرستھتی میں ایک تبدیلی آئی. کھیتی کی پیداوار کا دام بڑھنے کی وجہ سے زمین بھی بیوپار کی چیز بن گئی.

मालगुज़ारी बोर्ड की 5 जनवरी 1814 के काग़ज़ों में भी हमें यही चीज़ देखने को मिलती है:

"तमिल के बहुत से इलाक़ों में और ख़ास कर तनजोर सूबे के इलाक़ों में किसानों के बहुत से अधिकार ब्रह्मनों ने ख़रीद लिये हैं, या उनको ज़बरदस्ती हासिल कर लिये हैं. ब्रह्मन ही अब रैयत बन गए हैं. लेकिन ऐसा मालूम होता है कि शुरू में तमिल के 'विलासकों' 'कोमबेचों' और उत्तर सरकार के 'रेड्डियों' और 'नायडुओं' की ज़मीन की मिल्कियत के हक़ सारे हिन्दुस्तान में हासिल थे."

उन्नीसवीं सदी का आरम्भ

यह बात पूरी तरह से सिद्ध हो चुकी है कि उन्नीसवीं सदी के शुरू में दो तरह के किसान थे. एक 'उलकुदुस' और दूसरे 'पुराकुडुस'. इन लोगों को ज़मीन पर विरासती क़ब्ज़े का हक़ था. लेकिन यह लोग मिल्कियत को दूसरे के नाम नहीं कर सकते थे. बाद में जब जोतने वालों की कमी होने लगी तो 'उलकुदुस' किसानों को इजाज़त दे दी गई कि अगर उनके कोई औलाद न हो तो वह दूसरे को ज़मीन दे सकते हैं. उन्हें इस बात की भी इजाज़त दे दी गई कि अगर उन्होंने खेत को तरक़्क़ी देने पर अपना धन ख़र्च किया है तो वह खेत बेच सकते हैं. मिरासीदार सिर्फ़ 'थन्डुवरम' के रूप में पैदावार का साढ़े बारह फ़ी सदी किसान से ले सकता था. 'थन्डुवरम' उस ज़मीन की फ़ीस के रूप में लिया जाता था जो ग़ैर मीरासियों को जोतने के लिये दी जाती थी. 'पुराकुडी' किसान आम तरीक़े से गांव में नहीं रहते थे. इन लोगों ने भी गांव में रहना शुरू कर दिया. "ऐसे किसान जब तक लगान अदा करते रहते थे उन्हें अपनी ज़मीन पर पूरा हक़ रहता था और उनकी औलाद को भी हक़ मिलता था."

लगानदारों की अलग अलग क़िस्में

उन्नीसवीं सदी के बीच में मद्रास में कितने तरह के लगानदार थे इसका पता मद्रास हाईकोर्ट में चलने वाले एक मुक़दमे के फ़ैसले से चलता है. उसमें लिखा है:

पनाइल यानी वह किसान जिन्हें ज़मीन पर कोई हक़ नहीं है या 'असालीट पुराकुडस, यानी वे घर बार किसान 'उलर पुराकुडस' यानी गांव में न रह कर खेती करने वाले किसान बन जाते हैं और वह अपने को 'अबलावदाई' लगानदार कहते हैं. 'अबलावदाई' किसान वह हैं जिन्हें खेत पर कुछ दिनों क़ब्ज़ा रखने का हक़ होता है और जो न तो मिरासी होते हैं और न विरासती क़ब्ज़े का उन्हें अधिकार होता है. 'अबलावदी मीरास' वह किसान होते हैं जिन्हें ज़मीन पर हमेशगी के क़ब्ज़े का हक़ होता है. 'अबलावदसी कुडु मीरास' वह किसान हैं जिन्हें हमेशगी के क़ब्ज़े का भी

مالگذاری بورڈ کی 5 جنوری 1814 کے کاغذوں میں بھی ہمیں یہی چیز دیکھنے کو ملتی ہے:

"تمل کے بہت سے علاقوں میں اور خاص کر تنجور صوبہ کے علاقوں میں کسانوں کے بہت سے ادھکار برہمنوں نے خرید لئے ہیں، یا ان کو زبردستی حاصل کر لئے ہیں. برہمن ہی اب رعیت بن گئے ہیں. لیکن ایسا معلوم ہوتا ہے کہ شروع میں تمل کے 'ویلاسکوں' 'کومبیچوں' اور اتر سرکار کے ریڈیوں اور نائیڈوؤں کو زمین کی ملکیت کے حق سارے ہندستان میں حاصل تھے."

انیسویں صدی کا آرمبھ

یہ بات پوری طرح سے سدھ ہو چکی ہے کہ انیسویں صدی کے شروع میں دو طرح کے کسان تھے. ایک 'الکو دس' اور دوسرے 'پورا کو ڈس' ان لوگوں کو زمین پر وراثتی قبضے کا حق تھا. لیکن یہ لوگ ملکیت کو دوسرے کے نام نہیں کر سکتے تھے. بعد میں جب جوتنے والوں کی کمی ہونے لگی تو 'الکو دس' کسانوں کو اجازت دے دی گئی کہ اگر ان کے کوئی اولاد نہ ہو تو وہ دوسرے کو زمین دے سکتے ہیں. انہیں اس بات کی بھی اجازت دے دی گئی اگر انہوں نے کھیت کو ترقی دینے پر اپنا دھن خرچ کیا ہے تو وہ کھیت بیچ سکتے ہیں. میراثی دار صرف 'تھنڈو ورم' کے روپ میں پیداوار کا ساڑھے بارہ فیصدی کسان سے لے سکتا تھا. 'تھنڈو ورم' اس زمین کی فیس کے روپ میں لیا جاتا تھا جو غیر میراثیوں کو جوتنے کے لئے دی جاتی تھی. 'پورا کوڑی' کسان عام طریقے سے گاؤں میں نہیں رہتے تھے. ان لوگوں نے بھی گاؤں میں رہنا شروع کر دیا. "ایسے کسان جب تک لگان ادا کرتے رہتے تھے انہیں اپنی زمین پر پورا حق رہتا تھا اور ان کو بھی حق ملتا تھا."

لگان داروں کی الگ الگ قسمیں

انیسویں صدی کے بیچ میں مدراس میں کتنے طرح کے لگان دار تھے اس کا پتہ مدراس ہائی کورٹ میں چلنے والے ایک مقدمے کے فیصلے سے چلتا ہے، اسمیں لکھا ہے:

"پنائل یعنی وہ کسان جنہیں زمین پر کوئی حق نہیں ہے یا 'اسالور پورا کو ڈس' یعنی بے گھر بار کسان 'الر پورا کوڈس' یعنی گاؤں میں نہ رہ کر کھیتی کرنے والے کسان بن جاتے ہیں اور یہ اپنے کو 'اولاو دائی' لگان دار کہتے ہیں. 'اولاودائی' کسان وہ ہیں جنہیں کھیت پر کچھ دنوں قبضہ رکھنے کا حق ہوتا ہے اور جو نہ تو میراثی ہوتے ہیں اور نہ وراثتی قبضے کا انہیں ادھیکار ہوتا ہے. 'اولاودیمیراس' وہ کسان ہوتے ہیں جنہیں زمین پر ہمیشگی کے قبضے کا حق ہوتا ہے. 'اولاودیسکودو میراس' وہ کسان ہیں جنہیں ہمیشگی کے قبضے کا بھی

सवाल आता है तो बाज़ार के बढ़े हुए भाव के आधार पर या आगे बढ़ने की उम्मीद के आधार पर लगान बढ़ा दिया जाता है. इसी कारन किसी किसान के पास एक साल से ज़ियादा दिनों तक खेत नहीं रहने पाता. क़ुदरती तौर पर किसान को पैदावार बढ़ाने की लगन नहीं रहती क्योंकि वह जानता है कि पैदावार बढ़ाने से उस का लगान भी बढ़ जायगा.

किसी सूरत में भी ज़मींदार पूरा का पूरा लगान माफ़ नहीं करता. जब पानी बिलकुल ही नहीं बरसता और फ़सल बिलकुल ही ख़राब हो जाती है तो लगान में कुछ कमी ज़रूर की जाती है. यह कमी एक आध आदमियों के लिये नहीं की जाती बल्कि पूरे पूरे गांव के किसानों के लिये की जाती है. इन हालतों में आम तरीक़े से मुक़र्रर लगान को 'वर्म लगान' में तबदील कर दिया जाता है, 'वर्म' उस लगान को कहते हैं जो ज़मीन का मालिक पैदावार का कुछ हिस्सा किसान से लगान की सूरत में ले लेता है और नक़द दाम नहीं मांगता. इस तरह किसान को नुक़सान भुगतना पड़ता है. उसकी लागत भी वसूल नहीं हो पाती. सच्ची बात यह है कि लगान में छूट देने का कोई नियम न होने की वजह से किसान हमेशा घाटे में रहता है.

केवल मालाबार में लम्बी मियाद की लगानदारी की सूरत में किसान को खेत को तरक़्क़ी देने का मुआवज़ा मिलता है. कम मियाद वाली लगानदारी मे वह भी नहीं मिलता.

ऊपर की बातों से साफ़ पता लगता है कि रैयतवारी इलाक़े का किसान बिलकुल मालिक की मरज़ी पर है हर फ़सल के साथ लगानदारी का उसका हक़ ख़तम हो जाता है. मौरूसी और लम्बी मियाद के लगानदारी के आधार पर भी वह कोई अधिक हक़ नहीं पा सकता.

लगानदार का हक़—एक तारीख़ी झलक

रैयतवारी लगानदार हमेशा से आज की तरह दुखी नहीं थे. ईस्ट इंडिया कम्पनी के शुरू के काग़ज़ों, मालगुज़ारी बोर्ड के रेकार्डों और शुरू शुरू के बृटिश राज के कलक्टरों के छोड़े हुए नोट इस बात के सबूत हैं कि मदरास में बहुत दिनों तक रैयतवारी लगानदारों को मिल्कियत का हक़ था. इस बात का ज़िक्र मदरास के कलक्टर मिस्टर प्लेस की 6 जून 1799 की रिपोर्ट में मिलता है. यह रिपोर्ट ईस्ट इंडिया कम्पनी के मसलों पर ख़ास कमेटी की पांचवीं रिपोर्ट की सोलहवीं जोड़ की सूरत में छपी है.

1814 के एक कलक्टर की गवाही

1814 में मदरास के कलक्टर मिस्टर एफ़. डब्लू. एलेस ने भी लिखा है कि किसानों को ज़मीन पर हमेशगी के क़ब्ज़े का हक़ था.

آتا ھے تو بازار کے بڑھے ھوئے بھاؤ کے آدھار پر یا آگے بڑھنے کی اُمید کے آدھار پر لگان بڑھا دیا جاتا ھے ۔ اسی کارن کسی کسان کے پاس ایک سال سے زیادہ دنوں تک کھیت نہیں رہنے پاتا ۔ قدرتی طور پر کسان کو پیداوار بڑھانے کی لگن نہیں رہتی کیونکہ وہ جانتا ھے کہ پیداوار بڑھانے سے اُس کا لگان بھی بڑھ جائے گا ۔

کسی صورت میں بھی زمیندار پورا کا پورا لگان معاف نہیں کرتا ۔ جب پانی بالکل ھی نہیں برستا اور فصل بالکل ھی خراب ھو جاتی ھے تو لگان میں کچھ کمی ضرور کی جاتی ھے ۔ یہ کمی ایک آدھ آدمیوں کے لئے نہیں کی جاتی بلکہ پورے پورے گاؤں کے کسانوں کے لئے کی جاتی ھے ۔ ان حالتوں میں عام طریقے سے مقرر لگان کو ' ورم لگان ' میں تبدیل کر دیا جاتا ھے ۔ ' ورم ' اُس لگان کو کہتے ھیں جو زمین کا مالک پیداوار کا کچھ حصہ کسان سے لگان کی صورت میں لے لیتا ھے اور نقد دام نہیں مانگتا ۔ اِسطرح کسان کو نقصان بھگتنا پڑتا ھے ۔ اُسکی لاگت بھی وصول نہیں ھو پاتی ۔ سچی بات یہ ھے کہ لگان میں چھوٹ دینے کا کوئی نیم نہ ھونے کی وجہ سے کسان ھمیشہ گھاٹے میں رہتا ھے ۔

کیول مالا بار میں لمبی میعاد کی لگان داری کی صورت میں کسان کو کھیت کو ترقی دینے کا معاوضہ ملتا ھے ۔ کم میعاد والی لگان داری میں وہ بھی نہیں ملتا ۔

اوپر کی باتوں سے صاف پتہ لگتا ھے کہ رعیت واری علاقے کا کسان بالکل مالک کی مرضی پر ھے ۔ ھر فصل کے ساتھ لگان داری کا اُسکا حق ختم ھو جاتا ھے ۔ موروثی اور لمبی معاد کے لگانداری کے آدھار پر بھی وہ کوئی ادھک حق نہیں پا سکتا ۔

لگاندار کا حق—ایک تاریخی جھلک

رعیت واری لگاندار ھمیشہ سے آج کی طرح دکھی نہیں تھے ۔ ایسٹ انڈیا کمپنی کے شروع کے کاغذوں' مالگذاری بورڈ کے ریکارڈوں اور شروع شروع کے برٹش راج کے کلکٹروں کے چھوڑے ھوئے نوٹ اِس بات کا ثبوت ھیں کہ مدراس میں بہت دنوں تک رعیت واری لگان داروں کو ملکیت کا حق تھا. اس بات کا ذکر مدراس کے کلکٹر مسٹر پلیس کی 6 جون 1799 کی 'رپورٹ میں ملتا ھے ۔ یہ رپورٹ ایسٹ انڈیا کمپنی کے مسئلوں پر خاص کمیٹی کی پانچویں رپورٹ کی سولہویں جوڑ کی صورت میں چھپی ھے ۔

1814 کے ایک کلکٹر کی گواھی

1814 میں مدراس کے کلکٹر مسٹر ایف ۔ ڈبلو ۔ ایلس نے بھی لکھا ھے کہ کسانوں کو زمین پر ھمیشگی کے قبضے کا حق تھا ۔

हम अब दूसरी चीज़ों के साथ साथ यह दिखाने की कोशिश करेंगे कि मदरास की रैयतवारी प्रथा में किसान की क्या हालत है और किस तरह अनगिनत कमेटियों पर खामखा रुपया खर्च किया गया है. इनका कोई फ़ायदा नज़र नहीं आता. आज भी ज़मीन पर किसान को कोई हक़ नहीं है. इस मामले में दूसरे सूबों की कांगरेसी सरकारों के मुक़ाबले में भी मदरास सरकार बहुत पीछे रही है.

मदरास का रैयती काश्तकार

मदरास में ज़मीन की मिलकियत के बहुत से क़ायदे हैं—ज़मींदारी, इनामदारी, रैयतवारी, जनमी, मुलगानी वग़ैरा. मलाबार और दक्खिनी किनारे को छोड़ कर जहां कनमदार और मुलगानी काश्तकार, असली काश्तकार और रैयत के दरमियान बिचौलिये की हैसियत से हैं रियासत भर में ऐसे बिचौलियों को और कहीं भी क़ानूनी मानता नहीं मिली. बड़े बड़े निजी ताल्लुक़ों या संस्थाओं जैसे 'देवा-स्थानम' के ताल्लुक़ों में बड़े बड़े बिचौलिये होते हैं जो ताल्लुक़ों से ज़मीन लेकर छोटे छोटे किसानों को लगान पर देते हैं. लेकिन आम तरीक़े से रैयत खुद ही किसान से लेन देन रखता है.

लगान का तरीक़ा

सींचाउ ज़मीन पर धान और सूखी ज़मीन पर जौ वग़ैरा जैसी फ़सलों का लगान दो तरीक़े से तय होता है. एक तो लगान की प्रथा के आधार पर और दूसरे ज़मीन के उपजाऊपन और सिंचाई की आसानी के आधार पर. साझे की खेती में किसान को पूरी पैदावार का एक तिहाई से दो तिहाई तक ज़मींदार को देना पड़ता है. यही हालत उस मुक़र्ररा लगान की भी है जो जिन्स के रूप में लिया जाता है. किसान एक तिहाई अदा करे या दो तिहाई यह बात दो आधार पर तय होती है. एक तो लगान की प्रथा और ज़मीन के उपजाऊ पन और सिंचाई की आसानी के आधार पर और दूसरे इस आधार पर कि ज़मींदार कुल खर्च का कितना हिस्सा खुद बरदाश्त करता है. दक्खिनी ज़िलों में साझे की खेती का बहुत रिवाज है. अधिकतर अछूत और बहुत ही ग़रीब किसान इस तरह के काश्तकार होते हैं. मुक़र्ररा लगान पर वह किसान खेत लेते हैं जिन के पास कुछ न कुछ पैसा हो जाता है गन्ना, कपास, तम्बाकू और मोमफली ऐसी व्योपारी फसलें उगाने वाले खेतों का लगान नक़दी शकल में तय होता है. कुछ धनी किसान ही इस तरह के खेत ले पाते हैं. इन खेतों के लगान में बढ़ती होती रहती है.

व्योपारी फ़सलों के बाज़ार भाव को सामने रख कर इन खेतों का लगान तय होता है. जब नया पट्टा लिखने का

ہم اب دوسری چیزوں کے ساتھ ساتھ یہ دکھانے کی کوشش کریں گے کہ مدراس کی رعیت واری پرتھا میں کسان کی کیا حالت ہے اور کس طرح ان گنت کمیٹیوں پر خواہ مخواہ روپیہ خرچ کیا گیا ہے ۔ اِن کا کوئی فائدہ نظر نہیں آتا ۔ آج بھی زمین پر کسان کو کوئی حق نہیں ہے. اِس معاملے میں دوسرے صوبوں کی کانگریسی سرکاروں کے مقابلے میں بھی مدراس سرکار بہت پیچھے رہی ہے ۔

مدراس کا رعیتی کاشتکار

مدراس میں زمین کی ملکیت کے بہت سے قاعدے ہیں—زمینداری' انعام داری' رعیت واری' جنمی' ملگانی وغیرہ ۔ مالا بار اور دکھنی کنارے کو چھوڑ کر جہاں کنم دار اور ملگانی کاشتکار' اصلی کاشتکار اور رعیت کے درمیان بچولئے کی حیثیت سے ہیں ریاست بھر میں ایسے بچولیوں کو اور کہیں بھی قانونی مانتا نہیں ملی. بڑے بڑے نجی تعلقوں یا سنستھاؤں جیسے 'دیواستھانم' کے تعلقوں میں بڑے بڑے بچولئے ہوتے ہیں جو تعلقوں سے زمین لے کر چھوٹے چھوٹے کسانوں کو لگان پر دیتے ہیں. لیکن عام طریقے سے رعیت خود ہی کسان سے لین دین رکھتا ہے ۔

لگان کا طریقہ

سینچاؤ زمین پر دھان اور سوکھی زمین پر جو وغیرہ جیسی فصلوں کا لگان دو طریقے سے طے ہوتا ہے. ایک تو لگان کی پرتھا کے آدھار پر اور دوسرے زمین کے اپجاؤ پن اور سینچائی کی آسانی کے آدھار پر ۔ ساجھے کی کھیتی میں کسان کو پوری پیداوار کا ایک تہائی سے دو تہائی تک زمیندار کو دینا پڑتا ہے ۔ یہی حالت اُس مقررہ لگان کی بھی ہے جو جنس کے روپ میں لیا جاتا ہے ۔ کسان ایک تہائی ادا کرے یا دو تہائی یہ بات دو آدھار پر طے ہوتی ہے ۔ ایک تو لگان کی پرتھا اور زمین کے اپجاؤ پن اور سینچائی کی آسانی کے آدھار پر اور دوسرے اِس ادھار پر کہ زمیندار کل خرچ کا کتنا حصہ خود برداشت کرتا ہے ۔ دکھنی ضلعوں میں ساجھے کی کھیتی کا بہت رواج ہے ۔ ادھک تر اچھوت اور بہت ہی غریب کسان اسطرح کے کاشتکار ہوتے ہیں ۔ مقررہ لگان پر وہ کسان کھیت لیتے ہیں جن کے پاس کچھ نہ کچھ پیسہ ہو جاتا ہے ۔ گنا' کپاس' تمباکو اور موم پھلی ایسی بیوپاری فصلیں اگانے والے کھیتوں کا لگان نقدی شکل میں طے ہوتا ہے ۔ کچھ دھنی کسان ہی اِسطرح کے کھیت لے پاتے ہیں ۔ اِن کھیتوں کے لگان میں بڑھوتی ہوتی رہتی ہے ۔

بیوپاری فصلوں کے بازار بھاؤ کو سامنے رکھ کر اِن کھیتوں کا لگان طے ہوتا ہے ۔ جب نیا پٹہ لکھنے کا

खेती की आमदनी और क़र्ज़ 1945 में तमाम आबादी की औसत.

کھیتی کی آمدنی اور قرض—1945 میں تمام آبادی کی آوسط .

दर्जा درجہ	1	2	3	4	5	तमाम आबादी की आमदनी की औसत تمام آبادی کی آمدنی کی آوسط
	रुपया روپیہ	रुपया روپیہ	रुपया روپیہ	रुपया روپیہ	रुपया روپیہ	रुपया روپیہ
1. आमदनी एक ख़ानदान पर آمدنی ایک خاندان پر	4,332·1	1,339·6	687·5	686·1	477 7	902·3
2. आमदनी एक आदमी पर آمدنی ایک آدمی پر	347·7	201·7	116·1	108 9	91·7	144·4
3. क़र्ज़ा एक आदमी पर قرضہ ایک آدمی پر	113·3	64·1	37·6	21·3	8·3	40·8
4. औसत 3 : 4 آوسط	32·5	31·8	32 4	19·5	9·0	28·2

बम्बई यूनिवर्सिटी के डाक्टर वी. वी. सायन ने मदरास सूबे की किसान समस्या पर काफ़ी मेहनत और छानबीन की है. उन्होंने पता लगाया है कि जो ज़मीन खेती करने वाले किसानों, छोटे रैयतों और छोटा धन्दा करने वालों के पास थी वह अब ज़मींदारों, सौदागारों और सरमायादारों के पास पहुँचती जा रही है. इस बारे में दूसरा रुख़ यह है कि ज़मीन सकूनती ज़मींदारों के पास से ग़ैर सकूनती ज़मींदारों के क़ब्ज़े में पहुँच रही हैं. डाक्टर सायन ने यह बात बड़े ज़ोर से कही है कि क़र्ज़ देकर ज़मीन हड़पने का तरीक़ा देश के दूसरे हिस्सों में भी आम हो चला है.

तामिलनाद कांगरेस कमेटी के पैम्फ़लेट से पता चलता है कि सन 1945-46 से लेकर अब तक आमदनी का जो कुछ भी बटवारा किया गया है वह बड़े ज़मींदारों के हक़ में हो रहा है. ज़रूरी पैदावार की क़ीमतें बढ़ती जाती हैं. ख़ास तौर से अनाज के दाम बहुत बढ़ गए हैं. इस बढ़ौती से जो नफ़ा होता है वह बड़े ज़मींदारों के हिस्से में ही आता है क्योंकि उन्हीं के पास बेचने के लिये बहुत सा माल होता है.

بمبئی یونیورسٹی کے ڈاکٹر وی . وی . سائن نے مدراس صوبے کی کسان سمسیا پر کافی محنت اور چھان بین کی ھے . انہوں نے پتہ لگایا ھے کہ جو زمین کھیتی کرنے والے کسانوں' چھوٹے رعیتوں اور چھوٹا دھندا کرنے والوں کے پاس تھی وہ اب زمینداروں' سوداگروں اور سرمایہداروں کے پاس پہونچتی جا رھی ھے . اِس بارے میں دوسرا رخ یہ ھے کہ زمین سکونتی زمینداروں کے پاس سے غیر سکونتی زمینداروں کے قبضے میں پہونچ رھی ھے.

ڈاکٹر سائن نے یہ بات بڑے زور سے کہی ھے کہ قرض دے کر زمین ھڑپنے کا طریقہ دیش کے دوسرے حصوں میں بھی عام ھو چلا ھے .

تامل ناد کانگریس کمیٹی کے پمفلٹ سے پتہ چلتا ھے کہ سن 1945-46 سے لے کر اب تک آمدنی کا جو کچھ بھی بٹوارا کیا گیا ھے وہ بڑے زمینداروں کے حق میں ھو رھا ھے . ضروری پیداوار کی قیمتیں بڑھتی جاتی ھیں. خاص طور سے اناج کے دام بہت بڑھ گئے ھیں . اِس بڑھوتی سے جو نفع ھوتا ھے وہ بڑے بڑے زمینداروں کے حصے میں ھی آتا ھے کیونکہ انہیں کے پاس بیچنے کے لئے بہت سا مال ھوتا ھے .

"लगानदार चौथे दरजे में शुमार किये जाते हैं. इन पर एक आदमी पीछे 4 फ़ी सदी क़रज़ा बढ़ा है. जहां तक बे जमीन वालों की बात है उनकी हालत इस से भी ज़ियादा ख़तरनाक है. इनका क़रज़ा 45·6 फ़ी सदी तक पहुँच गया है.

"لگاندار چوتھے درجے میں شمار کئے جاتے ہیں . ان پر ایک آدمی پیچھے 4 فی صدی قرضہ بڑھا ہے. جہاں تک بےزمین والوں کی بات ہے اُن کی حالت اِس سے بھی زیادہ خطرناک ہے . ان کا قرضہ 45·6 فی صدی تک پہونچ گیا ہے".

नीचे लिखा टेबिल श्री रेड्डियर की किताब Agrarian Reforms and Parity Economy से लिया गया है।

نیچے لکھا ٹیبل شری ریڈیر کی کتاب Agrarian Refoms and Parity Economy سے لیا گیا ہے :

सन 1945 में हर इलाक़े की औसत आमदनी और औसत देनदारी.

سن 1945 میں ہر علاقے کی اوسط آمدنی اور اوسط دینداری :

इलाक़ा علاقہ		कुनबा पीछे आमदनी کنبہ پیچھے آمدنی	आदमी पीछे आमदनी آدمی پیچھے آمدنی	कुनबा पीछे देनदारी کنبہ پیچھے دینداری	आदमी पीछे देनदारी آدمی پیچھے دینداری
1. विज़ेगापट्टम	ویزاگاپٹم	754·8	112·1	289 2	42·9
2. सरकार के किनारे	سرکار کے کنارے	1010·5	161·8	336·4	53·9
3. सरकार के पठार	سرکار کے پٹھار	1064·4	168·5	268·5	42·5
4. दक्खिनी ज़िले	دکھنی ضلعے	623·5	107·0	269·7	46·3
5. कर्नाटक	کرناٹک	1017·8	174·5	327·9	56·2
6. कावेरी डेलटा	کاویری ڈیلٹا	774·1	125·6	191·9	31·1
7. केन्द्री सूबे	کیندری صوبے	954·0	153·7	231·2	37·2
8. दक्खिनी पच्छिमी कोने	دکھنی پچھمی کونے	1030·9	164·0	140·1	22·3
9. दक्खिनी पूरबी कोने	دکھنی پوربی کونے	969·8	169·9	253·8	43·9
10. पच्छिमी किनारे	پچھمی کنارے	880·3	121·8	307·6	42·5
कुल औसत	کل اوسط	902·3	144·4	255·2	40·8

ऊपर लिखी औसत को मामूली हिसाब से जांचने पर सच्ची और साफ़ तस्वीर सामने नहीं आती. नीचे लिखे टेबिल से पांचों दरजों की औसत आबादी और उनके क़र्ज़ का साफ़ साफ़ पता चल जाता है.

اوپر لکھی اوسط کو معمولی حساب سے جانچنے پر سچی اور صاف تصویر سامنے نہیں آتی . نیچے لکھے ٹیبل سے پانچوں درجوں کی اوسط آبادی اور اُن کے قرض کا صاف صاف پتہ چل جاتا ہے .

(3) छोटे किसान जिनके पास 5 एकड़ से भी कम जमीन है.

(4) लगानदार, और

(5) ऐसे खेती मजदूर जिनके पास जमीन बिलकुल नहीं है.

जांच परताल से जो नतीजे निकले वह यह हैं:

कुल क़रजा

1939-49	1944-45
2,71,91,64,000 रुपया	2,1771,15,000 रुपया

एक वर्ग मील में एक आदमी के पीछे क़र्ज़ा :

दर्जा	1939	1945	फ़रक़	फ़ी सदी कमी या बढ़ोती
1.	188·5	113·3	−75·2	−39·9
2.	78·8	59·4	−19·4	−24·6
3.	42·8	37·6	−5·2	−12·3
4.	20·5	21·3	+0·8	+4·1
5.	5·7	8·3	+2·6	+45·6

पांच दरजों का फ़ी सदी क़र्ज़ा 1939 और 1945 में:

दर्जा	1	2	3	4	5	कुल
(3) 1939	14·4	43·5	35·3	4·4	1·4	100·0
(4) 1945	10·8	41·0	38·7	7·0	2·5	100·0
(5) फ़ी सदी						
(2) से (1) तक	60·0	70·0	88·0	104	143	80·1

डाक्टर नायडू जिन खास और अहम नतीजों पर पहुंचे वह यह हैं:—

"इन आंकड़ों से पता चलता है कि लड़ाई के दौरान में जो फ़ायदे हुए वह बड़े पैमाने पर बड़े किसानों को ही हुए. उनकि कुल क़र्ज़े का हिस्सा 1939 में 14·4 फ़ी सदी था. लेकिन यही क़रजा 1945 में सिर्फ़ 10 8 फ़ी सदी रह गया. इसी तरीक़े से बीच वाले जमींदारों का क़रजा 1945 में 41 फ़ी सदी रह गया. छोटे जमींदारों का जो तीसरे नम्बर पर आते हैं क़रजा 35·3 फ़ी सदी से 38 7 फ़ी सदी बढ़ गया. यानी इनका क़रज़ ३·४ फ़ी सदी बढ़ा."

"लगानदारों से भी ज़ियादा बे ज़मीन वालों के ऊपर क़रज़ बढ़ा है."

(3) چھوٹے کسان جن کے پاس 5 ایکڑ سے بھی کم زمین ہے .

(4) لگاندار' اور

(5) ایسے کھیتی مزدور جن کے پاس زمین بالکل نہیں ہے .

جانچ پڑتال سے جو نتیجے نکلے وہ یہ ہیں :

کل قرضہ

1939-49	1944-45
2,71,91,64,000 روپیہ	2,17,71,15,000 روپیہ

ایک ورگ میل میں ایک آدمی کے پیچھے قرض :

درجہ	1939	1945	فرق	فیصدی کمی یا بڑھوتی
.1	188·5	113·3	−75·2	−39·9
.2	78·8	59·4	−19·4	−24·6
.3	42·8	37·6	−5·2	−12·3
.4	20·5	21·3	+0·8	+4·1
.5	5·7	8·3	+2·6	+45·6

پانچ درجوں کا فیصدی قرض 1939 اور 1945 میں :—

درجہ	1	2	3	4	5	کل
(3) 1939	14·4	43·5	35·3	4·4	1·4	100·0
(4) 1945	10 8	41·0	38·7	7·0	2·5	100·0
(5) فی صدی						
(2) سے (1) تک	60 0	70·0	88·0	104	143	80·1

ڈاکٹر نائیڈو جن خاص اور اہم نتیجوں پر پہونچے وہ یہ ہیں :—

"ان آنکڑوں سے پتہ چلتا ہے کہ لڑائی کے دوران میں جو فائدے ہوئے وہ بڑے پیمانے پر بڑے کسانوں کو ہی ہوئے. اُن کے کل قرض کا حصہ 1939 میں 14·4 فی صدی تھا . لیکن یہی قرضہ 1945 میں صرف 10·8 فی صدی رہ گیا . اسی طریقے سے بیچ والے زمینداروں کا قرضہ 1945 میں 41 فی صدی رہ گیا. چھوٹے زمینداروں کا جو تیسرے نمبر پر آتے ہیں قرضہ 35·3 فی صدی سے 38·7 فی صدی بڑھ گیا . یعنی ان کا قرض 3·4 فی صدی بڑھا ".

"لگانداروں سے بھی زیادہ بےزمین والوں کے اوپر قرض بڑھا ہے".

बचे उन्होंने भी अपनी जमीन किसानों के हाथ पट्टे पर उठा दी.

मदरास सूबे में 72 लाख बड़े जमींदार और 70 लाख छोटे जमींदार हैं जो रैयत वाले तरीक़े के मातहत आते हैं. इनके पास 31 लाख एकड़ आबपाशी वाली जमीन है जिस पर सरकार ने सिंचाई का प्रबन्ध किया है और 185 लाख एकड़ ऐसी जमीन है जिस पर आबपाशी नहीं की जाती. 70 लाख काश्तकारों में से 56 लाख ऐसे हैं जिनके पास औसत से भी कम जमीन है. इनकी मालगुज़ारी 50 रुपया या से इससे भी कम है. इनके पास कुल मिला कर 11 लाख एकड़ आबपाशी वाली जमीन है और 102 लाख एकड़ बे आबपाशी वाली जमीन है दूसरी तरफ़ निगाह डालें तो पता चलेगा कि 2 लाख ऐसे मालिक हैं जो 50 रुपए से ज़ियादा मालगुज़ारी देते हैं. इनके पास 22 लाख एकड़ आबपाशी वाली जमीन है जिस पर सरकार ने सिंचाई का प्रबन्ध किया है और 38 लाख एकड़ ऐसी जमीन है जिस पर आबपाशी नहीं होती.

अगर फ़ी सदी के हिसाब से इस पर ग़ौर करें तो मालूम होगा कि छोटे जमींदार 97 फ़ी सदी हैं. इन में से 59 फ़ी सदी के पास सिंचाऊ जमीन है. उनको इस बात की गारंटी दे दी गई है कि उनको सिंचाई के लिये पानी मुहैया किया जायगा. बड़े जमींदार क़रीब 3 फ़ी सदी हैं. इनके पास 41 फ़ी सदी सिंचाऊ जमीन है. इनको भी सिंचाई के लिये पानी की गारंटी है. छोटे जमींदारों के पास 83 फ़ी सदी और बड़े जमींदारों के पास 17 फ़ी सदी ग़ैर सिंचाऊ जमीन है.

यह आंकड़े 1945-46 में तमिलनाद कांग्रेस कमेटी के खोज विभाग ने तैयार किये थे. इस में उस हालत का ज़िक्र नहीं है जो बड़ी जंग के बाद सामने आई.

डाक्टर वी. वी. नारायन स्वामी ने 1946 में इस बारे में जांच पड़ताल की. इस जांच पड़ताल से मालूम हुआ कि किसानों की थोड़ी बहुत ग़रीबी घटी है लेकिन खेती मज़दूरों की हालत में तरक़्क़ी नहीं हुई. 1939 में मदरास सूबे में किसानों पर क़र्ज़ क़रीब 272 करोड़ रुपया था. 1945 में यह क़र्ज़ा क़रीब 218 करोड़ रुपया रह गया, इससे साबित होता है कि क़र्ज़े में 45 करोड़ की एक दम कमी हो गई.

जांच पड़ताल के लिये डाक्टर वी. वी. नारायनस्वामी नायडू ने खेती करने वाली आबादी को पांच हिस्सों में बांटा है. वह यह हैं:

(1) वह बड़े किसान जिनके पास 25 एकड़ या इससे ज़ियादा सिंचाऊ और सूखी जमीन है.

(2) बीच के ऐसे किसान जिनके पास 5 और 25 एकड़ के दरमियान जमीन.

بچے انہوں نے بھی اپنی زمین کسانوں کے ہاتھ پٹے پر اٹھا دی۔

مدراس صوبے میں 72 لاکھ بڑے زمیندار اور 70 لاکھ چھوٹے زمیندار ہیں جو رعیت والے طریقے کے ماتحت آتے ہیں۔ ان کے پاس 31 لاکھ ایکڑ آبپاشی والی زمین ہے جس پر سرکار نے سینچائی کا پربندھ کیا ہے اور 185 لاکھ ایکڑ ایسی زمین ہے جس پر آبپاشی نہیں کی جاتی۔ 70 لاکھ کاشتکاروں میں سے 56 لاکھ ایسے ہیں جن کے پاس اوسط سے بھی کم زمین ہے۔ انکی مالگذاری پچاس روپیہ یا اس سے بھی کم ہے۔ ان کے پاس کل ملا کر 11 لاکھ ایکڑ آبپاشی والی زمین ہے اور 102 لاکھ ایکڑ بے آبپاشی والی زمین ہے۔ دوسری طرف نگاہ ڈالیں تو پتہ چلے گا کہ 2 لاکھ ایسے مالک ہیں جو پچاس روپیہ سے زیادہ مالگذاری دیتے ہیں۔ ان کے پاس 22 لاکھ ایکڑ آبپاشی والی زمین ہے جس پر سرکار نے سینچائی کا پربندھ کیا ہے اور 38 لاکھ ایکڑ ایسی زمین ہے جس پر آبپاشی نہیں ہوتی۔

اگر فی صدی کے حساب سے اس غور کریں تو معلوم ہوگا کہ چھوٹے زمیندار 97 فی صدی ہیں۔ ان میں سے 59 فی صدی کے پاس سینچاؤ زمین ہے۔ ان کو اس بات کی گارنٹی دے دی گئی ہے کہ ان کو سینچائی کے لئے پانی مہیا کیا جائے گا۔ بڑے زمیندار قریب 3 فی صدی ہیں۔ ان کے پاس 41 فی صدی سینچاؤ زمین ہے۔ ان کو بھی سینچائی کے لئے پانی کی گارنٹی ہے۔ چھوٹے زمینداروں کے پاس 83 فیصدی اور بڑے زمینداروں کے پاس 17 فیصدی غیر سینچاؤ زمین ہے۔

یہ آنکڑے 1945-46 میں تمل ناد کانگریس کمیٹی کے کھوج وبھاگ نے تیار کئے تھے۔ اس میں اس حالت کا ذکر نہیں ہے جو بڑی جنگ کے بعد سامنے آئی۔

ڈاکٹر وی۔ وی۔ نرائن سوامی نے 1946 میں اس بارے میں جانچ پڑتال کی۔ اس جانچ پڑتال سے معلوم ہوا کہ کسانوں کی تھوڑی بہت غریبی گھٹی ہے لیکن کھیتی مزدوروں کی حالت میں ترقی نہیں ہوئی۔ 1939 میں مدراس صوبے میں کسانوں پر قرض قریب 272 کروڑ روپیہ تھا۔ 1945 میں یہ قرضہ قریب 218 کروڑ روپیہ رہ گیا۔ اس سے ثابت ہوتا ہے کہ قرضے میں 45 کروڑ کی ایک دم کمی ہوگئی۔

جانچ پڑتال کے لئے ڈاکٹر وی۔ وی۔ نرائن سوامی نائیڈو نے کھیتی کرنے والی آبادی کو پانچ حصوں میں بانٹا ہے۔ وہ یہ ہیں:

(1) وہ بڑے کسان جن کے پاس 25 ایکڑ یا اس سے زیادہ سینچاؤ اور سوکھی زمین ہے۔

(2) بیچ کے ایسے کسان جن کے پاس 5 اور 25 ایکڑ کے درمیان زمین ہے۔

वजह से 'रैयत' किसान अपनी ज़मीन को उपजाऊ बनाने और उसमें अच्छे बीज इस्तेमाल करने की कोई दिलचस्पी नहीं रखता. यह सब से अहम वजह है जिस के कारन खेती मद्रास सूबे में तरक़्क़ी नहीं कर रही है.

रैयतवारी तरीक़े में वही कमज़ोरियां आ गईं जो पहले ज़मींदारी तरीक़े में पाई जाती थीं. ज़मींदारी वाली जगहों पर किसानों ने अपनी जद्दोजेहद के कारन कुछ रिआयतें और हक़ हासिल कर लिये थे लेकिन रैयतवारी तरीक़े में किसान के पाले कुछ भी न पड़ा. बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि रैयत और किसानों के बीच मामलात सुलझाने की कोशिश सरकार ने भी नहीं की. इसका नतीजा यह हुआ कि छोटी छोटी मिलकियतें पूंजीपतियों और सरमायादारों के हाथ में पहुंच गईं. यह बात ख़ास तौर पर 1928 में ब्योपार में मन्दी आ जाने के समय हुई. 1934 में सरकार ने इस की जांच परताल कराई. इस जांच परताल से मालूम हुआ कि रैयतवारी ज़मीन क़रीब क़रीब 10,351 हज़ार एकड़ है, जिसका 20 फ़ी सदी या 2,070 हज़ार एकड़ उन लोगों के पास चला गया है जो खेती नहीं करते. इस तरह छोटे और बीच के पट्टेदार बे खेत हो गये. यह कहने की ज़रूरत नहीं कि आजकल भी यही हालत है.

इस तरह श्री रेडियर ने अपनी किताब में बताया है कि किसान की पैदावार का बड़ा हिस्सा ज़मींदार को मिलता है. नीचे का टेबिल इस पर रोशनी डालता है:

ज़िला	किसान का हिस्सा एक एकड़ में (फ़ी सदी)	ज़मींदार का हिस्सा एक एकड़ में (फ़ी सदी)
चिंगलपट	33	67
तंजौर	16 1	83·9
पूर्वी गोदावरी	40·1	59 9
विज़ेगापट्टम	44·4	55·6
उत्तर अरकाट	23·1	76·9
बिलौरी	43·5	56·5
तिनैवेली	24·3	75 7
कोयम्बटूर	7·6	92·4
दक्खिन कनारा	43·5	56·5

ज़मीन का बंटवारा ठीक ढंग से न होने के कारन सूद की दर बढ़ गई है, किसान चुसते जा रहे हैं और ग़रीब होते जा रहे हैं, मज़दूरी के दाम गिर गए हैं और रहन सहन का दर्जा काफ़ी गिर गया है. आजकल मद्रास और दूसरे ज़िलों की हालत बहुत ज़ियादा ख़तरनाक है.

जो किसान रैयतवारी तरीक़े में आते हैं वह क़रीब क़रीब 55 से 60 फ़ी सदी तक हैं. 15 फ़ी सदी ऐसे ज़मींदार हैं जो गांव से दूर रहते हैं. इन्होंने अपनी ज़मीन पट्टे पर उठा रखी है. 25 से 30 फ़ी सदी तक जो बाक़ी

وجہ سے ' رعیت ' کسان اپنی زمین کو اپجاؤ بنانے اور اس میں اچھے بیج استعمال کرنے کی کوئی دلچسپی نہیں رکھتا . یہ سب سے اہم وجہ ہے جس کے کارن کھیتی مدراس صوبے میں ترقی نہیں کر رہی ہے .

رعیت واری طریقے میں وہی کمزوریاں آگئیں جو پہلے زمینداری طریقے میں پائی جاتی تھیں . زمینداری والی جگہوں پر کسانوں نے اپنی جدوجہد کے کارن کچھ رعایتیں اور حق حاصل کر لئے تھے لیکن رعیت واری طریقے میں کسان کے پالے کچھ بھی نہ پڑا . بڑے دکھ کے ساتھ کہنا پڑتا ہے کہ رعیت اور کسانوں کے بیچ معاملات سلجھانے کی کوشش سرکار نے بھی نہیں کی. اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ چھوٹی چھوٹی ملکیتیں پونجی پتیوں اور سرمایہداروں کے ہاتھ میں پہونچ گئیں. یہ بات خاص طور پر 1928 میں بیوپار میں مندی آ جانے کے سمے ہوئی . 1934 میں سرکار نے اس کی جانچ پڑتال کرائی . اس جانچ پڑتال سے معلوم ہوا کہ رعیت واری زمین قریب قریب 10,351 ہزار ایکڑ ہے' جس کا 20 فی صدی یا 2,070 ہزار ایکڑ اُن لوگوں کے پاس چلا گیا ہے جو کھیتی نہیں کرتے . اسطرح چھوٹے اور بیچ کے پٹےدار بے کھیت ہوگئے . یہ کہنے کی ضرورت نہیں کہ آج کل بھی یہی حالت ہے .

اسطرح شری ریڈیر نے اپنی کتاب میں بتایا ہے کہ کسان پیداوار کا بڑا حصہ زمیندار کو ملتا ہے. نیچے کا ٹیبل اس پر روشنی ڈالتا ہے :

ضلع	کسان کا حصہ ایک ایکڑ میں (فیصدی)	زمیندار کا حصہ ایک ایکڑ میں (فیصدی)
چنگل پٹ	33	67
تنجور	16·1	83·9
پوربی گوداوری	40·1	59·9
وزیگا پٹم	44·4	55·6
اُتر ارکاٹ	23·1	76·9
بلوری	43 5	56 5
تھنویلی	24·6	75·7
کوئمبٹور	7·6	92·4
دکھن کنارہ	43·5	56·5

زمین کا بٹوارہ ٹھیک ڈھنگ سے نہ ہونے کے کارن سود کی در بڑھ گئی ہے' کسان چسنے جا رہے ہیں اور غریب ہوتے جا رہے ہیں' مزدوری کے دام گر گئے ہیں اور رہن سہن کا درجہ کافی گر گیا ہے . آجکل مدراس اور دوسرے ضلعوں کی حالت بہت زیادہ خطرناک ہے .

جو کسان رعیت واری طریقے میں آتے ہیں وہ قریب قریب 55 سے 60 فی صدی تک ہیں . 15 فی صدی ایسے زمیندار ہیں جو گاؤں سے دور رہتے ہیں . انہوں نے اپنی زمین پٹے پر اٹھا رکھی ہے. 25 سے 30 فی صدی تک جو باقی

तक़सीम नीचे लिखे आंकड़ों से साफ़ साफ़ मालूम हो जायगी :

تقسیم نیچے لکھے آنکڑوں سے صاف صاف معلوم ہو جائے گی :

मिलकियत की तादाद एकड़ में ملکیت کی تعداد ایکڑ میں	रजस्टिर्ड मालिकों की तादाद लाख में رجسٹرڈ مالکوں کی تعداد لاکھ میں	हर ग्रुप की गिनती का फ़ी सदी जोड़ ہر گروپ کی گنتی کا فی صدی جوڑ	ज़मीन की मिलकियत लाख एकड़ में زمین کی ملکیت لاکھ ایکڑ میں	हर ग्रुप की मिलकियत का जोड़ फ़ी सदी में ہر گروپ کی ملکیت کا جوڑ فیصدی میں	मामूली ज़मीन का औसत एकड़ में معمولی زمین کا اوسط ایکڑ میں	सिंचाई ज़मीन का हिस्सा एकड़ में سینچائی زمین کا حصہ ایکڑ میں
1 एकड़ से नीचे ایکڑ سے نیچے	5·0	24·0 %	1·62	2·5 %	0·32	0·06
1—3 एकड़ ایکڑ	10·0	48·0	15·1	23·3	1·5	0·0
3—9 „ „	3·8	18·3	17·2	26·5	4 5	1·4
9—12 „ „	1·1	5·3	8·1	12·5	7·4	3·0
12—18 „ „	0·6	2·9	7·6	17·7	12·7	5·6
18—50 „ „	0 22	1·1	6·2	9·6	28·2	14 6
50 से ऊपर „ „ 50 سے اوپر	0·08	0·4	9·0	13·9	112·5	61·8

ऊपर की टेबिल से मालूम हो जाता है कि इन छे सूबों मे 90·3 फ़ी सदी ज़मीन से फ़ायदा उठाने वालों के पास ठीक 52·3 फ़ी सदी ज़मीन है और 9·7 फ़ी सदी ज़मीन से फ़ायदा उठाने वालों के पास 47·7 खेती की ज़मीन है.

मदरास सूबे का दो तिहाई हिस्सा रैयतवारी था और बाक़ी एक तिहाई ज़मींदारी. आज कल क्या सूरत है इस का अन्दाज़ा लगाना मुश्किल है. रैयतवारी तरीक़े मैं सरकार और जुताई करने वाले के बीच सीधा रिशता बना रहता है. असल मे रैयत ही ज़मीन की मालिक होती है. लेकिन अब ऐसे बहुत से रैयत हैं जो ख़ुद जुताई नहीं करते. 'रैयत' उस रजिस्टर्ड ज़मींदार को कहते हैं जिस के पास एक ख़ास ज़मीन का टुकड़ा होता है और जिस पर उसको पूरा अख़्तियार रहता है. ऐसे रैयत सरकार को मालगुज़ारी देते हैं. जिन लोगों के पास बड़ी ज़मींदारी हैं उन्होंने दूसरे ऊंचे काम अपना लिये हैं. इन में से ज़ियादा तर लोग गांवों से दूर जा कर बस गए हैं. आम तौर से वह अपनी ज़मीन सालाना लगान पर किसानों को दे देते हैं. ऐसे किसानों को किसी क़िस्म का कोई अख़्तियार नहीं दिया जाता. ऐसे किसानों की हालत उन किसानों से ज़ियादा ख़राब है जिन के लिये उत्तर प्रदेश में 1926 में आगरा टिनन्सी एक्ट पास हुआ था. इन ही तमाम कारनों और परेशानियों की

اوپر کی ٹیبل سے معلوم ہو جاتا ہے کہ اِن چھ صوبوں میں 90·3 فیصدی زمین سے فائدہ اُٹھانے والوں کے پاس ٹھیک 52·3 فیصدی زمین ہے اور 9·7 فیصدی زمین سے فائدہ اُٹھانے والوں کے پاس 47·7 کھیتی کی زمین ہے ۔

مدراس صوبے کا دو تہائی حصہ رعیت واری تھا اور باقی ایک تہائی زمینداری ۔ آج کل کیا صورت ہے اِس کا اندازہ لگانا مشکل ہے ۔ رعیت واری طریقے میں سرکار اور جوتائی کرنے والے کے بیچ سیدھا رشتہ بنا رہتا ہے. اصل میں رعیت ہی زمین کی مالک ہوتی ہے. لیکن اب ایسے بہت سے رعیت ہیں جو خود جوتائی نہیں کرتے ۔ رعیت' اُس رجسٹرڈ زمیندار کو کہتے ہیں جس کے پاس ایک خاص زمین کا ٹکڑا ہوتا ہے اور جس پر اُس کو پورا اختیار رہتا ہے ۔ ایسے رعیت سرکار کو مالگذاری دیتے ہیں ۔ جن لوگوں کے پاس بڑی زمینداری ہیں اُنہوں نے دوسرے اونچے کام اپنا لئے ہیں. اِن میں سے زیادہ تر لوگ گاؤں سے دور جا کر بس گئے ہیں ۔ عام طور سے وہ اپنی زمین سالانہ لگان پر کسانوں کو دے دیتے ہیں ۔ ایسے کسانوں کو کسی قسم کا کوئی اختیار نہیں دیا جاتا. ایسے کسانوں کی حالت اُن کسانوں سے زیادہ خراب ہے جن کے لئے اُتر پردیش میں 1926 میں آگرہ ٹیننسی ایکٹ پاس ہوا تھا ۔ انہیں تمام کارنوں اور پریشانیوں کی

ऊपर लिखे आंकड़ों से यह बात साफ़ हो जाती है कि आधे से ज़ियादा खेती करने वालों के पास दो एकड़ से भी कम फ़ायदा पहुँचाने वाली ज़मीन है यह ज़मीन उन के गुज़र बसर के लिये पूरी नहीं पड़ती, इस लिये भूकों मरने तक की नौबत आ जाती है. अगर इस बात को इस तरह बयान किया जाय कि मदरास की 82 फ़ी सदी खेती करने वाली आबादी के पास आधे से भी कम फ़ायदा पहुँचाने वाली ज़मीन है तो बेजा न होगा.

नीचे लिखे आंकड़े तामिलनाद कांगरेस से रिसर्च महकमे ने लिये हैं, इससे यह बात और साफ़ हो जाती है:

اوپر لکھے آنکڑوں سے یہ بات صاف ہو جاتی ہے کہ آدھے سے زیادہ کھیتی کرنے والوں کے پاس دو ایکڑ سے بھی کم فائدہ پہونچانے والی زمین ہے . یہ زمین اُن کے گزر بسر کے لئے پوری نہیں پڑتی، اِس لئے بھوکوں مرنے تک کی نوبت آ جاتی ہے . اگر اِس بات کو اِس طرح بیان کیا جائے کہ مدراس کی 82 فی صدی کھیتی کرنے والی آبادی کے پاس آدھے سے بھی کم فائدہ پہونچانے والی زمین ہے تو بیجا نہ ہوگا .

نیچے لکھے آنکڑے تامل‌ناد کانگریس کے ریسرچ محکمے نے لئے ہیں، اس سے یہ بات اور صاف ہو جاتی ہے:

मदरास सूबे में रैयतवारी ज़मीन का बटवारा — مدراس صوبے میں رعیتواری زمین کا بٹوارہ

मिलकियत की तादाद एकड़ में ملکیت کی تعداد ایکڑ میں	रजिस्टर्ड मालिकों की तादाद लाख में رجسٹرڈ مالکوں کی تعداد لاکھ میں	हर ग्रुप की गिनती की फ़ी सदी का जोड़ ہر گروپ کی گنتی کی فی صدی کا جوڑ	ज़मीन की मिलकियत की तादाद लाख में زمین کی ملکیت کی تعداد لاکھ میں	हर ग्रुप की मिलकियत का जोड़ जिसको फ़ी सदी में ज़ाहिर किया गया ہر گروپ کی ملکیت کا جوڑ جسکو فی صدی میں ظاہر کیا گیا	मामूली ज़मीन का औसत एकड़ में معمولی زمین کا اوسط ایکڑ میں	आबपाशी का ज़मीन का हिस्सा एकड़ में آبپاشی کا زمین کا حصہ ایکڑ میں
		%		%		
1 एकड़ से नीचे ایکڑ سے نیچے	16·4	22·8	9·5	3·4	0·58	0·07
1—3 एकड़ ایکڑ	39·7	55·1	104·3	37·8	2·6	0·2
3—9 „ „	11·2	15·6	75·0	27·2	6·7	1·2
9—12 „ „	2·7	3·8	28·3	10·2	10·7	2·8
12—18 „ „	1·4	1·9	23·4	8·3	16·7	5·1
18—50 „ „	0·46	0·6	16·9	6·2	42·0	16·0
50 एकड़ से ऊपर 50 ایکڑ سے اوپر	0·14	0·2	18·9	6·9	134·0	55·0

इन आंकड़ों से मालूम होता है कि 93·5 फ़ी सदी ज़मीन से फ़ायदा उठाने वालों के पास 68·4 फ़ी सदी ज़मीन है और 6·5 फ़ी सदी ज़मीन से फ़ायदा उठाने वालों के पास 31·6 खेती की ज़मीन है.

छै ज़िलों में—मलाबार, तंजौर, गुन्तूर, किस्तना, पूर्वी गोदावरी और पच्छिमी गोदावरी में रैयतवारी ज़मीन की

ان آنکڑوں سے معلوم ہوتا ہے کہ 93·5 فی صدی زمین سے فائدہ اُٹھانے والوں کے پاس 68·4 فی صدی زمین ہے اور 6·5 فی صدی زمین سے فائدہ اُٹھانے والوں کے پاس 31·6 فی صدی کھیتی کی زمین ہے .

چھ ضلعوں میں—مالابار، تنجور، گنٹور، کستنا، پوربی گوداوری اور پچھمی گوداوری میں رعیتواری زمین کی

मदरास ज़िले की आबादी सब से ज़ियादा है और आबादी ज़ियादा होने के कारन खेती बारी की ज़मीन कम पड़ जाती है. ज़मीन का अच्छा और उपजाऊ हिस्सा ऐसे लोगों के पास है जो खेती बारी नहीं करते. और सिर्फ़ यही कारन है कि खेती बारी करने वाले लोग नाख़ुश हैं.

नीचे लिखे आंकड़ों से यह बात आसानी से मालूम हो जायगी कि मदरास ज़िले में औसत खेती करने वाले एक आदमी और एक ख़ानदान की क्या हालत है. असली हालत तो इससे अधिक दर्दनाक और अचरज भरी है.

مدراس ضلعے کی آبادی سب سے زیادہ ہے اور آبادی زیادہ ہونے کے کارن کھیتی باری کی زمین کم پڑ جاتی ہے ۔ زمین کا اچھا اور اپجاؤ حصہ ایسے لوگوں کے پاس ہے جو کھیتی باری نہیں کرتے ۔ اور صرف یہی کارن ہے کہ کھیتی باری کرنے والے لوگ ناخوش ہیں ۔

نیچے لکھے آنکڑوں سے یہ بات آسانی سے معلوم ہو جائیگی کہ مدراس ضلعے میں اوسط کھیتی کرنے والے ایک آدمی اور ایک خاندان کی کیا حالت ہے ۔ اصلی حالت تو اس سے ادھک دردناک اور اچرج بھری ہے ۔

	जुता हुआ रक़बा (एकड़) / جتا ہوا رقبہ (ایکڑ)	जुता हुआ बेकार रक़बा (एकड़) / جتا ہوا بیکار رقبہ (ایکڑ)	कुल (एकड़) / کل (ایکڑ)	
एक किसान पर औसत रक़बा	0·86	0·59	1·45	ایک کسان پر اوسط رقبہ
एक ख़ानदान पर औसत रक़बा	5·29	3·64	8·93	ایک خاندان پر اوسط رقبہ

एक ख़ानदान में पांच जवान आदमियों की औसत मानी गई है.

नीचे लिखे आंकड़ों से सूबे के रक़बे का सही अन्दाज़ा हो जाता है. यह आंकड़े नायब सर्वे डायरेक्टर ने दिये हैं. वह सेन्ट्रल सर्वे आफ़िस मदरास के इनचार्ज हैं :

ایک خاندان میں پانچ جوان آدمیوں کی اوسط مانی گئی ہے ۔

نیچے لکھے آنکڑوں سے صوبے کے رقبے کا صحیح اندازہ ہو جاتا ہے ۔ یہ آنکڑے نائب سروے ڈائرکٹر نے دئے ہیں ۔ وہ سنٹرل سروے آفس مدراس کے انچارج ہیں :

		रक़बा मुरब्बा मील / رقبہ مربع میل		
1.	रैयतवारी जिसमें छोटे इनामदार भी शामिल थे	75,604·94	رعیت واری جس میں انعامدار بھی شامل تھے	.1
2.	पूरे इनामदार	7,415·77	پورے انعامدار	.2
3.	ज़मींदारियां	25,661·29	زمینداریاں	.3
4.	रिज़र्व जंगलात और पहाड़ियां	17,146·95	رزرو جنگلات اور پہاڑیاں	.4
	कुल	125,828·95	کل	

श्री रेडियर का कहना है कि सूबे में ज़मीन तीन तरह से बांटी जा सकती है—यानी अगर वह आबपाशी वाली हो तो 20 एकड़, बारानी वाली हो तो 10 एकड़ और अगर सूखी ज़मीन हो तो 30 एकड़. इससे यह साफ़ ज़ाहिर हो जाता है कि एक खेती करने वाला ख़ानदान मदरास में ऐसी ज़मीन पर जुताई करता है जिस से फ़ायदा नहीं होता. नीचे लिखे आंकड़े इस बारे में आंखें खोल देते हैं.

औसत गिनती उन ख़ानदानों की जो ऐसी ज़मीन रखते हैं :

2 एकड़ से भी कम	51 फ़ी सदी
2 से 5 एकड़ तक	11 फ़ी सदी
5 से 10 एकड़ तक	7 फ़ी सदी
10 एकड़ से ऊपर	11 फ़ी सदी

شری ریڈیر کا کہنا ہے کہ صوبے میں زمین تین طرح سے بانٹی جاسکتی ہے—یعنی اگر وہ آبپاشی والی ہو تو 20 ایکڑ، بارانی والی ہو تو 10 ایکڑ اور اگر سوکھی زمین ہو تو 30 ایکڑ ۔ اس سے یہ صاف ظاہر ہو جاتا ہے کہ ایک کھیتی کرنے والا خاندان مدراس میں ایسی زمین پر جوتائی کرتا ہے جس سے فائدہ نہیں ہوتا ۔ نیچے لکھے آنکڑے اس بارے میں آنکھیں کھول دیتے ہیں :

اوسط گنتی ان خاندانوں کی جو ایسی زمین رکھتے ہیں :

2 ایکڑ سے بھی کم	51 فی صدی
2 سے 5 ایکڑ تک	31 فی صدی
5 سے 10 ایکڑ تک	7 فی صدی
10 ایکڑ سے اوپر	11 فی صدی

जैसे विद्वानों की भी मिसालें दी हैं. उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया है कि गांव वाले मिल कर काम करें. हिन्द सरकार ने अपनी पंच साला योजना में भी इसी बात पर काफ़ी ज़ोर दिया है. मौरिस डाब ने इस 'सामूहिक गांव इन्तज़ाम' की बात को दो घोड़ों पर सवारी करना जैसा बताया है.

एक सज्जन रेडियर गुरु ने अपनी एक किताब में लिखा है : "खेती बारी का सवाल आज जितना ज़रूरी है उतना पहले कभी नहीं रहा. इस सवाल के मसले पर हमेशा सौतेली मां जैसा बरताव किया गया है. साथ ही साथ दिलचस्पी भी इस सवाल पर बहुत ही कम दिखाई गई है."

अब हम इस पर विचार करेंगे कि मदरास सरकार ने किस तरह रक़बे को तक़सीम किया है :

جیسے ودوانوں کی بھی مثالیں دی ھیں . انھوں نے اس بات پر زور دیا ھے کہ گاؤں والے مل کر کام کریں . هند سرکار نے اپنی پنچ سالہ یوجنا میں بھی اِس بات پر کافی زور دیا ھے . موریس ڈاب نے اِس 'سامُوھک گاؤں انتظام' کی بات کو دو گھوڑوں پر سواری کرنا جیسا بتایا ھے .

ایک سجن ریڈیر گرو نے اپنی ایک کتاب میں لکھا ھے : '' کھیتی باری کا سوال آج جتنا ضروری ھے اُتنا پہلے کبھی نہیں رھا . اِس سوال کے مسئلے پر ھمیشہ سوتیلی ماں جیسا برتاؤ کیا گیا ھے . ساتھ ھی ساتھ دلچسپی بھی اِس سوال پر بہت ھی کم دکھائی گئی ھے .''

اب ھم اس بات پر وچار کرینگے کہ مدراس سرکار نے کس طرح رقبے کو تقسیم کیا ھے :

तक़सीम मदरास सूबे में 1946–'47 में
(गिनती फ़सल और मौसम रिपोर्ट के मुताबिक़ है.)

تقسیم مدراس صوبے میں 1946–'47 میں
(گنتی فصل اور موسم رپورٹ کے مطابق ھے .)

तक़सीम	रक़बा ऐकड़ में / رقبہ ایکڑ میں	تقسیم
कुल रक़बा बुआई	31,035,475 (a)	کل رقبہ بوائی
जंगल	13,496,668	جنگل
परती	14,054,038	پرتی
वह ज़मीन जिस पर जुताई नहीं हुई और एक साल के लिये जुताई की ज़रूरत नहीं है	9,498,721 (b)	وہ زمین جس پر جتائی نہیں ھوئی اور ایک سال کے لئے جوتائی کی ضرورت نہیں ھے
आज कल की ऐसी ज़मीन जिस पर एक साल के लिये जुताई की ज़रूरत नहीं है	9,498,721 (c)	آجکل کی ایسی زمین جس پر ایک سال کے لئے جوتائی کی ضرورت نہیں ھے .
कुल रक़बा	79,933,806	کل رقبہ

श्री रेडियर की किताब के अनुसार मदरास में खेती करने वालों की आबादी क़रीब 36,142,332 है. यह किताब 1951 की मर्दुमशुमारी से पहले लिखी गई थी. इस आबादी को नीचे लिखे ज़िलों में बांटा गया है :

شری ریڈیر کی کتاب کے انوسار مدراس میں کھیتی کرنے والوں کی آبادی قریب 36,142,332 ھے . یہ کتاب 1951 کی مردم شماری سے پہلے لکھی گئی تھی . اس آبادی کو نیچے لکھے ضلعوں میں بانٹا گیا ھے :

ज़िले का नाम	खेती करने वालों की आबादी / کھیتی کرنے والوں کی آبادی	ضلعے کا نام
विज़गापटम	3,064,163	وزگاپٹم
पूर्वी गोदावरी	1,479,063	پوربی گوداوری
पच्छिमी गोदावरी	1,137,068	پچھمی گوداواری
किस्तना	1,062,807	کستنا
गुन्टूर	1,818,471	گنٹور
कर्नूल	986,206	کرنول
बेलारी	807,265	بیلاری
अनन्तपुर	1,025,245	اننت پور
कुडापा	8,99,260	کداپا
नेलौर	1,420,196	نیلور
चिंगलपट	1,483,373	چنگل پٹ
दक्खिन अरकाट	2,425,737	دکھن ارکٹ
चित्तूर	1,50,5417	چتور
उत्तर अरकाट	2,172,165	اتر ارکاٹ
सालेम	2,23,2879	سالیم
कोयम्बटूर	1,228,693	کوئمبٹور
तिरचिनापली	1,729,678	ترچنا پلی
तनजोर	2,119,949	تنجور
मदुरा	1,595,934	مدورا
रामनाद	1,102,462	رامناد
तिनवैली	1,362,432	تن ویلی
मलाबार	2,486,328,	مالابار :
दक्खिन कनारा	960,713	دکھن کنارا
नीलगिरी	36,823	نیلگری
सूबा	36,142,332	صوبہ

मदरास में खेती की समस्या

(कृश्नअर्जुन)

मदरास सरकार ने खेती सुधार को टालने के लिये नये नये तरीक़े इख़्तियार किये. 'जनता की आवाज़' और 'ज़मींदार सभा की आवाज़' का बहाना लेकर सरकार ने अख़बारों में एडीटोरियल्स वग़ैरा निकलवाये, अपनी योजनाओं का प्रचार भी किया. लेकिन पिछले कई सालों से सरकार की इन कोशिशों के जो नतीजे निकले हैं वह निराशा जनक ही रहे हैं.

बड़े बड़े ज़मींदारों ने कुमारप्पा कमेटी को एक तरफ़ा और कम्युनिस्ट तरीक़े का क़रार दे दिया. इस पर सरकार ने एक कमेटी उन सुधारों पर फिर से सोचने विचारने के लिये क़ायम की. इस सरकारी कमेटी ने भी कुमारप्पा कमेटी के तमाम सुझावों को रद्द कर दिया. और लगान और खेती टैक्स के बारे में कुछ हिदायतें दीं. लेकिन ज़मींदारों ने फिर सरकारी कमेटी की हिदायतों को नामंज़ूर कर दिया. इसके बाद मदरास सरकार ने इस बारे में दिलचस्पी लेना छोड़ दिया. एक बार सरकार ने खेती बिल की बहस चलाई लेकिन ज़मींदारों को यह बिल भी एक आंख न भाया. इसी तरीक़े से मालगुज़ारी बन्दोबस्त, अच्छी सिंचाई और टैक्सों की ठीक वसूली वग़ैरा के भी सुझाव सरकार ने रखने की कोशिश की लेकिन उनको भी वापस ले लिया गया. इस के बाद मदरास सरकार ने दिल्ली सरकार से मांग कि वह इस सूबे की भलाई के लिये कुछ क़ायदे क़ानून बना दे. लेकिन उसकी यह मांग भी बेकार गई. इन सब का नतीजा यह हुआ कि ज़मींदार अपनी मन मानी करने लगे.

ज़मींदार जो कुछ चाहते थे उनको पूरा करने की कोशिश की गई. उन्होंने सरकार से 'हिफ़ाज़ती फ़ौजों' की मांग की. उनके कहने के मुताबिक़ फ़ौजों को बतलाई हुई जगहों पर भेज दिया गया ज़मींदार को क़रीब क़रीब जब सब सुविधायें मिल गईं तो उसने ग़रीब किसानों और मज़दूरों पर मन मानी शुरू कर दी.

अभी हाल में 'ज़मीन सुधार पर कम्युनिस्ट विचार' (Communist Spotlight on the Land Problem) नामी पैम्फलेट निकला है. इस छोटी सी पुस्तक को वी. राममूर्ति ने लिखा है. इस में उन्होंने कांगरेसी नेताओं की ज़मीन सुधार नीति की कड़ी आलोचना की है. आगे चलकर श्री मूर्ति ने ज़ोरदार शब्दों में मांग की है कि कांगरेस को ज़मीन सुधार की नीति पर एक अमली और मज़बूत क़दम उठाना चाहिये. अपने सिद्धान्त को साफ़ करने के लिये उन्होंने जी. डी. एच कोल और सर मैलकाम

مدراس میں کھیتی کی سمسیا

(کرشن ارجن)

مدراس سرکار نے کھیتی سدھار کو ٹالنے کے لئے نئے نئے طریقے اختیار کئے ۔ 'جنتا کی آواز' اور 'زمیندار سبھا کی آواز' کا بہانہ لے کر سرکار نے اخباروں میں ایڈیٹوریلس وغیرہ نکلوائے' اپنی یوجناؤں کا پرچار بھی کیا ۔ لیکن پچھلے کئی سالوں سے سرکار کی ان کوششوں کے جو نتیجے نکلے ہیں وہ نراشاجنک ہی رہے ہیں ۔

بڑے بڑے زمینداروں نے کمارپپا کمیٹی کو ایک طرفہ اور کمیونسٹ طریقے کا قرار دے دیا ۔ اِس پر سرکار نے ایک کمیٹی اُن سدھاروں پر پھر سے سوچنے وچارنے کے لئے قائم کی ۔ اس سرکاری کمیٹی نے بھی کمارپپا کمیٹی کے تمام سجھاؤں کو رد کر دیا اور لگان اور کھیتی ٹیکس کے بارے میں کچھ ہدائتیں دیں ۔ لیکن زمینداروں نے پھر سرکاری کمیٹی کی ہدائیتوں کو نامنظور کر دیا ۔ اِس کے بعد مدراس سرکار نے اس بارے میں دلچسپی لینا چھوڑ دیا ۔ ایک بار سرکار نے کھیتی بِل کی بحث چلائی لیکن زمینداروں کو یہ بل بھی ایک آنکھ نہ بھایا ۔ اِسی طریقے سے 'مالگذاری بندوبست' اچھی سینچائی اور ٹیکسوں کی ٹھیک وصولی وغیرہ کے بھی سجھاؤ سرکار نے رکھنے کی کوشش کی لیکن اُن کو بھی واپس لے لیا گیا ۔ اِسکے کے بعد مدراس سرکار نے دلی سرکار سے مانگ کی کہ وہ اِس صوبے کی بھلائی کے لئے کچھ قاعدے قانون بنا دے ۔ لیکن اُسکی یہ مانگ بھی بیکار گئی ۔ اِن سب کا نتیجہ یہ ہوا کہ زمیندار اپنی من مانی کرنے لگے ۔

زمیندار جو کچھ چاہتے تھے اُسکو پورا کرنے کی کوشش کی گئی ۔ اُنہوں نے سرکار سے ' حفاظتی فوجوں ' کی مانگ کی ۔ اُن کے کہنے کے مطابق فوجوں کو بتلائی ہوئی جگہوں پر بھیج دیا گیا ۔ زمیندار کو قریب قریب جب سب سودھائیں مل گئیں تو اُس نے غریب کسانوں اور مزدوروں پر من مانی شروع کر دی ۔

ابھی حال میں ' زمین سدھار پر کمیونسٹ وچار' (Communist Spotlight on the Land Problem) نامی پمفلٹ نکلا ہے ۔ اس چھوٹی سی پستک کو وی ۔ راما مورتی نے لکھا ہے ۔ اِسمیں اُنہوں نے کانگریسی نیتاؤں کی زمین سدھار نیتی کی کڑی آلوچنا کی ہے آگے چل کر شری مورتی نے زوردار شبدوں میں مانگ کی ہے کہ کانگریس کو زمین سدھار کی نیتی پر ایک عملی اور مضبوط قدم اُٹھانا چاہئے ۔ اپنے سدھانت کو صاف کرنے کے لئے اُنہوں نے جی ۔ ڈی ۔ ایچ ۔ کول اور سر میلکم

में सिंचाई की ज़मीन का रक़बा 32 लाख एकड़ बढ़ गया है. साथ ही साथ 160 लाख एकड़ ज़मीन को, जिसमें पहले से सिंचाई होती थी, ख़ास फ़ायदा पहुंचा. बाढ़ का इलाक़ा इस हिसाब से कम किया गया है:

1949	67 लाख हैक्टर
1950	40 ” ”
1951	14 ” ”

नये चीन की सिंचाई योजनाओं पर वहां की सरकार और जनता दोनों को ही गर्व है और इससे पता चलता है कि दोनों एक दूसरे में कितने घुल मिल गये हैं.

खेती के औज़ारों के मामले में भी चीन का किसान आगे बढ़ रहा है और ज़ियादा अच्छे ढंग से खेती करता है. 1951 के शुरू के छै महीने में चीन में दस लाख टन से ज़ियादा खली और डेढ़ लाख टन क़रीब के विलायती खाद किसानों ने सहयोगी समितियों से ख़रीदी. सरकार की तरफ़ से 160 कारख़ाने चल रहे हैं जो बढ़िया औज़ार तैयार करते हैं.

खेती की पैदावार में मददगार चौथी सहायक और महत्व की चीज़ हैं आपसी मदद की टोलियां. हम यहां यह बतादें कि नये चीन में सरकार कहीं भी मुश्तरका खेती के लिये दबाव नहीं डालती है. किसान को पूरी आज़ादी है कि वह अकेले खेती करे या मिल कर. आपसी मदद की आज यहां हज़ारों टोलियां है. कुछ टोलियां तो इतनी कामयाब हुई हैं कि पैदावार दुगनी बढ़ गई है. 'आपसी मदद टोलियों' के अलावा मेहनत एवज़ी (Exchange Labour) टोलियां भी हैं. इसके अलावा ज़ियादा पैदावार करने वालों को आदर्श किसान कहा जाता है जिन्हें सरकार इनाम व बढ़ावा देती है.

नये चीन की चुनौती

चीन का ज़मीन सुधार क़ानून आज सारी दुनिया के लिये और ख़ास कर पूरबी देशों के लिये एक चुनौती है. इस क़ानून के मातहत जोतने वाले ज़मीन के मालिक बन गए हैं और इसी कारन चीन की पैदावार वग़ैरा में अचरज भरी तरक़्क़ी हुई है. इसके मुक़ाबले हमारे देश के सूबों के ज़मींदारी अन्त क़ानून हैं जिनसे न किसान सुखी हैं और न ज़मींदार और पैदावार की कमी लगभग वैसी की वैसी ही बनी हुई है.

नया चीन ललकार कर कह रहा है कि हर मुल्क अपनी काया पलट सकता है और तबाही को तरक़्क़ी में बदल सकता है. क्या हमारे देश की सरकारें और प्लानिंग कमीशन वक़्त रहते चेतेंगे, किसान के सच्चे हमदर्द बनेंगे और देश को डूबने से बचायेंगे!

("चाइना टूडे" से)

—सुरेश रामभाई

میں سینچائی کی زمین کا رقبہ 32 لاکھ ایکڑ بڑھ گیا ہے۔ ساتھ ہی ساتھ 160 لاکھ ایکڑ زمین کو، جس میں پہلے سے سینچائی ہوتی تھی، خاص فائدہ پہونچا۔ باڑھ کا علاقہ اس حساب سے کم کیا گیا ہے:

1949	67 لاکھ ہیکٹر
1950	40 ” ”
1951	14 ” ”

نئے چین کی سینچائی یوجناؤں پر وہاں کی سرکار اور جنتا دونوں کو ہی گرو ہے اور اس سے پتہ چلتا ہے کہ دونوں ایک دوسرے میں کتنے گھل مل گئے ہیں۔

کھیتی کے اوزاروں کے معاملے میں بھی چین کا کسان آگے بڑھ رہا ہے اور زیادہ اچھے ڈھنگ سے کھیتی کرتا ہے۔ 1951 کے شروع کے چھ مہینے میں چین میں دس لاکھ ٹن سے زیادہ کھلی اور ڈیڑھ لاکھ ٹن کے قریب ولائتی کھاد کسانوں نے سہیوگی سمیتیوں سے خریدی۔ سرکار کی طرف سے 160 کارخانے چل رہے ہیں جو بڑھیا اوزار تیار کرتے ہیں۔

کھیتی کی پیداوار میں چوتھی سہائک اور مہتو کی چیز ہیں آپسی مدد کی ٹولیاں۔ ہم یہاں یہ بتا دیں کہ نئے چین میں سرکار کہیں بھی مشترکہ کھیتی کے لئے دباؤ نہیں ڈالتی ہے۔ کسان کو پوری آزادی ہے کہ وہ اکیلے کھیتی کرے یا مل کر۔ آپسی مدد کی آج یہاں ہزاروں ٹولیاں ہیں۔ کچھ ٹولیاں تو اتنی کامیاب ہوئی ہیں کہ پیداوار دگنی بڑھ گئی ہے۔ 'آپسی مدد ٹولیوں' کے علاوہ محنت عوضی (Exchange Labour) ٹولیاں بھی ہیں۔ اس کے علاوہ زیادہ پیداوار کرنے والوں کو آدرش کسان کہا جاتا ہے جنہیں سرکار انعام و بڑھاوا دیتی ہے۔

نئے چین کی چنوتی

چین کا زمین سدھار قانون آج ساری دنیا کے لئے اور خاص کر پوربی دیشوں کے لئے ایک چنوتی ہے۔ اس قانون کے ماتحت جوتنے والے زمین کے مالک بن گئے ہیں اور اسی کارن چین کی پیداوار وغیرہ میں اچرج بھری ترقی ہوئی ہے۔ اس کے مقابلے ہمارے دیش کے صوبوں کے زمینداری انت قانون ہیں جن سے نہ کسان سکھی ہیں اور نہ زمیندار اور پیداوار کی کمی لگ بھگ ویسی کی ویسی ہی بنی ہوئی ہے۔

نیا چین للکار کر کہہ رہا ہے کہ ہر ملک اپنی کایا پلٹ کر سکتا ہے اور تباہی کو 'ترقی' میں بدل سکتا ہے۔ کیا ہمارے دیش کی سرکاریں اور پلاننگ کمیشن وقت رہتے چیتیں گے، کسان کے سچے ہمدرد بنیں گے اور دیش کو ڈوبنے سے بچائیں گے!

('چائنا ٹوڈے' سے)

—سریش رام بھائی

किसान की हिफ़ाज़त और उसकी बेहतरी के लिये चीन की जनवादी सरकार ने तरह तरह के क़ानून क़ायदे लागू किये. पहली जून 1950 को सरकार ने खेती सम्बन्धी सारे टैक्सों में 25 फ़ी सदी कमी का ऐलान किया. किसी हलक़े में जो औसत फ़सल पैदा होती है उससे ज़ियादा फ़सल हो तो बढ़ती हिस्से पर कोई लगान नहीं. किसान को लगान नक़दी की बजाय जिन्स की शक्ल में देना पड़ता है जिससे उसको और भी आसानी रहती है. आम तौर से यह लगान फ़सल की 13 फ़ी सदी है.

चीन के पुराने काग़ज़ात से पता चलता है कि ईसवी सन् के शुरू होने से अब तक वहां कोई सात सौ बड़ी बड़ी बाढ़ें और हज़ार से ऊपर अकाल आ चुके हैं. कोमिन-तांग राज के 25 बरस में 1937 तक लगभग 80 महामारियां आईं. जंग के दिनों में इनकी रफ़्तार और भी बढ़ गई. इन सबके कारन चीन का किसान लबे-दम रहा करता था और पेट भर खाना भी उसे नसीब नहीं होता था.

नई सरकार ने चीन के इस रोग को पहचाना और उसकी दवा की. पहला काम उसने यह किया कि कच्चे और पम्पदार दोनों तरह के कुएं खुदवा डाले ताकि किसान अपनी काश्त को सींच सके. उत्तर चीन में तीन बरस में जो यह काम हुआ उसके आंकड़े यह हैं:

साल	कच्चे कुएं	पम्पदार कुएं
1949	9,0803	3,26 246
1950	9,53,955	3,95,333
1951	9,92,910	4,62,036

सिर्फ़ इन कुओं से ही काश्त के लायक़ ज़मीन 1950 में 46 लाख माओ और 1951 में 24 लाख माओ के क़रीब बढ़ गई. और 1950 में पैदावार 1949 के मुक़ाबले 2740 करोड़ केट्टी बढ़ी और 1951 में 1950 के मुक़ाबले 1588 करोड़ केट्टी बढ़ी.

कुएं खोदने वग़ैरा जैसी छोटी स्कीमों के अलावा नये चीन ने बड़ी बड़ी स्कीमें भी बनाई हैं. इनमें सब से बड़ी है हु आई नदी योजना जो आज दुनिया का सब से बड़ा अचरज समझी जाती है. नवम्बर 1950 में इस योजना का काम शुरू किया गया. जुलाई 1951 तक इस योजना में लगभग 80 लाख किसानों ने काम किया और लगभग 20 करोड़ मीटर मिट्टी खोद फेंकी, बांध बना डाले और नहरें चालू कर दीं. जुलाई 1951 तक ही इस योजना ने लगभग साढ़े पांच करोड़ किसानों को बाढ़ के डर से मुक्त कर दिया और उस साल उस इलाक़े की पहली ज़ोरदार फ़सल हुई.

हु आई योजना के अलावा नये चीन में लगभग दो सौ जगह पानी को बांधा गया है और पंद्रह लाख से ऊपर ताल, तालाब वग़ैरा बनाए गए हैं. इन सब के कारन चीन

کسان کی حفاظت اور اُس کی بہتری کے لئے چین کی جنوادی سرکار نے طرح طرح کے قانون قاعدے لاگو کئے. پہلی جون 1950 کو سرکار نے کھیتی سمبندھی سارے ٹیکسوں میں 25 فیصدی کمی کا اعلان کیا . کسی حلقے میں جو اوسط فصل پیدا ہوتی ہے اُس سے زیادہ فصل ہو تو بڑھتی حصے پر کوئی لگان نہیں . کسان کو لگان نقدی کی بجائے جنس کی شکل میں دینا پڑتا ہے جس سے اُس کو اور بھی آسانی رہتی ہے . عام طور سے یہ لگان فصل کی 13 فی‌صدی ہے .

چین کے پرانے کاغذات سے پتہ چلتا ہے کہ عیسوی سن کے شروع ہونے سے اب تک وہاں کوئی سات سو بڑی بڑی باڑھیں اور ہزار سے اُوپر اکال آچکے ہیں. کومن تانگ راج کے 25 برس میں 1937 تک بھگ 80 مہاماریاں آئیں . جنگ کے دنوں میں اِن کی رفتار اور بھی بڑھ گئی. ان سب کے کارن چین کا کسان لب‌دم رہا کرتا تھا اور پیٹ بھر کھانا بھی اُسے نصیب نہیں ہوتا تھا .

نئی سرکار نے چین کے اِس روگ کو پہچانا اور اُس کی دوا کی . پہلا کام اُس نے یہ کیا کہ کچے اور پمپ‌دار دنوں طرح کے کنوئیں کھدوا ڈالے تاکہ کسان اپنی کاشت کو سینچ سکے . اُتر چین میں تین برس میں جو یہ کام ہوا اُس کے آنکڑے یہ ہیں :

سال	کچے کنوئیں	پمپ‌دار کنوئیں
1949	9,0803	3,26,246
1950	9,53,955	3,95,333
1951	9,92,910	4,62,036

صرف اِن کنوؤں سے ہی کاشت کے لائق زمین 1950 میں 46 لاکھ ماؤ اور 1951 میں 24 لاکھ ماؤ کے قریب بڑھ گئی . اور 1950 میں پیداوار 1949 کے مقابلے 2740 کروڑ کیٹی بڑھی اور 1951 میں 1950 کے مقابلے 1588 کروڑ کیٹی بڑھی .

کنوئیں کھودنے وغیرہ جیسی چھوٹی اِسکیموں کے علاوہ نئے چین نے بڑی بڑی اِسکیمیں بھی بنائی ہیں . ان میں سب سے بڑی ہے ہوائی ندی یوجنا جو آج دنیا کا سب سے بڑا اچرج سمجھی جاتی ہے . نومبر 1950 میں اس یوجنا کا کام شروع کیا گیا . جولائی 1951 تک اس یوجنا میں لگ بھگ تیس لاکھ کسانوں نے کام کیا اور لگ بھگ بیس کروڑ میٹر مٹی کھود پھینکی، باندھ بنا ڈالے اور نہریں چالو کر دیں . جولائی 1951 تک ہی اِس یوجنا نے لگ بھگ ساڑھے پانچ کروڑ کسانوں کو باڑھ کے ڈر سے مکت کردیا اور اُس سال اُس علاقے کی پہلی زوردار فصل ہوئی .

ہوائی یوجنا کے علاوہ نئے چین میں لگ بھگ دو سو جگہ پانی کو باندھا گیا ہے اور پندرہ لاکھ سے اُوپر ڈام تالاب وغیرہ بنائے گئے ہیں . ان سب کے کارن چین

थे जिन के अन्दर नये क़ानून की हर दफ़ा तफ़सील से समझाई जाती थी, जो वह सवाल पूछते उन्हें हल किया जाता और हर तरह के शक दूर किये जाते थे. यह गांव वाले ट्रेनिंग के बाद अपने गांवों में जा कर नये क़ानून के सबसे बड़े प्रचारक और पैरोकार का काम करते.

ज़मीन सुधार क़ानून की बुनियाद में 'किसान सभा' का संगठन है जिस के बारे में क़ायदे क़ानून 14 जुलाई 1950 को पास हुए. यह किसान सभायें किसानों की अपनी चीज़ हैं जिन में वह अपनी मरजी से शामिल होते हैं. इनका मक़सद है खेतिहर मजदूरों, ग़रीब किसानों, बीच के किसानों और देहात की सभी सामन्त विरोधी ताक़तों को जमा करके एक करना ताकि किसानों के हित सुरक्षित रहें और नया क़ानून ख़ूबी के साथ अमल में लाया जाय. इन सभाओं का दूसरा काम है देहाती सहयोग समितियों का संगठन करना ताकि खेती और दूसरे उद्योग धन्दे पनप सकें और तरक़्क़ी पायें; और तीसरा काम है किसानों के राजकाजी हक़ों की हिफ़ाज़त करना, उनका राजकाजी और कलचरी स्तर ऊपर उठाना और लोकशाही राज के क़ायम करने में मदद देना. यह किसान सभायें ही वह क़ानूनी साधन हैं जिन्होंने नया ज़मीन सुधार क़ानून लागू किया.

किसान सभा की सबसे नीचे की कड़ी है ह्सांग (गांव) किसान सभा. इस के ऊपर चू किसान सभा, जिस तरह हमारे यहां गांव के ऊपर मंडल होता है. चू के बाद काउन्टी या तहसील सभा आती है फिर ज़िला और प्रान्त किसान सभा.

ज़मीन सुधार के दौरान में हर तहसील में एक जनता ट्रिबुनल बैठा करता था जिसका काम यह देखना था कि क़ानून ठीक तरह से लागू किया जा रहा है या नहीं. यह ट्रिबुनल जगह जगह घूम कर सब बातें देखता और क़ानून की पाबन्दी कराता और जो भी ख़िलाफ़ जाते उन्हें सज़ा देता. लेकिन कई बातों की मनाही थी—जिसे चाहे पकड़ लेना, लोगों के बदन पर चोट करना या क़तल वग़ैरा. ख़ास बात यह है कि हर किसान को और उसके प्रतिनिधि को अधिकार है कि जलसों में किसी भी बड़े से बड़े ओहदेदार की बेजा हरकत पर एतराज़ कर सकता है और उससे जवाब तलब कर सकता है.

खेती के दूसरे सहारे

जैसा हमने ऊपर कहा है नये ज़मीन सुधार क़ानून ने चीन की अनाज की पैदावार और तमाम उद्योग धन्दों की निकासी को बेहद तरक़्क़ी दी है. पर इसके अलावा चार चीज़ें और हैं जिन्होंने काफ़ी मदद पहुँचाई है—(i) लगान में कमी और सरकारी मदद, (ii) पानी बांधने की छोटी बड़ी योजनायें, (iii) खेती के नए औज़ार और (iv) आपसी मदद की टोलियां.

تھے جن کے اندر نئے قانون کی ہر دفعہ تفصیل سے سمجھائی جاتی تھی، جو وہ سوال پوچھتے اُنھیں حل کیا جاتا اور ہر طرح کے شک دور کئے جاتے تھے. یہ گاؤں والے ٹریننگ کے بعد اپنے گاؤں میں جا کر نئے قانون کے سب سے بڑے پرچارک اور پیروکار کا کام کرتے.

زمین سدھار قانون کی بنیاد میں 'کسان سبھا' کا سنگٹھن ہے. جس کے بارے میں قاعدے قانون 14 جولائی سن 1950 کو پاس ہوئے. یہ کسان سبھائیں کسانوں کی اپنی چیز ہیں جن میں وہ اپنی مرضی سے شامل ہوتے ہیں. ان کا مقصد ہے کھیتی ہر مزدوروں، غریب کسانوں، بیچ کے کسانوں اور دیہات کی سبھی سامنت ورودھی طاقتوں کو جمع کر کے ایک کرنا تاکہ کسانوں کے ہت سرکشت رہیں اور نیا قانون خوبی کے ساتھ عمل میں لایا جائے. ان سبھاؤں کا دوسرا کام ہے دیہاتی سہیوگ سمیتیوں کا سنگٹھن کرنا تاکہ کھیتی اور دوسرے اُدیوگ دھندے پنپ سکیں اور ترقی پائیں؛ اور تیسرا کام ہے کسانوں کے راج کاجی حقوں کی حفاظت کرنا، ان کا راج کاجی اور کلچری اسطر اوپر اٹھانا اور لوک شاہی راج کے قائم کرنے میں مدد دینا. یہ کسان سبھائیں ہی وہ قانونی سادھن ہیں جنھوں نے نیا زمین سدھار قانون لاگو کیا.

کسان سبھا کی سب سے نیچے کی کڑی ہے ہسانگ (گاؤں) کسان سبھا. اس کے اوپر چو کسان سبھا، جس طرح ہمارے یہاں گاؤں کے اوپر منڈل ہوتا ہے. چو کے بعد کاونٹی یا تحصیل سبھا آتی ہے، پھر ضلع اور پرانت کسان سبھا.

زمین سدھار کے دوران میں ہر تحصیل میں ایک جنتا ٹریبونل بیٹھا کرتا تھا جس کا کام یہ دیکھنا تھا کہ قانون ٹھیک طرح سے لاگو کیا جا رہا ہے یا نہیں. یہ ٹریبونل جگہ جگہ گھوم کر سب باتیں دیکھتا اور قانون کی پابندی کراتا اور جو بھی خلاف جاتے انھیں سزا دیتا. لیکن کئی باتوں کی منادی تھی—جسے چاہے پکڑ لینا، لوگوں کے بدن پر چوٹ کرنا یا قتل وغیرہ. خاص بات یہ ہے کہ ہر کسان کو اور اس کے پرتی ندھی کو ادھیکار ہے کہ جلسوں میں کسی بھی بڑے سے بڑے عہدے‌دار کی بیجا حرکت پر اعتراض کر سکتا ہے اور اس سے جواب طلب کر سکتا ہے.

کھیتی کے دوسرے سہارے

جیسا ہم نے اوپر کہا ہے نئے زمین سدھار قانون نے چین کی اناج کی پیداوار اور تمام اُدیوگ دھندوں کی نکاسی کو بےحد ترقی دی ہے. پر اس کے علاوہ چار چیزیں اور ہیں جنھوں نے کافی مدد پہونچائی ہے—(i) لگان میں کمی اور سرکاری مدد، (ii) پانی باندھنے کی چھوٹی بڑی یوجنائیں (iii) کھیتی کے نئے اوزار اور (iv) آپسی مدد کی ٹولیاں.

अनाज न मंगा कर उद्योग धन्दों को बढ़ाने वाली दूसरी दूसरी चीज़ें मंगाते हैं. 73 बरस के बाद अंतर क़ौमी ब्योपार में उन्हें पहली बार बचत 1951 में हुई.

ख़रीद शक्ति की सूरत यह है कि उत्तर पूरब चीन में चार सूबों में दस आदमी 1949 में जहां 36 गज़ कपड़ा ख़रीद सकते थे, 1951 में वह 80 गज़ ख़रीद सकते थे. सन 1950 में लोगों की आम ख़रीद शक्ति 1949 के मुक़ाबले 68 फ़ी सदी जियादा थी और 1951 में 1950 से 53·5 फ़ी सदी यानी 1949 की ढाई गुनी. एक गांव का सर्वे करने पर देखा गया कि 1948 में वहां के लोगों की ख़रीद शक्ति 100 मान लें तो 1949 में 136 थी और 1950 में 263 .

ज़मीन सुधार क़ानून की सब से ख़ास देन है चीन की जनता में जागृति और सच्ची लोकशाही की नींव. पहले तो ज़मींदार लोग ज़मीन के मालिक होने के कारन किसान को सताते और चूसते थे. इसलिये जनता को अहसास ही नहीं होता था कि कौन राज करता है और 'कोऊ हु राजा हमें का लाभ' वाली बात थी. लेकिन अब सूरत एकदम बदल गई है और जनता यह महसूस करती है कि देश हमारा है और हम उसके हैं. चीन की जनता में आज जान है, संगठन है, आत्माभिमान है और सारी दुनिया की जनता को अपना भाई समझती है और शान्ति की हर कोशिश में पूरा हाथ बटाने को हमेशा मुस्तैद रहती है.

ज़मीन सुधार कैसे ?

सवाल उठता है आख़िर चीन के नेताओं ने यह सब कैसे कर लिया ? यह जादू का सा असर क्यों कर पैदा किया ? इसकी तफ़सील में न जाकर हम सिर्फ़ इतना कहेंगे कि इसकी बुनियाद में वह तीन उसूल हैं जिन पर माओ त्से-तुंग और चीन के सभी नेताओं ने सख़्ती के साथ अमल किया—ईमानदारी, सादगी और जनता की सेवा. आज चीन के अन्दर वहां के राष्ट्रपति माओ त्से-तुंग और मामूली किसान के बीच आसानी से फ़र्क़ नहीं किया जा सकता. दोनों का लिबास एक है, दोनों का रहन सहन भी काफ़ी मिलता जुलता है. साथ ही साथ आज चीन के अन्दर बेईमानी, दग़ा और रिश्वत की गुंजायश नहीं है. चोरबाज़ारी करने वाले, धोका देने वाले, घूस लेने वाले या बदचलनी करने वाले अफ़सर का वहां ठिकाना नहीं है. नेताओं की इस लगन के कारन ही जनता को उनकी नेकी पर विश्वास हुआ और उनके कहने पर उसने अमल किया.

ज़मीन सुधार क़ानून को अमली जामा पहनाने के लिये पहले तो लोगों को समझाया जाता था, इस क़ानून की ज़रूरत और इसकी अहमियत बताई जाती थी. किसानों की ट्रेनिंग के लिये दो दो चार चार हफ़्ते के कैम्प होते

اناج نہ منگا کر اُدیوگ دھندوں کو بڑھانے والی دوسری ضروری چیزیں منگاتے ہیں۔ اور 73 برس کے بعد انتر قومی بیوپار میں اُنہیں پہلی بار بچت 1951 میں ہوئی۔

خرید شکتی کی صورت یہ ہے کہ اُتر پورب چین میں چار صوبوں میں دس آدمی 1949 میں جہاں 36 گز کپڑا خرید سکتے تھے، 1951 میں وہ 80 گز خرید سکتے تھے۔ سن 1950 میں لوگوں کی عام خرید شکتی 1949 کے مقابلے 68 فی‌صدی زیادہ تھی اور 1951 میں 1950 سے 53·5 فی‌صدی یعنی 1949 کی ڈھائی گنی۔ ایک گاؤں کا سروے کرنے پر دیکھا گیا کہ 1948 میں وہاں کے لوگوں کی خرید شکتی 100 مان لیں تو 1949 میں 136 تھی اور 1950 میں 263 ,

زمین سدھار قانون کی سب سے خاص دین ہے چین کی جنتا میں جاگرتی اور سچی لوک شاہی کی نیو۔ پہلے تو زمیندار لوگ زمین کے مالک ہونے کے کارن کسان کو ستاتے اور چوستے تھے، اس لئے جنتا کو احساس ہی نہیں ہوتا تھا کہ کون راج کرتا ہے اور 'کوؤ ہو راجہ ہمیں کا لابھ' والی بات تھی۔ لیکن اب صورت ایک دم بدل گئی ہے اور جنتا یہ محسوس کرتی ہے کہ دیش ہمارا ہے اور ہم اس کے ہیں۔ چین کی جنتا میں آج جان ہے، سنگٹھن ہے، آتم ابھیمان ہے اور ساری دنیا کی جنتا کو اپنا بھائی سمجھتی ہے اور شانتی کی ہر کوشش میں پورا ہاتھ بٹانے کو ہمیشہ مستعد رہتی ہے۔

زمین سدھار کیسے ؟

سوال اُٹھتا ہے آخر چین کے نیتاؤں نے یہ سب کیسے کر لیا ؟ یہ جادو کا سا اثر کیوں کر پیدا کیا؟ اِس کی تفصیل میں نہ جا کر ہم صرف اتنا کہینگے کہ اِس کی بنیاد میں وہ تین اصول ہیں جن پر ماؤتسے تنگ اور چین کے سبھی نیتاؤں نے سختی کے ساتھ عمل کیا— ایمانداری، سادگی اور جنتا کی سیوا۔ آج چین کے اندر وہاں کے راشٹر پتی ماؤتسے تنگ اور معمولی کسان کے بیچ آسانی سے فرق نہیں کیا جا سکتا۔ دونوں کا لباس ایک ہے، دونوں کا رہن سہن بھی کافی ملتا جلتا ہے۔ ساتھ ہی ساتھ آج چین کے اندر بے ایمانی، دغا اور رشوت کی گنجائش نہیں ہے۔ چور بازاری کرنے والے، دھوکا دینے والے، گھوس لینے والے یا بد چلنی کرنے والے افسر کا وہاں ٹھکانہ نہیں ہے۔ نیتاؤں کی اِس لگن کے کارن ہی جنتا کو اُن کی نیکی پر وشواش ہوا اور اُن کے کہنے پر اُس نے عمل کیا۔

زمین سدھار قانون کو عملی جامہ پہنانے کے لئے پہلے تو لوگوں کو سمجھایا جاتا تھا، اس قانون کی ضرورت اور اس کی اہمیت بتائی جاتی تھی۔ کسانوں کی ٹریننگ کے لئے دو دو چار چار ہفتے کے کیمپ ہوتے

ऊपर के आंकड़ों से यह साफ़ पता चलता है कि नये ज़मीन सुधार क़ानून ने चीन की हालत को बुनियादी तौर से बदल दिया है और लोगों में नई जान डाल दी है. ज़मीन का मालिक बनने के बाद चीन का किसान, खेतिहर मज़दूर सभी आनन्द से हैं और मन लगा कर काम करते हैं. इस का लाज़मी नतीजा चीन की खेती की पैदावार पर पड़ना था और जो पड़ा. 1948-49 में चांग काई शेक का चीन जो विदेशों से अनाज की भीक मांगता था 1952 में माओ त्से तुंग के उसी चीन ने हिन्दुस्तान व दूसरे देशों को अनाज इमदाद के तौर पर भेजा.

ज़मीन सुधार क़ानून का असर चीन की खेती पर क्या पड़ा है इसके आंकड़े हम नीचे देते हैं. 1936 में चीन में सब से बेहतरीन पैदावार हुई थी फिर उस के बाद जापान के हमले, आपसी लड़ाई और जग व्यापी जंग के आ जाने से वहां पैदावार नहीं पनप सकी. सन 1936 के आंकड़ों को 100 मान कर हम सन 1950 और 1951 के आंकड़े दे रहे हैं.

	अनाज	1936	1950	1951
1.	चावल	100	87·0	92·8
2.	गेहूँ	100	96·5	99·4
3.	सोया बीन	100	80·4	88·5
4.	कपास	100	83·7	133·0
5.	तम्बाकू	100	24·1	130·5
6.	हैम्प	100	114·7	227·1

सन 1950 में अनाज की कुल पैदावार लगभग 1250 लाख टन थी जो 1949 की पैदावार से 122 लाख टन ज़ियादा थी. जैसा हमने ऊपर कहा अब चीन अनाज के लिये दूसरों का मोहताज नहीं रहा. 1948-49 में वह जहां 20 लाख टन अनाज बाहर से मंगाता था, वहां 1951 में उसने 5 लाख टन से ज़ियादा अनाज हिन्दुस्तान को ही भेजा. और 1952 में चीन की पैदावार इतनी ज़ियादा हुई कि चीन की 47 करोड़ आबादी के लिये अगली फ़सल तक के वास्ते ग़ल्ला रखने के बाद इतना ग़ल्ला बच रहा जिससे दस करोड़ आदमी एक साल तक अपना काम अच्छी तरह चला सकते थे.

पैदावार में इस इज़ाफ़े के कारन चीन को तीन ख़ास फ़ायदे और भी हुए—(i) अन्तर क़ौमी व्योपार में तरक़्क़ी, (ii) लोगों की ख़रीद शक्ति का ऊपर उठना, और (iii) आम जनता में जागृती.

1949 में चीन का अन्तर क़ौमी व्योपार घाटे का सौदा था. इसकी ख़ास वजह थी अनाज की ख़रीदारी—जैसे हमारे हिन्दुस्तान में भी आज हो रहा है. अब चीन वाले

اوپر کے آنکڑوں سے یہ صاف پتہ چلتا ہے کہ نئے زمین سدھار قانون نے چین کی حالت کو بنیادی طور سے بدل دیا ہے اور لوگوں میں نئی جان ڈال دی ہے ۔ زمین کا مالک بننے کے بعد چین کا کسان، کھیتی‌ہر مزدور سبھی آنند سے ہیں اور من لگا کر کام کرتے ہیں ۔ اس کا لازمی نتیجہ چین کی کھیتی کی پیداوار پر پڑنا تھا اور جو پڑا ۔ 1948-49 میں چانگ کائی‌شیک کا چین جو ودیشوں سے اناج کی بھیک مانگتا تھا 1952 میں ماؤسے تنگ کے اسی چین نے ہندستان و دوسرے دیشوں کو اناج امداد کے طور پر بھیجا ۔

زمین سدھار قانون کا اثر چین کے کھیتی پر کیا پڑا ہے اس کے آنکڑے ہم نیچے دیتے ہیں ۔ 1936 میں چین میں سب سے بہترین پیداوار ہوئی تھی پھر اس کے بعد جاپان کے حملے، آپسی لڑائی اور جگ ویاپی جنگ کے آجانے سے وہاں پیداوار نہیں پنپ سکی ۔ سن 1936 کے آنکڑوں کو 100 مان کر ہم سن 1950 اور 1951 کے آنکڑے دے رہے ہیں ۔

	اناج	1936	1950	1961
.1	چاول	100	87·0	92·8
.2	گیہوں	100	96·5	99.4
.3	سویابین	100	80.4	88.5
.4	کپاس	100	83·7	133·0
.5	تمباکو	100	24·1	130·5
.6	ہیمپ	100	114·7	227·1

سن 1950 میں اناج کی کل پیداوار لگ‌بھگ 1250 لاکھ ٹن تھی جو 1949 کی پیداوار سے 122 لاکھ ٹن زیادہ تھی ۔ جیسا ہم نے اوپر کہا اب چین اناج کے لئے دوسروں کا محتاج نہیں رہا ۔ 1948-49 میں وہ جہاں 20 لاکھ ٹن اناج باہر سے منگاتا تھا، وہاں 1951 میں اس نے 5 لاکھ ٹن سے زیادہ اناج ہندستان کو ہی بھیجا ۔ اور 1952 میں چین کی پیداوار اتنی زیادہ ہوئی کہ چین کی 47 کروڑ آبادی کے لئے اگلی فصل تک کے واسطے غلہ رکھنے کے بعد اتنا غلہ بچ رہا جس سے دس کروڑ آدمی ایک سال تک اپنا کام اچھی طرح چلا سکتے تھے ۔

پیداوار میں اس اضافے کے کارن چین کو تین خاص فائدے اور بھی ہوئے—(i) انتر قومی بیوپار میں ترقی، (ii) لوگوں کی خرید شکتی کا اوپر اٹھنا، اور (iii) عام جنتا میں جاگرتی ۔

1949 میں چین کا انتر قومی بیوپار گھاٹے کا سودا تھا ۔ اس کی خاص وجہ تھی اناج کی خریداری—جیسے ہمارے ہندستان میں بھی آج ہو رہا ہے ۔ اب چین والے

सवाल ही नहीं था. ज़मींदारों और मालदार किसानों से ली हुई ज़मीन इन्हीं को बांट दी गई है ज़मींदारों और मालदार किसानों के अलावा पुराने मन्दिरों, गिरजों, मठों स्कूलों और दूसरी जन संस्थाओं और उद्योग पतियों व व्योपारियों की ज़मीनें भी ज़ब्त करके इन आदमियों में बांट दी गईं.

ज़मीन सुधार क़ानून से चीन की हालत में क्या फ़र्क़ पड़ा है इसका अन्दाज़ समझने के लिये हम चीन के सिन-क्यांग प्रान्त के एक गांव युंग क्वाई को लेते हैं.

नीचे के आंकड़ों में दिखाया गया है कि ज़मीन सुधार क़ानून के पहले वहां खेतिहर मज़दूरों, ग़रीब किसानों, दरम्यानी किसानों, मालदार किसानों और ज़मींदारों की तादाद व हालत कैसी थी और क़ानून के बाद क्या हालत हुई.

سوال ہی نہیں تھا. زمینداروں اور مالدار کسانوں سے لی ہوئی زمین انہیں کو بانٹ دی گئی ہے . زمینداروں اور مالدار کسانوں کے علاوہ پرانے مندروں' گرجوں' مٹھوں اسکولوں اور دوسری جن سنستھاؤں اور ادیوگ پتیوں و ویوپاریوں کی زمینیں بھی ضبط کر کے ان آدمیوں میں بانٹ دی گئیں .

زمین سدھار قانون سے چین کی حالت میں کیا فرق پڑا ہے اس کا اندازہ سمجھنے کے لئے ہم چین کے سن کیانگ پرانت کے ایک گاؤں ینگ کوئی کو لیتے ہیں .

نیچے کے آنکڑوں میں دکھایا گیا ہے کہ زمین سدھار قانون کے پہلے وہاں کھیتی ہر مزدوروں' غریب کسانوں' درمیانی کسانوں' مالدار کسانوں اور زمینداروں کی تعداد و حالت کیسی تھی اور اس قانون کے بعد کیا حالت ہوئی .

क़ानून के पहले قانون کے پہلے

गिनती گنتی	नाम نام	आबादी آبادی	%	ज़मीन زمین	%	घर گھر	%	घोड़े گھوڑے	%	गाड़ी گاڑی	%
1	खेतिहर मज़दूर کھیتی ہر مزدور	283	41·9	...	...	...	...	...	...	...	...
2	ग़रीब किसान غریب کسان	117	17·3	0·4	0 06	14	6·1	10	7·2	2	10·5
3	दरम्यानी किसान درمیانی کسان	82	12·1	45·3	6·90	20	8·8	29	21 2	4	21·1
4	मालदार किसान مالدار کسان	131	19·4	315·7	47·84	92	40 4	55	39 9	3	47·3
5	ज़मींदार زمیندار	63	9·3	208·4	45·20	102	53·7	44	31 9	4	21·1

क़ानून के बाद قانون کے بعد

गिनती گنتی	नाम نام	आबादी آبادی	%	ज़मीन زمین	%	घर گھر	%	घोड़े گھوڑے	%	गाड़ी گاڑی	%
1	खेतिहर मज़दूर کھیتی ہر مزدور	285	37	189 26	36·9	95	41·7	47	41·4	13	62 0
2	ग़रीब किसान غریب کسان	166	22	110·22	21·4	52	22·8	21	19·9	3	14·2
3	दरम्यानी किसान درمیانی کسان	93	12	62·93	12·3	36	15 8	17	16·0	5	23·8
4	मालदार किसान مالدار کسان	146	19	96·94	18 8	32	14·0	16	15·0	...	...
5	ज़मींदार زمیندار	82	10	51·45	10 6	13	5·7	5	4·7	...	...

इस क़ानून का बुनियादी उसूल है कि ज़मींदार की मिलकियत की पुरानी प्रथा के बजाय ज़मीन पर खेती करने वाले किसान की मिलकियत की प्रथा क़ायम हो ताकि देश की पैदावार बढ़ सके और उसका अच्छी तरह विकास हो. जैसा हम ऊपर कह चुके हैं चोटी के और नीचे वाले दर्जे—ज़मींदार और खेतिहर मज़दूर—नाम के लिये भी नहीं रहने दिए गए. लेकिन किस तरह—ज़मींदार के पास जो ज़मीन, खेती वाले जानवर या औज़ार, बेशी गल्ला और देहात के अन्दर जो बेशी मकान होंगे वह ज़ब्त कर लिये जायंगे. लेकिन उसकी दूसरी जायदाद—जैसे कारख़ाने या तिजारती सामान और वह ज़मीन व दूसरी जायदादें जो ज़मींदार लोग बराहेरास्त कारख़ानों या व्यापार के काम में इस्तेमाल करते हैं—ज़ब्त नहीं की जायगी. लेकिन इनक़लाबी फ़ौज के आदमी, शहीदों के बाल बच्चे या उनके सहारे परवरिश पाने वाले कारीगर लोग, काम करने वाले मज़दूर, पढ़ाने वाले मास्टर, खोन्चा बेचने वाले और दूसरे लोग जिनके पास कुछ थोड़ी सी ज़मीन है वह उसे लगान पर उठा देते हैं क्योंकि ख़ुद नहीं जोत सकते हैं. उन्हें ज़मींदारों में नहीं शुमार किया जायगा और उनकी ज़मीनों को हाथ भी नहीं लगाया जायगा बशर्ते कि यह ज़मीनें हर आदमी को मिलने वाली ज़मीनों से दुगनी हों. लेकिन अगर दुगने से ज़ियादा होंगी तब उसे ज़ब्त कर लिया जायगा. अगर इन ज़मीनों के मालिक बूढ़े हैं, यतीम हैं, लाचार बिधवा या ज़मीन ही उनका एक सहारा है तो दुगना होने पर भी उनके साथ रियायत बरती जायगी.

मालदार किसान की ज़मीन आम तौर पर ज़ब्त नहीं की गई क्योंकि वह कारख़ाने वाले की तरह पैदावार में ख़ुद हिस्सा लेता है. उनके पास जो ज़मीन है जिसे वह ख़ुद जोतते या मज़दूरों से जुतवाते हैं वह ज़ब्त नहीं की गई. उनको ऐसी ज़मीन का कुछ हिस्सा लगान पर उठा देने का भी इख़्तयार दिया गया है. लेकिन अगर लगान पर दी गई ज़मीन का रक़बा उस ज़मीन से ज़ियादा हो जो वह मालदार किसान ख़ुद जोतता या मज़दूरों से जुतवाता है तो लगानू ज़मीन ज़ब्त कर ली गई.

दरम्यानी किसान की ज़मीन पर हाथ भी नहीं लगाया गया. यही नहीं अगर किसी दरम्यानी किसान के पास औसत से कम ज़मीन है तो उसे और ज़मीन सरकार ने दे दी. पर अगर उसके पास ज़मीन औसत से ज़ियादा थी तब उसे नहीं छुआ गया. इस वजह से दरम्यानी किसानों ने जो कुल खेती आबादी का लगभग एक तिहाई हैं, नये चीन के ज़मीन सुधार क़ानून का पूरी तरह समर्थन किया.

ग़रीब किसान और खेतिहर मज़दूर से कुछ लेने का

اِس قانون کا بنیادی اصول ہے کہ زمیندار کی ملکیت کی پرانی پرتھا کے بجائے زمین پر کھیتی کرنے والے کسان کی ملکیت کی پرتھا قائم ہو تاکہ دیش کی پیداوار بڑھ سکے اور اُس کا اچھی طرح وکاس ہو۔ جیسا ہم اوپر کہہ چکے ہیں چوٹی کے و نیچے والے درجے—زمیندار اور کھیتی ہر مزدور—نام کے لئے بھی نہیں رہنے دیئے گئے۔ لیکن کس طرح—زمیندار کے پاس جو زمین، کھیتی والے جانور یا اوزار، بیشی غلہ اور دیہات کے اندر جو بیشی مکان ہونگے وہ ضبط کر لئے جائینگے۔ لیکن اُس کی دوسری جائداد—جیسے کارخانے یا تجارتی سامان، اور وہ زمین و دوسری جائدادیں جو زمیندار لوگ براہ راست کارخانوں یا ویاپار کے کام میں استعمال کرتے ہیں—ضبط نہیں کی جائے گی۔ لیکن انقلابی فوج کے آدمی، شہیدوں کے بال بچے یا اُن کے سہارے پرورش پانے والے، کاریگر لوگ، کام کرنے والے مزدور، پڑھانے والے ماسٹر، خونچہ بیچنے والے اور دوسرے لوگ جن کے پاس کچھ تھوڑی سی زمین ہے وہ اُسے لگان پر اُٹھا دیتے ہیں کیونکہ خود نہیں جوت سکتے ہیں۔ اُنہیں زمینداروں میں نہیں شمار کیا جائے گا اور اُن کی زمینوں کو ہاتھ بھی نہیں لگایا جائے گا بشرطیکہ یہ زمینیں ہر آدمی کو ملنے والی زمینوں سے دگنی ہوں۔ لیکن اگر دگنے سے زیادہ ہوگی تب اُسے ضبط کر لیا جائے گا۔ اگر اِن زمینوں کے مالک بوڑھے ہیں، یتیم ہیں، لاچار بدھوا اور یا زمین ہی اُن کا ایک سہارا ہے تو دگنا ہونے پر بھی اُن کے ساتھ رعایت برتی جائے گی۔

مالدار کسان کی زمین عام طور پر ضبط نہیں کی گئی کیونکہ وہ کارخانے والے کی طرح پیداوار میں خود حصہ لیتا ہے۔ اُن کے پاس جو زمین ہے جسے وہ خود جوتتے ہیں یا مزدوروں سے جتواتے ہیں وہ ضبط نہیں کی گئی۔ اُن کو ایسی زمین کا کچھ حصہ لگان پر اُٹھا دینے کا بھی اختیار دیا گیا ہے۔ لیکن اگر لگان پر دی گئی زمین کا رقبہ اس زمین سے زیادہ ہو جو وہ مالدار کسان خود جوتتا یا مزدوروں سے جتواتا ہے تو لگانو زمین ضبط کر لی گئی۔

درمیانی کسان کی زمین پر ہاتھ بھی نہیں لگایا گیا۔ یہی نہیں، اگر کسی درمیانی کسان کے پاس اوسط سے کم زمین ہے تو اُسے اور زمین سرکار نے دے دی۔ پر اگر اس کے پاس زمین اوسط سے زیادہ تھی تب بھی اُسے نہیں چھوا گیا۔ اِس وجہ سے درمیانی کسانوں نے جو کل کھیتی آبادی کا لگ بھگ ایک تہائی ہیں نئے چین کے زمین سدھار قانون کا پوری طرح سمرتھن کیا۔

غریب کسان اور کھیتی ہر مزدور سے کچھ لینے کا

रोज़ी के लिये दूसरों के शोषन पर निर्भर है. ज़मींदार यह शोषन कई तरह के करता है—लगान वसूल करना, सूद पर रुपया देना, मज़दूरों से बेगार लेना. पर शोषन का आम रूप लगान वसूली होता है.

मालदार किसान वह आदमी है जिसके पास अपनी ज़मीन है, लगान की है या दोनों है और साथ ही साथ उसके पास कुछ पूंजी है और पैदावार के दूसरे बेहतरीन साधन भी हैं, और वह थोड़ी बहुत मेहनत ख़ुद भी करता है. लेकिन आम तौर से वह शोषन पर निर्भर है. जिसके लिये वह या तो मज़दूरों से बेगार लेता है या ज़मीन का लगान वसूल करता है या सूद पर रुपया देता है. ज़मींदार और मालदार किसान में बुनियादी फ़र्क़ यह है कि मालदार किसान थोड़ी बहुत मेहनत ख़ुद भी करता है लेकिन ज़मींदार बिल्कुल नही करता.

दरम्यानी किसान वह आदमी है जो जिस ज़मीन को जोतता है उसका कुल या थोड़ा सा हिस्सा उसका अपना है और बाक़ी का लगान देता है, या बिल्कुल बेज़मीन वाला है और कुल ज़मीन का लगान देता है. उसके पास खेती के कुछ औज़ार होते हैं जिनके ज़रिये वह पूरे तौर पर या ज़ियादा तर अपनी मेहनत पर निर्भर करता है और दूसरों का शोषन नहीं करता. बल्कि लगान या सूद की शक्ल में दूसरे ही उसका शोषन कर लेते हैं. लेकिन कभी कभी वह अपनी उस आमदनी से जो उसकी रोज़ी का मुस्तक़िल और ख़ास साधन नहीं है दूसरों का कुछ हद तक शोषन कर भी लेता है.

ग़रीब किसान वह आदमी है जो जिस ज़मीन को जोतता है उसमें से बहुत थोड़ी सी उसकी है या बिल्कुल नहीं है. उसके पास खेती के अधूरे औज़ार होते हैं और लगान पर ज़मीन लेता है, और दूसरे लोग उसका शोषन लगान, सूद या बेगार की शकल में करते हैं. दरम्यानी किसान और ग़रीब किसान में फ़र्क़ यह है कि दरम्यानी किसान आम तौर पर अपनी मेहनत नहीं बेचता लेकिन ग़रीब किसान को समय समय पर अपनी मेहनत बेचना पड़ती है.

खेतिहर मज़दूर वह आदमी है जिसके पास न औज़ार हैं न ज़मीन. है भी तो बहुत ही कम. वह रोज़ी के लिये अपनी कुल की कुल या ज़ियादा-तर मेहनत बेचने पर मजबूर है.

अब हम यह देखेंगे कि ज़मीन सुधार क़ानून के मातहत इन पांचों के साथ कैसा व्यवहार किया गया.

روزی کے لئے دوسروں کے شوشن پر نربھر ہے۔ زمیندار یہ شوشن کئی طرح سے کرتا ہے—لگان وصول کرنا، سود پر روپیہ دینا، مزدوروں سے بیگار لینا۔ پر شوشن کا عام روپ لگان وصولی ہی ہوتا ہے۔

مالدار کسان وہ آدمی ہے جس کے پاس اپنی زمین ہے، لگان کی ہے یا دونوں ہے اور ساتھ ہی ساتھ اس کے پاس کچھ پونجی ہے اور پیداوار کے دوسرے بہترین سادھن بھی ہیں، اور وہ تھوڑی بہت محنت خود بھی کرتا ہے۔ لیکن عام طور سے وہ شوشن پر نربھر ہے۔ جس کے لئے وہ یا تو مزدوروں سے بیگار لیتا ہے یا زمین کا لگان وصول کرتا ہے یا سود پر روپیہ دیتا ہے۔ زمیندار اور مالدار کسان میں بنیادی فرق یہ ہے، کہ مالدار کسان تھوڑی بہت محنت خود بھی کرتا ہے لیکن زمیندار بالکل نہیں کرتا۔

درمیانی کسان وہ آدمی ہے جو جس زمین کو جوتتا ہے اس کا کل یا تھوڑا سا حصہ اس کا اپنا ہے اور باقی کا لگان دیتا ہے، یا بالکل بے زمین والا ہے اور کل زمین کا لگان دیتا ہے۔ اس کے پاس کھیتی کے کچھ اوزار ہوتے ہیں جن کے ذریعے وہ پورے طور پر یا زیادہ تر اپنی محنت پر نربھر کرتا ہے اور دوسروں کا شوشن نہیں کرتا۔ بلکہ لگان یا سود کی شکل میں دوسرے ہی اس کا شوشن کر لیتے ہیں۔ لیکن کبھی کبھی وہ اپنی اس آمدنی سے جو اس کی روزی کا مستقل اور خاص سادھن نہیں ہے دوسروں کا کچھ حد تک شوشن کر بھی لیتا ہے۔

غریب کسان وہ آدمی ہے جو جس زمین کو جوتتا ہے اس میں سے بہت تھوڑی سی اس کی ہے یا بالکل نہیں ہے۔ اس کے پاس کھیتی کے ادھورے اوزار ہوتے ہیں اور لگان پر زمین لیتا ہے، اور دوسرے لوگ اس کا شوشن لگان، سود یا بیگار کی شکل میں کرتے ہیں۔ درمیانی کسان اور غریب کسان میں فرق یہ ہے کہ درمیانی کسان عام طور پر اپنی محنت نہیں بیچتا لیکن غریب کسان کو سمے سمے پر اپنی محنت بیچنا پڑتی ہے۔

کھیتی‌ہر مزدور وہ آدمی ہے جس کے پاس نہ اوزار ہے نہ زمین۔ ہے بھی تو بہت ہی کم۔ وہ روزی کے لئے اپنی کل کی کل یا زیادہ تر محنت بیچنے پر مجبور ہے۔

اب ہم یہ دیکھیں گے کہ زمین سدھار قانون کے ماتحت ان پانچوں کے ساتھ کیسا بیوہار کیا۔

दक्खिन पच्छिमी हिस्से में है और जहां चांग काई शेक का दख़ल नहीं चलता था—अपने इस विचार को अमली जामा पहना कर थोड़ी बहुत कामयाबी और सोलह आने आत्मविश्वास हासिल कर लिया. पहली अक्तूबर 1949 को जब सारे चीन की बागडोर उनके हाथ में आई तो उन्होंने पहला काम ज़मीन सुधार का ही किया. चीन के नेता कहते हैं कि हमारा ज़मीन सुधार क़ानून ही हमारे इन्क़लाब की बुनियादी ईंट है और इसी सुधार की बदौलत हम अपने देश का कुछ भला कर सके हैं. हिन्दुस्तान के जो भाई और बहन पिछले डेढ़ बरस में चीन गये हैं उन्होंने भी इस सच्चाई को क़बूल किया है और यह बताया है कि चीन की काया पलटने में ज़मीन सुधार क़ानून का बहुत ही बड़ा हाथ है. अब हम ज़रा तफ़सील के साथ देखेंगे कि चीन का ज़मीन सुधार क़ानून क्या है और इसने किस तरह चीन के ग़रीब से ग़रीब आदमी के अन्दर नई जान फूंक दी

पुराने चीन में—चांग काई शेक वाले चीन में—खेती पर ज़िन्दा रहने वाले लोगों की आबादी 41 करोड़ थी और खेती की जाने वाली ज़मीन का रक़बा 140 करोड़ मौ (छै मौ=एक एकड़) था. इस आबादी में लगभग पांच फ़ीसदी लोग ज़मींदार थे और पांच फ़ीसदी मालदार किसान थे. इस दस फ़ीसदी आबादी के पास चीन की 70 फ़ीसदी खेती वाली ज़मीन थी. बाक़ी 10 फ़ीसदी आबादी के पास—जिस में बीच के किसान और ग़रीब किसान और खेतिहर मज़दूर शामिल हैं—बाक़ी 30 फ़ीसदी खेती वाली ज़मीन थी. इस 90 फ़ी सदी आबादी का लगभग दो तिहाई हिस्सा ऐसे प्रानियों का था जो निहायत ग़रीब और बे ज़मीन वाले थे और दूसरों के खेतों में जा कर काम करते थे. इन मज़दूरों को अपनी मेहनत से पैदा की हुई फ़सल का आधा यानी 50 फ़ीसदी हिस्सा लगान के रूप में दे देना पड़ता था और कभी कभी पूरा 100 फ़ीसदी. ज़ाहिर बात है कि ऐसी हालत में देश में ज़रूरत के लायक़ न तो काफ़ी अनाज पैदा होता था और आए दिन जगह जगह अकाल और भुकमरी का ज़ोर रहता था.

चीन ने ज़मीन सुधार के सिलसिले में पूरी खेतिहर आबादी को पांच हिस्सों में बाटा: (1) ज़मींदार (2) मालदार किसान (3) दरम्यानी किसान (4) ग़रीब किसान (5) बे ज़मीन वाला मज़दूर. इन पांचों का मतलब नीचे दिया जा रहा है :—

ज़मींदार वह आदमी है जो ज़मीन का मालिक है लेकिन ख़ुद कोई मेहनत नहीं करता. और जो अपनी

دکھن پچھمی حصے میں ہے اور جہاں چانگ کائی شیک کا دخل نہیں چلتا تھا—اپنے اِس وچار کو عملی جامہ پہنا کر تھوڑی بہت کامیابی اور سولہ آنے آتم وشواس حاصل کرلیا. پہلی اکتوبر 1949 کو جب سارے چین کی باگ‌ڈور اُن کے ہاتھ میں آئی تو اُنہوں نے پہلا کام زمین سدھار کا ہی کیا . چین کے نیتا کہتے ہیں کہ ہمارا زمین سدھار قانون ہی ہمارے اِنقلاب کی بنیادی اینٹ ہے اور اِسی سدھار کی بدولت ہم اپنے دیش کا کچھ بھلا کرسکے ہیں . ہندستان کے جو بھائی اور بہن پچھلے ڈیڑھ برس میں چین گئے ہیں اُنہوں نے بھی اِس سچائی کو قبول کیا ہے اور یہ بتایا ہے کہ چین کی کایا پلٹنے میں زمین سدھار قانون کا بہت ہی بڑا ہاتھ ہے . اب ہم ذرا تفصیل کے ساتھ دیکھینگے کہ چین کا زمین سدھار قانون کیا ہے اور اِس نے کس طرح چین کے غریب سے غریب آدمی کے اندر نئی جان پھونک دی .

پرانے چین میں—چانگ کائی شیک والے چین میں—کھیتی پر زندہ رہنے والے لوگوں کی آبادی 41 کروڑ تھی اور کھیتی کی جانے والی زمین کا رقبہ 140 کروڑ مئو (چھ مئو=ایک ایکڑ) تھا . اِس آبادی میں لگ بھگ پانچ فیصدی لوگ زمیندار تھے اور پانچ فیصدی مالدار کسان تھے . اس دس فیصدی آبادی کے پاس چین کی 70 فیصدی کھیتی والی زمین تھی. باقی 10 فیصدی آبادی کے پاس—جس میں بیچ کے کسان اور غریب کسان اور کھیتی‌ہر مزدور شامل ہیں—باقی 30 فیصدی کھیتی والی زمین تھی . بس 90 فیصدی آبادی کا لگ بھگ دو تہائی حصہ ایسے پرانیوں کا تھا جو نہایت غریب اور بےزمین والے تھے اور دوسروں کے کھیتوں میں جاکر کام کرتے تھے . اِن مزدوروں کو اپنی محنت سے پیدا کی ہوئی فصل کا آدھا یعنی پچاس فیصدی حصہ لگان کے روپ میں دے دینا پڑتا تھا اور کبھی کبھی پورا 100 فیصدی . ظاہر بات ہے کہ ایسی حالت میں دیش میں ضرورت کے لائق نہ تو کافی اناج پیدا ہوتا تھا اور آئے دن جگہ جگہ اکال اور بھکمری کا زور رہتا تھا .

چین نے زمین سدھار سلسلے میں پوری کھیتی‌ہر آبادی کو پانچ حصوں میں بانٹا : (1) زمیندار (2) مالدار کسان (3) درمیانی کسان (4) غریب کسان (5) بےزمین والا مزدور . ان پانچوں کا مطلب نیچے دیا جا رہا ہے :—

زمیندار وہ آدمی ہے جو زمین کا مالک ہے لیکن خود کوئی محنت نہیں کرتا اور جو اپنی

चीन में ज़मीन सुधार

चीन हमारा पड़ोसी देश है और उससे हमारा नाता आज का नहीं हज़ारों बरस पुराना है. बहुत सी बातों में हिन्दुस्तान और चीन क़ाफ़ी मिलते हैं—(1) इन दोनों देशों की आबादी दुनिया के किसी भी तीसरे देश से ज़ियादा है. (2) दोनों देशों की सभ्यता बहुत ही पुरानी है. (3) दोनों देशों की लगभग तीन चौथाई आबादी खेती पर गुज़र करती है. (4) दोनों देशों में ज़मीन पर मिलकियत कुछ ज़मींदारों की रही और लाखों व करोड़ों आदमी ऐसे हैं जिन के पास अपनी ज़मीन या तो है ही नहीं या बहुत थोड़ी है और जिन की मेहनत का फ़ायदा ज़मींदार या गिनती के कुछ लोग इस तरह उठाते हैं कि उन्हें रोज़ाना दो जून रोटी भी नसीब नहीं होती. (5) जोते बोये कोई, फसल खाये कोई, के कारन खेतिहर किसान पूरे उत्साह के साथ काम नहीं कर पाता. इस वजह से पूरे देश की पैदावार कम पड़ गई और दोनों देशों को विदेशों से अनाज ख़रीदना पड़ा.

जो देश बाहरी अनाज के सहारे ज़िन्दा रहेगा वह या तो गुलाम हो जायगा और या उसे इंगलैंड की तरह देशों को अपना गुलाम बनाना पड़ेगा. पर हिन्दुस्तान और चीन की मिट्टी में ही कुछ ऐसी ख़ासियत है कि यहां के लोग विदेशों पर छापा मारने और उनको अपना ताबेदार बनाने की लालच नहीं रखते. इस लिये वह ख़ुद उलटे विदेशों के चक्कर में फंसकर अपनी आज़ादी को ख़तरे में डाल लेते हैं.

हमारे आज़ाद हिन्दुस्तान में ऊपर बताई हुई हालत आज मौजूद है और कोई साढ़े तीन साल पहले चीन में भी मौजूद थी. पहली अक्तूबर 1949 को चीन ने नया जन्म लिया और नये चीन की नय्या के खेवनहार माओ-त्से-तुंग और उनके साथियों ने इरादा कर लिया कि चीन को अगर हमेशा के लिये सुखी और आज़ाद बनाना है और करोड़ों जनता के अन्दर यह भावना पैदा करनी है कि राज उन्हीं का है तो दूसरों की मेहनत लूटने वाला ज़मींदार और अपनी जान देने वाला बेज़मीन किसान या मज़दूर दोनों ख़तम होने चाहियें और देश के बच्चे बच्चे के पास इतनी ज़मीन हो कि उस पर मेहनत करके वह अपने पांव पर खड़ा हो सके.

माओ त्से तुंग के दिल में यह विचार उनके राज-काजी जीवन में आने के समय से ही काम कर रहा था और चीन में जब चांग काई शेक का राज चलता था तो माओ त्से तुंग ने येनान नाम के सूबे में—जो चीन के

چین میں زمین سدھار

چین ہمارا پڑوسی دیش ہے اور اُس سے ہمارا ناتا آج کا نہیں ہزاروں برس پرانا ہے ۔ بہت سی باتوں میں ہندستان اور چین کافی ملتے ہیں—(1) ان دونوں دیشوں کی آبادی دنیا کے کسی بھی تیسرے دیش سے زیادہ ہے ۔ (2) دونوں دیشوں کی سبھیتا بہت ہی پرانی ہے ۔ (3) دونوں دیشوں کی لگ بھگ تین چوتھائی آبادی کھیتی پر گذر کرتی ہے ۔ (4) دونوں دیشوں میں زمین پر ملکیت کچھ زمینداروں کی رہی اور لاکھوں و کروڑوں آدمی ایسے ہیں جن کے پاس اپنی زمین یا تو ہے ہی نہیں یا بہت تھوڑی ہے اور جن کی محنت کا فائدہ زمیندار یا گنتی کے کچھ لوگ اس طرح اٹھاتے ہیں کہ انہیں روزانہ دو جون روٹی بھی نصیب نہیں ہوتی ۔ (5) جوتے بوئے کوئی، فصل کھائے کوئی، کے کارن کھیتی ہر کسان پورے اُتساہ کے ساتھ کام نہیں کر پاتا۔ اس وجہ سے پورے دیش کی پیداوار کم پڑ گئی اور دونوں دیشوں کو ودیشوں سے اناج خریدنا پڑا۔

جو دیش باہری اناج کے سہارے زندہ رہیگا وہ یا تو غلام ہو جائیگا اور یا اُسے انگلینڈ کی طرح دیشوں کو اپنا غلام بنانا پڑیگا۔ پر ہندستان اور چین کی مٹی میں ہی کچھ ایسی خاصیت ہے کہ یہاں کے لوگ ودیشوں پر چھاپا مارنے اور اُن کو اپنا تابعدار بنانے کی لالچ نہیں رکھتے ۔ اِس لئے وہ خود اُلٹے ودیشوں کے چکر میں پھنس کر اپنی آزادی کو خطرے میں ڈال لیتے ہیں ۔

ہمارے آزاد ہندستان میں اوپر بتائی ہوئی حالت آج موجود ہے اور کوئی ساڑھے تین سال پہلے چین میں بھی موجود تھی ۔ پہلی اکتوبر 1949 کو چین نے نیا جنم لیا اور نئے چین کی نیا کے کھیون ہار ماؤتسے تنگ اور اُن کے ساتھیوں نے اِرادہ کر لیا کہ چین کو اگر ہمیشہ کے لئے سکھی اور آزاد بنانا ہے اور کروڑوں جنتا کے اندر یہ بھاونا پیدا کرنی ہے کہ راج انہیں کا ہے تو دوسروں کی محنت لوٹنے والا زمیندار اور اپنی جان دینے والا بےزمین کسان یا مزدور دونوں ختم ہونے چاہئیں اور دیش کے بچے بچے کے پاس اتنی زمین ہو کہ اُس پر محنت کرکے وہ اپنے پاؤں پر کھڑا ہوسکے ۔

ماؤتسے تنگ کے دل میں یہ وچار اُن کے راج کاجی جیون میں آنے کے سمے سے ہی کام کر رہا تھا اور چین میں جب چانگ کائی شیک کا راج چلتا تھا تو ماؤتسے تنگ نے ینان نام کے صوبے میں—جو چین کے

ब्लाक' को अपना नेता बनाए रहेगा. उसे ऐसा लगता है कि यही पारटी उसके हित का ख्याल रखती है.

किसान जब यह सुनता है कि अमरीकी साम्राजी इटली के इजारे दार उद्योग पतियों से मिल कर इटली को लूट रहे हैं और टैंक बनाने के चक्कर में जनता के हित को ठुकरा रहे हैं तो वह ताली पीटता है. अमरीकनों के ख़िलाफ़ छोटे छोटे उद्योग पतियों और किसानों में काफ़ी नफ़रत फैल गई है.

गावों के चक्कर लगाने और किसानों से बात करने के बाद मेरा अनुभव है कि इटली का किसान ट्रेक्टर और कीमयाई खाद के इस्तेमाल के लिये इस समय बिलकुल तैयार नहीं है. इस तरह का अगर कोई नारा दिया जायगा तो वह भड़केगा. इटली में ऐसे भयानक पहाड़ी इलाक़े हैं जहा मैकेनिकल खेती सपने में भी नहीं सोची जा सकती. बड़े बड़े फ़ारमों पर अगर बैल की जगह ट्रेक्टर इस्तेमाल होने लगे तो दूध और गोश्त की समस्या खड़ी हो जायगी. यह बात अपनी जगह पर सही है कि ट्रेक्टर से बेरोज़गारी बढ़ेगी ही घटेगी नहीं. असल में जिस चीज़ की ज़रूरत है वह यह है कि खेती के मज़दूरों की भलाई के लिये धन लगाया जाय. केवल ज़मीन पर ही सुधार न हो बल्कि गांव के अर्थशास्त्र से सम्बन्ध रखने वाले उद्योगों को खूब प्रोत्साहन दिया जाय.

"खेती सुधार की ख़ास बात ज़मींदारों से ज़मीन लेकर खेत मज़दूरों और ग़रीब किसानों में बांट देना है इस तरह समाज से ज़मींदार वर्ग का अन्त होगा और उसकी जगह पर जोतने वाला ज़मीन का मालिक बनेगा.......खेती सुधार एक लगातार चलने वाला और महान संघर्ष है."

—ली शाओ-ची

بلاک' کو اپنا نیتا بنائے رہے گا. اُسے ایسا لگتا ہے کہ یہی پارٹی اُس کے ہت کا خیال رکھتی ہے .

کسان جب یہ سنتا ہے کہ امریکی سامراجی اٹلی کے اجارہ‌دار اُدیوگ پتیوں سے مل کر اٹلی کو لوٹ رہے ہیں اور ٹینک بنانے کے چکر میں جنتا کے ہت کو ٹھکرا رہے ہیں تو وہ تالی پیٹتا ہے . امریکنوں کے خلاف چھوٹے چھوٹے اُدیوگ پتیوں اور کسانوں میں کافی نفرت پھیل گئی ہے .

گاؤں کے چکر لگانے اور کسانوں سے بات کرنے کے بعد میرا انوبھو ہے کہ اٹلی کا کسان ٹریکٹر اور کیمیائی کھاد کے استعمال کے لئے اس سمے بالکل تیار نہیں ہے . اس طرح کا اگر کوئی نعرہ دیا جائے گا تو وہ بھڑکے گا . اٹلی میں ایسے بھیانک پہاڑی علاقے ہیں جہاں میکینیکل کھیتی سپنے میں بھی نہیں سوچی جاسکتی . بڑے بڑے فارموں پر اگر بیل کی جگہ ٹریکٹر استعمال ہونے لگے تو دودھ اور گوشت کی سمسیا کھڑی ہو جائے گی . یہ بات اپنی جگہ پر صحیح ہے کہ ٹریکٹر سے بےروزگاری بڑھے گی ہی گھٹے گی نہیں . اصل میں جس چیز کی ضرورت ہے وہ یہ ہے کہ کھیتی کے مزدوروں کی بھلائی کے لئے دھن لگایا جائے . کیول زمین پر ہی سدھار نہ ہو بلکہ گاؤں کے ارتھشاستر سے سمبندھ رکھنے والے اُدیوگوں کو خوب پروتساہن دیا جائے .

" کھیتی سدھار کی خاص بات زمینداروں سے زمین لے کر کھیت مزدوروں اور غریب کسانوں میں بانٹ دینا ہے . اِس طرح سماج سے زمیندار ورگ کا انت ہو گا اور اُس کی جگہ پر جوتنے والا زمین کا مالک بنے گا......کھیتی سدھار ایک لگاتار چلنے والا اور مہان سنگھرش ہے ."

—لی شاؤ . چی

जब कि ज़मींदार को बिना तिनका हिलाए उसकी मेहनत की वजह से एक दिन में लगभग तीन सौ रुपए की आमदनी हो जाती है. उसकी दिली इच्छा है कि ज़मींदार खतम हो जायं. लेकिन शायद ज़ियादा लोग उसकी राय के नहीं थे.

इटली के तमाम देहाती इलाक़ों और कुछ उद्योगी इलाक़ों (बोलोगना, कैथोलिक, ऐक्शन) में यह बात गूंजती रहती है कि अगर नेनी और तोगलीती की आम चुनाव में जीत हुई और उन्होंने सरकार का भार संभाला तो अमरीकन इटली में घुस पड़ेंगे और ज़ोर की घरेलू लड़ाई शुरू हो जायगी. 1944 और '45 की कड़वी यादें लोगों के दिमाग़ों से अभी दूर नहीं हुईं और वह लड़ाई के विचार से भी घबरा उठते हैं.

इटली के किसान नेता इस वक़्त इस बात पर ज़ियादा ज़ोर दे रहे हैं कि किसान खेतों से बेदख़ल न होने पाएं, पैदावार में अधिक हिस्सा किसानों को मिले और उनकी आसानी के लिये स्कूल, अस्पताल वग़ैरा का प्रबन्ध हो उस समय सब से ज़ियादा तालियां बजीं जब बोरगी ने कहा कि ज़मींदारों ने 2300 किसानों को बेदख़ल करना चाहा लेकिन किसानों के मज़बूत एके और संगठन के कारन केवल 30 किसान ही बेदख़ल हो सके. किसानों का एका दिन पर दिन बढ़ रहा है. 1950 से अब तक न जाने कितने किसान पुलिस की गोली से मर चुके हैं और घायल हो चुके हैं.

पो नदी के कछार में मुझे कुछ ऐसी कोआपरेटिव दिखाई पड़ीं जिनका ढंग तो बहुत अच्छा नहीं था लेकिन उनका इन्तज़ाम बहुत अच्छा था. उनको दिमाग़ में रख कर मैंने बार बार लोगों से सवाल किये कि कोआपरेटिव खोलना भी किसान आन्दोलन का एक प्रोग्राम क्यों न हो ? कहीं तो मुझे ज़ोरों से "हां" कहने वाले मिले लेकिन ज़ियादा लोगों ने बेरुख़ी दिखलाई.

जो आंकड़े मैं इकट्ठे कर सका हूं उनके आधार पर कह सकता हूं कि उस मामूली किसान की आमदनी जिसके एक बीवी और दो बच्चे हों और सब के सब काम करते हों पहाड़ी फ़ारमों पर 1800 रुपया सालाना है और मैदानों में तीन हज़ार रुपया से ले कर तीन हज़ार सात सौ पचास रुपया सालाना है.

खेत मज़दूरों की मज़दूरी लगभग पांच रुपया रोज़ है. लेकिन उन्हें काम नहीं मिलता है. थोड़े से ही ऐसे हैं जो तनख़ा पर काम करते हैं और बराबर उनकी नौकरी लगी रहती है. किसी सूरत में भी एक खेत मज़दूर की आमदनी साढ़े दस सौ से अधिक नहीं हो पाती जब तक यह हालतें हैं तब तक इटली का किसान सुधार वादी ढंग से संघर्ष चलाएगा और राजकाजी चेतना के लिये 'लैफ़्ट

جب کہ زمیندار کو بنا تنکا ہلائے اُس کی محنت کی وجہ سے ایک دن میں لگ بھگ تین سو روپئے کی آمدنی ہو جاتی ہے ۔ اُس کی دلی اچھا ہے کہ زمیندار ختم ہو جائیں ۔ لیکن شاید زیادہ لوگ اُس کی رائے کے نہیں تھے۔

اٹلی کے تمام دیہاتی علاقوں اور کچھ اُدیوگی علاقوں (بولوگنا، کیتھولک، ایکشن) میں یہ بات گونجتی رہتی ہے کہ اگر نینی اور تو گیلتی کی عام چناؤ میں جیت ہوئی اور اُنہوں نے سرکار کا بھار سنبھالا تو امریکن اٹلی میں گھس پڑیں گے اور زور کی گھریلو لڑائی شروع ہو جائے گی ۔ 1944 اور '45 کی کڑوی یادیں لوگوں کے دماغوں سے ابھی دور نہیں ہوئیں اور وہ لڑائی کے وچار سے بھی گھبرا اُٹھتے ہیں ۔

اٹلی کے کسان نیتا اِس وقت اِس بات پر زیادہ زور دے رہے ہیں کہ کسان کھیتوں سے بےدخل نہ ہونے پائیں، پیداوار میں ادھک حصہ کسانوں کو ملے اور اُن کی آسانی کے لئے اسکول، اسپتال وغیرہ کا پربندھ ہو ۔ اُس سمے سب سے زیادہ تالیاں بجیں جب بورگی نے کہا کہ زمینداروں نے 2300 کسانوں کو بےدخل کرنا چاہا لیکن کسانوں کے مضبوط ایکے اور سنگھٹن کے کارن کیول 20 کسان ہی بےدخل ہوسکے ۔ کسانوں کا ایکا دن پر دن بڑھ رہا ہے ۔ 1950 سے اب تک نہ جانے کتنے کسان پولیس کی گولی سے مرچکے ہیں اور گھائل ہو چکے ہیں ۔

پو ندی کے کچھار میں مجھے کچھ ایسی کوآپریٹو دکھائی پڑیں جن کا ڈھنگ تو بہت اچھا نہیں تھا لیکن اُن کا انتظام بہت اچھا تھا ۔ اُن کو دماغ میں رکھ کر میں نے بار بار لوگوں سے سوال کئے کہ کوآپریٹو کھولنا بھی کسان آندولن کا ایک پروگرام کیوں نہ ہو؟ کہیں تو مجھے زوروں سے "ہاں" کہنے والے ملے لیکن زیادہ لوگوں نے بے رخی دکھلائی ۔

جو آنکڑے میں اکٹھے کرسکا ہوں اُن کے آدھار پر میں کہہ سکتا ہوں کہ اُس معمولی کسان کی آمدنی جس کے ایک بیوی اور دو بچے ہوں اور سب کے سب کام کرتے ہوں پہاڑی فارموں پر 1800 روپئے سالانہ ہے اور میدانوں میں تین ہزار روپیہ سے لے کر تین ہزار سات سو پچاس روپیہ سالانہ ہے ۔

کھیت مزدوروں کی مزدوری لگ بھگ پانچ روپیہ روز ہے ۔ لیکن اُنہیں کام نہیں ملتا ہے ۔ تھوڑے سے ہی ایسے ہیں جو تنخواہ پر کام کرتے ہیں اور برابر اُن کی نوکری لگی رہتی ہے۔ کسی صورت میں بھی ایک کھیت مزدور کی آمدنی ساڑھے دس سو سے ادھک نہیں ہو پاتی۔ جب تک یہ حالتیں ہیں تب تک اٹلی کا کسان سدھار وادی ڈھنگ سے سنگھرش چلائے گا اور راج کاجی چیتنا کے لئے 'لیفٹ

अपनी चीज़ों के दाम सौ गुना बढ़ा लें ? देहातों की भलाई के काम में लगाने के लिये सरकार के पास पैसे नहीं हैं और अमरीकी फ़ौज के पन्द्रह डिवीज़न को पालने के लिये उसके पास पैसे हैं ? क्या मंहगाई का कारन हथियार बन्दी की दौड़ नहीं ? इन बातों पर भी किसानों ने खूब तालियां बजाईं.

एक जगह खड़ा हो कर मैं बात चीत सुनने लगा. ज़ोरों की बहस हो रही थी—अंडे और मुरग़ी के सवाल पर कामरेड गिस्पे का समझौता करना उचित था या नहीं—यह मसला भी खूब है. इटली में अभी तक अजीब अजीब ढंग चले आ रहे हैं. जब कोई ज़मींदार किसी को अपना खेत साझे पर देता है तो वह यह शर्त लगाता है कि वह किसान हर क्रिसमस पर ज़मींदार को इतने अंडे और इतनी मुरग़ियां भेंट करेगा. इसका कारन यह है: किसान की मुरग़ियां खेत पर चुगेंगी. इस तरह वह ज़मींदार के हिस्से का भी ग़ल्ला खायेंगी. इस ग़ल्ले के बदले में ज़मींदार को मुरग़ी और अंडे ही मिलने ही चाहियें. इस बात से किसान बहुत झल्लाता है. किसान और ज़मींदार के बीच मुरग़ी और अंडों की तादाद पर झगड़ा चलता रहता है. किसानों ने जगह जगह पर काफ़ी संघर्ष किया है और वह कहीं कहीं पिंड छुड़ाने में कामयाब भी हो गए हैं. ऐसा लगता है कि गिस्पे और ज़मींदार में बहुत ज़ियादा अन-बन नहीं थी. कन्ट्रेक्ट के मुताबिक़ उन्हें ज़मींदार को चार मुरग़ियां और तीन दर्जन अंडे हर क्रिसमस को देना चाहिये था. उन्होंने अंडे और मुरग़ियां देने के बजाय यह समझौता कर लिया कि वह हर साल ज़मींदार की चाची को बोलोगना शहर में एक मुरग़ी भेंट कर दिया करेंगे. अपने को आरोप से बचाते हुए गिस्पे ने कहा "फ़ार्म भर में सबसे मरियल मुरग़ी मैंने उसके गले बांध दी." सब लोग हंस पड़े और बहस ठहाकों के बीच खतम हो गई.

मैंने इस बात की चर्चा यहां इसलिये की है क्योंकि यही सब चीज़ें बीच इटली के किसानों की समस्या को बहुत पेचीदा बना देती हैं. साझीदार किसानों और खेत मज़दूरों दोनों पर लैफ़्ट (बाएं बाज़ू) का रंग चढ़ा हुआ है मैं जहां जहां गया हूँ और जो हालात मैंने वहां देखे हैं उनसे यह नतीजा निकालना ग़ैर उचित न होगा कि आने वाले आम चुनाव में बीच के इटली के अधिक-तर किसानों के वोट उस मोरचे को मिलेंगे जिसके नेता तोगलीती और नेनी हैं. लेकिन पो डेलटा को छोड़ कर और कहीं ज़मींदारों का इतना विरोध नहीं है.

मैं उम्बरिया के पहाड़ी इलाक़ों के फ़ार्म पर गया. यहां एक किसान ने बहुत दुख से इस बात की शिकायत की कि उसे चोटी का पसीना एड़ी तक बहाने के बाद और दिन भर काम करने के बाद सिर्फ़ तीन रुपए रोज़ मिलते हैं

اپنی چیزوں کے دام سو گنا بڑھا لیں؟ دیہاتوں کی بھلائی کے کام میں لگانے کے لئے سرکار کے پاس پیسے نہیں ہیں اور امریکی فوج کے پندرہ ڈویژن کو پالنے کے لئے اس کے پاس پیسے ہیں؟ کیا مہنگائی کا کارن ہتھیار بندی کی دوڑ نہیں؟ ان باتوں پر بھی کسانوں نے خوب تالیاں بجائیں۔

ایک جگہ کھڑا ہوکر میں بات چیت سننے لگا۔ زوروں کی بحث ہو رہی تھی—انڈے اور مرغی کے سوال پر کامریڈ گسپے کا سمجھوتہ کرنا اچت تھا یا نہیں—یہ مسئلہ بھی خوب ہے۔ اٹلی میں ابھی تک عجیب عجیب ڈھنگ چلے آ رہے ہیں۔ جب کوئی زمیندار کسی کو اپنا کھیت ساجھے پر دیتا ہے تو وہ یہ شرط لگاتا ہے کہ وہ کسان ہر کرسمس پر زمیندار کو اتنے انڈے اور اتنی مرغیاں بھینٹ کرے گا۔ اس کا کارن یہ ہے: کسان کی مرغیاں کھیت پر چگیں گی۔ اس طرح وہ زمیندار کے حصے کا بھی غلہ کھائیں گی۔ اس غلے کے بدلے میں زمیندار کو مرغی اور انڈے ملنے ہی چاہئیں۔ اس بات سے کسان بہت جھلاتا ہے۔ کسان اور زمیندار کے بیچ مرغی اور انڈوں کی تعداد پر جھگڑا چلتا رہتا ہے۔ کسانوں نے جگہ جگہ پر کافی سنگھرش کیا ہے اور وہ کہیں کہیں پنڈ چھڑانے میں کامیاب بھی ہوگئے ہیں۔ ایسا لگتا ہے کہ گسپے اور زمیندار میں بہت زیادہ ان بن نہیں تھی۔ کنٹریکٹ کے مطابق انہیں زمیندار کو چار مرغیاں اور تین درجن انڈے ہر کرسمس کو دینا چاہئے تھا۔ انہوں نے انڈے اور مرغیاں دینے کے بجائے یہ سمجھوتہ کرلیا کہ وہ ہر سال زمیندار کی چاچی کو بولوگنا شہر میں ایک مرغی بھینٹ کر دیا کریں گے۔ اپنے کو آروپ سے بچاتے ہوئے گسپے نے کہا "فارم بھر میں سب سے مریل مرغی میں نے اس کے گلے باندھ دی"۔ سب لوگ ہنس پڑے اور بحث ٹھہاکوں کے بیچ ختم ہوگئی۔

میں نے اس بات کی چرچا یہاں اس لئے کی ہے کیونکہ یہی سب چیزیں بیچ اٹلی کے کسانوں کی سمسیا کو بہت پیچیدہ بنا دیتی ہیں۔ ساجھی دار کسانوں اور کھیت مزدوروں دونوں پر لیفٹ (بائیں بازو) کا رنگ چڑھا ہوا ہے۔ میں جہاں جہاں گیا ہوں اور جو حالت میں نے وہاں دیکھی ہیں ان سے یہ نتیجہ نکالنا غیر اچت نہ ہوگا کہ آنے والے عام چناؤ میں بیچ کے اٹلی کے ادھک تر کسانوں کے ووٹ اس مورچے کو ملیں گے جس کے نیتا تولیاتی اور نینی ہیں۔ لیکن پوڈیلٹا کو چھوڑ کر اور کہیں زمینداروں کا اتنا ورودھ نہیں ہے۔

میں امبریا کے پہاڑی علاقوں کے فارم پر گیا۔ یہاں ایک کسان نے بہت دکھ سے اس بات کی شکایت کی کہ اسے چوٹی کا پسینہ ایڑی تک بہانے کے بعد اور دن بھر لگے رہنے کے بعد صرف تین روپیہ روز ملتے ہیں

इटली की पूरी जमीन का चौथाई हिस्सा बीस हजार जमींदारों के क़बजे में है. छोटे छोटे फ़ारमों का रिवाज इटली में पुराना है. ऐसे फ़ारमों की तादाद लगभग चालीस लाख है. इनमें से आधे से जियादा के पास तीन एकड़ से अधिक जमीन नहीं है. इन सब फ़ारमों की हालत और पैदावार भी बिलकुल अलग अलग है. नेपिल्स के इर्द गिर्द के बागों के फ़ारमों, उम्ब्रिया और ऐबरूजी के पहाड़ी फ़ारमों और पो के कछार के गेहूँ और चावल पैदा करने वाले फ़ारमों में कोई चीज़ भी मिलती जुलती नहीं है. इन कारनों से इटली के किसानों की समस्या के बारे में एक आम राय क़ायम नहीं की जा सकती.

रोम में मुझे एक खेती शास्त्री ने बताया कि इटली के गांव की हालत किसी हालत में भी दुरुस्त नहीं हो सकती. मेरा तजुरबा उनकी राय के खिलाफ़ है. मैं उनकी राय से सहमत नहीं हूँ कि एक एकड़ में दस से बीस मन गेहूँ से जियादा की पैदावार नहीं हो सकती क्योंकि भगवान ने ऐसा लिख दिया है. और न मैं इसे सही मानता हूँ कि इटली के किसानों की बे रोजगारी अधिक आबादी को वहां से हटा लेने से ही हल होगी.

सात साल लड़ाई को खतम हुए हो गए लेकिन आज भी 1910 और 1914 के मुक़ाबले में इटली की पैदावार एक आदमी पर चार फ़ीसदी कम है. चालीस साल के अन्दर दूसरी चीजों के दाम सौ गुना तक बढ़ गए हैं लेकिन खेत की पैदावार के दाम में कुल चार फ़ीसदी की बढ़ती हुई है. पैदावार चार फ़ीसदी कम है और आबादी पहले के मुक़ाबले में 36 फ़ीसदी बढ़ गई है.

(2)

पीरूगया में हाल खचाखच भरा था. तम्बाकू की महक उड़ रही थी. क़रीब चार सौ गेहुआं रंग के किसान चेहरे दिखाई पड़ रहे थे. शिकमी काश्तकारों की तीसरी कांगरेस में हिस्सा लेने के लिये यह लोग यहां इकट्ठे हुए थे. एक छोटी सी मेज़ पर कार्ड लगा था—विदेशी पत्रकार. मैं वहीं जा कर बैठ गया शिकमी काश्तकारों के फ़ैडरेशन के जनरल सेक्रेटरी एटूरे बोरगी भाशन दे रहे थे. उनके भाशन की एक छपी कापी मुझे भी दी गई. इसमें जिन खास बातों की तरफ़ इशारा था वह यह थीं:—

जबरदस्ती बेदखली के खिलाफ़ लड़ाई लड़ना; अच्छे मकान, स्कूल और देहातों के लिये अस्पताल की मांग करना. इन बातों पर किसान झूम उठते थे और तालियां पीटते थे. जब बोरगी ने किसानों की मांग से हट कर आम राजनीत की बात करनी शुरू की तब भी तालियों की गरज सुनाई दी. उन्होंने कहा कि किसानों को उस सरकार के खिलाफ़ आवाज उठाना चाहिये जिसने इजारेदार उद्योग पतियों को पूरी छूट दे रखी है कि वह 1938 के मुक़ाबले

اٹلی کی پوری زمین کا چوتھائی حصہ بیس ہزار زمینداروں کے قبضے میں ہے چھوٹے چھوٹے فارموں کا رواج اٹلی میں پرانا ہے . ایسے فارموں کی تعداد لگ بھگ چالیس لاکھ ہے . ان میں سے آدھے سے زیادہ کے پاس تین ایکڑ سے ادھک زمین نہیں ہے . ان سب فارموں کی حالت اور پیداوار بھی بالکل الگ الگ ہے . نیپلز کے ارد گرد کے باغوں کے فارموں، امبریا اور ایبروزی کے پہاڑی فارموں اور پو کے کچھار کے گیہوں اور چاول پیدا کرنے والے فارموں میں کوئی چیز بھی ملتی جلتی نہیں ہے . ان کارنوں سے اٹلی کے کسانوں کی سمسیا کے بارے میں ایک عام رائے قائم نہیں کی جا سکتی .

روم میں مجھے ایک کھیتی شاستری نے بتایا کہ اٹلی کے گاؤں کی حالت کسی حالت میں بھی درست نہیں ہو سکتی . میرا تجربہ اُن کی رائے کے خلاف ہے . میں ان کی رائے سے سہمت نہیں ہوں کہ ایک ایکڑ میں دس سے بیس من گیہوں سے زیادہ کی پیداوار نہیں ہو سکتی کیونکہ بھگوان نے ایسا لکھ دیا ہے . اور نہ میں اسے صحیح مانتا ہوں کہ اٹلی کے کسانوں کی بے روزگاری ادھک آبادی کو وہاں سے ہٹا لینے سے ہی حل ہوگی .

سات سال لڑائی کو ختم ہوئے ہو گئے لیکن آج بھی 1910 اور 1914 کے مقابلے میں اٹلی کی پیداوار ایک آدمی پر چار فی صدی کم ہے . چالیس سال کے اندر دوسری چیزوں کے دام سو گنا تک بڑھ گئے ہیں لیکن کھیت کی پیداوار کے دام میں کل چار فی صدی کی بڑھوتی ہوئی ہے . پیداوار چار فی صدی کم ہے اور آبادی پہلے کے مقابلے میں 36 فی صدی بڑھ گئی ہے .

(2)

پیروگیا میں ہال کھچا کھچ بھرا تھا . تمباکو کی مہک اُڑ رہی تھی . قریب چار سو گیہواں رنگ کے کسان چہرے دکھائی پڑ رہے تھے . شکمی کاشتکاروں کی تیسری کانگریس میں حصہ لینے کے لئے یہ لوگ یہاں اکٹھا ہوئے تھے . ایک چھوٹی سی میز پر کارڈ لگا تھا—ودیشی پترکار . میں وہیں جاکر بیٹھ گیا . شکمی کاشتکاروں کے فیڈریشن کے جنرل سکریٹری ایٹورے بورگی بھاشن دے رہے تھے . اُن کے بھاشن کی ایک چھپی کاپی مجھے بھی دی گئی . اس میں جن خاص باتوں کی طرف اشارہ تھا وہ یہ تھیں :—

زبردستی بیدخلی کے خلاف لڑائی لڑنا؛ اچھے مکان، اسکول اور دیہاتوں کے لئے اسپتال کی مانگ کرنا . ان باتوں پر کسان جھوم اُٹھتے تھے اور تالیاں پیٹتے تھے . جب بورگی نے کسانوں کی مانگ سے ہٹ کر عام راج نیت کی بات کرنی شروع کی تب بھی تالیوں کی گرج سنائی دی . انہوں نے کہا کہ کسانوں کو اُس سرکار کے خلاف آواز اُٹھانا چاہئے جس نے اجارہدار ادیوگ پتیوں کو پوری چھوٹ دے رکھی ہے کہ وہ 1938 کے مقابلے

क़रीब क़रीब 28000 एकड़ है. इस से सरकार को बहुत फ़ायदा है. वह यह भी सुनायेंगे कि इस डेलटा को उपजाऊ बनाने के लिये जो ढंग वह अपना रहे हैं वह बहुत ही कारगर सिद्ध हुए हैं. इस में शक नहीं कि ज़मीन को खेती के लायक़ बनाने की कोशिश की गई है. लेकिन यह कहानी भी मज़ेदार है. मुसोलिनी के समय में बड़ी बड़ी कम्पनियों को बहुत सी रिआयतें मिल गई थीं. उन्होंने दलदली ज़मीन को सुखा कर खेती के योग बनाने की कुछ कोशिश भी की थी. वह कम्पनियां आज भी अपने काम में लगी हैं. लगभग दस हज़ार एकड़ ज़मीन उनके क़ब्ज़े में है. पर उनकी पालिसी यह रही है कि गाय को चारा कम से कम और दूध ज़ियादा से ज़ियादा. वह अपनी ज़रूरत के लिये कुछ पैसा लगाते हैं और उस से ज़ियादा से ज़ियादा फ़ायदा उठाने की कोशिश करते हैं. वह पैदावार ज़ियादा इसलिये भी नहीं बढ़ाते क्योंकि ऐसी हालत में टैक्स बढ़ने का डर है. फिर वह ख़ामख़्वा दर्द सर मोल क्यों ले. अगर सिंचाई का प्रबन्ध नहीं है, अगर खाद के बिना ज़मीन ख़राब हो रही है, तो इसकी चिन्ता उनको नहीं है. इटली के किसानों की बे रोज़गारी की समस्या को हल करने की ज़िम्मेदार कम्पनियां कैसे हो सकती हैं. अगर लोग दिक़ के बीमार हैं तो हुआ करें. स्कूल, अस्पताल, सफ़ाई वग़ैरा का प्रबन्ध नहीं है तो न हो. कम्पनी के डायरेक्टर कभी इन बेवक़ूफ़ी की बातों पर ध्यान नहीं देते.

ऐसा लगता है कि सरकार भी इन बातों को ध्यान देने के लायक़ नहीं समझती. अख़बारों में ज़मीन सुधार का ढिंढोरा ज़रूर पीटा जाता है—अब तक लगभग ढाई लाख एकड़ ज़मीन सरकार 20 हज़ार ख़ानदानों में बांट चुकी है, तीस तीस साल के लिये पांच एकड़ से लेकर पचास एकड़ तक के प्लाट किसानों को दे दिये गए हैं. सरकार ने गांवों में नौ हज़ार मकान बनवाए हैं. इन में से छै हज़ार तैयार हो गए हैं और बाक़ी जल्द तैयार होने वाले हैं वग़ैरा वग़ैरा. ऐसी कुछ बातें हुई ज़रूर हैं लेकिन उनका फ़ायदा किसानों को नहीं हुआ. इन प्रोग्रामों के पीछे राजकाजी चालें थीं. पानी की तरह रुपया बहाया गया और अपनी पार्टी को मज़बूत किया गया. इन सुधारों से दक्खिनी इटली के निठल्ले ज़मींदारों ने ख़ूब फ़ायदा उठाया बीच इटली में जहां का मैं ज़िकर कर रहा हूं इन प्रोग्रामों का कोई असर दिखाई नहीं पड़ता. इस डेलटा और कोमेचियु की बात कौन करे, पो और टाईबर नदी के कछारों में भी मुझे किसी सुधार का अनुभव न हुआ. इटली के सभी सूबे ग़रीबी और कम पैदावार के शिकार हैं. यह हालत मैदान और पहाड़ दोनों हिस्सों के किसानों की है. केवल इटली के 20 लाख बे खेत किसान ही भूकों नहीं मर रहे बल्कि 5 लाख 'सीमादारी' (शिकमी किसान) की भी यही दुर्दशा है.

قریب قریب ,28000 ایکڑ ھے. اِس سے سرکار کو بہت فائدہ ھے . وہ یہ بھی سنائیں گے کہ اِس ڈیلٹا کو اُپجاؤ بنانے کے لئے جو ڈھنگ وہ اپنا رھے ھیں وہ بہت ھی کارگر سدھ ہوئے ھیں. اِس میں شک نہیں کہ زمین کو کھیتی کے لائق بنانے کی کوشش کی گئی ھے . لیکن یہ کہانی بھی مزیدار ھے . مسولینی کے سمے میں بڑی بڑی کمپنیوں کو بہت سی رعائتیں مل گئیں تھیں . اُنہوں نے دلدلی زمین کو سکھا کر کھیتی کے یوگ بنانے کی کچھ کوشش بھی کی تھی . وہ کمپنیاں آج بھی اپنے کام میں لگیں ھیں . لگ بھگ دس ہزار ایکڑ زمین اُن کے قبضے میں ھے . پر اُن کی پالیسی یہ رھی ھے کہ گائے کو چارہ کم سے کم اور دودھ زیادہ سے زیادہ . وہ اپنی ضرورت کے لئے کچھ پیسہ لگاتے ھیں اور اُس سے زیادہ سے زیادہ فائدہ اُٹھانے کی کوشش کرتے ھیں . وہ پیداوار زیادہ اس لئے بھی نہیں بڑھاتے کیونکہ ایسی حالت میں ٹیکس بڑھنے کا ڈر ھے . پھر وہ خواہ مخواہ درد سر مول کیوں لیں . اگر سینچائی کا پربندھ نہیں ھے' اگر کھاد کے بنا زمین خراب ہو رھی ھے' تو اس کی چنتا اُن کو نہیں ھے . اٹلی کے کسانوں کی بے روزگاری کی سمسیا کو حل کرنے کی ذمے دار کمپنیاں کیسے ہو سکتی ھیں . اگر لوگ دق کے بیمار ھیں تو ہوا کریں . اسکول' اسپتال' صفائی وغیرہ کا پربندھ نہیں ھے تو نہ ہو . کمپنی کے ڈائرکٹر کبھی اِن بیوقوفی کی باتوں پر دھیان نہیں دیتے .

ایسا لگتا ھے کہ سرکار بھی اِن باتوں کو دھیان دینے کے لائق نہیں سمجھتی. اخباروں میں زمین سدھار کا ڈھنڈھورا ضرور پیٹا جاتا ھے—اب تک لگ بھگ ڈھائی لاکھ ایکڑ زمین سرکار 20 ہزار خاندانوں میں بانٹ چکی ھے' تیس تیس سال کے لئے پانچ ایکڑ سے کر پچاس ایکڑ تک کے پلاٹ کسانوں کو دے دیئے گئے ھیں . سرکار نے گاؤں میں نو ہزار مکان بنوائے ھیں . اِن میں سے چھ ہزار تیار ہوگئے ھیں اور باقی جلد تیار ہونے والے ھیں وغیرہ وغیرہ. ایسی کچھ باتیں ہوئی ضرور ھیں لیکن اُن کا فائدہ کسانوں کو نہیں ہوا . اِن پروگراموں کے پیچھے راجکاجی چالیں تھیں . پانی کی طرح روپیہ بہایا گیا اور اپنی پارٹی کو مضبوط کیا گیا . اِن سدھاروں سے دکھنی اٹلی کے نٹھلے زمینداروں نے خوب فائدہ اُٹھایا . بیچ اٹلی میں جہاں کا میں ذکر کر رہا ہوں اِن پروگراموں کا کوئی اثر دکھائی نہیں پڑتا . اس ڈیلٹا اور کومیچیو کی بات کون کرے' پو اور ٹائبر ندی کے کچھاروں میں بھی مجھے کسی سدھار کا انوبھو نہ ہوا. اٹلی کے سبھی صوبے غریبی اور کم پیداوار کے شکار ھیں . یہ حالت میدان اور پہاڑ دونوں حصوں کے کسانوں کی ھے . کیول اٹلی کے 20 لاکھ بے کھیت کسان ھی بھوکوں نہیں مر رھے' بلکہ 5 لاکھ 'سیمزا داری' (شکمی کسان) کی بھی یہی دردشا ھے .

हैं और औरतें और बच्चे उस घर से जिसमें कच्चे नम फ़र्श पर लेटना पड़ता है इस सड़क को बेहतर समझते हैं. अक्तूबर के महीने में बे रोज़गारी कुछ कम हो जाती है, फिर भी 75 फ़ीसदी से ज़ियादा ही लोग बे रोज़गार रहते हैं फ़सल की कटाई और जुताई के समय काम बढ़ जाता है. जाड़ा आते ही बेरोज़गारों की तादाद 90 फ़ी सदी तक पहुँच जाती है. इसी कारन यह भीड़ भड़क्का सड़क पर रहता है, क़रीब से देखने पर निढ़ाल चेहरे, सूखे होंट और ग़ुस्सीली आंखों का अनुभव होता है.

ग़रीबी में बच्चों की तादाद भी बढ़ जाती है. कोमेचियु को म्युनिस्पलटी के आंकड़ों से पता चलता है कि हर ख़ानदान में औसतन छै बच्चे होते हैं. शहर के बीच में पुरानी बे मरम्मत कोठरियों में बिना उमर और जिनस के बिचार किये छै छै और सात सात आदमी सोते हैं. शहर से बाहर जाने के लिये कच्ची गलियां हैं. बरसात में इन पर घुटने घुटने कीचड़ हो जाता है. इन इलाक़ों में भी आदमी ठुंसे रहते हैं. झोंपड़े मिट्टी और ठट्टर के बने होते हैं और उन में खिड़कियां तक नहीं होतीं. एक खाते पीते कहे जाने वाले ख़ानदान की सालाना आमदनी कुल 70 पौंड होती है. लोगों को ढंग का खाना तक नहीं मिलता. इसीलिये ज़ियादातर लोग दिक़ के शिकार होते हैं, जल्द ही उनकी आंखें ख़राब हो जाती हैं. शहर तक में बिजली का कोई इन्तज़ाम नहीं है. गन्दगी हद दर्जे को पहुंची हुई है. यहां पानी के नल भी नहीं हैं. लगभग पानी के नल तो पूरे डेलटे में ही नहीं हैं. पीने का पानी बीस बीस मील की दूरी से गाँड़ियों पर लाद कर लाया जाता है और बेचा जाता है. एक छोटे गगरे का दाम एक आना होता है. जिस समय मैं वहां गया था तो कम से कम चालीस ख़ानदान ऐसे थे जिन के पास कोई घर नहीं था. कोमेचियु में आम तरीक़े से लोग ठट्टर पर काग़ज़ लपेट कर मकान बना लेते हैं. इन बेचारों के पास ऐसा भी कोई मकान नहीं था. किराया न देने के कारन यह सब घर से निकाल दिये गए थे. सब के सब एक छोटे से स्कूल में ठुसे पड़े थे. यह इमारत मेयर ने किसी सूरत में ऐसे लोगों के लिये ख़ाली करा दी थी.

अगर इटली की राजधानी रोम में जा कर कोमेचियु का और या इस डेलटा का कोई ज़िकर करे तो वह अधिकारियों के प्रेम का पात्र न होगा. अधिकारी जल्द ही बतायेंगे कि यह समस्या बहुत ही मुश्किल है और इटली की मौजूदा माली हालत इस योग्य नहीं है कि कोई हल इस सवाल का निकाला जाय. वह उलटा इस परिस्थिति से फ़ायदा बताने लगेंगे. इस डेलटे में जो निचले इलाक़े हैं उनसे मछली के ब्योपार के कारन 45 रुपए एकड़ से लेकर 150 रुपए एकड़ तक का हर साल फ़ायदा होता है. इस तरह की ज़मीन

ہیں اور عورتیں اور بچے اس گھر سے جس میں کچے نم فرش پر لیٹنا پڑتا ہے اس سڑک کو بہتر سمجھتے ہیں. اکتوبر کے مہینے میں بے روزگاری کچھ کم ہو جاتی ہے، پھر بھی 75 فیصدی سے زیادہ ہی لوگ بے روزگار رہتے ہیں. فصل کی کٹائی اور جوتائی کے سمے کام بڑھ جاتا ہے. جاڑا آتے ہی بےروزگاروں کی تعداد 90 فیصدی تک پہونچ جاتی ہے. اِسی کارن یہ بھیڑ بھڑکا سڑک پر رہتا ہے، قریب سے دیکھنے پر نڈھال چہرے، سوکھے ہونٹ اور غصیلی آنکھوں کا انوبھو ہوتا ہے.

غریبی میں بچوں کی تعداد بھی بڑھ جاتی ہے. کومے چیو کی میونسپلٹی کے آنکڑوں سے پتہ چلتا ہے کہ ہر خاندان میں اوسطاً چھ بچے ہوتے ہیں. شہر کے بیچ میں پرانی بے مرمت کوٹھریوں میں بنا عمر اور جنس کے وچار کئے چھ چھ اور سات سات آدمی سوتے ہیں. شہر سے باہر جانے کے لئے کچی گلیاں ہیں. برسات میں اِن پر گھٹنے گھٹنے کیچڑ ہوجاتا ہے. اِن علاقوں میں بھی آدمی ٹھنسے رہتے ہیں. جھونپڑے مٹی اور ٹھٹر کے بنے ہوتے ہیں اور اُن میں کھڑکیاں تک نہیں ہوتیں. ایک کھاتے پیتے کہے جانے والے خاندان کی سالانہ آمدنی کل 70 پونڈ ہوتی ہے لوگوں کو ڈھنگ کا کھانا تک نہیں ملتا. اسی لئے زیادہ تر لوگ دق کے شکار ہوتے ہیں، جلد ہی اُن کی انکھیں خراب ہو جاتی ہیں. شہر تک میں بجلی کا کوئی انتظام نہیں ہے. گندگی حد درجے کو پہونچی ہوئی ہے. یہاں پانی کے نل بھی نہیں ہیں. لگ بھگ پانی کے نل تو پورے ڈیلٹے میں ہی نہیں ہیں. پینے کا پانی بیس بیس میل کی دوری سے گاڑیوں پر لاد کر لایا جاتا ہے اور بیچا جاتا ہے. ایک چھوٹے گگرے کا دام ایک آنہ ہوتا ہے. جس سمے میں وہاں گیا تھا تو کم سے کم چالیس خاندان ایسے تھے جن کے پاس کوئی گھر نہیں تھا. کومے چیو میں عام طریقے سے لوگ ٹھٹر پر کاغذ لپیٹ کر مکان بنا لیتے ہیں. اِن بیچاروں کے پاس ایسا بھی کوئی مکان نہیں تھا. کرایہ نہ دینے کے کارن یہ سب گھر سے نکال دیئےگئے تھے. سب کے سب ایک چھوٹے سے اسکول میں ٹھسے پڑے تھے. یہ عمارت میر نے کسی صورت ایسے لوگوں کے لئے خالی کرا دی تھی.

اگر اٹلی کی راجدھانی روم میں جا کر کومے چیو کا اور یا اِس ڈیلٹا کا کوئی ذکر کرے تو وہ ادھیکاریوں کے پریم کا پاتر نہ ہوگا. ادھیکاری جلد ہی بتائیں گے کہ یہ سمسیا بہت ہی مشکل ہے اور اٹلی کی موجودہ مالی حالت اس یوگ نہیں ہے کہ کوئی حل اِس سوال کا نکالا جائے. وہ اُلٹا اِس پرستھتی سے فائدہ بتانے لگیں گے. اس ڈیلٹے میں جو نچلے علاقے ہیں اُن سے مچھلی کے بیوپار کے کارن 45 روپئے ایکڑ سے لے کر 150 ایکڑ تک کا ہر سال فائدہ ہوتا ہے. اس طرح کی زمین

इटली के किसान और उनकी राजनीत

(आयल मीर वालेन्स)

[आयल मीर वालेन्स इंगलैंड में छपने वाले अख़बार 'दी न्यू स्टेट्समैन एन्ड नेशन' के रिपोर्टर हैं. आपने इटली के गांवों का दौरा किया है और किसानों की एक कानफ़रेन्स में भी भाग लिया है. यह लेख एक रिपोताज है इस को पढ़ने के बाद इटली के किसान आन्दोलन और उनकी हालत की एक अच्छी झलक मिलती है. इस लेख का ज़मींदारी अन्त से संबंध नहीं है लेकिन किसानों की समस्या पर काफ़ी रोशनी पड़ जाती है—एडीटर]

फ़रेरा से एडरियाटिक तक जाने वाली तारकोल की उम्दा सड़क यकबारगी आस्टेलेटो पर आकर ख़तम होती है. यहां से कोमेचियु जाने के लिये दूसरी सड़क पकड़नी पड़ती है. इस जगह को 'कठिनाइयों की राजधानी" कहा जाता है. सड़क पर गर्द उड़ती रहती है और जगह जगह पर गढ़े भी हैं. छोटी छोटी गिट्टियां बिछी हैं जिन को चूर चूर करती हुई कोई लारी गुज़र जाती है आस्टेलेटो और कोमेचियु के बीच सिर्फ़ यही एक सड़क है. यहां पहुँच कर पो नदी के कछार के लम्बे चौड़े लहलहाते खेत पीछे छूट जाते हैं. अब एक डेलटा मिलता है जो रेतीला मैदान है सिंचाई और पानी निकालने का ज़रूरी प्रबन्ध न होने के कारन इस का हज़ारों एकड़ हर साल गर्मी में सूख जाता है और जाड़ों में पानी में डूब जाता है खेती का कोई ख़ास साधन दिखाई नहीं देता नीले आसमान के नीचे जहां तहां कुछ लोग मरियल बैलों से पुराने हल जोतते दिखलाई पड़ते हैं और दूर दूर नज़र घुमाने पर कहीं कहीं कुछ मर्द और औरत कुदाली से खेत के ढेले फोड़ते हुए मिलते हैं. आगे चलकर एक लम्बा चौड़ा मैदान मिलता है जिस पर पानी लहरें मार रहा है इस टुकड़े के चारों तरफ़ नमक की झीलें हैं और कुछ झोंपड़े बने हुए हैं. इन झोपड़ों के रहने वाले मछलियां पकड़ कर गुज़ारा करते हैं. इस डेलटा का रक़बा क़रीब क़रीब पांच लाख एकड़ है, क़रीब क़रीब तीन लाख आदमी इस में आबाद हैं. ज़ियादा आबादी बे खेत मज़दूरों की है. यह इलाक़ा भयानक ग़रीबी और शोर गुल का गहवारा है.

कोमेचियु की लम्बी सड़क पर चलते चलते जो पहला ख़याल किसी के दिमाग़ में आ सकता है वह यह है कि यह जगह कोई चौक बाज़ार है. सारी आबादी—मर्द, औरत, बच्चे—सड़क पर इकट्ठे रहते हैं. इसका कारन जल्द ही मालूम हो जाता है, लगभग सभी मर्द बे रोज़गार होते

اٹلی کے کسان اور اُن کی راج نیت

(آئلمیر والینس)

آئامیر والینس انگلینڈ میں چھپنے والے اخبار 'دی نیواسٹیٹسمین اینڈ نیشن' کے رپورٹر ہیں . آپ نے اٹلی کے گاؤں کا دورہ کیا ہے اور کسانوں کی ایک کانفرنس میں بھی بھاگ لیا ہے . یہ لیکھ ایک رپوتاژ ہے . اِس کو پڑھنے کے بعد اٹلی کے کسان آندولن اور اُن کی حالت کی ایک اچھی جھلک ملتی ہے . اِس لیکھ کا زمینداری انت سے سمبندھ نہیں ہے لیکن کسانوں کی سمسیا پر کافی روشنی پڑ جاتی ہے—
ایڈیٹر]

فریرا سے ایڈریاٹک تک جانے والی تارکول کی عمدہ سڑک یکبارگی آسٹیلیٹو پر آکر ختم ہوتی ہے . یہاں سے کومے چیو جانے کے لئے دوسری سڑک پکڑنی پڑتی ہے . اس جگہ کو " کٹھنائیوں کی راجدھانی " کہا جاتا ہے . سڑک پر گرد اُڑتی رہتی ہے اور جگہ جگہ پر گڈھے بھی ہیں . چھوٹی چھوٹی گٹیاں بچھی ہیں جن کو چور چور کرتی ہوئی کوئی لاری گذر جاتی ہے . آسٹیلیٹو اور کومے چیو کے بیچ صرف یہی ایک سڑک ہے . یہاں پہونچ کر پو ندی کے کچھار کے لمبے چوڑے لہلہاتے کھیت پیچھے چھوٹ جاتے ہیں . اب ایک ڈیلٹا ملتا ہے جو ریتیلا میدان ہے . سینچائی اور پانی نکالنے کا ضروری پربندھ نہ ہونے کے کارن اِس کا ہزاروں ایکڑ ہر سال گرمی میں سوکھ جاتا ہے اور جاڑوں میں پانی میں ڈوب جاتا ہے . کھیتی کا کوئی خاص سادھن دکھائی نہیں دیتا . نیلے آسمان کے نیچے جہاں تہاں کچھ لوگ مریل بیلوں سے پرانے ہل جوتتے دکھلائی پڑتے ہیں اور دور دور نظر گھمانے پر کہیں کہیں کچھ مرد اور عورت کدالی سے کھیت کے ڈھیلے پھوڑتے ہوئے ملتے ہیں . آگے چل کر ایک لمبا چوڑا میدان ملتا ہے جس پر پانی لہریں مار رہا ہے . اس ٹکڑے کے چاروں طرف نمک کی جھیلیں ہیں اور کچھ جھونپڑے بنے ہوئے ہیں . ان جھونپڑوں کے رہنے والے مچھلیاں پکڑ کر گزارا کرتے ہیں . اِس ڈیلٹا کا رقبہ قریب قریب پانچ لاکھ ایکڑ ہے، قریب قریب تین لاکھ آدمی اِس میں آباد ہیں . زیادہ آبادی بے کھیت مزدوروں کی ہے . یہ علاقہ بھیانک غریبی اور شور غل کا گہوارا ہے .

کومے چیو کی لمبی سڑک پر چلتے چلتے جو پہلا خیال کسی کے دماغ میں آ سکتا ہے وہ یہ ہے کہ یہ جگہ کوئی چوک بازار ہے . ساری آبادی—مرد، عورت، بچے— سڑک پر اکٹھے رہتے ہیں . اِس کا کارن جلد ہی معلوم ہو جاتا ہے، لگ بھگ سبھی مرد بے روزگار ہوتے

ट्रैक्टर क्यों नहीं खरीद लेते. सोलह हज़ार में एक ट्रैक्टर आता है. आधा रुपया सरकार तक़ावी में देगी, आधा आप लगा दीजिये. वह बोला, साहब, हमारे पास इतना रुपया होता तो हम खेती ही क्यों करते? इस सम्बन्ध में एक बात ख़ास है. सन 1947 में भारत सरकार ने भारत में सब से पहले ट्रैक्टर योजना सागर ज़िले में शुरू की थी. श्री जयरामदास दौलतराम उसका उद्घाटन करने वहां पथरिया नामक एक गांव में गए थे. पर सरकारी ट्रैक्टरों से इन पांच सालों में भी पूरा सागर ज़िला नहीं जुत पाया है. मध्यप्रदेश के उत्तरी ज़िलों में कांस बहुत होता है और सिर्फ़ ट्रेक्टरों की मदद से ही कुछ फ़ायदा हो सकता है. मध्यप्रदेश में कई साल से चकबन्दी का काम भी हो रहा है पर वह बहुत धीरे धीरे हो रहा है.

मध्यप्रदेश में सिंचाई के साधन बहुत कम हैं. किसानों की भलाई के लिये सरकार ने उनको काफ़ी रुपया तक़ावी में बांटा है और बांट रही है. लेकिन उसका ठीक तरह से उपयोग नहीं हो रहा है. किसान तकावी लेते हैं क्योंकि उस पर उन्हें सूद कम देना पड़ता है और उस रक़म को शादी ब्याह, तीर्थ यात्रा वग़ैरा में ख़र्च कर देते हैं. थोड़ी बहुत मिट्टी खेत की मेंड़ पर डाल दी, आधा कुंआं खुदाया, पटवारी को बख़शीश दे दी और काग़ज़ भरवा दिया. ठीक यह होगा कि ख़ुद सरकार मौज़ूं जगह देख कर कुंआ खुदवाए और फिर किसानों से क़िस्तबन्दी में रुपया वसूल करती रहे. खेती को तरक़्क़ी के लिये सिंचाई ज़रूरी है और यह काम सरकार को ही अपने हाथ में लेना चाहिये. फ़सल ख़राब होने पर लगान में छूट देना तो ठीक है लेकिन कुआं खुदवाना, खेतों में बांध बंधवाना वग़ैरा काम सरकार को ही करना चाहिये. या सरकार कुछ ओवरसियर मुक़र्रर कर दे जिनकी देखरेख में यह सब काम हों. मध्यप्रदेश के महाकौशल क्षेत्र की खेती बहुत ही पिछड़ी हुई हालत में है और उसकी तरक़्क़ी के लिये कुछ ठोस क़दम उठाना चाहिये.

मालगुज़ारी का ख़ातमा करके सरकार ने ठीक ही किया है. इसे कोई बुरा न कहेगा पर इससे भूमि व्यवस्था में सुधार नहीं हो सकते और न किसानों की ही हालत सुधर सकती है. इस में शक नहीं कि किसान को राहत मिली है पर हमारा मक़सद खेती के उद्योग को बढ़ाना और किसान के जीवन स्तर को ऊंचा उठाना है. यह दोनों मक़सद सिर्फ़ मालगुज़ारी ख़ातमे से पूरे नहीं होते. मालगुज़ारी ख़ातमा तो सिर्फ़ एक साधन था, मक़सद नहीं. अगर सरकार को खेती और किसान की सच्ची सेवा करना है तो मालगुज़ारी ख़ातमे को आख़री काम नहीं समझना चाहिये, शुरू का काम ही समझना चाहिये.

ٹریکٹر کیوں نہیں خرید لیتے . سولہ ہزار میں ایک ٹریکٹر آتا ہے . آدھا روپیہ سرکار تقاوی میں دے گی' آدھا آپ لگا دیجئے . وہ بولا' صاحب' ہمارے پاس اتنا روپیہ ہوتا تو ہم کھیتی ہی کیوں کرتے ؟ اس سمبندھ میں ایک بات خاص ہے . سن 1947 میں بھارت سرکار نے بھارت میں سب سے پہلے ٹریکٹر یوجنا ساگر ضلعے میں شروع کی تھی . شری جے رام داس دولت رام اس کا ادگھاٹن کرنے وہاں پتھاریا نامک ایک گاؤں میں گئے تھے . پر سرکاری ٹریکٹروں سے ان پانچ سالوں میں بھی پورا ساگر ضلع نہیں جت پایا ہے . مدھیہ پردیش کے اتری ضلعوں میں کانس بہت ہوتا ہے اور صرف ٹریکٹروں کی مدد سے ہی کچھ فائدہ ہوسکتا ہے . مدھیہ پردیش میں کئی سال سے چک بندی کا کام بھی رہا ہے پر وہ بہت دھیرے دھیرے ہو رہا ہے .

مدھیہ پردیش میں سینچائی کے سادھن بہت کم ہیں . کسانوں کی بھلائی کے لئے سرکار نے ان کو کافی روپیہ تقاوی میں بانٹا ہے اور بانٹ رہی ہے . لیکن اس کا ٹھیک طرح اپیوگ نہیں ہو رہا ہے . کسان تقاوی لیتے ہیں کیونکہ اس پر انہیں سود کم دینا پڑتا ہے اور اس رقم کو شادی بیاہ' تیرتھ یاترا وغیرہ میں خرچ کر دیتے ہیں . تھوڑی بہت مٹی کھیت کی مینڈ پر ڈال دی' آدھا کنواں کھدایا' پٹواری کو بخشش دے دی اور کاغذ بھروا دیا . ٹھیک یہ ہوگا کہ خود سرکار موزوں جگہ دیکھ کر کنواں کھدوائے اور پھر کسانوں سے قسط بندی میں روپیہ وصول کرتی رہے . کھیتی کی ترقی کے لئے سینچائی ضروری ہے اور یہ کام سرکار کو ہی اپنے ہاتھ میں لینا چاہئے . فصل خراب ہونے پر لگان میں چھوٹ دینا تو ٹھیک ہے لیکن کنواں کھدوانا' کھیتوں میں باندھ بندھوانا وغیرہ کام سرکار کو ہی کرنا چاہئے . یا سرکار کچھ اوورسیر مقرر کر دے جن کی دیکھ ریکھ میں یہ سب کام ہوں . مدھیہ پردیش کے مہا کوشل چھیتر کی کھیتی بہت ہی پچھڑی ہوئی حالت میں ہے اور اس کی ترقی کے لئے کچھ ٹھوس قدم اٹھانا چاہئے .

مالگذاری کا خاتمہ کر کے سرکار نے ٹھیک ہی کیا ہے . اسے کوئی برا نہ کہے گا پر اس سے بھومی ویوستھا میں سدھار نہیں ہو سکتے اور نہ کسانوں کی ہی حالت سدھر سکتی ہے . اس میں شک نہیں کہ کسان کو راحت ملی ہے پر ہمارا مقصد کھیتی کے ادیوگ کو بڑھانا اور کسان کے جیون استر کو اونچا اٹھانا ہے . یہ دونوں مقصد صرف مالگذاری خاتمے سے پورے نہیں ہوتے . مالگذاری خاتمہ تو صرف ایک سادھن تھا مقصد نہیں . اگر سرکار کو کھیتی اور کسان کی سچی سیوا کرنا ہے تو مالگذاری خاتمے کو آخری کام نہیں سمجھنا چاہئے' شروع کا کام ہی سمجھنا چاہئے .

लेते हैं और अगर पटेल के पास रुपया नहीं होता तो उससे लेते हैं जिस से पटेल लेने को कहता है या किसी साहूकार से लेते हैं. मतलब यह कि सरकारी कर अब किसान को क़र्ज़ लेने को मजबूर करता है.

कुछ लोगों का मत है कि लगान वसूली का काम अगर गांव पंचायत को सौंप दिया जाय तो बड़ा अच्छा हो. साथ ही अगर यह छे फ़ीसदी कमीशन गांव पंचायत को मिलने लगे तो वह उसे गांव की तरक़्क़ी में ख़र्च कर सकती हैं. इस पर कुछ लोगों ने यह आलोचना की है कि अगर गांव पंचायत के सरपंच या पंच सरकारी रुपया खा गए तो क्या होगा ? इसके जवाब में यह कहा जा सकता है कि अगर पटेल रुपया लेकर भाग जाय तो क्या होगा. जिस तरह किसी गांव का साहूकार रुपया लेकर भाग सकता है, उसी तरह पटेल भी भाग सकता है. पटवारी पटेल का आतंक गांवों में उसी तरह बना हुआ है जिस तरह मालगुज़ार का था. अगर पटेल और पटवारी का मेल हुआ तो किसी भी समय किसान की ज़िन्दगी और क़िस्मत के साथ खेलवाड़ किया जा सकता है.

दूसरी बात यह देखी गई है कि सरकारी व्यवस्था के मातहत कुछ काम बहुत गड़बड़ हो गए हैं. जैसे कि मालगुज़ार सिंघाड़ा लगाने के लिये अपने तालाबों का ठेका जेठ या असाढ़ के महीने तक दे देते थे. लेकिन अब पचीस जगह से आर्डर आते हैं तब नीलाम होता है. कभी कभी ऐसा होता है कि जब सिंघाड़े लगाने का समय निकल जाता है तब नीलाम होता है. इसी तरह जब महुआ की फ़सल ख़तम सी हो जाती है तब महुआ के पेड़ों का नीलाम होता है. यह हालत सब जगह नहीं है और जहां है भी मुमकिन है समय पा कर वह सुधर जाय लेकिन इस समय तो लोगों को काफ़ी तकलीफ़ है.

तीसरा सवाल यह है कि इस भूमि सुधार से किसानों को क्या लाभ हुआ. जैसा हम कह चुके हैं ज़ियादातर पुराने मालगुज़ार ही नये पटेल हो गये हैं और पटवारी पटेल का आतंक उसी शकल में है जिस शकल में मालगुज़ार पटेल का था. लेकिन इसके साथ ही सब से बड़ी बात यह है कि आर्थिक नज़र से किसान को कोई फ़ायदा नहीं हुआ. लगान में किसी तरह की कमी नहीं हुई, उसके पूरक कर जैसे अब्वाब वग़ैरा बढ़ गए हैं. अब गांव पंचायतों ने भी कर लगा दिये हैं, इसलिये किसान को तो कोई राहत मिली नहीं. असल में वह भूमि सुधार का कोई सुख अनुभव नहीं कर रहा है.

अब रही खेती में तरक़्क़ी करने के लिये सरकार के ज़रिये दी जाने वाली सुविधाओं की बात. पिछली गरमियों में मुझे मध्यप्रदेश के कुछ गांवों में जाने का मौक़ा मिला. एक किसान खाता पीता मालूम पड़ता था. मैंने पूछा, आप

لیتے ھیں اور اگر پٹیل کے پاس روپیہ نہیں ھوتا تو اُس سے لیتے ھیں جس سے پٹیل لینے کو کہتا ھے یا کسی ساھوکار سے لیتے ھیں ۔ مطلب یہ کہ سرکاری قر اب کسان کو قرض لینے کو مجبور کرتا ھے ۔

کچھ لوگوں کا مت ھے کہ لگان وصولی کا کام اگر گاؤں پنچایت کو سونپ دیا جائے تو بڑا اچھا ھو ۔ ساتھ ھی اگر یہ چھ فیصدی کمیشن گاؤں پنچایت کو ملنے لگے تو وہ اُسے گاؤں کی ترقی میں خرچ کر سکتی ھیں ۔ اِس پر کچھ لوگوں نے یہ آلوچنا کی ھے کہ اگر گاؤں پنچایت کے سرپنچ یا پنچ سرکاری روپیہ کھا گئے تو کیا ھوگا ؟ اِس کے جواب میں یہ کہا جا سکتا ھے کہ اگر پٹیل روپیہ لے کر بھاگ جائے تو کیا ھوگا ۔ جس طرح کسی گاؤں کا ساھوکار روپیہ لے کر بھاگ سکتا ھے، اُسی طرح پٹیل بھی بھاگ سکتا ھے ۔ پٹواری پٹیل کا آتنک گاؤں میں اُسی طرح بنا ہوا ھے جس طرح مالگذار کا تھا ۔ اگر پٹیل اور پٹواری کا میل ھوا تو کسی بھی سمے کسان کی زندگی اور قسمت کے ساتھ کھلواڑ کیا جاسکتا ھے ۔

دوسری بات یہ دیکھی گئی ھے کہ سرکاری ویوستھا کے ماتحت کچھ کام بہت گڑبڑ ھوگئے ھیں ۔ جیسے کہ مالگذار سنگھاڑا لگانے کے لئے اپنے تالابوں کا ٹھیکہ جیٹھ اساڑھ کے مہینے تک دے دیتے تھے ۔ لیکن اب پچیس جگہ سے آرڈر آتے ھیں تب نیلام ھوتا ھے ۔ کبھی کبھی ایسا ھوتا ھے کہ جب سنگھاڑے لگانے کا سمے نکل جاتا ھے تب نیلام ھوتا ھے ۔ اس طرح جب مہوا کی فصل ختم سی ھو جاتی ھے تب مہوا کے پیڑوں کا نیلام ھوتا ھے ۔ یہ حالت سب جگہ نہیں ھے اور جہاں ھے بھی ممکن ھے سمے پاکر وہ سدھر جائے لیکن اس سمے تو لوگوں کو کافی تکلیف ھے ۔

تیسرا سوال یہ ھے کہ اس بھومی سدھار سے کسانوں کو کیا لابھ ھوا ۔ جیسا ھم کہہ چکے ھیں زیادہ تر پرانے مالگذار ھی نئے پٹیل ھوگئے ھیں اور پٹواری پٹیل کا آتنک اُسی شکل میں ھے جس شکل میں مالگذار پٹیل کا تھا ۔ لیکن اس کے ساتھ ھی سب سے بڑی بات یہ ھے کہ آرتھک نظر سے کسان کو کوئی فائدہ نہیں ھوا ۔ لگان میں کسی طرح کی کمی نہیں ھوئی ۔ اُس کے پورک کر جیسے ابواب وغیرہ بڑھ گئے ھیں ۔ اب گاؤں پنچایتوں نے بھی کر لگا دیئے ھیں، اس لئے کسان کو تو کوئی راحت ملی نہیں ۔ اصل میں وہ بھومی سدھار کا کوئی سکھ انوبھو نہیں کر رہا ھے ۔

اب رھی کھیتی میں ترقی کرنے کے لئے سرکار کے ذریعے دی جانے والی سودھاؤں کی بات ۔ پچھلی گرمیوں میں مجھے مدھیہ پردیش کے کچھ گاؤں میں جانے کا موقع ملا ۔ ایک کسان کھاتا پیتا معلوم پڑتا تھا ۔ میں نے پوچھا آپ

कि जल्द ही यह जंगल उनके हाथ से खिसकने वाले हैं तो उन्होंने व्योपारियों और ठेकेदारों को मिट्टी के मोल ठेके दे दिये और इन ठेकेदारों ने उन जंगलों को साफ़ कर दिया. टीक और दूसरी इमारती लकड़ी के छोटे छोटे पौधे जो कुछ भी काम में आ सकते थे कुल्हाड़ी के घाट उतार दिये गए. कुछ लोगों का अन्दाज़ा है कि इस तरह सरकार को लगभग एक करोड़ रुपए का नुक़सान हुआ और यह उजड़े हुए जंगल लगभग दस साल में आबाद हो पायेंगे. क्या अच्छा होता अगर सरकार इस ख़तरे को देख लेती और एक आर्डीनेन्स या एलान के ज़रिये इस बरबादी को रोक लेती.

क़ानून से सरकार ने मालगुज़ारों का तो ख़ातमा कर दिया पर अब सवाल यह उठा कि उन मालगुज़ारों की जगह लगान वसूल कौन करे और उसे सरकारी ख़ज़ाने में जमा कौन करे ? इसके लिये सरकार ने हर एक गांव में पटेल मुक़र्रर किये. सरकार की लोकशाही की भावना इतनी ज़ियादा भड़क उठी कि हर एक गांव में इन पटेलों का किसानों के ज़रिये चुनाव कराया गया. लेकिन जहां अनपढ़ और आतंक का राज हो वहां यह चुनाव कहां तक सफल हो सकते हैं इस का अनुमान हम आसानी से कर सकते हैं. क्या गांव वालों की या किसानों की यह हिम्मत हो सकती थी कि जहां कल तक एक मालगुज़ार का राज था, वहां आज उस मालगुज़ार के ख़िलाफ़ कोई दूसरा आदमी एक मामूली किसान, पटेल चुन लिया जायगा ? या चुनाव कराने वाले पटवारी, रेवेन्यू इन्सपेक्टर या नायब तहसील-दार की इच्छा के ख़िलाफ़ कोई किसान पटेल चुन लिया जायगा ? नतीजा यह हुआ कि दस में से नौ पटेल वही आदमी चुने गए जो पहले उस गांव के मालगुज़ार या मुक़द्दम थे. सिर्फ़ कुछ गांव में जहां मालगुज़ार कमज़ोर थे, जात पात के बल पर, कुछ ऐसे आदमी पटेल चुने गए जो पहले मालगुज़ार नहीं थे. इन चुनावों का नतीजा यह हुआ कि जहां तक किसानों का सम्बन्ध है, उनके लिये वह पुराना आतंक ज्यों का त्यों बना रहा. कहा जाता है पटेलों के चुनाव की यह सूझ मध्यप्रदेश के पिछले होम मिनिस्टर द्वारका प्रसाद मिश्र के दिमाग़ की उपज थी.

यह पटेल किसानों से लगान वसूल करके उसे सरकारी ख़ज़ाने में जमा करते हैं और इसके लिये छै फ़ी सदी कमीशन मिलता है. कुछ लोगों ने इस प्रथा पर एतराज़ किया है. यह एक तरह से दूसरी शकल में ज़मींदारी ही हो गई. अब लगान अदाई एक तरह से सरकारी क़र्ज़ का अदा करना हो गया. अगर समय पर नहीं अदा किया गया तो पूरा सरकारी डंडा किसान पर पड़ता है. उस के नाम वारंट निकलता है और जाने क्या क्या हालत होती है. नतीजा यह होता है कि समय पर लगान अदा करने के लिये किसान अकसर इन्हीं पटेलों से ऊँचे सूद पर रुपया

کہ جلد ہی یہ جنگل اُن کے ہاتھ سے کھسکنے والے ہیں تو اُنہوں نے بیوپاریوں اور ٹھیکیداروں نے کو مٹی کے مول ٹھیکے دے دیئے اور اِن ٹھیکیداروں نے اُن جنگلوں کو صاف کر دیا. ٹیک اور دوسری عمارتی لکڑی کے چھوٹے چھوٹے پودھے جو کچھ بھی کام میں آ سکتے تھے کلہاڑی کے گھاٹ اُتار دیئے گئے. کچھ لوگوں کا اندازہ ہے کہ اس طرح سرکار کو لگ بھگ ایک کروڑ روپیہ کا نقصان ہوا اور یہ اُجڑے ہوئے جنگل لگ بھگ دس سال میں آباد ہو پائیں گے . کیا اچھا ہوتا اگر سرکار اِس خطرے کو دیکھ لیتی اور ایک آرڈیننس یا اعلان کے ذریعے اِس بربادی کو روک لیتی .

قانون سے سرکار نے مالگذاروں کا تو خاتمہ کر دیا پر اب سوال یہ اُٹھا کہ اِن مالگذاروں کی جگہ لگان وصول کون کرے اور اُسے سرکاری خزانے میں جمع کون کرے ؟ اس کے لئے سرکار نے ہر ایک گاؤں میں پٹیل مقرر کئے . سرکار کی لوک شاہی کی بھاؤنا اتنی زیادہ بھڑک اُٹھی کہ ہر ایک گاؤں میں اِن پٹیلوں کا کسانوں کے ذریعہ چناؤ کرایا گیا. لیکن جہاں ان پڑھ اور آتنک کا راج ہو وہاں یہ چناؤ کہاں تک سپھل ہو سکتے ہیں اس کا انومان ہم آسانی سے کر سکتے ہیں . کیا گاؤں والوں کی یا کسانوں کی یہ ہمت ہو سکتی تھی کہ جہاں کل تک ایک مالگذار کا راج تھا، وہاں آج اُس مالگذار کے خلاف کوئی دوسرا آدمی، ایک معمولی کسان، پٹیل چن لیا جائے گا ؟ یا چناؤ کرانے والے پٹواری، ریوینیو انسپکٹر یا نائب تحصیلدار کی اِچھا کے خلاف کوئی کسان پٹیل چن لیا جائے گا ؟ نتیجہ یہ ہوا کہ دس میں سے نو پٹیل وہی آدمی چنے گئے جو پہلے اُس گاؤں کے مالگذار یا مقدم تھے . صرف کچھ گاؤں میں جہاں مالگذار کمزور تھے، جات پات کے بل پر، کچھ ایسے آدمی پٹیل چنے گئے جو پہلے مالگذار نہیں تھے . ان چناؤں کا نتیجہ یہ ہوا کہ جہاں تک کہ کسانوں کا سمبندھ ہے، اُن کے لئے وہ پرانا آتنک جیوں کا تیوں بنا رہا . کہا جاتا ہے پٹیلوں کے چناؤ کی یہ سوجھ مدھیہ پردیش کے پچھلے ہوم منسٹر دوارکا پرساد مصر کے دماغ کی اُپج تھی .

یہ پٹیل کسانوں سے لگان وصول کر کے اُسے سرکاری خزانے میں جمع کرتے ہیں اور اُس کے لئے چھ فی صدی کمیشن ملتا ہے . کچھ لوگوں نے اِس پرتھا پر اعتراض کیا ہے . یہ ایک طرح سے دوسری شکل میں زمینداری ہی ہوگئی. اب لگان ادائی ایک طرح سے سرکاری قرض کا ادا کرنا ہوگیا. اگر سمے پر ادا نہیں کیا گیا تو پورا سرکاری ڈنڈا کسان پر پڑتا ہے . اُس کے نام وارنٹ نکلتا ہے اور جانے کیا کیا حالت ہوتی ہے . نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ سمے پر لگان ادا کرنے کے لئے کسان اکثر اِنہیں پٹیلوں سے اونچے سود پر روپیہ

मध्यप्रदेश में भूमि सुधार

(पन्नालाल श्रीवास्तव)

भारत में स्वराज के बाद सरकार ने मारके का जो काम किया है वह है कुछ सूबों में भूमि सुधार. ज़मींदारी किसी भी राज में या किसी भी आज के शासन में होनी नहीं चाहिये और कांगरेस तो बहुत पहले ज़मींदारी का अन्त तय कर चुकी थी. इसलिये कई सूबों में कांगरेस सरकार ने ज़मींदारी ख़तम कर दी है. चूंकि पिछले साल चुनावों में कांगरेस को जनता के वोट चाहिये थे इसलिये यह कोशिश की गई कि चुनावों के पहले ही ज़मींदारी अन्त क़ानून बन जायें. चुनाचे वह क़ानून बना दिये गए. पर इस सम्बन्ध में कुछ ऐसी जल्दी बाज़ी की गई कि इस में कई कमियां रह गईं और सरकार और जनता दोनों को इसके बुरे फल भोगना पड़ रहे हैं. इस लेख में मध्यप्रदेश में ज़मींदारी अन्त और भूमि सुधार पर ग़ौर करेंगे और देखेंगे कि उस में क्या ग़लतियां रह गईं और किसानों को क्या फ़ायदा हुआ.

मध्य प्रदेश में ज़मींदारों को मालगुज़ार कहते हैं. 31 मार्च सन 1951 से मध्यप्रदेश में हर तरह से ज़मींदारी या मालगुज़ारी ख़तम कर दी गई. इस क़ानून के ज़रिये क़रीब दो लाख मालगुज़ार ज़मींदार वग़ैरा से 40 लाख एकड़ भूमि पर से मालिकी वग़ैरा के हक़ ले लिये गए. अब काश्तकार थोड़ा सा नज़राना देकर अपनी ज़मीन पर मालिक मक़बूज़ा हक़ हासिल कर सकते हैं.

जहां तक इस क़ानून का सम्बन्ध है इस में शक नहीं कि यह ठीक है. सरकार और काश्तकार के बीच में अब कोई तीसरा आदमी नहीं रह गया और लगभग 80 साल तक किसानों को मालगुज़ारों के जो अन्याय सहना पड़े थे, उनका ख़ातमा हो गया. लेकिन इससे किसानों की और भूमि के सवाल का हल नहीं हुआ. इस पर हम आगे विचार करेंगे. अभी तो हम यह देखेंगे कि इस क़ानून के बनाने में सरकार ने कहां और क्या भूलें कीं.

हर एक क़ानून को बनाने में कुछ वक़्त लगता है. मध्यप्रदेश के मालगुज़ारों को जब मालूम हो गया कि सरकार अब जल्दी ही हमारी मालगुज़ारी छीनने वाली है तो उन्होंने भागते भूत की लंगोटी भली कहावत के मुताबिक़ बटोरना शुरू कर दिया. मध्यप्रदेश में जंगल बहुत हैं और उन जंगलों में इमारती लकड़ी बहुत होती है. सी. पी. टीक तो देश और विदेश में भी मशहूर है. इस तरह के बहुत से जंगल मालगुज़ारी में शामिल थे. जब मालगुज़ारों ने देखा

مدھیہ پردیش میں بھومی سدھار

(پنا لال سریواستو)

بھارت میں سوراج کے بعد سرکار نے معرکے کا جو کام کیا ہے وہ ہے کچھ صوبوں میں بھومی سدھار . زمینداری کسی بھی راج میں یا کسی بھی آج کے شاسن میں ہونی نہیں چاہئے' اور کانگریس تو بہت پہلے زمینداری کا انت طے کر چکی تھی . اس لئے کئی صوبوں میں کانگریس سرکار نے زمینداری ختم کر دی ہے . چونکہ پچھلے سال چناؤں میں کانگریس کو جنتا کے ووٹ چاہئے تھے اس لئے یہ کوشش کی گئی کہ چناؤں کے پہلے ہی زمینداری انت قانون بن جائیں . چنانچہ وہ قانون بنا دیئے گئے . پر اس سمبندھ میں کچھ ایسی جلد بازی کی گئی کہ اس میں کئی کمیاں رہ گئیں اور سرکار اور جنتا دونوں کو اس کے برے پھل بھوگنا پڑ رہے ہیں . اس لیکھ میں مدھیہ پردیش میں زمینداری انت اور بھومی سدھار پر غور کریں گے اور دیکھیں گے کہ اس میں کیا غلطیاں رہ گئیں اور کسانوں کو کیا فائدہ ہوا .

مدھیہ پردیش میں زمینداروں کو مالگذار کہتے ہیں . 31 مارچ سن 1951 سے مدھیہ پردیش میں ہر طرح سے زمینداری یا مالگذاری ختم کر دی گئی . اس قانون کے ذریعے قریب دو لاکھ مالگذار زمیندار وغیرہ سے 40 لاکھ ایکڑ بھومی پر سے مالکی وغیرہ کے حق لے لئے گئے . اب کاشتکار تھوڑا سا نذرانہ دے کر اپنی زمین پر مالک مقبوضہ حق حاصل کر سکتے ہیں .

جہاں تک اس قانون کا سمبندھ ہے اس میں شک نہیں کہ یہ ٹھیک ہے . سرکار اور کاشتکار کے بیچ میں اب کوئی تیسرا آدمی نہیں رہ گیا اور لگ بھگ 80 سال تک کسانوں کو مالگذاروں کے جو انیائے سہنا پڑے تھے' ان کا خاتمہ ہو گیا . لیکن اس سے کسانوں کی اور بھومی کے سوال کا حل نہیں ہوا . اس پر ہم آگے وچار کریں گے . ابھی تو ہم دیکھیں گے کہ اس قانون کے بنانے میں سرکار نے کہاں اور کیا بھولیں کیں .

ہر ایک قانون کو بنانے میں کچھ وقت لگتا ہے . مدھیہ پردیش کے مالگذاروں کو جب معلوم ہو گیا کہ سرکار اب جلدی ہی ہماری مالگذاری چھیننے والی ہے تو انہوں نے بھاگتے بھوت کی لنگوٹی بھلی کہاوت کے مطابق بٹورنا شروع کر دیا . مدھیہ پردیش میں جنگل بہت ہیں اور ان جنگلوں میں عمارتی لکڑی بہت ہوتی ہے . سی . پی . ٹیک تو دیش اور ودیش میں بھی مشہور ہے . اس طرح کے بہت سے جنگل مالگذاری میں شامل تھے . جب مالگذاروں نے دیکھا

17. गांव में काम करने वालों को जितनी मदद वहां के नौजवानों से मिल सकती है उससे कहीं ज़ियादा वहां के बड़े बूढ़ों से मिल सकती है. यह बड़े बूढ़े बहुत तजुर्बे और पते की बात कहते हैं. नौजवान अधिक चलते हुए और तिजारती बुद्धि के हैं. तिजारती लोगों से किसान ज़ियादा समझदार हैं.

18. नशा और जुआ, ख़ास कर नौजवानों में गांव में बढ़ता जा रहा है.

19. लोगों को आम तौर पर यह सूझ रहा है कि सारे देश के लिये एक ऐसे नेक और ज़ोरदार आदमी की ज़रूरत है जो कुटुम्ब के बड़े बूढ़े की तरह सब को ठीक राह पर चला सके.

20. ऐसा मालूम होता है कि दस दस या बीस बीस गांवों को मिला कर उनमें नेक मुखिया नियुक्त करना और ऐसे टुकड़ों को जहां तक हो सके राजनीतिक, आर्थिक और सब निगाहों से स्वावलम्बी और ख़ुद मुख़तार बनाना, यही आज के गांव और वहां की जनता को बचाने का तरीक़ा हो सकता है.

21. गांव स्कूलों के अध्यापक अपने अपने गांव में अच्छा काम कर सकते हैं बशर्तेकि वह ख़ुद सच्चे, प्रेमी, बड़े दिल वाले, निरपक्ष और चरित्रवान हों.

17. گاؤں میں کام کرنے والوں کو جتنی مدد وہاں کے نوجوانوں سے مل سکتی ہے اُس سے کہیں زیادہ وہاں کے بڑے بوڑھوں سے مل سکتی ہے۔ یہ بڑے بوڑھے بہت تجربے کی اور پتے کی بات کہتے ہیں۔ نوجوان ادھک چلتے ہوئے اور تجارتی بدھی کے ہیں۔ تجارتی لوگوں سے کسان زیادہ سمجھدار ہیں۔

18. نشہ اور جوا خاص کر نوجوانوں میں گاؤں میں بڑھتا جا رہا ہے۔

19. لوگوں کو عام طور پر یہ سوجھ رہا ہے کہ سارے دیش کے لئے ایک ایسے نیک اور زوردار آدمی کی ضرورت ہے جو کٹمب کے بڑے بوڑھے کی طرح سب کو ٹھیک راہ پر چلا سکے۔

20. ایسا معلوم ہوتا ہے کہ دس دس یا بیس بیس گاؤں کو ملاکر اُن میں نیک مکھیا نیکت کرنا اور ایسے ٹکڑوں کو جہاں تک ہوسکے راج نیتک، آرتھک اور سب نگاہوں سے سواولمبی اور خود مختار بنانا، یہی آج کے گاؤں اور وہاں کی جنتا کو بچانے کا طریقہ ہوسکتا ہے۔

21. گاؤں اِسکولوں کے ادھیاپک اپنے اپنے گاؤں میں اچھا کام کر سکتے ہیں، بشرطیکہ وہ خود سچے، پریمی، بڑے دل والے، نشپکش اور چرتروان ہوں۔

"मेरी राय में हिन्दुस्तान की और सारे संसार की अर्थ व्यवस्था ऐसी होनी चाहिये कि उसमें बिना खाने और कपड़े के कोई भी रहने न पाये. दूसरे लफ़्ज़ों में हर एक को अपनी गुज़रबसर के लिये काफ़ी काम मिलना ही चाहिये. यह आदर्श तभी सिद्ध होगा जबकि जीवन की पहली ज़रूरतें पूरी करने के साधनों पर जनता का अधिकार रहेगा जिस तरह भगवान की पैदा की हुई हवा और पानी सब को मुफ़्त मिलता है उसी तरह यह साधन सब को बेरोक टोक के मिलने चाहियें. उन्हें दूसरों को लूटने के लिये लेन देन की चीज़ें हरगिज़ नहीं बनने देना चाहिये."

—महात्मा गांधी

"میری رائے میں ہندستان کی اور سارے سنسار کی ارتھ ویوستھا ایسی ہونی چاہئے کہ اُس میں بنا کھانے اور کپڑے کے کوئی بھی رہنے نہ پائے۔ دوسرے لفظوں میں ہر ایک کو اپنی گذر بسر کے لئے کافی کام ملنا ہی چاہئے۔ یہ آدرش تبھی سدھ ہوگا جبکہ جیون کی پہلی ضرورتیں پوری کرنے کے سادھنوں پر جنتا کا ادھیکار رہے گا۔ جس طرح بھگوان کی پیدا کی ہوئی ہوا پانی سب کو مفت ملتا ہے اُسی طرح یہ سادھن بھی سب کو بے روک ٹوک کے ملنے چاہئیں۔ اُنہیں دوسروں کو لوٹنے کے لئے لین دین کی چیزیں ہرگز نہیں بننے دینا چاہئے۔"

—مہاتما گاندھی

में पड़ना नहीं चाहते. अपनी जमीन से, चाहे टुकड़े टुकड़े खेत अलग अलग फैले हुए हों, बहुत अधिक ममता है. एक न सही दूसरे टुकड़े से किसान कुछ न कुछ पैदा कर के अपना काम चला लेता है, जब सारा घर काम करता है तो दो तीन बीघे जमीन से एक छोटे परिवार का अच्छी तरह गुजर हो जाता है.

8. खेती बाड़ी के पच्छिमी तरीक़ों जैसे ट्रैक्टरों, कीमियाई खाद वग़ैरा के लोग बिलकुल ख़िलाफ़ हैं.

9. पंचायतें और गांव सभाएं या तो बेकार पड़ी हैं और या बिलकुल ऊपर के सरकारी हुक्मों पर चलती हैं. लोग सब इन से असन्तुष्ट हैं. इनके बारे में बात करते हुए एक आदमी ने कहा—"ढोये ढोये मरें बैलवा, बांधे खायं तुरंग."

10. आम लोगों में संगठन की कमी है. पारटी बन्दी और कलह हर गांव में फैली है. पर यह कारबारी लोगों और पढ़े लिखों में अधिक है. सीधे सादे किसान अब भी झगड़े की बात पसन्द नहीं करते. कोई समझावे तो सुनते भी हैं. गांधी जी में लोगों को अटूट श्रद्धा है. त्यागी और साधु लोगों को वह पसन्द करते हैं. उनका हृदय अब भी बिल्कुल ठीक है. उन्हें किसी राह दिखाने वाले की ज़रूरत है.

11. मेरा ख़याल है कि बीड़ी का जाना गांव में बिल्कुल बन्द होना चाहिये. उसकी जगह लोगों को अगर तम्बाकू पीना ही है तो अपने खेत की तम्बाकू चिलम में रख कर पीयें तो कम नुक़सान हो और उनका पैसा भी बचे.

12. हर गांव में एक ऐसे वज़नदार और नेक मुखिया की ज़रूरत है जो उनमें सच्चा संगठन पैदा कर सके.

13. आम ग़रीब लोगों में मेहमान की सेवा और मान मर्यादा का ख़याल अब भी बहुत है.

14. जंगलों की कटाई और बरबादी से ज़मीन की नमी को बहुत नुक़सान पहुंचा है.

15. कपड़े की तंगी से लोग काफ़ी परेशान हैं.

16. गांव की सब से बड़ी ज़रूरत यह है कि मूंगफली, तम्बाकू और बनावटी ईख जो मिलों में काम आती है, इनकी खेती बहुत कम की जावे, और खाने का नाज, तिलहन, कपास और देशी ईख की खेती अधिक की जावे. पैसे का चलन कम हो और गांव वाले तिजारती बुद्धि से थोड़ा हट कर खाने और कपड़े में स्वावलम्बन की तरफ़ चलें. इससे गांव के धन्दे जैसे कपड़े की बुनाई, कोल्हू वग़ैरा बढ़ेंगे और गांव का धन बाहर बह जाना बन्द होगा. इस तरह नाज की पैदावार भी बढ़ सकती है और देश की नाज की कमी बिल्कुल दूर हो सकती है.

میں پڑنا نہیں چاھتے . اپنی زمین سے' چاھے ٹکڑے ٹکڑے کھیت الگ الگ پھیلے ھوئے ھیں' بہت ادھک ممتا ھے . ایک نہ سہی دوسرے ٹکڑے سے کسان کچھ نہ کچھ پیدا کرکے اپنا کام چلا لیتا ھے . جب سارا گھر کام کرتا ھے تو دو تین بیگھے زمین سے ایک چھوٹے پریوار کا اچھی طرح گذر ھو جاتا ھے .

8. کھیتی باڑی کے پچھمی طریقوں جیسے ٹریکٹروں' کیمیائی کھاد وغیرہ کے لوگ بالکل خلاف ھیں .

9. پنچایتیں اور گاؤں سبھائیں یا تو بیکار پڑی ھیں اور یا بالکل اوپر کے سرکاری حکموں پر چلتی ھیں . لوگ سب اِن سے اسنتشٹ ھیں . اِن کے بارے میں بات کرتے ھوئے ایک آدمی نے کہا—"ڈھوئے ڈھوئے مریں بیلوا' باندھے کھائیں ترنگ."

10. عام لوگوں میں سنگھٹن کی کمی ھے . پارٹی بندی اور کلہ ھر گاؤں میں پھیلی ھے . پر یہ کاروباری لوگوں اور پڑھے لکھوں میں ادھک ھے . سیدھے سادے کسان اب بھی جھگڑے کی بات پسند نہیں کرتے . کوئی سمجھاوے تو سنتے بھی ھیں . گاندھی جی میں لوگوں کو اٹوٹ شردھا ھے . تیاگی اور سادھو لوگوں کو وہ پسند کرتے ھیں . اُن کا هردے اب بھی بالکل ٹھیک ھے . اُنہیں کسی راہ دکھانے والے کی ضرورت ھے .

11. میرا خیال ھے کہ بیڑی کا جانا گاؤں میں بالکل بند ھونا چاھئے . اُس کی جگہ لوگوں کو اگر تمباکو پینا ھی ھے تو اپنے کھیت کی تمباکو چلم میں رکھ کر پیئیں تو کم نقصان ھو اور اُن کا پیسہ بھی بچے .

12. ھر گاؤں میں ایک ایسے وزن دار اور نیک مکھیا کی ضرورت ھے جو اُن میں سچا سنگھٹن پیدا کرسکے .

13. عام غریب لوگوں میں مہمان کی سیوا اور مان مریادا کا خیال اب بھی بہت ھے .

14. جنگلوں کی کٹائی اور بربادی سے زمین کی نمی کو بہت نقصان پہونچا ھے .

15. کپڑے کی تنگی سے لوگ کافی پریشان ھیں .

16. گاؤں کی سب سے بڑی ضرورت یہ ھے کہ مونگ پھلی' تمباکو اور بناوٹی ایکھ جو ملوں میں کام آتی ھے' اِن کی کھیتی بہت کم کی جاوے' اور کھانے کا ناج' تلہن' کپاس اور دیسی ایکھ کی کھیتی ادھک کی جاوے . پیسے کا چلن کم ھو اور گاؤں والے تجارتی بدھی سے تھوڑا ھٹ کر کھانے اور کپڑے میں سواولمبن کی طرف چلیں . اِس سے گاؤں کے دھندے' جیسے کپڑے کی بنائی' کولھو وغیرہ بڑھینگے اور گاؤں کا دھن باھر بہ جانا بند ھوگا . اِس طرح اناج کی پیداوار بھی بڑھ سکتی ھے اور دیش کی ناج کی کمی بالکل دور ھوسکتی ھے .

सब जगह लोग उन्हें प्रेम के साथ खाने को भोजन और रहने को ठिकाना भी दे देते थे.

2. उन्होंने देखा कि गांव के आम लोग सब जगह कांगरेस और सरकार दोनों से बहुत असन्तुष्ट हैं. कांगरेस के नाम तक से लोग चिढ़ते हैं, पर जब उनसे कहा जाता है कि गांधी जी का कोई आदमी उनसे मिलने आया है तो उससे प्रेम के साथ मिलते हैं, अपना सब दुखड़ा उससे कहते हैं, और उसकी बात ध्यान से सुनते हैं.

3. उस इलाक़े के जिन जिन हिस्सों में नहर गई है उन में लोग खरोंचू फ़सलें ही अधिक बोते हैं, यानी, मूंगफली, तम्बाकू और नए बनावटी ईख जैसी चीज़ें जो ज़मीन से ज़ियादा से ज़ियादा ताक़त खींच लेती हैं. इससे ज़मीन की ताक़त घटती जा रही है. नहर की ज़मीन से अरहर, सरसों, देसी ईख, कपास, जैसी काम की चीज़ें नहीं ली जातीं. नहरी इलाक़ों में काम की चीज़ों को पैदा करने की शक्ति भी घटती जा रही है. जवार जहां पहले पचीस मन फ़ी बीघा होती थी वहां अब घटते घटते कहीं कहीं पांच मन फ़ी बीघा रह गई है ऐसा मालूम होता है कि नहरों से बाहरी तिजारत और लूट पाट का काम ही लिया जाता है, गांव की असली और टिकाऊ भलाई का नहीं.

4. पैसों के लोभ में और ग़रीबी के कारन गांव वाले अपनी गाय भैंसों का दूध बाहर भेज देते हैं और अपने बच्चों, बूढ़ों और बीमारों तक को दूध नहीं दे पाते, जिस से उनकी तनदुरुस्ती बिगड़ती जा रही है.

5. एक गांव में लगभग नव्वे बरस के एक बूढ़े बेपढ़े आदमी ने मुझसे कहा—"जब से यह काग़ज़ का नोट चला है तब से हम लोग मिटते जा रहे हैं. जब हम चीज़ों की अदला बदली कर लेते थे तब हमारा घर भरा रहता था. यह काग़ज़ का नोट बार बार गिरता रहता है और धोका देता रहता है. बाहर यह पैसे का चलन टूटे तो हम लोगों की जान बचे." मेरी अपनी राय है कि गांव में सब मज़दूरी पैसे की जगह चीज़ों के रूप में ही ली दी जाय तो गांव वालों को ज़ियादा सुविधा हो और उनका अधिक भला हो.

6. एक अनुभवी गांव वाले ने मुझसे कहा:—"आज-कल के आदमी हड्डी चचोर कुत्ते की तरह सूखी हड्डी चचोर कर अपने ही दांतों के ख़ून का सवाद लेते रहते हैं, आपस में उन्नीस अपने भाई का ख़ून चूस कर उसकी और अपनी दोनों की गिरी हुई हालत को भुलाए रहते हैं. दूसरे के असगुन के लिये अपनी नाक काटते फिरते हैं."

7. सब जगह इस बात की बड़ी शिकायत है कि किसी के पास ज़रूरत से कम ज़मीन है और किसी के पास बहुत ज़ियादा. फिर भी लोग सामूहिक खेती के बन्धन

سب جگہ لوگ انہیں پریم کے ساتھ کھانے کو بھوجن اور رہنے کو ٹھکانہ بھی دے دیتے تھے .

2. انہوں نے دیکھا کہ گاؤں کے عام لوگ سب جگہ کانگریس اور سرکار دونوں سے بہت اسنتشٹ ہیں. کانگریس کے نام تک سے لوگ چڑھتے ہیں' پر جب اُن سے کہا جاتا ہے کہ گاندھی جی کا کوئی آدمی اُن سے ملنے آیا ہے تو اُس سے پریم کے ساتھ ملتے ہیں' اپنا سب دُکھڑا اُس سے کہتے ہیں' اور اُس کی بات دھیان سے سنتے ہیں .

3. اِس علاقے کے میں جن حصوں میں نہر گئی ہے اُن لوگ کھروچو فصلیں ہی ادھک بوتے ہیں' یعنی مونگ پھلی' تمباکو اور نئے بناوٹی ایکھ جیسی چیزیں جو زمین سے زیادہ سے زیادہ طاقت کھینچ لیتی ہیں . اِس سے زمین کی طاقت گھٹتی جا رہی ہے . نہر کی زمین سے ارہر' سرسوں' دیسی ایکھ' کپاس' جیسی کام کی چیزیں نہیں لی جاتیں. نہری علاقوں میں کام کی چیزوں کو پیدا کرنے کی شکتی بھی گھٹتی جا رہی ہے . جوار جہاں پہلے پچیس من فی بیگھا ہوتی تھی وہاں اب گھٹتے گھٹتے کہیں کہیں پانچ من فی بیگھا رہ گئی ہے . ایسا معلوم ہوتا ہے کہ نہروں سے باہری تجارت اور لوٹ پاٹ کا کام ہی لیا جاتا ہے' گاؤں کی اصلی اور ٹکاؤ بھلائی کا نہیں .

4. پیسوں کے لوبھ میں اور غریبی کے کارن گاؤں والے اپنی گائے بھینسوں کا دودھ باہر بھیج دیتے ہیں اور اپنے بچوں' بوڑھوں اور بیماروں تک کو دودھ نہیں دے پاتے' جس سے اُن کی تندرستی بگڑتی جا رہی ہے .

5. ایک گاؤں میں لگ بھگ نوے برس کے ایک بوڑھے بے پڑھے آدمی نے مجھ سے کہا—"جب سے یہ کاغذ کا نوٹ چلا ہے تب سے ہم لوگ مٹتے جا رہے ہیں . جب ہم چیزوں کی ادلا بدلی کر لیتے تھے تب ہمارا گھر بھرا رہتا تھا . یہ کاغذ کا نوٹ بار بار گرتا رہتا ہے اور دھوکا دیتا رہتا ہے . باہر یہ پیسے کا چلن ٹوٹے تو ہم لوگوں کی جان بچے ." میری اپنی رائے ہے کہ گاؤں میں سب مزدوری پیسے کی جگہ چیزوں کے روپ میں ہی لی دی جائے تو گاؤں والوں کو زیادہ سوودھا ہو اور اُن کا ادھک بھلا ہو .

6. ایک انوبھوی گاؤں والے نے اُن سے کہا:—"آج کل کے آدمی ہڈی چچوڑ کتے کی طرح سوکھی ہڈی چچوڑ کر اپنے ہی دانتوں کے خون کا سواد لیتے رہتے ہیں' آپ سے آنیس اپنے بھائی کا خون چوس کر اُس کی اور اپنی دونوں کی گری ہوئی حالت کو بھلائے رہتے ہیں . دوسرے کے اشگن کے لئے اپنی ناک کاٹتے پھرتے ہیں".

7. سب جگہ اِس بات کی بڑی شکایت ہے کہ کسی کے پاس ضرورت سے کم زمین ہے اور کسی کے پاس بہت زیادہ . پھر بھی لوگ ساموہک کھیتی کے بندھن

हमारे गांव—एक झलक

(किशनचन्द दुबे)

[वरधा ज़िले में सेलडोह नाम का एक गांव है. ग्राम उद्योग संघ वरधा के मंत्री डाक्टर जे. सी कुमारप्पा ने हाल में वहां एक आश्रम खोला है जिसका नाम है "पन्ने आश्रम सेलडोह". 'पन्ने' शब्द तामिल भाषा का है जिसका अर्थ है संस्कृति या कलचर. वहां कई सौ एकड़ ज़मीन लेकर उसमें लोगों को बसाकर और खेती बाड़ी करके डाक्टर कुमारप्पा यह दिखाना चाहते हैं कि गांधी जी के सिद्धान्तों के अनुसार गांव वालों की आदर्श ज़िन्दगी कैसी होनी चाहिये. ज़मीन ख़रीदने में जो रुपया लगा और शुरू में मकान बनाने, और बैल वग़ैरा ख़रीदने में जो रुपया लगेगा, उसके अलावा डाक्टर कुमारप्पा आश्रम और आश्रम वासियों के माहवारी ख़र्च के लिए, या आगे काम बढ़ाने के लिए, एक पैसा या कोई चीज़ बाहर से नहीं ले रहे हैं. डाक्टर कुमारप्पा ने ऐसी ज़मीन भी कोई नहीं ख़रीदी जो किसी किसान की जोत में रही हो और जिससे किसी को निकालना पड़े. उन्होंने सब ज़मीन परती की ली है. पन्ने आश्रम की रचना एक स्वावलम्बी ढंग से हो रही है. अपने ढंग का वह एक नया तजुरबा है.

हाल में पन्ने आश्रम के एक कार्यकर्ता श्री किशनचन्द दुबे देश के कुछ गांव की हालत देखने गए. इस के लिए उन्होंने यू. पी. के उन्नाव ज़िले को चुना. ग्यारह दिन में वे इक्कीस गांव गए, अकेले पैदल बिना एक पैसा या खाने का कोई सामान साथ लिये, नंगे पैर, नंगे बदन, कंधे पर खद्दर की एक मोटी चादर डाले, हाथ में एक झोला लिये जिस में एक फ़ालतू धोती, एक अंगोछा, लोटा डोर, कुछ काग़ज़ और एक पेंसिल थी. उन गांवों में उन्हें कोई पहले से नहीं जानता था, न उन्होंने किसी को किसी तरह की पहले से सूचना दी थी. हर गांव में जाते थे, जो लोग मिलते थे उनसे बातें करते थे, जो कोई खाना दे देता था खा लेते थे, और जहां जगह मिल जाती थी लेट रहते थे. इस तरह ग्यारह दिन की यात्रा में हर गांव की हालत ख़ुद देखने के साथ साथ उन्होंने किसानों और मज़दूरी पेशा लोगों के अलावा गांव पंचायतों के लोगों, सरपंचों, गांव सभापति, ज़मींदारों और कांग्रेसी कारकर्ताओं से भी काफ़ी बातें कीं. अपने सफ़र के कुछ तजुरबे उन्होंने 'नया हिन्द' को लिख कर भेजे हैं जिनका निचोड़ हम नीचे दे रहे हैं.

—एडीटर]

1. हर गांव में थोड़ी देर के अन्दर ही कम से कम दस बीस आदमी उनकी बातें सुनने के लिये जमा हो जाते थे.

ہمارے گاؤں—ایک جھلک

(کشن چند دوبے)

[وردھا ضلعے میں سیلڈوہ نام کا ایک گاؤں ہے . گرام ادیوگ سنگھ وردھا کے منتری ڈاکٹر جے . سی . کمارپپا نے حال میں وہاں ایک آشرم کھولا ہے جس کا نام ہے "پنّے آشرم سیلڈوہ". 'پنّے' شبد تامل بھاشا کا ہے جس کا ارتھ ہے سنسکرتی یا کلچر . وہاں کئی سو ایکڑ زمین لے کر اُس میں لوگوں کو بسا کر اور کھیتی باڑی کرکے ڈاکٹر کمارپپا یہ دکھانا چاہتے ہیں کہ گاندھی جی کے سدھانتوں کے انوسار گاؤں والوں کی آدرش زندگی کیسی ہونی چاہئے . زمین خریدنے میں جو روپیہ لگا اور شروع میں مکان بنانے' اور بیل وغیرہ خریدنے میں جو روپیہ لگیگا' اُس کے علاوہ ڈاکٹر کمارپپا آشرم اور آشرم واسیوں کے ماہواری خرچ کے لئے' یا آگے کام بڑھانے کے لئے' ایک پیسہ یا کوئی چیز باہر سے نہیں لے رہے ہیں . ڈاکٹر کمارپپا نے ایسی زمین بھی کوئی نہیں خریدی جو کسی کسان کی جوت میں رہی ہو اور جس سے کسی کو نکالنا پڑے . اُنہوں نے سب زمین پرتی کی لی ہے . پنّے آشرم کی رچنا ایک سواولمبی ڈھنگ سے ہو رہی ہے . اپنے ڈھنگ کا وہ ایک نیا تجربہ ہے .

حال میں پنّے آشرم کے ایک کار کرتا شری کشن چند دوبے دیش کے کچھ گاؤں کی حالت دیکھنے گئے . اس کے لئے اُنہوں نے یو . پی . کے اُناؤ ضلعے کو چنا . گیارہ دن میں وہ اکیس گاؤں گئے' اکیلے پیدل' بنا ایک پیسہ یا کھانے کا کوئی سامان ساتھ لئے' ننگے پیر' ننگے بدن' کندھے پر کھدر کی ایک موٹی چادر ڈالے' ہاتھ میں ایک جھولا لئے جس میں ایک فالتو دھوتی' ایک انگوچھا' لوٹا ڈور' کچھ کاغذ اور ایک پینسل تھی . اُن گاؤں میں اُنہیں کوئی پہلے سے نہیں جانتا تھا' نہ اُنہوں نے کسی کو کسی طرح کی پہلے سے سوچنا دی تھی . ہر گاؤں میں جاتے تھے' جو لوگ ملتے تھے اُن سے باتیں کرتے تھے' جو کوئی کھانا دے دیتا تھا کھا لیتے تھے اور جہاں جگہ مل جاتی تھی لیٹ رہتے تھے . اِس طرح گیارہ دن کی یاترا میں ہر گاؤں کی حالت خود دیکھنے کے ساتھ اُنہوں نے کسانوں اور مزدوری پیشہ لوگوں کے علاوہ گاؤں پنچایتوں کے لوگوں' سرپنچوں' گاؤں سبھا پتی' زمینداروں اور کانگریسی کارکرتاؤں سے بھی کافی باتیں کیں . اپنے سفر کے کچھ تجربے اُنہوں نے 'نیا ہند' کو لکھ کر بھیجے ہیں جن کا نچوڑ ہم نیچے دے رہے ہیں—ایڈیٹر]

1. ہر گاؤں میں تھوڑی دیر کے اندر ہی کم سے کم دس بیس آدمی اُن کی باتیں سننے کے لئے جمع ہو جاتے تھے.

68 फ़ी सदी यानी क़रीब 33 लाख एकड़ ज़मीन एक लाख 25 हज़ार ज़मींदारों की मिल्कियत में थी जो ख़ुद खेती नहीं करते थे और केवल बत्तीस फ़ी सदी छोटे किसानों की मिल्कियत में थी जिनकी तादाद क़रीब आठ लाख थी. क़रीब तीन लाख किसान ऐसे थे जो किसी ज़मीन के मालिक नहीं थे और सिर्फ़ दूसरों की ज़मीन पर मज़दूरी करते थे. इन आंकड़ों से पता चलता है कि निट्ठल्ले ज़मींदारों की मिल्कियत में कितनी ज़ियादा ज़मीन थी और जो लोग अपना पसीना बहाकर ज़मीन पर मेहनत करते हैं उनकी मिल्कियत में कितनी कम थी. चार सौ बहत्तर बड़े बड़े ज़मींदारों के पास मिला कर एक लाख 45 हज़ार एकड़ ज़मीन थी. एक हज़ार आठ सौ छियासी ज़मींदारों के पास मिला कर एक लाख चालीस हज़ार सात सौ साठ एकड़ ज़मीन थी क़रीब नौ हज़ार ज़मींदार ऐसे थे जिनमें से हर एक के पास पौने तेइस एकड़ से ज़ियादा ज़मीन थी और जिनकी कुल ज़मीनें मिला कर छै लाख तिरसठ हज़ार एकड़ होती थीं. इसमें से चार लाख बासठ हज़ार एकड़ ज़मीन नए क़ानून के मुताबिक़ जोतने वालों की मिल्कियत में दे दी गई या दे दी जा रही है. जून सन 1952 तक क़रीब एक लाख चालीस हज़ार एकड़ ज़मीन एक लाख पच्चीस हज़ार दो सौ छप्पन किसानों को दी जा चुकी है, जो अब अपनी अपनी ज़मीन के मालिक हैं. उनके घर वालों की तादाद मिला कर साढ़े चार लाख होती है. इसी अरसे के अन्दर पचास हज़ार एकड़ ज़मीन रियासत की मिल्कियत में आई. नए क़ानून के मुताबिक़ इन्द्राज रियासत भर में तेज़ी के साथ पूरा किया जा रहा है.

किसानों का गीत

यह धरती, यह जीवन सागर, यह संसार हमारा है,
अमृत बादल बनके उठे हैं पर्वत से टकरायेंगे.
खेतों की हरियाली बन कर छबि अपनी दिखलायेंगे,
दुनिया का दुख सुख अपना कर दुनिया पर छा जायंगे.
हम ख़ुद ही तक़दीर हैं अपनी अब अपना ही सहारा है,
यह धरती, यह जीवन सागर, यह संसार हमारा है.

—मसऊद अख़्तर 'जमाल'

---

68 فیصدی یعنی قریب 33 لاکھ ایکڑ زمین ایک لاکھ 25 ہزار زمینداروں کی ملکیت میں تھی ۔ جو خود کھیتی نہیں کرتے تھے' اور کیول 32 فیصدی چھوٹے کسانوں کی ملکیت میں تھی جن کی تعداد قریب آٹھ لاکھ تھی ۔ قریب تین لاکھ کسان ایسے تھے جو کسی زمین کے مالک نہیں تھے اور صرف دوسروں کی زمین پر مزدوری کرتے تھے ۔ ان آنکڑوں سے پتہ چلتا ہے کہ نکھٹو زمینداروں کی ملکیت میں کتنی زیادہ زمین تھی اور جو لوگ اپنا پسینہ بہا کر زمین پر محنت کرتے ہیں ان کی ملکیت میں کتنی کم تھی ۔ چار سو بہتر بڑے بڑے زمینداروں کے پاس ملا کر ایک لاکھ 45 ہزار ایکڑ زمین تھی ۔ ایک ہزار آٹھ سو چھیاسی زمینداروں کے پاس ملا کر ایک لاکھ چالیس ہزار سات سو ساٹھ ایکڑ زمین تھی ۔ قریب نو ہزار زمیندار ایسے تھے جن میں سے ہر ایک کے پاس پونے تیئس ایکڑ سے زیادہ زمین تھی اور جن کی کل زمینیں ملا کر چھ لاکھ تریسٹھ ہزار ایکڑ ہوتی تھیں ۔ اس میں سے چار لاکھ باسٹھ ہزار ایکڑ زمین نئے قانون کے مطابق جوتنے والوں کی ملکیت میں دے دی گئی یا دے دی جا رہی ہے ۔ جون سن 1952 تک قریب ایک لاکھ چالیس ہزار ایکڑ زمین ایک لاکھ پچیس ہزار دو سو چھپن کسانوں کو دی جا چکی ہے' جو اب اپنی اپنی زمین کے مالک ہیں ۔ ان کے گھر والوں کی تعداد ملا کر ساڑھے چار لاکھ ہوتی ہے ۔ اسی عرصے کے اندر پچاس ہزار ایکڑ زمین ریاست کی ملکیت میں آئی ۔ نئے قانون کے مطابق اندراج ریاست بھر میں تیزی کے ساتھ پورا کیا جا رہا ہے ۔

کسانوں کا گیت

یہ دھرتی' یہ جیون ساگر' یہ سنسار ہمارا ہے'
امرت بادل بن کے اٹھے ہیں پربت سے ٹکرائیں گے۔
کھیتوں کی ہریالی بن کر چھبی اپنی دکھلائیں گے'
دنیا کا دکھ سکھ اپنا کر دنیا پر چھا جائیں گے۔
ہم خود ہی تقدیر ہیں اپنی اب اپنا ہی سہارا ہے'
یہ دھرتی' یہ جیون ساگر' یہ سنسار ہمارا ہے۔

—مسعود اختر 'جمال'

जिन ज़मींदारों के पास सिर्फ़ दो एकड़ ज़मीन से ले कर बारह एकड़ ज़मीन तक ख़ुदकाश्त ज़मीन है वह उस ज़मीन को किसी दूसरे के नाम नहीं कर सकते और सब सूरतों में ज़मीन की मिल्कियत या उसमें कोई हक़ सरकार से पहले से इजाज़त ले कर किसी दूसरे के नाम किया जा सकता है लेकिन बग़ैर सरकार की इजाज़त के नहीं. किसी वक़्त भी कोई ज़मींदार पौने 23 एकड़ से ज़ियादा ज़मीन का मालिक नहीं हो सकता. और कोई किसान 20 एकड़ से ज़ियादा ज़मीन अपने पास नहीं रख सकता. अगर किसी इलाक़े के किसी रिवाज के मुताबिक़ या उस वक़्त के किसी क़ानून के मुताबिक़ किसी के पास पौने 23 एकड़ या 20 एकड़ से ज़ियादा ज़मीन आ गई हो तो उतनी ज़ियादा ज़मीन ज़ब्त समझी जायेगी. यहां ज़मीन में जंगल की ज़मीनें और परती ज़मीनें शामिल हैं. लेकिन जिस ज़मीन के ऊपर किसी गांव में या शहर में कोई मकान बना हुआ हो या जो ज़मीन किसी ऐसे मकान वग़ैरा से सम्बन्ध रखती हो वह शामिल नहीं है.

हम यह ऊपर दिखा चुके हैं कि ज़मीन के बिचौलियों को ख़तम कर देने का हमारा यह मतलब नहीं था कि ज़मींदारों से उन सब की ज़मीनें छीन ली जायं हर ज़मींदार के पास अपने बाग़ीचों, ईंधन और घास के मैदानों के अलावा इतनी काश्त की ज़मीन रहे जिससे उसका और उसके घर वालों का अच्छी तरह गुज़ारा हो सके. नए क़ानून का मतलब सिर्फ़ यह है कि एक ख़ास हद से ज़ियादा ज़मीन किसी के पास न हो और निट्ठल्ले रह कर कोई दूसरों की मेहनत पर ऐश न करे.

यह सवाल कि जो ज़मीनें ज़मींदारों से छीनी गई हैं उनका कोई मुआविज़ा उन्हें दिया जाय या न दिया जाय हमने रियासत की कान्सटीटुएन्ट ऐसेम्बली के फ़ैसले पर छोड़ दिया. इसके बाद हमारे यहां की कान्स्टीटुएन्ट ऐसेम्बली एक राय से यह फ़ैसला कर चुकी है कि जो ज़मीनें ज़मींदारों से ले ली गई हैं उनका उन्हें कोई मुआविज़ा नहीं दिया जाय. फिर भी जिस दिन ऐसेम्बली ने यह फ़ैसला किया उस दिन तक रियासत की सरकार पुराने ज़मींदारों को सालाना रक़में या पेन्शनें देती रही. पहले साल के लिये उस ज़मीन की मालगुज़ारी का तीन चौथाई और दूसरे साल या साल के हिस्से के लिये मालगुज़ारी का दो तिहाई सब ज़मींदारों को दिया गया. लेकिन किसी सूरत में भी यह सालाना रक़म 3000 रुपए से ज़ियादा किसी को नहीं दी गई.

जम्मू और कश्मीर रियासत ने चौरानबे हज़ार चार सौ इकहत्तर मुरब्बा मील के अन्दर नौ हज़ार गांव हैं. इन नौ हज़ार गांवों की नब्बे फ़ी सदी आबादी खेती से अपनी रोज़ी चलाती है. खेती की कुल ज़मीन का

جن زمینداروں کے پاس صرف دو ایکڑ زمین سے لیکر بارہ ایکڑ زمین تک خود کاشت زمین ہے وہ اس زمین کو کسی دوسرے کے نام نہیں کر سکتے اور سب صورتوں میں زمین کی ملکیت یا اسمیں کوئی حق سرکار سے پہلے اجازت لےکر کسی دوسرے کے نام کیا جا سکتا ہے لیکن بغیر سرکار کی اجازت کے نہیں. کسی وقت بھی کوئی زمیندار پونے 23 ایکڑ سے زیادہ زمین کا مالک نہیں ہو سکتا اور کوئی کسان بیس ایکڑ سے زیادہ زمین اپنے پاس نہیں رکھ سکتا. اگر کسی علاقے کے کسی رواج کے مطابق یا اس وقت کے کسی قانون کے مطابق کسی کے پاس پونے 23 ایکڑ یا 20 ایکڑ سے زیادہ زمین آ گئی ہو تو اتنی زیادہ زمین ضبط سمجھی جاوے گی. یہاں زمین میں جنگل کی زمینیں اور پرتی زمینیں شامل ہیں. لیکن جس زمین کے اوپر کسی گاؤں میں یا شہر میں کوئی مکان بنا ہوا ہو یا جو زمین کسی ایسے مکان وغیرہ سے سمبندھ رکھتی ہو وہ شامل نہیں ہے.

ہم یہ اوپر دکھا چکے ہیں کہ زمین کے بچولیوں کو ختم کر دینے کا ہمارا یہ مطلب نہیں تھا کہ زمینداروں سے ان سب کی زمینیں چھین لی جائیں. ہر زمیندار کے پاس اپنے باغیچوں، ایندھن اور گھاس کے میدانوں کے علاوہ اتنی کاشت کی زمین رہے جس سے اس کا اور اس کے گھر والوں کا اچھی طرح گذارہ ہو سکے. نئے قانون کا مطلب صرف یہ ہے کہ ایک خاص حد سے زیادہ زمین کسی کے پاس نہ ہو اور نکھٹو رہ کر کوئی دوسروں کی محنت پر عیش نہ کرے.

یہ سوال کہ جو زمینیں زمینداروں سے چھینی گئی ہیں ان کا کوئی معاوضہ انہیں دیا جائے یا نہ دیا جائے ہم نے ریاست کی کانسٹی ٹوایشنٹ اسمبلی کے فیصلے پر چھوڑ دیا. اس کے بعد ہمارے یہاں کی کانسٹی ٹوایشنٹ اسمبلی ایک رائے سے یہ فیصلہ کر چکی ہے کہ جو زمینیں زمینداروں سے لے لی گئی ہیں ان کا انہیں کوئی معاوضہ نہیں دیا جائے. پھر بھی جس دن اسمبلی نے یہ فیصلہ کیا اس دن تک ریاست کی سرکار پرانے زمینداروں کو سالانہ رقمیں یا پنشنیں دیتی رہی. پہلے سال کے لئے اس زمین کی مالگذاری کا تین چوتھائی اور دوسرے سال یا سال کے حصے کے لئے مالگذاری کا دو تہائی سب زمینداروں کو دیا گیا. لیکن کسی صورت میں بھی یہ سالانہ رقم 3000 روپئے سے زیادہ کسی کو نہیں دی گئی.

جمو اور کشمیر ریاست میں چورانوے ہزار چار سو اکہتر مربع میل کے اندر نو ہزار گاؤں ہیں. ان نو ہزار گاؤں کی نوے فی صدی آبادی کھیتی سے اپنی روزی چلاتی ہے. کھیتی کی کل زمین کا

ज़मीन का मालिक बना दिया गया. जो मालगुज़ारी वग़ैरा उस वक़्त ज़मींदार से ली जाती थी वही अब किसान से ली जायगी और इसके अलावा रुपए में चार आने के हिसाब से उसे एक ख़ास टैक्स (स्पेशल लैन्ड डेवलपमेन्ट सेस) और देना होगा. इस टैक्स की सारी आमदनी उस किसान की ज़मीन को बेहतर बनाने और उसे खेती में मदद देने के काम में ख़र्च की जायगी.

वह सब ज़मीनें जिन पर से ज़मींदार का हक़ तो ख़तम हो गया लेकिन जो किसी भी किसान की काश्त में नहीं थीं रियासत की मिल्कियत समझी गईं और वह सब इस तरह के खेती मज़दूरों में बांट दी गईं जिनकी अपनी कोई ज़मीन नहीं थी और जो सिर्फ़ दूसरों के लिये मज़दूरी करते थे. इस तरह हमारे यहां अब कोई बेज़मीन किसान नहीं रह गया. नया क़ानून उन ज़मीनों पर भी लागू होता है जो शरनार्थियों या पनाहगुज़ीनों के क़ब्ज़े में थीं या जो दुश्मन के एजेन्टों के हाथों में थीं और जिन्हें रियासत ने ज़ब्त कर लिया. इससे पहले ज़मींदार को जितने हक़ या अधिकार अपनी ज़मीन पर हासिल थे जिसमें दरख़्त, कुएं, तालाब, जूहड़, नहरें और रास्ते सब शामिल हैं वह सब अब नए मालिक यानी असल जोतने वाले किसान को मिल गए. लेकिन अगर इन पर ज़मींदार ने कोई क़र्ज़ा ले रक्खा था तो नए मालिक का उस क़र्ज़े से कोई सम्बन्ध नहीं. ज़मीन के ऊपर नए मालिक के हक़ को किसी दीवानी या रेविन्यू अदालत की किसी डिग्री या किसी हुक्म के अमल दरआमद में न क़ुर्क़ किया जा सकता है और न दूसरे को बेचा जा सकता है. अगर वह ज़मीन किसी दूसरे को दे दी गई थी तो वह देना दिलाना भी रद्द ठहरा दिया गया.

जिन ज़मींदारों को पहले से यह मालूम था कि उनकी ज़मीनें छिनने वाली हैं उनमें से कुछ नए आने वाले क़ानून का पहले से मुक़ाबला करने के लिये किसान और सरकार दोनों को चकमा देने के लिये तरह तरह से ज़मीनों को दूसरों के नाम कर दिया था और अदालतों से दूसरे लोगों के हक़ में मिल्कियत के हुक्मनामे और डिग्रियां भी हासिल कर ली थीं. इस शरारत का मुक़ाबला करने के लिये नए क़ानून में यह बात भी शामिल कर दी गई कि शुरू बैसाख सन 2005 यानी 13 अप्रैल सन 1947 के बाद किसी अदालत ने भी अगर कोई हुक्म इस तरह का दिया हो या डिग्री जारी की हो जिससे कोई ज़मीन किसी दूसरे के नाम कर दी गई हो या किसी दूसरे को ज़मीन का क़ब्ज़ा दिला दिया हो तो अगर यह पता चलेगा कि इस तरह का ज़मीन का तबादला आने वाले क़ानून के मतलब को रद्द करने के लिये किया गया है तो उस तबादले, उस हुक्म या डिग्री को रद्द समझा जायगा.

زمین کا مالک بنا دیا گیا . جو مالگذاری وغیرہ اُس وقت زمیندار سے لی جاتی تھی وہی اب کسان سے لی جائیگی اور اِس کے علاوہ روپئے میں چار آنے کے حساب سے اُسے ایک خاص ٹیکس (اسپیشل لینڈ ڈیولپمنٹ سیس) اور دینا ہوگا . اِس ٹیکس کی ساری آمدنی اُس کسان کی زمین کو بہتر بنانے اور اُسے کھیتی میں مدد دینے کے کام میں خرچ کی جائیگی .

وہ سب زمینیں جن پر سے زمیندار کا حق تو ختم ہوگیا لیکن جو کسی بھی کسان کی کاشت میں نہیں تھیں ریاست کی ملکیت سمجھی گئیں اور وہ سب اس طرح کے کھیتی مزدوروں میں بانٹ دی گئیں جن کی اپنی کوئی زمین نہیں تھی اور جو صرف دوسروں کے لئے مزدوری کرتے تھے . اس طرح ہمارے یہاں اب کوئی بے زمین کسان نہیں رہ گیا . نیا قانون اُن زمینوں پر بھی لاگو ہوتا ہے جو شرنارتھیوں یا پناہ گزینوں کے قبضے میں تھیں یا جو دشمن کے ایجنٹوں کے ہاتھوں میں تھیں اور جنھیں ریاست نے ضبط کر لیا . اس سے پہلے زمیندار کو جتنے حق یا ادھیکار اپنی زمین پر حاصل تھے جس میں درخت، کنوئیں، تالاب، جوہڑ نہریں اور راستے سب شامل ہیں وہ سب اب نئے مالک یعنی اصل جوتنے والے کسان کو مل گئے . لیکن اگر اُن پر زمیندار نے کوئی قرضہ لے رکھا تھا تو نئے مالک کا اُس قرضے سے کوئی سمبندھ نہیں . زمین کے اوپر نئے مالک کے حق کو کسی دیوانی یا ریونیو عدالت کی کسی ڈگری یا کسی حکم کے عمل درآمد میں نہ قرق کیا جا سکتا ہے اور نہ دوسرے کو بیچا جا سکتا ہے . اگر وہ زمین کسی دوسرے کو دے دی گئی تھی تو وہ دینا دلانا بھی رد ٹھہرا دیا گیا .

جن زمینداروں کو پہلے سے یہ معلوم تھا کہ اُن کی زمینیں چھننے والی ہیں اُن میں سے کچھ نئے آنے والے قانون کا پہلے سے مقابلہ کرنے کے لئے کسان اور سرکار دونوں کو چکمہ دینے کے لئے طرح طرح سے زمینوں کو دوسروں کے نام کر دیا تھا اور عدالتوں سے دوسرے لوگوں کے حق میں ملکیت کے حکم نامے اور ڈگریاں بھی حاصل کر لی تھیں . اِس شرارت کا مقابلہ کرنے کے لئے نئے قانون میں بات بھی شامل کر دی گئی کہ شروع بیساکھ سن 2005 یعنی 13 اپریل سن 1947 کے بعد کسی عدالت نے بھی اگر کوئی حکم اس طرح کا دیا ہو یا ڈگری جاری کی ہو جس سے کوئی زمین کسی دوسرے کے نام کر دی گئی ہو یا کسی دوسرے کو زمین کا قبضہ دلا دیا گیا ہو تو اگر یہ پتہ چلے گا کہ اس طرح کا زمین کا تبادلہ آنے والے قانون کے مطلب کو رد کرنے کے لئے کیا گیا ہے تو اس تبادلے، اُس حکم یا اُس ڈگری کو رد سمجھا جائیگا .

मुलाज़िमों के साथ साज़ बाज़ करके इस तरह की ज़मीनों को भी जो दूसरे किसानों के काश्त में होती थीं अपनी ख़ुद काश्त लिखा लेते थे. इस ज़ुल्म से किसान को बचाने के लिये नए क़ानू में यह बात शामिल कर दी गई कि अगर किसी भी पटवारी के काग़ज़ या सरकारी काग़ज़ में किसी ज़मींदार की ख़ुद काश्त ज़मीन साढ़े बारह एकड़ से ज़ियादा लिखी हुई होगी तो उस इन्दराज को ग़लत माना जायगा.

पिछले पन्द्रह बरस के अन्दर बड़े बड़े ज़मींदारों के ज़ुल्म और ज़मीनों पर उनके क़ब्ज़े बढ़ते जा रहे थे. यहां तक कि बहुत सी ऐसी ज़मीनों पर भी जो 'शामिलात' कहलाती थीं और जो सारे गांव की मिल्कियत मानी जाती थीं बड़े बड़े ज़मींदारों ने क़ब्ज़ा कर लिया था और कहीं कहीं तो बाहर के ऐसे लोगों के हाथ उन्हें बेच दिया था या रहन रख दिया था जिनका इस ज़मीन से कोई सम्बन्ध नहीं था और न जिन का उस पर कोई हक़ था. लाचार और ग़रीब किसान कुछ न कर सकते थे और अगर उन में से कोई कुछ हाथ पैर मारता भी था तो कचहरियों के तरीक़े और क़ानून की पेचीदगियों उन के रास्ते में दीवार बन कर खड़ी हो जाती थीं. सरकार ने पुराने क़ानून को बदल कर 'शामिलात' ज़मीनों की इस तबाही को भी ख़तम कर दिया.

13 जुलाई सन 1950 हमारे शहीदों के दिन की उन्नीसवीं साल गिरह थी. उस दिन सरकार ने यह तारीख़ी फ़ैसला कर दिया कि जो जिस ज़मीन को जोते वही उस ज़मीन का मालिक और उसी के नाम ज़मीन की मिल्कियत का इन्दराज होना चाहिये. 17 अक्तूबर सन 1950 को बड़ी ज़मींदारी अन्त क़ानून (बिग लैन्डेड स्टेट्स अबालिशन ऐक्ट) पास हुआ जिसे किसानों का मैगनाचार्टा यानी महान अधिकार पत्र कहा जा सकता है. इस क़ानून ने रियासत के ज़मीन के इन्तज़ाम में एक ज़बरदस्त इन्क़लाब पैदा कर दिया है. यह एक बहुत बड़ा तजुरबा है. इस में गांव की सारी ज़िन्दगी को समाजी बराबरी और माली इन्साफ़ की नई बुनियादों पर खड़ा करने की कोशिश की जा रही है.

इस नए क़ानून के मुताबिक़ हर ज़मींदार को अपने बाग़ीचों, घास के मैदानों और ईंधन के ज़रूरी जंगलों के अलावा सिर्फ़ पौने तेइस एकड़ तक ज़मीन अपने पास रखने का हक़ है. जिस किसी के पास इस से ज़ियादा ज़मीन है उसका बाक़ी सब ज़मीन पर से हक़ मिल्कियत ख़तम कर दिया गया है और वह सब ज़मीन उन किसानों की मिल्कियत क़रार दे दी गई जो उसे जोतते हैं. इसके लिये ख़रीफ़ सन 2007 यानी सितम्बर-अक्तूबर सन 1950 कीकाश्त को ठीक मान लिया गया. ख़रीफ़ सत 2007 में जो किसान जितनी ज़मीन को जोतता था वही अब हमेशा के लिये उस

ملازموں کے ساتھ ساز باز کرکے اِس طرح کی زمینوں کو بھی جو دوسرے کسانوں کے کاشت میں ہوتی تھیں اپنی خود کاشت لکھا لیتے تھے ۔ اس ظلم سے کسان کو بچانے کے لئے نئے قانون میں یہ بات شامل کر دی گئی کہ اگر کسی بھی پٹواری کے کاغذ یا سرکاری کاغذ میں کسی زمیندار کی خودکاشت زمین ساڑھے بارہ ایکڑ سے زیادہ لکھی ہوئی ہوگی تو اُس اِندراج کو غلط مانا جائیگا ۔

پچھلے پندرہ برس کے اندر بڑے بڑے زمینداروں کے ظلم اور زمینوں پر اُن کے قبضے بڑھتے جا رہے تھے ۔ یہاں تک کہ بہت سی ایسی زمینوں پر بھی جو 'شاملات' کہلاتی تھیں اور جو سارے گاؤں کی ملکیت مانی جاتی تھیں بڑے بڑے زمینداروں نے قبضہ کر لیا تھا اور کہیں کہیں تو باہر کے ایسے لوگوں کے ہاتھ اُنہیں بیچ دیا تھا یا رہن رکھ دیا تھا جن کا اُس زمین سے کوئی سمبندھ نہیں تھا اور نہ جن کا اُس پر کوئی حق تھا ۔ لاچار اور غریب کسان کچھ نہ کرسکتے تھے اور اگر اُن میں سے کوئی کچھ ہاتھ پیر مارتا بھی تھا تو کچہریوں کے طریقے اور قانون کی پیچیدگیاں اُن کے راستے میں دیوار بن کر کھڑی ہو جاتی تھیں ۔ سرکار نے پرانے قانون کو بدل کر 'شاملات' زمینوں کی اس تباہی کو بھی ختم کر دیا ۔

13 جولائی سن 1950 ہمارے شہیدوں کے دن کی اُنیسویں سالگرہ تھی۔ اُس دن سرکار نے یہ تاریخی فیصلہ کردیا کہ جو جس زمین کو جوتے وہی اُس زمین کا مالک اور اُسی کے نام زمین کی ملکیت کا اِندراج ہونا چاہئیے ۔ 17 اکتوبر سن 1950 کو بڑی زمینداری انت قانون (بگ لینڈڈ اسٹیٹس ایبالیشن ایکٹ) پاس ہوا جسے کسانوں کا میگناچارٹا یعنی• مہان ادھیکار پتر کہا جا سکتا ہے ۔ اِس قانون نے ریاست کے زمین کے اِنتظام میں ایک زبردست انقلاب پیدا کردیا ہے ۔ یہ ایک بہت بڑا تجربہ ہے ۔ اِس میں گاؤں کی ساری زندگی کو سماجی برابری اور مالی اِنصاف کی نئی بنیادوں پر کھڑا کرنے کی کوشش کی جا رہی ہے ۔

اِس نئے قانون کے مطابق ہر زمیندار کو اپنے باغیچوں' گھاس کے میدانوں اور ایندھن کے ضروری جنگلوں کے علاوہ صرف پونے تیئس ایکڑ تک زمین اپنے پاس رکھنے کا حق ہے. جس کسی کے پاس اِس سے زیادہ زمین ہے اُس کا باقی سب زمین پر سے حق ملکیت ختم کر دیا گیا ہے اور وہ سب زمین اُن کسانوں کی ملکیت قرار دیدی گئی جو اُسے جوتتے ہیں اِس کے لئے خریف سن 2007 یعنی ستمبر اکتوبر سن 1950 کی کاشت کو ٹھیک مان لیا گیا ۔ خریف سن 2007 میں جو کسان جتنی زمین کو جوتتا تھا وہی اب ہمیشہ کے لئے اُس

गई पर जब तक देश के किसानों की माली आज़ादी नहीं मिलती तब तक देश की तरक़्क़ी नामुमकिन है. गवर्नमेन्ट ने फ़ौरन फ़ैसला कर लिया कि ज़मीन का मालिक वही होना चाहिये जो उसे जोते और उस पर काम करे और कोई निठल्ली जमात जो ख़ुद मेहनत न करे और दूसरों की मेहनत के सहारे मौज उड़ावे किसान के सर पर नहीं रहनी चाहिये. यही 'नए कश्मीर' के भूमि सुधार की तजवीज़ थी. इसके ज़रिये से सरकार रियासत के अन्दर खेती के काम को नए और ज़ियादा अच्छे तरीक़े पर चलाने और किसानों के रहन सहन को ऊंचा करने की उम्मीद करती है. हमारी इस तजवीज़ के दो बुनियादी उसूल थे. (1) ज़मींदारी को ख़तम करना (2) जो ज़मीन को जोते उसे ही ज़मीन का मालिक ठहराना. हमने यह भी देख लिया था कि किसान के पास अपनी ज़मीन की पैदावार बढ़ाने के लिये केवल साधनों की ही कमी न थी, उसके पास उत्साह और हिम्मत की भी कमी थी. वह नहीं समझ सकता था कि क्यों और आख़िर किसके लिये मेहनत करे. और फिर एक दूसरे के बाद उस की मेहनत का फल उससे छीनने के लिये निठल्ले लोगों का सिलसिला बंधा हुआ था जैसे जागीरदार, माफ़ीदार, ज़मींदार वग़ैरा.

नई सरकार ने ज़मींदारी ख़तम करने के लिये पहला काम यह किया कि सब जागीरदारियों को ख़तम कर के उन पर क़ब्ज़ा कर लिया. उस के बाद सरकार ने सब माफ़ियों को ख़तम किया और ज़मीन की पैदावार से जिन लोगों की नक़द रक़में बंधी हुई थीं, जिन्हें 'मुक़र्ररी' कहते थे उन्हें भी सरकार ने ख़तम कर दिया. सिर्फ़ वह माफ़ियां और मुक़र्ररियां रहने दी गईं जिनका धार्मिक संस्थाओं के साथ सम्बन्ध था. इसके बाद सरकार ने रियासत के खेती क़ानून (टिनैनसी ला) को बदला. पुराने क़ानून के मुताबिक़ किसान को जब चाहा उसकी ज़मीन से बेदख़ल किया जा सकता था. नए सुधार के ज़रिये यह बेदख़ली बन्द कर दी गई और किसानों को एक तरह का पक्का हक़ अपनी अपनी ज़मीन पर दे दिया गया. किसान के लगान को भी ठीक ठीक मुक़र्रर कर दिया गया. यह तय कर दिया गया कि जिन किसानों के पास साढ़े बारह एकड़ से कम ज़मीन है उनसे असली पैदावार का आधे से ज़ियादा लगान न लिया जावे. और जिन के पास साढ़े बारह एकड़ से ज़ियादा ज़मीन है उनसे सिंचाई की ज़मीनों की सूरत में असल पैदावार का एक चौथाई और ग़ैर सिंचाई की ज़मीनों की सूरत में असल पैदावार का एक तिहाई से ज़ियादा लगान किसी से न लिया जाय.

इससे पहले निठल्ले ज़मींदार एक शरारत और किया करते थे. वह अकसर छोटे सरकारी अफ़सरों और सरकारी

گئی پر جب تک دیش کے کسانوں کو مالی آزادی نہیں ملتی تب تک دیش کی ترقی ناممکن ہے ۔ گورنمنٹ نے فوراً فیصلہ کر لیا کہ زمین کا مالک وہی ہونا چاہئے جو اُسے جوتے اور اُس پر کام کرے اور کوئی نکھٹو جماعت جو خود محنت نہ کرے اور دوسروں کی محنت کے سہارے موج اڑاوے کسان کے سر پر نہیں رہنی چاہئے۔ یہی نئے کشمیر کے بھومی سدھار کی تجویز تھی ۔ اِس کے ذریعے سے سرکار ریاست کے اندر کھیتی کے کام کو نئے اور زیادہ اچھے طریقے پر چلانے اور کسانوں کے رہن سہن کو اونچا کرنے کی اُمید کرتی ہے ۔ ہماری اِس تجویز کے دو بنیادی اصول تھے—(1) زمینداری کو ختم کرنا اور (2) جو زمین کو جوتے اُسے ہی زمین کا مالک ٹھہرانا ۔ ہم نے یہ بھی دیکھ لیا تھا کہ کسان کے پاس اپنی زمین کی پیداوار بڑھانے کے لئے کیول سادھنوں کی ہی کمی نہ تھی' اُس کے پاس اُتساہ اور ہمت کی بھی کمی تھی. وہ نہیں سمجھ سکتا تھا کہ کیوں اور آخر کس کے لئے محنت کرے. اور پھر ایک دوسرے کے بعد اُس کی محنت کا پھل اُس سے چھیننے کے لئے نکھٹو لوگوں کا سلسلہ بندھا ہوا تھا جیسے جاگیردار' معافی دار' زمیندار وغیرہ ۔

نئی سرکار نے زمینداری ختم کرنے کے لئے پہلا کام یہ کیا کہ سب جاگیرداریوں کو ختم کرکے اُن پر قبضہ کرلیا ۔ اُس کے بعد سرکار نے سب معافیوں کو ختم کیا اور زمین کی پیداوار سے جن لوگوں کی نقد رقمیں بندھی ہوئی تھیں جنہیں 'مقرری' کہتے تھے اُنہیں بھی سرکار نے ختم کر دیا ۔ صرف وہ معافیاں اور مقرریاں رہنے دی گئیں جن کا دھارمک سنستھاؤں کے ساتھ سمبندھ تھا. اِس کے بعد سرکار نے ریاست کے کھیتی قانون (ٹینینسی لا) کو بدلا. پرانے قانون کے مطابق کسان کو جب چاہا اُس کی زمین سے بےدخل کیا جاسکتا تھا ۔ نئے سدھار کے ذریعے یہ بےدخلی بند کردی گئی اور کسانوں کو ایک طرح کا پکا حق اپنی اپنی زمین پر دے دیا گیا ۔ کسان کے لگان کو بھی ٹھیک ٹھیک مقرر کر دیا گیا. یہ طے کر دیا گیا کہ جن کسانوں کے پاس ساڑھے بارہ ایکڑ سے کم زمین ہے اُن سے اصلی پیداوار کا آدھے سے زیادہ لگان نہ لیا جاوے اور جن کے پاس ساڑھے بارہ ایکڑ سے زیادہ زمین ہے اُن سے سینچائی کی زمینوں کی صورت میں اصل پیداوار کا ایک چوتھائی اور غیر سینچائی کی زمینوں کی صورت میں اصل پیداوار کا ایک تہائی سے زیادہ لگان کسی سے نہ لیا جائے ۔

اِس سے پہلے نکھٹو زمیندار ایک شرارت اور کیا کرتے تھے ۔ وہ اکثر چھوٹے سرکاری افسروں اور سرکاری

"मानते हैं उस्ताद तुम्हें भी" ठाकुर साहब ने सराहना की.

ज़ख़्मी सुक्खी होश में आने के बाद सोच रहा था—धरती किसकी ?—ज़मींदार की या किसान की—सुक्खी की या दुक्खी की.

रात को गांव के सारे किसानों की पंचायत हुई. दुक्खी और सुक्खी गले मिले. सुक्खी ने अपना तजुरबा बताया और सब ने मिल कर क़सम खाई कि वह कभी लालच में नहीं फंसेंगे, आपस में कभी नहीं लड़ेंगे, अपना संगठन करेंगे, एक ताक़त बनेंगे, ज़ुल्म के सामने एक चट्टान बन जायंगे !

—मुजीब रिज़वी

''مانتے ہیں اُستاد تمہیں بھی'' ٹھاکر صاحب نے سراہنا کی .

زخمی سکھی ہوش میں آنے کے بعد سوچ رہا تھا—دھرتی کس کی ؟—زمیندار کی یا کسان کی—سکھی کی یا دکھی کی .

رات کو گاؤں کے سارے کسانوں کی پنچایت ہوئی . دکھی اور سکھی گلے ملے . سکھی نے اپنا تجربہ بتایا اور سب نے مل کر قسم کھائی کہ وہ کبھی لالچ میں نہیں پھنسیں گے' آپس میں کبھی نہیں لڑیں گے' اپنا سنگھٹن کریں گے' ایک طاقت بنیں گے' ظلم کے سامنے ایک چٹان بن جائیں گے !

— مجیب رضوی

जम्मू और कश्मीर रियासत में ज़मीन सुधार

(एम. ए. बेग, मालगुज़ारी वज़ीर जम्मू और कश्मीर)

जम्मू और कश्मीर की रियासत में अधिकतर आबादी खेती पेशा लोगों की है. कुल आबादी में सौ पीछे पचासी आदमियों की रोज़ी खेती से चलती है.

हमारी अब तक की सभ्यता महाजनी सभ्यता रही है. इस सभ्यता में आम जनता की भयंकर ग़रीबी का कारन यह है कि धन दौलत पैदा करने के ज़ियादातर साधनों पर थोड़े से ऐसे लोगों का कब्ज़ा है जो ख़ुद मेहनत नहीं करते और दूसरों की मेहनत पर मोटे होकर निठल्लेपन में अपने दिन गुज़ारते हैं. इसी वजह से आम जनता के रहन सहन का ढंग दिन पर दिन गिरता चला जा रहा है और उनकी ग़रीबी और नादारी तेज़ी से बढ़ती जा रही है. यही हालत कश्मीर की थी. इन निठल्ले ज़मींदारों और अपना पसीना बहा कर नाज पैदा करने वाले किसानों के बीच साहूकारों और दूसरे बिचौलियों का एक सिलसिला था जिसकी वजह से कश्मीर के किसान की कमर क़र्ज़े से टूट जाती थी और खेती के काम में किसी भी तरह की तरक़्क़ी नामुमकिन थी. पैदावार घट रही थी और किसानों की हालत बद से बदतर होती जा रही थी.

कश्मीर की मौजूदा गवर्नमेन्ट ने हुकूमत की बाग अपने हाथ में लेते ही देखा कि देश को राजकाजी आज़ादी तो मिल

جمو اور کشمیر ریاست میں زمین سدھار

(ایم . اے . بیگ' مالگزاری وزیر جمو اور کشمیر)

جمو اور کشمیر کی ریاست میں ادھک‌تر آبادی کھیتی پیشہ لوگوں کی ہے . کل آبادی میں سو پیچھے پچاسی آدمیوں کی روزی کھیتی سے چلتی ہے .

ہماری اب تک کی سبھیتا مہاجنی سبھیتا رہی ہے . اس سبھیتا میں عام جنتا کی بھینکر غریبی کا کارن یہ ہے کہ دھن دولت پیدا کرنے کے زیادہ‌تر سادھنوں پر تھوڑے سے ایسے لوگوں کا قبضہ ہے جو خود محنت نہیں کرتے اور دوسروں کی محنت پر موٹے ہوکر نکھٹوپن میں اپنے دن گذارتے ہیں . اسی وجہ سے عام جنتا کے رہن سہن کا ڈھنگ دن پر دن گرتا چلا جا رہا ہے اور اُن کی غریبی اور ناداری تیزی سے بڑھتی جا رہی ہے . یہی حالت کشمیر کی تھی . اِن نکھٹو زمینداروں اور اپنا پسینہ بہاکر اناج پیدا کرنے والے کسانوں کے بیچ ساہوکاروں اور دوسرے بچولیوں کا ایک سلسلہ تھا جس کی وجہ سے کشمیر کے کسان کی کمر قرضے سے ٹوٹ جاتی تھی' کھیتی کے کام میں کسی بھی طرح کی ترقی ناممکن تھی . پیداوار گھٹ رہی تھی اور کسانوں کی حالت بد سے بدتر ہوتی جا رہی تھی .

کشمیر کی موجودہ گورنمنٹ نے حکومت کی باگ اپنے ہاتھ میں لیتے ہی دیکھا کہ دیش کو راجکاجی آزادی تو مل

मुक़द्दमा शुरू हुआ. एक तरफ़ के पैरोकार ठाकुर साहब थे और दूसरी तरफ़ के मीर साहब. ज़ोरों का मुक़द्दमा चला. अदालत ने फ़सल को मुक़द्दमे के फ़ैसले तक सरकार के ज़िम्मे कर दिया, और मुखिया होने के नाते वह ठाकुर साहब को सौंप दी गई.

मुक़द्दमा चलता रहा. गवाहियां होती रहीं. रुपया गलता रहा, दोनों का क़र्ज़ बढ़ता रहा.

मीर साहब की रसीद ने सुक्खी का क़ब्ज़ा बताया, पटवारी के काग़ज़ ने सुक्खी का साथ दिया. सारा गांव जानता था कि खेत सुक्खी का है लेकिन काग़ज़ जो कहते हैं वह ठीक कहते हैं!

सुक्खी ने जीत की ख़ुशी में गुड़ बांटा. मंदिर में प्रसाद चढ़ाया दूसरी फ़सल सुक्खी ने बोई, दिन दिन भर मेहनत करता रहा. दुक्खी भगवान से दुखड़ा रोता रहा और सुक्खी भगवान की लीला को सराता रहा फ़सल तैयार हो गई. सुक्खी और उसकी घर वाली ने उत्साह के साथ फ़सल काटी, हर मांग को काटते हुए उन्होंने न मालूम कितने सपने बुने, न जाने कितने महल बनाए.

सब ढय गए, सब कुछ ख़तम हो गया. मीर साहब के आदमियों ने आ कर खेत को घेर लिया. मीर साहब ने आगे बढ़ कर कहा—"सुखिया, पहले हमारा हिसाब कर दे तब खेत से लांक उठा."

"मैं आपका कौड़ी कौड़ी अदा कर दूँगा, बस माड़ कूट कर आपका ही हिसाब करूंगा."

"या तो आज मेरा पैसा दे, नहीं तो खेत से स्तीफ़ा, मैं तीसरी बात नहीं जानता."

"कृपा कीजिये, मीर साहब."

"तुम कमीनों के साथ एहसान करना हिमाक़त है."

"भरो जी लांक गाड़ी में" मीर साहब ने अपने आदमियों को हुक्म दिया.

सुक्खी को भी जोश आया उसने भी छाती फुलाई.

पीछे से एक लठ सर पर पड़ी. वह गिर पड़ा. मीर साहब ने बढ़ कर एक काग़ज़ पर उसका निशान अंगूठा ले लिया.

लांक उठ गई. क़र्ज़ बाक़ी रहा और खेत से स्तीफ़ा भी हो गया

ठाकुर साहब और मीर साहब गले में हाथ डाले ठहाका लगाते वापस हो रहे थे. मीर साहब कह रहे थे—देखा मेरा दिमाग़. तुम उस रोज़ आफ़त मोल ले रहे थे. तुम्हारे तरीक़े पुराने हो गए. ज़रा इन नए तरीक़ों को आज़मा कर देखो. बिलकुल गोट ठीक बैठती है. अब ताक़त की लड़ाई नहीं है दिमाग़ की लड़ाई है......दिमाग़ की......"

مقدمہ شروع ہوا . ایک طرف کے پیروکار ٹھاکر صاحب تھے اور دوسری طرف کے میر صاحب . زوروں کا مقدمہ چلا . عدالت نے فصل کو مقدمے کے فیصلے تک سرکار کے ذمہ کردیا اور مکھیا ہونے کے ناتے وہ ٹھاکر صاحب کو سونپ دی گئی .

مقدمہ چلتا رہا . گواہیاں ہوتی رہیں . روپیہ گلتا رہا، دونوں کا قرض بڑھتا رہا .

میر صاحب کی رسید نے سکھی کا قبضہ بتایا، پٹواری کے کاغذ نے سکھی کا ساتھ دیا . سارا گاؤں جانتا تھا کہ کھیت سکھی کا ہے . لیکن کاغذ جو کہتے ہیں ٹھیک کہتے ہیں !

سکھی نے جیت کی خوشی میں گڑ بانٹا. مندر میں پرساد چڑھایا دوسری فصل سکھی نے بوئی، دن دن بھر محنت کرتا رہا . دکھی بھگوان سے دکھڑا روتا رہا اور سکھی بھگوان کی لیلا کو سراہتا رہا . فصل تیار ہوگئی . سکھی اور اس کی گھر والی نے اُتساہ کے ساتھ فصل کاٹی، ہر مانگ کو کاٹتے ہوئے انہوں نے نہ معلوم کتنے سپنے بنے، نہ جانے کتنے محل بنائے .

سب ڈھے گئے، سب کچھ ختم ہوگیا . میر صاحب کے آدمیوں نے آکر کھیت کو گھیر لیا . میر صاحب نے آگے بڑھ کر کہا—"سکھیا، پہلے ہمارا حساب کر دے تب کھیت سے لانک اٹھا ."

"میں آپ کا کوڑی کوڑی ادا کر دونگا . بس مار کوٹ کر آپ کا ہی حساب کرونگا ."

"یا تو آج میرا پیسہ دے، نہیں تو کھیت سے استعفیٰ، میں تیسری بات نہیں جانتا ."

"کرپا کیجئے، میر صاحب ."

"تم کمینوں کے ساتھ احسان کرنا حماقت ہے ."

"بھرو جی لانک گاڑی میں" میر صاحب نے اپنے آدمیوں کو حکم دیا .

سکھی کو بھی جوش آیا . اس نے بھی چھاتی پھلائی . پیچھے سے ایک لٹھ سر پر پڑی . وہ گر پڑا . میر صاحب نے بڑھ کر ایک کاغذ پر اس کا نشان انگوٹھا لے لیا.

لانک اٹھ گئی . قرض باقی رہا اور کھیت سے استعفیٰ بھی ہوگیا .

ٹھاکر صاحب اور میر صاحب گلے میں ہاتھ ڈالے ٹھہاکا لگاتے واپس ہو رہے تھے . میر صاحب کہہ رہے تھے —دیکھا میرا دماغ . تم اس روز آفت مول لے رہے تھے . تمہارے طریقے پرانے ہوگئے . ذرا ان نئے طریقوں کو آزما کر دیکھو . بالکل گوٹ ٹھیک بیٹھتی ہے . اب طاقت کی لڑائی نہیں ہے دماغ کی لڑائی ہے......دماغ کی ...."

"दुक्खी वाला खेत तुम्हें दे दें."

"अनाज से लदा है, सर के ऊपर पेड़ हैं" ठाकुर साहब ने शोशा दिया.

'नहीं सरकार, दुक्खी भैया उसे पुरखों से जोते है. मैं उसे कैसे ले सकता हूँ" सुक्खी ने कहा

"तुम बिलकुल पागल हो सुक्खी. तुम इस दुनिया को नहीं समझते......तुम बहुत सीधे हो. दुक्खी बहुत चालाक है. उसका बस चले तो तुम्हारे दो बीघा भी छीन ले.

"जो जैसा करेगा वैसा भरेगा, अपना अपना ईमान !" दुक्खी ने इनकार का कारन बताया.

मीर साहब कहां हार मानने वाले थे, कोशिश जारी रखते हुए उन्होंने सुक्खी से फिर कहा–"हमारा कहना मान जाओ, तुम्हारा कुछ खर्च नहीं होगा, हम पटवारी को बुला कर खेत तुम्हारे नाम करा देंगे. रहा क़बज़ा...... वह भाई तुम कर लेना......हम बीच में बोलेंगे तो लोग कहेंगे ज़मींदार किसानों को लड़ाते हैं......सोच लो ..... जो तुम्हें फ़ायदे की चीज़ दिखाई पड़े वही करो......"

एक तरफ़ दुक्खी था, भाई चारा था और ख़ाली ईमान था और दूसरी तरफ़......हरा भरा लहलहाता खेत....... बिना मेहनत का फल......ख़र्च कुछ भी नहीं......केवल 'हां' कहने की देर थी.......सुक्खी दुबधा में पड़ गया. उसके दिमाग़ में झगड़ा होने लगा. उसकी समझ में नहीं आता था कि वह 'हां' कहे या 'नहीं'.

"हमारा कुछ नहीं बिगड़ता. तुम अपना नफ़ा नुक़सान ख़ुद सोच लो......घर वाली से भी सलाह कर लो...... तुम्हें हम अपना आदमी समझते हैं. इसीलिये चाहते हैं कि तुम्हारे पास भी कुछ खेत हो जायं......नहीं तो हमें क्या पड़ी है......"मीर साहब ने सुक्खी को 'हां' की तरफ़ एक धक्का और दिया.

किसान हार गया. ज़मींदार की तिकड़म जीत गई. अन्धेरा उजाले पर छाने लगा. सुक्खी दुक्खी के खेत पर क़बज़ा करने की नियत से चल पड़ा. हंसिया उसके हाथ में थी और कन्धे पर पुखी लठ.

बात छुपके हुई थी. ठाकुर साहब, मीर साहब और सुक्खी के अलावा इस भेद को कोई और नहीं जानता था. फिर भी यह बात दुक्खी को मालूम थी. उसे किसने बताया यह भी एक भेद है...दुक्खी तैयार था. सुक्खी भी तैयार था. एक ने अपने क़बज़े को मज़बूत करने के लिये खेत का कुछ हिस्सा काटना चाहा. दूसरे ने रोका. बातों की गरज में लाठियों की कड़क सुनाई दी. न जाने क्यों और कैसे एक तरफ़ से ठाकुर साहब आ गए और दूसरी तरफ़ से मीर साहब. सुक्खी और दुक्खी अलग कर दिये गए. दोनों को राय दी गई कि लड़ने के बजाय अदालत से फ़ैसला करा लें.

"دکھی والا کھیت تمھیں دے دیں ."

"اناج سے لدا ھے' سرکے اوپر پیڑ ھیں" ٹھاکر صاحب نے شوشہ دیا .

"نہیں سرکار' دکھی بھیا اُسے پرکھوں سے جوتے ھے. میں اُسے کیسے لے سکتا ھوں" سکھی نے کہا .

"تم بالکل پاگل ھو سکھی . تم اِس دنیا کو نہیں سمجھتے......تم بہت سیدھے ھو . دکھی بہت چالاک ھے. اُس کا بس چلے تو تمہارے دو بیگھا بھی چھین لے .

"جو جیسا کرے گا' ویسا بھرے گا' اپنا اپنا ایمان!" دکھی نے انکار کا کارن بتایا .

میر صاحب کہاں ھار ماننے والے تھے' کوشش جاری رکھتے ھوئے انھوں نے سکھی سے پھر کہا—"ھمارا کہنا مان جاؤ' تمہارا کچھ خرچ نہیں ھوگا' ھم پٹواری کو بلاکر کھیت تمہارے نام کرا دیں گے. رھا قبضہ......وہ بھائی تم کرلینا ......ھم بیچ میں بولیں گے تو لوگ کہیں گے زمیندار کسانوں کو لڑاتے ھیں......سوچ لو......جو تمہیں فائدے کی چیز دکھائی پڑے وھی کرو......"

ایک طرف دکھی تھا' بھائی چارا تھا اور خالی ایمان تھا اور دوسری طرف......ھرا بھرا لہلہاتا کھیت ......بنا محنت کا پھل......خرچ کچھ بھی نہیں...... کیول 'ھاں' کہنے کی دیر تھی......سکھی دبدھا میں پڑ گیا . اُس کے دماغ میں جھگڑا ھونے لگا . اُس کی سمجھ میں نہیں آتا تھا کہ وہ 'ھاں' کہے یا 'نہیں'.

"ھمارا کچھ نہیں بگڑتا . تم اپنا نفع نقصان خود سوچ لو......گھر والی سے بھی صلاح کرلو......تمہیں ھم اپنا آدمی سمجھتے ھیں اسی لئے چاھتے ھیں کہ تمہارے پاس بھی کچھ کھیت ھو جائیں......نہیں تو ھمیں کیا پڑی ھے......" میر صاحب نے سکھی کو 'ھاں' کی طرف ایک دھکا اور دیا .

کسان ھار گیا . زمیندار کی تکڑم جیت گئی. اندھیرا اُجالے پر چھانے لگا . سکھی دکھی کے کھیت پر قبضہ کرنے کی نیت سے چل پڑا . ھنسیا اُس کے ھاتھ میں تھی اور کاندھے پر پکی لٹھ .

بات چھپ کے ھوئی تھی. ٹھاکر صاحب' میر صاحب اور سکھی کے علاوہ اِس بھید کو کوئی اور نہیں جانتا تھا. پھر بھی یہ بات دکھی کو معلوم تھی . اُسے کس نے بتایا ......یہ بھی ایک بھید ھے......دکھی تیار تھا . سکھی بھی تیار تھا . ایک نے اپنے قبضے کو مضبوط کرنے کے لئے کھیت کا کچھ حصہ کاٹنا چاھا . دوسرے نے روکا . باتوں کی گرج میں لاٹھیوں کی کڑک سنائی دی. نہ جانے کیوں اور کیسے ایک طرف سے ٹھاکر صاحب آگئے اور دوسری طرف سے میر صاحب . سکھی اور دکھی الگ کر دئے گئے. دونوں کو رائے دی گئی کہ لڑنے کے بجائے عدالت سے فیصلہ کرالیں .

है. वह अन्याय कैसे हो सकता है !" मीर साहब ने मुस्कराते हुए कहा.

सुक्खी ने ऐसी हुँकार भरी जैसे वह कहना चाहता हो कि यह सब दांव पेंच मेरी समझ में नहीं आते.

मीर साहब की नज़र दोबारा सुक्खी पर गई और वह अपने गाव तकिये से उछल पड़े और बोले—"यह तुम्हारी ज़ियादती है सुक्खी. इनसान इनसान सब बराबर हैं. यह भगवान की देन है कि किसी को उसने राजा बना दिया और किसी को जोगी. भाई राजा अपनी जगह पर रहे और जोगी अपनी जगह पर. वह दोनों एक दूसरे के दुश्मन क्यों हों, दोनों खुश रहें. पर आदमी आदमी सब बराबर हैं...... यह नहीं हो सकता कि तुम ज़मीन पर बैठो और हम गाव तकिया लगाये बैठे रहें......"

मीर साहब ने उठ कर सुक्खी का हाथ पकड़ा और अपनी चारपाई पर बैठा लिया. गांव की हालत, खेती बारी की हालत और न जाने कैसी कैसी बातों की चर्चा चल पड़ी ......

"आज कल खेती का क्या हाल है सुक्खी" मीर साहब ने पूछा.

"मेरे पास तो कुल दो बीघा खेत है सरकार ! उसका होना क्या और न होना क्या."

"तुम और खेत क्यों नहीं जोत लेते."

"कौन दे, आप ही दो चार बीघा खेत दे दीजिये, जब तक जिन्दा रहूँगा, अहसान मानूंगा."

"न बाबा ! तुम लोगों का कोई एतबार नहीं. जिस प्याले में खाओगे उसी में छेद करोगे. खेत लेते वक़्त तो मीठे बनोगे और वक़्त निकल जाने पर आंख दिखाओगे."

"मीर साहब, वह कोई और होते होंगे. आपने कभी मेरी शिकायत सुनी है ? इतनी गड़बड़ हुई, तमाम उधम मचा लेकिन मैं हमेशा अलग रहा. ज़मींदारी आप लोगों को मुबारक हो, हम तो आपके साया तले जीवन बिताना चाहते हैं." सुक्खी ने इस तरह कहा जैसे उसे मीर साहब से खेत तो लेना ही है.

"सब का दिमाग़ ख़राब हुआ, लेकिन सुक्खी ने कभी बुरा रास्ता इख़्तियार नहीं किया. ज़मींदार का वही आदर सत्कार करता रहा......" ठाकुर साहब ने सुक्खी को सर्टीफ़िकेट दिया.

मीर साहब जैसे खुश हो गए और उन्होंने सुक्खी को थपथपाते हुए कहा—"जो खेत कहो सुक्खी हम तुम्हें दे दें."

"जो आप हमें देंगे, वह खुशी से ले लेंगे, आप हमारा ख़्याल न करेंगे तो कौन करेगा."

"फिर भी बोलो तो"

"जो आपकी मरज़ी."

ہے . یہ انیائے کیسے ہو سکتا ہے !" میر صاحب نے مسکراتے ہوئے کہا .

سکھی نے ایسی ہنکار بھری جیسے وہ کہنا چاہتا ہو کہ یہ سب داؤں پیچ میری سمجھ میں نہیں آتے .

میر صاحب کی نظر دوبارہ سکھی پر گئی اور وہ اپنے گاؤ تکیے سے اُچھل پڑے اور بولے— " یہ تمہاری زیادتی ہے سکھی . انسان انسان سب برابر ہیں. یہ بھگوان کی دین ہے کہ کسی کو اُس نے راجہ بنا دیا اور کسی کو جوگی . بھائی راجہ اپنی جگہ پر رہے اور جوگی اپنی جگہ پر . وہ دونوں ایک دوسرے کے دشمن کیوں ہوں، دونوں خوش رہیں. پر آدمی آدمی سب برابر ہیں...یہ نہیں ہوسکتا کہ تم زمین پر بیٹھو اور ہم گاؤ تکیہ لگائے بیٹھے رہیں..."

میر صاحب نے اُٹھکر سکھی کا ہاتھ پکڑا اور اپنی چارپائی پر بیٹھا لیا . گاؤں کی حالت، کھیتی باڑی کی حالت اور نہ جانے کیسی کیسی باتوں کی چرچا چل پڑی...

" آجکل کھیتی کا کیا حال ہے سکھی" میر صاحب نے پوچھا .

" میرے پاس تو کل دو بیگھا کھیت ہے سرکار ! اُس کا ہونا کیا اور نہ ہونا کیا ."

" تم اور کھیت کیوں نہیں جوت لیتے ."

" کون دے، آپ ہی دو چار بیگھا کھیت دے دیجئے، جب تک زندہ رہونگا، احسان مانونگا ."

" نہ بابا ! تم لوگوں کا کوئی اعتبار نہیں . جس پیالے میں کھاؤ گے اُسی میں چھید کرو گے . کھیت لیتے وقت تو میٹھے بنوگے اور وقت نکل جانے پر آنکھ دکھاؤ گے......"

" میر صاحب، وہ کوئی اور ہوتے ہونگے . آپ نے کبھی میری شکایت سنی ہے ؟ اتنی گڑبڑ ہوئی، تمام اُدھم مچا لیکن میں ہمیشہ الگ رہا—زمینداری آپ لوگوں کو مبارک ہو، ہم تو آپ کے سایہ تلے جیون بتانا چاہتے ہیں." سکھی نے اس طرح کہا جیسے اُسے میر صاحب سے کھیت تو لینا ہی ہے .

"سب کا دماغ خراب ہوا، لیکن سکھی نے کبھی برا راستہ اختیار نہیں کیا . زمیندار کا وہی آدر ستکار کرتا رہا..... " ٹھاکر صاحب نے سکھی کو سرٹیفکٹ دیا .

میر صاحب جیسے خوش ہوگئے اور اُنہوں نے سکھی کو تھپ تھپاتے ہوئے کہا—"جو کھیت کہو سکھی ہم تمہیں دے دیں ."

"جو آپ ہمیں دیں گے، وہ خوشی سے لیں گے، آپ ہمارا خیال نہ کریں گے تو کون کرے گا ."

"پھر بھی بولو تو ."

"جو آپکی مرضی ."

ठाकुर साहब इस अधिकार को ताक़त से लेना चाहते हैं... अपनी ताक़त, पुलिस की ताक़त......सरकार की ताक़त, सारी ताक़तें उनके पीछे थीं—वह आगे बढ़ते जाते थे और थाना और कोतवाली में मामले को ठीक रखने का मसाला भी सोच रहे थे.

सब मौन थे, शायद वातावरन भी ख़मोश था.

मौन टूटा, फ़िज़ा बदली, किसी ने आकर जैसे एक नया मोहरा चल दिया और सारे खेल का रंग बदल गया—ठाकुर साहब, उनके सिपाही, उनकी बन्दूक़, सब के सब घर वापस हो रहे थे—सब कुछ वही था—सिर्फ़—ग़ुस्सा नहीं था......जोश नहीं था......और ठाकुर साहब की गरदन में हाथ डाले मीर साहब साथ साथ चल रहे थे. ठाकुर साहब कुछ सुन रहे थे और मीर साहब कुछ कह रहे थे.

फिर ठाकुर साहब का दरबार लगा, फिर उन्होंने अपने कारनामे सुनाने शुरू किये. पहले उन्होंने बर की खोज के क़िस्से सुनाए. बड़ी बड़ी मुसीबतों का सामना उन्हें करना पड़ा, ब मुश्किल तमाम योग बर ढूंढ़ पाए......दस हज़ार में सौदा तय हुआ......आजकल यह बाज़ार बहुत गर्म हो गया है.

मीर साहब ने इन सब बातों का समर्थन करते हुए कहा, आज कल बर की बहुत दिक़्क़त हो गई है...... कोई बात नहीं......दस हज़ार में अच्छा बर तो मिल गया... यही ग़नीमत है......चलो लड़के के दाम चढ़ा देना......

"मैंने तो तय कर लिया है कि बीस हज़ार से कम पर राज़ी न हूँगा. आख़ीर अशोक का सारा ख़र्च कहाँ से निकलेगा......"

ठाकुर साहब सारी दिक़्क़त भूल गए, सारी परेशानियां उनके दिमाग़ से दूर हो गईं. यह सब बुराइयां उस समय तक थीं जब उनका जेब कट रहा था, जब तक उनकी चहेती बिना बर के थी...और अब...दूसरों के जेब काटने की बारी थी...दूसरे बापों की चहेतियों का मोल तोल उन्हें करना था......उन्हें पीछे मुड़के देखने की क्या ज़रूरत !

"अरे ओ सुक्खी, सुखी हो" मीर साहब के आवाज़ दी.

सुक्खी हर पग पर संकोच करते हुए मीर साहब के पास आ गया.

"तुम तो दर्शन ही नहीं देते भाई, न जाने क्यों ख़फ़ा हो."

"नहीं साहब, ख़फ़ा होने की क्या बात है और वह भी आप से." ज़मीन पर उकरू बैठते हुए सुक्खी ने उत्तर दिया.

"यह लोग समझते हैं कि अब ज़मींदारों से व्योहार क्यों किया जाय. ज़मींदारी ख़तम हो जायगी." ठाकुर साहब ने चुटकी ली.

"यह लोग जो चाहें समझें, न ज़मींदारी ख़तम होगी और न ज़मींदार. किसी का हक़ कोई आज तक छीन सका

ٹھاکر صاحب اِس ادھیکار کو طاقت سے لینا چاھتے ھیں ...اپنی طاقت' پولیس کی طاقت...سرکار کی طاقت' ساری طاقتیں اُن کے پیچھے تھیں—وہ آگے بڑھتے جاتے تھے اور تھانہ کوتوالی میں معاملے کو ٹھیک رکھنے کا مسالا بھی سوچ رہے تھے .

سب مون تھے' شاید واتاورن بھی خاموش تھا .

مون ٹوٹا' فضا بدلی' کسی نے آ کر جیسے ایک نیا مہرا چل دیا اور سارے کھیل کا رنگ بدل گیا—ٹھاکر صاحب اُن کے سپاھی' اُن کی بندوق' سب کے سب گھر واپس ہو رہے تھے—سب کچھ وھی تھا—صرف—غصہ نہیں تھا... جوش نہیں تھا...اور ٹھاکر صاحب کی گردن میں ھاتھ ڈالے میر صاحب ساتھ ساتھ چل رہے تھے . ٹھاکر صاحب کچھ سن رہے تھے اور میر صاحب کچھ کہہ رہے تھے .

پھر ٹھاکر صاحب کا دربار لگا' پھر اُنھوں نے اپنے کار نامے سنانے شروع کئے . پہلے اُنھوں نے ورکی کھوج کے قصے سنائے . بڑی بڑی مصیبتوں کا سامنا اُنھیں کرنا پڑا . بمشکل تمام یوگ ور ڈھونڈھ پائے...دس ھزار میں سودا طے ھوا ...آج کل یہ بازار بہت گرم ھوگیا ھے .

میر صاحب نے اِن سب باتوں کا سمرتھن کرتے ھوئے کہا' آجکل ورکی بہت دقت ھوگئی ھے....کوئی بات نہیں ...دس ھزار میں اچھا ور تو مل گیا...یہی غنیمت ھے ...چلو لڑکے کے دام چڑھا دینا...

" میں نے تو طے کر لیا ھے کہ بیس ھزار سے کم پر راضی نہ ھونگا . آخیر اشوک کا سارا خرچ کہاں سے نکلے گا......"

ٹھاکر صاحب ساری دقت بھول گئے' ساری پریشانیاں اُن کے دماغ سے دور ھو گئیں . یہ سب برائیاں اُس سمے تک تھیں جب اُن کا جیب کٹ رھا تھا' جب تک اُن کی چہیتی بنا ور کے تھی...اور اب...دوسروں کے جیب کاٹنے کی باری تھی...دوسرے باپوں کی چہیتیوں کا مول تول اُنھیں کرنا تھا...اُنھیں پیچھے مڑ کے دیکھنے کی کیا ضرورت !

" ارے او سکھی' سکھی ھو" میر صاحب نے آواز دی .

سکھی ھر پگ پر سنکوچ کرتے ھوئے میر صاحب کے پاس آگیا .

" تم تو درشن ھی نہیں دیتے بھائی' نہ جانے کیوں خفا ھو ."

" نہیں صاحب' خفا ھونے کی کیا بات ھے اور وہ بھی آپ سے ." زمین پر اکڑو بیٹھتے ھوئے سکھی نے اُتر دیا .

" یہ لوگ سمجھتے ھیں کہ اب زمینداروں سے بیوھار کیوں کیا جائے . زمینداری ختم ھو جائے گی ." ٹھاکر صاحب نے چٹکی لی .

" یہ لوگ جو چاھیں سمجھیں' نہ زمینداری ختم ھوگی اور نہ زمیندار . کسی کا حق کوئی آج تک چھین سکا

धरती किसकी ?

ठाकुर साहब की गरज सुनाई दी—"बदमाश की यह मजाल ! मेरी करनी का यह फल. सच कहा है किसी ने "कमीनों" के साथ कभी नेकी न करो. मैंने समाज की बुराई सही, दोस्तों के तिरस्कार सहे, सब इनके लिये ! मैंने बाप दादा के मंदिर के दरवाज़े इनके लिये खोले, इन्हें चारपाई पर बैठाया......इन्हें सर पर बैठाया......उसी का नतीजा है......."

ठाकुर साहब का हाथ मूंछों पर था और होंट ऐसे चल रहे थे जैसे सामने लिखी कोई चीज़ पढ़ रहे हों.

सब ख़ामोश थे, सब पर सन्नाटा छाया हुआ था.

"सरकार ! बहुत ही कमीना निकला. मैंने घी माँगा नहीं कि लगा बमकने.......मैंने भी ख़ूब सुनाई. पुरखों की हड्डी भी जल भुन गई होगी."

"बदमाश का मुंह क्यों नहीं नोच लिया."

"सरकार बात तो उसने ऐसी ही की थी ! आपका लिहाज़ कर गया, बस......नहीं तो ख़ून की नदी बह जाती.......आपकी बेटी और उसकी छोकड़ी का जोड़......कहता था—ठाकुर साहब की ही बेटी नहीं है, मेरी बेटी भी है. उसकी शादी में घी ख़र्च करूँगा. ठाकुर साहब को क्यों घी दे दूँ......"

"घी नहीं देगा......घी इसी वक़्त न ले लिया तो अपने बाप से पैदा नहीं.......बुलाओ आदमियों को......चलो, चलो, उठो, बढ़ो......लूट लो......फिर देख लूंगा.......थाना कचहरी समझ लूंगा......कभी हार नहीं मानी......दुनिया को हँसी का मौक़ा नहीं दूँगा, चलो, बढ़ो, लूटो, मारो, चलो, बढ़ो !

आगे आगे ठाकुर साहब थे, उनके एक हाथ में एक नाली बन्दूक़ थी, और दूसरा हाथ मूंछों पर था. उनके सिपाही पीछे चल रहे थे. बहुत बड़ा क़िला जैसे उन्हें फ़तह करना था......चाल ऐसी थी जैसे फ़तह तो उनकी ही है...कौन उनको रोक सकता था, कौन उनका मुक़ाबला कर सकता था. दुखी अहीर ! उसकी क्या मजाल कि ठाकुर साहब के सामने भी आए, उसकी कैसे जुरअत हो सकती है......लेकिन कौन जाने, वक़्त बदल रहा है......ठाकुर साहब की मांग पूरी होती आई है, उनके बाप ने जो चाहा वह हुआ...उनके बाप ने जो हुक्म दिया वह हुआ और दुखी, दुखी का बाप, बाप का बाप और इसी तरह न जाने कितनी पीढ़ियां हुक्म बजाती आई हैं—लेकिन आज ठाकुर से यह अधिकार छिन गया था. दुखी ने जुआ उतार फेंकी थी...

دھرتی کس کی ؟

ٹھاکر صاحب کی گرج سنائی دی—" بدمعاش کی یہ مجال ! میری کرنی کا یہ پھل . سچ کہا ہے کسی نے " کمینوں " کے ساتھ کبھی نیکی نہ کرو . میں نے سماج کی برائی سہی، دوستوں کے ترسکار سہے، سب اِن کے لئے! میں نے باپ دادا کے مندر کے دروازے اِن کے لئے کھولے، اِنہیں چارپائی پر بیٹھایا.....اِنہیں سر پر بیٹھایا.....اُسی کا نتیجہ ہے......"

ٹھاکر صاحب کا ہاتھ موچھوں پر تھا اور ہونٹ ایسے چل رہے تھے جیسے سامنے لکھی کوئی چیز پڑھ رہے ہوں.

سب خاموش تھے، سب پر سناٹا چھایا ہوا تھا .

" سرکار ! بہت ہی کمینہ نکلا . میں نے گھی مانگا نہیں کہ لگا بمکنے......میں نے بھی خوب سنائی . پرکھوں کی ہڈی بھی جل بھن گئی ہوگی ."

" بدمعاش کا منہ کیوں نہیں نوچ لیا ."

" سرکار بات تو اُس نے ایسی ہی کی تھی ! آپ کا لحاظ کر گیا، بس......نہیں تو خون کی ندی بہ جاتی......آپ کی بیٹی اور اُس کی چھوکری کا جوڑ......کہتا تھا—ٹھاکر صاحب کی ہی بیٹی نہیں ہے، میری بیٹی بھی ہے . اُس کی شادی میں گھی خرچ کروں گا . ٹھاکر صاحب کو کیوں گھی دے دوں......"

" گھی نہیں دے گا......گھی اسی وقت نہ لے لیا تو اپنے باپ سے پیدا نہیں......بلاؤ آدمیوں کو...چلو، چلو، اُٹھو، بڑھو...لوٹ لو...پھر دیکھ لونگا...تھانہ کچہری سمجھ لونگا...کبھی ہار نہیں مانی...دنیا کو ہنسی کا موقع نہیں دونگا، چلو، بڑھو، لوٹو، مارو، چلو، بڑھو !

آگے آگے ٹھاکر صاحب تھے، اُن کے ایک ہاتھ میں ایک نالی بندوق تھی اور دوسرا ہاتھ مونچھوں پر تھا . اُن کے سپاہی پیچھے چل رہے تھے . بہت بڑا قلعہ جیسے اُنہیں فتح کرنا تھا..چال ایسی تھی جیسے فتح تو اُن کی ہی ہے...کون اُن کو روک سکتا تھا، کون اُن کا مقابلہ کر سکتا تھا . دکھی اہیر ! اُس کی کیا مجال کہ ٹھاکر صاحب کے سامنے بھی آئے، اُس کی کیسے جرأت ہو سکتی ہے...لیکن کون جانے، وقت بدل رہا ہے...ٹھاکر صاحب کی ہر مانگ پوری ہوتی آئی ہے، اِن کے باپ نے جو چاہا وہ ہوا، اُن کے باپ نے جو حکم دیا وہ ہوا...اور دکھی، دکھی کا باپ، باپ کا باپ اور اسی طرح نہ جانے کتنی پیڑھیاں حکم بجاتی آئی ہیں—لیکن آج ٹھاکر سے یہ ادھیکار چھن گیا تھا . دکھی نے جوآ اُتار پھینکی تھی...

किसानों ने हर तरह की ज़मींदारी खतम करने के लिये बहादुरी से लड़ाइयां लड़ी हैं. पर इसके बदले उसे मिली सरकार की ज़मींदारी, पुरानी ज़मींदारी में भी आपसी रिश्ते और निजी लिहाज़ की कुछ न कुछ जगह थी. उसकी जगह अब सरकारी नौकर की कड़ाई और शान होगी, क़ानून की पाबन्दी होगी. लगान का बोझ वैसे का वैसा बना रहेगा. कम से कम चालीस साल के लिये तो बना ही रहेगा. नया क़ानून बनाने वालों को मालूम था कि लगान का बोझ किसानों को पीस डाल रहा है और उसकी अदायगी में बड़ी मुश्किलें आयंगी. तभी लगान वसूली के लिये सरकार ने वह अख़्तियार अपने हाथ में लिये हैं जो शुरू में भारत आए अंगरेज़ों ने अपनाए थे. सम्मन, गिरफ़्तारी, नज़र बन्दी, क़ुर्क़ी और नीलाम लगान वसूली के लिये किसानों को पहले गिरफ़्तार नहीं किया जा सकता था. सन 52 में, कांगरेसी राज में जो क़ानून बना है, उसमें गिरफ़्तारी का आम अख़्तियार है. हालत इससे भी जियादा चिन्ता जनक है, क्योंकि यह ज़ालिम अख़्तियार काम में लाने के लिये सरकारी अमला होगा और उसकी पीठ पर देहातों भर में फैला कांगरेस का जाल होगा.

नई ज़मींदारी का जन्म

इस तरह हम देखते हैं कि नया क़ानून सामन्ती ज़मींदारी को सरकारी ज़मींदारी में बदल कर धीरे धीरे एक नई जमात खड़ी कर देगा और बड़े जोत वालों की एक नई जमात बना देगा जो कि जियादातर धनी भूमिधर होंगे. असल किसान और ग़रीब होते जायंगे. इसके साथ छोटे व्योपारी और रोज़गार वाले भी पिसेंगे. सरकारी ज़मींदारी की परवरिश में मुट्ठी भर कुलक या रईस किसान सर्व शक्तिमान बन जायंगे.

आगे का रास्ता

ऊपर की बातों से शायद कुछ लोगों पर यह असर पड़े कि हिन्दुस्तान का किसान एक ऐसी हालत में फंस गया है जिसमें नाउम्मीदी और बदनसीबी के सिवा और कुछ भी नहीं है, पर बात ऐसी नहीं है. आदमी दुनिया के शुरू से अब तक अपनी खुशी और भलाई के लिये कोशिश करता आया है, और क़दम क़दम उसे कामयाबी मिली है. यही हालत हमारे मुल्क के किसानों की भी है. उनकी ग़रीबी दुनिया में बे मिसाल है. सवाल यह है कि इस हालत में तबदीली कैसे की जाय ? इस तबदीली की रूप रेखा हमने ऊपर दे दी है. इस तबदीली की कुंजी भी उसी जनता के हाथों में है जिसके संगठन, त्याग और सत्याग्रह ने इस देश से अंगरेज़ी राज को ख़तम किया, यह रास्ता भी वही त्याग और क़ुरबानी का रास्ता है.

کسانوں نے ہر طرح کی زمیںداری ختم کرنے کے لئے بہادری سے لڑائیاں لڑی ہیں . پر اِس کے بدلے اُسے ملی سرکار کی زمیںداری' پرانی زمیںداری میں بھی آپسی رشتے اور نجی لحاظ کی کچھ نہ کچھ جگہ تھی . اُس کی جگہ اب سرکاری نوکر کی کڑائی اور شان ہوگی قانون کی پابندی ہوگی . لگان کا بوجھ ویسے کا ویسا بنا رہے گا . کم سے کم 40 سال کے لئے تو بنا ہی رہے گا . نیا قانون بنانے والوں کو معلوم تھا کہ لگان کا بوجھ کسانوں کو پیس ڈال رہا ہے اور اس کی ادائیگی میں بڑی مشکلیں آئیں گی . تبھی لگان وصولی کے لئے سرکار نے وہ اختیار اپنے ہاتھ میں لئے ہیں جو شروع میں بھارت آئے انگریزوں نے اپنائے تھے . سمن' گرفتاری' نظر بندی' قرقی اور نیلام لگان وصولی کے لئے کسانوں کو پہلے گرفتار نہیں کیا جا سکتا تھا . سن 52' میں' کانگریسی راج میں جو قانون بنا ہے' اُس میں گرفتاری کا عام اختیار ہے . حالت اس سے بھی زیادہ چنتا جنک ہے' کیونکہ یہ ظالم اختیار کام میں لانے کے لئے سرکاری عملہ ہوگا اور اُس کی پیٹھ پر دیہاتوں بھر میں پھیلا کانگریس کا جال ہوگا .

نئی زمیںداری کا جنم

اس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ نیا قانون سامنتی زمیںداری کو سرکاری زمیںداری میں بدل کر دھیرے دھیرے ایک نئی جماعت کھڑی کر دیگا اور بڑے جوت والوں کی ایک جماعت بنا دیگا جو کہ زیادہتر دھنی بھومی دھر ہونگے . اصل کسان اور غریب ہوتے جائینگے . اس کے ساتھ چھوٹے بیوپاری اور روزگار والے بھی پسیں گے . سرکاری زمیںداری کی پرورش میں مٹھی بھر کلک یا رئیس کسان سروشکتی مان بن جائینگے .

آگے کا راستہ

اوپر کی باتوں سے شاید کچھ لوگوں پر یہ اثر پڑے کہ ہندستان کا کسان ایک ایسی حالت میں پھنس گیا ہے جس میں نا امیدی اور بدنصیبی کے سوا اور کچھ بھی نہیں ہے' پر بات ایسی نہیں ہے . آدمی دنیا کے شروع سے اب تک اپنی خوشی اور بھلائی کے لئے کوشش کرتا آیا ہے' اور قدم قدم اُسے کامیابی ملی ہے . یہی حالت ہمارے ملک کے کسانوں کی بھی ہے . اُن کی غریبی دنیا میں بے مثال ہے . سوال یہ ہے کہ اِس حالت میں تبدیلی کیسے کی جائے ؟ اِس تبدیلی کی روپ ریکھا ہم نے اوپر دے دی ہے . اس تبدیلی کی کنجی بھی اُسی جنتا کے ہاتھوں میں ہے جس کے سنگٹھن' تیاگ اور ستیاگرہ نے اس دیش سے انگریزی راج کو ختم کیا' یہ راستہ بھی وہی تیاگ اور قربانی کا راستہ ہے .

पुराने जमींदार का नया चोला

जमींदारी अन्त क़ानून ने सूबे के किसानों को 22 क़िस्मों की जगह चार कर दिया है. इन चार में से भूमिधरों और थोड़े से सीरदारों को ख़ुश किया जा रहा है ताकि वह राज करने वालों की सामाजिक बुनियाद की तरह देहातों में रह सकें. इन भूमिधरों व थोड़े से सीरदारों में कल के जमींदार और बड़े किसान ही आते हैं. सहकारी फ़ार्मों के आर्थिक सुधार, पचायती अदालतों के सामाजिक न्याय और राजनीति की नेतागीरी इन्हीं लोगों के हाथों में रहेगी. इन की यह ताक़त बंटाई प्रथा जारी रखने की सहूलत से बहुत बढ़ गई है. बटाई से छोटे किसानों की जो लूट खसोट होगी उसकी तो मिसाल मिलना मुश्किल हो जायगा. पंचायती अदालत के ज़रिये इस जमात ने न्याय, राजनीति और समाज में वैसे ही दबदबा क़ायम कर रक्खा है. कांगरेस की देहाती रचना में बनी हुई यह जमात जमींदार की शकल में न आ कर फिर देहातों के प्रबन्ध में ओहदेदार बन कर आयगी. और इन ओहदेदारों के अख़्तियार पहले से बहुत जियादा बढ़ा दिये गए हैं. इस तरह जमींदार व महाजन गांव के राजा तो बने ही रहेंगे, उन्हें क़ानून की आड़ और लोकराज का सुनहरा सेहरा भी पहनने को मिल जायगा. अभी तक आर्थिक साधनों, राज काजी ताक़त और न्याय करने का जो हक़ यह लुटेरी जमात अपने हाथों में ग़ैर जाब्ते से लिये हुए थी, गांव पंचायतों के ज़रिये नया क़ानून उन्हें जाब्ते और हक़ का जामा भी पहना देगा.

ज़ुल्मों की भरमार

देहातों की लूट को यह जामा तो पहनाया ही गया है, पर लूट की पुरानी, सड़ियल अध सामन्ती असलियत भीतर ही भीतर क़ायम रहेगी, जिससे ज़मीन की इजारेदारी बढ़ेगी और अधिकतर किसानों पर मुसीबतों के पहाड़ टूट पड़ेंगे, उनकी बरबादी और नज़दीक आती जायगी. यह ढांचा जो जो मुसीबतें लायगा, उनकी गिनती भी नहीं हो सकती. लगान की वसूली में ज़ुल्म होंगे, खेती में लगे लोगों की गिनती बराबर बढ़ती जायगी और किसानों के क़ब्ज़े की ज़मीन घटती जायगी. किसानों की रोज़ी का दूसरा ज़रिया ढूंढने के सभी रास्ते बन्द होंगे. खेती की पैदावार बढ़ाने के रास्ते में अड़चनें बढ़ेंगी. किसानों की ग़रीबी बढ़ेगी. और उनकी बे दख़लियां बढ़ेंगी, जोतों का रक़बा घटता जायगा. किसान क़र्ज़ से लदेंगे. आपसी दुश्मनी बढ़ेगी, सामाजिक तनाव बढ़ेगा.

जमींदारी प्रथा की यह सब ख़राबियां नए निज़ाम में भी मौजूद रहेंगी, फ़र्क़ सिर्फ़ इतना होगा कि मालगुज़ारी जमींदार वसूल न करेगा, सरकार करेगी. दूसरे शब्दों में जमींदार की जगह सरकार जमींदार बनेगी. हमारे सूबे के

پرانے زمیندار کا نیا چولا

زمینداری انت قانون نے صوبے کے کسانوں کو بائیس قسموں کی جگہ چار کر دیا ہے ۔ اِن چار میں سے بھومی دھروں اور تھوڑے سے سیرداروں کو خوش کیا جارہا ہے تاکہ وہ راج کرنے والوں کی سماجک بنیاد کی طرح دیہاتوں میں رہ سکیں ۔ اِن بھومی دھروں و تھوڑے سے سیرداروں میں کل کے زمیندار اور بڑے کسان ہی آتے ہیں ۔ سہکاری فارموں کے آرتھک سدھار، پنچایتی عدالتوں کے سماجک نیائے اور راج نیتی کی نیتا گیری انہیں لوگوں کے ہاتھوں میں رہے گی ۔ اِن کی یہ طاقت بٹائی پرتھا جاری رکھنے کی سہولت سے بہت بڑھ گئی ہے ۔ بٹائی سے چھوٹے کسانوں کی جو لوٹ کھسوٹ ہوگی اُس کی تو مثال ملنا مشکل ہوجائے گا ۔ پنچایتی عدالت کے ذریعے اس جماعت نے نیائے، راج نیتی اور سماج میں ویسے ہی دب دبہ قائم کر رکھا ہے ۔ کانگریس کی دیہاتی رچنا میں بنی ہوئی یہ جماعت زمیندار کی شکل میں نہ آ کر پھر دیہاتوں کے پربندھ میں عہدےدار بن کر آئے گی ۔ اور اِن عہدیداروں کے اختیار پہلے سے بہت زیادہ بڑھا دیئے گئے ہیں ۔ اس طرح زمیندار و مہاجن گاؤں کے راجا تو بنے ہی رہیں گے، انہیں قانون کی آڑ اور لوک راج کا سنہرا سہرا بھی پہننے کو مل جائے گا ۔ ابھی تک آرتھک سادھنوں، راج کاجی طاقت اور نیائے کرنے کا جو حق یہ لٹیری جماعت اپنے ہاتھوں میں غیر ضابطے سے لئے ہوئے تھی، گاؤں پنچایتوں کے ذریعے نیا قانون انہیں ضابطے اور حق کا جامہ بھی پہنا دے گا ۔

ظلموں کی بھرمار

دیہاتوں کی لوٹ کو یہ جامہ تو پہنایا ہی گیا ہے، پر لوٹ کی پرانی، سڑیل ادھ سامنتی اصلیت بھیتر ہی بھیتر قائم رہے گی، جس سے زمین کی اجارہ داری بڑھے گی اور ادھک تر کسانوں پر مصیبتوں کے پہاڑ ٹوٹ پڑیں گے، اُن کی بربادی اور نزدیک آتی جائے گی ۔ یہ ڈھانچہ جو جو مصیبتیں لائے گا، اُن کی گنتی بھی نہیں ہوسکتی ۔ لگان کی وصولی میں ظلم ہونگے، کھیتی میں لگے لوگوں کی گنتی برابر بڑھتی جائے گی اور کسانوں کے قبضے کی زمین گھٹتی جائے گی ۔ کسانوں کی روزی کا دوسرا ذریعہ ڈھونڈھنے کے سبھی راستے بند ہوں گے ۔ کھیتی کی پیداوار بڑھانے کے راستے میں اڑچنیں بڑھیں گی ۔ کسانوں کی غریبی بڑھے گی ۔ اور ان کی بے دخلیاں بڑھیں گی، جوتوں کا رقبہ گھٹتا جائے گا ۔ کسان قرض سے لدینگے ۔ آپسی دشمنی بڑھے گی، اور سماجک تناؤ بڑھے گا ۔

زمینداری پرتھا کی یہ سب خرابیاں نئے نظام میں بھی موجود رہیں گی، فرق صرف اتنا ہوگا کہ مالگذاری زمیندار وصول نہ کریگا، سرکار کرے گی ۔ دوسرے شبدوں میں زمیندار کی جگہ سرکار زمیندار بنے گی ۔ ہمارے صوبے کے

गांव सभा का असली रूप

यह सब पढ़ कर लगेगा कि इस क़ानून के जरिये राम-राज, पंचायत राज या सोवियत राज क़ायम हो रहा है. क़ानून के मक़सद में ही कहा गया है—गांव को एक छोटा लोकराज और सहकारी समाज बनाने वाला यह क़ानून लोगों में आर्थिक और सामाजिक विकास और सामाजिक ज़िम्मेदारी और भावना पैदा करने के लिये है. हम इस गांव सभा की पैदाइश और उसका असली रूप बताने की कोशिश नीचे करेंगे.

सभी बालिग़ों से हाथ उठवा कर जियादा गिनती वालों को चुनने का जो तरीक़ा गांव सभाओं में इस्तेमाल होता है उसमें छोटे किसानों और खेतिहर मजदूरों के लिये इन्साफ़ की गारन्टी नहीं रह जाती. अपने ठाकुर के ख़िलाफ़ हाथ उठाने में अभी किसान हिचकिचाता है. असली लोकराज के लिये तो यह तरीक़ा सही नहीं है. आज सही लोकराज में वोट देने का वही तरीक़ा सही माना जाता है जो रूस वग़ैरा में लागू है. उसे हम सच्चा लोकराज कहते हैं.

"गांव का लोकराज या सहकारी समाज" ऐसे शब्द हैं जो सुनने में अच्छे लगते हैं. लेकिन असल में उनके अर्थ हमेशा इतने अच्छे नहीं होते. गांवों में जमींदार और महाजन हमेशा जुल्म ढाने वाले और दमन करने वाले रहे हैं. यही लोग गांव सभा में भी मौजूद हैं. जमींदारी ख़तम होने के बाद जमींदारों का असर और रोबदाब रातों रात तो ख़तम हुए नहीं. उनकी ताक़त गांव के समाज पर क़ब्ज़ा जमाए रहती है. सूबे में पंचायत राज का जो पिछले तीन साल का अनुभव है, वह हमारे इस बयान को सही साबित करता है.

हर गांव में आम तौर पर दो या दो से जियादा गुट या दल होते हैं. हर दल का कोई न कोई नेता होता है. ऐसी हालत में इन गांव सभाओं में दबी पिसी जनता की आवाज़ नहीं सुनी जाती. गांवों के अमीरों का ही बोल बाला रहता है. गांवों के यह दल आपस में लडते रहते हैं. उनके नेता अपना अपना असर और क़ब्ज़ा बढ़ाने की धुन में किसानों के हितों की आड़ लेते हैं. गांव सभाओं की परती पर क़ब्ज़ा पाने के बाद हर गुट अपने अपने आदमियों को उसका पट्टा दिलाने की कोशिश करेगा और उसके लिये किसानों के वोट मांगेगा. और इस तरह दोनों गुट किसानों की दुहाई देंगे. किसान इस तरह दो दल में बंट जायंगे. ज़मींदार महाजन यही तो चाहते हैं. किसानों की फूट से उनकी लूट खसोट का रास्ता खुलेगा. ज़ुल्म और सितम तो नई शकल में जारी रहेंगे ही, कुनबा परस्ती और रिशवत के बाज़ार भी गरम रहेंगे.

گاؤں سبھا کا اصلی روپ

یہ سب پڑھکر لگے گا کہ اس قانون کے ذریعے رام راج' پنچایت راج یا سویت راج قائم ہو رہا ہے . قانون کے مقصد میں ہی کہا گیا ہے—گاؤں کو ایک چھوٹا لوک راج اور سہکاری سماج بنانے والا یہ قانون لوگوں میں آرتھک اور سماجک وکاس اور سماجک، ذمے داری اور بھاؤنا پیدا کرنے کے لئے ہے . ہم اس گاؤں سبھا کی پیدائش اور اُس کا اصلی روپ بتانے کی کوشش نیچے کریں گے .

سبھی بالغوں سے ہاتھ اٹھوا کر زیادہ گنتی والوں کو چننے کا جو طریقہ گاؤں سبھاؤں میں استعمال ہوتا ہے اُس میں چھوٹے کسانوں اور کھیتی‌ہر مزدوروں کے لئے انصاف کی گارنٹی نہیں رہ جاتی . اپنے ٹھاکر کے خلاف ہاتھ اُٹھانے میں ابھی کسان ہچکچاتا ہے . اصلی لوک‌راج کے لئے تو یہ طریقہ صحیح نہیں ہے . آج صحیح لوک راج میں ووٹ دینے کا وہی طریقہ صحیح مانا جاتا ہے جو روس وغیرہ میں لاگو ہے . اسے ہم سچا لوک راج کہتے ہیں .

'' گاؤں کا لوک راج یا سہکاری‌سماج '' ایسے شبد ہیں جو سننے میں اچھے لگتے ہیں . لیکن اصل میں اُن کے ارتھ ہمیشہ اتنے اچھے نہیں ہوتے . گاؤں میں زمیندار اور مہاجن ہمیشہ ظلم ڈھانے والے اور دمن کرنے والے رہے ہیں . یہی لوگ گاؤں سبھا میں بھی موجود ہیں . زمینداری ختم ہونے کے بعد زمینداروں کا اثر اور رعب داب راتوں رات تو کم ہوئے نہیں . اُن کی طاقت گاؤں کے سماج پر قبضہ جمائے رہتی ہے . صوبے میں پنچایت راج کا جو پچھلے تین سال کا انوبھو ہے' وہ ہمارے اس بیان کو صحیح ثابت کرتا ہے .

ہر گاؤں میں عام طور پر دو یا دو سے زیادہ گٹ یا دل ہوتے ہیں . ہر دل کا کوئی نہ کوئی نیتا ہوتا ہے . ایسی حالت میں اِن گاؤں سبھاؤں میں دبی پسی جنتا کی آواز نہیں سنی جاتی . گاؤں کے امیروں کا ہی بول بالا رہتا ہے . گاؤں کے یہ دل آپس میں لڑتے رہتے ہیں . اُن کے نیتا اپنا اپنا اثر اور قبضہ بڑھانے کی دھن میں کسانوں کے ہتوں کی آڑ لیتے ہیں . گاؤں سبھاؤں کی پرتی پر قبضہ پانے کے بعد ہر گٹ اپنے اپنے آدمیوں کو اُس کا پٹہ دلانے کی بھی کوشش کرے گا اور اُس کے لئے کسانوں کے ووٹ مانگے گا . اور اس طرح دونوں گٹ کسانوں کی دہائی دیں گے . کسان اِس طرح دو دل میں بٹ جائیں گے . زمیندار مہاجن یہی تو چاہتے ہیں . کسانوں کی پھوٹ سے اُن کی لوٹ کھسوٹ کا راستہ کھلے گا . ظلم اور ستم تو نئی شکل میں جاری رہیں گے ہی' کنبہ پرستی اور رشوت کے بازار بھی گرم رہیں گے .

झलक मिलती है, जो शायद आगे सारे सूबे में लागू हो. "जितनी ज़मीन जो काश्तकार फ़ार्म को दे, उसी के हिसाब से उसमें उसका हिस्सा हो." झांसी के फ़ार्मों के सिलसिले में विकास मंत्री ने कहा था—हम ज़मीन की क़ीमत आकेंगे और ज़मीन की मिट्टी की क़िस्म व काश्तकार के बैल व दूसरे जानवर, उसकी क़ाबलियत, होशियारी व जानकारी वग़ैरा का अन्दाज़ा लगा कर फ़ार्म की उपज उसी हिसाब से बांट देंगे.

सरकार जैसी सहकारी खेती चलाना चाहती है, उसकी एक झलक इस बयान में मिलती है. ऐसे फ़ार्मों और ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियों में क्या अन्तर होगा यह बताना शायद मंत्री जी के लिये भी मुश्किल हो. बरसों की मेहनत के बाद सरकार ने दो फ़ार्म झांसी में खोले जिन्हें वह "आदर्श" बताती है. पर इन्हीं फ़ार्मों के कुछ किसानों ने दबाव और धमकी की शिकायतें भी कीं. उजरत और मज़दूरी न मिलने की शिकायतें तो आम थीं. एक किसान ने कहा—"मुझे धमकी दी गई कि अगर फ़ार्म में शामिल न हुआ तो जेल भेज दिया जाऊंगा."

गांव सभा

भूमि सुधार क़ानून के मुताबिक़ हर गांव में एक गांव सभा बनेगी. गांव वालों के मिले जुले संगठन के रूप में यह सभा चल और अचल जायदाद लेने, रखने, उसके बन्दोबस्त करने, उसका तबादला करने, ठेके और समझौते करने और इस सब के लिये अदालत जाने का हक़ रखेगी. गांव सभा की यह शक्ल ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनी से मिलती जुलती है. गांव में रहने वाले सभी बालिग़ और गांव की ज़मीन के भूमिधर, सीरदार, आदिवासी व असामी सभा के मेम्बर होंगे. बाग़ों और ऊसर ज़मीन को छोड़ कर बाक़ी सब भूमि, जंगल, पेड़, सब के इस्तेमाल के कुएं, हाट, बाज़ार, मेले, तालाब वग़ैरा सभा के अधिकार में रहेंगे और वही इनका इन्तज़ाम करेगी. खेती का विकास और सुधार, जंगलों व पेड़ों की देख भाल, गांव के रास्तों व आबादी का रख-रखाव और विकास, हाट बाज़ारों का इन्तज़ाम और जानवरों की नस्ल सुधारने, चकबन्दी, घरेलू धन्दों का विकास, कुएं तालाबों का इन्तज़ाम वग़ैरा सभी की ज़िम्मेदारी गांव सभा पर होगी. गांव सभा की पंचायतें यह काम करेंगी. पंचायतों के दस मेम्बर होंगे. कोढ़ी, पागल, सरकारी नौकर, अपराधी वग़ैरा उसके मेम्बर न हो सकेंगे. जिनसे नेक चलनी के लिये मुचलके लिये गए हों वह भी मेम्बर न हो सकेंगे. यह पंचायतें सरकारी हुक्मों की पाबन्द होंगी और उन्हें लागू करेंगी. पर किसी ख़ास हालत में सरकार पंचायतों से यह हक़ ले सकेगी और काम चलाने का दूसरा इन्तज़ाम कर सकेगी.

جھلک ملتی ہے' جو شاید آگے سارے صوبے میں لاگو ہو. "جتنی زمین جو کاشتکار فارم کو دے' اُسی کے حساب سے اُس میں اس کا حصہ ہو." جھانسی کے فارموں کے سلسلہ میں وکاس منتری نے کہا تھا—ہم زمین کی قیمت آنکیں گے اور زمین کی مٹی کی قسم و کاشتکار کے بیل و دوسرے جانور' اس کی قابلیت' ہوشیاری و جانکاری وغیرہ کا اندازہ لگا کر فارم کی اُپج اُسی حساب سے بانٹ دینگے.

سرکار جیسی سہکاری کھیتی چلانا چاہتی ہے' اس کی ایک جھلک اِس بیان میں ملتی ہے. ایسے فارموں اور جوائنٹ اسٹاک کمپنیوں میں کیا انتر ہوگا یہ بتانا شاید منتری جی کے لئے بھی مشکل ہو. برسوں کی محنت کے بعد سرکار نے دو فارم جھانسی میں کھولے جنہیں وہ "آدرش" بتاتی ہے. پر اِنہیں فارموں کے کچھ کسانوں نے دباؤ اور دھمکی کی شکایتیں بھی کیں. اُجرت اور مزدوری نہ ملنے کی شکایتیں تو عام تھیں. ایک کسان نے کہا—"مجھے دھمکی دی گئی کہ اگر فارم میں نہ شامل ہوا تو جیل بھیجدیا جاؤںگا."

گاؤں سبھا

بھومی سدھار قانون کے مطابق ہر گاؤں میں ایک گاؤں سبھا بنے گی. گاؤں والوں کے ملے جلے سنگھٹن کے روپ میں یہ سبھا چل اور اچل جائداد لینے' رکھنے' اُس کے بندوبست کرنے' اُس کا تبادلہ کرنے' ٹھیکے اور سمجھوتے کرنے اور اِس سب کے لئے عدالت جانے کا حق رکھے گی. گاؤں سبھا کی یہ شکل جوائنٹ اسٹاک کمپنی سے ملتی جلتی ہے. گاؤں میں رہنے والے سبھی بالغ اور گاؤں کی زمین کے بھومی دھر' سیردار' آدی واسی و اسامی سبھا کے ممبر ہونگے. باغوں اور اوسر زمین کو چھوڑ کر باقی سب بھومی' جنگل' پیڑ' سب کے استعمال کے کنوئیں' ہاٹ' بازار' میلے' تالاب وغیرہ سبھا کے ادھیکار میں رہینگے اور وہی اِن کا انتظام کریگی. کھیتی کا وکاس اور سدھار' جنگلوں و پیڑوں کی دیکھ بھال' گاؤں کے راستوں و آبادی کا رکھ رکھاؤ اور وکاس' ہاٹ بازاروں کا انتظام اور جانوروں کی نسل سدھارنے' چکبندی' گھریلو دھندوں کا وکاس' کنوے تالابوں کا انتظام وغیرہ سبھی کی ذمہداری گاؤں سبھا پر ہوگی. گاؤں سبھا کی پنچایتیں یہ کام کرینگی. پنچایتوں کے دس ممبر ہونگے. کوڑھی' پاگل' سرکاری نوکر' اپرادھی وغیرہ اُس کے ممبر نہ ہوسکیں گے. جن سے نیک چلنی کے لئے مچلکے لئے گئے ہوں وہ بھی ممبر نہ ہوسکیں گے. یہ پنچایتیں سرکاری حکموں کی پابند ہونگی اور اُنہیں لاگو کرینگی. پر کسی خاص حالت میں سرکار پنچایتوں سے یہ حق لے سکے گی اور کام چلانے کا دوسرا انتظام کرسکے گی.

भी क़ानून ने सहकारी खेती का एक तरीक़ा बताया है. अगर किसी इलाक़े की दो तिहाई ज़मीन के भूमिधर और सीरदार (उनकी गिनती भी कुल किसानों की गिनती के दो तिहाई होनी चाहिये) कलक्टर को सहकारी फ़ार्म के लिये अर्ज़ी दें तो सारी ज़मीन का तबादला सहकारी फ़ार्म के लिये हो जायगा. इसमें से छोटी बड़ी जोतों की कैद नहीं रक्खी गई है, पर फ़ार्म की ज़मीन की मिल्कियत भूमिधरों व सीरदारों की होगी. अगर छोटी ग़ैर गुज़ारे लायक़ जोतों वाले काश्तकार इस फ़ार्म में शामिल न हो सकें तो कलक्टर उनकी ज़मीन ले सकता है. फ़ार्म की ज़मीन की चकबन्दी हो जायगी और मेम्बरों को बने नियमों की पाबन्दी करनी होगी किसी मेम्बर की मौत होने पर उसका वारिस उसकी जगह फ़ार्म का मेम्बर हो सकता है. सरकार इन फ़ार्मों को क़र्ज़ व दूसरी सहूलतें देगी, खेती की आमदनी पर सरकारी टैक्स व लगान में कमी हो जायगी, सरकार की तरफ़ से उन्हें खेती के सिलसिले में मुफ़्त सलाह मिला करेगी, सिंचाई में भी अव्वल नम्बर उनका होगा, सरकार सहायता के लिये एक मुश्त रक़म मुफ़्त देगी, वग़ैरा वग़ैरा.

इस में किसका फ़ायदा है ?

दुनिया का तजुरबा है कि सहकारी खेती को बढ़ावा देने के लिये ज़मीन के बंटवारे से बढ़ कर दूसरी कोई चीज़ नहीं है. इसमें छोटे किसान और बंटवारे से ज़मीन पाने वाले लोग उमंग में आगे बढ़ते हैं और सहकारी खेती के आन्दोलन के नेता बनते हैं. बंटवारा न होने पर किसानों में इस तरफ़ दिलचस्पी और उत्साह पैदा करने के लिये सरकार ने जो सहूलतें दी हैं उनका फ़ायदा मुट्ठी भर बड़े किसान ही उठा सकेंगे. इस सवाल पर ग़ौर करने के लिये एक दूसरी बात भी ध्यान में रखना चाहिये. माल गुज़ारी से वसूल होने वाली रक़म का एक बहुत छोटा हिस्सा ही सरकार खेती पर ख़र्च करती है. छोटे किसानों से मिलने वाली करोड़ों की रक़म खेती के विकास पर नहीं ख़र्च होगी बल्कि ज़मींदारों के मुआविज़े पर ख़र्च होगी. और सहकारी खेती के विकास के लिये बड़ी रक़म चाहिये.

दो तिहाई किसानों की रज़ामन्दी की शर्त लगाना एक तिकड़म है जिससे छोटे ग़ैर गुज़ारे लायक़ जोतों वाले किसान उन सहूलतों से भी वंचित रखे जायंगे जो कि सहकारी फ़ार्मों को मिलती हैं.

सहकारी खेती के इस ढांचे में अगर किसी को उत्साह पैदा हो सकता है तो वह है ज़मींदार और बड़ा किसान. क़ानून में वह उसूल भी नहीं बताया गया जिस उसूल पर फ़ार्म की उपज उसके मेम्बरों में बांटी जायगी. झांसी में सरकारी परवरिश में जो फ़ार्म हैं उनसे इन उसूलों की

بھی قانون نے سہکاری کھیتی کا ایک طریقہ بتایا ہے ۔ اگر کسی علاقے کی دو تہائی زمین کے بھومی دھر اور سیردار (اُن کی گنتی بھی کل کسانوں کی گنتی کی دو تہائی ہونی چاہئے) کلکٹر کو سہکاری فارم کے لئے عرضی دیں تو ساری زمین کا تبادلہ سہکاری فارم کے لئے ہوجائیگا ۔ اِس میں چھوٹی بڑی جوتوں کی قید نہیں رکھی گئی ہے' پر فارم کی زمین کی ملکیت بھومی دھروں و سیرداروں کی ہوگی ۔ اگر چھوٹی غیر گذارے لائق جوتوں والے کاشتکار اس فارم میں شامل نہ ہوسکیں تو کلکٹر اُن کی زمین لے سکتا ہے ۔ فارم کی زمین کی چک بندی ہو جائیگی اور ممبروں کو بنے نیموں کی پابندی کرنی ہوگی ۔ کسی ممبر کی موت ہونے پر اُسی کا وارث اُس کی جگہ فارم کا ممبر ہوسکتا ہے ۔ سرکار ان فارموں کو قرض و دوسری سہولتیں دیگی' کھیتی کی آمدنی پر سرکاری ٹیکس و لگان میں کمی ہو جائیگی' سرکار کی طرف سے اُنہیں کھیتی کے سلسلے میں مفت صلاح ملا کریگی' سنچائی میں بھی اول نمبر اُن کا ہوگا' سرکار سہایتا کے لئے ایک مشت رقم مفت دیگی' وغیرہ وغیرہ ۔

اِس میں کس کا فائدہ ہے؟

دنیا کا تجربہ ہے کہ سہکاری کھیتی کو بڑھاوا دینے کے لئے زمین کے بٹوارے سے بڑھ کر دوسری کوئی چیز نہیں ہے ۔ اِس میں چھوٹے کسان اور بٹوارے سے زمین پانے والے لوگ اُمنگ میں آگے بڑھتے ہیں اور سہکاری کھیتی کے آندولن کے نیتا بنتے ہیں ۔ بٹوارہ نہ ہونے پر کسانوں میں اِس طرف دلچسپی اور اُتساہ پیدا کرنے کے لئے سرکار نے جو سہولتیں دی ہیں اُن کا فائدہ مٹھی بھر بڑے کسان ہی اُٹھا سکیں گے ۔ اس سوال پر غور کرنے کے لئے ایک دوسری بات بھی دھیان میں رکھنا چاہئے ۔ مالگذاری سے وصول ہونے والی رقم کا ایک بہت چھوٹا حصہ ہی سرکار کھیتی پر خرچ کرتی ہے ۔ چھوٹے کسانوں سے ملنے والی کروڑوں کی رقم کھیتی کے وکاس پر نہیں خرچ ہوگی بلکہ زمینداروں کے معاوضے پر خرچ ہوگی ۔ اور سہکاری کھیتی کے وکاس کے لئے بڑی رقم چاہئے ۔

دو تہائی کسانوں کی رضامندی کی شرط لگانا ایک تکڑم ہے جس سے چھوٹے غیر گذارے لائق جوتوں والے کسان اُن سہولیتوں سے بھی بنچت رکھے جائینگے جو کہ سہکاری فارموں کو ملتی ہیں ۔

سہکاری کھیتی کے اس ڈھانچے میں اگر کسی کو اُتساہ پیدا ہوسکتا ہے تو وہ ہے زمیندار اور بڑا کسان ۔ قانون میں وہ اصول بھی نہیں بتایا گیا جس اصول پر فارم کی اُپج اس کے ممبروں میں بانٹی جائے گی ۔ جھانسی میں سرکاری پرورش میں جو فارم ہیں اُن سے اِن اصولوں کی

लेकिन सीधा साधा सवाल यह उठता है कि आदिवासी से पांच साल का इन्तज़ाम क्यों कराया जा रहा है और उसे ज़मींदार के रहम पर क्यों छोड़ा जा रहा है? जहां तक लगान का ताल्लुक़ है बेचारे आदिवासी पर कड़ी मार पड़ी है. या तो वह मालिक की मरज़ी का मनमाना लगान देने को तैयार हो और या जब चाहे बेदख़ल कर दिया जाय और मौरूसी लगान से एक तिहाई और ज़ियादा दे. अगर मालिक के पास आठ एकड़ से कम ज़मीन है, तो भी वह आदिवासी को बेदख़ल कर सकता है.

हम न्याय की बुनियाद पर इस नीति का विरोध करते हैं. अगर इस क़ानून का इरादा यह है कि देहाती जनता ढंग से ज़मीन पर बस जाय, तो यह देखना ज़रूरी है कि ज़मींदार खेती को अपना ख़ास पेशा बनाता है या वह गुज़ारे के लिये दूसरे काम करता है और खेती केवल थोड़ी सी मदद के लिये करता है. अगर उसका ख़ास पेशा खेती नहीं है, तो बेदख़ल उसे होना चाहिये न कि आदिवासी को. अगर यह उसूल लागू हो तो आदिवासी सुरक्षित हो जाय. पर यहां तो सरकार नीलाम में सब से ज़ियादा बोली लगाने वालों को ही भूमिधर बनाने की फ़िकर में परेशान मालूम पड़ती है. भूमिधरों को एक और रिआयत मिली है. अगर आदिवासी भूमिधर बनता है तो सरकार उस ज़मीन के लिये ज़मींदार को मुआविज़ा देगी. ऐसी हालत में आम किसानों की ग़रीबी बढ़ती ही जायगी. जहां तक सहकारी खेती का सवाल है वह बड़े जोतेदारों के हाथ में एक ऐसा हथियार है जिससे सिर्फ़ वही फ़ायदा उठा सकते हैं. इस बात का पूरा सबूत हम नीचे देंगे.

8. सहकारी खेती

सरकार के नए भूमि सुधार क़ानून के मुताबिक़ चार तरह के किसान होंगे. पर जैसे शेर बकरी के एक घाट पानी पीने की बात अनहोनी है, वैसे ही इन अलग अलग क़िस्मों के काश्तकारों की सहकारी खेती भी अनहोनी है. इस ढांचे में तो सुधार की अमरीकी "पायलट" की स्कीम ही चल सकती है, जिसमें ग़रीब की ग़रीबी बढ़ती जाती है और साथ में अमीर की अमीरी भी! लेकिन जिन लोगों ने यह क़ानून बनाया उन्हें किसानों की इस बढ़ती हुई मांग का पता था कि सहकारी खेती हो इसलिये इसका ढोल पीटने के लिये क़ानून ने गुंजाइश कर ली है कि हम भी सहकारी खेती को बढ़ावा देना चाहते हैं.

गांव सभा के कोई भी भूमिधर या सीरदार मेम्बर जिन की कुल ज़मीन कम से कम तीस एकड़ है, सहकारी खेती के लिये सोसाइटी बनाने की अर्ज़ी रजिस्ट्रार को दे सकते हैं. छोटी ग़ैर गुज़ारे लायक़ जोत वाले किसानों के लिये

لیکن سیدھا سادہ سوال یہ اُٹھتا ہے کہ آدی واسی سے پانچ سال کا انتظام کیوں کرایا جارہا ہے اور اُسے زمیندار کے رحم پر کیوں چھوڑا جا رہا ہے ؟ جہاں تک لگان کا تعلق ہے بیچارے آدی واسی پر کڑی مار پڑی ہے. یا تو وہ مالک کی مرضی کا من مانا لگان دینے کو تیار ہو اور یا جب چاہے بے دخل کر دیا جائے اور موروثی لگان سے ایک تہائی اور زیادہ دے . اگر مالک کے پاس آٹھ ایکڑ سے کم زمین ہے تو بھی وہ آدی واسی کو بے دخل کر سکتا ہے .

ہم نیائے کی بنیاد پر اس نیتی کا ورودھ کرتے ہیں . اگر اس قانون کا ارادہ یہ ہے کہ دیہاتی جنتا ڈھنگ سے زمین پر بس جائے' تو یہ دیکھنا ضروری ہے کہ زمیندار کھیتی کو اپنا خاص پیشہ بناتا ہے یا وہ گذارے کے لئے دوسرے کام کرتا ہے اور کھیتی کیول تھوڑی سی مدد کے لئے کرتا ہے . اگر اسکا خاص پیشہ کھیتی نہیں ہے' تو بے دخل اسے ہونا چاہئے نہ کہ آدی واسی کو—اگر یہ اصول لاگو ہو تو آدی واسی سرکشت ہو جائے . پر یہاں تو سرکار نیلام میں سب سے زیادہ بولی لگانے والوں کو ہی بھومی دھر بنانے کی فکر میں پریشان معلوم پڑتی ہے . بھومی دھروں کو ایک اور رعایت ملی ہے . اگر آدی واسی بھومی دھر بنتا ہے تو سرکار اس زمین کے لئے زمیندار کو معاوضہ دے گی. ایسی حالت میں عام کسانوں کی غریبی بڑھتی ہی جائے گی . جہاں تک سہکاری کھیتی کا سوال ہے وہ بڑے جوتے داروں کے ہاتھ میں ایک ایسا ہتھیار ہے جس سے صرف وہی فائدہ اُٹھا سکتے ہیں . اس بات کا پورا ثبوت ہم نیچے دیں گے .

8. سہکاری کھیتی

سرکار کے نئے بھومی سدھار قانون کے مطابق چار طرح کے کسان ہونگے . پر جیسے شیر بکری کے ایک گھاٹ پانی پینے کی بات اَن ہونی ہے' ویسے ہی اِن الگ الگ قسموں کے کاشتکاروں کی سہکاری کھیتی بھی اَن ہونی ہے. اس ڈھانچے میں تو سدھار کی امریکی "پایلٹ" کی اسکیم ہی چل سکتی ہے' جس میں غریب کی غریبی بڑھتی جاتی ہے اور ساتھ میں امیر کی امیری بھی ! لیکن جن لوگوں نے یہ قانون بنایا اُنھیں کسانوں کی اس بڑھتی ہوئی مانگ کا پتہ تھا کہ سہکاری کھیتی ہو اس لئے اِس کا ڈھول پیٹنے کے لئے قانون میں گنجائش کرلی ہے کہ ہم بھی سہکاری کھیتی کو بڑھاوا دینا چاہتے ہیں .

گاؤں سبھا کے کوئی بھی بھومی دھر یا سیردار ممبر جن کی کل زمین کم سے کم تیس ایکڑ ہے' سہکاری کھیتی کے لئے سوسائٹی بنانے کی عرضی رجسٹرار کو دے سکتے ہیں . چھوٹی غیر گذارے لائق جوت والے کسانوں کے لئے

और स्थाई मालिक दूसरा होगा. इस मालिक की मरज़ी पर आरज़ी तौर से ज़मीन ले कर वह काश्त कर सकेगा. अगर भूमिधर या सीरदार के हक़ ज़मीन के किसी हिस्से में ख़तम हुए तो असामी के अधिकार अपने आप ही ख़तम हो जायंगे. उसका लगान किसी उसूल के मातहत तय नहीं होगा. ज़मीन के मालिक (या गांव सभा) जितनी ज़मीन उठायेंगे और जितने असामी ज़मीन लेंगे उसके हिसाब से भाव ताव और समझौते से लगान की रक़म तय होगी. ज़मीन का मालिक (या गांव सभा) 100 में 99 बार असामी को दाब कर मनमाना लगान वसूल करेगी. यह उसूल आसामी पर ऐसी आफ़तें ढायगा जिसका बयान करना मुश्किल है. जब असामी बढ़े हुए लगान को अदा नहीं कर पायगा तब ज़मीन के मालिक उसकी ज़मीन और अगर बाग़ हुआ तो पेड़ के फल वग़ैरा पर क़ब्ज़ा कर लेंगे. लगान के लिये फ़सल पर क़ब्ज़ा कर लेने का अख़्तियार हर काश्तकार के ख़िलाफ़ इस्तेमाल हो सकता है, पर असामी की ग़रीबी के कारन क़ानून की सब से कड़ी मार उसी बेचारे पर पड़ेगी. आज से सौ डेढ़ सौ साल पहले अंगरेज़ी बन्दोबस्त अफ़सरों ने पहले पहल जो हक़ किसानों को दिये थे, वह इन असामियों के हक़ों से कम हरगिज़ नहीं थे. लगान की वसूली के तरीक़ों में भी काफ़ी धांधली है. असिस्टेन्ट कलकटर, गांव सभा या जिसे लगान पाना हो वह, अपने मन के मुताबिक़ लगान नक़द, माल में या जिस शक्ल में चाहेगा वसूल करेगा माल या दूसरी चीज़ की क़ीमत भी यह लोग ही आंकेंगे. लगान पैदावार की शकल में भी लिया जा सकेगा. अगर लगान का एक हिस्सा भी बक़ाया रह जाय तो असामी को बेदख़ल कर दिया जायगा. इस तरह सन '39 के क़ानून के मातहत काश्तकार को जो हक़ मिले हुए थे, ज़मींदारी अन्त क़ानून अब उन्हें भी छीन लेगा. अभी तक काश्तकार बेदख़ल नहीं किया जा सकता था. नया क़ानून उसे बेदख़ल भी कर देगा. अब देखिये आदिवासी का हाल.

आदिवासी

सीर के काश्तकार (जो सीरदार या भूमिधर नहीं हैं) शिकमी काश्तकार और भूमिधर सीरदार व असामी छोड़ कर और सभी आदिवासी हैं. उनकी गिनती साढ़े सैंतीस लाख है जो कि कुल काश्तकारों की गिनती का साढ़े चौदह फ़ी सदी है. कुल ज़मीन का सवा सात फ़ी सदी इनके पास है.

आदिवासी भी हर तरह की लूट खसोट और ज़ियादती के शिकार हैं. इन्हें अपनी ज़मीन छिन जाने और बेदख़ल हो जाने का ख़तरा हमेशा बना रहता है. क़ानून ने उन्हें मेहरबानी कर के छूट दी है कि पांच साल बाद या ज़मींदार की मरज़ी से कभी भी वह भूमिधर बन सकेंगे.

اور استھائی مالک دوسرا ہوگا ۔ اس مالک کی مرضی پر عارضی طور سے زمین لے کر وہ کاشت کر سکے گا ۔ اگر بھومی دھر یا سیردار کے حق زمین کے کسی حصے میں ختم ہوئے تو اسامی کے ادھیکارا اپنے آپ ہی ختم ہو جائیں گے ۔ اسکا لگان کسی اصول کے ماتحت طے نہیں ہوگا ۔ زمین کے مالک (یا گاؤں سبھا) جتنی زمین اٹھائیں گے اور جتنے اسامی زمین لیں گے اس کے حساب سے بھاؤ تاؤ اور سمجھوتے سے لگان کی رقم طے ہوگی ۔ زمین کا مالک (یا گاؤں سبھا) 100 میں 99 بار اسامی کو داب کر من مانا لگان وصول کرے گی ۔ یہ اصول اسامی پر ایسی آفتیں ڈھائے گا جس کا بیان کرنا مشکل ہے ۔ جب اسامی بڑھے ہوئے لگان کو ادا نہیں کر پائے گا تب زمین کے مالک اس کی زمین اور اگر باغ ہوا تو پیڑ کے پھل وغیرہ پر قبضہ کر لیں گے ۔ لگان کے لئے فصل پر قبضہ کر لینے کا اختیار ہر کاشتکار کے خلاف استعمال ہو سکتا ہے ، پر اسامی کی غریبی کے کارن قانون کی سب سے کڑی مار اسی بیچارے پر پڑے گی ۔ آج سے سو ڈیڑھ سو سال پہلے انگریزی بندوبست افسروں نے پہلے پہل جو حق کسانوں کو دیئے تھے ، وہ ان اسامیوں کے حقوں سے کم ہرگز نہیں تھے ۔ لگان کی وصولی کے طریقوں میں بھی کافی دھاندلی ہے ۔ اسسٹنٹ کلکٹر ، گاؤں سبھا یا جسے لگان پانا ہو وہ ، اپنے من مطابق لگان نقد ، مال میں یا جس شکل میں چاہے گا وصول کرے گا ۔ مال یا دوسری چیز کی قیمت بھی یہ لوگ ہی آنکیں گے ۔ لگان پیداوار کی شکل میں بھی لیا جا سکے گا ۔ اگر لگان کا ایک حصہ بھی بقایا رہ جائے تو اسامی کو بے دخل کر دیا جائے گا ۔ اس طرح سن '39 کے قانون کے ماتحت کاشتکار کو جو حق ملے ہوئے تھے ، زمینداری انت قانون اب انہیں بھی چھین لے گا ۔ ابھی تک کاشتکار بے دخل نہیں کیا جا سکتا تھا ۔ نیا قانون اسے بے دخل بھی کر دے ۔ اب دیکھئے آدی واسی کا حال ۔

آدی واسی

سیر کے کاشتکار (جو سیردار یا بھومی دھر نہیں ہیں) شکمی کاشتکار اور بھومی دھر سیردار و اسامی چھوڑ کر اور سبھی آدی واسی ہیں ۔ ان کی گنتی ساڑھے سینتیس لاکھ ہے جو کہ کل کاشتکاروں کی گنتی کا ساڑھے چودہ فی صدی ہے ۔ کل زمین کا سوا سات فی صدی ان کے پاس ہے ۔

آدی واسی بھی ہر طرح کی لوٹ کھسوٹ اور زیادتی کے شکار ہیں ۔ انہیں اپنی زمین چھن جانے اور بے دخل ہو جانے کا خطرہ ہمیشہ بنا رہتا ہے ۔ قانون نے انہیں مہربانی کر کے چھوٹ دی ہے کہ پانچ سال بعد یا زمیندار کی مرضی سے کبھی بھی وہ بھومی دھر بن سکیں گے ۔

भूमिधरों और सीरदारों में दो बुनियादी फ़र्क़ हैं. सीरदार ज़मीन बेच नहीं सकते और उस पर सिर्फ़ खेती या जानवर पालने वग़ैरा का काम ही कर सकते हैं. लेकिन उनके साथ जो सबसे ख़राब शर्त लगी है, वह है उनकी बेदख़ली की. उन्हें बेदख़ल करने के कई क़ानूनी तरीक़े हैं :—

ज़मीन के मालिक (जैसे गांव सभा) झूट मूट दिखा दे कि सीरदार ने ज़मीन दूसरे को दी है और इस बिना पर उसे बेदख़ल कर दे.

अगर सीरदार ज़मीन पर खेती के अलावा और कुछ करता है तो उसे न सिर्फ़ बेदख़ल ही कर दिया जायगा बल्कि उससे वह ख़र्च भी वसूल किया जायगा जो ज़मीन को फिर से खेती के क़ाबिल बनाने में लगेगा इसके ख़िलाफ़ भूमिधर अपनी ज़मीन पर कारख़ाना भी चला सकेगा. लड़ाई में और उसके बाद, ज़मींदारों ने बड़ी बड़ी रक़में नज़राने में वसूल कर चरागाहें तक उठा दीं. सरकार यह जानती है. पर क़ानून इसके लिये ज़मींदार को नहीं सीरदार को सज़ा देगा, क्योंकि गांव सभाओं की शिकायत पर सीरदार चरागाहों से बेदख़ल कर दिये जायंगे.

इससे साबित है कि सीरदारों के हक़ों की रक्षा इस क़ानून में नहीं है.

असामी

नीचे लिखे किसी भी क़िस्म के काश्तकार असामी कहलाएंगे जो ज़मींदारी अन्त क़ानून के मुताबिक़ काश्तकारों की तीसरी क़िस्म है.

(1) ज़मींदारों के ग़ैर दख़ीलकार काश्तकार.

(2) बाग़ के शिकमी काश्तकार.

(3) जिनके पास काश्तकारों ने अपनी ज़मीन रहन रखी है.

(4) चरागाहें, पानी से भरी (सिंघाडा वग़ैरा पैदा करने वाली) ज़मीन और नदी के कछार की वह ज़मीन जहां कभी कभी खेती होती है—के ग़ैर दख़ीलकार काश्तकार. इनमें तांगिया खेती करने वाले भी शामिल हैं.

(5) ठेकेदार.

(6) क़ानून के मातहत जिन्हें असामी बनाया गया हो.

इस क़ानून के लागू होते ही राज के दो लाख ग़ैर दख़ीलकार काश्तकार असामी हो गए. असामी के ज़मीन पर वही हक़ हैं जो सीरदार के हैं और बेदख़ली वग़ैरा का ख़तरा भी उसका वैसा ही है. लेकिन "नये समाज" में असामी का दरजा और रुतबा सीरदार से नीचे है. असामी उस ज़मीन का काश्तकार होगा जिसका पक्का

بھومی دھروں اور سیرداروں میں دو بنیادی فرق ھیں. سیردار زمین بیچ نہیں سکتے اور اُس پر صرف کھیتی یا جانور پالنے وغیرہ کا کام ھی کرسکتے ھیں . لیکن اُن کے ساتھ جو سب سے خراب شرط لگی ھے' وہ ھے اُن کی بیدخلی کی . اُنھیں بیدخل کرنے کے کئی قانونی طریقے ھیں :—

زمین کے مالک (جیسے گاؤں سبھا) جھوٹ موٹ دکھا دے کہ سیردار نے زمین دوسرے کو دی ھے اور اس بنا پر اُسے بیدخل کردے .

اگر سیردار زمین پر کھیتی کے علاوہ اور کچھ کرتا ھے تو اُسے نہ صرف بیدخل ھی کر دیا جائیگا بلکہ اُس سے وہ خرچ بھی وصول کیا جائیگا جو زمین کو پھر سے کھیتی کے قابل بنانے میں لگیگا . اِس کے خلاف بھومی دھر اپنی زمین پر کارخانہ بھی چلا سکیگا . لڑائی میں اور اُس کے بعد' زمینداروں نے بڑی بڑی رقمیں نذرانے میں وصول کر چراگاھیں تک اُٹھا دیں . سرکار یہ جانتی ھے . پر قانون اس کے لئے زمیندار کو نہیں سیردار کو سزا دیگا' کیونکہ گاؤں سبھاؤں کی شکایت پر سیردار چراگاھوں سے بیدخل کر دئے جائینگے .

اِس سے ثابت ھے کہ سیردار کے حقوں کی رکشا اس قانون میں نہیں ھے .

اسامی

نیچے لکھے کسی بھی قسم کے کاشتکار اسامی کہلائینگے جو زمینداری انت قانون کے مطابق کاشتکاروں کی تیسری قسم ھے .

(1) زمینداروں کے غیر دخیل کار کاشتکار .

(2) باغ کے شکمی کاشتکار .

(3) جن کے پاس کاشتکاروں نے اپنی زمین رھن رکھی ھے .

(4) چراگاھیں' پانی سے بھری (سنگھاڑہ وغیرہ پیدا کرنے والی) زمین اور ندی کے کچھار کی وہ زمین جہاں کبھی کبھی کھیتی ھوتی ھے—کے غیر دخیل کار کاشتکار . ان میں تانگیا کھیتی کرنے والے بھی شامل ھیں .

(5) ٹھیکیدار .

(6) قانون کے ماتحت جنھیں اسامی بنایا گیا ھو .

اس قانون کے لاگو ھوتے ھی راج کے دو لاکھ غیر دخیل کار کاشتکار اسامی ھوگئے . اسامی کے زمین پر وھی حق ھیں جو سیر دار کے ھیں . اور بے دخلی وغیرہ کا خطرہ بھی اُسکا ویسا ھی ھے . لیکن " نئے سماج " میں اسامی کا درجہ اور رتبہ سیردار سے نیچا ھے . اسامی اُس زمین کا کاشتکار ھوگا جسکا پکا

बढ़ जाय. वह अपनी ज़मीन पर क़र्ज़ ले सकते हैं (लेकिन अगर वह क़र्ज़ के बदले महाजन को ज़मीन जोतने देंगे तो यह बिकरी मानी जायगी). वह बेदख़ल न हो सकेंगे, ज़मीन पर उनका हक़ तभी ख़तम होगा जब वह बिना औलाद मर जायंगे.

इस तरह क़ानून ने भूमिधरों के अधिकारों की रक्षा की पूरी कोशिश की है. अगर इन हक़ों पर कोई आघात कर सकता है तो वह है महाजनी सभ्यता का वह नियम जो हमेशा कमज़ोर को ताक़तवर के फ़ायदे के लिये क़ुरबान कर देता है. यह सोचना भी ग़लत होगा कि जितने लोग काग़ज़ पर भूमिधर हो गए हैं वह सभी रईस या पूंजी वाले हो जायंगे. सिर्फ़ मुट्ठी भर ही भूमिधर ऐसे होंगे जिन के पास ज़मीन और उस जोतने के लिये काफ़ी पूंजी और हल बैल हैं. ज़ियादातर भूमिधरों की आर्थिक हालत कमज़ोर ही है और कमज़ोर ही रहेगी.

सीरदार

उत्तर प्रदेश के ज़मींदारी अन्त क़ानून में काश्तकारों की दूसरी क़िस्म है सीरदार. नीचे लिखे 12 क़िस्मों के काश्तकार सीरदार कहलाएंगे—

(1) अवध में दवामी पट्टा वाले.

(2) सीर साक़ितुल मिलकियत वाले.

(3) दख़ीलकार काश्तकार.

(4) मौरूसी काश्तकार.

(5) कमी लगान के माफ़ीदार.

(6) चाय बग़ीचों के ग़ैर दख़ीलकार काश्तकार.

(7) वह शिकमी जो ज़ाब्ते से निकाले नहीं जा सकते हैं और जिनका असल काश्तकारों का हक़ चल गया है.

(8) बग़ीचे वाले जो भूमिधर नहीं हो पाए हैं.

(9) सीर के काश्तकार जिनके पास पुराना पट्टा रहा है.

(10) वह सभी काश्तकार जिनको ख़ाली ज़मीन पर सीरदार का अख़्तियार मिलेगा.

(11) 250 रुपए से ज़ियादा मालगुज़ारी देने वाले ज़मींदारों के वह काश्तकार जिन्हें ज़ाब्ते से खेत का हक़ नहीं मिला है.

(12) वह काश्तकार जिनकी ज़मीन और किसी की जोत में नहीं है.

इस तरह सूबे के पौने दो करोड़ किसान—(या कुल काश्तकारों के साढ़े 68 फ़ी सदी) सीरदार हैं जो सवा तीन करोड़ एकड़ ज़मीन (जो खेती की कुल ज़मीन की 72 फ़ी सदी है) के क़ाबिज़ होंगे.

بڑھ جائے . وہ اپنی زمین پر قرض لے سکتے ہیں (لیکن اگر وہ قرض کے بدلے مہاجن کو زمین جوتنے دیں گے تو یہ بکری مانی جائے گی) . وہ بے دخل نہ ہو سکیں گے، زمین پر انکا حق تب ہی ختم ہوگا جب وہ بنا اولاد مرجائیں گے .

اس طرح قانون نے بھومی دھروں کے ادھیکاروں کی رکشا کی پوری کوشش کی ہے . اگر ان حقوں پر کوئی آگھات کر سکتا ہے تو وہ ہے مہاجنی سبھیتا کا وہ نیم جو ہمیشہ کمزور کو طاقتور کے فائدے کے لئے قربان کر دیتا ہے . یہ سوچنا بھی غلط ہوگا کہ جتنے لوگ کاغذ پر بھومی دھر ہوگئے ہیں وہ سبھی رئیس یا پونجی والے ہو جائیں گے . صرف مٹھی بھر ہی بھومی دھر ایسے ہوں گے جن کے پاس زمین اور اسے جوتنے کے لئے کافی پونجی اور ہل بیل ہیں . زیادہ تر بھومی دھروں کی آرتھک حالت کمزور رہی ہے اور کمزور ہی رہے گی .

سیردار

اتر پردیش کے زمینداری انت قانون میں کاشتکاروں کی دوسری قسم ہے سیردار . نیچے لکھے بارہ قسموں کے کاشتکار سیردار کہلائیں گے .

(1) اودھ میں دوامی پٹہ والے .

(2) سیر ساقط الملکیت والے .

(3) دخیل کار کاشتکار .

(4) موروثی کاشتکار .

(5) کمی لگان کے معافی دار .

(6) چائے بغیچوں کے غیر دخیل کار کاشتکار .

(7) وہ شکمی جو ضابطے سے نکالے نہیں جا سکتے ہیں اور جن کا اصل کاشتکاروں کا حق چلا گیا ہے .

(8) بغیچے والے جو بھومی دھر نہیں ہو پائے ہیں .

(9) سیر کے کاشتکار جن کے پاس پرانا پٹہ رہا ہے .

(10) وہ سبھی کاشتکار جن کو خالی زمین پر سیردار کا اختیار ملیگا .

(11) 250 روپئے سے زیادہ مالگذاری دینے والے زمینداروں کے وہ کاشتکار جنہیں ضابطے سے کھیت جوتنے کا حق نہیں ملا ہے .

(12) وہ کاشتکار جن کی زمین اور کسی کی جوت میں نہیں ہے .

اس طرح صوبے کے پونے دو کروڑ کسان—(یا کل کاشتکاروں کے ساڑھے 68 فیصدی) سیردار ہیں جو سوا تین کروڑ ایکڑ زمین (جو کھیتی کی کل زمین کی 72 فیصدی ہے) کے قابض ہونگے .

तब तक ठीक और इनसाफ का नहीं माना गया जब तक बिना मुआविज़ा ज़मींदारी न ख़तम कर दी गई, ज़मीन का फिर से बंटवारा न हो गया, और सामन्ती काल के बढ़े हुए लगान कम न कर दिये गए.

किसानों के साथ वायदा खिलाफ़ी

लेकिन अपने पुराने वादों के खिलाफ़ यू. पी. के इस नए क़ानून बनाने वालों ने किसानों की इन बुनियादी मांगों को तो पूरा किया नहीं; बल्कि अलग अलग तरह के चार क़िस्म के काश्तकार बहाल रख कर पुराने भेद भाव जारी रखे. कई तरह के किसान होना सामन्ती बन्दोबस्त की खास निशानी है. किसान में "ऊंच नीच" का यह भेद क़ायम रखने के लिये क़ानून इतना जटिल और पेचीदा बना दिया गया है कि अनपढ़ किसानों की बात कौन कहे, पढ़े लिखे वकील और मुख़्तार भी अकसर उसे समझ नहीं पाते. जिन किसानों के हितों की रक्षा का दावा यह क़ानून करता है, वह किसान यह नहीं जानते कि इस क़ानून में है क्या.

भूमिधर

क़ानून के मुताबिक जिस क़िस्म के काश्तकार को सबसे ज़ियादा हक़ मिले हैं वह है भूमिधर. जिन सात क़िस्म की खेती वाले लोग भूमिधर बन गए हैं वह यहहैं :—

(1) जिन ज़मींदारों के पास सीर, ख़ुदकाश्त और बाग़ .

(2) अवध के दवामी पट्टा वाले जो काश्तकार की हैसियत से ज़मीन पर सीधे क़ाबिज़ हैं.

(3) बिल मुक़्ता काश्तकार या माफ़ीदार.

(4) ऐसे काश्तकार जिन्हें ज़मींदारों ने ज़मीन बेचने का अधिकार दिया है.

(5) सीरदार जो सरकार को 10-12 गुना लगान देते हैं.

(6) काश्तकार जो लगान का दस गुना जमा कर देते हैं.

(7) आदिवासी जो क़ानून लागू होने पर पांच साल बाद लगान का 15 गुना जमा कर दें या ज़मीन के मालिक की इजाज़त से कभी भी 15 गुना जमा कर दें.

इस फ़ेहरिस्त को देखने से ही पता लग जायगा कि बहुत से ऐसे लोग हैं जो बिना कुछ दिये हुए भूमिधर बन गए हैं (जैसे कि पिछले चार). नए क़ानून में भूमिधरों को सबसे ज़ियादा हक़ दिये गये हैं. ज़मीन पर उनका पूरा पूरा क़ब्ज़ा होगा और वह उसे किसी भी काम में इस्तेमाल कर सकेंगे. वह उन पर मकान बना सकेंगे और दूसरे धन्दे खोल सकेंगे. ज़मीन पर उन्हें मौरूसी हक़ होगा और वह उसे बेच सकेंगे. लेकिन अगर वह बेचें तो शर्त यह है कि ऐसे आदमी के हाथ न बेचें जिसकी जोत 30 एकड़ से ज़ियादा

تب تک ٹھیک اور انصاف کا نہیں مانا گیا جب تک بنا معاوضہ زمینداری نہ ختم کر دی گئی' زمین کا پھر سے بٹوارہ نہ ہو گیا اور سامنتی کال کے بڑھے ہوئے لگان کم نہ کر دئے گئے ۔

کسانوں کے ساتھ وعدہ خلافی

لیکن اپنے پرانے وعدوں کے خلاف یو ۔ پی. کے اس نئے قانون بنانے والوں نے کسانوں کی اُن بنیادی مانگوں کو تو پورا کیا نہیں؛ بلکہ الگ الگ طرح کے چار قسم کےکاشتکار بحال رکھکر پرانے بھید بھاؤ جاری رکھے ۔ کئی طرح کے کسان ہونا سامنتی بندوبست کی خاص نشانی ہے ۔ کسانوں میں '' اُونچ نیچ " کا یہ بھید قائم رکھنے کے لئے قانون اتنا جٹل اور پیچیدہ بنا دیا گیا ہے کہ اَن پڑھ کسانوں کی بات کون کہے' پڑھے لکھے وکیل اور مختار بھی اکثر اُسے سمجھ نہیں پاتے ۔ جن کسانوں کے ہتوں کی رکشا کا دعوی یہ قانون کرتا ہے وہ کسان یہ نہیں جانتے کہ اس قانون میں ہے کیا ۔

بھومی دھر

قانون کے مطابق جس قسم کے کاشکار کو سب سے زیادہ حق ملے ہیں وہ ہے بھومی دھر ۔ جن سات قسم کی کھیتی والے لوگ بھومی دھر بن گئے ہیں وہ ہیں :—

(1) جن زمینداروں کے پاس سیر' خود کاشت اور باغ ہیں ۔

(2)اودھ کے دوامی پٹہ والے جو کاشتکار کی حیثیت سے زمین پر سیدھے قابض ہیں ۔

(3) بل مقطہ کاشتکار یا معافی دار ۔

(4) ایسے کاشتکار جنہیں زمینداروں نے زمین بیچنے کا ادھیکار دیا ہے ۔

(5) سیردار جو سرکار کو دس بارہ گنا لگان جمع کر دیتے ہیں ۔

(6) کاشتکار جو لگان کا دس گنا جمع کر دیتے ہیں ۔

(7) آدی واسی جو قانون لاگو ہونے پر پانچ سال بعد لگان کا پندرہ گنا جمع کر دیں یا زمین کے مالک کی اجازت سے کبھی بھی پندرہ گنا جمع کر دیں ۔

اس فہرست کو دیکھنے سے ہی پتہ لگ جائے گا کہ بہت سے ایسے لوگ ہیں جو بنا کچھ دیئے ہوئے بھومی دھر بن گئے ہیں (جیسے کہ پچھلے چار) . نئے قانون میں بھومی دھروں کو سب سے زیادہ حق دے گئے ہیں ۔ زمین پر اُن کا پورا پورا قبضہ ہوگا ۔ اور وہ اُسے کسی بھی کام میں استعمال کر سکیں گے ۔ وہ ان پر مکان بنا سکیں گے اور دوسرے دھندے کھول سکیں گے ۔ زمین پر انہیں موروثی حق ہوگا اور وہ اُسے بیچ سکیں گے ۔ لیکن اگر وہ بیچیں تو شرط یہ ہے کہ ایسے آدمی کے ہاتھ نہ بیچیں جس کی جوت 30 ایکڑ سے زیادہ

जमींदारी अन्त क़ानून में लिखा है—जिस पर लगान बक़ाया हो उसे गिरफ़्तार कर पंद्रह दिन तक बन्द रक्खा जा सकता है, अगर वह पंद्रह दिन से पहले अदा कर दे तो वह पहले भी छोड़ा जा सकता है. यह दफ़ा तो विधान में दिये गए बुनियादी अधिकारों की भावना के भी ख़िलाफ़ है. सन '39 के आराजी क़ानून ने बक़ाया वसूली के लिये क़ुर्क़ी, नीलाम, गिरफ्तारी वग़ैरा सब बन्द कर दी थी. और यह क़ानून उस समय पास हुआ था जब अंगरेज़ी हुकूमत क़ायम थी. लेकिन आज कांगरेसी राज में किसानों को वह सहूलत भी नहीं मिल रही है जो अंगरेजी राज में थी. आजकल जो लगान लिया जाता है वह चालीस साल तक इसी तरह जारी रहेगा और तब तक उसकी वसूली के लिये यह जुल्म भी जारी रहेंगे.

चालीस साल के बाद बन्दोबस्त अफ़सर जा कर हर जोत की पैदावार, उस पर ख़र्च, बचत वग़ैरा तय करेंगे और उसका एक हिस्सा (जो विधान सभा तय करेगी) नए सिरे से लगान में बांधेंगे. भूमिधरों का लगान तब भी सीरदारों से आधा होगा.

यह उसूल चाहे जितना अच्छा हो पर यह बात तो माननी ही पड़ेगी कि चालीस साल बाद न्याय करने का तरीक़ा किसी लोकशाही सरकार के लिये ठीक नहीं है. आज कल का लगान और उसकी वसूली के तरीक़ों को जारी रखने का सिर्फ़ एक मतलब है और वह यह कि सरकार चालीस साल तक उत्तर प्रदेश के किसानों से सामन्ती लूट जारी रखना चाहती है.

7. कांगरेसी बन्दोबस्त

हमारे देश में ज़मीन का बन्दोबस्त कई बार हुआ. इस्तमरारी बन्दोबस्त के इलाक़ों को वहां के किसान डंकनी बन्दोबस्त कहते हैं, इसकी वजह यह है कि एक अंगरेज डंकन साहब ने इसका बन्दोबस्त किया था. हो सकता है कि ज़मींदारी के बाद का बन्दोबस्त कांगरेसी बन्दोबस्त कहा जाय क्योंकि यह बन्दोबस्त कांगरेस का चलाया हुआ है. ज़मीन के बन्दोबस्त का मतलब है वह शर्तें जिन पर काश्तकार को ज़मीन जोतने वग़ैरा के हक़ मिलते हैं. हमारे यहां जो बन्दोबस्त है उसे बदलने की मांग काफ़ी दिनों से चल रही है. इधर तो बहुत से विद्वानों ने भी यह मांग दोहराई है. कहा गया है कि इन सुधारों के बग़ैर नाज की पैदावार नहीं बढ़ सकती क्योंकि किसानों को जिन शर्तों पर ज़मीन मिलती है वह शरतें या तो ऐसी होती हैं कि जिनसे ज़मीन के साथ किसान का प्रेम बढ़े और ज़मीन को सुधारने और पैदावार बढ़ाने के लिसे उसे दिलचम्पी हो और फिर या ऐसी होती हैं जो उसके प्रेम और हिम्मत दोनों को ख़त्म कर दें. हाल में दूसरे देशों में जो सुधार हुए हैं उन्हें

زمینداری انت قانون میں لکھا ہے—جس پر لگان بقایا ہو اُسے گرفتار کر پندرہ دن تک بند رکھا جاسکتا ہے' اگر وہ پندرہ دن سے پہلے ادا کر دے تو وہ پہلے بھی چھوڑا جا سکتا ہے . یہ دفعہ تو ودھان میں دئے گئے بنیادی ادھیکاروں کی بھاونا کے بھی خلاف ہے . سن '39 کے آراضی قانون نے بقایا وصولی کے قرقی' نیلام' گرفتاری وغیرہ سب بند کردی تھی . اور یہ قانون اُس سمے پاس ہوا تھا جب انگریزی حکومت قائم تھی . لیکن آج کانگریسی راج میں کسانوں کو وہ سہولت بھی نہیں مل رہی ہے جو انگریزی راج میں تھی . آج کل جو لگان لیا جاتا ہے وہ چالیس سال تک اسی طرح جاری رہیگا اور تب تک اُس کی وصولی کے لئے یہ ظلم بھی جاری رہینگے .

چالیس سال کے بعد بندوبست افسر جاکر ہر جوت کی پیداوار' اس پر خرچ' بچت وغیرہ طے کرینگے اور اس کا ایک حصہ (جو ودھان سبھا طے کریگی) نئے سرے سے لگان میں باندھینگے . بھومی دھروں کا لگان تب بھی سیرداروں سے آدھا ہوگا .

یہ اصول چاہے جتنا اچھا ہو پر یہ بات تو ماننی ہی پڑیگی کہ چالیس سال بعد نیائے کرنے کا طریقہ کسی لوک شاہی سرکار کے لئے ٹھیک نہیں ہے . آج کل کا لگان اور اُس کی وصولی کے طریقوں کو جاری رکھنے کا صرف ایک مطلب ہے اور وہ یہ ہے کہ سرکار چالیس سال تک اُتر پردیش کے کسانوں سے سامنتی لوٹ جاری رکھنا چاہتی ہے .

7. کانگریسی بندوبست

ہمارے دیش میں زمین کا بندوبست کئی بار ہوا . استمراری بندوبست کے علاقوں کو وہاں کے کسان ڈنکنی بندوبست کہتے ہیں' اِس کی وجہ یہ ہے کہ ایک انگریز ڈنکن صاحب نے اِس کا بندوبست کیا تھا . ہو سکتا ہے کہ زمینداری کے بعد کا بندوبست کانگریسی بندوبست کہا جائے کیونکہ یہ بندوبست کانگریس کا چلایا ہوا ہے . زمین کے بندوبست کا مطلب ہے وہ شرطیں جن پر کاشتکار کو زمین جوتنے وغیرہ کے حق ملتے ہیں . ہمارے یہاں جو بندوبست ہے اُسے بدلنے کی مانگ کافی دنوں سے چل رہی ہے . ادھر تو بہت سے ودوانوں نے بھی یہ مانگ دہرائی ہے . کہا گیا ہے کہ اِن سدھاروں کے بغیر ناج کی پیداوار نہیں بڑھ سکتی کیونکہ کسانوں کو جن شرطوں پر زمین ملتی ہے وہ شرطیں یا تو ایسی ہوتی ہیں کہ جن سے زمین کے ساتھ کسانوں کا پریم بڑھے اور زمین کو سدھارنے اور پیداوار بڑھانے کے لئے اُسے دلچسپی ہو اور پھر یا ایسی ہوتی ہیں جو اس کے پریم اور ہمت دونوں کو ختم کردیں . حال میں دوسرے دیشوں میں جو سدھار ہوئے ہیں اُنہیں

जब क़ानून बनाने बैठे तो यह सुझाव भी भूल गए और पुराना लगान और लगान का पुराना तरीक़ा जारी रखा.

इस लगान की तो बुनियाद ही ग़लत है. यह तो काश्तकार ज़मींदार युग के सांचे में ही ढला हुआ है. क़ायदे से खेती या ज़मीन को पैदावार का साधन या ज़रिया मान कर ही उस पर लगान लगाना चाहिये और इसमें भी एक हद होनी चाहिये जिसके नीचे आमदनी पर लगान न लगे. नेहरू जी चाहते हैं कि देश में 'वैलफ़ेयर स्टेट' यानी 'मंगलकारी राज' हो. पर अगर जनता का 'मंगल' चाहना है तो बन्दोबस्त के ठीक होने की पहचान यही है कि सब से कम आमदनी वाले लोगों पर टैक्स का बोझ बिल्कुल न पड़े. अर्थशास्त्र के बहुत से माहिरों ने भी यही बात कही है कि ग़ैर गुज़ारे के लायक़ जोतों पर लगान उचित नहीं है.

नए क़ानून में ज़ियादाती

सन 31 में सूबा कांगरेस ने एक कमेटी इसी सिलसिले में बनाई थी. उसमें पंत जी भी थे. कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में लिखा था—"किसी जोत पर लगान तय करने का यही तरीक़ा है कि आमदनी और ख़र्च का पता लगाया जाय और अगर कुछ बचत होती हो तो उसका एक हिस्सा लगान में ले लिया जाय." दूसरे शब्दों में कमेटी ने सुझाव दिया था कि लगान का आज का उसूल ग़लत है, उसकी जगह खेती की आमदनी पर टैक्स लगाना चाहिये. इनसाफ़, भलाई और बराबरी के उसूलों की भी यही मांग है. इसी लिये फ़्लाउड कमीशन से ले कर कांगरेस की खेती सुधार कमेटी तक सभी लोगों की राय इसी बात के माफ़िक़ पड़ती है.

पर कमेटी के अमली सुझाव और क़ानून में न तो लगान कम करने की ही बात आती है और न लगान का ढांचा या उसूल बदलने का ज़िकर है. नए क़ानून के मुताबिक़ गांव की मालगुज़ारी की वसूली के लिये सभी सीरदार और भूमिधर सामूहिक या मजमूई तौर पर ज़िम्मेवार होंगे. वह 'अबवाब' के भी देनदार होंगे. नया क़ानून बनाने वालों को मालूम था कि भूमिधर का लगान आधा और सीरदार का लगान कम हो जाने के बावजूद माल गुज़ारी की वसूली में बहुत बाधाएं आयंगी. और जब तक पैदावार बढ़ाने के तरीक़ों का विकास और सुधार न हो इन बाधाओं का आना लाज़िमी है. इसीलिये नए क़ानून में किसान का दुख कम करने के बजाय पुराने सामन्ती ढंग के लगान वसूल करने के सभी ज़ालिमाना तरीक़ों को इस्तेमाल करने की छूट दे दी गई है. लगान की बक़ाया वसूल करने के लिये सम्मन, गिरफ़्तारी, नज़रबन्दी, मनक़ूला (चल) जायदाद की क़ुर्क़ी, ज़मीन पर क़ब्ज़ा या दूसरी ग़ैर मनक़ूला (अचल) मिल्कियत की ज़ब्ती और नीलाम तक की छूट है. तहसीलदार के सामने हाज़िरी मामूली बात है.

جب قانون بنانے بیٹھے تو یہ سجھاؤ بھی بھول گئے اور پرانا لگان اور لگان کا پرانا طریقہ جاری رکھا ۔

اس لگان کی تو بنیاد ہی غلط ہے ۔ یہ تو کاشتکار زمیندار یگ کے سانچے میں ہی ڈھلا ہوا ہے ۔ قاعدے سے کھیتی یا زمین کو پیداوار کا سادھن یا ذریعہ مان کر ہی اس پر لگان لگانا چاہئے اور اس میں بھی ایک حد ہونی چاہئے جس کے نیچے آمدنی پر لگان نہ لگے ۔ نہرو جی چاہتے ہیں کہ دیش میں 'ویلفیراسٹیٹ' یعنی 'منگل کاری راج' ہو ۔ پر اگر جنتا کا 'منگل' چاہنا ہے تو بندوبست کے ٹھیک ہونے کی پہچان یہی ہے کہ سب سے کم آمدنی والے لوگوں پر ٹیکس کا بوجھ بالکل نہ پڑے ۔ ارتھ شاستر کے بہت سے ماہروں نے بھی یہی بات کہی ہے کہ غیر گزارے لائق جوتوں پر لگان اُچت نہیں ہے ۔

نئے قانون میں زیادتی

سن 31' میں صوبہ کانگریس نے ایک کمیٹی اسی سلسلے میں بنائی تھی ۔ اس میں پنت جی بھی تھے ۔ کمیٹی نے اپنی رپورٹ میں لکھا تھا—"کسی جوت پر لگان طے کرنے کا یہی طریقہ ہے کہ آمدنی اور خرچ کا پتہ لگایا جائے اور اگر کچھ بچت ہوتی ہو تو اس کا ایک حصہ لگان میں لے لیا جائے ." دوسرے شبدوں میں کمیٹی نے سجھاؤ دیا تھا لگان کا آج کا اصول غلط ہے' اس کی جگہ کھیتی کی آمدنی پر ٹیکس لگانا چاہئے. انصاف' بھلائی اور برابری کے اصولوں کی بھی یہی مانگ ہے ۔ اسی لئے فلاوڈ کمیشن سے لیکر کانگریس کی کھیتی سدھار کمیٹی تک سبھی لوگوں کی رائے اسی بات کے موافق پڑتی ہے ۔

پر کمیٹی کے عملی سجھاؤ اور قانون میں نہ تو لگان کم کرنے کی ہی بات آتی ہے اور نہ لگان کا ڈھانچہ یا اصول بدلنے کا ذکر ہے ۔ نئے قانون کے مطابق گاؤں کی مالگذاری کی وصولی کے لئے سبھی سیردار اور بھومی دھر سامومک یا مجموعی طور پر ذمہ وار ہونگے ۔ وہ 'ابواب' کے بھی دین دار ہونگے ۔ نیا قانون بنانے والوں کو معلوم تھا کہ بھومی دھر کا لگان آدھا اور سیردار کا لگان کم ہو جانے کے باوجود مالگذاری کی وصولی میں بہت بادھائیں آئینگی. اور جب تک پیداوار بڑھانے کے طریقوں کا وکاس اور سدھار نہ ہو اِن بادھاؤں کا آنا لازمی ہے ۔ اسی لئے نئے قانون میں کسان کا دکھ کم کرنے کے بجائے پرانے سامنتی ڈھنگ کے لگان اصول کرنے کے سبھی ظالمانہ طریقوں کو استعمال کرنے کی چھوٹ دیدی گئی ہے ۔ لگان کی بقایا اصول کرنے کے لئے سمن' گرفتاری' نظربندی' منقولہ (چل) جائداد کی قرقی' زمین پر قبضہ یا دوسری غیر منقولہ (اچل) ملکیت کی ضبطی اور نیلام تک کی چھوٹ ہے. تحصیلدار کے سامنے حاضری معمولی بات ہے ۔

हमारे सूबे के नए ज़मींदारी अन्त क़ानून से तो शिकमियों वग़ैरा की बेदख़ली की भी बाढ़ आ जायगी. इस बुनियाद पर नए क़ानून में वह दफ़ाएं लाई गई हैं जिनसे क़ानून लागू होने के पांच साल बाद आदिवासियों की बेदख़ली होगी. इस तरह के शिकमी काश्तकार 32 लाख एकड़ ज़मीन जोतते हैं और वह बहुत ग़रीब हैं, वह मारूसी काश्तकार से दुगनी रुपया ज़ियादा लगान देते हैं. क़ानून की इस धारा से यह नहीं समझा जा सकता कि खेतिहर मज़दूरों के लिये दिखाई गई हमदर्दी सची है.

6. लगान में कमी

हमने यह भी कहा था कि सामन्ती लूट का असली बोझ लगान के ज़रिये किसान ही पर पड़ता है, इसलिये ज़मींदारी ख़ातमे का असली मतलब यह है कि किसानों पर लगान का बोझ कम हो. हमारे सूबे में फ़ी एकड़ लगान का जो औसत पड़ता है, वह दूसरे सूबों से ज़ियादा है. फ़्लाउड कमीशन की रिपोर्ट में कहा गया था कि बंगाल में दख़ीलकार काश्तकार तीन रुपया छै आना फ़ी एकड़ लगान देता है, पंजाब में तीन रुपया दो आना, यू. पी. में यही लगान इन सूबों से दूना यानी छै रुपया फ़ी एकड़ है. वजह जो भी हो, लगान अधिक है, इससे कोई इनकार नहीं कर सकता.

ज़मींदारी अंत कमेटी की भूल

इसलिये अगर किसानों को उम्मीद थी कि ज़मींदारी ख़तम होने के बाद उनका लगान आधा हो जायगा तो इसमें उनकी गलती नहीं थी. कराची कांगरेस के जिस ठहराव का हवाला ऊपर दिया है, उसमें ग़ैर गुज़ारे लायक़ जोतों वाले किसानों को लगान सेपूरी छूट है और आम तौर पर लगान कम करने का सुझाव शामिल है. यही बात ज़मींदारी अन्त कमेटी वालों के दिमाग़ों में भी रही होगी, क्योंकि रिपोर्ट में लिखा है—हम समझते हैं कि लगान बड़ी जोतों पर बढ़ाते जाना ज़रूरी है. इससे एक तो छोटी जोत वाले किसान का बोझ हल्का होगा और उसे पैदावार बढ़ाने में सहूलत होगी. दूसरे आमदनी के ग़लत बंटवारे में भी कमी होगी. पर जब सुझाव देने की बात आई तो कमेटी ने लिखा कि उसकी सभी ख़राबियों के बावजूद लगान का यही तरीक़ा क़ायम रखा जाय. कमेटी ने जो दो एक सुधार इस सिलसिले में दिये हैं, वह बहुत ही नाकाफ़ी हैं. कमेटी का सुझाव था कि एक एकड़ तक की जोत पर छै आने, चार एकड़ तक चार आने, छै एकड़ तक दो आने, और दस एकड़ तक की जोत पर एक आना फ़ी रुपया छूट दे दी जाय. आज कल की तंगी और लगान के पुराने और पिछड़े घसीट तरीक़े को देखते हुए यह छूट कम से कम छोटी जोत वालों के लिये तो नहीं के बराबर है. पर मज़े की बात यह है कि कमेटी के मेम्बर

ہمارے صوبے کے نئے زمینداری انت قانون سے تو شکمیوں وغیرہ کی بے دخلی کی بھی باڑھ آجائیگی. اِس بنیاد پر نئے قانون میں وہ دفعائیں لائی گئیں ہیں جن سے قانون لاگو ہونے کے پانچ سال بعد آدی واسیوں کی بیدخلی ہوگی . اس طرح کے شکمی کاشتکار 32 لاکھ ایکڑ زمین جوتتے ہیں اور وہ بہت غریب ہیں' وہ موروسی کاشتکار سے دوانی روپیہ زیادہ لگان دیتے ہیں . قانون کی اس دھارا سے یہ نہیں سمجھا جا سکتا کہ کھیتی ہر مزدوروں کے لئے دکھائی گئی ہمدردی سچی ہے .

6. لگان میں کمی

ہم نے یہ بھی کہا تھا کہ سامنتی لوٹ کا اصلی بوجھ لگان کے ذریعے کسان ھی پر پڑتا ہے' اس لئے زمینداری خاتمے کا اصلی مطلب یہ ہے کہ کسانوں پر لگان کا بوجھ کم ہو . ہمارے صوبے میں فی ایکڑ لگان کا جو اوسط پڑتا ہے' وہ دوسرے صوبوں سے زیادہ ہے . فلاڈ کمیشن کی رپورٹ میں کہا گیا تھا کہ بنگال میں دخیل‌کار کاشتکار تین روپیہ چھ آنہ فی ایکڑ لگان دیتا ہے' پنجاب میں تین روپیہ دو آنہ' یو . پی . میں یہی لگان ان صوبوں سے دونا یعنی چھ روپیہ فی ایکڑ ہے . وجہ جو بھی ہو' لگان ادھک ہے' اس سے کوئی انکار نہیں کرسکتا .

زمینداری انت کمیٹی کی بھول

اِس لئے اگر کسانوں کو اُمید تھی کہ زمینداری ختم ہونے کے بعد اُن کا لگان آدھا ہو جائیگا تو اِس میں اُن کی غلطی نہیں تھی . کراچی کانگریس کے جس ٹھہراؤ کا حوالہ اوپر دیا گیا ہے' اِس میں غیر گزارے لائق جوتوں والے کسانوں کو لگان سے پوری چھوٹ ہے اور عام طور پر لگان کم کرنے کا سجھاؤ شامل ہے . یہی بات زمینداری انت کمیٹی والوں کے دماغوں میں بھی رہی ہوگی، کیونکہ رپورٹ میں لکھا ہے—ہم سمجھتے ہیں کہ لگان بڑی جوتوں پر بڑھاتے جانا ضروری ہے . اس سے ایک تو چھوٹی جوت والے کسان کا بوجھ ہلکا ہوگا اور اُسے پیداوار بڑھانے میں سہولت ہوگی . دوسرے آمدنی کے غلط بٹوارے میں بھی کمی ہوگی. پر جب سجھاؤ دینے کی بات آئی تو کمیٹی نے لکھا کہ اس کی سبھی خرابیوں کے باوجود لگان کا یہی طریقہ قائم رکھا جائے . کمیٹی نے جو دو ایک سدھار اس سلسلے میں دئے ہیں' وہ بہت ناکافی ہیں . کمیٹی کا سجھاؤ تھا کہ ایک ایکڑ تک کی جوت پر چھ آنے' چار ایکڑ تک چار آنے' چھ ایکڑ تک دو آنے' اور دس ایکڑ تک کی جوت پر ایک آنہ فی روپیہ چھوٹ دیدی جائے . آج کل کی تنگی اور لگان کے پرانے اور پچھ گھسیٹ طریقے کو دیکھتے ہوئے یہ چھوٹ کم سے کم چھوٹی جوت والوں کے لئے تو نہیں کے برابر ہے . پر مزے کی بات یہ ہے کہ کمیٹی کے ممبر

वाले ग़ल्ले में जो कमी हो उसे दूर करने का तरीक़ा यह नहीं है कि फिर से ज़मींदारी प्रथा लागू कर दी जाय या बड़ी जोत वालों के पास ज़ियादा ज़मीन छोड़ दी जाय. तरीक़ा यह है कि शामिलात खेती के ज़रिये उपज बढ़ाई जाय, जो बीच वाले किसान हैं उनसे सहकारी खेती करवाई जाय. यह दलील भी दी जाती है कि यह सब बातें तो आगे की और लम्बे अरसे में लागू होने वाली हैं, और हमें कल से ही शहर की जनता का पेट भरना है. लेकिन ज़मीन के बंटवारे का असर सिर्फ़ ग़ल्ला वसूली पर पड़ सकता है और ग़ल्ला वसूली में सरकार को ज़मींदार और बड़े किसान से कभी भी सहयोग नहीं मिला. तभी सरकार उपज की 14 फ़ी सदी से ज़ियादा कभी वसूल ही न कर पाई. असलियत में भुकमरी और अकाल पैदा करने वाले ज़मींदार ही हैं. ज़मीन के ठीक बंटवारे से ही सरकार और किसान के बीच सचाई और दोस्ती का रिश्ता क़ायम हो सकता है. मुमकिन है आख़ीर में ज़मीन का असली बन्दोबस्त बहुत छोटी जोतों पर नहीं, सहकारी व शामिलाती खेती पर ही हो जब सच्चे आर्थिक लोकराज की ओर सरकार क़दम उठायगी, तभी देहात और शहर दोनों आपसी मदद के बल पर अपने अपने पैरों पर खड़े होंगे.

ज़मींदारी अन्त कमेटी ने यह भी दलील दी थी कि बंटवारे से खेतिहर मज़दूरों की रोज़ी छिन जायगी. लेकिन यह बात ग़लत है. बड़ी बड़ी जोत वालों के बड़े फ़ार्मों पर खेतिहर मज़दूर बरक़रार रहेंगे. जो ज़मीन ज़मींदारों से छूटेगी उसमें ज़मींदारों के परिवार वाले तो खेती करेंगे नहीं बल्कि वहां भी खेतिहर मज़दूर ही लगेंगे हां ! जहां किसानों की जोतें छोटी होंगी वहां ज़रूर खेतिहर मज़दूर ख़ाली होंगे. पर साथ ही साथ हमें यह भी याद रखना चाहिये कि खेतिहर मज़दूर तब उस सामन्ती ग़ुलामी से भी छुटकारा पा जायंगे, जिसमें आधे चौथाई पेट खाना देकर ज़बरदस्ती काम लिया जाता था. ज़मींदारी ख़तम होने के बाद उस ज़ोर ज़बरदस्ती का अन्त होगा और मज़दूर और ग़रीब किसान पहली बार अपनी मेहनत की उजरत मुंह खोल कर मांग सकेगा. उसे पहली बार मौक़ा मिलेगा कि अपनी सभाओं के सहयोग से अपनी मज़दूरी ऊंची करा सकें. फिर ज़मीन के बंटवारे में उन्हें भी कुछ न कुछ ज़मीन मिलेगी ही. इस तरह आधे ग़ुलामों की तरह बेगार की ज़िन्दगी बसर करने की जगह खेतिहर मज़दूर आज़ाद मज़दूरों की तरह मोल भाव करने की ताक़त की बुनियाद पर वाजिब उजरत मांगेंगे और उनमें से बहुत से पहली बार ज़मीन के मालिक होंगे. यह हालत आज कल की अध-ग़ुलामी की हालत से कैसे बुरी है ? वह तो इसका स्वागत ही करेंगे.

लेकिन खेतिहर मज़दूरों का सवाल हल करने की जगह

والے غلے میں جو کمی ہو اسے دور کرنے کا طریقہ یہ نہیں ہے کہ پھر سے زمینداری پرتھا لاگو کر دی جائے یا بڑی جوت والوں کے پاس زیادہ زمین چھوڑ دی جائے. طریقہ یہ ہے کہ شاملات کھیتی کے ذریعے اپج بڑھائی جائے، جو بیچ والے کسان ہیں اُن سے سہکاری کھیتی کروائی جائے. یہ دلیل بھی دی جاتی ہے کہ یہ سب باتیں تو آگے کی اور لمبے عرصے میں لاگو ہونے والی ہیں، اور ہمیں کل سے ہی شہر کی جنتا کا پیٹ بھرنا ہے. لیکن زمین کے بٹوارے کا اثر صرف غلہ وصولی پر پڑ سکتا ہے اور غلہ وصولی میں سرکار کو زمیندار اور بڑے کسان سے کبھی بھی سہیوگ نہیں ملا. تبھی سرکار اپج کی 14 فیصدی سے زیادہ کبھی وصول ہی نہ کر پائی. اصلیت میں بھکمری اور اکال پیدا کرنے والے زمیندار ہی ہیں. زمین کے ٹھیک بٹوارے سے ہی سرکار اور کسان کے بیچ سچائی اور دوستی کا رشتہ قائم ہوسکتا ہے. ممکن ہے آخیر میں زمین کا اصلی بندوبست بہت چھوٹی جوتوں پر نہیں "سہکاری شاملاتی کھیتی پر ہی ہو. جب سچے آرتھک لوک راج کی اور سرکار قدم اُٹھائے گی، تبھی دیہات اور شہر دونوں آپسی مدد کے بل پر اپنے اپنے پیروں پر کھڑے ہوں گے.

زمینداری انت کمیٹی نے یہ بھی دلیل دی تھی کہ بٹوارے سے کھیتی ہر مزدوروں کی روزی چھن جائے گی. لیکن یہ بات غلط ہے. بڑی بڑی جوت والوں کے بڑے فارموں پر کھیتی ہر مزدور برقرار رہیں گے. جو زمین زمینداروں سے چھوٹے گی اُس میں زمینداروں کے پریوار والے تو کھیتی کریں گے نہیں بلکہ وہاں بھی کھیتی ہر مزدور ہی لگیں گے. ہاں! جہاں کسانوں کی جوتیں چھوٹی ہونگی وہاں ضرور کھیتی ہر مزدور خالی ہونگے. پر ساتھ ہی ساتھ ہمیں یہ بھی یاد رکھنا چاہئے کہ کھیتی ہر مزدور تب اُس سامنتی غلامی سے بھی چھٹکارا پا جائینگے، جس میں آدھے چوتھائی پیٹ کھانا دے کر زبردستی کام لیا جاتا تھا. زمینداری ختم ہونے کے بعد اس زور زبردستی کا انت ہوگا اور مزدور اور غریب کسان پہلی بار اپنی محنت کی اُجرت منہ کھول کر مانگ سکے گا. اسے پہلی بار موقع ملے گا کہ اپنی سبھاؤں کے سہیوگ سے اپنی مزدوری اونچی کرا سکے. پھر زمین کے بٹوارے میں انہیں بھی کچھ نہ کچھ زمین ملے گی ہی. اس طرح آدھے غلاموں کی طرح بیگار کی زندگی بسر کرنے کی جگہ کھیتی ہر مزدور آزاد مزدوروں کی طرح مول بھاؤ کرنے کی طاقت کی بنیاد پر واجب اجرت مانگینگے اور اُن میں سے بہت سے پہلی بار زمین کے مالک ہونگے. یہ حالت آج کل کی ادھ غلامی کی حالت سے کیسی بری ہے؟ وہ تو اس کا سواگت ہی کریں گے.

لیکن کھیتی ہر مزدوروں کا سوال حل کرنے کی جگہ

की ज़रूरत समझी गई थी. लेकिन मुस्लिम लीग के भीतर और बाहर के ज़मींदारों का ज़ोर सुहरावर्दी पर पड़ा और बिल कभी पेश ही नहीं हुआ. कांग्रेस की आर्थिक प्रोग्राम कमेटी ने भी जनवरी सन '48 में सिफ़ारिश की थी—बेहतर होगा कि कम से कम जोत की एक हद बांध दी जाय, उससे ज़ियादा ज़मीन जिस पर भी हो उस से लेकर सहकारी समिति को दे दी जाय. कांग्रेस की आराज़ी सुधार कमेटी ने भी इस बात को दोहराया.

इन कमेटियों ने यह सुझाव इस असलियत को समझ कर ही दिया था कि सीर और खुद काश्त को कम किये बिना न तो सामन्ती ज़मींदारों की इजारेदारी ही तोड़ी जा सकती है और न किसानों की ज़मीन की भूक ही मिटाई जा सकती है. इसके बिना देश के किसानों की दशा सुधर भी नहीं सकती. ज़मीन की भूक ज़मींदारी ख़तम कर के ही पूरी की जा सकती है. हमारे सूबे में जितने फ़ी सदी लोग खेती की जितनी कम ज़मीन से रोज़ी चला रहे हैं, उतने किसी भी दूसरे सूबे में नहीं चला रहे हैं. हमारे यहां 50 लाख खेतिहर मज़दूर हैं जिन के पास अपनी सुई बराबर भी ज़मीन नहीं है. और हमारे यहां भी ऐसी छोटी छोटी जोतों की तादाद सबसे ज़ियादा है जिन पर किसी कुनबे का गुज़ारा नहीं चल सकता. भूमि सुधार का पहला असूल ज़मीन का फिर से बंटवारा होना चाहिये. हमारे सूबे में इसके बिना काम ही नहीं चल सकता. किसान सभा ने कहा है कि ज़ियादा से ज़ियादा 25 एकड़ ज़मीन एक आदमी के पास रहे. लेकिन हमारे सूबे में तो 15 एकड़ ही इतनी काफ़ी ज़मीन है जो कि इतमिनान से गुज़ारे लायक़ जोत कही जा सकती है.

ज़मींदारी अन्त क़ानून में दरार

पर इस ज़मींदारी अन्त क़ानून में ज़मीन के बंटवारे की कोई बात ही नहीं है. इसकी वजह ज़मींदारी अन्त कमेटी की रिपोर्ट में मिलती है. कमेटी ने ज़ाब्ते से तो ज़मीन के नए सिरे से बटवारे को ठीक और मुनासिब बताया है. लिखा है कि "खेती से होने वाली ज़ियादा से ज़ियादा और कम से कम आमदनियों में जो भारी अन्तर है वह बंटवारे से ख़तम हो जायगा, और सामाजिक न्याय की नींव पड़ जायगी." लेकिन जब काम के सुझाव देने का वक़्त आया तो कमेटी को कई फ़रज़ी दिक़्क़तें दिखाई पड़ने लगीं. कमेटी ने लिखा कि "बंटवारे से रूस की तरह भुकमरी और अकाल आ जायगा. कम से कम शहरों में आने वाले ग़ल्ले में इतनी कमी आ जायगी कि शहर वाले भूकों मर जायंगे. इससे खेतिहर मज़दूरों की रोज़ी छिन जायगी वग़ैरा."

जहां तक रूस की भुकमरी का सवाल है, ख़ुद स्टालिन ने इस सिलसिले में कहा था कि बाज़ार में आने

کی ضرورت سمجھی گئی تھی. لیکن مسلم لیگ کے بھیتر اور باہر کے زمینداروں کا زور سہروردی پر پڑا اور بل کبھی پیش ہی نہیں ہوا. کانگریس کی آرتھک پروگرام کمیٹی نے بھی جنوری سن '48 میں سفارش کی تھی ـــ بہتر ہوگا کہ کم سے کم جوت کی ایک حد باندھ دی جائے، اس سے زیادہ زمین جس پر بھی ہو اس سے لے کر سہکاری سمیتی کو دے دی جائے. کانگریس کی آراضی سدھار کمیٹی نے بھی اس بات کو دہرایا.

ان کمیٹیوں نے یہ سجھاؤ اس اصلیت کو سمجھ کر ہی دیا تھا کہ سیر اور خود کاشت کو کم کئے بنا نہ تو سامنتی زمینداروں کی اجارے داری ہی توڑی جا سکتی ہے اور نہ کسانوں کی زمین کی بھوک ہی مٹائی جا سکتی ہے. اس کے بنا دیش کے کسانوں کی دشا سدھر بھی نہیں سکتی. زمین کی بھوک زمینداری ختم کر کے ہی پوری کی جا سکتی ہے. ہمارے صوبے میں جتنے فیصدی لوگ کھیتی کی جتنی کم زمین سے روزی چلا رہے ہیں، اتنے کسی بھی دوسرے صوبے میں نہیں چلا رہے ہیں. ہمارے یہاں 50 لاکھ کھیتیہر مزدور ہیں جن کے پاس اپنی سوئی برابر بھی زمین نہیں ہے اور ہمارے یہاں بھی ایسی چھوٹی چھوٹی جوتوں کی تعداد سب سے زیادہ ہے جن پر کسی کنبے کا گزارا نہیں چل سکتا. بھومی سدھار کا پہلا اصول زمین کا پھر سے بٹوارا ہونا چاہئے. ہمارے صوبے میں اس کے بنا کام ہی نہیں چل سکتا. کسان سبھا نے کہا ہے کہ زیادہ سے زیادہ 25 ایکڑ زمین ایک آدمی کے پاس رہے لیکن ہمارے صوبے میں تو 15 ایکڑ ہی اتنی کافی زمین ہے جو کہ اطمینان سے گذارے لائق جوت کہی جا سکتی ہے.

زمینداری انت قانون میں درار

پر اس زمینداری انت قانون میں زمین کے بٹوارے کی کوئی بات ہی نہیں ہے. اس کی وجہ زمینداری انت کمیٹی کی رپورٹ میں ملتی ہے. کمیٹی نے ضابطے سے تو زمین کے نئے سرے سے بٹوارے کو ٹھیک اور مناسب بتایا ہے. لکھا ہے کہ "کھیتی سے ہونے والی زیادہ سے زیادہ اور کم سے کم آمدنیوں میں جو بھاری انتر ہے وہ بٹوارے سے ختم ہو جائیگا، اور سماجک نیائے کی نیو پڑ جائے گی." لیکن جب کام کے سجھاؤ دینے کا وقت آیا تو کمیٹی کو کئی فرضی دقتیں دکھائی پڑنے لگیں. کمیٹی نے لکھا کہ "بٹوارے سے روس کی طرح بھکمری اور اکال آ جائے گا. کم سے کم شہروں میں آنے والے غلے میں اتنی کمی آ جائے گی کہ شہر والے بھوکوں مر جائینگے. اس سے کھیتیہر مزدوروں کی روزی چھن جائے گی." وغیرہ.

جہاں تک روس کی بھکمری کا سوال ہے، خود اسٹالن نے اس سلسلے میں کہا تھا کہ بازار میں آنے

मुआविज़ा सिर्फ़ उन्हीं को मिलना चाहिये था जिनके पास सचमुच में गुज़ारे का कोई ज़रिया नहीं रह गया था. इसका मतलब यह है कि सरकार को ज़मींदारों की कुल आमदनी का पता चलाना था—चाहे वह ज़मींदारी या खेती की हो और चाहे किसी और ज़रिये से. जिनकी आमदनी 300 रुपए महीने से कम होती उन्हें उनकी ज़मींदारी का आमदनी के बराबर की रक़म ज़ियादा से ज़ियादा दस साल तक भत्ते के रूप में दी जाती. सरकार की मदद से दस साल में सभी ज़मींदार आमदनी के नए ज़रिये और नए पेशे अपना लेते. ऐसे लोग छोटी आमदनी वाले ही होते और उन पर खर्च करने के लिये ज़ियादा से ज़ियादा 30 करोड़ की रक़म बहुत काफ़ी होती.

यहां हम इस बात को भी साफ़ करदें कि इस फिर बसाओ और मुआविज़े के उसूल में एक दूसरे से कोई ताल्लुक़ नहीं है. हम यह सुझाव इसलिये दे रहे हैं कि हमारे देश में बेकारी बीमा की कोई योजना नहीं हैं; और यह देखने की ज़िम्मेदारी सरकार की है कि देश का कोई भी आदमी भूक और बेकारी के रास्ते न जाय.

पर सरकार का मक़सद तो यह मालूम होता है कि आज के ज़मींदार कल के ऐसे किसान बन जायं जो खेत और जोत से अलग रह कर दूसरों से खेती कराते हैं और यह मक़सद हमारे किसानों की हर जमात के लिये खतरनाक है.

5. ज़मीन का फिर से बंटवारा

ज़मींदारों को जो दूसरी बड़ी छूट दी गई है वह है सीर, खुद काश्त व बाग़ों का उन्हीं के पास छोड़ दिया जाना. सीर की साढ़े बयालीस लाख एकड़, खुद काश्त की सवा इकत्तीस लाख एकड़ और बाग़ात की साढ़े पांच लाख एकड़ मिल कर यह ज़मीन कुल जमा खेती की ज़मीन का पांचवां हिस्सा बैठती है. हमारी सरकार ने कश्मीर और बर्मा की पड़ोसी सरकारों से भी सबक़ नहीं लिया, जहां ज़मींदारों की पास थोड़ी सी ज़मीन छोड़ कर बाक़ी सीर व खुद काश्त बिना मुआविज़ा ले ली गई है और ग़रीब किसानों में बांट दी गई है.

सीर और खुद काश्त पर पाबन्दी

अपने ही देश में बंटवारे से पहले बंगाल के मंत्री हुसैन शहीद सुहरावर्दी ने ज़मींदारी के खातमे का जो बिल तैयार किया था उसमें ज़मींदारों को 32 एकड़ से ज़ियादा सीर व खुद काश्त रखने की इजाज़त न थी. उनकी बाक़ी ज़मीन खेतिहर मज़दूरों, ग़रीब किसानों और बंटाई वालों में बांट दी जाती. उस बिल में कई ग़ल्तियां थीं पर हम केवल यह बताना चाहते हैं कि उस बिल में भी ज़ियादा से ज़ियादा सीर और खुद काश्त कितनी छोड़ी जाय, इसकी हद बांधने

معاوضہ صرف اُنھیں کو ملنا چاہئے تھا جن کے پاس سچ مچ میں گزارے کا کوئی ذریعہ نہیں رہ گیا تھا. اس کا مطلب یہ ہے کہ سرکار کو زمیندروں کی کل آمدنی کا پتہ چلانا تھا— چاہے وہ زمینداری یا کھیتی کی ہو اور چاہے کسی اور ذریعہ سے. جن کی آمدنی 300 روپئے مہینے سے کم ہوتی انھیں ان کی زمینداری کی آمدنی کے برابر رقم زیادہ سے زیادہ دس سال تک بھتے کے روپ میں دی جاتی. سرکار کی مدد سے دس سال میں سبھی زمیندار آمدنی کے نئے ذریعے اور نئے پیشے اپنا لیتے. ایسے لوگ چھوٹی آمدنی والے ہی ہوتے اور اُن پر خرچ کرنے کے لئے زیادہ سے زیادہ 30 کروڑ کی رقم بہت کافی ہوتی.

یہاں ہم اس بات کو بھی صاف کر دیں کہ اس پھر بساؤ اور معاوضے کے اصول میں ایک دوسرے سے کوئی تعلق نہیں ہے. ہم یہ سجھاؤ اس لئے دے رہے ہیں کہ ہمارے دیش میں بیکاری بیمہ کی کوئی یوجنا نہیں ہے؛ اور یہ دیکھنے کی ذمہ داری سرکار کی ہے کہ دیش کا کوئی بھی آدمی بھوک اور بیکاری کے راستے نہ جائے.

پر سرکار کا مقصد تو یہ معلوم ہوتا ہے کہ آج کے زمیندار کل کے ایسے کسان بن جائیں جو کھیت اور جوت سے الگ رہ کر دوسروں سے کھیتی کراتے ہیں اور یہ مقصد ہمارے کسانوں کی ہر جماعت کے لئے خطرناک ہے.

5. زمین کا پھر سے بٹوارا

زمینداروں کو جو دوسری بڑی چھوٹ دی گئی ہے وہ ہے سیر، خود کاشت و باغوں کا انھیں کے پاس چھوڑ دیا جانا. سیر کی ساڑھے بیالیس لاکھ ایکڑ، خود کاشت کی سوا اکتیس لاکھ ایکڑ اور باغات کی ساڑھے پانچ لاکھ ایکڑ مل کر یہ زمین کل جمع کھیتی کی زمین کا پانچواں حصہ بیٹھتی ہے. ہماری سرکار نے کشمیر اور برما کی پڑوسی سرکاروں سے بھی سبق نہیں لیا، جہاں زمینداروں کے پاس تھوڑی زمین چھوڑ کر باقی سیر و خود کاشت بنا معاوضہ لے لی گئی ہے اور غریب کسانوں میں بانٹ دی گئی ہے.

سیر اور خود کاشت پر پابندی

اپنے ہی دیش میں بٹوارے سے پہلے بنگال کے منتری حسین شہید سہروردی نے زمینداری کے خاتمے کا جو بل تیار کیا تھا اُس میں زمینداروں کو 32 ایکڑ سے زیادہ سیر و خود کاشت رکھنے کی اجازت نہ تھی. اُن کی باقی زمین کھیتی مزدوروں، غریب کسانوں اور بٹائی والوں میں بانٹ دی جاتی. اس بل میں کئی غلطیاں تھیں. پر ہم کیول یہ بتانا چاہتے ہیں کہ اس بل میں بھی زیادہ سے زیادہ سیر اور خود کاشت کتنی چھوڑی جائے، اس کی حد باندھنے

इन ज़मींदारों को सरकारी बान्ड या परामेसरी नोट दिये गए तो उससे काग़ज़ी नोटों के बढ़ जाने, चीज़ों के और मंहगे हो जाने और देश की आर्थिक व्यवस्था के बिगड़ से जाने का जो डर है, वह इस तरीके के ख़तम हो जायगा.

मुआविज़े की रक़म का सही उपयोग

ज़मींदारों की दूसरी जमात 250 रुपए से लेकर 3500 रुपए की आमदनी वाली है. इसे भी मुआविज़े की रक़म कुछ तो सहकारी समितियों के ज़रिये और कुछ नक़दी में मिलनी चाहिये थी. इस जमात के ज़मींदारों में शिक्षा कुछ ज़ियादा है, और उन्हें ब्योपार का भी थोड़ा बहुत तजुरबा है. इन लोगों को जो नक़द रुपया मिलता उसके ठीक उपयोग की आशा ज़ियादा थी. इस तरह से मुआविज़े की रक़म की चौथाई (क़रीब 22 फ़ी सदी) सूबे की आर्थिक दशा सुधारने में ठीक तरह से लग जाती.

3500 रुपए से 5000 रुपए तक मालगुज़ारी देने वाले ज़मींदारों को भी रुपया समितियों और नक़दी के रूप में दिया जाता. लेकिन इन्तज़ाम यह किया जाता कि जैसे जैसे रक़म बढ़ती जाती, नक़द मिलने वाली रक़म का औसत भी धीरे धीरे बढ़ता जाता. इस तरह मुआविज़े की रक़म का 90 फ़ी सदी उपयोग उद्योग धन्दे चलाने के लिये पूंजी के रूप में मिल जाता. इस वक़्त अगर हमारे देश में किसी चीज़ की कमी खटकती है तो वह पूंजी की ही, और वह इस तरह से पूरी हो जाती.

5000 रुपए से ज़ियादा के मालगुज़ारों को सिर्फ़ नाम के लिये कुछ मुआविज़ा दे कर ख़तम कर दिया जाता जिससे विधान के पिछ्छपसीटू उसूल की रक्षा भी हो जाती और ज़ियादा रुपया भी नहीं ख़र्च होता.

इस सब का यह मतलब नहीं है कि हम इस स्कीम के हामी व तरफ़दार हैं. हम तो सिर्फ़ यही दिखाना चाहते हैं कि इस कानूनी ढांचे में भी तरक़्क़ी की गुंजाइश निकाली जा सकती थी. अगर सरकार देहातों की ग़रीब जनता की हालत सचमुच सुधारना चाहती तो उसकी स्कीम और क़ानून में तरक़्क़ी की यह बातें शामिल हो सकती थीं.

वैसे हम तो इसी उसूल को ठीक मानते हैं कि ज़मींदारी के ख़ातमे से जिन लोगों की रोज़ी पूरी तरह से या कुछ कुछ ख़तम हो रही है उनके गुज़ारे का फिर से इन्तज़ाम करने के लिए एक फिर बसाओ भत्ता ही दिया जाता.

सरकार का फ़र्ज़ और ज़मींदार

सरकार को हर ज़मींदार के सवाल पर अलग अलग विचार करना चाहिये था क्योंकि एक तरफ़ तो बेकारी से बचाना था और दूसरी तरफ़ मुआविज़े के बहाने रईस बन जाने की तिकड़म भी ख़तम करनी चाहिये थी.

ان زمینداروں کو سرکاری بانڈ یا پرامیسری نوٹ دئے گئے تو اس سے کاغذی نوٹوں کے بڑھ جانے' چیزوں کے اور مہنگے ہو جانے اور دیش کی آرتھک ویوستھا کے بگڑ جانے کا جو ڈر ہے' وہ اس طریقے سے ختم ہو جائیگا .

معاوضے کی رقم کا صحیح اُپیوگ

زمینداروں کی دوسری جماعت 250 روپئے سے لیکر 3500 روپئے کی آمدنی والی ہے . اِسے بھی معاوضے کی رقم کچھ تو سہکاری سمیتیوں کے ذریعے اور کچھ نقدی میں ملنی چاہئے تھی . اس جماعت کے زمینداروں میں شکشا کچھ زیادہ ہے' اور اُنہیں بیوپار کا بھی تھوڑا بہت تجربہ ہے . ان لوگوں کو جو نقد روپیہ ملتا اُس کے ٹھیک اُپیوگ کی آشا زیادہ تھی . اس طرح سے معاوضے کی رقم کی چوتھائی (قریب 22 فیصدی) صوبے کی آرتھک دشا سدھارنے میں ٹھیک طرح سے لگ جاتی .

3500 روپئے سے 5000 روپئے تک مالگذاری دینے والے زمینداروں کو بھی روپیہ سمیتیوں اور نقدی کے روپ میں دیا جاتا. لیکن انتظام یہ کیا جاتا کہ جیسے جیسے رقم بڑھتی جاتی' نقد ملنے والی رقم کا اوسط بھی دھیرے دھیرے بڑھتا جاتا . اِس طرح معاوضے کی رقم کا 90 فیصدی اُپیوگ اُدیوگ دھندے چلانے کے لئے پونجی کے روپ میں مل جاتا . اس وقت اگر ہمارے دیش میں کسی چیز کی کمی کھٹکتی ہے تو وہ پونجی کی ہی' وہ اس طرح سے پوری ہو جاتی .

5000 روپئے سے زیادہ کے مالگذاروں کو صرف نام کےلئے کچھ معاوضہ دیکر ختم کر دیا جاتا جس سے ودھان کے پچھ گھسیٹو اُصول کی رکشا بھی ہو جاتی اور زیادہ روپیہ بھی نہیں خرچ ہوتا .

اس سب کا یہ مطلب نہیں ہے کہ ہم اِس اسکیم کے حامی و طرف‌دار ہیں . ہم تو صرف یہی دکھانا چاہتے ہیں کہ اس قانونی ڈھانچے میں بھی ترقی کی گنجائش نکالی جاسکتی تھی . اگر سرکار دیہاتوں کی غریب جنتا کی حالت سچ مچ سدھارنا چاہتی تو اس کی اسکیم اور قانون میں ترقی کی یہ باتیں شامل ہو سکتی تھیں .

ویسے ہم تو اِسی اصول کو ٹھیک مانتے ہیں کہ زمینداری کے خاتمے سے جن لوگوں کی روزی پوری طرح سے یا کچھ کچھ ختم ہو رہی ہے ان کے گزارے کا پھر سے انتظام کرنے کے لئے ایک پھر بساؤ بھتہ ہی دیا جاتا .

سرکار کا فرض اور زمیندار

سرکار کو ہر زمیندار کے سوال پر الگ الگ وچار کرنا چاہئے تھا کیونکہ ایک طرف تو بیکاری سے بچانا تھا اور دوسری طرف معاوضے کے بہانے رئیس بن جانے کی تکڑم بھی ختم کرنی چاہئے تھی .

अभी तक सरकार इस मद में कुल 33 करोड़ रुपया इकट्ठा कर पाई है. और इसके लिये हज़ारों गैलन पेट्रोल फूंका गया है. कांगरेस के नेताओं और सरकारी अफ़सरों ने लाखों किसानों की सभाएं कर के उनमें भाशन दिये हैं. रेडियो, अख़बार, सभाएं-प्रोपेगन्डा और प्रचार का हर तरीक़ा काम में लाया गया. खुले खुले फुसलाया और समझाया गया. छिपे छिपे पटवारी, पुलिस और ऐसे ऐसे ज़मींदारों का दबाव डाला गया, जो समझ गये थे कि जितना ज़ियादा रुपया इस फ़न्ड में आयगा, उतना ज़ियादा उन्हीं को मिलेगा. लेकिन इस सब के बाद भी सिर्फ़ तीन तरह के किसानों ने यह रुपया जमा किया —एक तो वह बड़े बड़े किसान जिनके पास रुपया था, दूसरे वह जो झगड़े के खेतों पर क़बज़ा जमाना चाहते थे और तीसरे वह जिन पर पुलिस और पटवारी का ज़ियादा दबाव पड़ा था. इस तीसरी तरह के लोगों को क़र्ज़ ले कर यह रक़म जमा करनी पड़ी.

यह बात साफ़ है कि छोटे ज़मींदारों का सवाल उन्हें एक मुश्त रक़म दे कर हल नहीं किया जा सकता. इन्हें नए तरीक़ों से खेती का सुधार करने का कोई तजुरबा नहीं है. और न इन्हें किन्हीं धन्दों या ब्योपार चलाने का अनुभव ही है. जब तक सरकार इनकी रक़म और साधनों का ठीक इस्तेमाल कराने में इन्हें मदद नहीं देती, तब तक इस रक़म और साधन के बरबाद हो जाने का ख़तरा बना रहेगा. इस तरह न तो खेती का सुधार होगा और न धन्दों का विकास. इन दोनों के बिना छोटे ज़मींदार फिर से बसाए नहीं जा सकते. इसलिये यह ज़रूरी है कि मुआविज़े और भत्ते की रक़म इन ज़मींदारों की सहकारी समितियां बना कर उन समितियों को पूंजी की शक्ल में दी जाय और यह समितियां उसे खेती या उद्योग धन्दों के विकास में लगावें.

मुआविज़े की दो तिहाई रक़म उन ज़मींदारों को मिलेगी जिनकी ज़मींदारी से सालाना आमदनी तीन सौ रुपए तक है. हर छोटे ज़मींदार को जो रक़म मिलेगी उसका औसत तो 250 रुपए से 4250 रुपए के बीच आता है. पर असलियत में ऐसे बहुत से ज़मींदार भी इस में शामिल हैं जिन्हें इससे और भी कम रक़म मिलेगी. एक अरब से ज़ियादा की यह रक़म अगर खेती व उद्योग धन्दों के लिये सहकारी समितियों में लगाई जाय तो किसानों, खेतिहर मज़-दूरों, कारख़ानों के मज़दूरों और दरमियानी दरजे की जनता को नये रोज़गार मिल जायं. इससे ज़मीन पर निर्भर रहने वाले लोगों की तादाद भी कम हो जायगी, और ज़मींदारों की आमदनी भी पहले से बढ़ जायगी. इस आमदनी को खेती के सुधार और किसानों की हालत अच्छी करने में लगाया जा सकेगा. और सबसे बड़ी बात यह है कि अगर

ابھی تک سرکار اس مد میں کل 33 کروڑ روپیہ اکٹھا کر پائی ہے . اور اس کے لئے ہزاروں گیلن پٹرول پھونکا گیا ہے . کانگریس کے نیتاؤں اور سرکاری افسروں نے لاکھوں کسانوں کی سبھائیں کرکے ان میں بھاشن دئے ہیں . ریڈیو' اخبار' سبھائیں پروپیگنڈا اور پرچار کا ہر طریقہ کام میں لایا گیا . کھلے کھلے پھسلایا اور سمجھایا گیا . چھپے چھپے پٹواری' پولیس اور ایسے ایسے زمینداروں کا دباؤ ڈالا گیا جو سمجھ گئے تھے کہ جتنا زیادہ روپیہ اس فنڈ میں آئیگا' اتنا زیادہ انہیں کو ملے گا . لیکن اس سب کے بعد بھی صرف تین طرح کے کسانوں نے یہ روپیہ جمع کیا—ایک تو وہ بڑے بڑے کسان جن کے پاس روپیہ تھا' دوسرے وہ جو جھگڑے کے کھیتوں پر قبضہ جمانا چاہتے تھے اور تیسرے وہ جن پر پولیس اور پٹواری کا زیادہ دباؤ پڑا تھا . اس تیسری طرح کے لوگوں کو قرض لیکر یہ رقم جمع کرنی پڑی .

یہ بات صاف ہے کہ چھوٹے زمینداروں کا سوال انہیں ایک مشت رقم دیکر حل نہیں کیا جاسکتا . انہیں نئے طریقوں سے کھیتی کا سدھار کرنے کا کوئی تجربہ نہیں ہے . اور نہ انہیں کنہیں دھندوں یا بیوپار چلانے کا انوبھو ہی ہے . جب تک سرکار ان کی رقم اور سادھنوں کا ٹھیک استعمال کرانے میں انہیں مدد نہیں دیتی' تب تک اس رقم اور سادھن کے برباد ہو جانے کا خطرہ بنا رہیگا . اس طرح نہ تو کھیتی کا سدھار ہوگا اور نہ دھندوں کا وکاس . ان دونوں کے بنا چھوٹے زمیندار پھر سے بسائے نہیں جاسکتے . اس لئے یہ ضروری ہے کہ معاوضے اور بھتے کی رقم ان زمینداروں کی سہکاری سمیتیاں بناکر ان سمیتیوں کو پونجی کی شکل میں دی جائے اور یہ سمیتیاں اسے کھیتی یا ادیوگ دھندوں کے وکاس میں لگاویں .

معاوضے کی دو تہائی رقم ان زمینداروں کو ملیگی جن کی زمینداری سے سالانہ آمدنی تین سو روپئے تک ہے . ہر چھوٹے زمیندار کو جو رقم ملیگی اس کا اوسط تو 250 روپئے سے 4250 روپئے کے بیچ آتا ہے . پر اصلیت میں ایسے بہت سے زمیندار بھی اس میں شامل ہیں جنہیں اس سے اور بھی کم رقم ملیگی . ایک ارب سے زیادہ کی یہ رقم اگر کھیتی و ادیوگ دھندوں کے لئے سہکاری سمیتیوں میں لگائی جائے تو کسانوں' کھیتی ہر مزدوروں' کارخانوں کے مزدوروں اور درمیانی درجے کی جنتا کو نئے روزگار مل جائیں . اس سے زمین پر نربھر رہنے والے لوگوں کی تعداد بھی کم ہو جائیگی' اور زمینداروں کی آمدنی بھی پہلے سے بڑھ جائیگی . اس آمدنی کو کھیتی کے سدھار اور کسانوں کی حالت اچھی کرنے میں لگایا جاسکیگا . اور سب سے بڑی بات یہ ہے کہ اگر

भारत का विधान और मुआविज़ा

हाल में कुछ लोगों ने यह भी कहना शुरू किया है कि हमारे विधान में ही मुआविज़ा देने का उसूल माना गया है तो हम क्या करें पर यह लोग यह भूल जाते हैं कि विधान में मुआविज़ा का ज़िकर आने से पहले ज़मींदारी ख़तम करने के फ़ैसले कई सूबा में हो चुके थे चूंकि देश के लीडरों ने मुआविज़ा देने का फ़ैसला कर लिया था, इसलिये विधान में भी यह धारा जोड़ दी गई. अगर इन हाकिमों की तबियत हो कि ग़रीब किसानों का भला किया जाय तो हमारे जैसा लचकीला विधान रास्ते का रोड़ा नहीं बन सकता. फिर विधान के उसूल के यह मानी भी तो निकाले जा सकते थे कि मुआविज़ा नाम मात्र का हो और यही इनसानियत और इनसाफ़ की बात भी होती या फिर मुआविज़े की पूरी बात को ही छोड़ कर दूसरा रास्ता निकाला जा सकता था, जैसे किराये की मोटरें चलाने वालों के साथ किया जा रहा है.

पर इन बातों को ताक़ पर रख कर और कमेटी के सुझावों की परवा किये बिना हमारे सूबे के ज़मींदारी अन्त क़ानून में कह दिया गया है कि हर ज़मींदार को अठगुना मुआविज़ा मिलेगा और पांच हज़ार तक के मालगुज़ारों को फिर से बसाने के लिये भत्ता भी दिया जायगा. हिसाब लगाया गया है कि मुआविज़े में 60 करोड़ और भत्ते में 80 करोड़ की रक़में लगेंगी. डेढ़ अरब की यह रक़म सरकार की तीन साल की आमदनी के बराबर है. खेती के सुधार का जो नक़शा खरे-घाट कमेटी ने बनाया था उसके मुताबिक़ इस सुधार में 36 बरस में जितना रुपया लगता, उतनी रक़म मुआविज़े में दे दी जा रही है. क़ानून बनाने वालों ने यह कहीं नहीं कहा कि ज़मींदार एक जमात की हैसियत से कभी भी ज़मीन के मालिक थे इसलिये यह साफ़ है कि मुआविज़े की यह भारी रक़म ज़मीन पर मालिकाना हक़ हासिल करने के लिये नहीं दी जा रही है, तब भी यह रक़म इतनी बढ़ा दी गई है.

किसानों पर नया बोझ

सरकार को डेढ़ अरब रुपया चाहिये. किसानों से लगान का दस गुना वसूल कर उन्हें भूमिधर बना कर यह रक़म वसूल करने की उम्मीद की गई. भूमिधारी अधिकार थोड़े से में यह हैं: भूमिधर को ज़मीन पर स्थाई और मौरूसी हक़ है, वह अपनी ज़मीन बेच सकता है, ज़मानत नहीं रख सकता, उसका लगान आधा हो जायगा. इस स्कीम का ग़रज़ मुआविज़े की रक़म इकट्ठा करना थी. इसके पीछे यह भावना काम कर रही थी कि देहातों में बहुत सा रुपया जमा पड़ा है और उसे निकाल कर इस नेक काम में लगाना चाहिये.

بھارت کا ودھان اور معاوضہ

حال میں کچھ لوگوں نے یہ بھی کہنا شروع کیا ہے کہ ہمارے ودھان میں ہی معاوضہ دینے کا اصول مانا گیا ہے تو ہم کیا کریں ۔ پر یہ لوگ یہ بھول جاتے ہیں کہ ودھان میں معاوضے کا ذکر آنے سے پہلے زمینداری ختم کرنے کے فیصلے کئی صوبوں میں ہو چکے تھے ۔ چونکہ دیش کے لیڈروں نے معاوضہ دینے کا فیصلہ کر لیا تھا، اس لئے ودھان میں بھی یہ دھارا جوڑ دی گئی ۔ اگر ان حاکموں کی طبیعت ہو کہ غریب کسانوں کا بھلا کیا جائے تو ہمارے جیسا لچکیلا ودھان راستے کا روڑا نہیں بن سکتا ۔ پھر ودھان کے اصول کے یہ معنی بھی تو نکالے جاسکتے تھے کہ معاوضہ نام ماتر کا ہو اور یہی انسانیت اور انصاف کی بات بھی ہوتی یا پھر معاوضے کی پوری بات کو ہی چھوڑ کر دوسرا راستہ نکالا جاسکتا تھا، جیسے کرائے کی موٹریں چلانے والوں کے ساتھ کیا جا رہا ہے ۔

پر ان باتوں کو طاق پر رکھکر اور کمیٹی کے سجھاؤں کی پرواہ کئے بنا، ہمارے صوبے کے زمینداری انت قانون میں کہہ دیا گیا ہے کہ ہر زمیندار کو اٹھ گنا معاوضہ ملیگا اور پانچ ہزار تک کے مالگذاروں کو پھر سے بسانے کے لئے بھتہ بھی دیا جائے گا ۔ حساب لگایا گیا ہے کہ معاوضے میں 60 کروڑ اور بھتے میں 80 کروڑ کی رقمیں لگینگی ۔ ڈیوڑھ ارب کی یہ رقم سرکار کی تین سال کی آمدنی کے برابر ہے ۔ کھیتی کے سدھار کا جو نقشہ کھرے گھاٹ کمیٹی نے بنایا تھا اس کے مطابق اس سدھار میں 36 برس میں جتنا روپیہ لگتا، اتنی رقم معاوضہ میں دے دی جا رہی ہے ۔ قانون بنانے والوں نے یہ کہیں نہیں کہا کہ زمیندار ایک جماعت کی حیثیت سے کبھی بھی زمین کے مالک تھے ۔ اس لئے یہ صاف ہے کہ معاوضے کی یہ بھاری رقم زمین پر مالکانہ حق حاصل کرنے کے لئے نہیں دی جا رہی ہے، تب بھی یہ رقم اتنی بڑھا دی گئی ہے ۔

کسانوں پر نیا بوجھ

سرکار کو ڈیوڑھ ارب روپیہ چاہئے ۔ کسانوں سے لگان کا دس گنا وصول کر انہیں بھومی‌دھر بناکر یہ رقم وصول کرنے کی امید کی گئی ۔ بھومی‌دھاری ادھیکار تھوڑے سے میں یہ ہیں: بھومی‌دھر کو زمین پر استھائی اور موروثی حق ہے، وہ اپنی زمین بیچ سکتا ہے، ضمانت نہیں رکھ سکتا، اس کا لگان آدھا ہو جائے گا ۔ اس اسکیم کی غرض معاوضے کی رقم اکٹھا کرنا تھی ۔ اس کے پیچھے یہ بھاونا کام کر رہی تھی کہ دیہاتوں میں بہت سا روپیہ جمع پڑا ہے اور اسے نکال کر اس نیک کام میں لگانا چاہئے ۔

गए. दूसरे इस तरह के ज़मींदार ढाई सौ रुपए से जियादा मालगुज़ारी नहीं देते. इसका मतलब हुआ कि ज़मींदारी से उनकी आमदनी तीन सौ रुपए सालाना या पच्चीस रुपया महीना है. इस छोटी रक़म पर पांच लोगों का परिवार नहीं चलता. उनकी सीर और खुद काश्त का रक़बा औसतन तीन एकड़ है. सवा लाख से जियादा ऐसे बताए जाते हैं जिनके पास सुई बराबर भी सीर या खुद काश्त नहीं हैं.

तीसरे, क्या लगान वसूली कोई नौकरी है, जिसके ख़तम होने पर दूसरी नौकरी ढूंढ़ने की ज़रूरत पड़े? असलियत यह है कि इन लोगों के लिये ज़मींदारी एक ऐसा काम है जिससे उनकी आमदनी में थोड़ी बहुत मदद मिलती है. उनका असली पेशा तो बड़ी ज़मींदारी के काश्तकारों की हैसियत से खेती करना है जो उनसे नहीं छीना जाता.

ज़मींदारी अन्त कमेटी का फ़ैसला

अमली निगाह से तो यही अच्छा होता कि इन नाम के ज़मींदारों को ज़मींदारी विनाश का हामी बनाया जाता. अगर वह हामी न बन पाते तो कम से कम उसके विरोधी तो न होते. इनसाफ़ भी यही है कि समाजी रद्दो बदल में इन नाम के ज़मींदारों को जहां कहीं ज़रूरत हो सरकार ऐसे साधन और हीले दे जिनसे वह अपनी गुज़र बसर की दिक़्क़तें दूर कर सकें. ज़मींदारी अन्त कमेटी ने भी अपनी रिपोर्ट में लिखा था—उचित मुआविज़े के अर्थ हैं उन्हें रहन सहन का एक ढंग क़ायम रखने और फिर से बसने का मौक़ा देना. पर कमेटी ने यह उसूल तो लागू किया नहीं, उल्टे एक नई बात यह कहनी शुरू कर दी कि ज़मींदारी के ख़ातमे से सरकार की जो आमदनी बढ़े उसका बड़ा भाग ज़मींदारी के मुआविज़े में दिया जाय. इस नई बात को कमेटी ने जियादा मज़बूत शब्दों में तब कहा जब उसने 136 करोड़ रुपए मुआविज़े में दिये जाने की सिफ़ारिश की. अगर कमेटी अपने पहले उसूल पर याना फिर से बसाने के लिये ही मुआविज़ा देने पर जमा रहती तो मुआविज़े की बड़ी रक़म खेती के विकास में लग सकती, जिस की आज सबसे जियादा ज़रूरत है.

रहन सहन का एक अच्छा ढंग क़ायम रखने के लिये 15 एकड़ की खेती आम तौर पर काफ़ी माना जाता है. इस हिसाब से देखें तो जिन ज़मींदारों का बीस एकड़ से जियादा खुद काश्त या सीर है, उन्हें फिर से बसाने के लिये मुआविज़े की कोई ज़रूरत नहीं है. इस खुद काश्त के अलावा ज़मींदारों के पास पहले का जमा की हुई रक़में भी हैं जिन्हें व्योपार में लगाकर वह आराम से रोज़ी कमा सकते हैं. इसलिये उनको मुआविज़ा देना तो उस उसूल को फिर से पलट देने के बराबर ही हुआ जो कमेटी ने तय किया था. यह बात याद रखने की है कि इस कमेटी के चेयरमैन खुद यू. पी. के बड़े वज़ीर पंत जी थे.

گئے. دوسرے اس طرح کے زمیندار ڈھائی سو روپئے سے زیادہ مالگذاری نہیں دیتے. اس کا مطلب ہوا کہ زمینداری سے ان کی آمدنی تین سو روپئے سالانہ یا پچیس روپئے مہینہ ہے. اس چھوٹی رقم پر پانچ لوگوں کا پریوار نہیں چلتا. ان کی سیر اور خود کاشت کا رقبہ اوسطاً تین ایکڑ ہے. سوا لاکھ سے زیادہ ایسے بتائے جاتے ہیں جن کے پاس سوئی برابر بھی سیر یا خود کاشت نہیں ہے.

تیسرے، کیا لگان وصولی کوئی نوکری ہے، جس کے ختم ہونے پر دوسری نوکری ڈھونڈھنے کی ضرورت پڑے؟ اصلیت یہ ہے کہ ان لوگوں کے لئے زمینداری ایک ایسا کام ہے جس سے ان کی آمدنی میں تھوڑی بہت مدد ملتی ہے. ان کا اصلی پیشہ تو بڑی زمینداری کے کاشتکاروں کی حیثیت سے کھیتی کرنا ہے جو ان سے نہیں چھینا جاتا.

زمینداری انت کمیٹی کا فیصلہ

عملی نگاہ سے تو یہی اچھا ہوتا کہ ان نام کے زمینداروں کو زمینداری ونا ش کا حامی بنایا جاتا. اگر وہ حامی نہ بن پاتے تو کم سے کم اس کے ورودھی تو نہ ہوتے. انصاف بھی یہی ہے کہ سماجی ردوبدل میں ان نام کے زمینداروں کو جہاں کہیں ضرورت ہو سرکار ایسے سادھن اور حیلے دے جن سے وہ اپنی گزر بسر کی دقتیں دور کر سکیں. زمینداری انت کمیٹی نے بھی اپنی رپورٹ میں لکھا تھا— اچت معاوضے کے ارتھ ہیں انہیں رہن سہن کا ایک ڈھنگ قائم رکھنے اور پھر سے بسنے کا موقع دینا. پر کمیٹی نے یہ اصول تو لاگو کیا نہیں، الٹے ایک نئی بات یہ کہنی شروع کر دی کہ زمینداری کے خاتمے سے سرکار کی جو آمدنی بڑھے اس کا بڑا بھاگ زمینداری کے معاوضے میں دیا جائے. اس نئی بات کو کمیٹی نے زیادہ مضبوط شبدوں میں تب کہا جب اس نے 136 کروڑ روپئے معاوضے میں دئے جانے کی سفارش کی. اگر کمیٹی اپنے پہلے اصول پر یعنی پھر سے بسانے کے لئے ہی معاوضہ دینے پر جمی رہتی تو معاوضے کی بڑی رقم کھیتی کے وکاس میں لگ سکتی، جس کی آج سب سے زیادہ ضرورت ہے.

رہن سہن کا ایک اچھا ڈھنگ قائم رکھنے کے لئے 15 ایکڑ کی کھیتی عام طور پر کافی مانی جاتی ہے. اس حساب سے دیکھیں تو جن زمینداروں کا بیس ایکڑ سے زیادہ خود کاشت یا سیر ہے، انہیں پھر سے بسانے کے لئے معاوضے کی کوئی ضرورت نہیں ہے. اس خود کاشت کے علاوہ زمینداروں کے پاس پہلے کی جمع کی ہوئی رقمیں بھی ہیں جنہیں بیوپار میں لگا کر وہ آرام سے روزی کما سکتے ہیں. اس لئے ان کو معاوضہ دینا تو اس اصول کو پھر سے پلٹ دینے کے برابر ہی ہوا جو کمیٹی نے طے کیا تھا. یہ بات یاد رکھنے کی ہے کہ اس کمیٹی کے چیئرمین خود یو. پی. کے بڑے وزیر پنت جی تھے.

सरकार के बीच में आने वाले इन ज़मींदारों के हक़ उन्हें मुनासिब मुआविज़े देकर ले लिये जायं. इस काम के लिये एक स्कीम तैयार करने के लिये सरकार एक कमेटी बना दे."

देश के तरक़्क़ी पसन्द लोग हमेशा ही बिना मुआविज़ा ज़मींदारी ख़ातमे की ताईद करते रहे हैं. मुआविज़े के लिये यह भी तो देखना होगा कि देश की ऐसी हैसियत है या नहीं कि किसानों की पीठ से ज़मींदारी का एक भारी बोझ हटा कर मुआविज़े का दूसरा बोझ उनके कंधों पर लाद दिया जाय. मुआविज़े का सवाल तो उस नुक़सान या घाटे के संबंध में होता है, जिसे पूरा करने या उस समय की मुसीबत दूर करने लिये कुछ रक़म या और चीज़ दी जाती है. मुआविज़ा देने के लिये किसी प्रकार के नुक़सान का होना ज़रूरी है और मुआविज़े की रक़म किसी भी हालत में नुक़सान की रक़म से ज़ियादा नहीं हो सकती.

इस उसूल से देखें तो बात साफ़ हो जायगी कि अगर किसी को मुआविज़ा मिलना है तो किसानों को, ज़मींदारों को नहीं. जो दो हज़ार रुपए से ज़ियादा के मालगुज़ार हैं, उनके पास ख़ुद इतनी ज़मीन है कि ज़मींदारी के ख़ातमे के बाद भी वह मज़े में रह सकते हैं. उनके पास सोना चांदी व नक़दी है, जो रोज़ी कमाने में लगाई जा सकती है. ऐसे लोगों को मुआविज़े देना इनसाफ़ नहीं होगा, समझ और इनसाफ़ के ख़िलाफ़ बात होगी. इसका हमारी समाजी और आर्थिक तरक़्क़ी पर बहुत बुरा असर पड़ेगा.

छोटे ज़मींदार

दूसरी तरफ़ वह लाखों टुट-पूंजिये ज़मींदार हैं जिनकी हालत मामूली किसान से अच्छी नहीं है. वह ख़ुद बड़े ज़मींदारों के काश्तकार हैं और उस तरफ़ से उनकी भी चुसाई होती है. उन्हें ज़मींदार मान कर वैसा ही बरताव करना अन्याय होगा. उनके लिये ज़मींदारी के बाद खेती दूसरे पेशे की तरह है. इन 20 लाख पेशेवर काश्तकारों को ज़मींदारों की क़तार में खड़ा करना एक ढोंग है. उस क़तार में खड़े होकर वह उन मुट्ठी भर बड़े ज़मींदारों की ढाल की तरह इस्तेमाल होते हैं जिनके हित और निगाहें देश के हित के ख़िलाफ़ हैं.

कहा जाता है कि बीस लाख ज़मींदारों और उनके क़रीब दो करोड़ रिश्तेदारों की रोज़ी का ज़रिया ज़मींदारी के साथ ख़तम हो जायगा; इसलिये ज़मींदारी ख़त्म करने के बाद में उन्हें नौकरी या दूसरे काम दिलाना चाहिये. पर यह बात ग़लत है.

अव्वल तो दुनिया में कहीं भी एक आदमी पर निर्भर रहने वाले रिश्तेदारों की गिनती औसतन दस नहीं मानी गई. औसत ठीक मानने पर आधे लोग तो ऐसे ही निकल

سرکار کے بیچ میں آنے والے ان زمیںداروں کے حق انہیں مناسب معاوضے دیکر لے لئے جائیں. اس کام کے لئے ایک اسکیم تیار کرنے کے لئے سرکار ایک کمیٹی بنا دے."

دیش کے ترقی پسند لوگ ہمیشہ ہی بنا معاوضہ زمیںداری خاتمے کی تائید کرتے رہے ہیں . معاوضے کے لئے یہ بھی تو دیکھنا ہوگا کہ دیش کی ایسی حیثیت ہے یا نہیں کہ کسانوں کی پیٹھ سے زمیںداری کا ایک بھاری بوجھ ہٹا کر معاوضے کا دوسرا بوجھ اُن کے کندھوں پر لاد دیا جائے. معاوضے کا سوال تو اُس نقصان یا گھاٹے کے سمبندھ میں ہوتا ہے، جسے پورا کرنے یا اس سمے کی مصیبت دور کرنے کے لئے کچھ رقم یا اور چیز دی جاتی ہے . معاوضہ دینے کے لئے کسی پرکار کے نقصان کا ہونا ضروری ہے اور معاوضے کی رقم کسی بھی حالت میں نقصان کی رقم سے زیادہ نہیں ہو سکتی .

اس اصول سے دیکھیں تو بات صاف ہو جائے گی کہ اگر کسی کو معاوضہ ملنا ہے تو کسانوں کو، زمیںداروں کو نہیں . جو دو ہزار روپے سے زیادہ کے مالگذار ہیں، ان کے پاس خود اتنی زمین ہے کہ زمیںداری کے خاتمے کے بعد بھی وہ مزے میں رہ سکتے ہیں . اُن کے پاس سونا چاندی و نقدی ہے، جو روزی کمانے میں لگائی جا سکتی ہے . ایسے لوگوں کو معاوضے دینا انصاف نہیں ہوگا، سمجھ اور انصاف کے خلاف بات ہوگی . اس کا ہماری سماجی اور آرتھک ترقی پر بہت برا اثر پڑے گا .

چھوٹے زمیںدار

دوسری طرف وہ لاکھوں ٹٹ پونجیئیں زمیںدار ہیں جن کی حالت معمولی کسان سے اچھی نہیں ہے . وہ خود بڑے زمیںداروں کے کاشتکار ہیں اور اس طرف سے ان کی بھی چسائی ہوتی ہے . انہیں زمیںدار مان کر ویسا ہی برتاؤ کرنا انیائے ہوگا . ان کے لئے زمیںداری کے بعد کھیتی دوسرے پیشے کی طرح ہے . ان بیس لاکھ پیشہ ور کاشتکاروں کو زمیںداروں کی قطار میں کھڑا کرنا ایک ڈھونگ ہے . اس قطار میں کھڑے ہو کر وہ ان مٹھی بھر بڑے زمیںداروں کی ڈھال کی طرح استعمال ہوتے ہیں جن کے ہت اور نگاہیں دیش کے ہت کے خلاف ہیں.

کہا جاتا ہے کہ بیس لاکھ زمیںداروں اور ان کے قریب دو کروڑ رشتہ داروں کی روزی کا ذریعہ زمیںداری کے ساتھ ختم ہو جائےگا؛ اس لئے زمیںداری ختم کرنے کے بعد میں انہیں نوکری یا دوسرے کام دلانا چاہئے . پر یہ بات غلط ہے .

اول تو دنیا میں کہیں بھی ایک آدمی پر نربھر رہنے والے رشتہ داروں کی گنتی اوسطاً دس نہیں مانی گئی . اوسط ٹھیک ماننے پر آدھے لوگ تو ایسے ہی نکل

यह सन्देश सुनने के लिये उनमें शामिल हुए. इस तरह देहातों की जनता के लिये ज़मींदारी के ख़ातमे की ज़रूरत मालगुज़ारी वसूली के तरीक़ों के बदलने से बहुत ज़ियादा है. जनता तो हर तरह की सामन्ती लूट खसोट और चुसाई से छुटकारा पाना ही ज़मींदारी का सही अन्त मानती है. जनता ने देश की आज़ादी का मतलब भी आर्थिक आज़ादी ही माना है.

ज़मींदारी अन्त का निचोड़

ज़मींदारी ख़ातमे के क्या माने होनी चाहिये यह बात बहस की नहीं है. पूर्वी योरप और चीन के किसान आन्दोलनों ने यह कर के दिखा दिया है. अगर अपने देश के ही उत्तर पच्छिम में कश्मीर को हम देखें तो मालूम हो जायगा कि ज़मींदारी के ख़ातमे का क्या मतलब है. मोटे रूप से ज़मींदारी अन्त का निचोड़ यह है :—

(i) ज़मींदारी का अंत बिना मुआविज़ा दिये ही किया जाए (ऐसे छोटे ज़मींदारों को रोज़गार के लिये सहायता दी जाय जिनको ज़मींदारी ख़तम करने से धक्का लगा हो).

(ii) सीर और ख़ुदकाश्त के रक़बे की हद मुक़र्रर कर दी जाय और उससे ज़ियादा ज़मीन ज़मींदारों से लेकर छोटे किसानों व खेतिहर मज़दूरों में बांट दी जाय.

(iii) "जोतने वाला ज़मीन का मालिक हो." नए बन्दोबस्त का उसूल यह हो कि जोतने वाले का ज़मीन पर से स्थाई मौरूसी हक़ न हटाया जा सके.

(iv) ज़मीन पर लगान तय करने का तरीक़ा ऐसा हो कि छोटी जोतों पर एक हद बांध दी जाय और उन पर लगान न लिया जाय. जैसे जैसे जोत का रक़बा बढ़ता जाय खेती की आमदनी पर टैक्स बढ़ता जाय. पुराना सामन्ती तरीक़ा ख़तम हो.

(v) बड़े पैमाने पर थोड़े से सामूहिक (Collective) और सहकारी (Cooperative) फ़ार्म खोल कर खेती के तरीक़ों में सुधार किये जायं.

आइए अब इन पांच उसूलों को थोड़ा विस्तार से देखें और फिर इस बात पर ग़ौर करें कि इस बारे में हमारे उत्तर प्रदेश की सरकार क्या कर रही है.

4. मुआविज़े का सवाल

ज़मींदारों को छोड़ कर ज़मींदारी का दूसरा हामी आज कोई नहीं मिलेगा. बहुत से ज़मींदार ख़ुद ज़मींदारी प्रथा के अंत के पक्ष में हैं. पर जिस बात पर बहस शुरू होती है वह है मुआविज़े की बात. 8 अगस्त सन 1946 को सूबे की असेम्बली ने यह ठहराव पास किया था :—

"यह असेम्बली ज़मींदारी प्रथा के अंत का असूल मानती है. यह असेम्बली तय करती है कि किसान और

یہ سندیش سننے کے لئے ان میں شامل ہوئے. اس طرح دیہاتوں کی جنتا کے لئے زمینداری کے خاتمے کی ضرورت مالگذاری وصولی کے طریقوں کے بدلنے سے بہت زیادہ ھے . جنتا تو ھر طرح کی سامنتی لوٹ کھسوٹ اور چسائی سے چھٹکارا پانا ھی زمینداری کا صحیح انت مانتی ھے . جنتا نے دیش کی آزادی کا مطلب بھی آرتھک آزادی ھی مانا ھے .

زمینداری انت کا نچوڑ

زمینداری خاتمے کے کیا معنے ھونا چاھئے یہ بات بحث کی نہیں ھے . پوربی یورپ اور چین کے کسان آندولنوں نے یہ کر کے دکھا دیا ھے . اگر اپنے دیش کے ھی اتر پچھم میں کشمیر کو ھم دیکھیں تو معلوم ھوجائے گا کہ زمینداری کے خاتمے کا کیا مطلب ھے . موٹے روپ سے زمینداری انت کا نچوڑ یہ ھے :—

(i) زمینداری کا انت بنا معاوضہ دئے ھی کیا جائے (ایسے چھوٹے زمینداروں کو روزگار کے لئے سہایتا دی جائے جن کو زمینداری ختم کرنے سے دھکا لگا ھوئے).

(ii) سیر اور خود کاشت کے رقبے کی حد مقرر کر دی جائے اور اس سے زیادہ زمین زمینداروں سے لے کر چھوٹے کسانوں و کھیتی ھر مزدوروں میں بانٹ دی جائے.

(iii) " جوتنے والا زمین کا مالک ھو . " نئے بندوبست کا اصول یہ ھو کہ جوتنے والے کا زمین پر سے استھائی موروثی حق نہ ھٹایا جاسکے .

(iv) زمین پر لگان طے کرنے کا طریقہ ایسا ھو کہ چھوٹی جوتوں پر ایک حد باندھ دی جائے اور ان پر لگان نہ لیا جائے . جیسے جیسے جوت کا رقبہ بڑھتا جائے کھیتی کی آمدنی پر ٹیکس بڑھتا جائے . پرانا سامنتی طریقہ ختم ھو .

(v) بڑے پیمانے پر تھوڑے سے ساموھک (Collective) اور سہکاری (Co-operative) فارم کھول کر کھیتی کے طریقوں میں سدھار کئے جائیں .

آیئے اب ان پانچ اصولوں کو تھوڑا وستار سے دیکھیں اور پھر اس بات پر غور کریں کہ اس بارے میں ھمارے اتر پردیش کی سرکار کیا کر رھی ھے .

4. معاوضے کا سوال

زمینداروں کو چھوڑ کر زمینداری کا دوسرا حامی آج کوئی نہیں ملے گا . بہت سے زمیندار خود زمینداری پرتھا کے انت کے پکش میں ھیں . پر جس بات پر بحث شروع ھوتی ھے وہ ھے معاوضے کی بات. 8 اگست 1946 کو صوبے کی اسمبلی نے یہ ٹھہراؤ پاس کیا تھا :—

" یہ اسمبلی زمینداری پرتھا کے انت کا اصول مانتی ھے . یہ اسمبلی طے کرتی ھے کہ کسان

(9) देहात के आर्थिक संकट को ज़मींदारों ने और बढ़ाया है. उन्होंने बड़ी तादाद में किसानों को बेदख़ल किया है; परती तोड़ ली है या उसे पट्टे पर उठा दिया है और जंगल और बंजर भी काट लिये हैं। उन्होंने ये काम इन वजहों से किये हैं :—

(क) अपनी ख़ुद काश्त का रक़बा बढ़ाने के लिये.

(ख) नज़राने के ज़रिये ज़ियादा से ज़ियादा रक़म वसूल करने के लिये.

(ग) 'परती' को 'खेती' दिखला कर ज़मींदारी ख़त्म होने पर ज़ियादा से ज़ियादा मुआविज़ा वसूल करने के लिये.

इस तरह हमारे देश में ज़मींदारी का मतलब है—वह प्रथा जो ग़रीबी, भुकमरी, ग़ल्ले की हमेशा के लिये कमी, जहालत अनपढ़ता और नैतिक पतन बढ़ाती है. आर्थिक ढांचे के टूटने का यह लाज़मी नतीजा है. ज़मींदारी को बचाने के पक्ष में कोई भी दलील—राजनैतिक, आर्थिक या नैतिक नहीं दी जा सकती. कोई उसूल या सिद्धान्त उसकी ताईद नहीं कर सकता.

3. ज़मींदारी के ख़ातमे का मतलब

पिछले बीस साल से ज़मींदारी ख़तम करने का आन्दोलन देश की आज़ादी की लड़ाई का एक हिस्सा रहा है. "किसानों की हालत में सुधार हो" का नारा लगा कर ही राष्ट्री आन्दोलन आम जनता के दिलों में जगह पा सका है. जहां तक उत्तर प्रदेश का ताल्लुक़ है, बीस साल पहले किसान आन्दोलन में एक सुझाव ऐसा भी आया कि पूरी कांगरेस जमात को किसान कमेटियों में बांट दिया जाय और वहीं से संगठन शुरू हो. यहां कांगरेस जो जनता की जमात की शक्ल में बनी हुई है, इसकी सबसे बड़ी वजह यही है कि उन दिनों कांगरेस ने किसानों की मांगे पूरी कराने और उनके संगठन बनाने की कोशिश की. इसका नतीजा एक यह भी हुआ कि कांगरेस की ताक़त तो बढ़ी पर किसान आन्दोलन और किसान सभाएं अलग न पनप पाईं.

कराची कांगरेस और ज़मींदारी

सन '31 में कराची में कांगरेस ने बुनियादी अधिकारों का जो प्रस्ताव पास किया उसमें कहा गया था—कांगरेस लगान, मालगुज़ारी और ज़मीन के बन्दोबस्त के तरीक़ों को बदलना चाहती है.......छोटे किसानों का लगान और मालगुज़ारी कम होनी चाहिये; जो बहुत छोटी छोटी जोतें हैं उन पर तो लगान और मालगुज़ारी की पूरी छूट होनी चाहिये. ज़मीन पर जो टैक्स का बोझ है, उसे इस तरह बांटना चाहिये कि जो उसे संभाल सकें उन्हीं पर वह पड़े. इस बात का सभाओं, सम्मेलनों और कानफ़रेन्सों के ज़रिये प्रचार किया गया. लाखों लोग अपने छुटकारे का

(9) دیہات کے آرتھک سنکٹ کو زمیںداروں نے اور بڑھایا ہے . انھوں نے بڑی تعداد میں کسانوں کو بیدخل کیا ہے؛ پرتی توڑ لی ہے یا اُسے پٹے پر اٹھا دیا ہے اور جنگل اور بنجر بھی کاٹ لئے ہیں . انھوں نے یہ کام تین وجھوں سے کئے ہیں .

(ک) اپنی خود کاشت کا رقبہ بڑھانے کے لئے .

(کھ) نذرانے کے ذریعے زیادہ سے زیادہ رقم وصول کرنے کے لئے .

(گ) 'پرتی' کو 'کھیتی' دکھلا کر زمیںداری ختم ہونے پر زیادہ سے زیادہ معاوضہ وصول کرنے کے لئے .

اس طرح ہمارے دیش میں زمیںداری کا مطلب ہے—وہ پرتھا جو غریبی' بھکمری' غلے کی ہمیشہ کے لئے کمی' جہالت ان پڑھتا اور نیتک پتن بڑھاتی ہے . آرتھک ڈھانچے کے ٹوٹنے کا یہ لازمی نتیجہ ہے . زمیںداری کو بچانے کے پکش میں کوئی بھی دلیل—راج نیتک' آرتھک یا نیتک نہیں دی جا سکتی . کوئی اصول یا سدھانت اس کی تائید نہیں کر سکتا .

3. زمیںداری کے خاتمہ کا مطلب

پچھلے بیس سال سے زمیںداری ختم کرنے کا آندولن دیش کی آزادی کی لڑائی کا ایک حصہ رہا . " کسانوں کی حالت میں سدھار ہو " کا نعرہ لگا کر ہی راشٹری آندولن عام جنتا کے دلوں میں جگہ پاسکا ہے . جہاں تک اُتر پردیش کا تعلق ہے بیس سال پہلے کسان آندولن میں ایک سجھاؤ ایسا بھی آیا کہ پوری کانگریس جماعت کو کسان کمیٹیوں میں بانٹ دیا جائے اور وہیں سے سنگٹھن شروع ہو . یہاں کانگریس جو جنتا کی جماعت کی شکل میں بنی ہوئی ہے' اس کی سب سے بڑی وجہ یہی ہے کہ ان دنوں کانگریس نے کسانوں کی مانگیں پوری کرانے اور ان کے سنگٹھن بنانے کی کوشش کی . اسکا نتیجہ ایک یہ بھی ہوا کہ کانگریس کی طاقت تو بڑھی پر کسان آندولن اور کسان سبھائیں الگ نہ پنپ پائیں .

کراچی کانگریس اور زمیںداری

سن '31 میں کراچی میں کانگریس نے بنیادی ادھیکاروں کا جو پرستاؤ پاس کیا اس میں کہا گیا تھا— کانگریس لگان' مالگذاری اور زمین کے بندوبست کے طریقوں کو بدلنا چاہتی ہے......چھوٹے کسانوں کا لگان اور مالگذاری کم ہونی چاہئے؛ جو بہت چھوٹی چھوٹی جوتیں ہیں اُن پر تو لگان اور مالگذاری کی پوری چھوٹ ہونی چاہئے . زمین پر جو ٹیکس کا بوجھ ہے' اسے اس طرح بانٹنا چاہئے کہ جو اسے سنبھال سکیں اُنہیں پر وہ پڑے .

اس بات کا سبھاؤں' سمیلنوں اور کانفرنسوں کے ذریعے پرچار کیا گیا . لاکھوں لوگ اپنے چھٹکارے کا

(5) काश्तकारों की जमीन की भूक बढ़ गई है. उनकी जोतें छोटी छोटी हो गई हैं और इनके भी बटवारे होते गए हैं और बेदख़ली का डर बराबर बना रहता है.

(6) जो खेती करते हैं (यानी किसान) उनसे जमीन छीन कर ऐसे लोगों के पास पहुँच रही है जो खेती नहीं करते और अकसर तो देहातों में भी नहीं रहते (जैसे क़स्बे के बनिये और शहरी जमींदार). जमींदारी में काश्तकारों की हिफ़ाज़त की गारन्टी नहीं है और इसलिये शिकमी व दूसरे छोटे किसान अपनी आज़ाद खेती तो कर नहीं पाये पर महाजनों ने जमीनें जरूर हथिया लीं. यह महाजन या तो अपनी जमीनें काश्तकारों को पट्टे पर उठा देते हैं या ख़ुद खेती करके अपनी लागत पर भारी मुनाफ़ा उठाते हैं. ऐसी महाजनी सभ्यता में खेती का विकास पिछड़ जाता है और सूद ख़ोरी बढ़ती जाती है इसीलिये पिछड़े हुए देशों में उद्योग धन्दों में लगाने के लिए पूंजी नहीं बन पाती. महाजनों को सूद पर रुपया देने में काफ़ी मुनाफ़ा हो जाता है.

छोटे जमींदार भी अपना क़र्ज़ चुकाने के लिये जमीनें बेचते हैं और महाजन उसे ख़रीदने में जो रक़म लगाते हैं उस पर काफ़ी और स्थाई मुनाफ़ा कमाते रहते हैं. इधर हाल में ग़ल्ले के जो दाम बढ़े हैं उसके बावजूद भी छोटे जमींदार दिवालिये पन की तरफ़ बढ़ते जा रहे हैं.

इसी तरह खेतों को रहन रख देना भी आम बात हो गई है. रहन के ज़रिये क़र्ज़ अंगरेज़ी ज़माने में बहुत बढ़ा क्योंकि बीच के दर्जे के जमींदार रईस अपनी आमदनी में रह कर ख़र्च नहीं चला पाते थे. उन्होंने अपनी जमीनें बेच कर क़र्ज़ से छुटकारा पाया. छोटे और बीच के दरजे के जमींदार भी जमींदारी प्रथा में रह कर काश्तकार की तरह ही पिसते हैं.

(7) ग़रीबी से खेती का विकास न होने की वजह से देहात की ज़ियादातर जनता क़र्ज़ के बोझ से दबी हुई है. आज जब अनाज का दाम बढ़ा हुआ है फिर भी देहात का ग़रीब किसान और मज़दूर क़र्ज़ से दबा है. हाल में जांच से मालूम हुआ है कि कुछ ज़िलों में तो 80 फ़ी सदी जनता क़र्ज़ में गिरफ़्तार है. इस तरह जमींदारी प्रथा ने खेती के विकास में ब्रेक का काम किया है.

(8) ग़रीब किसान की ग़रीबी और बढ़ गई है और साथ ही साथ अमीरों की अमीरी भी बढ़ी है. इससे देहात के समाजी ढांचे में ऐसा तनाव पैदा हो गया है कि वहां अब अमन से रहना मुश्किल हो गया है. आए दिन किसान जमींदार या किसान-जमींदार-साहूकार की लड़ाइयां होती रहती हैं.

(5) کاشتکاروں کی زمین کی بھوک بڑھ گئی ہے۔ ان کی جوتیں چھوٹی چھوٹی ہو گئی ہیں اور ان کے بھی بٹوارے ہوتے گئے ہیں اور بیدخلی کا ڈر برابر بنا رہتا ہے۔

(6) جو کھیتی کرتے ہیں (یعنی کسان) انسے زمین چھین کر ایسے لوگوں کے پاس پہنچ رہی ہے جو کھیتی نہیں کرتے اور اکثر تو دیہاتوں میں بھی نہیں رہتے (جیسے قصبے کے بنیے اور شہری زمیندار) زمینداری میں کاشتکاروں کی حفاظت کی گارنٹی نہیں ہے اور اس لئے شکمی و دوسرے چھوٹے کسان اپنی آزاد کھیتی تو کر نہیں پائے۔ پر مہاجنوں نے زمینیں ضرور ہتھیا لیں۔ یہ مہاجن یا تو اپنی زمینیں کاشتکاروں کو پٹے پر اٹھا دیتے ہیں یا خود کھیتی کرکے اپنی لاگت پر بھاری منافع اٹھاتے ہیں ایسی مہاجنی سبھیتا میں کھیتی کا وکاس پچھڑ جاتا ہے اور سود خوری بڑھتی جاتی ہے۔ اسی لئے پچھڑے ہوئے دیشوں میں اُدیوگ دھندے لگانے کے لئے پونجی نہیں بن پاتی۔ مہاجنوں کو سود پر روپیہ دینے میں کافی منافع ہو جاتا ہے۔

چھوٹے زمیندار بھی اپنا قرض چکانے کے لئے زمینیں بیچتے ہیں اور مہاجن اُسے خریدنے میں جو رقم لگاتے ہیں اس پر کافی اور استھائی منافع کماتے رہتے ہیں۔ اُدھر حال میں غلے کے جو دام بڑھے ہیں اس کے باوجود بھی چھوٹے زمیندار دیوالیہ پن کی طرف بڑھتے جا رہے ہیں۔

اسی طرح کھیتوں کو رہن رکھ دینا بھی عام بات ہوگئی ہے۔ رہن کے ذریعے قرض انگریزی زمانے میں بہت بڑھا کیوں کہ بیچ کے درجے کے زمیندار رئیس اپنی آمدنی میں رہ کر خرچ نہیں چلا پاتے تھے۔ اُنہوں نے اپنی زمینیں بیچ کر قرض سے چھٹکارا پایا۔ چھوٹے اور بیچ کے درجے کے زمیندار بھی زمینداری پرتھا میں رہ کر کاشتکار کی طرح ہی پستے رہے ہیں۔

(7) غریبی سے کھیتی کا وکاس نہ ہونے کی وجہ سے دیہات کی زیادہ تر جنتا قرض کے بوجھ سے دبی ہوئی ہے۔ آج جب اناج کا دام بڑھا ہوا ہے پھر بھی دیہات کا غریب کسان اور مزدور قرض سے دبا ہے۔ حال میں جانچ سے معلوم ہوا ہے کہ کچھ ضلعوں میں تو 80 فیصدی جنتا قرض میں گرفتار ہے۔ اس طرح زمینداری پرتھا نے کھیتی کے وکاس میں بریک کا کام کیا ہے۔

(8) غریب کسان کی غریبی اور بڑھ گئی ہے اور ساتھ ہی ساتھ امیروں کی امیری بھی بڑھی ہے۔ اس سے دیہات کے سماجی ڈھانچے میں ایسا تناؤ پیدا ہو گیا ہے کہ وہاں اب امن سے رہنا مشکل ہوگیا ہے۔ آئے دن کسان زمیندار یا کسان زمیندار ساہوکار کی لڑائیاں ہوتی رہتی ہیں۔

तरफ़ तो मुट्ठी भर जमींदार साठ फ़ी सदी ज़मीन हथियाए बैठे हैं और दूसरी तरफ़ छोटे काश्तकारों की हालत इतनी ख़राब है कि एक करोड़ अट्ठारह लाख आदमी आज बेज़मीन के खेतिहर मज़दूर हैं और बाक़ी में 80 फ़ी सदी से ज़ियादा काश्तकारों के पास पांच एकड़ से कम ज़मीन है.

(2) खेतों की उपज बराबर कम होती जा रही है. खेती के क़ाबिल नई ज़मीन उठाई ही नहीं जा रही है और जहां खेती होती थी वह ज़मीन भी परती होती जा रही है. क़ुदरती तौर पर ज़मीन की पैदावार घट रही है. एक अच्छे खेतिहर देश में चरागाहों और जंगलों के लिए जो जगह छूटनी चाहिये थी ज़मीदारों ने उसे भी नहीं छोड़ा. ऐसी हालत में अनाज का संकट बराबर बना रहा और बढ़ता रहा है. बंगाल का अकाल और अब यहां और वहां जो अकाल की छाया दिखाई देती है सब एक बड़े दरजे तक इसी प्रथा की देन है. ज़ियादा ग़ल्ला पैदा करने की सारी स्कीमें नाकाम रही हैं. सम्राट अकबर के ज़माने में फ़ी एकड़ 20 मन गेहूं पैदा होता था. सन 1930 तक यह उपज गिर कर 11 मन रह गई थी. और सन '46-47 में यह 9 मन से भी कम रह गई. यही हालत पूरे देश की है. लड़ाई से पहले के पचीस बरस में चावल की उपज एक चौथाई कम हो गई थी सन '21 के मुक़ाबले में सन '41 में 21 लाख एकड़ कम ज़मीन पर खेती हुई और क़रीब 80 लाख टन ग़ल्ला कम पैदा हुआ. इस बढ़ते हुए संकट से साबित है कि जब तक ज़मीदारी नहीं ख़तम होती खेती में कोई काम का सुधार नहीं हो सकता.

(3) दूसरों की कमाई पर ज़िन्दा रहने वाले और उन्हीं को चूसने वाले ज़मींदारों की यह जमात खेती की आमदनी का बड़ा हिस्सा ले तो लेती है पर इस आमदनी को फिर से पैदावार बढ़ाने के लिये नहीं लगाती. हिसाब लगाया गया है कि इस सदी के शुरू के पहले चालीस बरस में इस जमात ने दो अरब रुपया किसानों से नज़राने की शकल में वसूल किया. पिछले दस साल में यह लूट और भी बढ़ गई. इस सबके अलावा ज़ाब्ते की जायज़ लूट अलग है.

(4) ज़मींदारी प्रथा ने देश में कल कारख़ानों और उद्योग धन्दों का विकास रोका है. एक तो देश की आमदनी का बड़ा हिस्सा हड़प कर ज़मींदार उसे उद्योग धन्दों या पैदावार बढ़ाने में नहीं लगाते और दूसरे देश की करोड़ों जनता को बेहद ग़रीब बना कर उन्होंने कारख़ानों के बने या घरेलू धन्दों के बने माल की खपत भी कम कर दी है. जब किसान की जेब में पैसा नहीं है तो वह कपड़ा, तेल, शक्कर, बच्चों के लिये काग़ज़ के खिलौने वग़ैरा कैसे ख़रीदेगा ?

طرف تو مٹھی بھر زمیندار ساٹھ فیصدی زمین ہتھیائے بیٹھے ہیں اور دوسری طرف چھوٹے کاشتکاروں کی حالت اتنی خراب ہے کہ ایک کروڑ اٹھارہ لاکھ آدمی آج بےزمین کی کھیتی‌ہر مزدور ہیں اور باقی میں 80 فیصدی سے زیادہ کاشتکاروں کے پاس پانچ ایکڑ سے کم زمین ہے ۔

(2) کھیتوں کی اپج برابر کم ہوتی جا رہی ہے ۔ کھیتی کے قابل نئی زمین اٹھائی ہی نہیں جا رہی ہے اور جہاں کھیتی ہوتی تھی وہ زمین بھی پرتی ہوتی جا رہی ہے ۔ قدرتی طور پر زمین کی پیداوار گھٹ رہی ہے ۔ ایک اچھے کھیتی‌ہر دیش میں چراگاہوں اور جنگلوں کے لئے جو جگہ چھوٹنی چاہئے تھی زمینداروں نے اسے بھی نہیں چھوڑا ۔ ایسی حالت میں اناج کا سنکٹ برابر بنا رہا اور بڑھتا رہا ہے ۔ بنگال کا اکال اور اب یہاں اور وہاں جو اکال کی چھایا دکھائی دیتی ہے سب ایک بڑے درجے تک اسی پرتھا کی دین ہے ۔ زیادہ غلہ پیدا کرنے کی ساری اسکیمیں نا کام رہی ہیں۔ سمراٹ اکبر کے زمانے میں فی ایکڑ بیس من گیہوں پیدا ہوتا تھا ۔ سن 1930 تک یہ اپج گر کر 11 من رہ گئی تھی ۔ اور سن '46-47 میں 9 من سے بھی کم رہ گئی ۔ یہی حالت پورے دیش کی ہے ۔ لڑائی سے پہلے کے پچیس برس میں چاول کی اپج ایک چوتھائی کم ہوگئی تھی ۔ سن '21 کے مقابلے میں سن '41 میں 21 لاکھ ایکڑ کم زمین پر کھیتی ہوئی اور قریب 80 لاکھ ٹن غلہ کم پیدا ہوا ۔ اس بڑھتے ہوئے سنکٹ سے ثابت ہے کہ جب تک زمینداری نہیں ختم ہوتی کھیتی میں کوئی کام کا سدھار نہیں ہوسکتا ۔

(3) دوسروں کی کمائی پر زندہ رہنے والے اور انہیں کو چوسنے والے زمینداروں کی یہ جماعت کھیتی کی آمدنی کا بڑا حصہ لے تو لیتی ہے پر اس آمدنی کو پھر سے پیداوار بڑھانے کے لئے نہیں لگاتی ۔ حساب لگایا گیا ہے کہ اس صدی کے شروع کے پہلے چالیس برس میں اس جماعت نے دو ارب روپیہ کسانوں سے نذرانے کی شکل میں وصول کیا ۔ پچھلے دس سال میں یہ لوٹ اور بھی بڑھ گئی ۔ اس سب کے علاوہ ضابطے کی جائز لوٹ الگ ہے۔

(4) زمینداری پرتھا نے دیش میں کل کارخانوں اور ادیوگ دھندوں کا وکاس روکا ہے ۔ ایک تو دیش کی آمدنی کا بڑا حصہ ہڑپ کر زمیندار اسے ادیوگ دھندوں یا پیداوار بڑھانے میں نہیں لگاتے اور دوسرے دیش کی کروڑوں جنتا کو بےحد غریب بناکر انہوں نے کارخانوں کے بنے یا گھریلو دھندوں کے بنے مال کی کھپت بھی کم کردی ہے ۔ جب کسان کی جیب میں پیسہ نہیں ہے تو وہ کپڑا، تیل، شکر، بچوں کے لئے کاغذ کے کھلونے وغیرہ کیسے خریدیگا ؟

कि कम से कम इतनी ही बेदख़लियां और ज़मीन पर नाजायज़ क़ब्ज़े धौंस पट्टी और ज़बरदस्ती से भी हुए.

इस तरह हम देखते हैं कि सन '39 के आराज़ी क़ानून के बावजूद, ज़ोर ज़बरदस्ती व हाकिमों की खुली या छिपी मदद से किसानों पर ज़ुल्म होते रहे.

सन '47 में दूसरी कांगरेसी सरकार ने क़ानून में कुछ सुधार करके थोड़े से बड़े ज़मींदारों का सीर बढ़ा लेने का हक़ कम कर दिया. पर चूंकि छोटे ज़मींदारों का यह हक़ बना रहा, बड़े ज़मींदार अपने मिले जुले परिवार में नक़ली बटवारा दिखा कर छोटे ज़मींदार बन गए और लगातार बेदख़लियां करा कर अपनी सीर बढ़ाते रहे. इससे ज़मींदारों और काश्तकारों के बीच अन बन, मन मुटाव, झगड़े. मुक़दमे बाज़ी और टक्करें बढ़ती ही रहीं.

सरकार ने हाल में जो 'ज़मींदारी क़ानून" बनाया है उससे तीन सवाल पैदा होते हैं: (i) ज़मींदारी क्यों ख़त्म की जाय ? (ii) ज़मींदारी के ख़ात्मे का क्या मतलब है ? (iii) सरकार ने इस सिलसिले में क्या किया है ? इन तीनों सवालों के जवाब हमें इस मसले की बुनियादी बातें समझने में मदद देंगे.

2. ज़मींदारी क्यों ख़त्म की जाय

राजनीति की नज़र से हमारी ज़मींदारी प्रथा इंगलैंड की ज़मींदारी प्रथा की भौंडी नक़ल है. अपनी ताक़त मज़बूत करने के लिये अंगरेज़ों ने एक ऐसी जमात को जन्म दिया जो ज़मीन के असली मालिकों का हक़ छीन कर ख़ुद मालिक बन बैठी—जिसके ज़िन्दा रहने के लिए अंगरेज़ी सरकार की मदद ज़रूरी थी और अपनी सरकार की जड़ जमाने के लिये अंगरेज़ों को जिसकी ज़रूरत थी. समाजी निगाह से इस प्रथा ने देहात में एक ऐसी जमात पैदा कर दी जो निठल्ली थी. संस्कृति की निगाह से ज़मींदारी शासकों के हाथ में एक ऐसा हथियार है जिससे जहालत, दुराचार और तरह तरह की चाल चलन की बुराइयां पैदा की गईं और पिछड़े हुए जात पात, बिरादरी क़बीले, और अलग अलग धर्मों के झगड़े पनपा कर देहाती दुनिया में सुधार और तरक़्क़ी की ताक़तों को रोका गया. माली हालत की निगाह से ज़मींदारी ने एक ऐसी जमात को पैदा किया है जिसने किसान की रोटी छीन कर भारत जैसे उपजाऊ देश को भुकमरी और ग़ल्ले की कमी वाला देश बना दिया है.

ज़मींदारी के बुरे नतीजे

आर्थिक नज़र से ज़मींदारी का हमें क्या फल मिला है यह नीचे लिखी बातों से देखा जा सकता है :—

(1) इससे खेती के लायक़ ज़मीन का ग़लत बंटवारा हुआ है. देहात का ढांचा इससे इतना बिगड़ गया है कि एक

کہ کم سے کم اتنی ہی بیدخلیاں اور زمین پر ناجائز قبضے دھونس پٹی اور زبردستی سے بھی ہوئے ۔

اس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ سن '39 کے آراضی قانون کے باوجود' زور زبردستی و حاکموں کی کھلی یا چھپی مدد سے کسانوں پر ظلم ہوتے رہے ۔

سن '47 میں دوسری کانگریسی سرکار نے قانون میں کچھ سدھار کر کے تھوڑے سے بڑے زمینداروں کا سیر بڑھا لینے کا حق کم کر دیا ۔ پر چونکہ چھوٹے زمینداروں کا یہ حق بنا رہا' بڑے زمیندار اپنے ملے جلے پریوار میں نقلی بٹوارا دکھا کر چھوٹے زمیندار بن گئے اور لگاتار بیدخلیاں کرا کر اپنی سیر بڑھاتے رہے. اس سے زمینداروں اور کاشتکاروں کے بیچ اَن بن' من مٹاؤ' جھگڑے' مقدمے بازی اور ٹکریں بڑھتی ہی رہیں ۔

سرکار نے حال میں جو " زمینداری قانون " بنایا ہے اس سے تین سوال پیدا ہوتے ہیں : (i) زمینداری کیوں ختم کی جائے ؟ (ii) زمینداری کے خاتمے کا کیا مطلب ہے ؟ (iii) سرکار نے اس سلسلے میں کیا کیا ہے؟ اِن تینوں سوالوں کے جواب ہمیں اِس مسئلے کی بنیادی باتیں سمجھنے میں مدد دینگے ۔

2. زمینداری کیوں ختم کی جائے

راج نیتی کی نظر سے ہماری زمیندا[illegible] پرتھا انگلینڈ کی زمینداری پرتھا کی بھونڈی نقل ہے ۔ اپنی طاقت مضبوط کرنے کے لئے انگریزوں نے ایک ایسی جماعت کو جنم دیا جو زمین کے اصلی مالکوں کا حق چھین کر خود مالک بن بیٹھی—جس کے زندہ رہنے کے لئے انگریزی سرکار کی مدد ضروری تھی اور اپنی سرکار کی جڑ جمانے کے لئے انگریزوں کو جس کی ضرورت تھی ۔ سماجی نگاہ سے اس پرتھا نے دیہات میں ایک ایسی جماعت پیدا کردی جو نکھٹو تھی ۔ سنسکرتی کی نگاہ سے زمینداری شاسکوں کے ہاتھ میں ایک ایسا ہتھیار ہے جس سے جہالت' دراچار اور طرح طرح کی چال چلن کی برائیاں پیدا کی گئیں اور پچھڑے ہوئے جات پات' برادری قبیلے اور الگ الگ دھرموں کے جھگڑے پنپا کر دیہاتی دنیا میں سدھار اور ترقی کی طاقتوں کو روکا گیا ۔ مالی حالت کی نگاہ سے زمینداری نے ایک ایسی جماعت کو پیدا کیا ہے جسنے کسان کی روٹی چھین کر بھارت جیسے اپجاؤ دیش کو بھکمری اور غلے کی کمی والا دیش بنا دیا ہے ۔

زمینداری کے برے نتیجے

آرتھک نظر سے زمینداری کا ہمیں کیا پھل ملا ہے یہ نیچے لکھی باتوں سے دیکھا جاسکتا ہے :—

(1) اس سے کھیتی کے لائق زمین کا غلط بٹوارا ہوا ہے ۔ دیہات کا ڈھانچہ اس سے اتنا بگڑ گیا ہے کہ ایک

ग़दर के बाद ज़मींदारी क़ानून

इस तरह अंगरेज़ लोग ज़मीन का बन्दोबस्त बराबर ऐसे ढंग से करते रहे कि उनकी राजकाजी जड़ें इस देश में मज़बूत रहें और यहां का कच्चा माल अंगरेज़ी कारख़ानों को मिलता रहे। इस नई व्यवस्था में ज़मींदारों और काश्तकारों के आपसी झगड़े भी धीरे धीरे आए दिन की बात हो गए. किसानों का असन्तोश घटाने के लिये सरकार ने ऐसे क़ानून बनाए जिन से ज़मींदारों को कोई नुक़सान न पहुंचे और किसान भी ख़ुश हो जाय. सन '57 के बाद सन 1930 तक सरकार ने कम से कम नौ ऐसे क़ानून बनाए. इन क़ानूनों को पढ़ने से पता लगता है कि किसानों की ख़ास मांगें तीन थीं :—बंधी हुई मालगुज़ारी, खेतों पर मौरूसी हक़ और खेती को तरक़्क़ी देने की सुविधाएं. उनका असंतोश सरकार को मजबूर करता था कि हर नए क़ानून में उन्हें कुछ रियायतें मिलें, कुछ मिलीं भी. पर इन सब क़ानूनों के बावजूद किसान की बेदख़ली और ज़मींदार के मनमाने नज़राने और बेगार और टैक्स वसूल करने का ज़मींदारों का हक़ बराबर क़ायम रहा. नतीजा यह हुआ कि किसानों की बेचैनी लगातार बनी रही. इसी बीच गांधीजी के असहयोग आन्दोलन की गूंज देहातों में पहुंची.

कांगरेस और बेदख़लियां

सन '30 के बाद यू. पी. के कई ज़िलों में ज़ोर शोर से लगान बन्दी शुरू हुई. राजनैतिक सुलह होने के बाद कांगरेसी सरकार बनी जिसने सन '39 में नया आराज़ी क़ानून बनाया. इस क़ानून में ज़मींदार के अपनी सीर बढ़ा लेने पर क़ानूनी रोक लग गई और लगान की ठीक दर तय करने की भी कोशिश की गई. लगान की बक़ाया वसूल करने के लिये काश्तकार की गिरफ़्तारी, हर बेगार व नज़राना लेना बन्द कर दिया गया. बेदख़ली बन्द करने की भी कोशिश की गई. इस क़ानून के पहले काश्तकारों को अपने खेत पर घर बनाने और कुएं खोदने का हक़ नहीं था. इस नए क़ानून से उन्हें यह हक़ मिल गया. काश्तकारों की थोड़ी बहुत हिफ़ाज़त तो हुई, पर उनकी असली उम्मीदों पर पानी फिर गया. सन '41 से '45 तक में इस प्रदेश के ज़मींदारों ने ज़ाब्ते से साढ़े छै लाख किसानों को साढ़े आठ लाख एकड़ ज़मीन से बेदख़ल कर दिया और लगभग 80 करोड़ रुपए नज़राने लेकर वही ज़मीन फिर दूसरों को उठा दी. पांच साल में ज़मींदारों ने अपनी सीर और ख़ुद काश्त की ज़मीनों में लाखों एकड़ ज़मीन बढ़ा ली. यह सब उस समय के बेईमान अफ़सरों और पटवारियों से मिल कर हुआ. ख़ुद काश्त की ज़मीन बेदख़ली करा कर और चरागाहों पर क़ब्ज़ा कर के बढ़ाई गई. यह बात तो हुई ज़ाब्ते की और लिखत पढ़त की. पर अनुमान यह है

غدر کے بعد زمیںداری قانون

اس طرح انگریز لوگ زمین کا بندوبست برابر ایسے ڈھنگ سے کرتے رہے کہ اُن کی راجکاجی جڑیں اس دیش میں مضبوط رہیں اور یہاں کا کچا مال انگریزی کارخانوں کو ملتا رہے . اس نئی ویوستھا میں زمیںداروں اور کاشت کاروں کے آپسی جھگڑے بھی دھیرے دھیرے آئے دن کی بات ہوگئے. کسانوں کا اسنتوش گھٹانے کے لئے سرکار نے ایسے قانون بنائے جن سے زمیںداروں کو کوئی نقصان نہ پہنچے اور کسان بھی خوش ہو جائیں . سن '57 کے بعد سن 1930 تک سرکار نے کم سے کم نو ایسے قانون بنائے. ان قانونوں کو پڑھنے سے پتہ لگتا ہے کہ کسانوں کی خاص مانگیں تین تھیں :—بندھی ہوئی مالگذاری' کھیتوں پر موروثی حق اور کھیتی کو ترقی دینے کی سوودھائیں . ان کا اسنتوش سرکار کو مجبور کرتا تھا کہ ہر نئے قانون میں اُنہیں کچھ رعائتیں ملیں' کچھ ملیں بھی . پر ان سب قانونوں کے باوجود کسان کی بیدخلی اور زمیںدار کے من مانے نذرانے اور بیگار اور ٹیکس وصول کرنے کا زمیںداروں کا حق برابر قائم رہا . نتیجہ یہ ہوا کہ کسانوں کی بیچینی لگاتار بنی رہی. اسی بیچ گاندھی جی کے اسہیوگ آندولن کی گونج دیہاتوں میں پہنچی .

کانگریس اور بے دخلیاں

سن '30 کے بعد یو . پی . کے کئی ضلعوں میں زور شور سے لگان بندی شروع ہوئی . راج نیتک صلح ہونے کے بعد کانگریسی سرکار بنی جس نے سن '39 میں نیا آراضی قانون بنایا . اس قانون میں زمیںدار کے اپنی سیر بڑھا لینے پر قانونی روک لگ گئی اور لگان کی ٹھیک، در طے کرنے کی بھی کوشش کی گئی . لگان کی بقایا وصول کرنے کے لئے کاشت کار کی گرفتاری' ہر بیگار و نذرانہ لینا بند کر دیا گیا . بیدخلی بند کرنے کی بھی کوشش کی گئی . اس قانون کے پہلے کاشتکاروں کو اپنے کھیت پر گھر بنانے اور کوئیں کھودنے کا حق نہیں تھا . اس نئے قانون سے اُنہیں یہ حق مل گیا . کاشتکاروں کی تھوڑی بہت حفاظت تو ہوئی' پر اُن کی اصلی اُمیدوں پر پانی پھر گیا . سن '41 سے '45 تک میں اس پردیش کے زمیںداروں نے ضابطے سے ساڑھے چھ لاکھ کسانوں کو ساڑھے آٹھ لاکھ ایکڑ زمین سے بیدخل کر دیا اور لگ بھگ 80 کروڑ روپیہ نذرانہ لیکر وہی زمین پھر دوسروں کو اُٹھا دی . پانچ سال میں زمیںداروں نے اپنی سیر اور خود کاشت کی زمینوں میں لاکھوں ایکڑ زمین بڑھا لی . یہ سب اس سمے کے بے ایمان افسروں اور پٹواریوں سے مل کر ہوا . خود کاشت کی زمین بیدخلی کرا کر اور چراگاہوں پر قبضہ کر کے بڑھائی گئی . یہ بات تو ہوئی ضابطے کی اور لکھت پڑھت کی . پر انومان یہ ہے

यू. पी. में ज़मींदारी

(डाक्टर वीर बहादुर सिंह, लखनऊ यूनिवर्सिटी)

1. ज़मींदारी का जन्म

हमारी आजकल की सभ्यता पूंजीवादी या महाजनी सभ्यता है. आजकल सब जगह पैसे का बोल बाला है. इस सभ्यता में अपना साम्राज बढ़ाने की इच्छा भी दूसरों पर हकूमत करने की लालसा से कम और दूसरों का धन चूसने की लालसा से अधिक पैदा होती है. ताक़तवर देशों में दूसरे देशों पर हकूमत करने की इच्छा भी इसीलिये होती है कि हकूमत से दूसरों का धन चूसने के सब से अच्छे साधन आसानी से उनके हाथ में आ जाते हैं. इसीलिये आजकल के साम्राजों का ख़ास रूप जितना आर्थिक या माली होता है उतना राजकाजी नहीं. इसी तरह का एक साम्राज हमारे देश में सन 1947 तक अंगरेज़ों का था. इसीलिये इस देश में अंगरेज़ों ने वह ढंग अपनाया जिससे हम अपना कच्चा माल और अनाज उन्हें बेचने पर मजबूर हो जायं और इसके बदले में वहां से उनकी मशीनों के बने सामान ख़रीदें.

अंगरेज़ी राज और ज़मींदारी

इसके लिये देहातों को क़ाबू में रखना ज़रूरी था. देहातों का आर्थिक ढांचा आराज़ी क़ानूनों की धुरी पर घूमता है. इसीलिये अंगरेज़ों ने इस देश में ज़मीन के ऐसे नए मालिक बनाए जो अपनी ख़ुदग़रज़ी की वजह से अपने देश के दोस्त न हो कर अंगरेज़ों के पिट्ठू बने रहने पर मजबूर थे.

हमारे उत्तर प्रदेश पर अंगरेज़ों का क़बज़ा तीन दौर में हुआ. पहले उन्हें बनारस का सूबा मिला जहां उन्होंने इस्तमरारी बन्दोबस्त लागू किया. दूसरे दौर में उन्होंने बुन्देलखन्ड और कुछ दूसरे इलाक़ों में विलायत के ढंग पर ज़मींदार बनाने की कोशिश की. अंगरेज़ यहां की भाषा नहीं जानते थे इसलिये उन्हें देसी क़ानूनगोओं की मदद लेनी पड़ी, जिन्होंने जिसको चाहा उसे ज़मींदार लिखा दिया और मनमानी मालगुज़ारी जारी करा दी. इस बन्दोबस्त के पहले ज़मीन किसकी थी, इसे साबित करने के लिये ज़ोर ज़बरदस्ती का सहारा लिया गया. अंगरेज़ी राज की नींव पक्की करने के लिये तीसरे दौर में अवध में तालुक़ेदारी को बढ़ावा दिया गया. इस के बाद सन 1857 का ग़दर हुआ और ग़दर के बाद गवरनर-जनरल ने कुछ ख़ैरख़्वाह ज़मींदार ख़ानदानों को छोड़ कर बाक़ी सब की ज़मीनें ज़ब्त कर लीं और इनके नए मालिक बनाए गए जो हमेशा अंगरेज़ बहादुर की ही हां में हां मिलाते रहे.

یو. پی. میں زمینداری

(ڈاکٹر ویر بہادر سنگھ، لکھنؤ یونیورسٹی)

1. زمینداری کا جنم

ہماری آج کل کی سبھیتا پونجی وادی یا مہاجنی سبھیتا ہے. آج کل سب جگہ پیسہ کا بول بالا ہے. اس سبھیتا میں اپنا سامراج بڑھانے کی اچھا بھی دوسروں پر حکومت کرنے کی لالسا سے کم اور دوسروں کا دھن چوسنے کی لالسا سے ادھک پیدا ہوتی ہے. طاقتور دیشوں میں دوسرے دیشوں پر حکومت کرنے کی اچھا بھی اسی لئے ہوتی ہے کہ حکومت سے دوسروں کا دھن چوسنے کے سب سے اچھے سادھن آسانی سے اُن کے ہاتھ میں آ جاتے ہیں. اسی لئے آج کل کے سامراجوں کا خاص روپ جتنا آرتھک یا مالی ہوتا ہے اُتنا راجکاجی نہیں. اسی طرح کا ایک سامراج ہمارے دیش میں سن 1947 تک انگریزوں کا تھا. اسی لئے انگریزوں نے وہ ڈھنگ اپنایا جس سے ہم اپنا کچا مال اور اناج اُنہیں بیچنے پر مجبور ہو جائیں اور اس کے بدلے میں وہاں سے اُن کی مشینوں کے بنے سامان خریدیں.

انگریزی راج اور زمینداری

اس کے لئے دیہاتوں کو قابو میں رکھنا ضروری تھا. دیہاتوں کا آرتھک ڈھانچا آراضی قانونوں کی دھری پر گھومتا ہے. اسی لئے انگریزوں نے اس دیش میں زمین کے ایسے نئے مالک بنائے جو اپنی خود غرضی کی وجہ سے اپنے دیش کے دوست نہ ہو کر انگریزوں کے پٹھو بنے رہنے پر مجبور تھے.

ہمارے اُتر پردیش پر انگریزوں کا قبضہ تین دور میں ہوا. پہلے اُنہیں بنارس کا صوبہ ملا جہاں اُنہوں نے استمراری بندوبست لاگو کیا. دوسرے دور میں اُنہوں نے بندیل کھنڈ اور کچھ دوسرے علاقوں میں ولایت کے ڈھنگ پر زمیندار بنانے کی کوشش کی. انگریز یہاں کی بھاشا نہیں جانتے تھے اس لئے اُنہیں دیسی قانون گوؤں کی مدد لینی پڑی، جنہوں نے جس کو چاہا اُسے زمیندار لکھا دیا اور من مانی مالگذاری جاری کرا دی. اس بندوبست کے پہلے زمین کس کی تھی، اِسے ثابت کرنے کے لئے زور زبردستی کا سہارا لیا گیا. انگریزی راج کی نیو پکی کرنے کے لئے تیسرے دور میں اودھ میں تعلقداری کو بڑھاوا دیا گیا. اس کے بعد سن 1857 کا غدر ہوا اور غدر کے بعد گورنر جنرل نے کچھ خیر خواہ زمیندار خاندانوں کو چھوڑ کر باقی سب کی زمینیں ضبط کر لیں اور اِن کے نئے مالک بنائے گئے جو ہمیشہ انگریز بہادر کی ہی ہاں میں ہاں ملاتے رہے.

नया हिन्द — نیا ہند

जल्द 13 दिसम्बर, सन '52 नम्बर 6

نمبر 6 دسمبر' سن '52 جلد 13

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی' پریم دھرم ہے' ہندستانی بولی'
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی.

अपने को पहचानो

ज्ञान को दे दो देश निकाला
विद्या का कर दो मुंह काला
अपने आपे को पहचानो
विद्या ज्ञान इसी को जानो

प्रेम का कर दो देश निकाला
न्याय का कर दो तुम मुंह काला
निज स्वभाव में तुम रम जाओ
प्रेम न्याय दोनों को पाओ

चालाकी का देश निकाला
करो क़ायदे का मुंह काला
डाकू रहे न चोर बिचारे
यह दोनों तो इनके प्यारे

सुख को दे दो देश निकाला
दुख का मुंह कर दो तुम काला
स्वारथ कम करना ही सुख है
इच्छाएं बढ़ जाना दुख है

सत्य धर्म की घटती आई
प्रेम न्याय की मची दुहाई
विद्या ले आई चालाकी
मक्कारी क्यों रहती बाक़ी

—भगवानदीन

[एक चीनी फ़िलासफ़र के विचार]

اپنے کو پہچانو

گیان کو دے دو دیش نکالا
ودیا کا کر دو منھ کالا
اپنے آپے کو پہچانو
ودیا گیان اِسی کو جانو

پریم کا کر دو دیش نکالا
نیائے کا کر دو تم منھ کالا
نج سوبھاؤ میں تم رم جاؤ
پریم نیائے دونوں کو پاؤ

چالاکی کا دیش نکالا
کرو قائدے کا منھ کالا
ڈاکو رہے نہ چور بچارے
یہ دونوں تو اِن کے پیارے

سکھ کو دے دو دیش نکالا
دکھ کا منھ کر دو تم کالا
سوارتھ کم کرنا ہی سکھ ہے
اِچھائیں بڑھ جانا دکھ ہے

ستیہ دھرم کی گھٹتی آئی
پریم نیائے کی مچی دہائی
ودیا لے آئی چالاکی
مکاری کیوں رہتی باقی

—بھگوان دین

[ایک چینی فلاسفر کے وچار]

अर्ज़

'नया हिन्द' का 'ज़मींदारी अंक' पाठकों के सामने है. अंक अच्छा है या बुरा इस का अन्दाज़ा खुद पाठक ही लगाएंगे, हमें इस सम्बन्ध में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं. हम आभारी होंगे अगर पाठक अपनी अपनी रायें हमें लिख भेजें.

'नया हिन्द' देर से निकल रहा है, इस के लिये ज़रूर पाठकों से हम माफ़ी चाहते हैं. कठिनाइयां जब सामने आती हैं तो इकट्ठा आती हैं. हमने कठिइनायों पर जीत तो हासिल कर ली पर समय पर 'नया हिन्द' न भेंट कर सके. दिसम्बर का अंक हमें इन्हीं कारनो से जनवरी अंक से मिला देना पड़ा. इस तरह 'नया हिन्द' का यह अंक दिसम्बर '52-जनवरी '53 अंक है.

इस देर से एक लाभ ज़रूर हुआ है वह यह है कि हम फ़रवरी अंक पहली तक पाठकों को भेंट कर सकेंगे.

हमारे अगले अंक में पिछले सारे फ़ीचर होंगे और साथ ही एक नया फ़ीचर भी होगा—"भारत में अमरीकी क़दम."

एक दफ़ा फिर हम देर के लिये माफ़ी चाहते हैं और आशा करते हैं कि पाठक हमें माफ़ कर देंगे

मनीजर, 'नया हिन्द'
इलाहाबाद

عرض

'نیا ہند' کا زمیںداری 'انک' پاٹھکوں کے سامنے ہے۔ انک اچھا ہے یا برا اِس کا اندازہ خود پاٹھک ہی لگائیں گے، ہمیں اس سمبندھ میں کچھ کہنے کی آوشیکتا نہیں. ہم آبھاری ہونگے اگر پاٹھک اپنی اپنی رائیں ہمیں لکھ بھیجیں۔

'نیا ہند' دیر سے نکل رہا ہے، اِس کے لئے ضرور پاٹھکوں سے ہم معافی چاہتے ہیں۔ کٹھنائیاں جب سامنے آتی ہیں تو اکٹھا آتی ہیں۔ ہم نے کٹھنائیوں پر جیت تو حاصل کرلی پر سمے پر 'نیا ہند' نہ بھینٹ کر سکے دسمبر کا انک ہمیں انہیں کارنوں سے جنوری انک سے ملا دینا پڑا۔ اِسطرح 'نیا ہند' کا یہ انک دسمبر '52 جنوری '53 انک ہے۔

اس دیر سے ایک لابھ ضرور ہوا ہے۔ وہ یہ ہے کہ ہم فروری انک پہلی تک پاٹھکوں کو بھینٹ کر سکیں گے۔

ہمارے اگلے انک میں پچھلے سارے فیچر ہونگے اور ساتھ ہی ایک نیا فیچر بھی ہوگا—"بھارت میں امریکی قدم۔"

ایک دفعہ پھر ہم دیر کے لئے معافی چاہتے ہیں اور آشا کرتے ہیں کہ پاٹھک ہمیں معاف کردیں گے۔

منیجر 'نیا ہند'
الہ آباد

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

दिसम्बर - जनवरी 1952-53

क्या किसने — सफ़ा

" نیا ہند "

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

دسمبر - جنوری

کیا کس سے — صفحہ

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने .

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے .

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد .

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, मुजफ्फर हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

اڈیٹر—تارا چند' بھگوان دین' مظفر حسن' بشمبھر ناتھ' سندر لال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب اڈیٹر—سریش رام بھائی' مجیب رضوی

* * * * *

ज़मींदारी अंक

زمینداری انک

★ यू. पी. में जमींदारी—डाक्टर वीर बहादुर सिंह

★ जम्मू और कश्मीर रियासत में जमीन सुधार—एम. ए. बेग

★ इटली के किसान और उनकी राजनीति—आएलमीर वालेन्स

★ मदरास में खेती की समस्या—कृष्णअर्जुन

★ یو.پی. میں زمینداری—ڈاکٹر ویر بہادر سنگھ

★ جمو اور کشمیر ریاست میں زمین سدھار—ایم اے . بیگ

★ اٹلی کے کسان اور ان کی راج نیت—آئلیمر والینس

★ مدراس میں کھیتی کی سمسیا—کرشن ارجن

हमारी राय

★ हमारे घरेलू धन्धों की बरबादी—एक अपील—सुन्दरलाल

★ श्री रामुलू का शरीरत्याग और भाषावार प्रान्तों का बटवारा—सुन्दरलाल

★ भारत का शान्ति ठहराव—मुजीब रिज़वी

★ मंदरास पुलिस सत्याग्रह—भगवानदीन

ہماری رائے

★ ہمارے گھریلو دھندوں کی بربادی—ایک اپیل—سندر لال

★ شری راملو کا شریر تیاگ اور بھاشاوار پرانتوں کا بٹوارا—سندر لال

★ بھارت کا شانتی ٹھہراؤ—مجیب رضوی

★ مدراس پولیس ستیاگرہ—بھگوان دین

नी कल्चर सोसाइटी, इलाहाबाद

दिसम्बर - जनवरी 1952-53 دسمبر - جنوری

53 52